Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113088

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

70306

# सम्पदा

अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

वर्ष १५ : अंक १

जनवरी १९६५

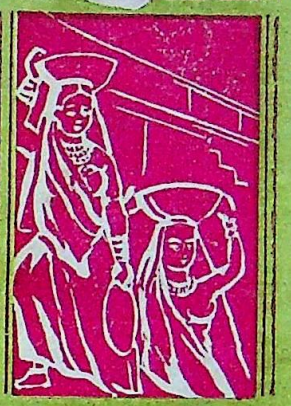

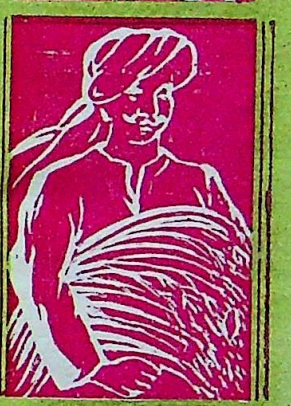

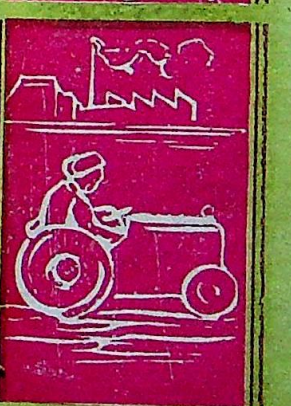

प्रकाशन मन्दिर शक्ति नगर दिल्ली

मूल्य
८० नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

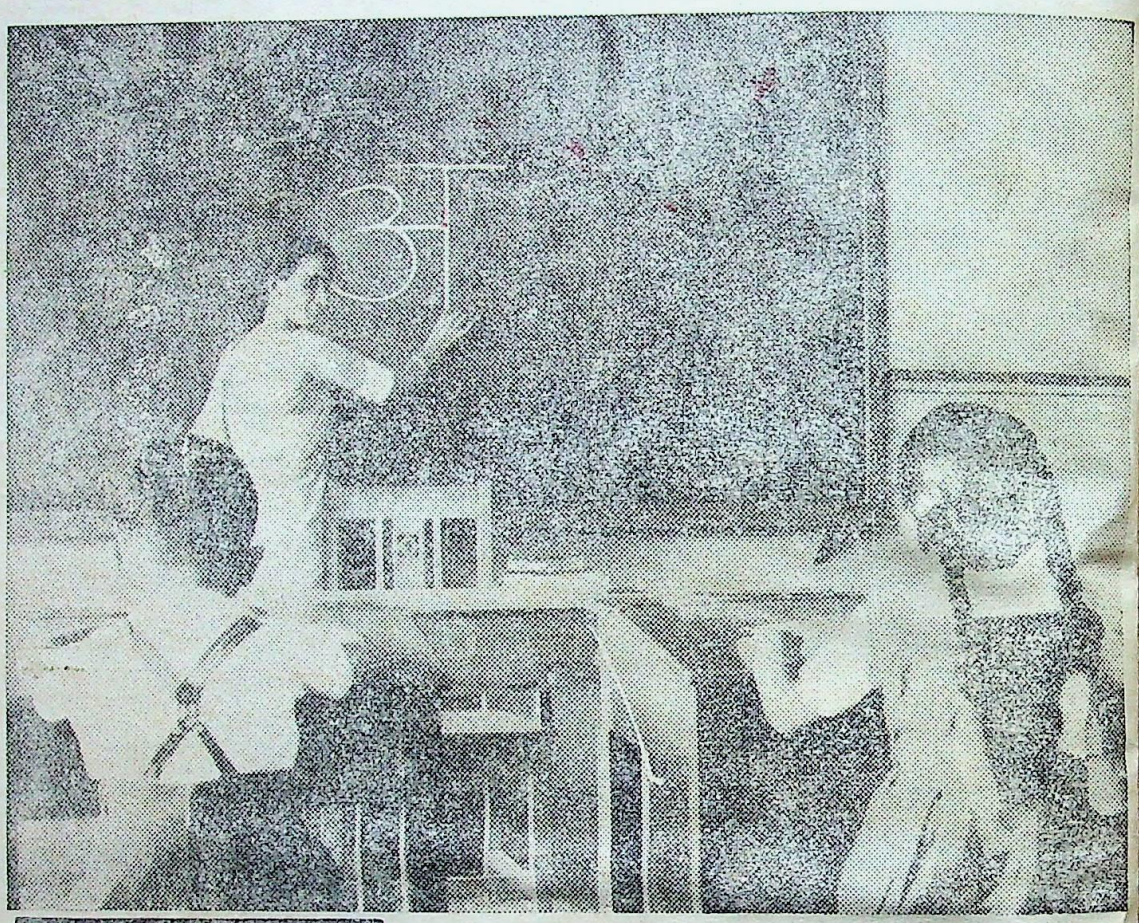

# पाठ

## वर्णमाला...शब्द...और वाक्य...

पढ़ाने का यह कितना सुंदर ढंग है! शिक्षा के क्षेत्र ही में क्यों आज प्रत्येक क्षेत्र में ठोस योजनाएँ काम कर रही हैं। सेहत, खेतीबाड़ी, इंजिनीयरिंग, आवास आदि कई योजानएँ आज धूमधाम से चल रही हैं। लाखों लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने का एक भव्य कार्यक्रम जारी है।

जीवन बीमा निगम भी इस महान कार्यक्रम का एक प्रधान अंश है। प्रतिदिन ३० लाख रुपयों से अधिक रकम निगम विविध उद्योगों में लगा रहा है। बीमेदार की हैसियत से दिये हुए आपके प्रीमियम दो रूपों में आप ही का हित करते हैं। सब से पहले बीमा कराने से आप और आपका परिवार सुरक्षित हो जाता है और इससे देश की आर्थिक दशा सुधरने में मदद मिलती है।

कुछ उद्योगों में हमारी और से लगायी पूँजी की एक झलक :-

| | |
|---|---|
| सीमेंट | ६२८ लाख रुपये |
| कापड़ उद्योग | १,२१६ लाख रुपये |
| बिजली | ९८५ लाख रुपये |
| लोहा और फ़ौलाद | ९९८ लाख रुपये |
| भोज्य पदार्थ, पेय पदार्थ, तंबाखू | १२८ लाख रुपये |
| सरकारी सिक्युरिटियाँ (केन्द्रीय, राज्य, नगरपालिका तथा अन्य अधिकृत सिक्युरिटियाँ) | ४४,९२४,४९ लाख रुपये |

## जीवन बीमा निगम...प्रगति का साथी

ASP/LIC/PR 1 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है !! शीघ्र प्रकाशित हो रहा है !!

## सम्पदा का चिरप्रतीक्षित विशेषांक

# राजस्थान विकास अंक

देश की स्वातन्त्र्य प्राप्ति और संयुक्त राजस्थान के निर्माण के बाद राजस्थान की विविध आर्थिक, औद्योगिक, कृषि, यातायात, सिंचाई, खनिज आदि महत्त्वपूर्ण समस्याओं की ओर अर्थ-शास्त्रियों अधिकारियों, व्यापारियों और उद्योगपतियों का सहसा ध्यान गया है। इन वर्षों में राजस्थान में जिस आर्थिक विकास की नींव रक्खी जा रही है, उसे भली भांति समझने और आर्थिक समस्याओं के विविध पहलुओं पर गम्भीर विचार करने की दृष्टि से हम यह बृहद् अंक प्रकाशित कर रहे हैं।

### इस अंक की विशेषताएं

१. राजस्थान की समस्याओं और आधुनिकतम प्रवृत्तियों पर परिचयात्मक तथा विवेचनात्मक लेख

२. राजस्थान के प्रमुख अर्थशास्त्रियों, प्रामाणिक अधिकारियों और विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण निष्पक्ष लेख

३. सुन्दर नयनाभिराम टाइटल

४. राजस्थान सम्बन्धी अनेक नक्शे, चित्र, चार्ट और ज्ञातव्य तालिकाएं

यह अंक बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है, इसलिए इसमें दिया गया आपका विज्ञापन राजस्थान की बहुत बड़ी जनता तक अच्छी तरह पहुँच सकेगा।

**अपनी कापी अभी से १.७५ रु० भेजकर सुरक्षित करा लें। कभी पीछे पछताना पड़े**

**आपको अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट कापी भेज दी जायेगी।**

—मैनेजर सम्पदा

२८।११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय सूची


| सं० | लेख | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | १९६४ : सफलताएं और विफलताएं | (एक सिंहावलोकन) | २ |
| २. | हमारी अर्थ-व्यवस्था और कराधान | श्री डी. आर० | ११ |
| ३. | भारत की कर प्रणाली | श्री परसराम मतवानी | १३ |
| | **खाद्य संकट-परिशिष्ट** | | |
| ४. | महंगाई : कारण और निवारण | श्री कमलनयन बजाज | १७ |
| ५. | चावल : करोड़ों का भोजन | | २१ |
| ६. | भूख से छुटकारे का उपाय | श्री चिदम्बम् सुब्रह्मण्यम | २२ |
| ७. | अनाज के बढते मूल्य | श्री उ० न० देवर | २४ |
| ८. | हमारी औद्योगिक नीति | श्री लालचन्द हीराचन्द | २७ |
| ९. | विकासोन्मुख देशों के लिए प्राथमिकता | चैस्टर बाउल्स | २९ |
| १०. | हमारे उद्योग<br>सार्वजनिक उद्योगों में लाभ—चाय उद्योग—<br>करों में रियायत : कपड़ा निर्माण मशीनरी—<br>सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन—फारस की खाड़ी पर<br>तेल उद्योग—भारतीय फिल्म उद्योग | | ३० |
| ११. | भूमिगत जल का महत्त्व | | ३३ |
| १२. | सांख्यिकी—चतुर्थ योजना के लक्ष्य—<br>कपड़े का उत्पादन—खाद का उपभोग—<br>भारत में सिंचाई व साधन | | ३४ |
| १३. | योजना के लिए साधन : राज्यों की मनोवृत्ति | | ३६ |
| १४. | तीन योजनाओं में नेफा की प्रगति | | ३८ |
| १५. | नया सामयिक साहित्य | | ३९ |
| १६. | अर्थ वृत्त चयन | | ४१ |
| १७. | औद्योगिक साख और विनियोग निगम | | ४५ |
| १८. | रासायनिक खाद | | ४६ |
| १९. | सरकारी कर्मचारी व सरकार | | ४७ |
| २०. | खनिजों की खोज व खपत | | ४८ |
| २१. | कुछ समाचार | | ४९ |


## पाठकों और ग्राहकों से

१. पत्र या मनीआर्डर भेजते हुए अपना ग्राहक नम्बर जरूर लिखें, ताकि उत्तर देने में सुविधा हो।

२. अनेक सज्जन मनीआर्डर भेजते समय कूपन पर अपना पता नहीं लिखते। मनीआर्डर का भाग पोस्टमैन ले जाता है और फिर रुपया भेजने वाले का पता लगाना कठिन होता है।

३. सम्पदा का वार्षिक मूल्य ८) ५० पैसे हैं इससे कम न भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113088

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष : १४
अंक : १
जनवरी : १९६५

# सम्पदा

## १९६४ : सफलताएं और असफलताएं

१९६४ का वर्ष बीत गया। प्रत्येक वर्ष कुछ अच्छी और बुरी घटनाओं के लिये प्रसिद्धि प्राप्त करता है। १९६४ का वर्ष भी इसका अपवाद नहीं है। भारत के महान नेता पं० जवाहरलाल नेहरू का देहावसान हमारे लिए एक अविस्मरणीय दुर्घटना है। वे भारतीय राजनीति और प्रशासन के ही कर्णधार नहीं थे, भारत की आर्थिक समृद्धि और विभिन्न आर्थिक प्रवृत्तियों के लिए प्रारम्भ की जाने वाली महत्त्वपूर्ण पंचवर्षीय योजनाओं के भी सूत्रधार थे। उन्होंने भारत की आर्थिक समृद्धि के स्वप्न लिये और उन्हीं के शब्दों में "राजनीतिक स्वाधीनता के रूप में हमें जो चैक मिला था, उसे नकदी में भुनाने के लिए आर्थिक समृद्धि की योजनाओं का निर्माण आवश्यक था।" पहली, दूसरी और तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं की पृष्ठभूमि ही पं० नेहरू ने तैयार नहीं की, किन्तु उनके पीछे एक स्पष्ट दर्शन भी देश को उन्होंने दिया। वे महान नेता १९६४ के इसी वर्ष में चले गये।

१९६४ की दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना रूस के सर्वेसर्वा, भारत के मित्र तथा विश्वशान्ति के प्रसारक श्री ख्रुश्चेव का आकस्मिक पतन है। ब्रिटेन ने भी १९६४ में अनुदार सरकार को अपदस्थ करके मजदूर सरकार को इंग्लैंड का शासन सूत्र सौंप दिया। चीन ने अणुबम का विस्फोट करके संसार को जहां आश्चर्यसागर में डाल दिया, वहां एशियाई देशों और विशेषकर भारत के लिए चिन्ता का एक अवसर भी उत्पन्न कर दिया। किन्तु दूसरी ओर संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका में राष्ट्रपति के पद पर अनुदार गोल्डवाटर की पराजय तथा केनेडी की उदार नीति का अनुसरण करने वाले जोन्सन की सफलता ने विश्व को एक शान्ति की सांस लेने का भी अवसर दिया। देश और विश्वकी दृष्टि से अन्य भी अनेक घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है, जैसे अफ्रीका में कुछ राष्ट्रों को स्वतन्त्रता, उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम में संघर्ष, दक्षिणी अमरीका के कुछ राज्यों में विप्लव, इन्डोनेशिया और मलयेशिया का परस्पर विरोध आदि आदि। किन्तु इन घटनाओं का अन्तर्राष्ट्रीय और हमारे अपने देश की दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्व नहीं है और न 'सम्पदा' के क्षेत्र के अंतर्गत वह घटनाएं आती हैं। हम तो भारत की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण आर्थिक घटनाओं का ही यहां सिंहावलोकन करेंगे।

× × ×

१९६४ की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना देश में विकराल रूप से बढ़ती हुई मंहगाई है। यद्यपि १९६३ का सिंहावलोकन करते हुए भी हमने उस वर्ष की मंहगाई को सबसे महत्त्वपूर्ण घटना बताया था, किन्तु इस वर्ष तो मंहगाई अपनी चरम सीमा भी पार करती हुई दिखाई देती है। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में ५० और ६० रुपये मन तक गेहूँ के भाव ऊंचे चढ़ गये हैं। सरसों और मूंगफली के तेल कुछ समय के लिए बाजार से अदृश्य हो गये। दालों और सब्जियों के बढ़ते हुए मूल्यों ने भी लोगों को अत्यन्त चिन्तित और क्षुब्ध कर दिया है। दूध भी सवा रुपया किलो तक बिकने लगा है। अन्न की दुर्लभता का परिणाम अनेक नगरों और ग्रामों में दुकानें लूटने के रूप में प्रत्यक्ष हुआ। अनेक नगरों में सरकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भीषण अन्न-संकट : राज्यों में हितों का विकट संघर्ष : चौथी विकास योजना

द्वारा खोली गई दुकानों पर भी अन्न दुर्लभ हो गया। केरल में तो एक समय स्थिति बहुत अधिक भयंकर हो गई और सरकार को तुरन्त स्पेशल गाड़ियों का इन्तजाम करना पड़ा। मंहगाई को दूर करने के लिए प्रदर्शनों और हड़तालों का देश भर में तांता लग गया। सरकार, विभिन्न राजनीतिक दलों और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं आदि सब का ध्यान अन्न संकट और भीषण मंहगाई ने अपनी ओर खींच लिया है। जहां सरकार ने विदेशों से अन्न का आयात करके इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किया, वहां व्यापारी और जमाखोर किसानों के विरुद्ध आवाज उठाई जाने लगी और समस्त अन्न व्यापार पर एकाधिकार की मांग जोरोंसे उठने लगी। सरकार ने एक अन्न निगम भी बना दिया है, जो इस नये वर्षके प्रारंभके साथ अपना कारोबार करने लगा है। मुनाफाखोरी को रोकने के लिए सरकार ने तुरन्त एक आर्डीनेन्स जारी किया, जो पीछे से कानून के रूप में लागू हो गया। उसके अनुसार मुनाफाखोरों को कठोर दंड देने और उनसे अपील का अधिकार छीन लेने की भी घोषणा की गई है। अन्न के अधिकतम मूल्यों को भी सरकार ने एक घोषणा के द्वारा निर्धारित किया है। किन्तु दुःखद सत्य यह है कि सरकार ज्यों-ज्यों मंहगाई को रोकने के लिए कोई घोषणा करती है त्यों-त्यों मंहगाई बढ़ती जाती है। १९६४ की यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक चिन्तनीय घटना है, जो १९६५ को विरासत में मिली है। देखना यह है कि १९६५ का यह वर्ष इस चिन्ताजनक स्थिति का निराकरण कैसे करता है।

× × ×

अन्न संकट के प्रसंग में एक और बात बहुत उभर कर सामने आई और वह थी विभिन्न राज्यों की देश की अखण्ड एकता को भूलकर अपने-अपने स्वार्थ के साधन की मनोवृत्ति। बचत वाले राज्य अपने अनाज, मूंगफली और दूसरे कृषि पदार्थों के कमी वाले राज्यों को निर्यात पर पाबन्दी लगाने लगे। इस कारण कमी वाले राज्यों का संकट और भी बढ़ गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि समस्त भारत में एक केन्द्रीय सरकार है ही नहीं। हरेक राज्य बिल्कुल स्वतन्त्र देश है। यह स्थिति किसी भी देश के लिए बहुत खतरनाक होती है। इसी के साथ ही क्षेत्रीय विभाजन (Zonal System) का प्रश्न फिर विचारणीय बन गया। एक क्षेत्र से निर्यात पर पाबन्दी लगाने के दो परिणाम होते हैं—उस क्षेत्र में जहां अनाज के मूल्य कम हो जाते हैं वहां उत्पादक किसान को भी उसका मूल्य कम मिलता है। दूसरा परिणाम यह होता है कि कमी वाले क्षेत्रों में अनाज के मूल्य बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं। १९६४ का वर्ष इसका प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है। केन्द्रीय सरकार राज्यों के स्वार्थ साधन की प्रवृत्तियों पर रोक लगाने की कोशिश करती है तथापि उसे इसमें बहुत सफलता नहीं मिली है। सच तो यह है कि विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री ही अन्न की समस्या को सुलझाने में सहायक न हो कर कुछ न कुछ बाधक ही सिद्ध हुए हैं।

× × ×

१९६४ की एक महत्वपूर्ण घटना चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का निर्माण है। इस योजना का आकार २१ हजार ५०० से लेकर २२ हजार ५०० करोड़ रुपये तक रखा गया है, जबकि दूसरी और तीसरी योजनाएं क्रमशः ७५०० और ११००० करोड़ रुपयों की थीं। इतनी बृहदाकार योजना बनाने का मुख्य उद्देश्य देश को स्वतः स्फूर्त प्रगति के मार्ग पर चलाना है, जिससे देश को भविष्य में विदेशों पर बहुत आश्रित न होना पड़े और स्वयं ही एक के बाद एक नई योजना कार्यान्वित होती चली जावे।

योजना का बृहदाकार लक्ष्य भी विवाद का विषय रहा। देश के अनेक महान प्रमुख अर्थशास्त्रियों की सम्मति में यह महत्वाकांक्षापूर्ण योजना अपने साधनों की सीमा से बहुत ऊंची है और परिणामस्वरूप देश में मुद्रा प्रसार से बढ़ती हुई मंहगाई और भी अधिक विषम स्थिति तक पहुंच जायेगी। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वयं देश के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री भी इस विचार से सहमत हैं। किन्तु दूसरी ओर योजना आयोग में सदस्यों तथा पुरानी नीति के समर्थक वामपन्थी विचारकों का मत यह है कि बड़े बड़े पूंजीगत सामान निर्यात करने के कारखाने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना के आकार पर मतभेद : घाटे की अर्थ-व्यवस्था समाप्त होगी ?

खोलकर देश को भविष्य के लिए स्वावलम्बी बनाने की नीति किसी भी स्थिति में नहीं छोड़नी चाहिए। श्री लालबहादुर शास्त्री जहां इस विचार के समर्थक है, वहां देश में बढ़ती हुई मंहगाई से उत्पन्न असन्तोष और गम्भीरता को भी वे अनुभव करते हैं और इसलिए वे उपभोक्ता सामग्री के निर्माण पर अधिक बल देने हैं अर्थात उनकी सम्मति में देश के सीमित साधनों को ऐसे कार्यों में विनियोजित करना चाहिए, जिनका फल हमें निकट भविष्य में ही मिल सके। कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कामराज ने भी वृहदकार योजना से बढ़ती हुई महंगाई का खतरा अनुभव किया है।

वस्तुतः यह दृष्टि यथार्थवाद की दृष्टि है। पिछली योजनाओं में हमारे बहुत से साधन बड़ी बड़ी योजनाओं को पूर्ण करने में लग गए और हम कृषि उत्पादन की ओर बहुत कम ध्यान दे सके। इसी का परिणाम आज देश में भीषण अन्न संकट है। अन्न के व्यापारियों और अनेक अर्थशास्त्रियों ने अन्न संकट पर विचार करते हुए बार बार यह कहा है कि अन्न संकट का कारण उत्पादन की कमी है।

× × ×

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के निर्माताओं ने एक घोषणा की है कि वे इस योजना के अन्तर्गत घाटे की अर्थ व्यवस्था का आश्रय नहीं लेंगे। यह वस्तुतः बहुत महत्त्वपूर्ण घोषणा है। मुद्रा प्रसार वस्तुतः एक औषधि के रूप ग्रहण करने की वस्तु है, सामान्य भोजन के रूपमें नहीं। इस यथार्थवादी दृष्टि का ही यह परिणाम दीखता है कि वित्तमंत्री ने वर्ष के अन्त में फिर यह घोषणा की है कि विदेशों से अधिक ऋण लेने की अपेक्षा विदेशी पूंजी का स्वागत अधिक लाभप्रद होगा। 'सम्पदा' के पाठक जानते हैं कि हमने पिछले वर्षों में जिस भारी मात्रा में ऋण लिए हैं, उसके परिणाम स्वरूप हमें आगामी योजना में ११ अरब रुपये प्रति वर्ष ऋण की किश्तों और ब्याज के रूप में चुकाने होंगे। विदेशी पूंजी आकर देश में हमारी अर्थ व्यवस्था पर प्रभुत्व कर लेगी, इस भय को प्रशासक स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि विदेशी पूंजी का नियंत्रण सरकार करती है।

× × ×

१९६४ में समाजवाद का नारा पहले की तरह जोरों से नहीं लगाया गया, यद्यपि भुवनेश्वर कांग्रेस ने वर्ष के प्रारम्भ में ही समाजवाद के लक्ष्य की ओर तीव्रता से प्रगति करने का सन्देश दिया था। उसी समय चावल मिल उद्योग को सरकार के हाथों में करने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया था तथा समाजवाद के लक्ष्यों को शीघ्रता से प्राप्त करने की दिशा में अनेक अन्य उपायों का भी सुझाव दिया गया था। परन्तु इस प्रस्ताव को दुर्गापुर में एक बहुमुखी प्रस्ताव की पुनरावृत्ति के अतिरिक्त कोई मूर्त रूप दिया जा सका हो, ऐसा नहीं दीखता। यह ठीक है

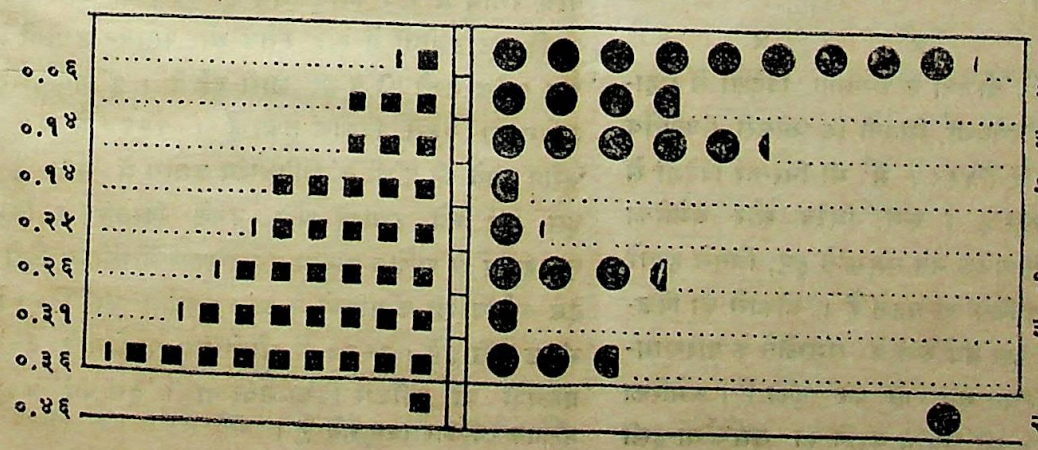




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाजवाद का जोश शिथिल : भारतीय पूंजी विदेशों में

कि अन्न संकट के राजकीय व्यापार की मांग बड़ी तेजी से उठाई जा रही है और अन्न निगम की भी स्थापना हो गई है। महलनबीस कमेटी की चिर प्रतिक्षित रिपोर्ट का एक अंश इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है, यद्यपि उससे किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना संभव नहीं हुआ। इस दिशा में मौनोपली कमीशन एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका परिणाम कमीशन की सिफारिशों और उनके क्रियान्वयन पर ही प्रकट होगा। १९६५ का वर्ष बतायेगा कि समाजवाद की दिशा में हमने नारों से ऊंचा उठकर सचमुच कितनी प्रगति की। अभी तक तो हम भूमि सुधारों की शिथिल गति को भी तीव्र नहीं कर पाये हैं।

समाजवाद की दिशा में मन्द उत्साह का एक तर्क-संगत कारण भी प्रशासकों ने अनुभव किया है और वह यह कि सार्वजनिक उद्योग आशा के विपरीत सन्तोषजनक परिणाम नहीं उत्पन्न कर सके। इसलिए यदि नारेबाजी की अपेक्षा परिणाम पर अधिक ध्यान देना हो तो हमें निजी उद्योग का सहयोग अधिकाधिक लेना ही होगा। दुःख की बात तो यह है कि सार्वजनिक उद्योग आदर्श विनियोजक का भी उदाहरण सामने नहीं रख पाये। तेल और बैंकों के राष्ट्रीयकरण की मांग को भी इसलिए दृढ़तापूर्वक अस्वीकृत कर दिया गया है। सरकार अपनी कार्यक्षमता और साधनों की सीमा समझती है। दुर्गापुर कांग्रेस का आर्थिक प्रस्ताव स्वयं गत वर्ष की गतिविधि पर कड़ी टीका है।

× × ×

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विदेशों से सहायता उतनी ही ली जायगी, जितनी कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में ली गई है। १९६४ में भी निरन्तर विदेशों से सहायता मिलती रही है। रूस, ब्रिटेन और अमेरिका आदि से १९६४ में अनेक नये समझौते हुए, जिनसे हमारे नये उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। बोकारो का विलम्बित लोह उद्योग इस वर्ष रूस के समझौते के परिणामस्वरूप अधिक निश्चित रूप धारण कर चुका है। अमेरिका से पी० एल० ४८० की अवधि बढ़ाने का समझौता इसी वर्ष हुआ है। कोलम्बो राष्ट्रों ने भी कोलम्बो योजना की अवधि ५ वर्ष बढ़ाने का निर्णय करके एक प्रशंसनीय कदम उठाया है।

× × ×

इस वर्ष की एक असाधारण सफलता भारतीय उद्योगपतियों द्वारा विदेशों में और विशेषकर अफ्रीका के विभिन्न देशों में नये-नये उद्योग स्थापित करने की दिशा में प्रारम्भिक कार्यवाहियां हैं। अनेक नये उद्योग वहां भारतीय पूंजी व प्रबन्ध से खुलने जा रहे हैं। दूसरी ओर भारत सरकार का तेल और प्राकृतिक गैस संस्थान भी ईरान में तेल की खोज करने के लिए आगे बढ़ा है। इससे भारत निःसन्देह अन्य प्रगतिशील राष्ट्रों की पंक्ति में आजायेगा।

× × ×

यद्यपि १९६४ में विभिन्न उद्योगों ने बहुत उतार-चढ़ाव देखा है, तथापि पूंजी निर्माण की दृष्टि से यह वर्ष पिछले वर्षों से अच्छा बीता है। १९६३ और १९६२ में क्रमशः ५४.५ करोड़ रुपये और ७३.९ करोड़ रुपये की नई पूंजी बाजार में आई थी, जबकि १९६४ में ९० करोड़ रुपये की नई पूंजी बाजार में आई है। इसमें से ६२.५ करोड़ रुपये के नये शेयर बिके, २०.० करोड़ रु. के राइट शेयर और ७.६ करोड़ रुपये की डिबेंचर हैं। वर्ष के पहले ९ महीनों में ऐसा मालूम होता था, कि पूंजी बाजार बहुत शिथिल रहेगा, किन्तु पिछले तीन महीनों में इसने अपनी कमी कुछ तेजी से पूरी की है। उद्योगों के क्रम से वस्त्र उद्योग में ७.७ करोड़ रुपये की नई पूंजी जारी हुई, जबकि जूट उद्योगों में २.३ करोड़ और रसायन उद्योगों में ७.६ करोड़ रुपये की पूंजी जारी हुई है। इंजीनियरिंग उद्योग का बहुत विकास हुआ है। १९६४ में २२.८ करोड़ रुपये की पूंजी इंजीनियरिंग उद्योग में लगी है। इस वर्ष नये उद्योगों और उनके विस्तार के लिए एक हजार से अधिक प्रार्थना पत्र सरकार ने स्वीकृत किये। इस वर्ष विदेशी कम्पनियों के साथ सहयोग की दिशा में भी उन्नति हुई। १९६३ में औद्योगिक सहयोग के ३०१ प्रस्तावों को स्वीकार किया गया था। इस वर्ष ४१० प्रस्ताव स्वीकार किए गये हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विविध उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि : सरकारी बनाम निजी उद्योग

इस दिशा में इस वर्ष अण्डर राइटिंग की प्रगति उल्लेख योग्य है । १९६२ और १९६३ में १३.६ और १४.४ करोड़ रु० के मुकाबले में १९६४ में ३१.० करोड़ रु० की पूंजी अण्डर राइटिंग द्वारा एकत्र हुई ।

× × ×

प्रायः सभी उद्योगों का उत्पादन बढ़ा है । परिवहन सामग्री के उद्योग में ३३.३ प्रतिशत उत्पादन बढ़ा है और बिजली की मशीनों के उद्योग में १५.७ प्रतिशत । दूसरी मशीनरी १२.४ प्रतिशत, धात्वीय सामग्री ११.७ प्रतिशत, पेय पदार्थ व तम्बाकू १२.४ प्रतिशत, पैट्रोलियम उत्पादन १२ प्रतिशत बढ़ा है । यों कुल उत्पादन १६.२ प्रतिशत हुआ । इस वर्ष कुछ नई वस्तुएं बाजार में आई हैं, जिनके कारण विदेशी मुद्रा के व्यय में बचत हुई है । इन में रोलर बेयरिंग, टैक्सी मीटर, माइक्रो मीटर, हीटर कण्ट्रोल स्विच आदि के नाम लिये जा सकते हैं । सरकारी उद्योगों ने भी अपना उत्पादन बढ़ाया है । हिन्दुस्तान मशीन टूल्स ने करीब १० करोड़ रुपये की २ हजार मशीनें तैयार की हैं । पंजाब और केरल में स्थापित नये कारखानों ने भी उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है । भोपाल के हैवी इलैक्ट्रीकल फैक्टरी ने करीब ५ करोड़ रुपये का माल तैयार किया है । ३ जनवरी को पहले डीजल इंजन का निर्माण उल्लेखनीय घटना है । अन्यत्र पाठक पूर्वार्ध में उद्योग की उन्नति का कुछ परिचय पढ़ेंगे ।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी निजी व सरकारी उद्योग में विवाद चलता रहा, यद्यपि इसमें उग्रता नहीं आई । सैनिक उद्योगों ने इस वर्ष अच्छी उन्नति की है । कई राकेट सफलता पूर्वक छोड़े गये हैं । कई विमान भी सेना को दिये गये हैं । किरीबुरु योजना और तेल के लिए नई पाइप लाइन का उद्घाटन इस वर्ष की अच्छी घटनाएं हैं । पैट्रोकैमिकल उद्योग की दिशा में भी अच्छी प्रगति हुई है ।

× × ×

अनेक वर्षों से चीनी उद्योग समस्यापूर्ण उद्योग रहा

## १९६४ में सामान्य मूल्यों में वृद्धि १९५९-६०=१००

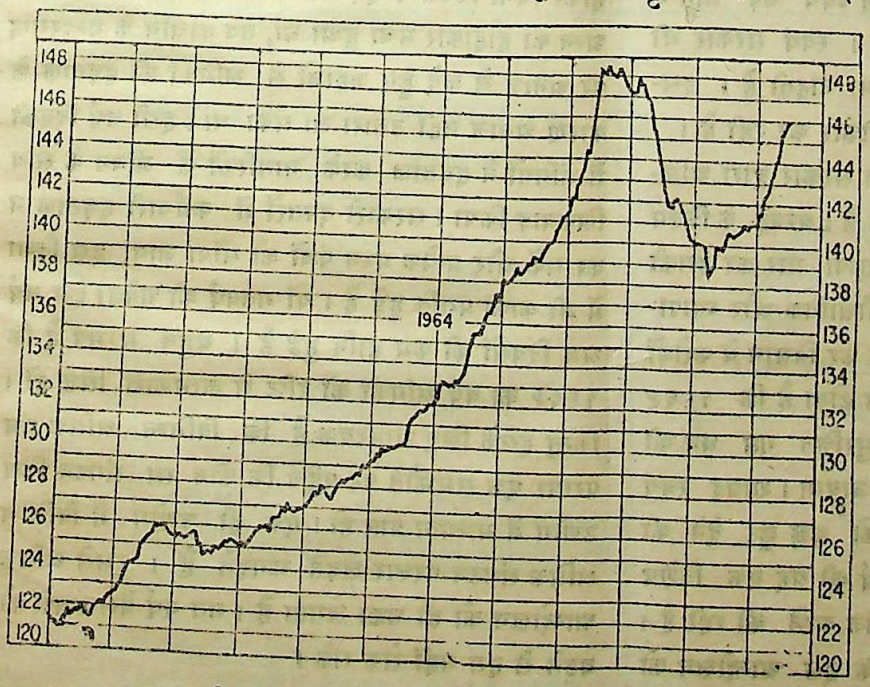


इस वर्ष मूल्यों में असाधारण वृद्धि हुई है । सितम्बर में उच्चतम सीमा पर पहुंच कर कुछ उतार शुरू हुआ था, पर तेजी से फिर उभार आ गया, जो जनवरी ६५ में भी जारी है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चीनी बनाम गुड़ उद्योग : गुप्त धन की खोज श्रमिकों में असन्तोष :

है। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी खांडसारी उद्योग से उसे प्रति स्पर्द्धा करनी पड़ रही है। खांडसारी उद्योग को यह लाभ है, कि उस पर चीनी उद्योग की भांति उत्पादन कर नहीं लगता और किसानों से वह अधिक मूल्य पर भी गन्ना खरीद सकता है। स्वयं बहुत से किसान गुड़ बना कर ज्यादा लाभ प्राप्त करते हैं। इसलिए किसान मिलों को गन्ना बेचने से भी इन्कार कर रहे हैं। अनेक मिलों के सामने गन्ना संकट बुरी तरह से छा रहा है। इसलिए चीनी उद्योग गन्ने के वितरण पर से आंशिक नियन्त्रण हटाने का प्रस्ताव कर रहा है। उत्तरप्रदेश सरकार ने गुड़ व खांडसारी के लिए खरीदे जानेवाले गन्ने पर बिक्रीकर बढ़ा कर चीनी मिलों को सहायता दी है। वस्त्र उद्योग ने १२½ प्रतिशत उद्योग के उत्पादन के अनिवार्य निर्यात का प्रस्ताव रखा था, परन्तु यह योजना सफल नहीं हुई। सामान्य जनता को कपड़ा महंगा न मिले, इस उद्देश्य से सरकार ने आम लोगों के काम आने वाले कपड़ों के मूल्य निर्धारित कर दिए हैं।

× × ×

प्रायः सभी उद्योगों ने उत्पादन व्यय बढ़ जाने के कारण मूल्यों में वृद्धि की मांग की है। स्वयं सरकार भी उद्योगों को लाभ की दृष्टि से चलाना चाहती है। इसलिए मूल्य बढ़ाने के औचित्य को स्वीकार कर रही है।

१९६४ की एक महत्त्वपूर्ण घटना सरकार द्वारा अलिखित छिपे धन की तलाश करना रहा है। बम्बई के फिल्म स्टारों और कलाकारों पर पुलिस ने छापा मार कर इसकी शुरूआत की है। अन्य भी अनेक औद्योगिक और व्यापारिक संस्थानों पर छापे मार कर आय कर विभाग ने करोड़ों रुपया बरामद किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि १९६५ के वर्ष विदेशी मुद्रा तथा देश में सुरक्षित गुप्त धन की तलाश के लिए विशेष प्रयत्न किया जायगा। शायद स्वयं गुप्त धन का पता बताने वालों को कुछ छूट देने की घोषणा भी शीघ्र हो जाय। इस वर्ष की यह एक विशेष प्रवृत्ति जन संख्या नियत्रंण को तेज करने की रही है। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इस आन्दोलन को सरकारी अंकों को छोड़ कर कितनी सफलता मिलेगी।

इस वर्ष श्रमिकों की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण घटना बोनस कमीशन की सिफारिशें और उस पर सरकार का निर्णय है। बोनस कमीशन ने श्रमिकों को न्यूनतम बोनस कुल मजदूरी का ४ प्रतिशत देना स्वीकृत कर लिया है। इससे सब श्रमिकों को चाहे कोई उद्योग घाटे में भी चल रहा, बोनस अवश्य देना पड़ेगा। यदि कुल लाभ पर ६० प्रतिशत की राशि ज्यादा होगी तो वह देनी पड़ेगी। इसी तरह मूल्यों के निर्देशक अंक निकालने की पद्धति में भी परिवर्तन हुआ है। इससे मंहगाई के ऊंचे अंक निकाले जाएंगे और श्रमिकों को भी अधिक मंहगाई भत्ता मिलेगा। केन्द्रीय सरकार ने अपने कर्मचारियोंके मंहगाई भत्ते में वृद्धि कर दी है। अन्य उद्योगों में भी मंहगाई भत्ता बढ़ा है।

× × ×

श्रमिकों के लिए मिलों की ओर से कम कीमत में अनाज आदि देने की व्यवस्था पर भी अमल किया जाने लगा है, किन्तु दूसरी ओर श्रमिकों में असंतोष कम नहीं हुआ है। बढ़ती मंहगाई ने उन्हें क्षुब्ध कर दिया है और वे समय असमय श्रमिक नेताओं के आंदोलन के शिकार होकर बिना विवेक के हड़तालें करने लगे हैं। जब केरल में अन्न का हाहाकार मचा हुआ था, तब कोचीन के बन्दरगाह पर अनाज से लदे हुए जहाजों से श्रमिकों की हड़ताल के कारण अनाज नहीं उतारा जा सका था। इसी वर्ष दिल्ली में भंगियों ने हड़ताल करके नागरिकों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया। सरकारी दफ्तरों में कर्मचारी हड़ताल न कर सकें और प्रत्येक प्रश्न पंचों को सौंपा जाय, इस दिशा में भी काफी प्रगति हुई है। यों गतवर्ष की अपेक्षा इस वर्ष श्रम दिवसों की कम हानि हुई है। बहुत सम्भव है कि १९६५ का वर्ष श्रमिकों की दृष्टि से लाभकारी सिद्ध हो। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि विभिन्न श्रमिक संघ परस्पर एक समझौते पर पहुँचें कि कौन सा संगठन किस उद्योग में मान्यता प्राप्त हो। एक ही उद्योग में विभिन्न श्रमिक संगठन परस्पर लड़ते झगड़ते हैं। इससे श्रमिक आन्दोलन को ही धक्का लगता है। गत वर्ष बेरोजगारी को बढ़ने से हम नहीं रोक सके।

× × ×



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# निर्यात-वृद्धि में सफलता : यूनिट ट्रस्ट स्थापित : राशनिंग का सूत्रपात

१९६४ की एक बड़ी सफलता निर्यात में वृद्धि की है। एक अनुमान के अनुसार भारत ने ८३५ करोड़ रुपये का निर्यात किया है। गत वर्ष १९६३ में ७८३ करोड़ रुपये का निर्यात हुआ था। यह हमारे लिए शुभ लक्षण है कि पिछले दो वर्षों से निर्यात निरन्तर बढ़ रहा है। निर्यात की एक विशेषता यह है कि अब हम इंजीनियरिंग और रासायनिक जैसी अपरम्परागत वस्तुओं का निर्यात बढ़ा रहे हैं। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि रूस तथा अन्य साम्यवादी देशों के साथ हमारा व्यापार निरन्तर बढ़ रहा है। यह आशा की जा सकती है कि आगामी दो तीन वर्षों में इन देशों के साथ हमारा व्यापापार और भी तेजी से बढ़ेगा। ब्रिटेन की नई सरकार ने अपनी स्थितियों से विवश होकर आयात कर पर १५ प्रतिशत सरचार्ज लगा दिया है। इसका हमारे निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यह नहीं कहा जा सकता।

× × ×

पूंजी बाजार की शिथिलता को देखते हुए सरकार ने यूनिट ट्रस्ट की स्थापना की है। इसके यूनिटों का मूल्य ५० पैसा प्रति यनिट (१० रु०) बढ़ गया है। इसी तरह वर्ष के अन्त में वित्तमंत्री ने विदेशों से आई रकम के ऋणों पर मिलने वाले ब्याज पर आयकर की छूट दे दी है। इसी तरह कुछ अन्य भी रियायतें दी गई हैं।

भारत सरकार द्वारा संविधान के अनुसार नियत चतुर्थ वर्षीय वित्त-आयोग ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है और सभी राज्य विभिन्न युक्तियों से अपने अपने दावों को पेश करने लगे हैं।

महंगाई का प्रभाव आयातित गेहूँ के मूल्यों में ४ रु० मन तक बढ़ा दिये जाने से और भी अधिक व्यापक हो रहा है। इधर राशन चालू होने के आसार बहुत बढ़ गये हैं। आंशिक राशनिंग अनेक भागों में प्रारंभ भी हो चुका है।

१९६४ में प्रकृति का प्रकोप भी यथापूर्व रहा। अनेक राज्यों—पंजा व उत्तरप्रदेश में बाढ़ ने बुरी तरह खेती को तबाह किया। इस बर्ष के अंत में धनुषकोटि में आया समुद्री तूफान भी काफी क्षति कर गया।

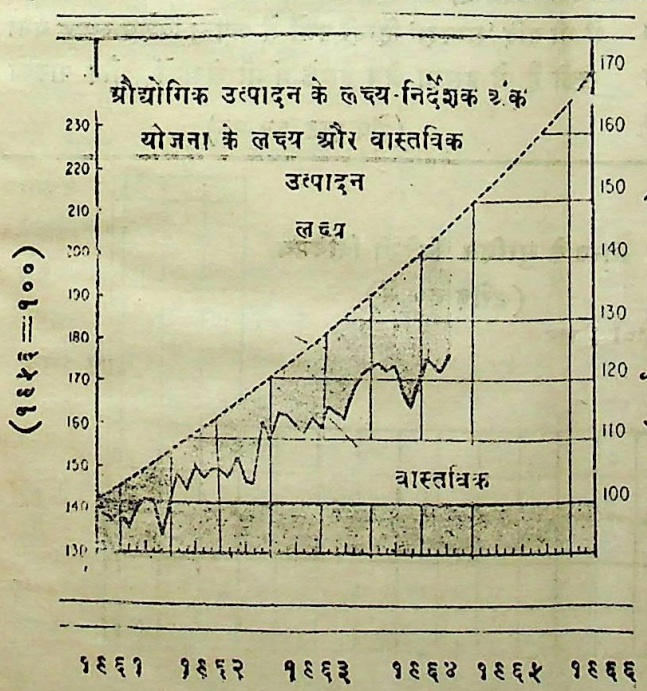


इस चित्र से यह स्पष्ट है कि योजना के अन्तर्गत औद्योगिक उत्पादन के लक्ष्य हम पूर्ण नहीं कर पाते। लक्ष्यों का निर्देशक अंक १९६४ में २१० है, किन्तु वास्तविक उत्पादन लक्ष्यों तक क्यों नहीं पहुच पाता, यही चिन्तनीय विषय है।

इस लेख में प्रकाशित ग्राफ इकोनौमिक टाइम्स' से साभार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ दुःखद देहान्त : नशाबन्दी व सर्वोदय में शिथिलता

इस वर्ष की सबसे महान क्षति पं० जवाहरलाल नेहरू के निधन की चर्चा हम पहले कर चुके हैं। उनके अतिरिक्त श्री वी० टी० कृष्णमाचारी, रेलवे मन्त्री श्रीदासप्पा, श्री वैकुण्ठ मेहता, श्री वल्लभ स्वामी (सर्वोदय नेता) और श्री अम्बेकर आदि का देहान्त भी इस वर्ष की शोचनीय घटनाएं हैं।

इस वर्ष की एक घटना टेकचन्द कमेटी की रिपोर्ट भी है। इसमें नशाबन्दी के कार्यान्वयन की विशेष योजना दी गई है। यद्यपि इसमें नशाबन्दी की दिशा में प्रगति करने के कुछ सुझाव हैं, तथापि महाराष्ट्र प्रशासन ने नशाबन्दी की कठोरता को कम करने की ओर कदम उठाये हैं। अब वहां शराब उतनी दुर्लभ नहीं रही। विभिन्न राज्य भी नशाबन्दी की दिशा में आगे बढ़ने को तैयार नहीं दीखते। राजस्थान में तो शराब के दूकानदार अखबारों में भी सस्ती शराब के इश्तहार तक देने तक लगे हैं। इसे गत वर्ष की सफलता कहा जाय या विफलता ?

सर्वोदय आन्दोलन की प्रगति भी प्रशंसनीय नहीं रही। वस्तुतः सर्वोदय को समय के प्रवाह के विरुद्ध टक्कर लेनी पड़ रही है, जो बहुत कठिन है। आचार्य बिनोबा की पदयात्रा समाप्त हो चुकी है। सर्वोदय के दूसरे नेता श्री जयप्रकाश नारायण राजनीति में उलझ कर सर्वोदय से व्यवहारतः संन्यास ले चुके हैं। सर्वोदय के विचारक स्वयं आत्मचिन्तन में लगे हैं। उनके देखते-देखते सरकार बड़े उद्योगों को निरन्तर आश्रय देती जा रही है, जो ग्रामोद्योगों के लिए हानिकर है। सर्वोदय के बहुमुखी कार्यक्रम ने उनकी शक्ति को विकेन्द्रित कर दिया है।

\+ \+ \+

इस अंक के साथ 'सम्पदा' अपने १४वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। उसे किन विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, यह लिखने का कोई लाभ नहीं। हिन्दी के एक महान साहित्यकार के शब्दों में जब तक अंग्रेजी भाषा के भारी पहाड़ का बोझ विद्यमान है 'सम्पदा' और दूसरे उपयोगी हिन्दी पत्रों की कठिनताएं भी कायम रहेंगी। भारतीय संविधान के अनुसार १९६४ अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में रखने का अन्तिम वर्ष था। इसलिए आशा करनी चाहिये कि नया वर्ष हिन्दी और अन्य भाषाओं की दृष्टि से प्रगति का वर्ष होगा और निहित स्वार्थ वालों का अराष्ट्रीय षड्यंत्र आज न सही कुछ समय तक अवश्य विफल हो जायेगा।

हम अपने 'सम्पदा' परिवार से इस अवसर पर एक प्रार्थना करना चाहते हैं, अपने सीमित साधनों और अनेक कठिनाइयों में भी यदि 'सम्पदा' हिन्दी पत्रों में अपना विशेष स्थान बना सकी है तो इसका श्रेय इसके प्रेमी लेखकों और पाठकों

(शेष पृष्ठ १२ पर)

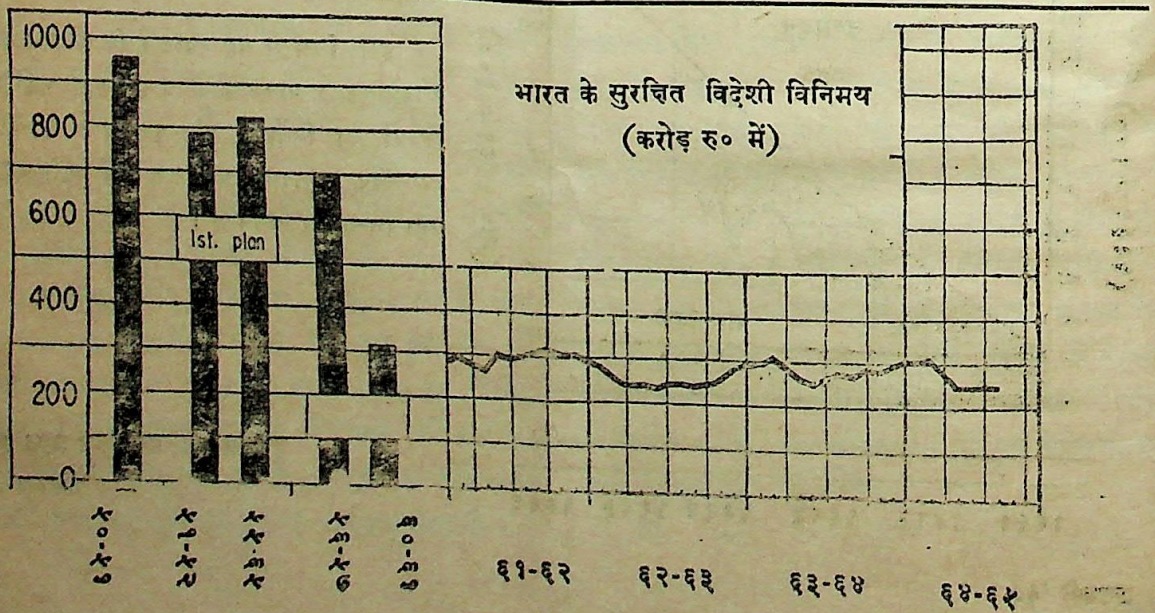




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारा अर्थव्यवस्था और कराधान

श्री फीरोज जो श्रॉफ

भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने आगामी बजट को 'जनता का बजट' बनाने का आश्वासन दिया है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि आगामी बजट में करों की कुछ राहत दी जायगी। उनका यह आश्वासन क्या रूप लेगा, यह निकट भविष्य में ज्ञात होगा। इस लेख में लेखक ने कराधान व भारतीय अर्थव्यवस्था पर अपने विचार प्रकट किये हैं।

विश्व के देशों की तुलना में भारत में प्रति व्यक्ति आय लगभग निम्नतम है, लेकिन यहां का कराधान अधिकांश देशों की तुलना में कहीं अधिक है। भारत में राष्ट्रीय आय का लगभग १७.५ प्रतिशत भाग करों के जरिये इकट्ठा किया जाता है, जबकि संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, न्यूजीलैंड और स्वीडन में यह हिस्सा लगभग ३० से ३३ प्रतिशत के बीच होता है। लेकिन इन देशों में प्रति व्यक्ति आय २५ से ४० गुनी अधिक होती है। इसलिये, समृद्ध देशों में करदाता जिस कर भार को आसानी से वहन कर सकते हैं, वही भार भारत की जनता के लिये असह्य है।

इसलिये, इस बात पर जोर देने की आवश्यकता नहीं रह जाती है कि भारत में ३०० रुपये प्रति व्यक्ति आय वाले लोगों पर १७.५ प्रतिशत कर भार, संयुक्तराष्ट्र में लगभग १३,५०० रुपये प्रति व्यक्ति आय वाले लोगों पर लगाये ३३ प्रतिशत कर भार की अपेक्षा कहीं अधिक होता है।

भारत में आबादी के १ प्रतिशत भाग के एक चौथाई हिस्से से भी कम लोग आयकर देते हैं। आबादी का शेष ९९.७५ भाग गरीबी में ही पडा हुआ है। हमारे देश में भोजन की खपत, केलरियों की दृष्टि से, सामान्य जरूरत की केवल ६० प्रतिशत ही होती है। हमारे यहां अन्य समृद्ध देशों की तुलना में गुड़ और खांडसारी सहित शक्कर की खपत करीब १।५ और खाद्य तेलों सहित चर्बी की खपत केवल १।४ भाग ही है। भारतीय जनता के भोजन में दूध, तरकारियां फल, अण्डे और गोशत जैसे पोषक तत्वों का बहुत अभाव होता है। इसी तरह विश्व के अन्य देशों के स्तर की तुलना में वस्त्र और आवास में भी भारत की आबादी काफी पीछे है। संक्षेप में, प्रति व्यक्ति आय अत्यन्त कम होने के कारण भारत की जनता की परमावश्यकताएं भी पर्याप्त रूप से पूरी नहीं हो पाती हैं।

इन बातों के बावजूद भी जनता पर बहुत भारी कर भार लाद दिये गये हैं। आय पर कराधान जो १९५५-५६ में ११३.२ करोड़ रुपये था, १९६४-६५ के बजट में ४४९.१ करोड़ रुपये तक पहुँच गया। इसी अवधि में पदार्थों और सेवाओं पर लगाया गया कराधान २९८.३ करोड़ रुपये से बढ़कर ९८१ करोड़ रुपये तक जा पहुँचा। नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार अप्रैल-अगस्त १९६४ की अवधि में केन्द्रीय उत्पादन शुल्क (नमक, कोयला और खनिज लोहे की लागत को छोड़कर) गत वर्ष इसी इसी अवधि की तुलना में २७७.७० करोड़ रुपये से बढ़कर २९८.९५ करोड़ रुपये हो गया है। इसी अवधि में आयकर ४८.१८ करोड़ रुपये से बढ़कर ५१.४१ करोड़ रुपये हुआ। अन्य कराधान सहित उपर्युक्त तुलनात्मक अवधियों में कुल ४६ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई।

हमारे देश में विभिन्न पदार्थों पर कितना अधिक कराधान किया जाता है, इसका अन्दाजा कराधानों के अनुपात और एक्स-फेक्टरी कीमतों से लगाया जा सकता है जो कागज पर ४० प्रतिशत, फौलाद पर ५५ प्रतिशत, सीमेन्ट पर ६० प्रतिशत, शक्कर पर ६५ प्रतिशत और सूती वस्त्रों पर ४० से ५५ प्रतिशत तक होता है।

राज्यों में लगातार कराधान बढ़ रहा है और किसी न किसी रूप में केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा चाय और शक्कर जैसी चीजों पर भारी कर लगाये जा रहे हैं।

इस प्रकार बढ़ते हुये कर भारों से देश की अर्थव्यवस्था पर बड़ा विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजनावधि, जो १९६५-६६ में खत्म हो रही है, उत्पादन में ३० प्रतिशत वृद्धि करने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन योजना के प्रथम तीन वर्षों में १० प्रतिशत से भी कम वृद्धि हुई है और इस प्रकार की कोई सम्भावनाएं नहीं दिखाई देती हैं जिनसे कि योजना के शेष दो वर्षों में २० प्रतिशत कमी पूरी हो जाय। वर्तमान अन्दाजों के अनुसार तीसरी योजना में निर्धारित लक्ष्यों के विपरीत मिलों में बनाये गये सूती कपड़ों में १ अरब ८० करोड़ गज कपड़े की तथा तीन लाख टन शक्कर की कमी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी। अखबारी कागज में १ करोड़ २० लाख टन के लक्ष्य के विरुद्ध केवल २८,००० टन कागज का ही उत्पादन किया जा सकेगा। इसी प्रकार उर्वरकों के उत्पादन में भी ४ लाख टनों की कमी पड़ेगी।

तीसरी योजना के पहिले तीन वर्षों में कृषि क्षेत्र में बड़ी खराब रुकावट पैदा हो गई है। देश तीसरी योजना में निर्धारित लक्ष्यों से कहीं दूर है। आज हम खाद्यान्नों के १० करोड़ टन के लक्ष्य से २ करोड़ टन पीछे हैं। इसी प्रकार अन्दाजा है कि तीसरी योजना के लक्ष्यों से कपास की ७ लाख गांठों की और २३ लाख टन तिलहन की कमी होगी।

हमारी योजना के रुख की वजह से ही, जो योजनाओं की अर्थव्यवस्था के लिये कराधान और घाटे की अर्थ-व्यवस्था पर काफी निर्भर करता है, योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारी नाकामयाबी मिली है। भारी कराधान की वजह से बचतें और निवेश अवरुद्ध होते हैं। पिछले दो बजटों ने पूंजी बाजार को कुंठित कर दिया है; भारी कराधान और बढ़ते हुये मूल्यों की दोहरी चपेट से पूंजी लगाने वाले हतोत्साहित हो गये हैं। तीव्र आर्थिक-वृद्धि स्थापित करने की नियोजित अर्थव्यवस्था के उद्देश्यों के तीव्र विकास के विरुद्ध आज देश की अर्थ-व्यवस्था स्थिर-सी हो गई है।

हमारे देश में नियोजन इस उद्देश्य से लागू किया गया कि आर्थिक वृद्धि तेजी से हो और जनता का जीवन-मान बढ़े। लेकिन भारी कराधान ने लोगों के जीवनमान को घटा दिया है और उनको काफी कठिनाइयों में डाल दिया है। साधनोंके अधिकतर भाग को, जिसे खासतौर से विकासीय उद्देश्यों के लिये इकट्ठा किया जाता है, सरकार के खपत-खर्च में उपयोग में लाया जाता है। इस नागरिक व्यय में यहां तक वृद्धि हुई है कि वह १९५५-५६ के समस्त बजट राजस्व का दुगुना अर्थात् ४८१.२ करोड़ रुपये हो गया है, और १९६२-६३ में वह १,०४६ करोड़ रुपये हो गया है। आगे १९६३-६४ में यह खर्च १,१३३ करोड़ और १९६४-६५ बजट में यह मात्रा बढ़कर १,३२४ करोड़ हो गई है।

भारत जैसे अल्पविकसित देश में जहां लोग बड़ी कठिनाई से गुजर बसर करते हैं, भारी कराधान और घाटे की वित्त-व्यवस्था से प्राप्त किये गये साधनों के जरिये किये जाने वाले आर्थिक वृद्धि के सैद्धान्तिक प्रयत्न नाकामयाब ही होंगे। यथार्थवादी आर्थिक नीतियों को अपनाने से, जो जनता पर भारी कर भार नहीं डालती हैं, आर्थिक वृद्धि काफी जल्द बढ़ेगी और जिससे सरकार को, कराधान की कम दर होने के बावजूद भी लोगों की आमदनी बढ़ने के कारण अधिक राजस्व प्राप्त होगा।

## १९६४ का सिंहावलोकन

(पृष्ठ १० का शेष)

को है। इस वर्ष भी हमें उनका सहयोग मिलता रहेगा, इसका हमें विश्वास है।

इस सिंहावलोकन को समाप्त करने से पूर्व इस वर्ष की अन्तिम महत्त्वपूर्ण घटना की ओर निर्देश करना आवश्यक समझते हैं। वर्ष के अन्त में भारत सरकार ने करीब १ हजार वामपंथी कम्यूनिस्ट नेताओं और कार्य-कर्त्ताओं को भारत रक्षा कानून के अंतर्गत गिरफ्तार कर लिया है। यह कदम बहुत प्रशंसनीय, यद्यपि चिर विलम्बित है। यद्यपि 'सम्पदा' का क्षेत्र राजनीति नहीं है तथापि यह अराष्ट्रीय तत्व न केवल भारत की राज-नीतिक अशान्ति के कारण बन रहे थे, बल्कि भारत की प्रगतिशील अर्थ व्यवस्था को भी नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुले हुए थे। यदि हमारी नम्र सम्मति में दूसरे कम्यूनिस्ट नेताओं पर भी जो भारत की राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता के लिए विघ्नकारी हैं, कठोर प्रतिबन्ध लगाया जाता तो अधिक लाभकर होता।

\+ \+ \+

१९६४ का वर्ष अपनी सफलताओं या विफलताओं के साथ व्यतीत हो गया। अब तो हमें यह देखना है कि १९६५ में हम अधिक तेजी के साथ प्रगति करें और सम-स्याओं का यथार्थ के साथ समन्वय करते हुए मुकाबला करें। मंहगाई की विकटतम समस्या यदि हम कुछ भी हल कर सके तो १९६५ का वर्ष सफल कहलायेगा। इसी वर्ष हमें तीसरी योजना की शिथिल प्रगति को भी दूर करना है। यह नया वर्ष समस्त विश्व, सम्पूर्ण देश और भारत के सब नागरिकों के लिए सुखद और हर्षवर्धक हो, यही प्रभु से प्रार्थना है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी वर्तमान कर-प्रणाली

परसराम मतवानी बी० काम,

चौथी पंचवर्षीय योजना के बारे में अब तक जो विचार विमर्श हुआ है, उससे यह पता चलता है कि योजना आयोग द्वारा सुझाये गये आकार को मान्यता दी जावेगी, जिसके अनुसार इस योजना को पूरा करने के लिए करीब २१,५०० करोड़ से २२,५०० करोड़ रुपयों तक की आवश्यकता होगी।

यदि योजना के इस आकार को अन्तिम रूप से स्वीकार कर लिया जाता है तो करों के वर्तमान स्तर के अनुसार करीब २,५०० से ३,००० करोड़ के अतिरिक्त साधन जुटाने होंगे। यह कार्य किस प्रकार सम्पन्न हो, इसके लिए केन्द्रीय वित्तमंत्री को फैसला करना होगा। इस सम्बन्ध में एक बात निश्चित रूप से कही गई है कि इस योजना को पूरा करने के लिए घाटे के बजट का सहारा नहीं लिया जावेगा। इस आश्वासन से काफी आशा बंधती है, क्योंकि हमारे देशकी वर्तमान आर्थिक स्थिति कुछ ऐसी हो गई है कि यदि मुद्रा स्फीति को बढ़ावा देने वाली कोई भी नीति अपनाई गई तो उससे बड़ी हानि होगी।

सरकार ने मंहगाई को रोकने के लिए कई प्रयत्न किए हैं, परन्तु इस ओर अभी सफलता के कोई आसार नहीं दिखाई देते। इसका कारण यह है कि आज जो मंहगाई की समस्या हमारे सामने विकराल रूप में आकर खड़ी हुई है, वह पिछले कुछ ही महीनों का परिणाम नहीं है, परन्तु पिछले कई वर्षों की नीतियों तथा योजनाओं का परिणाम है। यदि यह समस्या हाल में ही उत्पन्न हुई होती तो सरकार द्वारा अब तक उठाये गए कदमों से उसका निदान हो गया होता, परन्तु वास्तविकता यह नहीं है।

इस समय सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि अगली योजनाओं के लिए कोई ऐसा कदम न उठाया जावे जिससे अर्थ व्यवस्था की प्रवृत्ति मुद्रा प्रसार की ओर हो। इसके विपरीत इस मंहगाई को रोकने के लिए आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण करना होगा और उस उद्देश्य

जब आगामी बजट की अत्यन्त उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है, यह लेख अधिक सामयिक, उपयोगी और ज्ञानवर्धक होगा।

को पाने के लिए वर्तमान कर-प्रणाली में फेर बदल करना होगा।

सन् १९५१ से, जब से देश में योजनाबद्ध विकास की नीति का प्रादुर्भाव हुआ, कर-प्रणाली में काफी परिवर्तन किए गए हैं और करों की दर में भी वृद्धि की गई है। ऐसा करना स्वाभाविक है, क्योंकि अब सरकार को करों द्वारा आमदनी करने की आवश्यकता केवल राज कार्य चलाने के लिए ही नहीं, परन्तु विकास कार्य के लिए पड़ती है जिन पर राजकार्य से कई गुना अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले केवल राजकार्य चलाने के लिए ही सरकार को कर लगाने पड़ते थे।

करों के दर के बारे में सरकारी क्षेत्रों में कहा जाता है कि हमारे देश में कर और भी अधिक बढ़ाये जा सकते हैं, क्योंकि वर्तमान कर राष्ट्रीय आय के अनुपात से कम है। इस बात को साबित करने के लिए और देशों की मिसाल दी जाती है, परन्तु यहां की राष्ट्रीय आय की अन्य देशों की राष्ट्रीय आय के साथ तुलना नहीं की जा सकती। देखने की बात तो यह है कि यह राष्ट्रीय आय देश में किस प्रकार से बंटी हुई है। कुल जनसंख्या के आधार पर प्रति व्यक्ति आय निकलने से जो परिणाम निकलते हैं, यदि उन पर करों को आधारित किया जावे तो परिणाम बड़े ही गलत और भ्रामक होंगे।

देखना तो यह है कि यह आय विभिन्न वर्गों में किस प्रकार से बंटी हुई है। इसमें हमें यह पता लगेगा कि राष्ट्रीय आय का एक बहुत ही बड़ा भाग मुट्ठी भर लोगों के हाथों में केन्द्रित है, जबकि बची हुई आय करोड़ों देशवासियों में बंट जाती है। यदि अधिक नहीं तो देश के २५-३० परिवारों की आय को अलग से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाल कर बाकी आय के आधार पर प्रति व्यक्ति आय निकाली जावे तो असलियत सामने आ जावेगी। इस प्रकार आंकी गई आय को ध्यान में रखकर यदि अन्य देशों के साथ (वर्ग दर वर्ग के आधार पर) भारत की तुलना की जावे तो हमें पता लगेगा कि यह बात सर्वथा निराधार है कि इस देश की जनता की कर-भार वहन करने की क्षमता वर्तमान करों के स्तर से अधिक है। बल्कि हम देखेंगे कि करों को घटाने की और कर-प्रणाली में कई प्रकार के परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

इसके विपरीत यदि छिपी हुई धनराशि (ब्लैक मनी) को ढूंढ़ निकाला जावे और इस प्रकार की व्यवस्था की जावे जिससे करों को बचाना सम्भव न हो तो और अधिक तथा नये कर लगाने की कोई आवश्यकता ही न रहे। बड़े-बड़े उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा करों की चोरी करने का प्रभाव यह पड़ता है कि करों का सारा भार देश की गरीब जनता को उठाना पड़ता है।

## प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर

जहां तक कर-भार वहन करने की क्षमता का प्रश्न है, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों के बारे में अलग अलग विचार करना होगा। प्रत्यक्ष करों की दर बढ़ाने में सरकार को काफी हिचकिचाहट होती है, क्योंकि यह विचार किया जाता है कि ऐसा करने से देश में पूंजी के निर्माण पर बुरा असर पड़ेगा, जो हमारे देश की आर्थिक उन्नति में बाधक होगा। इस समय हमारे देश में निजी पूंजी का महत्व है और यह महत्व बना रहेगा, क्योंकि हमारे देश में मिली जुली अर्थ व्यवस्था को मान्यता दी गई है और सरकारी क्षेत्र के साथ साथ निजी क्षेत्र को बढाने का पूरा पूरा अवसर और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। यदि निजी क्षेत्र के हितों का उचित ध्यान नहीं रखा गया तो देश की आर्थिक उन्नति की गति मन्द पड़ जावेगी। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि निजी क्षेत्र के हितों की रक्षा करने के वास्ते अप्रत्यक्ष करों को बढा दिया जावे और इस प्रकार सरकारी आय की कमी को पूरा किया जावे। कारण यह है कि अप्रत्यक्ष करों का भार उपभोक्ताओं पर पड़ता है, जिनमें अधिकांश की आय इतनी कम है कि पेट भर भोजन करना भी उनके लिए मुश्किल है।

हमारे देश में समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना करने का निश्चय किया जा चुका है और इस ध्येय को पाने के लिए उपयुक्त कर-प्रणाली का होना अत्यन्त आवश्यक है। यह एक साधन है जिसके सही उपयोग से विभिन्न वर्गों की आय की वर्तमान विषमताओं को काफी हद तक दूर किया जा सकता है। सरकार को अपनी कर-नीति इस प्रकार की बनानी चाहिए कि एक ओर तो आय अधिकतम हो, जिससे योजनाओं को सफलता से पूरा किया जा सके और दूसरी आर्थिक विषमताएं दूर हों।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो भी तरीके अपनाये गये हैं, उनसे आय और सम्पत्ति के वितरण की दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई है बल्कि आर्थिक विषमताएं पहले से भी अधिक बढ गई हैं। धनी वर्ग अधिक धनवान हो गया है और गरीबों की स्थिति अधिक बिगड़ गई है। मध्यम वर्ग की हालत तो बस दो पाटों के बीच में आने जैसी हो रही है। यह चिंताजनक समस्या है, जिस पर सरकार को गम्भीरता से विचार करना चाहिए और ऐसी नीति अपनानी चाहिए, जिससे स्थिति और अधिक न बिगड़े।

सम्पदा ने १३ वर्ष तक
आपकी सेवा की है।
अब आपका कर्तव्य है कि
उसे अधिक उपयोगी
बनाने के लिए
आप उसकी सहायता करें।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# भयंकर मँहगाई : कारण और निवारण

श्री कमलनयन बजाज, चेयरमेन पंजाब नेशनल बैंक

आज की भीषणतम समस्या अन्न संकट है। इसी समस्या पर विभिन्न विचारकों के विवेचन और परामर्श इन पृष्ठों में दिये गये हैं। ये सब लेख विचारणीय और मननीय हैं।

सभी पदार्थों के विशेषकर खाद्यान्न के मूल्यों में वृद्धि के कारण इस समय देश अत्यन्त नाजुक एवं गम्भीर परिस्थितियों से गुजर रहा है। सरकार इस स्थिति के प्रति अत्यन्त सतर्क है और इस दिशा में उचित कदम उठाकर वह इस स्थिति को ठीक रखने का पूर्ण प्रयत्न कर रही है।

किसी तरह तात्कालिक रूप से इस स्थिति पर नियंत्रण किया गया है, किन्तु अभी तक इस समस्या का अन्तिम समाधान नहीं हो पाया है। अभी इसका अस्थिर रूप से कुछ समाधान कर दिया गया है, किन्तु फिर भी भविष्य में इस गम्भीर परिस्थिति का खतरा बना हुआ है। अतः हमें इस परिस्थिति पर नये ढंग से विचार करना होगा और उन तथ्यों की जिनके कारण कि यह गम्भीर परिस्थिति उत्पन्न होती है, जानकारी प्राप्त कर उसका स्थायी हल निकालना पड़ेगा।

## इस परिस्थिति के कारण

इस विकट परिस्थिति को उत्पन्न करने वाले प्रमुख कारण निम्न लिखित हैं :—

१. मुद्रा-स्फीति, घाटे का बजट एवं प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि। २. उत्पादन में कमी एवं मनोवैज्ञानिक रूप से अभाव का भय। ३. त्रुटिपूर्ण वितरण एवं क्षेत्रों का कड़ा नियंत्रण, संग्रह और अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति और साधारण रूप से स्वतंत्र व्यापार में अविश्वास।

४. बैंकों द्वारा ऋण में कमी किए जाने के कारण अलिखित रुपये के द्वारा अन्न का संग्रह, भूमि पर सीमा संबन्धी नियंत्रण, स्वर्ण नियंत्रण, ग्रामीण क्षेत्रों की ऋण ग्रस्तता में कमी, विशेष रूप से महाजनों के कर्जों में कमी, ऊंचे नोटों की वापसी की अफवाह तथा आवश्यक सेवाओं की शिथिल प्रगति आदि आदि हैं।

हमारी अर्थव्यवस्था में उपर्युक्त कारणों का जब तक आवश्यक एवं उचित समाधान नहीं होता, तब तक हमारी अर्थव्यवस्था स्थिर नहीं हो सकती तथा यह समस्या भविष्य में भी हमें आतंकित करती रहेगी। अतः इन सभी समस्याओं के समाधान की आवश्यकता है।

घाटे के बजट के उपयोग से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है। इससे लोगों को थोड़ी वस्तुओं पर ही अधिक रुपये की आय होती है। इस परिस्थिति में कीमतों को बढ़ने से रोकना सम्भव नहीं है। इसका एक लम्बा एवं स्थायी उपाय एक ओर उत्पादन में वृद्धि है, जिससे कि मांग एवं पूर्ति में सन्तुलन आ सके और दूसरी ओर बचत की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने और रुपये को उपयोगी कार्यों में लगाने के लिए आवश्यक आर्थिक कदम उठाये जाने चाहिएं।

## त्याग की भावना

जो लोग अच्छा जीवन स्तर बिताने के अभ्यस्त हैं और अपने जीवन स्तर को किसी प्रकार नीचा गिराना नहीं चाहते, उनको त्याग व संयम की भावना की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए। यह काम तभी हो सकता है, जब राष्ट्रीय नेता, मंत्रीगण एवं सरकार के अन्य उच्च पदाधिकारी अपनी कार्य कुशलता, मितव्ययता, आडम्बरहीनता और सादगी का उदाहरण स्वयं प्रस्तुत करें एवं अनुरूप वातावरण निर्मित करें। गांधीजी ऐसा ही करते थे, लेकिन उनके बाद लोगों में त्याग की वह भावना नहीं रह सकी।

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि का स्तर इतना ऊंचा हो गया है कि लोग अधिक से अधिक कमाने की ओर प्रेरित हो रहे हैं, जिससे कि करों के भुगतान के बाद भी उनके पास इतना धन शेष रह जाये कि वह अपने अभ्यस्त जीवन स्तर को ठीक रख सकें। किसान अधिक ऊंची कीमत प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, मजदूर अधिक आय प्राप्त करना चाहता है, और इसी प्रकार व्यापारी एवं निर्माणकर्त्ता भी अतिरिक्त लाभ कमाने का प्रयत्न करता है जिससे कि उसकी वास्तविक आय कायम रह सके।

यह सब कारण मुद्रा-स्फीति को और भी अधिक अग्रसर करते हैं और कीमतों को बढ़ाते हैं। वास्तव में कर प्रणाली तथा आर्थिक नीति इस प्रकार की होनी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए कि उत्पादक का साहस बढ़ता रहे और स्वयं ही इतनी बचत कर सके कि उसे अतिरिक्त लाभ कमाने का लोभ न हो, और जिसके फलस्वरूप स्थिर व आत्मनिर्भर अर्थ व्यवस्था ठीक रह सके।

## मूल्यों में वृद्धि

जहां तक खाद्यान्नों में मूल्य वृद्धि का सम्बन्ध है इसका प्रमुख कारण त्रुटिपूर्ण वितरण व्यवस्था एवं अभाव का मनोवैज्ञानिक भय है। यही भय कीमतों में किसी न किसी प्रकार वृद्धि का कारण बनता है।

देश में खाद्यान्न का उत्पादन पिछले ३ वर्षों से ८० मिलियन टन के करीब स्थिर रहा है। वह अधिक है अथवा कम, फिर भी हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ३-४ वर्ष में मिलियन टन अनाज का आयात विदेशों से करना पड़ता है जो कि हमारे उत्पादन का ५ प्रतिशत है। साथ ही हमारी जनसंख्या वार्षिक २ प्रतिशत की दर से बढ़ रही है, इस प्रकार कुल घाटा ७ प्रतिशत के करीब रहता है।

## उत्पादन वृद्धि सम्भव है

अगर वास्तविक रूप से इस दिशा में उचित प्रयत्न किए जावें, तो इस कठिनाई का दूर करना एवं उत्पादन बढ़ाना कोई असम्भव कार्य नहीं है और कुछ ही वर्षों में हम इस अभाव को दूर कर सकते हैं। इस समय फिलहाल हम अनाज का आयात कर एवं उचित वातावरण उत्पन्न कर और बर्बाद करने की प्रवृत्ति को रोक कर स्थिति को नियन्त्रण में रख सकते हैं।

इस वर्ष के उत्पादन का अनुमान ७९ मिलियन टन था, इसलिए विशेष चिन्ता का कारण नहीं है। साधारण रूप से अन्न के आयात एवं उचित वितरण से इस परिस्थिति को सम्भव रूप से सुलझाया जा सकता है। लेकिन एक बार संकट व भय जिस क्षण आरम्भ हो जाता है, उसी क्षण यह कठिन रूप धारण कर लेता है। प्रभावकारी कदम उठा कर लोगों में विश्वास उत्पन्न किया जा सकता है और अनुचित संग्रह करने की प्रवृत्ति को रोका जा सकता है।

समस्त देश में खाद्य समस्या के समाधान के लिए सुसंगठित प्रयत्न होना आवश्यक है। आखिरकार देश विभिन्न राज्यों के एक संगठन का ही नाम है। अतः सरकार को यह देखना चाहिए कि किन राज्यों में अन्न आवश्यकता से अधिक है और किन राज्यों में कम। तत्पश्चात आवश्यकता से अधिक अन्न का कमी के राज्यों में समान वितरण होना चाहिए। उन राज्यों को जिनके पास अन्न की अधिकता है, इस बात के लिए अनुमति देना कि वे भविष्य में अन्न की कमी के भय से अतिरिक्त अन्न को अपने पास रोकें, बहुत ही गलत काम है।

अगर बाद में अन्न की कमी हो जाती है, तो इसके लिए अन्न का आयात ही एक मात्र उपचार है। क्षेत्र नियंत्रण सख्त होने का ही यह परिणाम है कि पंजाब में गेहूँ का भाव ५०) रु. क्विंटल, दिल्ली में ५५ से ६० रु. क्विंटल, परन्तु महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश जैसे स्थानों पर जहां कि अन्न की कमी है, गेहूँ का भाव ११० रु. क्विंटल या उससे अधिक है। ऐसी स्थिति में परस्पर पड़ोसी राज्यों में अन्न का तस्कर व्यापार पुलिस की सहायता से या उसकी सहायता के बिना होना आश्चर्य की बात नहीं है। इससे भी अन्न का मूल्य और अधिक बढ़ता है।

जबकि कमी वाले प्रदेशों में अतिरिक्त उत्पादन करने वाले प्रदेशों के मुकाबले अन्न का भाव दुगना है, तब अतिरिक्त उत्पादन वाले राज्यों के किसान क्षेत्र नियंत्रण के कारण अधिक आय प्राप्त करने से वंचित रहते हैं क्योंकि वे क्षेत्रीय नियंत्रण के कारण कमी वाले प्रदेशों को अधिक अन्न नहीं दे सकते।

अगर क्षेत्रीय नियंत्रण को एकदम समाप्त नहीं किया जा सकता तो कम से कम क्षेत्रों का विभाजन ऐसा होना चाहिए कि एक क्षेत्र में कम अन्न वाले और अधिक अन्न वाले दोनों प्रदेश आ जाएं, जिससे कि अन्न का सन्तुलन रखा जा सके।

## अनुभवी व्यापारी

खाद्यान्न के अभाव की समस्या आम तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में इतनी नहीं है, जहां अन्न का उत्पादन होता है। खाद्यान्न की कमी अधिकतर बन्दरगाहों एवं शहरी क्षेत्रों में है। इन क्षेत्रों में आयात किए गए गेहूँ को पहुँचाकर इस अभाव को दूर किया जा सकता है। यह कीमत इतनी कम होनी चाहिए कि गांवों में अन्न खरीदकर बेचने का प्रलो-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भन व्यापारी को न रहे और अन्तर्वर्ती प्रदेश अपनी जरूरत स्वयं पूरी कर सकें। शहरी क्षेत्रों में मांग की कमी के कारण भाव भी शनैः शनैः कम हो सकते हैं तब यातायात का प्रबन्ध भी सुविधाजनक हो जायगा।

आयात किए गए अन्न का कुछ भाग व्यापारी के लिए खुला होना चाहिए, जिससे कि वह बन्दरगाह से लेकर अभाव वाले अन्तर्वर्ती प्रदेश को अनाज भेज सके। ऐसा करने से मनोवैज्ञानिक रूप से ऐसे वातावरण का निर्माण होगा, अभाव का भय नहीं रहेगा। दूसरी ओर व्यापारी, किसान, संग्रहकर्त्ता अपनी संग्रह करने की प्रवृत्ति को छोड़ देंगे, क्योंकि उन्हें सर्वदा मूल्यों में कमी होने का भय सताता रहेगा।

इस समस्या के समाधान के लिए भय, अविश्वास घृणा आदि की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसके लिए समझदारी एवं दृढ़ विश्वास एवं आस्था की आवश्यकता है। अनुभवी व्यापारियों के भिन्न माध्यम से अन्न के समुचित वितरण की कोई दूसरी बेहतर प्रणाली नहीं है। व्यापारियों को आवश्यकता के अनुरूप अन्न भंडारों से उसी मात्रा में अन्न देना कोई दुष्कर कार्य नहीं है।

अगर इन व्यापारियों को खुला व्यापार करने की अनुमति दी जाय तो कमी वाले राज्य और अतिरिक्त उत्पादन वाले राज्य में कीमतों का अन्तर उससे अधिक नहीं होगा, जो यातायात तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए आवश्यक होता है। इस प्रकार लाभांश की मात्रा नियत कर देनी चाहिए।

हम इस बात का अनुभव कर सकते हैं कि अन्न का उचित संग्रह एवं जमाखोरी दो अलग २ बात हैं। जिस अन्न को व्यापारी उचित व्यापार के लिए अपने भंडारों में खुले रूप से एकत्र करता है और आवश्यकता पर उसे खुले रूप से बाजारों में बेचता है, वह अन्न का खुला संग्रह है। इस के लिए व्यापारी की निन्दा नहीं की जा सकती। इस उपयोगी संस्था को बिना किसी अधिक अच्छी व्यवस्था स्थापित किये नष्ट कर देना राष्ट्र की दुःसेवा है जो अतिरिक्त धन से आयोजित व संग्रहीत अन्न को आवश्यकता होने पर खुले रूप से न बेचकर छिपा लेता है और इस पर अधिक धन कमाने की आशा में संलग्न रहता है। ऐसे संग्रह की मात्रा का अनुमान नहीं किया जा सकता। यह समाज विरोधी कार्य है। ऐसे व्यक्तियों को पकड़ना चाहिए और उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा से वंचित करने के लिए दंड देने चाहिए।

इसके अतिरिक्त बैंक आदि की ओर से उदारता पूर्वक ऋण और व्यापार को वास्तविक व्यापारियों को कम दर से ऋण मिलने की भी सुविधा मिलनी चाहिए और व्यापार को कम लाभजनक बना देना चाहिए जिससे जमाखोरी का प्रलोभन ही कम हो जाए। अगर इसके बाद भी कोई ऐसा करता पाया जाय तो उसे कठोर दंड देना चाहिए। भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ भी कार्यवाही की जानी चाहिए, जिनके साथ मिलकर समाजविरोधी तत्व ऐसा दुष्कृत्य करते हैं। वास्तविक व्यापारियों को उचित सुविधाएं देने से समाजविरोधी तत्वों की संस्था को जीवित रहने का कोई प्रलोभन भी नहीं रहेगा।

थोक एवं खुदरा में अन्न के भाव विभिन्न क्षेत्रों में काफी समय पहले ही श्रेणी के अनुरूप नियत कर देने चाहिए, जिससे कि व्यापारी ग्राहकों से अधिक पैसा न ले सकें। अगर व्यापारियों को पहले से सतर्क कर दिया जायेगा तो ऐसी शिकायत का कारण ही नहीं पैदा हो सकेगा। अगर इस पर भी कोई व्यापारी अधिक कीमत पर अन्न खरीदते और बेचते हैं और अन्न की कमी के कारण अधिक धन कमाना चाहते हैं तो ऐसे समाजविरोधी तत्वों को सख्त दण्ड मिलना चाहिए।

अगर सरकार व्यापारियों की सेवा का उपयोग करना चाहती है, तो उनके सहयोग आदि के लिए क्षेत्रीय कांफ्रेन्स आदि संगठित करनी चाहिए। उन्हें दृढ़ विश्वास दिलाकर अपने कर्त्तव्य की ओर प्रेरित किया जाना चाहिए और अपने देश के प्रति उनके कर्त्तव्यों का स्मरण कराना चाहिए। उन्हें न्यायानुकूल पारिश्रमिक भी मिलना चाहिए। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि व्यापारी लोग भी इसके लिए सरकार को हार्दिक सहयोग देने के लिए आगे बढ़ेंगे।

## बैंकों द्वारा ऋण

रिजर्व बैंक ने परिगणित बैंकों को यह निर्देश दिया है कि वह अनाज की अमानत पर व्यापरियों को कम रुपया



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दें, ताकि सट्टे बाजी की प्रवृत्ति न बढ़े। किन्तु इस निर्देश ने विपरीत परिणाम पैदा किया है। जब बैंक रुपया देने से इन्कार करते हैं तब स्वभावतः व्यापारी अन्य स्रोतों से रुपया लेने और अनाज को अधिक कीमतों पर बेचने पर विवश होते हैं। सामान्य जनता इस अनाज को नहीं खरीद सकती और सम्पन्न व्यक्ति तात्कालिक आवश्यकता न होने पर भी इसे खरीद लेते हैं। ऐसे व्यक्ति अनाज को भिन्न-भिन्न स्थानों पर छिपाकर जमा करते हैं। इसके लिए उन्हें अपने अलिखित या गुप्त धन का प्रयोग करना पड़ता है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसा समाजविरोधी कार्य करते हुए वे सरकारी कर्मचारियों को भी रिश्वतखोर बना देते हैं। इस तरह जमाखोरी, अधिक संग्रह, ब्याज की ऊंची दर और दूसरे खर्च मिलकर अनाज की कीमत को बहुत ऊंचा कर लेते हैं।

इसलिए बैंकों को उचित दर पर उदारतापूर्वक ऋण देने की अनुमति प्रदान करनी चाहिए। बैंक की दर कम होनी चाहिए, जिससे कि व्यापारी अलिखित धन का उपयोग करने और दूसरे स्रोतों से रुपया लेकर अधिक ब्याज देने को विवश न हो। बैंक के पास किए गये भंडारों की मात्रा की पूर्ण जानकारी होना अनिवार्य है। बैंक की विभिन्न शाखाओं के लिए आवश्यक है कि वह अपने ग्राहकों को दिये गये ऋण और जमा किए गए भंडार तथा अन्य जानकारी एकत्र का जिला अधिकारी के पास भेज दें।

जब कभी आवश्यक हो सरकार ऐसे भंडारों को किसी खास एजेन्सी द्वारा अथवा सीधे जनता को बेचने की व्यवस्था करे। अगर आवश्यक हो तो इसके लिए विशेष अधिकारों द्वारा उचित व्यवस्था की जाए, जिससे कि संकटकाल में अथवा आवश्यकता पर इसका सदुपयोग हो सके। इससे न तो भंडारों को बहुत छिपाया जा सकेगा और न उसका बहुत दुरुपयोग ही किया जा सकेगा।

विमुद्रीकरण अथवा ऊंचे करेंसी नोटों की कीमत समाप्त करने (Demonetization) की हल्की बातें करना ठीक नहीं है। इससे भी मुद्रा प्रसार बढ़ने में सहायता मिलेगी। वे लोग नोट अपने पास रखने की बजाय संग्रह में लगावेंगे और इस तरह मुद्रास्फीति बढ़ेगी। ऐसी अफवाहें अधिकारियों द्वारा फैलने से एकदम रोक लगानी देनी चाहिये। ग्रामीण क्षेत्रों में मुद्रा के सम्बन्ध में दृढ़ विश्वास शिथिल होता जा रहा है और कम से कम १०० रु० के नोट लेने से इन्कार किया जाने लगा है, जो कि पहले भी हुआ था।

## किसान

कृषक वर्ग जो बहुत दिनों से ऋण भार से दबा हुआ रहा है, अब अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न अवस्था में है और अब अधिकतम किसान गांव के महाजनों से ऋण नहीं लेते। अब वह सहकारी समितियों तथा तकावी आदि अन्य ऋण सरकार से लेते हैं, जिसे कि चुकाने में उन्हें विशेष कठिनाई नहीं होती। यह लोग अधिकतर अपनी बचत को पहले जमीन पर अथवा स्वर्ण आभूषणों पर खर्च करते थे, परन्तु स्वर्ण नियंत्रण और भूमि की नियत मात्रा हो जाने के बाद स्वर्ण और भूमि में रुपया लगाना बन्द हो गया है और अनाज जमा करने लगे हैं।

आम तौर पर किसानों को व्यापारी फसलों से रुपया आसानी से मिल जाता है और उस रुपये से वह अपने घर का खर्च, सरकार का महसूल और ऋण की किश्तें आसानी से चुका सकते हैं। इसलिए उन्हें अपनी अनाज की फसल बेचने की जल्दी नहीं होती। इसी समय उनको मालूम होता है कि बाजार में अनाज की कमी है और कीमतें ऊंची हो रही हैं। तब अन्न संग्रह की प्रवृत्ति भविष्य के लोभ में और भी अधिक हो जाती है। दीर्घवर्ती दृष्टि से किसान की अधिक जमा करने की क्षमता में वृद्धि अच्छी है। वे अब यह भी सोचने लगे हैं कि उन्हें अनाज कब बेचना चाहिए। यदि गांव में अनाज के अच्छे गोदाम बनाये जायें तो किसान उनमें अपने अनाज का संग्रह कर सकता है और आवश्यकता होने पर यह अनाज बाजार में आ सकता है।

## जहाजों का लदान न होना

माल लादने वाले कर्मचारियों की यूनियन धीमे कार्य करो की नीति अपनाती है, जिससे अन्न का लदान और उतराव ठीक नहीं होता। वास्तव में यह देशवासियों के प्रति घोर अपराध है। जबकि देश में अन्न की कीमत बढ़ रही है और अन्न का अभाव है, जहाज से माल शीघ्र

(शेष पृष्ठ ५० पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

70000
113088

# चावल : करोड़ों का भोजन

चावल दुनिया की आधी जनसंख्या का मुख्य भोजन है। दुनिया के चावल-उत्पादक देशों में भारत प्रमुख है। यद्यपि हमारे किसानों ने प्रति एकड़ ६००० से ९००० पौंड तक चावल पैदा कर दिखाया है, मगर औसत प्रति एकड़ उपज कम है।

दुनिया का ९५ प्रतिशत चावल दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में ही होता है और खपता है। भारत और चीन में सबसे अधिक चावल होता है। उसके बाद पाकिस्तान, इन्डोनेशिया, थाईलैंड और बर्मा का नम्बर है।

देश में चावल की खेती का रकबा, अनाज के कुल रकबे के ३० प्रतिशत से भी अधिक है। ९५ प्रतिशत चावल आंध्र प्रदेश, आसाम, बिहार, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में होता है।

## प्रति एकड़ उपज कम

यद्यपि चावल उपज-प्रतियोगिता में हमारे किसानों ने प्रति एकड़ ६००० से ९००० पौंड तक चावल पैदा कर दिखाया है, परन्तु देश की औसत पैदावार ५६८ से ८१० पौंड प्रति एकड़ से अधिक नहीं है। विदेशों के मुकाबले यह बहुत ही कम है। मसलन स्पेन में चावल की उपज प्रति एकड़ ३२३४ पौंड, इटली में ३१०५ पौंड, संयुक्त अरब गणराज्य में ३०६२ पौंड, जापान में २२५१ पौंड, कोरिया में १९५० पौंड, अफ्रीका में १८९० पौंड, अमरीका में १३९० पौंड और इन्डोनेशिया में १०३० पौंड है। अर्थात् दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भी चावल की प्रति एकड़ उपज भारत से अधिक हो रही है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में चावल की खेती के अध्ययन से पता चलता है कि इन देशों ने खाद और उर्वरकों का अधिक इस्तेमाल करके चावल की पैदावार बढ़ाई है। जापान में कूड़े और मल की खाद पर बहुत जोर दिया जाता है। हमारे यहां किसान ज्यादातर गोबर की खाद देते हैं, क्योंकि यहां यही सुलभ है। परन्तु यह खाद पूरी नहीं पड़ती, क्योंकि गोबर के उपले जलाने के काम आते हैं। अतः खेतों में गोबर पहले से कम डाला जा रहा है, जबकि निरन्तर खेती के कारण जमीन की उर्वरता घट रही है और पहले से अधिक खाद देने की जरूरत है।

देश में प्रति एकड़ उपज न बढ़ने का दूसरा कारण, सिंचाई की कमी भी है। अभी भी खेती वर्षा के भरोसे है। तीसरा कारण खेती के पुराने तरीके हैं। अनुभव से पता चला है कि कूड़े व मल की खाद और उर्वरक अधिक से अधिक डालने से उपज निश्चित रूप से बढ़ती है। भारत की धरती में नाइट्रोजन, फास्फोरस आदि तत्वों की बड़ी कमी है। प्रयोग करके ऐसा देखा गया है कि इन तत्वों के डालने से पैदावार २० से २०० प्रतिशत तक बढ़ गई।

स्वराज्य के बाद सरकार ने धान की उपज बढ़ाने पर ध्यान दिया। १९५१ में पहली पंचवर्षीय योजना शुरू होने पर इस ओर विशेष ध्यान दिया गया। इसके लिए सिंचाई की नहरें व कुएं बनाये गये। खाद और उर्वरक का प्रयोग बढ़ाया तथा सघन खेती कराई गई। फलस्वरूप पैदावार बढ़ी है। १९५५-५६ में २ करोड़ ७५ लाख टन चावल हुआ था, जबकि १९६३-६४ में ३ करोड़ ६५ लाख टन हुआ।

देश में ८२ अनुसंधान केन्द्र हैं, जहां धान की बढ़िया फसल देने वाली किस्में निकालने का यत्न हो रहा है, जो बीमारी और कीड़ों का भी प्रतिरोध कर सके। देश के हर भाग की जलवायु के उपयुक्त अलग अलग किस्म तैयार की जा रही है। इन केन्द्रों में धान की ४४५ किस्में निकाली गई हैं, जिनसे विभिन्न राज्यों में १० से २०

(शेष पृष्ठ ४९ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भूख से छुटकारे का उपाय

(श्री चिदम्बर सुब्रह्मण्यम, केन्द्रीय खाद्य और कृषि मन्त्री)

मानव जातिके सदासे तीन शत्रु रहे हैं—युद्ध, महामारी और अकाल। इनमें से अकाल आज भी खूंखार मुंह फाड़े खड़ा है। चिकित्सा विज्ञान में प्रगति और सार्वजनिक स्वास्थ्य के उपायों में सुधार के फलस्वरूप रोगों और महामारियों पर काफी हद तक विजय पा ली जा चुकी है। किन्तु, आज भी विश्व की आधी जनसंख्या को या तो पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता या अपर्याप्त भोजन मिलता है। अर्थात् अनाज की कमी या भूख का आज भी विश्व भर में बोलबाला है। यह समस्या तभी हल हो सकती है जब कि सारे देश मिलकर संयुक्त प्रयास करें। इसी कारण विश्वव्यापी भूख से छुटकारा आन्दोलन चलाया गया। इसका यही उद्देश्य है कि सब देश मिलकर उन लोगों को पर्याप्त खाना दिलाएं, जिन्हें कम भोजन मिल रहा है। और ऐसे अधिकांश लोग एशिया तथा दूर पूर्व में है। इस संकट का हमें डट कर मुकाबला करना होगा, वरना २००० ई० तक विश्व की ६ अरब जनसंख्या में से आधे से ज्यादा लोग भूख के शिकार हो जाएंगे।

इसके लिए हमें कृषि का विकास करना होगा, क्योंकि इन देशों के ५० से ८० प्रतिशत तक लोगों की जीविका कृषि पर निर्भर है और कृषि ही अर्थ व्यवस्था का कमजोर अंग है। इसके कई कारण हो सकते हैं, जैसे सामान्य उदासीनता, सीमित साधन, प्रशासनिक विफलताएं, उपकरणों, बीजों आदि की कमी, पिछड़े हुए तरीके आदि। इस समस्या को हल करने के लिए सभी स्तरों पर एक साथ प्रयत्न करने होंगे। इस समस्या पर करोड़ों किसानों का भविष्य निर्भर है, अतः यह बड़ा विकट कार्य है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

भारत ने जनतांत्रिक समाजवाद की स्थापना का लक्ष्य रखा है और प्रत्येक व्यक्ति की दैनिक जीवन की मूल आवश्यकताएं, जिनमें खाद्य मुख्य है, पूरी करने का निश्चय किया है। भारत ने तेजी से अनाज की उपज बढाने, उचित दामों पर खाद्य पदार्थ दिलाने, डेरी, पशु पालन, ऊन का उत्पादन आदि बढा कर किसानों की आय बढाने और पौष्टिक आहार बनाने के कार्यक्रम चलाये हैं : और हमारी पंचवर्षीय योजनाओंमें इन्हें उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। पहली तीन योजनाओं में कृषि कार्यक्रमों पर कुल २,४५० करोड़ रुपये रखे जा चुके हैं।

## आधुनिक तरीके

अनाज की पैदावार बढ़ाना कोई आसान काम नहीं है। सबसे पहले तो खेती के पुराने और परम्परागत तरीकों के स्थान पर वैज्ञानिक तरीकों को चलाना है। वैज्ञानिक ढंग पर खेती करने से ही कृषि का पुनर्गठन होगा। कार्यप्रणाली, ढांचे, उत्पादकता आदि की दृष्टि से भारतीय खेती बहुत पिछड़ी हुई है और इसी वजह से इसकी पैदावार नहीं बढ़ रही है। खेती के पेशे को सुदृढ़ बनाने के लिए यह जरूरी है कि आधुनिक तरीके अपनाए जायं और उर्वरक, कीटाणुनाशक दवाइयां, सुधरे बीज, अच्छे औजार आदि इस्तेमाल किए जायं और सिंचाई तथा ऋण की अच्छी सुविधाएं दी जायं।

पहली पंचवर्षीय योजना के आरम्भ से अनाज की पैदावार ३० प्रतिशत बढ़ी है और अनुमान है कि १९६३-६४ में यह पैदावार ७ करोड़ ९३ लाख ५० हजार टन थी। चौथी योजना में प्रति वर्ष ५ प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि का लक्ष्य रखने का विचार है।

जनसंख्या बढ़ने और आय तथा स्वास्थ्य में सुधार होने से देश में अनाज की मांग तो बढ़ी है लेकिन कृषि के विकास के लिए पर्याप्त साधन नहीं मिल पाये हैं। इन कारणों से हमारी कृषि योजनाओं में अभी बड़ी कठिनाइयां आ रही हैं। अतः सघन खेती जिला कार्यक्रम के माध्यम से कृषि को सुधारने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के द्वारा ५ वर्षों में ४३ से ६० प्रतिशत तक पैदावार बढ़ाई जा सकती है। वैसे तो अच्छे बीजों, उर्वरकों, सुधरे उपकरणों, सिंचाई सुविधाओं, कीटाणु-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाशक दवाओं आदि के इस्तेमाल से सभी जगह खेती की पैदावार बढ़ाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, किन्तु इस उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत कुछ चुने हुए जिलों में वित्तीय, शिल्पिक और प्रशासनिक साधनों में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है । गेहूँ, धान, ज्वार, बाजरे और दालों की खेती में भी यह कार्यक्रम चलाया जाएगा ।

खेती में उर्वरकों के प्रयोग का का भी बहुत महत्व है । यद्यपि अभी उर्वरकों का प्रयोग काफी नहीं बढ़ा है, पर हमारे किसान अब इसके फायदे समझने लगे हैं । तीसरी योजना के अन्त तक देश में ६ लाख ३५ हजार मी० टन नाइट्रोजन और ३५ हजार मी० टन फासफोरिक तेजाब युक्त उर्वरक बनाने की क्षमता हो जाएगी । इसके अलावा चालू वर्ष में ४० करोड़ रु० का उर्वरक आयात करने का विचार है । देश में उत्पादन बढ़ाने के भी पूरे प्रयत्न किए जा रहे हैं ।

## वैज्ञानिक अनुसंधान

खेती के परम्परागत तरीकों के वैज्ञानिकीकरण में अनुसंधान का विशेष महत्व है । भारत में कृषि संस्थाओं ने इस काम में काफी सफलतएं प्राप्त की हैं । इन अनुसंधानों के फलस्वरूप ही देश में पटसन, तम्बाकू, तेलहनों, गन्ने, नारियल आदि की पैदावार बढ़ी है । गेहूँ, धान, बाजरा, मक्का, अरहर, फल-सब्जियों आदि की उपज बढ़ाने के भी कई नये तरीके निकाले गये हैं ।

अनुसंधानों के नतीजों को किसानों तक पहुंचाना जरूरी है । वैज्ञानिक जानकारी के प्रचार पर ही खेती का आधुनिकीकरण निर्भर है । खेती की पैदावार लाखों-करोड़ों किसानों के प्रयत्नों से ही बढ़ेगी और उन्हें जानकारी देने तथा प्रोत्साहित करने का काम विस्तार कार्यकर्त्ताओं, ग्राम सेवकों आदि का है । ये कार्यकर्त्ता ही किसानों को नये तरीके अपनाने, सिंचाई का इस्तेमाल करने, अच्छे औजारों और बीजों के प्रयोग आदि की शिक्षा दे सकते हैं । अतः ये विस्तार कर्मचारी भी कृषि कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण कड़ी है । इन कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है ।

कृषि को आधुनिक बनाने के लिए नए यंत्रों, ट्रैक्टरों आदि का इस्तेमाल भी जरूरी है । इसके लिए कई उद्योग धन्धों का विकास करना जरूरी हो जाता है । खेती के उपकरणों, पम्पों, छिड़काव करने वाले यंत्रों, ट्रैक्टरों आदि के कारखानों का विकास किया जा रहा है । इसके अलावा इस्पात उत्पादन में भी प्रगति हुई है, जिस पर अनेक कृषि सम्बन्धी कारखाने निर्भर हैं । कृषि यंत्रों की मांग पूरी करने के लिए प्रत्येक राज्य में कृषि-औद्योगिक निगम खोलने का विचार है, जो इन चीजों का उत्पादन बढ़ाएंगे ।

## उचित मूल्य

खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए यह भी जरूरी है किसान को उसकी उपज का उचित मूल्य मिले । भारत सरकार एक कृषि मूल्य आयोग स्थापित कर रही है, जो किसानों के लिए उचित मूल्य निर्धारित करेगा । फिलहाल अगली खरीफ और रबी फसलों के लिए सरकार ने किसानों, थोक व्यापारियों और उपभोक्ताओं के लिए उचित दाम घोषित कर दिए हैं । किसान और उपभोक्ता को सटोरियों के चंगुल से बचाने के लिए अनाज व्यापार निगम भी शीघ्र ही खोला जाने वाला है । आशा है कि इन उपायों से किसानों की आर्थिक हालत सुधरेगी और वे पैदावार बढ़ाने की कोशिश करेंगे ।

अनाज और दालों आदि के अलावा अन्य खाद्य पदार्थों की पैदावार बढ़ने के भी प्रयत्न किए जा रहे हैं । भारत में अनाज की खपत बहुत अधिक है । यह जरूरी है कि हम लोग अपने आहार में दूध, दूध की बनी चीजों, फल-सब्जियों आदि अनेक पौष्टिक पदार्थों की मात्रा बढ़ाएं । इससे हमारा आहार पौष्टिक बनेगा और साथ ही किसानों के परिवार वालों आदि को काम धन्धा मिलेगा तथा किसानों की आर्थिक हालत भी सुधरेगी ।

खाद्य पदार्थों के संरक्षण, भरपूर उपयोग और उनकी पैदावार बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक तरीके तथा आधुनिक विधियां अपनानी पड़ेगीं । हमें खेती की ३० करोड़ एकड़ जमीन के ६ करोड़ से भी ज्यादा खेतों के लिए प्रयत्न करना है और इसी से इस समस्या की विशालता का अन्दाज लगाया जा सकता है । वैज्ञानिक और शिल्पिक जानकारी के आधार पर आधुनिक तरीकों के प्रसार से पिछड़ी हुई कृषि व्यवस्था को उन्नत करके ही हम देश की जनता की खाद्य की जरूरतें पूरी कर सकते हैं । ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अनाज के बढ़ते मूल्य

श्री उ० न० ढेबर

●

अनेक विचारकों की सम्मति में लोगों को वर्तमान मूल्य वृद्धि योजित विकास के सामान्य परिणाम-स्वरूप स्वीकार करनी चाहिए और कठिनाइयों को राष्ट्रीय कर्तव्य के रूप में सहना चाहिए। ऐसे विचार ठीक नहीं, क्योंकि देश में पहले से ही अपार दुःख और विपदा व्याप्त है, जो मूल्यों में असामान्य वृद्धि से और भी तीव्र हो गये हैं।

## स्वाभाविक वृद्धि

मूल्य वृद्धि की मात्रा बहुत बड़ी है। जनवरी १९६३ में थोक बिक्री सूचकांक १०८.७ था। जनवरी १९६४ में यह १२० था। जून १९६३ में थोक बिक्री मूल्य सूचकांक १२२.३ था और जून १९६४ में १३५.६। सबसे अधिक वृद्धि अनाज के मूल्य में पायी जाती है। मई १९६३ में गेहूँ का मूल्य सूचकांक ८७.८ था और मई १९६४ में वह सूचकांक ११३.६ था अर्थात् २० प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई। जून १९६३ में वह ९१ या ९२ था और जून १९६४ में ११७। मोटे अनाज के मामले में भी जनवरी से मई १९६३ के बीच जो सूचकांक ११० और १२८ के बीच झूलता था, वह जनवरी से मई १९६४ में बढ़कर १२३ से १५० हो गया।

विकास खर्च, बढ़ती आबादी, शहरीकरण और आबादी के एक वर्ग की आय में वृद्धि मूल्यों को बढ़ाते हैं। परन्तु उपर्युक्त आंकड़ों के अनुसार तीव्र मूल्य वृद्धि की व्यवस्था सिर्फ इनसे ही नहीं की जा सकती। इसके और भी गहरे कारण हैं और यह समझना आवश्यक है कि उनसे अधिक खतरा है। सन् १९६५ जनता और सरकार के लिए गम्भीर चेतावनी का वर्ष है।

## राजनीतिक-वित्तीय-प्रशासनिक कारण

इन बढ़ते मूल्य के कारणों की खोज राजनीतिक, वित्तीय और प्रशासनिक स्तरों पर नीतियों और कार्यान्वय के क्षेत्र में करनी है।

नीति-स्तर पर कृषि विभाग की बहुत बड़ी उपेक्षा की गयी है। गम्भीरतापूर्वक विचार न कर लापरवाही से विचार किया गया है, मौखिक सेवा की गयी है और लगातार प्रयोग किये गये हैं। यह प्रक्रिया १९५०-५१ में आरम्भ हुई। वर्ष १९५०-५१ में केन्द्रीय खाद्य मंत्रालय का सिद्ध उपाय था अमेरिका से बड़े पैमाने पर अनाज का आयात, अकाल रोकने के लिए नहीं, बल्कि सदा मौजूद रहने वाली कमी को दूर करने के लिए नियमित कार्य के रूप में। स्वर्गीय श्री रफी अहमद किदवई ने, जोकि बाद में खाद्य मन्त्री बने, विभागीय आंकड़ों को एक ओर रख दिया, और अपने पूर्वाधिकारी द्वारा पेश किये गये आर्डर तथा अनुकूल बारिश की मदद से नियंत्रण हटाकर ठीक ही किया। दुर्भाग्यवश उनके दुखद निधन के बाद कृषि विकास के लिए, विशेषकर अन्न उत्पादन के क्षेत्र में, यथार्थ नीति नहीं अपनायी रखी जा सकी। इसके विपरीत श्री किदवई ने जो विश्वास पैदा कर दिया, उससे उनकी मृत्यु के बाद, नेताओं ने यह समझना शुरू कर दिया कि समस्या का हल हो चुका है और यहां तक कि द्वितीय योजना के उद्देश्यों में कृषि का करीब-करीब कोई नाम ही नहीं था।

श्री किदवई के निधन के बाद केन्द्रीय खाद्य मंत्रालय कई व्यक्तियों के हाथों से होकर गुजर चुका है और भिन्न-भिन्न प्रकार की नीतियों का पालन कर चुका है। जिनमें से प्रमुख हैं—अन्न स्वावलम्बन, अनाज का राजकीय व्यापार, अन्न नीति का अंतिम उद्देश्य राज्य व्यापार, अनाज व्यापार का सहकारीकरण, वक्त-जरूरत के लिए स्टाक रखना, पी० एल० ४८० पद्धति, विभाजित पद्धति राज्यवार सम्भाग, कंट्रोल नहीं और स्ट्रेटेजिक कंट्रोल। यह सब सिवाय प्रयोग के और कुछ नहीं था। सरकार हमेशा एक ही दल के हाथ में थी। मन्त्री बदल जाने से नीति भी बदल गयी। इतने महत्वपूर्ण मामले में इस तरह की अकुशलता के कारण सम्पूर्ण देश को दण्ड भुगतना पड़ा है।

## तीन आवश्यकताएं

जब तक कृषि के बुनियादी महत्व के निहितार्थ को



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी तौर से और उद्देश्यात्मक विश्वास के साथ कार्यान्वित नहीं किया जाता, तब तक सब अनिश्चितता, असंतोष और बढ़ते मूल्य की वर्तमान अवस्था में कोई महत्त्वपूर्ण सुधार नहीं हो सकता। (१) पर्याप्त उत्पादन, (२) सुनिश्चित पूर्ति और (३) आर्थिक अनुशासन ये तीन चीजें आर्थिक आयोजन के लिए उतनी ही अत्यावश्यक है जितनी कि उपर्युक्त तकनीकें, वित्तीय स्रोत और कठोर परिश्रम।

## (अ) पर्याप्त उत्पादन

जहां तक पर्याप्त उत्पादन का सवाल है, लक्ष्य निर्धारित करने के लिए बौद्धिक प्रयासों की कमी कभी भी नहीं रही है। तथापि, कार्यान्वयन हमेशा पीछे रहा है। इसके तीन कारण हैं—विभागों के उचित वितरण पर पर्याप्त ध्यान न देना, सरकारी तंत्र की अयोग्यता और उत्पादकों को अच्छी तरह सोच-समझ कर दिये जाने वाले प्रोत्साहन का अभाव।

## (आ) सुनिश्चित पूर्ति

सुनिश्चित पूर्ति दूसरी आवश्यकता है। यह काम वैज्ञानिक हाटव्यवस्था का है। यह सम्पूर्णतः सरकारी अथवा मिश्रित अथवा गैरसरकारी हो सकती है। परन्तु इसका संगठन वैज्ञानिक ढंग से ही होना चाहिए। देश के आकार और निजी व्यापार तथा प्रशासनिक सेवाओं की सीमा का ध्यान रखते हुए अर्थात् तर्कसंगत आधार पर मार्ग प्रशस्त करना है। उत्पादन, ऋण और बिक्री को इस तरह एक दूसरे को जोड़ा जाना चाहिए कि बिक्री के लिए बचा हुआ अतिरिक्त माल गलत लोगों को न बेच दिया जाय। वितरण-पद्धति की कमी इस तथ्य से बिल्कुल सामने आ गयी है कि देश के एक भाग में स्टाक रहने पर भी दूसरे भाग के बाजारों में मूल्यों को बढ़ने से रोकने के लिए उसे ठीक समय पर भेजना सम्भव नहीं हुआ है।

## (इ) आर्थिक अनुशासन

तीसरी चीज है उचित वित्तीय प्रबन्ध। मिश्रित अर्थव्यवस्था आर्थिक आयोजन के प्रतिकूल नहीं है, परन्तु मिश्रित अनुशासन की बात तो सोची ही नहीं जा सकती।

## विचारणीय प्रश्न

हमने सादगी को एक बारगी रद्द कर दिया है। समृद्ध पश्चिम की स्पर्धा करने के जोश में हमने वर्षों की परम्परागत राष्ट्रीय जीवन-पद्धति को, जिसमें आवश्यकताओं पर नियंत्रण करने पर बल दिया जाता है छोड़, समय से पूर्व ही आधिक्यवाली अर्थ-व्यवस्था के मूल्यों की प्रतिष्ठा करने की कोशिश की है।

## गुप्त धन

हम गुप्त धन की शिकायत करते हैं। यह हुआ कैसे? स्वर्गीय डा० जान मथाई जैसे मध्यमार्गी और उदार विचार वाले व्यक्ति ने भी वस्त्रोद्योग जांच समिति के प्रतिवेदन में 'आय' पर सीमा बांधने का सुझाव दिया था। हम उस प्रतिवेदन को मानने से इंकार करते हैं। हम यह समझते हैं कि सांमतशाही नियंत्रण से कर की चोरी, सट्टा बाजार, काली रकम और घूसखोरी को रोक सकेंगे।

हमें दोनों ही काम करने हैं। भविष्य में धन इकट्ठा न हो सके, इसके लिए शहरी आय पर सीमा बांधना उतना ही जरूरी है, जितना कि पहले जमा किए गए धन के घातक परिणामों से बचने के लिए उपयुक्त रूप में परिकल्पित बिमुद्रीकरण अथवा उतना ही प्रभावी कोई अन्य उपाय करना। गुप्त धन को बिना देर किये किसी भी तरह से प्रकट में लाना ही चाहिए।

## मुद्रा-परिचालन

परिचालित मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि हुई है, जबकि स्वर्ण नियंत्रण आदेश ने स्वर्ण तस्कर व्यापार में पैसा लगाने का रास्ता बन्द कर दिया है, सटोरिये और मुनाफाखोर अब पण्य वस्तुओं में पैसा लगा रहे हैं। सिर्फ व्यापारी ही सट्टेबाजी और मुनाफाखोरी नहीं करते। इसमें सभी वर्ग के लोग लगे हैं, बड़े बड़े कृषक भी। प्रशोधन विभाग को, जो कि अनाज का व्यापार भी करता है, दिये जाने वाले अग्रिम धन पर भी रोक लगाने की आवश्यकता है।

## पी० एल० ४८०

पी० एल० ४८० पर बहुत अधिक निर्भर करने की हमारी नीति पर भी वित्तीय दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। पी० एल० ४८० विविध तरीकों से मुद्रा पूर्ति को और बढ़ाता ही जाता है। मैं पी० एल० ४८० समाप्त कर देने का आग्रह नहीं कर रहा हूँ। पी०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलं० ४८० उत्पादन के मामले में संतोष पैदा करता है। जिस तरह से यह खर्च करने के लिए प्रेरित करता है, वह भी उतना ही खराब है। इसे खतरनाक खपत की वस्तु समझना चाहिए।

## निर्यात

हमारी निर्यात नीति पर भी, मूल्यों पर इसके प्रभाव की दृष्टि से पुनर्विचार करने की जरूरत है। किसी दर पर प्राथमिक वस्तुओं की पूर्ति के मामले में घरेलू आवश्यकता से निर्यात मांग का समन्वय किया जाना चाहिए।

## बैंकिंग

आर्थिक अनुशासन की सूची में 'बैंकिंग' का नाम भी जोड़ा जाना चाहिए। भारतीय बैंकिंग किसी भी स्वतन्त्र देश की बैंकिंग की तरह नियन्त्रण के विरोध में है। यह बहुत ही सूक्ष्मग्राही है। इससे कठिनाइयां पैदा होती हैं। जिस क्षण कोई नियमन और नियन्त्रण की बात करता है ऐसे जमा कराने वाला घबड़ा जाता है। तथापि, इसका परिणाम यह निकलता है कि बड़े-बड़े उद्योगपति और पूंजीपति जिनका बाजार में प्रभाव है—कितनी भी धन-राशि प्राप्त कर लेते हैं, जबकि उन व्यक्तियों को बचे-खुचे पर ही निर्भर करना पड़ता है जिनकी कहीं पहुँच नहीं है। इससे एक ओर तो आर्थिक स्रोतों का निराशोन्मुख वितरण होने लगा है और दूसरी ओर काफी हद तक धन और आय का संकेन्द्रण हो गया है। इससे प्रतियोगिता नामक चीज क्षेत्र से हटती जाती है, जो कि गैर-सरकारी क्षेत्र को योग्य बनाये रखने तथा उसमें थोड़ी और शालीनता विकसित करने का बहुत बड़ा कारण है। इसका विशुद्ध परिणाम यह निकलता है कि भारतीय बाजार पूंजीपतियों के लिए एक सर्वाधिक सुरक्षित बाजार हो जाता है।

## आय, वेतन, मजदूरी और लाभ

यदि मूल्यों को नियन्त्रित करना है तो अन्ततः आर्थिक अनुशासन को आय, लाभ, वेतन और मजदूरी की ओर भी देखना है। वस्तुओं की कीमत मांग तथा पूर्ति की मात्रा पर ही निर्भर करती है। मांग और पूर्ति को प्रभावित करने वाली हर चीज को नियन्त्रित करना है। जब तक हम उन्हें नियन्त्रित करना है। जब तक हम उन्हें नियन्त्रित नहीं करते, वेतन को भी नियन्त्रित नहीं कर सकते अन्यथा रोक-थाम अनुचित होगी।

## तत्काल कार्यवाही के लिए सुझाव

इस प्रकार, मूल्य राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के अच्छे अथवा बुरे प्रबन्ध का अन्तिम परिणाम है। अच्छा प्रबन्ध सुनिश्चित करना सरकार की क्षमता पर निर्भर करता है। मेरे मतानुसार तत्काल ही निम्न उपाय किये जाने चाहिए: (अ) दीर्घ-कालीन आधार पर, यह सम्पूर्ण आश्वासन देने की आवश्यकता है कि किसी भी हालत में कृषि-उत्पादन में वृद्धि एक निश्चित न्यूनतम से नीचे नहीं गिरने दी जायेगी। इसका अर्थ होगा कृषि विभाग में अति प्रसंगानुकूल नवचेतना। इसी प्रकार असफलता अथवा कमी के लिए जिम्मेदारी सौंपने, कृषि वर्ग के लिए परमावश्यक वस्तुओं को उपयुक्त प्राथमिकता और उसकी पूर्ति एवम् उसके साथ ही अच्छी कीमत का ठोस आश्वासन देने की आवश्यकता है। (आ) लघु कालीन आधार पर इन बातों की आवश्यकता है: (१) हमारी अर्थ-व्यवस्था से गुप्त धन, एकाधिकार, सट्टेबाजी आदि जैसे विनाशकारी तत्वों को दूर करना, पुराने गड़े धन को उखाड़ने के लिए विमुद्रीकरण कर और भविष्य में गुप्त धन इकट्ठा न हो, इसके लिए आय पर सीमा बांध कर अथवा सरकार अन्य और किसी भी उपाय से यह काम कर सकती है, (२) जनता के पास जो अतिरिक्त धन है उसे धीरे-धीरे परन्तु निश्चित ही बाहर निकालना, (३) बैंकिंग पर प्रभावी नियन्त्रण, (४) गैरसरकारी क्षेत्रका विकेन्द्रीकरण, (५) घरेलू आवश्यकताओं के साथ समन्वय, और (६) आय, लाभ, वेतन तथा मजदूरी का नियमन।

कहा जा सकता है कि इससे सारी स्वतन्त्रता समाप्त हो जायगी और नियन्त्रित समाज का जन्म होगा। इस समस्या को अन्य दृष्टि से भी देखा जा सकता है कि क्या हम अपनी इन जिम्मेदारियों से बच कर अपनी स्वतन्त्रता तथा सम्पूर्ण समाज के अस्तित्व को ही खतरे में नहीं डाल देंगे?

■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी औद्योगिक नीति

श्री लालचन्द हीराचन्द

हमारा राष्ट्र एक संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रहा रहा है। हांलाकि हम नियोजित प्रयत्न कर रहे हैं फिर भी हम अब भी विकसित देशों से काफी पीछे हैं। इसलिये हमारी समस्याएं और भी अधिक कठिन हैं और हमारे देश की प्रगति मंद है। इसलिये, कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि अब औद्योगिक विकास की हमारी मूल-नीतियों की समीक्षा की जाये। औद्योगिक विकास को अधिकाधिक कन्ट्रोलों के जरिये नियंत्रित करने की अपेक्षा उसे अधिक स्वतंत्रता देने के प्रश्न पर विचार किया जाना चाहिये। हो सकता है, कि विगत १२ वर्षों के अनुदार नियोजन के बाद इस तरह की राहत से औद्योगिक उद्यमों को शुरू करने में आम उत्साह पैदा हो जाय। आज के अनेक नियंत्रणों ने प्रोत्साहन खत्म कर दिये हैं और पहल को कुंठित कर दिया है जिससे देश के औद्योगिक वातावरण में एक तरह की निराशा फैल गई है।

मुझे स्वतंत्र अर्थव्यवस्था के दर्शन में विश्वास है क्योंकि हमारे सामने प्रमाण मौजूद है कि पश्चिमी जर्मनी, इटली और जापान जैसे देशों ने, जो दूसरे महायुद्धमें सम्पूर्णतया ध्वस्त हो गये थे, न केवल अपनी अर्थव्यवस्था की युद्धपूर्व स्थिति प्राप्त कर ली है बल्कि विश्व के औद्योगिक राष्ट्रोंमें एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। इन देशों ने व्यक्तियों को प्रगति तथा आर्थिक वृद्धि के क्षेत्र में स्वाधीनता देकर समृद्धि प्राप्त की है। हमारे महान् राष्ट्र को यह तरीका अपनाने की अभी भी काफी गुंजाइश है। ध्यान रहे, हमारे देश की औद्योगिक प्रगति हमारे राष्ट्रीय उद्यमियों के प्रयत्नों पर ही आधारित रही है, जिनका विदेशी शासन ने विरोध किया था। ये लोग अभी भी राष्ट्र के विकास से सम्बन्धित किसी भी उद्योग की स्थापना के लिये अपने दृष्टिकोण तथा दूरदर्शिता में पीछे नहीं रहेंगे।

सार्वजनिक क्षेत्र के साथ-साथ निजी क्षेत्र को भी अवसर मिलना चाहिये। यदि निजी क्षेत्र को भी सार्वजनिक क्षेत्र के साथ-साथ समान अवसर दिये गये तो नये औद्योगिक उद्यमों की स्थापना के लिये निजी क्षेत्र जोखिम और जिम्मेदारियां उठाने के लिये तैयार रहेगा। दोनों क्षेत्रों को दी जाने वाली सुविधाओं और रियायतों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिये।

गत वर्ष केन्द्रीय वित्तमंत्री ने यह बात स्वीकार की थी कि पिछले तीन वर्षों में देश की अर्थव्यवस्था योजनानुसार आगे बढ़ने की अपेक्षा पीछे गिरती जा रही है। इस बात की तीसरी योजना की मध्यावधीय समीक्षा में भी पुष्टि की गई। अब रिजर्व बैंक आफ इंडिया की १९६३-६४ वर्ष की मुद्रा और वित्त पर की गई रिपोर्ट से और भी अधिक बातें मालूम हुई हैं। उसमें यह बात स्वीकार की गई है कि वास्तव में "विगत अनेक वर्षों की ही तरह" वह सरकार में बैंक की शुद्ध जमा रकम ही थी जो मुद्रापूर्ति के विस्तार को बढ़ाने का प्रमुख कारण रही है। सरकार के इस भारी खर्चे के फलस्वरूप मुद्रास्फीति फैली और जिससे निजी क्षेत्र की उत्पादक प्रवृत्तियों के लिये निवेश स्रोत खत्म हो गये।

रिजर्व बैंक की रिपोर्ट से पता चलता है कि हमारी आय, जो प्रथम योजनावधि में ३.२ प्रतिशत और दूसरी में ४ प्रतिशत बढ़ी थी, चालू योजना के दौरान में केवल २.५ प्रतिशत की दर से ही बढ़ी है। कृषि उपज में तो वास्तव में गिरावट ही हुई है। हालांकि औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि उल्लेखनीय रही है; अर्थात तीसरी योजना के अन्त तक वह १२ प्रतिशत तक हो सकती है लेकिन फिर भी वह १४ प्रतिशत के लक्ष्य से कम ही रहेगी। औद्योगिक उत्पादन में हुई यह वृद्धि गैर-खपत पदार्थों में हुई है जैसे कि बिजली के केबिल, लोहा और इस्पात और पूंजीगत तथा उत्पादक सामान। जनसाधारण की खपत की चीजों का उत्पादन कृषि की ही तरह रुक गया है। हमारी आर्थिक स्थिति के तर्क का तकाज़ा है कि वैयक्तिक उद्योग को और अधिक मौका दिया जाय और सरकारी प्रवृत्तियों को कम किया जाय।

हमारी आर्थिक वृद्धि के लिये निजी उद्योग में जो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लचीलापन विद्यमान है, उसे हम दुर्लक्ष्य नहीं कर सकते हैं। इसलिये यह जरूरी है कि हम वैयक्तिक उद्यमियों पर विश्वास करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। बजाय इसके कि उनकी अवहेलना की जाय और उन्हें संदिग्ध दृष्टि से देखा जाय। आर्थिक शक्ति केन्द्रित न होने देने के लिये सरकार के पास नियमन तथा नियंत्रण सम्बन्धी बहुत अधिकार हैं। वास्तव में हमको सावधान तो इस बात से रहना है कि आर्थिक तथा राजनैतिक सत्ता का एक ही हाथों में केन्द्रीयकरण न हो अन्यथा वैसी स्थिति लोकतंत्र के लिये घातक प्रमाणित हो सकती है।

तीव्र आर्थिक विकास इस बात पर भी आधारित होता है कि किस कामयाबी के साथ एक ऐसी कराधान पद्धति के जरिये कम खर्ची को प्रोत्साहित किया जाय जिससे पूंजी रचना में सहायता प्रदान करने वाले लोग दण्डित न हों। इसके लिये कुछ समय के लिये यह जरूरी होगा कि दिखाऊ या लम्बी चौड़ी योजनाओं पर सार्वजनिक पूंजी लगाने के लोभ से बचा जाय। मुद्रास्फीति पैदा करने वाली नीतियों को, जिनसे भ्रष्टाचार और कष्ट पैदा होते हैं, त्याग दिया जाय।

हालांकि इस बात का अकसर आश्वासन दिया जाता है कि कच्चे माल तथा छुटक पुर्जों के लिये अविलम्ब आयात लाइसेन्स जारी कर दिये जायंगे लेकिन लोगों का यह आम अनुभव है कि लायसेंसिंग अवधि की शुरूआत, जैसे कि अप्रैल में इस प्रकार के जरूरी कच्चे माल के लिये पेश की गईं अर्जियों का निपटारा पांच छै महीनों बाद किया जाता है।

कभी-कभी ऐसे तैयार और आधे तैयार पदार्थों को आयात करने की अनुमति दे दी जाती है जो घरेलू बाजार में उपलब्ध होते हैं। अकसर कहा जाता है कि देशी चीजों की कीमतें बाहर से मंगाई गई चीजों की अपेक्षा महंगी होती है। इसके कारण होते हैं सीमित उत्पादन, भारी सीमा शुल्क, बिजली की भारी दरें आदि। देशी माल की तुलना में आयात किया गया विदेशी माल उन देशों में बड़ी तादाद में तैयार होता है तथा कीमतें गिराने और निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से अकसर उनकी सरकारें सबसीडी देती है। टेरिफ कमीशन (शुल्क आयोग) को चाहिये कि वह इस प्रकार की शिकायतों की समय-समय पर जांच करवाये।


भारत की उद्योग नीति

लेखक :

प्रो. रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ न. प. "सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर,
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

शृङ्गार

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल

सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय :
१३।३७, शक्तिनगर,
दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकासोन्मुख देशों के लिए प्राथमिकता

श्री चेस्टर बोल्स, (भारत स्थित अमेरिकन राजदूत)

एक बात को मैं अधिक महत्वपूर्ण समझता हूँ। इसे प्रायः और विशेष रूप से बड़े शहरी क्षेत्रों में नजर अन्दाज कर दिया जाता है। वह यह है कि प्रत्येक विकसित होने वाले देश के आर्थिक विकास में चाहे वह इसे पसंद करे या न करे, खेती और उन आदमियों से जो गांवों में रहते हैं, शुरुआत करनी चाहिए। प्रायः इसकी उपेक्षा की गयी है। आमतौर पर लोग यह सोचते हैं कि उद्योग ही एक देश की प्रगति और सफलता का प्रतीक है। चाहे जैसे भी हो, कुछ बड़े विद्युत् उत्पादन केन्द्र तथा इस्पात कारखाने स्थापित करलें, बेहतर हो कि एक आणविक विद्युत केन्द्र स्थापित हो जाय, एक अन्तर्राष्ट्रीय एयर लाईन चालू करलें और हम पहुँच गए प्रगतिशील राष्ट्रों की श्रेणी में, हमारा देश आधुनिकतम देश हो गया। इसमें सन्देह नहीं कि ये सभी बातें जरूरी हैं, बहुत जरूरी हैं। आज भारत में इस्पात उत्पादन की बड़ी आवश्यकता है। अन्य देशों की भांति भारत में भी बिजली का उत्पादन बढ़ाना बहुत जरूरी है। लेकिन मेरा विश्वास है कि जब तक आप ग्रामीण क्षेत्रों की ओर पूरा ध्यान नहीं देंगे तब तक आपकी अर्थ व्यवस्था कभी भी आधुनिक और गतिशील नहीं हो सकती है।

और इस बात के कई सुस्पष्ट कारण है। उनमें से पहला तो यह है कि जनसंख्या का ८०% ग्रामों में निवास करता है ऐसी स्थिति में इन ८०% के हितों की उपेक्षा कर हम कैसे सुखी और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं। दूसरे यदि किसी कृषि-जन्य पदार्थों के आयात में विदेशी मुद्रा खर्च होती है तो यह सारी अर्थ-व्यवस्था को पीछे ले जाती है। खाद्य के आयातों पर विदेशी मुद्रा के व्यय से जितना ही बच सकेगा, उतनी ही बेहतरी होगी। आज भारत ९० से १०० करोड़ टन खाद्यान्न प्रति वर्ष पैदा करने के लिए भगीरथ प्रयत्न कर रहा है, जिससे उसे खाद्यान्न के आयात पर विदेशी मुद्रा खर्च न करनी पड़े। भारत को अपनी जनसंख्या को खिलाने तथा अधिक उत्पादन द्वारा खाद्य का मूल्य कम करने के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाना है।

तीसरी बात यह है कि यदि आपका ग्रामीण क्षेत्र अविकसित है तो आपके औद्योगिक उत्पादन के लिए क्रेता बहुत बड़ी संख्या में कम हो गये। आपके ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होते ही आपके माल खरीदने वालों की संख्या बढ़ेगी। नए बाजार खुलेंगे। मेरा कहना तो यह है कि शहरी क्षेत्रों के उत्पादकों को ग्रामीण क्षेत्रों के प्रति उदार होना चाहिए। उसे उन सब बातों को बढ़ावा देना चाहिए जिनसे गांवों में खुशहाली हो और अन्ततः उसके उत्पादन के खरीदार बढ़ें। यदि मैं किसी भी देश में एक व्यापारी होता तो यह चाहता कि ग्रामीण क्षेत्रों की उन्नति हो क्योंकि उनकी उन्नति होने पर ही मैं उस माल के लिए जिसे पैदा करने में मैं समर्थ हूँ, बड़ा बाजार पाता।

अमेरिका में हम मशीनों पर विशेष बल इसलिए देते हैं कि मशीनों से श्रमिक की बचत होती है। यह बात नहीं कि मशीनों के उपयोग से प्रति एकड़ उत्पादन अधिक हो जाता है। होता यह है कि एक व्यक्ति अधिक एकड़ों पर काम कर सकता है। अधिकांश विकासशील देशों में श्रमिक समस्या आधारभूत समस्या नहीं है। अतएव जरूरी यह है कि भूमि की छोटी-छोटी इकाइयां हों। लोग भूमि के स्वामी होने का गौरव महसूस करें। अपनी जमीन में सुधार करने के इच्छुक हों। वे अपनी जमीन या अपने आस-पास की अवस्था के सुधार के लिए जो भी प्रयत्न हो, सहर्ष स्वीकार करें।

सम्पदा

का एक ग्राहक बनाना आपका

कर्त्तव्य है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# सार्वजनिक उद्योगों में लाभ

योजना आयोग के सदस्य डा० वी० के० आर० वी राव ने अपने भाषण में कहा था कि देश के औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र आया है तो रहने का निश्चय करके यह आगामी वर्षों में निरन्तर विस्तार करता जायगा। १९५०-५१ में देश के औद्योगिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र का भाग २.९ प्रतिशत था और मेरा अनुमान है कि २० वर्षों तक इसका भाग ५० प्रतिशत हो जायगा। इसी अनुमान के आधार पर योजना आयोग ने आगामी पंचवर्षीय योजना में सार्वजनिक उद्योगों से पर्याप्त लाभ की कल्पना की है। इस योजना की अवधि में ३०० करोड़ रुपये लाभ की आशा की गई थी। योजना मंत्री श्री भगतके कथनानुसार सरकार को अब तक १६९ करोड़ रुपये की प्राप्ति हो चुकी है। देखना यह है कि शेष अनुमानित लाभ की पूर्ति आगामी दो वर्षों में होती है या नहीं। श्री भगत ने कम-से-कम ८० करोड़ रु० अतिरिक्त प्राप्ति की आशा प्रकट की है।

सचमुच यह सब चाहते हैं कि सरकार को सार्वजनिक उद्योगों से पर्याप्त आय हो, ताकि जनता पर करों का बोझ कम पड़े, परन्तु दुःख की बात यह है कि सरकारी उद्योगों में लगाई गई पूंजी के अनुपात में बहुत कम लाभ होता है। जो उद्योग अपनी प्रारम्भिक अवस्था से बाहर निकल भी आये हैं, वे भी आशा को पूर्ण नहीं कर रहे हैं। कुछ उद्योगों की स्थिति तो बहुत ही खराब है। इसीलिए राज्य सभा में एक सदस्य ने यहां तक सुझाव दिया कि जिन सरकारी उद्योगों में लाभ नहीं हो रहा है, वे सरकारी उद्योग निजी उद्योगपतियों को हस्तान्तरित कर दिये जायें। आज जब हम सरकारी उद्योगों को बढ़ाने की योजना बना रहे हैं, यह प्रस्ताव असंगत प्रतीत होगा। परन्तु इस प्रकार का प्रस्ताव आना ही सरकारी उद्योगों की कठोर आलोचना है।

निजी उद्योग और सरकारी उद्योग दोनों की परस्पर आलोचना प्रत्यालोचना निरन्तर पिछले कई वर्षों से हो रही है। आचार्य विनोबा ने दोनो क्षेत्रों को हाथ की हथेली और अंगुलियों से उपमा दी थी। दोनों एक दूसरे के बिना बेकार हैं, इसलिए सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि दोनों का परस्पर समन्वय हो। दोनों एक दूसरे को दृढ़ करने वाले हों। यदि राज्य निजी उद्योगों पर बल न दें तो अंगुलियां भी निर्बल हो जायेंगी और यदि अंगुलियां निर्बल हों तो हथेली का भी उपयोग नहीं हो सकता।

राज्य सभा में सार्वजनिक उद्योगों पर जो बहस हुई है, उसमें अन्य भी अनेक प्रश्नों पर चर्चा हुई। सार्वजनिक उद्योगों को स्वयं एक आदर्श मालिक का उदाहरण सामने रखना चाहिए, जहां श्रमिक समस्याएं कम-से-कम अप्रिय रूप धारण करें। इसी तरह सार्वजनिक उद्योग को मितव्ययता का भी आदर्श अन्य उद्योगों के सामने रखना चाहिए। आज स्थिति इसके सर्वथा विपरीत है। सरकारी उद्योगों में कर्मचारियों और श्रमिकों की संख्या भी आवश्यकता से कहीं अधिक होती है और इस कारण सार्वजनिक उद्योगों का लाभ अपेक्षाकृत बहुत कम हो गया है। जितना लाभ कम होगा या हानि होगी, वह जनता पर ही बोझ पड़ेगा।

# चाय उद्योग को करों में रियायत

चाय वित्त समिति ने सरकार को अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की है कि देश के चाय उद्योग को करों आदि में रियायत दें कर, इस प्रकार प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए कि यह उद्योग उत्पादन और निर्यात के अपने लक्ष्य पूरे करने में समर्थ हो। कुछ वर्षों से इसकी आमदनी घटी है। इसी कारण नये चाय बागानों का विकास नहीं हो रहा है। अतः इस उद्योग को वित्तीय प्रोत्साहन देना जरूरी है।

यह उद्योग विदेशी मुद्रा कमाने का बहुत बड़ा साधन है, अतः देश की अर्थ व्यवस्था में इसका विशेष स्थान है। १९६३ में चाय के निर्यात से १३२ करोड़ रु० से भी ज्यादा की विदेशी मुद्रा मिली। केन्द्र और राज्यों के राजस्व में भी इस उद्योग से काफी धन प्राप्त होता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न विकल्पों पर विचार विमर्श करके, समिति ने सुझाव दिया है कि केन्द्रीय आय कर और राज्यों के कृषि आय कर के लिए कर योग्य आय का हिसाब लगाते समय, नये क्षेत्रों में चाय बागान खोलने की लागत का ५० प्रतिशत और पुराने क्षेत्रों में फिर से बागान लगाने की लागत का ४० प्रतिशत, विकास छूट के रूप में छोड़ दिया जाना चाहिए।

जिन बागानों की अपनी फैक्टरियां हैं, उन पर केन्द्रीय और राज्य, दोनों सरकारें कर लगाती हैं। ऐसे बागानों की कुल आय के ४० प्रतिशत पर, गैर कृषि की आय मान कर केन्द्रित आयकर, और शेष ६० प्रतिशत पर, राज्य का कृषि आय कर लगाता है। उक्त रिपोर्ट में कहा गया है कि कुल आय में से कृषि की आय पर कर की दर, गैर कृषि आय कर की दर से अधिक नहीं होनी चाहिए। निर्यात प्रोत्साहन के लिए समिति ने सुझाव दिया है कि, जो चाय निर्यात की जाय, उस पर वसूल किए गए उत्पादन शुल्क का कुछ अंश वापस कर देना चाहिए।

समिति ने यह भी सिफारिश की है कि चाय पर पश्चिम बंगाल प्रवेश कर हटा दिया जाना चाहिए। आजकल कलकत्ता में बिक्री या खपत के लिए आने वाली हर प्रकार की चाय पर १३.७८ पैसे प्रति किलो ग्राम के हिसाब से यह कर लगता है।

चाय उद्योग को मिलने वाली वित्तीय सहायता की आजकल जो व्यवस्था है, उसकी समीक्षा करने के बाद समिति ने सुझाव दिया है कि एक चाय वित्त निगम स्थापित किया जाना चाहिए। यह निगम मझली और दीर्घ अवधि के ऋण देगा और चाय कम्पनियां बैंकों से कम अवधि के जो ऋण लेती हैं, उन पर बैंकों को जमानत देगा। समिति ने सिफारिश की है कि दूसरे किसानों को जिस दर पर उर्वरक दिए जाते हैं, चाय बागानों को उससे अधिक दर पर नहीं दिये जाने चाहिए।

## कपड़ा निर्माण मशीनरी उद्योग

कपड़ा निर्माण करने वाली मशीनरी के उद्योगों ने गत वर्ष की अपेक्षा १९६३-६४ में अधिक उन्नति दिखाई है। इकानामिक टाइम्स ने टैक्सटाइल मशीनरी के दस उद्योगों का अध्ययन कर इस तथ्य का स्पष्टीकरण किया है।

भारत सरकार की तकुए और लूमों के लिए लाइसैंस देने की उदार नीति के कारण टैक्सटाइल मशीनरी की मांग में वृद्धि हुई है। इस कारण उलिखित १० कम्पनियों की बिक्री की आय २६.१ करोड़ रुपये से ३५.४ करोड़ रुपया हो गई है। उत्पादन मूल्य भी पिछले वर्ष के २७.७ करोड़ से बढ़कर ३५.३ करोड़ रु० हो गया है। निर्माण व्यय भी ४.४ करोड़ रुपया बढ़कर १९६३-६४ में २० करोड़ रुपया हो गया है। वेतन और मजदूरी भी ५.३ से बढ़कर ५.८ करोड़ हो गई हैं। इसी प्रकार टैक्स आदि अन्य व्यय में भी वृद्धि हुई है। लाभांश भी पिछले वर्ष २०३ लाख रुपया था, जो कि १९६३-६४ में ५८७ लाख रुपया हुआ है।

उलिखित कम्पनियों के समस्त आय व्यय का लेखा-जोखा देखने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि सरकार की तकुए और लूमों के लिए लाइसैन्स देने की उदार नीति और बढ़ती हुई कपड़ा निर्माण की मशीनरी की मांग के परिणामस्वरूप अन्य उद्योगों की अपेक्षा इस उद्योग ने प्रत्येक दिशा में प्रशंसनीय प्रगति की है।

## सूती वस्त्र उद्योग का उत्पादन

भारत सरकार पिछले कुछ वर्षों से सूती मिलों के उद्योग में सूत के उत्पादन को अधिक प्रोत्साहन दे रही है और कपड़े के उत्पादन को पहले की अपेक्षा कम। उसका ध्यान विकेन्द्रित वस्त्र उद्योग को अधिक प्रोत्साहन देने का है। इसीके परिणाम स्वरूप विकेन्द्रित उद्योग के कुल उत्पादन में प्रतिशत बढ़ता जा रहा है और बड़ी मिलों का प्रतिशत कम हो रहा है। १९४८ में सूती मिलों का जो प्रतिशत ७७ प्रतिशत था वह १९६३ में गिरकर ६१ प्रतिशत हो गया और इसके विपरीत विकेन्द्रित उद्योग का प्रतिशत २३ प्रतिशत से बढ़कर ३९ प्रतिशत हो गया।

निम्न तालिका से यह अधिक स्पष्ट हो जायगा :—

| | कुल उत्पादन (मिलियन मीटर) | सूती मिलों का प्रतिशत | विकेन्द्रित मिलों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| १९४८ | ५,१०० | ७७ प्रतिशत | २३ प्रतिशत |
| १९५० | ४,२६२ | ७९ ,, | २१ ,, |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १९५५ | ६,२७८ | ७४ | ,, | २६ | ,, |
| १९६० | ६,६२९ | ७० | ,, | ३० | ,, |
| १९६३ | ७,२९९ | ६१ | ,, | ३९ | ,, |

## फारस की खाड़ी के तट पर तेल की खोज

नेशनल इरानियन आयल कम्पनी ने १९६३ के शुरू में कुछ कम्पनियों को फारस की खाड़ी के बहुत बड़े तटवर्ती क्षेत्र में तेल की खोज करने और निकालने का निमंत्रण दिया था। इस काम के लिए अन्य कई कम्पनियों ने हमसे अच्छी शर्तें पर टेंडर भेजे थे। किन्तु ईरान की आयल कम्पनी ने सब कम्पनियों को नए टेंडर भेजने का एक और अवसर दिया। नेशनल इरानियन आयल कम्पनी ने भारत का टेन्डर मंजूर कर लिया है। यह काम करने के लिए ए० जी० आई० पी० और फिलिप्स के साथ भारत का यह समझौता हुआ है कि तीनों बराबर के हिस्सेदार होंगे और तेल की खोज तथा उत्पादन का खर्च तीनों में बराबर बराबर बांटा जाएगा। जो तेल निकलेगा, उसमें तेल और प्राकृतिक गैस आयोग का बराबर का हिस्सा होगा और प्रबन्ध आदि में भी इसका बराबर का अधिकार होगा। संशोधित टेन्डर के अनुसार कुल मिला कर ज्यादा से ज्यादा ५ करोड़ ८० लाख डालर खर्च आएगा, जिसका एक तिहाई भाग भारत को देना होगा।

भारत ने एक अन्य पार्टी से सारे जोखिम का बीमा भी करा लिया है। अगर वहां तेल नहीं मिला, तब भी तेल और प्राकृतिक गैस आयोग को कोई नुकसान नहीं होगा और अगर वहां तेल मिला, जिसकी हमें पूरी आशा है, तो हम इस पार्टी का सारा रुपया, जो वह हमें उधार दे रही है, मय ब्याज और बीमे की कुछ कमीशन के साथ लौटा देंगे।

कुछ समय पहले हमने ईरान की आयल कम्पनी और ए० आई० ओ० सी० के सहयोग से मद्रास में एक तेल शोधक कारखाना खोलने का निश्चय किया था, जो १९६७ के उत्तरार्ध में चालू होगा। इस निश्चय और फारस की खाड़ी के तटवर्ती क्षेत्रों में हमें तेल की खोज और उत्पादन का ठेका मिलने से भारत के तेल उद्योग में एक नए अध्याय का श्रीगणेश होता है।

## भिलाई की चौथी धमन भट्टी

केन्द्रीय इस्पात और खान उपमंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी ने ८ दिसम्बर, १९६४ को भिलाई इस्पात कारखाने की चौथी धमन भट्टी का उद्घाटन किया। यह धमन भट्टी एशिया की सबसे बड़ी धमन भट्टी होगी। इस धमन भट्टी में हर रोज १,७३८ टन लोहा बनाया जा सकेगा।

भिलाई इस्पात कारखाने की उत्पादन क्षमता को १० लाख टन से बढ़ाकर २५ लाख टन करने के कार्यक्रम के अन्तर्गत यह धमन भट्टी बनाई गई है।

चौथी धमन भट्टी पर लगभग १० करोड़ ३० लाख रु० लागत आने का अनुमान है। इस धमन भट्टी की विशेषता इसका कंकरीट का आधार है। ४१ घंटे के भीतर बिना रुके, १,९८७ घन मीटर कंकरीट इस धमन भट्टी की नींव में डाली गयी।

## भारतीय फिल्मों का उद्योग

भारत का फिल्म उद्योग संसार का दूसरा सबसे बड़ा फिल्म उद्योग है। देश में हर वर्ष ३०० कथाचित्र और १०० से अधिक वृत्त चित्र और बच्चों की फिल्में बनती हैं। भारतीय फिल्म उद्योग में लगभग ८४ करोड़ रुपये की पूंजी लगी है। इस उद्योग के फिल्म स्टूडियों, सिनेमा-घरों और फिल्म आदि धोने की प्रयोगशालाओं में लगभग १ लाख आदमी काम करते हैं। देश में लगभग ६० फिल्म स्टूडियों और ४० फिल्म प्रयोगशालाएं हैं। बड़ी संख्या में फिल्में बनने के बावजूद हमारी फिल्मों का निर्यात पर्याप्त नहीं है। १९६२-६३ में फिल्मों के निर्यात से लग-भग १ करोड़ ४० लाख रु० की आय हुई, जो बढ़कर १९६३-६४ में २ करोड़ २० लाख रु० हो गई और इस वर्ष फिल्मों के निर्यात से ३ करोड़ रुपये मिलने की आशा है। सरकार फिल्म उद्योग को आयात के लिए जितने धन की स्वीकृति देती है, उतना धन फिल्मों के निर्यात से नहीं मिलता।

उद्योग मन्त्री श्री शाह की सम्मति में ऐसी फिल्में बनाने के लिए, जिनकी खपत विदेशी बाजारों में हो सके, भारतीय निर्माताओं को विदेशी निर्माताओं से सहयोग करना चाहिए और मिल कर फिल्म बनानी चाहिएं।

सोवियत रूस और पूर्वी यूरोप के देशों में भारतीय



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक विकास में भूमिगत जल का महत्त्व

डा० के० एल० राव, सिंचाई व बिजली मंत्री

भारत के आर्थिक विकास में भूमिगत जल के बारे में अध्ययन और अनुसंधान का उतना ही महत्व है, जितना नदियों के जलविज्ञान का है। भूमि के नीचे के पानी के भरपूर उपयोग से सिंचाई साधनों और उद्योगों का काफी विकास हो सकता है। किन्तु देश की विशालता और वर्षा, मौसम आदि की विभिन्नता को देखते हुए भूमिगत जल को निकालना और उसका उपयोग करना एक बड़ा कठिन काम है। गांवों में बिजली पहुँचने से सिंचाई के लिए भूमि के नीचे से पम्पों द्वारा काफी मात्रा में पानी निकाला जा सकेगा। अतः भूगर्भ वैज्ञानिकों की संस्था तुरन्त कुछ काम कर सकती है।

देश भर में प्रतिवर्ष औसतन ४५ इन्च वर्षा होती है जो ३०० करोड़ एकड़ फुट के बराबर है। इसमें से लगभग १०० करोड़ एकड़ जमीन के नीचे चला जाता है और शेष १२५ करोड़ एकड़ फुट नदियों आदि में चला जाता है। इस १२५ करोड़ एकड़ फुट पानी में से, जमीन, बहाव, मौसम आदि की विशेषताओं के कारण, केवल ४५ करोड़ एकड़ फुट पानी ही सिंचाई के काम में लिया जा सकता है।

६५ करोड़ एकड़ फुट पानी जो जमीन के नीचे चला जाता है, उसमें से लगभग ३५ करोड़ एकड़ फुट पानी ऊपरी सतहों पर ही रह जाता है और जिससे भूमि खेती योग्य बनती है। किन्तु ३० करोड़ एकड़ फुट पानी जमीन के अन्दर चला जाता है और इस प्रकार प्रतिवर्ष भूमिगत जल के भंडार में प्रतिवर्ष इतने पानी की ही वृद्धि होती रहती है। यह अनुमान किया जाता है कि भारत भर में जमीन के नीचे १००० फुट की गहराई तक लगभग कुल ३००० करोड़ एकड़ फुट पानी जमा है जो सालाना-बारिश के पानी का १० गुना है। अतः इस पानी के थोड़े से हिस्से के उपयोग से ही सिंचाई को, खासकर उन क्षेत्रों में जहां नदियों का जल नहीं पहुँचता, काफी बढ़ाया जा सकता है।

भूमिगत पानी को निकालने से उद्योगों और खानों का भी काफी विकास हो सकता है। उदाहरणार्थ न्यवेली में यह पता चला है कि अगर जमीन से पम्पों द्वारा पानी निकाल कर भूमिगत जल की सतह को नीचा किया जाय तो वहां खनन का काम आसानी से किया जा सकता है। आजकल वहां प्रतिदिन ५ करोड़ गैलन पानी जमीन से निकाला जा रहा है। कलकत्ता के उत्तरी क्षेत्र में भी जमीन के नीचे काफी पानी है। अगर वहां से पानी निकालने की व्यवस्था की जाय तो कलकत्ता को प्रतिदिन १० करोड़ गैलन पानी दिया जा सकता है। भूमिगत जल, उद्योगों के लिए भी काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है और उसका वितरण भी आसान है।

जमीन के नीचे बहुत पानी इकट्ठा होने से कभी-कभी खेती और इमारतों को बड़ा नुकसान पहुँचता है। पंजाब में लगभग ४० लाख एकड़ क्षेत्र में अक्टूबर के महीने में १ से ५ फुट नीचे तक ही पानी आ जाता है। वहां पानी निकालने और जमीन के नीचे पानी इकट्ठा न होने देने के अनेक उपाय किए जा रहे हैं।

दक्षिण दिल्ली में भी यह समस्या विकट है। वहां ९,८०० एकड़ में से ३००० एकड़ क्षेत्र में तो अक्टूबर के महीने में ६ फुट जमीन खोदने पर ही पानी निकल आता है। वहां भूमिगत पानी की सतह कम करने के के लिए ३०३ नल कूल लगाए गये हैं और डेढ़ वर्ष में ८० करोड़ गैलन पानी निकाला जा चुका है। पर इस समस्या के हल के लिए स्थायी उपाय जरूरी हैं।

● ●

---

फिल्मों की अच्छी खपत हो सकती है। इन देशों को फिल्म निर्यात करने की इस समय जो बातचीत चल रही है, उससे लगभग २ करोड़ रुपये की आय होने की आशा है। भारत इन देशों से लगभग १ करोड़ रुपये की फिल्में आयात करेगा।

भारतीय फिल्मों के निर्यात को बढ़ाने के लिए दि इण्डियन मोशन पिक्चर एक्सपोर्ट कारपोरेशन लि० बनाई गई है।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सांख्यिकी

## चतुर्थ योजना में उद्योगों का लक्ष्य

चतुर्थ योजना के अन्तर्गत २२,६०० करोड़ रुपए के परिव्यय के अनुसार निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं :—

| | तीसरी योजना, वर्तमान अनुमान | चौथी योजना |
|---|---|---|
| अनाज | ९.२ करोड़ मीट्रिक टन | १२ करोड़ मीट्रिक टन |
| पटसन (गांठें) | ६२ लाख | ८० लाख |
| तेलहन (मी. टन) | ७५ लाख | १०० लाख |
| नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक (प्रयुक्त) | ६,५०,००० मीट्रिक टन | २० लाख मीट्रिक टन |
| बिजली (स्थापित क्षमता) | १.१७ करोड़ किलोवाट | २.२ करोड़ किलोवाट |
| बिजली वाले गांव | ४३,००० | १,०९,००० |
| सिंचाई (अतिरिक्त सामर्थ्य) | २ करोड़ एकड़ | १.३ करोड़ एकड़ अधिक |
| कोयला | ७.६ करोड़ मी. टन | १२.५ करोड़ मीट्रिक टन |
| खनिज लोहा | २.६ करोड़ मी. टन | ५.४ करोड़ मीट्रिक टन |
| पेट्रोल की सफाई | १.२२२ कोरोड़ मी. टन | २.८२५ करोड़ मी० टन |
| सूती वस्त्र (मिल) | ५५० करोड़ गज | ६०० करोड़ गज |
| चीनी | ३२ लाख टन | ४५ लाख टन |
| साइकिलें | १६ लाख | ३५ लाख |
| इस्पात के ढोके | ७४ लाख टन | १.६५ करोड़ टन |
| अल्युमीनियम | ६८,००० टन | २,४०,००० टन |
| नाइट्रोजनयुक्त उरर्वक (उत्पादन) | ४,२५००० मी. टन | २२ लाख मीट्रिक टन |
| फास्फेटयुक्त उर्वरक (उत्पादन) | २,००,००० मी. टन | १० लाख मीट्रिक टन |
| डीजल इंजिन | ६०,००० | १,४०,००० |
| ट्रेक्टर | ८,००० | २५,००० |
| मशीनी औजार (मूल्य) | २५ करोड़ रुपए | ९० करोड़ रुपए |
| चीनी, कपास, सीमेंट और कागज बनाने वाली मशीनें | ५६ करोड़ रुपए | १५० करोड़ रुपए |
| सीमेंट | १.२ करोड़ मी. टन | ३ करोड़ मी. टन |
| रेल माल-ढुलाई | २२.५ करोड़ मी. टन | ३५.५ करोड़ मी. टन |
| व्यापारिक गाड़ियां (सड़क पर) | ३,३५,००० | ५,९६,००० |
| जहाजों की भारवहन क्षमता | १५ लाख टन | ३० लाख टन |
| टेलीफोन | ८,१०,००० | १५,००,००० |
| प्राइमरी-मिडिल स्कूलों में बच्चों की संख्या | ६.२ करोड़ | ८.३५ करोड़ |
| सेकेंडरी स्कूलों में बच्चों की संख्या | ५२.४ लाख | ९० लाख |
| विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या | १०.८२ लाख | १४.८२ लाख |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## भारत में कपड़े का उत्पादन

(मिलियन मीटरों में)

| | विकेन्द्रित क्षेत्र | मिल क्षेत्र | कुल |
|---|---|---|---|
| १९४८ | २३% | ७७% | ५,१०० |
| १९५० | २१% | ७९% | ४,२६२ |
| १९५५ | २६% | ७४% | ६,२७८ |
| १९६० | ३०% | ७०% | ६,६२९ |
| १९६३ | ३९% | ६१% | ७,२९९ |

१९४८ तथा १९६३ के मध्य में विकेन्द्रित क्षेत्र में कपड़े का उत्पादन १२० प्रतिशत (१,१५१ से २,८७६ मिलियन मीटर) बढ़ा है। दूसरी तरफ, मिलों का उत्पादन १९५३ से स्थिर रहा है।

परिणाम स्वरूप, भारत में विकेन्द्रित क्षेत्र का उत्पादन कुल सूती कपड़ा उत्पादन का ½ हो गया है। विकेन्द्रित सैक्टर में, हेन्डलूम तथा पावरलूम के मध्य में उत्पादन का विभाजन ११ व २ के अनुपात में है।

## चुने हुए देशों में खाद का उपभोग

सन् १९६१-६२

(कि० ग्रा० प्रति हैक्टर)

संसार का औसत २१

| | | | |
|---|---|---|---|
| जापान | २७० | रूस | १० |
| फ्रांस | ११३ | कनाडा | १० |
| मिश्र | ९४ | ब्राजील | १० |
| सं. रा. अमेरिका | ४१ | पाकिस्तान | ३ |
| आस्ट्रेलिया | २१ | भारत | ३ |

## भारत में सिंचाई १९६१-६२

कुल बोया हुआ क्षेत्र (मिलियन एकड़ों में)

| | |
|---|---|
| सिंचित क्षेत्र | ६१.२ |
| असिंचित क्षेत्र | २७२.८ |
| कुल योग | ३३४.० |

## सिंचाई के साधन

| क्षेत्र | मिलियन एकड़ों में |
|---|---|
| नहरों द्वारा | २५.९ |
| कुओं द्वारा | १८.० |
| तालाबों द्वारा | ११.३ |
| अन्य साधनों द्वारा | ६.० |
| योग | ६१.२ |


# आर्थिक समीक्षा

सम्पादक : श्री हरतीर्थ सिंह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

अ. भा. कांग्रेस कमेटी कार्यालय

७ जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली।

सर्वोपयोगी एवं आकर्षक साइज

सप्ताह के मुख्य समाचारों और घटनाओं का निचोड़

# सेनानी

में पढ़िए

संपादक : शेखर सक्सैना

एक प्रति २० पैसे

वार्षिक शुल्क १० रुपये

सेनानी कार्यालय, बीकानेर (राजस्थान)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना के लिए साधन : राज्यों की मनोवृत्ति

○

योजना आयोग ने बिना किसी संकोच के यह स्वीकार किया है कि तीसरी योजना का कार्य अपने लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हो रहा। इस असफलता के जो कारण गिनाए गए हैं, वे संक्षेप से निम्नलिखित हैं—केन्द्रीय संगठन की दोषपूर्ण रचना, राज्य सरकारों के प्रबन्ध की दुर्बलता, अव्यावहारिक लक्ष्यों की कल्पना, विभिन्न साधनों का एक साथ उपयोग की अपेक्षा बिखर जाना, क्षेत्रीय दृष्टि से प्रबन्ध और तकनीकी समन्वय में कुछ कमी और विकास बद्ध योजना की तुलना में संगठित निजी उद्योगों का योगदान।

योजना आयोग ने चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का आकार २१५०० करोड़ रुपये से लेकर २२५०० करोड़ रुपये तक का निर्धारित किया है। इसमें १४५०० करोड़ रुपये से लेकर १५५० करोड़ रुपये तक की व्यवस्था सार्वजनिक क्षेत्र में की गई है। योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता ने राज्यों के मुख्य मन्त्रियों को यह स्पष्ट कह दिया है कि यद्यपि चतुर्थ योजना का आकार तीसरी योजना से दुगना है, तथापि हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि विदेशों से मिलने वाली सहायता करीब-करीब पहले जैसी ही रहेगी। इसलिए हमें अपने देश की जनता से पहले की अपेक्षा दुगने साधन एकत्र करने पड़ेंगे। यदि इस तथ्य को हमने भुला दिया तो हम बहुत बड़ी कठिनाई में पड़ जाएंगे।

अभी हमारे सामने आय के जो प्रत्यक्ष साधन हैं वे १०५०० और ११५०० करोड़ रुपये के बीच में हैं, जबकि हमारा सार्वजनिक क्षेत्र में ही १५५०० करोड़ रुपये का खर्च है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि २५०० और ३००० करोड़ रुपये के बीच का ऐसा अन्तर है जो अभी तक पूर्ण नहीं हो रहा और यह खाई अपने प्रयत्नों से ही भरनी होगी। श्री अशोक मेहता ने चेतावनी देते हुए भी यह आशा दिलाई है कि यह असम्भव नहीं है। तीसरी योजना के लिए राज्यों ने ६७० करोड़ रुपये के नए साधन जुटाने की प्रतिज्ञा की थी और अब तक वे ५७० करोड़ रुपया प्राप्त कर भी चुके हैं।

राज्यों को अपनी योजनाएं पूर्ण करने के लिए केन्द्र से विपुल मात्रा में सहायता लेनी पड़ती है। भारत के वित्त मन्त्री श्री कृष्णमाचार्य के कथनानुसार प्रथम योजना में राज्यों की योजनाओं के लिए केन्द्र ने उनके व्यय का ३०% सहायता के रूप में दिया था। दूसरी योजना में यह प्रतिशत बढ़कर ५०% हो गया। किन्तु तीसरी योजना में यह आशा की जा रही है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा मिलने वाली सहायता प्रतिशत ६५ से ७० प्रतिशत हो जायगी और हमें मालूम है कि इसके बावजूद राज्य सरकारें अपनी बिजली और सिंचाई की बड़ी योजनाओं की सारी जिम्मेवारी केन्द्रीय सरकार पर डालना चाहते हैं—जैसे—राजस्थान में राजस्थान नहर।

दूसरी तरफ राज्यों का रुख बिल्कुल विपरीत है। उन्होंने विस्तृत आकार की योजनाओं को तो मजे में स्वीकार कर लिया क्योंकि उनमें राज्यों के अंतर्गत होने वाले नए-नए कार्यों से उन्हें भी लाभ पहुँचता। परन्तु इस स्वीकृति के साथ राज्यों ने कोई नई जुम्मेवारी लेने से सर्वथा इन्कार कर दिया। योजना आयोग, वित्त मन्त्री और प्रधान मन्त्री किसी की अपील को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। कोई राज्य केन्द्र की सहायता करने को तैयार नहीं हुआ। सभी वित्त मंत्रालय यह कहते हैं कि उनके राज्य में आय के नए साधनों का दोहन सम्भव नहीं है। मीठा-मीठा गप और कड़वा-कड़वा थू थू वाली बात है। नई बृहदाकार योजना के लाभ तो हरेक राज्य उठाना चाहता है लेकिन उसके लिए कोई त्याग करने को तैयार नहीं हैं। वे यह भी सोचने को तैयार नहीं है कि इतनी बड़ी योजना उनके बिना सहयोग के कैसे पूरी होगी।

हमारी नम्र सम्मति में राज्यों के मुख्य मंत्रियों में इतना मनोबल होना चाहिए कि यदि वे नए साधन जुटाना अत्यन्त कठिन या असम्भव मानते हैं तो उन्हें स्पष्टतः योजना आयोग को यह कह देना चाहिए कि नई योजना का आकार और लक्ष्य कुछ कम ऊंचा रखो। हमें स्वयं संदेह है कि २१-२२ हजार करोड़ रुपये की योजना आज की स्थिति में आदर्श-वादी अधिक और व्यावहारिक कम है।

■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मध्यप्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में विपणन दशा

श्री सुनील कुमार घोष एम० ए०

प्राचीन समय में आदिवासी क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था पूर्ण स्वावलम्बी थी । जो कुछ पैदावार होती थी सारी का सारी गांव में ही खप जाती थी। विपणन की कोई समस्या न थी, किन्तु आदिवासी क्षेत्रों के विकास एवं जन-सम्पर्क से स्थिति काफी बदल चुकी है । स्वावलम्बन की भावना के स्थान पर अदल-बदल की प्रथा प्रारम्भ हुई । आदिवासी किसी एक निश्चित स्थान पर एकत्रित होते थे और अपनी आवश्यकताओं की चीजों को आपस में बदल लिया करते थे। मंहगी वस्तु देकर सस्ती वस्तु लेना इनके लिए आसान बात थी ।

मौद्रिक व्यवस्था के प्रारम्भ होने से इनकी समस्यायें बढ़ने लगीं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे बाजार पर निर्भर रहने लगे। प्रारम्भ में सरकार को कर देने, नमक और कपड़ा आदि खरीदने के लिए वे अपनी पैदावार को बेचने के लिए बाध्य हो गये। आज इनके माल की बिक्री की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। जब तक इनके माल की बिक्री की समस्था को पूर्णतया हल नहीं किया जाता, तब तक आदिवासियों की आर्थिक समस्या का हल अधूरा ही रहेगा। जब तक आदिवासियों का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक रूप से उद्धार न हो, तब तक कल्याणकारी राज्य का सुख स्वप्न पूरा हो नहीं सकता। आदिवासी भाई रूखे सूखे टुकड़े को पाकर अन्न को पैदा करने वाले को धन्यवाद देता है। व्यापारी और दलाल लाभ कमाते हैं और उसका भार आदिवासी उत्पादक और उपभोक्ताओं पर पड़ता है। आदिवासी लोग भी अपने उत्पादन की मांग और पूर्ति में संतुलन बनाये रखने की चेष्टा करता है कि कुछ विवशताओं के कारण वह सफल वितरण पर नियंत्रण नहीं रख पाता।

केवल अधिक उत्पादन कर लेने से ही आदिवासियों को लाभ नहीं पहुँचेगा, वरन् यह भी आवश्यक है कि पदावार की बिक्री के लिए कुशल व्यवस्था की जाए। तभी उन्हें उपज बढ़ाने के लिए अधिक मेहनत करने में बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा।

आदिवासी क्षेत्रों की बाजार की दशा बहुत ही दयनीय है। आदिवासियों को बाजार में आने के लिए मीलों चलना पड़ता है क्योंकि बाजार किसी कस्बे में लगता है । आदिवासी क्षेत्र में किसान बाजार में इस उद्देश्यसे नहीं आते कि वहां के बाजार के भाव सम्बन्धी हालत देखे। वह सिर्फ इसीलिए आते हैं कि वहां अन्य रिश्तेदारों से मिल सकेगा तथा एक साथ बैठकर शराब आदि पीकर अपना मन प्रसन्न कर सकेगा।

आवागमन की असुविधा के कारण ये बाजार में अपनी पैदावार को लेकर नहीं पहुँच पाते कि दलाल किसी प्रकार इनके गांव में पहुँच जाते हैं और उन्हें पेशगी दे आते हैं। जब कभी ये लोग बाजार आते भी हैं तो शहर के दलाल या छोटे-छोटे व्यापारी उनके बाजार में प्रवेश करने के पहिले बाजार के समीप माल को सस्ते भाव में खरीद लेते हैं। अशिक्षित होने के कारण बाजार भाव से वे अनभिज्ञ रहते हैं । आदिवासी लोग अपना माल, घी, साग, भाजी तथा अनाज एवं कुटीर उद्योग से तैयार किया हुआ माल जैसे बांस की टोकनी, कंघी, बाहरी, कुल्हाड़ी बेचने लाते हैं। उनको दलाल सस्ते सस्ते दामों में धोका देकर या डराकर या अपने ऋण का भार बतलाकर खरीद लेते हैं। गरीबी के कारण ये लोग पहिले से ही साहूकारों या दलालों से कर्ज लिये रहते हैं, जिसके दबाव के कारण उन्हें मजबूर होकर कम मूल्यों पर अपनी चीजों को बेच देना पड़ता है।

दूसरी ओर शहर के दलाल तथा छोटे छोटे व्यापारी सड़ा गला माल ले जाकर आदिवासी क्षेत्र के बाजार में मनमाने भावों पर बेचते हैं, अधिक से अधिक पैसा लेते हैं, उनको खराब माल देते हैं, तोल में कम तोलते हैं और नाप में कम नापते हैं । उधार में जो माल देते हैं, उसकी ज्यादा से ज्यादा कीमत लगाते हैं। इस प्रकार आदिवासी लोग अपनी पूरी पैदावार का बिक्री सम्बन्धी कार्य दलालों

(शेष पृष्ठ ५० पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तीन योजनाओं में नेफा की प्रगति

श्री एल० बी० थांगा विकास आयुक्त, नेफा

देश के अन्य भागों की तरह नेफा में भी विकास के कार्यक्रम शुरू किये गए हैं। तीनों योजनाओं से नेफा के आदिवासियों की दशा में सुधार हुआ है और प्रदेश की आर्थिक उन्नति हुई है। विकास के कार्यक्रम ऐसे ढंग से बनाए गए हैं, जिनसे आदिवासियों की संस्कृति, सरलता और आत्मनिर्भरता के गुणों पर कोई बुरा असर न पड़े। नेफा की ये विकास योजनाएं नेहरूजी के द्वारा निर्दिष्ट पांच सिद्धान्तों पर आधारित हैं। ये हैं:—

१—विकास लोगों की प्रतिभा और क्षमता के अनुसार होना चाहिए। ऊपर से कोई काम उन पर थोपना नहीं चाहिए और हर तरह से उनकी परम्परागत कला और संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।

२—आदिवासियों के भूमि और जंगलों पर अधिकारों का ख्याल रखना चाहिए।

३—हमें आदिवासियों में ही कार्यकर्त्ता तैयार करने चाहिएं, जो योजनाओं और प्रशासन का संचालन कर सकें। शुरू में उन्हें बाहर के शिल्पिक विशेषज्ञों की सहायता की जरूरत होगी। लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में ऐसे बाहरी लोग बहुत अधिक संख्या में नहीं भेजने चाहिए।

४—आदिवासी क्षेत्रों में जरूरत से ज्यादा योजनाएं नहीं चलानी चाहिएं, न शासन को बहुत ज्यादा दखल देना चाहिए। हमें उन लोगों की संस्थाओं से ही काम लेना चाहिए, नई संस्थाएं खड़ी नहीं करनी चाहिएं।

५—हमें आंकड़ों या खर्च से परिणाम नहीं आंकना चाहिए, बल्कि यह कसौटी रखनी चाहिए कि इनसे वहां के लोगों की कार्यशक्ति और गुणों का कितना विकास होता है।

नेफा की पहली और दूसरी योजनाओं में कृषि, सड़क संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, छोटे उद्योग, सहकार और वन-सम्पदा का विकास किया गया। सारे देश को ध्यान में रखते हुए कृषि को प्राथमिकता दी गई। नेफा की दुर्गमता और संचार साधनों के अभाव के कारण कृषि के साथ-साथ संचार पर ही उतना भी ध्यान दिया गया। इस सिलसिले में सबसे अधिक व्यय हवाई पट्टियों और सड़कों के बनाने में हुआ। इस प्रदेश के भीतरी भागों को खोलने और उन्हें विकास का पूरा लाभ पहुंचाने के लिए, पैदल, टट्टू और जीप चलाने योग्य सड़कें और हवाई पट्टियां बनाना जरूरी है। हर गांव को बड़ी सड़कों से जोड़ना भी जरूरी है।

आदिवासियों को अध्यापन, डाक्टरी, इन्जीनियरी और कृषि की शिक्षा के लिए बड़ी संख्या में छात्रवृत्तियां दी गई हैं। इससे इस क्षेत्र में विशेषज्ञ तैयार होंगे।

दूसरे राज्यों की तरह नेफा में भी चौथी योजना के कार्यक्रम बनाए जा रहे हैं। मुख्य कार्यक्रम लगभग पहली योजनाओं जैसे ही हैं। पहली योजना में २ करोड़ २२ लाख रु० और दूसरी योजना में ३ करोड़ ३६ लाख रु० खर्च किए गए। तीसरी योजना में कुल खर्च का अनुमान ७ करोड़ २० लाख ६४ हजार रु० है। यह रकम दूसरी योजना की रकम से लगभग दुगुनी है।

कृषि के अन्तर्गत पशु और मछली पालन, फल की बागवानी, सिंचाई की गूलें बनाने और गांवों में बिजली पैदा करने की भी कोशिश की जायगी। नेफा में यह अच्छी बात है कि यहां बिचौले और सूदखोर नहीं हैं।

सौभाग्य से नेफा में आबादी की समस्या नहीं है। इसलिए हर व्यक्ति को कृषि में लगाया जा सकता है। फिर भी विकास की योजनाओं में लोगों को नये काम धन्धे में लगाने की व्यवस्था की जाएगी। तीसरी योजना की अवधि में ही नेफा की पड़ताल की जा रही है कि यहां कौन मध्यम उद्योग चलाए जा सकते हैं। एक पालीटेकनीक भी खोला जा रहा है।

नेफा का विकास पूरे देश के लिए एक चुनौती है। इस क्षेत्र का पिछड़ापन, दुर्गमता और अन्य कठिनाइयों के बावजूद हमें बड़े कार्यक्रम बनाने होंगे और ऊंचा हौसला रखना है। दृढ़ निश्चय द्वारा सभी कठिनाइयां और बाधाएं दूर की जा सकती हैं। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

भारतीय अर्थशास्त्र (तृतीय संस्करण)—लेखक—श्री सत्यदेव देराश्री व श्री लक्ष्मीनारायण नाथूरामका। प्रकाशक—लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, हास्पिटल रोड, आगरा। मूल्य ११.७५ रु०। पृष्ठ संख्या ६२३।

अर्थशास्त्र और विशेषकर भारतीय अर्थशास्त्र पर लिखे गये ग्रन्थ कुछ समय बाद ही पुराने हो जाते हैं, क्योंकि भारत की प्रगतिशील अर्थव्यवस्था में आर्थिक प्रवृत्तियों, परिस्थितियों और समस्याओं में नित्य नवीनता आती रहती है। इसीलिए दो-तीन वर्ष बाद भारतीय अर्थशास्त्र पर लिखे गए ग्रन्थ पुराने हो जाते हैं और देश की आधुनिकतम परिस्थितियों से परिचित होने के लिए नवीन संस्करणों की आवश्यकता होती है। अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए तो यह और भी अधिक आवश्यक है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के दोनों लेखक अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित और और अनुभवी अध्यापक हैं। वे देश की बढ़ती हुई आर्थिक प्रगति और नित नई पैदा होने वाली समस्याओं का अच्छा ज्ञान रखते हैं, यह इस संस्करण के प्रत्येक पृष्ठ से स्पष्ट होता है। उन्होंने इस संस्करण में अनेक अध्यायों का सम्पूर्ण कलेवर ही नहीं बदला, बल्कि अनेक नये अध्याय भी जोड़ दिए हैं। इस कारण यह पुस्तक भारतीय अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बहुत अधिक उपयोगी हो गयी है। अनेक विवादग्रस्त प्रश्नों के दोनों पहलू देकर लेखकों ने विषय के साथ पूर्ण न्याय किया है और अनेक स्थलों पर भारत सरकार की नीति से स्वतंत्र सम्मति भी प्रकट की है, जो अर्थशास्त्र के निष्पक्ष विद्यार्थी को स्वतंत्र चिन्तन की सामग्री देती है। प्रत्येक विषय का विवेचन करने से पूर्व लेखकों ने उसके ऐतिहासिक विकास या क्रम का सुबोध और सरल भाषा में परिचय दिया है। इस ग्रन्थ के लेखक भारतीय किसान को अकार्य-कुशल, अंधविश्वासी और परिवर्तनविरोधी नहीं मानते, जैसे कि अधिकांश अंग्रेजी पढ़े अर्थशास्त्रियों की परिपाटी बन गई है। छोटे और बड़े खेतों की चर्चा करते हुए विषय का विवेचन बहुत सुन्दर और स्पष्ट है। किन्तु इस प्रकरण में 'दामले समिति' की रिपोर्ट के प्रसंग में यदि लेखक इसका भी उल्लेख कर देते कि १९६३-१९६४ तक 'जेतसर' में वस्तुतः कितनी एकड़ खेती हो चुकी, तो अधिक अच्छा होता। इसी तरह सहकारिता के विस्तृत प्रकरण में पंडित नेहरू द्वारा बहुसमर्थित संयुक्त कृषि सहकारिता के सम्बन्ध में सफलता व असफलता की जानकारी की भी हम आशा रखते थे।

ग्रन्थ के द्वितीय खंड में औद्योगिक विकास की गति तथा आधुनिक समस्याओं का अत्यन्त सुन्दर विवेचन है। इस क्षेत्र में नित नई आने वाली प्रवृत्तियों का भी नवीनतम परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। यूनिटट्रस्ट जैसे अत्यन्त आधुनिक विषय भी इसमें समावेश से नहीं बचे हैं। श्रम समस्या, रोजगार, औद्योगिक नीति और विदेशों से वित्तीय सहायता आदि अनेक विषयों की जानकारी इससे हो जाती है। तीसरे खण्ड में भारतीय मुद्रा प्रणाली, विदेशी विनिमय, मुद्रा स्फीति और बैंकों के परिचय के बाद यातायात और परिवहन तथा विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में यथासम्भव आधुनिकतम जानकारी दी गई है। देश की वित्तीय व्यवस्था का परिचय देते हुए भारत की राष्ट्रीय आय, आर्थिक नियोजन और तीसरी और चौथी पंचवर्षीय योजनाओं के भी संक्षिप्त परिचय से आज के विद्यार्थी लाभान्वित हो सकते हैं।

हमने ऊपर की पंक्तियों में अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों का उल्लेख किया है, किन्तु हमारा अभिप्राय केवल कालेजों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित नहीं है। भारत के आर्थिक विकास में रुचि रखने वाले प्रत्येक सुशिक्षित नागरिक विशेषकर प्रत्येक सामाजिक कार्य-कर्त्ता और पत्रकार के लिए भी हम इस पुस्तक को बहुत उपयोगी मानते हैं। हमें आशा है कि यह कठोर परिश्रम और गंभीर अध्ययन के बाद लिखा हुआ यह विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ इस बात का प्रमाण है कि आवश्यकता उत्पन्न होने पर हिन्दी में उच्च कोटि का साहित्य तैयार किया जा सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**नेहरु, व्यक्तित्व और विचार**—प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली। आकार २०×३० / ८ पृष्ठ-५१२। मूल्य २५) सजिल्द।

भारत के इतिहास में महान् यशस्वी, युग पुरुष पं० जवाहर लाल नेहरु के देहावसान के बाद अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने उनकी स्मृति में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए छोटे बड़े पचासों विशेषांक निकाले थे। इन विशेषांकों में देश और विदेश के सैकड़ों महापुरुषों, विचारकों, दार्शनिकों, नेताओं, कार्यकर्ताओं आदि के स्वर्गीय नेता के प्रति प्रकट किये गये श्रद्धा और स्नेहपूर्ण उद्गार, विचार और संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। किन्तु ये विशेषांक अपने प्रकृत रूप में स्थायी साहित्य की सामग्री नहीं हो सकते थे।

हिन्दी साहित्य के प्रमुखतम प्रकाशक सस्ता साहित्य मंडल ने इन सब विचारों, श्रद्धांजलियों, उद्गारों और संस्मरणों को एक अत्यंत सुन्दर और परिष्कृत रूप में संग्रहीत व सम्पादित करके बहुत प्रशंसनीय प्रयत्न किया है।

प्रथम खण्ड में दिये गये नेक संस्मरण तो बहुत हृदयस्पर्शी हो गये हैं। पं० नेहरु का दीर्घ जीवन जहां राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के एक महान् सेनानी के रूप में व्यतीत हुआ है, वहां महान् देश के महान् प्रशासक और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विश्वशान्ति के प्रमुख नेता के रूप में भी बीता है। उनके दीर्घकालीन प्रशंसनीय सार्वजनिक जीवन की मूल प्रेरणा उनकी मानवता की प्रबल भावना रही है। इन संस्मरणों व लेखों में उनके इन सब गुणों का परिचय मिलता है। इस संग्रह में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सरदार पटेल और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद के भी नेहरु-विषयक विचार भी दे दिए गए हैं, जो उन्होंने पंडित जी के जीवनकाल में ही प्रकट किए थे। इससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। लगभग २४ पृष्ठों में स्वर्गीय महान् पुरुष के पचासों चित्र दिए गए हैं, जो पंडित जी की लोकप्रियता, बहुमुखी कार्यव्यस्तता और लोकोत्तर प्रतिष्ठा तथा उनके सरल व्यक्तित्व को प्रगट करते हैं।

केवल इतने मात्र से ही यह पुस्तक प्रत्येक शिक्षित भारतीय और विश्व के प्रत्येक हिन्दी ज्ञाता, नागरिक के लिए संग्रह योग्य हो सकती थी। द्वितीय खण्ड में इस महान् विचारक और महान् द्रष्टा के समय समय पर प्रकट किए गए विचारों का संग्रह किया गया है। इनमें से अधिकांश विचार भारत की स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व प्रकट किये गए थे और कुछ स्वाधीनता के बाद। इन विचारों के संग्रह ने इस पुस्तक को और भी अधिक उपयोगी तथा संग्रहणीय बना दिया है। यदि पिछले १० वर्षों की अवधि में विभिन्न समयों पर प्रकट किए गए विचारों का कुछ और अधिक समावेश होता, तो आज की समस्याओं पर हमें अधिक स्पष्ट मार्गदर्शन मिल जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि कलेवर बढ़ जाने के भय से प्रकाशक अपने लोभ का संवरण करने के लिए विवश हो गये। फिर भी जो विचार संग्रहीत किए गए हैं, उनसे पंडित जी की स्पष्ट विचारसरणि, उत्कट देशभक्ति और ऊंची महत्वाकांक्षाओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। पुस्तक की भाषा सरल, परिष्कृत और सुन्दर है। इन सब कारणों से यह ग्रंथ प्रत्येक पुस्तकालय में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के घर में भी संग्रहणीय हो गया है।

पुस्तक का जैसे अंतरंग सुन्दर है, वैसे ही बहिरंग भी बहुत सुन्दर हो गया है। छपाई, कागज और चित्र सभी कुछ अच्छे हैं।

**कुछ पुरानी चिट्ठियां**--सम्पादक—पं. जवाहर लाल नेहरु। प्रकाशक—वही। पृष्ठ संख्या ७००। आकार २०×३० / १६ मूल्य १० रुपये सजिल्द।

यद्यपि यह पुस्तक लगभग चार वर्ष पूर्व प्रकाशित हुई थी, तथापि इसका महत्त्व आज भी कम नहीं है। इस पुस्तक में उन पत्रों का संग्रह किया गया है, जो भारत और विदेशों के प्रमुख व्यक्तियों ने पं० नेहरु को समय समय पर लिखे थे। कुछ पत्र वे भी हैं, जो स्वयं पंडित नेहरु ने किसी पत्र के उत्तर में लिखे हैं। इन पत्रों का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। समय समय पर पंडित जी और उनके साथ देश के राष्ट्रीय नेताओं को अनेक राजनैतिक समस्याओं और उलझनों का सामना करना पड़ा। ये उलझनें अधिकांश में ब्रिटिश सरकार द्वारा खड़ी की गयीं थीं। कुछ पत्रों से श्री सुभाषचन्द्र बोस के साथ उत्पन्न घोर मतभेद की पृष्ठ भूमि का भी अच्छा ज्ञान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संचार के आधुनिक साधन

भारत में संचार व्यवस्था में काफी प्रगति हुई है। खुद डायल घुमाकर बाहर फोन मिलाने और टेलेक्स की व्यवस्था की गई है। डाक-तार विभाग की तीसरी योजना के कार्यक्रम में ५ हजार किलोमीटर कोएक्सियल केबुल बिछाने और २.५०० किलोमीटर अणु-तरंग (माइक्रोवेव) प्रणाली लगाने की व्यवस्था थी। इसी से देश में स्वयं बाहर टेलीफोन मिलाने और टेलेक्स की व्यवस्था का विस्तार सम्भव है।

नम्बर घुमाकर बाहर फोन करने की व्यवस्था सबसे पहले लखनऊ-कानपुर के बीच चालू हुई थी। इसके बाद आगरा-दिल्ली और दिल्ली-जयपुर के बीच भी यह चालू हो गई है।

इस व्यवस्था के चालू होने से पहले लखनऊ-कानपुर के बीच दिन में केवल ५०० फोन होते थे, जबकि अब १६ हजार होने लगे हैं। दिल्ली-आगरा के बीच में कालों की संख्या ४० गुनी हो गई है, अर्थात् ४०० के बजाय १६ हजार काल होने लगे हैं। दिल्ली-जयपुर के बीच भी कालों की संख्या १३ गुनी हो गई है।

इस व्यवस्था में कोएक्सियल केबुल यासूक्ष्म-तरंगों के अनेक सर्किटों की जरूरत पड़ती है। इसके अलावा आधुनिक बेतार यंत्रों की भी आवश्यकता पड़ती है। इन साधनों को धीरे-धीरे बढ़ाया जा रहा है। अब दिल्ली-कानपुर के बीच यह व्यवस्था की जाएगी। ३०० मील की इस प्रणाली को जोड़ने के लिए, जरूरी यंत्रों का निर्माण बंगलौर के टेलीफोन कारखानों में सुधार किया है। दिल्ली-कानपुर प्रणाली को वाराणसी तक बढाया जाएगा और इसके बाद पटना तक। अगले १६ महीनों में दिल्ली-जालंधर, दिल्ली-शिमला और दिल्ली-श्रीनगर के बीच भी यह व्यवस्था की जाएगी।

## टेलेक्स सेवा

टेलीफोन पर मौखिक बातचीत होती है, और टेलेक्स पर लिखित। दो दूर मुद्रकों को मिलाने के लिए भी एक्सचेंज की सहायता नहीं लेनी पड़ती और टेलेक्स रखने वाला व्यक्ति, सीधे नंबर मिलाकर, दूरमुद्रक पर अपना संदेश भेज देता है।

भारत में टेलेक्स सेवा मई, १६५६ में चालू हुई थी। इसके लिए बम्बई-अहमदाबाद में, विदेशों से मंगाकर दो टेलेक्स योजना (एक्सचेंज) लगाए गए। इन की क्षमता २०-२० लाइनों की थी। डाक-तार विभाग के दूर-संचार अनुसंधान केन्द्र ने भी दूरमुद्रक योजनाओं को बढाने का काम हाथ में लिया। भारत में बने दूरमुद्रक योजक जून, १६६३ में बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास में चालू हुए। इसमें २०० लाइनों की व्यवस्था थी।

## नए दूरमुद्रक योजक

बड़े शहरों में टेलेक्स का उपयोग बहुत बढ़ रहा है। इस समय बम्बई में ४०५ और नई दिल्ली में २२५ व्यक्ति टेलेक्स लगवाने के प्रार्थी हैं।

अतः डाक-तार विभाग ने, और दूरमुद्रक योजक लगाने का निश्चय किया है। कानपुर, नागपुर और कोयम्बतूर में टेलेक्स लगाए जा रहे हैं। सिकन्दराबाद, बंगलौर, मदुरै, पटना, पूना और गोहाटी में भी एक्सचेंज लगाने के लिए यंत्रों का आर्डर दिया जा चुका है। बम्बई, नई दिल्ली, मद्रास और कलकत्ता के योजकों की क्षमता ५०० लाइन की जा रही है। इसके अलावा अगले दो वर्षों में रांची, जमशेदपुर, त्रिचनापल्ली, अमृतसर, कटक, लखनऊ, अम्बाला, बड़ोदा, लुधियाना, एर्नाकुलम, राज-

---

होता है। कुछ पत्रों से यह जानकर आश्चर्य होता है कि विचार दर्शन भिन्न भिन्न होते हुए भी नेहरु जी विनय और श्रद्धापूर्ण शिष्य की भांति महात्मा गांधी के आत्म-समर्पण करके चलते रहे। वस्तुत इन पत्रों से १६३० और १६४८ के बीच के महत्वपूर्ण काल की उथल-पुथल (स्वतंत्रता संग्राम की दृष्टि से) का परिचय अच्छी तरह मिल जाता है। भारतीय इतिहास की दृष्टि से यह पुस्तक भी उपयोगी सिद्ध होगी। —कृष्ण



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोट और खोपाली (बम्बई) में भी दूरमुद्रक एक्सचेंज लगाए जाएंगे।

## नये से नये ईंधन

शक्ति-स्रोतों के मध्य चल रही अत्यन्त उग्र प्रतिस्पर्धा के सम्बन्ध में एक अत्यन्त उल्लेखनीय तथ्य यह है कि अब ऐसे काल-चक्रों की अवधि, जिनमें किसी एक ईंधन को प्रमुखता प्राप्त रहती है, निरन्तर घटती जा रही है। टैक्निकल विकास और इस के साथ ही आर्थिक परिवर्तन इससे भी कम अवधियों में परस्पर एक जुट हो गये प्रतीत होते हैं। कई हजार वर्षों तक लकड़ी शक्ति का मुख्य स्रोत बनी रही; कोयला लगभग १०० वर्षों तक शक्ति का मुख्य स्रोत रहा; पेट्रोलियम ईंधन की प्रधानता की अवधि इससे भी कम अर्थात् ५० वर्ष रही; और यह विश्वास कर लेने का पर्याप्त कारण है कि अणुशक्ति के विकास के कारण नये प्रचण्ड शक्ति वाले शक्ति-स्रोत प्राकृतिक गैस की प्रधानता की अवधि भी काफी छोटी होगी।

अभी, तक मनुष्य ने सौर-शक्ति का विकास करने की सम्भावनाओं को छुआ मात्र है, लेकिन आगे इस सम्बन्ध में काफी अधिक प्रयास किए जाने की आशा है। फयुल-सेल के विकास की सम्भावना पर तथा इस बात पर भी जरा गौर से विचार करिये कि कुछ अनुसंधानकर्त्ता पृथ्वी के गर्भ में निहित ताप को उपयोग के हेतु सुलभ करने का विचार कर रहे हैं। यही नहीं, संसार के विभिन्न भागों में अनेक असमान्य शक्ति-स्रोतों के विकास सम्बन्धी संभावनाओं का भी अध्ययन किया जा रहा है।

जोन एम० केली

## १९६४ के पूर्वार्द्ध में औद्योगिक उत्पादन

एक सरकारी समीक्षा से पता चला है कि १९६३ में औद्योगिक उत्पादन में जो वृद्धि हुई थी, वह १९६४ के पूर्वार्द्ध में भी जारी रही। जनवरी-जून १९६४ में औद्योगिक उत्पादन का सूचक अंक १७०.६ था, पिछले साल की इसी अवधि के सूचक अंक से ६.८ प्रतिशत अधिक है।

यह वृद्धि अधिकांश चीजों के समूह में हुई। परिवहन उपकरणों के निर्माण में सबसे अधिक, २९.६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस समूह में मोटर गाड़ियों, मोटर-साइकिलों, स्कूटरों, तीन पहिए वाली गाड़ियों, रेल-वैगनों और साइकिलों के निर्माण में काफी वृद्धि हुई। जीपों और ट्रकों का उत्पादन बढ़ने से मोटरगाड़ियों का निर्माण बढ़ा।

ऊनी कपड़े का उत्पादन घटा, किन्तु कपड़े के उत्पादन के सूचक अंक में ६ प्रतिशत की वृद्धि हुई। नकली रेशे और रेशम के कपड़े के उत्पादन में २८ प्रतिशत की और सूती कपड़े में ५ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

खाद्य सामग्री बनाने वाले कारखानों का उत्पादन १४ प्रतिशत, कागज का ११.६ प्रतिशत, पेट्रोल का १३.६ प्रतिशत, धातु के सामान का १२.९ प्रतिशत, मशीनों को ११.१ प्रतिशत और बिजली के सामान का १०.६ प्रतिशत बढ़ा। कार्डिंग इंजनों, मशीनी औजारों, बालबियरिंगों, चीनी कारखानों की मशीनों, ट्रांसफारमरों, बैटरियों रेफ्रिजिरेटरों और कुछ प्रकार के केबुलों का उत्पादन बढ़ा।

खानों की मशीनों, ऊनी कपड़े, जूते और फर के सामान, लोहे, इस्पात और पीतल के सामान के उत्पादन में गिरावट आई।

## मकानों के लिए जीवन बीमा से सहायता

चालू योजना की अवधि में विभिन्न मकान निर्माण योजनाओं के लिए राज्य सरकारों को जीवन बीमा निगम के कोष से सरकार अब तक ४५ करोड़ रु० दे चुकी है। १५ करोड़ रु० १९६४-६५ में ही दिए गये हैं।

अब तक सबसे अधिक, ६ करोड़ ७१ लाख ५० हजार रु० महाराष्ट्र राज्य को दिए गये हैं। मद्रास को ५ करोड़ ३८ लाख रु० और पंजाब को ४ करोड़ ७६ लाख ५१ हजार रु० दिये गए। बिहार को ३ करोड़ १६ लाख ८२ हजार रु०, उत्तर प्रदेश को ३ करोड़ १२ लाख रु०, राजस्थान को २ करोड़ ७० लाख रु०, मध्य प्रदेश को २ करोड़ ३२ लाख ३५ हजार रु०, गुजरात को ८९ लाख १० हजार रु० और जम्मू-कश्मीर को ४९ लाख ७४ हजार रु० दिये गए हैं। शेष अन्य राज्यों को दिये गए हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी कुल आवश्यकताएँ

बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण हमें विभिन्न जरूरी वस्तुओं की आवश्यकता भी अधिक होती जायगी। योजना आयोग के एक अनुमान के अनुसार चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त तक १२०० लाख टन अनाज की जरूरत पड़ेगी। इसी समय कुछ अन्य वस्तुओं की आवश्यकता निम्नलिखित रूप से हो होगी—

| | आवश्यकता लाख टनों में | तीसरी योजना के अन्त तक सम्भावित उत्पादन |
|---|---|---|
| तिलहन | १२० | ७०-८० लाख |
| गन्ना (गुड़) | १३० | ११० |
| रुई (गांठें) | ९० | ६० |
| जूट (गांठे) | ८० | ६० |

अनाज का सम्भावित उत्पादन तीसरी योजना के अन्त तक ९००-९२० लाख टन होगा।

## कृषि पर सार्वजनिक क्षेत्र में व्यय

(करोड़ रु० में)

| | तीसरी योजना | चतुर्थ योजना |
|---|---|---|
| कृषि उत्पादन | २२६.०७ | ७७४.०० |
| छोटी सिंचाई | १७६.७६ | ४०३.३३ |
| भूमि संरक्षण | ७२.७३ | २१५.०० |
| जंगल | ५१.३६ | १२०.०० |
| पशु-पालन | ५४.४४ | १५२.०० |
| दुग्ध उद्योग दूध पूर्ति | ३६.०३ | ५८.०० |
| कृषि पदार्थ बाजार | ४१.५३ | ४६.०० |
| मछलियां | २६.३६ | ११०.०० |
| समाज विकास | ३२०.०० | २६०.०० |
| सहकारिता | ६१ | २१२.०० |

## कृषकों को ऋण और उसका उपयोग

योजना आयोग, भारत सरकार और राज्य सरकारें सभी कृषकों को प्रोत्साहित करने के लिए ऋण देने की आवश्यकता को अनुभव करते हैं। रिजर्व बैंक, स्टेट बैंक, कोआपरेटिव बैंक और सहकारी समितियां सरकार को अधिक से अधिक ऋण देने की दिशा में प्रगतिशील हैं। प्रति वर्ष इनकी रिपोर्टों में बताया जाता है कि सहकारी समितियों द्वारा कितना अधिक ऋण दिया जा रहा है, किन्तु स्थिति आज भी सन्तोषजनक नहीं है। आज से १०-१२ वर्ष पूर्व सर्वेक्षण समिति ने जो जांच की थी, उसके अनुसार सरकार एवं अन्य संस्थाओं का योगदान बहुत कम था। सरकार से कुल ऋण का ३.३ प्रतिशत प्रतिशत, सहकारी संस्थाओं से ३.१ प्रतिशत और व्यापारिक बैंक से १ प्रतिशत से भी कम ऋण किसानों को मिला और शेष ९३ प्रतिशत व्यक्तिगत संस्थाओं—महाजन, जमींदार और व्यापारी आदि से प्राप्त हुआ। इन वर्षों में कृषि सहकारी समितियों की संख्या और उनके द्वारा दिये जाने वाले ऋणों की मात्र कई गुना बढ़ चुकी है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक अल्पकालीन एवं मध्यमकालीन ऋण ५३० करोड़ रु० तथा दीर्घकालीन ऋण १५० करोड़ रु० देने का लक्ष्य अपनाया गया है। यह राशियां काफी बड़ी दीखती हैं, किन्तु आवश्यकताओं के देखते हुए यह बहुत कम हैं। अखिल भारतीय साख सर्वेक्षण समिति ने तत्कालीन आवश्यकताओं को देखते हुए ७५० करोड़ रुपये का अनुमान किया था और आज तो यह आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है। इसके विपरीत आज हम कितने कम ऋण की व्यवस्था कर पा रहे हैं, यह शोचनीय है।

किन्तु इससे भी अधिक चिन्ताजनक बात यह है कि किसान भिन्न २ आवश्यकताओं के नाम पर जो ऋण लेते हैं, उनका उपयोग वह कृषि से भिन्न कार्यों में करते हैं। विवाह, आभूषण, अन्य सामाजिक समारोह आदि में ऋणों का बड़ा भाग लग जाता है और भूमि सुधार सिंचाई, अच्छे बीज तथा औजार आदि में ऋण का कम भाग लगता है। इसलिए जहां किसानों को अधिक मात्रा में ऋण देने की आवश्यकता है, वहां यह भी आवश्यक है कि यह देखा जाय कि दिये हुए ऋणों का किसान किस तरह उपयोग करते हैं। बिना ऋण का सदुपयोग किये ऋण देने का हम बहुत कम लाभ उठा सकेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय औद्योगिक साख और विनियोग निगम

यशवन्तसिंह भण्डारी

आज के इस युग को औद्योगिक युग की संज्ञा दी जा सकती है। कोई भी राष्ट्र औद्योगिक प्रगति के बिना अन्य राष्ट्रों के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं ठहर सकता। भारत मूलतः एक कृषि प्रधान देश है। यहां की ८०% जन संख्या कृषि पर आधारित है और हमारी राष्ट्रीय आय का करीब ५०% भाग कृषि से प्राप्त होता है। किन्तु कोई भी राष्ट्र अधिक समय तक कृषि-प्रधान नहीं रह सकता है। भारत भी औद्योगीकरण के द्वार पर खड़ा है। यह देश के लिये एक संक्रान्ति काल है।

औद्योगिक विकास के लिये पूंजी की आवश्यकता होती है, यदि हम पूंजी को रक्त कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। भारतवर्ष में सदैव औद्योगिक पूंजी की कमी रही है। भारतीय पूंजी को 'शर्मीली' पूंजी कहा गया है, यह एक प्रमुख कारण है कि भारत अपने औद्योगिक विकास में अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा पिछड़ गया है। औद्योगिक पूंजी की आवश्यकताओं को देखते हुए और विशेष रूप से उद्योगों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिये जनवरी १९५५ में 'भारतीय—औद्योगिक साख और विनियोग निगम' की स्थापना की गई थी, इस निगम के उद्देश्य निम्नलिखित थे :—

(i) निजी उद्योगों की स्थापना, विस्तार तथा नवीनीकरण में सहायता प्रदान करना।

(ii) आन्तरिक एवं बाहरी निजी पूंजी को प्रोत्साहन प्रदान करना।

(iii) निजी औद्योगिक विनियोग को प्रोत्साहन देना तथा विनियोग बाजारों का विस्तार करना।

निगम के विशेष उद्देश्य निम्नलिखित थे :—

(i) मध्यकालीन और दीर्घकालीन ऋण प्रदान करना या अंश पूंजी में हिस्सा लेना।

(ii) अंशों एवं प्रतिभूतियों का अभिगोपन करना।

(iii) अन्य निजी साधनों से प्राप्त ऋणों की प्रत्याभूति करना।

(iv) उद्योगों को प्रबन्ध सम्बन्धी व तकनीकी सलाह प्रदान करना।

## निगम की अंश पूंजी एवं अन्य वित्तीय साधन

निगम की अधिकृत पूंजी २५ करोड़ रुपया है। निर्गमित एवं दत्त पूंजी ५ करोड़ रुपया है। अंश पूंजी का विभाजन १०० रुपया प्रति साधारण अंश के रूप में है। निगम की दत्त पूंजी में विभिन्न संस्थाओं का योग इस प्रकार है :

(i) २ करोड़ रुपया भारतीय व्यापारिक बैंकों एवं बीमा कम्पनियों द्वारा,

(ii) १.५ करोड़ रुपया भारतीय जनता द्वारा,

(iii) १ करोड़ रुपया ब्रिटेन के विनियोग कर्ता (इसमें 'कामन वेल्थ-डेवलपमेन्ट फाइनेन्स कम्पनी भी सम्मिलित है)

(iv) ५० लाख रुपया सं० रा० अमरीका के विनियोग कर्ताओं के द्वारा। निगम के वर्तमान में १८०० अंशधारी हैं, जिनमें 'भारत का जीवन बीमा निगम' भी सम्मिलित है।

## अन्य साधन

केन्द्रीय सरकार ने जनवरी १९५५ में निगम को एक ऋण ७.५ करोड़ रुपए का प्रदान किया। यह ऋण १९७० के पश्चात् से देय है तथा इस ऋण पर कोई ब्याज नहीं दिया जावेगा। केन्द्रीय सरकार द्वारा दूसरा ऋण अक्टूबर १९६० में १० करोड़ रुपए का प्रदान किया गया। इस ऋण पर ४॥% ब्याज दिया जावेगा तथा यह ऋण भी १९७० के पश्चात् से देय होगा। हाल ही में निगम को केन्द्रीय सरकार द्वारा १० करोड़ रुपये का ऋण प्राप्त हुआ है।

विश्व बैंक ने निगम को मार्च १९५५ तथा जुलाई १९५९ को क्रमशः १० मिलियन डालर के तथा जून १९६३ को ३० मिलियन डालर का ऋण प्रदान किया। इन ऋणों से पूंजीगत वस्तुओं का क्रय ऐसे किसी भी राष्ट्र से किया जा सकता है जो कि विश्व बैंक के सदस्य हैं। इन ऋणों की विदेशी मुद्रा में अदायगी की प्रत्याभूति केन्द्रीय सरकार ने की है। मार्च १९६१ में यू. एस. डेव-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लप मैन्ट लोन फंड से निगम को ५ मिलियन डालर की सहायता प्राप्त हुई है। यह ऋण रुपयों में भुगतान किया जावेगा तथा इससे पूंजीगत वस्तुएं क्रय की जावेगी। इसके अतिरिक्त जर्मन गणतंत्र से २५ मिलियन डी. एम. का एक ऋण प्राप्त हुआ है।

## निगम का प्रबन्ध

निगम का प्रबन्ध संचालन एक संचालक मंडल द्वारा होता है। संचालक मंडल का एक अध्यक्ष होता है। वर्तमान में निगम के अध्यक्ष श्री गगनबिहारी लाल मेहता है। अध्यक्ष के अतिरिक्त, ६ अन्य भारतीय अंशधारियों के संचालक, एक यू० एस० ए० के अंशधारियों का संचालक एवं एक यू० के० के अंशधारियों का संचालक है। संचालक मंडल में एक संचालक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में होता है।

## वित्तीय सहायता के स्वरूप

निगम निम्नलिखित रूपों में उद्योगों को आर्थिक सहायता प्रदान करता है :—

(i) निगम उद्योगों की अंश पूंजी में सीधा योगदान प्रदान करता है अर्थात् निगम स्वयं अंशों एवं ऋण पत्रों को खरीदता है।

(ii) निगम अंश एवं ऋण पत्रों का अभिगोपन करता है,

(iii) निगम रुपयों में सुरक्षित ऋण प्रदान करता है,

(iv) निगम विदेशी मुद्रा में भी ऋण प्रदान करता है, जिससे पूंजीगत वस्तुएं जो आयात की गई है उनके मूल्यों को चुकाया जा सके,

(v) निगम अन्य साधनों से प्राप्त ऋणों की प्रत्याभूति करता है।

## निगम की कार्य प्रगति

१९६३ के वर्ष के दौरान में निगम ने १२७ प्रार्थना पत्र आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिये स्टील, ऐलीम्यूनियम, सीमेन्ट, रासायनिक, कोयला, सूती वस्त्र, विद्युत, खाद्य, नायलोन, कागज एवं रबड़ आदि उद्योगों से प्राप्त किये। १९६३ में ७३ कम्पनियों को २४९४ लाख रुपये के ऋण निगम के द्वारा स्वीकृत किये गये। निगम द्वारा रुपयों में आर्थिक सहायता, ऋण, अभिगोपन एवं अंश पूंजी में योगदान ३३ कम्पनियों को १२५९ लाख रुपये की प्रदान की गई तथा विदेशी मुद्रा में आर्थिक सहायता ५७ कम्पनियों को १२३५ लाख रुपयों की प्रदान की गई। उपर्युक्त, कम्पनियों में से १७ कम्पनियां ऐसी थी जिन्हें रुपयों एवं विदेशी मुद्रा दोनों ही में आर्थिक सहायता दी गई। वर्ष के दौरान में देशी तथा विदेशी मुद्रा में आर्थिक सहायता जो उद्योगों को वितरित की गई, वह १०७६ लाख रुपये की थी। ७२ कम्पनियां जिनसे १६६ लाख रुपये इस वर्ष ऋणों के भुगतान के रूप में प्राप्त करने थे—प्राप्त किये गये। एक कम्पनी जिसने गत वर्ष किश्त का भुगतान नहीं किया था, भुगतान के लिये अवधि में वृद्धि की गई थी, उस कम्पनी ने २ लाख रुपये जो कि इस वर्ष प्राप्त होने थे, नहीं चुकाये। निगम की स्थापना के पश्चात् से अर्थात् १९५५ से ३१ दिसम्बर १९६३ तक निगम ने २४८ कम्पनियों को ८३२१ लाख रुपये विभिन्न रूपों में आर्थिक सहायता हेतु प्रदान किये।

विदेशी मुद्रा में स्वीकृत ऋण ३९४७ लाख रुपयों के थे उनमें से १७४४ लाख रुपये के मूल्य के बराबर के ऋण वितरित किये गये। इसी प्रकार ३१ दिसम्बर १९६३ के अन्त तक १६८६ लाख रुपयों के मूल्य के अभिगोपन समझौते किये गये। उनमें से निगम ने ५० सौदें जिनका मूल्य १३४८ लाख रुपये था पूरे किये गये। निगम ने ३१ दिसम्बर १९६३ के अन्त तक विभिन्न कम्पनियों में अंशों के रूप में सीधा योग दान ४८९ लाख रुपये के मूल्य के बराबर प्रदान किया। जिन कम्पनियों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई है वे देश के विभिन्न भागों में फैली हुई है।

'भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम' एक महत्वपूर्ण संस्था है, निगम के पास साधनों की कमी नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि वह बिना किसी भेदभाव के देश की नियोजित अर्थ-व्यवस्था की मांग के अनुसार उद्योगों को वित्तीय सहायता प्रदान करें। हमारी अर्थ-व्यवस्था को 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' की संज्ञा दी गई है निगम मिश्रित अर्थ-व्यवस्था के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहयोग दे सकता है। ● ●


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रासायनिक खाद

आज की खाद्य स्थिति को देखते हुए यह जरूरी हो गया है कि रासायनिक खाद का उत्पादन बढ़ाया जाए। खाद से ही पैदावार बढ़ सकती है और विदेशों से अनाज मंगाने पर खर्च होने वाली विदेशी मुद्रा की बचत हो सकती है।

इस बात को ध्यान में रखकर सरकार अमेरिकी कंपनियों के सहयोग से खाद कारखाने लगाने पर विचार कर रही है, जिससे १९६८ के मध्य तक उनकी अतिरिक्त उत्पादन क्षमता १० लाख टन और हो जाये। जब इतनी खाद तैयार होने लगेगा, तब देश में खेती की सूरत ही बदल जाएगी। लेकिन अभी इसमें समय लगेगा। सामान्यतः एक खाद कारखाना लगाने पर ढाई वर्ष लग जाते हैं।

पेट्रोल और रसायन मंत्रालय खाद कारखानों को बढ़ाना चाहता है, जिससे नाइट्रोजन का उत्पादन ३ लाख ८६ हजार टन से बढ़कर चौथी योजना के अन्त तक २५ लाख टन हो जाए। यह आशा की जाती है कि तीसरी योजना के अन्त तक रासायनिक खाद कारखानों की उत्पादन क्षमता ७ लाख टन तक बढ़ा दी जाएगी, और उनमें ४-४॥ लाख टन खाद तैयार होने लगेगा।

## मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी

हमारे देश के खेतों में नाइट्रोजन की बहुत कमी है। लगभग ५०-६० प्रतिशत जमीन में फासफोरस और २५-३० प्रतिशत जमीन में पोटाश की कमी है। हमारे सामने जमीन की केवल वर्तमान उर्वरता को बनाये रखने की ही समस्या नहीं, बल्कि उसकी उर्वरता को काफी बढ़ाने की भी है, जिससे प्रति एकड़ पैदावार बढ़ सके। दूसरे देशों में हमारे मुकाबले कहीं अधिक खाद इस्तेमाल की जाती है।

देश में १९६१-६२ में लगभग ३८ करोड़ ५० लाख एकड़ जमीन में खेती हुई, जिसमें ७ करोड़ एकड़ सिंचाई की खेती भी शामिल है। इतने क्षेत्र के लिए लगभग २३ लाख २० हजार टन नाइट्रोजन, ११ लाख ६० हजार टन फास्फोटिक और ४ लाख ७० हजार टन पोटाश खाद की जरूरत है, जबकि १९६३-६४ में खेतों में केवल ७-७॥ लाख टन नाइट्रोजन, २॥ लाख फास्फेटिक और १॥ लाख टन पोटाश खाद इस्तेमाल करने का लक्ष्य है।

इस समय कारखानों में केवल २ लाख २२ हजार टन नाइट्रोजन, और १ लाख टन फास्फेटिक खाद तैयार होता है। पोटाश विदेशों से मंगाया जाता है।

चौथी योजना के अन्त तक ४२ करोड़ ५० लाख एकड़ जमीन में खेती करने का अनुमान है, जिसमें ११ करोड़ एकड़ जमीन सिंचाई की होगी। सरकार ने पैदावार को हर साल ६ प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए २० लाख टन नाइट्रोजन और १० लाख टन फास्फोरस मेण्टाक्साइड की जरूरत पड़ेगी।

## तीसरी योजना के लक्ष्य

अनुमान है कि तीसरी योजना में पैदावार में जो २ करोड़ ४० लाख टन की वृद्धि होगी, उसमें २८ प्रतिशत वृद्धि का श्रेय रासायनिक खाद को होगा।

तीसरी योजना में खाद के उत्पादन का लक्ष्य इस तरह रखा गया है।

| खाद | उत्पादन क्षमता टन में | उत्पादन टन में |
|---|---|---|
| नाइट्रोजन | १०,००,००० | ८,००,००० |
| फास्फेटिक | ५,००,००० | ४,००,००० |

लेकिन अनुमान है कि तीसरी योजना के अंत तक लगभग ४,००,००० टन नाइट्रोजन और २,००,००० टन फास्फोरस पेण्टाक्साइड तैयार होगा।

योजना में जो लक्ष्य रखा गया है, वह १९६८ तक पूरा होगा।

## भारतीय रासायनिक खाद निगम

हम अनाज में आत्म-निर्भर बनना चाहते हैं। इसके लिए खादें में भी आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है। अब तक हम विदेशों से खाद कारखाने के यंत्र और उपकरण मंगाते रहे हैं। इससे हमें काफी विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी। यह खुशी की बात है कि अब भारतीय रासायनिक खाद निगम के योजना और विकास विभाग ने सरकारी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सरकारी कर्मचारी और सरकार

१९४६-४७ में जब पहला पे कमीशन नियुक्त किया गया था, तब उसे कहा गया था कि वह सरकार और उसके कर्मचारियों के वेतन सम्बन्धी विवादों के हल करने की किसी व्यवस्था पर विचार करे। उसने ब्रिटेन की व्यवस्था के अनुसार भारत में भी ह्विटले कौन्सिल की स्थापना का परामर्श दिया था। उस समय समस्त सरकारी शासन व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन हो रहा था, अतः इस प्रकार की कौन्सिल की स्थापना का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया। कुछ वर्षों बाद १९५४ में सरकार ने स्टाफ कमेटियों की स्थापना का निश्चय किया। १९५७ में इन्हीं का नाम स्टाफ कौन्सिल रखा गया। इनका मुख्य कार्य केन्द्रीय मंत्रालयों में कर्मचारियों के वेतन आदि के प्रश्नों पर विचार करना था। १९५७-५९ में जब दूसरा पे कमीशन नियत हुआ, तो उसने यह बताया कि कर्मचारियों में इन स्टाफ कौन्सिलों के सम्बन्ध में असंतोष है, क्योंकि सरकार इन कौन्सिलों की सिफारिशों पर बहुत कम ध्यान देती है। कौन्सिलों की बैठक भी ठीक समय पर नहीं होती। इस कमीशन ने भी ह्विले के नमूने की कौन्सिल बनाने की सिफारिश की और सरकार ने सैद्धान्तिक रूप से इसे स्वीकार कर लिया। यह निश्चय किया गया कि बहुत ऊंचे अधिकारियों और सरकारी उद्योगों में प्रबन्धकर्त्ताओं को छोड़कर केन्द्रीय सरकार के सभी असैनिक प्रशासन कर्मचारियों के मामले इन कौन्सिलों में आयेंगे। यह भी निश्चय किया गया कि सरकार और कर्मचारियों के प्रतिनिधि ३ स्तरों पर अलग-अलग चुने जायेंगे—राष्ट्रीय, विभागीय और क्षेत्रीय। दोनों पक्षों में अगर कोई समझौता हो जावे तो उस पर अमल किया जाएगा। मंत्रिमंडल की अन्तिम स्वीकृति आवश्यक होगी। सरकार का यह विचार था कि ऐसी कौन्सिलों की व्यवस्था के पूर्व यह शर्त भी आवश्यक होनी चाहिए कि कर्मचारियों को हड़ताल करने का अधिकार न रहे। इस प्रकार बहुत समय तक विचार चलता रहा। आखिर सरकार ने इस सम्बन्ध में कोई कानूनी प्रतिबन्ध लगाने का आग्रह छोड़ दिया और दूसरी तरफ कर्मचारियों ने यह वचन दिया कि जब तक कौन्सिलों में कोई प्रश्न विचाराधीन है या पंच के पास गया है, वह हड़ताल नहीं करेंगे। किन्तु फिर भी सरकार ने इन कौन्सिलों की दिशा में कोई कदम नहीं उठाया और इसी कारण कर्मचारियों में असंतोष बढ़ता गया। गत वर्ष अप्रैल में इस प्रश्न पर फिर गम्भीर विचार किया, किन्तु इंटक और पी० एस० पी० आदि मजदूर संघों में स्वयं इस प्रश्न पर मतभेद हो गया कि दफ्तरों के बाहरी व्यक्तियों को कौन्सिलों में लिया जाय या नहीं। इसलिए यह प्रश्न फिर खटाई में पड़ गया। पंडित नेहरू के देहावसान के बाद कुछ समय तक स्थगित निश्चय, अब तक स्थगित पड़े हैं और इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं हुआ है। मजदूर संघों के कार्यकर्त्ता अब तक कर्मचारियों से बाहर के प्रतिनिधि कौन्सिल में लेने के प्रश्न पर एकमत नहीं हो पाये हैं। यदि उनमें परस्पर मतभेदों का ही परिणाम कर्मचारियों को भुगतना पड़ा तो वे राजनैतिक दलों से प्रभावित मजदूर संघों की उपेक्षा करने से नहीं रुकेंगे।

---

क्षेत्र में खाद कारखाने बनाने के डिजाइन बनाना आदि सभी काम सीख लिए हैं।

निगम द्वारा बनाया गया पहला यंत्र कोरबा यंत्र होगा। इस समय रांची में भारी इंजीनियरी योजना चल रही है। उसके पूरा होने पर वहां काफी यंत्र और उपकरण बनने लगेंगे।

खाद कारखाने के विशेष उपकरण बनाने के लिए भी सरकारी क्षेत्र में एक बड़ा कारखाना लगाने का प्रस्ताव है।

■ ■

## भूल सुधार

हमारे दिसम्बर अंक में प्रकाशित लेख 'प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स और उनका योगदान' पृ० ६०३ के लेखक श्री सुनील कुमार घोष हैं। प्रेस सम्बधी गल्ती के कारण वहां सुशील कुमार घोष छप गया है।

—सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ समाचार

इंटक के प्रमुख नेता श्री गंगाधर दत्तात्रेय अम्बेकर का गत १३ दिसम्बर को हृदय की गति रुक जाने के कारण देहान्त हो गया। ये जनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भाग लेने के बाद अभी लौटे थे। वह इंटक के अध्यक्ष रह चुके हैं और आजकल वह इंटक के कोषाध्यक्ष थे। बम्बई की श्रमिक प्रवृत्तियों के निर्धारण और संचालन में उनका प्रमुख हाथ रहा है। १९०७ में उनका जन्म हुआ था। उनके देहान्त से श्रमिक आन्दोलन को निश्चित रूप से बड़ी क्षति हुई है। हमें आशा करनी चाहिए कि श्रमिक नेता उनके देहावसान के बाद उनकी औद्योगिक शान्ति की नीतियों को अधिक उत्साह से आगे चलाने की कोशिश करेंगे।

स्वर्ण नियंत्रण बिल जो बहुत समय से विवादग्रस्त रहा है, कुछ संशोधनों के बाद संसद ने स्वीकार कर लिया। इसी तरह आवश्यक पदार्थों के नियंत्रण और वितरण के सम्बन्ध में भी एक विधेयक संसद में स्वीकार हुआ है। अन्त में मिश्रिण के लिए कठोर दंड देने तथा अन्य कदम उठाने के सम्बन्ध में भी संसद ने कुछ निश्चय किए हैं। कम्पनी कानून में भी संशोधन पर इस वर्ष पर्याप्त विचार हुआ है। कुछ बिल श्रम सम्बन्धी भी स्वीकार किये गये हैं, जिनसे औद्योगिक विवादों का हल करने की सुविधा हो जाये।

खंडसारी और गुड़ के लिए गन्ने की खरीद पर उत्तर प्रदेश सरकार ने क्रय कर को २५ पैसे से बढ़ाकर ५० पैसे कर दिया है। इसका मुख्य उद्देश्य चीनी मिलों के लिए सुविधा करना है।

सिंधिया स्टील कम्पनी भारत के जहाज रानी उद्योग में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस कम्पनी के अध्यक्ष ने बताया है कि जहाजी कम्पनियों के खर्च बढ़ने का एक कारण बन्दरगाहों में हड़तालें हैं। १९६३-६४ में ८२३ श्रम दिवसों की क्षति हुई है।

इस कम्पनी ने ८ जहाज खरीदें हैं और विदेशी व्यापार लिए १५ हजार टन के ३ जहाजों का आर्डर दिया है। हिन्दुस्तान शिप यार्ड कम्पनी को भी कुछ जहाज बनाने का आर्डर दिया गया है।


अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा
परिषद् का मुख-पत्र

**स्वस्थ जीवन**

सम्पादक : श्री राधाकृष्ण नेवटिया
प्रबन्ध सम्पादक : श्री धर्मचन्द सरावगी

एक प्रति ५० पै० वार्षिक ५) रुपया मात्र

साहित्य के साथ अपने सुन्दर स्वास्थ्य के लिए कविता, कहानी, संस्मरण तथा डायरी और परिषद की गतिविधि पढ़ें। आज ही पांच रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइए। विज्ञापन देकर लाभ उठावें। सहयोगी बन्धु अपनी नवीन कृतियां हमें भेजें। कार्यालय :—

**जैन हाऊस**, ८।१ एस्प्लेनेड ईस्ट, **कलकत्ता-१**

**रामतीर्थ मासिक**

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योगवासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० ।. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

**श्री रामतीर्थ योगाश्रम, बम्बई-१४**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चौथी योजना में खनिजों की खोज व खपत

देश में उद्योग और खेती के तीव्र विकास होने के कारण खनिज की मांग भी काफी बढ़ी है । इस मांग को पूरा करने के लिए खनिज उद्योग के समन्वित विकास की जरूरत है। तीनों पंचवर्षीय योजनाओं में इस ओर काफी ध्यान दिया गया और चौथी योजना में इस दिशा में और भी प्रयत्न किए जाएंगे । मुख्य उद्देश्य खनिज भण्डारों का इस प्रकार उपयोग करना है कि जरूरत पूरी हो और निर्यात भी बढ़ाया जा सके।

खनिज उद्योग के विकास के लिए सुसंगठित रूप से खोज कार्य आवश्यक है । भारतीय भू सर्वेक्षण विभाग और भारतीय खान संस्था द्वारा यह कार्य किया जा रहा है और इसका विस्तार भी किया जा रहा है।

लोहे, चूना, पत्थर, बाक्साइट, तांबे, सीसे, जस्ते, एसबेस्टस, जिप्सम, एपेटाइट, ढंगस्टन, निकल और कोबाल्ट खनिज भण्डारों की पड़ताल का विशेष प्रयत्न किया जाएगा और सिलीकान और मेगनीजियम आदि धातुओं का इस्तेमाल बढ़ाया जाएगा।

## चौथी योजना में खनिज विकास

चौथी योजना में निर्यात के लिए बेलाडिला खनिज भण्डार क्षेत्र से २० लाख टन पैलट, देश की इस्पात मिलों को देने के लिए, किरीबुरू और इसके समीपवर्ती खनिज भण्डारों से ६-७ लाख टन पैलट, उड़ीसा के मतंगटोली खण्ड से ३० लाख टन लोहा, मैसूर के बेल्लरी-हास्पेट क्षेत्र से ३६ लाख टन अयस्क और बराजपदा क्षेत्र से १० लाख टन अच्छी किस्म का अयस्क निकाला जाएगा।

इसी प्रकार चौथी योजना में बिहार के सिंहभूम जिले के रारवारोम सिद्धेश्वर क्षेत्र से १५००० टन तांबा और राजस्थान में खेतड़ी के पास कोलीहन से १०,००० टन तांबा निकाला जाएगा । एक योजना के अन्तर्गत पायराइट फ्लोटेशन संयंत्र और ७०० टन सल्फरिक एसिड तैयार करने तथा खेतड़ी के तांबा स्मेल्टर से अन्य रसायनों के कारखाने भी खड़े किये जाएंगे। आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले के अग्निगुंडाला क्षेत्र से २०००-३००० टन तांबा निकाला जाएगा और ३० हजार टन क्षमता का स्मेल्टर भी निकाला जाएगा । इसके अतिरिक्त लोवा के पास बेला और बेकुई खण्डों से चूना-पत्थर निकालने, गुजरात के अम्बा-डोंगरा और राजस्थान के डूंगरपुर में फ्लोराइट, अलमोड़ा में मेगनेस्टाइट और राजस्थान में नागौर में जिप्सम निकाली जाएगी। चौथी योजना म ३० हजार टन और ५० हजार टन क्षमता के दो जस्ता बनाने के स्मेल्टर लगाए जाएंगे और राजस्थान की जावर खानों का विस्तार किया जाएगा । तीसरी योजना में जापान को निर्यात के लिए किरीबुरू क्षेत्र से २० लाख टन और मध्य प्रदेश के बेलेडिला क्षेत्र से ४० लाख टन लोहा निकाला जा रहा है और खेतड़ी खनिज भण्डारों का विकास किया जा रहा है, ताकि वहां से २,१००० टन तांबा निकाला जा सके।

---

(पृष्ठ २१ का शेष)

प्रतिशत उपज बढ़ी है । इनमें से एक किस्म सी ओ-२५ है, जिसमें धान फसल प्रतियोगिता में हमारे किसानों ने प्रति एकड़ ८००० पौंड तक धान पैदा कर दिखाया है।

## जापानी तरीके से खेती

जापानी तरीके से धान की खेती का प्रयोग कई क्षेत्रों में सफल रहा है। बम्बई के एक गांव में सबसे पहले इसका प्रयोग किया गया था । इस ढंग में कतार से बोआई के साथ, खूब खाद देने और पौध-रक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है । १९५३-१९५४ में इस ढंग से खेती करने का आन्दोलन चलाया गया, जिससे १९६२-६३ तक १ करोड़ ७४ लाख एकड़ में जापानी तरीके से धान की खेती होने लगी। इससे प्रति एकड़ २५.९२ मन धान होता है, जबकि पुराने तरीके से केवल १५.९५ मन हो पाता है।

चावल की उपज बढ़ाने के लिए चालू खरीफ के मौसम में आंध्र, बिहार, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा पंजाब, उत्तर प्रदेश और पश्चिमी बंगाल के ६५ जिलों में धान की सघन खेती शुरू की गई। इन क्षेत्रों में किसानों को उर्वरक और हरी खाद, अच्छे बीज, कीड़े मारने की दवाइयों और खेती के लिए दिया जाता है। इन प्रयत्नों से आशा है, कि इन जिन्सों में चावल की प्रति एकड़ उपज अवश्य बढ़ेगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ३७ का शेष)

या व्यापारियों पर छोड़ देते हैं।

शाम के वक्त ये लोग बाजार के गन्दे स्थान में बने भट्टी (शराब खाना) के समीप एकत्रित होते हैं एवं एक दूसरे से मिलते हैं। वहां शराब पीकर नाच करते हैं।

स्थिति सुधारने के लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठायें हैं :—

१. बहुत से स्थानों में सरकार ने बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियों की स्थापना की है। ये समितियां उपभोग वस्तुओं की खरीद और बिक्री कार्य करती हैं जैसे— तेल, कपड़ा, नमक, साबुन, चाय, शक्कर तथा अनाज।
२. अलीराजपुर (झाबुआ) में एक बाजार समिति की स्थापना की गई है जो आदिवासियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं पर निगरानी रखती है तथा उन्हें उचित मूल्य दिलाने की कोशिश करती है।
३. सहकारी समितियों के मैनेजरों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध किया गया है।
४. आदिवासी बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से आदिवासी क्षेत्र में स्कूल खोले जा रहे हैं।
५. आदिवासी क्षेत्रों में ३७ विभिन्न सरकारी संस्थायें खोली गई हैं, जोकि ऋण देने का कार्य करती हैं। इस प्रकार की संस्थायें सरगजा, शहडोल, रायगढ़, बालाघाट, मंडला, बिलासपुर, बैतूल, छिन्दवाड़ा, राइसेन, दुर्ग और रतलाम में खोली गयी हैं।
६. अंतेगढ़ में एक सहकारी बिक्री भंडार खोला गया है।
७. बैहर में बांस की टोकनी को खरीदने तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं को बेचने के लिए एक सहकारी स्टोर।

इन सब सुविधाओं के होते हुए भी आदिवासी लोग आज भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। अतः सरकार को चाहिए कि आदिवासियों के माल को सहकारी समितियों द्वारा बेचने का प्रबन्ध किया जावे तथा समय-समय पर कलेक्टर एवं अन्य उच्चअधिकारियों के द्वारा इनके माल की कीमत निर्धारित की जावे, दलालों पर प्रतिबन्ध लगाया जावे तथा सहकारिता को प्रोत्साहन दिया जावे और यातायात का प्रबन्ध किया जावे। तभी आदिवासी भाइयों का सही रूप से उद्धार हो सकेगा।

(पृष्ठ २२ का शेष)

उतारने की आवश्यकता है। इस स्थिति के लिए सरकार को उचित एवं शीघ्र कदम उठाने चाहिए। यह आवश्यक सेवा घोषित होनी चाहिए जिससे कि यूनियन के नेता जो कि राजनैतिक दलों से सम्बद्ध होते हैं, तोड़ फोड़, धीमे काम करो तथा हड़ताल आदि की नीति पर न चल सकें।

धीरे-धीरे किसानों में ऐसी आदत डालनी चाहिए कि वह तकावी महसूल आदि अनाज के रूप में चुकावें न कि नगदी दें। जब नगदी में उन्हें अपनी देनदारी चुकानी होती है तब वह व्यापारिक फसलों को बेचकर वह देनदारी चुकाते हैं और अनाज का संग्रह कर लेते हैं। अनाज के रूप में जब सरकार को किसान अपना महसूल और तकावी आदि देने लगेंगे तब सरकार के पास अन्न का पर्याप्त भंडार भी हो जायेगा और उसे अन्न की प्राप्ति में कठिनता नहीं होगी। एक दृष्टि से किसानों के लिए भी यह अच्छा होगा। अनाज के मूल्य गिरने पर उन्हें नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा।

साधारणतः किसान अपने मजदूरों को अनाज आदि के रूप में ही मजदूरी चुकाते हैं। यह बहुत अच्छी परंपरा है। इसी प्रथा को सरकार के लिए भी तकावी और महसूल की किस्तों को चुकाने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। अधिक अन्न के उत्पादन में प्रोत्साहन के लिए यह प्रथा डालनी चाहिए कि जब किसान व्यापारिक फसलों पर नगदी में सरकार को अपनी देनदारी दे। तो महसूल की दर कुछ ऊंची हो।

इसी तरह सरकार का भी यह कर्त्तव्य है कि अपने निम्न कर्मचारियों को वेतन में कुछ भाग अनाज के रूप में दे। उद्योगपति भी इस प्रथा को अपना सकते हैं इससे सामान्य वर्ग को मंहगाई की भारी कठिनता का सामना कम करना पड़ेगा।


## राजस्थान-अंक

शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

२) भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

—व्यवस्थापक सम्पदा




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का उत्कृष्टतम मासिक

## विषय सूची

जनवरी-दिसम्बर, १९६४

### (अ) आर्थिक तथा वित्तीय


१. हमारा अर्थतंत्र स्थगित क्यों ? १९
२. दोनों पहलू देखिए २२
३. आखिर हम विफल क्यों हुए २४
४. आधुनिक अर्थशास्त्र के क्रांतिकाल २५-८७
५. भारत की राष्ट्रीय आय ३७
६. महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्न ३८-६७
७. भारत की आर्थिक स्थिति ५९
८. भारत के आर्थिक विकास में विदेशी पूंजी ७१
९. देश की आर्थिक स्थिति और वित्तीय नीति ११५
१०. नये बजट में वित्तमंत्री के कर प्रस्ताव ११९
११. मंहगाई का एक कारण—मुद्रा प्रसार १२३
१२. देश की आर्थिक समस्याएं १२६
१३. नये वर्ष का रेलवे बजट १३४
१४. अतिकर बनाम अति लाभकर १३०
१५. मंहगाई के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी युद्ध १६१
१६. सम्पत्ति का विकेन्द्रीकरण १६७
१७. काला धन क्या है ? कारण निवारण १८३
१८. मंहगाई और उसके कारण २१९
१९. केन्द्रीय बजट और सामाजिक न्याय २२७
२०. बजट व पूंजी निर्माण २२९
२१. दिवगंत नेता के आर्थिक विचार २६७
२२. आर्थिक नीतियों पर एक दृष्टि २७६
२३. क्या भारत में, अर्थशक्ति केन्द्रित है ? २८९
२४. नाजुक मूल्य स्थिति और उपाय ३२३
२५. मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति ३३७
२६. अर्थ नीति पर पुनर्विचार की आवश्यकता ४३७
२७. हमारे देश के लिए आर्थिक दर्शन ४५९
२८. राजकीय खर्च व्यवस्था ४८८
२९. काला और गुप्त धन कैसे बाहर निकाले ४९४
३०. मध्यवर्ग के परिवारों का रहन-सहन ५९१
३१. निर्यात सम्बर्द्धन के लिए ४९५
३२. मूल्य वृद्धि के कारण व निवारण ५०२
३३. भारत भी सम्पन्न देशों में ३३२


### (आ) कृषि खाद्य एवं भूमि सुधार


१. किसानों को ऋण देने की व्यवस्था ९९
२. गुड़ व खांडसारी पर प्रतिबन्ध ९१
३. कृषि पुनर्वित्त निगम की स्थापना १३१
४. कृषि योजना में सुधार २०१
५. चकबन्दी और उसकी समस्याएं २८०
६. किसानों के लिए भंडार व्यवस्था २८१
७. अन्न की विकट समस्या ३१३
८. खाद्य समस्या और उसका हल ३२०
९. भूमि सुधारों का दूसरा पहलू ३३८
१०. खाद्य समस्या और आबादी वृद्धि ४४१
११. हमारी भूमि—समस्या ४४४
१२. कृषि व खाद्य में असन्तोषजनक प्रगति ४९५
१३. खाद्य समस्या और अर्थशास्त्री ४९७
१४. कृषि उत्पादन में जूट का स्थान ५०७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५. तम्बाखू की खेती क्या अधिक हो ? ५२१
१६. जनसंख्या नियंत्रण बनाम कृषि उत्पादन ५४२
१७. भूमि साधनों का पर्याप्त उपयोग ५५६
१८. पंजाब के वन और उद्योग ५५८
१९. भूमि सुधार व कृषि विकास ५७१
२०. खाद्य निगम व किसानों को प्रोत्साहन ५८१

## (इ) उद्योग और व्यापार

१. कम्पनियों का विवरण ४५
२. दूर संचार सेवा ४६
३. विशाल उद्योगों में पूर्व विनियोजन ७५
४. क्या लाभार्जन बुरा है १२६
५. उद्योग पुरियों की श्रृंखला १४५
६. अहमदाबाद का वस्त्र उद्योग नये संकट में १४९
७. इस्पात के स्थान पर प्लास्टिक १५०
८. जूट उद्योग की समस्याएं १७४
९. उत्पादन कर में निरन्तर वृद्धि १९८
१०. उद्योगों के लिए प्रबन्ध-प्रशिक्षण २०३
११. हमारे उद्योग—संभलेश्वर, वस्त्र उद्योग, सीमेंट का स्थानापन्न २३२
१२. घरों और उद्योगों के लिए गैस २३७
१३. उड़ीसा सीमेंट लिमिटेड ३४५
१४. शीशे का उद्योग ३५५
१५. सीमेंट उद्योग की समस्याएं ४५१
१६. विदेशोंमें भारतीय उद्योगपतियों का अध्यवसाय ४६३
१७. विविध उद्योगों की समस्याएँ ४६६
१८. १९६३-६४ में उद्योगों की संतोषजनक स्थिति ५०३
१९. वस्त्र उद्योग की नई समस्याएं ५०५
२०. उद्योग नियंत्रण में एकाधिपत्य ५५१
२१. भारत का वस्त्र उद्योग ५९३
२२. भारत में औद्योगिक विकास ५९७
२३. स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन ३३०
२४. नये प्रस्तावित तेल शोधक कारखाने ६१७

## (ई) पंचवर्षीय योजना एवं विकास

१. तीसरी योजना की मध्यावधि प्रगति ११
२. हमारा आयोजन १५
३. योजना कैसे सफल हो ? ३८
४. पंचवर्षीय योजना न केन्द्रित न विकेन्द्रित १३८
५. नियंत्रण और उसका प्रयोजन १७०
६. योजना में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता १७७
७. चौथी योजना—हमारे लिए चुनौती २७१
८. योजना बनाने से पहले विचारणीय ३२०
९. चतुर्थ योजना से पूर्व विचारणीय ४४७
१०. भारत के ग्रामों का विकास ४४८
११. चतुर्थ योजना का आकार ४८१
१२. चतुर्थ पंचवर्षीय योजना और उसकी समस्याएं ४८५
१३. चतुर्थ योजना-ध्येय और ध्यान देने योग्य ५३८
१४. चतुर्थ योजना की प्रकृति ५३९
१५. चतुर्थ योजना की रूपरेखा ५४४
१६. योजना की यथार्थवादी दृष्टि ५४५
१७. तीसरी व चौथी योजना में तुलना ५६६
१८. चतुर्थ वित्तीय आयोग और उसके कार्य ४८५
१९. पहले जनता को तो समझलें २६९
२०. केवल भौतिक उन्नति ही नहीं ३१९
२१. साधनों की चिन्ता पहले करनी होगी ५३६

## (उ) श्रम समस्या

१. कर्मचारी बीमा योजना ३३
२. बोनस कमीशन के निर्णय १०१
३. श्रम समस्या १५२-४६९
४. परिश्रमी नंगा नहीं रहेगा १७२
५. भूखे और भी अधिक भूखे हो रहे हैं १७९
६. हिंसात्मक प्रदर्शन व हड़ताल खतरनाक १९२
७. बेकारी बढ़ रही है, श्रम दिवसों की हानि १९६
८. श्रमिकों की मांगें १९८
९. बोनस कमीशन कहाँ गलती पर है २९५
१०. कुछ मजदूरी जिन्स के रूप में ५४७
११. मजदूरों की समस्या कैसे हल हो ? ६१३

## (ऊ) सिंचाई, बिजली एवं शक्ति

१. थोड़े पानी से अधिक सिंचाई १३९



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


२. सिंचाई तथा बिजली का विकास १८६
३. रेलों का विद्युतीकरण एवं डीजलीकरण २३६
४. अणुशक्ति की विशाल सम्भावनाएं ५४८
५. टिकरापारा योजना २४२

## (ए) समाजवाद एवं सहकारिता व पंचायतें

१. समाजवाद और उसकी समस्याएं ५७
२. कांग्रेस कैसा समाजवाद चाहती है ? ६३
३. वास्तविक समाजवाद ग्रामोत्थान ६५
४. राष्ट्रीयकरण से समाजवाद ६८
५. सहकारिता ही क्यों ! ७३
६. समाजवाद का दर्शन २२१
७. समाजवाद का दूसरा पहलू २२३
८. लोकतंत्र व समाजवाद का समन्वय २७३
९. परस्पर लाभप्रद सहयोग ३३४
१०. सामाजिक सुरक्षा ३४०
११. समृद्धि अथवा समाजवाद—पहले कौन ? ४४३
१२. हमारा सामाजिक स्तर क्या ? ४५४
१३. महात्मा गांधी और समाजवाद ४७२
१४. सहकारिता द्वारा समाजवाद ५८९
१५. नेहरू और समाजवाद ६०९
१६. पंचायतों द्वारा ग्रामों का पुनर्निर्माण ५०
१७. भूमि सुधार, पंचायती राज व सहकारिता १८०

## (ऐ) आर्थिक समस्या अंक

१. हमारे आज के कुछ ज्वलंत प्रश्न ७
२. हमारे देश की अपनी समस्याएं १२
३. सब समस्याओं का मूल्य-जनसंख्या वृद्धि १३
४. हमारी खाद्य समस्या १५
५. योजना आयोग की समस्याएं १६
६. कीमतें क्यों बढ़ रही हैं ? १९
७. ग्रामीण औद्योगीकरण की समस्याएं २१
८. समस्याओं का बदलता हुआ रूप २४
९. राज्यों के हितों में संघर्ष २६
१०. अभाव व मुद्रा स्फीति २७
११. भारत में निजी क्षेत्र पर नियंत्रण २९
१२. आज की कुछ आर्थिक समस्याएं ३१
१३. सहकारी समितियां व कृषि उत्पादन ३२
१४. कृषि उत्पादन में हीनता क्यों ? ३५
१५. कृषि में यन्त्री करण की संम्भावनाएं ३७
१६. श्रम समस्या के विविध रूप ४०
१७. औद्योगिक विकेन्द्रीकरण कहां व कब तक ? ४३
१८. विकेन्द्री करण में भी दो प्रश्न ४५
१९. करनीति उद्योगों की समस्या नहीं ? ४६
२०. सम्पति और उसका वितरण ४७
२१. हमारा सांख्यिकी पृष्ठ ५१
२२. भूमि सुधारों की शिथिल गति ५५
२३. छोटी जोत व वैज्ञानिक कृषि ५७
२४. पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि ६०
२५. बैंकों के विस्तार की समस्या ६२
२६. कृषि पर उद्योगों का प्रभुत्व ६३
२७. अर्थ वृत चयन ६६
२८. पोलेण्ड का आर्थिक संगठन तथा प्रगति ६७
२९. रोज नई आर्थिक समस्याएं ६
३०. इस अक का प्रयोजन ५०

## (ओ) अन्तर्राष्ट्रीय

१. कोलम्बो योजना का बारहवां वर्ष ७७
२. ब्रिटेन का महत्वपूर्ण सहयोग ७९
३. संसार में कच्चे लोहे का प्रचुर भंडार ८२
४. रुमानियां का प्रशंसनीय सहयोग १४१
५. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलन १७५
६. सोवियत रूस की भारत को सहायता १८८
७. इटली का भारत के आर्थिक विकास में योगदान २३५
८. भारत नेपाल की मित्रता २५४
९. यूगोस्लेविया का भारत की प्रगति में सहयोग २८५
१०. कनाडा का सहयोग २८६
११. विदेशी अर्थ चर्चा-आस्वान बांध ब्रिटेन व रूस से समझौता, जेनेवा में गतिरोध २४०-२९४
१२. कोलम्बो योजना के ५ वर्ष ३५६
१३. विश्व की खाद्य समस्या ४६१




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४. विश्व की जन संख्या में वृद्धि ४७०
१५. पूर्व जर्मनी का भारत को सहयोग ५१२
१६. विभिन्न देशों का आर्थिक विकास ५७३
१७. जापान में कृषि सुधार ६००
१८. कोलम्बो योजना की प्रगति ६०६
१९. भारत में पोलिश कारखाने ६१८
२०. जर्मनी में वायुसेना उद्योग ६२०
२१. साम्यवादी राष्ट्रों से व्यापार बढ़ रहा है। ५२३

## (औ) विभिन्न राज्यों की गति विधि

१. राजस्थान, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र और विविध राज्यों की आय २९
२. राजस्थान, आसाम, दिल्ली और उत्तरप्रदेश ९६
३. राज्यों में नये बजट १४३
४. राज्यों के बजट, राजस्थान की सिंचाई, भूमि गर्भ पाइप निर्माण ३-१९३
५. राज्य सरकारों की निर्बल आर्थिक स्थिति २९१
६. उत्पादन करों का राज्यों में वितरण ६०५

## (अं) विविध

१. १९६३ की प्रमुख घटनाएं ४१
२. भुवनेश्वर कांग्रेस का सन्देश ३
३. १९६३ का सिंहावलोकन ४
४. समन्वय करने का प्रयत्न १०९
५. जन संख्या वृद्धि कैसे रुके १५२
६. केशव प्रसाद गोयन का २००
७. महालनवीस समिति की रिपोर्ट २१३
८. अधिक जनसंख्या २३०
९. क्या सुखायें व कैसे सुखायें ? २४३
१०. भारत का नवीन बन्दरगाह कांडला १९१
११. प्रकृति-प्रकोप ४७३
१२. मंत्रियों की आचार संहिता ५६१
१३. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स का योगदान ६०३
१४. आर्थिक विकास के स्वप्न द्रष्टा एवं स्रष्टा २६५
१५. पंचवर्षीय योजना के सूत्रधार पं० नेहरू २६१-३२७

## (अः) स्थायी स्तम्भ

बैंक व बीमा, अर्थवृत्त चयन, सर्वोदय पृष्ठ
इस मास की प्रमुख घटनाएं, सांख्यिकी ?
नया सामयिक साहित्य आदि-आदि

अर्थशास्त्र की उत्कृष्ट हिन्दी पत्रिका

# सम्पदा

दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब और बिहार के शिक्षा विभागों द्वारा पुस्तकालयों व स्कूलों आदि के लिए स्वीकृत

## कुछ सम्मतियां देखिये—

Sampada is one of the few economic journals in Hindi. It is serving its readers for last 12 years in this direction. The analytic articles of Sampada are very useful.

—Lal Bahadur Shastri.

I was greately impressed by the standard of this publication.

—Gulzari Lal Nanda.

'Sampada' is the best guide for digesting and understanding the economic situation of the country.

—'Commerce and Industry' New Delhi

It contains wealth of useful information.

—Sh. Gaj Raj Singh.
*Ex-Director of Education, Rajasthan.*

मुझे "सम्पदा" बड़ी उपयोगी लगी है। अब अधिकांश छात्र हिन्दी माध्यम द्वारा पढ़ना पसन्द करते हैं। उनके लिए यह पत्रिका बड़ी लाभदायक सिद्ध होती है। "सम्पदा" के विशेषांक भी बड़े मार्के के होते हैं।

श्री ए. एस. श्रीवास्तव, अध्यापक, टीकमगढ़ (म० प्र०)

"सम्पदा" के विशेषांक तो हमारे लिए गीता और बाइबिल के समान हैं।

प्रो. ओमप्रकाश तोषनीवाल, (हापुड़)

हम जैसे अर्थशास्त्र के विषय को लेने वालों के लिए "सम्पदा" बहुत ही सहायक सिद्ध हुई है। भारतीय अर्थशास्त्र में अधिकतर "सम्पदा" पर ही निर्भर करना पड़ता है।

कृष्णकुमारी शर्मा, छात्रा, रांची



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

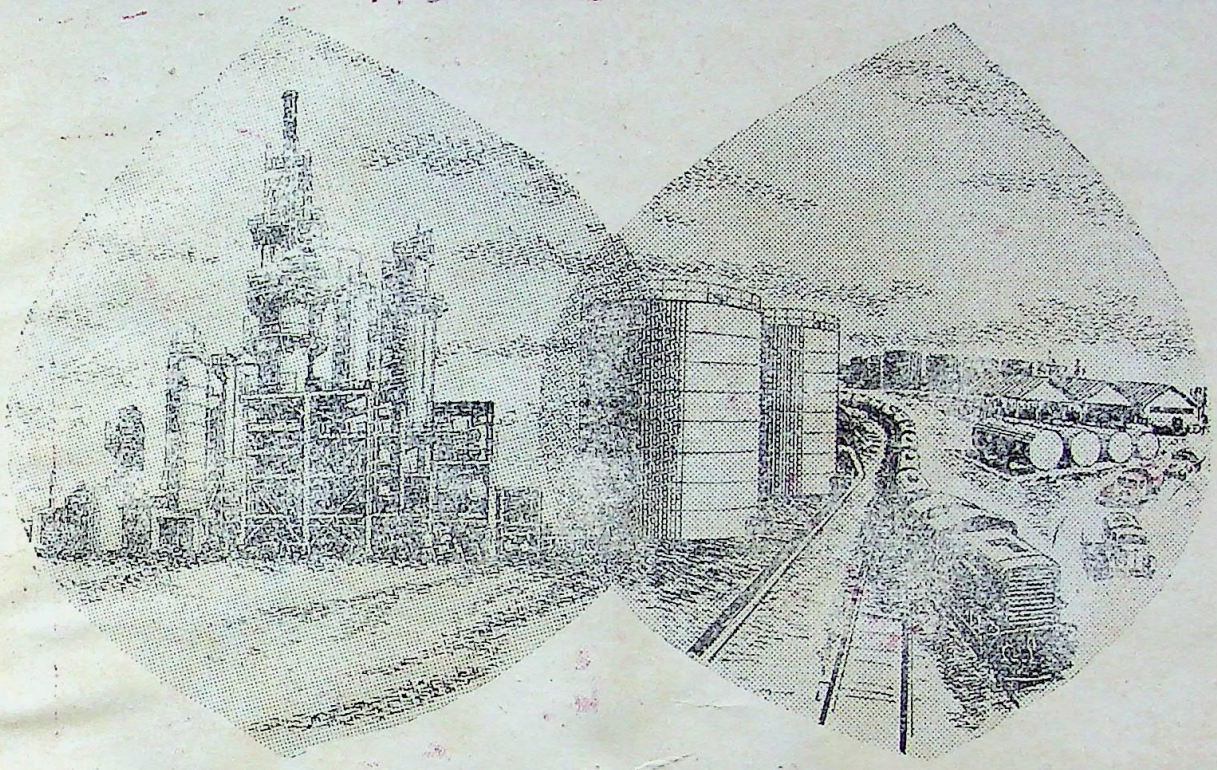

इण्डियन रिफाइनरीज लिमिटेड को इण्डियन ऑयल कम्पनी लिमिटेड में विलीन कर

# इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड की स्थापना

दि इण्डियन रिफाइनरीज लिमिटेड को इण्डियन ऑयल कम्पनी लिमिटेड में विलीन कर इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड का गठन किया गया है। ७५ करोड़ रुपये की अधिकृत पूंजी के साथ कार्पोरेशन पूंजी विनियोजन की दृष्टि से देश की १० सबसे बडी कम्पनियों में से एक होगा। कार्पोरेशन के दो विभाग रहेंगे–रिफाइनरीज विभाग और मार्केटिंग विभाग, रिफाइनरीज विभाग सार्वजनिक क्षेत्र की रिफाइनरीज का प्रबंध करेगा और मार्केटिंग विभाग सार्वजनिक क्षेत्र की रिफाइनरियों के समूचे उत्पादन के अलावा विदेशों से आयात किये गये उत्पादनों का भी वितरण करेगा। औद्योगीकरण तथा मशीनीकरण में व्यापक रूप से वृद्धि होने तथा सुरक्षा की बढती हुई जरूरतों को देखते हुए भारत में पेट्रोलियम उत्पादनों की मांग में वृद्धि होना अनिवार्य है। इण्डियनऑयल राष्ट्र की जरूरतों को पूरा करने में अपना योगदान करेगा।

कार्पोरेशन इस बात पर ध्यान देगा कि रिफाइनरियों में तैयार होने वाले उत्पादन वैसे ही हों जो बाजार में पसंद किये जायें और वे उतनी ही मात्रा में तैयार किये जायें जितनी जरूरत हो। बेहतर सहयोग और अधिक कार्यक्षमता का परिणाम यह होगा कि उत्पादन में किफायत होगी और उपयोक्ताओं की बेहतर सेवा हो सकेगी।

*इण्डियनऑयल – आर्थिक समृद्धि का राष्ट्रीय प्रतीक*

INDIANOIL

**इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड**

**मार्केटिंग विभाग:**
क्लार्क रोड, महालक्ष्मी, बम्बई-३४

**रिफाइनरीज विभाग:**
लिन्क हाउस, मथुरा रोड, नयी दिल्ली

maa. IOC. 4267 BHN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आपके घर की रंगीन सजावट

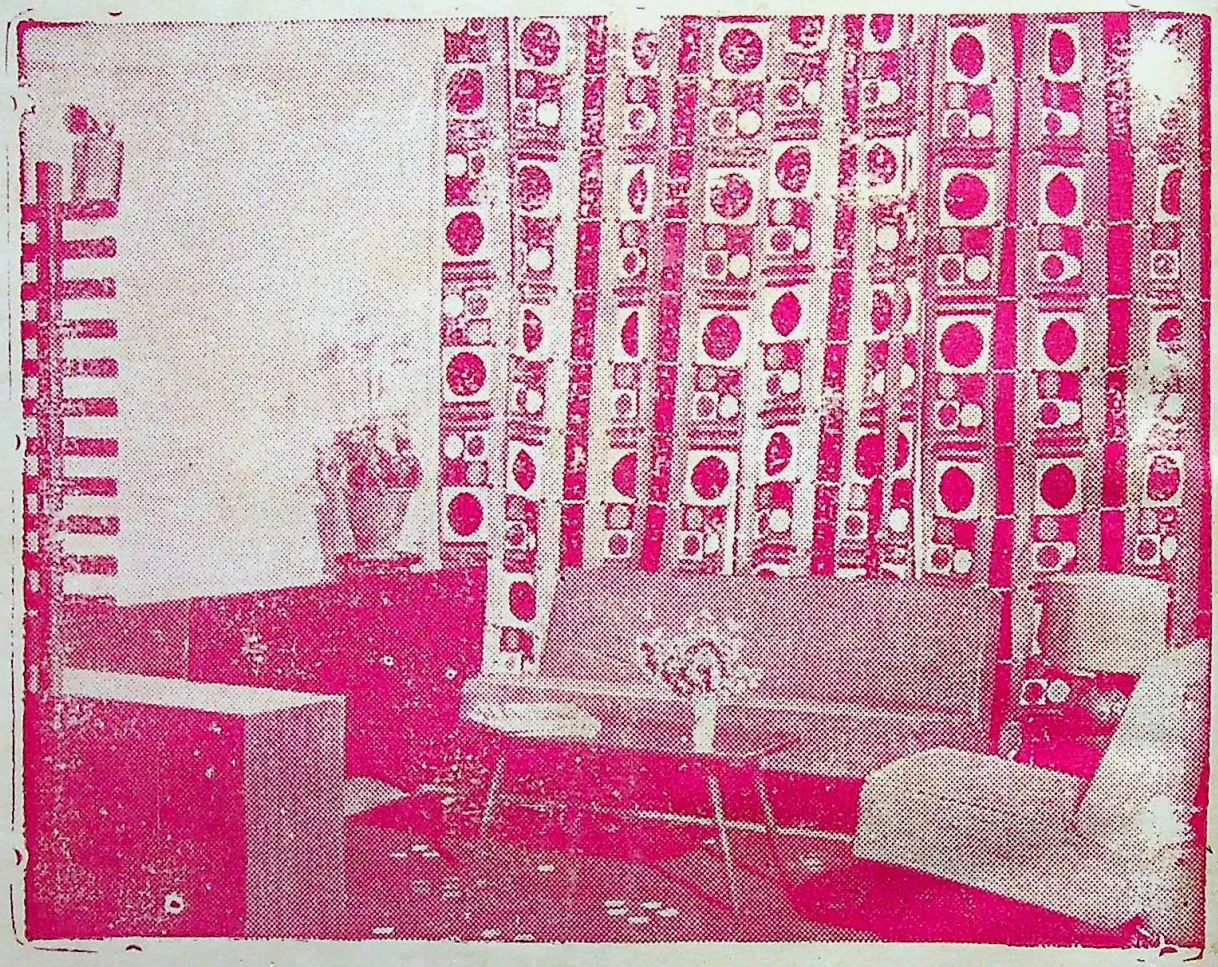

कन्ट्रास्ट के सौन्दर्य द्वारा

डी सी एम नवीनतम अत्यन्त रंगीन सज्जा के लिए आधुनिकतम प्रिंट्स प्रस्तुत करते हैं। सुनहरे पीले रंग के साथ आकर्षक कत्थई रंग। काली और सफेद पृष्ठ भूमि पर गहरा फ़िरोजी रंग।

भारत भर में लगभग ६७० डी सी एम रिटेल स्टोरों से प्राप्य

DCM

सुन्दरता और मजबूती का प्रतीक

दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली

डी सी एम का एक मजबूत नया सज्जा-वस्त्र

JWT D. C. M. 3 44. H.


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ में मुद्रित अशोक प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली-६ में प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १४ अंक : २

फरवरी १९६५

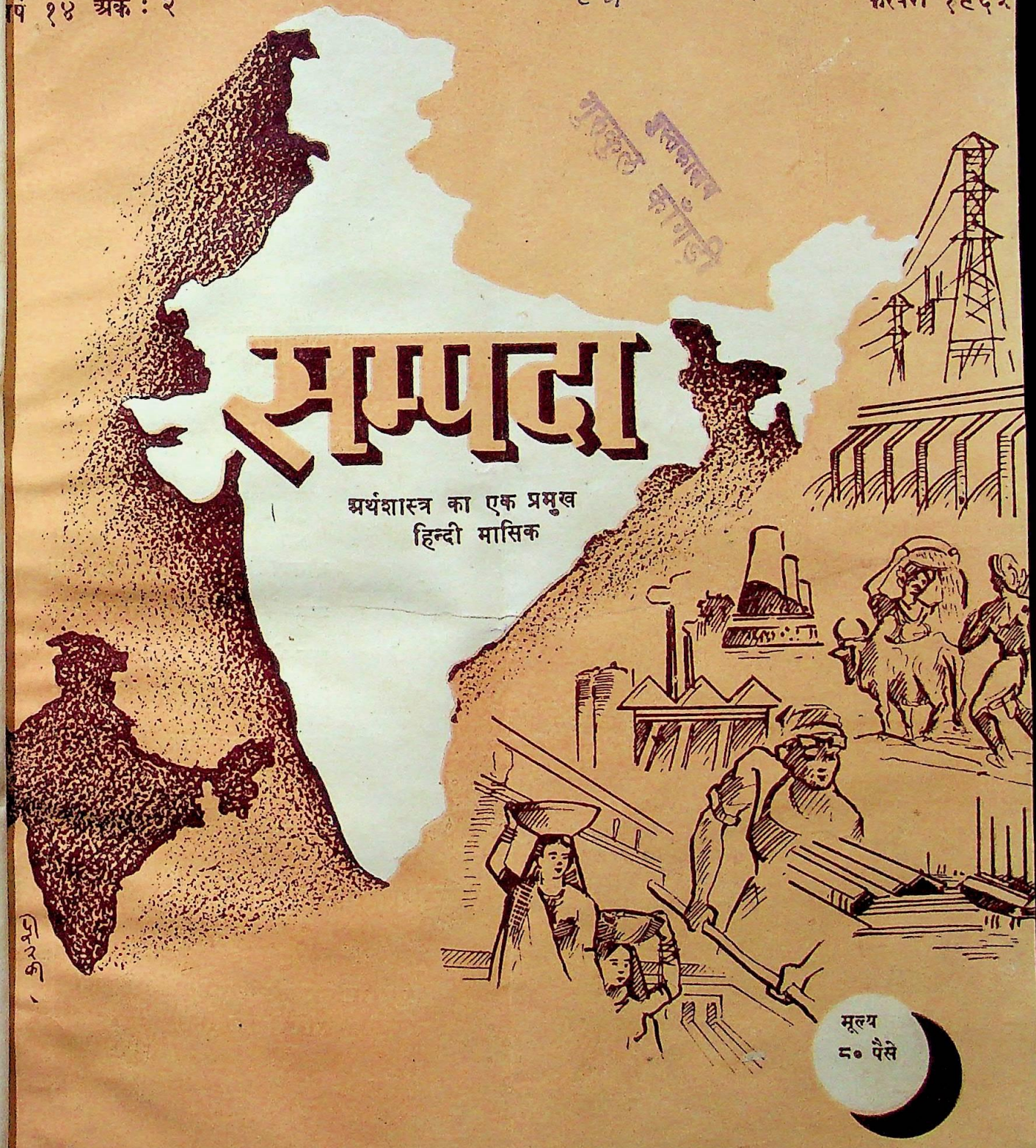

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का एक प्रमुख
हिन्दी मासिक

मूल्य
८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

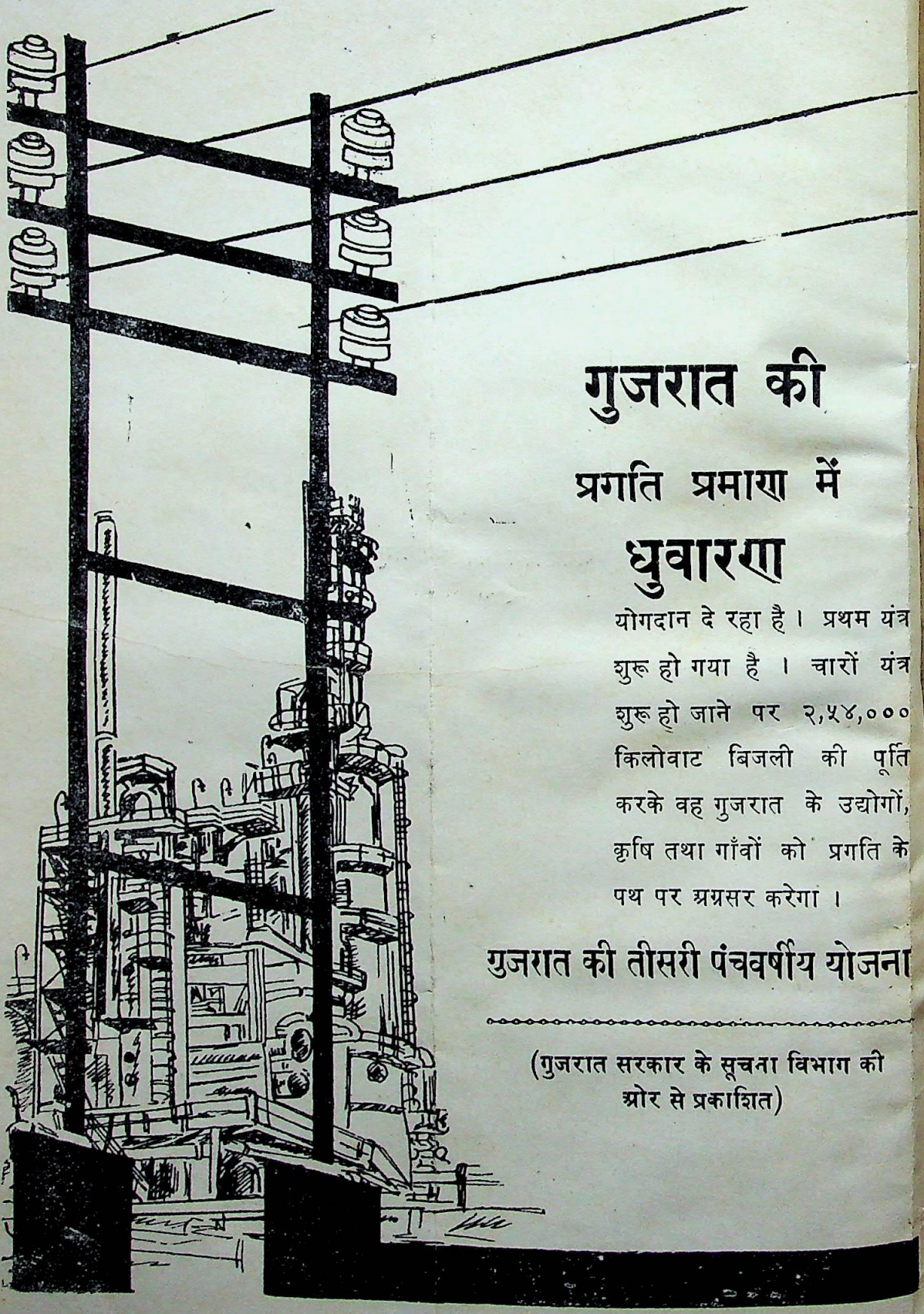

# गुजरात की

## प्रगति प्रमाण में

# ध्रुवारण

योगदान दे रहा है। प्रथम यंत्र शुरू हो गया है। चारों यंत्र शुरू हो जाने पर २,५४,००० किलोवाट बिजली की पूर्ति करके वह गुजरात के उद्योगों, कृषि तथा गाँवों को प्रगति के पथ पर अग्रसर करेगा।

## गुजरात की तीसरी पंचवर्षीय योजना

(गुजरात सरकार के सूचना विभाग की ओर से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उत्कृष्ट औज़ार के लिये उत्कृष्ट इस्पात

सन् १९२३ में जब जमशेदपुर में खेती के लिये इस्पात के उत्तम औज़ार बनने लगे तो एक नये भारतीय उद्योग का जन्म हुआ। सन् १९२५ में टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी ने एग्रिको कारखाना ले लिया और तब भारत में पहले पहल हथौड़े, बेलचे, गैंती, बीटर और बारी जैसे तरह तरह के आवश्यक औज़ार बनने लगे।

पिछले ४० वर्षों से एग्रिको खेतों में काम करने वाले किसानों तथा रेलवे लाइन, पुल और बाँध बनाने और उनकी मरम्मत व देखभाल में लगे मज़दूरों को तरह तरह के उत्कृष्ट औज़ार देकर सहायता कर रहा है।

आज एग्रिको उच्च कोटि के टाटा कार्बन स्टील द्वारा वैज्ञानिक-रूप से प्रति वर्ष ४० लाख औज़ार बनाता है। उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कड़ी निगरानी रखकर एग्रिको के औज़ारों की उत्तम क्वालिटी और टिकाऊपन को ठीक रखा जाता है और इसीलिये सारे देश में इन औज़ारों को इस्तेमाल करने वाले सबसे पहले इन्हें ही चुनते हैं।

**टाटा स्टील**

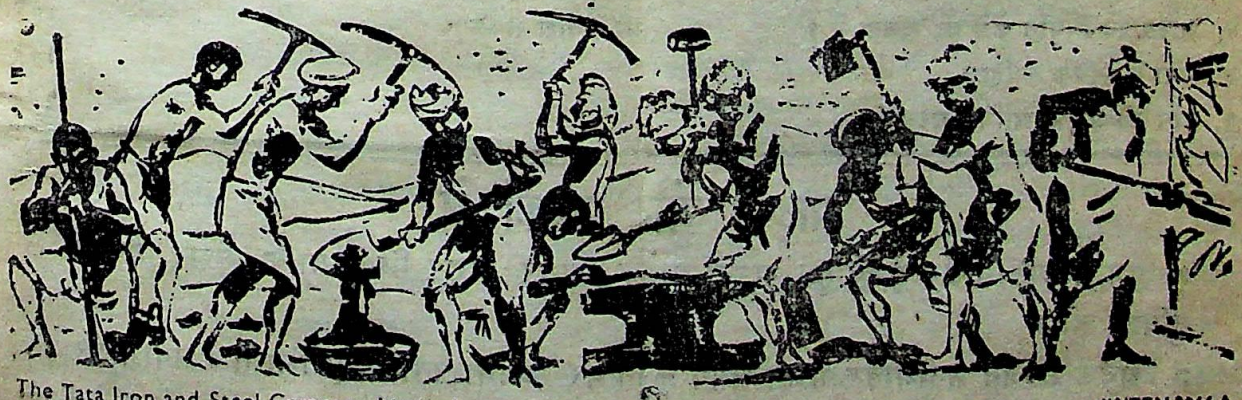

The Tata Iron and Steel Company Limited

JWTTN 2066 A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| सं० | विषय | लेख | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | नये गणतंत्र वर्ष का शुभ श्रीगणेश | | ६१ |
| २. | अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य परिषद् | | ६६ |
| ३. | राष्ट्र को चुनौती | राष्ट्रपति श्रीराधाकृष्णन | ६७ |
| ४. | मूल्यों का स्तर ऊंचा हो रहा है ! ! ! | श्री जे. डी. खन्ना | ६८ |
| ५. | पूंजीगत व्यय बनाम आर्थिक उन्नति | श्री परसराम मनवानी | ७० |
| ६. | पंचवर्षीय योजना प्रभावकारी हो | श्री कामराज नाडार अध्यक्ष अ. भा. कांग्रेस | ७२ |
| ७. | अन्नसंकट के कारण | श्री यज्ञदत्त उपाध्याय | ७४ |
| ८. | हमारी सफलताएं और असफलताएं | डा. वी. के. आर. वी. राव | ७५ |
| ९. | चौथी योजना की नवीनताएं | | ७७ |
| १०. | निश्चित प्रगति के पथ पर | | ७८ |
| ११. | उद्योगों की प्रबन्ध व्यवस्था में क्रान्ति | ला० भरतराम | ७९ |
| १२. | बिजली पर औद्योगिक विकास की निर्भरता | डा. का. ल. राव | ८४ |
| १३. | श्रमिकों में राष्ट्रीयता का अभाव | श्री विमल कुमार | ८६ |
| १४. | दिल्ली में फुटकर व्यापार | श्री पां. ज्ञा. आरोले | ८७ |
| १५. | उज्ज्वल संभावनाओं से पूर्ण पेट्रोलियम उद्योग | श्री हुमांयू कबीर | ८९ |
| १६. | समाजवाद का प्रशस्त पथ—सहकारिता | स. दरबारासिंह | ९१ |
| १७. | कर प्रमाण पत्र-योजना | श्री पी. एन. श्रीवास्तव | ९३ |
| १८. | पूंजी-निर्माण की कठिनाइयां—बैंक १९६४ में | | ९५ |
| १९. | राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कम्पनियों का महत्व | | ९६ |
| २०. | गुजरात प्रगति के पथ पर | | ९७ |
| २१. | राजस्थान की नई योजना | | ९८ |
| २२. | विदेशी अर्थचर्चा | | ९९ |
| २३. | अर्थवृत्त चयन | | १०१ |
| २४. | भारत का निर्यात कैसे बढ़ सकता है ? | श्री सतीश सक्सेना | १०४ |
| २५. | नया सामयिक साहित्य | | १०२ |
| २६. | मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं | | १०५ |


## पाठकों और ग्राहकों से

१. पत्र या मनीआर्डर भेजते हुए अपना ग्राहक नम्बर जरूर लिखें, ताकि उत्तर देने में सुविधा हो।

२. अनेक सज्जन मनीआर्डर भेजते समय कूपन पर अपना पता नहीं लिखते। मनीआर्डर का भाग पोस्टमैन ले जाता है और फिर रुपया भेजने वाले का पता लगाना कठिन होता है।

३. सम्पदा का वार्षिक मूल्य ८) ५० पैसे है इससे कम न भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



वर्ष : १४
अंक : २
फरवरी : १९६५

# सम्पदा

## नये गणतंत्र वर्ष का शुभ श्रीगणेश

नया गणतन्त्र वर्ष शुभ लक्षणों के साथ प्रारभ हो रहा है। १९६४ के अन्तिम चरण में महंगाई चरम सीमा पर पहुँच गई थी। अब वह उतार पर है, यह खाद्य पदार्थों के मूल्यों में गिरावट से स्पष्ट है। खाद्य पदार्थों के मूल्य निरन्तर यद्यपि शनैः शनैः कम हो रहे हैं। सरसों, तिल आदि की कीमतों में भी भारी कमी आई है। इस वर्ष गेहूँ की अच्छी पैदावार की भी संभावना की जा रही है।

दूसरा शुभ लक्षण बोकारो के चिर प्रतीक्षित स्पात उद्योग के सम्बन्ध में रूस सरकार से निश्चित समझौता है। वर्षों से यह मामला लटक रहा था, पर अब इसका भविष्य सुदृढ़ व सुनिश्चित दीखने लगा है। शरावती के बिजलीघर का जो एशिया भर में सबसे बड़ा होगा, शिलान्यास कर दिया गया हैं। बरौनी की पाइप लाइन का भी निर्माण समाप्त हो चुका है। मध्य प्रदेश में कोयले की दो नई भट्टियों की खोज हुई है। गुजरात में तेल के नये स्रोत मिले हैं। पश्चिमी तट के निकट तेल की खोज के भी समाचार मिले हैं। ब्रिटेन, जर्मनी और अमेरिका आदि से तीसरी योजना के अन्तिम दो वर्षों और चौथी योजना के लिए समझौतों के समाचार मिले हैं। योजना आयोग और सरकार ने पिछली योजनाओं से अनुभव लेने की घोषणा की है। १९६४ में निर्यात भी पहले वर्षों की अपेक्षा बढ़ गये हैं। जापान ने कोचीन में शिपयार्ड बनाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। नांगल में कनाडा के सहयोग से कागज का नया कारखाना खुल रहा है। पांचवें स्पात के कारखाने के लिए भी ब्रिटेन और अमेरिका के उद्योग समूह से चलने वाली चर्चा काफी प्रगति कर रही है। अमेरिका के एक कार्पोरेशन ने भारत सरकार के सामने रासायनिक खाद के पांच कारखाने बनाने का प्रस्ताव रखा है। जैकोस्लोवकिया ने छोटी कार बनाने के लिए सहयोग का आश्वासन दिया है। पोलैंड खाद के कारखाने की मशीनरी देने को उद्यत है। ये सब शुभ लक्षण हैं और हमें आशा करनी चाहिए कि आगामी गणतन्त्र वर्ष अधिक शांति व सफलता के साथ व्यतीत होगा। इसीलिए प्रशासन और प्रबन्ध की सुस्ती और विलम्बकारिता को समाप्त करने के बारे में गम्भीरता से विचार किया जाने लगा है।

× × ×

नये गणतन्त्र दिवस की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता, जो भारत के विकास और स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगी, यह है कि भारत की राज भाषा हिन्दी हो गई है। मंगलमय भगवान इस घोषणा के प्रति हमें आस्थावान् बनाएं। हिन्दी न केवल सम्पूर्ण देश की एकता को स्थापित करने में समर्थ होगी, वरन देश की आर्थिक विकास योजना को योजनाभवन के शानदार अंग्रेजी वातावरण से निकाल कर जन-जन तक पहुँचाने और देश के विकास के कार्यों में रुचि और उत्साहपूर्ण सहयोग की प्रेरणा देने के लिए सहायक सिद्ध होगी।

× × ×

भारत सरकार ने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया है कि देश का आर्थिक और औद्योगिक विकास केवल नारों से नहीं हो सकता। केवल आदर्शवादिता, यदि उसके साथ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यावहारिकता का समन्वय न किया जाय, विकास में सहायक नहीं हो सकती। इसीलिए भुवनेश्वर व दुर्गापुर के प्रस्तावों और वामपन्थी नेताओं के चाहे वे कांग्रेस में हों या कांग्रेस के बाहर, भाषणों के बावजूद भारत सरकार के उत्तरदायी नेता परिस्थितियों की उपेक्षा नहीं कर रहे। वे वास्तविक समस्याओं को गम्भीर और निष्पक्ष दृष्टि से देखते हैं। उनकी अनेक नीतियां उनके शांत चिन्तन का परिणाम दीखती हैं। भारत ने पिछले वर्षों में विदेशों से भारी मात्रा में ऋण लिए हैं। इसके परिणामों को सरकार के उत्तरदायी नेता अनुभव करने लगे हैं। इसीलिए वे आज निजी उद्योगों में विदेशी पूंजी का स्वागत करना चाहते हैं। इसके लिए आवश्यक सुविधाएं विदेशी पूंजी को दी जा रही हैं। एक समाचार के अनुसार तो रूस तक निजी उद्योग में सहायता देने पर विचार कर रहा है। सरकार यह अनुभव करने लगी है कि अनेक उद्योगों को नियन्त्रणों और प्रतिबन्धों की कठोरता से कुछ न कुछ मुक्त किया जाय। इसका मुख्य कारण यह अनुभव है कि देश की बहुत सी उद्योग क्षमता इसलिए प्रयुक्त नहीं हो पा रही कि उद्योगपति नये उद्योग खोलने में संकोच करते हैं। केवल ११० ऐसे उद्योग हैं जिनकी ७५ प्रतिशत क्षमता का उपयोग हो रहा है। बहुत से उद्योगों में केवल ३५ प्रतिशत क्षमता का ही उपयोग होता है। नये उद्योगों को लाइसेन्स देने की दूषित और विलम्बकारक प्रणाली में भी परिवर्तन किया जा रहा है।

× × ×

कांग्रेस के अध्यक्ष श्री कामराज ने जब पंचवर्षीय योजना के बृहदाकार की आलोचना की, तब उनके सामने आदर्शवाद और नारेबाजी से ऊंचा उठ कर वास्तविकता ही सामने आई थी। वे गम्भीरतापूर्वक यह अनुभव करने लगे हैं कि हमें अपने पैर उतने ही फैलाने चाहिएं जितनी रजाई हो। उन्होंने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जनता अब ३० अरब रुपये के नये कर देने के लिए समर्थ नहीं है। सब राज्य सरकारों के वित्तमंत्री भी इसे अनुभव करते हैं। बिहार में घाटे के बावजूद नये बजट में किसी नये कर का प्रस्ताव नहीं है। हमारी नम्र सम्मति में अन्य राज्यों के वित्तमन्त्री भी इसका अनुसरण करेंगे। तब यद्यपि योजना आयोग ने दृढ़तापूर्वक नयी योजना के आकार को कम न करने की घोषणा की है, योजना के लक्ष्य कैसे पूर्ण होंगे?

पिछले दिनों उद्योग परामर्श समिति में भारत के उद्योगपतियों ने जिस स्पष्टता और योग्यता के साथ उद्योग विकास के मार्ग में आने वाली बाधाओं को उपस्थित किया है उसके भी अच्छे परिणाम निकलने की आशा की जा सकती है। सरकार की पेचीदा कर नीति उद्योगों के विकास में भारी चट्टान बन कर खड़ी हुई है। भारत के प्रधान मंत्री ने इस वर्ष के प्रारम्भ में यह आश्वासन दिया था कि आगामी बजट जनता का बजट होगा। इसका अर्थ यह समझा जा रहा है कि इस वर्ष सरकार बहुत अधिक नये कर नहीं लगाएगी।

यह सब लिखने का हमारा आशय केवल यही है कि इस नये गणतन्त्र वर्ष के प्रारम्भ में जो नये लक्षण दीख रहे हैं वे सन्तोषवर्धक और आशाजनक हैं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि हमारे सामने इस वर्ष कोई कठिन समस्याएं नहीं आएंगी। हमारी आशाएं और आकांक्षाएं काफी ऊंची हैं। उनके पूर्ण होने में अनेक बाधाएं और कठिनताएं आ सकती हैं और सबसे बड़ी बाधा तो हमारी नम्र सम्मति में यह है कि अभी तक देश की जनता में राष्ट्रीयता की भावना जड़ नहीं जमा पाई है। हिन्दी के प्रश्न पर दक्षिण भारत के कुछ एक राजनैतिक दलों ने अराष्ट्रीय आन्दोलन चला रखा है। विविध राज्यों में अन्न संकट की समस्या को केवल अपने राज्य की क्षेत्रीय दृष्टि से ही हल करने की प्रवृत्ति काम कर रही है। आज के मजदूर संगठन भी विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रभाव में काम कर रहे हैं। वे विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि से किसी प्रश्न पर विचार नहीं करते। जब केरल में अन्न के लिए हाहाकार मचा हुआ था, तब कोचीन के बन्दरगाह पर अनाज से लदे हुए जहाजों से मजदूर अनाज नहीं उतार रहे थे। बिहार के उद्योगों में भर्ती पर प्रान्तीय भावना रुकावट का काम कर रही है। इसी तरह अब तक जनता में विकास योजनाओं को अपना समझ कर सहयोग देने की भावना उत्पन्न नहीं हुई। वे अपने जीवन-स्तर को किसी तरह कम करने को उद्यत नहीं हैं और इसीलिए सरकार की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी बचत योजनाएं बहुत पिछड़ गई हैं। विविध विदेशों से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा भी जोर पकड़ रही है। ऐसी ही अन्य अनेक बाधाओं का भी उल्लेख किया जा सकता है। किन्तु बाधाओं और समस्याओं का मुकाबला करने का साहस देश में होना चाहिए। हमें आशा करनी चाहिए कि नया गणतन्त्र वर्ष देश के आर्थिक विकास के लिए शुभ होगा।

## मानव-संहार पर भारी खर्च

संसार भर की सरकारें हथियारों के निर्माण में आजकल १४००० करोड़ डालर वार्षिक खर्च कर रही है। इसका अर्थ हुआ कि इस मद में हर रोज ४० करोड़ डालर और हर घण्टे १ करोड़ ६० लाख डालरों का खर्च किया जा रहा है।

इन खर्चों को अगर तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो मालूम पड़ेगा कि ब्रिटेन में हवाई जहाजों को ढोने वाले एक जहाज की लागत का खर्च ६ करोड़ ५० लाख पौंड पड़ता है, जबकि मिश्र की कुल आबादी को पीने का पानी मुहैय्या करने के लिये केवल ४ करोड़ पौंड खर्च करने पड़ेंगे। उक्त राशि से ६०० ग्रामीण दवाखाने खोले जा सकते हैं। इसी तरह एक एटलस क्षेप्यास्त्र के निर्माण में ३ करोड़ डालर का खर्च बैठता है। यदि उक्त धनराशि को नाइट्रोजन खाद बनाने के प्लॉट पर खर्च किया जाये तो ५० हजार से लेकर ७० हजार टन प्रतिवर्ष खाद बनाने की क्षमता वाले कारखाने का निर्माण आसानी से किया जा सकता है।

यदि हम इन तमाम तुलनात्मक व्ययों को ब्रिटिश दरों में बदल दें तो एक पोलेरिस राकेट पर खर्च की जाने वाली राशि से चार विश्वविद्यालय खोले जा सकते हैं। एक बी-बम के खर्चे से सात माध्यमिक उच्च विद्यालय स्थापित हो सकते हैं। एक टी० एस० आर० २ से ५ आधुनिक अस्पताल कायम हो सकते हैं और एक राकेट विध्वंसक के खर्च से एक लाख ट्रेक्टर खरीदे जा सकते हैं।

ये अंक जो सन्देश देते हैं, उन्हें क्या राष्ट्रों के नेता सुनेंगे?

## अर्थप्रधान नीति

"यह सोचा गया था कि एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजना द्वारा देश की बेकारी समाप्त हो जायगी। संयोजित आर्थिक विकास द्वारा जनता के उपयोग की सामग्रियों की पर्याप्त प्राप्ति होगी। आज से १० साल पहले ही अन्न के लिए मुल्क स्वालम्बी हो जाएगा, ऐसी आशा थी। भारत जैसे देहाती मुल्क में ग्राम-जीवन सुखी और समृद्धिशाली बन जायगा। लेकिन हुआ क्या? एक ओर नौकरशाही की प्रगति हुई। पूंजीवाद ने जन-जीवन के अंग-प्रत्यंग को घेर लिया। अर्थात् पाश्चात्य वेशभूषा से सुसज्जित रईसी दिन-ब-दिन बढ़ती ही चली जा रही है। दूसरी ओर, हर पंचवर्षीय योजना के अन्त में बेकारी का परिणाम बढ़ता हुआ दिखायी दिया। अन्न आदि जनता की दैनिक आवश्यकताओं के सामान का अभाव बढ़ता गया। सच तो यह है कि स्वराज्य प्राप्ति के बाद से सरकार की आर्थिक नीति भारतवासी या जन-प्रधान न होकर अर्थ प्रधान रही है, जिसके परिणाम अब सामने आ रहे हैं। कैसे दुःख और आश्चर्य की बात है कि जहां १९३९ में भारत सरकार (जब भारत विभाजित नहीं था) पर कर्ज ११८० करोड़ रुपये था, वहां १९५१-५२ में २७७३ करोड़ रुपये हो गया और १९६२-६३ में ७,९९६ करोड़ हो गया! यानी सात गुना वृद्धि!! और मार्च १९६४ के अंत में तो यह कर्ज ९३६४ करोड़ रुपये हो गया। कहते हैं कि तीसरी योजना के अन्त में भारत सरकार पर कुल कर्ज १३,६०० करोड़ रुपये हो जायगा! इसी का नतीजा है कि १९४७ में जहां हमारा पौंड पावना १८०० करोड़ रुपये इङ्गलैंड में जमा था, वहां अब हम २५०० करोड़ रुपये के कर्जदार है! ऐसी दुःखद हालत में गल्ले के दाम जितने न बढ़ें और खाद्य-स्थिति जितनी भयंकर न हो जाये, थोड़ा है।"

उपर्युक्त उद्धरण भूदान यज्ञ से लिये गये हैं। इनमें जितना सत्य है, उस पर देश के प्रशासक और विचारक नेता विचार करें, इससे अधिक कुछ कहने की आवश्यकता नहीं।

## गांवों और नगरों में असमानता

ग्राम क्षेत्रों में नगरों की अपेक्षा, जहां सम्पत्ति का केन्द्रीकरण कम है, वहां बचत की दर भी नीची है, यह आशय है उस जांच का जो नेशनल कौंसिल आफ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एप्लाइड इकानामिक रिसर्च ने ग्रामों के सम्बन्ध में की थी।

इस जांच के अनुसार १९६२ में गांवों में बचत की दर ५.५ प्रतिशत थी। इस बचत में घर की चल सम्पत्ति तथा मवेशी भी सम्मिलित हैं। विशुद्ध नकदी में बचत ४.७ प्रतिशत बैठती है। कौंसिल की जांच के परिणाम-स्वरूप नगरों में बचत १३.०९ प्रतिशत थी। विशुद्ध नकदी में बचत १२.२ प्रतिशत थी। इस जांच के लिए कौंसिल ने नमूने के तौर पर ८६५५ घरों को लिया, जिनमें से १२८ ने कोई सहयोग नहीं दिया। कमेटी के अनुसार इस जांच में ३.३ प्रतिशत भूल चूक हो सकती है। ग्रामों की उक्त समीक्षा में यह भी नहीं भूलना चाहिए कि निम्नतम पांच प्रतिशत का हिस्सा कुल बचत के एक प्रतिशत से भी कम है, जबकि उच्चतम पांच प्रतिशत का हिस्सा २२ प्रतिशत है।

गांवों में १००० रु० से कम आय वालों का अनुपात ५३ प्रतिशत है, जबकि उनकी कुल आय, ग्रामों की कुल आय का २५ प्रतिशत बैठती है। इसके विपरीत दूसरी ओर नगरों में १००० रु० से कम आय वालों का अनुपात ४० प्रतिशत है और आय में उनका भाग १३ प्रतिशत है।

इस रिपोर्ट से यह भी ज्ञात होता है कि १९६२ में गांवों की कुल आय ८१.७८ अरब रु० और पूंजी की खपत को निकाल कर ८७.३६ अरब रु० थी। ग्राम क्षेत्रों की कुल जन संख्या ३५.३३ करोड़ थी। १९६२ से ग्रामों में प्रति व्यक्ति आय २४७ रु० थी, जबकि १९६० में नगरों में प्रति व्यक्ति आय ४५५ रु० थी। १९६२ तक यह आय ४८९ रु० तक पहुँच गई होगी।

## महंगाई कम हो रही है

यह प्रसन्नता की बात है कि लगातार बढ़ते हुए मूल्यों में अब काफी तेजी से गिरावट भी आने लगी है। ९ जनवरी १९६५ को मूल्यों का निर्देशक अंक १६१.० तक पहुँच गया था, वह १६ जनवरी को १६.०२ तक और २३ जनवरी को १५८.५ तक आ गया। सरसों के तेल में ८ प्रतिशत और गुड़ में ५ प्रतिशत कमी हुई है। इसी तरह दूसरे पदार्थों के मूल्य भी कम हो रहे हैं। अलसी और बिनौले की कीमतों में भी काफी कमी हुई है।

दिल्ली के भावों में उतार इस तरह हुआ है—

(भाव प्रति क्विंटल में)

| | ६-१-६५ | ६-२-६५ | अन्तर |
|---|---|---|---|
| गेहूँ दड़ा | ६७.०० | ५९.०० | ८.०० |
| गेहूँ स्पेशल | ७५.५० | ७०.०० | ५.५० |
| बाजरा | ७०.०० | ६८.०० | २.०० |
| सरसों | १९०.२४ | ११२.५४ | ७७.७० |
| तेल सरसों | | | |
| कच्ची घानी | ४३९.४२ | ३००.०० | १३९.४२ |
| पक्की घानी | ४२६.०२ | २७०.०० | १५६.०२ |
| मूंगफली का | | | |
| तेल | २५१.६६ | २०९.०० | ४२.६६ |
| गुड़ | ९६.४६ | ७५.०० | २१.४६ |
| शक्कर | १०१.८२ | ८५.०० | १६.८२ |

## त्याग व सादगी

"आज जब हमारी अर्ध-विकसित अर्थ-व्यवस्था संक्रांति और परिवर्तन के दौर से गुजर कर विकास की ओर अग्रसर है, हमें अपने जीवन में तप और निवृत्ति को अपनाना और कुछ काल तक अधिकाधिक किफायत करके पूंजी को उत्पादन कार्यों में लगाना होगा। आमदनी के बढ़ने के साथ-साथ अधिकाधिक खर्च करने की प्रवृत्ति को रोकना होगा, नहीं तो अल्प विकसित देश से विकसित देश बनाने के हमारे यत्न में बाधा पड़ जाएगी या फिर जो क्रांति हम चाहते हैं, वह हो ही नहीं पायगी। अधिक खर्च करके धन का प्रदर्शन करना विकास कार्य को हानि पहुँचाना है। यदि हमें अपने विकास की मंजिल तक पहुँचना है, तो हमें समाजवाद के इस आदर्श को अपनाना होगा कि हम अपने व्यक्तिगत लाभ के माध्यम से नहीं, बल्कि समाज हित के द्वारा अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।"

योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता के उपर्युक्त विचार एक गम्भीर सत्य को प्रकट करते हैं। हमारी योजनाएं बहुत शानदार हैं, लक्ष्य बहुत ऊंचे हैं किन्तु हमारी प्रगति शिथिल है। इसका मुख्य कारण वस्तुतः देश के प्रशासकों और जनता के विविध श्रेणियों में उत्साह और उमंग का अभाव है। देश के आर्थिक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्राम के लिए भी तपस्या उतनी ही आवश्यक है, जितनी कि राजनीतिक स्वाधीनता के लिए। किन्तु तपस्या और सादगी का वातावरण उत्पन्न करने के लिए अब नेताओं और प्रशासकों को सामने आना चाहिए। यह वातावरण ही तैयार नहीं हो रहा। हमारी प्रत्येक योजना में भव्य भवन, कीमती फर्नीचर, ऊंचे वेतन और भत्ते, मोटरें तथा सैकड़ों कर्मचारी पहले आ जाते हैं। स्वयं योजना भवन भी इसका अपवाद नहीं है।

यह प्रसन्नता की बात है कि योजना आयोग के उपाध्यक्ष ने इस त्रुटि को गम्भीरता से अनुभव किया है। वे स्वयं अपने निर्धारित वेतन का ३५ प्रतिशत लेते हैं। उनके इस आदर्श का अनुसरण ऊंचा वेतन पाने वाले करें और सादगी की लहर ठीक उसी तरह ऊपर से निम्न स्तरों पर फैले, जैसे आडम्बर और शानशौकत की हवा ऊपर से नीचे फैली है। मितव्यय और सादगी से हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के लिए उत्साहमय वातावरण तैयार होगा।

## प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर

केन्द्र और राज्यों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर किस तेजी से बढ़ रहे हैं, यह निम्नलिखित तालिका से प्रगट होगा। फरवरी के अन्त में प्रकाशित बजट इसमें क्या परिवर्तन करता है, यह पाठक उत्सुकता से देखेंगे।

इस तालिका के अध्ययन के बाद कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज की चेतावनी समझ में आ जाती है। उन्होंने स्पष्ट व निश्चित शब्दों में कहा है कि आगामी योजना में करों की वृद्धि से ३००० करोड़ रु० अतिरिक्त आय की आशा करना संभव नहीं है। इसलिए योजना के आकार को ही सीमित करना चाहिए।

संख्याएं करोड़ रु० में

| वर्ष | केन्द्र | | |
|---|---|---|---|
| | प्रत्यक्ष कर | अप्रत्यक्ष कर | कुल कर राजस्व |
| १९५०-५१ | १२७.७ | २२९.३ | ३५७.० |
| १९५५-५८ | ११४.० | २९७.४ | ४११.४ |
| १९६०-६१ | २०१.८ | ५२८.३ | ७३०.१ |
| १९६१-६२ | २३९.० | ६३.६४८ | ७५.४ |
| १९६२-६३ | ३२३.५ | ७३७.४ | १०६०.९ |
| (संशोधित अनुमान) | | | |
| १९६३-६४ | ४०२.४ | ९०७.७ | १३१०.१ |
| (बजट का अनुमान) | | | |
| १९६४-६५ | ४६२.७ | ९८६.३ | १४४९.० |
| १९६४-६५ में प्रतिशत परिवर्तन | | | |
| १९५०-५१ से ऊपर | +२६२.३ | +३३०.१ | +३०५.९ |

### राज्य

| | प्रत्यक्ष कर | अप्रत्यक्ष कर | कुल कर राजस्व |
|---|---|---|---|
| १९५०-५१ | १०२.७ | १६६.८ | २६९.५ |
| १९५५-५८ | १४५.० | २११.१ | ३५६.१ |
| १९६०-६१ | २०३.४ | ४२१.५ | ६२४.९ |
| १९६१-६२ | २०६.५ | ४५६.१ | ६६२.६ |
| १९६२-६३ | २३२.७ | ५३१.३ | ७९४.० |
| (संशोधित अनुमान) | | | |
| १९६३ ६४ | २५२.१ | ६६४.१ | ९१६.२ |
| (बजट का अनुमान) | | | |
| १९६४-६५ | २४३.१ | ७०६.८ | ९४९.५ |
| १९६४-६५ में प्रतिशत परिवर्तन | | | |
| १९५०-५१ से ऊपर | +१३६.७ | +३२३.७ | +२५२.५ |

## उद्योगपति हिन्दी को अपनावें

देश की राजभाषा हिन्दी हो गई। इसके लिए प्रत्येक भारतीय नागरिक का, जिसे अपने देश और संस्कृति से प्रेम है, हम अभिनन्दन करते है। हिन्दी के राजभाषा पद पर अधिष्ठित होने का एक स्वाभाविक परिणाम यह होना चाहिए कि देश के आर्थिक क्षेत्रों में भी हिन्दी का प्रचलन तेजी से बढ़े। अभी तक सब सरकारी और गैर-सरकारी उद्योग और व्यापारिक संस्थान अपना समस्त कारोबार अंग्रेजी में करते थे। अब हिन्दी का प्रयोग किया करेंगे। उनके रजिस्टर, पत्र और हिसाब-किताब सब हिन्दी में हुआ करें। जब जनता हिन्दी को अपनायेगी, तभी हिन्दी सचमुच राष्ट्रभाषा बन सकेगी। कम से कम हिन्दी क्षेत्र के व्यापारियों और उद्योगपतियों का तो यह कर्त्तव्य है कि वह अपने कार्य-व्यापार में यथा-सम्भव हिन्दी का प्रयोग करें।

## विलम्ब नहीं होगा

पिछले गणतंत्र वर्ष की समाप्ति पर जो अनेक महत्व-पूर्ण घटनाएं हुई हैं, उनका मुख्य उद्देश्य भारत में औद्योगिक प्रगति करना दीखता है। इसी दिशा में विदेशी पूंजी के स्वागत के लिए नए उद्योगों के शेयरों पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करों की सुविधा के अतिरिक्त एक कदम यह उठाया गया है कि नये उद्योगों के लिए लाइसन्स के वास्ते जो प्रार्थना-पत्र आयें, उनका निपटारा तीन महीने के अन्दर-अन्दर कर दिया जाय। नये उद्योग स्थापित करने वालों को लाइसेन्स मिलने में कठिनता होती थी और बहुत अधिक समय बाद लाइसन्स मिल पाता था। इससे नये उद्योगों की स्थापना अनिश्चित काल के लिए टल जाती थी। लगातार महंगाई बढ़ते रहने के कारण उद्योगों के अनुमान पुराने पड़ जाते थे, शेयर होल्डरों को भी यह भरोसा नहीं रहता था कि उद्योग कब तक स्थापित होंगे। इसलिए पूंजी निर्माण में भी कठिनता अनुभव होती थी। सरकारी दफ्तरों की लालफीताशाही की शिकायत वर्षों से की जा रही थी। इसलिए तीन महीने के अन्दर प्रार्थना पत्रों पर निश्चय की घोषणा अवश्य स्वागत के योग्य है। ■ ■

# अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य परिषद

जब यह पंक्तियां लिखी जा रही है, नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य परिषद (इन्टरनैशनल चैम्बर आफ कामर्स) का २२ वां अधिवेशन हो रहा है। यह अधिवेशन भारत में पहली बार निमंत्रित किया गया है। इस सम्मेलन में विभिन्न ४५ देशों के प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं। अर्जन्टाइना से ग्रीस तक, और ईराक से जापान तक के प्रतिनिधि इसमें भाग ले रहे हैं। रूस, जैकोस्लोवाकिया और हंगरी में निजी उद्योग नहीं हैं, इसलिए उनके पर्यवेक्षक सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त ४५ अन्तर्देशीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी इनमें सम्मिलित हो रहे हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के नाम इस प्रकार हैं:-मुद्रा कोष, लेबर आफिस, एअर ट्रांसपोर्ट एसोसेशन, एसोसियेशन आफ लायर्स। भारत के २०० प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हो रहे हैं, जबकि अमेरिका, जापान, ब्रिटेन जर्मनी, फ्रांस आदि के ३० और ५० के बीच में प्रतिनिधि सम्मिलित हो रहे हैं। इस परिषद की ६ हजार कम्पनियां सदस्य हैं, जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय विकास में रुचि है। इसकी एक विशेषता यह है कि इसमें सोवियत रूस के भी पर्यवेक्षक पहली बार शामिल हो रहे हैं।

इस अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य विश्व के विभिन्न भागों में आर्थिक और भौतिक समृद्धि में निजी उद्योग द्वारा योगदान पर विचार करना है। कम विकसित देशों के विकास में विकसित देश किन उपायों से सहयोग दे सकते हैं, इस प्रश्न पर मुख्यतः विचार हो रहा है। विदेशी मुद्रा की समस्या के हल के लिए विदेशी पूंजी लगाई जाय, ऋण दिये जांय, परस्पर सहयोग से उद्योगों की स्थापना की जाय, विभिन्न देशों की साधन क्षमता का सदुपयोग कैसे किया जाय, इन सब प्रश्नों पर विभिन्न देशों के अर्थशास्त्री और उद्योगपति गम्भीरता से विचार करेंगे। इन्डियन नेशनल कमेटी के अध्यक्ष लाला भरतराम ने जिन्होंने इस कांफ्रेंस को भारत में निमंत्रित किया है, एक वक्तव्य में बताया है "यद्यपि इस सम्मेलन की नीति निजी अध्यवसाय को प्रोत्साहन देने की है, तथापि योजनाबद्ध विकास की भी उपेक्षा नहीं की जा सकेगी, क्योंकि वह विकास के एक मुख्य साधन के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। सिर्फ यह सम्मेलन इसके लिए अवश्य चिन्तित है कि निजी उद्योग को उचित स्थान दिया जाय।

इस सम्मेलन में व्यवसायी और व्यापारी सम्मिलित हो रहे हैं, इसलिए यह आशा की जाती है कि यह सम्मेलन किन्हीं व्यावहारिक और निश्चित परिणामों पर पहुँचेगा। मूल्य वृद्धि और मुद्रा प्रसार के साथ साथ विभिन्न देशों में बढ़ता व्यापार और विशेषकर अविकसित देशों की समस्याएं इसमें विशेष विचारणीय विषय होंगे। अनेक प्रामाणिक क्षेत्रों के अनुमान के अनुसार आज संसार में करीब ५० करोड़ व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें भरपेट पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं होता। एशिया और सुदूरपूर्व एशिया के क्षेत्रों में गत विश्वयुद्ध से पहले के स्तर (२१७० कैलरी) पर भी भोजन प्राप्त नहीं हो रहा। इसलिए सम्मेलन में उपस्थित विकसित देशों के प्रतिनिधि इस समस्या पर गम्भीर विचार करेंगे, ऐसी आशा की जाती है। विकसित तथा अविकसित देशों के बीच की बढ़ी खाई को पाटने का काम अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से हो सकता है। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजीगत विनियोग पर असंतुलित व्यय का सबसे बड़ा कुपरिणाम यह निकलता है कि इससे मुद्रा स्फीति को सहारा मिलता है। आज जो कीमतें बेरोक टोक बढ़ती जा रही हैं, उनका कारण भी यही है कि अब तक की योजनाओं पर संतुलित ढंग से साधनों को उपयोग नहीं किया गया है, जिससे इस समय हमारी अर्थव्यवस्था की प्रवृत्ति साफ तौर से मुद्रा स्फीति की ओर है।

कुछ भी हो इस समय मुद्रा स्फीति पर नियन्त्रण अवश्य करना होगा। यदि इस स्थिति को नहीं सुधारा गया तो फिर बाद में पीछे लौटना बड़ा कष्टकर होगा और हमारे देश की आर्थिक उन्नति अवरुद्ध हो जावेगी।

वर्तमान बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का उपाय यह है कि उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाया जावे। यदि हमें सचमुच ही मुद्रास्फीति की गति को रोकना है तो उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाना ही होगा और चौथी पंचवर्षीय योजना में इसके लिए उपयुक्त साधन लगाने होंगे। यह हर्ष की बात है कि सरकार का और योजना आयोग का ध्यान इस ओर गया है और योजना में इसके लिए व्यवस्था की जा रही है।

इस सम्बन्ध में हम मिश्र से बहुत कुछ सीख सकते हैं। वहां देश की आर्थिक योजनाएं बनाते समय इस बात का सबसे पहले ध्यान रखा गया कि आम जनता की उपभोग की वस्तुओं का अधिकाधिक उत्पादन किया जाय ताकि लोगों को उन वस्तुओं को प्राप्त करने में किसी प्रकार कठिनाई का सामना न करना पड़े। हाल ही में दुनिया के प्रमुख देशों का सर्वेक्षण करने से इस बात का पता लगाया गया है कि मिश्र में उपभोग की वस्तुओं का मूल्य स्तर अन्य देशों के मुकाबले सबसे कम है। स्वाभाविक है कि जब लोग यह अनुभव करेंगे कि वे पहले से बहुत सुखी हैं तो वे विकास कार्यों में रुचि लेंगे तथा उत्साह से कार्य करेंगे।

इस प्रकार हम देखेंगे कि हमारे देश के सामने सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि साधनों का संतुलित ढंग से उपयोग किया जावे। परन्तु यह संतुलन तब तक नहीं आ सकता जब तक मूलभूत धारणाओं को सही नहीं किया जाता।

(पृष्ठ ६६ का शेष)

पड़ेगा। एक साधारण व्यक्ति अपने पास से बहुत कम रकम दे सकता है। किन्तु ऐसे लोगों की संख्या करोड़ों में है। दो शताब्दी पूर्व इंग्लैंड के प्रमुख अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने मजदूरों के पूंजी निर्माण में योगदान का महत्त्व बताते हुए लिखा था:—

"एक श्रमिक को पूंजी के रूप में कुछ रुपया लगाने से पहले अपने परिश्रम से कुछ मजदूरी कमानी पड़ती है। उसका यह योगदान बहुत स्वल्प होता है, लेकिन मजदूरों की संख्या इतनी ज्यादा होती है कि यह छोटी २ रकमें भी मिलकर बहुत बड़ी बन जाती हैं और पूंजी निर्माण में महत्त्वपूर्ण भाग अदा करती हैं।"

इस तरह किसी अविकसित या अल्प विकसित अर्थव्यवस्था में यह आशा नहीं की जा सकती कि निम्न स्तर के लोगों को सहयोग देने के लिये बाधित किए बिना हम बहुत अधिक उन्नति कर सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सामान्य जनता को बहुत ज्यादा नहीं कसा जा सकता और जितना थोड़ा बहुत दबाव भी डाला जायगा, वह उनके लिए बहुत कष्टप्रद साबित होगा। यदि सामान्य जनता अपनी आवश्यकताओं को कम करने के लिए तैयार नहीं है और सरकार भी उस पर बोझ डालने से कतराती है, तो आर्थिक विकास एक सदिच्छा मात्र ही रह जायगा।

## इंग्लैण्ड में

अपने तीव्र आर्थिक विकास की अवधि में इंग्लैंड ने सामान्य जनता को त्याग व बलिदान करने के लिए विवश किया था। वहां सम्पन्न वर्ग बहुत प्रभावशाली था और सामान्य जन की कोई आवाज नहीं सुनी जाती थी। उद्योगपतियों ने स्वयं कोई कष्ट उठाये बिना मजदूरों को बहुत कम वेतन दिये। यह स्थिति उस समय तक रही, जब १९१२ में लोक सभा ने हाउस आफ लार्ड्स से अधिकार छीनकर श्रमिकों के वोट को प्रभावपूर्ण बना दिया। किन्तु उस समय तक इंग्लैंड आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध हो चुका था और जनता के जीवन स्तर को ऊंचा करने के लिये उद्यत हो गया था।

[तब भारत की सरकार व जनता क्या करना चाहती है और क्या किया जाना चाहिए, इन प्रश्नों का उत्तर आगामी अंक में पढ़िए।

—सम्पादक]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मूल्यों का स्तर ऊँचा होता जा रहा है !!!

श्री जे० डी० खत्री अध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, हंसराज कालेज

पदार्थों के बढ़ते हुए मूल्य और वेतन वृद्धि के दुश्चक्र, लोकतंत्रीय शासन पद्धति में कठिन स्थिति और सरकार के बढ़ते व्यय तथा उपाय आदि प्रश्नों पर लेखक का विचारपूर्ण लेख ।

## मूल्यस्तर सापेक्षिक शब्द

मूल्य का कोई स्तर अपने आप में ऊंचा या नीचा नहीं है । जो कीमत १९३०-४० में बहुत ऊंची समझी जाती थी, आज उसे कोई ऊंचा नहीं कहता । ऊंचे मूल्य स्तर की सबसे बड़ी बुराई यह होती है कि इससे स्थिर और कम आमदनी वालों को भारी मुसीबत का सामना करना पड़ता है, क्योंकि उनकी आमदनी उस अनुपात में नहीं बढ़ती, जिस अनुपात में उनके खर्च बढ़ जाते हैं । यदि मूल्यों की वृद्धि के साथ साथ मजदरी और वेतन भी बढ़ जाया करें तो फिर स्थिर या कम आमदनी वाले लोगों को कीमतें बढ़ने से कोई कठिनता न हो और उनके लिए ऊंची कीमतें पुरानी कीमतों जैसी ही प्रभावशून्य रहेंगी । लेकिन दूसरी ओर यदि मूल्य बढ़ने के साथ लोगों की आमदनी उसी अनुपात में नहीं बढ़ती तो लोगों को मंहगाई की परेशानियां बुरी तरह अनुभव होने लगती हैं । यदि लोगों के वेतन और आमदनी में मूल्यों की अपेक्षा भी ज्यादा वृद्धि होती है तो मूल्य बहुत ऊंचे न समझे जाकर कम ही अनुभव किए जायेंगे । इसीलिए सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि नये मूल्य स्तर के अनुरूप वेतन और आय में वृद्धि हुई है या नहीं । जब दोनों में इतना सामंजस्य. कायम हो जाता है, तब बढ़ी हुई कीमतें ऊंची नहीं अनुभव होतीं, क्योंकि लोगों की क्रय शक्ति पर उसका कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता । वह पूर्ववत ही स्थिर रहती है ।

इसलिए यह आवश्यक है कि बढ़ती हुई कीमतों के साथ साथ लोगों के वेतन और आय स्तर में भी वृद्धि हो । यदि कीमतें बढ़ती जांय और लोगों की आय उसके अनुपात में साथ साथ न बढ़े तब यह समझना चाहिए कि मंहगाई बहुत बढ़ गई है ।

## दो उपाय

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ऊंची कीमतों की समस्या का समाधान दो तरीकों से हो सकता है :—एक तो यह कि वस्तुओं की कीमतें कम की जांय और दूसरा यह कि कीमतों में वृद्धि के साथ साथ आय भी बढ़ाई जाय ।

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि वर्तमान स्थिति का सबसे अच्छा इलाज उत्पादन में वृद्धि है । इससे न केवल कीमतें कम होंगी, बल्कि समाज भी अधिक समृद्ध होगा । परन्तु यह उपाय दीर्घकाल की अपेक्षा रखता है । कृषि और उद्योग दोनों क्षेत्रों में उत्पादन एकदम स्वल्पकाल में नहीं बढ़ाये जा सकते । खासकर इस स्थिति में जिस में हमारा देश आज है—हमारी अल्पविकसित अर्थ व्यवस्था है । सुलभ पूंजी और प्राकृतिक साधनों का दोहन, चाहे वह व्यापक क्षेत्र में हो चाहे वह सघन रूप से करना हो, समय की अपेक्षा रखता है । इसी तरह हमें अपने दृष्टिकोण और प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन करने में समय लगेगा । हमारी अप्रयुक्त क्षमता को भी प्रयोग में लाने के लिए विशेष कदम उठाने की जरूरत पड़ेगी ।

कीमतों में कुछ वृद्धि असामाजिक तत्त्वों द्वारा कृत्रिम दुर्लभता उत्पन्न करने से भी होती है । भिन्न भिन्न वस्तुओं का बड़ी मात्रा में संग्रह कर लेना आज साधारण बात हो गई है । अभी तक सरकार को ऐसे गुप्त संग्रहों का पता लगाने और उस प्रवृत्ति को रोकने में बहुत कम सफलता मिली है ।

यदि हम कुल खर्चों में काफी कमी कर सकें तो भी मूल्यों का स्तर कुछ नीचे लाया जा सकता है । भारत के एक प्रमुख अर्थशास्त्री ने सलाह दी है कि हमें अपने फौजी खर्च में काफी कमी कर लेनी चाहिए । एक विदेशी अर्थशास्त्री ने भी, जो भारत के कभी मित्र कहे जाते थे, इस परामर्श का समर्थन किया है । आज चीनी आक्रमण के खतरे को देखते हुए इस परामर्श का भारतीय जनता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद ही स्वागत करे । वह तो रक्षा प्रयत्नों में और भी अधिक सावधान और सतर्क होने के पक्ष में है ।

## प्रधानमन्त्री का प्रस्ताव

भारत के प्रधानमन्त्री ने यह परामर्श दिया है कि सभी सरकारी विभागों को अपने खर्च में मिलाकर ७० करोड़ रुपये की कमी कर लेनी चाहिए । किन्तु उन्होंने साथ साथ यह भी कह दिया है कि इस कटौती का असर लोगों के रोजगार पर नहीं होना चाहिए । इन दोनों बातों का समन्वय कम समझ में आता है । यदि वे खर्च कम करने के लिए नौकरियों में कमी करते हैं तो बेकारी बढ़ेगी । यदि सरकारी दफ्तर सामान खरीदने में कमी करते हैं तो भी अप्रत्यक्ष रूप से बेकारी बढ़ेगी और यदि वे निर्माताओं और व्यापारियों को कम कीमत पर माल बेचने के लिए विवश करते हैं तो प्रधानमंत्री का यह आशय नहीं हो सकता । इसलिए खर्च कम करने का केवल एक ही तरीका हो सकता है कि सरकारी कर्मचारियों के वेतन में कमी कर दी जाय, जिससे बेकारी भी न बढ़े और खर्च भी कुछ कम हो जाय । परन्तु आज सरकार की ऐसी नीति भी नहीं हो सकती । इसके विपरीत बढ़ती हुई मूल्य-वृद्धि वेतन वृद्धि का ही समर्थन करती है ।

हमने ऊंची कीमतों का अर्थ ऊंची कीमतों और बढ़े हुए वेतनों में अधिक अन्तर किया है । जब हम कीमतों के स्तर को नीचे नहीं रख सकते, तब हमारे सामने एक ही विकल्प रहता है कि हम लोगों के वेतनों और मजदूरी को बढ़ा दें । भारत सरकार भी यही करने जा रही है । वह मजदूर संघों और विरोधी राजनैतिक दलों के सामने झुक गई है । दास रिपोर्ट को एक अंश में स्वीकार भी कर लिया गया है । अब भारत सरकार के लाखों कर्मचारियों को अधिक मंहगाई भत्ता मिलेगा । राज्य और अर्द्ध प्रशासकीय संस्थाएं भी इसका पालन करेंगी । देश के उद्योगों पर भी इसके लिए भारी दबाव पड़ेगा, जिसके आगे उन्हें झुकना ही पड़ेगा । इस प्रकार हमारे देश के खर्च बुरी तरह बढ़ जायेंगे । शास्त्रीजी का ७०करोड़ रुपया कम खर्च करने का प्रस्ताव अमल में आने से पहले ही समाप्त हो गया है । अब उस प्रस्ताव की कबर पर अधिक व्यय की नीति की नींव स्थापित हो रही है ।

जब मजदूरी और वेतन बढ़ जाते हैं और मंहगाई के साथ समन्वय कायम कर लेते हैं, तब मंहगाई शिकायत के योग्य नहीं रहती और ऊंचे मूल्य खटकते नहीं हैं । परन्तु दुर्भाग्य से स्थिति इसके विपरीत है । सरकार के इस कदम से यह स्पष्ट होता है कि भारत सरकार आर्थिक विकास की समस्या का सामना करने के लिए तैयार नहीं है और इससे कुछ देर के लिए भले ही उबाल रुक जाय, किन्तु अन्ततोगत्वा स्थिति और भी खराब हो जायेगी । इसलिए अब आवश्यकता यह है कि सरकार की नीति के महत्त्वपूर्ण फलितार्थों पर प्रकाश डाला जाय ।

भारत सरकार ने सुनियोजित आर्थिक विकास के मार्ग का अवलम्बन किया है । इसका अर्थ यह है कि वह पूंजी निर्माण की गति को तेज करने के लिए कुछ विशेष कदम उठाना चाहती है, क्योंकि सामान्य जन अपने उपभोग को आवश्यक स्तर तक इच्छा से कम करने को तैयार न होगा । इसलिए सरकार सम्बद्ध आर्थिक और मुद्रासम्बन्धी उपायों के द्वारा उस पर ज्यादा बोझ डालना चाहती है ।

## धनियों पर अप्रत्यक्ष कर

सम्पन्न क्षेत्रों पर सरकार जो भी अतिरिक्त बोझ डाल सके, जरूर डालने चाहिए । किन्तु उनमें से अधिकांश पहले ही बहुत भारी मात्रा में कर दे रहे हैं और बहुत से अपनी आमदनी का बड़ा भाग उद्योग और व्यापार में लगाते हैं । फिर भी उनके बहुत से खर्चे ऐसे हैं जिन पर प्रतिबन्ध लगाया जा सकता है, किन्तु इस सब का यह परिणाम निश्चित है कि वे तीव्र आर्थिक विकास के लिए बहुत आर्थिक साधनों की व्यवस्था नहीं कर सकते । आखिर जिस देश में केवल ०.२५ प्रतिशत आय कर देने वाले हों, वहां ऊंची आय वाले बहुत कम व्यक्ति ही होंगे । यदि उनकी समस्त आमदनी भी कर के रूप में ले ली जाय तो भी सुनियोजित आर्थिक विकास के लिए आवश्यक धन नहीं मिल सकता ।

## सामान्य जनता का योगदान

इसलिए कुछ भार सामान्य जनता को भी उठाना ही

(शेष पृष्ठ ७१ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्न संकट के कुछ मुख्य कारण

श्री यज्ञदत्त उपाध्याय

अन्नादि के उत्पादन को, अपेक्षाकृत दूसरी जिन्सों के, दिनों दिन कम महत्व दिया जाता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में ही खाद्यान्न १९५०-५१ में १ करोड़ २२ लाख एकड़ और तिलहन, कपास, गन्ना आदि १६ लाख एकड़ में बोया गया, पर १९५९-६० में जहां अन्नादिक १ करोड़ ८५ लाख याने लगभग ५० प्रतिशत अधिक भूमि पर पैदा किया, गया वहां तिलहन आदि १६ लाख एकड़ के मुकाबले ३१ लाख एकड़ में बोया गया, याने शत प्रतिशत अधिक बोया गया।

## पैदावार की औसत गिरी

इन वर्षों में काफी नयी भूमि हल के नीचे आई है, पर औसत पैदावार प्रति एकड़ बढ़ी हो, ऐसा नहीं लगता। आशंका यह है कि पैदावार की औसत कम हुई है। अतिरिक्त भूमि के लिए अतिरिक्त जन-शक्ति तो गांवों में जन-गणना के हिसाब से खड़ी हो गई, पर सिंचाई व खाद आदि साधनों का उतना बाहुल्य, जो समूची कृषि-योग्य भूमि के औसत को बढ़ाने लायक हो, नहीं हो सका। हजारों वर्षों से भारत की भूमि बिना घी चुपड़े धन उगलती रही है, पर अब उसकी उर्वरा शक्ति एकदम क्षीण हो चुकी है।

## किसान की हालत कमजोर

भूमि को बराबर उपजाऊ बनाये रखने के लिए आय का जो भाग किसान को भूमि पर वापिस डालना चाहिये, वह संभव नहीं हो रहा है। खेती के औजार, खाद, बीज, मजदूरी भी काफी मंहगी है, तो जमाने की हवा के असर से भी वह मुक्त नहीं रह सकता। उसके खर्च के मद भी कई बढ़ गये हैं, जिनमें पहिले की अपेक्षा आज बहुत अधिक खर्च होता है।

## बढ़ती हुई जनसंख्या

भारत में पिछली जनगणना के अनुसार १० वर्षों में लगभग ८ करोड़ की वृद्धि हुई। इस जन-वृद्धि को देखते हुए अन्न उत्पादन की वृद्धि की मात्रा पीछे पड़ जाती है, यह भी इस संकट का एक बड़ा कारण है।

## शहरों की बढ़ती आबादी

शहरों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। इसके मायने यह हैं कि उत्पादन के स्थान पर उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है। भूमि पर भार कम हो, याने अधिक लोग कृषि कार्य में न हों, यह तो जरूरी है, पर यदि वे उत्पादन के अन्य प्रकारों में न लगकर शहरों के नौकरी पेशों में भरें तो अन्न संकट और भी बढ़ेगा। वस्तुतः यही हो रहा है।

## भूमि संबंधी कानून पर्याप्त क्रान्तिकारी नहीं

भूमि समस्या हल नहीं हो पाई। यह कहना ठीक होगा कि वह पहिले से भी अधिक खराब हो गई। उत्तम कृषकों की एक बड़ी संख्या अपनी खुद की खेती न होने, और जो कुछ थी, उससे भी नये कानूनों के प्रथम दौर में हटा दिये जाने से खुद भी बेजार है। उत्पादन को भी उससे धक्का लगा है। भूमि संबंधी कानूनों में सीलिंग व खुद काश्त सम्बन्धी कानून अखेतीहर के हितों की रक्षा करते और वे ही खेतीहर लोगों के विरोध में जाते हैं।

## संकट को बढ़ावा देने वाले कुछ कारण

राज्यों द्वारा समय-समय पर अपनी सीमा में खाद्यान्नों के रोकथाम की नीति कई बार संकट को बढ़ावा देती है। अन्न के मोरचे पर सरकार की लगातार असफलता से सरकार में लोगों का विश्वास जम नहीं पाया है। इस अविश्वास और अनिश्चितता के वातावरण में संग्रह की वृत्ति बढ़ गई है।

सस्ते अन्न की दुकानों को सरकार यदि पर्याप्त मात्रा में देशी-विदेशी अनाज उचित दामों पर दे, तो लोगों को अनाज मिलता रहेगा। तब लोग भी संग्रह करना बन्द करेंगे और जो कुछ संग्रह किया है, वह भी बाहर आयेगा।

—'ग्रामराज' से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्र के लिए चुनौती

( राष्ट्रपति का उद्‌बोधन )

श्री सर्वपल्ली राधाकृष्णन

चालू योजना के पहले तीन वर्षों में अनाज का उत्पादन नहीं बढ़ा है। इसका कारण खराब मौसम भी हो सकता है, लेकिन हम अपने दिलों को टटोलकर यह देखें कि क्या कृषि-क्षेत्र में तेजी से विकास के लिए हमने वह सब कुछ किया है, जो हमें करना चाहिए था ? क्या देहातों से संबंधित हमारे प्रशासनिक संगठन ने प्रभावशाली रूप से किसानों को वैज्ञानिक कृषि की संभावनाएं बतायी हैं ? क्या हमने उपयुक्त मूल्य नीतियों और भूमि सुधारों द्वारा ऐसा समुचित आर्थिक वातावरण उत्पन्न किया है, जिससे किसानों को जी-जान से जुटकर उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा मिले ? यह आवश्यक है कि हम अपने आप से ये सवाल पूछें, क्योंकि अगर हमें यह मालूम हो जाता है कि हमारे काम में कोई त्रुटि रही है, तो उसे दूर करने की ओर यह पहला कदम होगा।

## स्थिरता संकट में

हाल के कुछ वर्षों में कीमतें जिस तरह बढ़ती रही हैं, वह गंभीर चिन्ता की बात है। सबसे अधिक वृद्धि खाद्य-पदार्थों की कीमतों में हुई है और स्वाभाविक है कि इसका प्रभाव समाज के उन वर्गों पर सबसे अधिक पड़ा है जो अपेक्षाकृत साधनहीन हैं। जिस ढंग से मंहगाई बढ़ी है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि मुद्रा-स्फीति की स्थिति का सामना हमें करना पड़ेगा।

मुद्रा-स्फीति की खातिर हमें न सिर्फ भविष्य के विकास को तिलांजलि देनी होती है, बल्कि उससे वर्तमान आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता भी खतरे में पड़ जाती है। इसलिए यह हम सबका—सरकार और जनता का भी कर्तव्य है कि हम बढ़ती हुई मंहगाई को रोकने की हर तरह से कोशिश करें।

मुद्रा-स्फीति का निश्चित और स्थायी उपाय निःसंदेह यही है कि उत्पादन बढ़े। लेकिन साथ ही हमें वितरण की वर्तमान व्यवस्था में कमजोरी को भी दूर करना है, क्योंकि इसके कारण बढ़ती हुई मांग और यथेष्ट पूर्ति के बीच बुनियादी असंतुलन से उत्पन्न स्थिति और भी खराब हो गयी है।

## ऊंचा जीवनस्तर

यदि हमारे लोकतन्त्र को स्थायी बनना है, तो यह आवश्यक है कि हम जनता के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाएं और ऐसी व्यवस्था करें, जिससे समुचित आय और अवसर की समानता सभी को उपलब्ध हो। जनता को अभाव से मुक्त करने के लिए हमने आयोजित आर्थिक विकास का कार्य अपनाया है। इस दिशा में हमारी सफलताएं काफी अच्छी रही हैं, लेकिन हमारे यहां आबादी उससे भी ज्यादा तेजी से बढ़ रही है।

अनाज और मंहगाई की समस्याएं निःसन्देह आज के सबसे जरूरी और मुख्य सवाल हैं, और मुझे खुशी है कि केन्द्र व राज्य सरकारें इनकी ओर सजगता से ध्यान दे रही हैं। किन्तु गरीबी और अज्ञान, बीमारी और भेदभाव के विरुद्ध हमारा संघर्ष लम्बा और कठिन होगा।

इसके लिए हमें जन और सम्पत्ति के अपने सभी साधनों का सहारा लेना होगा।

## किसी भी कीमत पर

राष्ट्र के सामने आज जटिल और विविध समस्याएं हैं। उनसे हमें यही सीख लेनी है कि हमारा चिंतन शांत और आदर्श सहित हो और हमारे कार्य साहसिक और निश्चयात्मक हों। यदि हम समस्याओं से बचने की कोशिश करेंगे और समाज विरोधी तत्वों को देश की अर्थव्यवस्था कमजोर बनाने देंगे, तो जनता में निराशा की भावना घर कर जाएगी। हमें इसे किसी भी कीमत पर रोकना है। हमारे राजनीतिज्ञों की सूझबूझ के लिए सबसे बड़ी यही चुनौती है कि वे स्वस्थ चिंतन को प्रेरणा दें तथा सुदृढ़ शासनतंत्र प्रदान करें जो शुद्ध तथा कुशल हो।

मुझे आशा है कि राजनैतिक लोकतन्त्र की दृढ़ता, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के निर्माण तथा आर्थिक विकास की समृद्धि के लिए सभी वर्गों के लोग सहयोगपूर्वक प्रयत्न करेंगे।

■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक जबर्दस्त चेतावनी

# पंचवर्षीय योजना प्रभावकारी हो

श्री कामराज, अध्यक्ष अ. भा. कांग्रेस

हम यह अनुभव करते हैं कि जो लक्ष्य हमने निर्धारित किये हैं, उन्हें प्राप्त करने के लिए हमें कठिन परिश्रम करना होगा। ऐसी स्थिति में जब कि योजना आयोग देश के लिए चौथी योजना को अन्तिम रूप दे रहा है, खाद्य के मोरचे पर गम्भीर संकट उत्पन्न हो गया है। एक ओर जहां औद्योगिक क्षेत्र में हुई प्रगति पर हमें गर्व है—यद्यपि कहीं-कहीं उत्पादन में ह्रास भी हुआ है—कृषि के मोरचे पर हुई प्रगति से हम सन्तोष का अनुभव नहीं कर सकते। लक्ष्य और प्रगति में भारी अन्तर है और इसका परिणाम यह हुआ है कि हमारे साधनों पर भारी भार आ पड़ा है।

## बढ़ते मूल्य और नियन्त्रण

सभी लोग जानते हैं कि देश में खाद्य का अभाव है और इसे दूर करने के लिए देश बहुत अधिक विदेशी मुद्रा खर्च कर रहा है। जो खाद्यसामग्री उपलब्ध है, उसे यदि सभी लोगों के पास पहुँचाना है तो वितरण पर कुछ मात्रा में नियन्त्रण लगाना आवश्यक है। समाज के निर्धन समुदाय को भी खाद्यान्न उचित मूल्य पर मिल सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि वितरण और मूल्य पर नियन्त्रण लगाया जाय। देश में इस समय जो खाद्य-संकट उत्पन्न है, उसने हमें चतुर्थ योजना के प्रस्तावों पर विचार करने के लिए विवश कर दिया है। इन प्रस्तावों में जिन्हें राष्ट्रीय-विकास परिषद् की स्वीकृति प्राप्त हो गई है, २१ हजार ५ सौ करोड़ से २२ हजार ५ सौ करोड़ रुपये के खर्च की व्यवस्था है। इस प्रकार की लम्बी योजना तैयार करते समय हमें उन गम्भीर दायित्वों और बोझों को ध्यान में रखना चाहिए, जिन्हें हम वहन करने जा रहे हैं। हम अगले पांच वर्षों में अपनी विकास योजनाओं पर २१ हजार ५ सौ करोड़ रुपये खर्च करने जा रहे हैं, जो पिछली तीन योजनाओं में खर्च की गई कुल धनराशि से भी अधिक है। इस प्रकार के भारी पूंजी नियोजन का देश के मूल्य ढांचे पर जो प्रभाव पड़ेगा, उसके परिणामों पर भी हमें अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

## मुद्रास्फीति का खतरा

हम देश की गरीबी, बेकारी और अक्षमता दूर रखने के लिए अधीर हो सकते हैं, कम से कम समय में अपने को सभ्य समाज में परिणत करने के लिए उत्सुक हो सकते हैं और बड़ी से बड़ी योजना चालू करने के उतावले हो सकते हैं, किन्तु हमें हर कदम सोच-समझकर बुद्धिमानीपूर्वक उठाना है और यह भली-भांति समझ लेना है कि हम जो भी कदम उठायें, वह इच्छित परिणाम दे ही। अधिक पूंजी विनियोजन के परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति का समाज के धनहीन और कमजोर वर्ग पर गम्भीर प्रभाव पड़ेगा।

योजना में यह व्यवस्था है कि केन्द्र तथा राज्य सरकारें तीस अरब रुपये अतिरिक्त साधनों से जुटाएं। मेरी समझ में यह बहुत बड़ी धनराशि है। कर के लिए नये स्रोत का क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। ऐसी स्थिति में योजना को अन्तिम रूप देने के पूर्व केन्द्र तथा राज्य सरकारों को आय के अतिरिक्त साधनों की सम्भावना पर भली-भांति विचार कर लेना चाहिए।

## चौथी पंचवर्षीय योजना

यह बात मान ली गयी है कि खाद्योत्पादन को शीर्ष प्राथमिकता देनी है। केन्द्र और राज्यों की तात्कालिकता का ध्यान रखते हुए खाद्योत्पादन से सम्बन्धित कार्यक्रमों को चरितार्थ करने में जुट जाने की आवश्यकता है। जैसा कि हमारे प्रधान मन्त्री ने जोर दिया है, हमें उन कार्यक्रमों को प्राथमिकता देनी है, जिससे अधिकाधिक शीघ्र परिणामों की आशा हो।

हमारे प्रिय नेता जवाहरलाल नेहरू के प्रति अटूट प्रेम और श्रद्धा, आस्था और विश्वास के कारण राष्ट्र हमारी गलतियों को क्षमा करता रहा है, लेकिन आगे हमारी भूलों और विफलताओं को राष्ट्र माफ नहीं करेगा। इसलिए हमें सचेत और बहुत सावधान रहना होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रूस भारत सहयोग की दशाब्दि

■ गत २ फरवरी को रूस और भारत के आर्थिक सहयोग की दशाब्दि मनाई गई। वस्तुतः योजनाबद्ध आर्थिक विकास का प्रारम्भ रूस ने ही किया था। जब भारत ने स्वाधीन होने के बाद योजनाबद्ध विकास के लिए प्रयत्न किया तो रूस ने एक मित्र देश के नाते भारत की महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में सहयोग का न केवल मौखिक आश्वासन दिया, अपितु उसे पूर्ण करने के लिए उसने अविस्मरणीय सक्रिय सहयोग भी दिया। इस सहयोग का प्रारम्भ आज से दस वर्ष पूर्व २ फरवरी १९५५ को हुआ, जबकि उसने भिलाई में स्पात का कारखाना बनाने के लिए एक समझौता किया। रूस ने इस पर लगाये गये भारी रकम की ब्याज दर अन्य देशों की अपेक्षा बहुत कम अर्थात् २.५ प्रतिशत रखी। भिलाई का कारखाना जितनी सफलता से काम कर रहा है और मध्यप्रदेश तथा भारत के आर्थिक विकास में जो योगदान दे रहा है, उसका परिचय देने की आवश्यकता नहीं।

भिलाई तो केवल श्रीगणेश था। सोवियत रूस ने अब तक ३५ बड़ी योजनाओं के लिए लगभग चार करोड़ रुपये के ऋण मंजूर किए हैं। इनकी मियाद १२ साल है और इन पर केवल २.५ प्रतिशत सालाना ब्याज लगेगा। रूस की सद्भावना का एक प्रबल प्रमाण यह है कि भारत इन ऋणों को रुपये में ही चुकाएगा। इस कारण भारत इन ऋणों का बोझ अनुभव नहीं करता।

रूस की सहायता से हमें जो लाभ हुआ है वह चमत्कारी होने के साथ-साथ ठोस भी है, जैसे २५ लाख टन इस्पात (बोकारो से होने वाले उत्पादन को छोड़कर) ६० लाख टन पेट्रोल पदार्थ, १ लाख २५ हजार टन की खनन और धातुशोधन की आधुनिक मशीनें और अन्य भारी यंत्र, इस्पात और बिजली बनाने के यंत्र और २७ लाख किलोवाट क्षमता के बिजली यंत्र, १ लाख ४५ हजार टन रिफ्रैक्टरी (अग्नि ईंट), ३० लाख टन कोयला की खुदाई और धुलाई मशीनें और २,५३५ मेगावाट बिजली की उत्पत्ति।

## और अब बोकारो

रूस ने रांची में भारी मशीन बनाने का कारखाना और दुर्गापुर में कोयला-खनन मशीनें बनाने का कारखाना बनाने में मदद देकर भारत को भारी इंजिनियरी उद्योग की पुख्ता नींव डालने में सहायता दी है। भारत में बिजलीघर बनाने के लिए भी रूस ने सामान और शिल्पिक जानकारी दी है। इनमें सबसे बड़ा बिजलीघर न्येवेली का है। वहां ४०० मेगावाट बिजली तैयार होगी। रूस की सहायता से जो और योजनाएं चल रही हैं, उनमें हरिद्वार का भारी बिजली यंत्र कारखाना; ३०-३० लाख टन क्षमता के दो तेल शोधन कारखाने; कठरा में प्रतिवर्ष ३० लाख टन कोयला खोदने की मशीनों का कारखाना; १७ लाख टन की दो कोयला खानें और २० लाख टन की एक कोयला खान है। इनके अलावा प्रतिजीव (एंटीबायोटिक) औषधि, औषधि रसायन, चीरफाड़ के औजार, दृष्टि यंत्र के कांच आदि बनाने के कारखाने लगाने में भी रूस सहायता दे रहा है। और अब बोकारो का भारी स्पात संयंत्र भी लगेगा।

सोवियत रूस ने भारत को तेल की खोज में जो मदद दी, वह असाधारण महत्व रखती है। पहले यह विश्वास किया जाता था कि भारत में खनिज तेल है ही नहीं। लेकिन रूसी भूतत्वशास्त्रियों ने इसे गलत सिद्ध कर दिया और दिखा दिया कि भारत तेल में आत्मनिर्भर हो सकता है। आज भारत के तेल उद्योग के विकास का श्रेय रूस को दिया जा सकता है।

सूरतगढ़ का बड़ा भारी फार्म भी रूस के सहयोग का एक बड़ा उदाहरण है।

सन् १९५३ में रूस और भारत में केवल एक करोड़ रुपये का व्यापार हुआ था, किन्तु आज एक अरब रुपये तक परस्पर व्यापार होने लगा है। यह व्यापार दोनों देशों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर रहा है। प्रशिल्पिक प्रशिक्षण में भी रूस का सहयोग अत्यन्त अभिनन्दनीय है। हजारों भारतीय आज रूस के औद्योगिक तथा प्रशिल्पिक ज्ञान का लाभ उठाने लगे हैं।

भिलाई के कारखाने में एक स्तम्भ पर रूस के प्रधानमंत्री के ये सच्चे शब्द अंकित हैं कि हमारी मित्रता इस कारखाने में ढलने वाले स्पात की तरह मजबूत हो। ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूंजीगत व्यय बनाम आर्थिक उन्नति

## योजना के मूल में ही एक भ्रांत धारणा का सुन्दर विवेचन

श्री परसराम मनवानी

यदि हम अपने देश की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था पर ध्यान से विचार करें तो हम देखेंगे कि सरकार की नीतियों का आधार, यह मान्यता है कि आय की वृद्धि पूंजीगत व्यय पर ही आधारित है। यदि हम अब तक के छपे पंच-वर्षीय योजनाओं सम्बन्धी साहित्य को देखें तो यह बात बिल्कुल ही साफ हो जावेगी।

इस गलत धारणा के कारण सरकार की नीतियां पूरी तौर से सफल नहीं हो पातीं, क्योंकि यह तो साधारण सी बात है कि यदि नीतियों का मूल आधार ही ठीक नहीं होगा तो उन नीतियों का वांछित प्रभाव नहीं होगा। इस धारणा को सामने रखकर जो निर्णय किये जाते हैं, वे भी अधिकतर गलत ही हो जाते हैं।

दर-असल पूंजीगत व्यय और आय-वृद्धि का आपसी सम्बन्ध, जितना माना जाता है, उससे कहीं अधिक जटिल है। हां, देश की आर्थिक उन्नति में पूंजी के एकत्रीकरण से बड़ी सहायता मिल सकती है और ऐसा होना अत्यन्त ही आवश्यक है। परन्तु राष्ट्रीय आय की वृद्धि का केवल यही एक कारण नहीं है। यदि हम यह सोचें कि पूंजीगत विनियोग में वृद्धि हो जाने मात्र से राष्ट्रीय आय में अवश्य वृद्धि होगी, तो यह एक भूल है।

केवल भारत में ही इस प्रकार की धारणा हो, ऐसी बात नहीं। विश्व के अन्य कम-उन्नत देशों में भी ऐसी विचारधारा पाई जाती है कि उन्नति के लिए अधिकाधिक पूंजीगत विनियोग ही एक मात्र साधन है। ऐसी धारणा के कारण काफी साधन निरर्थक जाते हैं। निरर्थक होने से मेरा तात्पर्य यह है कि जो साधन विकास के अन्य कार्यों पर लगाने से अधिक उन्नति हो सकती है, यदि उन्हीं साधनों को उपर्युक्त गलत धारणा के प्रभाव में आकर पूंजीगत विनियोग पर लगा दिया जाय और देश को अन्यथा हो सकने वाले लाभों से वंचित रखा जाय तो इसे साधनों का निरर्थक जाना ही कहेंगे।

साधनों का पूंजीगत विनियोग पर जितना भी उपयोग किया जावेगा, उससे कुछ न कुछ लाभ तो अवश्य ही होगा, इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। परन्तु देखने की बात तो यह है कि जिन साधनों को पूंजीगत विनियोग पर लगाया जा रहा है उन्हें यदि अन्य योजनाओं पर लगाकर अधिक शीघ्रता से उन्नति की जा सकती है, तो ऐसा क्यों न किया जावे? यदि ऐसी उपयोगी योजनाओं को नजर अन्दाज करके देश के साधनों को पूंजीगत व्यय पर फूंक दिया जाना है तो फिर कहना होगा कि इस प्रकार से की गई आर्थिक उन्नति महंगी ही पड़ी। जब तक पूंजीगत विनियोग के कारण दूसरी उपयोगी योजनाओं की उपेक्षा नहीं की जाती, तब तक कोई बात नहीं। परन्तु हम यह देखते हैं कि पूंजीगत विनियोग की अत्यधिक चाह के कारण हमारे देश में अन्य पूरक योजनाओं की उपेक्षा की जा रही है।

हम देखते हैं कि मशीन का इतना महत्व नहीं है जितना उस मशीन के पहिये के पीछे उस मनुष्य का है जो अपनी कार्य कुशलता से उस मशीन को उपयोगी बना सकता है। इसी प्रकार भौतिक सम्पत्ति चाहे जितनी बढ़ा दी जावे, जब तक देश की जनशक्ति में निहित पूंजी को बढ़ावा देकर उसका पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जाता, तब तक हम अपने साधनों का न तो पूर्ण उपयोग ही कर सकते हैं और न ही वांछनीय उन्नति कर सकते हैं। क्या ही अच्छा हो यदि हम सुचारू ढंग की शिक्षा देकर और लोगों के रूढ़िगत और बाधक विचारों को बदलने की चेष्टा करके सारे देश की जनशक्ति को गतिमान करें।

पूंजीगत विनियोग पर अधिक साधन लगाने का दूसरा परिणाम यह होता है कि इससे प्रत्यक्ष रूप में जनता पर प्रभाव नहीं पड़ता। एक ओर अधिक कर लगाकर साधन जुटाए जावें, फिर उनके व्यय किये जाने से लाभ दिखाई न दे और राहत न मिले तो लोगों में बचत करने की न तो रुचि ही उत्पन्न होती है और न शक्ति ही रहती है। रुचि इसलिए नहीं रहती कि लाभ दिखाई नहीं देते और शक्ति इसलिए घट जाती है, क्योंकि कर अधिक अदा करने पड़ते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी सफलताएँ और असफलताएँ

प्रो० वी० के० आर० वी० राव, सदस्य योजना आयोग

योजना के पिछले १४ वर्षों में हमारा उत्पादन बढ़ा है और अनेक नई चीजें देश में बनने लगी हैं। इस समय योजना के पहले वर्ष १९५०-५१ के मुकाबले कृषि उत्पादन का सूचक अंक १५१, औद्योगिक उत्पादन का २३६ और निर्यात का १३० है। राष्ट्रीय आय में ६७ प्रतिशत और प्रति व्यक्ति आय में २७.५ प्रतिशत वृद्धि हुई है। सरकारी उद्योग-धन्धों में ५५०० करोड़ रु० और निजी उद्योगों में २३०० करोड़ रु० अधिक पूंजी लगी है।

सामाजिक और विकास सेवाओं पर सरकार के वार्षिक खर्चे में ९५५ करोड़ रु० और अन्य कार्यों पर पर ३०८ करोड़ रु० की वृद्धि हुई है। पूंजी नियोजन की की दर राष्ट्रीय आय के ५ प्रतिशत से बढ़कर १४ प्रतिशत तक और घरेलू बचत ५ प्रतिशत से बढ़कर ११.५ प्रतिशत हो गई है।

इसी प्रकार काम धंधा पाने वालों की संख्या २ करोड़ ७० लाख, स्कूल जाने वाले बच्चों की ४ करोड़ ३७ लाख, कालेज, विश्वविद्यालय, शिल्पिक और व्यावसायिक संस्थाओं में पढ़ने वालों की ७ लाख ३० हजार और कारीगरों तथा प्रशिक्षित अध्यापकों की संख्या दस गुनी से भी अधिक बढ़ी है। अस्पतालों में ३६००० चारपाइयां व ३०,५०० डाक्टर बढ़े हैं। देश के लोगों की औसत आयु जो १९५०-५१ में ३२.५ वर्ष थी, अब बढ़कर ४१.२ वर्ष हो गई है। अतः यह कोई नहीं कह सकता कि १९५१ में विकास योजनाओं को शुरू करने के बाद भारत ने आर्थिक उन्नति नहीं की है।

## भावी कठिनाइयां

पर हमें अपनी विफलताओं पर भी दृष्टि डालनी है। खाद्य की स्थिति अब भी कठिन है, और अभी न जाने कब तक हमें विदेशों से अन्न मंगाना होगा।

हमारे विदेशी ऋण में १७ करोड़ रु० की वृद्धि हुई है, जबकि हमारी स्वर्ण मुद्रा और विदेशी मुद्रा कोष घट कर ५७० करोड़ रु० मात्र रह गया है। १९६३-६४ में

> देश के निर्माण के भगीरथ प्रयत्न को पूरा करने के लिए हमें गांधी जी की अर्न्तदृष्टि, नेता सुभाष की ज्वलन्त देशभक्ति, सरदार पटेल का संकल्प और नेहरू जी के वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आदर्श निष्ठा की जरूरत है।

हमारा आयात निर्यात से २४६ करोड़ रु० अधिक हुआ। विदेशी मुद्रा की किल्लत बनी है और इस कारण कच्चा माल व कल-पुर्जों का आवश्यक मात्रा में आयात न कर पाने के कारण हम अपनी औद्योगिक क्षमता का पूरा उपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

बेरोजगारों की संख्या १ करोड़ १० लाख बढ़ी है और रोजगार दफ्तरों में २३ लाख ५० हजार अधिक लोगों के नाम दर्ज हैं। दूसरी ओर सीखे हुए कारीगरों, अध्यापकों और अन्य कर्मचारियों की भारी कमी है। दूसरे देशों के मुकबले हमारी प्रति व्यक्ति आय अब भी बहुत कम है। हमारी अधिकांश जनता घोर गरीबी में पड़ी है। जिस पर गांवों का रहन-सहन तो, सभ्य देशों में स्वीकृत न्यूनतम स्तर से भी गिरा हुआ है।

चीजों के दाम और आबादी दोनों में ३० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उद्योग-धंधों में लगाई पूंजी का भी हमें अच्छा और तत्काल लाभ नहीं मिल रहा है, काम धीमे चल रहा है और निर्धारित लक्ष्य अधूरे रहते हैं। दूसरी ओर लोगों की मांगे बढ़ रही है।

## क्या करें ?

सब मिलाकर स्थिति अच्छी नहीं है। तो फिर क्या हम हार मान लें और घबराकर योजना के लक्ष्य घटाएं और उद्योग-धंधों आदि में कम पूंजी लगाएं। परन्तु इससे तो हालत और खराब होगी और हम गरीबी के गड्ढे से नहीं निकल सकेंगे और जिस उद्देश्य के लिए हमने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## मानवीय शक्ति पर जोर

हमारे यहां जन-शक्ति की कमी नहीं है, अगर हम उसका ठीक उपयोग कर सकें । आर्थिक विकास के लिए मेहनत करने की इच्छा, पैसा बचाने की और उसे उद्योग में लगाने की इच्छा और अवसर से लाभ उठाने की इच्छा उतनी ही जरूरी है, जितनी मेहनत करने, धन बचाने और पूंजी लगाने की सामर्थ्य । आर्थिक उन्नति के लिए भौतिक साधन जितने जरूरी हैं उससे कम इच्छा शक्ति नहीं । हमने अपनी योजना में जन-शक्ति के उपयोग और जनता की इच्छा शक्ति को जगाने पर पूरा ध्यान नहीं दिया । अगर हम अब भी इस त्रुटि को दूर कर सकें तो आर्थिक विकास के रास्ते की तमाम बाधाएं दूर हो जाएंगी ।

## एक ही रास्ता

हमारी सबसे बड़ी शक्ति जनता है । जनता को जगा कर उसमें श्रम करने और पैसा बचाने की इच्छा पैदा करना है । इसके साथ ही उसे ऐसी सामाजिक और शिल्पिक सुविधाएं देना है, जो काम करने के लिए आवश्यक है । तभी जनता की इच्छा शक्ति अमल में आएगी और हम आर्थिक स्वावलम्बन और समाजवादी व्यवस्था का निर्माण कर सकेंगे। यदि हमें देश को गरीबी के गड्ढे से निकाल कर अपने पैरों पर खड़ा करने का काम पूरा करना है तो हमें अपने अन्दर गांधी जी की अंतःदृष्टि, नेताजी सुभाष की ज्वलंत देश भक्ति, सरदार पटेल का दृढ़ संकल्प और नेहरू जी की वैज्ञानिक दृष्टि और उच्च आदेश निष्ठा जगानी होगी । नये गणतंत्र के वर्ष १९६५ में हमें भगीरथ प्रयत्न करना है । हमारी लगन और मेहनत पर ही देश का भविष्य निर्भर है ।


## ऐसी सजा क्यों ?

पुराने बाटों और नापों में खरीदना व बेचना गैर-कानूनी है । यही नहीं, चीजों के दाम पुरानी इकाइयों में बताना भी जुर्म है ।

इसके अलावा, जब-जब आप सेर या मन में खरीद-फरोख्त करते हैं, तब-तब आप अनजाने में ही अपने को सजा देते हैं—यानी आप पैसे ज्यादा खर्च करते हैं और आपको चीज कम मिलती है ।

यही काफी नहीं कि व्यापारी मैट्रिक बाटों का प्रयोग करें, आपको भी चाहिए कि आप खरीदारी मैट्रिक बाटों में ही करें ।

सिर्फ

**किलो में ही खरीदिए**

डीए ६४/५१०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चौथी योजना की नवीनताएं

चौथी पंचवर्षीय योजना बनाने वालों ने सुझाव दिया है कि इन पांच वर्षों में किसानों को ३० लाख टन उर्वरक देने की व्यवस्था की जाय और ३ करोड़ ६० लाख एकड़ और जमीन में सिंचाई की योजनाएं बनाई जायं। १९७० तक १ लाख गांवों में, यानी देश के हर पांचवें गांव में बिजली पहुँचाने का लक्ष्य है। इस तरह के वैज्ञानिक तरीकों से हमारे किसान केवल मौसम के आसरे ही नहीं पड़े रहेंगे, जिसके कारण अब तक हमारी खेती का उद्धार नहीं हो पाया है।

चौथी योजना की दूसरी मुख्य बात यह है कि इसमें दो भागों में आर्थिक विकास के कार्यक्रम चलाए जाएंगे। पूर्वार्द्ध में इस प्रकार देश का आर्थिक विकास किया जाएगा, कि उसमें उत्तरार्द्ध के लिए अतिरिक्त साधन जुटाए जा सकें। आशा है, इससे यथार्थवादी लोग सन्तुष्ट होंगे जो उपलब्ध साधनों के अनुकूल ही देश का आर्थिक विकास चाहते हैं। साथ ही यह आदर्शवादियों की इच्छा के भी अनुकूल होगा जिनका यह विश्वास है कि भौतिक रूप से जो कुछ सम्भव है, वह वित्तीयरूप से भी सम्भव बनाया जाना चाहिए। अगली योजना में वे कार्यक्रम रखे जाएंगे जिनसे जनता को तुरन्त लाभ मिले।

चौथी योजना की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि आज जिस क्षेत्र में जो कार्य नहीं हो रहे हैं, उनमें वे होने लगें। उदाहरण के लिए सरकारी क्षेत्र में उपभोक्ता चीजें बनाने के कारखाने भी खोलने का प्रस्ताव है। यह नया परीक्षण है और आशा है इससे आम उपभोग की चीजें अधिक मात्रा में उपलब्ध हो सकेंगी।

इन नवीनताओं का यही उद्देश्य है कि जनता का रहन-सहन शीघ्र सुधरे, अर्थात् जनता की खाने, कपड़े, मकान, चिकित्सा और शिक्षा की मूल आवश्यताएं एक दशक में पूरी कर दी जाएं। चौथी योजना का यह लक्ष्य होगा कि आर्थिक और सामाजिक विषमताएं कम हों और अधिकांश लोगों की मूल जरूरतें पूरी हो जाएं। चौथी योजना के निर्माण में देश के ऊंची कोटि के विद्वानों का सहयोग लेने के लिए १५-२० सदस्यों की राष्ट्रीय योजना परिषद् बनाई जा रही है, जिसमें वैज्ञानिक, इंजीनियर, अर्थशास्त्री और अन्य विशेषज्ञ होंगे। यह परिषद योजनाकारों का मार्ग दर्शन करेगी।

चौथी योजना का प्रारूप अभी कई मंजिलों से गुजरेगा। १९६५ में संसद में इसकी रूपरेखा रखी जाएगी और १९६६ के आरम्भ में ही इसका अन्तिम प्रारूप तैयार होगा। किन्तु यह स्पष्ट है कि चौथी योजना २१,५०० से २२,५०० करोड़ रु० के बीच की होगी। यह खर्च पहली तीन योजनाओं के कुल खर्च के बराबर है।

## प्राथमिकताएं और लक्ष्य

यद्यपि लक्ष्यों का ब्यौरा अभी पूरा नहीं हुआ है, किन्तु कुछ मुख्य लक्ष्य निर्धारित ही समझे जाने चाहिएं। उदाहरण के लिए, चौथी योजना का यह लक्ष्य होगा कि खेती की पैदावार में प्रतिवर्ष ५ प्रतिशत की, संगठित उद्योगों में ११ प्रतिशत की, छोटे उद्योगों में ८ प्रतिशत की और वाणिज्य, परिवहन तथा अन्य सेवाओं में ६.५ प्रतिशत की वृद्धि की जाए। इससे कुल आर्थिक विकास में करीब ६.५ प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ोतरी होगी। पूंजी नियोजन की दर भी बढ़ा कर राष्ट्रीय आय की १७ प्रतिशत के बराबर की जा रही है।

**२६ जनवरी १९६५ से हिन्दी के राज भाषा होने के अवसर पर सब भारतीयों का हार्दिक अभिनन्दन।**

इस प्रकार स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर अर्थ-व्यवस्था की स्थिति तो अब दिखाई देने लगी है, किन्तु उस तक पहुंचने के लिए अगले चार-पांच वर्षों में हमें बड़ा कंटकाकीर्ण मार्ग तय करना होगा।

■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# निश्चित प्रगति के पथ पर भारत

पिछले १५ वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था की यह विशेषता रही है कि वह धक्के पर धक्का खा कर भी सदा सम्भल कर खड़ी हो गई है। कई बार खाद्य की कठिनाई, विदेशी मुद्रा की कमी, निर्यात में शिथिलता और मूल उद्योगों के लिए कल पुर्जा आदि के आयात में विलम्ब हुए, किन्तु हर बार ये मुसीबतें सफलतापूर्वक पार की गयीं और देश की प्रगति रुकने न पायी। आजकल भी दिक्कतें आ रही हैं. उन का उपाय किया जा रहा है और पैदावार बढ़ाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं, जिसका फल अगले कुछ महीनों में ही और आगे वर्षों में देखने को मिलेगा।

अनुमान है कि १९६४-६५ की पैदावार ८ करोड़ ५० लाख टन से भी अधिक होगी। चावल की पैदावार ३ करोड़ ८० लाख से ४ करोड़ मी० टन होने का अनुमान है, जितनी कभी नहीं हुई। चाय, कपास, रबड़, कहवा आदि की उपज के भी नए रिकार्ड कायम हुए हैं और अगली फसल और भी अच्छी होने की आशा है। आशा है कि खेती की पैदावार बढ़ने से देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा और दाम स्थिर होंगे।

## औद्योगिक उत्पादन

चालू वर्ष में औद्योगिक उत्पादन में लगभग ७ प्रतिशत की बढ़ती का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की वृद्धि से कम है। दूसरी तरफ कुछ महत्त्वपूर्ण उद्योगों में पहले से अधिक उत्पादन हुआ है। इस्पात, परिवहन का सामान, धातु और इस्पात का सामान, मशीनें, बिजली की मोटरें और ट्रांसफार्मर आदि के अधिकांश कारखानों में जो मूल उद्योग कहलाते हैं, संतोषजनक प्रगति हो रही है। कपड़ा, पाट का माल, शक्कर और खाद्य पदार्थ आदि व्यवहार की वस्तुओं का भी उत्पादन भी बढ़ा है। मशीनी औजार, बाल बीयरिंग, पैट्रोल आदि के कारखानों की क्षमता काफी बढ़ी है। इस्पात, भारी बिजली यंत्र और मशीनों आदि के कारखानों के विस्तार में भी काफी काम हुआ है। इनमें से अधिकांश कारखानों में एक-आध साल में उत्पादन शुरू हो जायगा। विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन करते समय साधारण खामियों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि उनकी कुल प्रगति और भविष्य की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। पिछले १५ वर्षों में भारत का जितना विकास हुआ है, उतना किसी देश के इतिहास में नहीं हुआ। अनुमान है कि इस समय सरकारी और निजी कारखानों में प्रतिवर्ष १००० करोड़ रु० की पूंजी लगती है। इतनी पूंजी योजनाओं से पहले के ५० वर्षों को मिलाकर भी नहीं लगी थी।

इस समय देश के सब प्रकार के उद्योग धन्धों में प्रतिवर्ष लगभग २,८०० करोड़ रु० लग रहे हैं जो १५ वर्ष पहले के नियोजन से पांचगुना और चार साल पहले से ७५ प्रतिशत अधिक है। आशा है कि अगले ५ वर्षों में विकास की गति दुगुनी हो जाएगी। पहली तीन योजनाओं में २२ हजार करोड़ रुपयों से भी ज्यादा धन लगा, इसके मुकाबले चौथी योजना में अकेले २६,५०० करोड़ रु० के बीच लगाने का विचार है। इस भारी पूंजी नियोजन से शीघ्र देश की स्थिति चतुर्दिक् मजबूत होगी।

## निर्यात

१९५०-६१ के दशक में भारत का वार्षिक निर्यात करीब ६१० करोड़ रु० पर स्थिर रहा। किन्तु पिछले ३ वर्षों से यह लगातार बढ़ रहा है। १९६२-६४ में १९४ करोड़ रुपये का रिकार्ड निर्यात हुआ, इससे पिछले साल ७१० करोड़ रु० के निर्यात का अनुमान है। इस प्रकार तीसरी योजना में १९६५-६६ में ८४० करोड़ रु० के निर्यात का जो लक्ष्य रखा गया, उसे हम एक साल पहले ही पूरा कर लेंगे। निर्यात में यह वृद्धि नये और अधिक माल के निर्यात से हुई। नये कारखाने खुलने से इन्जीनियरी यंत्र और बिजली के नए-नए सामान का निर्यात होने लगा है। पाट का माल, चाय, कहवा, काजू, खली, तम्बाकू, सूती कपड़ा, हथकरघा और रेशमी कपड़े, दस्तकारी, गलीचे, खनिज पदार्थ, इन्जीनियरी के सामान और रसायन आदि बहुत सी पुरानी चीजों का निर्यात भी काफी बढ़ा है। मछली, शक्कर, तैयार खाद्य, प्लास्टिक और अन्य बहुत सी चीजों का निर्यात भी इधर बढ़ा है।

विदेशी सहयोग के फलस्वरूप भारत में मशीनों आदि का निर्माण, आजकल के ४०० करोड़ रु० वार्षिक से बढ़कर १९७० तक १४०० करोड़ रु० वार्षिक हो जाएगा। इससे भारत के निर्यात व्यापार का ढांचा ही

(शेष पृष्ठ ९८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योगों की प्रबन्धव्यवस्था में क्रान्ति

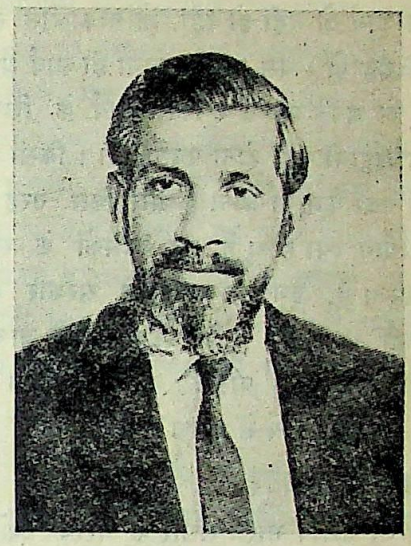

आज उद्योगों के संचालन में और प्रबन्ध में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे हैं। अब उद्योग का स्वामित्व ही प्रबन्धकर्ता की कसौटी नहीं रही। प्रबन्धकर्ताओं की एक अत्यन्त विशिष्ट श्रेणी अधिकाधिक महत्त्व प्राप्त करती जा रही है ये परिवर्तन क्या हैं, क्यों आये और अब क्या करना चाहिए आदि का विवेचन भारत के प्रमुख उद्योगपति लाला भरतराम के इस लेख में देखिये—

व्यापार और उद्योग का एक बहुत महत्त्वपूर्ण अंग उसकी व्यवस्था और प्रबन्ध का संचालन है। आज यह अंग बहुत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन काल से गुजर रहा है। आज से ४०-५० वर्ष पूर्व स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। व्यापारी और उद्योगपति जिस अभिप्राय से इस क्षेत्र में प्रवेश करते थे, संगठन और नियंत्रण के जो तरीके अपनाये जाते थे, उद्योग के स्वामी और मैनेजर के एक ओर जो परस्पर सम्बन्ध होते थे और दूसरी ओर मैनेजर के श्रमिकों और कर्मचारियों से जो सम्बन्ध होते थे, आज उन सब में परिवर्तन आ गया है।

पहले एक व्यक्ति व्यापार और उद्योग में इसलिए प्रवेश करता था, क्योंकि वह उसके पिता का परम्परागत कार्य होता था। चलते हुए कारोबार को आगे ले चलना बहुत सुविधाजनक होता था। अपने स्वतंत्र चुनाव और नयी कार्य पद्धति के निश्चय का काम उसे नहीं करना पड़ता था। अपने पैत्रिक कार्य को छोड़ना न केवल असुविधाजनक था, परन्तु समाज में कुछ अप्रतिष्ठा और परेशानी का भी कारण माना जाता था। इसलिए प्रायः व्यवसायी अपने परम्परागत और पैत्रिक कार्य को ही जारी रखते थे। इस स्थिति में प्रायः स्वामित्व और प्रबन्ध अभिन्न से रहते थे। व्यक्ति अपना व्यवसाय भी करते थे और उसका प्रबन्ध भी स्वयं करते थे। पब्लिक लिमिटिड कम्पनियों में भी स्वामित्व और प्रबन्ध में कोई विशेष अन्तर नहीं होता था, क्योंकि अधिकांश शेयर मैनेजिंग एजेन्टों या मैनेजरों के ही अपने होते थे। इसलिए यह स्वाभाविक था कि व्यवसायों का प्रबन्ध कुछ निरंकुशता और कुछ केवल स्वर्थ साधना से प्रेरित था। मैनेजरों की पृथक श्रेणी का विकास तो पिछले कुछ दशकों में ही हुआ है, न केवल भारत में अपितु संसार के सब देशों में।

## मुख्य उद्देश्य : लाभार्जन

किसी व्यवसाय में प्रवेश करने का मुख्य उद्देश्य एक ही होता था कि यथासम्भव अधिक से अधिक लाभ अर्जित किया जाय—उसी व्यवसाय में लगे हुए अन्य व्यक्तियों से भी अधिक लाभ का अर्जन किया जाय। लाभ अर्जन की प्रवृत्ति और इच्छा स्वाभाविक है और किसी तरह हीन नहीं है। लाभ अर्जन न अनैतिक है और न असामाजिक। यह किसी व्यापार की मुल प्रेरणा है। सफल व्यापारी की न केवल अपने धन के कारण प्रतिष्ठा होती है, किन्तु उसकी योग्यता और सफल व्यक्तित्व के कारण भी। अनैतिक कार्यों से लाभार्जन की निन्दा न केवल सरकार करती है, समाज में भी ऐसे बेईमान व्यापारियों की निन्दा होती है। सफल व्यापार समाज में प्रतिष्ठा का एक साधन माना जाता था।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन दिनों में सरकार प्रबन्ध सम्बन्धी कार्यों से उदासीन रहती थी। वह केवल यह देखती थी कि उद्योग में कोई ऐसा कार्य तो नहीं हो रहा, जो तत्कालीन सरकार के हितों के विरुद्ध हो। बस उसका इतना ही कार्य था। किसी व्यवसाय को अपने प्रबन्ध के किसी कार्य के लिए सरकार के प्रति उत्तरदायी नहीं होना पड़ता था। किसी व्यवसाय में कितना नफा कमाया जाता है और किस तरह से, और उसका उपयोग क्या होता है, वह श्रमिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है, इन सब बातों से सरकार को कोई सरोकार नहीं था। बस उसके टैक्स दिये जाओ और सामान्य नियमों का पालन करते जाओ। सरकार व्यवसायों के किसी कार्य में दखल नहीं देती थी।

## उस समय के मजदूर

आज भी यद्यपि भारत संसार के गरीब देशों में है, किन्तु उन दिनों आज से भी ज्यादा गरीब था। अधिकांश जनता भूखी या अधभूखी रहती थी। इसलिए बहुत थोड़ा निर्वाह लेकर ही लोग काम करने को तैयार होते थे। मजदूरों की न केवल संख्या अधिक थी, बल्कि वह असंगठित और अशिक्षित भी थे। इसलिए मजदूरों से सुलझना बहुत कठिन नहीं था। मेरा यह आशय नहीं है कि यह स्थिति किसी तरह अच्छी थी। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है कि शिक्षित, संगठित और दूरदर्शी श्रम किसी व्यवसाय के लिए स्वागत-योग्य होता है। किन्तु उन दिनों स्थिति भिन्न थी। मजदूर किसी समय भी नौकरी से निकाल दिये जाते थे और यह भय उन्हें आज्ञाकारी बनाये रखता था। इसलिए किसी मैनेजर के लिए मजदूर कभी विकट समस्या नहीं बनते थे और यही कारण है कि मैनेजर का काम बहुत आसान होता था। लाभ कमाने की प्रेरणा, समाज में प्रतिष्ठा और सरकार की उदासीनता आदि के कारण प्रबन्ध के सामने कोई विशेष कठिन समस्या उपस्थित नहीं होती थी। उसे केवल दफ्तरी कार्यवाही ठीक रखनी पड़ती थी और कारखाने के कानूनों का कागजी खाता पूरा करना पड़ता था।

किन्तु यह सब कहने का मेरा प्रयोजन यह नहीं है कि उस समय में कल्पनाशील प्रतिभा और रचनात्मक साहस की सर्वथा कमी थी। ऐसे भी अध्यवसायी विद्यमान थे, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता और व्यवहार कुशलता के द्वारा उद्योग और व्यवसाय को बहुत आगे बढ़ाया। किन्तु अधिकांश व्यवसायी पहली श्रेणी में ही आते थे, जो अपनी प्रगति के लिए नई प्रेरणा प्राप्त नहीं कर सके और न उन्होंने किसी नये मार्ग को ग्रहण किया। वे परम्परागत मार्ग पर ही चलते रहे।

## तीन नयी शक्तियां

बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में तीन नई शक्तियों ने आकर भारत के व्यवसाय को नई दिशा में मोड़ने का प्रयत्न किया। पश्चिम से आने वाली नई विचारधारा ने परम्पराओं और रुढ़ियों को तोड़कर स्वतंत्र चिन्तन की भावना भारत में पैदा की। दो महायुद्धों के बाद भारत का अन्य अनेक देशों से सम्पर्क बहुत बढ़ गया। प्रतिवर्ष अधिक से अधिक संख्या में व्यवसायी विदेश जाने लगे और उन्होंने पश्चिम के प्रगतिशील अध्यवसायों का निरीक्षण किया और यह देखा कि वहां की वैज्ञानिक और सुसंगठित प्रबन्ध व्यवस्था से अध्यवसाय कितनी उन्नति कर रहे हैं। वह लोग जब भारत लौटे, तो उनमें एक नया उत्साह था और अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने की अदम्य इच्छा। उनके दृष्टिकोण और उनकी जानकारी में परिवर्तन हो गया था और उन्होंने यहां आकर अपने व्यवसायों के प्रबन्ध में अनेक साहसपूर्ण परिवर्तन किए।

दूसरी महत्त्वपूर्ण शक्ति जो भारतीय व्यवसाय में नया युग लाने में सहायक कारण बनी, वह थी भारत में स्वाधीनता प्राप्ति का आंदोलन। अभी तक हम यह अनुभव नहीं कर पाये हैं कि स्वाधीनता आंदोलन ने भारतीय व्यवसाय को किस तरह बढ़ने और अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। भारत के स्वदेशी आंदोलन ने जहां जनता में कुछ मंहगी और कुछ हीन स्वदेशी वस्तु भी लेने की इच्छा व तत्परता जागृत की, वहां व्यवसायियों को भी देश की नई इच्छाओं को पूर्ण करने की प्रेरणा दी और देश में नये नये व्यवसाय खुलने लगे, जो स्वावलम्बी आर्थिक प्रगति की भावना को एक अंश तक पूर्ण करते रहे।

भारतीय उद्योग ने स्वाधीनता आंदोलन के साथ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने को एकाकार करते हुए जहां गांधी जी को अपने आंदोलन में बहुत सहायता दी, वहां ब्रिटेन की आर्थिक पराधीनता से भी मुक्त होने के लिए विशेष प्रयत्न किया। इस तरह भारतीय व्यवसायों का प्रबन्ध राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के विकास में एक बहुत बड़ी शक्ति के रूप में प्रकट हुआ।

## स्वाधीनता के बाद

स्वाधीनता के बाद तो देश में अपूर्व उत्साह का संचार हो गया और औद्योगिक विकास के लिए कल्पनातीत अवसर सामने आ गये। एक के बाद एक पंचवर्षीय योजनाओं ने आकर विनियोजन, साहस और प्रबन्ध कुशलता के लिए बीसियों द्वार खोल दिये। उज्ज्वल आर्थिक विकास की सम्भावनाओं ने देश की सभी श्रेणियों में नई आशाओं का संचार कर दिया। अब इन आशाओं को पूर्ण करने का अवसर भारतीय व्यवसाय को मिला है। इसलिए उसे देश की नई परिस्थितियों को समझना है और राष्ट्रीय दृष्टि से व्यवसाय की आवश्यकताओं पर विचार करना है, ताकि नवीन भारतीय समाज की आकांक्षाओं को सन्तुष्ट किया जा सके। अब उसे केवल व्यक्तिगत हित की दृष्टि से नहीं, समस्त देश के हित की दृष्टि से अपने कार्यक्रम निर्धारित करने हैं।

## प्रशिल्पिक विज्ञान तथा सरकारी उद्योग

इन्हीं दिनों में दो नये महत्वपूर्ण तत्त्व हमारे सामने आए हैं। एक तो प्रशिल्पिक विज्ञान ने बहुत उन्नति की है, जिससे उद्योगों की उत्पादन विधि बहुत ही वैज्ञानिक व द्रुतकर हो गई है। दूसरा परिवर्तन आया है, एक बड़ी संख्या में भारी साधनों के साथ सार्वजनिक उद्योगों के प्रवेश के रूप में। इन कारणों से उद्योगों के प्रबन्ध में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। अब मैनेजर और श्रमिकों में नये सम्बन्ध स्थापित हो रहे हैं। अब प्रबन्ध को केवल श्रमिकों और स्वामियों के बीच की कड़ी के रूप में काम नहीं करना है, किन्तु श्रमिकों, मशीनरी और आवश्यक सामग्री आदि सबमें एक समान व्यवस्था और समन्वय भी कायम करना है। अब उच्च प्रबन्धकर्त्ताओं को नई समस्याओं और परिस्थितियों का सामना करना है, जो पहले से बिल्कुल भिन्न हैं।

प्रबन्ध के कार्य में यह परिवर्तन समस्त दृष्टिकोण को ही बदल देता है। आज यही काफी नहीं है कि प्रबन्ध कर्त्ता ठीक काम कर रहे हैं। आज तो यह विश्वास के साथ कहने की योग्यता आनी चाहिए कि हमारे व्यवसाय का स्वरूप, प्रबन्ध की कुशलता, अपने कारोबार से अतिरिक्त प्राप्त साधनों को प्रयुक्त करने की क्षमता, अपनी श्रम नीति और आर्थिक नीति—सबका ठीक दूरदर्शिता से परिपालन हो रहा है। इन सबके द्वारा ही हम समाज की उठती हुई उमंगों को सन्तुष्ट कर सकते हैं। अब प्रबन्ध कर्ता को केवल ग्राहकों और रुपया लगाने वालों से ही व्यवहार नहीं करना है, बल्कि अपने श्रमिकों, अपनी सरकार और अपने समाज की इच्छाएं भी पूर्ण करनी हैं।

## परिवार का स्थान

उद्योग और व्यवसाय में पहले परिवार का बहुत महत्त्व था। अब हमें इसकी उपेक्षा करनी होगी। अब पारिवारिक सम्बन्धों को व्यवसाय के ऊपर महत्व नहीं देना होगा। परिवार के सदस्यों को भी अब अपनी योग्यता और व्यवसाय सम्बन्धी कुशलता को बढ़ाना जरूरी है। उन्हें परिवार से बाहर के व्यक्तियों के साथ अपनी योग्यता में मुकाबला करना होगा। केवल परिवार की सदस्यता ऊंचा उठने की कसौटी नहीं होगी। उन्हें वही प्रशिक्षण और वही अवसर मिलेंगे, जो परिवार से बाहर के लोगों को मिलते हैं। तब संचालक परिवार के सदस्य और दूसरे प्रबन्धकर्ता एक स्तर पर परस्पर व्यवहार करेंगे और वह एक दूसरे को समझने की चेष्टा करेंगे।

मेरी ऐसी धारणा है कि आगामी दशक में पेशेवर आजीविकार्थ प्रबन्ध कर्त्ताओं की एक नई सबल श्रेणी महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने वाली है, जो अपने ज्ञान, कार्य कुशलता और अनुभव के कारण व्यवसाय में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी। ऐसी श्रेणी का उद्योगों के स्वामित्व के साथ कोई सम्बन्ध आवश्यक नहीं होगा। उन्हें प्रबन्ध शिक्षण के केन्द्रों में बाकायदा व्यवसाय की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक जानकारी प्राप्त करनी होगी। ऐसे प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जायेगी। प्रबन्ध का विज्ञान निरन्तर प्रगति कर रहा है और नई

(शेष पृष्ठ १०३ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ला० लाजपतराय की आर्थिक दृष्टि

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की जन्म शताब्दी का वर्ष मनाया जा रहा है। लालाजी का देश के राजनीतिक स्वाधीनता आन्दोलन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। वे उस समय सार्वजनिक क्षेत्र में आये, जबकि देश के राजनीतिक नेताओं में आर्थिक समस्याओं पर बहुत अध्ययनपूर्ण सामग्री देने की परम्परा विद्यमान थी। श्री दादाभाई नोरोजी, श्री रमेशचन्द्रदत्त और श्री गोपाल कृष्ण गोखले आदि आर्थिक समस्याओं पर बहुत प्रामाणिक रूप से विचार करते थे। वस्तुतः उस समय की आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। अंग्रेज सरकार होम चार्जिज के नाम से देश का निरन्तर शोषण कर रही थी।

लाला लाजपतराय भी उस श्रेणी के विचारकों में से थे, किन्तु उनमें तथा अन्य तत्कालीन नेताओं में एक अन्तर रहा है। अधिकांश नेता विचार अध्ययन के क्षेत्र में जब आगे बढ़ रहे थे, तब लाला लाजपतराय रचनात्मक क्षेत्र में भी आगे बढ़ना चाहते थे। स्वदेशी आन्दोलन, हाथ करघा उद्योग, तथा विदेशी बहिष्कार आन्दोलन में ही लालाजी अग्रणी नहीं रहे, उन्होंने पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना में प्रमुख भाग लेकर देश के आर्थिक विकास को सुदृढ़ भूमि पर स्थापित करने का प्रयत्न किया। १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन में जब उन्होंने सैकड़ों शिक्षित युवकों को रोजगार से वंचित होते देखा, तब उन्होंने लक्ष्मी इन्श्योरैन्स कम्पनी की स्थापना में प्रमुख भाग लिया। इसके कारण सैकड़ों राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं को काम करने का एक अलग शानदार क्षेत्र मिला। पंजाब में सूती मिलों तथा प्रैस खुलवाने में उन्होंने उत्साह से योग दिया।

लालाजी समय के प्रवाह को जानते थे। पूंजीवाद, जो साम्राज्यवाद की उपज था, उनकी दृष्टि में बहुत खटकता था। वे जन सामान्य का शोषण सहन नहीं कर सकते थे। इसीलिए वे देश के मजदूर आन्दोलन में भी रुचि लेते थे। उन दिनों ट्रेड यूनियन कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी संस्था थी जो देश के मजदूर आन्दोलन का नेतृत्व करती थी। लालाजी उस संस्था के भी एक वर्ष अध्यक्ष रहे थे। देश के जन सामान्य को सुखी और समृद्ध बनाना उनका एकमात्र उद्देश्य था। अछूत उद्धार में उनकी विशेष

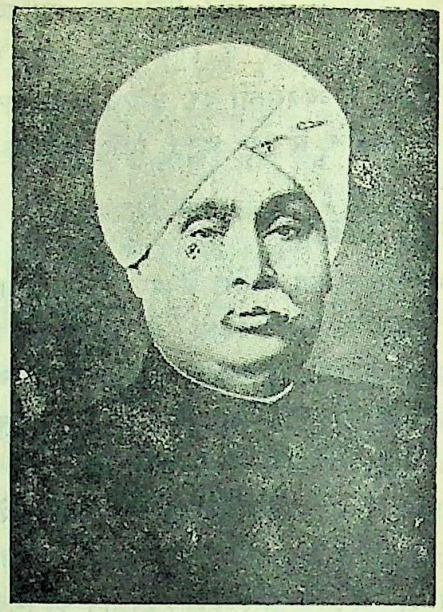

पंजाब केसरी ला० लाजपतराय

रुचि रही। वे किसी व्यक्ति को दलित और शोषित नहीं रहने देना चाहते थे। राजनैतिक चेतना के साथ आर्थिक चेतना के महत्त्व को वे समझते थे। उन्होंने रूसी क्रांति का महत्व भलीभांति समझा था और १९१९ में ही उन्होंने "दी पोलीटिकल फ्यूचर आफ इन्डिया" में लिखा था कि रूस की क्रांति से जनता में एक नई भावना जगी है और नई शक्ति उदय हुई है, जो जोर पकड़ेगी और विश्व के भविष्य को काफी प्रभावित करेगी। वर्तमान व्यवस्था में समूल परिवर्तन करना होगा और रूसी साम्यवाद का मुकाबला तभी किया जा सकता है जबकि विश्व की शोषित जनता को मुक्त किया जाय, वरना दुनिया के पराधीन और शोषित देशों में साम्यवाद आकर फैलेगा। सन्तुष्ट और स्वतन्त्र भारत ही साम्यवाद का उत्तर है। अन्यथा विदेशी शासन में पिसने वाली जनता साम्यवाद का स्वागत करेगी।

आज देश लालाजी का शताब्दी वर्ष मना रहा है। देश स्वतन्त्र हो गया है परन्तु सन्तुष्ट नहीं हुआ। ज्यों-ज्यों देश आर्थिक विकास की योजनाओं को आगे बढ़ा रहा है त्यों-त्यों नई-नई आर्थिक समस्याएं आकर जनता को क्षुब्ध और परेशान कर रही हैं। इन समस्याओं के निवारण से ही जनता सन्तुष्ट हो सकती है। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आजादी को आर्थिक आधार प्रदान करने में

# सहकारिता का योगदान

## राजस्थान के जन जीवन में सहकारिता का व्यापक प्रचार

राज्य की २१३७६ सहकारी समितियों के सदस्य सहकारिता के आधार पर अपना कारोबार चला रहे हैं।

राज्य के ७२ प्रतिशत ग्राम व ३० प्रतिशत ग्रामीण परिवार सहकारिता के दायरे में आ चुके हैं।

५४४ उपभोक्ता भंडारों के ६१०५१ सदस्य अपनी दैनिक जीवन की शुद्ध व अच्छी वस्तुएँ वाजिब मूल्यों पर प्राप्त कर रहे हैं।

आप भी इस लाभ के भागीदार बनिये।

सहकारी समितियों की हिस्सा पूँजी ८२०.२६ लाख रुपये

सहकारी समितियों की कार्यशील पूँजी ८४५२.७६ लाख

## सहकारिता को अपनाकर शोषण का अंत कीजिए

राजस्थान सरकार द्वारा प्रचारित


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# बिजली पर ही औद्योगिक विकास निर्भर

डा० कानुरु लक्ष्मण राव, विद्युत् मंत्री, भारत सरकार

भारत की चौमुखी प्रगति में बिजली का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। तीसरी योजना में पहले से दुगुनी और चौथी में उसकी भी दुगुनी बिजली बनाने की क्षमता हो जाएगी। फिर भी देश के औद्योगिक विकास के लिए यह काफी नहीं है, जैसा कि प्रस्तुत लेख से पता चलेगा

आधुनिक युग में किसी भी देश को समृद्ध बनाने में बिजली शक्ति का बहुत हाथ होता है। बिजली से देश की आर्थिक प्रगति आंकी जा सकती है। भारत जैसे विकासमान देश में बिजली से ही औद्योगिक क्रांति होगी। अतः हमें बिजली को बहुत ऊंची प्राथमिकता देनी होगी।

१९४८ से १९६२ तक की अवधि में भारत में बिजली का जो उत्पादन और उसकी उत्पादन क्षमता हुई है, वह विश्व के विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। किसी देश की समृद्धि की कसौटी, वहां बिजली की प्रति व्यक्ति खपत है। भारत में १९६२ में बिजली की प्रति व्यक्ति खपत ४४ किलोवाट घंटे थी, जबकि रूस में १,४६०, इंगलैंड में २,५८३ और अमरीका में ४,६४० किलोवाट घन्टे थी।

रूस और जापान में बिजली का उपयोग बढ़ने से ही असाधारण आर्थिक प्रगति हुई, जबकि पहले वे पिछड़े हुए देश थे। रूस की अर्थ व्यवस्था में बिजली को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। लेनिन की पहली योजना और बाद की पंचवर्षीय योजनाओं में बिजली को प्रत्येक विकास कार्यक्रम का आधार माना गया। परिणाम यह हुआ कि १९२५ में बिजली उत्पादन में रूस का जहां ११वां स्थान था, वहां १९६५ में उसका दूसरा स्थान हो गया। इसी कारण १९१३-५६ की अवधि में रूस का औद्योगिक उत्पादन ३० गुना हो गया।

## भारत में बिजली

भारत में कारखानों का उत्पादन और बिजली की शक्ति, साथ-साथ बढ़ी है। देश की कुल बिजली की तीन चौथाई शक्ति उद्योगों में खपती है। इसीलिए बिजली बनाने के नये और सस्ते साधनों की लगातार खोज हो रही है। स्वतन्त्रता के बाद भारत में बहुत तेजी से बिजली उत्पादन बढ़ा। पंचवर्षीय योजनाओं में नये-नये उद्योग खुल रहे हैं और वर्तमान कारखानों का विस्तार हो रहा है। अतः बिजली की मांग इस तेजी से बढ़ रही है कि जितनी भी बिजली बनती है, कम पड़ जाती है। यह हमारे लिए जरूरी हो गया है कि हम सभी सम्भव साधनों से ज्यादा बिजली बनावें। हमें बहुत आगे की जरूरतों को ध्यान में रख कर कम से कम खर्च में ज्यादा से ज्यादा बिजली बनाने की योजनाएं चलानी होंगी और बड़ी योजनाओं की अभी से तैयारी करनी होगी।

## पानी, कोयला और परमाणु

बिजली बनाने के दो मुख्य साधन हैं पानी और और कोयला। भारत में दोनों की ही कोई कमी नहीं है। अनुमान है कि भारत में २४० योजनाओं द्वारा २१६ अरब किलोवाट घंटा पन-बिजली बनाई जा सकती है, आजकल केवल १२ अरब किलोवाट घंटा पन-बिजली बन रही है। अनुमान है कि देश में १३० अरब टन कोयले का भंडार है, इस समय खपत ६॥ करोड़ टन वार्षिक है, पर हमारी विशाल जन संख्या और विकसित देशों की प्रति व्यक्ति खपत को देखते हुए, यह भंडार बहुत अधिक समय तक नहीं चल सकता। इसके अलावा पानी और कोयला देश में सब जगह सुलभ भी नहीं हैं।

यही कारण है कि हम अपने यूरेनियम और थोरियम के भडारों का उचित उपयोग करना चाहते हैं। अर्थात् अणुशक्ति से बिजली बनाने की योजनाएं बना रहे हैं। भारत में यूरेनियम का भंडार तो सीमित है, किन्तु थोरियम की बहुतायत है।

## विकास की शुरुआत

भारत म बिजली का विकास १९०२ में शुरू हुआ। इस साल मैसूर राज्य में कावेरी नदी पर शिवसमुद्रम्



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन-बिजली योजना का जन्म हुआ। आरम्भ में इसकी उत्पादन क्षमता ५ हजार किलोवाट थी, जो १९२० में बढ़कर १ लाख ३० हजार और १९४० में १२ लाख किलोवाट हो गयी।

दूसरे विश्व युद्ध में और उसके बाद यंत्रों व उपकरणों की कमी के कारण १९४१ से लेकर दस वर्ष तक भारत में बिजली-विकास का कार्यक्रम बन्द रहा।

पहली पंचवर्षीय योजना में बिजली की उत्पादन क्षमता २३ लाख किलोवाट से बढ़कर ३४ लाख किलोवाट हुई थी। दूसरी योजना के अंत में ५६ लाख किलोवाट की क्षमता। दूसरी योजना में यह क्षमता ३५ लाख किलोवाट बढ़ाने का लक्ष्य था, जो यंत्र व मशीनें आयात करने के लिए विदेशी मुद्रा की कमी के कारण पूरा न किया जा सका।

तीसरी योजना में लगभग ७० लाख किलोवाट बिजली बनाने की क्षमता करने का विचार था। किन्तु रुपये की कमी, खासकर विदेशी मुद्रा की कमी के कारण इसे पूरा नहीं किया जा सका। अब अनुमान है कि इस योजना के अंत में देश में १ करोड़ १७ लाख किलोवाट की ही क्षमता हो पाएगी। अर्थात् चालू योजना में ६१ लाख किलोवाट की क्षमता और हो जाएगी और इस प्रकार ५ वर्षों में यह क्षमता दुगुनी से भी ज्यादा हो जाएगा।

## भविष्य में विकास

चौथी योजना में क्षमता को फिर दुगुना करके २ करोड़ २० लाख से २ करोड़ ४० लाख किलोवाट तक करने का विचार है। इसी प्रकार पांचवीं और छठी योजनाओं में भी हमें दुगुना करना होगा। यह देश के आर्थिक विकास की गति कायम रखने के लिए बहुत जरूरी है।

इस्पात का उत्पादन बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि देश में बहुत अधिक मात्रा में सस्ती बिजली बने। भविष्य में हम इस्पात कारखानों का लगातार विस्तार करेंगे और नए कारखाने खोलेंगे। अतः अगली योजनाओं में लोहा और इस्पात उद्योग में बिजली की मांग काफी बढ़ती जाएगी।

विश्व के अन्य विकसित देशों में पूरी तरह बिजली से चलने वाले रसायन, पेट्रोल आदि के अनेक आधुनिक कारखाने खड़े किए जा रहे हैं। हमें भी यही करना होगा। भारत में भी उर्वरक कारखाने, ऐसे स्थानों पर खड़े किये जा रहे हैं, जहां बिजली बनती है, जैसे नांगल, ट्राम्बे आदि। खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रसायन खाद की मांग बढ़ेगी ही, जिसे पूरा करने के लिए बिजली का उत्पादन भी बढ़ाना होगा। अलमुनियम के कारखानों को भी अधिक वोल्टेज की बिजली की जरूरत पड़ती है और इसीलिए अलमुनियम के कारखाने, हीराकुड, रेंड, कोयली आदि पन-बिजली योजनाओं के आस-पास खोले जा रहे हैं। अर्थात् जितनी बिजली हम बना रहे हैं, उसका काफी हिस्सा इन दो चीजों के ही कारखानों को चला पाएगा।

## गांवों में बिजली

हम गांवों में बिजली लगाने का भी कार्यक्रम बना रहे हैं। गांवों में बिजली से खेती की पैदावार बढ़ाने और छोटे धंधे खोलने में बड़ी मदद मिलेगी और इससे गांवों का आर्थिक व सामाजिक ढांचा भी बिल्कुल बदल जाएगा।

देश में ५॥ लाख गांव हैं, जिनमें से केवल ४५ हजार में यानी ८ प्रतिशत में तीसरी योजना के अंत तक बिजली हो जाएगी। गांवों में तेजी से बिजली के विस्तार में कई अड़चने हैं। वहां बिजली का उपयोग कम होता है और थोड़ी सी बिजली के लिए पूरी लाइनें डालनी पड़ती है, जिस पर काफी धन खर्च होता है। वैसे, गांवों में बिजली सस्ती करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

चौथी योजना में गांवों में बिजली लगाने का कार्यक्रम तेज किया जाएगा। हमारा लक्ष्य है कि १९६९ तक कम से कम एक लाख गावों में और चौथी योजना के अंत तक प्रत्येक राज्य के हर ५ में से एक गाव में बिजली लग जाए। अक्टूबर १९६९ में महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी के अवसर पर देश के १ लाख गांवों में बिजली होना उपयुक्त ही है, क्योंकि गांधी जी ने गांवों की हालत सुधारने पर विशेष जोर दिया था। आगे चलकर गावों में बिजली की मांग काफी बढ़ेगी। मद्रास राज्य में बिजली की कुल मांग का लगभग २० प्रतिशत गांवों में है।

(शेष पृष्ठ १०३ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रमिक वर्ग में राष्ट्रीयता का अभाव

श्री विमल कुमार

जैसे-जैसे राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से विकसित होते गये वैसे ही वहां का श्रमिक वर्ग भी अधिक शक्तिशाली होता गया। फलतः अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक होकर उनकी मांग दृढ़तापूर्वक करने लगा। परन्तु इतना होने पर भी एक बात स्पष्ट थी कि यह अधिकारों की मांग उसी समय की गई, जबकि राष्ट्र इन्हें पूर्ण करने में समर्थ था। जब तक राष्ट्र स्वयं की आवश्यकता इनसे अधिक थी, ऐसी मांग नहीं की गयी। राष्ट्र की अविकसित अवस्था में किसी भी देशभक्त श्रमिक के लिए यह प्रवृत्ति उचित नहीं मानी जाती और न ही सरकार द्वारा इसे आश्रय दिया जाता है। इसका स्पष्ट उदाहरण जापान व जर्मनी हैं, जहां के श्रमिक वर्ग ने विश्व युद्ध के पश्चात् राष्ट्र की उन्नति के लिये १२-१२ व १८-१८ घन्टे काम किया। उन्होंने अपने अधिकारों की मांग उसी के पश्चात् ही की और यह स्वाभाविक भी है कि अपना कर्त्तव्य पूर्ण करने के पश्चात् ही अधिकारों की मांग की जाये, उससे पर्व नहीं।

परन्तु हमारे भारत में इसके विपरीत परिस्थिति दिखाई देती है। भारतीय श्रमिक वर्ग में राष्ट्रीयता का प्रायः अभाव है। जितने भी श्रमिक संगठन हैं, वे अपने स्वार्थपूर्ति की ओर पहले ध्यान देते हैं और तत्पश्चात् ही राष्ट्रीय हितार्थ सोचते हैं। आज अब आवश्यकता है कि हम राष्ट्र को शीघ्रातिशीघ्र स्वयं स्फूर्त्त आर्थिक विकास के योग्य बनावें, वहां पर हमारा श्रमिक वर्ग कार्य घन्टे, व कार्यदिवस कम करने, अनुचित सुविधायें, अनिवार्य अधिलाभांश (बोनस) की मांग करता है। प्रबन्धकों को आवश्यक रूप से अपनी मांगें मनवाने के लिए परेशान करते हैं। अर्थात् अपने स्वार्थों की पूर्ति हेतु राष्ट्र के विकास में रोड़े अटकाते हैं। इस स्वार्थपरता के कुछ ही उदाहरण काफी होंगे:—चीनी आक्रमण के कुछ ही समय पश्चात् विभिन्न रक्षा सामग्री उत्पादन निर्माणियों में हड़ताल, राष्ट्र जब खाद्य समस्या से आक्रांत था, उस समय बन्दरगाहों पर हड़ताल व अभी हाल ही की असिसटैंट हार्बरमास्टरों की हड़ताल, समय-समय पर विमान चालकों की हड़ताल, टेल्को व नेशनल रेयन की हड़ताल सभी इसी बात के द्योतक हैं कि हम राष्ट्रीय संकट की अवस्था में भी अपने स्वार्थों का त्याग नहीं कर सकते। ये सभी बातें इस ओर इंगित कर रही हैं कि हमारे श्रमिक राष्ट्रीय भावना से परिपूरित नहीं हैं।

इसी प्रकार की एक अनावश्यक मांग जिसे कि सरकार ने भी मान लिया है, अनिवार्य अधिलाभांश की है। जैसा कि शाब्दिक अर्थ से स्पष्ट है सामान्य लाभांश के आधिक्य के लाभांश में से श्रमिक का भाग। अधिलाभांश आयोग के सुझावों के अनुसार उद्योगों को हानि की भी अवस्था में भी एक न्यूनतम अधिलाभांश कर्मचारियों को देना अनिवार्य कर दिया गया है।

परन्तु उपर्युक्त विवेचन का यह भी अर्थ नहीं कि श्रमिक अपने लिए कोई मांग ही न करें। श्रमिक वर्ग यह मांग कर सकता है कि वह भी अपनी सामर्थ्यानुसार श्रम करेगा और उसी अनुपात में प्रबन्धक भी राष्ट्र हितार्थ अपने हितों का त्याग करेगा, उसके कार्य करने का स्थान उपयुक्त और मानवीय हो।

अतः आज आवश्यकता है श्रमिक वर्ग में राष्ट्रीय चेतना विकास की, जिससे कि वह राष्ट्र के विकास में एक मन होकर जुट जाये और अपने तुच्छ स्वार्थों को कुछ समय के लिये भुला दे। यह उसी समय हो सकता है जबकि देश के जन-मानस के लिए इस प्रकार का वातावरण निर्मित किया जाये, जिसकी पहल स्वयं शासक वर्ग द्वारा होनी चाहिए। इन्हें श्रमिक संगठनों को राजनैतिक प्रभाव से मुक्त कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना चाहिए जिससे कि वे राष्ट्र हितार्थ स्वतन्त्र रूप से चिन्तन कर सकें। यदि हम ऐसा कर सकने में असफल हुए तो राष्ट्र के श्रमिक वर्ग को राष्ट्र हितार्थ प्रेरित करने में असफल रहेंगे।

(शेष पृष्ठ १०६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सर्वेक्षण

# दिल्ली में फुटकर व्यापार

श्री पां० ज्ञा० आरोले

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक जीवन में वस्तुओं तथा सेवाओं का वितरण करने वाले थोक और फुटकर व्यापारियों का स्थान महत्त्वपूर्ण रहता है। कल कारखानों और खेतों में पैदा होने वाली वस्तुओं को उपभोक्ता तक पहुँचाने वाले मध्यस्थ ये ही लोग होते हैं। ये व्यापारी न केवल वस्तुओं के वितरण पर पूरा-पूरा काबू रखते हैं, साथ-साथ कीमतों पर और लोगों की रुचि पर भी अपना पूरा असर डालते हैं। इस हालत में देश की आर्थिक स्थिति जानने के लिए उत्पादन, विदेशी व्यापार तथा मजदूरों के वेतन-भत्ते आदि के साथ-साथ वितरण करने वाले इन दूकानदारों की सांख्यिकीय जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। इन दूकानदारों की जानकारी पाने के लिए इंग्लैंड, अमरीका, कैनाडा, बेलजियम, डेनमार्क आदि राष्ट्रों में नियमित रूप से संगणना और सर्वेक्षण आयोजित किये जाते हैं। भारत में इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के बारे में कोई विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस विषय के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए और यू नो के सांख्यिकीय आयोग की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार के केन्द्रीय सांख्यिकीय संगठन ने एक अखिल भारतीय सर्वेक्षण की योजना बनाई थी।

हाल में देशभर में व्यापारियों द्वारा किए जाने वाले काला बाजार और वितरण की गड़बड़ियों के खिलाफ बहुत जोरों से आवाज उठायी जा रही है। जनता के नेता सरकार से अनुरोध कर रहे हैं कि वह अनाज को किसानों से खरीदने और उपभोक्ताओं में वितरित करने का काम अपने हाथ में ले ले और जनता को इन व्यापारियों की चाल बाजियों से बचावे। लेकिन व्यापार की खूबियों को, विभिन्न प्रकार का व्यापार करने वालों की संख्या को उनके आय व्यय को, प्राप्ति के अनुपात को, उस व्यवसाय में काम करने वाले मजदूरों की संख्या को, उनके वेतन आदि को जाने बगैर कोई भी सरकार इस क्षेत्र में कदम नहीं उठा सकती। बिना किसी विश्वसनीय सांख्यिकीय जानकारी के कोई भी अपरिचित व्यक्ति, संस्था या सरकार इसके पास तक नहीं फटक सकती, सारे कारोबार पर काबू करना तो दूर की बात है। इस क्षेत्र की कुछ जानकारी हासिल करने का एक प्रयत्न, भारतीय सहकारी संघ (इंडियन को-आपरेटिव यूनियन) ने किया था। उस यूनियन के अनुसंधान विभाग ने १९६१-६२ में दिल्ली के फुटकर व्यापार की जानकारी प्राप्त करने के लिए समसंभावित प्रतिचयन (रैण्डम सैम्पलिंग) प्रणाली के आधार पर एक सांख्यिकीय सर्वेक्षण किया। उस सर्वेक्षण के परिणाम यहां संक्षेप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

यह सर्वेक्षण दिल्ली के तीन मुख्य बाजारों में—लाजपतराय मार्केट, शंकर मार्केट और सरोजिनी मार्केट में आयोजित किया गया था। इन बाजारों में कुल ४२५ दूकानें थीं। उनमें से २०८ दूकानें चुनी गयीं। ये दूकानें १४ विभिन्न वस्तु समूहों के व्यापार में लगी हुई दूकानों में से चुनी गयी थीं। साथ-साथ लोगों के उपभोग और खरीददारी के तरीकों को जानने के लिए इन बाजारों में अपनी जरूरत के सामान खरीदने वालों में से २०० परिवार भी चुने गए थे।

## वस्तुएं और लाभ

इस सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि सर्वेक्षित दूकानों में से ३१ प्रतिशत दूकानें कपड़े की हैं। १९ प्रतिशत पंसारी की और ११ प्रतिशत सामान्य व्यापारिक माल (जनरल मर्चेण्डाइज) की दूकानें हैं। स्वामित्व की दृष्टि से फोटोग्राफी से सम्बन्धित चीजें, चीनी मिट्टी के बर्तन और घर काम में उपयुक्त सामान बेचने वाली दूकानें सिर्फ व्यक्तिगत स्वामित्व पर चलायी जाती हैं। अन्य सभी व्यापारों में दूकान दारी १९ प्रतिशत से लेकर ६० प्रतिशत तक साझेदारी में चलती है। इन तीन बाजारों में व्यापार करने वाली ४२५ फुटकर दूकानों में १९६१-६२ में लगायी गयी कार्यकारी पूंजी ६६ लाख रुपये थी और उनकी सालानः खपत २१२ लाख रु. से भी अधिक थी। सर्वेक्षित



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूकानों की कार्यकारी पूंजी का बिक्री से अनुपात विभिन्न वर्ग में १७ प्रतिशत से लेकर ४५.१ प्रतिशत रहा। विक्रय के अनुपात में दूकान चलाने का खर्च २.७ प्रतिशत से ८.२ प्रतिशत और शुद्ध फायदा ५.७ प्रतिशत से १७.१ प्रतिशत रहा। जहां साइकल के सामान बेचनेवाली दूकानों में व्यय पर शुद्ध फायदे का वार्षिक औसत ५.४ प्रतिशत था, वहां घरेलू सम्बन्धित दूकानों में वह अनुपात १६.६ प्रतिशत रहा। पंसारी, मिठाई, सामान्य व्यापारिक माल कपड़े तथा फोटो की दूकानदारों का वार्षिक बिक्री पर मुनाफा ६.६ प्रतिशत से ११.८ प्रतिशत तक था। खेल के सामान की और स्टेशनरी की दूकानों का फायदा १३.१ प्रतिशत से १४.६ प्रतिशत देखा गया। कृत्रिम हीरे-मोती और मुक्ता कंठहार आदि आयातित वस्तुओं या दुर्लभ वस्तुओं आदि चीजों का व्यापार करने वाले दूकानों में, जहां विक्रय कम होता है और कीमतों के घटने बढ़ने का धोका ज्यादा रहता है, यह देखा गया है कि मुनाफा ४५ प्रतिशत से लेकर ७५ प्रतिशत तक रहता है। कोयला, कपड़ा, घरेलू उपादान और जेवर जवाहरात इन चीजों को छोड़कर बाकी अन्य दूकानदार निश्चित कीमत की नीति का अनुसरण नहीं करते।

गेहूँ और आटा बेचनेबाले आम तौर पर ८ से १० प्रतिशत मुनाफा कमाते हैं। चावल और दालों पर कहीं कहीं-कहीं १२ प्रतिशत मुनाफा कमाया जाता है।

होजियरी, हाथरुमाल कंगन, धागे, लिपस्टिक, पेन्सिल, सूटकेस आदि चीजों पर १२ से १६ प्रतिशत मुनाफा रहता है। लकड़ी के कोयले की दलाली में १० से १२ प्रतिशत और लकड़ी के व्यापार में १२ से १४ प्रतिशत फायदा उठाते हैं। रेडीमेड कपड़ों पर और खास कीमती क्राकरी पर मुनाफा २० से २२ प्रतिशत देखा गया है।

## प्रति ग्राहक बिक्री

दूकानदारों की आय का एक दूसरे तरीके से भी विश्लेषण किया गया है। दकान चलाने के खर्च को छोड़ने पर प्रति ग्राहक प्रति बिक्री पर इनकी आय २५ से लेकर ५० नये पैसे देखी गयी। प्रति रुपया विक्रय के अनुपात में यह आय ७ नये पैसे से लेकर १५ नये पैसे तक देखी गयी है। सिर्फ घरेलू सामान बेचने वाले दूकानदारों के बारे में यह आय-प्रति रुपया २० न० पै० पायी गयी।

इस रिपोर्ट में चुने गये २०० परिवारों के खाने पीने के और बाजार करने के तरीकों का भी अध्ययन किया गया है। यद्यपि यह देखा गया है कि ये परिवार अपने व्यय का १६ प्रतिशत खर्च अनाज को खरीदने पर खर्च करते हैं, तथापि कुछ आय वर्ग में यह खर्च बहुत अधिक पाया गया है। यह देखा गया है कि बहुत सारा बाजार हाट-कारोबार परिवार के पुरुष ही करते हैं। दूध, अंडा, सब्जी, चीनी और केरोसीन को छोड़कर बाकी सभी चीजें महीने में एकबार ही खरीदते हैं।

## कठिनताएं

यद्यपि यह सर्वेक्षण सीमित रूप में ही दिल्ली के तीन मार्केटों में किया गया था, इसके परिणाम फुटकर व्यापार के सम्बन्ध में बहुत ही उपयुक्त जानकारी प्रदान करते हैं। इस तरह के सर्वेक्षणों में सबसे बड़ी कठिनाई रहती है व्यापारियों के सहयोग की। बिना उनकी सहकारिता के जानकारी प्राप्त करना असंभव है। दूसरी भी एक कठिनाई रहती है। बहुत सारे दूकानदार अकेले ही दूकान चलाते हैं। देहातों में वे अनपढ़ भी होते हैं। इस हालत में वे विभिन्न चीजों के सम्बन्ध में आय व्यय आदि का सही सही हिसाब किताब नहीं रखते हैं। इसके अभाव में निश्चित जानकारी प्राप्त करना एक टेढ़ी खीर है।

■ ■


सम्पदा की सामग्री कितनी उपयोगी होती है, यह जानने के लिए दस पैसे के टिकट भेजकर १९६४ की विषय सूची मंगाइये

मैनेजर सम्पदा—२८/११ शक्तिनगर दिल्ली-७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उज्ज्वल संभावनाओं से पूर्ण पैट्रोलियम उद्योग

श्री हुमायूं कबीर

भारत में पेट्रोल रसायन उद्योग का भविष्य बहुत उज्ज्वल है । ख्याल है कि पेट्रो-रसायन उद्योग के विस्तार से जब बड़े पैमाने पर दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुएं बनने लगेंगी, तो उससे देश की अर्थ-व्यवस्था में भारी सुधार होगा।

पेट्रो-रसायन में, तैयार किए गये सभी कार्बनिक पदार्थ आ जाते हैं, जैसे प्लास्टिक, तैयार किया गया रबड़, अपमार्जक (डिटर्जेंट) रेशेदार रसायन, विलायक (सोलवेंट) और अन्य कार्बनिक रसायन। पश्चिमी देशों में पेट्रो-रसायन द्वारा तैयार किये गये सामान से उद्योगों के विकास में बहुत सहायता मिल रही है। इसलिए भारत में भी पेट्रो-रसायन उद्योग के विकास को प्राथमिकता दी जा रही है।

पेट्रो-रसायन उद्योग के विकास से बहुलकों (पालीमार) की मांग पूरी हो जाएगी। इसके अलावा नई किस्म के पेट्रो रसायन भी बनते रहेंगे। इससे न केवल इनका रासायनिक प्रयोग बढ़ेगा, बल्कि दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुओं के बनाने में भी इनका इस्तेमाल होने लगेगा।

आशा है कि पैकिंग उद्योग में कपड़े और कागज के स्थान पर प्लास्टिक का अधिक इस्तेमाल होने लगेगा। इमारतों के निर्माण में भी प्लास्टिक का काफी प्रयोग होने लगेगा। प्लास्टिक के इंसूलेटिंग बोर्ड सजावट की पट्टियां और ढाला हुआ प्लास्टिक सुविधानुसार इमारतों में इस्तेमाल किया जा सकता है। पेट्रो-रसायन से अनेक और चीजों के निर्माण की भी गुंजाइश है।

प्लास्टिक का आविष्कार हुए अभी बहुत समय नहीं हुआ, लेकिन फिर भी विश्व भर में उद्योगों में इसका प्रयोग काफी ज्यादा होता है। विश्व भर में उद्योगों में सभी प्रकार के अलौह धातुओं की कुल खपत से अधिक खपत प्लास्टिक की है। प्लास्टिक एक तो हल्का और सस्ता होता है और दूसरे इसकी चीजें आसानी से बनाई और लगाई जा सकती हैं। इसे कीड़े नहीं खा सकते और जंग भी नहीं लगता। प्लास्टिक बिजली का अच्छा अचालक है। प्लास्टिक को सभी रंगों में और पारदर्शी भी बनाया जा सकता है। देश की अर्थ-व्यवस्था की सुदृढ़ता और प्लास्टिक उद्योग के विकास के लिए जरूरी है कि लोग पुराने किस्म की चीजों के स्थान पर प्लास्टिक से बनी चीजों का अधिक प्रयोग करें।

फिलहाल बम्बई के दो नेप्था स्ट्रीम क्रेकर कारखानों के आस-पास पेट्रो रसायन पदार्थ बनाने के कुछ लाइसेंस दिए गये हैं। इन कारखानों में १९६६-६७ तक उत्पादन शुरू हो जाएगा। इस प्रकार भारत में पहली बार पेट्रोल पालीथिलीन, पालीवाथी नाइल ऐसी, एथीलीन आक्साइड और इनसे बनाए गए अन्य रसायन पदार्थ बाजार में मिलने लगेंगे। इसके साथ पी० वी० सी०, आइसो प्रोपाइल अलकोहल तथा इससे सम्बन्धित अन्य अपमार्जक, बुटाडियज, बेनजीन, फिनोल, प्लास्टी, साइजर, कारपोलेक्टम और नायलन भी तैयार होने लगेंगे। देश भर में भारी मात्रा में पेट्रो रसायन पदार्थ बनाने की यह एक शुरुआत होगी।

पिछले १५ वर्षों में भारत में कच्चे माल की तथा चीजों की मांग बढ़ गई है। इस समय भारत में सूत, ऊन, रबड़, स्पात, अलौह धातुओं, तेल और मशीनों की चिकनाई की कमी है। उद्योगों के विकास के लिए जरूरी है कि इनके स्थान पर पेट्रो-रसायन पदार्थ, जैसे प्लास्टिक रासायनिक रेशे और अपमार्जक आदि, सस्ते दामों पर उपलब्ध किये जाएं। आजकल अमेरिका से प्रति वर्ष ४० करोड़ डालर की कीमत के पेट्रो-रसायन पदार्थ मंगाये जाते हैं। देश की आबादी को देखते हुए कहा जा सकता है कि भविष्य में यह आयात और भी बढ़ जाएगा। भारत में पेट्रो-रसायन उद्योग के विकास से काफी विदेशी मुद्रा बच जाएगी।

योजना आयोग ने देश में पेट्रो-रसायन उद्योग के शुरू करने में १० करोड़ डालर के खर्च का अनुमान लगाया है। उर्वरक को छोड़ अन्य पेट्रो रसायन पदार्थों की चीजें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाने में लगभग ४० करोड़ डालर के खर्च का अनुमान है। १९७०-७१ तक पेट्रो-रसायन पदार्थ बनाने का लक्ष्य कई चरणों में पूरा किया जायगा। चौथी योजना की अवधि में कोयली और कलकत्ता में एक-एक नेप्था बनाने का कारखाना स्थापित किया जाएगा। विनायल क्लोराइड बनाने के लिए दक्षिण भारत उपयुक्त रहेगा।

आशा है कि १९६५ में कोयली में तेल साफ करने का कारखाना काम शुरू कर देगा। १९६८ तक ८० हजार से १ लाख टन तक एथिलीन बनाने वाला एक नेप्था क्रैकर कारखाना बनाया जाएगा। इसके अलावा, बेनजान, टोलूइन, आक्सीलीन को तैयार करने की व्यवस्था भी की जाएगी।

बरौनी तेल शोधक कारखाने की क्षमता २० लाख टन शोधने की है। इसे भी १९६६ में बढ़ाकर ३० लाख टन कर दिया जाएगा। यहां पर बेनजीन, आक्सीलीन और पीक्सीलीन भी तैयार किए जाएंगे।

मद्रास तेल शोधन कारखाने में १९६७ में २५ लाख टन तेल साफ होने लगेगा। इस कारखाने के निकट पेट्रो-रसायन पदार्थ बनाने का काम दो चरणों में पूरा किया जायगा। पहले चरण का काम १९६९ में शुरू होगा। प्रति वर्ष ६४ हजार टन पी वी सी बनाने के लिए एक एथोलीन-एसीटिलीन क्रैकर लगाया जाएगा। हर वर्ष ३० हजार टन पी० वी० सी० बनाया जाएगा और बचा हुआ पिविनायल क्लोराइड इसी क्षेत्र में बनाये जाने वाले अन्य पी० वी० सी० कारखानों में भेजा जाएगा।

१९६८ में हल्दिया में २५ लाख टन तेल शोधन की क्षमता के कारखाने में काम शुरू हो जाएगा। अनुमान है कि यहां १९७० तक प्रति वर्ष ५० हजार टन पालीथिलीन, २० हजार टन इथिल आक्साइड, २० हजारों टन विविध रसायन बनने लगेंगे।

हाल ही में बम्बई में प्लास्टिक संस्थान और रसायन शिल्प विभाग शुरू किया गया है। ये विभाग प्लास्टिक के क्षेत्र में अनुसंधान का महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। रेशम और नकली रेशम अनुसंधान संगठन, बम्बई ने प्लास्टिक के रेशों संबंधी अनुसंधान काम शुरू किया है।


महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

# शृङ्गार

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल

सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय :
१३।३७, शक्तिनगर,
दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०

# भारत की उद्योग नीति

लेखक :
प्रो. रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ न. प.

"सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

## अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# समाजवाद का प्रशस्त पथ—सहकारिता

स० दरबारासिंह गृह मन्त्री, पंजाब

"विज्ञान अभूतपूर्व गति से हमारे लिए नई शक्ति प्रदान कर रहा है। कृषि को ही लें। विदेशों में कृषक अपने खेतों में अणु ऊर्जा—आईसोटाप्स का प्रयोग कर रहे हैं। इससे उत्पादन में बहुत अधिक अन्तर आता है। परन्तु भारतीय किसान के साधन इतने कम हैं कि वह इन लाभों का फायदा नहीं उठा सकता। इन वरदानों से लाभ प्राप्त करने का केवल एक ही तरीका है, और वह तरीका है सहकारिता। केवल सहकारी आधार से ही एक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को अक्षुण्ण रख सकता है, उसकी स्वाधीनता बना रहती है और बड़े पैमाने पर कार्य करके वह विज्ञान और तकनीकी ज्ञान से लाभान्वित हो सकता है।" —नेहरू

सहकारिता ही एक ऐसा क्रियात्मक दर्शन है जो मानव मुक्ति के महान् लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमारा मार्ग-दर्शन कर सकता है। इसे हमने एक सरलतम मार्ग समझकर नहीं अपनाया है, वरन् यह एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। यह हमारा राष्ट्रीय धर्म है।

ग्रामों का संगठन ग्राम सहकारिताओं पर आधारित होना चाहिए और इन्हें पर्याप्त सत्ता और साधन जुटाने चाहिएं। कई सहकारी संस्थाएं मिलकर एक यूनियन भी बना सकती हैं। एक स्थायी ग्राम निवासी को चाहे वह भूमिपति है या नहीं, सहकारी संस्था का सदस्य बनने का पात्र समझा जाना चाहिए। प्रगतिशील कृषि-पद्धतियों और कृषि की उन्नत तकनीकों का प्रचलन करके यह संस्था अपने सदस्यों का कल्याण करे। भावी कृषि पद्धति सहकारी सांझी कृषि होनी चाहिए और सांझी कृषि के लिए भूमि इकट्ठी की जानी चाहिए। भूमि का स्वामित्व अधिकार किसानों के पास ही रहना चाहिए और किसानों को उत्पादन में उनका भाग भूमि के अनुपात से मिलना चाहिए। परन्तु प्राथमिक पग के रूप में सांझी कृषि सेवा सहकारिताएं देश भर में संगठित की जानी चाहिएं।

वर्ष १९१४ के अन्त में पंजाब में सहकारिता की कार्यप्रणाली की समीक्षा करने के लिए मैक्लायन समिति नियुक्त की गई थी। इस समिति ने निम्नलिखित शब्दों में सहकारिता की व्याख्या की :—

"सहकारिता की सैद्धान्तिक व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि अकेला और शक्तिहीन व्यक्ति, जब नैतिक विकास और आपसी सहायता के बल पर, दूसरों के साथ इकट्ठा होकर, अपना वास्तविक सम्मान प्राप्त करे, जो कि समर्थ और भौतिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों को प्राप्त है और वह प्राकृतिक रूप से प्राप्त क्षमता तक अपने आपको पूर्ण रूप से विकसित कर ले। शक्ति को एकीकृत करने से भौतिक प्रगति सुनिश्चित होती है, और सम्मिलित कार्यवाही से आत्म-सम्मान फलता फूलता है और इनके सम्मिलित प्रभाव से उच्च और निम्न स्तर के जीवन में प्रभावात्मक सम्पर्क स्थापित होता है, जिससे बेहतर व्यापार, बेहतर खेती-बाड़ी और बेहतर जीवन-यापन प्राप्त होता है।"

आज प्राविधिक प्रगति बड़ी ही तेजी और विलक्षण गति से हो रही है। इस कारण हम बिना सहकारिता के कुछ भी न कर पाएंगे।

हमारे बहुत से किसानों के पास पांच-पांच एकड़ से अधिक जमीन नहीं है। उनका जीवन-यापन उससे सम्बद्ध है। वे रात दिन उस पर कठिन परिश्रम करते हैं परन्तु फिर भी उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। उनमें उन्नत बीज, अच्छे उपकरण, सिंचाई की नई उन्नत प्रणालियां, पौध सुरक्षण पग, उर्वरक और ट्रैक्टर आदि जुटाने की सामर्थ्य नहीं होती। उनके अच्छे जीवन-यापन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बात तो दूर रही, वे अपने बच्चों को पढ़ा भी नहीं सकते, आकस्मिक बीमारी या मृत्यु के लिए कुछ धन संग्रह नहीं कर पाते। वे उधार भी नहीं ले सकते क्योंकि साहूकार उनकी खाल ही उधेड़ लेता है। उनका समस्त जीवन संताप और दरिद्रता से जूझते हुए ही बीत जाता है। यदि वे सहकारी समितियां बना लें तो उनकी स्थिति में सुधार हो सकता है। वे उनसे सुगम शर्तों पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं। सेवा सहकारिताओं के द्वारा वे ट्रेक्टर, वैज्ञानिक तथा तकनीकी सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं।

सहकारी समितियां कई प्रकार की हैं। नामतः सहकारी ऋण समितियां, सेवा सहकारी समितियां, सहकारी कृषि समितियां, श्रम तथा निर्माण सहकारी समितियां तथा अन्य। ये सब किसानों और कार्यकर्ताओं को पूंजी तथा अन्य सुविधाएं उपलब्ध करने में सहायता करती है। उदाहरणतः इस फसल की कटाई तपती धूप में दो महीने तक जारी रहती है। इससे समय और परिश्रम का अपव्यय होता है। अगर किसान सहकारी समितियों के द्वारा गाहने की मशीन खरीदकर उसका प्रयोग करें तो वे अनाज को लगभग एक सप्ताह में ही घर पर ले जाकर कोठों में भर सकते हैं। इससे उन्हें सुविधा होगी और बैलों को भी आराम मिलेगा। इससे जो समय की बचत होगी, उसमें कृषक बिजाई और फसलों की सिंचाई कर सकते हैं।

## पंजाब में

विभाजन ने सहकारिता आन्दोलन को बहुत आघात पहुँचाया है और एक प्रकार से इसे पंगु ही बना दिया था, किन्तु पंजाब ने इस दिशा में भी प्रशंसनीय प्रगति की है। वर्ष १९४८ में इस राज्य में सभी प्रकार की सहकारी समितियों की संख्या १२१४५ थी, जो वर्ष १९६४ के अन्त तक बढ़कर ३५२९९ से भी अधिक हो गई है। इनसे २१२६४ में से ९४ प्रतिशत गांवों और १६२ लाख ग्राम जनता में से ५८ प्रतिशत को लाभ पहुँच रहा है। अब तक के अनुमानों के अनुसार इस आन्दोलन में २५ लाख व्यक्ति सम्मिलित हैं, जिसमें प्रत्येक ने कम से कम ५० रुपए लगा रखे हैं। इसमें लगाई गई तथा एकत्रित की गई धन राशि २० करोड़ रुपए और कार्यरत पूंजी १११ करोड़ रुपए है। कार्यक्रम को क्रियान्वित करने के बाद यह आशा थी कि अगले वर्ष के अन्त तक प्रत्येक गांव के लिए कम से कम एक सहकारी समिति स्थापित हो जाएगी।

## किसानों की आशंका

वास्तविकता यह है कि हमारे किसान भाई अपनी थोड़ी सी भूमि को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। वे उज्ज्वल और समृद्ध भविष्य की आशा में इसे विनिमय करने के लिए सुगमता से राजी नहीं होते। वे बड़े-बड़े सहकारी खेतों में भागीदार बनने की अपेक्षा अपनी भूमि के छोटे से टुकड़े से ही चिपटे रहना पसन्द करते हैं। उनके मस्तिष्क में यह भय अथवा सन्देह समा गया है कि मैनेजर या अन्य व्यक्ति उनकी भूमि हड़प लेंगे।

सहकारी कृषि की जड़ें मजबूत करने के लिए किसानों के मस्तिष्कों में से ऐसे सभी सन्देह और भय दूर किए जाने चाहिएं।

अन्त में इस बात पर बल देना चाहिए कि सहकारी आन्दोलन की शक्ति को सहकारी समितियों की संख्या से ही नहीं आंकना चाहिए। इसका सही मूल्यांकन इनके प्रति लोगों में बढ़ रहे उत्साह से ही किया जा सकता है।

वास्तविकता तो यह है कि अत्यधिक सरकारी संरक्षण, वित्तीय सहायता और निर्देशन से इस आन्दोलन ने गलत दिशा पकड़ ली है। हमारे स्वर्गीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू आन्दोलन के इस पहलू की ओर बहुत सजग थे तथा इस पर बहुत बल देते थे। लोकसभा में २५ मार्च, १९५९ को दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था "यदि सरकारी धन सहकारी आन्दोलन में लगाया जाता है तो अपरिहार्य रूप से इसका संचालन भी सरकारी कर्मचारियों द्वारा ही होगा। इससे इस आन्दोलन को एक गलत दिशा मिलेगी और यह पूर्णतः सहकारी नहीं रह पाएगी। इससे सहकारी अभियान के दर्शन की हत्या होगी। जनता को अपने लिए सीखने, आत्मानुभव विकसित करने स्वावलम्बन और गलती से अनुभव प्राप्त करने के आकर्षणों को विशेषतः आघात पहुँचेगा।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कर प्रमाण-पत्र योजना

श्री पी० एन० श्रीवास्तव

वित्तमन्त्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने २४ दिसम्बर को करों में छूट देने सम्बन्धी कर प्रमाण-पत्र योजना की घोषणा लोकसभा में की। यह योजना उसी दिन से लागू हो गई है, हालांकि इसको १७ फरवरी, १९६५ से प्रारम्भ होने वाले बजट अधिवेशन में पेश किए जाने वाले "वित्त बिल" में शामिल किया जाएगा। योजना की घोषणा इस आशा से की गई है कि इससे पूंजी बाजार का पुनरुत्थान होगा और वह स्थिति सुधरेगी, जिसके कारण विनियोजक साधारण शेयरों की अपेक्षा पूर्वाधिकार (प्रिफ़रैंस) शेयर और डिबैंचर खरीदना अधिक पसंद करते हैं। वित्त मंत्री का अनुमान है कि इस योजना से विनियोजकों को, विशेष रूप से मध्यम श्रेणी के विनियोजकों को, साधारण शेयरों में पूंजी लगाने का अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।

**योजना की विशेषतायें**—संक्षेप में कर-प्रमाण-पत्र योजना की कुछ विशेषतायें निम्नलिखित हैं :—

(१) उन सार्वजनिक कम्पनियों द्वारा जारी किए जाने वाले साधारण शेयरों के खरीदने पर, "कर-छूट प्रमाण-पत्र" (Tex Credit Certificate) के माध्यम से, करों में छूट दी जायेगी, जो निम्नलिखित शर्तें पूरी करती हैं :—

(अ) कम्पनी भारत में बनी व पंजीकृत की हुई ऐसी सार्वजनिक कम्पनी हो, जो वस्तुओं के उत्पादन के लिए किसी एक या अधिक ऐसे उद्योग में संलग्न हो जिनके नाम उद्योग (विकास और नियंत्रण) एक्ट, १९५१ की पहली अनुसूची में लिखे हुए हैं या किसी ऐसे उद्योग में संलग्न हो जिसके लिए केन्द्रीय सरकार समय समय पर सूचना दे।

(ब) जनता के अभिदान (सबस्क्रिप्शन) के लिए जारी की जाने वाली, कम्पनी की, साधारण अंश पूंजी २० लाख रुपये से कम न हो।

(२) "कर-छूट प्रमाण-पत्र" उत्तरोत्तर चार वर्षों के लिए जारी किया जाएगा अर्थात् वह वित्तीय वर्ष जिसमें शेयर खरीदे गये हैं और अगले तीन वित्तीय वर्षों के लिए।

अधिक से अधिक ३५,००० रुपये के विनियोजन पर कर-छूट प्राप्त हो सकती है, इससे अधिक पर नहीं। यदि यह ३५००० रुपया एक ही वर्ष में विनियोग कर दिया जाय तो भी १२५० रुपये के बराबर कर की छूट प्रतिवर्ष चार वित्तीय वर्षों के लिए प्राप्त हो सकेगी। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह आवश्यक नहीं है कि यह विनियोजन एक ही कम्पनी में किया जाय। विनियोजन विभिन्न कम्पनियों में किया जा सकता है।

(३) "कर-छूट प्रमाण-पत्र" की रकम कर योग्य आय नहीं मानी जायेगी।

**योजना की आलोचना**—इस योजना में जो कुछ छूट दी गई है वह इतनी कम और सीमित है कि इससे पूंजी बाजार पर, दृष्टिगोचर होने वाला, शायद ही कोई प्रभाव पड़े। योजना की मुख्य आलोचनायें निम्नलिखित हैं :—

(१) छूट की दर, जो कि ५ प्रतिशत है, बहुत ही कम है और इतनी कम छूट देकर यह सोचना कि विनियोजक इस योजना से औद्योगिक साधारण शेयरों में पूंजी लगाने को आकृष्ट होंगे, बहुत भूल है। विनियोजकों को साधारण शेयरों में पूंजी न लगाने के लिए दोष देना भी ठीक न होगा जबकि जीवन बीमा निगम और यूनिट ट्रस्ट जैसी संस्थायें भी साधारण शेयरों की अवहेलना करती हैं। साधारण शेयरों की ओर आकृष्ट करने के लिए इतनी कम छूट पर्याप्त नहीं है, क्योंकि एक तो उद्योग के प्रारंभिक वर्षों में इन पर कोई डिवीडैंड भी नहीं मिलता है और इनका बाजार मूल्य भी काफी गिर जाता है। इसके विपरीत पूर्वाधिकार शेयरों में साधारणतया ६ प्रतिशत तक डिवीडैंड मिल जाता है और पूंजी की

## आज की नई योजना पर एक दृष्टि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षा भी अधिक होती है । ऐसी स्थिति में साधारण शेयरों में विनियोग के लिए कोई क्यों आकृष्ट हो ।

(२) योजना के अनुसार कर-छूट केवल ४ वर्षों के लिए ही उपलब्ध है जबकि यह सर्व विदित है कि नई औद्योगिक इकाइयों में प्रारम्भ में ८-१० वर्षों तक डिवीडैंड मिलने की आशा बहुत कम होती है या यह कहा जा सकता है कि मिलता ही नहीं है । इसका अर्थ यह हुआ कि यदि कोई व्यक्ति साधारण शेयरों में अपना धन विनियोग करे तो उसे कर की छूट तो केवल ४ वर्षों तक ही मिलेगी और शेष ४-६ वर्षों तक उसकी पूंजी बिना किसी पारितोषिक के फंसी रहेगी और लाभ कुछ भी न प्राप्त होगा । इसके विपरीत यदि धन डिबैन्चर में विनियोग किया जाता है तो एक निश्चित दर से ब्याज मिलता रहता है ।

यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि कर-छूट ४ वर्ष तक भी उसी दशा में प्राप्त होती है जबकि शेयर एक ही व्यक्ति के पास रहें और इसका हस्तांतरण न दिया जाएं । दूसरी ओर डिबैन्चर और पूर्वाधिकार शेयरों पर लगातार आय तो होती ही है, उनको बेचने में सरलता भी रहती है । इन सब बातों को देखते हुए निश्चय ही कहा जा सकता है कि कर-छूट के लिए ये ४ वर्ष का समय बहुत ही कम है और उसे बढ़ाया जाना चाहिए । साथ ही हस्तांतरण पर कर-छूट बन्द हो जाने वाली शर्त को भी हटाया जाना चाहिए ।

(३) इस समय योजना के अनुसार कर-छूट केवल उन नई सार्वजनिक कम्पनियों के साधारण शेयरों पर ही मिलेगी जो २३ दिसम्बर, १९६४ के बाद पहली बार शेयर जारी करती है । यदि यह भी मान लिया जाय कि योजना विनियोजकों को आकृष्ट करेगी, इसका अर्थ यह होगा कि विनियोजक पुरानी कम्पनियों की अवहेलना करेंगे और उनके सामने वित्तीय समस्याएं आ जायेगी और यदि ऐसा होता है तो योजना की अर्थव्यवस्था के लिए हितकारी नहीं कहा जा सकता है । अच्छा तो यह होगा कि नई-पुरानी सभी कम्पनियों के द्वारा २३ दिसम्बर, १९६४ के बाद जारी किए गये साधारण शेयरों पर कर-छूट का प्रावधान होता । यह विनियोजकों के लिए अधिक आकर्षक प्रावधान होता ।

(४) कर-छूट केवल उन उद्योगों के शेयरों पर ही मिलेगी जिनके नाम उद्योग (विकास व नियंत्रण) एक्ट, १९५१ की पहली अनुसूची में दिए हुए हैं । इसका कोई कारण समझ में नहीं आता कि कर-छूट केवल इन उद्योगों के शेयरों पर ही क्यों मिलेगी और अन्य उद्योगों (जिनके नाम इस एक्ट में नहीं) के शेयरों पर क्यों नहीं ?

(५) यह बात भी उचित नहीं जान पड़ती कि कर-छूट तब ही मिलेगी जबकि जारी की जाने और प्रार्थित साधारण पूंजी २० लाख रुपये या इससे अधिक हो । यदि पूंजी २० लाख से कम हो तो कर-छूट न देना कोई बुद्धिमानी नहीं जान पड़ती है ।

(६) अधिक से अधिक ३५०००) के विनियोग पर छूट दी जाएगी । ये रकम बहुत ही कम है । निश्चय ही यह उच्चतम सीमा बढ़ाई जानी चाहिये ।

(७) कर-छूट प्रमाण-पत्र जारी करने का तरीका उचित नहीं है । पहले-पहल अधिकृत बैंक जिसको प्रार्थना पत्र की सत्यता को प्रमाणित करना है, पूछताछ और जांच आदि करेगी । इसमें काफी समय लग सकता है । फिर यह प्रार्थना पत्र रिजर्व बैंक में भेजा जाएगा और वहां से प्रमाण-पत्र बन कर आएगा । इस सब काम में काफी समय लगेगा और रिजर्व बैंक कलकत्ता पर प्रमाण-पत्र जारी करने का काम केन्द्रित हो जाएगा, जो प्रशासनिक दृष्टि से अधिक उचित नहीं है । सुविधाजनक तो यह होगा कि रिजर्व बैंक व स्टेट बैंक की सभी शाखाओं को प्रमाण-पत्र जारी करने का अधिकार दे दिया जाय । इससे काम का विकेन्द्रीकरण होगा और प्रमाण-पत्र के जारी करने में समय भी कम लगेगा ।

यदि "कर-छूट प्रमाण-पत्र योजना" को सफल बनाना है तो यह आवश्यक है कि इसकी कमियों को दूर किया जाय, ताकि पूंजी बाजार पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़े, उसका पुनरुत्थान हो और देश के औद्योगिक विकास के लिए अधिक पूंजी प्राप्त की जा सके ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूंजी निर्माण की कठिनाइयां

हाल में राज्य सभा में एक कांग्रेसी सदस्य ने बताया था कि सीमेंट कारखानों को दिए गए १६ लाइसेंसों को रद्द करना पड़ा, क्योंकि उनके लिए पूंजी न जुटाई जा सकी। नये शेयरों के लिए जनता अब अधिक पूंजी लगाने को तैयार नहीं है। और इसीलिए नई कम्पनियों के लिए पूंजी उगाहने में काफी कठिनाई होती है। वित्तमंत्री ने अब यह स्वीकार किया है कि नई पूंजी और शेयर बाजार की स्थिति से देश की अर्थ-व्यवस्था का जो रूप दिखाई देता है, वह सचमुच चिन्ता का विषय है।

× × ×

१६५५-५६ और १६६१-६२ के बीच भारत के सभी अनुसूचित बैंकों की जमा पूंजी १०४३ करोड़ रुपये से बढ़कर १६१७ करोड़ रुपए हो गई, जबकि बैंकों का ऋण ५८० करोड़ रुपये से बढ़कर १४०८ करोड़ रुपये हो गया। १६६३-६४ में उससे पहले वर्ष की अपेक्षा बैंकों के व्यापार में सबसे महत्वपूर्ण दान ऋण में लगातार वृद्धि और जमा दर में कमी का होना है।

× × ×

राष्ट्रीय पूंजी का जो भाग करों के रूप में जाता है उसका प्रतिशत लगातार बढ़ा है। दूसरी और तीसरी योजनाओं के बीच देश की अर्थव्यवस्था पर करों का बोझ काफी बढ़ा है। दूसरी योजना के अन्तिम वर्ष १६६०-६१ में कुल राष्ट्रीय आय १४,२१० करोड़ रुपये थी, जब कि १६५५-५६ में ६६८० करोड़ रुपये थी। राष्ट्रीय आय में ४२३० करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। उन्हीं वर्षों में राजस्व ७६१ करोड़ रुपये से बढ़कर १३५४ करोड़ रुपये हो गया। इस तरह करों में ५६३ करोड़ रुपये की वृद्धि हुई।

—वीरेन्द्र अग्रवाल

# बैंक १६६४ में

यद्यपि इस वर्ष बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋणों पर कुछ पाबन्दी लगाई गई है, फिर भी बैंकों ने इस वर्ष अधिक लाभ प्राप्त किया है, ऐसा कुछ प्रमुख बैंकों के विवरणों से मालूम हुआ है। इसका एक कारण बैंकों की ब्याज दर में वृद्धि दीखता है। १६६४ में बैंकों के डिपोजिट ३२५ करोड़ रुपये तक पहुँच गए, जबकि १६६२ में डिपोजिट कुल २३३ करोड़ रुपये तक तथा १६६३ में डिपोजिट कुल २८३ करोड़ रुपये तक पहुँचे थे। इसी तरह १६६५ में बैंकों ने २६५ करोड़ रुपये के ऋण लिए, जबकि १६६२ व १६६३ में ये संख्याएं क्रमशः १५५ और १६६ करोड़ रुपये थीं।

अनुसूचित बैंक अधिक ऋण देने के लिए रिजर्व बैंक से रुपया लेते हैं। पिछले वर्ष रिजर्व बैंक से बैंकों ने १३ करोड़ रुपये लिया था, परन्तु इस वर्ष ६५ करोड़ रुपया लिया है।

बैंकों को होने वाला अधिक लाभ दो कार्यों में प्रयुक्त किया गया है—अपने रिजर्व फण्ड को बढ़ाने में और अधिक डिबीडेन्ड देने में। इस कारण यह बहुत सम्भव है कि बैंक कर्मचारियों को अधिक मंहगाई भत्ता देने की आवाज के विरुद्ध बैंक संचालकों की आपत्ति न सुनी जाय या कम सुनी जाय।


# रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योग-वासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० न. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

**श्री रामतीर्थ योगआश्रम, बम्बई-१४**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में कम्पनियों का महत्त्व

देश की अर्थ-व्यवस्था में ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों, सरकारी और निजी कम्पनियों का बड़ा महत्व है और इसका क्षेत्र भी बहुत व्यापक है। इस शताब्दी के प्रारम्भ में, देश में १३४० ज्वाइन्ट स्टाक लिमिटेड कम्पनियां चल रही थीं, जिनकी चुकता पूंजी ३५ करोड़ रु० थी। १९४७ तक इनकी संख्या २१,८५३ और चुकता पूंजी ४ अरब ८० करोड़ रु० हो गयी। देश विभाजन के बाद इनकी संख्या में २ हजार की और चुकता पूंजी में २८ करोड़ रु० की कमी हो गयी। परन्तु यह कमी शीघ्र ही पूरी हो गयी और विभाजन के एक साल बाद ही इनकी संख्या पहले से भी बढ़कर २२,६७५ और चुकता पूंजी ५ अरब ७० करोड़ रु० हो गयी। १९५५-५६ तक इन कम्पनियों की संख्या २९,८७४ और पूंजी १० अरब २४ करोड़ रु० हो गयी, अर्थात् संख्या में ३२ प्रतिशत और पूंजी में ८० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

लेकिन इनमें अनेक कागजी या निष्क्रिय कम्पनियां भी थीं। अप्रैल १९६६ में कम्पनी कानून प्रशासन विभाग की स्थापना हुई और उसने इस समस्या पर ध्यान दिया। फल स्वरूप १९५६-५८ से १९६१-६२ के बीच बहुत सी निष्क्रिय कम्पनियों को सूची से खारिज कर दिया गया। इस कारण १९६१-६२ में कम्पनियों की संख्या २४,८५२ रह गयी, परन्तु उनकी चुकता पूंजी १० अरब २४ करोड़ रु० से बढ़कर १९ अरब ७४ करोड़ रु० हो गयी। सितम्बर १९६४ तक कम्पनियों की संख्या २६,३४४ और चुकता पूंजी २२ अरब ८२ करोड़ रु० हो गयी।

## सरकारी कम्पनियां

१९५७ के कम्पनी कानून में पहली बार सरकारी कम्पनियों को मान्यता दी गयी। कानून के अन्तर्गत कोई भी कम्पनी जिसमें ५१ प्रतिशत या अधिक चुकता पूंजी केन्द्रीय या राज्य सरकार या दोनों ने मिलकर लगाई हो, सरकारी कम्पनी मानी जाएगी। १९५६ में सरकारी कम्पनियों की चुकता पूंजी लगभग ७० करोड़ रु० थी और उनकी संख्या ७० से भी कम थी। नवम्बर १९६४ तक इनकी संख्या बढ़कर १८४ और चुकता पूंजी ९ अरब ७१ करोड़ रु० हो गयी। यद्यपि संख्या में सरकारी कम्पनियां कम हैं, अर्थात् २६,००० में से केवल १७८, परन्तु उनकी चुकता पूंजी का अनुपात बहुत अधिक है। सरकारी कम्पनियों की चुकता पूंजी ९७१ करोड़ है, जबकि सब कम्पनियों की कुल चुकता पूंजी १५११ करोड़ रु० है। पिछले ८ सालों में सरकारी कम्पनियों की चुकता पूंजी में ८ अरब २० करोड़ रु० की वृद्धि हुई है, जबकि गैरसरकारी कम्पनियों की पूंजी में केवल ५ अरब ३५ करोड़ रु० की वृद्धि हुई। सरकारी कम्पनियों में हिन्दुस्तान स्टील लि०, न्येवेली लिगनाइट, फर्टिलाइजर कारपोरेशन, राष्ट्रीय कोयला विकास निगम, इण्डियन रिफाइनरीज और हैवी इलेक्ट्रिकल्स आदि प्रमुख हैं। यह उल्लेखनीय है कि कम्पनी कानून में सरकारी और गैर-सरकारी कम्पनियों के बीच कोई भेद-भाव नहीं किया गया है।

अनेक प्रमुख उद्योगों में सरकारी कम्पनियों की पूंजी गैर-सरकारी कम्पनियों से अधिक है। ये उद्योग हैं—लोहा, इस्पात, बिजली की बड़ी मशीनें, परिवहन और बिजली मशीन, औद्योगिक रसायन, उर्वरक और पेट्रोल व कोयला।

## उत्पादन में सरकारी कम्पनियों का हिस्सा

सरकारी कम्पनियां देश का उत्पादन बढ़ाने में बड़ा काम कर रही हैं। १९४७-४८ में देश में जितना उत्पादन हुआ था, उसका केवल ७ प्रतिशत सरकारी उद्योगों में हुआ। अब यह १५ प्रतिशत है। इसके मुकाबले देश के उत्पादन में गैर-सरकारी कम्पनियों का हिस्सा इस समय ११ प्रतिशत है। देश में जितने भी धन्धे हैं, उनमें जितनी मशीनें व पूंजी लगी हुई हैं, उसका ९० प्रतिशत इन कम्पनियों में लगा है। तीसरी योजना में कम्पनियों में १९ अरब ५० करोड़ रु० की पूंजी लगाने की व्यवस्था है, जो कुल निजी पूंजीकी राशि का ४८ प्रतिशत बैठता है।

विदेशों में कम्पनियों का भाग कुल उत्पादन का ५० प्रतिशत तक है, हमारी कम्पनियां अभी १५ प्रतिशत तक ही आ पाई हैं, परन्तु वे तेजी से प्रगति कर रही हैं और आशा है कि वे भी शीघ्र ही विदेशी कम्पनियों का मुकाबला करने लगेंगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# गुजरात प्रगति के पथ पर

१९६४ में गुजरात राज्य ने प्रायः सभी दिशाओं में संतोषजनक प्रगति की है । प्रशासन एक ऐसी दृढ़ भूमि तैयार कर रहा है, जिस पर आगामी वर्षों में औद्योगिक विकास का ऊंचा शानदार और विशाल भवन निर्मित हो सकेगा ।

गुजरात के औद्योगिक विकास के लिए बिजली के उत्पादन में वृद्धि अत्यन्त आवश्यक है । १९६४ में धुवारन बिजलीघर ने बिजली का उत्पादन शुरू कर भी दिया है । इस पर २५ करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है । इस विशाल कारखाने से बिजली उत्पादन से गुजरात की बिजली की आवश्यकता एक सीमा तक पूरी हो जायगी ।

३० लाख टन तेल की शोधनशाला में प्रगति इस वर्ष की अपनी विशेषता है । तीन चार महीने तक ही इसमें २० लाख टन की क्षमता से काम शुरू हो जायगा । इस क्षेत्र में पैट्रो कैमिकल उद्योग के विकास का भविष्य बहुत उज्ज्वल है । इसके लिए अनेक विदेशी कम्पनियों को सहयोग मिलने के आश्वासन मिल चुके हैं और उद्योगों का एक विस्तृत जाल फैलने की सम्भावनाएं बढ़ गई हैं, जिन पर २०० करोड़ रुपया खर्च होने का अनुमान किया गया है । इस वर्ष बहुत से नये उद्योग स्थापित हुए हैं और बहुत से उद्योगों की रूपरेखा तैयार हो चुकी है ।

गुजरात ही नहीं, सम्पूर्ण देश गुजरात में तेल के विकास की उज्ज्वल सम्भावनाओं पर गर्व कर सकता है । तेल के अतिरिक्त भी अनेक उपयोगी खनिज—लिगनाइट, बौक्साइट, चूने का पत्थर आदि—गुजरात में अब मिलने लगे हैं ।

तीसरी योजना की पूर्ति में भी गुजरात प्रयत्नशील है । गुजरात की तीसरी योजना का आकार २८६ करोड़ रुपया था, जिसमें से करीब १८५ करोड़ रुपया इस आर्थिक वर्ष के अंत तक व्यय हो जायगा अर्थात् ७७ प्रतिशत लक्ष्य चौथे वर्ष के अन्त पूर्ण हो जायगा ।

गुजरात के आर्थिक विकास के लिए सिंचाई की योजनाओं का विस्तार अत्यन्त आवश्यक है । ४६ मध्यम सिंचाई योजनाओं में २७ योजनाएं पूरी हो चुकी हैं और अनेक योजनाएं पूर्ण होने के निकट पहुँच गई हैं ।

इस वर्ष गुजरात राज्य पारदी और बलसार की घास पैदा करने वाली जमीनों पर अन्न पैदा करने और कच्छ जिले में इनामदारों की समस्या को हल करने में सफलता पर गर्व कर सकता है । पारदी और बलसार की नई जमीनों पर बहुत से भूमिहीन किसानों को बसाया जा सकेगा ।

अन्य अनेक राज्यों की तरह गुजरात को भी अन्न संकट का सामना करना पड़ा । राज्य सरकार ने केन्द्र से गेहूँ, चावल और मोटा अनाज मंगवाकर जहां जनता में बांटा, वहां ४० प्रतिशत चावल संग्रह करने का भी प्रयत्न किया । १९६३ में गुजरात भर में ४०२९ दूकानें थीं, जो उचित मूल्य पर अनाज बेचती थीं । अब इनकी संख्या ६४८२ हो गयी है । इस वर्ष की एक मुख्य समस्या गुजरात राज्य में मूंगफली और मूंगफली के तेल का संकट है । इसके लिए सरकार को कुछ कदम उठाने पड़े ।

शिक्षा, स्वास्थ्य आदि समाज सेवा के कार्यों में गुजरात राज्य प्रगति कर रहा है । हजारों प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षणालय स्थापित किए गए हैं । अब संभावना यह है कि ६ से ११ वर्ष की ६४ प्रतिशत कन्याएं स्कूलों में पढ़ रही होंगी ।

पिछले अक्टूबर से कर्मचारी राज्य बीमा योजना अहमदाबाद में जारी कर दी गई है, जिससे २.३० लाख कारीगर लाभान्वित हुए हैं ।

एक वक्तव्य के अनुसार समस्त गुजरात राज्य में ही समुदाय विकास खण्ड बन गए हैं और पंचायतों और सहकारिता समितियों के द्वारा सभी ग्राम उन्नति की दिशा में प्रगति करने लगे हैं । सागौल के निर्माण में सरकार रुचि ले रही है । इससे यह आशा होती है कि गांवों और औद्योगिक क्षेत्रों में सीमेंट की मांग कुछ कम हो जायगी ।

आज की मंहगाई को देखते हुए गुजरात प्रशासन ने मंहगाई भत्ता १ जनवरी ६५ से बढ़ा दिया है । इससे सरकार पर ३½ करोड़ रुपये का व्यय बढ़ जायगा ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की नई पंचवर्षीय योजना

राजस्थान की चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का प्रारूप ४३० करोड़ रुपये का नियत किया गया है । इसमें राजस्थान नहर का व्यय सम्मिलित नहीं है । राजस्थान नहर केन्द्रीय सरकार की योजनाओं में ही सम्मिलित हो जायगी ।

अभी तक के प्रस्तावों के अनुसार इस योजना पर निम्नलिखित रूप से व्यय होगा—

| | |
|---|---|
| कृषि और पशु पालन | ६०.२५ करोड़ |
| सहकारिता और समाज विकास | ४०.०० ,, |
| बिजली, बाढ़ नियंत्रण और पोंग बांध | १७८.६२ ,, |
| उद्योग और कारखाने | १६.०० ,, |
| यातायात और परिवहन | ३०.०० ,, |
| समाज सेवाएं (जिसमें शिक्षा और गांवों को पानी देना सम्मिलित है) | ६८.७० ,, |
| सांख्यिकी, प्रकाशन आदि | २.८० ,, |

एक अनुमान के अनुसार इस चौथी योजना की अवधि में सरकारी और गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में आठ अरब रुपया विनियोजन होने की सम्भावना है । तीसरी योजना के अंत तक कृषि उत्पादन ६० लाख टन तक होने सम्भावना है । चौथी योजना में २४ लाख टन अतिरिक्त उत्पादन का अनुमान किया जाता है । देखना यह है कि इस विशाल योजना के लिए स्वयं राज्य में कितने साधन एकत्रित किए जा सकते हैं और कितनी सहायता और ऋण केन्द्रीय सरकार की ओर से मिलते हैं ।

## ऊन का नया उद्योग

राजस्थान सरकार ने बीकानेर क्षेत्र में ऊन का एक बड़ा कारखाना खोलने का निश्चय किया है । इसमें पांच हजार तकुए होंगे । अभी तक केन्द्रीय सरकार ने ऊन की कोई नई मिल खोलने का लाइसेन्स न देने की नीति अपनायी हुई है । परन्तु बहुत सम्भवतः केन्द्रीय सरकार राजस्थान को यह नयी मिल खोलने की अनुमति दे देगी । व्यापार मंत्रालय इसमें विशेष रूचि ले रहा है, क्योंकि इस मिल का ५० प्रतिशत उत्पादन निर्यात करने का निश्चय किया गया है । इस मिल के निर्माण में लगभग ४६ लाख रुपये की मशीनरी लगेगी, जिस पर ३० लाख रुपये की विदेशी मुद्रा के व्यय का अनुमान है । ■ ■

# निश्चित प्रगति पथ पर.....

(पृष्ट ८७ का शेष)

बदल जाएगा और यंत्रों एवं तैयार माल का निर्यात काफी बढ़ेगा तथा प्रति वर्ष ११०० से १२०० करोड़ रु० का निर्यात होने लगेगा, जो चौथी योजना का लक्ष्य है ।

## इस्पात और बिजली

१९७० तक भारत में लगभग १ करोड़ ६० लाख से १ करोड़ ७० लाख मी० टन इस्पात बनाने का विचार है, जो ब्रिटेन के १९५० के उत्पादन से ५० प्रतिशत अधिक होगा । जब दूसरा विश्व युद्ध शुरू हुआ था, तब प० जर्मनी में लगभग १ करोड़ ८० लाख मी० टन बनता था । इस स्तर पर भारत का औद्योगिक विकास १९७०-७१ में पहुँच जायगा ।

बिजली और सिंचाई में उल्लेखनीय सफलताएं मिली हैं । आयोजन शुरू होने से पहले भारत में मुश्किल से २३ लाख किलोवाट बिजली बनाने की क्षमता थी । अगले वित्त वर्ष के अंत तक यह २ करोड़ १७ लाख किलोवाट हो जाएगी । विश्व के इस भाग में भारत ही पहला देश है, जिसने उद्योग और खेती के लिए अणुशक्ति से बिजली बनाने का काम किया है । सिंचाई और बिजली पैदा करने के लिए विशाल बांध बनाए गए हैं । पिछले २५ वर्षों में सिंचाई में ८० प्रतिशत वृद्धि हुई है । योजना से पहले बड़ी और मझली योजनाओं से २ करोड़ ४० लाख एकड़ में सिंचाई होती थी, जबकि पहली तीन योजनाओं से बनी सिंचाई योजनाओं से अब ४ ४० लाख एकड़ में सिंचाई हो सकती है ।

इधर के वर्षों में हमारे उद्योगपतियों ने विदेशों में, उद्योगों में साझेदारी की है और उसको अपनी मशीनें और पूंजीगत माल भेजी है । अब तक हमारे औद्योगिक विदेशों से लगभग २० कारखानों में साझेदारी की अनुमति ले चुके हैं । ये साझेदारियां पश्चिमी यूरोप, एशिया और अफ्रीका में सूती और ऊनी पटसन की मिलें, तेल मिलें, पाइप, शक्कर, हल्की मशीनें, साइकिलें, सिलाई की मशीनें, ब्लेड, एसबेस्टीज सीमेंट, पैंसिल आदि के कारखानों में की गयी हैं इन कारखानों में हमारे उद्योगपतियों और भारत सरकार की भी लगभग २० करोड़ रु० की मशीनें व पूंजी लगानी पड़ेगी । ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी अर्थ-चर्चा

## अमेरीका की सहायता

कुल मिलाकर लगभग ६५ देशों को अमरीका से सहायता मिलती है। १९६४ के वित्तीय वर्ष में यह सहायता राशि ६,४६,८०,००,००० डालर अर्थात् ३० अरब ८६ करोड़ रु० थी। भारत को इसमें से लगभग १ अरब डालर अर्थात् ४ अरब ७५ करोड़ रु० की सहायता मिली। सबसे अधिक अमेरिकी सहायता भारत को मिल रही है।

अमेरिकी सहायता-कार्यक्रम दूसरे विश्व-युद्ध के कुछ समय बाद शुरू हुआ था। इसका उद्देश्य सहायता प्राप्त करने वाले देशों में ऐसी परिस्थितियां कायम करना है जिनसे उन्हें और अधिक सहायता लेने की आवश्यकता न रहे। अमेरीकी सहायता-कार्यक्रम के प्रशासक डेविड बैलू के कथनानुसार, १५ यूरोपीय देश, जापान और लेबनान अमेरीकी सहायता से स्वावलम्बी हो चुके हैं। एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका के १४ अन्य देश भी शीघ्र ही ऐसी स्थिति में पहुँच जायेंगे, जब उन्हें अमेरिकी सहायता का दिया जाना बन्द किया जा सकेगा। अगले १० वर्षों में बहुत से अन्य देश भी इस स्थिति में पहुँच जायेंगे।

## अमेरिका का नया बजट

पिछले एक वर्ष में ४० अमेरिकन पैदा हुए हैं। ३२ लाख बालक कालेज जाने लायक हो गये हैं, १७ लाख नये परिवार बन गये हैं, १३ लाख नये अमेरिकन श्रमिक श्रेणी में सम्मिलित हो गये हैं और १५ लाख अमेरिकन कार्य-मुक्ति या अवकाश-ग्रहण की स्थिति तक पहुँच गये हैं। इस तरह अमेरिका की ज़िम्मेदारियां भी अन्य देशों की तरह बढ़ती जा रही हैं। किन्तु इसके साथ अमेरिका के साधनों का भी तीव्रता से विकास हो रहा है। एक वर्ष में उसकी कुल राष्ट्रीय उत्पादन ६६० अरब डालर का हो गया है। यही देखकर राष्ट्रपति जानसन ने नये बजट में बहुत से कर कम कर दिये हैं। राष्ट्रपति के शब्दों में इस बजट के तीन उद्देश्य हैं—

१. बरबादी को खत्म करना।

२. आवश्यकताओं को पूर्ण करना, और।

३. आशाओं को पूर्ण करने की दिशा में प्रगति।

करों में कटौती उद्योग और अर्थ-व्यवस्था को प्रोत्साहन देगी, यह आशा प्रकट की गई है। कुल बजट ९९.७ अरब डालर का है, जो यद्यपि पिछले वर्षों से कुछ अधिक है तथापि घाटा कम होगा, क्योंकि आय भी बढ़ रही है, हालांकि आयकर व उत्पादन करों में कटौती के परिणामस्वरूप १५.५ अरब डालर कम आय होगी।

## रूस द्वारा प्रशंसनीय सहयोग

तीसरी योजना के लिए रूस ने ७५ करोड़ रूबल भारत को दिये हैं। चौथी योजना के लिए भारत को जितनी विदेशी मुद्रा चाहिए, उसका २२ प्रतिशत रूस से मिल जायगा, ऐसी संभावना भारत सरकार के क्षेत्रों में की जा रही है। इस योजना के लिए आवश्यक कुल विदेशी मुद्रा १५० करोड़ रुबल होगी।

रूस की सहायता मुख्य आधार भूत उद्योगों—स्पात भारी मशीनों का निर्माण, तेल, बिजली और कोयले के विकास के लिए मिलेगी। रूस ने १ जनवरी से अफ्रीका एशिया व लैटिन अमेरिका के अविकसित देशों के माल पर आयात कर समाप्त कर दिये हैं। इससे भारत को भी बहुत लाभ पहुँचेगा।

सं० रा० संघ के एक अनुमान के अनुसार अमेरिका व पश्चिमी यूरोप के देशों को अविकसित देशों से आने वाले कच्चे माल पर लगाये गये आयात करों से ८० से ९० करोड़ डालर तक की आमदनी होती है। इससे विकासोन्मुख देशों को भारी हानि होती है। इसीलिए जेनेवा की गैट कांग्रेस में कच्चे माल पर आयात कर समाप्त करने पर बहुत जोर दिया गया था। रूस ने स्वेच्छापूर्वक ही इन देशों से आने वाले कच्चे माल पर आयात कर समाप्त कर दिये हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## अमेरिकी कृषि और विश्व

अमेरिकी कृषि-वस्तुओं के निर्यात अपनी चरम सीमा पर पहुँच गये हैं। अमेरिका ने अब से पहले कभी इतनी अधिक मात्रा में कृषि-वस्तुओं का निर्यात नहीं किया है। १९६३ में उनका कुल मूल्य लगभग ५ अरब डालर था, जो समस्त कृषि-व्यापार से प्राप्त होने वाली धन राशि के छठे भाग के बराबर है। अधिकांश कृषि-वस्तुओं के निर्यात के आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि अमेरिका द्वारा १९६४ में ६ अरब १० करोड़ डालर के मूल्य की कृषि-वस्तुओं का निर्यात किया गया है। अमेरिकी फार्मों पर एक-चौथाई कृषि भूमि में अन्य देशों को निर्यात करने के लिए फसलें उत्पन्न की जाती हैं। अमेरिका की कृषि भूमि में ७ करोड़ ५० लाख एकड़ में उत्पन्न होने वाली कृषि-वस्तुएं अन्य देशों को निर्यात की जा रही हैं।

अधिकांश अमेरिकी यह समझ गये हैं कि हम अपने कृषि क्षेत्र को अपनी शेष राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था से पृथक नहीं कर सकते।

कन्सास में उत्पन्न होने वाला गेहूँ विश्व की मण्डियों में कनाडा तथा अर्जेण्टीना में उत्पन्न होने वाले गेहूँ से प्रतिस्पर्धा कर रहा है। अयोवा में उत्पन्न होने वाले सुअर डेन्मार्क तथा पोलैण्ड में उत्पन्न होने वाले सूअरों के साथ मण्डियों में बिक रहे हैं। फ्लोरिडा तथा स्पेन में उत्पन्न होने वाले संतरे, टैक्सास तथा ब्राजील में उत्पन्न होने वाली कपास, विस्कौंसिन और डेन्मार्क में तैयार होने वाली दुग्ध वस्तुएं अधिकाधिक मात्रा में विश्व की मण्डियों में बिक रही हैं।

## महासागर की लहरों से शक्ति का एकत्रीकरण

अमेरिका में छोटे आकार का एक नया यन्त्र विकसित हुआ है, जो महासागर की लहरों की गतिशीलता से शक्ति का संचय करता और इस शक्ति को विविध प्रकार के उपयोगों के लिए सुलभ करता है। इस यन्त्र का प्रयोग जेनरेटर चलाने, बैटरी में विद्युत संचार करने, या विद्युदाणविक संकेत सम्प्रेषित करने के लिए हो सकता है।

इस यन्त्र को जिस वैज्ञानिक सिद्धान्त के आधार पर विकसित किया गया है, उसे अभी तक केवल 'महासागरीय मति के प्रयोग का सिद्धान्त कहा जाता है। यह उस सिद्धान्त जैसा ही है, जिसके अनुसार स्वयं चाभी भरने वाली कलाई घड़ी अपनी चाभी भरती है। अधिकांश स्वतःचालित घड़ियां कलाई की गतियों और गुरुत्वाकर्षण शक्ति के संयोग द्वारा, जो घड़ी के भीतर लगे एक लीवर को गतिमान कर देता है और इस प्रकार व्हील को घूमने के लिए प्रेरित करता है, अपनी चाभी भरती हैं।

इस यन्त्र का उपयोग नौकाओं के उपकरणों, वायुमापक क्रोनोमीटरों और महासागरीय विज्ञान सम्बन्धी अध्ययन के हेतु दूरस्थ मानवरहित अनुसन्धान-केन्द्रों को संचालित करने के लिए बिजली की पूर्ति करने के लिए भी हो सकता है।

इस यन्त्र को मोटर-गाड़ियों विमानों या किसी भी ऐसी स्थिति में प्रयुक्त करने के लिए संशोधित किया जा सकता है, जहां आम तौर पर कुछ न कुछ गति अवश्य विद्यमान होती है। उदाहरण के लिए, यह मोटर की घड़ियों में चाभी भर सकता है, और विमानों में लगे कुछ ऋतु-वैज्ञानिक उपकरणों को चलाने के लिए बिजली प्रदान कर सकता है।

इसे लैंकास्टर, पैन्सिल्वेनिया, की हैमिल्टन वाच कम्पनी ने विकसित किया है। इसका वजन १ पौण्ड से कम है और हर दिशा में इसकी लम्बाई ३ इंच है। किन्तु इसके लिए इससे भी बड़े नमूनों का निर्माण हो सकता है।

—रूमानिया के तेल एवं रसायन मन्त्री ने बताया है कि रूमानिया हल्दिया में (कलकत्ता) लुब्रीकिटिंग संयत्र और पैट्रोकैमिकल कारखाने के साथ-साथ तेल शोधक कारखाने की स्थापना का भी प्रस्ताव रखेगा।

—ईरान की राष्ट्रीय तेल कम्पनी और अन्य कम्पनियों में जिनमें भारत की तेल प्राकृतिक गैस कम्पनी भी शामिल है, यह समझौता हो गया है कि जितना तेल निकलेगा, उसका ५० प्रतिशत ईरान सरकार का होगा और ५० प्रतिशत शेष कम्पनियों का। फिलहाल यह समझौता २५ साल तक के लिए होगा। इस अवधि के समाप्त होने पर भविष्य के लिए पुनः विचार किया जाएगा।





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-वृत्त चयन

## भारत सरकार के पास सोना

रिजर्व बैंक की एक विज्ञप्ति के अनुसार बैंक के पास २२ जनवरी को १२८.४३ करोड़ रु० का सोना मौजूद था। पहले के १५ दिनों में ही ४.९९ करोड़ रु० के सोने की वृद्धि हुई। ५ अक्टूबर १९५६ को रिजर्व बैंक के पास केवल ४०.०२ करोड़ रु० का सोना था। उस समय तक सोने की कीमत २१.२४ रु० प्रति तोला गिनी जाती थी। इसके बाद यह कीमत ६२.५० रु० प्रति तोला के हिसाब से गिनी जाने लगी। आज तक भी यही कीमत बनाई जाती है।

कानून के अनुसार रिजर्व बैंक को जारी किये गये नोटों के बदले कम से कम २०० करोड़ रु० का सोना व विदेशी सैक्योरिटियां अनिवार्य रूप से जमा रखनी चाहिए। इसमें से ११५ करोड़ रु० का सोना अनिवार्य है। विदेशी मुद्रा की आवश्यकता ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों विदेशी सैक्योरिटियों की संख्या कम होती जाती है।

## स्वर्ण संग्रह के स्रोत

एक दूसरे समाचार के अनुसार भारत सरकार के पास स्वर्ण संग्रह के चार स्रोत हैं—

१. गोल्ड बाण्ड—१२-११-६२ को गोल्ड बाण्ड बेचे गये थे, जो २८-२-६३ तक बिके। इस निधि में सरकार को ८.६१ करोड़ रु० का सोना मिला।

२. नेशनल डिफैंस फण्ड—सरकारी सूचना के अनुसार नवम्बर १९६४ तक २०६६४९ तोला सोना मिला था, जिसकी अन्तर्राष्ट्रीय दर ६२.५ रु० प्रति तोला के अनुसार १.७५ करोड़ रु० कीमत बैठती है।

३. मैसूर की खानों से मिला १८ करोड़ रु० का सोना सरकार के पास है

४. तस्कर व्यापार में जब्त—विभिन्न वर्षों में बम्बई में सरकार ने जो सोना जब्त किया, वह करीब १७६००० औंस या ४७०००० तोला सोना है। कलकत्ते के बन्दरगाह पर जब्त सोने को भी मिलाकर लगभग ८ लाख तोला बैठता है, जिसकी कीमत ५ करोड रु० बैठती है। यह हिसाब १९५८ का है। इसके बाद प्रतिवर्ष १॥ करोड़ रु० के अनुमान से इन ६ वर्षों में ९ करोड़ रु० का सोना जब्त हुआ होगा। इस तरह जब्त सोना १४ करोड़ रु० का होगा। इस तरह कुल सोना ४२ करोड़ रु० का होगया दीखता है। लेकिन सरकार को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश में सोना देना भी पड़ता है। ११ करोड़ रु० का सोना सरकार ने दिया है। अब उसके पास अब प्राप्त सोना ३१ करोड़ रु० का होना चाहिए।

## सेम के कारण और उपाय

पिछले कुछ वर्षों से पंजाब में बाढ़ें ज्यादा आ रही हैं और सेम ज्यादा पैदा हो रही है। पंजाब सरकार ने जहां ज्यादा बाढ़ आने के कारणों पर विचार किया, वहां सेम फैलने के कारणों पर भी विचार किया। सेम समिति निम्न लिखित परिणाम पर पहुंची है।

सेम के निम्न लिखित कारण मालूम किए गये हैं :

(१) अधिक वर्षा, (२) अधिक संख्या में नहरों का निर्माण, (३) पानी के निकास के प्राकृतिक रास्तों में रुकावट पड़ना, (४) बाढ़ें, (५) कृषि के आधुनिक तरीके, (६) पुराने ढंग के कुओं को प्रयोग में न लाना।

इस समिति ने इस खतरे को दूर करने के लिए जो बड़े-बड़े सुझाव दिए, वे इस प्रकार हैं—नदियों से आने वाली बाढ़ों को प्रत्येक सम्भव तरीके से रोकना, (२) निकासी नालियों की स्थिति में सुधार यदि आर्थिक दृष्टि से सम्भव हो तो बड़ी नहरों, जल मार्गों और रजवाहों को पक्का करना। (३) आवश्यकतानुसार उचित संख्या में नल कूप लगाना और (५) पानी के स्तर को उचित ऊंचाई तक रखने के लिए देसी तरीके के उन कुओं को प्रयोग में लाना, जिनका प्रयोग बन्द कर दिया गया है। (६) थुर ग्रस्त क्षेत्रों में पानी की मात्रा में वृद्धि करना अर्थात् इस समय जितनी मात्रा में पानी दिया जा रहा है, उससे २०० प्रतिशत अधिक पानी का प्रबन्ध करना, (७) फसलों की उचित रूप से अदला बदली, (८) हरी खाद का प्रयोग और (९) वर्तमान जल मार्गों के साथ-साथ प्रस्ताव नालियों का निर्माण करना।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का निर्यात कैसे बढ़ सकता है ?

श्री सतीश सक्सेना

भारत को विदेशी सिक्कों की कितनी सख्त जरूरत है, वह अब सभी जनता जान गई है और उसके लिए भगीरथ प्रयत्न हो रहे हैं । पर अभी तक इस ओर कोई ठीक ढंग से काम प्रारम्भ नहीं हो सका है । विदेशी सिक्कों की जरूरत को पूरा करने के लिए भारतीय शक्कर बड़े प्रयत्न से विदेश भेजी गई है, बड़ी मुशकिलों से अमरीका खरीदने को तैयार हुआ तो भारत में ही शक्कर का अकाल पड़ गया । अब देश की आवश्यकता को पूरा करने के लिए ही शक्कर कम है तो विदेश कैसे जायेगी ।

### उद्योगपति, जनता, सरकार—

इस समय आवश्यकता इस बात की है कि विदेशी निर्यात बढ़ाकर विदेशी सिक्कों को कमाने के लिये उद्योगपति, जनता और सरकार तीनों मिलकर प्रयत्नशील हों । कोई भी एक अकेले इस कार्य को सफलता पूर्वक नहीं कर सकता । यह तभी संभव है जब तीनों अलग-अलग और इस काम में जुट जायें और विदेशी व्यापार के नाम पर सबका सहयोग और मतैक्य हो । जिन देशों का विदेशी व्यापार बहुत बढ़ा-चढ़ा है, हम उनके तर्ज-तरीकों को सीख सकते हैं । पश्चिमी देश इस मामले में बहुत आगे हैं । अब पूर्वी देश भी आगे आ रहे हैं । रूस, चैकोस्लोवाकिया, हंगरी, रूमानिया आदि देशों ने भी एक नया ढंग जिसमें रुपये के आधार पर भारत के साथ व्यापार···हुआ है चालू करके विदेशी व्यापार पिछले थोड़े वर्षों में ही कई गुना अधिक कर लिया है । पर भारत का निर्यात बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहा है ।

संसार में विदेशी निर्यात के क्षेत्र में अमरीका सबसे ज्यादा आगे है । दूसरा नम्बर प० जर्मनी का है । जर्मनी ने विदेशी निर्यात द्वारा ही द्वितीय युद्ध से क्षत-विक्षत अपनी अर्थ व्यवस्था को इतने कम समय में सम्भाल लिया है । आज वह फिर सब प्रकार सम्पन्न है । भारत उसका सबसे बड़ा ग्राहक है और भारत के विदेशी व्यापार में उसका द्वितीय स्थान है । जर्मन जनता, उद्योग और सरकार विदेशी व्यापार के प्रति विशेष जागरुक है और इस काम में सब एक दूसरे का भरपूर सहयोग करते हैं । भारत में भी ऐसे वातावरण के निर्माण की शीघ्रातिशीघ्र आवश्यकता है । विदेशी निर्यात के मामले में सरकार को भी कुछ निर्णय करना चाहिए और भारतीय उद्योगपतियों की कठिनाइयों को हल करने में देर न करनी चाहिए ।

**विदेशी तर्ज-ढंग**—विगत कुछ वर्षों में प० जर्मनी के उद्योगपतियों ने जो ढंग अपनाया है और जिस तेजी में वहां की सरकार ने उनकी दिक्कतों को दूर करके सहयोग देना प्रारम्भ किया है, वह हमारे लिये अनुकरणीय है । प० जर्मनी की फर्मों की विशेषता है कि वह विदेशों में बड़े-बड़े कल कारखाने के ठेके ले लेते हैं और फिर वह आपस में एक-दूसरे का सहयोग लेकर उसे पूरा करते हैं । भारत में रूरकेला इस्पात मिल के निर्माण में उन्होंने जो रंग-ढंग अपनाया है, उससे भारतीय जनता, उद्योगपति और सरकार बहुत कुछ सीख सकती है । प० जर्मनी की सबसे बड़ी फर्मों ने (जिसमें क्रुप, सीमेन्स, डीमाग, मानेसमेन, ए० ई० जी० आदि हैं) छोटे-छोटे सहयोग से इसे बनाया । जर्मन जनता ने भी सहयोग दिया और सरकार ने भी उनकी कठिनाइयां दूर कीं । जर्मन सरकार ने भारत को कर्ज दिया, जिससे वह इन कारखानों के लिए जर्मन उद्योग से मशीनरी खरीद सके, रूरकेला के उत्पादन को बढ़ाने के लिए जर्मन सरकार ने अब फिर कर्ज दिया है और उन सभी जर्मन फर्मों ने पुनः कार्य आरम्भ कर दिया है ।

अन्य देशों में भी इसी प्रकार जर्मन सरकार व निर्माता काम कर रहे हैं । सीरिया में युफरेटस डाम बनाने के लिए, जिसकी कुल लागत करीब १२० करोड़ रुपया होगी, ४० करोड़ रुपया प० जर्मनी सरकार ने कर्ज देना स्वीकार कर लिया है । उसे कई जर्मन कम्पनियों का एक गुट मिलकर बनायेगा, जिसका नेतृत्व होचटिफ ए० जी० करेगा । इसी प्रकार थाईलैंड में एक रासायनिक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ८१ का शेष)

परिस्थितियों में प्रबन्ध के विज्ञान को नई समस्याओं एवं परिस्थितियों पर गम्भीरता से विचार करना होगा। आज हमारे उद्योगों में जो श्रमिक आ रहे हैं, वे अधिक शिक्षित, अधिक जागृत और सुसंगठित हैं। मताधिकार की प्राप्ति के साथ उन्हें अपने अधिकारों का भी ज्ञान हो रहा है। वे अपने जीवन स्तर को ऊंचा करना चाहते हैं। उन्हें अपने गौरव का भान हो रहा है और वे प्रबन्ध में भी भाग लेने के लिए उत्सुक हैं।

आज यह नई भावना केवल श्रमिकों में ही नहीं, अपितु क्लर्कों और दूसरे अश्रमिक कर्मचारियों में भी उत्पन्न हो रही है और मैं तो यह भी देखता हूँ कि निरीक्षकों व प्रबन्धकर्त्ताओं में भी यह नई चेतना और नई भावना उत्पन्न हो रही है। इसलिए अब प्रबन्ध कर्त्ताओं को बहुत कुछ अपने समकक्ष लोगों के साथ ही व्यवहार करना है। सभी श्रेणियां सामाजिक उत्थान और राष्ट्रीय निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण करना चाहती हैं। इसलिए अब आज्ञा पालन और विनय की परिभाषा में उनसे काम नहीं लिया जा सकता। अब व्यवसाय में काम करने वाली विभिन्न श्रेणियों में धैर्य और परस्पर सहानुभूति की भावना उत्पन्न होनी चाहिए। उन सबको नई परिस्थितियों के साथ समन्वय करना होगा। प्रबन्ध प्रशिक्षण की व्यवस्था को हमें बहुत आगे बढ़ाना होगा। आज के मनोविज्ञान, संगठित आन्दोलनों व सामूहिक मनोभावनाओं की जानकारी जहां आवश्यक है, वहां उद्योगों की प्रगतिशीलता और उनमें होने वाले नये-नये परिवर्तनों के सम्बन्ध में भी पूरी जानकारी रखनी होगी। प्रत्येक उद्योग को अपने अपने कर्मचारियों को प्रबन्ध का प्रशिक्षण देने की सुविधा और व्यवस्था करनी होगी। ■


## राजस्थान-अंक

शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

२) भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें।

—व्यवस्थापक, सम्पदा


(पृष्ठ १०२ का शेष)

खाद्य फैक्ट्री लगाने के लिए भी एक जर्मन ग्रुप को आर्डर दिया गया है। जर्मन सरकार विदेशों में उनका रुपया खतरे में न पड़ जाये इसकी वह गारन्टी करती है जिससे जर्मन फर्में बेधड़क होकर अपने निर्यात कार्य को जारी रख सकें।

जर्मन जनता और उद्योगपतियों को यह पता है कि संसार के नवोदित देशों में उनके माल के लिए विशेष बाजार है। इसका लाभ उठाने के लिए सभी उपयुक्त ढंगों से इसके अतिरिक्त अन्य ढंग भी चालू किये हैं। उन्होंने नवोदित देशों के लिए सन् १९६० में एक संस्था कायम की है जिसने अभी तक ४१ अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियां की हैं। विकसित और अविकसित देशों के प्रतिनिधियों की इन अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों से जर्मनी के उद्योगपति नवोदित देशों में विदेशी सहायता सम्बन्धी समस्याओं से परिचित हो जाते हैं और वह एक-दूसरे के लिये अधिक उपयोगी बनने की कोशिश करते हैं। ■ ■

(पृष्ठ ८२ का शेष)

देश में भोजन, कपड़े आदि की मूल जरूरतें पूरी करने और जनता का रहन-सहन सुधारने के लिए यह जरूरी है कि खेती की पैदावार और कारखानों का उत्पादन तेजी से बढ़े। इसके लिए बहुतायत से बिजली उपलब्ध होना अत्यावश्यक है।

चालू योजना में हम बिजली उत्पादन की क्षमता दुगनी करने का प्रयत्न कर रहे हैं। चौथी योजना में यह क्षमता फिर दुगुनी करने का विचार है। अपने साधनों को देखते हुए लक्ष्य काफी बड़े हैं। लेकिन देश और जनसंख्या की विशालता को और अन्य विकसित देशों को देखते हुए ये लक्ष्य बहुत छोटे हैं। अतः हमें अगली योजनाओं में भी बिजली के कार्यक्रम को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।

यह बहुत बड़ा कार्य है। लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारे योग्य इन्जीनियर इसे पूरा कर दिखायेंगे और अपनी मेहनत तथा लगन से देश को समृद्ध बनाने में योग देंगे। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**डिफैंस एण्ड डिवैलपमैण्ट विद स्टैबिलिटी** (अंग्रेजी)—ले० श्री ए० डी० श्राफ़। प्रकाशक—फ़ोरम, आफ़ फ्री इण्टरप्राइज़, सोहराब हाऊस, २३५ डा०-डी-एन० रोड, बम्बई-१,

यह छोटी सी पुस्तिका प्रमुख अर्थशास्त्री श्री श्राफ ने भारत सरकार की वर्तमान अर्थनीति की आलोचना के लिए लिखी है। सरकारने देश की सुरक्षा और विकास योजनाओं को लक्ष्य में रखकर जो आर्थिक नीति निर्धारित की है, वह विद्वान लेखक की दृष्टि में नितान्त भ्रमपूर्ण है। सरकार का समाजवादी दृष्टिकोण, योजना के बहुत ऊंचे महत्त्वाकांक्षापूर्ण लक्ष्य, मुद्राप्रसार और अधिकाधिक नियंत्रण तथा सार्वजनिक क्षेत्र का अधिक प्रसार और उद्योगों का सरकारी प्रबन्ध में त्रुटिपूर्ण संचालन, इन सभी नीतियों की लेखक ने युक्तियों तथ्यों तथा अंकों को प्रस्तुत करते हुए कठोर आलोचना की है। लेखक का दृष्टिकोण एकपक्षीय है, यह कहकर पुस्तिका में प्रकट विचारों और युक्तियों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। उनका आधार निर्बल नहीं है। सरकारी रिपोर्टों के ही उदाहरण देते हुए लेखक ने अपने विचारों को पुष्ट किया है। हमारी नम्र सम्मति में इन विचारों का शान्त और निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन करना चाहिए।

**भारत सेवक (कृषि विशेषांक)** सम्पादक—श्री बी० डी० नन्दा। भारत सेवक समाज थियेटर कम्यूनिकेशन बिल्डिंग कनाट सरकस, नई दिल्ली से प्रकाशित। इस अंक का मूल्य १ रु० तथा वार्षिक मूल्य ६ रुपया।

यह पत्र भारत सेवक समाज द्वारा बहुत समय से प्रकाशित हो रहा है। इसका उद्देश्य भारत सेवक समाज की प्रवृत्तियों का प्रचार करना है। प्रस्तुत विशेषांक में आज की प्रमुख समस्या कृषि उत्पादन के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालने वाले अनेक लेख दिये गये हैं। श्री देवर, श्री सत्य भिक्षु, श्री अवनीन्द्र और श्री वीरेन्द्र कुमार आदि के लेख पठनीय हैं। अनेक लेखों में कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक उपयोगी सुझाव दिये गये हैं। अंक का बहिरंग भी सुन्दर है।

**दिल्ली सन्देश**—(दिल्ली जन-सम्पर्क विभाग का त्रैमासिक)—सम्पादक—श्री रामलाल वर्मा। सह-सम्पादक—श्री लेखराम।

इस पत्र का प्रथम अंक हमारे सामने है। इसका उद्देश्य दिल्ली प्रशासन के कार्यों और दिल्ली में चलती हुई विविध योजनाओं तथा प्रवृत्तियों का परिचय देना है। प्रथम अंक श्री जवाहरलाल नेहरू के देहावसान के बाद निकला है। इसलिए स्वभावतः इसमें पं० नेहरू के प्रति श्रद्धांजलियों का आधिक्य है। दिल्ली का मास्टर प्लान और औद्योगिक मानचित्र पर दिल्ली, अपने-अपने विषय की अच्छी जानकारी देते हैं। पाण्डवों की चमत्कार भरी जादूनगरी रोचक है।

इस पत्र की एक बड़ी विशेषता इसका आकर्षक बहिरंग है। बीसियों चित्र इस अंक के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। ये चित्र दिल्ली की विविध प्रवृत्तियों के सम्बन्ध हैं। समस्त अंक आर्ट पेपर पर प्रकाशित हुआ है।

पत्र के सम्पादक ने अपने वक्तव्य में यह सुन्दर आश्वासन दिया है कि कोरे सरकारी प्रचार की अपेक्षा अधिक गम्भीरता और व्यापकता प्रदान करने वाली सामग्री और सूचनाएं देने का प्रयत्न किया जायगा। ऐसा करके ही सरकार द्वारा प्रकाशित पत्र अधिक उपयोगी हो सकते हैं।

## सम्पदा के ग्राहकों से

१. 'सम्पदा' कार्यालय को अपना पूरा पता शीघ्र लिख भेजें (नाम, ग्राम, डाकखाना, जिला व राज्य) ताकि समय पर 'सम्पदा' की प्रति मिलती रहे।

२. भविष्य में वार्षिक चन्दा रु० ८.५० भेजने का कष्ट करें।

—व्यवस्थापक 'सम्पदा'



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ

## बोकारो के लिए रूस से समझौता

रूस भारत को बोकारो इस्पात कारखाने के लिए विदेशी मुद्रा का खर्च १०५ करोड़ रुपये देगा। इस समझौते पर हस्ताक्षर हो गए हैं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझौता है। इसके लिए भारत कई वर्षों से प्रतीक्षा करता रहा है।

इस विदेशी मुद्रा को बोकारो इस्पात कारखाने के प्रथम चरण में खर्च किया जाएगा। प्रथम चरण में इस कारखाने में प्रतिवर्ष १५ लाख से २० लाख टन इस्पात तैयार होगा। इसकी उत्पादन क्षमता बाद में ४० लाख टन तक कर देने की व्यवस्था रहेगी।

इस समझौते के अनुसार रूस इस कारखाने के लिए सभी मशीनें सन् १९६९ तक दे देगा और उत्पादन सन् १९७० से प्रारम्भ हो जाएगा।

## मध्यप्रदेश में सीमेंट का कारखाना

भारतीय उद्योगों तथा अन्य निर्माण कार्यों को देखते हुए सीमेण्ट का उत्पादन बहुत कम है। इस दृष्टि से सीमेण्ट निर्माण के लिए नये उद्योगों की स्थापना स्वागत योग्य है। सीमेण्ट कम्पनियों के समूह ए. सी. सी. के अन्तर्गत मध्यप्रदेश में एक नया कारखाना खुला है। इसमें उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। फिलहाल इसकी उत्पादन क्षमता ४ लाख रु० है, किन्तु १९६६ तक १० लाख रु० हो जाने की सम्भावना है। यह जमूल सीमेण्ट वर्क्स देश में सबसे बड़ी सीमेण्ट फैक्टरी हो जाएगी।

ए. सी. सी. समूह में यह १५वीं मिल है। इसकी कुछ और भी विशेषताएं हैं—यह पूर्णतयः भारतीय निर्माण है। भारतीय इन्जीनियरों ने ही इसकी रूप रेखा बनाई है और आवश्यक मशीनरी अपने शाहाबाद कारखाने में बनाई गई है। कच्चे माल की आधी मात्रा भिलाई से लोहे की रद्दी राख में मिलेगी। इस प्रकार चूने के पत्थर की बहुत बचत होने लगेगी। इस कारखाने में कोयले की खपत बहुत कम होगी।

## शरावती परियोजना

प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने २४ जनवरी को ८६ करोड़ रुपए की लागत से निर्मित की जा रही शरावती परियोजना की प्रथम बिजली पैदा करने वाली इकाई का उद्घाटन किया है। यह परियोजना एशिया में सबसे बड़ी है तथा पूरी हो जाने पर १२ लाख किलोवाट बिजली का उत्पादन करेगी।

अमरीकी मदद से निर्मित की जाने वाली परियोजना के अंतर्गत १० जेनरेटर स्थापित किए जाएंगे। प्रत्येक की क्षमता ८९,१०० किलोवाट होगी। आगामी प्रत्येक ६ माह बाद एक जेनरेटर चालू हो जाएगा। सभी जेनरेटरों के निर्माण के बाद इस परियोजना द्वारा १२॥ लाख किलोवाट बिजली पैदा की जाएगी।

भारत की यह सबसे बड़ी बिजली परियोजना होगी। इसकी उत्पादन क्षमता भाखड़ा बांध से ज्यादा होगी। इसके फलस्वरूप भारत के बिजली उत्पादन में २० प्रतिशत वृद्धि हो जाएगी।

—वर्ल्ड बैंक के अध्यक्ष श्री जौफरी एम० विल्सन ने बताया है कि बर्ल्ड बैंक भारत को दिये गये ऋणों पर ब्याज दर बढ़ाने का कोई इरादा नहीं रखता। जो देश अधिक समृद्ध और विकसित हैं, उन्हीं देशों पर दिये ऋणों पर १ प्रतिशत ब्याज दर बढ़ायी जाएगी।

—रूस से समझौते के बाद बोकारो के कारखाने का निश्चित भविष्य हो जाते ही भारत सरकार ५ वें कारखाने के लिए विदेशों से चर्चा तेजी से चलाने लगी है। एंग्लो-अमरीकन कम्पनियों के समूह से एक प्रारंभिक समझौता हो रहा है, जो उद्योग के लिए पहले स्थान आदि का परामर्श देगा। इसलिए सरकार ४६ लाख रुपया इनको देगी। भारतीय पूंजी का भी इसमें भाग रहेगा। प्रारम्भ में यह कारखाना १५ लाख टन की क्षमता का होगा, जिसका ४० लाख टन तक विस्तार किया जा सकेगा। चार महीनों तक यह समूह अपना परामर्श आदि देगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—२२ जनवरी को प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने बम्बई में ३१ करोड़ रुपये की पूंजी से स्थापित प्लूटोनियम प्लान्ट का उद्घाटन किया है। यह प्लान्ट ट्रोम्बे में अणुशक्ति संस्थान ने नया लगाया है। इस प्लान्ट के द्वारा भारत में उपलब्ध थोरियम का उपयोग हो सकेगा यह प्लान्ट भारतीय प्रतिभा की रचना है। इस प्लान्ट के उत्पादनों से न केवल अणुक्षेत्र में असाधारण प्रगति होगी, किन्तु विदेशी मुद्रा भी बहुत बच जाएगी।

—दुर्गापुर में मिश्रित धातुओं के कारखाने में, जो सार्वजनिक क्षेत्र में खोला गया पहला कारखाना है, २३ जनवरी को काम शुरू हो गया है। इस कारखाने की रूपरेखा आदि दस्तूर एण्ड कम्पनी ने तैयार की थी। इस पर ८० करोड़ रु० का खर्च अनुमान है और इसके बनाने में जापान, कनाडा और ब्रिटेन के उद्योगों ने सहयोग दिया था।

—भारत सरकार ने वेतनमंडल की इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है कि कोल-श्रमिकों को अन्तरिम रूप से वेतनवृद्धि दी जाय। यह वृद्धि ३७ पैसे प्रतिदिन और ९.७५ रु० प्रतिमास के हिसाब से होगी। कोयले के मूल्य में भी सरकार ने ४० पैसे प्रति टन की वृद्धि स्वीकार करली है, ताकि बढ़े हुए खर्च कुछ पूरे किये जा सकें।

—मध्यप्रदेश में बढ़िया कोयले की नई खानों की खोज से यह आशा की जा रही है कि मध्यप्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र में बिजली की समस्या एक सीमा तक हल हो जाएगी। इस कोयले के प्रयोग से बेतवा नदी पर स्थित सतपुड़ा के शक्तिशाली विद्युत केन्द्र को और भी अधिक शक्तिशाली बनाया जा सकेगा। बैतूल जिले में नई दो कोयला पट्टियों की खान का पता लगा है, जहां १७.२७ करोड़ टन कोयले की विद्यमानता का अनुमान किया जाता है।

—ईरान की सरकार ने अपने क्षेत्र में तेल निकालने की जो सुविधाएं भारत तथा अन्य चार विदेशों की कम्पनियों की दी है, उनके बदले में ईरान सरकार को ८५ करोड़ ६६ लाख ४० हजार रु० बोनस नकद दिया जाएगा। ५ वर्ष बाद २१.१९ करोड़ और भी बोनस ईरान सरकार को दिया जायगा।

—मद्रास ईरानी तेल कम्पनी से एक समझौता हो गया है। जिसके अनुसार मद्रास के निकट एक तेल शोधक उद्योग की स्थापना की जा रही है।

---

(पृष्ठ ८६ का शेष)

## श्रमिकों की मांगें

हैदराबाद में पिछले दिनों इन्टक का वार्षिक अधिवेशन हुआ है। इसमें ये सुझाव दिए गए हैं कि सरकार को अनाज का व्यापार अपने हाथ में लेना चाहिए और राशनिंग प्रणाली प्रारम्भ कर देनी चाहिए। सरकार को भावों पर नियन्त्रण भी करना चाहिए। विभिन्न उद्योगों को अपने मजदूरों के लिए सस्ते अनाज और जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति के लिए केन्द्र बनाने चाहिएं।

समाजवाद की दिशा में आगे बढ़ने के लिए यह मांग की गई है कि किसी उद्योग में उच्चतम और निम्नतम कर्मचारी के वेतनों में १ और १० के अनुपात से ज्यादा अन्तर न हो। देश के विभिन्न राज्यों में कृषि योग्य भूमि का उच्चतर स्तर निर्धारित किया जाय और नगरों में सम्पत्ति को अधिक केन्द्रित होने से बचाना चाहिए। भूमिहीन कृषकों की अवस्था बहुत शोचनीय है, उन्हें खाली पड़ी हुई जमीनें मिलनी चाहिएं। ऐसे मजदूरों की ग्रामीण संख्या २५ प्रतिशत है।

आर्थिक शोषण के गुप्त तरीकों को समाप्त करने के लिए मैनेजिंग एजेंटों को परोक्ष रूप से अपनी पकड़ और अधिक मजबूत नहीं करने देनी चाहिए। करों से बचने के छिद्रों को बन्द करने तथा छिपी हुई धनराशि को निकालने का भी इन्टक ने सरकार से अनुरोध किया है। मजदूरों को रोजगार के लिए कानूनी संरक्षण मिले, बोनस आयोग के निर्णय को मान्य करते हुए कानून बनाया जाय, जीवन यापन सूचक सही अंक निकाले जाएं, श्रमिकों के लिए आवास और भूमि की व्यवस्था जल्दी की जाय।

लोहा- इस्पात उद्योग समिति में भाषण करते हुए श्रम और रोजगार मन्त्री श्री दामोदरम् संजीवैया ने कहा कि सरकार लोहा-इस्पात उद्योग में ठेके पर मजदूर रखने की प्रणाली को समाप्त करने के लिए कानून बनाने पर विचार कर रही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक प्रकाशन विभाग महाराष्ट्र शासन बंबई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आपके घर की रंगीन सजावट

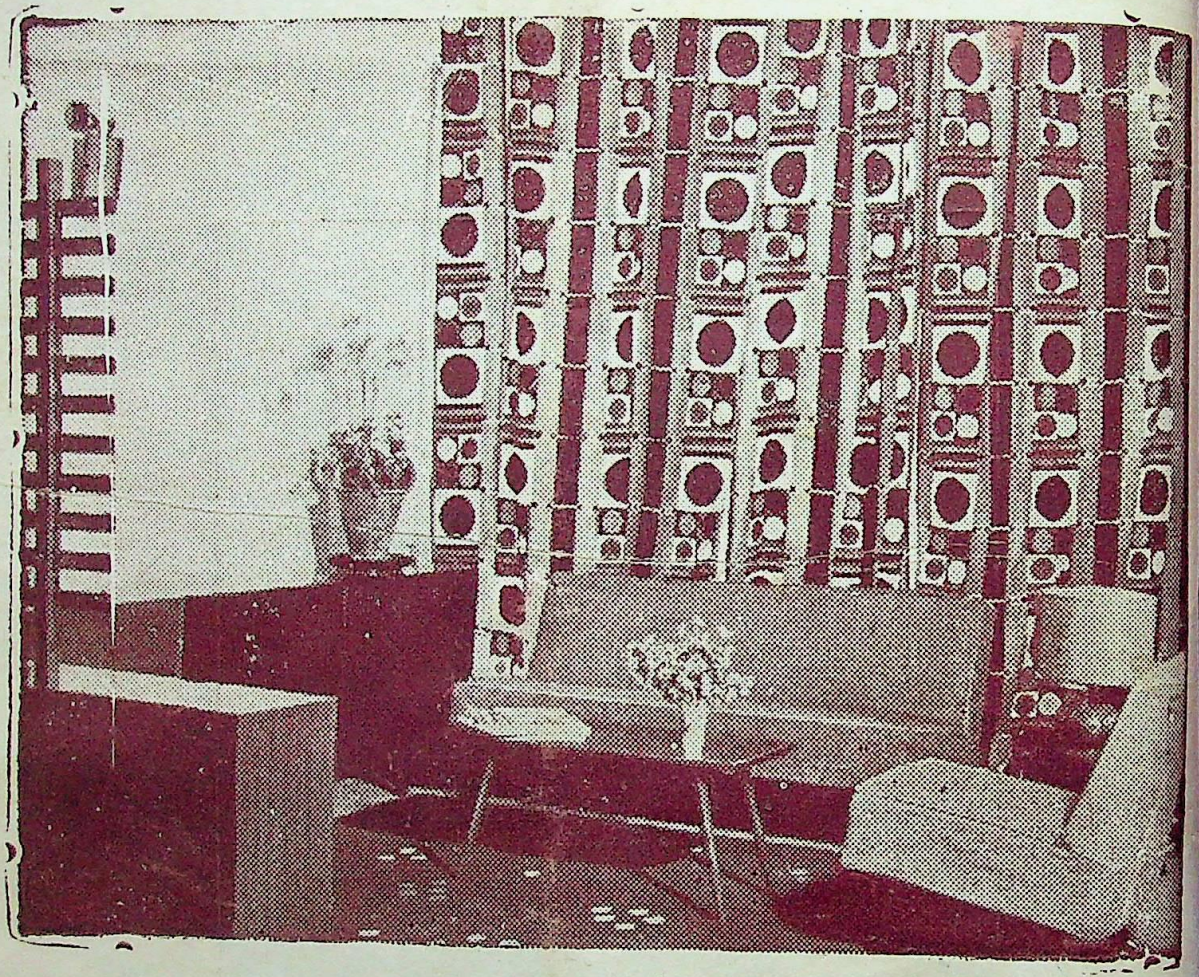

**कन्ट्रास्ट के सौन्दर्य द्वारा**

डी सी एम नवीनतम अत्यन्त रंगीन सज्जा के लिए आधुनिकतम प्रिंट्स प्रस्तुत करते हैं। सुनहरे पीले रंग के साथ आकर्षक कत्थई रंग। काली और सफेद पृष्ठ भूमि पर गहरा फिरोजी रंग।

**भारत भर में लगभग ६७० डी सी एम रिटेल स्टोरों से प्राप्य**

DCM

सुन्दरता और मजबूती का प्रतीक

## दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली

डी सी एम का एक मजबूत नया सज्जा-वस्त्र

J W T D. C. M. 3144, H.


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११ अंकितगर, दिल्ली ७ से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १४ अंक : ४

अप्रैल १९६५

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का प्रमुख
हिन्दी मासिक

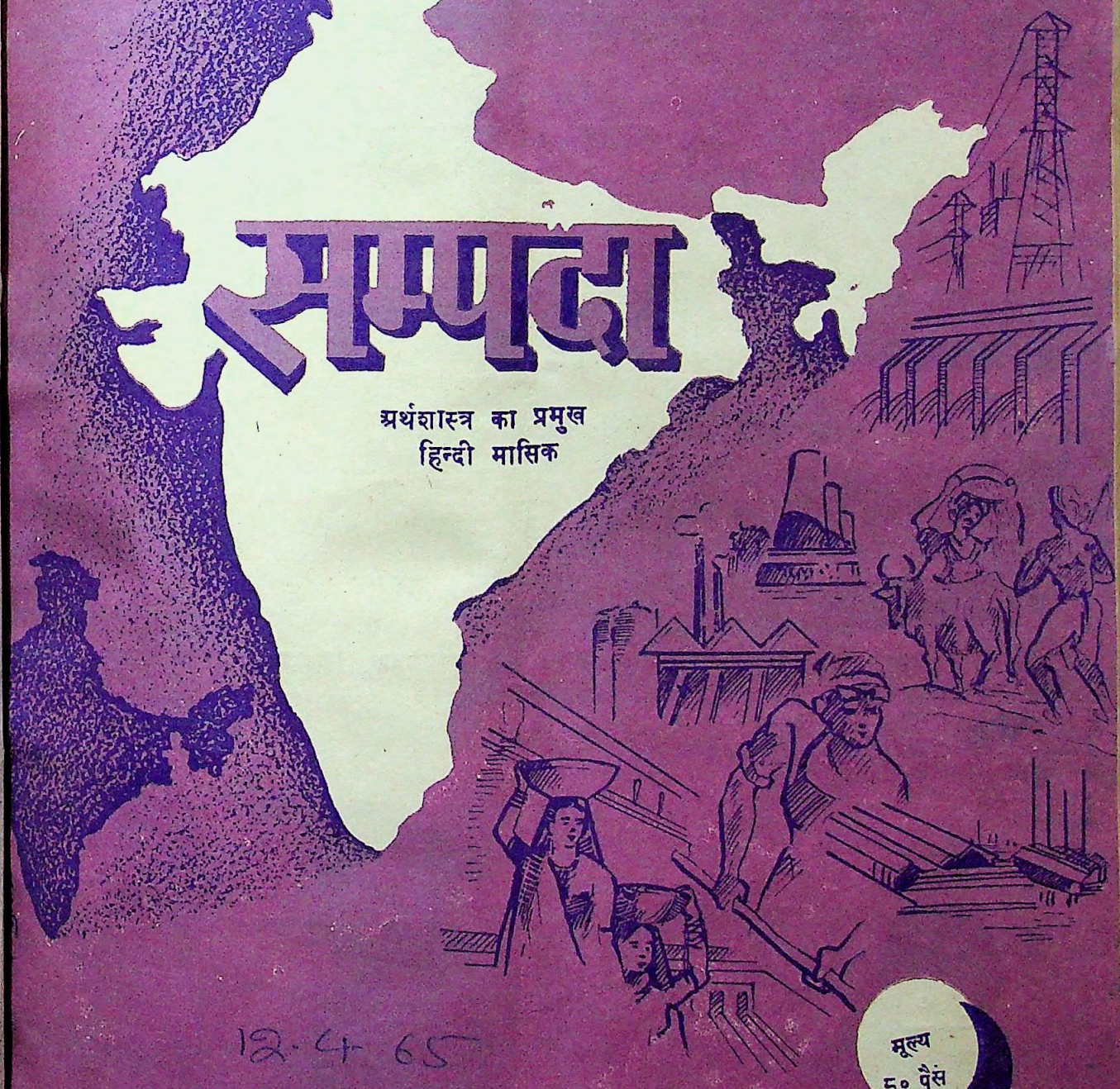

मूल्य
८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


खरीदिए अवश्य खरीदिए

# सेन्चुरी मिल्स बम्बई की प्रसिद्ध फैशन फैब्रिक्स

★ धोती ★ छपी हुई सुपरफाइन साड़ियां
★ लिनोज ★ शर्टिंग
★ सेन्चुराईज्ड् (प्रीश्रंक) पॉप्लीन
★ ड्रेस मटेरियल ★ फ्लैनल्स
★ गादलापाट ★ ड्रिल्स ★ लट्ठा
★ चादरें ★ तौलिया ★ कोटन बेस्ट
★ ब्लैंकेट आदि–आदि

निर्माता

## सेन्चुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्युफैक्चरिंग कं० लिमिटेड

इण्डस्ट्री हाऊस, १५६, चर्चगेट, रेक्लेमेशन, बम्बई-१


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## खेती की उपज बढ़ाने में प्रगतिशील किसान सहयोग दे रहे हैं !

# प्रगतिशील किसान

प्रकाशन विभाग गुरुकुल कांगड़ी

- गोबर कचरे को जलाता नहीं सुपर-फास्फेट मिलाकर उसकी खाद तैयार करता है।
- सुझाव के अनुसार चुना हुआ और प्रमाणित बीज काम में लेता है ।
- निराई-गुड़ाई कर खरपतवार को नष्ट करता है ।
- कीड़ों व बीमारियों से फसल की रक्षा के लिए ठीक समय पर उपाय करता है।
- उन्नत कृषि यंत्रों को काम में लेकर भूमि का सुधार करता है और खेत की उचित तैयारी करके ही बीज बोता है ।
- भूसंरक्षण कार्यों द्वारा पानी को नष्ट नहीं होने देता और सिंचाई के साधनों का पूरा व सही उपयोग करता है ।
- जैविक खाद के साथ-साथ उर्वरक का भी पूरा उपयोग करता है ।
- उपज की नियंत्रित मंडियों में बेचकर मेहनत का पूरा मूल्य प्राप्त करता है ।

## आप भी प्रगतिशील किसान बनकर देश की आर्थिक खुशहाली में सहयोग दीजिये ।

—:राजस्थान सरकार द्वारा प्रचारित :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दिल्ली के ग्राहकों से जरूरी सूचना

'सम्पदा' के दिल्ली स्थित प्रतिनिधि की भावी व्यवस्था के निर्णय तक किसी भी व्यक्ति को सम्पदा का चन्दा लेने का अधिकार नहीं है। खेद है कि गत वर्ष के नियत प्रतिनिधि श्री महाजन ने दो-तीन मास का कुछ हिसाब अब तक नहीं दिया है। इसलिए कोई भी बन्धु और विशेषकर शिक्षणालय बिना नये वर्ष के प्रमाण पत्र के किसी को चन्दा न दें और सिवाय दफ्तर के कोई रसीद स्वीकार न करें। उसकी जिम्मेवारी 'सम्पदा' कार्यालय पर पर नहीं होगी। जिन संस्थाओं व ग्राहकों ने १९६५ का चन्दा श्री महाजन को दे दिया है, वे रसीद की सूचना अवश्य कार्यालय को दें।

—मैनेजर सम्पदा, शक्तिनगर दिल्ली—७

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. चिन्तनीय और विचारणीय परम्परा | | १६५ |
| २. उद्योगों का विकेन्द्रीकरण | | १६६ |
| ३. सम्पादकीय टिप्पणियां— | | १६७ |
| ४. हमारी योजनाएं अवैज्ञानिक नहीं हैं | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार | १७१ |
| ५. सहकारी साख-एक अध्ययन | आदर्शकिशोर सक्सेना | १७३ |
| ६. भारत सहायक संघ की सहायता | | १७५ |
| ७. श्रमिकों का जीवन क्रम बदल रहा है!! | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार | १७६ |
| ८. योजनाओं की प्रगतिशील व्यवस्था | श्री अशोक मेहता | १७८ |
| ९. मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास | श्री योगेन्द्रनाथ | १७९ |
| १०. खाद्य-संकट के असली कारण | प्रो. बी. आर. शेनाय | १८२—२०० |
| ११. खेती में उर्वरकों का महत्त्व | श्री हुमायूं कबीर | १८४ |
| १२. अन्न क्षेत्रों का विभाजन और राज्य | श्री सुभाष | १८५ |
| १३. देश के बन्दरगाह | डा० नगेन्द्र सिंह | १८६ |
| १४. पंचवर्षीय योजना की मौलिक दृष्टि | | १८८ |
| १५. दिल्ली में मद्यपान | | १९० |
| १६. अर्थवृत्त परिचय—संततिनिरोध का दूसरा पक्ष—वस्त्र उद्योग की समस्याएं—इस्पात की प्रति व्यक्ति खपत—देश में चीनी मिलें—जनसंख्या के अनुपात से डाक्टर | | १९१ |
| १७. नया सामयिक साहित्य | | १९३ |
| १८. सरकारी इस्पात कारखानों में उत्पादन | | १९५ |
| १९. विदेशी अर्थचर्चा | | १९६ |
| २०. जीवन बीमा निगम की प्रगति | | १९७ |
| २१. स्फुट आर्थिक चर्चा | | १९८ |
| २२. इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं | | २०० |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ४
अप्रैल : १९६५

# सप्तपदी

## चिन्तनीय और विचारणीय

वित्त मंत्रियों की यह परम्परा रही है कि बजट पेश करते हुए वे आय का कम अनुमान लगाते हैं और व्यय का अधिक । ऐसा करने का उनका उद्देश्य केवल नये-नये कर लगाने का औचित्य सिद्ध करना होता है। यह बात नहीं कि संसद् के सदस्य वित्तमंत्री का ध्यान इधर न खींचते हों, किन्तु शासक दल अपने प्रबल बहुमत के आधार पर बजट पास कराने में कोई कठिनाई नहीं देखता। देश के विभिन्न अर्थशास्त्री, उद्योगपति और समाचार पत्र, जो तीव्र विरोध करते हैं, उसका कोई प्रभाव नहीं होता। हम स्वयं इन पंक्तियों में वित्त मंत्रियों की इस नीति का विरोध करते रहे हैं। वस्तुतः यह संसद् के सदस्यों को असत्य स्थिति बताकर उनसे मत लेने का एक प्रयत्न होता है।

इस अधिवेशन में लोक सभा की लेखा आकलन समिति ने केन्द्रीय सरकार की इस कुख्यात प्रवृत्ति की कठोर आलोचना की है और यह चेतावनी दी है कि "अनुमान और वास्तविक संख्याओं में ३-४ प्रतिशत से अधिक अन्तर नहीं होना चाहिए। इससे अधिक अन्तर चिन्तनीय और विचारणीय विषय है।" लेकिन सरकार ने कभी इस चेतावनी की चिन्ता नहीं की । उसकी प्रवृत्ति और नीति यथापूर्व अपरिवर्तित रही है । १९६५ की नवीनतम आडिट रिपोर्ट से ली गई यह संख्याएं इस तथ्य पर अच्छा प्रकाश डालेंगी—

करोड़ रुपयों में

| वर्ष | बजट में करों से अनुमानित आय | करों से वास्तविक आय | अनुमान और वास्तविकमें अन्तर | प्रतिशत अन्तर |
|---|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | ८३५ | ९५२ | ११७ | +१४.० |
| १९६२-६३ | ९९९ | ११८१ | १८२ | +१८.२ |
| १९६३-६४ | १३५६ | १५०५ | १४९ | +११.० |

उपर्युक्त संख्याओं से यह स्पष्ट है कि तीसरी योजना के प्रथम तीन वर्षों में करों से होने वाली आय का अनुमान प्रति वर्ष बहुत कम किया जाता रहा। १९६४-६५ में भी आयका जो संशोधित अनुमान है, वह बजट के प्रथम अनुमान से कहीं ज्यादा है । दोनों संख्याएं क्रमशः १६८१ करोड़ और १५७९ करोड़ हैं। इसका अर्थ यह है कि वित्त मंत्री स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि इस वर्ष भी बजट के अनुमानों से १०२ करोड़ रुपये की अधिक आय होगी। सम्भावना यह है कि वास्तविक आमदनी इससे भी अधिक होगी। यदि वास्तविक आय के अनुमान अपेक्षाकृत ठीक लगाए जाएं तो वित्त मंत्री के पास नये कर लगाने के औचित्य को सिद्ध करने का कोई आधार नहीं रहता। यह ठीक है कि वित्तमंत्री ने इस वर्ष कर कुछ कम किए हैं, किन्तु वस्तुतः करों में और भी अधिक राहत दी जा सकती थी।

१९६५ की आडिट रिपोर्ट में यह भी बताया गया है



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि तीसरी पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में करों की अनुमानित और वास्तविक आय में जितना अन्तर है, उसकी अपेक्षा बहुत कम अन्तर करों से भिन्न साधनों की आय की अनुमानित और वास्तविक संख्याओं में है। यह नीचे लिखी तालिका से स्पष्ट है—

(करोड़ रुपयों में)

| वर्ष | बजट में अनुमानित कर भिन्न आय | वास्तविक कर भिन्न आय | अन्तर | प्रतिशत अन्तर |
|---|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | १८३ | १८५ | २ | +१.० |
| १९६२-६३ | ३८२ | ४०४ | २२ | +५.८ |
| १९६३-६४ | ४८० | ५०० | २० | +४.१ |

इसका अर्थ यह है कि वित्त मंत्री उस आय का अपेक्षाकृत ठीक अनुमान लगाते हैं, जो करों से भिन्न साधनों से होती है। करों की आय में जहां अन्तर १४ और १८ प्रतिशत है, वहां कर-भिन्न साधनों से होने वाली आय में अन्तर ५ प्रतिशत से ज्यादा नहीं है और पहले वर्ष में तो यह अन्तर १ प्रतिशत ही रहा है।

बजट पेश करते समय वित्त मंत्री इस प्रथा का भी पालन करते हैं कि व्यय का अनुमान वास्तविक राशि से बहुत अधिक करते हैं और इस तरह जनता को यह बताना चाहते हैं कि खर्च बहुत अधिक हो रहे हैं और आमदनी बहुत कम है। नीचे की संख्याओं से यह अधिक स्पष्ट हो जायगा—

(करोड़ रुपयों में)

राजस्व खातों में व्यय

| वर्ष | बजट का अनुमान | वास्तविक व्यय | अन्तर |
|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | १०२४ | १०१२ | —१२ |
| १९६२ ६३ | १३८२ | १४७२ | + ९० |
| १९६३-६४ | १८५२ | १८१७ | —३५ |
| १९६४-६५ | २०४१ | १९९९* | —४२ |

पूंजीगत व्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | ५२९ | ४३६ | —९३ |
| १९६२-६३ | ६५२ | ६१२ | —४० |
| १९६३-६४ | ८८७ | ८१४ | —७३ |
| १९६४-६५ | ९७० | ९१२* | —५८ |

* संशोधित बजट

व्यय में अनुमान की अपेक्षा यह अधिक बचत निरंतर हो रही है। कुल व्ययों में (जिन पर मत लिया जाता है या नहीं लिया जाता है)—१९६०-६१ में ५०० करोड़ रुपये की और १९६१-६२ में ८८८ करोड़ रुपये की बजट की अपेक्षा बचत हुई है। यदि इस सम्बन्ध में भी वित्त मंत्रालय अधिक सतर्कता से काम लें तो जनता पर अधिक कर लगाने की बहुत आवश्यकता प्रतीत न हो।

भारत के प्रधान मंत्री ने उद्योग व्यापार मंडल में अधिक कर लगाने के औचित्य को सिद्ध करने की चेष्टा इसी आधार पर की है कि खर्च बहुत बढ़ रहे हैं। यदि आय और व्यय का अपेक्षाकृत ठीक अनुमान किया जाय तो शायद अधिक कर लगाने का औचित्य सिद्ध न किया जा सके। अनेक राज्य सरकारें भी केन्द्रीय सरकार से बहुत अधिक रुपये की मांग कर लेती हैं, परन्तु खर्च नहीं कर पातीं। अधिक कर लगाने का एक हानिकारक परिणाम यह होता है कि देश के उद्योग और व्यवसाय पूंजीनिर्माण में बहुत कठिनता अनुभव करते हैं। आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि कर कुछ कम लगाए जायं, ताकि न केवल उद्योग कुछ अधिक बचा सकें, बल्कि साधारण जनता भी उद्योगों के शेयर लेने के लिए प्रोत्साहित हो।

किसी बजट को पेश करते समय वित्त मंत्री का ध्यान केवल अपना कोष भरने की ओर नहीं होना चाहिए, बल्कि देश की अर्थ व्यवस्था को अधिक सुदृढ़ और सुस्थिर बनाने की ओर भी होना चाहिए।

## उद्योगों का विकेन्द्रीकरण

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में अनेक राज्यों में अपने-अपने विकास निगम बन गये हैं। इन निगमों की ओर से लोगों को भूमि की प्राप्ति और बिजली की सुविधा और सड़कों के निर्माण आदि की व्यवस्था की जाती है, ताकि उद्योग को विशेष कठिनता न हो। इस मद में विभिन्न राज्यों में जो व्यय हुआ है, वह निम्न-लिखित है।

(रुपया लाखों में)

| | |
|---|---|
| आन्ध्र प्रदेश | ७५.० |
| आसाम | १५.० |
| बिहार | ६८.१ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | |
|---|---|---|
| गुजरात | ५७.७ | लाख रु. में |
| जम्मू कश्मीर | — | ,, |
| केरल | ७३.७ | ,, |
| मध्य प्रदेश | १५६.० | ,, |
| मद्रास | — | ,, |
| महाराष्ट्र | ११४.४ | ,, |
| मैसूर | १०.० | ,, |
| उड़ीसा | १७.० | ,, |
| पंजाब | — | ,, |
| राजस्थान | १३.३ | ,, |
| उत्तर प्रदेश | २६२.० | ,, |
| पश्चिमी बंगाल | ५८.३ | ,, |

इस तालिका से यह मालूम होता है कि विभिन्न राज्यों की व्यय-राशियों में बहुत अन्तर है । पंजाब, मद्रास, जम्मू और काश्मीर में कोई राशि रखी ही नहीं दीखती। इसलिए आवश्यकता यह है कि प्रत्येक राज्य में उद्योगधन्धों की सम्भावनाओं पर पुनर्विचार किया जाय । कुछ राज्यों में उद्योगों को स्वयं अथवा उद्योग-वित्त निगमों द्वारा सहायता दी जा रही है । तीसरी पंच-वर्षीय योजना की अवधि में राज्य बहुत सम्भवतः विभिन्न राशियां व्यय करेंगे :—

## (लाख रुपयों में)

| | |
|---|---|
| आन्ध्र प्रदेश | २१४.० |
| आसाम | ६२५.० |
| बिहार | २६६.६ |
| गुजरात | — |
| जम्मू कश्मीर | — |
| केरल | ३४६.२ |
| मध्य प्रदेश | १५.० |
| मद्रास | — |
| महाराष्ट्र | ५०.० |
| मैसूर | १६४.० |
| उड़ीसा | ५३७.० |
| पंजाब | १००.० |
| राजस्थान | ४०.३ |
| उत्तर प्रदेश | १४०.० |
| पश्चिमी बंगाल | ००.२ |

इस तालिका से भी विभिन्न राज्यों द्वारा व्यय की जाने वाली राशियों में बहुत अन्तर दीखता है । अनेक क्षेत्रों में जो उद्योग की दृष्टि से विकसित नहीं हैं, उद्योग-पति नहीं जाना चाहते । इसी कारण उद्योगों का विकेन्द्री-करण नहीं हो पाता है । बम्बई नगर और उसके समीपवर्ती उप नगरों में उद्योगों की सुविधाओं के उदाहरण सभी व्यवसायी वहीं नये नये उद्योग खोल रहे हैं । इसका परिणाम यह हुआ है कि १६४१ में जहां बम्बई की जनसंख्या १८ लाख थी, वहां १६६१ में ४१.५ लाख से भी ज्यादा बढ़ गई है । यह सम्भावना भी की जा रही है कि १६८१ तक वहां की जनसंख्या ७० लाख से भी अधिक हो जायगी । १६८ वर्ग मील के बृहत्तर बम्बई में महाराष्ट्र का ६० प्रतिशत उद्योग सीमित हो गया है । कुल राज्य के श्रमिकों का ४४ प्रतिशत इस क्षेत्र में है । महाराष्ट्र का शेष विस्तृत क्षेत्र अभी तक उद्योगों की दृष्टि से बहुत विकसित नहीं हो पाया है। जो स्थिति महाराष्ट्र की है, वही अन्य बड़े उद्योग प्रधान नगरों की भी है । कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली आदि अन्य बड़े नगरों की जनसंख्या भी बहुत तेजी से बढ़ रही है । इसलिए आवश्यकता यह है कि अब बड़े नगरों में उद्योगों को स्थापित न होने देकर अपेक्षाकृत पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किया जावे ।

योजना आयोग ने चौथी योजना के आवेदन पत्र में उद्योगों के विकेन्द्रीकरण पर बल दिया है। इसके अनु-सार न केवल विविध राज्यों में उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करना होगा, किन्तु प्रत्येक राज्य को भी उद्योगों का विकेन्द्रीकरण करना चाहिए अर्थात जिन क्षेत्रों में उद्योग बहुत कम विकसित हैं, वहां नए उद्योग खोलने की सुविधा देनी चाहिए । किन्तु एक बड़ी कठिनाई यह है कि विभिन्न राज्य अविकसित क्षेत्रों में उद्योग विकास की सुविधाएं तो दे रहे हैं, किन्तु उन सुविधाओं का लाभ बहुत कम उठाया जा रहा है । केन्द्र के वित्तमन्त्री ने उन उद्योगों से रियायत करने की घोषणा की है जो अपने कारखानों को बाहर ले जाना चाहें । आज यदि कोई कारखाना अपनी वर्तमान भूमि को बेचकर दूसरी जगह जाना चाहता है, तो उसे यह भय है कि पुरानी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमीनों को बेचने में उनसे जो पूंजीगत लाभ होगा, उस पर सरकार बहुत भारी कर ले लेगी। केन्द्रीय वित्तमन्त्री ने यह आश्वासन दिया है कि जिस मात्रा तक वे अपने पूंजीगत लाभ को नये क्षेत्र में कारखाना, स्कूल, अस्पताल और क्वार्टर आदि बनाने में व्यय करेंगे, उस मात्रा पर लिया गया पूंजीगत लाभ कर वापिस कर दिया जायगा। देखना यह है कि उद्योग इस प्रोत्साहन का कितना लाभ उठाते हैं।

बड़े नगरों की जनसंख्या कम करने के लिए कुछ अन्य कदम भी उठाने पड़ेंगे। सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना होगा और अन्य स्थानों में निवास, शिक्षा, चिकित्सा और व्यापार की सुविधाएं ज्यादा देनी होंगी।

## एशियायी देशों की आर्थिक समस्याएं

'इकाफे' को, जो कि एशिया और सुदूर पूर्व के देशों की आर्थिक समृद्धि के लिये बनाया गया है, भारत सरकार ने आगामी अधिवेशन के लिए निमंत्रित किया है। यह संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से बनाया गया है। अब तक इस संगठन की ओर से २६ सम्मेलन हो चुके हैं। इस संगठन का मुख्य कार्य एशिया और सुदूर पूर्व की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करना और सहयोग देना है। वैलिंगटन (न्यूजीलैण्ड) में इस संगठन के सम्मेलन ने जो निश्चय किए, वे संक्षेप में निम्नलिखित हैं :—

इस क्षेत्र के अंतर्गत सभी देशों की राष्ट्रीय विकास योजनाओं में परस्पर समन्वय किया जाय। इस क्षेत्र की सभी सरकारों से एशिया विकास बैंक स्थापित करने की योजना में सहयोग देने के लिए कहा जाय। यह बैंक १ अरब डालर की पूंजी से खुलना चाहिए। विकास की उन प्रवृत्तियों को इससे सहायता मिलनी चाहिए, जिनको वर्तमान संगठनों से सहायता नहीं मिल सकती। इस बैंक के संगठन पर अधिक विचार करने के लिए विभिन्न देशों की एक उपसमिति भी निश्चित कर दी गई है। दिल्ली में होने वाले आगामी अधिवेशन में यह समिति अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। १९६९ के अंत में होने वाले एशिया अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भी प्रत्येक देश से सहयोग देने की प्रार्थना की गई है। इस सम्मेलन में एशिया के देशों में परस्पर व्यापार बढ़ाने और व्यापार की समस्याओं पर विचार करने का अनुरोध किया गया। अफगानिस्तान आदि जिन देशों के पास समुद्र तट नहीं है, उनकी व्यापार संबन्धी असुविधाओं पर भी विचार करने का निश्चय हुआ। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से प्रशिक्षिक शिक्षण की जो सुविधाएं उपलब्ध हैं, उनसे पूरा लाभ उठाने का भी परामर्श समस्त देशों को दिया गया।

वस्तुतः यह संगठन एशियाई देशों के लिए बहुत लाभकारी हो सकता है, परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि एशियाई देश परस्पर विरोध भाव को छोड़कर एक हों। पाकिस्तान और भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान तथा भारत और लंका के परस्पर स्वार्थ संघर्ष को राजनैतिक स्तर पर बढ़ने न दिया जाय। जिस स्तर पर योरोप के कामन मार्केट के देशों ने परस्पर तटकरों की दीवारों को तोड़ने की दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ किया है, उसी प्रकार एशियाई देशों को भी करना होगा। इसके बिना यह संगठन सुदृढ़ नहीं हो सकता।

## कृषि संस्था की हीरक जयन्ती

कृषि अनुसंधान संस्था की स्थापना बिहार के पूसा गांव में की गई थी। अब पिछले महीने में इसकी हीरक जयन्ती मनाई गई है। १९३४ के भूकम्प से तहस-नहस हो जाने के बाद इस संस्था को नई दिल्ली में लाया गया था। इस संस्था ने कृषि अनुसंधान की दशा में बहुत उन्नति की है। १२६० एकड़ क्षेत्र में यह संस्था फैली हुई है। अनुसंधान के साथ-साथ कृषि शिक्षण का भी यहां भारी प्रबन्ध है। भिन्न-भिन्न अनाजों, फलों और सब्जियों की फसलों के सुधार के सम्बन्ध में यहां अनेक परीक्षण किये गये हैं। गेहूँ और गन्ने के नये और उत्तम बीजों का अनुसंधान यहीं हुआ है। नयी अधिक उपजाऊ और रोगमुक्त किस्में निकाली गई हैं। नई फसलों के उत्पादन में एक्सरे, अल्ट्रावाइलट किरण और रेडियो विकरण आदि आधुनिक विधियों का प्रयोग किया जा रहा है। विभिन्न किस्मों के संकरण से मक्के की ऐसी किस्में निकाली गई हैं, जिनसे प्रति एकड़ ७५-८० मन मक्का पैदा होता है, जबकि साधारण बीजों से १०-१५ मन से ज्यादा उपज नहीं होती। गेहूँ की एक ऐसी किस्म है,



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसको रोएं वाली बालें होने के कारण चिड़िया नहीं खा सकती। इसी तरह सब्जियों और फलों में भी नयी किस्में निकाली जा रही हैं। फसलों के रोगों की चिकित्सा के लिए अनेक रासायनिक द्रव्य तैयार किये जा रहे हैं। ऐसी संस्था पर हमें गर्व होना चाहिए। हमें आशा है कि यह संस्था देश के कृषि विकास में और भारत की अन्न समस्या को सिद्ध करने में और भी अधिक सहायक होगी।

## एक चिन्तनीय प्रवृत्ति

बम्बई के एक समाचार के अनुसार ५ लाख रुपये की पूंजी से एक नई फैक्ट्री खुल रही है। इस फैक्ट्री में स्त्रियों की चोलियां (ब्रैजीयर) बना करेंगी। इसकी उत्पादन क्षमता ३० लाख रुपये की होगी। इस नये उद्योग के लिए अमरीका की मिडिन फार्म कम्पनी का सहयोग प्राप्त किया गया है। इसके मैनेजर मिस्टर मनरहुर ब्रिट्स ने बताया है कि इसका अधिकांश उत्पादन विदेशों को निर्यात किया जायगा। भारत में इसके उत्पादनों के लिये २०० स्टोर खोले जायंगे।

यह समाचार उस बढ़ती हुई प्रवृत्ति का सूचक है जो छोटे उद्योगों को बड़े उद्योगों की स्थापना के द्वारा समाप्त करने की दिशा में हो रही है। कुछ ही वर्षों में हमने देखा है कि साबुन का उद्योग बड़े उद्योगों ने हथिया लिया है। अब हिन्दुस्तान लीवर ही नहीं, अन्य भी अनेक बड़े उद्योगों ने अपने विपुल साधनों का प्रयोग करके घरों में चलने वाले इस उद्योग को समाप्तप्राय कर दिया है। सिले सिलाये कपड़ों का व्यवसाय दर्जियों के लिए सिर दर्द बन गया है और अचार मुरब्बा और चटनी के छोटे उद्योग भी बड़े उद्योगों के सामने समाप्त प्राय होते दीखते हैं। चमड़े के उद्योग पर तो कुछ बड़े उद्योगों का एकाधिकार हो ही चुका है। ईंटें बनाने के भी बड़े उद्योग बन रहे हैं। इस प्रकार श्रम प्रधान उद्योगों के पूंजी प्रधान उद्योगों के रूप में परिणत होने की प्रवृत्ति का निकट भविष्य में क्या परिणाम होगा, यह विचारणीय विषय है।

## भोजन का नया अखुट स्रोत

अमेरिका के जीव वैज्ञानिक जेम्स बोनर ने यह भविष्यवाणी की थी कि मानव शीघ्र ही समुद्र से भी वानस्पतिक निरामिष भोजन प्राप्त कर सकेगा, जो पौष्टिक भी होगा और स्वादिष्ट भी। यह भविष्यवाणी ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ ही वर्षों में सत्य सिद्ध हो जायगी। १९६१ से हिन्द महासागर के २.८ करोड़ वर्ग मील के विस्तृत क्षेत्र में अनुसंधान अभियान चल रहा है। इसमें भारत और अमेरिका सहित ३२ राष्ट्र भाग ले रहे हैं। समुद्र में उत्पन्न होने वाली अलगा घास से पौष्टिक तत्व प्राप्त करके नया भोजन तैयार किया जायगा। इस अनुसंधान के वैज्ञानिकों को यह विश्वास हो चुका है कि यदि सावधानी के साथ आयोजन किया जाय तो हमारा एक तिहाई भोजन पैकिट में बन्द जमा हुआ और शीघ्र पक सकने योग्य इस स्रोत से प्राप्त हो सकता है।

केवल भोजन ही नहीं, समुद्र में तरह तरह के रासायनिक और खनिज-पदार्थों का भी अक्षय भंडार है। हिन्द महासागर की तलहटी के नीचे तेल, प्राकृतिक गैस और सभी प्रकार के विशाल भंडार बन्द पड़े हैं। इनसे विश्व की ह्रासशील पूर्ति को बढ़ाने में योग मिलेगा।

लालसागर में २००० मीटर नीचे गर्म पानी के दो स्रोत मिले हैं। अरब महासागर में अन्य महासागरों की अपेक्षा ५ गुना फास्फेट पाया जाता है। अनुसंधान के सफलता पूर्वक पूर्ण हो जाने पर मौसम की भविष्यवाणी भी अपेक्षाकृत ठीक हो सकेगी। वस्तुतः समुद्र को संस्कृत साहित्य में रत्नाकर ठीक ही कहा गया है। यह रत्न केवल मोती मूंगे के रूप में ही नहीं, मानव के जीवनोपयोगी पदार्थों के रूप में भी अनन्त और अतल समुद्र में से प्राप्त किए जा सकते हैं और आज का वैज्ञानिक इसे प्राप्त करके छोड़ेगा। भारत के वैज्ञानिक भी इसमें योगदान दे रहे हैं, यह हमारे लिए गौरव की बात है।

## मोटर गाड़ियों के मूल्य

भारत सरकार मोटर गाड़ियों के वितरण पर लगे हुए प्रतिबन्ध को और अधिक कठोर करने का विचार कर रही है। इसका कारण यह बताया गया है कि मोटरों की मांग लगातार बढ़ रही है और उत्पादन कम हो रहा है। गत वर्ष मोटर उद्योग के अनुमान के अनुसार उत्पादन और मांग में बहुत कम अंतर रहने की संभावना थी, इसलिए इसने नियंत्रण को समाप्त करने की सलाह दी थी, किन्तु



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब ऐसा प्रतीत होता है कि मांग बहुत अधिक बढ़ रही है, काला बाजार बढ़ रहा है। इसलिए मोटर निर्माताओं के संघ ने ही नियंत्रणों को समाप्त करने की मांग वापिस ले ली है। अब यह भी सम्भावना कम है कि मोटरों का उत्पादन व्यय कम हो जायगा। इसलिए मोटर उद्योग पर से नियंत्रण हटाने की आवश्यकता नहीं रहेगी। इसके विपरीत नियंत्रणों को और अधिक कठोर करने की आवश्यकता है।

दूसरी ओर मोटर निर्माताओं ने अपने मूल्य पहले ही बढ़ा लिए हैं, जबकि उन्हें अभी बढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी। सरकार ने केवल टायरों पर अतिरिक्त कर लगाने का प्रस्ताव किया है। इसके परिणाम स्वरूप केवल ४०) मूल्य में वृद्धि होनी चाहिए, किन्तु उद्योग निर्माताओं ने मोटर के समस्त पुर्जों पर कर वृद्धि मानकर गाड़ियों के मूल्य ४००) रु० तक बढ़ा दिए हैं। सरकार ने १७ फरवरी से अतिरिक्त आयात कर लगाया है किन्तु मोटर निर्माताओं ने इससे पहले बनी हुई गाड़ियों के भी मूल्य बढ़ा दिए हैं, जिनके लिए उन्हें अधिक आयात कर नहीं देनापड़ा।

## भारत में डाक्टरों की कमी

एक देश की समस्या का समाधान दूसरे देश के लिए एक नई समस्या उत्पन्न कर देता है। इसका एक उदाहरण भारत और पाकिस्तान में डाक्टरों का अभाव है। पृष्ठ १६३ पर प्रकाशित तालिका इसका प्रमाण है। ब्रिटेन और अमेरिका में जो स्वास्थ्य योजनाएं चल रही हैं, उनके लिए वहां डाक्टर पर्याप्त संख्या में उपलब्ध नहीं हो रहे। इसलिए वह भारतीय डाक्टरों की नियुक्ति अधिकाधिक संख्या में कर रहे हैं। ब्रिटेन की राष्ट्रीय स्वास्थ सेवा योजना में जून १९६४ तक १६०० भारतीय डाक्टर काम कर रहे थे अमेरिका में प्रतिवर्ष १७०० विदेशी डाक्टर आजीविका के लिए जाते हैं। इनमें से १२०० भारतीय डाक्टर हैं। केवल न्यूयार्क के अस्पतालों में ही आज ३२०० भारतीय डाक्टर काम कर रहे हैं। भारत में चिकित्सकों के चुनाव के लिए अमेरिका की एक संस्था अमेरिका में चिकित्सा के प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थियों का चुनाव करती है। प्रशिक्षण के लिये गये हुए बहुत से विद्यार्थी वहीं बस जाते हैं।

इतने अधिक प्रवास के कारण चौथी योजना में स्वास्थ्य के प्रसरणशील कार्यक्रमों में बाधा पड़ने की सम्भावना है। इसलिए भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय इस बात पर विचार कर रहा है कि किसी विद्यार्थी को विदेश में प्रशिक्षण की अनुमति देने से पूर्व उसकी भारत में ३ वर्ष तक सेवा करना अनिवार्य कर दिया जाय।

## भारत पर भारी ऋण

भारत सरकार के वित्तमन्त्री की सूचना के अनुसार विदेशी सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से १ जनवरी १९६५ तक ३३२९.६५ करोड़ रुपये ऋण ले रखा है। उनमें सबसे बड़ी राशि अमेरिका की है ११२१.३५ करोड़। दूसरा स्थान पश्चिमी जर्मनी का है जिसने ४०५.०८ करोड़ रुपया दिया है। तीसरा स्थान सोवियत रूस का है जिसने भारत को ३८३.६१ करोड़ रुपया ऋण दिया है। ब्रिटेन ने भारत को ३२१.९६ करोड़ रुपया ऋण दिया है। इसके अलावा अन्य भी अनेक राज्यों ने भारत सरकार को ऋण दिया हुआ है। देखिये (पृष्ठ १७५) हम इतनी बड़ी-बड़ी राशियों को प्राप्त करने पर प्रसन्न हो सकते हैं, किन्तु साथ ही हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि यह ऋण बिना ब्याज के नहीं हैं और नदान ही में हैं। इन सबको हमें ब्याज सहित चुकाना है।

## सम्पदा का राजस्थान अंक

हमने कुछ समय पूर्व 'सम्पदा का राजस्थान अंक निकलने की घोषणा की थी। इस घोषणा का राजस्थान में बहुत स्वागत हुआ है। अनेक पाठकों ने सम्पदा के इस अंक के लिए रुपये भेज कर कापी को सुरक्षित भी करा लिया है और अनेक कृपालु विज्ञापनदाताओं ने विज्ञापन भी दिए हैं। किन्तु हमें खेद है कि हम अनिवार्य कारणों से यह अंक समय पर नहीं निकाल सके। सम्पदा के प्रेमी पाठकों के निकट हम क्षमा प्रार्थी हैं, किन्तु हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि यह अंक अवश्य प्रकाशित होगा और अधिक तैयारी के साथ। प्रकाशन तिथि की सूचना बाद में देंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी योजनाएं अवैज्ञानिक नहीं हैं

**पंचवर्षीय योजना पर कुछ आक्षेप और उनका समाधान**

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

कुछ समय पहले प्रोफैसर लैटविन ने योजना की कमियों पर एक विचारपूर्ण लेख प्रकाशित किया था। इस लेख पर अनेक अन्य विद्वानों ने भी अपने विचार प्रकट किये थे। प्रो० लैटविन ने अपने लेख में दो स्थापनायें प्रस्तुत की थीं। एक तो यह कि सरकार की ओर से किसी विकास योजना का व्यवस्थित विनियोजन लोकतन्त्र तथा व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य पर आघात करता है। उनकी दूसरी स्थापना यह थी कि भारत की पंचवर्षीय योजना का आधार वैज्ञानिक और शास्त्रीय नहीं है। भारतीय विकास योजनाओं के निर्माण में वैज्ञानिक शास्त्रीय युक्तिक्रम पर राजनीतिक दल हावी हो गये हैं। इस दूसरी स्थापना के समर्थन में उन्होंने हमारी विकास-योजनाओं पर निम्नलिखित आक्षेप किए हैं—

१. पंचवर्षीय विकास योजनाओं का मुख्य लक्ष्य देश का आर्थिक विकास होना चाहिए।

२. ऐसी सब योजनायें जो देश में कृषि और उद्योग का उत्पादन बढ़ा सकें, इन पंचवर्षीय योजनाओं में सम्मिलित की जानी चाहिए थीं, किन्तु हमारी वर्तमान योजनाओं का मुख्य लक्ष्य उत्पादन वृद्धि नहीं, समाजवाद बन गया है।

३. इसी लक्ष्य विपरीतता के कारण हमने जमींदारी उन्मूलन तथा अन्य भूमि सुधारों पर बहुत अधिक बल दिया। परिणाम यह हुआ कि हमारा उत्पादन कृषि विकास की विभिन्न योजनाओं—सिंचाई, अच्छे बीज, अच्छे यंत्र आदि के कारण जितना बढ़ना चाहिए था, उतना नहीं बढ़ सका। कृषि के विकास में जो जमींदार साधन जुटा सकता था, वह ही नहीं रहा।

४. हमारी अनेक नीतियों ने, जो समाजवाद के नाम पर चलाई गईं, पूंजी निर्माण को निरुत्साहित किया। श्रमिकों के हित के नाम पर आधुनिकीकरण की प्रगति कुछ शिथिल हो गई। उनके वेतन तथा मंगल कार्य आदि में होने वाले खर्च ही बहुत नहीं बढ़ गये, नई अद्यतन मशीनरी के लगाने में भी इसलिए संकोच किया गया कि श्रमिक बेकार न हो जायें।

५. सरकार की कर निर्धारण की नीति भी देश के आर्थिक विकास को शिथिल करने का एक साधन बन गई है। जितने नये-नये कर लगेंगे, उतना ही पूंजी निर्माण कम होगा।

६. खादी का अर्थशास्त्र वस्तुतः आज का अर्थशास्त्र नहीं है। परन्तु सरकार एक वर्ग विशेष को संतुष्ट करने के लिए भावनाओं के नाम पर करोड़ों रुपया खर्च कर रही है। इसका बोझ जनता को ही उठाना पड़ता है।

७. मद्य निषेध की नीति के कारण राज्य सरकारों को करोड़ों रुपयों की हानि होती है और उधर नाजायज शराब बेची जाती है।

८. शाकाहारी समाज की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सरकार मुर्गी पालन और मत्स्य व्यवसाय पर यथेष्ट ध्यान नहीं दे पाती और परिणामतः खाद्य समस्या पूरी तरह हल होने में कुछ कठिनता बढ़ती है। आयुर्वेद पर भी करोड़ों रुपये व्यय आर्थिक दृष्टि से बहुत लाभकारी सिद्ध नहीं हो रहा।

९. विभिन्न भारी उद्योगों को स्थापित करने के लिए स्थान का निर्णय, आर्थिक आधार पर नहीं, विभिन्न प्रभावशाली राज्य सरकारों के दबाव में आकर किया जाता है। तेल संशोधन के दो कारखानों का स्थान-निर्णय इसी तरह किया गया है।

१०. पिछले वर्षों के अनुभव से यह भी सिद्ध हो चुका है कि सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगों का निरन्तर विस्तार बहुत लाभकारी नहीं रहा। अनेक सार्वजनिक उद्योगों में वर्षों तक कोई लाभ ही नहीं हुआ और हुआ है तो बहुत कम।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११. भिन्न-भिन्न राजनीतिक हितों को संतुष्ट करने के नाम पर हमारी योजनाएं बहुत बहुमुखी हो गई हैं और इस कारण हमारे साधन और हमारी शक्तियां बिखर जाती हैं। नमक कर से नागरिकों पर बहुत थोड़ा बोझ डाल कर भी करोड़ों रुपये की आमदनी हो सकती है, परन्तु एक झूठी भावना का ख्याल करके वह कर नहीं लगाया जा रहा।

१२. कुछ एक प्रभावशाली व्यक्तियों के संतोष के लिए प्राथमिक और शिल्पिक शिक्षा के हितों का बलिदान करके नाच-गान और नाटक आदि पर कला और संस्कृति के नाम से भारी रकम खर्च की जा रही है।

१३. नई पंचवर्षीय योजनाओं की घोषणा प्रायः ऐसे समय की जाती है, जब देश में आम चुनाव होने के दिन निकट होते हैं। इसलिए स्वभावतः पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण आकर्षक नारेबाजी को पुष्ट करने के लिए किया जाता है। योजना का निर्माण उद्योग और व्यापार तथा कृषि के विशेषज्ञों द्वारा नहीं, राजनीतिक नेताओं के द्वारा होता है। यही कारण है कि योजना व्यावहारिक और वैज्ञानिक आधार पर नहीं बन पाती।

## परन्तु

हमने ऊपर की पंक्तियों में संक्षेप से आलोचकों की सम्मति और युक्तियां देने का प्रयत्न किया है। इस युक्तियों के समर्थन में और भी कुछ न कुछ कहा जा सकता है, परन्तु उनका सारांश हमने दे दिया है। प्रस्तुत पंक्तियों में हम इन विचारों पर ही कुछ निवेदन करना चाहते हैं।

अर्थशास्त्र को वैसा वैज्ञानिक स्वरूप देना सम्भव नहीं है, जो रसायन, भौतिक शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र तथा गणित आदि को दिया जाता है। अर्थशास्त्र का सम्बन्ध जड़ प्रकृति से नहीं, जीवित मानव से है, जो अपने आप में बोलता है, विचार करता है, अपनी कुछ इच्छाएं प्रकट करता है, तथा उन इच्छाओं की पूर्ति के लिए कुछ प्रयत्न भी करता है। इसलिए अर्थशास्त्र या कोई भी समाजशास्त्र जन भावनाओं के प्रतिकूल नहीं जा सकता, उसे सदा जन भावनाओं का ध्यान रखना ही पड़ेगा और उनके अनुकूल अपने नियमों और आदर्शों में कुछ परिवर्तन भी करना होगा। आज से हजार वर्ष पहले २ और २ मिल कर चार होते थे, तो आज भी २ और २ मिल कर ५ नहीं होते, किन्तु इस के विपरीत जनता की आर्थिक प्रवृत्तियां काल और देश के अनुसार बदलती रहती हैं। तदनुसार अर्थशास्त्र की धारायें भी बदलती रहती हैं। एडम स्मिथ से कीन्ज और रोस्टोव तक न जाने कितने आचार्य समय-समय के अनुसार नई से नई विचारधारायें उपस्थित कर चुके हैं और अभी कितने नये अर्थशास्त्री आकर नये विचार प्रस्तुत कर रहे हैं। इसलिए अर्थशास्त्र को जड़ विज्ञान का स्वरूप नहीं दिया जा सकता और न उसे जटिल सीमाओं में बांधा जा सकता है।

## अर्थशास्त्र जड़ प्रकृति का विज्ञान

अर्थशास्त्र का सम्बन्ध मानव से है, जब हम यह कहते हैं, तो उसका अर्थ २-४ या १०-२० उंगलियों पर गिने जाने वाले उद्योगपति व्यवसायी नहीं होते। मानव का अर्थ मानव जाति से होता है। इसलिए अर्थशास्त्र के आचार्यों और आर्थिक योजनाओं के निर्माताओं को सदा मानव जाति के हितों को सदा अपने सामने रखना होता है। देशों के राजनीति और शासन विधान के मूल में भी अधिकतम मानव समुदाय के हित का ही विशेष ध्यान रखना पड़ता है। और यही कारण है कि शासन विधान और दण्ड नीति में अपहरणकारियों, तस्करों और हिंसकों की स्वतन्त्रता पर कठोर अंकुश लगाए जाते हैं। कोई भी दुकानदार कम तोलेगा या अनुचित रूप से मुनाफा लेगा, तो किसी भी सभ्य देश की सरकार उसे दण्ड अवश्य देगी। वह व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नाम से उससे बचने का प्रयत्न नहीं कर सकता। अर्थशास्त्र भी इस प्रकार के समाज शास्त्रों का अपवाद नहीं है।

यदि हम इस तथ्य को समझ लें तो प्रो० लैटविन और उसकी श्रेणी के अन्य विचारकों के बहुत से आक्षेप स्वयंरद्द हो जाते हैं। तब यह भी समझ में आ जाता है कि पंचवर्षीय विकास योजनाओं का मूल उद्देश्य केवल

(शेष पृष्ठ १७८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सहकारी साख—एक अध्ययन

श्री आदर्श किशोर सक्सेना, भिण्ड (म० प्र०)

भारत में सहकारी साख आन्दोलन का संगठन स्तूपाकार रूप में है। ग्राम स्तर पर प्राथमिक साख-समितियां (primary Credit Cooperatives) हैं, जो अपने सदस्यों को व्यक्तिगत जमानत पर उनकी अंश पूंजी तथा निक्षेपों के अनुपात में उत्पादक कार्यों के लिए ऋण प्रदान करती हैं। कोई १० या अधिक ( किन्तु १०० से अधिक नहीं ) समान-हित वाले तथा सहकारिता के सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाले व्यक्ति मिलकर ऐसी समिति की स्थापना कर सकते हैं। जिला स्तर पर केन्द्रीय सहकारी बैंकों (Central Cooperative Banks) की स्थापना की गई है, जो प्राथमिक-साख समितियों के लिए केन्द्रीय वित्त संस्था के रूप में कार्य करते हैं। जिले की सभी प्राथमिक समितियां केन्द्रीय सहकारी बैंक की सदस्य होती हैं। ये बैंक अपनी सदस्य समितियों को ऋण देती हैं तथा अधिक साधनों वाली समितियों को ऋण दिलाकर प्राथमिक समितियों के लिए सन्तुलन केन्द्र का कार्य भी करते हैं। राज्य स्तर पर प्रादेशिक सहकारी बैंक (State Cooperative Bank) होता है, जो राज्य के सभी केन्द्रीय बैंकों का संघ होता है। ये बैंक सरकारी प्रतिभूतियों अथवा कृषि विनिमय पत्रों की प्रतिभूति पर केन्द्रीय सहकारी बैंकों, कृषि-साख समितियों तथा अन्य संगठनों को ऋण प्रदान करते हैं। अपने प्रदेश केन्द्रीय बैंकों के कार्यों में समन्वय स्थापित करना, उन पर नियंत्रण रखना, सहकारी आन्दोलन और द्रव्य बाजार से सम्बन्धित करना तथा सम्पूर्ण सहकारी आन्दोलन के लिए वित्त की व्यवस्था इन बैंकों के अन्य मुख्य कार्य हैं। ये बैंक एक ओर तो सहकारी आन्दोलन एवं राष्ट्रीय बाजार और दूसरी ओर रिजर्व बैंक—दोनों के मध्य सम्बन्ध स्थापित कराते हैं। प्राथमिक सहकारी समितियां केवल अल्पकालीन साख की पूर्ति करती हैं। उनके द्वारा दीर्घकालीन साख प्रदान नहीं की जाती है। दीर्घकालीन ऋणों के लिए भूमिबन्धक बैंक (Land-Mortgage Bank) स्थापित किए गये हैं, जो कृषकों को अधिक से अधिक ४० वर्षों तक के लिए ऋण दे सकते हैं।

## लक्ष्य एवं उपलब्धियां

प्रथम पंचवर्षीय योजना में इस बात को स्वीकार कर लिया गया था कि साख के वितरण तथा उसके उत्पादक कार्यों के लिए उपयोग पर नियंत्रण रखने के लिए राज्य की अपेक्षा सहकारिता अच्छा माध्यम है। अतः निश्चित किया गया था कि विकास कार्यों के लिए तकावी ऋण सहकारी समितियों के माध्यम से ही वितरित किये जाएंगे। योजना-अवधि में १०० करोड़ रु० की अल्पकालीन, २५ करोड़ रु० की मध्यम-कालीन तथा ५ करोड़ रु० की दीर्घकालीन सहकारी साख की व्यवस्था करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। किन्तु १९५५ तक क्रमशः ३० करोड़, १० करोड़ तथा ३ करोड़ रुपये की सहकारी साख की व्यवस्था ही हो सकी।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में यह लक्ष्य निर्धारित किया गया था कि सहकारी साख समितियों की सदस्यता १५० लाख कर दी जायगी तथा १५० करोड़ रु० की अल्पकालीन, ५० करोड़ रु० की मध्यम तथा २५ करोड़ रु० की दीर्घकालीन साख की व्यवस्था सहकारी आधार पर की जाएगी। योजना के अन्त तक २२८.३१ करोड़ रुपये की सहकारी-साख की उपलब्धि का अनुमान है।

## प्राथमिक साख समितियों की प्रगति

| | १९५१-५२ | १९६१-६२ |
|---|---|---|
| समितियों की संख्या | १,०७,९२५ | २,१५,०८१ |
| सदस्यों की संख्या | ४८ लाख | १९६ लाख |
| कार्यशील पूंजी | ४५.२२ करोड़ रु. | ३२५.३३ करोड़ रु. |
| दिये गये ऋण | ३६.६६ ,, ,, | २२८.३१ ,, ,, |

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत साख-समितियों की संख्या बढ़ाकर २,३०,०००, सदस्यता बढ़ाकर ३७० लाख करने तथा ५३० करोड़ रु० के अल्प तथा मध्यम कालीन एवं १५० करोड़ रु० की दीर्घकालीन साख की व्यवस्था करने के लक्ष्य निर्धारित किए गये हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना के अन्त तक कृषि जन संख्या का ६०% भाग सहकारी-साख की परिधि में आ जावेगा। इस योजना में सहकारी-साख आन्दोलन की दुर्बलता को दूर करने के लिए प्राथमिक सहकारी समितियों पुनःगठन पर विशेष महत्व दिया गया है।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों की प्रगति के बारे में उपमन्त्री श्री एस. डी. मिश्र ने १४ मार्च १९६४ को लोक-सभा में जो आंकड़े प्रस्तुत किये, वे इस प्रकार हैं :

| वर्ष | प्रदत्त सहकारी साख की मात्रा (करोड़ रुपयों में) |
|---|---|
| १९६१-६२ | २२८ |
| १९६२-६३ | २५६ |
| १९६३-६४ | ३१८ (संभावित) |

श्री मिश्र ने स्वयम् इस बात को स्वीकार किया है कि सहकारी-साख की यह प्रगति सन्तोष जनक नहीं है तथा इस सम्बन्ध में तृतीय पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

## अनेक दोष

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि सहकारी साख आन्दोलन वांच्छित प्रगति नहीं कर सका है क्योंकि इस आन्दोलन में कुछ गंभीर दोष उत्पन्न हो गये हैं। साख-आधार, विशेषतः प्राथमिक साख समितियों के स्तर पर, प्रबन्ध एवं संगठन सम्बन्धित दुर्बलतायें, ऋण प्रदान करने की गलत नीतियां, न चुकाये गये ऋणों की बढ़ती हुई मात्रा आदि इसकी असफलता के कुछ कारण हैं।

चौथी पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन में वृद्धि करने की विशेष व्यवस्था की जा रही है। इस सन्दर्भ में सहकारी-साख का महत्व और भी अधिक हो जाता है।

सहकारिता पर योजना-आयोग के वर्किंग-ग्रुप ने यह प्रस्ताव रखा है कि चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक ६१० करोड़ रुपये की अल्पकालीन एवं मध्यम कालीन सहकारी साख का लक्ष्य निर्धारित चाहिए।

यह लक्ष्य इस अनुमान पर प्रस्तावित किया गया है कि चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक कुल लगभग ११२६ करोड़ रुपये की कृषि-साख की आवश्यकता होगी। सहकारी साख के विस्तार के इस कार्यक्रम के प्रति रिजर्व बैंक के प्रतिनिधि ने शंका प्रकट करते हुए यह सुझाव दिया है कि सहकारी समितियों की असंयमित संख्या वृद्धि करने से पूर्व वर्तमान समितियों को ठोस कर लेना अधिक उपयुक्त होगा। इस सुझाव की वास्तविकता के प्रति संदेह नहीं किया जा सकता।

वर्किंग-ग्रुप ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि ग्रामीण-समुदाय के निर्बल अगों जैसे कृषि मजदूरों तथा उप-सीमान्त कृषकों (Sub-marginal Cultivators) को वर्तमान सहकारी संस्थाओं से लाभ नहीं पहुँच सका है। इनके लिये अलग से समितियां बनाने की योजना भी विचाराधीन है। तृतीय योजना की बची हुई अवधि में ३५० सामुदायिक विकासखण्डों में ऐसी नमूने की (pilot) समितियां स्थापित करने तथा यदि यह अनुभव लाभदायक सिद्ध हो तो चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रत्येक विकास-खण्ड में एक-एक ऐसी समिति की स्थापना करने का सुझाव भी इस वर्किंग-ग्रुप ने दिया है।

सहकारी साख के विस्तार के क्षेत्र में रिजर्व बैंक तथा स्टेट बैंक आफ इन्डिया अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दे रहे हैं। रिजर्व बैंक राज्य सहकारी बैंकों को राज्य सरकार की गारंटी पर अग्रिम तथा पुर्नवटा सुविधा के रूप में अल्पकालीन तथा मध्यमकालीन ऋण प्रदान करता है तथा राज्य सरकार द्वारा गारंटी दिये गये भूमि बन्धक बैंक के ऋण-पत्र खरीद कर दीर्घकालीन साख के क्षेत्र में भी कार्य करता है। बैंक राज्य सरकारों को सहकारी साख संस्थाओं की अंश पूंजी खरीदने के लिये भी दीर्घकालीन ऋण प्रदान करता है। रिजर्व बैंक के द्वारा राष्ट्रीय कृषि साख (दीर्घ कालीन क्रियाऐं) कोष तथा राष्ट्रीय कृषि साख (स्थिरी करण) कोष नामक दो कोषों की स्थापना से सहकारी साख आन्दोलन को पर्याप्त बल मिला है। १९६२-६३ वर्ष में इस बैंक द्वारा २२०.२८ करोड़ रु. की ग्रामीण साख प्रदान की गई। पिछले दस वर्षों में रिजर्व बैंक द्वारा दी जाने वाली ग्रामीण साख की राशि लगभग २० गुनी हो गई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेट बैंक आफ इन्डिया की तो स्थापना ही अखिल भारतीय साख सर्वेक्षण समिति की सिफारिश पर की गई थी। यह बैंक जहां केन्द्रीय साख बैंक दुर्बल होते हैं, वहां इन बैंकों के परामर्श से विपणन तथा विधायन सहकारी समितियों को ऋण प्रदान करता है। भूमि बन्धक बैंकों के ऋण पत्र खरीद कर, उन्हें अग्रिम स्वीकार करके तथा अन्तरिम सहायता प्रदान करके इस प्रकार के बैंकों को योग प्रदान करता है। स्टेट बैंक के १०वें वार्षिक प्रतिवेदन में बताया गया है कि ३। दिसम्बर १९६४ को समाप्त होने वाले वर्ष के अन्त तक इस बैंक ने सहकारी साख संस्थाओं को ६६.९ करोड़ रु० की सीमा स्वीकार की, जबकि गत वर्ष यह राशि केवल ४४.५ करोड़ रुपया थी। ग्रामीण तथा अर्द्ध शहरी क्षेत्रों में अपनी शाखाएं में खोल कर यह बैंक ग्रामीण पुनःनिर्माण के क्षेत्र में अभी २५ फरवरी को पत्रकारों की एक सभा में बैंक के चेयरमैन श्री वी० वेनकटप्पाइया ने यह घोषणा की है कि स्टेट बैंक एक नए प्रकार की ग्रामीण-साख का विकास करने की योजना बना रही है। इस नवीन योजना के प्रथम चरण में ५० और ७० के बीच नमूने के केन्द्र (Pilot Centres) खोले जायेंगे जो कि मुख्यतः मध्यम-कालीन साख प्रदान करेंगे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सहकारी साख आन्दोलन भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में विशेष महत्त्वपूर्ण भाग अदा कर रहा है। भले ही हम कितने बड़े-बड़े कारखाने क्यों न खड़े कर लें, भारतीय आर्थिक नियोजन की सफलता कृषि क्षेत्र की सफलता पर निर्भर करती है। यह पाठ हमें द्वितीय एवं तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं ने अच्छी तरह सिखा दिया है। इस दृष्टि से सहकारी-साख आन्दोलन को संगठित करके उसे बल प्रदान करना आज की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

■ ■

# भारत सहायक संघ की सहायता

भारत सहायक संघ अनेक वर्षों से भारत को अरबों रुपये की सहायता दे रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंतिम वर्ष इस संघ से कितनी सहायता मिलेगी, यह आगामी दो-एक सप्ताहों में स्पष्ट हो जायगा। भारत ने १२६ करोड़ डालर की प्रार्थना की थी, किन्तु सम्भावना यह है कि ११० करोड़ डालर से अधिक नहीं मि गा।

इस संघ के सदस्य निम्नलिखित देश हैं :—

अमेरिका (संयुक्त राज्य), आस्ट्रिया, इटली, कनाडा, जर्मनी (पश्चिमी), जापान, फ्रांस, बेल्जियम, ब्रिटेन, हालैंड और विश्व बैंक। इस योजना के पहले चार वर्षों में इन देशों ने ४४४.५ करोड़ डालर की सहायता दी थी। अभी तक उपर्युक्त देशों ने पिछले चार वर्षों में निम्नलिखित राशियां दी हैं :—

## सहायक संघ की भारत को सहायता

(मिलियन डालरों में)

| | ६१-६२ | ६२-६३ | ६३-६४ | ६४-६५ | ६५-६६ |
|---|---|---|---|---|---|
| अमेरिका (संयुक्त राष्ट्र) | ५४५ | ४३५ | ४३५ | ४३५ | |
| आस्ट्रिया | — | ५ | ७ | १ | |
| इटली | — | ५३ | ४५ | ३६ | |
| कनाडा | २८ | ३३ | ३०½ | ४१ | |
| जर्मनी (पश्चिमी) | २२५ | १३९ | ९९½ | ९५ | |
| जापान | ५० | ५५ | ६५ | ६० | |
| फ्रांस | १५ | ४५ | २० | २० | |
| बेल्जियम | — | १० | १० | — | |
| ब्रिटेन | १८२ | ८४ | ८४ | ८४ | |
| हौलैंड | — | ११ | ११ | ११ | |
| विश्व बैंक | २५० | २०० | २४५ | २४५ | |
| योग | १२९५ | १०७० | १०५२ | १०२८ | १२६० |

■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# श्रमिकों का जीवन क्रम बदल रहा है !!!

विदेशों में और विशेषकर अमरीका में कुछ ऐसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं, जिनसे खेती और उद्योग के सब श्रमिकों के जीवन क्रम में बिल्कुल क्रांति आ जायगी। उद्योगों का समस्त वातावरण ही बिल्कुल बदल जायगा। पिछले १५ वर्षों में वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण अब अमेरिकन मजदूर, मजदूर या श्रमिक नहीं रहा। वह बाबू बनता जा रहा है। उसे कारखाने में जाकर अब कोई कठोर परिश्रम नहीं करना पड़ता। वह अब पहले की तरह न बहुत सवेरे उठता है और न शाम को देर तक काम करता है। अब उसे सप्ताह में अधिक छुट्टियां मिलती हैं, और काम के समय घंटों में भी उसे बातचीत और आराम करने का समय मिल जाता है। अब उसे घंटों खड़े रहकर थकान से छुट्टी मिल गई है। वह भी दफ्तर के बाबू की तरह अपनी मेज पर बैठे बैठे वह सब काम करता है, जो आज से कुछ वर्ष पहले भट्टियों के सामने लपटें और शोलों का मुकाबला करते हुए हमेशा पसीने बहाते हुए करता था।

अब जैसे दिल्ली में बैठे हुए सरदार पटेल ने विशाखापटनम के समुद्र में जहाज का प्रवेश कराया था, उसी तरह अमेरिकन मजदूर अपने शानदार वातानुकूल कमरे में बैठा हुए बिजली के बटन दबा कर लोहे के कारखाने को चलाता है। जब वह मशीन के काम को देखना चाहता है, तो उसके दफ्तर में लगा हुआ टेलीविजन मशीनों की गतिविधि की सूचना देता रहता है और वह आवश्यकतानुसार नया बटन दबाकर मशीन को तेज चलने, धीमे चलने व बन्द करने का आर्डर दे देता है। अब उसे न भट्टी के आगे झुलसना पड़ता है और न पसीना बहाना पड़ता है। इन सब परिवर्तनों के कारण अब मजदूर को मजदूर नहीं कहा जा सकता। अब उसे कारखाने में काम करने के लिए नीली पोशाक पहनने की जरूरत नहीं रहती। अब वह एक इंजीनियर की भांति मीटरों को पढ़ता है और सुई की गति तथा टेलीविजन देखकर यह पहचान जाता है कि मशीन में रुई, लोहे या अन्य धातु का प्रवाह किस गति से हो रहा है और वह क्या शक्ल धारण कर रहा है।

बहुत से थका देने वाले काम खुद मशीनें करने लगी हैं। यह पद्धति "औटोमेशन" (स्वचालित मशीनें) के नाम से प्रसिद्ध है, जो अमेरिका में निरंतर बढ़ती जा रही है।

इस आविष्कृत मशीन पद्धति के अमेरिका में अनेक महत्त्वपूर्ण परिणाम हो रहे हैं। पहला महत्त्वपूर्ण परिणाम यह है कि वहां शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरों की संख्या निरन्तर कम हो रही है। अब उनकी जगह सफेदपोश (ह्वाइट कालर) कर्मचारियों की संख्या बढ़ रही है। दूसरा परिवर्तन यह है कि अब उद्योगों में महिला श्रमिकों की संख्या, जिन्हें अब श्रमिक न कहकर दफ्तरी बाबू कहना चाहिए बढ़ रही है। आज से कुछ ही वर्ष पूर्व छः में से एक कर्मचारी ह्वाइट कालर होता था, लेकिन अब इनकी संख्या ५० प्रतिशत हो गई है। पहले एक करोड बीस लाख स्त्रियां उद्योगों में काम करतीं थी किन्तु अब इनकी संख्या दो करोड़ तक पहुँच गई है। इसी तरह अब काम की सरलता के कारण बहुत सी गृहस्थ स्त्रियां भी उद्योगों में प्रवेश करने लगी हैं। अमेरिकन श्रम-विभाग के अनुसार १९७० तक २५ से ३४ वर्ष तक की ३८ प्रतिशत स्त्रियां उद्योगों में काम करने लगेंगी। तब प्रत्येक तीन श्रमिकों में से एक श्रमिक स्त्री होगी।

उद्योग के साथ-साथ कृषि में भी विज्ञान के नये आविष्कारों का क्रांतिकारी प्रभाव पड़ा है। सिंचाई, हल चलाने, बीज बोने, फसल काटने और अनाज की सफाई तथा बोरों में भरने और गाड़ी में लदान करने आदि सब काम मशीनों द्वारा होने लगे हैं। इन सबका परिणाम यह हो रहा है कि अब किसान को दोपहर की कड़ी गर्मी और ठिठुराती हुई सर्दी में खेतों में उपस्थित रहकर खून-पसीना एक नहीं करना पड़ता। अब तो उसे रासायनिक और भौतिक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना होता है और खेतों में काम करने के लिए मशीनें खरीदनी होती हैं। बिजली के कम्प्यूटर (गणक) भी अब खेतों में पहुँच गये हैं और

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मवेशियों की नस्ल सुधारने में भी मशीनों का प्रयोग होने लगा है। इस सबका परिणाम यह हुआ है कि कृषि कालिजों में विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

खेती में विज्ञान के इस तरह प्रवेश का एक बड़ा भारी परिणाम यह हुआ है कि अनाज या कपास आदि की जिस मात्रा को पहले सौ किसान पैदा करते थे, अब उसे १०-१५ किसान ही पैदा करने लगे हैं। इसीलिए कृषि पर निर्भर रहने वालों की संख्या निरंतर कम होती जा रही है। इसी कारण अब परिवार के एक-दो वयस्क व्यक्तियों को छोड़कर शेष को आजीविका के लिए दूसरे काम तलाश करने पड़ते हैं और इस तरह गांवों में रहने वाले किसानों की संख्या भी कम हो रही है।

जहाँ खेती और उद्योगों में काम करने वालों की संख्या निरन्तर कम हो रही है, वहाँ सरकारी और गैर सरकारी दफ्तरों में काम करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। विभिन्न उद्योगों, बैंकों और व्यापारिक कम्पनियों में क्लर्क भी केवल बढ़ ही नहीं रहे, उनका काम भी मशीनों की वजह से बहुत हलका हो गया है। कभी-कभी व्यापार में मन्दी छा जाती है। पहले उद्योग के कारीगरों को छटनी के परिणामस्वरूप निकाल दिया था, किन्तु अब उद्योगों के संचालक इन शिक्षित सफेद कालर कर्मचारियों को नहीं निकालते हैं।

संक्षेप में उद्योगों में जो काम पहले कठिन और कष्ट-कारक समझा जाता था, अब वह काम इतना सरस बन गया है कि उनके पूर्वज इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। ■ ■


## सम्पदा गायब हो जाती है, क्यों ?

### कारण इस पत्र में देखिये

उज्जैन से प्रो० वो० के० पारिख २१ मार्च १९६५ के पत्र में लिखते हैं–

'सच बताऊं, गये चार महीनों से मैंने आप की सम्पदा की प्रतियां प्राप्त नहीं की हैं, क्योंकि कालिज में उसके कई इच्छुक रहते हैं और वह मेरे हाथों में आने से पहले ही, यह कहना चाहिए कि मेरी सम्पदा आई है, यह जानने से पहले ही गायब हो जाती हैं। इसीलिए मैंने बार-बार आप के कार्यालय से अनुरोध किया है कि मेरा पता बदल कर घर के पते से भेजें।


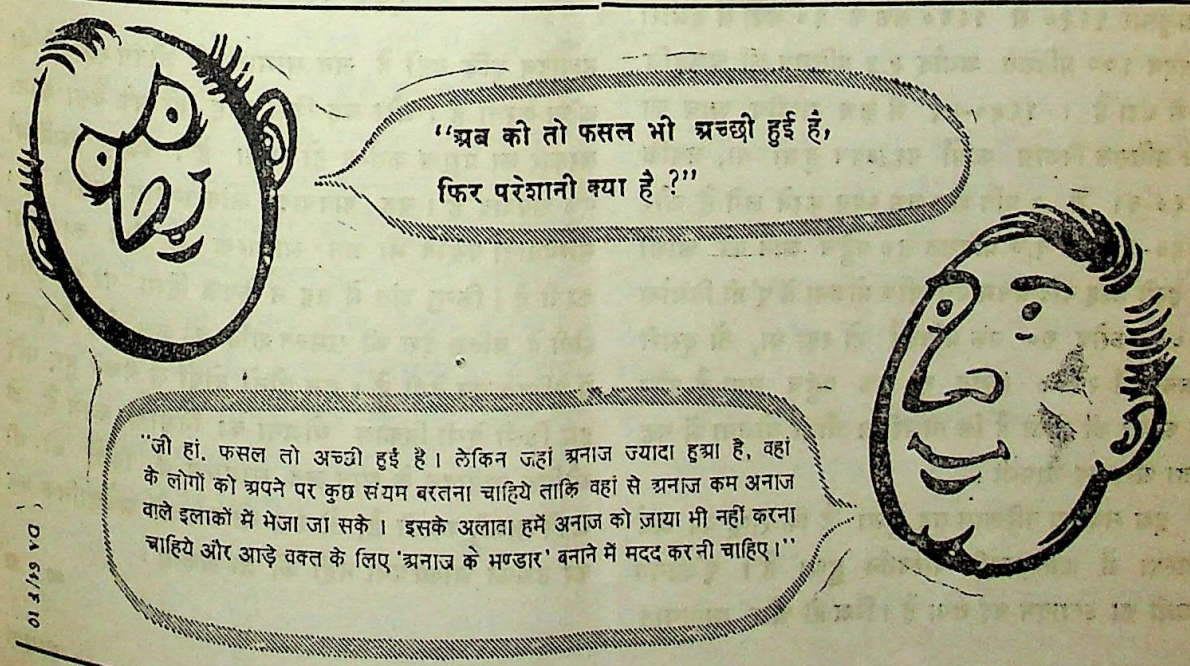




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजनाओं के अन्तर्गत प्रगतिशील अर्थव्यवस्था

श्री अशोक मेहता

## योजनाओं की प्रगति

जनसंख्या की दर में कुछ कमी होने का कुछ अनुभव १९८० के अन्त तक होने की सम्भावना की जा रही है। हमारी जनसंख्या जिस तरह बढ़ रही है, उसका अनुमान इस तरह किया जा रहा है:—

| | |
|---|---|
| १९६६ | ४९.४ करोड़ |
| १९७१ | ५५.८ ,, |
| १९७६ | ६२.९ ,, |
| १९८१ | ६९.३ ,, |

यदि हम जनसंख्या निरोध का कुछ चमत्कार कर सकें, तो शायद वृद्धि की दर यह कुछ रोकी जा सके।

जनसंख्या वृद्धि की धमकी के बावजूद पंचवर्षीय योजना ने कुछ प्रगति की है और अर्थरचना को सही दिशा की ओर मोड़ने में सफलता प्राप्त हुई है।

राष्ट्रीय उत्पादन जहां १९६०-६१ में १९५० करोड़ था, वहां १९६०-६१ में १४१४० करोड़ (वर्तमान मूल्यों के अनुपार) और १९६५-६६ में १९२०० करोड़ (१९६६-६४ के मूल्यों के अनुसार) हो गया है। विशेषज्ञों के अनुसार १९५० से १९६० तक के १० वर्षों में हमारा उत्पादन १७७ प्रतिशत अर्थात् ५.३ प्रतिशत की चक्रवृद्धि दर से बढ़ा है। १९५०-५१ में कुल राष्ट्रीय आय का २.४ प्रतिशत विकास कार्यों पर व्यय हुआ था, जबकि १९६०-६१ में ५ प्रति शत तक व्यय करने लगे हैं और १९६०-६१ तक ६.७ प्रतिशत तक पहुँच जाने की आशा है। इसी तरह यदि प्रथम पंचवर्षीय योजना में पूंजी निर्माण १६०० करोड़ रु० तक प्रतिवर्ष हो रहा था, तो दूसरी योजना में २५०० करोड़ रु० तक पहुंच गया है और यह आशा की जाती है कि तीसरी व चौथी योजना में यह मात्रा और बढ़ जायगी।

इस सब का परिणाम यह हुआ है कि राष्ट्र की अर्थ व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। पूंजीगत सामग्री का उत्पादन बढ़ गया है। बिजली और यातायात व परिवहन की क्षमता में भी उन्नति हुई है। औद्योगिक विकास के लिए यही आधारभूत तत्व हैं। चौथी योजना के अन्त तक हम ५०० करोड़ रु. की पूंजीगत सामग्री तैयार करने लगेंगे। इसका अर्थ यह है कि हम चीनी, जूट, कागज व सीमेंट की मिलों और रेलवे के लिए आवश्यक मशीनरी के निर्माण में आत्मनिर्भर हो जावेंगे। जेनरेटर, टर्बाइन, ट्रांसफार्मर और पावर बायलरों की आवश्यकता भी बहुत अंश तक पूरी कर सकेंगे। ट्रैक्टरों, डीजल इंजनों, स्टील कास्टिंग, आदि के निर्माण इसके अतिरिक्त हैं। इनके निर्माण से हमारी कृषि व उद्योग सम्बन्धी आवश्यकताएं बहुत कुछ पूर्ण हो जावेंगी।

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि इन सब सफलताओं और अर्थव्यवस्थाओं के अतिरिक्त शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास की सुविधाएं भी पर्याप्त बढ़ रही हैं।*

* एक भाषण के आधार पर

(पृष्ठ १७२ का शेष)

उत्पादन वृद्धि नहीं है, जन सामान्य के जीवन स्तर को भी ऊंचा करना है। और यह जिस तरह हो सके वैसा करना सरकार का प्रमुख कर्तव्य हो जाता है। किन्तु इसमें भी एक अपवाद है। वह अपवाद लोकतन्त्रीय पद्धति है। साम्यवादी पद्धति भी जन साधारण के हित का दावा करती है। किन्तु अंत में वह न केवल हिंसा पर आधारित होती है, बल्कि देश की समस्त शक्ति को कुछ थोड़े से हाथों में केन्द्रित कर देती है। इन दोनों दोषों से बचते हुए यदि हम किसी ऐसी विकास योजना का निर्माण करते हैं, जो भौतिक उत्पादन के साथ जन सामान्य के हितों को भी अपने सामने रखती है, तो उस योजना को अवैज्ञानिक कह कर उसकी आलोचना नहीं की जा सकती।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास

श्री योगेन्द्र नाथ

पूंजी और मूलभूत साधनों के अभाव के कारण विकास के आरम्भिक चरणों में कुछ ऐसे स्रोतों के सहारे की आवश्यकता होती है, जो उपयोगिता की दृष्टि से अपना पृथक् अस्तित्व रखते हैं। इन अतिरिक्त स्रोतों में से "मुद्रा-स्फीति" उपकरण विशेष उल्लेखनीय है। यह एक ऐसा उपकरण है, जो सफल आयोजन के लिए राम-बाण भी प्रमाणित हो सकता है और अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा दुश्मन भी।

## मुद्रास्फीति क्या है ?

मुद्रास्फीति वह परिस्थिति है, जिसमें मुद्रा, कीमतें, उत्पादन और आय निरन्तर एक दूसरे के पीछे ऊपर की ओर भाग रही हों। मुद्रा की मात्रा बढ़ने से लोगों के पास राशियां बढ़ जाती हैं और वे अधिक व्यय करते हैं। फलस्वरूप कीमतें और मौद्रिक आय भी बढ़ जाती है। आय में वृद्धि से व्यय में वृद्धि होती है। कीमतें और ऊपर चढ़ जाती हैं। सौदे सम्पन्न करने के लिए अधिक मुद्रा की आवश्यकता पड़ती है, इसलिए लोग अधिक मुद्रा उपलब्ध करने के प्रयत्न करते हैं। लोगों के पास राशियां और बढ़ जाती हैं। कीमतें और आय फिर ऊपर को उठती हैं। बढ़ती कीमतों, मौद्रिक आय में वृद्धि और बढ़ते हुए व्यय का आवेग बढ़ता है और अन्ततोगत्वा अर्थ-व्यवस्था मुद्रास्फीति की पकड़ में आ जाती है। दूसरे शब्दों में, मांग की तुलना में उत्पादन कम हो जाता है परन्तु मुद्रा का चलन उतना ही रहता है या उत्पादन पूर्ववत ही रहे और मौद्रिक चलन बढ़ता जाए। दोनों ही स्थितियों में वस्तुओं का अभाव और जनता की व्यय-क्षमता में वृद्धि हो जाती है। मांग तथा संभरण के बीच की खाई दिन प्रति दिन अधिक होने से यदि समय पर स्थिति को नियंत्रित न कर लिया जाए, तो सारी अर्थ-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो सकती है।

## मुद्रास्फीति के कारण

मूल्य-वृद्धि अधिक हो अथवा कम, इसका मुख्य कारण 'अभाव' ही होता है। यह अभाव प्राकृतिक अथवा मानव-निर्मित दोनों ही तरह का हो सकता है। वर्षा की कमी, दैविक प्रकोप जैसे मानसून का समय पर न बरसना अथवा अधिक बरसना, बड़े पैमाने पर बीमारियों का फैलना आदि। ये 'प्राकृतिक अभाव' के अन्तर्गत आते हैं। बढ़ती हुई आबादी की तुलना में उत्पादन-स्तर उतना ही रहना; आयोजन और कार्यान्वयन के बीच असमांजस्य होने से कच्चे माल की सप्लाई में कमी और उत्पादन-क्षमता का पूर्ण उपयोग न हो सकना; मजदूरों के 'धीरे काम' करने की नीति या कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञों द्वारा अधिक वेतन की मांग के लिए उन्हें भड़काना; सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों में कार्य अकुशलता अथवा भ्रष्टाचार; अज्ञान-वश किसानों द्वारा उत्पादन के नये-नये संसाधनों और तकनीकों का उपयोग न कर पा सकना; कृषि विकास से सम्बद्ध प्रशासनिक ढांचे में प्रचलित आलस्य और लाल-फीताशाही; व्यापारियों द्वारा भविष्य में मूल्य और बढ़ने की आशा के कारण माल गोदामों में भर लेना; घाटे की अर्थ-व्यवस्था, गुप्तधन आदि कुछ ऐसे कारण हैं, जो मानव-विकसित मुद्रास्फीति को जन्म देते हैं।

अर्ध-विकसित देश विज्ञान और तकनीकी ज्ञान और पूंजी के अभाव में प्राकृतिक शक्तियों पर अभी नियन्त्रण नहीं कर पाए हैं, जिससे इनको प्रत्येक वर्ष भयंकर बाढ़ों, सूखा आदि पड़ने से करोड़ों रुपयों के मूल्य की हानि उठानी पड़ती है। जितना कृषि और औद्योगिक विकास होता है, उसका कुछ भाग तो दैविक प्रकोपों की भेंट चढ़ जाता है। इस प्रकार उत्पादन उतना नहीं बढ़ पाता, जितनी कि प्रत्येक वर्ष जनसंख्या में वृद्धि होती जा रही है।

## मुद्रास्फीति की आवश्यकता क्यों ?

मुद्रास्फीति द्वारा समाज में कुल खपत में कमी लाने के लिए वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों में वृद्धि करके लोगों को "आवश्यक बचत" करने पर बाध्य किया जा सकता है, जो कि मुद्रा-निर्माण की आधारशिला कही जा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती है। चीजों के भाव बढ़ जाने से जनता की अधिकतम आय केवल आवश्यक वस्तुएं खरीदने में ही व्यय हो जाएगी, जिससे अन्ततोगत्वा कुल खपत में अपने-आप कमी हो जाएगी। मुद्रास्फीति द्वारा जनता की क्रय-शक्ति में कटौती करने की यह विधि साधारणतया युद्धकालीन समय में कार्यान्वित की जाती है, लेकिन शान्तिकाल में इस विधि का उपयोग आर्थिक विकास के लिए उतनी ही सफलता के साथ किया जा सकता है बशर्ते इसका उपयोग नियंत्रित सीमा तक ही किया जाए। मूल्य वृद्धि से जो अतिरिक्त धन उपलब्ध होगा, वह नये-नये उद्योग धंधों की स्थापना और स्थापित उद्योगों के विस्तार में लगाया जा सकता है, जिससे उत्पादन क्षमता में और वृद्धि तथा दीर्घकालीन दृष्टि से सर्व साधारण का रहन-सहन स्तर ऊंचा उठेगा। मुद्रास्फीति "आवश्यक बचत" उपलब्ध कराने के साथ-साथ पूंजी-निर्माण के अतिरिक्त स्रोत भी उत्पन्न करती है। जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तो उत्पादन के तत्वों, विशेषकर वेतन और मजदूरी, आवश्यक एकता और संगठन के अभाव में उतनी नहीं बढ़ती। फलतः उद्योगपतियों, व्यापारियों को उत्पादन-व्यय की तुलना में अधिक लाभ होता है जिससे उसकी बचत-क्षमता बढ़ जाती है। उद्योगपति अतिरिक्त बचत-क्षमता का पुनर्वितरण उद्योगों के विस्तार अथवा व्यापार में वृद्धि करने हेतु लगा सकेंगे, जिससे पूंजी-निर्माण को गति मिलेगी। इस सन्दर्भ में रूस के आर्थिक विकास के आरम्भिककाल में "आवश्यक बचत" द्वारा विनियोजन का सबसे उत्तम उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। १९२९ से १९३९ के मध्य रूस में वस्तुओं के मूल्य में ७०० प्रतिशत की वृद्धि हुई। मूल्यों में जानबूझ कर इतनी वृद्धि करके उत्पादन लागत तथा वास्तविक मूल्यों के बीच का लाभ उत्पादक क्षेत्रों में प्रवाहित कर दिया गया। दूसरे शब्दों में, इस अवधि में विनियोजन का मुख्य स्रोत मुद्रास्फीति ही रहा। इसी प्रकार, १८८० से लेकर १९१४ तक जापान में मुद्रा-निर्माण का मुख्य स्रोत मुद्रास्फीति रहा। जापान में १८०० से १९०० के दौरान जब भूमि कर बढ़ा दिए गए तथा वास्तविक मजदूरी कम कर दी गई और मुद्रा-चलन लगभग चार गुना बढ़ गया तो मूल्यों में करीब ६० प्रतिशत वृद्धि हो गई। मूल्य-वृद्धि से जो अतिरिक्त धन इकट्ठा किया गया, वह विकास कार्यक्रमों में लगा दिया गया। उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि अर्द्ध-विकसित देशों में ऐच्छिक बचत का अभाव होने से निर्धनता का आरोही चक्र तोड़ने के लिए आवश्यक बचतों और 'आवश्यक विनियोजन' आदि उपकरण बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि लाभ-मुद्रास्फीति तभी सफल हो सकती है जबकि मजदूरी और वास्तविक मूल्यों में काफी अन्तर बना रहे। इसके विपरीत यदि मूल्य-वृद्धि के साथ-साथ मजदूरी भी बढ़ती जाए, तो इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। उदाहरणार्थ, स्पेन में जब तक उत्पादन मूल्यों और उत्पादित वस्तुओं की कीमतों में भारी अन्तर रहा, औद्योगिक विकास ऊर्ध्वगति से बढ़ा। किन्तु सत्रहवीं शताब्दी में मजदूरी की दर बढ़ जाने से भौतिक विकास विशेष नहीं हो पाया।

वैज्ञानिक और टेक्नोलाजिकल क्षेत्र में भी मुद्रास्फीति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उद्योगपतियों एवं व्यापारियों के पास अधिक धन आ जाने से अनुसंधान कार्यों और नए-नए आविष्कारों में काफी पूंजी लगाई जाती है। इंग्लैंड में १७४०-१८०० के उच्चतम मुद्रास्फीति काल में लाभों का एक बहुत बड़ा भाग टेक्नोलाजिकल विकास में लगाया गया था, जिससे तकनीकी आविष्कारों का एक तांता-सा बंध गया। इंग्लिश मान्यता प्राप्त पेटेंटों की संख्या १७४०-४९ में ४२ से बढ़कर १७८०-८९ में ४७७ तक पहुँच गई थी।

मुद्रास्फीति द्वारा उत्पादक साधनों की संभरण लोच को अनुकूल दिशा में मोड़ कर आर्थिक विकास और सुविधाजनक बनाया जा सकता है। जैसे-जैसे मूल्यों में वृद्धि होगी, कामगरों की वास्तविक आय कम होती जाएगी। यद्यपि उनकी बढ़ती हुई मौद्रिक आय वास्तविक आय की तुलना में कितनी ही कम क्यों न हो गई हो, किन्तु वास्तविक आय बढ़ाने के लिए मजदूर और वेतनधारी जो तोड़ श्रम करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। अतः इस महत्वपूर्ण "उत्पादन तत्व' की संभरण-लोच अपने-आप अनुकूल दिशा की ओर अग्रसर होने लगेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नियंत्रण और सीमाएं

यदि मूल्य वृद्धि के कारण पूंजी के समान वितरण पर पड़ने वाला प्रतिकूल प्रभाव कुछ समय के लिए नजर-अंदाज भी कर दिया जाए, तो भी इस बात की कोई गारण्टी नहीं कि मुद्रास्फीति का दीर्घकालीन प्रभाव वांछित लक्ष्यों के अनुकूल ही होगा । बचत की सर्वप्रथम शर्त है स्वेच्छा' अर्थात समस्त कामगर वास्तविक मजदूरी में कटौती के लिए स्वयं तत्पर हों । इसके विपरीत लोकतंत्र पर आधारित अर्द्ध-विकसित देशों में, विशेषकर उन देशों में जहां मजदूर भली प्रकार संगठित हों, मजदूरवर्ग और वेतनधारी बढ़ते हुए मूल्यों तथा अपने हितों के प्रति अधिक जागरुक होते हैं । मजदूरी और वास्तविक वस्तुओं के मूल्यों का अन्तर कम होने के साथ-साथ विकास की गति धीमी पड़ने लगती है । इसके अतिरिक्त अर्द्ध-विकसित अर्थ व्यवस्था में वास्तविक पूंजीवादी धारणा का अभाव होने से यह जरूरी नहीं कि मुद्रा-स्फीति के कारण लाभों की तुलना में बचत और उत्पादक विनियोजन में उतनी ही वृद्धि हो । बहुत संभव है कि उद्योगपति अपनी बढ़ी हुई आय-क्षमता को उत्पादक अथवा विस्तार कार्यों में न लगाकर अनुत्पादक गति-विधियों में व्यय करना आरम्भ कर दें । यह भी हो सकता है कि मुद्रास्फीति से 'स्वेच्छा बचत भावना' तथा 'तत्काल बचत क्षमता' दोनों ही प्रायः नष्ट हो जावें । इसके दो मुख्य कारण हैं । प्रथम मूल्य-वृद्धि के कारण बचत-क्षमता कम हो जावेगी, जिससे लोग उतनी बचत भी नहीं कर पाएंगे जितनी कि मुद्रास्फीति से पूर्व कर सकते थे । दूसरे, जीवन सम्बन्धी आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लोग अपनी जमा पूंजी, जो कि वर्तमान विनियोजन का मुख्य अंग कहा जा सकता है, निकालने के लिए बाध्य हो जाएंगे । मूल्य वृद्धि से नई-नई आविष्कार हुई वस्तुओं तथा अन्य साज-सामान का उत्पादन बहुत लाभकारी हो जाता है । लेकिन अर्द्ध-विकसित देशों में स्वार्थ भावना से ओतप्रोत व्यापारीगण और उद्योगपति और अधिक दाम बढ़ाने के लिए इनकी सप्लाई में जानबूझ कर कटौती कर देते हैं, जिससे सट्टा जैसी विकास-विरोधी शक्तियां कार्यरत हो जाती हैं । फलतः विदेशी मुद्रा की तुलना में घरेलू मुद्रा का मूल्य गिर जाता है, जिससे धीरे-धीरे इसका विलोप होने लगता है । इस सम्बन्ध में चिली देश का उदाहरण विशेष उल्लेखनीय है । १९४५-५० के अत्यधिक मुद्रा-स्फीति काल में लाभों का मुख्य भाग अचल सम्पत्ति, जमीनों, व्यापारिक भवनों की स्थापना आदि अनुत्पादक कार्यों में लगाया गया, जिससे मूल्य देशनांक एक दम बढ़ गया; लोगों में अपना धन विदेशी सम्पत्ति क्रय करने और विदेशी बैंकों में जमा कराने की होड़ सी लग गई; घरेलू मुद्रा का मूल्य मंदा पड़ गया और विदेशी विनियोजन तो समाप्तप्राय ही हो गया । गरीब जनता पिसने लगी; हड़तालें और तालाबन्दी जैसी घटनाएं दिनचर्या का महत्वपूर्ण अंग बन गईं । इसलिए यह आवश्यक नहीं कि बचत-क्षमता में वृद्धि होने से उत्पादक विनियोजन में भी बढ़ोतरी होगी । वास्तव में मुद्रास्फीति द्वारा आर्थिक विकास की सफलता बहुत हद तक किसी देश के उद्योगपतियों की नैतिकता और देशभक्ति-भावना पर निर्भर करती है ।

मुद्रास्फीति का कुचक्र यहीं समाप्त नहीं होता । जो देश निर्यात कम और आयात पर अधिक निर्भर हैं, उनके लिए अनियंत्रित मूल्य-वृद्धि तो और भी हानिकारक है क्योंकि घरेलू मुद्रा का मूल्य कम होने से आयात पर उन्हें उतना ही व्यय अधिक करना पड़ेगा, जिससे भुगतान संतुलन बहुत गड़बड़ा जाता है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुद्रास्फीति एक ऐसा नाजुक उपकरण है जिसका उपयोग सावधानी पूर्वक न होने से सारी अर्थ-व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण हो सकती हैं ।

(असमाप्त)

सम्पदा
का
एक नया ग्राहक बनाना आपका परम
कर्त्तव्य है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# खाद्य संकट के असली कारण

प्रोफेसर बी० आर० शेनाय

आज खाद्य संकट के लिये खाद्यान्नों के व्यापारियों को दोषी ठहराना फैशन बन गया है। हमको बताया जाता है कि खाद्य पदार्थों की कीमतों में हुई वृद्धि तथा खाद्य पूर्ति का अभाव व्यापारियों की जमाखोरी का परिणाम है और व्यापारियों तथा किसानों के बीच हुई खरीफ की भरपूर फसल को बाजार में न भेजने की "अपवित्र सांठगांठ" का उद्देश्य वास्तव में समाज से मनमानी रकम ऐंठना है, जब अगले महीनों में खाद्य अभाव अधिक गंभीर हो जायगा। इसका दूसरा उद्देश्य दक्षिण भारत में खाद्य निगम तथा अन्यत्र राज्य सरकारों के अनाज अधिप्राप्ति (प्रोक्योरमेन्ट) कार्यक्रम को असफल बनाना भी बताया जाता है। ६ नवम्बर १९६४ का राष्ट्रपति का अध्यादेश, जिसे बाद में जरूरी पदार्थ (संशोधन) कानून १९६५ में सम्मिलित कर लिया गया है और जिसमें अपचारी व्यापारियों पर संक्षिप्त विचारण और सजा देने का उपबन्ध है, इसी सिद्धान्त पर आधारित है।

लेकिन मूल्य वृद्धि और खाद्य संकट का कारण व्यापारियों अथवा किसानों की जमाखोरी नहीं है। जिस प्रकार बाढ़ों का कारण मूसलाधार वर्षा होती है न कि गुरुत्वाकर्षण का नियम जो बाढ़ के पानी को आगे बढ़ाता है, इसी प्रकार मूल्य वृद्धि का कारण खाद्यान्नों और मुद्रास्फीति की भौतिक कमियां होती हैं। खाद्यान्नों की भौतिक कमियां, वास्तव में तथा कथित सहायक उद्योगों में नियोजन के नाम पर किये साधनों की बर्बादी और कुप्रबन्ध सरकारी खर्चों के कमाल की वजह से हुई है। इस तरह से उपलब्ध साधनों के अधिकांश भाग को अन्यत्र बहा दिया जाता है। इससे कृषि की उपेक्षा हुई। चूंकि कृषि उत्पादन का ६७ प्रतिशत भाग खाद्यान्नों का होता है, इसलिये कृषि की उपेक्षा से खाद्य उत्पादन कम हो गया। अतः खाद्यान्नों के भारी आयात के बावजूद १९५७ से खाद्यान्नों की कुल पूर्ति आबादी की वृद्धि से कम रही।

मुद्रास्फीति घाटे की वित्त व्यवस्था का परिणाम है। उत्तरोत्तर बढ़ते हुये कराधानों तथा विदेशी सहायता की विशाल रकमों के बावजूद सरकारी लागतें बढ़ती गईं और प्राप्तियों से खर्च अधिक होता गया और हम इस अन्तर को नोट छाप कर पूरा करते गये। हाल ही के वर्षों में मुद्रास्फीति की गति और भी अधिक तीव्र हो गई। १९६०-६१ वर्ष के बाद साढ़े तीन वर्षों में मुद्रा प्रसार ३३ प्रतिशत हो गया, जबकि इसके पहिले के चार वर्षों में यह मात्रा २३ प्रतिशत थी।

इस प्रकार की मुद्रास्फीति और भौतिक कमियों के फलस्वरूप मूल्य वृद्धि होना जरूरी है, व्यापारियों का नैतिक स्तर चाहे कुछ भी हो। इसलिये मूल्य वृद्धि और खाद्य संकट की जिम्मेदारी योजना आयोग, वित्त मंत्रालय और रिजर्व बैंक आफ इण्डिया की है, हालांकि इनके लिये दोष व्यापारियों तथा किसानों पर मढ़ा जाता है। योजना आयोग साधनों का गलत और बर्बादीपूर्ण तरीके से उपयोग करता है; वित्त मंत्रालय और रिजर्व बैंक मुद्रा-प्रसार को बढ़ाते जाते हैं। कीमतें बढ़ी नहीं कि जमाखोरी शुरू हुई; और जमाखोरी से कीमतें और भी अधिक बढ़नी शुरू हो जाती हैं। एक से दूसरी चीज अपने आप शुरू हो जाती है और उसको रोकने को कोई तरीका नहीं रह जाता है, जिस प्रकार की गुरुत्वाकर्षण के नियम के प्रभाव को नहीं रोका जा सकता है। जमाखोरों के एक वर्ग—व्यापारी और किसान—के विरुद्ध उठाया गया कोई कदम यदि कामयाब भी हो गया तो उनके द्वारा छुट्टा किया गया स्टाक घर गृहस्थी वाले लोग जमा करने लग जायंगे। इस तरह से जमाखोरी की पारी तो बदल जायगी। लेकिन एक सामाजिक वस्तुस्थिति के रूप में जमाखोरी मौजूद ही रहेगी।

## फिर क्या करें ?

इसलिये खाद्य संकट को हल करने के लिये हमको जमाखोरी के विरुद्ध किये जाने वाले बेकार अभियान के अलावा कुछ अन्य कदम उठाने चाहियें। हमको इसके लिये द्विउद्देश्यीय अर्थात अल्पकालीन और दीर्घकालीन कदम उठाने चाहिये। उपर्युक्त विवेचन से हमको अल्पकालीन उपचार उपलब्ध हो जाता है। सबसे पहिले तो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्रास्फीति पर सम्पूर्ण रोक लगा देनी चाहिये और दूसरे, भौतिक कमियों को पूरा करने के लिये काफी खाद्यान्नों का आयात करना चाहिये।

भौतिक कमियों को पूरा करने के लिए हमने कदम उठा लिए हैं। तीस सितम्बर और ३१ दिसम्बर के पी. एल. ४८० के करारों तथा बर्मा, यू. ए. आर., थायलैंड, कम्बोडिया और पाकिस्तान के व्यापारियों से निजी आयातों सम्बन्धी प्रबन्धों में १९६५ वर्ष में ६ लाख टनों से भी अधिक आयातों का उपबन्ध है। विगत सात वर्षों के ३० लाख ६० हजार टनों के वार्षिक औसत आयातों को देखते हुए, प्रस्तावित आयात की मात्रा हमको संकट से मुक्त करने के लिये काफी होगी। वास्तव में संभावना तो इस बात की है कि ज्यों ही इन आयातों की शुरूआत होगी, खाद्यान्नों की बढ़ी हुई कीमतों में घटाव और गिरावट शुरू हो जायगी। लेकिन यह इसी बात पर निर्भर करेगी कि मुद्रास्फीति को और अधिक न बढ़ने दिया जाय; खाद्य निगम और राज्य सरकारों द्वारा स्टाक जमा करने के लिये अधिप्राप्ति (प्रोक्योरमेन्ट) रद्द कर दिया जाय और देश के वर्तमान खाद्य क्षेत्रों को खत्म कर दिया जाय। यदि मुद्रास्फीति जारी रही तो हमारे आयातों का कुछ अंश जमाखोरी में चला जायगा; राज्य द्वारा अधिप्राप्ति का असर भी कीमतों पर वैसा ही पड़ेगा जैसा कि जमाखोरी का और खाद्य क्षेत्रों में खाद्य पूर्ति की दशा गड़बड़ बनी रहेगी क्योंकि उससे कम पैदावार वाले विस्तारों में अनुचित अभाव और अतिरिक्त पैदावार वाले राज्यों में अनुचित विपुलता की दशायें बनी ही रहती हैं।

समस्या का दीर्घकालीन उपचार खाद्यान्नों के घरेलू उत्पादन की वृद्धि में है। खाद्य उत्पादन का विस्तार कार्य, किसानों की उत्पादन सम्बन्धी जरूरतों को जैसे कि अच्छे बीज, अधिक उर्वरक, श्रेष्ठतर सिंचाई व्यवस्था, अच्छे गोदाम, बिक्री व्यवस्था सम्बन्धी सुविधाएं आदि को पूरा करना, आवश्यक कृषि कर्ज न मिलने के कारण अवरुद्ध पड़ा है। नियोजन की शुरूआत के बाद कृषि ऋण की उपलब्धता काफी कम हो गई है। सबसे पहिले तो निवेश साधनों की पूर्ति का करीब ७० प्रतिशत भाग जो घरेलू बचतों और विदेशी सहायता का अंग होता है, सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा विनियुक्त कर लिया जाता है हालांकि राष्ट्रीय उत्पादन में सार्वजनिक क्षेत्र का योग केवल ५-६ प्रतिशत ही है। इसलिए निधियों की किसी न किसी को तो कमी पड़ेगी ही और भारतीय सन्दर्भ में वह कहीं न कहीं होता है किसान, जो हमारी अर्थव्यवस्था में हमेशा ऋण पूर्ति तथा उत्पादन सम्बन्धी अन्य जरूरतों के बारे में अत्यन्त उपेक्षित अंग रहा है।

## नये कृषि सम्बन्धी कानून

कृषि सम्बन्धी कानूनों को हालांकि किसानों और काश्तकारों को सूदखोरी से बचाने तथा जमीदारों द्वारा काश्तकारों का शोषण न होने देने के उद्देश्य से बनाया गया है, लेकिन उन्होंने एक ओर तो कृषि में बचतों और ऋण के बहाव को रोक दिया है और दूसरी ओर किसानों और काश्तकारों की ऋण योग्यता को पंगु बना दिया है। उन्होंने जोखिमों को बढ़ा दिया है, लेकिन कृषि ऋण के व्यापार में मुनाफों को कम कर दिया है। साहूकार तथा रकमें कर्ज देने वाले सम्माननीय व्यक्तियों ने जो मुद्रा बाजार तथा कृषि वित्त के बीच की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे, अपने व्यवसाय बदल दिये और तीव्र गति से बढ़ती हुई औद्योगिक प्रवृत्ति में (हालांकि उसे नकली ढंग से पैदा किया गया है) भाग लेने के लिए अपनी रकमों सहित शहरी विस्तारों में जा बसे। इस तरह से कृषि ऋण के क्षेत्र में जो स्थान खाली हुआ, उसकी पूर्ति अभी तक पर्याप्त कामयाबी के साथ नहीं हो पाई है।

कृषि क्षेत्र में इस प्रकार के ऋण के अभाव के कारण उपलब्ध कृषि कर्ज पर भारी ब्याज की दरें प्रचलित हो गईं। १९५४ में किये गये ग्रामीण ऋण सर्वेक्षण में प्राप्त कर्जों पर ये दरें ८८ प्रतिशत सालाना तक की आंकी गई हैं। इस सर्वेक्षण के बाद की अवधि से सार्वजनिक क्षेत्र ने निवेश साधनों को बहुत बड़ी मात्रा में अपने अन्तर्गत ले लिया, जिसके फलस्वरूप पहिले की अपेक्षा अब और भी कम रकमें कृषि वित्त के लिए रह गई है।

अतः खाद्य समस्या का तब तक कोई स्थायी हल नहीं निकल सकता है, जब तक कि पहिले, सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा किया गया निवेश निधियों के व्यापक विनियोग—

(शेष पृष्ठ २०८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# खेती में उर्वरकों का महत्त्व

हुमायूं कबीर, पेट्रोल और रसायन मंत्री

खेती की पैदावार बढ़ाये बिना देश का औद्योगिक विकास संभव नहीं है और न लोगों की आर्थिक दशा सुधारी जा सकती है । यद्यपि हमारी खेती की उपज पिछले ६० वर्षों में करीब ४० प्रतिशत बढ़ी है, पर हमारी प्रति एकड़ उपज अर्थात उर्वरता नहीं बढ़ी ।

यदि किसानों को समय पर पर्याप्त उर्वरक और सिंचाई के लिए पानी मिल जाए और उर्वरक आदि खेती के साधन खरीदने के लिए कर्ज मिलने का प्रबन्ध हो तथा फसल के उचित दाम मिलने लगें तो वे निश्चय ही पैदावार बढ़ा सकते हैं ।

## उर्वरक और सिंचाई

प्रति एकड़ और उपज करने के लिए, उर्वरक और सिंचाई दोनों बहुत जरूरी हैं । एक के बिना दूसरा बेकार है । पिछली योजनाओं में सिंचाई का पूरा उपयोग इस कारण न हो सका कि खेतों में पानी की नालियां और गूलें नहीं बनाई गयीं । आशा है कि जल्दी यह नियम बना दिया जाएगा कि ग्राम पंचायत या राज्य सरकारें नहर से खेत को पानी ले जाने के लिए गूलें बनवाएं ।

## उर्वरक उत्पादन

उर्वरकों का उत्पादन भी संतोषजनक नहीं हो रहा है । अतः हम प्रयत्न कर रहे हैं कि १९६८ तक प्रति वर्ष १० लाख टन नाइट्रोजन खाद बनने लगे । तब तक अनेक उर्वरक कारखाने भी खुल जाएंगे, जिनमें दुर्गापुर कारखाना भी है । इसके अतिरिक्त हमने १८ लाख टन और उर्वरक तैयार करने के लिए प्रसिद्ध विदेशी फर्म वेखटेल्स से समझौता किया है । इसी प्रकार फास्फेटी और पोटाशियम खादों का भी उत्पादन बढ़ाने के लिए उपाय किए जा रहे हैं ।

उर्वरकों का उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ इनके वितरण की भी अच्छी व्यवस्था की जाएगी । फर्टीलाइजर कारपोरेशन आफ इंडिया और फर्टीलाइजर्स एण्ड केमिकल्स त्रावनकोर लि० ने काफी काम किया है । उर्वरकों के वितरण और मूल्य-निर्धारण की जिम्मेदारी मुख्यतः कृषि विभाग की है । उर्वरक वितरण जांच समिति ने इस सम्बन्ध में कुछ सिफारिशें की हैं । कृषि विभाग की एक विशेष समिति भी इस समय उर्वरकों की बिक्री और मूल्य के प्रश्न पर विचार कर रही है ।

## यथेष्ट उर्वरक तैयार करना जरूरी

हमें अपने पड़ोसी देशों को भी उर्वरक निर्यात करने चाहिए, परन्तु जब तक हम स्वयं अपनी जरूरत भर उर्वरक नहीं बनाते, तब तक यह संभव नहीं है । आशा है कि चौथी योजना के अन्त तक ही आत्मनिर्भर हो जाएंगे और यदि आवश्यक हुआ तो १९६८ के बाद हम उर्वरक का उत्पादन और बढ़ा देंगे । इस समय देश में जितना उर्वरक बनता है, उतना ही हमें विदेशों से मंगाना पड़ता है । फर्टीलाइजर कारपोरेशन ने राउरकेला में एक उर्वरक कारखाना लगाया है । हम अपने एक पड़ोसी देश में भी एक कारखाना लगाने का विचार कर रहे हैं ।

## विदेशी सहयोग

विदेशों में उर्वरक बनाने के लिए नये तरीके निकले हैं । पश्चिमी देशों में जहां पहले कोक भट्टी की गैस से अमोनिया बनाया जाता था, अब नैप्था से बनाया जा रहा है । पश्चिमी यूरोप और अमरीका में इतने बड़े कारखाने लगे हैं, जिनमें प्रतिदिन एक हजार टन अमोनिया बनता है । किसानों को सस्ते भाव पर उर्वरक देने के लिए हमें भी बड़े कारखानों की स्थापना करनी होगी और पश्चिमी देशों के अनुभव से लाभ उठाना होगा । साथ ही हम छोटे कारखाने भी लगाएंगे, बशर्ते कि वे घाटे पर न चलें ।

उर्वरक और सिंचाई का उपयोग बढ़ाकर हम अपना खाद्याभाव दूर कर सकते हैं और अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बना सकते हैं । देश का भविष्य खेती की उन्नति पर निर्भर है और खेती की उन्नति के लिए उर्वरक का बहुत महत्त्व है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अन्न क्षेत्रों का विभाजन और राज्य

यह एक दुर्भाग्य की बात है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के १७ वर्ष बाद भी हम अपने देश को एक अखण्ड रूप में देखने नहीं लगे हैं। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक सम्प्रदाय, प्रत्येक भाषा-भाषी और यहां तक कि प्रत्येक राज्य केवल अपने स्वार्थ को देखना चाहता है। उसकी दृष्टि से भारत माता का सम्पूर्ण चित्र ओझल हो जाता है। देश की आर्थिक उन्नति और आर्थिक समृद्धि में भी यही स्वार्थ-भावना बड़ी भारी बाधक है। यह स्वाभाविक है कि देश का प्रत्येक भाग प्रत्येक दृष्टि से सम्पन्न नहीं है। किसी भाग में अन्न अधिक होता है तो किसी भाग में खनिज। परन्तु प्रत्येक भाग अपने यहां उपलब्ध वस्तु का लाभ उठाने का लिए दूसरे भाग की उपेक्षा करने में संकोच नहीं करता। एक राज्य में गेहूँ अधिक होता है, दूसरे में मूंगफली या गन्ना। दोनों राज्य अपनी वस्तु के निर्यात और वितरण पर प्रतिबन्ध लगा देते हैं। परिणाम यह होता है कि दूसरे भाग में वह वस्तु दुर्लभ हो जाती है, और जनता को कष्ट मिलने लगता है। देश की विकट खाद्य-समस्या को बढ़ाने में यह क्षेत्रीय प्रतिबन्ध बहुत सहायक रहे हैं। केन्द्रीय सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए कुछ क्षेत्र नियत कर दिये हैं। प्रत्येक क्षेत्र में अन्न की दृष्टि से बचत और घाटे वाले दोनों राज्य हैं। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में न चावल जा सकता है न गेहूँ।

यह क्षेत्रीय विभाजन ठीक तरह से नहीं हो सका है। इसलिए जनता आज भी दुखी है। किसी राज्य में तो अन्न की कीमत बहुत कम हो गई है और किसी राज्य में अन्न बहुत मंहगा हो गया है। मुक्त व्यापार से सब भागों में अन्न की कीमतें करीब एक सी रहती हैं। क्षेत्रीय विभाजन ने वह स्थिति समाप्त कर दी है। आचार्य विनोबा ने अन्न संकट को दूर करने के लिए जो उपाय बताए हैं उनमें से एक उपाय इस क्षेत्रीय विभाजन की समाप्ति भी है। भारत सरकार पिछले चार महीनों से इस प्रश्न पर विचार कर रही है और अंतिम निर्णय नहीं कर पा रही है।

आज अन्न की जो स्थिति है, उसमें क्षेत्रीय विभाजन की आवश्यकता नहीं रह गई। इस वर्ष फसल अच्छी हुई है। गेहूँ की कीमतें लगातार कम हो रही हैं, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से मालूम होगा—

मूल्य रुपयों में प्रति क्विंटल

| | ३१ दिस. १९६४ | १५ फर. १९६५ | १५ मार्च १९६५ |
|---|---|---|---|
| अमरावती (विज) | १२५-१३० | १२३ | ९२-९४ |
| बंबई (नासिक,पिस्सी) | १२० | १२० | १०५-११० |
| दिल्ली (फार्म नं०१) | ७६ | ७४ | ६६ |
| दिल्ली (फार्म नं०२) | ७४ | ७२ | ६४ |
| हापुड़ (औसत) | १००-१०५ | ९६-९७ | ९०-९२ |
| कानपुर (देशी) | १००.८७ | ९५.६८ | ८५.७५ |
| रोहतक (दड़ा) | ६३-६५ | ६१-६३ | ५१.५५ |

अभी यह सम्भावना है कि गेहूँ के मूल्य और भी गिरेंगे। इसलिए क्षेत्रीय विभाजन का कोई विशेष लाभ नहीं होगा। परन्तु अब भी बचत और घाटे वाले राज्य परस्पर सहमत नहीं हो रहे हैं। सभी राज्य अपना अपना लाभ देखना चाहते हैं। पंजाब और मध्यप्रदेश जैसे बचत वाले राज्य क्षेत्रीय विभाजन को जारी रखना चाहते हैं, जबकि गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्य क्षेत्रीय विभाजन को समाप्त करना चाहते हैं। इकाफे (एशिया और सुदूर पूर्व की आर्थिक जांच) ने क्षेत्रीय विभाजन को राष्ट्रीय हित के विरुद्ध बताया है। वस्तुतः इससे देश की एकता भी नष्ट होती है और परस्पर द्वेष बढ़ता है। यही सब देखकर कुछ राजनीतिज्ञ संघ राज्य की अपेक्षा एक केन्द्रीय राज्य को अधिक उपयोगी और लाभकारी मानते हैं। वस्तुतः केन्द्र को इस सम्बन्ध में दृढ़ता दिखानी चाहिए और क्षेत्रीय विभाजन को समाप्त करने की दिशा में कदम उठाना चाहिए। पंजाब के गेहूँ पर केवल पंजाब का, बिहार के लोहे पर बिहार का और गुजरात के तेल पर केवल गुजरात का अधिकार नहीं होना चाहिए। सब राज्य भारत माता के अभिन्न अंग हैं और उनमें परस्पर भेद बुद्धि नहीं रहनी चाहिए।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# देश के बन्दरगाह

डा० नगेन्द्रसिंह, विशेष सचिव, केन्द्रीय परिवहन मंत्रालय

देश के आर्थिक विकास के लिए परिवहन की अच्छी व्यवस्था आवश्यक है और परिवहन व्यवस्था में अच्छे बन्दरगाहों का होना बहुत जरूरी है। देश की रक्षा के लिए विदेशों से सामान मंगाना, तेल शोधन के कारखानों के लिए तेल और उद्योगों के लिए सामान मंगाना तथा विदेशों को माल भेजना अच्छे बन्दरगाहों पर निर्भर है। बन्दरगाह देश के अन्दर के यातायात को देशांतर परिवहन के साथ जोड़ते हैं। इसलिए परिवहन और उद्योग की उन्नति के साथ-साथ बन्दरगाहों को बढ़ाना भी जरूरी होता है।

## बन्दरगाह और आर्थिक उन्नति

पिछले कुछ वर्षों में देश की आर्थिक उन्नति में बन्दरगाहों ने क्या योग दिया, उसके कुछ उदाहरण यहां दिए जा सकते हैं।

१९५२ में दो प्राइवेट कम्पनियों को ट्राम्बे में तेल शोधन कारखाने लगाने की अनुमति दी गई, तब यह जरूरी हुआ कि इन कारखानों के लिए कच्चे तेल के जो जहाज आवें, उनके लिए बम्बई बन्दरगाह में गहरे पानी के घाट बनाये जाएं। तब बुचर दीप में तेल जहाजों के रखने का स्थान बनाने का कार्यक्रम इस तरह बना कि इधर कारखाना खड़ा हो और उधर पाइप लाइन आदि सब फिट हो जाएं।

इसी प्रकार तेल कारखाने के लिए विशाखापतनम् में भी कच्चा तेल उतारने का स्थान बनाया गया।

## नये इस्पात कारखाने

नये इस्पात कारखानों के लिए हजारों टन मशीनें बम्बई, कलकत्ता और विशाखापत्तनम के मारफत आईं। रेलवे का सामान तथा हर प्रकार की मशीनें इन्हीं बन्दरगाहों पर उतरती हैं। दक्षिण में रेलों और कारखानों के लिए कोयला भी इन्हीं बन्दरगाहों से भेजा जाता है।

देश में स्थल परिवहन में जब भी भार बढ़ा तब यही बन्दरगाह आड़े वक्त काम आये। खाद कारखानों के लिए कच्चा माल तथा तैयार उर्वरक इन्हीं के जरिए मंगाया और भेजा जाता है।

१९५१-५२ से इन बन्दरगाहों से जितना माल गुजरा, उसका ब्यौरा इस प्रकार है:—

| | लाख टनों में |
|---|---|
| १९५१-५२ | २२० |
| १९५२-५३ | २१४ |
| १९५३-५४ | १९९ |
| १९५४-५५ | २०२ |
| १९५५-६६ | २३९ |
| १९५६-५७ | २८१ |
| १९५७-५८ | ३११ |
| १९५८-५९ | २९० |
| १९५९-६० | ३१४ |
| १९६०-६१ | ३३६ |
| १९६१-६२ | ३३६ |
| १९६२-६३ | ४२९ |

१९६२-६३ में बड़े बन्दरगाहों के रास्ते १ करोड़ ४० लाख टन पेट्रोल और तेल, ७२ लाख टन लोहे का अयस्क, २५ लाख टन कोयला, १२ लाख टन उर्वरक, गंधक, फास्फोट, ३९ लाख टन अनाज, ९ लाख टन नमक और १७ लाख टन लोहा तथा इस्पात और मशीनें आईं तथा गईं।

## अनाज

पिछले साल अर्थात १९६४ में इन बन्दरगाहों के द्वारा ६१९७५०० टन अनाज आया।

तीसरी योजना के आरम्भ में बड़े बन्दरगाहों की कुल-क्षमता लगभग ३ करोड़ ८० लाख टन माल उतारने व लादने की थी। १९६३-६४ में इन बन्दरगाहों में ४ करोड़ ६४ लाख टन (मरमागोवा सहित) माल आया और गया।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी योजना के अन्त तक इन बन्दरगाहों की कुल क्षमता लगभग ५ करोड़ ६० लाख टन हो जाएगी। १९७०-७१ तक बन्दरगाहों से ८ करोड़ टन से भी अधिक माल आने-जाने का अनुमान है और हमें इसी के अनुसार बंदरगाहों का विस्तार करना है।

## बढ़ता हुआ विनियोजन

बड़े बन्दरगाहों को बढ़ाने पर हमने पहली योजना में २६ करोड़ ३० लाख रु० और दूसरी योजना में ४५ करोड़ रु० खर्च किया। तीसरी योजना में १ अरब १० करोड़ रु० खर्च करने का अनुमान है, जिसमें से पहले ३ वर्षों में ३८ करोड़ रु० खर्च हो चुका है। इस साल २१ करोड़ रु० खर्च करने की आशा है और अगले साल ४० करोड़ रु०।

पहली योजना में बम्बई और विशाखापतनम में तेल-बर्थ तथा कलकत्ता, मद्रास और कोचीन में नए बर्थ बनाए गए तथा कांदला बन्दरगाह बनाने का काम शुरू किया गया।

दूसरी योजना में पहली योजना का काम पूरा किया गया, तथा कलकत्ता के के० पी० गोदी के आधुनिकीकरण, बम्बई की प्रदेश नहर को साफ करने, अलेक्जेण्डर गोदियों की क्रेनों को बिजली से चलाने, मद्रास में नई गोदी बनाने तथा कोचीन में नए बर्थ बनाने का काम शुरू किया गया। विशाखापत्तनम में यन्त्रों द्वारा लोह अयस्क के लदान का प्रबन्ध किया गया।

तीसरी योजना में हल्दिया योजना शुरू की गई। बम्बई की गोदियों को आधुनिक बनाने का काम तेजी से चल रहा है। मद्रास और कोचीन बन्दरगाहों को बढ़ाने का काम पूरा हो गया है। विशाखापतनम में नए बर्थ इस साल काम करने लगेंगे। तूतीकोरीन, मंगलौर और मरमागोवा बंदरगाहों की क्षमता बढ़ाई जा रही है।

## छोटे बन्दरगाह

केन्द्रीय सरकार केवल बड़े बन्दरगाहों के लिए ही जिम्मेदार है, लेकिन छोटे बन्दरगाहों की भी उपेक्षा नहीं करती। प्रत्येक योजना में उसने छोटे बन्दरगाहों को बढ़ाने तथा सुधारने के लिए ऋण व शिल्पिक सहायता देने की व्यवस्था की।

कडलूर, नींटकर, रत्नागिरि (मिर्या बे) और पोरबन्दर को बढ़ाने के लिए विशेष योजनाएं चल रही हैं। उड़ीसा सरकार तेजी से प्रदीप बन्दरगाह का निर्माण कर रही है। इसके पूरा हो जाने पर टोंका—दैतारी खानों से २० लाख टन लोह अयस्क इस बन्दरगाह से जाने लगेगा।

बन्दरगाहों को बढ़ाने का काम निरन्तर चलता रहता है और समय तथा परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है। बम्बई बन्दरगाह को बढ़ाने के लिए विशेषज्ञ योजना बना रहे हैं। देश में जो नये तेल शोधक कारखाने बन रहे हैं, उनके लिए भी बन्दरगाह भरपूर व्यवस्था करेंगे।

इसमें सन्देह नहीं कि देश के आर्थिक विकास के लिए इन बन्दरगाहों को बढ़ाने के लिए ऊंची प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

■ ■


**भारत की उद्योग नीति**

*

लेखक :

प्रो. रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै. "सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

**अशोक प्रकाशन मन्दिर,**

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# पंचवर्षीय योजना की मौलिक दृष्टि

सब को रोजगार : न्यूनतम आय :
विकेन्द्रीकरण : भूमि सुधार :
ग्रामदान : पंचायती राज ।

●

[ चौथी पंचवर्षीय योजना पर एक परिसंवाद का आयोजन श्री उ० न० ढेबर की अध्यक्षता में सर्व सेवा और गांधी विद्या स्थान ने मिलकर किया था ।

दो दिन में चार बैठकें हुईं । इनमें आगामी चौथी पंचवर्षीय योजना के मैमोरेन्डम पर विचार किया गया । चर्चा के बाद परिसंवाद की ओर से इस आशय का एक वक्तव्य प्रकाशित किया गया : ]

पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं में जो नियोजन की पद्धति चली है, वह भारतीय संविधान के एक उद्देश्य की सिद्धि या उसकी आशा में भी कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सकी है । उद्देश्य यह है कि निकट भविष्य में भारत की जनता को लगभग पूरा रोजगार या न्यूनतम आमदनी की गारंटी मिले । इस नियोजन ने औद्योगीकरण का आधार जरूर शुरू किया है और उस प्रक्रिया में कुछ वर्गों के लोगों के लिए, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से, आमदनी और रोजगार के कुछ अतिरिक्त साधन पैदा कर दिये हैं, लेकिन जनदारिद्र्य और बेरोजगारी को कम करने की संभावना अभी बहुत दूर नजर आती है ।

## मौलिक परिवर्तन हो

ऐसा होने का कारण यह है कि एक जनतन्त्रिक मशीनरी होने के बावजूद, हर योजना के वास्तविक सार का निर्धारण एक छोटी-सी अल्पसंख्या ने किया है और जहां तक जनता और लोगों के चुने हुए प्रतिनिधियों का सवाल है, उनको योजना बनाने या उसके विकल्प खोजने का कोई अवसर नहीं मिला । नियोजन की कार्रवाई बहुत ज्यादा केन्द्रीकृत और सहकारी हाथों में है । इसलिए नियोजन और उसकी कार्य शैली की प्रक्रिया, दोनों में मौलिक परिवर्तन होना चाहिए और उनका गठन इस तरह से हो कि ये दोष न रहें । सरकार को भी चाहिए वह अपनी यह नीति बनाए और दृढ़ निश्चय करे कि एक निश्चित समय के अन्दर नियोजन के फल-स्वरूप रोजगार की गारंटी मिलेगी, रहन-सहन का न्यूनतम स्तर प्राप्त होगा और नियोजन प्रक्रिया का विकेन्द्रीगरण किया जायगा ।

## सच्चा विकेन्द्रीकरण

रोजगार और न्यूनतम आमदनी की गारंटी का कार्य दूर बैठी हुई और केन्द्रीय एजेन्सियों द्वारा कभी भी सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं किया जा सकता । यह काम तो स्थानीय संस्थाएं ही कर सकती हैं, क्योंकि वे ही क्षेत्र के अन्दर ऐसे लोगों की सूची बना सकती हैं और उन्हें पहचान सकती है, जो सचमुच बेरोजगार और गरीब हैं । ऐसी संस्थाएं ही उनकी समस्याओं को समझ सकती हैं । रोजगार और न्यूनतम आमदनी की गारंटी देने और निकट भविष्य में उसकी एक सार्थक सम्भावना सिद्ध करने के लिए उपर्युक्त ढंग का सच्चा विकेन्द्रीकरण ही एक रास्ता है ।

## खर्च की छूट

इस पुनर्गठन के पहले कदम के तौर पर कुल योजना खर्च का कुछ अंश देहाती क्षेत्रों में खेती, पशु पालन, सामुदायिक विकास, ग्रामीण घर, लोक कल्याण, ग्रामीण कार्य, ग्रामोद्योग, छोटे उद्योग, छोटी खेती योजनाएं आदि के मदों में जो पैसा लगाया जाता है, उसका कम से कम आधा हिस्सा लोगों की स्थानीय संस्थाओं के हाथ में सौंप देना चाहिए । उन्हें इस बात की आजादी हो कि अपनी संस्थाओं के जनतांत्रिक सामुदायिक निर्णयों के अनुसार उस पैसे को खर्च करें और सरकारी नौकरशाही की तरफ से कोई कानूनी या इन्तजामी दखल उसमें न दिया जाय ।

ठोस और साबित स्कीमें बनाने के लिए सरकार की जो टेकनिकल सेवा संस्थाएं हैं और माल देने वाले विभाग और कारपोरेशन हैं, उन सब की सेवाएं स्थानीय संस्थाओं को हासिल हों । लेकिन कौन सी योजना चलती है, विभिन्न किस्मों की किस मद में कितना पैसा लगता है (खर्च की सीमा की हद के अन्दर-अन्दर) स्कीमों का क्रम क्या



सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा, इन सब बातों को तय करने की छूट स्थानीय संस्थाओं को रहे।

## कानून में फर्क हो

कुछ कानूनी धाराओं के अन्दर पंचायत पद्धति और सहकारी पद्धति को पैसा मिलता है और स्कीमें आदि चलाने को कहा जाता है। सरकारी विभाग हर बारीक से बारीक बात में उनके ऊपर अपना कन्ट्रोल लगाते हैं। अमुक क्षेत्र की विशेष समस्याओं और संभावनाओं का ध्यान दिये बिना सहसमितियों उस लाद दी जाती है, इसलिए ये स्कीमें आमतौर से असफल हो जाती हैं और इस असफलता का दोष विकेन्द्रीकरण के मत्थे मढ़ा जाता है।

पंचायतों और सरकारी समितियों से सम्बन्धित जो धाराएं और विधियां हैं, उनमें परिवर्तन किया जाय ताकि उन्हें असली ताकत और आजादी मिल सके।

## भूमि सुधार व सहकार

देश के आर्थिक पद्धति के ढांचे के प्रश्न को लेकर ठोस चिन्तन का अभाव रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शुरू-शुरू में आदर्शवादी उत्साह के कारण किसानों की पीठ से सामन्तशाही का काफी बोझ हटा दिया गया, लेकिन अभी जितना लदा है वह भी बहुत है। जब तक कि शोषण का पूरी तरफ से निराकरण न किया जाय तबतक किसान अपने पांव पर खड़ा नहीं हो सकता और न वह एक नई आर्थिक अर्थनीति की रचना के लिए एक सफल माध्यम बन सकता है।

आज देश में आधे से ज्यादा जोत की जमीनें अनार्थिक हैं। इस कारण से योजना कमीशन और खेती के विकास में दिलचस्पी लेनेवाले सभी के लिए यह जरूरी है कि खेती के भविष्य के ढांचे पर एक स्पष्ट नीति कायम की जाय। अनार्थिक जोतें और आर्थिक खेती कभी भी साथ-साथ नहीं चल सकतीं। देश को इस प्रश्न का निर्णय करना चाहिए कि खेती में मौलिक सम्पत्ति सम्बन्ध कृषक स्वामित्व के आधार पर होंगे या ग्रामदान या सहकारी खेती की दिशा में ग्रामदान भूमि के स्वामित्व या प्रबन्ध में दखल दिये बिना व्यक्तिगत स्वामित्व के विचार में संशोधन कर उसे सामुदायिक स्वामित्व से न्यायसंगत बना देता है। सामुदायिक स्वामित्व के विचार की मान्यता के संदर्भ में ही हम एक ऐसे स्वाधीन समाज की कल्पना कर सकते हैं, जो भारतीय परिस्थिति में प्रगति करता रहे।

जबतक आर्थिक सहायता और अन्य जरूरी चीजों के साथ-साथ पानी का आश्वासन नहीं मिलता है, तबतक प्रति एकड़ पैदावार में कोई व्यापक वृद्धि नहीं हो सकती, यद्यपि कुछ सीमित क्षेत्रों में थोड़ी सफलता भले मिल जाय। ग्रामीण अर्थनीति पर कोई बड़ा असर तबतक नहीं पड़ सकता। जबतक कि जंगल, खेती, पशुपालन और अन्य उद्योगों में भी संबंधित कार्यक्रम के तौर पर साथ-साथ विकास न हो।

---

वे अकली से अब तक पैसा उंडेला गया, लेकिन इसकी पुनरावृति चौथे पंचक में नहीं होनी चाहिये।

—विनोबा

---

खेती में जो पूंजी लगे वह उत्पादन से सम्बन्धित रहे। और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी विकास किया जाय।

## सामाजिक कल्याण

आर्थिक नियोजन के साथ-साथ सामाजिक नियोजन पर भी उचित जोर देना चाहिए। कल्याणकारी काम करनेवाली सरकारी एजेंसियों को पंचायती राज और सामुदायिक विकास कार्यक्रम से मिला दिया जाय, ताकि वह कल्याण और सामुदायिक विकास की सम्बन्धित स्कीमों के लिए एक सामुदायिक सम्पर्क एजेंसी का काम कर सकें।

विकास के कार्यक्रमों के उचित मूल्यांकन के लिए दो तरह के सूचक रहने चाहिए। आर्थिक सूचक रहें सामाजिक कल्याण योजनाओं के लिए, और सामाजिक सूचक रहें आर्थिक विकास के कार्यक्रमों के लिए। इन सूचकों से यह पता चलना चाहिए कि योजनाओं के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति कैसी हो रही है और आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों से अपेक्षाकृत हानि या लाभ कितना हो रहा है?

●●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दिल्ली में मद्यपान

मद्यनिषेध अध्ययन दल के अध्यक्ष श्री टेकचन्द की सलाह के अनुसार योजना आयोग ने दिल्ली के स्कूल आफ सोशल वर्क्स को दिल्ली में शराब की खपत तथा मद्यनिषेध की संभावनाओं की जांच पड़ताल का काम सौंपा था। इस स्कूल की जांच कमेटी निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंची है:—

सामान्यतः देशी शराब पीने वाले क्षेत्र अधिकतर मद्यनिषेध का समर्थन करते हैं, जबकि क्लबों के सदस्य, परमिट-होल्डर और होस्टलों में रहने वाले तथा ऊंचे सम्पन्न घरों व उच्चशिक्षित घरों की स्त्रियां मद्यनिषेध को पसन्द नहीं करतीं। उच्चशिक्षित वर्ग में मद्यपान के समर्थकों का प्रतिशत अधिक है। शिक्षा जितनी कम है, उतना ही मद्यनिषेध का समर्थन अधिक होता है।

इस अध्ययन दल ने १४०५ लोगों से, जो विभिन्न श्रेणियों के थे, पूछताछ की। विभिन्न श्रेणियों के ३४ से ४७.५० प्रतिशत तक नियमित रूप से शराब पीते थे। इन पीने वालों में जहां छोटी सी कोठरियों व झुग्गियों में रहने वाले थे, वहां रजिस्टर्ड क्लबों के सदस्य और परमिट-होल्डर भी थे।

अधिकतर मद्यप ३० से ४८ वर्ष के थे। सम्पन्न घरों की मद्यप स्त्रियों की आयु अधिकतर २० से २९ वर्ष थी। गन्दी कोठरियों में शराब पीने वाली स्त्रियों की आयु ४० वर्ष से अधिक थी।

कम आयवाले बहुत से व्यक्ति केवल अपनी आर्थिक स्थिति व स्वास्थ्य के कारण शराब नहीं पीते, दूसरी ओर उच्च वर्ग के लोग शराब से घृणा नहीं करते, यदि वह मात्रा में ली जाय। ऐसे भी व्यक्ति हैं, जो तरोताजगी के नाम पर शराब पीना पसन्द करते हैं।

जिन विभिन्न श्रेणियों के लोगों से पूछ-ताछ की गई, वे निम्नलिखित थीं—देशी शराब की दुकानों से शराब खरीदने वाले बेलारोड व पूसारोड।

१—देसी शराब की दुकानों से खरीदने वाले १००० व्यक्ति।

२—स्लम कोठरियों में रहने वाले २१०० व्यक्ति, जो गैर-कानूनी तौर पर बनी शराब खरीदते हैं।

३—२०० परमिट-होल्डरों में से ६४।

४—क्लबों में पीने वाले ४० सदस्य।

५—यूनिवर्सिटी व कालेज होस्टलों में रहने वाले ५० विद्यार्थी।

६—स्लम कोठरियों में रहने वाली उदाहरणस्वरूप १२ औरतें।

७—उच्चवर्ग की २९ महिलाएं—क्लबों, सैनिक अधिकारियों के घरों, स्त्रियों के होस्टलों से।

स्लम कोठरियों में देसी शराब पीने वाले अशिक्षित थे। विदेशी शराब पीने वाले अधिकांश हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त थे। क्लबों के सदस्य और उच्च वर्ग की स्त्रियों ने कालेज की शिक्षा प्राप्त की हुई थी।

इन मद्यपों में सरकारी नौकरों की संख्या २५ प्रतिशत से अधिक नहीं है। देसी शराब पीने वाले अधिकांश मजदूर, फिटर, टैक्सी ड्राइवर, छोटे दुकानदार, धोबी आदि हैं। विदेशी शराब पीने वालों में हम, सैनिक अधिकारियों, सरकारी अफसरों या व्यापारिक कम्पनियों में ऊंचे पद पर कार्य करने वालों को पाते हैं। उच्च वर्ग के मद्यपों में अधिकांश महिलाएं हैं। इनमें पत्रकारों व विद्यार्थियों का भी थोड़ी बहुत संख्या सम्मिलित है।

प्रायः सभी मद्यप श्रेणियों में औसत परिवार-सदस्य चार से छः तक हैं। गरीब घरों में संख्या ज्यादा है। देसी शराब पीने वाले गरीब लोगों की औसत आय २५० रुपये मासिक से अधिक नहीं है। पर ५०० रुपये तक की आय वाले भी इस श्रेणी में मिल जायंगे। विदेशी शराब पीने वालों की मासिक आय ५०० रुपये से अधिक है।

अधिकांश पीने वालों ने बताया कि उन्होंने मित्रों के उकसाने से और खासकर दिवाली होली आदि अवसरों पर शराब पीनी शुरू की और मित्रों में नकटू न बनने के लिए वे शराब पीने लगे। शुरू में तो मुफ्त में और बाद में पैसों से।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## सन्ततिनिरोध व शल्यक्रिया (दूसरा पक्ष)

संततिनिरोध के लिये सरकार जिन तीव्र उपायों का प्रचार कर रही है, उनमें से एक है पुरुषों का आपरेशन। इसका दूसरा पक्ष भी है, जिसका सारांश नीचे दिया जाता है।

सिडनी से प्राप्त एक विवरण में संततिनिरोध के लिये पुरुषों के शस्त्रीकरण के परिणामों की जानकारी दी गई है। यह जानकारी उन ५००० पुरुषों से प्राप्त की गई है, जिन्होंने संततिनिरोध के लिये शस्त्रीकरण या आपरेशन का आश्रय लिया था। इस जांच में शस्त्रीकरण के प्रतिकूल परिणामों का निम्नलिखित विवरण ज्ञात हुआ है।

१. शस्त्रीकरण की क्रिया (आपरेशन) के तुरन्त बाद २२ प्रतिशत रोगियों को गहरी खिन्नता, निराशा, थकान, चिड़चिड़ापन और एकाग्रता के अभाव के अनुभव हुए। इसके परिणाम स्वरूप उनमें अपना जीवनकार्य (नौकरी, वकालत, क्लर्की आदि) करने की क्षमता कम हो गई।

२. १५ प्रतिशत ने यह शिकायत की कि उनकी स्मरणशक्ति कमजोर हो गई है।

३. ६ प्रतिशत ने पुरुषत्वशक्ति में कमी अनुभव की, जिसके बाद में भी ० प्राप्त नहीं कर सके। यह प्रतिकूल परिणाम आपरेशन के ४८ से ७२ घण्टे बाद में ही प्रत्यक्ष हुआ।

४. ०.५ प्रतिशत रोगी तो आपरेशन के परिणाम-स्वरूप मर ही गये।

५. ५ प्रतिशत रोगियों पर आपरेशन का कोई फल ही नहीं हुआ अर्थात उनकी सन्तान हुई।

६. एक रोगी ने अपनी पत्नी की अविश्वसनीयता व परपुरुष से संपर्क से दुःखी होकर अपनी हत्या ही कर ली।

७. १२ प्रतिशत रोगियों को मानसिक दुर्बलता हो गई और उन्हें मानसिक रोगों के अस्पतालों में प्रविष्ट होना पड़ गया। इनमें से आधे तो आत्महत्या तक की इच्छा करने लगे।

८. ११ प्रतिशत रोगियों के शरीर में आपरेशन के परिणामस्वरूप जहर पैदा हो गया। इसके बाद इनमें से एक की मृत्यु भी हो गई।

९. जब आपरेशन के बाद ५००० व्यक्तियों से उनके अनुभव पूछे गये तो ३३ प्रतिशत ने यह बताया कि अब वे विवाहित जीवन में पूर्ण आनन्द अनुभव नहीं करते और उन्हें बड़ा अफसोस है कि उन्होंने आपरेशन क्यों कराया।

## वस्त्र उद्योग की समस्याएं

भारत के टैक्सटाइल कमिश्नर श्री डोराय स्वामी ने यह भविष्यवाणी करके देश में एक आंतक पैदा कर दिया है कि दो-एक शताब्दी बाद देश में कपड़े का अभाव भी संभव है क्योंकि जनसंख्या की वृद्धि के साथ-साथ कपड़े का उत्पादन नहीं बढ़ रहा। आज असंगठित हथकरघा उद्योग अपनी तीसरी योजना के लक्ष्य पूरा कर रहा है, लेकिन सूती मिलें ८ हजार मिलियन गज से अधिक अपना उत्पादन नहीं बढ़ा पा रहीं, यद्यपि उनका लक्ष्य ९३०० मिलियन गज था। यही कारण है कि सरकार ने १६ हजार नये लूम लगाने का सुझाव दिया है। परन्तु फिर भी हमें वस्त्रों की आवश्यकता को पूर्ण कर सकेंगे, इसमें सन्देह है।

वस्त्र उद्योग का कहना है कि उत्पादन-व्यय लगातार बढ़ रहा है। इसलिए कपड़े का निम्नतम मूल्य बढ़ाना होगा। मिलों के साथ समझौते के रूप में यह सुझाव पेश हुआ है कि मोटे कपड़े के उत्पादन पर ही मूल्य नियंत्रित किया जाय।

और शेष ६० का मूल्य उद्योग स्वयं परामर्श करके निर्णय करेंगे। अभी तक वस्तुतः वस्त्र उद्योग की समस्या हल नहीं हो सकी। इस समस्या के मुख्य रूप निम्नलिखित हैं:—

१—वस्त्र का उत्पादन व्यय कैसे कम किया जाय?

२—मिलों में खपत के लिए रुई आसानी से देश में मिल सके, इसकी व्यवस्था कैसे की जाय?

३—जापान, हांगकांग, पाकिस्तान और ब्रिटेन के वस्त्र उद्योगों से प्रतिस्पर्द्धा में भारत के वस्त्र उद्योग की रक्षा कैसे की जाय?



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मिलों का आधुनिकीकरण किया जाय तो इसके लिए पूंजी की विशाल राशि को एकत्र कैसे किया जाय ?

## स्पात की प्रति व्यक्ति खपत

विभिन्न अविकसित देशों में प्रति व्यक्ति स्पात की खपत कितनी है, यह जानकारी मनोरंजक व शिक्षाप्रद होगी और इससे उन देशों की भौतिक समृद्धि के बारे में भी संकेत मिलेगा—

प्रति व्यक्ति स्पात की खपत किलोग्रामों में (१९६२)

| | | | |
|---|---|---|---|
| लेबनान | ९५ | पेरु | २४ |
| चिल्ली | ७९ | कोलम्बिया | २४ |
| वैनजुला | ७६ | ट्यूनिशिया | २२ |
| आरजैण्टाइना | ७२ | चीन | २० |
| इराक | ४० | श्री लंका | १९ |
| ब्राजिल | ३८ | टर्की | १९ |
| मलयेशिया व सिंगापुर | ३७ | अलजीरिया | १९ |
| उरागुआ | ३६ | सौदी अरब | १७ |
| सीरिया | ३० | ईरान | १७ |
| ताइवान | २९ | मोरक्को | १४ |

## भारत केवल १४ शोचनीय स्थिति

### देश में चीनी की मिलें

| राज्य | मिलें | वार्षिक उत्पादन क्षमता |
|---|---|---|
| बिहार | २८ | ३ लाख ६७ हजार टन |
| उत्तर प्रदेश | ७२ | ११ लाख १८ हजार टन |
| पंजाब | ८ | १ लाख ३० हजार टन |
| राजस्थान | २ | १३ हजार टन |
| मध्य प्रदेश | ४ | ३२ हजार टन |
| उड़ीसा | २ | १८ हजार टन |
| पश्चिमी बंगाल | २ | २२ हजार टन |
| आसाम | १ | १० हजार टन |
| महाराष्ट्र | ३३ | ५ लाख ५० हजार टन |
| गुजरात | ३ | ४५ हजार टन |
| आन्ध्र प्रदेश | १८ | २ लाख ४१ हजार टन |
| मद्रास | १० | १ लाख ६० हजार टन |
| पांडिचेरी | १ | १८ हजार टन |
| केरल | २ | १८ हजार टन |
| मैसूर | ८ | १ लाख १९ हजार टन |

## जनसंख्या के अनुपात से डाक्टर

विभिन्न देशों में प्रति दस लाख व्यक्तियों के पीछे कितने डाक्टर हैं, यह निम्नलिखित तालिका से ज्ञात होगा—

| | | | |
|---|---|---|---|
| भारत | १९७ | रुमानिया | १४८२ |
| स्पेन | १०७९ | इटली | १६२७ |
| पोलैण्ड | १२४२ | सं. रा. अमेरिका | १९३१ |
| फ्रांस | १३८६ | रूस | २०७२ |
| कनाडा | १४०० | प० जर्मनी | २०९३ |
| जापान | १४१४ | | |

## सच्चा रामराज्य

रास्ते से गुजरते समय मुझे इनकम टैक्स मिल गया। रोककर बोला, "भाई अपने गरीब भाइयों की भलाई के लिये मुझे कुछ देता जा !"

मैंने अपना गरम कोट, ऐनक और घड़ी आदि उतार कर उसके हाथ में रख दी।

थोड़ी दूर जाने पर पंचवर्षीय योजना ने दर्शन दिये। विनीत स्वर में बोली, "हे महात्मा, उज्ज्वल भविष्य के लिये, अपने बच्चों की खुशहाली के लिए मुझे कुछ देता जा।"

मैंने अपनी कमीज, पतलून और जूते उतारकर उसके हाथों में रख दिये।

और अभी थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि सामने मंहगाई ने रास्ता रोककर कहा, "हे मित्र, अपने व्यवसायी भाइयों के कल्याण के लिये मुझे कुछ देता जा !"

मैंने अपनी एकमात्र लंगोटी उतारकर उसके हाथ में रख दी।

इसी समय बगल में खड़ी सरकार हर्षावेश में बोल उठी, "अहा ! अपने महान देश की जनता सादगी और सर्वोदय पथ पर अग्रसर हो रही है। इसी का नाम सच्चा रामराज्य है !"

(गुजराती व्यंग कथा)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**महातम गांधी**—ले०—श्री बी० आर० नन्दा। अनुवादक—श्री श्याम् सन्यासी। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या ३७० आकार २०×३०/८ मूल्य-५ रु० सजिल्द।

प्रस्तुत पुस्तक महात्मा गांधी की जीवनी है। गांधीजी के जीवन की सामान्य घटनाओं से प्रायः सभी शिक्षित भारतीय परिचित होंगे, फिर भी आज ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता है, जो गांधीजी की विचारधारा और दृष्टिकोण पर स्पष्ट प्रकाश डाल सकें। दीर्घकालीन नेहरू युग में हम लोगों पर नई विचारधारा और दृष्टि इस तरह छा गई है कि हम अपने महान् क्रांतिकारी दिवंगत नेता का दर्शन भूल से गये हैं और राष्ट्रनिर्माण की दिशा में जाते हुए भटक जाते हैं। आज भी वस्तुतः गांधीजी का नेतृत्व हमें चाहिए। किन्तु सिवाय जयकारों के हमारा गांधीजी से सम्बन्ध विच्छिन्न हो गया है। इस सम्बन्ध में गांधीजी के वे शब्द हमें याद रखने चाहिए, जो उन्होंने नारेबाजी में राष्ट्र की शक्ति के अपव्यय पर कहे थे—जी चाहता है कि मेरी जय बोलने के बदले मेरे लिए चिता चुन दी जाय और मैं उसकी जलती लपटों में कूदकर अपने हृदय की भभकती आग को शांत कर सकूं (पृ० १६१)।

गांधीजी की यह शिक्षा आज भी १९१९ की तरह ही स्मरणीय है, "जब तक देश की राजनैतिक स्थिति का ज्ञान मजदूरों को नहीं हो जाता, राजनीति के लिए उनका उपयोग करना बहुत ही खतरनाक हो जाता है।" (पृ. १७१)। अभी तो बिना अपवाद के सभी राजनैतिक दल अबोध विद्यार्थियों का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं। आज कांग्रेसी सरकारें शराबबन्दी की दिशा में धीरे धीरे चलना चाहती हैं। उन्हें गांधीजी के वाक्य स्मरण रखने चाहिए कि "किसी शराबी की औरत से जाकर इन्तजार करने के लिए कहो, फिर देखना वह तुम्हारी क्या गत बनाती है। (पृ० १९१) बिजली की बहु-विज्ञापित योजनाओं पर बधाई देते हुए उन्होंने साथ ही यह भी पूछ लिया क्या—आप शहर के सब बच्चों को शुद्ध सस्ता दूध भी दे सकते हैं।" (पृ० १९२) वृहदाकार आकर्षक विराट् पंचवर्षीय योजनाओं के भौतिक व आर्थिक विकास के चमकदार स्वप्नों में हम महान् नेता के स्वप्नों और दिव्य दृष्टि को भूल गये हैं। इसीलिए आज ऐसी पुस्तकों की बहुत आवश्यकता है, जो भारत के शिक्षित वर्ग को एक बार अपने १५ वर्षों के अतीत पर दृष्टि डालने और विचार करने की प्रेरणा दें। लेखन शैली सुव्यवस्थित और सुन्दर है। गांधीजी का पूर्ण व्यक्तित्व इससे स्पष्ट हो जाता है। अनुवादकी भाषा बहुत परिष्कृत और प्रवाहपूर्ण है।

**आर्थिकी**—(त्रैमासिक)। सम्पादक—श्री दूधनाथ—प्रकाशक—अर्थशास्त्र विभाग, श्रीकाशी विद्यापीठ वाराणसी—२। मूल्य—एक अंक का तीन रुपया, वार्षिक मूल्य—१२ रु०।

श्री काशी विद्यापीठ के अर्थशास्त्र विद्यापीठ की ओर से यह पत्रिका एक विशेष उद्देश्य से प्रकाशित की जा रही है। प्रस्तुत अंक में भारत के ग्रामों की अर्थ-रचना के सम्बन्ध में अनेक सुन्दर सुझाव दिये गये हैं, जैसे मानव-शक्ति संयोजन, सामुदायिक विकास, ग्राम-निर्माण, सहकारिता, भारत की खाद्य समस्या, पशुधनः समस्याएँ और सम्भावनाएँ आदि। प्रायः सभी लेख गम्भीर अध्ययन और परिश्रम की सूचना देते हैं। महात्मा गांधी के अर्थ-शास्त्र की छाप अनेक लेखों पर है। किन्तु इनके साथ मुर्गी पालन सम्बन्धी लेख का मेल नहीं बैठता। हम अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थियों से और भारत की आर्थिक योजना निर्माताओं से क्या यह अपेक्षा करें कि वे हिन्दी के अर्थशास्त्रीय पत्रों को भी अपने अध्ययन कक्ष में रखा करेंगे और उनसे लाभ उठायेंगे।

**विश्वज्योति**—(लोक राज्य अंक) सम्पादक—आचार्य विश्वबन्धु—प्रकाशक विश्वेश्वरानन्द वैदिक अनुसंधान साधु आश्रम होशियारपुर।

'विश्वज्योति' १४ वर्षों से हिन्दी पत्रकारिता में एक विशेष अभाव की पूर्ति कर रही है। प्रस्तुत अंक लोकतंत्र के सम्बन्ध में विविध दृष्टियों पर प्रकाश डालता है। आज भारत में दुर्भाग्य से अनेक अराष्ट्रीय प्रवृत्तियां लोकतंत्र के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए खतरा बनी हुई हैं। ऐसे समय में 'विश्व-ज्योति' के सम्पादकों ने लोकतंत्र के इतिहास, उसके स्वरूप, उसकी रक्षा के आवश्यक तत्वों पर प्रकाश डालने वाले करीब ५० विद्वत्तापूर्ण लेख देकर बहुत स्तुत्य कार्य किया है। आवश्यकता यह है कि हम इन लेखों को पढ़ें और देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का गम्भीरता से चिन्तन करें।

**अमरीकी इतिहास की रूपरेखा**—प्रकाशक—अमरीकी दूतावास का सूचना केन्द्र, बहावलपुर हाउस, नई दिल्ली। आकार $\frac{१८×२२}{४}$

यह पुस्तक अमरीका के इतिहास पर अच्छी परिचयात्मक पुस्तक है। अमरीका का निर्माण वस्तुतः संसार के इतिहास में चमत्कारपूर्ण रहा है। किस तरह एक प्रायः जन शून्य स्थान को यूरोप के साहसी आप्रवजक लोगों ने आकर बसाया और वहाँ गाँव व शहर बनाये तथा खेती और उद्योगों को इतना समृद्ध किया कि आज संसार में उसका अद्वितीय स्थान बन गया है। यह सब प्रेरणात्मक कहानी है। प्रस्तुत पुस्तक में इसका वर्णन बहुत रोचक और सरल ढंग से किया गया है। राष्ट्र निर्माण से पूर्व अमरीकी जनता को स्वाधीनता प्राप्ति के लिए संगठन और संग्राम करना पड़ा। विविध खण्डों में बसे हुए राज्यों को एक सूत्र में संगठित करना पड़ा। राजनीतिक, आर्थिक, औद्योगिक क्षेत्रों में परस्पर संघर्षपूर्ण हितों का समन्वय करते हुए अमरीकी जनता प्रबलतम और समृद्धतम राष्ट्र का निर्माण करने में सफल हो गई है। भारत के नये संविधान में भी अमरीका की संघात्मक शासन पद्धति अपनाई गई है। आज हम भी नये सिरे से अपने राष्ट्र का निर्माण करने में लगे हैं। अमरीकी इतिहास की सफलताएँ या असफलताएँ हमारे लिए शिक्षा-प्रद हो सकती हैं। इसलिए शिक्षित भारतीयों को अमरीकी इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक में ५० के करीब सुन्दर चित्र और नक्शे दिये गये हैं।


महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

**शृङ्गार**

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल

सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय : १३।३७, शक्तिनगर, दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०



**स्वस्थ जीवन**

सम्पादक : श्री राधाकृष्ण नेवटिया

प्रबन्ध सम्पादक : श्री धर्मचन्द सरावगी

एक प्रति ५० पै० वार्षिक ५) रुपया मात्र

साहित्य के साथ अपने सुन्दर स्वास्थ्य केलिए कविता, कहानी, संस्मरण तथा डायरी और परिषद की गतिविधि पढ़ें। आज ही पांच रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइए। विज्ञापन देकर लाभ उठावें। सहयोगी बन्धु अपनी नवीन कृतियां हमें भेजें।

कार्यालय :—

जैन हाऊस, ८।१ एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-१




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सरकारी इस्पात कारखानों में उत्पादन

१९६३-६४ में सरकारी क्षेत्र के तीनों इस्पात कारखानों के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई। इस वर्ष इन कारखानों में इस्पात पिंडों का उत्पादन निर्धारित क्षमता का ९७ प्रतिशत और बिक्री योग्य इस्पात का ९४ प्रतिशत हुआ, जबकि १९६२-६३ में ८३ प्रतिशत हुआ, और ७६ प्रतिशत हुआ था।

वार्षिक समीक्षा के अनुसार आलोच्य वर्ष में हिन्दुस्तान स्टील लि० ने कुल १८६ करोड़ ६० लाख रु० का माल बेचा, जबकि १९६२-६३ में १३० करोड़ ७० लाख रु० का बेचा था। अब भारतीय रेलों को सबसे अधिक सामान इस कम्पनी से मिल रहा है। कम्पनी ने रक्षा जरूरतों के लिए विशेष इस्पात देने के भी उपाए किए हैं। इस वर्ष ७२ लाख ६० हजार रु० का लोहा और इस्पात का सामान और २३ लाख रु० का उप-उत्पादन (बेंजेन, नेपथलीन और एन्थ्रापेन) का सामान निर्यात हुआ।

तीनों इस्पात कारखानों के विस्तार का काम संतोषजनक चल रहा है। भिलाई, रूरकेला और दुर्गापुर के कारखानों की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा रही है।

हिन्दुस्तान स्टील लि० ने चौथी योजना में अपने कारखानों के विस्तार की योजना अभी से बनानी शुरू कर दी है। ढलाई के काम आने वाले लोहे की कमी पूरी करने के लिए भिलाई और दुर्गापुर में एक-एक धमन भट्टी स्थापित करने के लिए कारवाई शुरू हो गई है और १९७० के अन्त तक ये भट्टियां चालू हो जाएंगी। चौथी योजना में इन तीनों कारखानों की उत्पादन क्षमता और बढ़ाने के लिए रिपोर्ट और विवरण तैयार किए जा रहे हैं।

वर्तमान और चौथी योजना में होने वाले विस्तार कार्यक्रमों के बाद, प्रशिक्षित कर्मचारियों की जो जरूरत पड़ेगी, उसे पूरा करने के लिए तीनों कारखानों में प्रशिक्षण संस्थाओं का विस्तार किया गया है।

## प्राप्ति : पर नुकसान की भरपाई नहीं

समीक्षा के अनुसार, उत्पादन बढ़ने के फलस्वरूप कम्पनी की वित्तीय स्थिति में सुधार हुआ है। आलोच्य वर्ष में कम्पनी को ४५ करोड़ ३ लाख ३० हजार रु० का लाभ हुआ, जबकि पिछले वर्ष २४ करोड़ ५० हजार रु० का हुआ था। भिलाई को १७ करोड़ १० लाख ६० हजार रु०, दुर्गापुर को १४ करोड़ २३ लाख ५० हजार रु०, राऊरकेला को १२ करोड़ ७६ लाख ७० हजार रु० और कोयला धुलाई कारखानों को ९२ लाख ५० हजार रु० का लाभ हुआ। किन्तु घिसावट, सरकारी ऋण पर ब्याज आदि को निकाल कर इस वर्ष हिन्दुस्तान स्टील लि० को कुल ४ करोड़ ७९ लाख रु० का नुकसान हुआ। मार्च, १९६५ के अंत तक कम्पनी को कुल मिला कर ६८ करोड़ ४३ लाख ४० हजार रु० का नुकसान हो चुका था।

आलोच्य वर्ष में पूंजीगत व्यय कुल ८५ करोड़ ६२ लाख रु० का हुआ, जिसमें से ६५ करोड़ ८५ लाख रु० का व्यय विस्तार कार्यक्रम पर हुआ। कम्पनी की सभी यूनिटों की कार्य पूंजी मार्च, १९६४ के अंत में बढ़कर ६१ करोड़ ५० लाख रु० रु० हो गई, जबकि मार्च, १९६३ के अंत में यह ५१ करोड़ ६० लाख रु० थी।

१९६३-६४ में कम्पनी की हिस्सा पूंजी में सरकार ने ८० करोड़ रु० और लगाए और इस तरह इसकी कुल हिस्सा पूंजी ४४७ करोड़ रु० हो गई। १९६४-६५ में सरकार ने ८१ करोड़ रु० की हिस्सा पूंजी और दी। आलोच्य वर्ष में सरकार से कोई ऋण नहीं लिया गया। वर्ष के अंत में कम्पनी पर सरकार का कुल ३५७ करोड़ १० लाख रु० का ऋण था। अतः १९६३-६४ के अन्त में कम्पनी में कुल ८०४ करोड़ १० लाख रु० की पूंजी लगी हुई थी। १ अप्रैल, १९६४ को सरकारी ऋण पर कुल १७ करोड़ ८५ लाख ५० हजार रु० का ऋण बैठता था, जो कम्पनी ने एक मुश्त लौटा दिया।

## गांवों में बिजली

जनवरी, १९६५ तक आसाम, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल के २ हजार से अधिक जनसंख्या वाले २६४४ गांवों में बिजली लग गई थी। आसाम में २५, उड़ीसा में १२३, पंजाब में ६१२, राजस्थान में १३६, उत्तरप्रदेश में १५०२ और प० बंगाल में २४६ गांवों में बिजली लगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी अर्थ-चर्चा

## इण्डोनीशिया तब और अब

१—गत महायुद्ध से पूर्व इण्डोनीशिया चावल का निर्यात किया करता था। अब वह प्रतिवर्ष करीब १० लाख टन चावल विदेशों से मंगाता है।

२—इण्डोनीशिया की जनसंख्या पहले से बहुत बढ़ गई है। जनसंख्या की वृद्धि २.३ प्रतिशत वार्षिक की दर से हो रही है। आगामी ३० वर्षों में आज से दुगनी अर्थात् ११ करोड़ हो जायगी।

जापान और ताइवान ४५०० पौण्ड चावल प्रति एकड़ पैदा करते हैं तब इण्डोनीशिया में १५०० पौण्ड चावल पैदा होता है।

किसी समय चीनी की भूमि के नाम से प्रसिद्ध था। वहां १९४० में चीनी की ८५ मिलें थीं, आज केवल ५५ मिलें हैं और चीनी का निर्यात बन्द कर दिया गया है।

रबर के उत्पादन की भी यही कहानी है। इसका उत्पादन ६५०,००० टन प्रतिवर्ष है, जबकि इससे छोटे मलयेशिया में रबर का उत्पादन ७५०,००० टन होता है। बहुत से रबड़ व्यापारी बेकार हो गये हैं।

## डेनमार्क की नई समस्या : ऊंचे वेतन

डेनमार्क एक छोटा सा देश है, जिसकी जनसंख्या सीमित (४७ लाख) है और जिसका जीवन स्तर ऊंचा है। इसके दुग्ध पदार्थों के लिए ब्रिटेन में एक खुला बाजार है। यहां समाज को इतनी सुविधाएं मिलती हैं, जो किसी भी देश के लिए ईर्ष्या की वस्तु है, फिर भी आज इसके सामने अनेक कठिन समस्याएं हैं, इसका व्यापारिक सन्तुलन बिगड़ रहा है। वहां के आर्थिक विकास संगठन ने एक जांच पड़ताल की है।

इसके अनुसार वहां की समस्याओं का एक प्रधान कारण लोगों की आय में वास्तविक उत्पादन से भी अधिक ऊंचे अनुपात में वृद्धि है। १९६० व १९६२ के बीच में वहां लोगों की आय में २३ प्रतिशत वृद्धि हुई है, जबकि कुल राष्ट्रीय उत्पादन १२ प्रतिशत बढ़ा है। इसका एक कारण व्यापारिक पदार्थों के आयात में वृद्धि है—१५ लाख डालर का आयात बढ़ गया है, जो कुल निर्यात का ७-८ प्रतिशत है। प्रश्न यह है कि इसका भुगतान कैसे किया जाय, जबकि देश में वेतनों को अधिकाधिक ऊंचा करने की मांग प्रतिदिन बढ़ रही है। ज्यों ही वेतन बढ़ते हैं, लोग अधिक चीजों को खरीदना चाहते हैं और परिणामस्वरूप आयात बढ़ते जाते हैं। सरकार पिछले कुछ वर्षों से लोगों की घरेलू खपत पर नियंत्रण लगाने का प्रयत्न कर रही है। इसके लिए सरकार ने जो कदम उठाये हैं, वे हैं—क्रय पर ९ प्रतिशत कर, सरकारी खर्चों की एक सीमा स्थिर करना तथा सरकारी व गैर सरकारी इमारतों के निर्माण में कमी। यह ठीक है कि निर्यात भी बढ़ रहे हैं और अन्य अनेक यूरोपियन देशों की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ रहे हैं, परन्तु आयात भी लगातार बढ़ते जा रहे हैं—इसीलिए व्यापारिक सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। इसका कारण देश में चीजों की बढ़ती हुई मांग है। १९६५ में इस पर यदि कुछ कठोर नियंत्रण न लगाये गये, तो स्थिति और भी विषम हो जायगी।

इसलिए उक्त संगठन की रिपोर्ट में कहा गया है कि लोगों की बढ़ती हुई आमदनी पर नियंत्रण लगाना होगा। वास्तविक उत्पादन की अपेक्षा यदि आय में अधिक वृद्धि की गई तो आयात अधिक बढ़ेंगे और व्यापारिक सन्तुलन और भी बिगड़ जायेगा और परिणामतः उद्योगों के भविष्य में अधिक विकास कठिन हो जायगा। लोगों के वेतनों में वृद्धि का अर्थ है उत्पादन व्यय में वृद्धि और निर्यात योग्य पदार्थों का अधिक महंगा होना। इसी लिए वेतन वृद्धि और मुद्रा प्रसार देश के सामने एक कठिन समस्या उपस्थित कर रहे हैं। ■ ■

## सम्पदा के ग्राहकों से

१. 'सम्पदा' कार्यालय को अपना पूरा पता शीघ्र लिख भेजें (नाम, ग्राम, डाकखाना, जिला व राज्य) ताकि समय पर 'सम्पदा' की प्रति मिलती रहे।

२. भविष्य में वार्षिक चन्दा रु० ८.५० भेजने का कष्ट करें।

—व्यवस्थापक सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# १९५९ से अब तक जीवन बीमा निगम की प्रगति (अंकों में)

(करोड़ रुपयों में)

| वर्ष | पालिसियों की संख्या | बीमा शुल्क रकम |
|---|---|---|
| १९५९ | ११,५१,२९९ | ४२९.१७ |
| १९६० | १२,५७,५५७ | ४९७.५४ |
| १९६१ | १४,६९,६६४ | ६०८.८२ |
| १-१-१९६२ से ३१-३-६३ | १७,६७,५४४ | ७४५.९६ |
| १-४-१९६३ से ३१-३-६४ | १६,४६,२९१ | ७०२.७६ |

## व्यापार

| | पालिसियों की संख्या | कुल पूँजी |
|---|---|---|
| १९५५ के अन्त में | ४५.१६ लाख | १,१२८ करोड़ |
| १९६३-६४ | १०१.१९ ,, | ३,४५८ ,, |

## प्रीमियम से आय बढ़ रही है

| | प्रथम वर्ष | पुनः नवीकृत |
|---|---|---|
| ३१ दिसम्बर १९५९ | १७.६८ करोड़ एवं | ६६.४८ करोड़ |
| ३१ मार्च १९६४ | २८.८७ ,, | ११६.०४ ,, |

## कुल जीवन कोष

| | |
|---|---|
| ३१ मार्च १९६३ | ७२०.७० करोड़ |
| ३१ मार्च १९६४ | ८०८.३६ ,, |

## नवीकरण का व्यय अनुपात

| | |
|---|---|
| १९६२-६३ | १४.१३ प्रतिशत |
| १९६३-६४ | १२.४६ ,, |

## आय का विवरण

| | |
|---|---|
| ६४.९ प्रतिशत | प्रीमियम नवीनीकरण |
| १९.२ ,, | प्रीमियम (पहली साल) |
| ०.८ ,, | प्रीमियम (अकेला) |
| ०.२ ,, | वार्षिकी की सम्भावना |
| १७.९ ,, | ब्याज, डिवीडेण्ड, किराया, आयकर और दूसरी प्राप्तियां |

## खर्च का विवरण

| | |
|---|---|
| ४९.२ प्रतिशत | खर्च निकालकर बचत |
| ६.० ,, | मृत्यु होने पर क्लेम |
| १९.० प्रतिशत | अवधि पूर्ण होने पर क्लेम |
| ०.२ ,, | वार्षिकी |
| २.७ ,, | अर्पित पालिसियों का मूल्य |
| ७.५ ,, | कमीशन |
| ११.२ ,, | वेतन, ग्रेच्युटी और निगम का प्रोविडेन्ट फंड आदि |
| ३.६ ,, | व्यवस्था में अन्य खर्च |
| ०.६ ,, | विविध |

## पालिसी होल्डरों और सुविधा प्राप्तकर्त्ताओं को देनदारी

| | |
|---|---|
| अवधि पूर्ण होने पर | ३३.८६ करोड़ |
| मृत्यु पर क्लेम | १०.८० ,, |
| कुल ३१ मार्च १९६४ | ४४.६६ करोड़ |

## आप का रुपया कहां लगा है ?

| | |
|---|---|
| १.१० प्रतिशत | भारत में जायदादों में ऋण |
| ९.९६ ,, | अर्पिक पालसियों पर ऋण |
| ७.५७ ,, | सरकार द्वारा गारन्टी शुदा ऋण |
| ०.०१ ,, | अन्य ऋण |
| ८.०३ ,, | म्युनिसिपल कमेटियों व पोर्टट्रस्टों के ऋण |
| २.२५ ,, | विदेशी सिक्योरिटियां, हिस्से, मोटगेज (भारत से बाहर जायदादों पर) |
| ४.३० ,, | भारतीय कम्पनियों में डिबैंचर |
| ८.९९ ,, | ,, ,, साधारण शेयर |
| २.७१ ,, | ,, ,, डिफरेन्स शेयर |
| ०.०८ ,, | यूनिट ट्रस्ट को दी गई प्रारम्भिक पूंजी |
| ३.३१ ,, | भूमि, मकान आदि जायदादों पर भारत में |
| १.३१ ,, | एजेन्टों को देय आदि |
| ०.२८ ,, | उद्योगों में स्थिर ऋण |
| २.१७ ,, | डिपाजिट (सरकार द्वारा प्रमाणित) |
| ०.४५ ,, | भूमि अधिग्रहण आदि |
| २.२८ ,, | विविध |
| १६.६४ ,, | राज्य सरकार की सिक्योरिटियां |
| ३१.५५ ,, | केन्द्रीय सरकार की सिक्योरिटियां |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ स्फुट आर्थिक विचार

—संजय

## अन्तरिक्ष यात्रा में चमत्कार

इस महीने की एक महत्वपूर्ण घटना है, रूस और अमेरिका की अन्तरिक्ष यात्रा में चमत्कारपूर्ण प्रगति। रूस का एक अन्तरिक्ष यात्री अन्तरिक्ष यान से बाहर निकलकर पृथ्वी के चक्कर लगाता रहा और फिर खिड़की खोलकर अन्दर घुस गया। यात्रियों ने स्वयं ही अपने यान को नीचे उतारने में अद्भुत सफलता प्राप्त की और अब रूस एक अन्तरिक्ष बमवर्षक बनाने की भी तैयारी में है। इसी तरह अमेरिका ने भी अन्तरिक्ष में अपने दो यात्री भेजे, जो अपने वायुयानों को स्वयं संचालन करते, मोड़ते और पृथ्वी के साथ सम्पर्क स्थापित करते रहे। अब अमेरिका ने अन्तरिक्ष में प्रथम परमाणु उपग्रह भी स्थापित कर लिया है, जो पृथ्वी से ७०० मील दूर कक्ष में घूमेगा। यदि इस परीक्षण में सफलता प्राप्त हुई तो अन्तरिक्ष में लम्बी यात्राएं करना सम्भव हो जायेगा क्योंकि परमाणु शक्ति के प्रयोग से अन्तरिक्ष यानों और उपग्रहों की ईंधन की समस्या आसानी से हल हो जायेगी। अमरीकी वैज्ञानिक चन्द्रमा पर एक ऐसे अड्डे की खोज में हैं, जहां से छोटे राकेट पृथ्वी को लक्ष्य बनाकर छोड़े जा सकें। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने कल्पना की है कि अन्तरिक्ष के पास काफी रूसी उड़ानों को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रूस एक अन्तरिक्ष बमवर्षक बना रहा है।

इन सब नये समाचारों से वह दिन निकट आ रहा है, जबकि मानव चन्द्रलोक की यात्रा करने में सफल हो जायेगा। चन्द्रलोक तक पहुंचकर पृथ्वालोक से सम्पर्क स्थापित करना अब असम्भव नहीं रहा है। अब अन्तरिक्ष यान टनों भारी बनने लगे हैं। ऐसे अन्तरिक्ष केन्द्र बनाने की योजना है, जहां से चन्द्रमा और अन्य ग्रहों को उड़ा जा सकेगा।

इस अन्तरिक्ष यात्रा से जहां वैज्ञानिक चमत्कारों का एक नया अध्याय शुरू हुआ है, वहां दूसरा प्रभाव विश्व की अर्थ व्यवस्था पर भी कम नहीं पड़ेगा। अमेरिका और रूस में एक नई अर्थव्यवस्था का क्षेत्र उन्मुक्त हो गया है। इसमें लाखों करोड़ों रुपये की पूंजी का विनियोजन होगा, जो आज भले ही उत्पादक न हो किन्तु निकट भविष्य में यह उद्योग उत्पादक उद्योग बन सकता है। इसमें काम करने वाले वैज्ञानिक और कर्मचारी आजीविका का नया क्षेत्र ही तलाश नहीं करेंगे, बल्कि अन्तरिक्ष यात्रियों के लिए एक नया द्वार भी खोल देंगे। किन्तु यदि मानव ने दैत्य की सी शक्ति प्राप्त करके अपने स्वार्थ और लोभ पर विजय न पाई तो वैज्ञानिक प्रगति के लिए बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा परस्पर भीषण संघर्ष में परिणत हो सकती है, इस आशंका की भी हम उपेक्षा नहीं कर सकते। चन्द्र और दूसरे ग्रहों पर अधिकार की इच्छा संघर्ष उत्पन्न कर सकती है।

## आखिर पैसा जाता कहां है ?

'सम्पदा' के किसी अंक में 'हमने आखिर पैसा जाता कहां है ! इस शीर्षक से एक लेख देकर सरकारी खर्चों की चर्चा की थी। यह खर्च लगातार बढ़ते जा रहे हैं। इसी शीर्षक से एक लेख 'कामर्स' में अब प्रकाशित हुआ है। इसमें बताया गया है कि शासन प्रबन्ध पर व्यय निरन्तर बढ़ता जा रहा है। १९५४-५५ में शासन प्रबन्ध पर ३०.६२ करोड़ रुपया खर्च हुआ था। नये बजट में इस मद में ९१.३६ करोड़ रुपया रखा गया है। सामान्य प्रशासन, पुलिस, विदेशी विभाग और आय-व्यय निरीक्षण सभी मदों में खर्च बढ़ गया है। सामान्य शासन खर्च ९.५३ करोड़ रुपये से बढ़कर २२.३२ करोड़ रुपये और पुलिस का खर्च ४.१० करोड़ से बढ़कर २८.९१ करोड़ रुपये तक पहुँच गया, यद्यपि जनता को आज अधिक शिकायतें हो रही हैं। चोरी, डाके और मारपीट की घटनाएं आज अधिक बढ़ गई हैं।

शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, सहकारिता, ब्राडकास्टिंग आदि समाज सेवा विभागों पर भी करीब ४½ गुना खर्च बढ़ गया है। १९५४-५५ में इस मद में ४०.०८ करोड़ रुपया खर्च हुआ था और अब नये बजट में १८४.६६ करोड़ रुपया खर्च हुआ है। इसमें शिक्षा विभाग पर भी खर्च में करीब ४० करोड़ रुपये की वृद्धि हुई है। हमें यह



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण रखना चाहिए कि सामान्यतः शिक्षा की व्यवस्था राज्यों का विषय है। इस वर्ष ७० लाख रुपया नेहरू विश्वविद्यालय के लिए रखा गया है। योजना विभाग पर ही गत वर्ष से इस वर्ष ४० लाख रुपये का व्यय बढ़ा दिया है। चीनी निर्यात के लिए भी सरकार को २.१ करोड़ रुपया सबसीडी के रूप में देना पड़ा है और इस वर्ष १० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। इस प्रकार भारत सरकार का खर्च निरन्तर बढ़ता जा रहा है और जनता पर करों का बोझ कम नहीं हो रहा है। सैनिक व्यय के बढ़ने पर तो सरकार की कोई आलोचना नहीं करता, क्योंकि वह राष्ट्र के जीवन की रक्षा का प्रश्न है, परन्तु शेष खर्चों में तो काफी कमी की जा सकती है।

## सहकारी समितियों में सुधार

अनेक वर्षों से भारत सरकार सहकारी समितियों की स्थापना पर विशेष बल दे रही है। प्रायः सभी राज्यों में सहकारी समितियों की स्थापना के लिए रुपये आदि की सुविधा भी बहुत मिलती रही है। किन्तु कुछ वर्षों से यह भी अनुभव किया जाता रहा है कि सहकारी समितियां ठीक तौर पर काम नहीं कर रहीं। बहुत से चालाक आदमी इनमें घुसकर सब लाभ स्वयं प्राप्त कर लेते हैं। आचार्य विनोबा ने भी सहकारी आन्दोलन के दोषों पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। बहुत सी समितियां सरकार से बहुत रुपये तो ले लेती हैं, किन्तु उनका दुरुपयोग करती हैं। सहकारी समितियों में भी भ्रष्टाचार बहुत बढ़ रहा है। यह सब बातें देखकर भारत सरकार ने श्री रामनिवास मिरधा की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की थी। इसने जो परामर्श दिए हैं, उनका सारांश यह है कि निहित स्वार्थ लोगों का पता लगाकर उन्हें सहकारी समितियों का सदस्य बनने से रोका जाय, कृषि सहकारी समितियों में केवल कृषकों को ही सदस्य बनाया जाय। एक गांव में एक से अधिक सहकारी समिति न हो, सहकारिता के कानून में परिवर्तन किया जाय और रजिस्ट्रारों को ये अधिकार दिए जाने चाहिए कि वे नकली सहकारी समितियों को समाप्त कर सकें, सहकारी समितियों का चुनाव सर्व सम्मत होना चाहिए और समितियों की संख्या बढ़ाने की अपेक्षा उनकी कार्यक्षमता और निर्दोषता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। यदि इन परामर्शों पर वस्तुतः कोई ध्यान दिया गया, तो इसमें संदेह नहीं कि सहकारी समितियां देश के आर्थिक विकास में सचमुच कुछ सहयोग दे सकेंगी।

## चीनी के निर्यात से नुकसान

खाद्यमन्त्री श्री सुब्रह्मण्यम की सूचना के अनुसार भारत सरकार को चीनी के निर्यात में २.१ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। यों चीनी के निर्यात से १९ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा उपलब्ध हुई है। विभिन्न देशों को निम्नलिखित मात्रा में चीनी का निर्यात किया गया है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| मलाया | १४५०९ टन | दक्षिण वियतनाम | १९३४६ टन |
| ब्रिटेन | १०५२५ टन | अमरीका | ९९४३१ टन |
| होंगकोंग | १०७६९ टन | इटली | १९१५३ टन |
| जापान | ६०८६६ टन | | |

इन देशों को चीनी ६७४ रु. से ९८८ रु. प्रति टन के हिसाब से बेची गई है। क्या यह हानि चीनी के निर्यात के प्रश्न पर पुनर्विचार की आवश्यकता नहीं बताती? यदि हम चीनी के निर्यात को कुछ प्रोत्साहन न दें, तो जहां चीनी देश में सस्ती होगी, वहां किसान भी अनाज को पैदा करने की तरफ अधिक ध्यान देंगे।

## दिल्ली में बैंकिंग प्रगति पर

इस महीने में दिल्ली में प्रायः सभी मुख्य बैंक अपना कारोबार बढ़ाने के लिए एक दूसरे की होड़ में लगे हैं। पंजाब नैशनल बैंक भी, जिसकी सबसे अधिक शाखाएं दिल्ली में हैं, अपनी वर्तमान गति से सन्तुष्ट नहीं है। वह अपनी अनेक नई शाखाएं इस महीने में खोल चुका है। यूनाइटिड कमर्शियल बैंक, बैंक आफ इण्डिया आदि ने भी दिल्ली में अपना कारोबार बढ़ाया है। बैंक आफ बड़ोदा, देना बैंक और दूसरे बैंक भी दिल्ली में अपना कारोबार बढ़ाने के लिए नई शाखाएं खोलने में लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में अनेक बैंकों की शाखाएं खुल जायेंगी। दिल्ली में बढ़ता हुआ बैंक कारोबार दिल्ली के आर्थिक, व्यापारिक और औद्योगिक विकास का जहां एक प्रमाण है, वहां दिल्ली के नागरिकों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन का भी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएँ

## उद्योग वाणिज्य मंडल के प्रस्ताव

२०-२१ और २२ मार्च को श्री केशवप्रसाद गोयनका की अध्यक्षता में भारतीय उद्योग वाणिज्य मंडल का ३८वां अधिवेशन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में मुख्यतः ५ प्रस्ताव पास हुए। पहले प्रस्ताव में तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में बनाई गई उद्योग नीति के लक्ष्य पूर्ण न होने के निम्नलिखित मुख्य कारण बताये गये। उत्पादक तत्वों पर कठोर नियन्त्रण, भारी कराधान और आवश्यक आयात पर प्रतिबन्ध आदि। इसलिए सरकार से उद्योग नीति में उचित संशोधन करने के लिए कहा गया। निजी उद्योगों पर कम से कम प्रतिबन्ध लगाने का अनुरोध करते हुए यह सम्मति प्रकट की गई कि सरकार को उन निजी उद्योगों के क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहिए, जो काफी विकसित हो चुके हैं। जिन उद्योगों के लिए कच्चे माल या मशीनरी के आयात की आवश्यकता नहीं है, उन्हें उदारता से लाइसैन्स दिये जाने चाहिएं। लाइसैंस देने में अनुचित विलम्ब भी नहीं होना चाहिए। अवास्तविक मूल्य नीति ने जहां वस्तुओं को दुर्लभ बना दिया है, वहां उत्पादन क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। अब तक मैनेजिंग एजैन्सी की प्रथा देश के औद्योगिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हुई है, इसलिए कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे इस प्रथा को प्रभाव शून्य कर दिया जाय। भारत सरकार की श्रम नीति भी वेतन और उत्पादकता में किसी उचित सम्बन्ध को नहीं देखती। इससे उद्योग की उत्पादन क्षमता जहां कम होती है, वहां उद्योग का व्यय भी बढ़ जाता है।

दूसरे प्रस्ताव में यह सुझाव दिया गया था कि तीसरी योजना की अवधि में जनसाधारण को सुविधाएं मिलने की बजाय मंहगाई, भारी कराधान, पूंजी निर्माण में कठिनता और उत्पादन क्षमता की निष्क्रियता आदि परिणाम भोगने पड़े हैं। इसलिए चतुर्थ योजना बनाते समय हमें अपनी कार्य नीति में उचित परिवर्तन करना होगा और पूंजीगत उद्योगों के साथ-साथ उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन की उपेक्षा नहीं करनी होगी, कृषि उत्पादन को प्रमुखता देनी होगी। जनसंख्या नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना होगा; सिंचाई, बिजली, रेलवे, सड़क निर्माण और प्रशिक्षिपक शिक्षण को प्राथमिकता देनी होगी और शेष कार्य निजी उद्योग पर छोड़ देना चाहिए। प्रथम दो योजनाओं में निजी उद्योग ने कुल का ४८ प्रतिशत विनियोजन किया और कुल राष्ट्रीय आय का ८४ प्रतिशत उपार्जन किया। इससे यह निश्चित है कि निजी उद्योग कम व्यय और साधनों के सदुपयोग द्वारा अच्छा काम कर सकता है। इसलिए उसे चतुर्थ योजना में उचित स्थान मिलना चाहिए। इसी दूसरे प्रस्ताव में चतुर्थ योजना के आकार को भी इतना रखने के लिये कहा गया था, जिससे कि हमारे साधनों पर बहुत दबाव न पड़े।

तीसरा प्रस्ताव, बढ़ते हुए मूल्यों के सम्बन्ध में था। सरकारी प्रयत्नों को अपर्याप्त और दोषपूर्ण बताते हुए इसे क्षेत्रीय दृष्टि से न सोचकर व्यापक राष्ट्रीय दृष्टि से हल करने की सलाह दी गई थी। अन्न के क्षेत्रीय विभाजन को समाप्त करने की भी सम्मति इस प्रस्ताव में दी गई है।

चौथे प्रस्ताव में एक सुस्थिर और सुनिश्चित अर्थ नीति के निर्माण का आग्रह करते हुए उचित और सीमित कर लगाने का अनुरोध किया गया था, जिससे उद्योगों में कुछ बचत हो सके और पूंजी निर्माण में सहायता मिल सके। नये बजट में कुछ प्रस्तावों का स्वागत करते हुए भी उन्हें अपर्याप्त कहा गया था। कुछ करों में उचित संशोधन की भी सलाह दी गई थी।

पांचवें प्रस्ताव में अन्न व्यापार के क्षेत्र में सरकार के प्रवेश और प्रतिबन्ध को व्यापारी समाज के लिए हानिकारक बताते हुए यह कहा गया था कि हरेक असफलता के लिए व्यापारियों को बदनाम नहीं करना चाहिए। अभाव और महंगाई के वास्तविक कारण उत्पादन की कमी को दूर करने का ही विशेष प्रयत्न करना चाहिए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## संसद में संशोधित बोनस विधेयक

संसद के इसी अधिवेशन में संशोधित बोनस विधेयक प्रस्तुत किया जायगा । बोनस कमीशन की सिफारिशों के सम्बन्ध में उद्योग क्षेत्रों ने आपत्तियां प्रस्तुत की थीं। इस सम्बन्ध में बोनस उप समिति किसी सर्व सम्मत निश्चय पर नहीं पहुँच पाई । अब सरकार इस समिति में प्रकट किये गये विचारों के आधार पर स्वयं संशोधित बिल प्रस्तुत करने का विचार कर रही है । इन संशोधनों में श्रमिक का लक्षण व्यापक किया जायगा, जिससे ठेकेदार के नीचे काम करने वाले कर्मचारी भी आ जाएं। बीड़ी उद्योग के कर्मचारियों को भी इसके अन्तर्गत लाभ पहुँचे, इसके सम्बन्ध में भी विचार किया जायगा।

## बड़ौदा बैंक के नये अध्यक्ष

भारत के प्रमुख बैंकों में बैंक आफ बड़ौदा का अपना स्थान है । एक समाचार के अनुसार अब बैंक के अध्यक्ष श्री रामेश्वरदास बिडला चुने गये हैं । इससे पहले श्री तुलसीदास किलाचन्द इस बैंक के बहुत समय तक अध्यक्ष रहे थे । उन्होंने एक फरवरी १९६५ को इस पद से त्यागपत्र दे दिया। श्री बिडला सर्व सम्मति से इस पद पर नियत किये गये हैं । वे बिडला ब्रदर्स प्रा० लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर और सैंच्युरी मिल्स और हिन्द साइकिल्स लिमिटेड के अध्यक्ष भी हैं।

—महाराष्ट्र के उद्योगमन्त्री श्री सदाशिवराव बरवे शीघ्र ही योजनाआयोग के सदस्य नियुक्त हो रहे हैं। वे श्री त्रिभुवन नारायणसिंह के स्थान पर योजना-आयोग के उद्योग विभाग का कार्य संभालेंगे । इससे पहले वे देश और विशेषकर बम्बई की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन तथा प्रशासनिक कार्य करते रहे हैं।

—वित्तमन्त्री श्रीकृष्णमाचार्य ने अपने बजट प्रस्तावों में अनेक संशोधन किए हैं, यद्यपि इनको उद्योग और व्यापार क्षेत्र में बहुत अपर्याप्त समझा जाता है।

—भारत सरकार मैनेजिंग एजेन्सी की प्रथा को समाप्त करने पर जो विचार कर रही है, उसमें सम्भवतः कुछ महीने लग जाएंगे।

—भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय की सम्मति में १९७० तक भारत १४० लाख टन इस्पात की मांग को पूरा करने के लायक हो जायगा और १० लाख टन इस्पात का हम निर्यात भी कर सकेंगे। इस्पात उद्योग के विकास के लिए २०० करोड़ रुपये का प्रावधान भी किया जा रहा है।

—भारत सरकार ने पाकिस्तान की इस मांग को अस्वीकार कर दिया है कि सिन्धु जल सन्धि को एक वर्ष के लिए बढ़ा दिया जाय । इसकी अवधि १ मार्च १९६५ को समाप्त हो गई । पहली शर्त के अनुसार पाकिस्तान ने नहर का निर्माण पूरा कर लिया है।

—जब फसलें कट रही हैं, प्रकृति के भीषण प्रकोप के कारण पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश में फसलें तबाह हो रही हैं। असमय की वर्षा और ओला वृष्टि ने कटी और खड़ी फसलों को तबाह कर दिया है।

—बर्मा सरकार ने मिट्टी के तेल के सब कुओं और निजी मिशनरी के सब स्कूलों का राष्ट्रीयकरण कर लिया है। वह पिछले तीन वर्षों से राष्ट्रीयकरण की नीति पर चल रही है । गत वर्ष सब दुकानें, अनेक अखबार और कुछ विदेशी कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया गया था।

## आस्ट्रेलिया का ऊन उद्योग के विकास में सहयोग

केन्द्रीय वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री श्री मनुभाई शाह ने कैनबरा में विभिन्न मंत्रियों और अधिकारियों से व्यापार और आर्थिक सहयोग बढ़ाने पर विचार किया। आस्ट्रेलिया सरकार ने भारत के ऊनी वस्त्र उद्योग के विकास में सहयोग देना स्वीकार किया है।

श्री मैक-ईवन ने बातचीत के दौरान विश्वास दिलाया कि आस्ट्रेलिया सरकार भारत तथा दूसरे विकासशील देशों का निर्यात बढ़ाने में क्रियात्मक सहयोग देगी। दोनों देशों के बीच बातचीत सम्भवतः इस वर्ष के अन्त में दिल्ली में फिर होगी।

—नदी घाटी योजनाओं और जल विद्युत कार्यक्रमों के लिए अमेरिका ने भारत को २६.६ करोड़ रुपये का ऋण तथा ५ करोड़ रुपये का अनुदान देने की घोषणा की है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# किसानों का अर्थशास्त्र

## बाजरे की कांटेदार किस्म एस-५३०

पंजाब में बाजरे की एक नई किस्म निकाली गई है, जिसकी बाल पर कांटे होते हैं। कांटों के कारण चिड़ियां इसकी फसल को नुकसान नहीं पहुँचातीं। इस किस्म का नाम एस-५३० है।

एस—५३० बाजरे की उचित सिंचाई और सुधरे तरीकों से खेती करने पर फी हैक्टर २,३०० से २,८०० किलो (फी एकड़ २५ से ३० मन) तक पैदावार मिल सकती है।

## बाजरे में उर्वरक

बाजरे में उर्वरक एक बार में देने की बजाय दो बार में देने चाहिए। आधा उर्वरक बोआई करते हुए और बाकी आधा बाल निकलने के समय डालना चाहिए। इससे बाजरे की पैदावार अधिक होती है।

## तम्बाकू के लिए उर्वरक

हुक्का और खाने की तम्बाकू बोने वाले किसानों को सारा उर्वरक फसल की रोपाई से पहले खूड़ों में डालना चाहिए। इससे तम्बाकू की पत्तियां बढ़िया और अधिक आती हैं।

## चूहे और उनके भोजन का अनुपात

स्वास्थ्यमन्त्री सुशीला नायर के कथनानुसार चूहों की संख्या का अनुमान २४० करोड़ है जिसमें से ४० करोड़ चूहे भारत में हैं। ६ चूहे इतना माल खा जाते हैं जितना कि एक आदमी नहीं खा सकता। इसलिए गांवों में चूहों की संख्या को कम करने के लिए सबको मिलकर प्रयत्न करना चाहिए। ● ●

## श्रमिकों को रोजगार

चतुर्थ योजना में योजना आयोग २१.२ लाख मिलियन ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार देने की योजना बना रहा है। यह श्रमिक खेती का कार्य समाप्त होने पर पूर्णतः बेकार रहते हैं। योजना का पहला कार्य ऐसे कार्यों की तलाश होगा जिनमें कि इन श्रमिकों को लगाया जा सके। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास आदि कार्यों में इन को लगाकर श्रमिक समस्या का हल किया जायगा।

## पुलिस पर प्रति व्यक्ति खर्च

उत्तर प्रदेश में ६०४ व्यक्तियों के पीछे एक पुलिस का सिपाही है। महाराष्ट्र में ६०१ व्यक्तियों के पीछे १ पुलिस में काम करता है किन्तु बिहार में १३०८ व्यक्तियों के पीछे एक पुलिस में काम करता है।

समस्त भारत में बिहार ही एक ऐसा राज्य है, जहां पुलिस पर प्रति व्यक्ति सबसे कम व्यय होता है, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट है:—

| | |
|---|---|
| बिहार | १.१६ रुपये |
| उत्तर प्रदेश | १.६५ ,, |
| पश्चिमी बंगाल | १.२८ ,, |
| उड़ीसा और महाराष्ट्र | ३.४८ ,, |

## ४७ हजार बन्दर अमरीका को

वाणिज्य मंत्री श्री मनुभाई शाह ने बताया है कि १९६३-६४ में अमरीका को ४७,०६५ बन्दर भेजे गये, जबकि १९६१-६२ में ४१,०८२ और १९६२-६३ में ४४,४६१ भेजे गए थे।

---

## खाद्य-संकट.....

(पृष्ठ १८३ का शेष)

स्टील मिलों और तथा कथित अन्य सहायक उद्योगों का वित्तीय उपबन्ध—को काफी कम नहीं कर दिया जाता है जिससे कि कृषि को अधिक निधियां मिल सकें और दूसरे कृषि ऋण को पंगु बनाने वाले तथा किसानों की कर्ज योग्यता में बाधक बनने वाले कानून में समुचित संशोधन नहीं कर दिया जाता है। लेकिन इस समस्या का हल सार्वजनिक क्षेत्र की "कृषि" परियोजनाओं के लिए और अधिक उदारतापूर्वक रकमें निर्धारित करने में नहीं है, क्योंकि इन परियोजनाओं पर किये जाने वाले खर्चों से न तो कृषि ऋण की पूर्ति में वृद्धि होती है और न किसानों की कर्ज योग्यता में ही सुधार होता है। निसन्देह ये दोनों चीजें खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए बहुत ही जरूरी हैं।

समृद्धा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

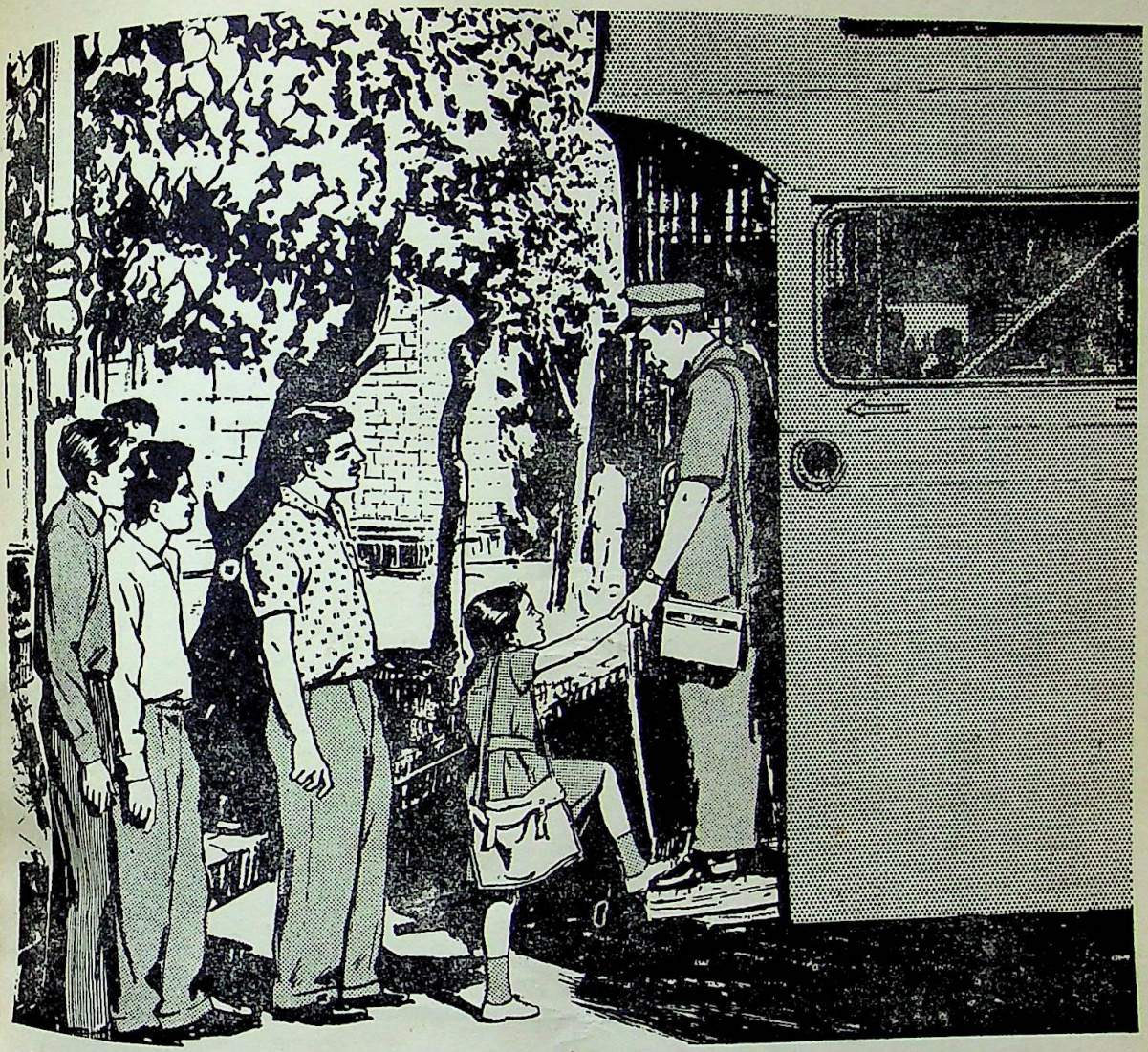

# ललिता के लिए बस की सवारी कितनी आनन्ददायक है

स्कूली छात्रा ललिता हमेशा बस की सवारी का आनंद उठाती है, किन्तु वह और उसकी तरह के अन्य बच्चे शायद ही कभी यह महसूस करते होंगे कि इण्डियनऑयल उनके लिए क्या करता है। उन्हें क्या मालूम कि यह राष्ट्रीय संगठन उनके जीवन में महत्वपूर्ण पार्ट अदा करेगा जब वे बड़े होकर भारत के नागरिक बनेंगे।

सार्वजनिक क्षेत्र के तेल शोधक कारखानों के अलावा, जो अभी उसके अन्तर्गत आये हैं, इण्डियनऑयल उद्योग के लिए आवश्यक विभिन्न पेट्रोलियम उत्पादनों का विक्रय करता है। केवल यातायात के ही क्षेत्र में इण्डियनऑयल भारत के प्रायः सभी प्रमुख यातायात संगठनों की तेल की जरूरत की पूर्ति करता है।

INDIANOIL

# इण्डियनऑयल

"राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि का प्रतीक"

**इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड**

maa. 100. 4711 A. HID.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# आपके घर की रंगीन सजावट

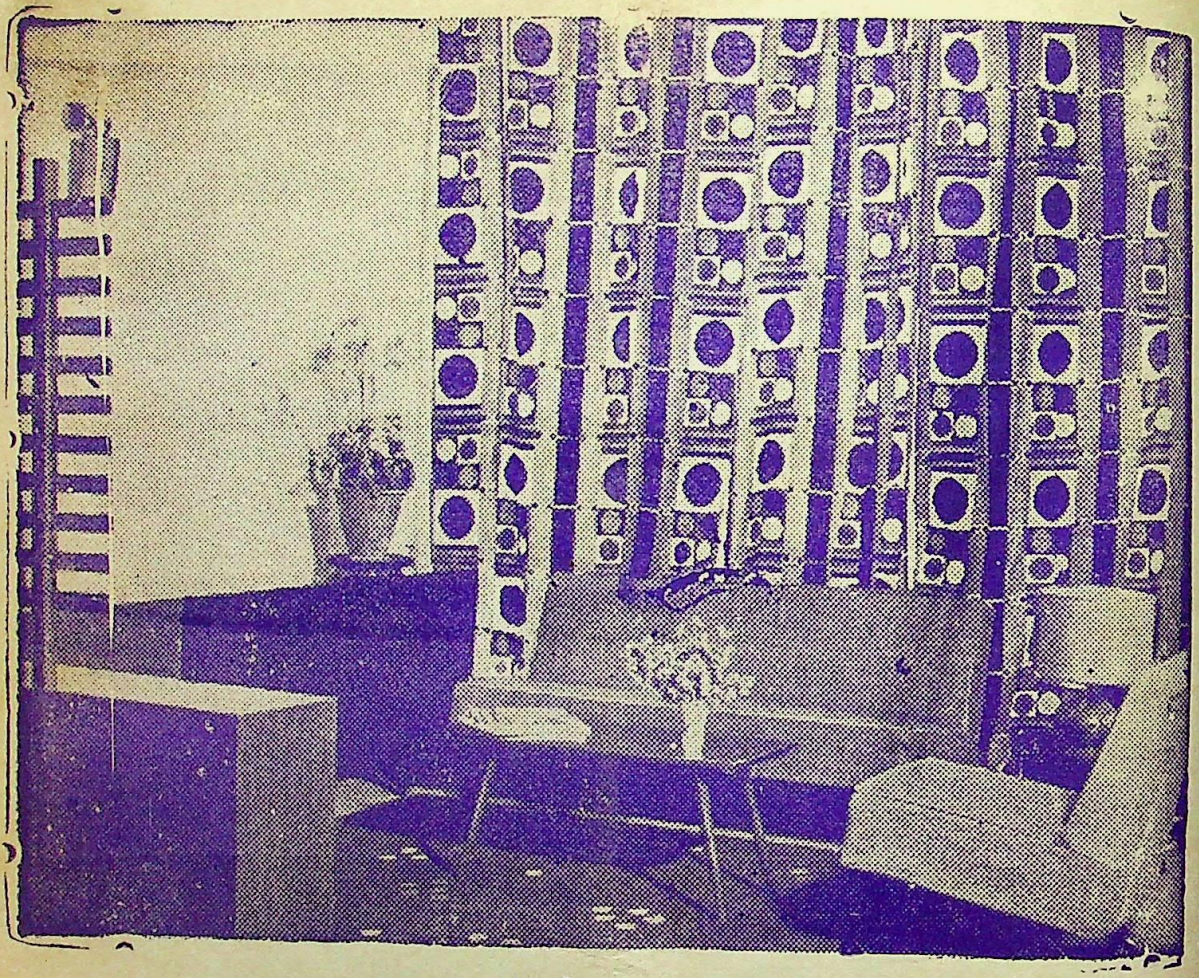

**कन्ट्रास्ट के सौन्दर्य द्वारा**

डी सी एम नवीनतम अत्यन्त रंगीन सज्जा के लिए आधुनिकतम प्रिंट्स प्रस्तुत करते हैं। सुनहरे पीले रंग के साथ आकर्षक कत्थई रंग। काली और सफेद पृष्ठ भूमि पर गहरा फिरोजी रंग।

**भारत भर में लगभग ६७० डी सी एम रिटेल स्टोरों से प्राप्य**

DCM

सुन्दरता और मजबूती का प्रतीक

**दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली**

डी सी एम का एक मजबूत नया सज्जा-वस्त्र

J W T D. C. M. 3144, H.


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १४ अंक : ५

मई १९६५

अध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का प्रमुख
हिन्दी मासिक

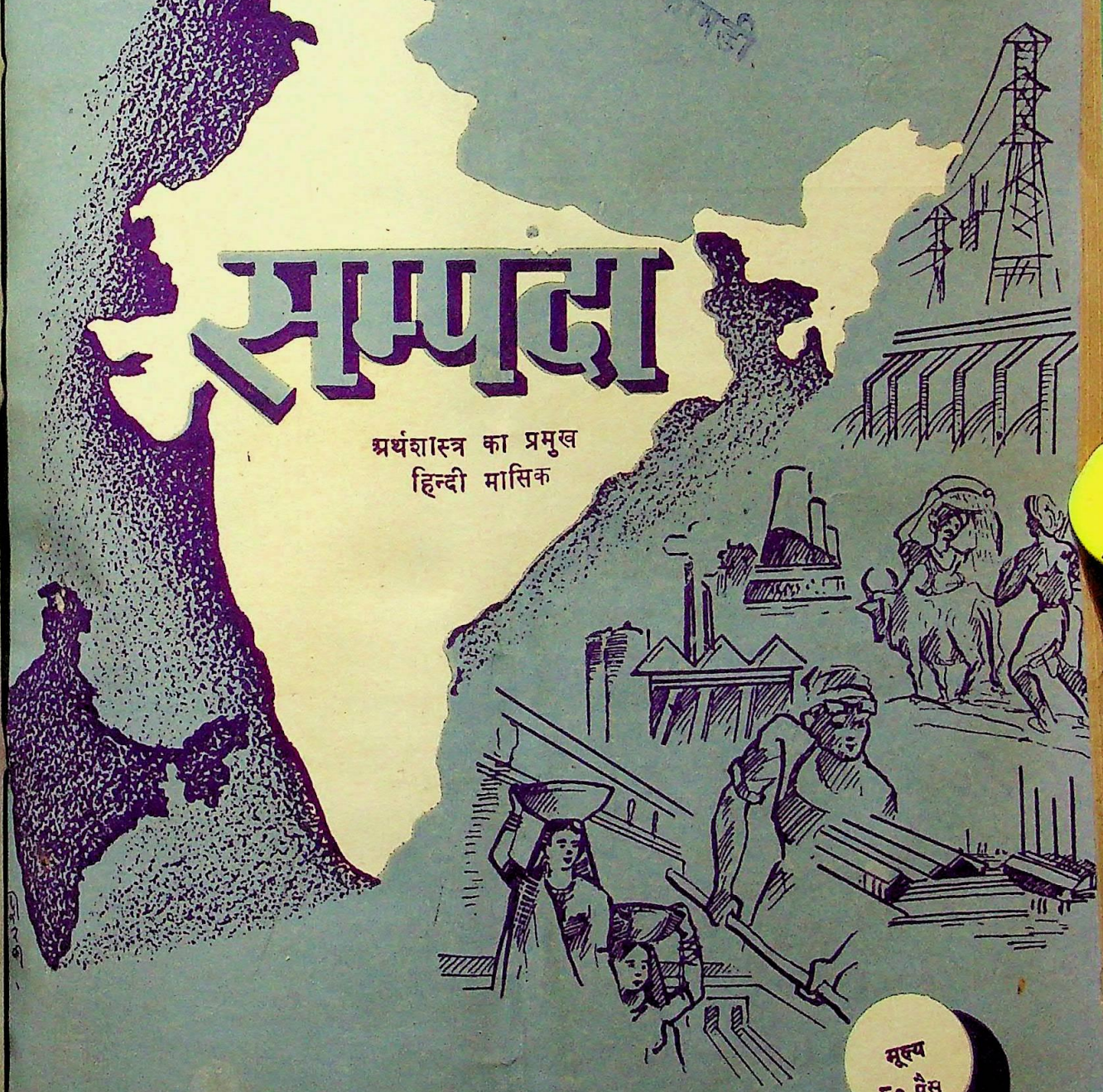

मूल्य
८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# FRUITFUL 5 YEARS

## उन्नति के पांच वर्ष

★ वार्षिक खाद्य-उत्पादन २१.०० लाख टन तक बढ़ गया।

★ ६०,००० नये कुओं का लक्ष्य, चलने वाली योजना में पूरा हो जाने की संभावना है।

★ बिजली की क्षमता जो २५३ मिलियन किलोवाट थी, धुवारन थर्मल स्टेशन के निर्माण से अब दुगुनी हो गयी है।

★ १९६०-६१ में विद्यार्थियों की संख्या २०,१७,००० थी, जबकि इन पांच सालों में २७,२२,००० हो गयी है।

★ रजिस्टर्ड सहकारी समितियां १४४२ से बढ़कर १५,८२२७ हो गई हैं।

★ प्रत्येक ग्राम में अब प्राथमिक कृषि सहकारी समितियां बन गई हैं।

गुजरात प्रशासन द्वारा प्रकाशित

DOIGUJ-65

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहने
की
आवश्यकता
नहीं

कलकत्ता में जैसे
विक्टोरिया मैमोरियल
वैसे ही

ग्वालियर सूटिंग

पहनने
वाले
व्यक्ति
भी अलग
ही
नजर
आते
हैं

वस्त्रों के प्रेमियों
के लिये सूटिंग के

निर्माता
ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (विविंग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

NPSJGR-175


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. अनेक उद्योगों की समस्याएं | सम्पादक | २०६ |
| २. सद्भावना का सूत्रपात ? | सम्पादक | २१० |
| ३. सम्पादकीय टिप्पणियां | | २११ |
| ४. क्या भारत अर्धविकसित देश है ? | श्री सुनीलकुमार घोष | २१५ |
| ५. अर्थशास्त्र के नियमों की अवहेलना | श्री आर्दशेर डी० आफ | २१८ |
| ६. विकासशील अर्थनीति में सामाजिक न्याय | श्री बी. जे. पटेल | २२२ |
| ७. प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष कर | श्री परसराम मनवानी | २२३ |
| ८. मार्क्स और गांधी | | २२५ |
| ९. विविध राज्यों के बजट : एक आलोचनात्मक दृष्टि | | २२७ |
| १०. अमेरिकन सहयोग से विपुल विकास | | २३० |
| ११. राष्ट्रीय आय व उत्पादन में वृद्धि | | २३२ |
| १२. मुद्रास्फीति और विकास | श्री योगेन्द्रनाथ | २३३ |
| १३. सबसीडी या महंगाई भत्ता | श्री शेषगिरि राव | २३६ |
| १४. आज की श्रम समस्याएं | | २३८ |
| १५. भारत में औद्योगिक विकास | | २३९ |
| १६. अविकसित राष्ट्रों की समस्याएं | श्री चैस्टर बाउल्स | २४१ |
| १७. जल की विशाल सम्पदा का उपयोग | | २४३ |
| १८. नया सामयिक साहित्य | | २४५ |
| १९. बीमा निगम : विचारणीय प्रश्न | | २४६ |
| २०. इस मास की आर्थिक घटनाएं | | २४७ |
| २१. गुप्त धन की समस्या | श्री मदनलाल गुप्त | २४९ |



## आवश्यकता

सम्पदा कार्यालय में एक सहायक की आवश्यकता है, जो कार्यालय सम्बन्धी पत्रव्यवहार अंग्रेजी व हिन्दी में कर सकता हो। अर्थशास्त्र से रुचि रखने वाले को प्राथमिकता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार।

**मैनेजर सम्पदा**
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली

## दो पर्यायवाची शब्द

## सम्पदा और हिन्दी में अर्थशास्त्र

१४ वर्षों के निरन्तर प्रकाशन ने यह सिद्ध कर दिया है कि सम्पदा व हिन्दी में अर्थशास्त्र परस्पर पर्यायवाची शब्द बन गये हैं।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ५
मई : १९६५

# सम्पदा

## अनेक उद्योगों की समस्याएं

१९६४-६५ के वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ में जिन उद्योगों के सामने नयी समस्याएं उपस्थित हो गई हैं, उनमें से वस्त्र उद्योग एक है। प्रायः सब राज्यों से ये समाचार आ रहे हैं कि मिलों में कपड़े का स्टाक जमा हो रहा है। मद्रास में ही मार्च १९६५ तक पौने चार लाख गांठ से अधिक कपड़ा गोदामों में पड़ा था। यही हाल सूत का है। अहमदाबाद, बम्बई आदि के भी समाचारों से इस बात की पुष्टि होती है। यदि सरकार ने कपड़ा मिलों को कोई आश्वासन न दिया तो यह बहुत सम्भव है कि कई छोटी मिलें अपनी तीसरी पारी बन्द कर दें। कुछ मिलों ने बन्द कर भी दी है।

सूती मिलों के संकट के अनेक कारण कहे जाते हैं। लोगों की क्रय-शक्ति कम हो जाने के कारण कपड़े की बिक्री कम हो गयी है। बैंकों ने उद्योगों को कर्ज देने के नियम कुछ कठोर कर दिये हैं। इस कारण अब उद्योग अधिक कपड़ा अपने पास रखने में समर्थ नहीं रहे। बैंकों की ब्याज दर भी उद्योगों को अधिक रुपया लेने से अनुत्साहित कर रही है। एक बड़ा कारण और भी बताया जाता है कि सरकार लोगों के पास गुप्तधन के एकत्र रुपयों के बारे में कठोरता से जांच-पड़ताल करने लगी है। इसलिए जिन लोगों ने उद्योगों को हुंडियां दे रखी थीं, वे भी वापिस ले रहे हैं। वस्त्र उत्पादन का व्यय भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। वस्त्र उद्योग के इस संकट को दूर करने के लिए सरकार को कुछ न कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन करने पड़ेंगे।

दूसरा उद्योग जो इस वर्ष के प्रारम्भ में समस्याओं में से गुजर रहा है, वह है कोयले का उद्योग। कोई समय था, जब कोयले के अभाव से अनेक उद्योग संकट में पड़ गये थे। बहुत से कारखाने बन्द हो गये थे, किन्तु आज स्थिति बिल्कुल बदल गयी है। कोयला खानों की क्षमता मांग से भी बढ़ गयी है। निकट भविष्य में जिस मांग का अनुमान किया गया था, वह कम हो रही है। दुर्गापुर, रूरकेला और भिलाई के उद्योग अपने लक्ष्यों के अनुसार विकास नहीं कर रहे हैं। बोकारो का कारखाना अभी तैयार तक नहीं हुआ है। दूसरी ओर कोयले के पिछले संकट के अनुभव के कारण बहुत से उद्योगों ने कोयले का उपयोग छोड़ कर तेल का उपयोग शुरू कर दिया है। बहुत से रेल इंजन भी डीजल से चलने लगे हैं। योजना-आयोग भी कोयले की मांग में कमी को अनुभव कर रहा है। उसने किसी समय इस वर्ष के लिए १०.४ करोड़ टन कोयले के उत्पादन का लक्ष्य रखा था, फिर इसे कम करके ९.७ करोड़ टन का लक्ष्य रखा गया। लेकिन अब इसे और भी अधिक कम करके केवल ७ करोड़ टन कोयले के उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। आयोग की सम्मति में इतना उत्पादन आज की आवश्यकताओं के लिए काफी होगा। बढ़ते हुए उत्पादन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्यों को पूरा करने के लिए इस उद्योग में विनियोजन भी बहुत बढ़ा दिया गया था। किन्तु अब कोयले की मांग ही कम हो रही है। अप्रैल १९६४ में खानों के पास ५२.४ लाख टन कोयला मौजूद था। इसके बाद से कोयला उद्योग ने अपना उत्पादन भी कम कर दिया है।

यद्यपि सरकार ने इस वर्ष कोयले के दामों में कई बार कुछ वृद्धि की घोषणा की है, तथापि कोयला उत्पादन के बढ़ते हुए खर्च इससे पूरे नहीं हुए। योजना आयोग ने सार्वजनिक उद्योगों पर १२ प्रतिशत के लाभ को उचित ठहराया है। कोयला उद्योग भी इस अनुपात से संतुष्ट हो जायगा। देखना यह है कि सरकार कोयले की मांग बढ़ाने के लिए क्या नये प्रयत्न करती है ? यदि हमने पांचवीं विकास योजना में उद्योग विकास के लक्ष्य पूर्ण कर लिये तो कोयले की मांग भी उत्पादन के अनुसार बढ़ सकेगी।

चाय विदेशी मुद्रा कमाने का बहुत अच्छा साधन है। १९६४ में ही चाय के निर्यात से १३० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई थी। किन्तु आज चाय उद्योग की सम्भावनाएं पहले से कम उज्ज्वल दीख रही हैं। इसलिए यह खतरा पैदा हो गया है कि १९७०-७१ तक चाय-उत्पादन और चाय निर्यात के लक्ष्य (१०.० और ६.७ करोड़ पौंड) पूर्ण हो सकें। चाय वित्तीय समिति ने यह सिफारिश की थी कि नये चाय विस्तार के लिए ५० प्रतिशत और पुनर्वीकरण के लिए ४० प्रतिशत की विकास छूट दी जाय। किन्तु नये वित्तीय विधेयक में यह भत्ते क्रमशः ४० और २० प्रतिशत दिये गये हैं। एक ओर चाय का उत्पादन-व्यय बढ़ गया है, और दूसरी ओर चाय के दाम गिरते जा रहे हैं। १९६३-६४ में चाय की औसत कीमतें ५.१६ रुपये प्रति किलोग्राम थी। १९६४-६५ में औसत कीमत गिर कर ४.९५ रुपया रह गयीं। इस कारण भी चाय उद्योग में नया विनियोजन कम हो रहा है। चाय उद्योग को यह भी डर है कि यदि नया बोनस विधेयक स्वीकार हो गया तो कई छोटे-छोटे बागान इस बोझ को सह नहीं सकेंगे। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि अनेक नए शीतल उष्ण पेयों का प्रचार बढ़ जाने के कारण भी चाय का प्रचार कम हो रहा है। चाय का प्रचार आवश्यकता के अनुरूप नहीं बढ़ रहा है।

इसी तरह का एक समस्यागत उद्योग जूट उद्योग है। कच्चे जूट का आयात कम हो जाने से उसके मूल्य २० प्रतिशत बढ़ रहे हैं। एक महीने में ही उसके मूल्य ३५ रु० मन से बढ़कर ४४ रु० मन हो गये हैं। बोरों के दाम जहां १५४ रु० प्रति १०० बोरा थे, वहां पिछले महीने बढ़कर १७५ रु० हो गये हैं। इसका स्पष्ट अर्थ है कि उत्पादन व्यय में बहुत वृद्धि और उसका निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव। आज निर्यात के लिए जूट की कीमतों का कम होना आवश्यक है किन्तु दूसरी ओर पाकिस्तान से जूट का अधिक आयात भी आज के राजनैतिक संकट में बहुत वांछनीय और व्यावहारिक नहीं दीखता। इसलिए मुख्य समस्या अधिक कच्चे जूट के आयात की नहीं होनी चाहिए। अन्य विधियों से उत्पादन व्यय कम करने और देश में ही जूट की खपत कम करने की होनी चाहिए और इसके लिए समस्त राष्ट्र का परस्पर सहयोग होना चाहिए।

पाकिस्तान जूट के क्षेत्र में बहुत भयंकर प्रतिस्पर्धी बनकर आ रहा है। वह निर्यात व्यापारियों को सहायता भी देता है। कच्चे माल की वहां कीमत भी कम है और मजदूरी भी कम। मलाया वगैरह में भी पाकिस्तान जूट मिलें खोलने में सहयोग दे रहा है। इसलिए जूट उद्योग की परिस्थिति और भी अधिक विकट हो रही है।

इन पंक्तियों में हमने कुछ उद्योगों की समस्याओं की ओर निर्देश किया है। वस्तुतः आवश्यकता यह है कि प्रत्येक उद्योग की समस्याओं पर गम्भीरता से विचार किया जाय और किसी प्रकार के वाद और पूर्वाग्रह से मुक्त होकर वास्तविक स्थिति को देखा जाय। ■■

## सद् भावना का सूत्रपात

यद्यपि पंचवर्षीय योजनाओं के साथ ही निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में परस्पर संघर्ष प्रारम्भ हो गया था, तथापि पिछले कुछ दिनों से यह संघर्ष उग्र रूप धारण कर रहा है। देश में ज्यों-ज्यों महंगाई बढ़ती गई, त्यों-त्यों उसकी जिम्मेदारी एक-दूसरे पर डालने और एक-दूसरे की कठोर आलोचना में दोनों पक्ष उग्र से उग्रतर होते गये। यह बढ़ती हुई उग्रता दोनों पक्षों के लिए ही ठीक नहीं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इसलिए यह जानकर सबको प्रसन्नता होगी कि दोनों पक्षों के जिम्मेदार प्रतिनिधि अब एक दूसरे की स्थिति व आवश्यकताओं को अनुभव करने लगे हैं। पंजाब और दिल्ली चेम्बर आफ कामर्स के अधिवेशन में रेलवे मंत्री श्री एस० के० पाटिल ने निजी उद्योग की प्रशंसा की थी। कलकत्ते में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी में भाषण देते हुए उन्होंने यह स्वीकार किया कि देश के स्वाधीनता-संग्राम में कांग्रेस को निजी क्षेत्र से पर्याप्त सहायता मिली है। इन्डियन चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ता में स्वयं गृह-मंत्री श्री गुलजारीलाल नन्दा और पार्लिया-मेंट मंत्री श्री सत्यनारायण सिन्हा ने उद्विग्न निजी क्षेत्रों के क्षुब्ध वातावरण को शांत करने की चेष्टा की। श्री सिन्हा ने तो यहां तक कहा कि प्रधान मन्त्री भी उनके विचारों से सहमत हैं। निजी उद्योग के प्रमुख नेता श्री घनश्याम दास बिड़ला ने संतुलित दृष्टिकोण रखते हुए जहां सरकार को व्यापार उद्योग की शिकायतों को दूर करने की राय दी, वहां निजी क्षेत्र को भी कांग्रेस सरकार से पूर्ण सहयोग देने की सलाह दी, क्योंकि उनका काम राष्ट्र निर्माण का है। निजी क्षेत्र ने राष्ट्रीय उत्थान में गौरवपूर्ण भाग लिया है और आगे भी गौरवपूर्ण भाग लेना है। निराश न होकर कांग्रेस सरकार को ही सहयोग देना चाहिए। अनेक दोषों और कमियों के बावजूद कांग्रेस सरकार के सिवाय और कोई दूसरा विकल्प नहीं है। गृह-मंत्री श्री नन्दा ने भी इस अधिवेशन में सहयोग की भावना की प्रशंसा करते हुए सरकार के सहयोग का विश्वास दिलाया, क्योंकि वस्तुतः देश के हित में ही दोनों का हित है। सरकार के साथ-साथ निजी उद्योग को भी राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देना है। परस्पर मतभेद हो सकते हैं परन्तु एक समान उद्देश्य को देखते हुए दोनों के अंतर को दूर करना कठिन नहीं है। जब मिश्रित अर्थ-नीति में दोनों को रहना है तो दोनों सह-अस्तित्व क्यों न स्वीकार करें? सरकार या निजी उद्योग किसी की कठोर आलोचनाओं की आवश्यकता क्या है। यदि उत्तरदायी प्रतिनिधि उद्योग का प्रतिनिधित्व करें तो अनेक समस्याएं आसानी से हल हो सकती हैं।

श्री सत्यनारायण सिन्हा ने समाजवाद के नारे को बहुत दूर तक ले जाने को अवांछनीय बताते हुए कहा कि समाजवाद जहां एक ओर सामान्य मानव का जीवन-स्तर ऊंचा करना चाहता है, वहां दूसरी ओर व्यक्ति को प्रतिष्ठा और अधिकार भी देता है। इसके लिए तथा उत्पादन वृद्धि के लिए भी निजी उद्योग का सहयोग अनिवार्य है।

कलकत्ते की इन चर्चाओं को यदि दोनों क्षेत्रों के परस्पर भ्रम निवारण और परस्पर सद्भावना का सूत्रपात समझें तो यह शुभ सूत्रपात होगा। रिजर्व बैंक के भूतपूर्व गवर्नर श्री एच० वी० आर० आयंगर ने भी निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों के महत्व-पूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला है। मद्रास में वहां के उद्योग मंत्री ने निजी क्षेत्र को सहयोग का आश्वासन दिया है। यह सब समाचार भगवान करे देश के वातावरण को सुखद बनाएं। विनोबा जी के शब्दों में सार्वजनिक क्षेत्र हथेली और निजी क्षेत्र उंगलियां हैं। इन दोनों में परस्पर असहयोग और विरोध समस्त देश के लिए हानिकारक होगा। क्या हम कलकत्ते की चर्चाओं को नए युग का सूत्रपात समझें?

## मुख्य बन्दरगाहों पर आवागमन का भार

बन्दरगाह किसी भी देश के विदेशी व्यापार के द्वार होते हैं और उसके आर्थिक विकास में बहुत महत्वपूर्ण योग देते हैं। पहली योजना के पूर्व भारत में पांच मुख्य बन्दरगाह थे—बम्बई, विशाखापटनम, मद्रास, कलकत्ता और कोचीन। इस योजना के अन्तिम वर्ष में कांधला का विकास भी कर लिया गया था। पहली दो योजनाओं में इन्हीं मुख्य बन्दरगाहों में विस्तार और आधुनिकीकरण के कार्य किये गये, लेकिन आवागमन का परिमाण बढ़ने की संभावना के कारण चौथी और पांचवीं योजनाओं में नये बन्दरगाहों के विकास की जरूरत महसूस की जा रही है। गोआ की मुक्ति के बाद मारमुगाओ, प्रदीप, हलदिया, मंगलोर और तूतीकोरन को मुख्य बन्दरगाहों के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव किया गया है।

सन् १९६२-६३ में मुख्य बन्दरगाहों पर माल की ढुलाई का परिमाण ४३ मिलियन टन था। वर्त्तमान क्षमता ४८ मि० टन है। बम्बई की क्षमता पूरी तरह उप-युक्त हो रही है और अन्य बन्दरगाहों में भी केवल सीमान्त



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमता ही फालतू होगी । यदि बन्दरगाहों के विकास सम्बन्धी कार्य पूरे कर लिए जाएं, तो तीसरी योजना के अन्त तक यह क्षमता ६२.७ मि० टन तक बढ़ाई जा सकती है ।

बन्दरगाह अधिकारियों ने भविष्य में माल ढुलाई के संभावित परिमाणों के बारे में बताया है कि चौथी और पांचवीं योजनाओं के अन्त में संभावित माल ढुलाई क्रमशः १०७ और १२८ मि० टन होगी । परिवहन मंत्रालय ने सम्बद्ध अंक ९० और १२१ बताये हैं । लेकिन तीसरी योजना के ६२.७ मि० टन के लक्ष्य के बाद थोड़े से समय में ही बन्दरगाहों की क्षमता को डेढ़ गुना या दुगना कर सकना स्वप्नमात्र है ।

यह ठीक है कि हलदिया, मंगलौर, तूतीकोरन और प्रदीप जैसे नये बन्दरगाहों के बनने से १७ मि० टन क्षमता बढ़ जावेगी । लेकिन प्रश्न यह है कि क्या प्रारम्भिक अवस्था में इस क्षमता को पूरी तरह इस्तेमाल करना भी संभव होगा ? किसी भी बन्दरगाह की क्षमता के पूरे उपयोग के लिए उस के पीछे के प्रदेश का विकास होना अत्यावश्यक है । सुव्यवस्थित व्यापारिक केन्द्रों—सड़क परिवहन साधन, वित्तीय संस्थाओं आदि की स्थापना में काफी समय लगता है । वर्त्तमान बन्दरगाहों के पूर्व मशीनीकरण के बाद भी यह आशा नहीं की जा सकती कि हम चौथी योजना के अन्त तक ८९ मि० टन की इस्तेमाल करने योग्य क्षमता प्राप्त कर लेंगे । अधिक से अधिक ७५ मि० टन की क्षमता ही प्राप्त की जा सकती है । लेकिन मात्र ढुलाई के परिमाणों में संभावित अनुमानों को देखते हुए यह बहुत कम है । फिर अगले पांच वर्षों में क्षमता ८९ मि० टन से १२९ मि० टन (जो कि परिवहन मंत्रालय आशा करता है) की क्षमता तक पहुँचना एक गंभीर प्रश्न है । इस प्रकार आने वाले समय में बन्दरगाहों पर माल की भीड़ बढ़ने का काफी डर है ।

माल ढुलाई में वृद्धि के मुख्य कारण हैं—बढ़ता हुआ विदेशी व्यापार, बन्दरगाहों के पीछे के प्रदेशों का द्रुत विकास और भारी-भारी सामान जैसे लोहा, खाद्यान्न, कोयला आदि की बढ़ती हुई ढुलाई । इस समस्या के हल के लिए जहां नये बन्दरगाहों का विकास आवश्यक है, वहां कुछ और उपाय भी करने होंगे । सबसे पहली बात तो यह है कि घाटों पर होने वाले आवागमन को बड़े बन्दरगाहों से हटा देना चाहिए । इससे २८ प्रतिशत तक की क्षमता विदेशी व्यापार के लिए उपलब्ध की जा सकती है । घाटों के आवागमन को छोटी बन्दरगाहों से भी चालू रखा जा सकता है । फिर, भारी सामान की ढुलाई के लिए पूर्ण रूप से मशीनीकरण करना होगा । मजदूर संघों को इस समस्या से अवगत कराना चाहिए तथा इस प्रकार अतिरिक्त श्रम के लिए अन्य कार्य देखना चाहिए । ढुलाई को गति के साथ सम्पन्न करने के लिए समय और हरकत (Time and Motion) के बारे में सुचारु ढंग से अध्ययन करना भी अत्यन्त आवश्यक है, जिससे माल की ढुलाई में समय बचाया जा सके, प्रबन्ध के बारे में भी नए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है । इस प्रकार बन्दरगाहों की सम्पूर्ण कार्य पद्धति को न बदला गया तो आने वाले समय में हमें ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, जिसकी हम अभी कल्पना भी नहीं कर सकते ।

## सूती की नई मिलें

हमने उपर्युक्त पंक्तियों में वस्त्र उद्योग के संकट की चर्चा की है कि मिलों के गोदामों में माल भरा हुआ है। इसका सीधा सादा उपाय यह है कि जहां अनबिके माल को बेचने में आने वाली रुकावटों को दूर किया जाय वहां यह भी आवश्यक है कि नई सूती मिलों को प्रोत्साहन देने में कुछ शिथिलता की नीति बरती जाए । इसके विपरीत सरकार ने चौथी या पांचवीं योजनाओं की अवधि में ५५ नई स्पिनिंग मिलें खोलने का विचार किया है। एक तरफ मिलों के गोदाम खाली नहीं हो रहे और दूसरी तरफ नई मिलें खोलने की अनुमति दी जा रही है । इनमें से, प्रस्तुत प्रस्ताव के अनुसार ३० मिलें सहकारी क्षेत्र में खोली जाएंगी और शेष सार्वजनिक क्षेत्र में । एक तरफ यह कहा जा रहा है कि इन मिलों को सार्वजनिक क्षेत्र में खोलने का प्रयोजन पिछड़े हुए क्षेत्रों का विकास करना है और दूसरी ओर यह कहा है कि केवल आर्थिक कारणों से ही स्थान का चुनाव किया जायगा । इन दोनों में परस्पर संगति कहां तक है, यह विचारणीय है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु मूल प्रश्न यह है कि आज जिस वेग से सूती कपड़े की मांग बढ़ रही है, उसे वर्तमान मिलें पूरा करने में क्या समर्थ नहीं हैं ? इंडियन काटन मिल्स फैडरेशन के कथनानुसार अभी सब मिलों में पूरी क्षमता के अनुसार काम ही नहीं हो रहा, यद्यपि पिछले १४-१५ वर्षों से अधिकाधिक क्षमता का उपयोग किया जाने लगा है। कुल १४७ लाख तकुए मिलों में हैं, जिनमें से १३१ लाख तकुए पहली और दूसरी पारी में काम कर रहे हैं और ११.७ लाख तकुए तीसरी पारी में। ये तकुए भी पूर्ण क्षमता से काम नहीं कर रहे। १९६४ (जनवरी से अक्तूबर) के अंकों से यह स्पष्ट है कि पहली, दूसरी और तीसरी पारी में क्रमशः ८९.४०, ८९.५२ और ६७.९८ प्रतिशत क्षमता का उपयोग हो रहा है। यदि इस समस्त कार्य क्षमता का पूर्ण प्रयोग हो तो शायद नई मिलें खोलने की बहुत अधिक आवश्यकता न रहे। फिर यदि नई आवश्यकता हो भी तो चर्खे और अम्बर चर्खे का उपयोग क्यों नहीं किया जाय ? यूं सरकार ग्राम उद्योगों के प्रोत्साहन का नारा बहुत लगाती है, किन्तु समय आने पर वह इन्हें भूल जाती है।

वस्त्र उद्योग के विकास के साथ ही कपास की खेती का घनिष्ट सम्बन्ध है। क्या आज हम इसकी आवश्यकता देश में ही पूर्ण कर लेते हैं ? यदि नहीं तो नई आवश्यकता कैसे पूरी कर सकेंगे ? कपास के क्षेत्र में वृद्धि करने का अर्थ है अनाज या दूसरे आवश्यक पदार्थों की खेती में कमी और क्या आज यह वाञ्छनीय भी है ?

## पश्चिमी सीमा पर अशांति

१९६२ के अंत में जिस तरह चीन ने भारत की उत्तरी सीमा पर विश्वासघात पूर्ण आक्रमण करके देश की आर्थिक और राजनैतिक स्थिरता को चुनौती दी थी, उसी तरह का एक प्रयत्न पाकिस्तान ने भारत की पश्चिमी सीमा पर करना प्रारम्भ किया है। गुजरात राज्य के उत्तरी कच्छ में पाकिस्तान की सेनायें घुस गयी हैं। यद्यपि भारतीय सेनायें उनका कड़ा मुकाबला कर रही हैं और स्थिति को चिन्ताजनक नहीं कहा जा सकता, तथापि यह चिनगारी किसी भी समय भयंकर रूप धारण कर सकती है। आज तो पाकिस्तान को चीन के पूर्ण सहयोग का विश्वास है। यदि भारत ने अपनी आत्म रक्षा के लिए पश्चिम में सेनायें भेजीं तो काश्मीर और आसाम में पाकिस्तानी सीमायें तथा नेफा में चीनी सेनायें भी आने की सम्भावनायें की जा सकती हैं। यदि ऐसा हुआ तो भारत की आर्थिक और राजनैतिक स्थिरता को फिर एक बड़ी चुनौती को स्वीकार करना पड़ेगा। परन्तु हमें विश्वास करना चाहिए कि राष्ट्र का नैतिक बल किसी तरह कमजोर नहीं होगा और भारत सरकार समस्त जनता के हार्दिक और सक्रिय सहयोग पाकर ऐसी स्थिति आने का पूर्व ही कच्छ में आक्रमणकारी सेनाओं को परास्त एवं निराश कर देगी तथा कंजरकोट से उन्हें निकाल देगी।

## पंजाब नेशनल बैंक की ७०वीं जयन्ती

पिछले महीने में पंजाब नेशनल बैंक ने अपनी ७०वीं जयन्ती मनाई है। इस अवसर पर हम उसके योग्य अधिकारियों को बधाई देते हैं। पंजाब नेशनल बैंक भारत में स्थापित पहला महान बैंक है और आज भी निजी बैंकों में डिपोजिट की दृष्टि से इसका दूसरा स्थान है। देश के दुर्भाग्यपूर्ण विभाजन की बड़ी आंधी तथा अन्य अनेक संकटों को झेलकर भी बैंक ने अपनी स्थिति को दृढ़ और सुस्थिर रखा है। इस बैंक की स्थापना १३ अप्रैल १८९५ को सिर्फ २० हजार रुपये से हुई थी। उस समय इसके कार्यालय में केवल ९ कर्मचारी काम करते थे, जिनका वेतन केवल ३८४० रुपया प्रतिवर्ष होता था। आज ७० वर्ष बाद इसकी ४६० शाखाएं हैं, जिनमें ११ हजार आदमी काम करते हैं और जिनका वार्षिक वेतन करीब ६ करोड़ रुपया होता है। १९६४ के अंत तक इसमें २१५ करोड़ रुपये के डिपाजिट थे। पूंजी और कार्यकोष ५॥करोड़ रुपये तक बढ़ गये हैं। निजी क्षेत्र में सबसे अधिक शाखाएं इसी बैंक की हैं। टेलर प्रणाली का सूत्रपात सबसे पहले इसी बैंक ने किया है। आर्थिक अनुसंधान की स्थापना इस बैंक का एक मुख्य कार्य है। गणक मशीनों को भारतीय बैंकों में सबसे पहले लगाने का श्रेय इसी बैंक को है। यह बैंक के लिए गौरव की बात है कि इस बैंक में छोटे खाते खोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है। इसका कारण बैंक की लोकप्रियता ही है। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत सहायक संघ की सहायता

भारत सहायक संघ की ओर से तीसरी योजना के अंतिम वर्ष के लिए १०२७ मिलियन डालर का वचन दिया गया है। इस तरह कुल पांच वर्षों में कुल ५४७२ मिलियन डालर भारत को सहायता मिलेगी। सबसे अधिक सहायता संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा मिलेगी, २२८५ मिलियन डालर अर्थात् कुल सहायता का ४३.२ प्रतिशत। यद्यपि पश्चिमी जर्मनी अपनी सहायता निरंतर कम करता गया है, तथापि विश्व बैंक तथा अंतर्राष्ट्रीय विकास संस्था को छोड़कर सहायता देने वालों में उसका दूसरा स्थान होता है।

भारत ने तीसरी योजना के प्रारम्भ में ५४६० मिलियन डालर सहायता के लिए आवेदन किया था, किन्तु सहायता इससे भी १२ मिलियन डालर ज्यादा मिली है। इस सहायता में कनाडा और अमेरिका द्वारा दिये गये गेहूँ ऋण सम्मिलित नहीं हैं।

नीचे की तालिका से सहायक देशों की राशियों का ज्ञान हो जाएगा।

इस सहायता का दो तिहाई अनुदान व कम ब्याज-दर की राशि रूप में है। ये ऋण भी २५ वर्षों या अधिक अवधि के लिए होंगे। कोई-कोई ऋण तो ५० वर्षों की अवधि के लिए हैं, जिसमें १० वर्ष की मुहलत और भी मिल सकती है। अमेरिका के एक ऋण पर तो १० वर्षों तक केवल १ प्रतिशत और बाद में २.५ प्रतिशत ब्याज देना पड़ेगा। इन नरम शरतों से भारत को विशेष रूप से लाभ पहुँच सकता है। फिर इस सहायता में बहुत बड़ी राशि है, जो किसी निश्चित कार्य के लिए न होकर सामान्य विकास के लिए है।

## (मिलियन डालरों में)

| | १९६१-६२ | १९६२-६३ | १९६३-६४ | ६४-६५ | ६५-६६ | पांच वर्षों का योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आस्ट्रिया | — | ५ | ७ | १ | ५ | १८ |
| बेल्जियम | — | १० | १० | — | ४ | २४ |
| कनाडा | २८ | ३३ | ३०½ | ४१ | ४१ | १७३½ |
| फ्रांस | १५ | ४५ | २० | २० | २० | १२० |
| जर्मनी | २२५ | १३९ | ९९½ | ९५ | ८६ | ६४४½ |
| इटली | — | ५३ | ४५ | ३६ | ३६ | १७० |
| जापान | ५० | ५५ | ६५ | ६० | ६० | २९० |
| नीदरलैंड | — | ११ | ११ | ११ | ११ | ४४ |
| इंगलैंड | १८२ | ८४ | ८४ | ८४ | ८४ | ५१८ |
| अमेरिका | ५४५ | ४३५ | ४३५ | ४३५ | ४३५ | २,२८५ |
| विश्व बैंक और आई० डी० ए० | २५० | २०० | २४५ | २४५ | २४५ | १,१८५ |
| योग | १,२९५ | १,०७० | १,०५२ | १,०२८ | १,०२७ | ५,४७२ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्या भारत अर्धविकसित देश है ?

श्री सुनील कुमार घोष, एम. ए.

• श्री एच० वेंकट सुबैया के मतानुसार "भारत अर्ध-विकसित देशों में सबसे ज्यादा विकसित है ।" पंचवर्षीय योजनाओं के अंतर्गत आर्थिक पिछड़ेपन के चिन्हों को हटाया जा रहा है और हमारी अर्थव्यवस्था "विकासोन्मुख" कही जाने लगी है । फिर भी हम जब विकसित राष्ट्रों—(जैसे अमेरिका ब्रिटेन इत्यादि) की अर्थ व्यवस्था से मिलान करते हैं तो हमें भारत में अर्ध विकास के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं...। लेखकों ने प्रति व्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय, पूंजी की मात्रा, उद्योगों की कमी आदि स्तरों में से किसी एक की तुलनात्मक आधार पर ही अर्ध विकसित अर्थ व्यवस्था की परिभाषा की है । इस सम्बन्ध में कुछ विद्वानों के कथनानुसार विचार करना लाभप्रद होगा ।

**प्रो० अलक घोष के मतानुसार :**—अल्पविकसित का अर्थ होता है प्रति व्यक्ति कम आय के कारण आर्थिक कार्यक्रमों की कमी ।

**संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेषज्ञों के अनुसार :**—"अर्ध विकसित अर्थ व्यवस्था का आशय उन देशों से लगाया जाता है, जिनकी प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अमेरिका, कनेडा, आस्ट्रेलिया व पश्चिमी यूरोप की प्रति व्यक्ति वास्तविक आय से कम पाई जाती है ।"

**प्रो० नर्कसें के मतानुसार :**—"अर्ध विकसित देशों में पूंजी का अभाव बना रहता है । जन संख्या व प्राकृतिक साधनों की तुलना में इन देशों में पूंजी का अभाव पाया जाता है । काम में आ सकने वाले साधन बेकार पड़े रहते हैं ।"

**तीन वर्ग**

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा व वित्तीय समस्याओं पर परामर्श समिति के अंतर्गत ५३ राष्ट्रों के प्रति व्यक्ति आय स्तर का मूल्यांकन किया गया था । इस अध्ययन दल ने प्रति व्यक्ति आय स्तर के आधार पर निम्नलिखित ५३ राष्ट्रों को तीन वर्गों में विभक्त किया है—

(१) प्रथम वर्ग में अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन आते हैं । इन देशों की औसत प्रति व्यक्ति वार्षिक आय करीब १००० रुपये है । अध्ययन दल ने इन देशों के आर्थिक स्तर को विकसित अर्थ व्यवस्था कहा है ।

(२) द्वितीय वर्ग में दक्षिणी अफ्रीका का संघ, फिन-लैंड, जापान, आस्ट्रेलिया, इटली आदि राष्ट्र आते हैं । यहां की औसत प्रति व्यक्ति वार्षिक आय ५०० रुपये से तथा १००० रुपये के बीच में है । अध्ययन दल ने इन देशों के आर्थिक स्तर को अपूर्ण विकास माना है ।

(३) तृतीय वर्ग में भारत, चीन, इन्डोनेशिया, बर्मा, श्री लंका, फिलीफाइन्स आदि राष्ट्र शामिल हैं । इन देशों की औसत प्रति व्यक्ति वार्षिक आय करीब ५०० रुपये या इससे कम है । इन राष्ट्रों को अर्ध विकसित माना गया है ।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है—कि अर्ध विकसित देशों में प्राकृतिक साधन तो पर्याप्त मात्रा में मौजूद होते हैं, किन्तु पूंजी तथा कुशल श्रमिकों की कमी के कारण उनका दोहन-पूर्ण रूप से नहीं हुआ है, जिसके परिणाम-स्वरूप विकास कार्यों में स्फूर्ति का अभाव होता है ।

अर्ध विकसित देशों की विशेषताओं को बताने के पूर्व अविकसित एवं अर्ध विकसित अर्थ व्यवस्था में अंतर बताना अनुचित न होगा । यदि जन संख्या क्षेत्र की दृष्टि से कम है तो ऐसे देशों की अर्थ व्यवस्था को अविकसित कह सकते हैं । अल्प जनसंख्या होने से प्राकृतिक साधनों का शोषण समुचित रूप से नहीं हो पाता । ऐसे देशों में बेकारी की समस्या भयंकर रूप धारण नहीं कर पाती । किन्तु यह स्थिति उस समय भयंकर हो जाती है, जब जन संख्या क्षेत्र की दृष्टि से अधिक होती है । उद्योग सम्पूर्ण श्रम शक्ति को काम प्रदान नहीं कर पाते । फलतः श्रमिकों का बहुत बड़ा भाग अनुत्पादक रूप से बचा रहता है । ऐसे देशों को अर्ध विकसित कहा जा सकता है । इन क्षेत्रों में बेकारी की समस्या भयंकर रूप धारण किये रहती है ।

अर्ध विकसित देशों की विशेषताएं निम्नलिखित होती हैं, जो भारतीय अर्थ व्यवस्था पर भी लागू होती हैं ।

**(१) जनसंख्या की अधिकता :**—अर्ध विकसित



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों में जनसंख्या की अधिकता पाई जाती है। भारत भी इस रोग से ग्रसित है। १९५१ में जन गणना आयोग ने अनुमान लगाया था कि १९६१ तक जनसंख्या में १.२५ प्रतिशत की दर से वृद्धि होगी। किन्तु १९६१ के आंकड़ों से पता चलता है कि जनसंख्या में वास्तविक वृद्धि २% से हुई है। भारत में चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं की उपलब्धि से मृत्यु दर में काफी गिरावट आ गई है, किन्तु जन्म दर में किसी प्रकार की कमी नहीं आई। भारत में जनसंख्या वृद्धि की सीमा निम्नलिखित आंकड़ों से स्पष्ट हो जाती है—

## भारत में जनसंख्या की वृद्धि

| वर्ष | जनसंख्या (करोड़ों में) | वास्तविक वृद्धि या कमी (करोड़ों में) | दस वर्षीय प्रतिशत परिवर्तन |
|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ |
| १९२१ | २५.१ | — | — |
| १९३१ | २७.९ | २.८ | +११.० |
| १९४१ | ३१.९ | ४.० | +१४.२ |
| १९५१ | ३६.१ | ४.२ | +१३.३ |
| १९६१ | ४३.९ | ७.८ | +२१.५ |

(स्रोत—"भारतीय अर्थशास्त्र" देराश्री एवं नाथू रामका)

## जनसंख्या की तुलनात्मक परिचय (१९५३)

| देशों के नाम | जनसंख्या (लाखों में) | प्रतिशत वृद्धि |
|---|---|---|
| यूरोप | ५७७ | २३.१ |
| उत्तरी अमेरिका | १७४ | ७.० |
| मध्य तथा दक्षिणी अमेरिका | १७४ | ७.० |
| अफ्रीका | २१२ | ८.५ |
| भारत (१९६१) | ४३९ | २१.५ |

(स्रोत—"अवर एकोनोमिक प्रोब्लैम"—श्री मर्चेन्ट एवं वाडिया)

**(२) प्रति व्यक्ति आय में कमी**—अर्ध विकसित देशों में प्रायः यह देखा गया है कि प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय विकसित राष्ट्रों की तुलना में बहुत ही कम होती है। बहुत से लेखकों ने इसी विशेषता के कारण ही भारत को अर्ध विकसित देश कहा है। भारत में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि बहुत ही मन्द गति से हुई है। योजना के प्रारंभिक काल से अब तक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि राष्ट्रीय आय की वृद्धि को देखते हुए बहुत ही कम है। प्रति व्यक्ति आय तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर का अनुमान नीचे दिये हुए आंकड़ों से लगाया जा सकता है।

## राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय

१९४८-४९ के मूल्यों के अनुसार—

| वर्ष | राष्ट्रीय आय (अरबों रु० में) | प्रति व्यक्ति आय (रुपये में) |
|---|---|---|
| १९५०-५१ | ८८.५ | २४७.५ |
| १९५५-५६ | १०४.८ | २६७.८ |
| १९६०-६१ | १२७.५ (प्रारंभिक अनुमान) | २९३.७ |
| १९६१-६२ | १४६.० (संशोधित) | २९३.४ |

(स्रोत—"सम्पदा" जनवरी १९६४ पृष्ठ ३७

## जनसंख्या और आय

| जनसंख्या का प्रतिशत | व्यक्तियों की मासिक आय |
|---|---|
| ४५ | १० रु० से २० रु० |
| ३० | २० रु० से ३० रु० |
| २४ | ३० रु० से ५० रु० |
| १ | ५० रु० से अधिक |

स्रोत—"सम्पदा" जनवरी १९६४ पृष्ठ १७

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि देश के विभिन्न वर्गों में काफी असमानता है। इससे यह भी पता चलता है कि जनसंख्या के कम प्रतिशत लोगों के हाथ में राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग चला जाता है और अधिकांश जनसंख्या के हाथ में कम।

प्रो० के० एन० भट्टाचार्य ने "इन्डियन प्लान्स" में प्रति व्यक्ति आय में अंतर के आधार पर राष्ट्रों की अर्थ-व्यवस्था को ५ वर्गों में विभक्त किया है।

| देश | प्रति व्यक्ति आय (डालरों में) | अर्थ व्यवस्था के प्रकार |
|---|---|---|
| १—अमेरिका | १८०० | पूर्ण विकसित अर्थ व्यवस्था |
| २—ब्रिटेन, कनाडा, | १०००० | विकसित |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



| | | |
|---|---|---|
| फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड आदि। | | |
| ३—दक्षिणी अफ्रीका, अर्जेन्टाइना आदि | ५०० | अपूर्ण विकसित |
| ४—एशिया के अधिकांश भाग, अफ्रीका, मध्य अमेरिका आदि | २०० | पिछड़ी अर्थ व्यवस्था |
| ५—भारत तथा अन्य देश | १०० से कम | बहुत पिछड़ी अर्थ व्यवस्था अथवा अर्ध विकसित अर्थ व्यवस्था |

इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत एक अर्ध विकसित देश है। यहां की प्रति व्यक्ति आय बहुत ही कम है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किए गए सर्वेक्षण में किया गया है कि अर्ध विकसित देशों में भारत का स्थान बीसवां है।

**(३) जन संख्या का खेती पर निर्भर होना :—** प्रायः यह देखा गया है कि पिछड़े हुए देशों में जनसंख्या का अधिकांश भाग खेती पर निर्भर होता है। भारत में भी १९६१ की जनगणना के अनुसार ६९.५ प्रतिशत लोग कृषि पर आश्रित हैं। खेतों पर अधिक दबाव होने के कारण अनुत्पादक जोतों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह अनुमान लगाया गया है कि भारतीय कृषि कार्य में बीस से २५ प्रतिशत लोग व्यर्थ लगे हुए हैं। इससे प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता दिन प्रतिदिन गिरती ही जा रही है। यह बड़े दुःख का विषय है कि जनसंख्या का अधिकांश भाग खेतों पर लगे रहने पर भी हमें दो वक्त के भोजन के लिए विदेशों का मुंह ताकना पड़ता है। भूमि के छोटे छोटे टुकड़ों ने तथा सामाजिक प्रथाओं ने भारतीय कृषि को जर्जरित कर दिया है। अनुमान लगाया गया है कि औसतन किसान परिवार के पास ५.२८ एकड़ भूमि है। भारत में १०.० प्रतिशत किसान भूमिहीन हैं। प्रति एकड़ उत्पादन क्षमता भी भारत में बहुत ही कम है। भारत में किसानों के अधिकार में भूमि का बटवारा इस प्रकार है।

## परिवारों के अधिकार में जोत की भूमि

| जोत का आकार (एकड़) | कुल परिवारों का प्रतिशत | जोती व बोई गई कुल भूमि का प्रतिशत |
|---|---|---|
| भूमि हीन— | १०.९ | |
| ०.०१ से ०.९९ | ३०.७ | १.२ |
| १.०० से २.४९ | १४.६ | ४.७ |
| २.०० से ४.९९ | १५.५ | १०.७ |
| ५.०० से ९.९९ | १४.३ | १९.१ |
| १०.०० से २४.९९ | १०.१ | २९.२ |
| २५.०० से ४९.९९ | ३.०० | १९.३ |
| ५०.०० तथा अधिक | १.०० | १५.८ |

स्रोत—"भारत" १९६३ पृष्ठ ११२

विकसित देशों में थोड़े व्यक्ति लगकर अधिक उत्पादन कर लेते हैं और उसका अधिकांश भाग निर्यात के लिए बचा लेते हैं। किन्तु भारत में अधिकांश लोग लग कर भी अपनी खुराक स्वयं नहीं जुटा पाते। भारतीय किसानों की साख सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने के लिए श्री ए० डी० गोरवाला की अध्यक्षता में अखिल भारतीय साख सर्वेक्षण समिति नियुक्त की गया था। इस कमेटी के प्रतिवेदन से स्पष्ट होता है कि ७०% साख महाजनों से प्राप्त होती है। महाजन ७०% ब्याज लेने में भी किसी प्रकार संकोच नहीं करता। ब्याज की दरें विभिन्न राज्यों में एक सी नहीं होती हैं। भारतीय किसान मानसूनी जुए पर हमेशा निर्भर रहता है। भारतीय कृषि के पिछड़े पन के संबंध में डा० वायलकर ने, जो रायल कृषि समिति, इंग्लैण्ड के रसायन सलाहकार थे, कहा है कि *" भारतीय कृषि को पुरातन या पिछड़ा हुआ मानना पूर्णतया गलत होगा। भारतीय किसान ब्रिटिश किसान जैसा ही अच्छा और कई मामलों में उससे भी अधिक अच्छा है···। पर खाद, सिंचाई और साख की कमी ने भारतीय कृषि को कमजोर बना दिया है।" सहकारी साख समितियों से कृषकों को सिर्फ ३.१ प्रतिशत ऋण मिल पाया है× जो कि किसानों की कुल साख संबंधी मांग को देखते हुए बहुत ही कम है।

*"भारतीय अर्थ शास्त्र" श्री देरा श्री एवं नाथूराम का पृष्ठ १८५ से आंशिक उद्धृत।

×अ. भा. साख सर्वेक्षण के आधार पर।

( लेष पृष्ठ २४८ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थशास्त्र के नियमों की अवहेलना

श्री आर्दशेर श्राफ

●

किसी भी देश के आर्थिक जीवन में उन सैद्धान्तिक नीतियों से काफी हानि पहुँचती है, जो अर्थशास्त्र के अकाट्य नियमों को दुर्लक्ष्य करना चाहती हैं। मैं शब्द "चाहने" पर जोर देता हूँ क्योंकि कोई भी सैद्धान्तिक नीति बुनियादी आर्थिक नियमों को असरकारक तरीके से दुर्लक्ष्य नहीं कर सकती है। लेकिन जब वे ऐसा करने की कोशिश करते हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि वे ऐसा करने में कुछ समय के लिये कामयाब हो गये हैं, लेकिन आखिर में अर्थशास्त्र के नियम, सैद्धान्तिक नीतियों द्वारा अर्थव्यवस्था में घुसाई गई विकृतियों को हटाकर अपना प्रभाव दिखाने लग जाते हैं। और इस बीच परिहार्य मानव संकट के रूप में भारी दण्ड चुकाना पड़ता है। हमारे देश की कुछ घटनाओं की समीक्षा इस तथ्य पर प्रभाव डालती है।

## खाद्य पदार्थ

पहिले खाद्य पदार्थों के भावों का सवाल ही लीजिये : इसके बारे में एक कहावत है कि जब चावल बहुत महंगा हो जाता है तब भगवान राजा को बदल देता है। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्र की विधि और व्यवस्था का आधार उसकी उदरपूर्ति पर होता है। जब भोजन की कीमतें जनसाधारण की पहुँच से बाहर हो जाती हैं, तब राजनैतिक अव्यवस्था स्वाभाविक बन जाती है। स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद पहली बार अखबारों में अब भोजन के बारे में दंगों की खबरें छपी हैं। रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के एक सर्वेक्षण के अनुसार, युद्धोत्तर किसी भी १२ महीनों की अवधि में सबसे मूल्य वृद्धि करीब १४ प्रतिशत ४ सितम्बर १९६४ को समाप्त होने वाली अवधि में हुई है। खाद्य पदार्थों में करीब २४ प्रतिशत वृद्धि हुई है। गेहूँ की कीमतों में करीब ३२ प्रतिशत; चावल में ११ प्रतिशत, चने में १०८ प्रतिशत और मूंगफली में ३८ प्रतिशत वृद्धि हुई है। चूंकि भारत का एक औसत परिवार भोजन पर अपनी आमदनी का ४० प्रतिशत भाग खर्च करता है और निम्नतर आय श्रेणी वाले परिवारों में यह मात्रा काफी अधिक होती है। अतः बंधी आय वाले परिवारों के कष्ट को सरलता से समझा जा सकता है। "क्या इस परेशानी को टाला नहीं जा सकता?" इसका उत्तर है—यदि अर्थशास्त्र के नियमों का अनुसरण किया गया होता तो इस स्थिति से बचा जा सकता था।

खाद्य संकट मुख्यतया दो कारणों से पैदा हुआ है। मुद्रास्फीति से और खाद्यान्नों के अनुपातीय अभाव के कारण। आबादी का दबाव और समाज विरोधी तत्वों द्वारा जमाखोरी और मुनाफाखोरी आदि परोक्ष कारण हैं। सरकार वर्षों से नियोजन की एक ऐसी नीति अपनाते हुए प्रसार में भारी मुद्रा उंड़ेलती रही, जिसने कृषि और खपत सामानों के विकास को दुर्लक्ष्य किया और साधनों का वृहद् भाग भारी उद्योगों तथा दीर्घकाल में फलीभूत होने वाली परियोजनाओं में लगा दिया गया है।

## ७२ बनाम ४६

देश में जहां नियोजन के प्रथम १३ वर्षों में १९५१ से १९६४ तक मुद्रा की पूर्ति में ७२ प्रतिशत वृद्धि हुई है, लेकिन वहां राष्ट्रीय आय में, जो मुद्रा को सार्थक बनाती है, केवल ४६ प्रतिशत की वृद्धि हो पाई है। फलस्वरूप मुद्रापूर्ति तथा उससे जनता की इच्छानुसार खरीदी जाने वाली चीजों के बीच असन्तुलन पैदा हो गया है। एक अल्प-विकसित देश में सबसे अधिक दबाव खाद्य पदार्थों पर होता है। बढ़ाई गई मुद्रापूर्ति, अनुपातीय दुर्लभ खाद्य पदार्थों का पीछा करने लगती है। लेकिन चूंकि भारी उद्योगों को प्राथमिकता देकर कृषि विभाग को दुर्लक्ष्य किया गया है इसलिए बढ़ी हुई मांग की तुलना में खाद्यपूर्ति पीछे रह गई। इस तरह से मुद्रास्फीति और अनुपातीय खाद्यान्नों के अभाव के फलस्वरूप कीमतों में भारी वृद्धि हो गई। लेकिन अधिकारियों को सच्चाई का पता काफी देर बाद लगा। नये प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी ने योजना की प्राथमिकताओं में परिवर्तन करने की इच्छा प्रकट की है, क्योंकि उनकी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान्यता है कि "कृषि क्षेत्र काफी वर्षों तक भारतीय विकास में एक निर्णायक पहलू रहा है और रहेगा भी।" यदि भावी नियोजन को इस मान्यता पर आधारित किया जाता है तो वर्तमान संकट को टाला जा सकता है।

## लाभ का उद्देश्य

अर्थशास्त्र का दूसरा नियम, जिसकी उपेक्षा हमारे अहित में की गई है, आर्थिक उद्योगों के संचालन में लाभ के उद्देश्य का है। वर्षों तक लाभ के उद्देश्य को समाज विरोधी प्रवृत्ति की संज्ञा देकर उसे बदनाम करना अधिकारियों का फैशन बन गया है। ऐसा करने में वे वैध लाभों के साथ समाज विरोधी मुनाफाखोरी की तुलना करने की गलतफहमी पैदा करते थे। इन दोनों के बीच बड़ा साफ और महत्वपूर्ण अन्तर है। वैध लाभ उन ईमानदार आर्थिक प्रयत्नों का इनाम होता है जो सामानों और सेवाओं की कुछ मानवीय जरूरतों को पूरा करते हैं। इस प्रकार का लाभ उद्योग विशेष के संचालन की कार्यक्षमता का प्रतीक होता है। निवेश स्वतः उन उद्योगों की ओर आकर्षित होंगे, जहां लाभ अधिक होंगे; और वह अधिक उत्पादन के लिए एक प्रोत्साहन भी होता है। लाभ, उद्योगों के आधुनिकीकरण तथा विस्तार के उद्देश्य के अतिरिक्त पूंजी रचना का भी साधन होता है। एक अमरीकी ट्रेड यूनियन नेता ने कहा है कि व्यापार में लाभ पैदा न करना पाप है। वास्तव में व्यापारिक प्रवृत्ति का मूल औचित्य ही जनता की सेवा करते हुये लाभ अर्जित करना है।

दुर्भाग्य से, लाभ और मुनाफाखोरी में भेद किये बिना ही, सरकारी अधिकारी लाभों की आलोचना करते हैं। इसका परिणाम होता है दण्डात्मक कराधान, अव्यावहारिक मूल्य नियंत्रण और इसी प्रकार के अन्य ऐसे कदम जिनकी वजह से अर्थव्यवस्था को न्यूनतम लाभ हो और लोगों को उसे एक अनिवार्य अभिशाप के रूप में सहन करना पड़ता है।

## परन्तु अब

इस नीति के भयानक प्रभाव सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों पर जब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे, तभी से आर्थिक पद्धति में लाभ के उद्देश्य के महत्व को मान्यता प्रदान की जाने लगी। अत्यधिक घाटे वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग जिन्हें मूलरूप से "समाज सेवा" के उद्देश्य से स्थापित किया गया था, अन्त में राष्ट्रीय खजाने की रकमें बहाने लगे और उनकी अकार्यक्षम कार्यवाइयों ने राष्ट्रीय घुटालों का रूप धारण कर लिया। सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों में लाभों के बारे में अब इतना अधिक उत्साह दिखाया जाने लगा है कि नियोजक उन उद्योगों से १२ प्रतिशत लाभ की अपेक्षा करने लगे हैं ताकि इन लाभों से आर्थिक विकास के लिए निधियां एकत्रित की जा सकें। अभी तक तो सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का कार्य निराशाजनक रहा है। १९६२-६३ में १,२९४ करोड़ रुपयों की लागत पूंजी पर १२.३८ करोड़ रुपये का घाटा हुआ है।

## कम्यूनिस्ट देशों में

यह बड़ी रोचक बात है कि ४० वर्षों की विचारधारा और सैद्धान्तिक नीतियों के अनुसरण से प्राप्त अनुभवों के बाद आज कम्युनिस्ट देश भी लाभ के उद्देश्य के गुणों को सीख रहे हैं। रूस के प्रोफेसर लिबरमन ने तो लाभ के उद्देश्य के गुणों की रूपरेखा व्यक्त कर नये विचार का सूत्रपात किया है और चूंकि नई नीति आर्थिक दृष्टि से विवेकपूर्ण प्रमाणित हुई है, इसलिए अन्य कम्युनिस्ट देश भी उसे अपना रहे हैं। यूगोस्लाविया पहिला देश था, जिसने समाजवादी आर्थिक पद्धतियों से अपने को अलग कर लिया और बाजार के नियमों को अपनाने में अपना हित देखा। यूगोस्लाव पोलित ब्यूरो के सदस्य और क्रोशियन कम्यूनिस्ट लीग के सेक्रेटरी व्लादिमार बकारिक ने इस बात पर जोर दिया है कि "केवल आर्थिक नियमों का स्वतन्त्र प्रभाव ही देश की आर्थिक कठिनाइयों पर काबू पा सकता है।" उन्होंने आर्थिक स्वाधीनता को "केवल थोड़ा-थोड़ा देने" की आलोचना की है।

अर्थशास्त्र के नियमों का निर्माण मानव व्यवहार के आधार पर अर्थशास्त्रियों ने किया था। यदि मनुष्य के स्वभाव को बदला जा सकता है तो इन नियमों के अमल को भी आसानी से दुर्लक्ष्य किया जा सकता है। लेकिन जब तक मनुष्य का स्वभाव यथावत रहता है। इन नियमों का विरोध केवल मनुष्य के सुख और आर्थिक प्रगति को दुर्लक्ष्य कर ही किया जा सकता है। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकासशील अर्थरचना में सामाजिक न्याय

श्री आई. जी. पटेल

सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास अब सभी आधुनिक राष्ट्रों में नीति के आधार माने जाते हैं। सामाजिक न्याय की विश्वव्यापी मांग के तीन पहलू हैं: (१) न्यूनतम आर्थिक स्तर के लिए सभी मनुष्यों का मूल अधिकार; (२) सामाजिक भलाई में व्यक्तियों के योगदान व उन्हें मिलनेवाले पुरस्कार में कुछ समता; और (३) आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण से बचने के लिए विभिन्न वर्गों में समता।

ये उद्देश्य परस्पर विरोधी भी हैं। एक ओर हम यह कहते हैं कि प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार मिले और दूसरी ओर यह भी कहें कि हरेक को उसकी योग्यतानुसार योगदान और पुरस्कार में सामंजस्य रखना मूल मानव अधिकार की बात है, लेकिन दूसरी ओर इस विचार को अधिक दूर ले जाना असमानता बढ़ाने का भी कारण हो सकता है। इसलिए प्रजातांत्रिक ढांचे में जहां मनुष्य के अधिकार का प्रश्न है, वहां, अधिकार के उपयोग पर कुछ प्रतिबन्ध भी अनिवार्य हैं।

यदि आर्थिक विकास को वास्तविक राष्ट्रीय आय की अधिकतम संभव दर के अर्थों में लिया जाए तो सामाजिक न्याय और नीतियों में तीन कारणों से पुनः विरोध पैदा होता है—ये कारण बचत, प्रेरणाओं और पैमाने की किफायतों से सम्बन्धित हैं।

पूंजीपति कहते हैं कि अधिक लाभ की संभावना हो तो वे बचत कर सकते हैं और उस बचत को वे फिर उद्योगों में लगा देते हैं। उत्पादन की दृष्टि से यह सही है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस लाभ में श्रमिकों ने भी अपना हिस्सा दिया है जिसे वे अपनी सुख-सुविधा के लिए प्रयोग कर सकते थे। निजी सम्पत्ति बचत के लिए प्रेरणा देती है। लेकिन इससे सम्पत्ति का एकत्रीकरण भी होता है और फिर श्रमिकों और किसानों को भी बचत की प्रेरणा की जा सकती है—जीवन बीमा, प्राविडेंट फंड आदि ऐसे ही तरीके हैं। ये तरीके जितने सफल होंगे, निजी संपत्ति की महत्ता उतनी ही कम हो जाएगी। इस प्रकार के तरीके सभी विकासशील देशों, विशेष कर भारत में अपनाये जा रहे हैं।

आजकल यह विचार काफी मान्यता प्राप्त कर रहा है कि व्यक्ति को अपने जीवनकाल में सम्पत्ति जुटाने और इस पर आय अर्जित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए, लेकिन मृत्यु होने पर सामाजिक न्याय की भावना को महत्त्व देना चाहिए। मृत्यु के बाद प्रेरणा प्रदान करने का कोई महत्त्व नहीं और केवल जन्म के संयोग पर किसी व्यक्ति को जीवन का वह आधार नहीं मिल जाना चाहिए। लेकिन अपनी संतान के लिए कुछ छोड़ जाना भी आर्थिक क्रियाओं का एक उद्देश्य होता है और यदि मृत्यु कर, वसीयत कर आदि को अधिक सीमा तक ले जाया जाए तो इसके अवांछनीय परिणाम भी हो सकते हैं।

## केवल एक पहलू नहीं

स्वास्थ्य सुधार की योजनाओं से मृत्यु की दर कम हो जाती है और जनसंख्या बढ़ जाती है। इससे राष्ट्रीय बचत कम होती है। लेकिन फिर भी हम स्वास्थ्य योजनाओं को समाप्त नहीं कर सकते। यही बात शिक्षा की है। जो व्यय शिक्षा पर होता है, यदि उसे खेतों और कारखानों में लगाया जाए तो उत्पादन-क्षमता द्रुत गति से बढ़ जाए। लेकिन ऐसा हम नहीं कर सकते। कुछ न्यूनतम शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य होती है, इसलिए हम इस प्रश्न पर केवल आर्थिक दृष्टि से ही विचार नहीं कर सकते।

एक और मूल प्रश्न है उत्पादन और वितरण का। इसी प्रश्न को हम न्यूनतम आवश्यकता और आर्थिक विकास का भी प्रश्न कह सकते हैं। क्या हम आज के मानवों की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण करने पर अधिक ध्यान देना है? अथवा भावी पीढ़ी की अधिक अच्छी आर्थिक स्थिति पर कुछ लोग कहते हैं कि वास्तविक समस्या उत्पादन की है, वितरण की नहीं। यदि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

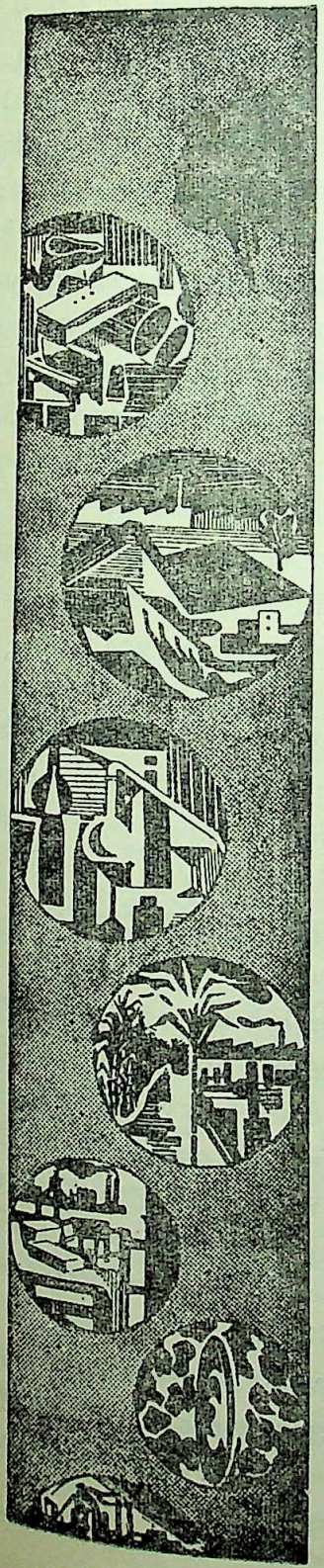

# न ये क्षितिज

स्वतन्त्रता पूर्व युग में भी जनता के सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए भारत की योजनाएं और कार्यक्रम थे। पर उनमें मौलिक निर्बलता थी कि उनका सम्बन्ध जनता की अपेक्षा सरकार के साथ अधिक था।

स्वतन्त्रता आई और इसके साथ नव-जागरण और जनता की योजनाएं—जनता के लिए और जनता के द्वारा। इसके परिणाम स्पष्ट थे, अधिक से अधिक बेहतर व सस्ती वस्तुएं तथा अधिक से अधिक लोगों के लिए बेहतर जीवन।

## डालमिया उद्योग समूह

निरन्तर ऐसे सामान का अधिक से अधिक उत्पादन करने का प्रयत्न कर रहे हैं जो हमारे जीवन स्तर को ऊंचा करने में सहायक हो। हम यह कामना न केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से, किन्तु लगभग एक चौथाई सदी से कर रहे हैं। यह काम कठिन होते हुए भी हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं, इस आशा के साथ कि कल का दिन अधिक उज्ज्वल, नव-प्रभात एवं नये क्षितिज से युक्त होगा।

DALMIA ENTERPRISES

डालमिया सीमेंट (भारत) लि., डालमियापुरम् (मद्रास रा.)
डालमिया मेगनेसाइट कार्पोरेशन, सेलम (मद्रास राज्य)
उड़िशा सिमेंट लि. राजगंगपुर (उड़िशा राज्य)
रजा बुलन्द शूगर कं० लि०, रामपुर (उ० प्र०)
दि रामपुर डिस्टिलरी एंड केमिकल कं० लि., रामपुर (उ. प्र.)

राष्ट्र की सेवा में सन्निहित

## डालमिया उद्योग-समूह

मुख्य कार्यालय—४, सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुओं का समान रूप से वितरण किया जाय तो लोगों की गरीबी में कोई विशेष अन्तर नहीं आएगा। इस दृष्टि से देखें तो वास्तविक प्रश्न वर्तमान पीढ़ी और भावी पीढ़ी के आर्थिक विकास का है। लेकिन इस चक्कर में आज के मानव के मौलिक अधिकारों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। आज के मानव की भी अपनी आवश्यकताएं हैं और इसलिए भविष्य के विकास के नाम पर मानव को बहुत ही अधिक त्याग के लिए विवश नहीं किया जा सकता।

## परस्पर विरोध

सम्पत्ति के केन्द्रीयकरण पर हमें सन्तुलित और सामूहिक वस्तुओं पर अधिक ध्यान देना होगा, बचत के लिए प्रेरणा पर कम। अनेक ऐसी स्थितियां आती हैं, जबकि हमारे सामने एक क्षेत्र के विकास और सामूहिक विकास में परस्पर विरोध हुआ दीखता है। उदाहरण के लिए यदि हम गैर उपजाऊ खेतों के विकास पर अधिक बल देते हैं तो स्वभावतः उसका असर उपजाऊ खेतों के विकास की ओर लगाए जाने वाले साधनों पर पड़ेगा। हम उपजाऊ खेतों पर साधनों को प्रयुक्त करके समस्त देश का उत्पादन बढ़ा सकते हैं और साधनों के विभाजन से कुल उत्पादन में अपेक्षाकृत कम वृद्धि होगी। सामाजिक न्याय का तकाजा है कि अधिक उन्नत क्षेत्रों की अपेक्षा कम उन्नत क्षेत्रों में अधिक विकास हो। गांवों में अधिक बिजली दी जाय; कम साधनशाली लोगों को उद्योगों के लिए प्रोत्साहित किया जाय। पिछड़े क्षेत्रों में विश्वविद्यालय खोले जायं, लघु उद्योगों की बड़े उद्योगों से रक्षा की जाय। ये सभी बातें देश में उत्पादन वृद्धि और बचत को एक सीमा तक रोकती हैं। यह सच है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि पिछड़े प्रदेशों और साधनहीन लोगों की उपेक्षा की जाय। आखिर सामाजिक न्याय की भावना के बल पर ही पिछड़े क्षेत्र आर्थिक विकास कर सके हैं। भारत में पिछले १० वर्षों का इतिहास यही सिद्ध करता है। लघु उद्योगों ने चमत्कारपूर्ण उन्नति की है और छोटे गांव कृषि सम्पदा से धनधान्य पूर्ण हो गए हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि विदेशों से सहायता ली जाय और छोटे उद्योगों की बड़े उद्योगों से रक्षा की जाए। सामाजिक न्याय का यह स्वाभाविक परिणाम है।

## एकत्रीकरण कठिनतर

धन या सम्पत्ति का एकत्रीकरण स्वयं में एक बुराई नहीं है लेकिन उसे अनुचित उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाए तो कानूनी सवाल उठाये जा सकते हैं। आर्थिक की सूचनाओं और आवागमन की सुविधाओं के कारण पूंजीपति अधिक लोगों को अधिक समय तक छलने के योग्य नहीं रहे। यदि सही रूप से देखा जाए तो एकत्रीकरण काफी सीमित हो गया है—कुछ इनेगिने उद्योगों में। यह अमरीका, इंग्लैंड या भारत सबके बारे में एक समान सच है। राज्य की शक्ति, प्रेस की चेतना, और राजनैतिक दलों ने एकत्रीकरण का गला ही घोंट डाला है। अब उद्योगों पर राज्य का अधिकार भी यथेष्ट मात्रा में है। भारत में जहां राज्य का अधिकार बढ़ा है, वहां निजी प्रयासों के लिए भी प्रेरणा बढ़ी है। अनेक भारी उद्योग यातायात परिवहन और बिजली आदि सरकार के हाथ में केन्द्रित हो गये हैं।

जहां तक व्यक्ति का प्रश्न है, उसे तो राज्य के हाथ में एकत्रीकरण अधिक अच्छा लग सकता है, न कि निजी पूंजीपतियों हाथों में। लेकिन आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकों ने तो आज के जीवन में एकत्रीकरण को एक अनिवार्य नियम बना दिया है। हमें दोनों को या इनमें से एक को चुनना ही है।

## मानव प्रतिष्ठा और भाईचारा

मूल बात यह है कि सामाजिक नीति को न तो आर्थिक पैमाने से मापना चाहिए। न न्याय के पलड़े में तोलना चाहिए। सामाजिक नीति का विषय न तो अर्थशास्त्र के क्षेत्र में है, न न्यायशास्त्र में। इसका आधार तो मानव प्रतिष्ठा और सभी मनुष्यों में भाईचारे की भावना में ही है। आर्थिक और न्यायिक नीतियों को अन्ततः मानव प्रयास के इन्हीं अंतिम उद्देश्यों के सामने रखना चाहिए।

## दो जरूरी बातें

पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर नहीं भूलें।

सम्पदा का वार्षिक चन्दा ८. ५० नये पैसे है। वी. पी. से भेजने पर अधिक रु० देना पड़ता है। इसलिए मनीआर्डर से रुपया भेजें।

—मैनेजर सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रत्यक्ष बनाम अप्रत्यक्ष कर

श्री परसराम मनमानी

यह सर्वमान्य तथ्य है कि व्यक्तिगत बजट और सरकारी बजट एक दूसरे के बिल्कुल विरुद्ध सिद्धान्तों पर आधारित होते हैं। जहां एक व्यक्ति अपनी आय को ध्यान में रखते हुए अपने खर्चों को नियमित करता है, वहां सरकार अपने खर्चों का अनुमान पहिले लगा लेती है और उसके बाद उसी अनुपात में साधन जुटाने का प्रबन्ध करती है। यही सबसे बड़ा मूल-भूत अन्तर व्यक्तिगत और सरकारी बजटों में है और इसी के कारण एक व्यक्ति अपने बजट में सन्तुलन लाने के लिए अपने खर्चों को घटाने का प्रयत्न करता है, परन्तु सरकार अपने बजट को संतुलित करने के लिए आय में वृद्धि करने के उपाय करती है। यहां तक कि घाटे के बजट का सहारा लेकर भी सरकार अपने काम काज चलाती है।

## सरकारी आय का प्रमुख स्रोत

सरकारी आय का सबसे बड़ा साधन है कर—प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों। प्रत्यक्ष करों के अंतर्गत वे कर आ जाते हैं, जिनका भार उसी व्यक्ति पर पड़ता है, जिससे वह कर वसूल किये जाते हैं। इस प्रकार के करों का भार करदाता दूसरे व्यक्तियों पर नहीं टाल सकता। आयकर, सम्पत्तिकर, मृत्युकर, व्ययकर इत्यादि प्रत्यक्ष करों के उदाहरण हैं।

इसके विपरीत अप्रत्यक्ष करों का भार उस व्यक्ति पर नहीं, पड़ता जो कर की अदायगी करता है। परन्तु अन्य लोगों पर पड़ता है। जैसे विक्रय कर और उत्पादन शुल्क इत्यादि। इन करों की वसूली सरकार तो व्यापारी या उत्पादन कर्ता से करती है, परन्तु वास्तव में इनका भार वस्तुओं के उपभोक्ताओं पर पड़ता है। व्यापारी या उत्पादनकर्ता तो केवल इस कर को वसूल करके सरकारी खजाने में जमा करा देते हैं।

## कर का भार भारत में अधिक

समाजवादी ढंग की अर्थव्यवस्था के लिए यह आवश्यक है कि कर प्रणाली इस प्रकार की हो कि धनिक वर्ग पर इसका भार अधिक पड़े मध्यम वर्ग पर कम और निर्धन वर्ग पर सबसे कम भार पड़े, जिससे आर्थिक विषमताएं दूर हो सकें।

## प्रत्यक्ष कर

यदि हम प्रत्यक्ष करों को ले लें तो हम देखेंगे कि करों की दर आय के अनुपात में बढ़ती चली जाती है। इसके लिए एक नियत सीमा तक कर तो वसूली बिल्कुल ही नहीं की जाती। उदाहरणार्थ नये वर्ष के बजट के अनुसार एक व्यक्ति को ३५०० रुपये वार्षिक आय तक आयकर नहीं देना पड़ता (विवाहित व्यक्ति के लिए और दो बच्चों तक छूट की रकम और अधिक है)। हमारे देश के कई अर्थ शास्त्रियों का यह मत है कि छूट की इस रकम को कम कर देना चाहिए, क्योंकि अन्य उन्नत देशों में इस प्रकार की छूट कम है। इंगलैण्ड में यह छूट करीब २४०० रुपये हैं और अमरीका में इस छूट की रकम करीब २८६० रुपये हैं। जो लोग ऐसा कहते हैं वे इस बात को तो भूल जाते हैं कि इंगलैंड तथा अमेरिका में सरकार की ओर से इन कम आयु वाले व्यक्तियों के लिए ऐसी कई सुविधाएं दी जाती हैं, जो हमारे देश में अभी उपलब्ध नहीं की जा सकती हैं। सामाजिक बीमा, बेरोजगारी बीमा, बच्चों की शिक्षा की सुविधाएं तथा वृद्धावस्था में दी जाने वाली सुविधाएं आदि। इस प्रकार का प्रबन्ध हो जाने पर यदि कम आय वालों से भी आयकर वसूल कर लिया जावे तो उन्हें अधिक कठिनाई नहीं होती। हमारे देश में जो इस समय मंहगाई है, उससे राहत देने के लिए इस समय इस छूट की रकम को और बढ़ाने की आवश्यकता है, न कि घटाने की।

इसके अलावा आयकर की वसूली के लिए आय को भी दो भागों में बांट दिया गया है—अर्जित आय तथा गैर अर्जित आय। जहां गैर अर्जित आय पर बहुत ही अधिक कर देना पड़ता है, वहां अर्जित आय पर (जैसे वेतन इत्यादि पर) आय कर की दर काफी कम है। यह उपाय भी आर्थिक असमानताओं को कम करने के उद्देश्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से काम में लाया गया है।

परन्तु प्रत्यक्ष कर देने वालों की संख्या हमारे देश में बहुत ही कम है। अप्रत्यक्ष कर सरकार के हाथों में एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा ऐसे व्यक्तियों की जेबों में भी हाथ डाला जा सकता है, जो प्रत्यक्ष करों की मार से बहुत दूर होते हैं। हमारे देश में अप्रत्यक्ष करों का ढांचा कुछ ऐसा है कि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिससे यह वसूल न किया जाता हो।

## अप्रत्यक्ष कर

अप्रत्यक्ष करों की एक विशेष बात यह है कि यह अमीर से अमीर और गरीब से गरीब व्यक्ति को भी अदा करना होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए करों का ढांचा कुछ इस प्रकार का बनाया गया है कि विलासित, और अर्ध-विलासिता की वस्तुओं के लिए इसकी दर अधिक है और आम लोगों की आवश्यकता की वस्तुओं के लिए दर कम है। जैसे मोटरकारों के ऊपर उत्पादन शुल्क उनके हार्सपावर के हिसाब से कीमत के १० प्रतिशत से लेकर १५ प्रतिशत है। इसी प्रकार रेफ्रीजरेटरों और एयर कण्डीशनरों पर उत्पादन शुल्क उनकी कीमत का २० प्रतिशत है क्योंकि यह सब विलासिता की वस्तुएं हैं और इनका उपभोग केवल धनिक वर्ग ही कर सकता है। इसके विपरीत आम जरूरत की चीजों पर—जैसे दिया-सलाई, चीनी, साबुन इत्यादि पर इसकी दर कम है। कुछ वस्तुओं को—जैसे वनस्पति घी को उत्पादन कर से मुक्त रखा गया है। विक्रय कर को यदि हम देखें तो उसकी दर को २ प्रतिशत से लेकर १० प्रतिशत तक की वस्तुओं के उपभोग के आधार पर रखा गया है।

## सरकार की असफलता

इन सब उपायों के बावजूद सरकार इस देश में समाजवाद को लाने में असफल रही है। इस बात पर दो मत नहीं हो सकते कि सुचारू कर-प्रणाली द्वारा आर्थिक तथा सामाजिक असमानताओं को कम किया जा सकता है। परन्तु हमारे देश में ऐसा क्यों नहीं हो पाया है? सबसे बड़ी बात यह है कि अप्रत्यक्ष करों से उपभोक्ताओं का बच निकलना बड़ा कठिन है जबकि प्रत्यक्ष करों को गैर कानूनी ढंग से लोग बड़ी तादाद में बचा लेते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि जो बोझ वास्तव में अमीरों को उठाना चाहिए, उससे वे साफ बच जाते हैं और वह सारा का सारा बोझ समाज के निम्न वर्ग को उठाना पड़ता है।

## काला-धन

सरकार अब इस ओर जागरूक है अमीरों द्वारा इस प्रकार छिपाई हुई आय को—जिसे आमतौर पर ब्लैक मनी कहा जाता है—ढूंढ निकालने के प्रयत्न कर रही है और जब तक इस काम में सफलता नहीं मिलती तब तक चाहे, कर-प्रणाली में जितना सुधार किया जावे, इससे अधिक लाभ नहीं होगा। हाल ही में यह अनुमान लगाया गया था कि देश में जितनी मुद्रा प्रचलन में है, उससे कहीं अधिक ब्लैक मनी पूंजीपतियों के हाथों में है। कहना न होगा कि यह ब्लैक मनी समाजवाद की जड़ों को ही काट रही है। यदि शीघ्र ही इस प्रकार के धन का पता लगाने के साथ ही साथ ऐसा प्रबन्ध नहीं किया गया कि इसका भविष्य में निर्माण न हो तो निम्नवर्ग की कमर, जो अब काफी झुकी हुई है, टूट जावेगी।

## घाटे की अर्थव्यवस्था

इसके अलावा घाटे की अर्थव्यवस्था भी समाजवाद की राह में एक रोड़ा है। यदि हम घाटे की अर्थव्यवस्था को "अंधा कर" कहें तो अत्युक्ति न होगी, क्योंकि इस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था से मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलता है, जिसका कुप्रभाव सबसे अधिक मध्यम और निम्न आय वाले लोगों पर ही पड़ता है। मुद्रास्फीति के अन्तर्गत धनिक वर्ग पर कुप्रभाव पड़ना तो दूर रहा, उल्टे उन्हें मुनाफाखोरी और जमाखोरी का अधिक मौका मिल जाता है, जिससे गरीब जनता पर दुहरी मार पड़ती है। इस समय हमारे देश की आर्थिक स्थिति कुछ ऐसी है कि घाटे की अर्थव्यवस्था का प्रयोग करना बिल्कुल ही हानिकारक होगा।

जब तक इन सब बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता तब तक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में सन्तुलन नहीं लाया जा सकता और इनमें सन्तुलन लाये बगैर समाजवाद की स्थापना का स्वप्न समाज के लिए एक मधुमयी कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मार्क्स और गांधी

विश्व के दो महान् विचारकों मार्क्स और गाँधी के दर्शनों में मौलिक विरोध का सुन्दर विवेचन

मार्क्स ने हीगेल के द्वंद्ववाद को स्वीकार तो किया, लेकिन उसने उसमें से आदर्शवाद और रहस्यवाद का पुट हटा दिया। हीगेल क्रिया, प्रतिक्रिया और संश्लेषण के माध्यम से समाज की प्रगति तो स्वीकार करता है, लेकिन वह यह नहीं बताता कि यह सब कैसे होता है ? इसकी प्रेरक शक्तियां क्या हैं ? हीगेल के दर्शन में ऐसा लगता है कि मानो यह सब अपने-आप ही हो रहा है, कोई अतीन्द्रिय, ईश्वरीय सत्ता इसका संचालन कर रही है और व्यक्तियों की सचेतन इच्छा का इसमें कोई योग नहीं है; मानो वे उस अतीन्द्रिय ईश्वरीय सत्ता के हाथों में खिलौने मात्र हैं। मार्क्स इस व्याख्या को नहीं मानता और इसे "ओथा रहस्यवाद" कहता है। मार्क्स के अनुसार सामाजिक विकास की प्रेरक शक्तियां आर्थिक परिस्थितियां हैं। उसके मत से समाज का जैसा आर्थिक संगठन होता है, उसी के अनुरूप समाज की समस्त संस्थाएं बनती हैं। मार्क्स के हाथों में हीगेल का द्वंद्ववाद "आर्थिक नियतिवाद" का रूप धारण कर लेता है। मार्क्स ने स्वयं अपनी और हीगेल की द्वंद्वात्मक पद्धतियों का अन्तर इन शब्दों में प्रकट किया है, "मेरी द्वंद्वात्मक पद्धति न केवल हीगेल से बिल्कुल भिन्न है, प्रत्युत वह उससे बिल्कुल उलटी भी है। हीगेल के लिए मानवीय बुद्धि का जीवन अर्थात् विचार की प्रक्रिया—हीगेल इस प्रक्रिया को 'भाव' का नाम देता है और इसका एक स्वतन्त्र विषय के रूप में भावन करता है—वास्तविक संसार की सृष्टि है और वास्तविक संसार इस 'भाव' का केवल बाहरी प्रासंगिक रूप ही है। इसके विपरीत मेरे लिए भाव केवल भौतिक संसार है और कुछ नहीं। यह भौतिक संसार मानव-मन के दर्पण में नये-नये रूप धारण करता है और विचार के रूप में बदल जाता है।" फलतः मार्क्स के अनुसार जगत् का जो कुछ कार्य—व्यापार हमें इन्द्रियगोचर होता है, वह आत्मा-परमात्मा जैसी किसी चेतन-सत्ता की लीला नहीं है। भौतिक पदार्थ ही वह आदिम बीज-सत्ता है, जिसका रूपांतर यह दृश्यमान जगत् है।

महात्मा गांधी की विचारधारा इससे बिल्कुल उलटी है। वह सृष्टि के नियंता परमेश्वर में और आत्मा की सर्वोपरिता में आस्था रखते हैं। उनका कथन था, "जो लोग ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करना नहीं चाहते, वे अपने शरीर के सिवा और किसी वस्तु के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते।" अथवा, "मेरा अपना अनुभव तो मुझे इसी ज्ञान पर ले जाता है कि जिसके नियमानुसार सारे विश्व का संचालन होता है, उस शाश्वत नियम में अटल विश्वास रखे बिना पूर्णतया जीवन सम्भव नहीं है। इस विश्वास से विहीन व्यक्ति तो समुद्र से अलग आ पड़ने वाली उस बूंद के समान है, जो नष्ट होकर ही रहती है।" जहां मार्क्सवाद चेतना को पदार्थ की छाया मानता है, वहां गांधीवाद पदार्थ को चेतना की छाया मानता है। गांधी-जी के मत से, "मूलभूत सिद्धांत पदार्थ की चेतना है। जिसे हम प्राणहीन पदार्थ कहते हैं। उसकी भी चेतना में और चेतना के द्वारा ही सत्ता होती है। सृष्टि चेतना में उदित होती है, चेतना में विद्यमान रहती है और चेतना में लुप्त होती है।" इस प्रकार स्पष्ट है कि जहां मार्क्स प्रधानतः भौतिकवादी है, वहां गांधी प्रधानतः अध्यात्मवादी है।

## दो वर्गों की सत्ता

मार्क्स के अनुसार हर समाज में मूलतः दो ही वर्ग हैं—एक तो वे लोग जो मालिक होते हैं और जिनका उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रहता है और दूसरे वे लोग जिनका कार्य पहले वर्ग के आदेशों का पालन करना होता है और जिनका नाना प्रकार से शोषण होता है। इन दोनों वर्गों के हित हमेशा एक-दूसरे से भिन्न होते हैं और उनमें अनवरत, कभी स्पष्ट, कभी प्रच्छन्न, संघर्ष जारी रहता है। मार्क्स मानव-समाज के सम्पूर्ण इतिहास को इसी वर्ग संघर्ष की गाथा मानता है। प्राचीन काल में ये वर्ग स्वतंत्र मालिकों और दासों के रूप में थे, मध्यकाल में सामंतों और कृषक दासों के रूप में थे और आजकल पूंजीपतियों और श्रमिकों के रूप में दिखाई पड़ते हैं। मार्क्स ने समाज में इन दो आधारभूत वर्गों की सत्ता स्वीकार की है, लेकिन उनका विचार है कि वर्ग गौण होते हैं और उनके हित अंततोगत्वा इन्हीं दो वर्गों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से किसी एक वर्ग के हितों के साथ मिल जाते हैं। मार्क्सवाद उन समस्त साधनों के उपयोग का हामी है, जिनके द्वारा वर्ग संघर्ष को उत्तेजना मिलती है। जो कार्य वर्ग-संघर्ष की आग पर पानी डालता है, मार्क्स उसे प्रतिक्रियावादी ठहराता है।

गांधीवाद वर्ग-संघर्ष का नहीं, प्रत्युत वर्ग-सामंजस्य का पुजारी है। वह समाज को स्थायी रूप से दो परस्पर वर्गों में विभाजित नहीं मानता। गांधी जी के सर्वोदय आदर्श में पूंजीपतियों और श्रमिकों, अमीरों और गरीबों मालिकों और मजदूरों—दोनों के हितों के संरक्षण और विकास की समान व्यवस्था है। गांधीजी जिस रामराज्य का स्वप्न देखते थे, उसमें वे श्रीमानों और विपन्नों दोनों के अधिकारों की रक्षा की बात कहते थे। वे ऊंचे और नीचे वर्गों की समस्या को वर्णाश्रम-धर्म के द्वारा सुलझाना चाहते थे। पूंजीपतियों और श्रमिकों में एक को दूसरे का पूरक बन जाना चाहिए। उन्हें एक ऐसे विशाल परिवार के समान होना चाहिए जिसमें वे एकता और मेल से रह सकें।" उनका मत था कि मैं किसी ऐसे समय की कल्पना नहीं कर सकता जिसमें एक व्यक्ति दूसरे से अधिक धनी नहीं होगा। लेकिन मैं ऐसे समय की कल्पना अवश्य करता हूँ जब अमीर आदमी गरीबों का शोषण कर अमीर बनने से घृणा करेंगे और गरीब आदमी अमीरों से घृणा करना बन्द कर देंगे।" महात्माजी पूंजीवाद का विध्वंस चाहते थे। उनका पूंजीपतियों के लिए परामर्श था कि आपको श्रमिकों का ट्रस्टी बन जाना चाहिए।

## साध्य और साधन

गांधी और मार्क्स में एक प्रधान अन्तर साध्य और साधनों के प्रश्न को लेकर है। मार्क्सवादी विचारकों के अनुसार यदि हमारे साध्य श्रेष्ठ हैं, तो हम उनको प्राप्त करने के लिए कैसे भी साधनों का प्रयोग क्यों न करें, सब क्षम्य है। यही कारण है कि मार्क्सवाद के अनुयायी अपने आदर्शों की सिद्धि के लिए छल, असत्य और हिंसा आदि बुरे समझे जाने वाले उपायों का आश्रय लेना भी अवांछनीय नहीं समझते।

गांधीवाद का दृष्टिकोण इस सम्बन्ध में दूसरा है। वह श्रेष्ठ साध्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ साधनों का ही पक्षपाती है। वह अहिंसा और सत्य का एकनिष्ठ पुजारी है और अपने कट्टर शत्रु के लिए भी सद्व्यवहार का समर्थन करता है। गांधीवाद की धारणा है कि सृष्टि के प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश है। अतः उसकी मनुष्य के हृदय परिवर्तन में आस्था है। गांधीजी के शब्दों में, "साधन बीज और साधन वृक्ष। इसलिए, जो सम्बन्ध बीज और वृक्ष में है, वही सम्बन्ध साधन और साध्य में है। शैतान की उपासना करके मैं ईश्वर भजन का फल नहीं पा सकता।"

—गाँधी मार्ग से

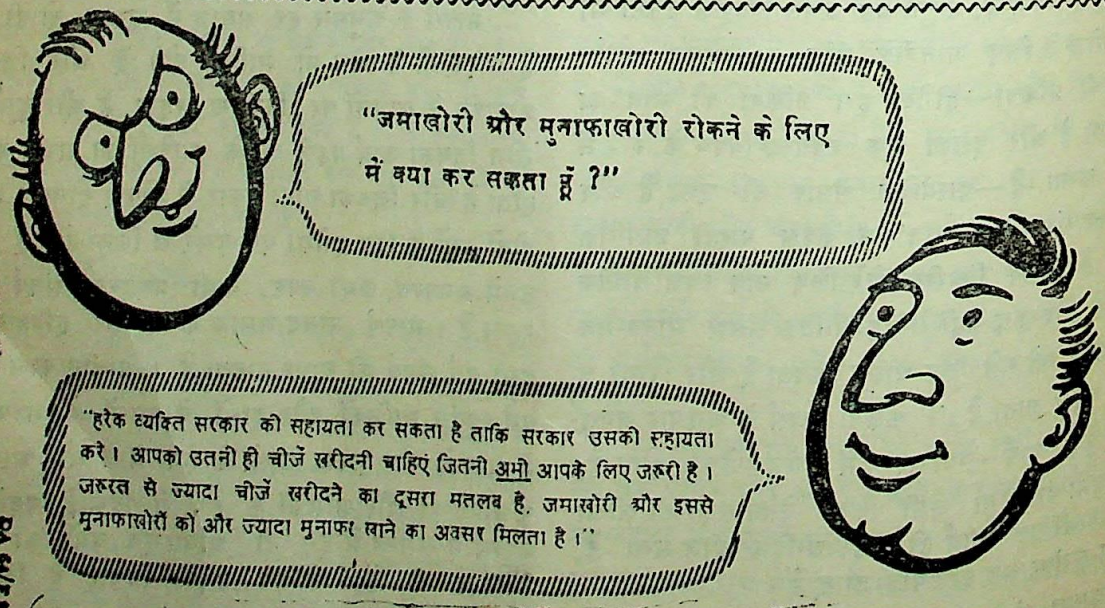




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विविध राज्यों के बजट : एक आलोचनात्मक दृष्टि

नये वित्तीय वर्ष में विविध राज्यों द्वारा प्रस्तुत बजट पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट होता है कि खर्च में वृद्धि, घाटे का बजट और केन्द्र पर निर्भरता, इन बजटों की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं रही हैं। घाटे के इन बजटों की पूर्ति करने के लिए राज्यों ने अपने आय के स्रोत बढ़ाने की ओर कम ध्यान दिया है और अधिकतर केन्द्रीय सरकार से ही इस कमी को पूरा करने के लिए आग्रह किया है।

घाटे के इन बजटों की खाई को पाटने के लिए केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों की वित्तीय नीति में भी समानता दृष्टिगोचर नहीं होती। दो राज्य सरकारों ने वित्तीय वर्ष में किन्हीं बड़े कर प्रस्तावों को न रखकर आय बढ़ाने की दिशा में कुछ प्रयत्न किये हैं। राज्य सरकारों ने १९६५-६६ में आय के अतिरिक्त स्रोतों को बढ़ाने का उत्साह नहीं दिखाया है, विशेषकर जबकि मुद्रा-स्फीति की लहर फैल रही है, यह अधिक उपयोगी सिद्ध होता। नये कर प्रस्तावों का अभाव और अनावश्यक खर्च, राज्य के बजटों में अधिक महत्त्व रखते हैं। खर्च में अनापशनाप वृद्धि से चतुर्थ योजना के आय स्रोतों पर भी अधिक भार पड़ने की सम्भावना का भय है। इस दोषारोपण में भी कुछ सत्यता दिखाई देती है कि राज्य सरकारें जान बूझकर अपने रेवन्यू खर्च में वृद्धि के द्वारा चतुर्थ वित्त आयोग के समक्ष अपनी असमर्थता प्रकट करके अपने आय स्रोतों का अभाव सिद्ध करती हैं। अधिकतर राज्यों के बजट आर्थिक नीति के समाधान न होकर केवल वित्तीय आयोग के समक्ष एक विचारणीय पत्र के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। वित्तीय आयोग के लिए विकास की यह शिथिल गति परेशानी का एक कारण बन गई है और यह स्वाभाविक भी है।

## आय में कमी

राज्यों के १९६४-६५ के बजटों में ६.८ करोड़ रुपया का लाभ दिखाया गया था इसके विपरीत १९६५-६६ के बजट की घाटे की विपुल राशि ६० करोड़ रुपया है। यह अत्यन्त चिन्तनीय विषय है। १५ राज्यों में से सिर्फ ४ राज्यों ने ही बचत दिखाई है। राजस्व के घाटे की राशि पश्चिमी बंगाल में १७.८ करोड़, उत्तर प्रदेश में १४.६ करोड़, उड़ीसा में १० करोड़ और महाराष्ट्र में ९.४ करोड़ अत्यधिक राशि है। पिछले तीन वर्षों की अपेक्षाकृत १९६५-६६ में घाटे की यह विपुल राशि अत्यन्त खेदजनक है। कर आदि में वृद्धि करके आय बढ़ाने की नीति भी राज्यों की नहीं रही है।

मुद्रा स्फीति के समय करों द्वारा आय अधिक बढ़ती है और विशेषकर विक्रय कर और केन्द्रीय करों में हिस्से की राशि में बढ़ोत्तरी होती है। व्यय की दिशा में यह बात अधिक विश्वसनीय नहीं है कि व्यय में भी उत्तरोत्तर वृद्धि उसी अनुपात में होती है। निम्नलिखित तालिका से यह अधिक स्पष्ट हो जायेगा।

## राज्यों का कुल व्यय

| राज्य | १९६०-६१ | | १९६४-६५ | |
|---|---|---|---|---|
| | कुल योग (करोड़ रु० में) | प्रति व्यक्ति (रु० में) | कुल योग (करोड़ रु० में) | प्रति व्यक्ति रु० में |
| आन्ध्र प्रदेश | ११५.३९ | ३२.५ | १६५.९८ | ४२.८९ |
| आसाम | ४३.२७ | ३६.३६ | ७०.१६ | ५०.८४ |
| बिहार | १०६.६९ | २२.९९ | १२७.४७ | २५.०९ |
| गुजरात | ७३.०४ | ३५.४६ | ११०.८७ | ४७.७९ |
| बम्बई | — | — | — | — |
| महाराष्ट्र | १४८.३२ | ३७.४५ | २२३.२३ | ५०.७३ |
| जम्मू काश्मीर | १७.६४ | ४९.०० | ३४.२६ | ९२.५९ |
| केरल | ५२.९१ | ३१.३१ | ४३.६७ | ४४.२७ |
| मध्य प्रदेश | ८५.०७ | २६.२६ | १२९.४९ | ३५.८७ |
| मद्रास | १०७.३० | ३१.४८ | १५६.९४ | ४४.०८ |
| मैसूर | ९०.३३ | ३८.२७ | १३०.७४ | ५०.२८ |
| उड़ीसा | ४६.४० | २६.५१ | ११६.४० | ६०.६२ |
| पंजाब | ८०.११ | ३९.४६ | १२३.४७ | ५४.१५ |
| राजस्थान | ६८.८६ | ३४.२६ | ९८.६३ | ४३.६४ |
| उत्तर प्रदेश | १५५.३३ | २१.०७ | २५१.६३ | ३१.६१ |
| प० बंगाल | ११४.५२ | ३२.८१ | १६८.१९ | ४१.८८ |
| योग | १३०५.३८ | ३०.२७ | १९९१.१३ | ४१.८८ |

जहां तक वेतन और मजदूरी का प्रश्न है, उसमें थोड़ी वृद्धि अवश्य हुई है, किन्तु वह निराशा का कारण इसलिए नहीं



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, क्योंकि वस्तुओं की कीमत में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई है। अगर अधिकतर कर नहीं थोपे जाते तो अधिक उत्पादन करके बजट में सन्तुलन स्थापित किया जा सकता था, जैसा कि पिछले वर्षों में भी कुछ प्रयत्न हुए हैं। बजटों में लाभ की नीति के विपरीत राज्यों के बजटों में १९६५-६६ में अनावश्यक खर्च अधिक दिखाया गया है। योजना आयोग ने चतुर्थ योजना में व्यय में कटौती का अनुमान लगाया है, किन्तु १९६५-६६ के बजटों में यह धारणा उल्टी ही दिखाई देती है। यह समझा जाता था कि राज्य सरकारें कर एकत्र करने और सामान्य प्रशासन में अपने व्यय पर नियंत्रण करेंगी। योजना निर्माताओं का भी यही विचार था कि वित्त आयोग का आधार लेकर व्यय पर नियंत्रण किया जा सकेगा। परन्तु इन बजटों से स्पष्ट है कि पहले की अपेक्षा सामान्य व्यय और कर आदि एकत्र करने में अधिक व्यय हुआ है। राज्यों के ऋण सम्बन्धी व्यय भी अधिक बढ़े हैं जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

## राज्यों के ऋण सम्बन्धी व्यय

| राज्य | १९६०-६१ | | १९६४-६५ | |
|---|---|---|---|---|
| | कुल योग (करोड़ रु० में) | निर्देशक अंक | कुल योग करोड़ रु० में | निर्देशक अंक |
| आन्ध्र प्रदेश | — | — | १५.८० | १००.०० |
| असाम | १.७१ | १६२.८६ | ४.९१ | ४६७.६२ |
| बिहार | ५.७६ | १६१.८० | १०.७५ | ३०१.९७ |
| गुजरात | ५.२९ | १००.०० | १६.९१ | ३९१.६६ |
| बम्बई | — | — | — | — |
| महाराष्ट्र | ११.७८ | १००.०० | २२.२३ | १८८.७१ |
| जम्मू काश्मीर | — | — | ३.२२ | १००.०० |
| केरल | २.५० | १७२.४१ | ६.४१ | ४४२.०७ |
| मध्यप्रदेश | ४.४१ | १८७.६६ | ११.४६ | ४८७.६६ |
| मद्रास | ८.१२ | ३५४.५८ | १५.६१ | ४३७.९९ |
| मैसूर | ४.४४ | १४३.६९ | १२.५४ | ४०५.८२ |
| उड़ीसा | ३.२७ | ३२०.५९ | १३.३२ | १३०५.९० |
| पंजाब | ४.४६ | १००.०० | १९.४० | ४३४.९८ |
| राजस्थान | ३.२१ | ३४१.४९ | १०.३३ | १०९८.९४ |
| उत्तर प्रदेश | १८.४१ | ३५२.०१ | ३३.१२ | ६३३.२७ |
| पश्चिमी बंगाल | ७.०८ | १७७.८९ | १४.८९ | ३७४.१२ |
| कुल योग | ८०.४४ | २१९.८४ | २०९.९० | ५७३.१२ |

राज्यों में १९६२-६३ और १९६३-६४ में नये कर लगाकर आय वृद्धि के प्रयत्न किये थे और इसका परिणाम राज्य के आय स्रोतों की सुदृढ़ स्थिति और राज्यों के लिए सुविधा हुआ था। १९६४-६५ में भी ६-७ करोड़ रुपये के अतिरिक्त कर लगाये गये थे। वित्तीय वर्ष में केवल दो ही राज्यों ( मध्यप्रदेश ०.७५ करोड़ और राजस्थान १.४५ करोड़ ) के बजट में अतिरिक्त करों की व्यवस्था की गई है।

## अतिरिक्त कर

राज्यों द्वारा अतिरिक्त तथा नये कर लगाकर आय स्रोत बढ़ाने की नीति भी अधिक प्रभावशाली नहीं रही है। केवल ७ राज्यों ने अतिरिक्त कर लगाकर तीसरी योजना के लक्ष्य पूरा करने की दिशा में प्रयत्न किये हैं। शेष ८ राज्य तीसरी योजना के लक्ष्यों में पिछड़ गये हैं। महाराष्ट्र को ही यह गौरव प्राप्त है कि उसने अतिरिक्त कर लगाकर अधिकांश लक्ष्यों की पूर्ति की है। इस दृष्टि से गुजरात का दूसरा और उड़ीसा का तीसरा स्थान है। जम्मू, काश्मीर, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और बिहार की प्रगति निराशाजनक है। बिहार ने सबसे कम लक्ष्य प्राप्त किये हैं।

## विक्रय कर पर भरोसा

तृतीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में नये और महत्वपूर्ण करों में विक्रयकर उल्लेखनीय है। करीब-करीब सभी राज्यों ने नये अतिरिक्त करों की दिशा में अप्रत्यक्ष कर लगाये हैं। सिर्फ कुछ राज्यों ने एक सीमित मात्रा में उपकर (लेवी) भी लगाई है। विक्रयकर, उपकर (लेवी) विज्ञापनों पर कर भी राजस्थान और मध्यप्रदेश में लगाये गये हैं। राज्यों द्वारा जो अन्य महत्वपूर्ण कर लगाये गये हैं, वह निम्नलिखित हैं—

(१) ग्रामीण स्थायी सम्पत्ति पर कर—आसाम, जम्मू काश्मीर और मद्रास।

(२) बिजली के उपयोग पर ड्यूटी—जम्मू, काश्मीर, मद्रास, मैसूर और राजस्थान।

(३) भाड़े और यात्रियों पर कर—आसाम, गुजरात, केरल और उड़ीसा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) जल कर—मध्यप्रदेश ।
(५) सड़कों के माध्यम से निजी भारवाहक वाहनों पर कर—महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश ।
(६) भवनों पर कर—मैसूर, उत्तरप्रदेश और केरल ।
(७) बंजर भूमि पर कर—मध्यप्रदेश और गुजरात ।
(८) नई सड़कों और पुलों पर कर—उड़ीसा ।
(९) स्वास्थ्य और शिक्षा पर कर—मैसूर और मध्यप्रदेश ।

इसके अतिरिक्त जम्मू और काश्मीर में कृषि आय कर, व्यावसायिक फसलों के रकबे पर गुजरात और पंजाब में कर और भूमि कर उत्तरप्रदेश में लगाये गये हैं ।

## तृतीय योजना की अवधि में दरों में वृद्धि

कर एकत्र करने पर खर्चे की मात्रा में वृद्धि हुई है । कुछ राज्यों ने विलास सामग्री पर विक्रय कर आदि में वृद्धि की है । कुछ राज्यों ने कुछ विशेष वस्तुओं को विलास सामग्री घोषित कर विक्रय कर लगाये हैं । मध्य प्रदेश में अनाज पर, आसाम और गुजरात में मिट्टी के तेल पर नये कर लगे हैं । जम्मू काश्मीर ने १९६२-६३ में कृषि आय कर लगाया था जो कि १९६३-६४ में बढ़ा दिया गया । मोटरों पर कर की दर में वृद्धि करने में आन्ध्रप्रदेश, आसाम, गुजरात, केरल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, पंजाब और राजस्थान उल्लेखनीय हैं । मनोरंजन कर में वृद्धि गुजरात केरल, मध्यप्रदेश, पंजाब और राजस्थान ने की है । रजिस्ट्रेशन और स्टाम्प फीस पर भी आसाम, गुजरात, मध्यप्रदेश, उड़ीसा और राजस्थान ने अतिरिक्त कर, बढ़ाये हैं । कुछ राज्यों ने तो अतिरिक्त कर प्राप्त करने लिए भी प्रयत्न किये हैं । इस संदर्भ में केरल में कालेजों की फीस, राजस्थान और मध्यप्रदेश में खनिज आदि पर कर, अधिकांश राज्यों में उत्पादन कर का उल्लेख किया जा सकता है ।

कृषि क्षेत्रों में आय स्रोतों के अभाव में कुछ राज्यों ने कर बढ़ाने के प्रयत्न किये हैं । आय कर और लेवी अधिकांश राज्यों में इस क्षेत्र में नहीं थे, किन्तु राज्यों ने भूमि कर बढ़ाने के प्रयत्न किये हैं ।

## केन्द्र पर निर्भरता

राज्यों के वित्तीय भार को अधिकांश केन्द्र पर थोपा गया है । केन्द्र ने अपने कुछ आय स्रोतों को भी राज्यों को सौंप दिया है । कुछ करों में केन्द्र ने राज्यों को हिस्सा दिया है, कुछ धन कर्ज और सहायता के रूप में दिया है । ऐसी कुल राशि १,४१३ करोड़ रुपये प्रथम पंचवर्षीय योजना में थी, दूसरी पंचवर्षीय योजना में यह राशि दुगनी बढ़ गई और २,८६४ करोड़ रुपये तक पहुँच गई तथा तीसरी पंचवर्षीय योजना में यह फिर अपनी पहली योजना के मुकाबले दुगनी होकर ५,४,७७ करोड़ रुपये तक पहुंच गई है । १९५५-६६ में आय स्रोतों में केन्द्र द्वारा ५२४ करोड़, १९६०-६१ में ७४२ करोड़ और १९६५-६६ में १,३०७ करोड़ रुपये केन्द्र ने राज्य सरकारों को दिये हैं ।

१९६५-६६ के बजटों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राज्यों ने नये करों की बजाय अपना अधिकतर भार वित्त आयोग के कन्धों पर रखा है और घाटे का बजट दिखाकर केन्द्र की अधिक सहायता मांगी है ।

अधिकतर राज्य केन्द्रीय सरकार से ऋण ले लेकर काम चलाते हैं और वे भी समय पर चुकाना नहीं चाहते । आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेडी ने वित्तीय आयोग के सामने आवेदन करते हुए यह मांग की थी कि केन्द्रीय सरकार द्वारा दिया गया ऋण चुकाने के लिए हमें और मदद दी जाय । इसके समर्थन में उन्होंने यह युक्ति दी थी कि केन्द्रीय सरकार से लिये गये अधिकांश ऋण दीर्घकालीन योजनाओं पर व्यय हुए हैं, जिससे फल कुछ समय बाद ही मिलता है । वित्त आयोग की स्थिति भी इस समस्या के समाधान के लिए अधिक जटिल हैं ।

### तृतीय योजना के लक्ष्यों में प्राप्ति का प्रतिशत

| | | | |
|---|---|---|---|
| महाराष्ट्र | ११६ | पश्चिमी बंगाल | १०२ |
| आसाम | १११ | केरल | १०२ |
| आंध्रप्रदेश | ११० | उड़ीसा | १०० |
| मद्रास | १०८ | बिहार | ९३ |
| उत्तरप्रदेश | १०६ | मध्यप्रदेश | ९२ |
| गुजरात | १०३ | जम्मू काश्मीर | ९१ |
| मैसूर | १०३ | राजस्थान | ८५ |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि योजना के लक्ष्यों

(शेष पृष्ठ २३५ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अमेरिकी सहयोग से विपुल विकास

पिछले महीने भारत और अमेरिका की सरकारों ने ऋणों और अनुदानों के सम्बन्ध में जिन नये समझौतों पर हस्ताक्षर किये हैं उनके परिणामस्वरूप भारत की नदी-विकास-योजनाओं और बिजली पैदा करने की क्षमता को बढ़ाया जा सकेगा।

इन समझौतों के अन्तर्गत अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी 'शांति के लिए आहार' (सरकारी कानून-४८०) कार्यक्रम में भारतीय मुद्रा कोष से सब मिलाकर ५६ करोड़ ६० लाख रु० के ऋण और ५ करोड़ रु० का एक अनुदान देगी।

ऋण-समझौतों के अन्तर्गत, भारत की ७ मुख्य नदी घाटी योजनाओं—चम्बल, दामोदर घाटी, कोसी, कोयना, महानदी का मुहाना, नागार्जुनसागर और तुंग-भद्रा—के लिए ३४ करोड़ ६० लाख रु० दिये जायेंगे। इन और उन पांच अन्य योजनाओं द्वारा जिनके लिए पहले सहायता दी जा चुकी है, बाढ़ों की रोकथाम की जायेगी, २५ लाख किलोवाट पन बिजली तैयार की जाएगी और ६० लाख एकड़ से अधिक भूमि की सिंचाई करके अन्न की पैदावार को बढ़ाया जाएगा। १२ नदी घाटी योजनाओं के लिए इससे पहले कुल मिलाकर २

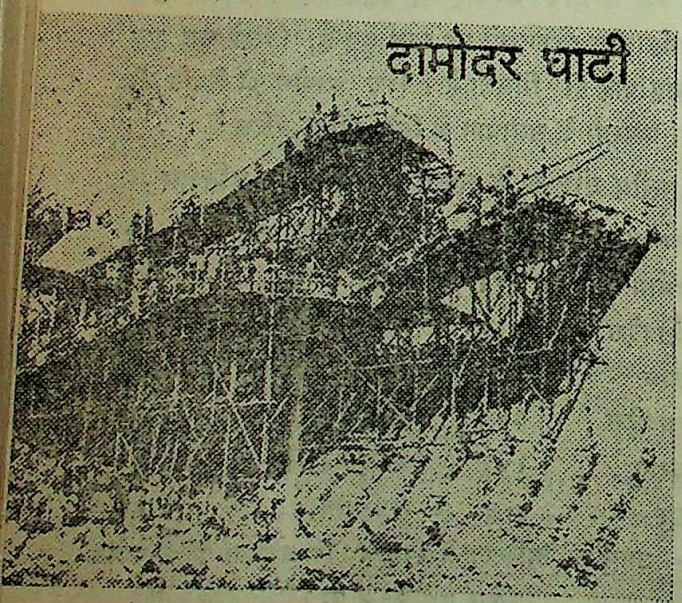


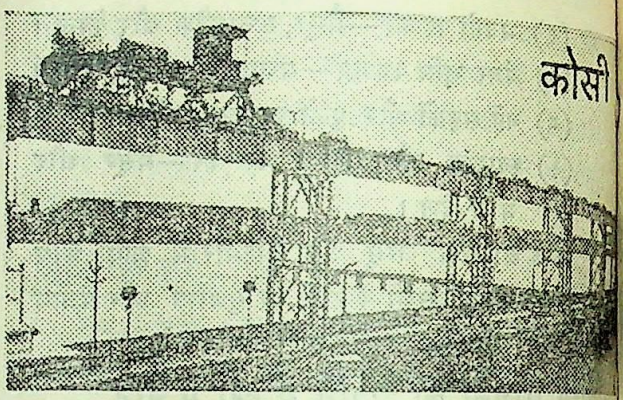


अरब ३ करोड़ ३० लाख रुपये की सहायता दी जा चुकी है।

चम्बल योजना में गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और कोटा बांध तथा बिजलीघर एवं बहुत सी नहरें शामिल हैं। इससे मध्य प्रदेश और राजस्थान की भूमि की सिंचाई करने के साथ-साथ बिजली तैयार की जाएगी। दामोदर घाटी की योजना (बिहार और पश्चिमी बंगाल) में चार बांध, ३ ताप बिजलीघर तथा नहरें शामिल हैं।

बिहार की 'शोक नदी' कोसी की धारा के बराबर बदलते रहने से भारी नुकसान होता था; प्रति वर्ष वर्षा आने पर नदी में बाढ़ आ जाती थी जिससे भारी नुकसान होता था और अनगिनत जानें चली जाती थीं। कोसी योजना बाढ़ों की रोकथाम में सहायक होने के अलावा सिंचाई योजना भी है। महाराष्ट्र में कोयना (पूर्व की ओर बहने वाली कृष्णा नदी की सहायक नदी) का पानी एक बांध द्वारा संचित कर लिया गया है और बिजली पैदा करने के लिए इस पानी की धारा को पश्चिम की ओर से मोड़ कर एक सुरंग द्वारा १,२७० फुट की ऊंचाई से गिराया जाता है। हीराकुंड (उड़ीसा) में महानदी पर १५,७४८ फुट लम्बा बांध तैयार किया गया है। यह संसार में नदी की मुख्य धारा पर तैयार किया गया सबसे लम्बा बांध है। महानदी मुहाना योजना से हीराकुंड बांध की सिंचाई की क्षमता बढ़ जायेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्रप्रदेश में कृष्णा नदी पर निर्मित नागार्जुनसागर बांध पत्थरों की चिनाई करके तैयार किया गया संसार का सबसे ऊंचा और सबसे बड़ा बांध है । इसका जलाशय भारत में सबसे बड़ा होगा । तुंगभद्रा योजना सिंचाई-योजना के साथ-साथ पनबिजली योजना भी है ।

१८ करोड़ ४० लाख रु० का दूसरा ऋण शबरीगिरि पनबिजली-योजना पर भारतीय मुद्रा के रूप में होने वाले खर्चों को पूरा करने के लिए दिया गया है । इस योजना

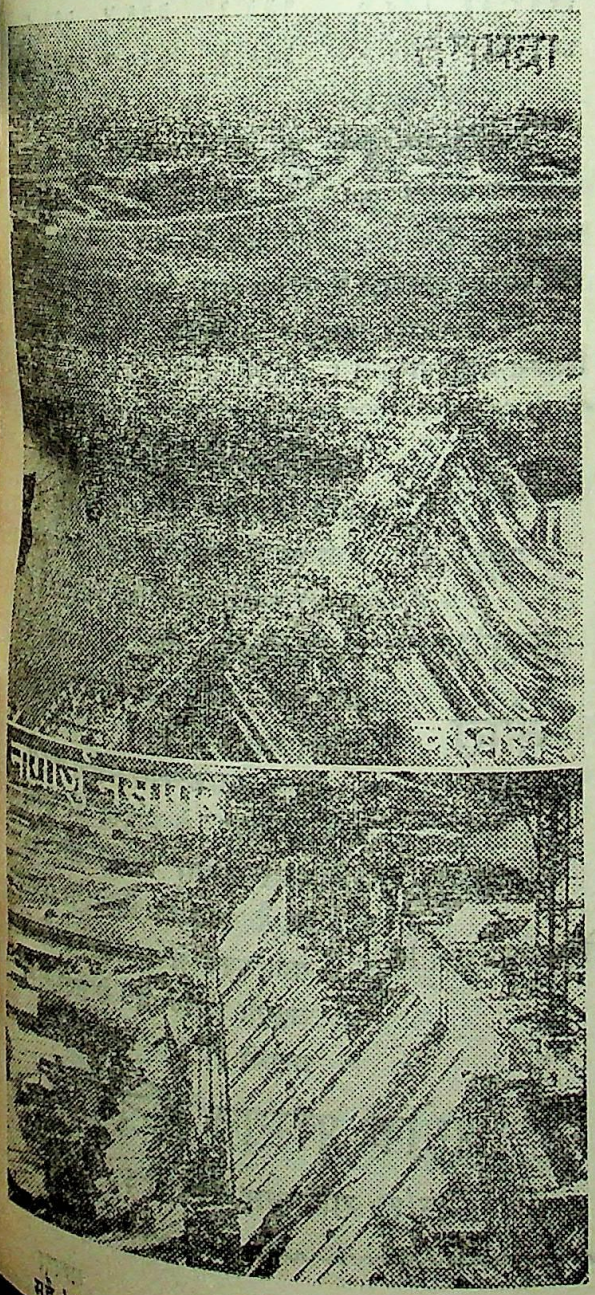

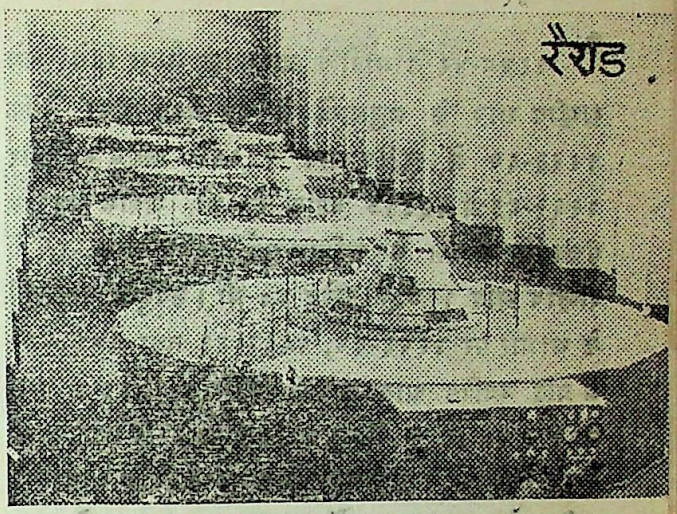


की खर्चों के लिए १९६२ में अमेरिका ने २ करोड २ लाख डालर का ऋण दिया था ।

३ करोड़ ३० लाख रु० का तीसरा ऋण रैणड घाटी योजना के लिए है । यह ऋण उत्तर प्रदेश की बिजली पैदा करने की क्षमता में ३ लाख किलोवाट की वृद्धि करने लगभग ५ लाख एकड़ भूमि के लिए सिंचाई का पानी सुलभ करने तथा रैणड बांध के आसपास के क्षेत्रों में बाढ़ की रोकथाम करने के लिए दिया गया है । पिछले वर्षों में इस योजना के लिए २५ करोड़ ४६ लाख रुपये दिये गये हैं ।

चौथे समझौते के अन्तर्गत, अमेरिका सरकार ने 'एग्रीकल्चरल रिफाइनेन्स कारपोरेशन' को ५ करोड़ रु० का अनुदान दिया है । कृषि कार्यों के लिए ऋण की व्यवस्था करने वाली इस संस्था की स्थापना जुलाई १९६२ में हुई थी । ● ●


## सम्पदा

का

राजस्थान विकास अंक शीघ्र ही प्रकाशित होगा । अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें ।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्रीय आय व उत्पादन में वृद्धि

१९४८-४९ के भावों के आधार पर तैयार किये गये राष्ट्रीय आय के अनुमानों से यह देखा गया है कि १९६३-६४ में राष्ट्रीय आय १३९१० करोड़ रु० और १९६२-६३ में १३३१० करोड़ रु० थी, जबकि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष अर्थात् १९६०-६१ में राष्ट्रीय आय १२७३० करोड़ रु० थी। उपर्युक्त अनुमानों के आधार पर १९६३-६४, १९६२-६३ तथा १९६०-६१ में प्रति व्यक्ति आय क्रमशः २९९.८, २९३.४ तथा २९३.२ रु० थी। किन्तु प्रचलित भावों के आधार पर तैयार किये गये राष्ट्रीय आय के अनुमान पर्याप्त मात्रा में अधिक थे। १९६३-६४ में यह आय १७२०० करोड़ रु० और १९६३-६३ में १५४०० करोड़ रु० थी। इन वर्षों में प्रति व्यक्ति आय के आंकड़े क्रमशः ३७०.७ तथा ३३९.४ रु० थे।

१९४८-४९ के भावों के आधार पर १९६२-६३ तथा १९६३-६४ के वर्तमान अनुमान पहले प्रकाशित अनुमानों की तुलना में कुछ कम आय दिखाते हैं। प्रचलित भावों तथा १९४८-४९ के भावों के आधार पर तैयार किये गये १९६३-६४ के दोनों अनुमान अस्थायी हैं।

१९४८-४९ के भावों के आधार पर यह देखा गया है कि १९६२-६३ की तुलना में १९६३-६४ में कृषि क्षेत्र से उत्पन्न आय में १.९ प्रतिशत तथा शेष सभी क्षेत्रों से उत्पन्न सम्मिलित आय में ६.५ प्रतिशत वृद्धि हुई। परिणाम स्वरूप १९६३-६४ की राष्ट्रीय आय में ४.५ प्रतिशत वृद्धि हुई है। वृद्धि की यह गति १९६२-६३ में केवल १.९ प्रतिशत थी।

प्रचलित भावों तथा १९४८-४९ के भावों के आधार पर १९५०-५१, १९५५-५६ और १९६०-६१ से १९६३-६४ तक के शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन तथा प्रति व्यक्ति शुद्ध उत्पादन के अनुमान इस प्रकार हैं :

| वर्ष | शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन (१०० करोड़ रु० में) | | प्रति व्यक्ति शुद्ध उत्पादन (रुपयों में) | |
|---|---|---|---|---|
| | प्रचलित भावों के आधार पर | १९४८-४९ के भावों के आधार पर | प्रचलित भावों के आधार पर | १९४८-४९ के भावों के आधार पर |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १९५०-५१ | ९५.३ | ८८.५ | २६६.५ | २४७.५ |
| १९५५-५६ | ११.८ | १०४.८ | २५५.० | २६७.८ |
| १९६०-६१ | १४१.४ | १२७.३ | ३२५.७ | २९३.२ |
| १९६१-६२ | १४८.० | १३०.६ | ३३३.६ | २९४.३ |
| १९६२-६३ | १५४.० | १३३.१ | ३३९.४ | २९३.४ |
| १९६३-६४ | १७२.० | १३९.१ | ३७०.७ | २९९.८ |

(अस्थायी)

उपर्युक्त सारिणी से यह देखा जा सकता है कि तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम तीन वर्षों में स्थिर भावों के आधार पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन में ९.३ प्रतिशत और प्रति व्यक्ति उत्पादन में २.३ प्रतिशत वृद्धि हुई है।

यह जानकारी केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की एक विज्ञप्ति में दी गयी है।


भारत की उद्योग नीति

लेखक :

प्रो. रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै. "सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज की गंभीर समस्या

# मुद्रा-स्फीति और उसका विकास

(गतांक से आगे)

श्री योगेन्द्रनाथ

अब प्रश्न यह उठता है कि मुद्रा स्फीति की सुरक्षित सीमा क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन है। किन्तु मोटे रूप में इसका निम्नलिखित उत्तर सहायक सिद्ध होगा।

मुद्रास्फीति की प्रक्रिया चार मुख्य भागों में विभक्त की जा सकती है (१) मूल्य-वृद्धि के साथ-साथ मजदूरी और वेतन में स्थायित्व बना रहे; (२) मूल्यों में वृद्धि के साथ-साथ मजदूरी में भी बढ़ोत्तरी, परन्तु दोनों के बीच का अन्तर काफी हो; (३) मूल्यों और मजदूरी में समान वृद्धि; जबकि उत्पादन तत्वों के मूल्य भी बहुत बढ़ जाते हैं और (४) उत्पादन अथवा मजदूरी में मूल्यों से भी अधिक वृद्धि हो। इसे मुद्रास्फीति की चरम सीमा कहा जा सकता है।

पूंजी-निर्माण तथा आर्थिक-विकास में मुद्रास्फीति तभी तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है, जब तक कि मजदूरी और मूल्यों में काफी अन्तर बना रहे। उपर्युक्त दूसरे चरण (नं० २) तक तो मूल्य-वृद्धि सहनीय है, परन्तु एक बार मुद्रास्फीति तीसरे चरण तक बढ़ गई तो हड़तालें तालाबन्दी, सट्टा आदि अर्थ-विरोधी परिणाम व्यापक रूप धारण कर लेंगे। इसलिए मुद्रास्फीति को तीसरे चरण तक पहुँचने से पूर्व ही नियंत्रित करना आवश्यक है। वैसे तो मुद्रास्फीति की सीमा प्रत्येक देश की विभिन्न परिस्थितियों पर निर्भर करती है और इस सम्बन्ध में कोई निश्चित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती, किन्तु अर्थशास्त्रियों के गहन अध्ययन के आधार पर एक अर्द्ध-विकसित देश में मूल्य वृद्धि ४ प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। हां, भारत जैसे राष्ट्र में जहां कि पूंजी निर्माण की क्षमता तथा कच्चे माल की उपलब्धि काफी हो सकती हो, मूल्य-वृद्धि की उपर्युक्त सीमा को बढ़ाया भी जा सकता है, यदि मुद्रास्फीति उपकरण को अन्य कार्य रत आर्थिक एवं औद्योगिक नीतियों के अनुकूल प्रयोग किया जाय। इसके लिए जरूरी है कि वितरित लाभों पर भारी कर लगाये जाएं और व्यापार में पुनर्विनियोजित लाभों पर विशेष छूटें दी जाएं। खपत को कम करने और बचत को प्रोत्साहित करने हेतु व्यय-कर लगाए जाएं। सट्टे के क्षेत्र में विनियोजन को निरुत्साहित करने के लिए अचल सम्पत्ति जैसे जमीन, भवनों से होने वाले लाभों पर भारी नियंत्रण की व्यवस्था हो।

## भारत की स्थिति

अब प्रश्न उठता है कि क्या अपने देश में ऐसी शक्तियां कार्यरत हैं, जो मुद्रास्फीति को फैलाने में सहायक हो रही हैं ? इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि घाटे की वित्त-व्यवस्था, अधिक मुद्रा का प्रचलन में आ जाना, बैंक साख में वृद्धि, उत्पादन की तुलना में खपत और मांग का बहुत अधिक बढ़ जाना आदि कुछ ऐसी शक्तियां हैं, जो अन्ततोगत्वा मुद्रास्फीति को जन्म दे सकती हैं।

लेकिन वर्तमान मूल्य-वृद्धि हमारी अर्थ-व्यवस्था और विकास के अनुकूल कही जा सकती है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि भारत जैसे अर्द्ध-विकसित देश में आर्थिक विकास सम्बन्धित सबसे बड़ी समस्या पूंजी-निर्माण की है। विकास के जिस चरण में हम पहुँच चुके हैं, उस स्थिति में जितनी भी पूंजी उपलब्ध हो सके, उतनी ही थोड़ी है। पूंजी-निर्माण का सबसे अच्छा साधन तो यह है कि जनता अपनी आय का, जहां तक संभव हो सके, अधिकतम भाग बचा कर बैंकों, डाकखानों, जीवन बीमा, औद्योगिक अथवा कृषि विकास कम्पनियों के शेयरों, सहकारी तथा सरकारी संस्थानों में लगाये। इससे एक ओर पूंजी-निर्माण में वृद्धि होगी और दूसरी ओर मुद्रा-चलन कम होने से मूल्य अपने आप कम होने लगेंगे। परन्तु सरकार द्वारा अथक प्रयत्नों के बावजूद भी जब बचत दर में आवश्यक वृद्धि नहीं हो पा रही तो इस दशा में मूल्य-वृद्धि वांछनीय है। क्योंकि ज्यों-ज्यों वस्तुओं के दाम बढ़ेंगे, उद्योगपतियों और व्यापारियों की लाभ-क्षमता में भी वृद्धि होगी जिससे नये-नये उद्योगों की स्थापना, स्थापित उद्योगों का विस्तार और कृषि कार्यक्रम कम-से-कम समय में कार्यान्वित हो सकेंगे। आज हमें जितनी आव-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यकता पूंजी की है, उससे कहीं अधिक वैज्ञानिक एवं टेक्नोलाजिकल सम्बन्धी अनुसंधान और उत्पादक संस्थानों की भी है। देश में जितने नए-नए उद्योग धन्धे, टेक्नोलाजिकल संस्थान विद्यमान हैं, निश्चित रूप से इनकी स्थापना में निजी क्षेत्र का बहुत बड़ा हाथ है। यह ठीक है कि भारी पूंजी-उपभोग्य उद्योगों जैसे लोहा और इस्पात, भारी मशीनें, फाण्ड्रीफोरज, भरकम बिजली के कारखानों आदि में पूंजी तो बहुत अधिक लगानी पड़ती है, लेकिन लाभ काफी समय बाद प्राप्त होता है। ये ऐसे महत्त्वपूर्ण उद्योग हैं जिनकी अनुपस्थिति में औद्योगिक क्रांति ही असफल नहीं होगी, बल्कि कृषि उत्पादन भी नहीं बढ़ सकता। सघन खेती तथा बंजर पड़ी धरती को उपजाऊ बनाने के लिए अधिकाधिक ट्यूब वैल, पंम्पिंग सैट, ट्रैक्टर आदि चाहिएं। सुरक्षा और अन्य क्षेत्रों में विभिन्न मशीनों, इस्पात और लोहे की जरूरतों को भी ओझल नहीं किया जा सकता। इन उद्योगों से अन्ततोगत्वा जितना लाभ होगा, शायद ही अन्य क्षेत्र में किए जा रहे विनियोजन से हो। राउरकेला, भिलाई, दुर्गापुर, जमशेदपुर कारखानों में उत्पादित इस्पात का उपयोग देश की आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त जापान, जर्मनी आदि देशों को भी निर्यात किया जा रहा है जिससे करोड़ों रुपयों की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है।

इसलिए भारत जैसे अर्ध-विकसित देश में विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के साथ-साथ मूल्यों का ऊपर की ओर उठना अनिवार्य है। एक फ्रांसीसी वित्त मंत्री ने एक बार ठीक ही कहा था "ली प्लान, ऐस्ट ली इंफ्लेशन" अर्थात् योजना ही मुद्रास्फीति है। हमारी पंचवर्षीय योजनाओं का सम्बन्ध केवल आर्थिक विकास से नहीं है, बल्कि जनता के सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक सभी पहलुओं से है। परन्तु देश का यह चहुंमुखी विकास कोई सरल कार्य नहीं है। इसके लिए करोड़ों रुपयों की पूंजी चाहिए, जबकि सीमित साधनों के कारण इतनी बड़ी राशि उपलब्ध करना बहुत भारी समस्या है।

## मूल्य वृद्धि का असली कारण

यह ध्यान देने योग्य बात है कि देश में जितनी भी कीमतें बढ़ी हैं, उसका मुख्य कारण अतिरिक्त मुद्रा-प्रचलन कदापि नहीं है। गत कुछ वर्षों से मूल्य वृद्धि के तीन कारण रहे हैं (१) चीनी आक्रमण (२) जनसंख्या विस्फोट और (३) व्यापारियों की जमाखोरी तथा लाभकारी नीतियां।

१९६२ में भारी चीनी आक्रमण के कारण हमारे आर्थिक साधनों पर बहुत बड़ा बोझ आ पड़ा है। चीन और पाकिस्तान की ओर से निरन्तर खतरा बने रहने के कारण, भारत के लिए आवश्यक हो गया है कि आन्तरिक उत्पादन तथा विदेशों से आयात द्वारा अस्त्रशस्त्रों के अभाव की पूर्ति करे। विस्फोटक पदार्थों का निर्माण करने वाले नये-नये कारखानों की स्थापना, स्थल, वायु और नौ सेना के पुनर्गठन आदि पर करोड़ों रुपया लगाया जा रहा है। एक ओर तो रक्षा-शक्ति बढ़ाई जा रही है, तो दूसरी ओर विकास योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं। ऐसी स्थिति में थोड़ी बहुत मूल्य-वृद्धि अनिवार्य है।

१९६१ की जनगणना के अनुसार देश की जनसंख्या में प्रतिवर्ष २.५ प्रतिवर्ष की वृद्धि हो रही है अर्थात् हर साल ४४ करोड़ लोगों में ५० लाख नये व्यक्ति सम्मिलित हो रहे हैं। इस प्रकार जो कुछ उत्पादन बढ़ पाता है, वह इन नये व्यक्तियों के पेट में पहुँच जाता है। सरकार द्वारा परिवार नियोजन कार्यक्रमों पर करोड़ों रुपये व्यय करने पर भी जनसंख्या में विशेष कटौती दिखाई नहीं दे रही है।

वर्तमान मूल्य वृद्धि में व्यापारियों और उद्योगपतियों का भी बहुत हाथ है। यदि ये लोग ईमानदारी और देशभक्ति भावना से कार्य करें, तो मूल्यों में आशातीत कमी हो सकती है।

देश को प्रत्येक वर्ष ४०-५० लाख टन खाद्यान्नों के अभाव का सामना करना पड़ता है, जबकि प्रतिदिन २०,००० टन अर्थात् हर साल ७३ लाख खाद्य पदार्थों का आयात किया जा रहा है। जब अभाव से भी अधिक आयात किया जा रहा है तो फिर मूल्यों में वृद्धि क्यों? स्पष्ट है कि धन और शक्ति के लोलुप समाज-विरोधी कुछ ऐसे तत्व कार्यरत हैं जो स्थिति का नाजायज फायदा उठाना चाहते हैं। स्मरण रहे कि पिछले वर्ष की अपेक्षा खाद्यान्न देशनांक में केवल १८.७ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास स्तर, उत्पादन-क्षमता और पूंजी निर्माण-साधनों को देखते हुए इतनी मूल्य-वृद्धि खतरे का चिन्ह नहीं माना जा सकता।

आज जनता आवश्यक मूल्य-वृद्धि के कारण सरकार को दोषी ठहरा रही है और अपने कर्तव्यों के प्रति इतनी जागरूक नहीं है जितनी कि अधिकारों के प्रति। जनसंख्या में वृद्धि होना सर्वथा जनता के हाथ में है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह परिवार नियोजन कार्यक्रमों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए जहां तक संभव हो सके संयम का पालन करे। व्यापारियों और उद्योगपतियों को चाहिए कि वे लाभांश का अधिकाधिक भाग उत्पादक विनियोजन में करें, जिससे आगामी मुद्रा-चलन कम होने के साथ-साथ देश की उत्पादन-क्षमता में भी वृद्धि होगी। हालांकि सरकार ने भ्रष्टाचार को मूलतः नष्ट करने के लिए पूरी तरह से कमर कस ली है, फिर भी जनता के सहयोग के बिना यह कार्य अधूरा ही रहेगा।

## सरकारी सतर्कता

यद्यपि आर्थिक स्थिति पूर्णतः नियंत्रित है, फिर भी भविष्य में किसी प्रकार की अव्यवस्था की संभावना न रहे, इसके लिए सरकार ने निम्नलिखित कदम उठाए हैं :

(१) व्यावहारिक तथा अनुसूचित बैंकों की साख-क्षमता को कम करने के लिए रिजर्व बैंक ने बैंक दर साढ़े चार से बढ़ाकर पांच प्रतिशत कर दी है। इससे एक ओर तो फालतू मुद्रा-चलन रुक जाएगा और दूसरे अधिकाधिक लोग सरकारी प्रमाण-पत्रों में पूँजी लगाने के लिए आकर्षित होंगे।

(२) रिजर्व बैंक के एक तात्कालिक निर्देशन के अनुसार अब बैंकों द्वारा उधार केवल उत्पादक विनियोजन जैसे कृषि सम्बन्धी यन्त्र खरीदने, कुंआ खुदवाने, नया उद्योग स्थापित करने अथवा स्थापित उद्योग के विस्तार के लिए दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, मूल्य-वृद्धि का उपयोग अन्य कार्यरत आर्थिक तथा औद्योगिक नीतियों के अनुसार इस प्रकार किया जा रहा है, जिससे कम-से-कम मौद्रिक आवश्यकता उत्पन्न हो।

(३) चालू योजना के आगामी दो वर्षों में घाटे की अर्थ-व्यवस्था की पूर्ति अन्य साधनों द्वारा पूरी की जा रही है जबकि चौथी योजना में इस स्रोत को बिल्कुल तिलांजलि दे दी गई है।

(४) व्यक्तिगत लाभों पर इतने भारी कर लगा दिये गये हैं कि व्यापारियों द्वारा अनुत्पादक क्षेत्रों में विनियोजन करना लगभग पूर्णतः असम्भव हो गया है। लेकिन इसके साथ-साथ उत्पादक साधनों में लाभ पुनर्विनियोजन के लिए विशेष छूटें प्रदान की गई हैं।

(५) जहां तक संभव हो सकता है, प्रशासनिक व्यय कम किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, किसान को अपने उत्पादन का उचित मूल्य मिल सके और उपभोक्ताओं के खास दिक्कत का सामना न करना पड़े, इसके लिए लगभग सभी आवश्यक वस्तुओं के मूल्य निश्चित किये जा रहे हैं। ■ ■

## विविध राज्यों के बजट पर

(पृष्ठ २२६ का शेष)

की प्राप्ति में महाराष्ट्र सबसे आगे है। आसाम का स्थान दूसरा तथा आंध्र तीसरे नम्बर पर आता है। बिहार, मध्यप्रदेश, जम्मू काशमीर और राजस्थान ऐसे राज्य हैं, जिन्होंने कि योजना के अनुरूप अपने वित्तीय लक्ष्यों को पूरा नहीं किया है। उपर्युक्त वित्तीय लक्ष्यों की अपूर्ति के साथ २ यह भी स्पष्ट होता है कि योजना में निर्धारित राज्य से करीब ३ प्रतिशत अधिक व्यय हुआ है। अधिकांश राज्यों ने अपने वित्तीय लक्ष्यों को पूरा नहीं किया, सिर्फ ४ राज्य इस कथन के अपवाद हैं। इस प्रकार यह समस्या और भी गम्भीर हो जाती है।

अगर तीसरी योजना में राज्यों के खर्च में पिछले वर्षों के अनुसार १० प्रतिशत की वृद्धि प्रतिवर्ष होती रही और अगर मूल्य स्तर भी निरन्तर बढ़ते रहे तो, योजना में निर्धारित राशि के लक्ष्य पूरे नहीं किये जा सकेंगे। इस आधार पर कुल व्यय को प्राप्त करने के लिए योजना में निर्धारित राशि के लक्ष्य से ६२५ करोड़ रुपया अधिक प्राप्त करना होगा। यह एक गम्भीर और चिन्तनीय स्थिति है। ■ ■

—इकानामिक टाइम्स के एक के आधार पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सबसीडी या महंगाई भत्ता ?

पी. एच. शेशगिरी राव

जब से यह बात स्वीकार कर ली गई कि भावों के गिरने की कोई संभावना नहीं, वेतन या मजदूरी के अलावा महंगाई भत्तों को देने की पद्धति लगभग आम बन गई है। अनेक मामलों में, खासकर औद्योगिक कामगरों के बारे में तो महंगाई भत्ते को निर्वाह खर्च के सूचक अंक से सम्बद्ध कर दिया गया है। सूचक अंक बढ़ते महंगाई भत्ता स्वतः बढ़ जाता है। अब उस अंक के ढांचे में भी फेर-बदल करने की मांग की जा रही है।

कुछ विचारक महंगाई भत्ते के जरिये बढ़ते हुए निर्वाह खर्च की भरपाई करने के विरुद्ध हैं। उनका कहना है कि इससे मुद्रास्फीति पैदा होती है और उससे रोग ठीक करने में कोई मदद नहीं मिलती है बल्कि इसके विपरीत उससे मूल्यवृद्धि में बढ़ावा ही मिलता है। इन लोगों का सुझाव है कि अस्थायी राहत के लिए सबसीडी कीमतों पर जरूरी चीजों की पूर्ति करना अधिक उपयुक्त होगा। इस प्रस्ताव के प्रभावों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करना जरूरी है।

सामान्यतया, चीजें खरीदने के लिए लाखों उपभोक्ता बाजार में मौजूद होते हैं। हरेक की अपनी-अपनी प्राथमिकताएं होती हैं और अपनी जरूरतों के लिए वे अपनी सामर्थ्य के भीतर कीमतें अदा करने के लिए रकमों की सीमा भी निर्धारित कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस बात का ध्यान रखेगा कि महंगाई भत्ते के रूप में जो भी थोड़ी अतिरिक्त नगदी उसे मिली है, उसका भरसक सदुपयोग किया जाय। इस प्रक्रिया में वह उन चीजों को नहीं खरीदेगा जो बहुत महंगी होंगी। इससे मूल्यवृद्धि की प्रवृत्ति पर काबू बना रहेगा। दूसरे शब्दों में वह उपलब्ध सीमित अतिरिक्त साधनों का अत्यन्त कार्यक्षम उपयोग करेगा, जिससे मूल्यों में और अधिक वृद्धि होने में कम योग मिलेगा। लेकिन जब मालिक निजी या सार्वजनिक चीजें पूर्ति करने का दायित्व लेता है, उस समय वह एक ऐसे बड़े खरीदार के रूप में बाजार में प्रवेश करता है जो कुछ वस्तुओं की पूर्व निर्धारित मात्राओं को, उनकी लागत

> अभी हाल में केन्द्रीय सरकार ने अपने कर्मचारियों का महंगाई भत्ता बढ़ाने का निर्णय किया है। इसका परिणाम केन्द्रीय सरकार के व्यय में २५ करोड़ रुपये की वृद्धि है। अन्य औद्योगिक संस्थाएं भी वेतन व महंगाई भत्ता न बढ़ायें, यह संभव नहीं। राज्य सरकारें भी इसका अनुसरण करेंगी।
>
> परन्तु क्या महंगाई भत्ता ही बढ़ाना उचित है अथवा सबसीडी देकर कर्मचारियों के जीवन व्यय में कमी करना। इस सामयिक प्रश्न पर विद्वान लेखक के विचार पठनीय है।

के बावजूद, खरीदने के लिए दृढ़ संकल्प होता है। एक व्यक्ति की तरह न उसके पास प्राथमिकताओं का क्रम होता है और न वह उन चीजों को ही अस्वीकार करेगा जिनकी कीमतें बहुत ज्यादा होती हैं। क्योंकि एक बार जब कुछ चीजों को सबसीडी दरों पर पूर्ति करने के सिद्धान्त को स्वीकार कर लिया जाता है, तब कर्मचारी इस बात की मांग करने लग जायेंगे कि उन चीजों की निर्धारित कीमतों पर पूर्ति करने के दायित्व को पूरा किया जाय, उनकी लागतें भले ही कुछ भी हों। नतीजा यह होगा कि मूल्यवृद्धि रोकने के कारणों के अभाव से कीमतें उस स्थिति की अपेक्षा काफी अधिक बढ़ जायंगी जबकि बाजार में सीमित महंगाई भत्ते के साथ केवल व्यक्ति ही मौजूद होंगे।

राशनिंग में राशन की चीजों की मांग बढ़ जाती है, क्योंकि वे लोग भी जिन्हें वस्तु विशेष की जरूरत नहीं होती है, उसे खरीदने के अधिकार का उपयोग करते हैं। उसी प्रकार सबसीडीकृत चीजों की मांग बढ़ जायगी। मांग में इस प्रकार की वृद्धि होने से मूल्यों में भी और वृद्धि होगी। द्वितीय महायुद्ध में रेलवे ने अपने कर्मचारियों को सितम्बर १९३९ की कीमतों पर जरूरी चीजें पूर्ति करने का दायित्व अपने ऊपर लिया और इसके लिये उसने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक काफी बड़ा संगठन स्थापित किया। (अतः सबसीडी पर पूर्ति करने का दायित्व लेते समय इस प्रकार की अधिक जिम्मेदारी उठाने पर भी ध्यान रखना चाहिये) रेलवे ने सबसीडी कीमतों पर साग-भाजी तक की पूर्ति की। नतीजा यह हुआ कि कम वेतन पाने वाले अनेक कर्मचारियों ने रेलवे से सबसीडी दरों पर मिलने वाली चीजों को बाजारी दरों पर बेचकर एक लाभप्रद धन्धा शुरू कर दिया था। इस सुविदित अनाचार की ओर आंखें मूंदना ही पड़ा, क्योंकि रेलवे एक अनिवार्य सेवा थी और युद्धकाल में किसी भी लागत पर रेलवे कर्मचारियों को सन्तुष्ट रखना ही था।

मूल्य सतह पर जो कुछ भी प्रभाव हो, कर्मचारियों के वेतनों के मानवीय पहलू का, जो अपने वास्तविक मूल्य में सतत घटते जाते हैं, मानवीय तरीके से ही समाधान करना चाहिये। एक परेशान कर्मचारी, कहता है 'यदि कल्याणकारी राज्य आर्थिक दशाओं में सुधार नहीं कर सकता है तो उसे कम से कम मेरे वेतनों की असली कीमत को तो स्थिर रखना चाहिये।" इसलिए सरकार को चाहिये कि वह इन दोनों लालचजनक विकल्पों से समस्त देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले कुप्रभावों का अनुभव करे और मूल्य सतह को घटाने के उद्देश्य और वित्तीय नीतियों में सुधार करने की ओर गंभीरता से ध्यान दे। इन प्रयासों में सरकार जितनी सफल होगी, महंगाई भत्ता देने का उसका उतना ही दायित्व कम होता जायगा, जब उसे निर्वाह खर्च के सूचक से सम्बद्ध कर दिया जायगा।

बंधी आय का अधिकांश वर्ग, अपनी आमदनी की यथार्थ कीमत के ह्रास से पीड़ित रहता है और उसे कोई राहत नहीं मिलती है। मजदूरी पैदा करने वाले ऐसे अनुरक्षित लोगों का सबसे बड़ा वर्ग कृषि कामगरों का है, जिनके कल्याण के बारे में सभी लोग कोरी सहानुभूति दिखाते हैं। जबतक हम, वेतन पैदा करने वालों के एक समुदाय को अस्थायी राहत देने की पद्धति अपनाये रखते हैं। तबतक इसको इस प्रकार की राहत महंगाई के रूप में नगद रकम देने तक ही सीमित रखनी चाहिये। इस विरोध का समाधान, कि नगद राहत को गैर जरूरी खर्च में बढ़ा दिया जा सकता है, निर्वाह खर्च दर्शकांक तैयार करते समय केवल उन चीजों को महत्व देकर किया जा सकता है जिनकी मांग गैर-लचीली है। लेकिन इन सब बातों के बावजूद असली समस्या है एक अस्थायी मूल्य सतह को कायम रखना। इसके लिये सैद्धान्तिक नीतियों का त्याग देना चाहिये और ऐसी व्यावहारिक आर्थिक नीतियों को शीघ्र अपनाना चाहिये, जिनसे उत्पादन में वृद्धि हो। ■ ■

## विदेशी कम्पनियों के मुनाफों में वृद्धि

रिजर्व बैंक आफ इंडिया ने विदेशी कम्पनियों के मुनाफों के बारे में जो रिपोर्ट पेश की है, वह अब लोकसभा में वित्तमंत्री ने पेश कर दी है। इस रिपोर्ट के अनुसार विदेशी कम्पनियों को भारत में कारोबार करने पर निम्नलिखित रूप से लाभ हुआ :—

| | |
|---|---|
| १९५८-५९ | ३६.२ करोड़ रु० |
| १९६०-६१ | ६१.९ ,, ,, |
| १९६३-६४ | ९८.० ,, ,, |
| १९६४-६५ (पहिले ६ महीने) | ५४.३ ,, ,, |

इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में विदेशी कम्पनियों की २५१ शाखाएं काम कर रही हैं। इस अवधि में विदेशियों द्वारा नियंत्रित १६९ कम्पनियों को कुल ९४ करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ। बिक्री के अनुसार कुल मुनाफे के प्रतिशत में वृद्धि हुई है। १९६१-६२ में यह ५.३ प्रतिशत थी। इस वर्ष यह बढ़कर ६.१ प्रतिशत हो गया। लागत पूंजी पर होने वाले कुल मुनाफे के प्रतिशत में भी वृद्धि हुई है। यह ७.९ प्रतिशत से बढ़कर ९.१ प्रतिशत हो गया है।

टैक्स अदायगी के बाद इन कम्पनियों का मुनाफा ३.६ करोड़ रुपया से बढ़कर १५ करोड़ रुपया हो गया है। पिछले वर्ष के मुकाबले इस वर्ष टैक्स अदा करने के बाद मुनाफा ३१.१ प्रतिशत हुआ है।

चाय बागानों और अन्य उद्योगों को इस वर्ष सर्वाधिक मुनाफा हुआ है। 'चाय बागानों' के मुनाफों की बढ़ोत्तरी ८२.५ प्रतिशत हुई है और अन्य उद्योगों के मुनाफे में २३.५ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आज की श्रम-समस्याएँ

आज स्वाधीनता प्राप्ति के १७ वर्षों के बाद भी श्रम समस्याएं पूरी तरह सुलझ नहीं पाई हैं। पिछले १५ वर्षों में श्रम समस्या के समाधान और श्रमिकों की स्थिति सुधारने के लिए सरकार ने बीसियों कानून बनाए हैं। उनके न्यूनतम वेतन बढ़े हैं, प्रोवीडैन्ट फण्ड की व्यवस्था हुई है, मंगल और श्रमहित कार्य पर्याप्त संख्या में होने लगे हैं, बहुत से औद्योगिक विवाद सुलझाए गये हैं, श्रमिकों के लिए हजारों मकान बनाए गये हैं, कैन्टीनों और कम कीमत पर सामग्री बेचने की व्यवस्था की गई हैं। फिर भी आज का श्रमिक सन्तुष्ट नहीं है। उसकी मांगें परिस्थितियों को देखते हुए निरन्तर बढ़ रही हैं। आज वह बोनस को उपार्जित लाभ का अंश नहीं बल्कि अपना अधिकार समझने लगा है। भले ही उस वर्ष उद्योग का लाभ हुआ हो या न हुआ हो।

सरकार ने श्री मेहर की अध्यक्षता में जो बोनस कमीशन बनाया था, उसने समस्या को और भी अधिक उलझा दिया है। यदि प्रश्न केवल निजी उद्योगों का होता तो सरकार किसी तरह निजी उद्योग को दबा लेती किन्तु सरकार तो स्वयं भी अपने उद्योगों के श्रमिकों को बोनस देने के लिए विवश हो जाती है। अनेक सरकारी उद्योग बोनस देने की स्थिति में नहीं है। उन्हें बोनस देने का अर्थ है—कर दाताओं पर अधिक बोझ। इसी तरह की अनेक समस्याओं ने श्रम मंत्रालय को परेशान कर रखा है और वह बोनस सम्बन्धी विधेयक संसद में पेश करने में विलम्ब कर रही है।

लोकसभा के वर्तमान अधिवेशन में श्रम समस्याओं पर काफी चर्चा हुई है। श्रमिक प्रतिनिधियों ने सरकार की उदासीनता की कठिन आलोचना की है और धमकियां भी दी हैं। प्रबन्ध में श्रमिकों का सहयोग अभी तक नहीं हो पा रहा है। श्रमिकों के वेतन भी महंगाई को देखते हुए पर्याप्त नहीं है। श्रमिकों की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कुछ भी नहीं किया गया है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि का कोई अनुभव श्रमिकों को अभी तक नहीं हो पाया है। रेलवे, रक्षा कार्यालयों, यातायात सेवाओं के कर्मचारियों के लिए अभी तक वेतन मंडलों की नियुक्ति नहीं हुई है। इसी अधिवेशन में औद्योगिक सम्बन्ध सुधारने के लिए एक कमीशन बिठाने की भी मांग की गई।

श्रम मंत्री श्री संजीवैया ने अपने भाषण में जहां इसी अधिवेशन में बोनस विधेयक पेश करने की घोषणा की वहां कलकत्ता और जबलपुर में भी पूरा समय कार्य करने वाले ट्रिब्युनलों की स्थापना का प्रस्ताव किया। न्यूनतम वेतनों के प्रश्न पर भी विचार करने के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति का प्रस्ताव किया। विभिन्न श्रम हित कार्यों का मूल्यांकन करने और नये सुझाव देने के लिए भी एक कमेटी बनाई जायगी।

श्रम मंत्री श्री संजीवैया ने यह दुःखद सत्य भी बताया कि यद्यपि चतुर्थ योजना में २०० करोड़ नये काम मिलने की सम्भावना की जा रही है तथापि उस समय तक बेकारों की संख्या भी १२० करोड़ से बढ़कर १४० करोड़ तक हो जायेगी।


यदि आप जानना चाहते हैं कि

**सम्पदा** से आपना लाभ उठा सकते हैं। में कैसी उपयोगी सामग्री होती है ?

से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है ?

**तो**

दस नये पैसे के टिकट भेजकर १९६५ की विषय सूची बुक पोस्ट मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत में औद्योगिक विकास

स्वतंत्रता के बाद से देश में औद्योगिक उत्पादन दुगुने से अधिक बढ़ा है। परम्परागत उद्योगों में वस्त्र उद्योग का उत्पादन हालांकि मन्द गति से हुआ है, परन्तु बराबर बढ़ता चला गया है। नये उद्योगों में रसायन और इंजीनियरी उद्योगों का विकास विशेष रूप से हुआ है।

स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक विकास—नये-नये उद्योग—सरकार की नीति—योजनाओं में उद्योग—लघु उद्योगों पर ध्यान—लघु उद्योगों के विकास के लिए सुझाव।

## उत्पादन में वृद्धि

इस्पात का उत्पादन चौगुने से भी अधिक बढ़ा है। अलूमीनियम के उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई है। इसका उत्पादन १९६४ में, १९२०-२१ के ४००० टन से बढ़कर १० हजार टन हो गया। बिजली का उत्पादन चौगुने से अधिक, बिजली की मशीनों का लगभग छः गुना और नान-इलेक्ट्रिकल मशीनों का चौगुने से भी अधिक बढ़ा है। देश में इस्पात का उत्पादन बढ़ने से इंजीनियरी उद्योगों में काफी वृद्धि हुई है। इस समय बोल्ट और नट आदि छोटी चीजें ही नहीं, रेडिअल ड्रिल्स, चीनी कारखाने की मशीनें आदि बड़े उपकरण भी देश में ही तैयार हो रहे हैं। नाइट्रोजन उर्वरकों का उत्पादन बढ़ा है और पोटाश उर्वरक आदि नये उर्वरकों का उत्पादन होना शुरू हो गया है। इस समय अनेक कारखाने रंग-सामग्री भी तैयार कर रहे हैं। औषधि-उद्योग का भी तेजी से विकास हो रहा है। कपड़ा कारखानों में अब सूती और पटसन का कपड़ा ही नहीं, उच्चकोटि का रेयन, नाइलोन और टेरिलीन भी बनने लगे हैं।

## नये उद्योग

सूती कपड़ा, मशीन तथा चाय और चीनी कारखानों में काम आने वाली मशीनें भी अब देश में बनने लगी हैं। देश में इस समय जो मशीनी औजार बन रहे हैं, वे पश्चिम के उन्नत देशों में बने औजारों से किसी प्रकार कम नहीं हैं। सिलाई की मशीनों, बिजली के पंखों आदि कई इंजीनियरी वस्तुओं का निर्यात भी किया जाता है। सल्फ्यूरिक ऐसिड, रेयन, अलूमीनियम, डीजल इंजन, मोटोमोबाइल, मशीनी औजार आदि नए उद्योगों ने भी काफी तरक्की की है। टायर कोर्ड, पेट्रोलियम-पदार्थ, इस्पात की ढली वस्तुएं, खनन मशीनें और अलूमीनियम कंडक्टर आदि जो उद्योग १५ वर्ष पहले यहां नहीं के बराबर थे, अब सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

## उद्योगों के प्रति सरकार की नीति

पहली पंचवर्षीय योजना में सरकार की नीति १९४८ के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के अनुसार बनाई गई थी। इस प्रस्ताव के अंतर्गत निश्चय किया गया था कि आयुध, अणु-शक्ति और रेल उद्योगों पर पूरी तरह सरकारी स्वामित्व रहे; कोयला, लोहा, इस्पात, विमान-निर्माण आदि उद्योगों का सरकार विकास करे और बाकी उद्योगों को सरकारी तथा निजी कारखानों के लिए छोड़ दिया जावे।

## सार्वजनिक या निजी क्षेत्र

दूसरी योजना के प्रारम्भ में देश ने समाजवादी समाज रचना का लक्ष्य अपनाया। इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम सरकार द्वारा औद्योगिक विकास की जिम्मेदारी लेना था। दूसरी योजना १९५६ के औद्योगिक नीति प्रस्ताव के अनुसार चलाई गई और कुछ संशोधनों के साथ तीसरी योजना का भी आधार यही चल रही है।

उक्त प्रस्तावों के अनुसार उद्योगों को तीन वर्गों में बांटा गया। पहली श्रेणी में रक्षा, कोयला आदि १७ उद्योग रखे गए, जिन्हें मुख्यतः सरकार के नियंत्रण में रखने का निश्चय हुआ। दूसरे वर्ग में मशीनी औजार और उर्वरक आदि १२ उद्योग रखे गए, जिन्हें सरकारी तथा निजी दोनों प्रकार के कारखानों के लिए निश्चित किया गया, हालांकि इनके विकास की जिम्मेदारी मुख्यतः सरकार पर डाली गई। बाकी उद्योग निजी कारखानों के लिए छोड़े गए, जिन्हें सरकार भी चला सकती थी। परन्तु उद्योगों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का यह वर्गीकरण सर्वथा अपरिवर्तनीय नहीं था। उदाहरणार्थ शुरू में खनिज तेलों के विकास की जिम्मेदारी मुख्यत: सरकार की रखी गई थी, परन्तु बाद में निजी कारखानों को भी इनके उत्पादन की इजाजत दी गई। इसी प्रकार अलूमीनियम और उर्वरक उद्योग के विकास की जिम्मेदारी पहले केवल सरकार की रखी गई थी, परन्तु बाद में निजी कारखानों को भी इसकी इजाजत दी गई। सरकार कुछ उपभोक्ता उद्योग शुरू करने की भी सोच रही है, जो अब तक निजी कारखानों के हाथ में रहे हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उद्योग-धन्धों के विकास में सरकारी कारखानों का योग काफी बढ़ा है।*

१९५१ में देश में उद्योगों में जितनी कुल उत्पादक पूंजी लगी हुई थी, सरकारी कारखानों में उसका ३ प्रतिशत से अधिक नहीं लगा था। १९५०-५१ में देश में बने इस्पात का केवल ४ प्रतिशत सरकारी कारखानों में तैयार हुआ था, जबकि अब लगभग आधा होने लगा है। सरकारी कारखानों का विस्तार हो जाने पर उत्पादन और भी बढ़ने की आशा है। इसी प्रकार आधे से ज्यादा मशीनी औजार सरकारी कारखानों में बन रहे हैं। ड्राई कोर केबल कोकिसअल केबल, डी० डी० टी० और अखबारी कागज आदि अनेक वस्तुएं केवल सरकारी कारखाने ही बनाते हैं।

अनुमान है कि चौथी योजना के अन्त तक उद्योगों में लगी कुल पूंजी की आधी राशि सरकारी उद्योगों में लगेगी, अर्थात् १९५० में सरकारी कारखानों में जहां ३ प्रतिशत पूंजी लगी थी, १९७० में ५० प्रतिशत लगेगी।

## लघु उद्योगों का विकास

तीसरी योजना में लघु उद्योगों के विकास पर काफी जोर दिया गया है। दूसरी योजना में इनमें १०८ करोड़ रु० की पूंजी लगी और ४॥ लाख लोगों को काम मिला, जबकि तीसरी योजना के अन्त तक इनमें २४० करोड़ रु० पूंजी लगने और १० लाख लोगों को काम मिलने का अनुमान है। १९६१ में छोटे कारखानों में १४०० करोड़ रु० का माल तैयार हुआ। कारखानों में हुए कुल उत्पादन का यह ३१ प्रतिशत है।

लघु उद्योगों की प्रगति को देखते हुए आशा की जा सकती है कि चौथी योजना के अन्त में इनमें इतना उत्पादन होने लगेगा कि वह कुल औद्योगिक उत्पादन का ४५ प्रतिशत तक होगा। इसके लिए चौथी योजना में अनुमानत: ४२० से ४५० करोड़ रु० तक पूंजी लगेगी, जिसमें एक तिहाई धनराशि सरकारी तथा अर्ध सरकारी क्षेत्रों की होगी। संभावना है कि अगले पांच वर्षों में लगभग ५० हजार नये छोटे कारखाने खुलेंगे।

इस समय लघु उद्योग क्षेत्र की पूरी क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा है, अत: कोई भी योजना बनाते समय इस ओर ध्यान देना चाहिए। नये कारखानों में और अधिक पूंजी लगाने के पहले, मौजूदा कारखानों के लिए कच्चे माल की पूरी व्यवस्था करना जरूरी होगा ताकि इनमें उत्पादन बढ़े और अधिक लोगों को रोजगार मिले।

यह आवश्यक है कि एक ही वस्तु तैयार करने वाले कारखानों को चाहे वे बड़े कारखाने हों अथवा छोटे, समान रूप से कच्चा माल मिलने की सुविधा रहे। इसके अलावा अब उन छोटे कारखानों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिनमें तैयार होने वाला माल बड़े उद्योगों में नहीं बनता और इसकी उपभोक्ताओं को दरकार भी खूब रहती है। इसलिए छोटे कारखानों में लगी पूंजी के अधिकतम उपभोग के लिए उक्त कारखानों की आवश्यकताओं का पता लगाना और उनकी पूर्ति करना जरूरी है।

सरकार छोटे उद्योगों के लिए उद्योग पुरियां बना रही है, पर केवल उद्योग पुरियां बनाने से ही औद्योगिक विकास नहीं हो सकता। मुख्य जरूरत एक समन्वित योजना बनाने की है, जिसमें उद्योगपुरियों का महत्त्वपूर्ण स्थान हो। केन्द्र और राज्य सरकारों को मिल कर उक्त प्रकार की समन्वित योजनाएं बनानी होंगी, ताकि उद्योगों को सफलतापूर्वक दूर दूर गांवों में चलाया जा सके।

लघु उद्योग क्षेत्र में सहायक उद्योगों के विकास की गुंजाइश उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। औद्योगिक विकास के प्रारम्भिक दिनों में तो बड़े कारखानों को मजबूरी से छोटे बड़े सभी प्रकार के उपकरण स्वयं ही तैयार करने पड़ते थे। परन्तु छोटे कारखाने भी अब खूब बढ़ चुके हैं

(शेष पृष्ठ २४२ पर)

* इसे समझने के लिए 'भारत की औद्योगिक निति' ७५ पैसे के टिकट भेजकर मंगावे। —मैने. सम्पदा, दिल्ली



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अविकसित राष्ट्रों की समस्याएं

चैस्टर बौल्स, भारत-स्थित अमेरिकन राजदूत

एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका की सरकारों को आगामी कुछ वर्षों में अपनी जनता के सन्मुख यह सिद्ध करना होगा कि वे न केवल प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक स्वतन्त्रता की दिशा में प्रगति प्रदान कर सकती हैं, बल्कि सुदृढ़ और चमत्कारपूर्ण आर्थिक विकास भी प्रस्तुत कर सकती हैं। अगर सरकारें इस कसौटी में खरी नहीं उतरेंगी तो चाहे वे कितनी ही ईमानदार और साम्यवाद की विरोधी क्यों न हों, अन्ततः पतन की ओर चली जाएंगी।

अच्छी से अच्छी परिस्थिति में भी सफलता पाना आसान नहीं होता। उच्चतर जीवन-स्तर, पर्याप्त भोजन, स्वास्थ्य, स्कूल और सड़कें, सिंचाई और बिजली के लिए नदियों पर बांध तथा रेलमार्गों और संचार-साधनों के प्रसार की मांगें ज्यामिति की प्रगति से आगे बढ़ती जा रही हैं। इन मांगों को पूरा करने की प्रगति अंकगणित के अनुसार ही रही है। यद्यपि इस खाई को पूर्णतः कभी भी नहीं भरा जा सकता, फिर भी यह आवश्यक है कि इसको कम करने के लिए और अधिक प्रयत्न किये जायं।

अधिक शीघ्र प्रगति के मार्ग में बड़ी बड़ी बाधाएं हैं। उनमें से सबसे अधिक कठिन है, पूंजी-सम्बन्धी साधनों का अभाव। देश गरीब हो या अमीर, अर्थ-व्यवस्था पूंजीवादी हो या साम्यवादी अथवा समाजवादी, बचत के द्वारा संचित पूंजी नितांत आवश्यक प्रेरक शक्ति है, जो उस गति का निर्णय करती है, जिससे उद्योग का विकास किया जा सकता है और जीवन-स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है।

आज प्रत्येक अर्धविकसित राष्ट्र के सामने यही प्रश्न है कि बचत इतनी कहां से पायी जाय, कि विकास पूर्ण गति के साथ बढ़े, जिससे उतावली जनता संतुष्ट हो जाय? यदि भारत, बर्मा, फिलीपाइन्स अथवा जापान जैसी प्रजातांत्रिक सरकारें करों को बढ़ाए जाती है, तो उन्हें निर्वाचन में परास्त होना पड़ेगा। यदि यह चीन जैसे साम्यवादी देशों की प्रगति के बराबर नहीं चल सकतीं, तो क्रांतिकारी उथल-पुथल के द्वारा उन्हें हटाया जा सकता है।

## विकास : वेदनापूर्ण प्रक्रिया

आर्थिक विकास सदैव ही एक वेदनापूर्ण प्रक्रिया रही है। हमारे देश अमेरिका और इंगलैंड में भी यह वेदनापूर्ण रही। रूस और चीन में यह और भी अधिक वेदनापूर्ण रही, और चीन के सम्बन्ध में तो यह वेदना शीघ्र ही और अधिक बढ़ सकती है। हम चाहे जितना भी चाहें, अर्धविकसित असाम्यवादी देशों में हम इस वेदना पूर्ण प्रक्रिया का उन्मूलन नहीं कर सकते। पूंजी सम्बन्धी उनकी समस्त मांगों को काफी धन देकर पूरा कर सकने पर भी, मूल्यों की कठिन व्यवस्था और परिवर्तनशील सामाजिक और राजनीतिक आदर्श फिर भी शेष रह जाएंगे।

फिर भी अमेरिका असाम्यवादी राष्ट्रों के विकास के साथ होने वाली वेदना को कम करने में सहायता कर सकता है और उसे असह्य होने से बचा सकता है। हमें इस तथ्य को पहचान कर कार्य प्रारम्भ करना चाहिए कि जिन तरीकों से स्वतन्त्र राष्ट्र अपने विकास के लिए पूंजी संचित कर सकते हैं, वे उस समय की अपेक्षा, जबकि हम अपने ही देश का निर्माण कर रहे थे, आज कहीं अधिक सीमित हैं।

१९ वीं० शताब्दी में विकासमान अमरीकी अर्थ-व्यवस्था की कुछ महत्वपूर्ण साधन थे :—

१. भारी मुनाफे के साथ बहुत कम वेतन, जिसका अर्थ हुआ लागत और विकास के लिए पर्याप्त बचत।

२. विदेशी ऋण, जिसे हमने प्रथम विश्वयुद्ध-काल में अपने योरोपीय कर्जदारों को अपनी सामान्य सभ्यता की प्रतिरक्षा के समर्थन के लिए उन्हें आवश्यक सैनिक सामग्री बेचकर चुका दिया था।

३. दक्षिणी अमरीका तथा अन्यत्र अर्धविकसित देशों से बहुत कम कीमत पर कच्चा माल।

४. स्वयं हमारे सीमान्तों के अद्वितीय साधन-स्रोत

औद्योगिक दृष्टि से कम विकसित देश, जो आज साम्यवादी घेरे से अपने को दूर रखने का प्रयत्न कर रहे



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, और भी अधिक जल्दी में हैं। उन पर राजनीतिक दबाव बराबर पड़ रहे हैं। उनकी सरकारें भी उच्चतर वेतनों के लिए श्रमिकों व कर्मचारियों की संगठित मांगों से दबी हुई हैं। उनके लिए ऋण या अनुदान के रूप में भारी पैमाने पर बाहरी पूंजी प्राप्त करना कठिन है। उनके पास शोषण के लिए उपनिवेश नहीं है। भारी करों की सहायता से भी वे प्रगति के लिए बढ़ती हुई राजनीतिक मांगों की पूर्ति के लिए आवश्यक पर्याप्त पूंजी-बचत संचित करने में असमर्थ हैं।

औद्योगिक दृष्टि से कम विकसित विश्व की जनता प्रगति के लिए भूखी है। जब प्रगति बहुत पिछड़ जाती है, तब वह साम्यवादी या दूसरे आन्दोलनकारी वंचक नेताओं का शिकार बड़ी आसानी से बन जाती है।

हमारा विश्व निरन्तर छोटा और एक दूसरे से सम्बन्धित होता जा रहा है। समृद्धिशाली बन कर कोई देश एकान्त में नहीं रह सकता, और विश्व की गन्दी बस्तियों के बीच समृद्धि ईर्ष्या उत्पन्न करने वाला ही प्रासाद बन जाता है।

## उदरपूर्ति पर्याप्त नहीं

केवल लोगों का पेट भरना और उन्हें साक्षर बनाना ही साम्यवादियों का विरोधी बनाने के लिए पर्याप्त नहीं है। हमें यह न भूलना चाहिए कि नग्न आर्थिक अन्याय के प्रति जागरूकता प्रायः केवल अभाव की अपेक्षा अधिक विस्फोटक होती है। एशियाई क्रांतियों का नेतृत्व प्रायः भूखे किसान नहीं करते, बल्कि हताश मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी ही करते हैं।

अरबों लोगों की दीनता और हीनता को, जो कदाचित् ही पर्याप्त भोजन पाते हैं, दृढ़ता के साथ कम करना है। परन्तु जिस प्रणाली से प्रगति की जाती है वह भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी प्रगति। जब तक लोग अपने ही सुधार में स्वयं भाग लेने की भावना विकसित नहीं कर लेते और अपने आप को समुदाय के एक अंग के रूप में मानने और उसी सुरक्षित समाज में रहने की आध्यात्मिक भावना पैदा नहीं कर लेते, तब तक आर्थिक-विकास कम अशान्ति पैदा करने की अपेक्षा और भी अधिक अशान्ति पैदा कर सकता है। उन्नति ऊपर से नीचे की ओर नहीं की जा सकती। इसको तो नीचे से ऊपर की ओर उठाना है और वह भी अधिकतर स्वयं अपनी सहायता के लिए कृतसंकल्प जनता के प्रयत्नों द्वारा ही।

---

## भारत में औद्योगिक विकास

(पृष्ठ २४० का शेष)

और अच्छे से अच्छे किस्म का इंजीनियरी तथा रासायनिक सामान तैयार करने लगे हैं। अतः बड़े और छोटे उद्योग आसानी से परस्पर सहयोग कर सकते हैं।

## निर्यात

छोटे कारखानों में अभी तक निर्यात के लिए पर्याप्त माल तैयार नहीं हो रहा है। अतः इन्हें इस दृष्टि से भी संगठित करना होगा और इसके लिए शिल्पिक सहायता देनी होगी तथा माल की बिक्री की व्यवस्था करनी होगी।

छोटे कारखानों का भविष्य उज्ज्वल है। इस्पात तथा अलूमीनियम पर्याप्त मात्रा में मिलने तथा प्लास्टिक और पेट्रोल रसायन उद्योगों के विकास से नयी किस्म का कच्चा माल मिलने के कारण छोटे कारखानों के विकास की गुंजाइश और अधिक बढ़ गई है। छोटे उद्योगों ने नये कला-कौशल का उपयोग किया है। भविष्य में दूर देहाती क्षेत्रों तक छोटे उद्योग पहुँचेंगे और उनका उन्नतिशील खेती के साथ अन्योन्याश्रित सम्बन्ध होगा। बड़े और छोटे उद्योग दोनों ही जब प्रगति के शिखर पर पहुँच जायेंगे तब दोनों मिलकर भारत की अर्थ व्यवस्था को नया रूप दे सकेंगे। सरकार की नीति दोनों प्रकार के उद्योगों के प्रोत्साहन की रही है।

सम्पदा

में

विज्ञापन देकर लाभ उठावें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जल की विशाल सम्पदा का उपयोग

यदि हम एक ऐसा टब (नांद) बनाएं जिसकी तली हमारे देश के कुल क्षेत्रफल के बराबर हो और हम इसमें सम्पूर्ण वर्ष की वर्षा के बराबर जल को उडेल दें, तो टब में ११ मीटर पानी की ऊंचाई हो जायगी। यदि हम इस पानी को मीटरों की माप में न मापें तो हम कह सकते हैं कि भारत में कुल वर्षा का पानी ३०० करोड़ एकड़ फुट के बराबर होता है।

इस सम्पूर्ण वर्षा का क्या उपयोग होता है? इस पानी का एक तिहाई भाग एक दम भाप बन कर उड़ जाता है और इसमें से छटा भाग पानी पृथ्वी सोख लेती है। शेष, जोकि कुल वर्षा का लगभग आधा होता है, नदियों और नालों में बह कर चला जाता है।

इस जल का उचित उपयोग यह है कि इसका उपयोग हमें केवल पीने तथा धोने (हमारे अपने लिए और हमारे पशुओं के लिए) ही नहीं करना चाहिए परन्तु हमारे खेतों तथा कारखानों के लिए भी यह उपलब्ध होना चाहिए। जैसे-जैसे अधिक कारखानों का निर्माण होगा, हमें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि बिजलीघरों तथा कारखानों में पम्पों द्वारा अधिक जल पहुँचाया जावे। एक मीट्रिक टन इस्पात बनाने के लिए, हमें तीन लाख लीटर पानी से भी अधिक की आवश्यकता होती है।

आदर्श परिस्थितियों में हमें लगभग १,३२० मिलियन एकड़ फुट पानी की जरुरत पड़ती है, परन्तु भूमि और जलवायु की प्रकृति के कारण हम इसके केवल तिहाई जल, अर्थात लगभग ४५० मिलियन एकड़ फुट पानी का प्रयोग कर सकते हैं। १९५१ में हम इसके छटे भाग का प्रयोग करते थे और एक अनुमान के अनुसार आशा है कि १९६६ तक हम इसके एक तिहाई भाग से थोड़ा अधिक अर्थात १६० मिलियन तक जल प्रयोग करने लगेंगे।

कुल पानी का १२ प्रतिशत ही प्रयोग में आने की सम्भावना है। कुछ क्षेत्रों में पानी का उपयोग अधिक होता है। कुछ में अपेक्षाकृत कम।

उत्तर में गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों की अपेक्षा दक्षिण में कावेरी और कृष्णा नदियों के पानी का अधिक भाग प्रयुक्त किया जाता है।

## सिर्फ नदियों से ही नहीं

जिस पानी का हम प्रयोग करते हैं, वह सारे का सारा नदियों या झीलों से ही नहीं आता। इसमें से काफी पानी जमीन के नीचे से आता है। कुएं खोद कर हम जमीन के नीचे का पानी निकालते हैं। विभिन्न स्तरों पर हमारे पैरों के नीचे ऐसी भूमि होती है जिसमें छेद होते हैं और जिनसे पानी रिसकर नीचे जमा होता जाता है। वर्षा का आधा पानी, जिसे जमीन सोख लेती है, सबसे ऊपर की सतहों पर रहता है, जिससे हमारे पौधों और पेड़ों के उगने में मदद मिलती है शेष पानी और अधिक नीचे की छेदों वाली सतहों में रिस जाता है। ३० करोड़ एकड़ फुट पानी में से जो नीचे की सतहों में चला जाता है, हम केवल २० प्रतिशत ही विभिन्न प्रकार के कुएं खोद कर फिर से अपने इस्तेमाल के लिए निकालते हैं। नीचे की सतहों में रहने वाले इस पानी को जमीन के नीचे का पानी कहते हैं। यह जानना आवश्यक है कि जमीन के नीचे रहने वाले इस पानी का भंडार प्रत्येक क्षेत्र में मौजूद है। यदि इस पानी के सम्बन्ध में हम अपने ज्ञान को बढ़ाएं तो जिन सालों में वर्षा नहीं होती, उनमें हम इस पानी से मदद ले सकते हैं।

प्राचीन समय में हमारे यहां जमीन के नीचे के पानी को जानने वाले लोग थे जो यह बताते थे कि कुएं कहां खोदे जा सकते हैं। आजकल हमारे पास तकनीकी हैं जो आधुनिक विज्ञान की सहायता से पानी का पता लगाने में हमारी मदद करते हैं। लगभग दस साल पहले जमीन के नीचे के भंडार का वैज्ञानिक रूप से सर्वेक्षण करने का काम शुरू किया गया था। लेकिन यह कार्य अभी सारे देश में नहीं किया जा सका है।

## सम्भावनाएं बढ़ीं, किन्तु

जब हम 'सिंचाई' शब्द का प्रयोग करते हैं तो हमारा अर्थ होता है नदियों और जलागारों से नहरों तथा नालियों द्वारा खेतों तक पानी पहुँचाना। छोटी मोटी सिंचाई का अभिप्राय खेतों की सिंचाई के लिए कुओं, नलकूपों और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालाबों का निर्माण । आयोजन अवधि में हमने सब आकार की—बड़ी, मध्यम और छोटी—कई सिंचाई योजनाएं कार्यान्वित की हैं। परिणामतः 'सिंचाई संबंधी सम्भावनाओं में काफी वृद्धि हुई है। लेकिन इसके अतिरिक्त सब पानी जिसका प्रयोग किया जा सकता है, किसानों द्वारा असल में इस्तेमाल नहीं किया जा रहा। इस तरह पानी की यह अपार सम्पदा व्यर्थ जा रही है।

## कारण

प्रश्न यह है कि सिंचाई की विभिन्न योजनाओं के बावजूद आखिर जल सम्पदा क्यों व्यर्थ जा रही है और इसका प्रयोग क्यों नहीं हो रहा ? इसका एक कारण यह है कि किसान इसका प्रयोग करने के लिए स्वयं ही तैयार नहीं हैं। सभी किसानों को और अधिक पानी की आवश्यकता है, परन्तु यदि कोई किसान वर्षा से खेती करने की जगह नहरों की सिंचाई से खेती करना चाहे तो इस परिवर्तन के लिए उसे नये तरीके सीखने की जरुरत है। फसलें, खेती करने के तरीके, खेतों में काम करने वाले व्यक्ति और बैल, किस प्रकार की और कितनी मात्रा में खाद देनी चाहिए—ये सब बातें प्राचीन विधियों व ज्ञान से भिन्न हैं। नई प्रणाली को सीखने और उसके अनुकूल अपने को ढालने में किसानों को कुछ समय लगता है। यदि सामान्यतः हमारे किसान अधिक शिक्षित होते तो यह परिवर्तन जल्दी और आसानी से हो सकता था।

किन्तु किसानों को ही दोष देना ठीक नहीं है। वह खुद भी सरकारी अधिकारियों पर निर्भर रहते हैं। श्री बालेश्वरनाथ एक वरिष्ठ इन्जीनियर है और उनका आयोजन से सम्बन्ध रहा है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार हमारा किसान बहुत सारी एजेंसियों की दया पर निर्भर रहता है। श्री बालेश्वरनाथ ने पानी से सम्बन्धित विभिन्न सरकारी संगठनों को समन्वित करने की बात पर जोर दिया है। यदि किसी क्षेत्र में बिजली का प्रबन्ध एकीकृत रूप से किया जा सकता है तो उसी क्षेत्र में पानी की व्यवस्था करने वाला कोई एक ही व्यक्ति एवं अधिकारी क्यों नहीं हो सकता।

पानी की व्यवस्था करने वाला यह व्यक्ति या अधिकारी इस बात का ध्यान रखेगा कि किसान को ठीक समय पर पानी मिले। साथ ही यह भी देखेगा कि सिंचाई की जो अतिरिक्त सम्भावना विद्यमान है, वह शीघ्र ही खेतों तक पहुँचाई जाय। इसके अतिरिक्त वह इस बात का भी ध्यान रखेगा कि औद्योगिक उपयोग के लिए जो पानी दिया जाता है उसको भी जहां सम्भव हो, फिर से प्राप्त करके किसान को दिया जाय।

(योजना से)


# स्वस्थ जीवन

सम्पादक : श्री राधाकृष्ण नेवटिया
प्रबन्ध सम्पादक : श्री धर्मचन्द सरावगी

एक प्रति ५० पै० वार्षिक ५) रुपया मात्र

साहित्य के साथ अपने सुन्दर स्वास्थ्य केलिए कविता, कहानी, संस्मरण तथा डायरी और परिषद की गतिविधि पढ़ें। आज ही पांच रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइए। विज्ञापन देकर लाभ उठावें। सहयोगी बन्धु अपनी नवीन कृतियां हमें भेजें।

कार्यालय :—
जैन हाऊस, ८।१ एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-१

महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

# शृङ्गार

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल
सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय : १३।३७, शक्तिनगर, दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

भारतीय एवं व्यावहारिक सांख्यिकी—लेखक—डा० हरिश्चन्द्र शर्मा एवं प्रभुनारायण गुप्त। प्रकाशक साहित्य भवन, हास्पीटल रोड, आगरा। आकार $\frac{१८\times२२}{८}$ पृष्ठ संख्या ४०० मूल्य ६ रु० सजिल्द।

प्रस्तुत पुस्तक दो विद्वान लेखकों के जो विभिन्न कालिजों में अर्थशास्त्र के अध्यापक हैं, प्रयत्न का फल है। सांख्यिकी का विषय आज के समय में जबकि पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण और क्रियान्वयन हो रहा है, बहुत अधिक आवश्यक है। सांख्यिकी वस्तुतः हमारी समस्त योजनाओं का आधार है। यदि इसमें ही कुछ गलतियां रह गईं तो उसके आधार पर बनाई गई और क्रियान्वित की गई योजनाओं की सफलता भी संदिग्ध हो जाती है।

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान लेखकों ने अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की दृष्टि से समस्त पुस्तक को १७ अध्यायों में बांटा है और यह बताने का प्रयत्न किया है कि विभिन्न विषयों की सांख्यिकी कैसे तैयार की जाती है और उनका गणित क्या है। यदि लेखक केवल सैद्धान्तिक दृष्टि छोड़कर वास्तविक अंकों का अधिक प्रयोग करता तो हमारी सम्मति में पुस्तक अधिक उपयोगी हो जाती। यों लेखक ने यह प्रयत्न अवश्य किया है कि वास्तविक अंकों का भी परिचय दे और इस दृष्टि से वित्तीय समंक का प्रकरण अधिक सूचनात्मक और उपयोगी बन गया है।

प्रत्येक प्रकरण के अंत में विद्यार्थियों की दृष्टि से आवश्यक प्रश्न दिये गये हैं। इससे पुस्तक उनके लिये अधिक उपयोगी हो गई है।

फोरन कौलोब्रेशन एण्ड इंडियाज स्लेवरी (अंग्रेजी में)—लेखक श्री ब्रह्मदत्त शर्मा। प्रकाशक विवेक प्रकाशन रामजस स्कूल रोड, नई दिल्ली। मूल्य ५० पैसा नई '१५

प्रस्तुत निबन्ध आज के एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर लिखा गया है कि क्या हमें अपने औद्योगिक विकास में विदेशी कम्पनियों का सहयोग प्राप्त करना भी चाहिए अथवा नहीं? लेखक का यह दृढ़ मत है कि आज की स्थिति में विदेशी कम्पनियों का सहयोग लेना भविष्य के लिए खतरनाक होगा—आर्थिक दृष्टि से भी और राजनीतिक दृष्टि से भी। लेखक ने अपने मन्तव्य को पुराने ऐतिहासिक आधार पर पुष्ट करने का प्रयत्न किया है, जब अंग्रेजों ने अपने आर्थिक विकास के लिए भारतीय उद्योगों को नष्ट प्राय कर दिया था। औपनवैशिक साम्राज्यों की स्थापना का मूल उद्देश्य ही स्वार्थ साधन रहा है। आज भी ब्रिटेन और अमेरिका इस मनोवृत्ति के शिकार हैं। लेखक की भाषा में बल है और भावुकता है। यदि लेखक आज के वातावरण और आज की पृष्ठभूमि में विदेशी शक्तियों के आर्थिक सहयोग और उसके पीछे अंतर्हित स्वार्थ वृत्ति के प्रमाण तथा तथ्य भी दे देता तो निबन्ध की उपयोगिता और भी अधिक बढ़ जाती।

गुरुकुल पत्रिका (शिक्षा विशेषांक)—सम्पादक—श्री भगवत्दत्त वेदालंकार। प्रकाशक—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। इस अंक का मूल्य १)। वार्षिक मूल्य ४) रु०।

प्रस्तुत विशेषांक शिक्षा विषयक है। इसमें शिक्षा के भारतीय दृष्टिकोण पर प्रकाश डालने वाले अनेक लेख दिए गए हैं। श्री उदयवीर शास्त्री, श्री जगदीशचन्द्र, श्री प्रकाशवीर, श्री जयदत्त और श्री धर्मदत्त जी आदि लेखकों के लेख पठनीय हैं।

यह पत्रिका प्रायः संस्कृत में प्रकाशित होती है। अंत में एक हिन्दी-भाग भी रहता है। इसमें भी श्री रामगोपाल मिश्र और श्री रामनाथ वेदालंकार के लेख पाठक को विचार सामग्री पर्याप्त सकने में समर्थ हैं। संस्कृत पत्रिकाओं का स्तर ऊंचा करने के लिए यह भी आवश्यकहै कि आधुनिक विषयों का भी पत्रिका के सामान्य अंकों में समावेश किया जाय। संस्कृत भाषा को केवल प्राचीन साहित्य तक सीमित रखने से उसका क्षेत्र-विस्तार नहीं होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# बीमा निगम : विचारणीय प्रश्न

इन पंक्तियों में हम जीवन बीमा निगम की प्रगति का कुछ परिचय दे चुके हैं । १९५९ में यदि निगम ने ४२९.१७ करोड़ का नया कारोबार किया था तो १९६४-६५ में ७०१.०० करोड़ रुपये का कारोबार किया । किन्तु लोकसभा में सरकारी उद्योगों के सम्बन्ध में जो रिपोर्ट उपस्थित की गई है, उससे प्रतीत होता है कि सारा काम काज पूर्णतः सन्तोषजनक नहीं हो रहा । १९६३-६४ में ७०२.५२ करोड़ रुपये का और उससे पहले के १५ महीनों में ७४५.९६ करोड़ रुपये का कारोबार हुआ था, किन्तु १९६४-६५ में कारोबार ७०१.० करोड़ रुपये का हुआ है । १९६३-६४ में भी ७५० करोड़ रुपये के कारोबार का लक्ष्य रखा गया था, जो ४८ करोड़ रुपये कम पूरा हुआ ।

यदि इतना ही कारोबार होता तो भी आपत्ति की बात नहीं थी किन्तु दुःख की बात यह है कि बीच में पोलिसी भंग (Lapse) का अनुपात बढ़ गया है । १९५८ में यह पोलिसी भंग ५.२ प्रतिशत था जोकि ३१ मार्च १९६३ को समाप्त होने वाले १५ महीने में बढ़कर ८.२ प्रतिशत हो गया । कभी-कभी बीमा ऐजेन्ट अपना कारोबार बढ़ाने के लिए बहुत सारे नकली बीमे करा देते हैं ।

जीवन बीमा निगम की कार्यकुशलता का एक प्रमाण यह होता है कि व्यय और पुनः नवीकरण व्यय का अनुपात कम हो । बीमा व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण से पहले न्यू इंडिया का पुनः नवीकरण व्यय करीब ९.१ प्रतिशत होता था । किन्तु जीवन बीमा निगम का अनुपात १२.४५ प्रतिशत है । लोकसभा में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार यह व्यय बहुत अधिक है । इसे कम करना चाहिए । यह ठीक है कि इस दिशा में पहले से कुछ प्रगति अवश्य हुई है जैसा कि निम्नलिखित अंकों से प्रकट होगा:—

| | |
|---|---|
| १९५५ | १७.३ प्रतिशत |
| १९५६-५७ | १५.८९ ,, |
| १९५८ | १५.४६ ,, |
| १९६२-६३ | १४.१३ ,, |
| १९६३-६४ | १२.४५ ,, |

## प्रीमियम की दरें

लोकसभा की उक्त समिति ने दो एक विचारणीय सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं । पहला प्रश्न यह है कि बीमा निगम को अपने प्रीमियम की दरों में कमी कर देनी चाहिए । इसका मुख्य कारण यह है कि अब बीमादारों की औसत आयु बढ़ गई है । उनकी मृत्यु पहले की अपेक्षा अब देर में होने लगी है । इस कारण जीवन बीमा निगम पर अब कम बोझ पड़ने लगा है और वह प्रीमियम दरों में कमी करके भी काम चला सकता है । प्रीमियम दरों में कमी नये कारोबार को भी ज्यादा बढ़ायेगी ।

प्रीमियम की दरों में कमी का एक दूसरा कारण भी बताया जाता है । आज जो व्यक्ति अपने सुख और इच्छाओं का बलिदान करके भविष्य की आशा में १००) रु० निगम को देता है, कल उसे जो रुपया मिलेगा, उसकी क्रय शक्ति आज की अपेक्षा कम हो जायेगी, क्योंकि मंहगाई लगातार बढ़ रही है । आज से २० साल बाद वह अपेक्षाकृत कम आवश्यकता पूर्ण कर सकेगा ।

## विनियोजन कहां ?

लोकसभा में प्रस्तुत रिपोर्ट में एक दूसरा विचारणीय सुझाव यह दिया गया है कि आजकल बीमा निगम जितना रुपया विनियोजन करता है, उसका करीब ६२ प्रतिशत वह सरकारी या सरकार द्वारा समर्थित सिक्योरिटियों में लगाता है और इनमें अन्य उद्योगों की अपेक्षा कम प्रतिफल मिलता है । बीमादारों के लाभ की दृष्टि से ऐसी जगह रुपया लगाना अधिक उचित होगा, जहां अधिक प्रतिफल मिले ।

उक्त समिति ने निगम के कर्मचारियों की भर्ती और उनके वेतनों पर भी जो विचार प्रकट किए हैं उनपर भी निगम के अधिकारी विचार करेंगे ।

## बैंक का आय व्यय

पंजाब नेशनल बैंक ने अपनी १९६४ की रिपोर्ट में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## कोसी बांध का उद्घाटन

भारत के सहयोग से नेपाल में बनने वाला कोसी बांध २५ अप्रैल को नेपाल के महाराज महेन्द्र द्वारा खोल दिया गया है। इस बांध पर ३३ करोड़ रुपये व्यय हुए हैं, जो भारत-सरकार की भावना और सहयोग का प्रतीक है। इस बांध के लिए आवश्यक भूमि नैपाल सरकार ने भारत सरकार को १९९ साल के पट्टे पर दी है। इस बांध की लम्बाई ३७० फीट है। इस बांध से भारत और नेपाल दोनों को सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। इसी समय भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने पश्चिमी कोसी नहर का भी सूत्रपात किया है।

## अन्न क्षेत्र और मूल्य निर्धारण

भारत सरकार ने यह निश्चय किया है कि सभी राज्यों को अपने-अपने क्षेत्र में गेहूँ के मूल्य निर्धारित करने का अधिकार हो, केन्द्र स्वयं गेहूँ का मूल्य निर्धारित न करे। राज्य स्वयं ही अधिकतम और न्यूनतम मूल्य निर्धारित करेंगे। जब तक गेहूँ के पर्याप्त भंडार न हो जायं गेहूँ क्षेत्रों का विभाजन यथा पूर्व रहे। कृषि पदार्थों के मूल्य निर्धारित करने के लिए जो कमीशन निर्धारित किया गया था, उसने अधिकतम मूल्य निर्धारण के विरुद्ध राय दी है।

अन्न निगम के अध्यक्ष श्री टी० सी० पाई ने प्रत्येक राज्य में अन्न निगम की स्थापना को अनावश्यक बताया है।

आय व्यय का वितरण इस तरह किया है :

| आय | |
|---|---|
| ब्याज और डिस्काउण्ट | ८३ प्रतिशत |
| अन्य आय | २ प्रतिशत |
| कमीशन एक्सचेंज और दलाली | १५ प्रतिशत |
| | १०० |

| व्यय | |
|---|---|
| वेतन आदि | ३६ प्रतिशत |
| हमारे कारोबार के खर्च | ११ प्रतिशत |
| सूनाका | ११ प्रतिशत |
| डिपाजिट व ऋणों पर ब्याज | ४३ प्रतिशत |
| | १०० |

इस अन्न नीति के अनुसार उचित मूल्यों का निर्धारण होगा, जिससे किसान को अनाज उत्पन्न करने का प्रोत्साहन मिले और ग्राहकों को भी अधिक मूल्य न देने पड़ें, इसका भी ख्याल रखा जायगा।

—१९६४ में संसद के दोनों सदनों ने ५४ विधेयक पास किए हैं।

—चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में पैट्रो कैमीकल और खाद उद्योगों के लिए ६७६ करोड़ रुपये के व्यय की व्यवस्था निर्धारित की है।

—दूसरी पंचवर्षीय योजना में भारत सरकार के साधनों से ३४७० करोड़ रुपये की पूंजी का निर्माण हुआ था, जबकि तीसरी योजना में पूंजी निर्माण की सम्भावना ६७२६ करोड़ रुपये की जा रही है।

—अमेरिका के बेचल कार्पोरेशन ने भारत में अमेरिकन सहयोग से खाद के पांच कारखाने खोलने की जो योजना बनायी थी उसकी कुछ शर्तें बदलकर भारत सरकार ने उस योजना को स्वीकृत कर दिया है।

—हल्दिया में आयल रिफाइनरी की स्थापना के लिये अनेक विदेशी कम्पनियों से सहयोग की बात चल रही थी। भारत सरकार क्रूड आयल की उपलब्धि के लिए किसी दीर्घकालीन समझौते के लिए तैयार नहीं थी, इसलिए अनेक विदेशी कम्पनियों ने बात-चीत जारी रखने का इरादा छोड़ दिया है। अब कुवेत से बातचीत चल रही है। भारत सरकार का यह विश्वास है कि जल्दी ही देश में क्रूड आयल अधिक मात्रा में मिलने लगेगा, इसी तरह वह संशोधित तैल पदार्थों का मूल्य भी रूस को दिये जाने वाले मूल्य से अधिक देने को तैयार नहीं है।

—आजकल अमरीका से भारत के लिए प्रतिमास लगभग ७ लाख टन गेहूँ का लदान किया जा रहा है। इस नवें समझौते के अन्तर्गत अभी इतना स्टाक बाकी है कि सितम्बर, १९६५ तक भारत को अमरीका से जहाज आते रहेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

( पृष्ठ २१७ का शेष )

**पूंजी का अभाव:**—पूंजी का अभाव तो प्रायः सभी अर्ध विकसित देशों की आम शिकायत है। पूंजी के अभाव के कारण विकास संबंधी कार्य में रुकावट आ जाती है। देशों को हमेशा विदेशी सहायता पर अवलम्बित होना पड़ता है। भारत भी इस दोष से मुक्त नहीं है। भारत में आधार भूत उद्योगों की स्थापना का श्रेय विदेशों को ही है।

**औद्योगीकरण का अभाव:**—सभी अर्ध विकसित देशों में बड़े पैमाने के उद्योगों का अभाव बना रहता है। इस अभाव के कारण कुल देश की अर्थ व्यवस्था में स्फूर्ति संचार नहीं हो पाता है। उपभोग्य वस्तुओं के उद्योग तो स्थापित हो जाते हैं, किन्तु बढ़ती हुई जन संख्या को रोजगार दिलाने में असमर्थ होते हैं। फलतः देश में बेकारी उग्र रूप धारण कर लेती है। प्रो० महालनोबिस ने दूसरी योजना की रूप रेखा में बताया था कि "देश के सीमित पूंजी गत साधन आधारभूत उद्योगों के विकास में लगाए जाने चाहिएं और उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाने व रोजगार वृद्धि के लिए कुटीर व घरेलू उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए।" बेकारी जैसी समस्या के निवारण तथा राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के उद्देश्य से भिलाई और दुर्गापुर जैसे बृहदाकार आधारभूत उद्योगों को कार्यान्वित करना चाहिए, तभी बढ़ती हुई बेकारी को दूर करने में समर्थ होंगे। औद्योगिक उत्पादन क्षमता के तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह देखा गया है कि भारत की स्थिति अभी भी निम्न स्तर पर है। निम्न लिखित आंकड़े इस कथन को सिद्ध करने में पूर्ण समर्थ हैं :

## तुलनात्मक औद्योगिक उत्पादन क्षमता

| देश | वर्ष | |
|---|---|---|
| | १९५० | १९५५ |
| सोवियत रूस | १०८२ | २०४९ |
| अमेरिका | १९० | २३४ |
| ब्रिटेन | १५३ | १८१ |
| फ्रांस | ९२ | १२५ |
| भारत | १०० | १४० |

(स्रोत :—"सम्पदा" जनवरी १९६४ पृष्ठ ४०)

**पिछड़ी हुई बाजार दशा :**—अर्ध विकसित देशों में बाजार की अपूर्णताएं देखने को मिलती हैं। जैसे :— उत्पादन के साधनों की अगति शीलता, मूल्यों की बेलोचता, बाजार की परिस्थितियों की अज्ञानता, विशिष्टीकरण का अभाव आदि। *इन से साधनों का सदुपयोग नहीं हो पाता है। उत्पादित साधन व्यर्थ पड़े रहते हैं।

इससे उत्पादकों में निराशा की भावना छा जाती है देश में मांग की कमी होने के कारण उत्पादक वर्ग अधिक पूंजी लगाने में संकोच करते हैं। भारत में बाजार की अपूर्णताओं के कारण ही उद्योगों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। उद्योग कर्ताओं ने लाभ की मात्रा को कम देखकर पूंजी का विनियोग बहुत ही कम किया है।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि भारत जैसे देशों की आर्थिक समस्याएं जटिल हैं। श्रम शक्ति के सदुपयोग से ही प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करके देश का आर्थिक स्तर उन्नत बनाया जा सकता है। उपर्युक्त अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि भारत भी एक अर्ध विकसित देश है। पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत भारत की अर्थ व्यवस्था विकासोन्मुख होती जा रही है। श्री यू. एन. ढेबर भाई ने देश में अछूते अपार स्रोतों का दोहन करके राष्ट्रीय आय बढ़ाने के पक्ष में ये विचार व्यक्त किए हैं:—

"यद्यपि भारतीय अर्थ व्यवस्था कमजोर है, किन्तु जन शक्ति व सामग्री दोनों ही क्षेत्रों में अपार अछूते साधन स्रोत छिपे पड़े हैं। राष्ट्र जीवन के सभी क्षेत्रों में विशिष्ट प्रकार की प्रक्रिया का आरंभ कर राष्ट्र नायकों का कर्त्तव्य है कि वे अछूते विपुल स्रोतों को सक्रिय बनादें। देश के देहाती क्षेत्र में अपूर्व अत्यधिक साधन स्रोत अछूते पड़े हैं, जिन्हें यदि सक्रिय बनाया जाय तो वे राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को बहुत अधिक शक्तिशाली बना सकते हैं।"*

---

*भारतीय अर्थ शास्त्र—श्री देशाश्री एवं नाथूरामका से लिया गया।

*देश की आय अरबों रुपए बढ़ सकती है।" श्री यू. एन. ढेबर, "सम्पदा" अक्टूबर ६४।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# गुप्त धन : एक विश्लेषण

श्री मदन लाल शर्मा

तथाकथित गुप्तधन ने आज भारत सरकार, योजनाकारों एवं देश के अर्थशास्त्रियों का ध्यान समान रूप से आकर्षित कर रखा है और हर चिन्तनशील नागरिक इसके उद्घाटन, उन्मूलन व भावी उत्पत्ति को रोकने के लिए प्रयत्नशील है।

## काला धन क्या है ?

विधि सम्मत या विधि विरुद्ध कार्यों के सम्पादन द्वारा अर्जित आय को पूर्णतः या आंशिक रूप से छिपाने से गुप्तधन की उत्पत्ति व विस्तार होता है। अवैधानिक कार्यों (यथा तस्कर व्यापार, नशीली वस्तुओं, परमिटों व लाइसेंसों के क्रय विक्रय व घूसखोरी) द्वारा आय अर्जित करने वाले व्यक्ति अपनी आय के स्रोत नहीं बताना चाहते, क्योंकि राजदण्ड का भय उसके सिर पर सवार रहता है। अतः ऐसे व्यक्ति कर देने के इच्छुक होते हुए भी अपनी आय पर कर नहीं दे पाते। परिणामतः गुप्त धन की उत्पत्ति हो जाती है। विधि सम्मत व्यवसायों द्वारा आय अर्जित करने वाले नागरिक भी कराधिक्य के कारण अपनी आय को छिपाने का प्रयास करते हैं। जब उनकी यह योजना फलीभूत नहीं होती तो वे अपनी आय को कम प्रदर्शित करने की कोशिश करते हैं और उसमें वे सामान्यतया सफल भी हो जाते हैं। इस प्रकार इन व्यक्तियों द्वारा छिपाई गई आय भी गुप्त धन का निर्माण व विस्तार करती है। कुछ व्यक्तियों को अपनी आय छिपाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि वे अभी तक आय कर विभाग की दृष्टि से ओझल हैं। आयकर के अतिरिक्त विक्रय कर की चोरी से भी काले धन का जन्म व विकास होता है। संक्षेप में जिस कर योग्य आय पर कर नहीं लगता वही काला धन बन जाती है।

## काला धन एक नैतिक अपराध है

गुप्त धन का निर्माण व संग्रह नैतिक पतन के अतिरिक्त एक सामाजिक अपराध भी है, क्योंकि कुछ भ्रष्ट लोगों के अनैतिक कार्यों के कारण समाज के ईमानदार व्यक्तियों को बलिदान का बकरा बनना पड़ता है। राष्ट्रीय कोष की पूर्ति के लिए उन्हें अत्यधिक ऊंची दरों पर कर देने पड़ते हैं। यदि अत्यधिक करारोपण के उपरान्त भी वांछित मात्रा में धन का संचय नहीं हो पाता है तो राज्य-घाटे की अर्थव्यवस्था को अपनाने के लिए बाध्य हो जाता है। इस प्रकार से ईमानदार नागरिकों को दोहरा भार वहन करना पड़ता है, अधिक करारोपण व अधिक महंगाई।

नैतिक एवं सामाजिक अपराधों के सृजन के अतिरिक्त काला धन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में भी अनेक विद्रूप पैदा कर देता है चाहे इसका उपयोग किया जाय या नहीं। यदि गुप्तधन का केवल सट्टे के उपभोग्य में प्रयोग हो जाता है तो मूल्य स्तर में असाधारण रूप से वृद्धि हो जाती है। मुनाफाखोरों के अतिरिक्त समाज के सभी वर्गों के लिए यह स्थिति चिन्तनीय बन जाती है। हमारे देश में भी पिछले दिनों गुप्तधन ने अपनी कालिमा से अर्थव्यवस्था को काफी विकृत किया था। प्रकृति के रुष्ट हो जाने पर मूल्य स्तर में वृद्धि होना स्वाभाविक था किन्तु गुप्त धन ने उसमें पर लगा दिए।


प्रेम, सेवा और जागृति का प्रमुख हिन्दी पाक्षिक

**समाज-हितैषी**

जिसमें साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व आर्थिक लेख, कविताएं एवं कहानियों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्भ भी रहते हैं:—

★ सम्पादकीय
★ महिला जगत्
★ शिशु जगत्
★ जनमत
★ राजस्थान का रंगमंच
★ हास्य व्यंग
★ प्रश्नोत्तर
★ भविष्य फल

साधारण एक प्रति २५ पैसे
४ विशेषांकों सहित वार्षिक ६ रुपये

पता—

समाज-हितैषी कार्यालय
बिसाऊ (राजस्थान)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक मात्रा में पूंजी प्राप्त नहीं हो रही है।

## समस्या का समाधान

काले पैसे की कालिमा से आतंकित होकर देश के एक बड़े वर्ग ने बड़े नोटों को अवैधानिक घोषित करने का सरकार के समक्ष सुझाव रखा। उनकी यह मान्यता थी कि बड़े नोटों की समाप्ति के साथ वह दैत्य भी समाप्त हो जाएगा, किन्तु सरकार ने इस प्रस्ताव के औचित्य को स्वीकार नहीं किया और समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित कदम उठाए :

पूर्वकाल में आयकर विभाग के अधिकारी किसी व्यक्ति के निवासस्थान या व्यापारिक प्रतिष्ठान पर छापा मारने के लिए अधिकृत नहीं थे। आयकर विभाग की इस कमजोरी का लोग अनुचित लाभ उठा रहे थे। अतः इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए आयकर विभाग के अधिकारियों को सन्देहात्मक परिस्थितियों में किसी भी व्यक्ति या व्यापारिक प्रतिष्ठान पर छापा मारने व हिसाब की पुस्तकों को जब्त करने के लिए अधिकृत किया गया है। सरकार के इस कदम की व्यापारिक एवं औद्योगिक वर्ग द्वारा आलोचना की गई है।

अधिकारी वर्ग के अधिकारों को व्यापक बनाने के अतिरिक्त सरकार ने लक्ष्य प्राप्ति के लिए जन सहयोग की भी अपेक्षा की है। काले धन की सूचना देने वालों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने अपनी पुरस्कार योजना को अधिक प्रभावशाली बनाया है। इस योजना के अन्तर्गत प्राप्त गुप्त धन का १०% सूचना देने वालों को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया जायगा। पहले यह राशि केवल २॥ प्रतिशत थी। इसका लाभ कितना होगा, यह नहीं कहा जा सकता, क्योंकि चुगलखोर व्यक्ति बदनामी से भी डरता है।

सन् ६५-६६ का बजट प्रस्तुत करते हुए वित्तमंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने यह घोषणा की कि जिन व्यक्तियों ने भूतकाल में काला धन अर्जित किया है, वे यदि ३१ मई ६५ तक उस पैसे की घोषणा कर देते हैं और उसका ६० प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास जमा करवा देते हैं तो उनके विरुद्ध किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं की जायगी। केवल शेष (४० प्रतिशत) धन पर आयकर लिया जायगा। उन्हें आय के स्रोतों तथा तत्सम्बन्धी अन्य सूचना देने के लिए भी बाध्य नहीं किया जायगा। इस योजना का स्वागत किया गया व काले पैसे की समाप्ति के लिये इसे एक व्यावहारिक कदम बताया गया। पर समाचार पत्रों के अवलोकन से विदित होता है कि जितना इस योजना का स्वागत किया गया, उतना इसे अपनाया नहीं गया। अब तक ४००० करोड़, (अनुमानित) रुपये में से केवल ८-१० करोड़ रुपये का उद्घाटन किया गया है। यदि योजना को इसी गति से अपनाया गया तो शायद यह योजना भी पुराने स्वर्ण बांडों की तरह असफलता के ही चरण चूमेगी।

गुप्तधन के उद्घाटन, उन्मूलन व भावी उत्पत्ति को रोकथाम के लिए राज्य द्वारा कुछ प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु जब तक इस प्रवृत्ति के मूल कारणों को दूर नहीं किया जायगा तब तक समस्या का स्थायी समाधान प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। अतः काले धन पर विचार करते समय निम्न प्रस्तावों पर भी विचार किया जाना चाहिए—

## कुछ सुझाव

जब आय का एक बहुत बड़ा भाग राज्य द्वारा कर स्वरूप ले लिया जाता है तो करदाता प्रतिक्रिया स्वरूप अपनी आय को छिपाना प्रारम्भ कर देते हैं। अतः करदाता पर कर का भार न्यूनतम होना चाहिए। कर की मात्रा जितनी ही कम होगी वह आय को छिपाने में उतना ही उदासीन होगा। प्रो० कालडोर के मतानुसार भारत में आय के ४५ प्रतिशत से अधिक कर नहीं लिया जाना चाहिए। हम अभी तक ७० प्रतिशत के लक्ष्य को ही प्राप्त कर सके हैं। अतः स्पष्ट है कि इस दिशा में अभी बहुत कुछ करना शेष है।

मुद्रा प्रसार और गुप्त धन में चोली दामन का सम्बन्ध है। मुद्रा प्रसार और महंगाई गुप्त धन के प्रस्फुटन व विकास के लिए स्वस्थ किन्तु अर्थव्यवस्था के लिए दूषित वातावरण का निर्माण करते हैं। इस विषाक्त वातावरण के मूलोच्छेदन के लिए अधिकतम उत्पादन ही रामबाण का कार्य कर सकता है। अतः पूंजी बाजार की जड़ता की समाप्ति की ओर भी विशेष ध्यान देना होगा।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


पांच वर्षीय करमुक्त इनामी बांड, जो आपने १९६० में खरीदे थे, वे १ अप्रैल, १९६५ के बाद पक गये हैं।

आप उनका कैसे इस्तेमाल करना चाहते हैं? निश्चित रूप से आप यह नहीं चाहेंगे कि आपकी बचतें नष्ट हो जाएं।

# आपके फायदे की बात...!

बेहतर यह होगा कि आप उन्हें १२ वर्षीय रक्षा-पत्रों या १० वर्षीय रक्षा जमा-पत्रों में लगा कर या डाकघर बचत बैंक में जमा करके करमुक्त ब्याज के रूप में एक खासी रकम प्राप्त कर सकते हैं।

आप इन बांडों को राष्ट्रीय रक्षा-पत्रों और रक्षा जमा-पत्रों में ३१ दिसम्बर, १९६५ तक कभी भी लगा सकते हैं। इन पर आपको ब्याज बिगत १ अप्रैल, १९६५ से ही मिलेगा।

इसके अलावा ३० सितम्बर १९६५ तक खरीदे गये राष्ट्रीय रक्षा-पत्रों को आप ३१ दिसम्बर, १९६५ तक नये राष्ट्रीय बचत पत्रों (प्रथम निर्गम) के रूप में बदलवा सकते हैं।

## अपने बाँडों को
## बचत प्रतिभूतियों में
## लगाइए

राष्ट्रीय बचत संगठन

DA 65/3


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# आपके घर की रंगीन सजावट

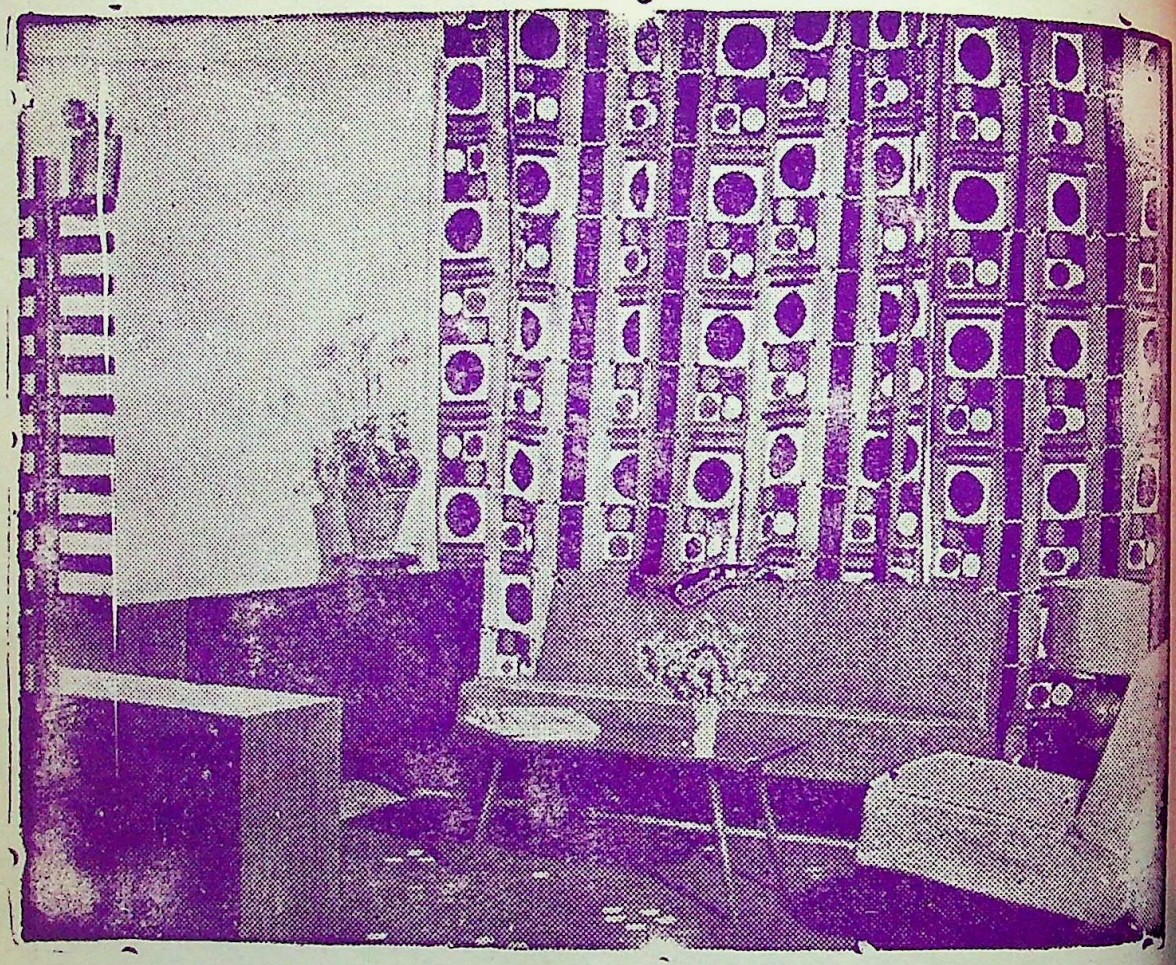

**कन्ट्रास्ट के सौन्दर्य द्वारा**

डी सी एम नवीनतम अत्यन्त रंगीन सज्जा के लिए आधुनिकतम प्रिंट्स प्रस्तुत करते हैं। सुनहरे पीले रंग के साथ आकर्षक कत्थई रंग। काली और सफेद पृष्ठ भूमि पर गहरा फिरोजी रंग।

**भारत भर में लगभग ६७० डी सी एम रिटेल स्टोरों से प्राप्य**

DCM

**सुन्दरता और मजबूती का प्रतीक**

**दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली**

**डी सी एम का एक मजबूत नया सज्जा-वस्त्र**

J W T D. C. M. 3144, H.


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
प्रकाशक प्रकाशन मन्दिर, २५/१२ शक्तिनगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष १४ अंक : ६

जून १९६५

पुस्तकालय
१४/६/

गुरुकुल कांगड़ी

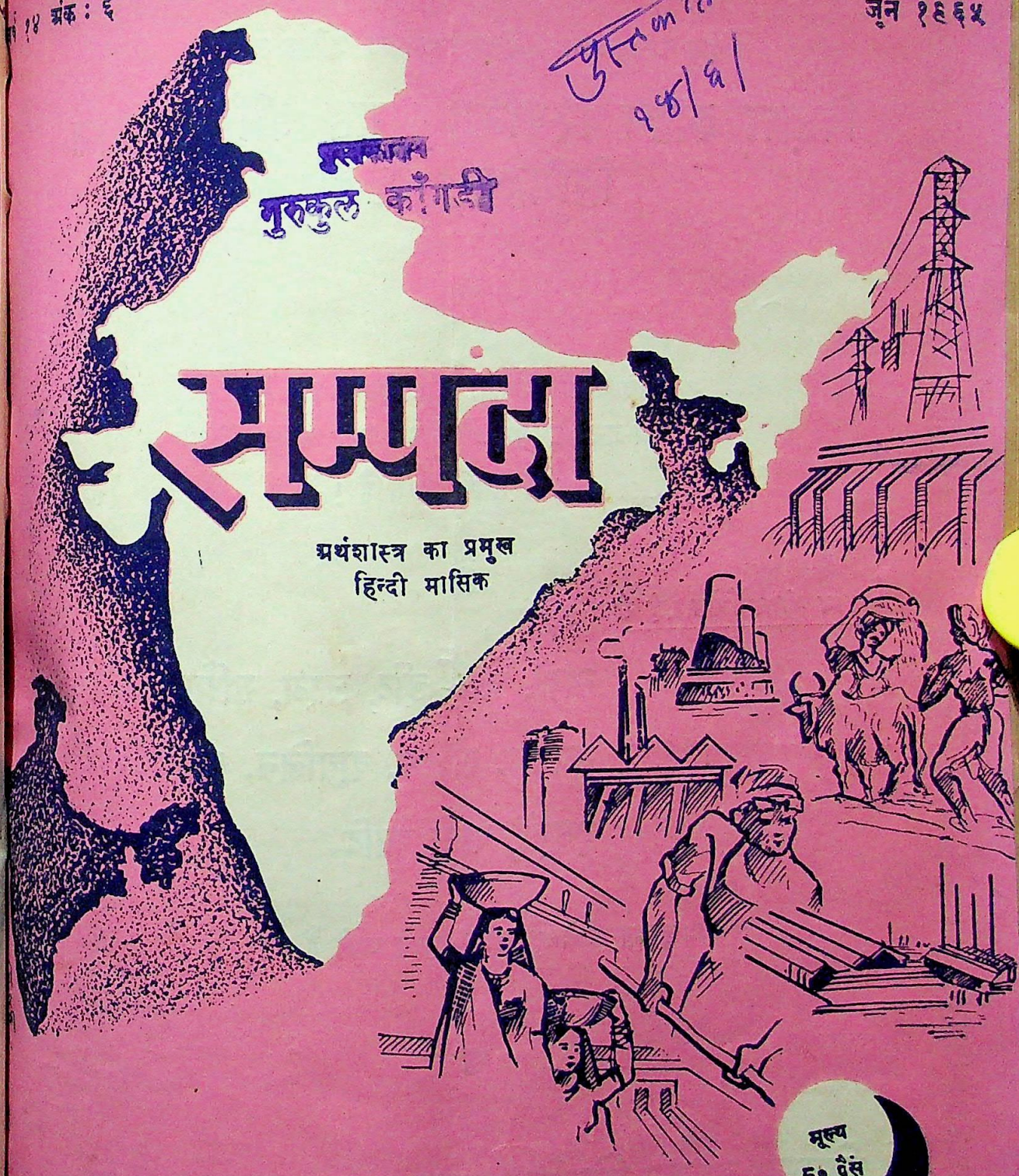

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का प्रमुख
हिन्दी मासिक

मूल्य
८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की प्रतिरक्षा के लिए वस्त्रों का अधिक उत्पादन

# बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

के

अधिकारी, कर्मचारी व कारीगर देश के
जन-जन के लिए हर किस्म का कपड़ा
मिल में तैयार करते हैं !

●

पंजाब की सर्वश्रेष्ठ रुई से

साड़ी, धोती, छींट, लट्ठा, शर्टिंग,
मलमल, कोटिंग, वायलिन, खादी,
दुसूती, चादर आदि

कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं ! !

●

## बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग जनरल मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त ६५ में प्रकाशित हो रहा है

## सम्पदा का चिरप्रतीक्षित विशेषांक

# राजस्थान विकास अंक

संयुक्त सम्पादक

श्री हरिभाऊ उपाध्याय

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

देश की स्वातन्त्र्य प्राप्ति और संयुक्त राजस्थान के निर्माण के बाद राजस्थान की विविध आर्थिक, औद्योगिक, कृषि, यातायात, सिंचाई, खनिज आदि महत्त्वपूर्ण समस्याओं की ओर अर्थ-शास्त्रियों अधिकारियों, व्यापारियों और उद्योगपतियों का सहसा ध्यान गया है। इन वर्षों में राजस्थान में जिस आर्थिक विकास की नींव रक्खी जा रही है, उसे भली भांति समझने और आर्थिक समस्याओं के विविध पहलुओं पर गम्भीर विचार करने की दृष्टि से हम यह बृहद् अंक प्रकाशित कर रहे हैं।

### इस अंक की विशेषताएं

१. राजस्थान की समस्याओं और आधुनिकतम प्रवृत्तियों पर परिचयात्मक तथा विवेचनात्मक लेख

२. राजस्थान के प्रमुख अर्थशास्त्रियों, प्रामाणिक अधिकारियों और विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण निष्पक्ष लेख

३. सुन्दर नयनाभिराम टाइटल और छपाई

४. राजस्थान सम्बन्धी अनेक नक्शे, चित्र, चार्ट और ज्ञातव्य तालिकाएं

यह अंक बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है, इसलिए इसमें दिया गया आपका विज्ञापन राजस्थान की बहुत बड़ी जनता तक अच्छी तरह पहुँच सकेगा।

**अपनी कापी अभी से १.७५ रु० भेजकर सुरक्षित करा लें। कभी पीछे पछताना न पड़े**

**आपको आर्डर पोस्टल सर्टिफिकेट कापी भेज दी जायेगी।**

**—मैनेजर सम्पदा**

**२८।११ शक्तिनगर, दिल्ली-७**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. रूस व भारत का बढ़ता हुआ सहयोग | | २५२ |
| २. सम्पादकीय टिप्पणियां | | २५८ |
| ३. विकासशील देश में मूल्य वृद्धि | कुमारी ललिता रामस्वामी | २६३ |
| ४. कृषि उत्पादन कैसे बढ़े ? | डा० वी० के० आर० वी० राव | २६६ |
| ५. कृषि विकास की बहुमुखी विशाल योजना | | २६८ |
| ६. उद्योगों में विदेशी पूंजी | द्वी ब्रह्मदत्त शर्मा | २६९ |
| ७. पं० नेहरू और कम्यूनिज्म | | २७० |
| ८. शेयर बाजार और जनसाधारण | श्री मंगलौर रंगा पई | २७१ |
| ९. सामुदायिक विआस का महत्व | डा० वी० आर० सेन | २७४ |
| १०. योजना : लक्ष्य और उपलब्धियां—१ | १. श्री मोराई जी देसाई | २७५ |
| ११. ,, ,, —२ | २. श्री सुभाष | २७७ |
| १२. ,, ,, —३ | ३. दीनदयाल उपाध्याय | २७८ |
| १३. पं० नेहरू का समाज दर्शन | श्री के० वी० रघुनाथ रेड्डी | २७९ |
| १४. राज्यों की आर्थिक गतिविधि | | २८० |
| महाराष्ट्र प्रगति के पथ पर | | २८० |
| उत्तरप्रदेश के निर्यात | | २८१ |
| बिहार का कोयला उद्योग | | २८२ |
| १५. बिदेशी अर्थ चर्चा—इजरायल का आर्थिक विकास—इग्लैंड में लोह-उद्योग का राष्ट्रीयकरण—चीन की अर्थव्यवस्था | | २८३ |
| १६. श्रम की स्थिति व समस्याएं | श्री मेलकोटे | २८५ |
| बोनस का विवाद—हड़तालों से भारत में अधिक नुकसान | | २८७ |
| १७. दूध की कमी : कारण व उपाय | | २८८ |
| १८. अर्थवृत्त चयन—सागरों की तलहटी में तेल की खोज—कुवेत एक स्वर्ग—तेल शोधक कारखाने—संसद् का बजट अधिवेशन | | २९१ |
| १९. सर्वोदय पृष्ठ | | २९९ |
| २०. नया सामयिक साहित्य | | ३०१ |
| २१. बैंक बीमा स्तम्भ—बेरोजगारी बीमा—डिपाज़िट बीम—ब्रिटेन में बैंक दर | | २९५ |
| २२. इस मास की आर्थिक घटनाएं— | | २९७ |
| २४. कम्पनियों का विवरण और कुछ देश की कुछ बिदेश की | | ३०१ |


## ग्राहकों से

हमारी इच्छा "सम्पदा" को अधिक उपयोगी बनाने की है। हम विविध विषयों पर अधिक सामग्री दे सके, इसके लिए यह आवश्यक है कि इसकी पृष्ठ संख्या बढ़ाई जाय। परन्तु आज जब छपाई आदि के खर्च बुरी तरह बढ़ रहे हैं, तब क्लेवर वृद्धि करते हुए "सम्पदा" के वार्षिक मूल्य में भी कुछ वृद्धि करनी आवश्यक होगी। आशा है कि "सम्पदा" के वार्षिक मूल्य में केवल ५० पैसे की वृद्धि को आप उचित एवं संगत मानेंगे। यदि हमें इस दृष्टि से आपका प्रोत्साहन मिला तो हम आगामी अगस्त मास से इसका वार्षिक मूल्य बढ़ा कर ९) रु० कर देंगे। और इसी प्रकार प्रति अंक का मूल्य ५ पैसे बढ़कर ८५ पैसा हो जायेगा।

—मैनेजर सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ६
जून : १९६५

# सप्तपदी

## रूस और भारत का आर्थिक सहयोग

श्री ख्रुश्चेव के पतन के समय भारत के बहुत से विश्लेषकों ने यह आशंका प्रकट की थी कि रूस और भारत के घनिष्ठतापूर्ण सम्बन्धों में कुछ शिथिलता आ जायगी। किन्तु सौभाग्यवश यह आशंका असत्य प्रतीत हुई दीखती है। श्री ख्रुश्चेव के उत्तराधिकारियों ने यह अनुभव कर लिया है कि भारत के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाये रखना ही बुद्धिमत्तापूर्ण होगा। श्री लालबहादुर शास्त्री के रूस में भव्य स्वागत ने इसे स्पष्ट भी कर दिया है। इधर कुछ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों ने भी भारत को रूस से अधिक सहायता की आशा के लिए प्रेरित किया है। अमेरिका भारत को बहुत आर्थिक सहायता दे रहा है लेकिन वह पाकिस्तान को भी नाराज नहीं करना चाहता। कच्छ में पाकिस्तान के आक्रमण के समय पर्दे के पीछे क्या हुआ, यह हम नहीं जानते। किन्तु अमेरिका ने पाकिस्तान को पीछे हटने के लिए विवश किया हो या अमरीकी शस्त्रों को भारत के विरुद्ध प्रत्युक्त करने के लिए उकसाया हो, यह हमें मालूम नहीं है। ब्रिटेन ने भी युद्ध विराम के लिए ऐसा प्रस्ताव किया, जिसने भारत और पाकिस्तान को एक ही समान अपराधी की स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। इससे पहले अमरीकन राष्ट्रपति द्वारा श्री शास्त्री की अमरीका यात्रा स्थगित करने और उस पर भारत की प्रतिक्रिया ने भारत और अमरीका के सम्बन्धों में कुछ-न-कुछ कटुता पैदा कर दी थी। ऐसी स्थिति में भारत का रूस की ओर अधिक आशाभरी नजरों से देखना स्वाभाविक ही है। दूसरी ओर रूस भी अपने नेतृत्व की रक्षा और विश्व में अपनी प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक समझता है कि भारत को अपनी ओर वह भी आकृष्ट करे। चीन से उत्पन्न सैद्धान्तिक और भौतिक संघर्ष का भी यही उत्तर है।

रूस ने अमरीका द्वारा इन्कार करने के बाद भारत को बोकारो का कारखाना बनाने में जिस सहयोगपूर्ण वातावरण बनाने का सूत्रपात किया, वह और भी अधिक सुदृढ़ होता जा रहा है। श्री लालबहादुर शास्त्री के रूस में उपस्थित होते समय योजना आयोग के अध्यक्ष श्री अशोक महता की रूस में उपस्थिति और चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के लिए सहयोग की चर्चा में दिये हुए आश्वासन भी दोनों देशों को एक दूसरे के निकट ला रहे हैं। रूस ने आगामी योजना में परस्पर व्यापार और सहायता बढ़ाने का आश्वासन दिया है। सहयोग की इस चर्चा की पृष्ठ-भूमि में ही बहुत सम्भवतः भारत के वित्तमंत्री श्री कृष्णमाचारी रूस जाने वाले हैं। यह आशा की जानी चाहिये कि इस यात्रा के अन्त तक और भी अधिक महत्वपूर्ण घोषणाएँ होंगी, जिनसे दोनों देशों के परस्पर सम्बन्ध और भी अधिक मधुर और घनिष्ठ हो जाएँगे।

दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के वक्तव्य से ज्ञात होता है कि भारत के औद्योगिक और व्यापारिक विकास में रूस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत अधिक सहायता देगा। लोहा, इस्पात, अलोह धातुएँ, खान का तेल तथा बिजली उद्योगों में सहायता के अतिरिक्त भारतीय और रूसी विशेषज्ञ चौथी योजना के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न योजनाओं में परस्पर सहयोग पर विचार करेंगे। इस वक्तव्य में यह भी आशा प्रकट की गई है कि परस्पर व्यापार को आज की अपेक्षा पाँच वर्षों में दुगना कर दिया जायगा। रूस आज भी भारत को सैनिक सामग्री के निर्माण में सहायता देने के लिए वचनबद्ध है। सीमेंट, रासायनिक खाद, तेल शोधन आदि उद्योगों के विकास में भी रूस ने सहायता का वचन दिया है। यह आशा की गई है कि आगामी पांच वर्षों में दोनों देशों का व्यापार २०० करोड़ से बढ़कर ४०० करोड़ रुपये वार्षिक हो जायगा। देखना यह है कि यह सब आश्वासन कैसे पूरे होते हैं और भारतवर्ष रूसी सहायता का मूल्य किस रूप में चुकाता है। रूस को भेजे जाने वाला भारतीय माल यदि परम्परागत ही रहा अर्थात् जूट और चाय आदि का ही रहा तो हमें यह अवश्य देखना होगा कि अन्य देशों के साथ-साथ हमारे व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। इसलिए हमें कपड़े, जूते तथा हल्की इंजीनियरिंग की वस्तुएँ अधिक मात्रा में भेजकर ही अपना आर्थिक संतुलन बनाए रखना चाहिए। आज यदि क्षेत्र के क्रम से देखें तो भारतीय निर्यात रूस को अपेक्षाकृत अन्य देशों से कम होता है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

१९६४ में निर्यात

| | | |
|---|---|---|
| जापान | ६२ | करोड़ रुपया |
| रूस आदि देश | ७५ | ,, ,, |
| अमेरिका | १४२ | ,, ,, |
| ब्रिटेन | १६९ | ,, ,, |
| कामन मार्केट के देश | ६३ | ,, ,, |

१९६२ में तो केवल ३६ करोड़ रुपये का निर्यात रूस को हुआ था इसलिए यह ध्यान में रखना होगा कि रूस को निर्यात बढ़ाने का प्रतिकूल प्रभाव अन्य देशों के निर्यात पर न हो। एक बार खोया हुआ बाजार फिर फिर हाथ में नहीं आता।

यह ठीक है कि दोनों देशों के संयुक्त वक्तव्य में कच्छ पर पाकिस्तान के आक्रमण और भारत की सीमाओं पर किए गये आक्रमणों के सम्बन्ध में रूस का दृष्टिकोण बहुत स्पष्ट नहीं हुआ। बहुत सम्भवतः यह वक्तव्य ही ऐसी कूटनीतिक चर्चा के लिए उपयुक्त न हो। श्री लालबहादुर शास्त्री की रूस यात्रा हमारे राजनैतिक और आर्थिक नीति में कोई नया मोड़ लाएगी या नहीं, यह कहना अभी कठिन है।

कुछ एक क्षेत्रों में, जो रूस की प्रवृत्तियों में सन्देह किया करते हैं, यह आशंका उठाई गई है कि रूस जितने अधिक आश्वासन दे रहा है वह उन्हें पूर्ण नहीं कर सकेगा। उदाहरण के लिए रूस ने कम्यूनिस्ट चीन को सहयोग के लिए २९१ उद्योगों में सहयोग का वचन दिया था, किन्तु १९६० तक वस्तुतः उनमें से १३१ पर अमल हो रहा था। इसी तरह भारत को दूसरी और तीसरी योजना में ३८५ करोड़ रुपये की सहायता का रूस ने वचन दिया था। इसमें बोकारों के लिए १०० करोड़ रुपये की सहायता सम्मिलित नहीं है, जो अब चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए स्थगित कर दी गई है। इस ३८५ करोड़ रुपये में भी हम सितम्बर १९६४ तक केवल २१३ करोड़ रुपये का उपयोग कर सके हैं। हमें इन आशंकाओं का कोई विशेष आधार नहीं दीखता, किन्तु इसके लिए भी यह आवश्यक है कि हम एक साथ बहुसंख्यक योजनाएं बनाने की अपेक्षा कुछ निश्चित योजनाओं पर ही अमल करें ताकि वह साथ-साथ पूरी होती जाएं। हमें यह भी आशा करनी चाहिए कि रूस की सहायता का हम सदुपयोग करेंगे।

## जहाजी उद्योग की समस्याएं

नेशनल शिपिंग बोर्ड के अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह और श्रीमती सुमति मोरारजी ने सरकार का ध्यान जहाज उद्योग की प्रमुख समस्याओं की ओर खींचा है। जहाज निर्माण यद्यपि तीसरी योजना के लक्ष्य को पूर्ण कर चुका है और चतुर्थ योजना के मध्य अवधि में २५ लाख टन तक पहुँच जायगा, फिर भी हमें यह आशा नहीं करनी चाहिए कि हम अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकेंगे। आज भी विश्व की जहाजरानी में भारतीय जहाजों का भाग सिर्फ १ प्रतिशत है। हर एक देश को यह अधिकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त है कि वह अपने निर्यात का ५० प्रतिशत अपने जहाजों में भेजे। किन्तु भारत अपने निर्यात का केवल १५ प्रतिशत अपने जहाजों से भेजता है। पिछले १७ वर्षों में भारत ने विशाखापट्टनम के सिवाय, जिसका भी केवल विस्तार किया गया है, कोई नया शिपयार्ड नहीं बनाया है। कोचीन के शिपयार्ड की स्थापना का प्रस्ताव अनेक वर्षों से चल रहा है। आज की स्थिति में विदेशी मुद्रा संकट कम नहीं है। इसलिए नये जहाज बनाने की अपेक्षा जहाज उद्योग पुराने जहाज ही लेने पर संतोष करना चाहता है। लेकिन उसके लिए भी सरकार पूरा सहयोग नहीं दे रही। ४० प्रतिशत छूट की बजाय अब जहाजी कम्पनियों को सरकार २० प्रतिशत ही छूट देना चाहती है। जापान, जर्मनी, फ्रांस और इटली की सरकारें अपने जहाजी उद्योगों को काफी सहायता दे रही हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि जापान का स्थान विश्व के जहाज उद्योग में २५ प्रतिशत से बढ़कर ३८.७ प्रतिशत हो गया है। पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने आगामी तीन वर्षों तक १२ करोड़ डालर प्रतिवर्ष सहायता देने का निश्चय किया है, जिससे जहाज निर्माता विदेशी मांग को पूरा करने में समर्थ हो सकें। ऐसी स्थिति में यदि जहाज उद्योग भारत सरकार से अधिक की आशा करे तो उचित ही होगा। इसीलिए नेशनल शिपिंग बोर्ड के अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह ने सरकार से प्रार्थना की है कि जहाजी उद्योग को अपने विकास के लिए फिर ४० प्रतिशत की छूट मिले।

जहाजी उद्योग की एक दूसरी मांग की ओर भी हम सरकार का ध्यान खींचना चाहते हैं। रेलवे ने बढ़ती हुई महंगाई और बढ़ते हुए श्रमिकों और कर्मचारियों के अतिरिक्त व्यय की पूर्ति के लिए किरायों और भाड़ों में कुछ वृद्धि की है, तो यही अधिकार जहाजी उद्योग को भी मिलना चाहिए ताकि उसको अपना कार्य और व्यापार बढ़ाने में असुविधा न हो।

श्रीमती सुमति मुरारजी ने अपने भाषण में कहा है कि तटवर्ती जहाजरानी की समस्या नई नहीं है। सरकार से कई बार आवेदन किया गया है कि एक स्थायी टैरिफ कमीशन बना दिया जाय जो कि हमारी समस्याओं का निरन्तर अध्ययन करे और उचित समाधान का परामर्श दिया करे। सरकार ने समय-समय पर दो-तीन अस्थायी कमीशन अवश्य नियत किए हैं किन्तु उनमें से एक की भी महत्त्वपूर्ण सिफारिशें सरकार ने स्वीकार नहीं कीं। भाड़े की दर में थोड़ी-सी वृद्धि को भी सरकार ने नहीं माना, जबकि विभिन्न पदार्थों पर अनेक कर लगाने और मूल्य में वृद्धि तथा कुछ बन्दरगाहों पर अनेक सेवा व्यय बढ़ने के कारण खर्च लगातार बढ़ते गये हैं। तटवर्ती जहाजों की मरम्मत का खर्च यहां विदेशों से दुगुना होता है जबकि हमें कानूनन यह मरम्मत अपने देश में ही करानी पड़ती है।" क्या सरकार इन दोनों प्रश्नों पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेगी ?

## बोनस अध्यादेश— अलोकतन्त्री परम्परा

पाठक अन्यत्र बोनस की समस्या के सम्बन्ध में कुछ विचार पढ़ेंगे, किन्तु इधर भारत सरकार ने अपनी द्विविधा समाप्त कर दी है और वह जो विधेयक प्रस्तुत करना चाहती थी, उसको संसद की बहस से बचाते हुए उसने एक अध्यादेश निकाल दिया है। इस अध्यादेश के अनुसार वेतन का ४ प्रतिशत और मुनाफे का ६० प्रतिशत जो भी अधिक हो, बोनस के रूप में देना पड़ेगा। अध्यादेश ४०) न्यूनतम बोनस होगा। बोनस कमीशन की सिफारिशों में कुछ परिवर्तन प्रस्तुत करता है। मुख्य परिवर्तन निम्नलिखित हैं:—

यह अध्यादेश १९६२ से लागू न होकर १९६४ से लागू होगा। कुल मुनाफा सभी देय कर और विकास छूट काटकर—गिना जायगा। यह अध्यादेश सब कारखानों पर तथा उन प्रतिष्ठानों पर जिनमें २० से अधिक कर्मचारी काम करते हैं, लागू होगा। जिन सरकारी कारखानों को २० प्रतिशत भी निजी उद्योग से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, उन पर भी यह बोनस अध्यादेश लागू होगा, किन्तु रिजर्व बैंक, जीवन बीमा निगम, औद्योगिक विकास बैंक यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया तथा अन्य वित्तीय निगमों पर लागू नहीं होगा। राज्यों के वित्त निगमों, नाविकों, बन्दरगाहों पर माल उतारने लादने वाले मजदूरों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा संस्थाओं, अस्पतालों तथा समाज कल्याण संस्थाओं, चैम्बर आफ कामर्स तथा ठेकेदारों (भवन निर्माण) आदि के कर्मचारियों पर यह अध्यादेश



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लागू नहीं होगा। शुद्ध लाभ के विवादास्पद प्रश्न पर हास निधि, प्रत्यक्ष कर, पूंजी पर लाभ और ब्याज, कार्यशील साझेदारों और मालिकों के वेतन घटाकर गिनने का निश्चय किया है। प्राथमिकता प्राप्त शेयरों पर ८.५ प्रतिशत और साधारण सुरक्षित निधि पर ६ प्रतिशत ब्याज दर माना जायगा। बैंकों के लिए सुरक्षित निधि की छूट नहीं होगी।

सहकारी संस्थाओं को कुछ अतिरिक्त छूट भी दी गई है। विदेशी कम्पनियों को ६० प्रतिशत की जगह अपने लाभ का ६७ प्रतिशत बांटना होगा। अधिकतम बोनस की मर्यादा भी अध्यादेश में नियत कर दी गई है। कुल वेतन के २० प्रतिशत से अधिक बोनस नहीं दिया जायगा। वेतन में मंहगाई भत्ता भी शामिल किया जायगा, पर दूसरे भत्ते नहीं। अध्यादेश के अनुसार १६०० रु० तक वेतन पाने वाले बोनस पाने के अधिकारी होंगे, किन्तु ७५० रु० से अधिक वेतन पाने वालों को ७५० वेतन मानकर ही बोनस दिया जायगा। वर्ष में ३० दिन से कम काम करने वाले को बोनस नहीं दिया जायगा।

हमने ऊपर की पंक्तियों में बोनस अध्यादेश का सारांश दे दिया है। जनवरी १९६४ में बोनस कमीशन ने अपनी सिफारिशें दे दी थीं। १२ सितम्बर को सरकार ने अपने निश्चयों की घोषणा भी कर दी थी, किन्तु मिल मालिकों व श्रमिकों के प्रतिनिधियों में कोई समझौता न होने के कारण सरकार १५ मई तक भी कोई बिल संसद में प्रस्तुत नहीं कर सकी। अब जब संसद का अधिवेशन समाप्त हुए १५ दिन ही बीते हैं, सरकार ने अध्यादेश जारी कर दिया। स्वभावतः अधिकांश श्रमिक नेताओं ने इस अध्यादेश का स्वागत किया है और उद्योगपतियों ने इसे चिन्तनीय बताया है। हम इस अध्यादेश के पक्ष विपक्ष में कुछ नहीं कहना चाहते, किन्तु सरकार की नीति की आलोचना अवश्य करना चाहते हैं। अध्यादेश आकस्मिक गम्भीर परिस्थिति के पैदा होने पर ही जारी किया जाता है। इन १५ दिनों में कोई नई परिस्थिति उत्पन्न हो गई हो तो हम नहीं जानते। अध्यादेश निकाल कर किसी विचार को एक ऐसे निश्चय का रूप दे दिया जाता है, जिसमें अधिक परिवर्तन और विचार की गुंजाइश नहीं रहती। यह नीति अपनाने का अर्थ यह लिया जा सकता है, कि सरकार संसद में आलोचना से बचना चाहती है। लोकतन्त्र में ऐसे अवसर कम ही आने चाहिए। बोनस का प्रश्न अचानक नहीं आया। इस पर महीनों विचार विनिमय हुआ है। संसद का बजट अधिवेशन ही ३ महीने तक होता रहा। उसमें विधेयक पेश न करके १५ दिन बाद ही अध्यादेश निकाल देना लोकतंत्रीय परम्परा नहीं है।

## भारत को अमरीकी सहायता कम

रिजर्व बैंक बुलेटिन के एक अध्ययन से मालूम होता है कि प्रति व्यक्ति अमेरिकी डालर की सहायता अन्य देशों की अपेक्षा भारत को कम मिली है। अमेरिका पाकिस्तान और भारत दोनों का मित्र बनने का दावा करता है, किन्तु भारत को पाकिस्तान की अपेक्षा प्रति व्यक्ति सहायता कम मिली। १९६० में पाकिस्तान को प्रति व्यक्ति सहायता २.७ डालर दी गई, जो १९६३ में बढ़कर ५.१ डालर हो गई, किन्तु इसके विपरीत भारत को १९६० में १.८ डालर की प्रति व्यक्ति सहायता मिली थी, जो १९६३ में बढ़कर सिर्फ २.१ डालर हो गई। इसका अर्थ यह है कि पाकिस्तान को प्रति व्यक्ति डालर २॥ गुना सहायता दी गई। यह ठीक है कि भारत की जनसंख्या पाकिस्तान से ५ गुना है। इसलिए सहायता की कुल राशि पाकिस्तान से कम नहीं हुई किन्तु जनसंख्या ही किसी देश की आवश्यकता को सिद्ध करती है। इस दृष्टि से भारत को सहायता कम ही मिली है।

## अमेरिका व खाद के कारखाने

अमेरिका के बेचटैल कार्पोरेशन के साथ भारत में खाद के जो पांच बड़े कारखाने खोलने की बातचीत चल रही थी, वह बिना किसी परिणाम पर पहुँचे असफल हो गयी है। खाद्य-कृषि मंत्रालय ने अपनी योजनाओं में यह कल्पना की थी कि १० लाख टन खाद तो इन कारखानों से तैयार होगा। बेचटैल कार्पोरेशन से काफी लम्बे समय तक बातचीत चली। शुरू-शुरू में कुछ आशा की किरण दिखायी दी। उक्त कार्पोरेशन ने ४२ लाख रुपया तो केवल परामर्श के लिए मांगा था। उक्त कार्पोरेशन को यह आशा थी कि मद्रास में तेल की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिफाइनरी खोलने से उक्त कार्पोरेशन को खाद के उत्पादन में भी सहयोग मिलेगा। किन्तु भारत सरकार ने मद्रास की रिफाइनरी के लिए नेशनल इरानियन तथा पान अमेरिकन से बातचीत कर ली। इससे कार्पोरेशन की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। इसी तरह कच्चे माल विशेषकर नफ्था के आयात पर भी दोनों में कोई समझौता नहीं हो सका। फिर इस कार्पोरेशन ने मशीनरी तथा दूसरे सामान की कीमतें भी बहुत ऊंची बतायी थीं। इस असफलता के कारण खाद्य मंत्रालय अवश्य चिंतित हो गया है। अब वह अन्य देशों से खाद-उत्पादन के बारे में किसी योजना पर विचार करेगा।

आज से दो वर्ष पूर्व अमेरिका बोकारो के कारखाने के बारे में भी ऐसा ही अवांछनीय रुख पकड़ चुका है। उसकी शर्तें सदा कठोर होती हैं। लाचार होकर अमेरिका के प्रतिस्पर्धी रूस से बोकारो का कारखाना लगाने पर अपनी स्वीकृति ली गई है। ऐसी बातों से अमेरिका और भारत के सम्बन्धों में कुछ कटुता आना स्वाभाविक है। एक ओर रूस जहां सहयोग का हाथ निरन्तर बढ़ा रहा है, वहां अमेरिका किसी न किसी रूप में शिथिल करता जा रहा है। कच्छ और पाकिस्तान के सम्बन्ध में भी अमेरिका का रुख प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। काश्मीर के प्रश्न पर तो उसकी नीति सदा से भारत के प्रतिकूल रही है।

## भारत पर विदेशी ऋणों का बोझ

मार्च १९६५ के अन्त तक भारत सरकार ने विदेशों से जो ऋण और पेशगी लिए थे, उनकी मात्रा ३४६७.३० करोड़ रुपये होती है। अमेरिका का भाग सबसे बड़ा है और उसके बाद क्रमशः रूस और जर्मनी का। इन तीनों देशों के ऋणों की मात्रा क्रमशः ११३६.१४, ४८४.३१ और ४०५.०८ करोड़ रुपया है। इस राशि में अमेरिका की पी० एल० ४८० और पी० एल० ६६५ और विश्व मुद्रा कोष, कुवैत से लिया गया ३४.१९ करोड़ रुपये का ऋण शामिल नहीं है। विभिन्न राज्यों ने जो अनुदान दिये हैं, वे भी इसमें सम्मिलित नहीं है। फिर भी इतनी विपुल राशि भारत ने ले रखी है। ऋण लेना बहुत आसान है किन्तु उन्हें चुकाना आगामी कुछ वर्षों में जनता पर भारी बोझ हो जायगा। अरबों रुपया तो ब्याज के रुप में ही प्रतिवर्ष देना पड़ेगा। देखना यह है कि इन ऋणों से चालू किये गये उद्योग व अन्य कार्य हमें कितना प्रतिफल देते हैं।

## अन्न संकट और कुछ सुझाव

१९४२ में जब सर स्टैफर्ड क्रिप्स भारत को राजनैतिक स्वराज्य देने के प्रश्न पर विचार करने दिल्ली आये थे। तब भारत में अन्न-संकट चरम सीमा पर था। बंगाल का दुर्भिक्ष ३५ लाख भारतीयों की बलि ले चुका था। तब महात्मा गांधी ने भारतीयों को यह सुझाव दिया था कि विदेशों से अन्न का आयात करने की अपेक्षा वह अपने स्वभाव में परिवर्तन करें—कुछ भूख रखकर खाया करें; यथा सम्भव प्रत्येक घर में कुछ साग-सब्जी की खेती की जाय; बड़ी कोठियों में घास के मैदान अनाज के खेतों में बदले जाँय; दिन में दो तीन केले खाकर भी रहा जा सकता है; आम की गुठलियां और मूंगफली का आटा गेहूँ के बजाय प्रयोग में लाया जा सकता है, आदि २। आज भी अन्न संकट गम्भीर रूप से व्याप्त है। यद्यपि हम भारी मात्रा में विदेशों से अन्न मंगवाकर उसकी गम्भीरता को अनुभव नहीं कर पा रहे। आवश्यकता यह है कि जहाँ हम प्रति एकड़ अन्न-उत्पादन की क्षमता को बढ़ावें वहाँ अपने स्वभाव में भी कुछ परिवर्तन करें तथा अन्न की खपत को यथा सम्भव कम करें। एक कृषि विशेषज्ञ ने कुछ सुझाव दिए हैं—हम मिठाइयों का प्रयोग कम करें ताकि चीनी की मांग कम हो और गन्ने की बजाय अनाज की खेती भी अधिक होने लगे। ताड खजूर चीनी का प्रयोग अधिक करें। भारत में ५ करोड़ ताड-खजूर के प्रौढ़ वृक्ष हैं, जिनसे सरलता से २-२॥ करोड़ मन गुड़ मिल सकता है। चावल को १५ प्रतिशत पालिश करने से २ करोड़ १२ लाख टन की हानि होती है। यदि पालिश की मात्रा कम की जा सके तो २०-२५ लाख टन चावल बचाया जा सकता है जो करीब २ विदेशी चावल के आयात की आवश्यकता को कम कर देगा। तम्बाखू की पैदावार पर नियंत्रण किया जा सकता है ताकि अनाज की पैदावार बढ़ाई जा सके। इन सुझावों पर अमल करने से अन्न-संकट का कुछ तो समाधान हो सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## अनाज के लिए सभी राज्य स्वावलम्बी हों

भारत सरकार ने सब राज्यों को यह कह दिया है कि केन्द्र उन्हें दिये जाने वाले अनाज की मात्रा कम कर देगा। श्री शास्त्रीजी ने मुख्य मंत्रियों से वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय संकट की चर्चा करते हुए कहा है कि न जाने कब कठिन स्थिति उत्पन्न हो जाय। कच्छ का प्रश्न अभी तक हल नहीं हो पा रहा है, इसलिए हमें विदेशी अन्न और विदेशी खाद पर बहुत अधिक निर्भर नहीं करना चाहिए। हम बहुत समय तक विदेशी खाद पर निर्भर भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें अपने देश में ही खाद का निर्माण अधिक से अधिक करना चाहिए। राज्यों को आत्म निर्भर बनने का प्रयत्न करना चाहिए। केन्द्र के लिए यह कठिन होगा कि वह प्रतिमास ६ लाख टन अनाज राज्यों को दिया करे। अब सम्भवतः ४ लाख २० हजार टन ही अनाज राज्यों में वितरित किया जाया करेगा।

इसमें संदेह नहीं कि अनाज की दृष्टि से आत्म निर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक जनता और सरकार का पारस्परिक सहयोग अभी तक सन्तोषजनक रूप से नहीं हो सका है। यह सहयोग किस तरह प्राप्त किया जाय, यही आज की समस्या है। अनाज की खेती की ओर किसानों का ध्यान आकर्षित करने के लिए क्या यह जरूरी नहीं है कि व्यापारिक फसलों को कुछ सीमित किया जाय।

## भीषण खान दुर्घटना

धोरी (बिहार) की कोयला खान में एक भीषण दुर्घटना हो जाने के कारण २५० से भी अधिक खनिक मर गये हैं। गैस के नकाब लगाये हुए ३० स्वयं सेवक दल लाशों और आहतों को उठाते रहे। इतनी भीषण खान दुर्घटना भारत में पहले कभी नहीं हुई। दुर्घटना की जांच के लिए सरकार ने एक न्यायाधीश की नियुक्ति की है। खान के प्रबन्धकों को पीड़ित परिवारों की सहायता के लिए २० लाख रुपया देना पड़ेगा और जीवन बीमा निगम को सात लाख।

अदालती जांच कमीशन अपनी क्या रिपोर्ट देगा, यह हम नहीं जानते किन्तु यह सच है कि उस खान में श्रमिकों के एक प्रबल संगठन ने कुछ सप्ताहों से हड़ताल की हुई थी और उन्हें भारत सरकार की आज्ञा पर बाधित होकर काम शुरू करना पड़ा था। खान में सुरक्षा की पूरी व्यवस्था थी कि नहीं यह भी अदालती जांच में देखा जायगा। हमें आशा करनी चाहिए कि जांच यथा शीघ्र होगी और यदि कोई दोषी पाया गया तो उसे उचित दंड भी मिलेगा। राष्ट्रीय सम्पत्ति के साथ यह विनाशकारी कृत्य सहन नहीं किए जाने चाहिए। पिछले १० वर्षों में १० खान दुर्घटनाएं हो चुकी हैं जिनमें करीब ७०० व्यक्ति मर गये। यह ठीक है कि खानों में और खासकर गहरी खानों में दुर्घटनाओं की सम्भावनायें अधिक होती हैं, किन्तु इसी कारण अधिक सुरक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है।

## उद्योग क्षेत्र में असंगति

'इकोनोमिक टाइम्स' के सम्वाददाता के अनुसार १९६४-६५ में उद्योगों को गतवर्ष की अपेक्षा अधिक लाभ हुआ है। १०६ बड़ी और मध्यम आकार की कम्पनियों के घोषित आय-व्यय विवरण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है। यद्यपि डिवीडेन्ड लाभ के अनुपात में नहीं बढ़े, तथापि उनकी स्थिति में सुधार अवश्य हुआ है। १०६ कम्पनियों का कर देने से पूर्व लाभ ५०.८ करोड़ रुपये से बढ़कर ६०.४ करोड़ रुपया हो गया है अर्थात् १९.० प्रतिशत वृद्धि हुई है। कर चुकाने के बाद भी लाभ गत वर्ष २३.३ करोड़ रु० से बढ़कर २९.७ करोड़ रुपये हो गया है। इन कम्पनियों ने १९६३-६४ में १५.९ करोड़ रुपया डिवीडेण्ड बांटा था, किन्तु इस वर्ष वितरित डिवीडेन्ड की मात्रा १७.६ करोड़ रुपये हो गयी। कुल १७० कम्पनियों में से ८८ कम्पनियों ने डिवीडेन्ड की दर वही रखी है। ६० कम्पनियों ने डिवीडेन्ड की दर बढ़ा दी है। सिर्फ २२ कम्पनियों ने अपने डिवीडेन्ड की दर को कम किया है। सरकार को कर देने में भी वृद्धि हुई है। १९६३-६४ में २७.५ करोड़ रुपया कर दिया गया था, जबकि इस वर्ष ३०.७ करोड़ रुपया कर दिया गया है। उपर्युक्त १०६ कम्पनियों की कुल पूंजी भी इस वर्ष ७.१ प्रतिशत बढ़कर ५४९.२ करोड़ रुपये हो गयी है। परन्तु दूसरी ओर शेयरों के मूल्य गिरते जा रहे हैं पूंजी बाजार में कुछ तंगी आ गई है और दूसरी ओर उद्योगों का लाभ बढ़ रहा है। परस्पर इस असंगति को दूर करने की आवश्यकता है।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्य वृद्धि

कुमारी ललिता रामस्वामी

प्रख्यात अमरीकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर जान के. गालब्रेथ ने हाल ही में लिखे एक लेख 'ए थ्योरी आफ प्राइस कन्ट्रोल' में बताया है कि हमारे युग में मंदी की अपेक्षा मुद्रास्फीति असली आर्थिक खतरा है । विकास के नियोजन के अन्तर्गत मुद्रास्फीति की अनिवार्यता एक मान्य तथ्य है। हालांकि एक विकासशील अर्थव्यवस्था में जिस तरह की मुद्रास्फीति होती है, वह विकसित अर्थव्यवस्था में उत्पन्न होने वाली मुद्रास्फीति से अलग होती है। इसका कारण विकासशील और विकसित अर्थव्यवस्थाओं के बीच कुछ रचनात्मक अन्तर होते हैं ।

सामान्यतया, मुद्रास्फीति का दबाव, अर्थव्यवस्था के समस्त पदार्थ क्षेत्र में कुल अत्यधिक मांग के जरिये काफी गहरा अनुभव किया जाता है । मांग के इस दबाव के तीन मुख्य कारण हैं : (१) परिमाणों और मांग तथा पूर्ति की दरों के बीच रचनासंबंधी असन्तुलन अर्थात् पूंजी रचना की बढ़ती हुई दर से कुछ क्षेत्रों में तदनुसार पूर्ति बढ़े बिना ही मांग का बढ़ जाना, जिसके फलस्वरूप उन पदार्थों की कीमतें और लाभ की मात्रा बढ़ जाती है। इससे कामगारों के मजदूरी के दावे बढ़ जाते हैं जो अन्य क्षेत्रों में भी फैल जाते हैं, जिससे वेतन कीमतों की प्रतिक्रिया बढ़ती है। और आम मुद्रास्फीति की स्थिति पैदा हो जाती है। (२) पूर्ति और मांग के वितरण के बीच स्थानीय असन्तुलनों का पैदा होना अर्थात् औद्योगीकरण से आम तौर पर शहरीकरण के लिये जोरों से मांग शुरू हो जाती है। बढ़ते हुये कार्य की गति, औद्योगिक तंत्र, उसके सेवा-सम्बन्धी प्रबन्ध और उनकी हाल ही में बढ़ी हुई क्रय शक्ति से मांग में एक स्थानीय स्थानान्तरण पैदा हो जाता है, जबकि स्थानीय पूर्ति इस स्थिति के अनुरूप नहीं हो पाती है। इसके अलावा अतिरिक्त स्थानीय मांग और उपलब्ध पूर्ति के बीच अन्तर रहने के फलस्वरूप अर्थ-व्यवस्था में मुद्रास्फीति के तत्त्व पैदा हो जाते हैं। (३) आय सम्बन्धी वर्तमान असमानताओं के कारण खपत प्रतिमानों में सामाजिक असन्तुलन पैदा होना अर्थात् कम आय वर्ग के लोगों का अपने परम्परागत, निर्वाह प्रतिमानों से ऊपर उठने के लिये संघर्ष करना और इसी तरह उच्चतर आय वर्गों का, जो अधिकांशतया विकसित पाश्चात्य प्रतिमानों के प्रदर्शनात्मक प्रभावों से प्रभावित होते है, अपने स्तर को ऊंचा उठाने का इच्छुक होना भी एक कारण है। इससे मांग बढ़ जाती है और जिससे अर्थव्यवस्था में बचतों पर भी प्रभाव पड़ता है ।

भारत की मूल्य स्थिति पर बोलते हुये रिजर्व बैंक आफ इंडिया के भूतपूर्व गवर्नर श्री एच. वी. आर. आयंगर ने कहा है : "मेरे ख्याल से नीति की बुनियादी गलती इस तथ्य को दुर्लक्ष्य करना है कि कृषि क्षेत्र की अचल स्थिति के दौरान सुरक्षा सम्बन्धी प्रयत्न तथा लम्बी चौड़ी योजनाओं, दोनों, को साकार करने की इच्छा के फलस्वरूप मुद्रापूर्ति में हुई काफी वृद्धि से मूल्यों में और भी अधिक वृद्धि होना स्वाभाविक हो जाता है ।" लेकिन अब समस्या इस परिमाण में बढ़ गई है कि उसको दुर्लक्ष्य नहीं किया सकता है । इस समस्या का एक अच्छा सा समाधान तो यह होगा कि राष्ट्रीय उत्पादन की खास कर कृषि पैदावार की (हालांकि जो इस समय पूरी तरह संभव नहीं है) एक विशेष गति से वृद्धि हो। लेकिन चूंकि अभी यह संभव सा ही नहीं लगता है, इसलिये योजना के कुछ कार्यक्रमों को त्याग देना चाहिये···खास कर ऐसी स्थिति में जबकि चीन और पाकिस्तान के साथ सीमा समस्याओं के सन्दर्भ में सुरक्षा पर किये जाने वाले खर्च को कम करने का सवाल नहीं उठता है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ होगा योजना की प्राथमिकताओं में संशोधन करना और मुद्रा के क्षेत्र में इसका अर्थ होगा रिजर्व बैंक आफ इंडिया द्वारा गैर-उत्पादक उद्योगों के लिये बैंक ऋण पर सख्त नियंत्रण लगाने के साथ-साथ घाटे की वित्त व्यवस्था को बन्द या उसमें भारी कमी करना। अधिकांश लोग विकास प्रक्रिया में रुकावट पैदा करने की पैरवी नहीं करेंगे और न वैसा वांछनीय भी है ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## एक मात्र विकल्प

इसलिये, ऐसी स्थिति में उत्पादकता में यथासंभव वृद्धि करने का ही विकल्प रह जाता है। लेकिन इसके साथ-साथ मुद्रास्फीति को रोकने के प्रयत्न तब तक कामयाब नहीं हो सकेंगे, जब तक कि कृषि उत्पादन में काफी वृद्धि नहीं होगी और जनता अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक नहीं होगी। किसानों को उनकी जरूरतों की सभी प्रकार की सहायता देनी चाहिए। अल्प विकसित देशों के आर्थिक जीवन में बिचौलियों की कुछ खास तौर से मजबूत स्थिति होती है, क्योंकि पूंजी के ऊपर उनका विशेष नियंत्रण होता है। इसलिये भारत में उत्पादकों को, उपभोक्ता द्वारा अपनी जरूरी चीजों के लिये अदा की गई कीमत का केवल ६ से ६५ प्रतिशत भाग ही मिलता है। बिचौलियों के इस वर्ग के कारण पिछड़ी अर्थ-व्यवस्था में मूल्य नियमन काफी असरकारक नहीं हो पाता है। ऐसी स्थिति में एक आम नियमन तंत्र इतना कामयाब नहीं हो पाता है, जितने कि कुछ निर्दिष्ट नियमन।

मूल्य नियंत्रणों का एक असर यह होता है कि चीजें बाजार से गायब हो जाती हैं। आम जनता की जरूरत की चीजों, खास कर चावल और गेहूँ जैसे खाद्यान्न और शकर की जमाखोरी से मूल्य स्थिति और भी खराब हो जाती है। इस तरह की जमाखोरी निःसन्देह समाजविरोधी और देशद्रोही होती है। अतः व्यापारियों और उपभोक्ताओं के समर्थन के बिना मूल्यवृद्धि, जमाखोरी और कालेबाजार को रोकने के सरकारी प्रयत्न कामयाब नहीं हो सकते हैं।

उत्पादन के क्षेत्र में, श्री आयंगर ने बैंक कर्मचारियों की हाल ही की हड़ताल का उदाहरण दिया था। इसके फलस्वरूप वाणिज्यिक क्षेत्र में काफी तनाव बढा और मूल्य स्थिरता की स्थिति भी बिगड़ गई। कार्य के प्रति इस तरह की हड़ताल समाज विरोधी है, चाहे बैंकों और उनके कर्मचारियों के बीच का विवाद उचित हो या नहीं।

वेतन बढाने के लिये दावे पेश करना और हड़तालें करना गैर-कानूनी भले ही न हो, लेकिन निश्चित रूप से वे अहितकर हैं। जैसा कि एक पाश्चात्य अर्थशास्त्री ने बताया है कि भारत जैसे अल्पविकसित देशों के मजदूरों को उच्चतर वेतनों के लिये आन्दोलन करने के पहिले विकास योजनाओं की मदद करनी चाहिये और राष्ट्रीय आय में कुछ योग देना चाहिये। दूसरे शब्दों में त्याग के साथ ही कामयाबी प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण के तौर पर, ब्राजील में निर्वाह खर्च की भरपाई करने के लिये वेतन बढ़ाने की प्रक्रिया ने मूल्य वृद्धि की मूलभूत समस्या को काफी गंभीर बना दिया है।

मूल्य नीति और आर्थिक विकास के बारे में श्री वी. के. आर. वी. राव ने ('प्राइस एण्ड इकोनोमिक डेवलपमेंट—इकोनोमिक वीकली १०-१०-६४) कहा है:

"इस तरह से, आर्थिक विकास के लिये मूल्य नीति को, उपभोक्ता कीमतों में समुचित स्थिरता का आश्वासन देने, फलप्रद सतहों पर उत्पादकों की कीमतों की गारन्टी देने और एक ऐसे समन्वित मूल्य ढांचे को तैयार करने की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा जो साधनों के वितरण और इच्छित दिशा में विभिन्न पदार्थों और सेवाओं के उत्पादन लक्ष्यों के कार्यान्वय को उत्तेजित कर सके।' श्री राव का कहना है कि सार्वजनिक और निजी दोनों, क्षेत्रों में सभी गैर-जरूरी या निष्क्रिय और गैर-उत्पादक खर्चों की कमी होनी चाहिये। हमारे देश में मुद्रा पूर्ति बढ़ रही है, जिनके कारण हैं कुल अधिक निवेश, सरकारी खर्च, बढ़ता हुआ निर्यात और सरकार द्वारा की गई घाटे की काफी अर्थ-व्यवस्था, जो हमारे देश में मूल्य वृद्धि का एक बड़ा कारण रहा है। निम्न आंकड़ों से आय विस्तरण के उद्देश्य से गलत लागतों के लिये जिम्मेदार पहलुओं का पता चलता है।

### भारतीय अर्थव्यवस्था में आय विस्तरण के उद्देश्य से लगाई गई "स्वतंत्र" लागतें।

(आंकड़े करोड़ रुपयों में)

| वर्ष | सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में लगाई गई कुल पूंजी (पदार्थ स्टाक में हुए योग को छोड़कर) | सरकारी खपत व्यय (प्रशासन, सुरक्षा, विकास और सामाजिक सेवाएं) | निर्यात | |
|---|---|---|---|---|
| १९५२-५३ | ६१० | ६६० | ६६० | ६४० |
| १९५५-५६ | ८६० | ८८० | | |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९५६-५७ | १०६० | ६७० | ६३५ |
| १९६०-६१ | १३६० | १४४० | ६३० |
| १९६१-६२ | १५१० | १५२० | ६७० |
| १९६२-६३ | १६६० | १७६० | ६८० |
| १९६३-६४ | १८०० | २२२० | ७८० |

भारतीय अर्थव्यवस्था में विगत दशाब्दि का मुख्य पहलू, निर्माण उद्योगों के बढ़ते हुए उत्पादन की ८ से ९ प्रतिशत सालाना दर रही है लेकिन कृषि उत्पादन में इतनी तीव्र वृद्धि नहीं हुई है। "कृषि उत्पादन की वृद्धि दर कम होने के फलस्वरूप न केवल अर्थव्यवस्था की सम्पूर्ण वृद्धि दर काफी कम असरकारक रही, बल्कि कृषि और गैर-कृषि क्षेत्रों के बीच काफी गंभीर तनाव बढ़ गया, जिसका प्रतिबिम्ब मूल्यों में दिखाई देता है।" अतः मांग की तुलना में खाद्य और कृषि के कच्चे सामानों की पूर्ति कम रही, जिससे उनकी कीमतें लगातार बढ़ती रहीं। निम्न विवरण में कृषि और गैर-कृषि पदार्थों के उत्पादन और इन दोनों क्षेत्रों में हुई मूल्य वृद्धि का विवरण दिया गया है :

## भारत में उत्पादन और थोक कीमतों के दर्शकांक

| मद | १९५०-५१ | ५५-५६ | ६०-६१ | ६३-६४ |
|---|---|---|---|---|
| उत्पादन | | | | |
| क—कृषि | | | | |
| १—खाद्य फसलें | ९१ | ११५ | १३२ | — |
| २—अन्य फसलें | १०६ | १२० | १४२ | — |
| ३—सभी फसलें | ९६ | १५७ | १३५ | — |
| ख—औद्योगिक | | | | |
| १—लोहा और इस्पात | — | १२१ | २३८ | — |
| २—सूती कपड़े | — | १२८ | १३३ | — |
| ३—मशीनरी (सभी प्रकार की) | — | १९२ | ५०३ | — |
| ४—रासायनिक पदार्थ | — | १७९ | २८८ | — |
| ५—सामान्य दर्शकांक | — | १३९ | १९४ | — |

जून '६५

## निम्न चीजों की थोक कीमतें :

| | १९५१* | १९५६* | १९६१* | १९६४* |
|---|---|---|---|---|
| १. खाद्य पदार्थ | १२२.४ | ९२.८ | ११७.६ | १५३.६ |
| २. ईंधन, शक्ति, रोशनी और लुबरीकेशन | ९७.५ | ९६.८ | १२१.३ | — |
| ३. औद्योगिक कच्चा सामान | १५३.७ | १०९.४ | १५९.९ | १५४.० |
| ४. तैयार माल | ११८.७ | १०२.९ | १२९.४ | १३३.६ |
| ५. सभी चीजें | १२५.२ | ९८.१ | १२७.५ | १४७.६ |

नोट : १. कृषि उत्पादन का दर्शकांक १९४९-५०=१०० को आधार मान कर लगाया गया है।

२. औद्योगिक उत्पादन का दर्शकांक १९५०-५१=१०० को आधार मानकर लगाया गया है।

इन दोनों तथा थोक मूल्य दर्शकांक की तारीख तीसरी पंचवर्षीय योजना—भारत से ली गई हैं।

भारत में खाद्यान्नों की कीमतों को नियमित रखना जरूरी है। खरीद कीमतें नियत करना, प्रकारों और गुणों के आधार पर फुटकर कीमतें निश्चित करना आदि जैसे कदम उठाने भी जरूरी हैं और उन पर समुचित रूप से अमल होना चाहिये। लेकिन जैसा कि डा. वी. के. आर. वी. राव ने बताया है कि "सरकार को केवल बुनियादी खपत सामानों की कीमतें नियत करनी चाहिएं जैसे कि खाद्यान्न, शक्कर, गुड़, कपड़े और खाद्य तेल तथा अन्य चीजों की कीमतों को बाजार के स्वतंत्र रुख पर छोड़ देना चाहिए" और जरूरत पड़ने पर उनमें कम से कम हस्तक्षेप करना चाहिए।

मि० गालब्रेथ द्वारा पेश की गई समस्या का उत्तर यही है कि सीमाओं के अंदर मुद्रास्फीति वृद्धि को तीव्र बनाती है लेकिन सीमाओं के बाहर मुद्रास्फीति "लोक-तांत्रिक जीवन के मूल्यों और सुविधाओं के लिए घातक प्रमाणित हो सकती है।"

---

* इन तीन स्तंभों के आंकड़े मार्च के औसतों पर आधारित हैं।

** इस स्तंभ के आंकड़े जून के अंत के हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# कृषि उत्पादन कैसे बढ़े ?

प्रो० वी० के० आर० वी० राव, सदस्य योजना आयोग

पिछली तीन योजनाओं में देश में खेती का रकबा प्रति एकड़ औसत उपज, और कुल उपज काफी बढ़ी है। लेकिन तब भी हम अपनी खाद्य-समस्या हल नहीं कर पाये। उपज बढ़ने के साथ-साथ अनाज का आयात भी बढ़ा है। इसके दो मुख्य कारण हैं—(१) आबादी में निरन्तर वृद्धि और (२) उपज इतनी नहीं बढ़ी कि उससे देश की जरूरत पूरी हो सके।

एक बात यह भी है कि पिछले दस वर्षों में रहन-सहन भी काफी बदला है। पहले एक व्यक्ति जितना गेहूँ, चावल और शक्कर चाहता था, आज उससे अधिक चाहता है। दस साल पहले के मुकाबले आज ये चीजें अधिक मात्रा में उपलब्ध हैं, फिर भी कभी बनी हुई है जिस रफ्तार से इनकी मांग बढ़ी है, उस रफ्तार से पैदावार नहीं बढ़ी।

हमारी समस्या यही है कि किस प्रकार मांग के अनुसार पैदावार बढ़ाएं।

हम कहते हैं कि हम चौथी योजना में हर साल पांच प्रतिशत की दर से पैदावार बढ़ाना चाहते हैं। इसके माने ये हैं कि हम पांच वर्षों में लगभग २८ प्रतिशत पैदावार बढ़ाना चाहते हैं।

तीसरी योजना के आरम्भ में ८ करोड़ १० लाख टन अनाज हुआ था, पिछले साल ७ करोड़ ९० लाख या ८ करोड़ टन हुआ और इस साल ८ करोड़ ७०-८० लाख टन होने की आशा है। इस साल उपज काफी बढ़ी है। लेकिन सब मिलाकर तीसरी योजना में उपज की वृद्धि का सालाना औसत ३ प्रतिशत से अधिक नहीं रहेगा।

यदि हम पिछले वर्ष को लें तो पैदावार में वार्षिक वृद्धि की दर ३ या ३.१ या ३.२ प्रतिशत बैठती है। पिछले १४ वर्षों को लिया जाए तो प्रतिवर्ष २ से ३.४ प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई। इसमें करीब १,३ प्रतिशत वृद्धि खेती के रकबे के बढ़ने से हुई। यह ध्यान में

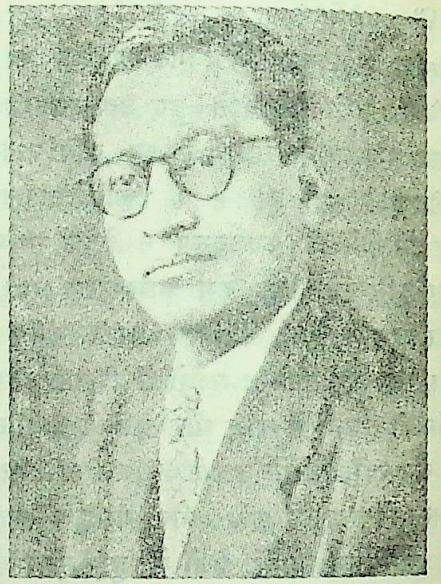

लेखक

रखना जरूरी है कि खेती के रकबे को बढ़ाने की भी एक सीमा है।

रकबे की वृद्धि के बाद करने पर पैदावार में बढ़ती की दर मुश्किल से १.७ या १.८ प्रतिशत आती है। चौथी योजना में हम ५ प्रतिशत वृद्धि चाहते हैं। अर्थात पहली, दूसरी और तीसरी योजना में कुल जितनी वृद्धि हुई, उससे दुगनी।

इस प्रकार हमारे सामने एक दूसरी ही समस्या खड़ी होती है। तीसरी योजना में पैदावार में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई, फिर भी हम चौथी योजना में वृद्धि की गति को पिछले १४ वर्षों की गति से दुगने से भी अधिक करना चाहते हैं। यह कैसे सकता है ?

यह भी ध्यान रहे कि जब हम पांच प्रतिशत पैदावार बढ़ाने की बात करते हैं, तब हमारा मतलब केवल अनाज और दाल की उपज से ही नहीं है। हो सकता है कि अनाज की पैदावार हर साल ४ प्र० श० से अधिक न बढ़ सके, लेकिन अण्डा, मुर्गी, दूध, मछली, मांस, फल, सब्जी आदि का उत्पादन इससे कहीं अधिक बढ़ाया जा

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है। यदि अनाज की पैदावार ४ प्रतिशत और अन्य खाद्य-पदार्थों का उत्पादन ६,७ या ८ प्रतिशत बढ़ाया जाय, तो औसत उत्पादन ५ प्रतिशत बढ़ने का लक्ष्य पूरा हो सकता है।

## खेती किसान पर निर्भर

यह बात याद रखनी चाहिए कि खेती को किसी उद्योग के कारखाने की तरह नहीं चलाया जा सकता। कारखाने में मजदूर का जितना महत्व है, उससे अधिक खेती में महत्व किसान का है। पैदावार बढ़ाने का उत्साह किसान में होना चाहिए और इसके लिए जरूरी है कि यह गारण्टी मिले कि पैदावार बढ़ाने से दाम नहीं गिरेंगे और उसे नुकसान नहीं होगा। इसके लिए भारत सरकार ने न्यूनतम मूल्य निर्धारण की नीति शुरू की है। लेकिन मूल्य निर्धारण केवल एक वर्ष के लिए नहीं, कई वर्षों के लिए होना चाहिए, जिससे किसान को भरोसा हो कि कम से कम पांच वर्ष तक तो मूल्य न गिरेगा।

मूल्य की गारण्टी का अर्थ यह भी है कि यदि बाजार में अनाज का भाव न्यूनतम सीमा से गिरा, तो सरकारी या अन्य संगठन निर्धारित मूल्य पर अनाज खरीदे। एक कठिनाई यह है कि अनेक राज्यों में मंडी और वितरण की व्यवस्था की भी कमी है। इसलिए जहां अच्छी उपज बढ़ती है, तब मूल्य अवश्य गिरता है। ऐसी स्थिति में वहां निर्धारित मूल्य पर तत्काल अनाज खरीदने की पक्की व्यवस्था होनी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है।

## किसानों को अधिक लाभ

मुख्य बात यह है कि उत्पादन का सर्वाधिक लाभ किसान को मिलना चाहिए। यदि उसे अधिक लाभ नहीं होता, तो वह जी लगाकर काम भी नहीं करेगा। जो आदमी स्वयं अपनी जोत का मालिक नहीं और अधिया पर काम करता है, वह स्वभावतः उतनी मेहनत नहीं करता। फिर वह सहकारी समितियों से ऋण, खाद, बीज आदि भी नहीं ले पाता, क्योंकि जमानत के लिए उसके पास जमीन नहीं, इसलिए भूमि सुधार जरूरी हैं और जोत पर मेहनत करने वाले का ही हक होना चाहिए।

## खाद और बढ़िया बीज

पैदावार बढ़ाने के लिए सबसे जरूरी पानी और बीज है। इसके बाद खेती के औजार और हरी तथा रासायनिक खाद का नम्बर आता है।

भारत सरकार और सभी राज्य सरकारें रासायनिक खाद पर अधिकाधिक जोर दे रही हैं। लेकिन इसके साथ ही गोबर की खाद भी उतनी ही जरूरी है। गांवों में बहुत सा गोबर उपले बनाने के काम में आता है। उपलों को गांव के लोग ही नहीं जलाते, शहर के लोग भी खरीदते हैं। उपलों को बेचने से गांव वालों को नकद पैसा मिलता है। अतः जब तक दूसरे ईंधनों का प्रबन्ध न किया जाएगा, गोबर खाद के काम न आ सकेगा।

जहां तक रासायनिक खाद का सवाल है, चौथी योजना में किसानों को अब से २४ गुनी खाद देने की व्यवस्था की जाएगी, लेकिन यह भी जरूरी है कि इस खाद का मूल्य इतना हो कि उसे डालने से किसान को घाटा न हो।

खाद से कम महत्व बीज का नहीं है। लुधियाना में संकर बाजरा बोया गया, जिससे पैदावार लगभग ७० प्रतिशत बढ़ी। संकर मक्का के बीजों का भी काफी प्रयोग हो रहा है। संकर ज्वार भी तैयार किया गया है, और गेहूँ तथा धान की भी नई किस्में निकाली गई हैं। अब सबसे जरूरी बात यह है कि हम किसानों को इन्हीं बढ़िया बीजों को बोने के लिए प्रेरित करें।

यह ध्यान रखना जरूरी है कि अनाज का मूल्य निर्धारित करते समय खाद और बीज आदि सभी चीजों का मूल्य भी ध्यान में रखना होगा। यदि ऐसा नहीं किया जाता और किसान को खेती में लगी लागत के हिसाब से लाभ नहीं होता, तो वह इन चीजों को खरीदेगा ही नहीं।

## संगठन का महत्व

खेती में दो चीजें लगानी हैं—एक बैल, मशीन आदि जिन पर काफी पैसा खर्च होता है और दूसरे जिन पर अधिक पैसा नहीं लगता, जैसे बीज। इसी तरह खेती के बेहतर तरीके भी हैं। किसान को बेहतर तरीके बताने के लिए धन की नहीं, बल्कि प्रयत्न की जरूरत है, यह प्रयत्न कौन करे? केवल सरकारी कर्मचारियों की संख्या बढ़ने से यह नहीं हो सकता। यह काम सहकारी और पंचायतें बखूबी कर सकती हैं। लेकिन ये समितियां और पंचायतें भी तब

(शेष पृष्ठ २६६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कृषि विकास की बहुमुखी योजना

भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने कुछ दिन हुए कृषि और उसकी विकास समस्याओं पर एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है, जिसमें सरकार की कृषि नीति के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी दी गई है, कृषि के योजना-बद्ध विकास का उद्देश्य यह कि १९७६ तक कृषि का उत्पादन १९६१ की अपेक्षा दुगना कर दिया जाय तथा देश के भिन्न २ भागों में न केवल अनाज का उचित और समान वितरण हो बल्कि विभिन्न उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चे माल की सुविधाएं भी सब लोग उपलब्ध कर सकें। इसी तरह निर्यात की आवश्यकता को भी कृषि उत्पादन द्वारा हमें पूरा करना है।

जहां कृषि के क्षेत्र में आवश्यक अन्न और व्यापारिक फसलें पैदा करनी हैं वहां देहातों से सम्बद्ध उन उद्योगों का भी विकास करना है जिनका हमारे भोजन के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध है। उदाहरण के लिए पशु-पालन, मत्स्य पालन, दुग्ध उद्योग, शहद तथा कुक्कुर पालन आदि। कृषि योजनाओं में हमें विश्वासकर ध्यान रखना होगा कि घरेलू इमारतों तथा उद्योग के लिए आवश्यक लकड़ी और घरों के लिए जरूरी ईंधन भी हमें प्राप्त करना है। इस तरह कृषि की योजना एक बहुमुखी योजना के रूप में हमारे सामने आती है।

यद्यपि हमें आज के कृषि उत्पादन से बहुत सन्तोष नहीं है तथापि वस्तुतः कृषि का उत्पादन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। १९४९-५० से १९५१-५२ तक के त्रैवार्षिक उत्पादन को यदि हम औसत आधार मानें तो १९६२ तक प्रतिवर्ष ४ प्रतिशत की दर से उत्पादन बढ़ता रहा है। इन वर्षों का उत्पादन सन्तोषजनक भी है। उत्पादन की इस वृद्धि पर हम सन्तुष्ट और आश्वस्त नहीं हो सकते। जनसंख्या ही निरन्तर नहीं बढ़ रही, हमारा जीवन स्तर भी निरन्तर ऊंचा हो रहा है और हमारी आवश्यकताएँ भी बढ़ रही हैं। फिर प्रकृति पर भी हम बहुत निर्भर नहीं रह सकते, इसलिए चौथी योजना में कृषि के उत्पादन में ५.६ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य रखा गया है।

यद्यपि किसी-किसी फसल का उत्पादन बढ़ा है तथापि कुल मिलाकर तीसरी योजना के पहले तीन वर्षों में कृषि उत्पादन करीब-करीब स्थिर रहा है। उदाहरण के लिए १९६३-६४ में चावल का उत्पादन ३.६५ करोड़ टन हुआ और गेहूँ का उत्पादन १९६१-६२ में १.२ करोड़ टन तक पहुँचा। जूट का उत्पादन १९६१-६२ में ६४ लाख गांठें और कपास का १९६३-६४ में ५५ लाख गांठें, उत्पादन हुआ।

प्रथम पंचवर्षीय योजना से कृषि की उत्पादन वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयास किए जाते रहे हैं। सिंचाई की छोटी योजना और बड़ी नहरों से ३ करोड़ से अधिक एकड़ों में खेती होने लगी है। भूमि-क्षरण रोकने के लिए भी प्रयत्न हो रहे हैं। रासायनिक खाद का प्रयोग भी बढ़ रहा है। यद्यपि हम आवश्यक खाद तैयार कर पा रहे हैं और न विदेशी मुद्रा की कठिनता के कारण विदेशों से मंगवा ही सक रहे हैं।

यद्यपि कृषि विकास के हमारे प्रयत्न जारी हैं तथापि तीसरी योजना के लक्ष्य अभी काफी दूर दिखाई पड़ते हैं। खाद, सिंचाई की छोटी बड़ी योजनाएँ तथा उपलब्ध पानी को खेतों तक पहुँचाने की व्यवस्था में कमी आदि अनेक कारणों से अभी तक भी हम निर्धारित लक्ष्यों से बहुत पीछे हैं। अच्छे किस्म के बीजों का वितरण भी अभी तक किसानों को पर्याप्त मात्रा में हुआ है और न ठीक समय पर ही हुआ है। अनाज के गोदाम भी लक्ष्य के अनुसार नहीं बन पाये हैं क्योंकि सीमेंट, लोहे की जालीदार चादरें और सरिये-शहतीर आदि नहीं मिल पाये हैं। बिजली की भी कमी इसका एक कारण हो सकता है।

कृषि विकास की समस्याओं के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि हमें अपनी खेती में वैज्ञानिक और प्रशिल्पिक आज के तरीकों का अवलम्बन करना पड़ेगा और इसके लिए किसानों को भी पूर्णतः शिक्षित करना पड़ेगा। आज की आवश्यकता को देखते हुए हमें निम्नलिखित ५ कार्यक्रम अपनाने हैं :—

( शेष पृष्ठ २९९ पर )

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय उद्योगों में विदेशी पूँजी

श्री ब्रह्मदत्त शर्मा

१६१३ ई. में जब भारत के शासकों ने अंग्रेजों को व्यापार का एकाधिकार दिया था उसी समय से भारत की मुस्लिम सरकार ने अनजाने भारत में विदेशी शासन के स्थापित होने की आधार शिला रखदी। यह विदेशी शासन करीब ३०० वर्ष भारत पर रहा। अब फिर भारत सरकार ने २ फरवरी १९६५ को यह संकेत किया है कि वह कुछ एक उद्योगों में विदेशी पूंजी को बहु संख्यक शेयर देने पर भी सहमत हो गई है। इस तरह १६१३ ई. की पुनरावृत्ति होने जा रही है और भारत विदेशी व्यापारियों के बन्धन में फिर फंसने जा रहा है। क्या इतिहास अपने को फिर दुहरायेगा ?

वस्तुतः ब्रिटेन की जनता व्यापारिक और औद्योगिक सुत्राकों को औपनिवेशिक राज्य की अपेक्षा भी जिसे उन्होंने अन्ततोगत्वा छोड़ भी दिया है, अधिक मूल्यवान समझती है। वस्तुतः ब्रिटिश जनता ने अपने व्यापार को सुरक्षित रखने के लिए ही अपने साम्राज्य को भंग किया है। विदेशी सत्ता के बिना ब्रिटिश जनता अपना सुख समृद्धि का वह जीवन ही व्यतीत नहीं कर सकती, जिसकी वह पिछले १०० वर्षों से अभ्यस्त हो गयी है। उन्होंने भारत पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व अपने व्यापार की सुरक्षा के लिए ही छोड़ दिया है, जैसा कि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडमस्मिथ ने बहुत वर्ष पूर्व सलाह दी थी। उनकी सम्मति में "यदि ग्रेट ब्रिटेन अपने उपनिवेशों पर स्वेच्छापूर्वक अपना प्रभुत्व छोड़ देगा तो न केवल वह अपने विशाल साम्राज्य में शांति स्थापना पर होने वाले भारी खर्चों से बच जायगा, अपितु वह अपने अधीनस्थ देशों से ऐसी मुक्त व्यापारिक संधि भी करने में सफल होगा, जो उसके लिए अधिक लाभकारी होगी।" (वैल्थ आफ नेशन्स पृष्ठ ५८१-८२)

इससे यह बहुत अधिक स्पष्ट है कि अंग्रेजों ने अपने अधीनस्थ उपनिवेश मानवता या न्याय की भावना से स्वतन्त्र नहीं किये, अपितु व्यापार और व्यवसाय में व्यवहारतः अपने अधिक लाभ सुरक्षित रखने के लिए ही मुक्त किये हैं। बहुत से भारतीय भी ब्रिटेन की न्याय परायणता और दयालुता की भावना को हमारी स्वाधीनता का मूल कारण समझते हैं। वे या तो इसके पीछे छिपी हुई वास्तविक भावना को समझते ही नहीं अथवा उनमें वर्षों की दिमागी गुलामी के कारण वह क्षमता ही नहीं रही है कि वे वास्तविक रहस्य को समझ सकें।

इंगलैंड जैसे छोटे से टापू के लिए व्यापार का ही सबसे अधिक महत्त्व है। अपने व्यापार और उससे होने वाले लाभों की रक्षा के लिए वह बड़े से बड़ा कदम उठाने के लिए तैयार है, यह कोई गुप्त रहस्य की बात नहीं है। इसे पहले भी अनेक बार स्वीकृत किया जा चुका है। १८०३ से १८०८ तक भारत में २५वीं सेना का सेनापतित्व करने वाले मेजर विलियम थौर्न ने अपने संस्मरणों (फरवरी १८१८) में लिखा है कि" हमारे व्यापारिक हित हमारे शासन की स्थिरता पर निर्भर करते हैं। यदि हमने उस अधिकार और शासन को जिसे हमने बहुत जन-धन हानि के बाद प्राप्त किया है छोड़ दें तो उसका वह स्रोत ही सूख जायगा, जिसके द्वारा वह अनन्त सम्पदा प्राप्त करता रहा है और अंततोगत्वा उसे अपनी सामुद्रिक और सैनिक शक्ति भी भंग करनी पड़ेगी।"

हिटलर ब्रिटिश जाति के इस रहस्य को भली भांति समझता था। शोषण के स्रोत उपनिवेशों की रक्षा के लिए ही ब्रिटेन ने इतना बड़ा संग्राम जिसमें उसने अरबों रुपये की सम्पत्ति और लाखों जानें फूंक दीं, लड़ा।

नीचे के दो-तीन उद्धरणों से यह स्पष्ट होगा कि ब्रिटेन ने अपने व्यापार और व्यवसाय की रक्षा के लिए ही बीसियों बड़े-बड़े संग्राम किये। राइट आनरेबल सर चार्ल्स वेन्टवर्थ, 'दी प्रोबलम्स आफ ग्रेट ब्रिटेन' में लिखते हैं—

"हमारे सीमित दृष्टिकोण से—ब्रिटिश-भारत के दृष्टिकोण से यदि हम भारत को अपने हाथ में नहीं रख सकते, भारतीय शासन में सुधार कम महत्व के हैं। साम्राज्य की दृष्टि से भी भारत का हमारे हाथ से निकल जाना

(शेष पृष्ठ २९२ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पं० नेहरू और कम्यूनिज़्म

कुछ दिन पहले समस्त देश में भारत के दिवंगत महान नेता पं० जवाहरलाल नेहरू की प्रथम पुण्य तिथि मनाई गई थी। समस्त देश में विराट सभाएं की गईं। छोटी बड़ी संस्थाओं ने भी उनकी स्मृति में सभाएं कीं। अधिकांश पत्रों ने नेहरू अंक निकाले। देश के बड़े भाग में जवाहर ज्योति का जलूस निकाला गया। सैकड़ों स्थानों पर कविता सम्मेलन हुए और अनेक कम्यूनिस्टों ने भी उनकी स्मृति में विराट आयोजन करके नेहरू प्रेम का परिचय दिया। इस अवसर पर यदि हम पंडित नेहरू के कम्यूनिस्ट-सम्बन्धी विचारों पर एक बार दृष्टि डालें तो मालूम होगा कि वस्तुतः वह आज के कम्यूनिज़्म और भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी को किस दृष्टि से देखते थे। (गांधी मार्ग) में श्री माइकेल ब्रीचर के लेख से एक लम्बा उद्धरण इसे स्पष्ट करेगा—

जहां तक नेहरू जी का भारतीय कम्यूनिस्टों से सम्बन्ध था, द्वितीय विश्वयुद्ध उसके परिवर्तन का बिन्दु था। उन्हों (कम्यूनिस्टों) ने राष्ट्रीय आन्दोलन को धोखा दिया और सरकार से सहयोग किया। अगस्त १९४२ (भारत छोड़ो) आन्दोलन के बाद कांग्रेसियों की गिरफ्तारी ने गहरी चुभन पैदा की। १९४५ ई० में नेहरू जी ने उस 'स्पेशल पार्टी कमेटी' में काम किया, जिसने कांग्रेस से सभी कम्यूनिस्टों की निकाल बाहर करने की सिफारिश की और तब से वे कम्यनिस्ट पार्टी की कठोर आलोचना व कड़ी टीका बराबर करते रहे। इस टीका में उन्होंने मार्क्सवाद और साम्यवाद के बारे में अपनी स्थिति बिल्कुल साफ कर दी। उन्होंने १९४९ में कहा—क्रान्तिकारी होना तो दूर कम्यूनिस्ट तो दरअसल अनुदार लिये हैं" १९५० में उन्होंने कोरिया युद्ध छिड़ने के बाद कहा "जो विशाल अखण्ड राज्य कम्यूनिस्ट पथ-प्रदर्शन में चल रहे हैं, उनमें कुछ राज्य ही आर्थिक सवालों का जवाब दे सकते हैं। परन्तु वह बहुत मंहगा पड़ेगा। मुझे ऐसे अलोकतंत्री राज्य पसन्द नहीं हैं, मुझे ऐसे अधिकारवादी निरंकुश शासन भी पसन्द नहीं है···मेरा विचार है कि व्यक्तिगत स्वातंत्र्य आम तौर पर माने जाने वाली राजनीतिक आजादी ऐसे मनमाने राज्यों में अस्तित्व ही नहीं रखती। रहा मार्क्सवाद सो उसके बारे में मुझे दिलचस्पी नहीं है। मुझे हो भी क्यों? मैं मार्क्सवाद की व्याख्या करने में या उस पर औरों की राय जानने में नहीं, उससे बाहर निकलने में दिलचस्पी रखता हूँ। ऐसे लोग समझते हैं कि जो कुछ भी उनके पवित्र ग्रन्थ में लिखा है, वह अवश्य ही सत्य है, किन्तु मेरा मन उस प्रकार का नहीं बना है।" इसके दो वर्ष बाद उन्होंने मार्क्सवाद की बौद्धिकता से अपने को अलग कर लिया। वे सबसे कहने लगे—"मेरा ख्याल है, मार्क्स के बारे में बातें करना प्रतिक्रिया है। मेरा विचार है, कि बम्यूनिस्ट अपनी सारी गर्मी और आक्रोश के होते हुए भी कुछ मानों में बिल्कुल प्रतिक्रियावादी है।"

भारतीय कम्यूनिस्टों के बारे में तो उनकी उक्ति बड़ी ही तीखी हो गई थी। १९५४ ई० के अन्त में उन्होंने एक सचोट टीका करते हुए कहा था "उनकी जड़ें जन्मभूमि में नहीं, वे अपनी प्रेरणा और पथ-प्रदर्शन के लिए बाहर नजर लगाये रहते हैं। उनकी राय है, कि परस्पर विनाशकारी उपद्रव, हिंसा और रक्तपात का ही मुख्य रूप से अनुसरण करना चाहिए।" उन्होंने मार्क्सवादी ग्रन्थों के भारत पर ज्यों का त्यों लादने के विचार से चिपटे रहने पर कम्यूनिस्टों का उपहास किया। उन्होंने कहा कि वे विदेश जाकर वहां अपने देश के प्रति दुर्भावना व्यक्त करते हैं। सार्वजनिक रूप में भारत की विदेश नीति को साम्राज्यवाद की प्रतिच्छाया बताया, पर जब सोवियत रूस ने उसे पसन्द किया तो ये भी उसके प्रशंसक बन गये।"

मार्क्सवाद, साम्यवाद और भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रति नेहरू जी के जीवन दर्शन को हमें समझ लेना चाहिए। उन पर शक्तिशाली साम्राज्य विरोधी सामाजिक सिद्धान्त का प्रभाव पड़ा और वे जन-समूह के कष्टों के प्रति वास्तविक रूप में संवेदनशील रहे। पर वे केवल कठोर सिद्धान्ती नहीं बने रहे। वे ऐसे अमीर थे, जिन पर सर्वहारा दल वाले हावी हो जाना करते थे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# शेयर बाजार और जन साधारण

स्टाक एक्सचेंज क्या है—क्या करते हैं—
शेयरों की कीमतों में उतार-चढ़ाव क्यों—
जनसाधारण पर प्रभाव

श्री मंगलौर रंगा पई

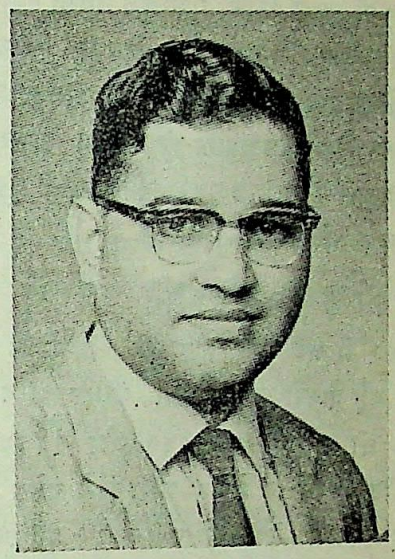

लेखक

स्टाक एक्सचेंज वह स्थान है, जहां सट्टेबाजों का कुण्ड व्यक्तिगत लाभों के लिए क्रियाशील रहता है। स्टाक एक्सचेंज का संचालन कुछ समृद्ध व्यक्तियों द्वारा इस तरीके से किया जाता है जिससे सरकार की प्रधान तथा आर्थिक नीतियां बदनाम हों; स्टाक एक्सचेंज एक शोरगुल वाली जगह है; स्टाक एक्सचेंज अर्थव्यवस्था का मानदण्ड नहीं है···इस प्रकार की परिभाषाएं अकसर सुनने को मिलती हैं। लेकिन जब इस प्रकार की परिभाषाएं सरकारी अधिकारियों से सुनने को मिलती है, उस समय उनका समुचित रूप से अध्ययन करना जरूरी हो जाता है, क्योंकि स्टाक एक्सचेंजों के बारे में इस प्रकार की धारणाओं पर आधारित सरकारी नीतियों से अर्थव्यवस्था तथा जन साधारण के कल्याण पर भयानक प्रभाव पड़ सकते हैं।

हमारी जनता का जीवन तब तक ऊंचा नहीं उठ सकता है, जबतक कि देश की समृद्धि में वृद्धि नहीं होती है और जिसका अर्थ होता है व्यापक और तीव्र गति से आर्थिक विकास होना। अन्यथा हम केवल गरीबी का ही विकास करते रहेंगे। इस तरह के विकास के लिए कृषि, उद्योगों तथा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में पूंजी लगाना जरूरी होता है। निवेश की ये रकमें देश की—व्यक्तियों और कम्पनियों की बचतों से मिलती हैं।

सेम्युअल स्माइल ने अपनी "थ्रिफ्ट" शीर्षक पुस्तक में बचतों के महत्व को निम्न शब्दों में बताया है:—

"संसार की बचतों ने ही उसे सभ्य बनाया है। बचतें श्रम का परिणाम होती हैं: और जबकि श्रमिक बचतें करना शुरू करते हैं तभी सभ्यता के परिणाम इकट्ठे होना शुरू होते हैं। किफायतशारी से पूंजी रचना होती है; और पूंजी वास्तव में श्रम का संचित परिणाम होता है। पूंजीपति केवल वही व्यक्ति होता है, जो कार्य द्वारा अर्जित सभी धन को खर्च नहीं करता है

## स्टाक एक्सचेंज है क्या ?

स्टाक एक्सचेंज वह स्थान है, जहां पोर्ट ट्रस्टों, नगरपालिकाओं निगमों आदि जैसी सरकारी और अर्धसरकारी संस्थाओं द्वारा सार्वजनिक परियोजनाओं की वित्त व्यवस्था के लिए तथा नये उद्योगों को शुरू करने या विद्यमान घटकों को विस्तृत करने के इच्छुक निजी उद्यमियों द्वारा जनता की बचतों को एकत्रित किया जाता है। उदाहरण के तौर पर यदि बम्बई स्टाक एक्सचेंज नहीं होता तो बम्बई शहर का विकास उतना नहीं हो पाता, जितना कि उसका आज हुआ है। बम्बई पोर्ट ट्रस्ट की स्थापना भी बम्बई स्टाक एक्सचेंज में एकत्रित की गई रकमों के ही कारण हुई। प्रथम पंचवर्षीय योजना की शुरूआत से आज तक केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने जनता से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से १,४०० करोड़ रुपये से भी अधिक रकमें कर्ज ली हैं।

स्टाक एक्सचेंज का एक दूसरा महत्वपूर्ण कार्य होता है निवेशों को 'नकदी' प्रदान करना। जो व्यक्ति अपनी बचतों को शेयरों में लगाता है और अपने उपयोग के लिए जब कभी भी नकद रकम चाहता है, वह अपने शेयरों को स्टाक एक्सचेंज पर बेच सकता है।

देश की समृद्धि और जनता के जीवनमान को बढ़ाने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उद्देश्य से स्टाक एक्सचेंज सार्वजनिक बचतों को उत्पादक मार्गों में ढालने में महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं।

भारत में आठ स्टाक एक्सचेंज निम्न स्थानों में हैं: बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, नई दिल्ली, अहमदाबाद, बंगलौर, हैदराबाद और इन्दौर। नये तीन वर्षों में स्टाक एक्सचेंज की स्थिति डावांडोल सी रही। इससे न केवल आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ा, बल्कि छोटी पूंजी लगाने वाले अनेक लोगों पर भी।

## ५०० करोड़ रु० की हानि

१९६२ में जब मंदी शुरू हुई थी, स्टाक एक्सचेंजों पर बोली गई शेयरों की बाजारी कीमत करीब १,३०० करोड़ रु० थी। १९६२, १९६३ और १९६४ में करीब २२० करोड़ रुपये के शेयर जारी किये गये। गये तीन वर्षों में इन शेयरों की कीमतें करीब ३५ प्रतिशत घट गई हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि शेयर होल्डरों को, उनकी बिना किसी गलती के ही उनकी कुल १,५०० करोड़ रुपये से भी अधिक पूंजी पर, ५०० करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ता गया है।

## जन साधारण को हानि

शेयरों की कीमतों के गिरने से इतना अधिक नुकसान धनवानों को नहीं होता है, जितना कि जनसाधारण व थोड़ी पूंजी लगाने वालों को होता है। बम्बई स्टाक एक्सचेंज के विवरण के अनुसार १९६३ में २४३ कम्पनियों में कुल ९ लाख से कुछ ज्यादा शेयर होल्डर थे। इनमें से ९७ प्रतिशत अर्थात ८,८६,००० ऐसे लोग थे, जिनके पास १०,००० रुपये से कम के शेयर थे। १९५८ और ६१ के बीच जारी किये गये शेयरों के सर्वेक्षण से पता चलता है कि सीमित आमदनी वाले साधारण लोगों का एक नया वर्ग देश के आर्थिक विकास में उत्तरोत्तर रुचि ले रहा है। सर्वेक्षण से पता चलता है कि जारी किये गये नये २२ शेयरों के लिए ६,८८,२८७ अर्जियां प्राप्त हुईं। इसमें से ५,५०० रुपया और उससे कम कीमतों के शेयरों के लिए ६,२१,०३४ अर्जियां प्राप्त हुई थीं। इसका अर्थ यह हुआ कि ९० प्रतिशत लोग अल्प पूंजी लगाने वाले थे। उन्होंने जारी की गई कुल रकम के ३७ प्रतिशत भाग के लिए अर्जियां भेजी थीं। लेकिन इस नये वर्ग को, जिसे प्रोत्साहन मिलना चाहिए, पूंजी बाजार की मन्द गति के कारण हानि उठानी पड़ रही है।

## विपरीत प्रभाव

गये तीन वर्षों में मूल्यों की आम सतह में ३० प्रतिशत वृद्धि हुई है। मुद्रास्फीति की ऐसी स्थिति में सामान्य रूप से पूंजी बाजार को उत्साही होना चाहिए था, क्योंकि मुद्रास्फीति से लोग संघर्ष करते हैं अर्थात शेयरों को खरीद कर रुपये की असली कीमत की रक्षा करते हैं जो वास्तव में मशीनों तथा अन्य परिसम्पत्तियों में निहित उत्पादक क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन भारत में इसका उल्टा ही हुआ है। वस्तु स्थिति को इस तथ्य से ही समझा जा सकता है कि नये शेयरों को अण्डरराइट करने वाली संस्थाओं को अर्थात जिस हद तक जनता शेयरों को खरीदने में असमर्थ रहती है, उनको खरीदने का आश्वासन देना—९० प्रतिशत तक शेयर खरीदने पड़ते हैं।

भारत के औद्योगिक ऋण तथा निवेश निगम (आय. सी. आय. सी. आय.) के चेयरमेन श्री जी. एल. मेहता ने हाल में ही कहा है: 'विगत दशाब्दि में ११.५२ करोड़ रुपये के शेयर अण्डरराइट करने के कार्य में निगम ने ६.१० करोड़ रुपये के शेयर लिये। लेकिन १९६४ में १३५ लाख रुपये के शेयर अण्डरराइट करने के कार्य में निगम को १२२ लाख रुपये के शेयर लेने पड़े।

पूंजी बाजार की इस मन्दी का मुख्य कारण यह है कि उच्च कराधान तथा बढ़ती हुई कीमतों की वजह से (जो हमारी आज की अर्थव्यवस्था में कराधान का एक बड़ा निर्दय तरीका है) जनता के हाथों में बचतें बहुत कम रह गई हैं।

जैसा कि केन्द्रीय वित्त मन्त्री ने अपने बजट भाषण में बताया है कि बचतों का एक ही सामान्य कोष है। उन्होंने कहा, "अन्ततः यही निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्र को उपलब्ध होने वाले साधन, करों, बचत संग्रह, या पर्याप्त लाभ की प्राप्ति के द्वारा उपलब्ध

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने वाले साधन, सब एक ही कोष के अलग अलग अंग हैं।"

भारी कराधान से इस कोष का अधिकांश भाग खत्म होता जा रहा है। इसके अलावा एन्युटी डिपाजिट योजना जैसे कदम भी उठाए गये हैं जिसके अन्तर्गत उन लोगों को अपनी आमदनी की ५ प्रतिशत (और इससे भी अधिक) रकम को सरकार में जमा करना अनिवार्य किया गया है, जिसकी वार्षिक आमदनी १५,००० रुपयों से अधिक है। इसका नतीजा यह होता है कि लगभग ६५ करोड़ रुपया सालाना की उन महत्वपूर्ण बचतों को पूंजी लगाने वाले वर्ग से वंचित रखा जाता है, जिनको सामन्यत: शेयरों में लगाया जाता है। जैसा कि पूंजी बाजार के परम निष्णात श्री ए. डी. आफ ने कहा है कि एन्युटी डिपाजिट वास्तव में सरकार को दिया जाने वाला एक 'बेबरदस्तीपूर्ण कर्ज' है, जो एक औसत दर्जे के पूंजी लगाने वाले को रकम लगाने की उसकी इच्छा से वंचित कर देता है।

## कम डिवीडेण्ड

पूंजी बाजार की मन्दी का एक दूसरा महत्वपूर्ण कारण है शेयरों से मिलने वाला अल्प प्रतिफल, क्योंकि उनका हतोत्साहक कराधान लगाया गया है। उदाहरण के तौर पर कम्पनियों को डिवीडेण्डों के भुगतान पर भी कर देना पड़ता है। इसी प्रकार कम्पनियों द्वारा वर्षों से एकत्रित की गई आरक्षित निधियों से जारी किये गये बोनस शेयरों पर भी कर लगाया जाता है। कम्पनियां बोनस शेयर जारी करने के लिए हिचकती हैं हालांकि इस प्रकार के शेयर, औसत दर्जे के पूंजी लगाने के लिए हमेशा आकर्षण बने रहते हैं। और यदि बोनस शेयर जारी भी किये गये तो पाने वाले को पूंजी लाभ कर अदा करना पड़ता है भले ही उसने शेयरों को बेचा न हो और उसका पूंजीगत लाभ केवल नाममात्र का ही क्यों न हो।

## भारी कराधान

इस प्रकार के बन्धनों के अलावा भारत में कम्पनियों पर भी भारी कराधान है। नार्वे और स्वीडन जैसे समाजवादी देशों तक में नियमित कराधान की मर्यादा ४० प्रतिशत नियत की गई है। लेकिन भारत में यह ७० प्रतिशत है। विगत दो वर्षों में निगमित क्षेत्र पर कर भार का प्रमाण ४० प्रतिशत अधिक हो गया है—१९६३-६४ के २७५ करोड़ रुपयों से बढ़कर १९६५-६६ में ३८६ करोड़ रुपये हो गये हैं।

अतः यह बात हमारे देश की तीव्र आर्थिक वृद्धि के हित में है कि हमारे यहां एक सक्रिय पूंजी बाजार की स्थापना की जाय जिससे कि लोगों को रोजगार के अधिक अवसर मिलें और उनके जीवनमान में सुधार हो सके। लोकतंत्र के हित में भी यह बात है कि छोटे-छोटे पूंजी लगाने वालों की संख्या बढ़ाई जाय और उनको प्रोत्साहित किया जाय ताकि औद्योगिक मालिकी का आधार व्यापक बन सके। इसलिये, देश की आर्थिक नीति में फेरबदल करना जरूरी है। व्यक्तियों और कम्पनियों पर लगाये जाने वाले करों में काफी कमी की जानी चाहिये। सरकारी क्षेत्र में खर्च की जाने वाली निधियों का सावधानीपूर्वक और उत्पादक तरीकों से उपयोग होना चाहिए। यह एक सुविदित तथ्य है। सरकारी क्षेत्र में लगाई गई भारी पूंजियों से बहुत थोड़ा प्रतिफल मिलता है। उदाहरण के तौर पर १९६५-६६ के बजट में सरकार सार्वजनिक क्षेत्र से, जिसमें १,७०० करोड़ रुपयों से भी अधिक रकमें लगी है, केवल २८५ लाख रुपये के लाभ ही की अपेक्षा करती है। ● ●


# आर्थिक समीक्षा

सम्पादक : श्री हरतीर्थ सिंह

● हिन्दी में अनूठा प्रयास

● आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

अ. भा. कांग्रेस कमेटी कार्यालय

७ जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सामुदायिक विकास का महत्व

डा. बी. आर. सेन

गरीब किसान परिवारों में स्त्रियां भी खेती में बहुत काम करती हैं। इसलिए प्रौढ़ शिक्षा का प्रबन्ध उनके लिए भी चलाना चाहिए। इससे बच्चों की पैदाइश पर नियंत्रण में भीसहायता मिलेगी। इसलिए सामुदायिक विकास में प्रौढ़ शिक्षा को विशेष महत्व देना चाहिए।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम का आधार जनसहयोग है। जनता श्रम साधन के रूप में इस कार्यक्रम में योगदान करती है और सरकार प्राविधिक सलाह, प्रशिक्षण, साज-सामान, अनुदान और ऋण आदि देती है। इस कार्यक्रम का बड़ा लाभ यह है कि इसमें कम पूंजी से आर्थिक विकास की योजनाएं चलाई जा सकती हैं, क्योंकि जनता श्रम और अन्य प्रकार से इसमें हाथ बंटाती है।

भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम २ अक्टूबर (गांधीजी के जन्म दिन), १९५२ को शुरू हुआ। तब से इसमें अनेक परिवर्तन किए गए हैं। गांवों के आर्थिक और सामाजिक विकास की सभी योजनाएं इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत आ गई हैं। चूंकि गांव के लोगों का मुख्य धंधा खेती-बाड़ी है, इसलिए इस कार्यक्रम में खेती की उन्नति और पैदावार की वृद्धि पर अधिक जोर दिया जाता है। परन्तु जितनी सफलता की आशा थी उतनी नहीं मिल सकी है। भारत के अधिकांश गांवों में अभी भी खेती के तरीके पुराने ढंग के हैं, जिससे लोगों की केवल किसी तरह गुजर भर हो पाती है। कुछ लोग आधुनिक ढंग की खेती भी करते हैं और उससे मुनाफा कमा रहे हैं।

कार्यक्रम के मूल्यांकन से पता चलता है कि बड़े किसानों और अच्छे गांवों ने इससे लाभ भी उठाया है। जिन किसानों के पास काफी जमीन है, उसकी पैदावार बढ़ाने में इस कार्यक्रम से काफी मदद मिली है। ये किसान अपने व्यवहार के अलावा, फालतू अन्न मंडी में बेचते हैं। सामुदायिक विकास कार्यकर्त्ताओं को ऐसे किसानों को पूरा प्रोत्साहन देना चाहिए और पैदावार बढ़ाने में उनकी पूरी सहायता करनी चाहिए। यद्यपि ऐसे किसानों की संख्या कम है फिर भी उन्होंने खेती में जो बढ़ोतरी की है, उससे देश की पूंजी बढ़ी है और खेती तथा उद्योग-धन्धों के विकास में मदद मिली है। इस प्रकार सामुदायिक विकास कार्यक्रम उनको बढ़ावा देकर भारत की खेती की कायापलट कर सकता है।

वस्तुतः सामुदायिक विकास कार्यक्रम भारत में गांवों के विकास के लिए ही चलाया जा रहा है और यह गांधी जी के स्वावलम्बन, सहकार और सहयोग के सिद्धान्तों पर आधारित है। इस कार्यक्रम में ग्रामवासी अधिकारियों के साथ मिलकर खेती की पैदावार बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। इसी कारण अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य और कृषि संगठन इस कार्यक्रम में विशेष दिलचस्पी ले रहा है।

## आज की समस्याएं

कुछ लोगों का ख्याल है कि गांवों में जात-पांत और छूआछूत का बोलबाला है, इसलिए सामुदायिक विकास कार्यक्रम सफल नहीं होगा। उनका यह भी कहना है कि बेरोजगारी के कारण यहां सस्ते मजदूर बहुत मिलते हैं, इसलिए भारत में मशीनी खेती की गुंजाइश बहुत कम है। लिहाजा सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत यह व्यवस्था करनी होगी कि गांव के लोगों को पूरा काम दिया जाए। बेकारी की समस्या सभी पिछड़े देशों में है, अतः गांव सुधार के कार्यक्रमों में जनशक्ति का पूरा उपयोग करना चाहिए।

भारत में जमीन बहुत छोटे टुकड़ों में बंट गई है। साधारण किसान के पास इतनी कम जमीन है कि उस पर मशीनी खेती नहीं हो सकती। भारत के गांवों की यह भी समस्या है कि अधिकांश लोगों को केवल खेती के दिनों में काम मिलता है, बाकी समय वे बिल्कुल बेकार रहते हैं। साथ ही बहुत से लोगों को पूरा काम भी नहीं मिलता। इस स्थिति का कैसे मुकाबला कैसे किया जाय? गांवों की अपार जनशक्ति को, जो इस समय अधिकतर बेकार है, कैसे काम में लगाया जाए, जिससे आर्थिक लाभ हो और गांवों की हालत सुधरे? इस सवाल पर सामुदायिक विकास कार्यक्रम बनाने वालों को ध्यान देना चाहिए।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना : लक्ष्य और उपलब्धियां—१

योजना की प्रगति व नीति पर तीन दृष्टिकोण

श्री मोरारजी देसाई—

यदि हम नियोजित विकास चाहते हैं तो इसके लिए योजना आयोग नितान्त आवश्यक है और जहां तक योजना की आवश्यकता का प्रश्न है, इस पर अब दो मत नहीं रहे। यहां तक कि वे आलोचक भी, जो हमारे अपने देश में, या लोकतन्त्री दुनिया में कहीं भी नियोजन पर नाक-भौंह सिकोड़ते थे, अब बदल गये हैं। भारत की उपलब्धियों से वे बड़े प्रभावित हुए हैं और अनुभव करने लगे हैं कि गतिशील आर्थिक विकास के लिए आयोजन का होना अनिवार्य है।

योजना आयोग के योगदान को इसी दृष्टिकोण से देखना चाहिए। उसे देश की आवश्यकताओं को आंकना होता है और फिर विकास के लिए प्राथमिकताएं निर्धारित करनी होती हैं। तभी हम अपने सीमित साधनों से अधिकतम लाभ उठाते हुए कम से कम समय में आत्म निर्भर विकास का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

यथार्थवादी आयोजन के लिए यह आवश्यक है कि देश में जो कुछ हो रहा है, योजना-निर्माता उसका निरन्तर विश्लेषण करते रहें क्योंकि जो योजनाएं हम बनाते हैं, वे मंत्रालय के कामकाज पर उनका प्रभाव पड़ता है। यह देखना योजना आयोग का कर्तव्य है कि मंत्री लोग स्वीकृत योजनाओं के अनुसार ही कार्य करें और लक्ष्य सही ढंग से पूरे हों। अगर कोई मंत्रालय पीछे रह जाय तो आयोग को काम रुकने नहीं देना चाहिए, उसे प्रधानमंत्री से निर्देश अवश्य ही ले लेना चाहिए।

वस्तुतः योजना आयोग कभी भी कुशल माध्यम न होता अगर प्रधानमंत्री उसके अध्यक्ष अथवा वित्त, उद्योग और कृषि मन्त्री सदस्यों के नाते उससे सम्बन्धित न होते।

यह न भूलना चाहिए कि वित्तीय तथा आर्थिक मामलों के अतिरिक्त आयोजना के और भी उद्देश्य हैं। इसे सामाजिक और राजनीतिक लक्ष्यों की पूर्ति भी करनी होगी। उसके सामने देश की सामाजिक और राजनीतिक आवश्यकताओं की तस्वीर निरन्तर रहनी चाहिए। इसलिए योजना आयोग में कुछ ऐसे सदस्यों की आवश्यकता होती है जो राजनीतिज्ञ हों, हालांकि वे केवल मन्त्री ही हो सकते हैं। अन्य सदस्यों में विशेषज्ञ या तकनीशियन होने चाहिए।

दस वर्षों में योजना के जरिये बढ़ने की रफ्तार के बारे में भी कुछ बेसब्री पायी जाती है। हम आत्म-स्फूर्ति के चरण पर कब पहुँचेंगे? क्या गति को बढ़ाया जा सकता है?

विकास की वर्तमान स्थिति को देखते हुए मेरा विश्वास है कि दस वर्ष में हम आत्मस्फूर्ति के चरण पर पहुँच सकते हैं। इस सिलसिले में बेसब्री समझ में आती है, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि रफ्तार को बढ़ाना और आत्म-स्फूर्त दिशा में होने वाली प्रगति को तेज करना सुगम नहीं है। आर्थिक साधनों के मामले में—चाहे वे आंतरिक हों या बाहरी—उन्हें इस स्तर तक पहुँचना बड़ा कठिन होगा, जो कि तीव्र गति के लिए आवश्यक है। वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा करना अपने पर फालतू बोझ और दबाव डालना होगा। और, मेरे अपने विचार में तो इससे गति धीमी पड़ जायगी, बढ़ेगी नहीं।

## कृषि और भारी उद्योग

चतुर्थ योजना में प्राथमिकताओं के बारे में निरन्तर विवाद चल रहा है। ऐसी धारणा है कि कृषि की अपेक्षा भारी उद्योगों को भारी प्राथमिकता दी जा रही है।

परन्तु मैं आश्वस्त हूँ कि कृषि को भारी उद्योगों से कम प्राथमिकता नहीं दी गयी है। योजनाओं की जांच-पड़ताल करने पर सब मुझ से सहमत हो जायंगे।

कृषि की द्रुतगति से विकास की समस्या का समाधान यह नहीं कि उसके लिए बड़ी मात्रा में पैसा रख दिया जाय। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपने कृषकों में सही दर्जे का जोश भरें ताकि वे अधिक उपज के लिए आवश्यक श्रम और बुद्धि लगा सकें। न केवल कृषक वर्ग में, अपितु कृषि-सुधार से सम्बन्धित प्रत्येक व्यक्ति में अधिक सहकारिता की भावना भरनी होगी। जरूरत इस बात की है कि किसान को सुधरे हुए उत्पादन-उपाय



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाने के लिए सही दिशा और मार्गदर्शन देने के वास्ते सारी शक्ति लगा दी जाय।

कृषि में सुधार, अधिकतर उर्वरकों की उपलब्धि और सिंचाई सुविधाओं पर निर्भर करता है तथा इस पर भी कि मिट्टी की किस्म के सम्बन्ध में वैज्ञानिक परामर्श कितनी सुगमतापूर्वक प्राप्य हैं। जब तक हम भारी उद्योगों का निर्माण न करें, उर्वरकों के उत्पादन में प्रगति कैसे हो सकती है और हम पर्याप्त सिंचाई सुविधाएं तथा बेहतर कृषि उपकरण कैसे मुहैया कर सकेंगे?

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भारी उद्योग और कृषि का आपस में सम्बन्ध ही नहीं, वे एक दूसरे पर निर्भर भी हैं। इनकी प्रगति साथ-साथ होनी चाहिए। एक के हित का दूसरे के हित से कोई संघर्ष नहीं है।

## बेरोजगारी

मैं निराशा की उस भावना का उत्तर भी देना चाहूँगा जो इस धारणा से उत्पन्न हुई है कि हर योजना में रोजगार बढ़ते हुए अवसरों के बावजूद बेरोजगारों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पहली बात तो यह है कि जिन आंकड़ों से यह भावना उत्पन्न हुई है मैं उनकी पूर्णता के प्रति संतुष्ट नहीं हूँ। इन आंकड़ों में उद्योग और कृषि के विशाल असंगठित क्षेत्र शामिल नहीं होते, इसलिए इन पर पूरी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता।

जहां चाहे देख लीजिए, आप को जीवन की आवश्यकताओं पर अधिक खर्च नजर आयेगा। इसके अलावा आप यह भी देखेंगे कि जीवन की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हैं, चाहे यह वृद्धि बहुत कम ही क्यों न हो। इससे समृद्धि के बढ़ने की पुष्टि होती है। यह इस बात का सबूत है कि बेरोजगारी बढ़ नहीं रही।

यह मानना ही पड़ेगा कि लोगों को इतना रोजगार नहीं मिल रहा, जितनी उनमें काम की क्षमता है। आबादी बढ़ने के साथ उन लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, जिनके लिए रोजगार तलाश करने हैं। साथ ही हमें लाखों ऐसे व्यक्तियों के लिए रोजगार के हालात बेहतर बनाने हैं जो आंशिक रूप से काम करते हैं या जिन्हें उनकी जरूरत के मुताबिक रोजगार नहीं मिलता। इस दिशा में भी हमने निरन्तर सुधार किया है, हालांकि उसकी रफ्तार धीमी है।

आंशिक रोजगार की बड़ी समस्या को हम सिर्फ उसी के दायरे में नहीं देख सकते। हमें अपने साधनों के अभाव की पृष्ठभूमि में उसे देखना है। अन्य मामलों की तरह इस मामले में भी यह बुद्धिमानी नहीं कि हम बड़ी-बड़ी आशाएं लगायें। यह सच है कि आजादी के बाद हमने बड़ी-बड़ी उम्मीदें बांधी थीं कि गरीबी बड़ी तेजी से खत्म कर दी जाएगी। हमारी उपलब्धियों को समझने में यह उच्च अभिलाषाएं बाधक बन रही हैं। अच्छा यह है कि हम अपनी उपलब्धियों को कम आंकें और असफलताओं के प्रति सजग रहें। लेकिन उन्हें इस हद तक बढ़ाने से जिससे सुधार की हमारी कोशिशें रुकें, जनता में निराशा और कटुता उत्पन्न होगी।

अगर हमें राष्ट्र को अधिक फलवान भविष्य की ओर ले जाना है तो हमारे चिन्तन में निराशा और कटुता को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। हमें यथार्थवादी बनना होगा और जो कुछ प्राप्त किया गया है, उसे न तो बढ़ाकर न घटाकर आंकें। तभी हम तेज और अधिक बड़ी तरक्की के लिए श्रम को बढ़ावा दे सकेंगे।

अपने विकास में हमें यह सबक सीखना है। हो सकता है प्रारम्भ में हमें अपनी राष्ट्रीय आय (प्रति व्यक्ति) दुगनी करने में २० साल लग जायं। लेकिन उसके बाद उस आय को पुनः दुगनी करने में दस साल से भी कम समय लगेगा। इस बात को मन में रखें तो आप उपलब्धियों को सही रूप में समझ सकेंगे।

इसका यह मतलब नहीं कि अतीत में हमने गलतियां की ही नहीं। लेकिन वे जानबूझ कर नहीं की गयीं, न ही शासन के कर्णधारों की लापरवाही का परिणाम थीं। मूल कारण यह था कि सदियों की विदेशी गुलामी के कारण अवसर के अभाव में हमारा समाज अयोग्य विश्रृंखलित और काहिल हो गया था।

० ०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना के लक्ष्य और उपलब्धियां—२

## तीसरी योजना की शिथिल गति

एक ओर हम आर्थिक कठिनाइयों की चिन्ता कर रहे हैं, दूसरी ओर निश्चित लक्ष्यों से भी योजना की पूर्ति में अधिक खर्च हो रहा है। योजना आयोग के नये मूल्यांकन के अनुसार तीसरी योजना के अन्त तक पूर्व निर्धारित राशि से २०० करोड़ रु० अधिक खर्च हो जायगा? तीसरी योजना में राज्यों के क्षेत्र में ३८४७ करोड़ रु० व्यय का अनुमान किया गया था, किन्तु यह ४०२३ करोड़ रु० तक पहुँच जाने की संभावना की जा रही है। केन्द्रीय सरकार ने ही इस अतिरिक्त व्यय का भार उठाया है।

एक ओर व्यय बढ़ रहे हैं, दूसरी ओर उपलब्ध सफलताएं कम हो रही हैं। कृषि, बिजली व सिंचाई की उपलब्धियां आशा के अनुरूप नहीं हैं। निम्नलिखित तालिका से यह स्पष्ट हो जायगा—

### अतिरिक्त कृषि-उत्पादन

| | तीसरी योजना का लक्ष्य | १९६१-६२ | १९६२-६३ | १९६३-६४ | १९६४-६५ संभावना | १९६५-६६ संभावना |
|---|---|---|---|---|---|---|
| खाद्य (लाख टन) | २३६ | १७ | २९ | ८३ | १२७ | १९० |
| तिलहन " | ९८ | ६८ | ७० | ७० | ८४ | ९३ |
| गन्ना " | ९८ | १०० | ९४ | १०१ | १०३ | १०६ |
| कपास (लाख गांठें) | ७१ | ४५ | ५४ | ५५ | ५९ | ६४ |
| जूट " | ६१ | ६३ | ५४ | ५९ | ६४ | ६७ |

गुजरात, केरल और मैसूर में तो खर्च करीब-करीब वही हैं, जो निर्धारित किये गये थे। किन्तु निम्नलिखित राज्यों में खर्च अपने अनुमान से इस तरह बढ़ते जा रहे हैं—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आंध्र | २१ करोड़ रु० | पश्चिमी बंगाल | ५३ करोड़ |
| आसाम | १३ करोड़ रु० | मद्रास | ४२ करोड़ |
| उड़ीसा | ५९ करोड़ रु० | महाराष्ट्र | २५ करोड़ |
| उत्तर प्रदेश | २०करोड़ रु० | पंजाब | १५ करोड़ |

काश्मीर व जम्मू, बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान में खर्च अनुमान से कम हुए हैं। जिन क्षेत्रों में निर्धारित व्यय की अपेक्षा भी कम व्यय हुए हैं, वे हैं—सामुदायिक विकास व सहकारिता, सिंचाई, उद्योग व खनिज और समाज सेवाएं। बिजली तथा परिवहन व संचार में खर्च अनुमान से बढ़ गये हैं।

राज्यों ने निर्धारित आशा के अनरूप आय के साधन नहीं बढ़ाये हैं। बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश ने तो नये कर लगाकर जो आमदनी की है, वह आशाओं से बहुत कम है। वस्तुतः राज्यों ने बाजार से ऋण प्राप्ति से अनुचित आशाएं कर ली हैं। योजना में ऋणों से ३३२ करोड़ रु० प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ५२७ कररोड़ रु० ऋण लिया जायगा।

जैसा कि तालिका १ से स्पष्ट है कि अतिरिक्त कृषि

### विभिन्न क्षेत्रों में व्यय (करोड़ रु० में)

| क्षेत्र | तीसरी योजना का लक्ष्य | १९६१-६२ | १९६२-६३ | १९६३-६४ | १९६४-६५ | १९६५-६६ | १९६१-६६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृषि कार्यक्रम | ५५९ | ७२ | ८८ | ११८ | १६७ | १७४ | ६१९ |
| सामु० विकास व सहकारिता | ३७८ | ६२ | ६७ | ६३ | ७२ | ७७ | ३४१ |
| सिंचाई व बाढ़ | ६४१ | १०५ | ११३ | ११९ | १४५ | १४१ | ६२३ |
| बिजली | ८८२ | १३३ | १७१ | २४० | २७१ | २७७ | १०९२ |
| उद्योग व खनिज | २१५ | ३० | ३४ | ३६ | ५३ | ५० | २०३ |
| यातायात व संचार | २३८ | ४९ | ४७ | ५५ | ६७ | ६६ | २८४ |
| समाज सेवा | ८६१ | ११७ | १४६ | १५ | १९८ | २२४ | ८४० |

पहले तीन वर्षों के व्यय वास्तविक है और ४थे व ५वें वर्ष के संभावित।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना और उसके लक्ष्य—३

श्री दीन दयाल उपाध्याय

अन्न का अभाव आज हमारी सबसे बड़ी समस्या है—"अधिक अन्न उपजाओ" का नारा पिछले २० वर्षों से लगाया जा रहा है। प्रत्येक योजना के निर्माण के समय खाद्य में आत्मनिर्भरता का वायदा किया जाता है। हमारी राष्ट्रीय आमदनी का लगभग आधा खेती से मिलता है फिर भी योजना आयोग ने खेती को प्राथमिकता न देकर भारी उद्योगों को ही महत्व दिया। नीचे लिखे आंकड़े इस तथ्य को स्पष्ट करेंगे—

| | खेती, विकास करोड़ रु. | सामु. तथा सिंचाई कुल का प्रतिशत | उद्योग एवं यातायात करोड़ रु. | कुल का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| पहली योजना | ८१३ | ३४.७ | ९३७ | ३९.३ |
| दूसरी योजना | ९४० | २०.० | २०२० | ६२.० |
| तीसरी योजना | १७१८ | २३.० | ४२८२ | ५७.० |
| मध्यवर्ती जांच के आधार पर अनुमान | १७३८ | २१.२ | ५०२२ | ६१.२ |
| चौथी योजना | ३४०० | २१.८ | ८६०० | ५५.० |

प्रत्येक योजना में अनुभव यह रहा है कि खेती के लिए निर्धारित व्यय अन्त में कम हो जाता है तथा उद्योग धन्धों पर बढ़ जाता है। अतः चौथी योजना में भी खेती के लिये रखे गये वित्तीय लक्ष्य बाद में कम हो जायेंगे। इस रकम का भी बहुत बड़ा हिस्सा बड़े-बड़े बांधों, सामुदायिक योजना तथा अहलकारों पर खर्च होता है। फलतः प्रत्यक्ष किसान के पास खेती का विकास करने के लिये इस राशि में से शायद थोड़ा बहुत ही पहुँच पाता होगा।

निजी तौर पर भी किसान की पूंजी में कोई वृद्धि नहीं हुई है। पूंजी गांवों की ओर जाने के स्थान पर उल्टे शहरों की ओर जा रही है। सहकारी खेती के नारे ने किसान को अपने भविष्य के सम्बन्ध में अनिश्चित कर दिया है। सिंचाई के पुराने साधन मरम्मत के अभाव में बेकार हो गये हैं। छोटी योजनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया गया। बड़ी योजनायें या तो पूरी नहीं हुई या गृह और बम्बों के अभाव में किसान को उनका पानी नहीं मिल पाता। जहां मिला भी है वहां सुधार-कर या आबपाशी की बढ़ी हुई दरों का बोझ इतना अधिक है कि किसान उन्हें सहन नहीं कर पाता। तिस पर भी चौथी योजना में योजना आयोग किसानों पर नये टैक्स लगाने का विचार कर रहा है।

खेती, पशुपालन, वन तथा मत्स्यपालन से १९४८-४९ में ४२५० करोड़ रुपये आमदनी कूती गई थी। १९६२-६३ में इन मदों में ६९७० करोड़ रुपये की आमदनी का अनुमान है। यह वृद्धि मूलतः मूल्यों में वृद्धि के परिणाम स्वरूप है, क्योंकि १९४८-४९ के मूल्यों के आधार पर यह आमदनी केवल ५८०० करोड़ रुपये रह जाती है। जनसंख्या की वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं आया है, बल्कि उत्तरप्रदेश तथा बिहार आदि प्रान्तों में तो ग्रामीण क्षेत्रों की प्रति व्यक्ति आय नीचे आई है। हमारी अधिकांश जोतें छोटी एवं अनार्थिक हैं। इनमें खाने भर को भी पैदा नहीं

( शेष पृष्ठ १०२ पर )

उत्पादन का लक्ष्य २३६ लाख टन का था, किन्तु वह १९० लाख टन से अधिक होने की संभावना नहीं है और यदि रासायनिक खाद की कमी रही तो और भी अधिक कमी रहेगी। बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मैसूर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और बंगाल में तो लक्ष्य से करीब उत्पादन पीछे रहेगा। तिलहनों व कपास में कमी क्रमशः ५ व ७ लाख टन रहने की संभावना है।

योजना आयोग के अध्ययन मण्डल ने जिस एक कमजोरी का पता लगाया है, वह सिंचाई और उसके उपयोग के संबन्ध में है। योजना में १६२ लाख नये एकड़ों में सिंचाई की क्षमता का लक्ष्य रखा था, किन्तु ७९ लाख एकड़ में ही नई सिंचाई की क्षमता बढ़ेगी। इस सिंचाई का भी पूर्ण उपयोग नहीं हुआ। यही स्थिति बिजली की भी है। योजना आयोग के अध्यक्ष मण्डल के अनुसार ७० लाख कि० वा० बिजली के बजाय ५० लाख कि० वा० बिजली ही अधिक मिल सकेगी। अधिकांश राज्य बिजली के लक्ष्यों को पूर्ण नहीं कर सकेंगे।+

+ इकानामिक हाउस ९ मई ६५ में प्रकाशित समाचार के आधार पर।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पं० नेहरू का समाज दर्शन

श्री के. वी. रघुनाथ रेड्डी, संसद सदस्य

समानता, सामाजिक न्याय और सुरक्षा पर आधारित समाज के निर्माण के लिए नेहरू जी ने उस सामाजिक दर्शन की कल्पना की, जिससे समाज का कायापलट होगा और जिसमें राजनीतिक तथा आर्थिक शक्ति का उचित वितरण होगा। इस समाज दर्शन का अन्तिम लक्ष्य वर्गहीन समाज की स्थापना था, जिसमें सब लोगों को समान अवसर मिलेगा और परिवर्तन लोकतंत्री तरीके से शांतिपूर्वक किया जाएगा। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा—हमारा अन्तिम लक्ष्य केवल वर्गहीन समाज ही हो सकता है, जिसमें सब लोगों को आर्थिक न्याय और समान अवसर मिलेगा। एक ऐसा संगठित और योजनाबद्ध समाज, जिसमें मानवमात्र की आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति का प्रयास होगा, जिसमें सहकारिता, निःस्वार्थ भावना, सेवा की भावना और अच्छे काम करने की इच्छा तथा प्रेम और सद्भाव को प्रोत्साहन मिलेगा। अन्ततः यह व्यवस्था सारे संसार में लागू की जा सकती है। इसके मार्ग में जो बाधा आती है, उसे यदि संभव हो तो नरमी से अन्यथा बल प्रयोग द्वारा हटाना होगा।"

इस वर्गहीन समाज की स्थापना करने के लिए उन्होंने लोकतंत्र और समाजवाद के बुनियादी सिद्धांतों पर जोर दिया। इन दोनों के समन्वय को 'लोकतंत्री समाजवाद' या "समाजवादी लोकतंत्र" कहा जा सकता है। हमारे देश में समाजवाद की स्थापना, लोकतंत्र के माध्यम से की जानी है, तानाशाही उत्पीडन से नहीं। लोकतंत्री समाजवाद की संकल्पना, लोकतंत्र के औपचारिक समानता से, समाजवाद के आधीन सच्ची समानता में संक्रमण का प्रतिनिधित्व करती है।

## योजनाबद्ध विकास

नेहरू जी ने जिस योजनाबद्ध विकास की योजना की थी, उसका उद्देश्य ऐसे कार्यों को रोकना था, जिनके कारण गरीब और गरीब होते जाते हैं तथा अमीरों की समृद्धि बढ़ती जाती है। इसका लक्ष्य ऐसे कार्यों को

आर्थिक विकास के स्वप्न दृष्टा

पं० नेहरू

बढावा देना था, जिससे गरीबों को अपनी गरीबी से मुक्ति पाने में सहायता मिले तथा कुछ लोगों की सहायता में तथा कुछ लोगों के हाथों में आर्थिक सत्ता केन्द्रित न हो। इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा, "कुछ लोगों के हाथों में अत्यधिक आर्थिक सत्ता आ जाने से लोकतंत्र में शक्ति का संतुलन बिगड़ जाता है, समाज पर नये दबाव पड़ते हैं और नये तनाव पैदा होते हैं, जिससे सब लोगों को आर्थिक उन्नति का समान अवसर नहीं मिल पाता।" इसे रोकने के लिए उचित योजनाबद्ध विकास की आवश्यकता है।

## सामाजिक स्वामित्व

पण्डित नेहरू ने डिस्कवरी आफ इण्डिया में "सामाजिक स्वामित्व" के बुनियादी दर्शन की चर्चा इन शब्दों में की है—

"लोकतंत्री समूहवाद का अर्थ निजी सम्पत्ति की समाप्ति नहीं बल्कि बुनियादी और बड़े उद्योगों पर सार्वजनिक स्वामित्व होगा। इसमें भूमि पर सहकारियों का या सामूहिक स्वामित्व होगा। इस लोकतंत्र और लोक-

(शेष पृष्ठ १०२ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# महाराष्ट्र प्रगति के पथ पर

१९६० के मई में महाराष्ट्र के पृथक राज्य का निर्माण हुआ था। जब इसका पृथक अस्तित्व हुआ तब कुछ लोगों ने यह संदेह किया था कि महाराष्ट्र में उद्योग का विकास शायद बहुत अधिक न हो। किन्तु इन पांच वर्षों के प्रगति विवरण से यह शंका निराधार सिद्ध हुई है। उद्योग के क्षेत्र में महाराष्ट्र ने बहुत अधिक प्रगति की है। कुल देश में जितनी उत्पादक पूंजी लगी है, उसकी २३ प्रतिशत केवल महाराष्ट्र की है। वस्त्र उद्योग महाराष्ट्र का प्रधान उद्योग है। खाद्य उद्योग, बिजली की छोटी-बड़ी मशीनरी इंजीनियरिंग, पैट्रोलियम, चीनी, रबर, रासायनिक रंग आदि बीसियों उद्योग महाराष्ट्र में पनप रहे हैं। अब तक का विकास अधिकांश बम्बई और पूना नगरों तक सीमित रहा है। अब यह प्रयत्न किया जा रहा है कि महाराष्ट्र राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में ४४ उद्योग पुरियां बनायी जायं। ११ उद्योग पुरियां बन भी चुकी हैं, जिनमें १५१ उद्योगों के लिये शैड बना दिए गये हैं। महाराष्ट्र उद्योग विकास ने थाना, मारोल, बोसारी, जालना, अम्बर नाथ, औरंगाबाद और नासिक आदि अनेक नगरों में ६६१ प्लाट उद्योगों को दे दिए हैं। थाना क्षेत्र में ही ४८ कारखानों में उत्पादन शुरू हो चुका है और १४१ कारखानों का निर्माण हो रहा है। छोटे उद्योगों के विकास के लिए सरकार करोड़ों रुपया खर्च कर रही है। चीनी उद्योग का विकास महाराष्ट्र में बहुत महत्व प्राप्त कर रहा है। उसके लिए २० सहकारी समितियों को सरकार की ओर से करोड़ों रुपया दिया गया है।

महाराष्ट्र के सौभाग्य से बाक्साइट तथा अन्य अनेक खनिज पदार्थ भी राज्य में पाये जाते हैं। विदर्भ के क्षेत्र में नई कोयला खानों का पता लगा है। कांपती और वर्धा की खानों में कोयले का उत्पादन बढ़ रहा है। इसी तरह मैंगनीज और चूना आदि का उत्पादन भी बढ़ रहा है।

किसी क्षेत्र के औद्योगिक विकास के लिए बिजली का प्रसार बहुत जरूरी है। महाराष्ट्र राज्य इस दिशा में

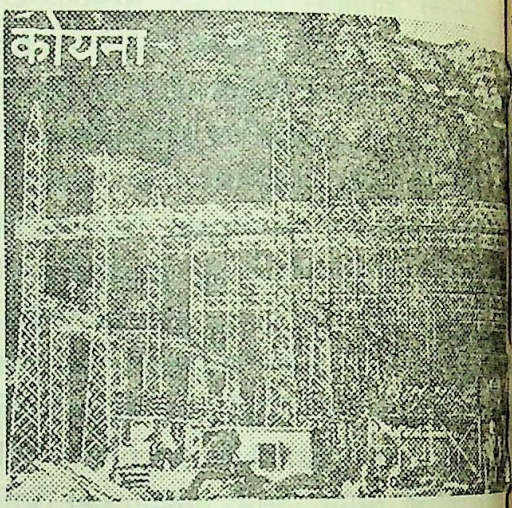


प्रगतिशील है। कोयना का बिजली घर बिजली की समस्या को एक सीमा तक दूर करेगा। नान्देड जिले में मनार कुंड की बिजली योजना जब पूरी हो जाएगी, ६०,००० किलोवाट बिजली मिलने लगेगी। २५ गांवों में बिजली आ चुकी है और यह ख्याल किया जाता है कि तीसरी योजना के अंत तक ३२०० गांवों में बिजली पहुँच जाएगी। पुरली, नासिक, कोयना (तीसरा चरण) और भाटगरवीर की योजनाएं भी विचाराधीन हैं। कुछ कार्य शुरू भी हो चुका है।

## कृषि व सिंचाई

महाराष्ट्र राज्य कृषि की दृष्टि से घाटे का राज्य है। आवश्यकताओं को देखते हुए वहां २२ लाख टन अन्न कम पैदा होता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए सरकार प्रयत्नशील है। कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि सिंचाई की व्यवस्था उन्नत हो। दूसरी योजना की अवधि में अनेक छोटी बड़ी सिंचाई योजनाएं शुरू की गई थीं। तीसरी योजना के लिए ६६ करोड़ रुपये की सिंचाई योजनाएं बनाई गई हैं। इनके पूर्ण होने पर २१.७५ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होने लगेगी। खड़कवासला और पनशेट के महत्वपूर्ण



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन रहे हैं। इसी तरह गिरना और मूला की सिंचाई योजनाएं भी संतोषजनक प्रगति कर रही हैं।

अनेक असुविधाओं और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद महाराष्ट्र में कृषि उत्पादन बढ़ रहा है। १९६०-६१ में ६४.७ लाख टन अनाज हुआ था। १९६३-६४ में ७७.१५ लाख टन हुआ। चीनी का उत्पादन इन तीन वर्षों में ६ लाख टन से बढ़कर ११.३१ लाख टन हो गया है। बड़ी नहरों और नदियों से खेतों तक पानी पहुँचाने की योजनाएं, कुएं, छोटे-छोटे तालाब गहरे खोदने, मिट्टी खोदने, कम्पोस्ट खाद बनाने आदि की योजनाएं चल रही हैं। भूमि संरक्षण के लिए भी उपाय किये जा रहे हैं।

## सहकारिता

सहकारिता के क्षेत्र में राज्य बहुत उन्नति कर रहा है। आजकल ९९ प्रतिशत गांवों में सहकारी समितियां बन चुकी हैं। १९६२-६३ में ३४५३७ समितियां थीं। एक वर्ष में इनकी संख्या बढ़कर ३५५५९ हो गयी। इनकी कार्यशील पूंजी ४७१ करोड़ रुपया थी।

आवास समस्या और विशेषकर श्रमिकों के लिए आवास समस्या बहुत महत्वपूर्ण होती है। तीसरी योजना में अब तक १९१८ मकान बन चुके हैं, जबकि योजना का कुल लक्ष्य ४२९७० मकान हैं। इसी तरह महाराष्ट्र राज्य के तीन भिन्न-भिन्न विभागों—पश्चिमी महाराष्ट्र, मराठवाड़ा और विदर्भ को परस्पर मिलाने के लिए सड़क निर्माण बहुत तेजी से हो रहा है।

शिक्षा, चिकित्सा तथा अन्य सामाजिक सेवाओं की दृष्टि से भी महाराष्ट्र राज्य बहुत प्रगति कर रहा है। छोटी बचत के लक्ष्यों को तो पूर्ण करने में महाराष्ट्र अन्य राज्यों के सामने आदर्श उपस्थित कर रहा है। पिछले तीन वर्षों में महाराष्ट्र राज्य में १२० करोड़ रुपये इस मद में एकत्र हुए हैं और प्रति वर्ष वह अपने लक्ष्यों को पीछे छोड़ता जा रहा है।

# उत्तर प्रदेश

## निर्यात में विविधता

अभी हाल ही में कानपुर में एक निर्यात प्रोत्साहन सम्मेलन किया गया था, जिसमें उत्तर भारत के राज्यों—उत्तरप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, जम्मू व काश्मीर, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भारत के निर्यात के ढांचे में विविधता लाने की जरूरत पर विचार करना था। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रवीन्द्रनाथ ने कहा कि विदेशी मुद्रा अर्जित करने में उत्तर भारत काफी योगदान दे सकता है। इस भाग में मोटरों के पुर्जों, साइकिलों और साइकिल के पुर्जों, बिजली के सामान, बर्तन, औजार, लाइट इंजीनियरी के सामान तथा मशीनों और मशीनों के पुर्जों आदि का यथेष्ट मात्रा में व्यापार होता है। राजस्थान और जम्मू-कश्मीर का ऊंचे दर्जे का दस्तकारी का सामान योरुप और अमरीका में बहुत लोकप्रिय है। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पंजाब के फल उद्योग के लिए भी विस्तृत बाजार उपलब्ध हो सकता है।

इस संदर्भ में उत्तरप्रदेश से दस्तकारी और हाथ के बुने कपड़े के निर्यात का विशेष महत्व है। इन वस्तुओं के द्वारा अर्जित कुल विदेशी पूंजी में अकेले उत्तरप्रदेश को ६० प्रतिशत के लिए श्रेय दिया जा सकता है। १९६४ में उत्तरप्रदेश से निर्यात हुए सामान (मूल्यवान आभूषणों को छोड़कर) का मूल्य १० करोड़ रुपए था। इस सामान में मुरादाबादी बर्तन, बनारस के रेशमी वस्त्र, फर्रुखाबादी प्रिंट आदि का मुख्य स्थान है। कालीनों का निर्यात मूल्य ही ३.२५ करोड़ था। चमड़ा और चमड़े का सामान निर्यात करने में भी उत्तरप्रदेश अन्य राज्यों से आगे है। १९६३-६४ में खालों, चमड़े, चमड़े के सामान और अन्य पशु-उत्पादनों का मूल्य १८ करोड़ था। उत्तरप्रदेश से टिनों में बन्द फलों, सब्जियों, खली, रसायनों, इत्र तथा चीनी का निर्यात भी होता है। डीजल इंजन, साइकिल, साइकिल के पुर्जे, घरेलू बिजली के सामान आदि का भी निर्यात में विशेष स्थान है।

इस बारे में यह ध्यान देने की बात है कि उत्तरप्रदेश समुद्री बन्दरगाहों से बहुत दूर है। फिर भी निर्यात के परिणाम उत्साहवर्धक रहे हैं। इसमें और भी आशातीत वृद्धि की जा सकती है। इसके लिए किसी स्थायी निर्यात संगठन की आवश्यकता है, जो बाजारों के बारे में यथेष्ट



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानकारी दे सके तथा अन्य सुविधाएं जुटाने में भी लघु-उद्योगों तथा कुटीर उद्योगों को समुचित योग दे सके।

## पूर्वी जिलों का पिछड़ापन

चौथे वित्त-आयोग से उत्तरप्रदेश सरकार ने केन्द्र से चालू वर्ष में अधिक वित्तीय सहायता तथा चतुर्थ योजना में भी बड़े हिस्से के लिए अनुरोध किया है। अन्य बड़े राज्यों के मुकाबले में उत्तरप्रदेश में जनसंख्या में वृद्धि की दर ऊंची है, प्रति व्यक्ति आय कम है और पहाड़ी इलाकों व पूर्वी जिलों का एक विशाल भाग अविकसित तथा पिछड़ा हुआ है। उत्तरप्रदेश सरकार के तर्क में एक कमजोरी यह है कि राज्य सरकार ने अभी तक करों, अदा न किए गए पिछले करों की वसूली तथा राजयकीय उद्योगों के लाभ की सम्भावनाओं को सही रूप से नहीं आंका और इसलिए इस राज्य को अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए साधनों की निरन्तर कमी महसूस होती है।

तीसरे वित्त आयोग ने विभाज्य कोष में से ८० प्रतिशत जनसंख्या के आधार पर और २० प्रतिशत राज्य में एकत्रित करके आधार पर देने का नियम बनाया था। उत्तरप्रदेश सरकार का कहना है कि हिस्सा देने का आधार केवल जनसंख्या ही होनी चाहिए, क्योंकि स्वास्थ्य व चिकित्सा, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा अन्य सुविधाएं राज्य को जनसंख्या के अनुसार देनी पड़ती हैं। इसलिए अधिक जनसंख्या वाले राज्यों को उसी अनुपात से हिस्सा मिलना चाहिए।

केन्द्रीय सरकार ने यह संकेत दिया है कि भारत सरकार इलाहाबाद के आसपास सरकारी उद्योगों-कम्प्रैसर प्लांट, भारी ढांचे और रेलवे फाउंड्री की स्थापना करना चाहती है। इसके अलावा चार पूर्वी ज़िलों देवरिया, आज़मगढ़, ग़ाज़ीपुर व जौनपुर के विकास में पूरी जिम्मेदारी भी भारत सरकार ने अपने ऊपर ली है।

# बिहार प्रदेश

## कोयला उद्योग की बाधाएं

कोयला उद्योग के तीन प्रमुख संगठनों ने, जो कि निजी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं उद्योग की कुछ कठिनाइयों और चौथी योजना के अन्तर्गत १२५ मिलियन टन के अस्थायी लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधाएं प्रकट की हैं। कहा गया है कि तीसरी योजना में भी कोयले के लक्ष्यों को अवास्तविक रूप से अधिक अनुमानित किया गया था। १९६४ में कोयले का उत्पादन ६३ मिलियन टन था, जो कि १९६५ के स्तर से ३ मिलियन टन कम था। फिर भी इसके लिए संतोषजनक मांग नहीं थी। इस तथ्य को देखते हुए चौथी योजना में १२५ मि० टन का लक्ष्य वास्तविकता की सीमा से सम्बन्धित नहीं लगता। घटते-बढ़ते अनुमानों को देखते हुए भारी निवेश करना और आकांक्षापूर्ण परियोजनाएं बनाना भी उचित नहीं लगता। इसलिए तीनों संगठनों के अध्यक्षों ने लक्ष्यों पर फिर से विचार करने का अनुरोध किया है, ताकि पिछली भूलों को सुधारा जा सके।

वर्तमान रेल ढुलाई की असुविधाओं की भी आलोचना की गई है। कोयला बाजार में विविध स्थानों पर जो कमी महसूस की गई, इसका मुख्य कारण रेल ढुलाई की सुविधाओं की कमी थी। ग्राहकों को वैगन एलाट करने का फल यह हुआ कि ढुलाई की क्षमता बेकार गई, क्योंकि कई व्यापारी वैगन इस्तेमाल ही नहीं कर सके। रेलवे को कोयले की ढुलाई से प्राप्त होने वाली आय को देखते हुए रेलवे को चाहिए कि कोयले की ढुलाई में ऐसी सुविधाएं प्रदान करे जिससे उत्पादकों तथा ग्राहकों को समान रूप से लाभ पहुँचे।

उद्योग की एक मांग मूल्य-ढांचे में आवश्यक संशोधन की है। सुरक्षा और कल्याण के बढ़े हुए खर्चों को देखते हुए वर्तमान मूल्य अनार्थिक हो गये हैं। यदि सरकारी उद्योगों की पूंजी पर १२ प्रतिशत का प्रतिफल उचित ठहराया गया है तो निजी कोयला-खानों को भी इस दर से लाभ अर्जित करने का अवसर देना चाहिए।

छोटी और घाटे की कंपनियों को समाप्त करने की विलीनीकरण की नीति भी हतोत्साहित करने वाली है। बजाए कानूनी कदम उठाने के ऐसी कंपनियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना अधिक लाभकारी होगा। इन कंपनियों की क्षमता को पूरी तरह प्रयोग करने की समस्या को वास्तविक ढंग से सुलझाना चाहिए। कोयला खान निगम तथा कच्चा कोयला बोर्ड की स्थापना का सुझाव भी दिया गया है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# इजरायल का आर्थिक विकास

इजरायल भारत के पश्चिम में जिसे आजकल मध्य पूर्व कहा जाता है एक छोटा सा राज्य है । इसका जन्म १४ मई १९४८ को अर्थात केवल १७ वर्ष पूर्व हुआ था। इस राज्य में न कृषि का विकास था न उद्योगों का। इसमें बसने वाले अधिकांश निवासी जर्मन आदि योरोपियन राज्यों से आये थे। यह यहूदियों का एक नया राज्य बन गया।

परन्तु १७ वर्षों में ही इसका कायाकल्प हो गया। उद्योग और कृषि क्षेत्रों में अद्भुत प्रगति हुई है। इजरायल का एक बड़ा उद्योग रसदार फलों (सन्तरा, माल्टा आदि) का है। इस उद्योग को विदेशों से आकर इजरायल में बस जाने वाले नये नागरिकों ने इन १७ वर्षों में बहुत विकसित किया है। अब करीब ७४ हजार एकड़ भूमि में यह बोया जाने लगा है और इसका क्षेत्र ७४४० एकड़ तक बढ़ाने का विचार है। डिब्बा बन्द फल के उद्योग को भी बहुत आधुनिक ढंग पर विकसित किया जा रहा है। लक्ष्य यह है कि इसके उत्पादन का ६७ प्रतिशत (१११००० टन) निर्यात किया जा सके।

उद्योग के क्षेत्र में भी इजरायल ने बहुत अधिक उन्नति की है। चुकन्दर, मूंगफली और कपास के उद्योग विकसित हो रहे हैं। चीनी के दो बड़े कारखाने बन चुके हैं और तीसरा कारखाना बन रहा है। तम्बाखू और मूंगफली के उत्पादन को बढ़ा कर उनके उद्योग के लिए कारखाने बनाये जा रहे हैं । तम्बाखू का उद्योग विशेषकर निर्यात की दृष्टि से बढ़ाया जा रहा है।

इजरायल में भेड़ों के पालन और ऊन उद्योग का विशेष विकास हो रहा है। ११ वर्ष पूर्व यहूदी अधिकृत क्षेत्र में केवल १९ हजार भेड़ें थीं। अब इनकी संख्या बढ़ कर १,२०,००० हो गयी है। भेड़ों के दूध का भी उत्पादन निरन्तर बढ़ रहा है । प्रति भेड़ से दूध का उत्पादन ५० लीटर की जगह २०० लीटर हो गया है। इसी तरह ऊन और मांस के उत्पादन पर भी ध्यान दिया जा रहा है। कुक्कुट-पालन का व्यवसाय भी बढ़ रहा है । इन १७ वर्षों में २३ करोड़ अंडों के बजाय ९५ करोड़ अंडे उत्पन्न हुए हैं, जो यूरोप से अच्छा पैसा प्राप्त करते हैं । १९६४ में अंडों के निर्यात से ६३.७ लाख डालर मिले हैं। समुद्रतट का भी उपयोग इजरायल कर रहा है। ११ वर्षों में मछलियों का उत्पादन २७०० टन से बढ़कर १३००० टन हो गया है । मछलियों के लिए बड़े-बड़े तालाब भी बनाए जा रहे हैं । मछली पकड़ने के जहाज १९४८ में ७७ थे और १९५७ में उनकी संख्या बढ़ कर १०९ हो गयी है।

इजरायल के उत्साही और अध्यवसायी नागरिकों ने निर्यात बढ़ाने पर विशेष बल दिया है । खाद्य द्रव्यों का निर्यात ही १९५८ में ८४ लाख डालर से बढ़ कर १९६३ में २९९ लाख डालर हो गया है और अभी निर्यात वर्धन की जो योजनाएं हैं, उनके अनुसार निर्यात १९७० तक कई गुना हो जायगा। १९६३ में कुल निर्यात ३४.९३ करोड़ डालर के थे। एक वर्ष में ये बढ़ कर ३६.९७ करोड़ डालर के हो गए।

## इंग्लैंड में लोहे उद्योग का राष्ट्रीयकरण

ब्रिटेन में मजदूर सरकार ने शासन सूत्र हाथ में संभालने के बाद लोहे के कारखानों को अपने हाथ में लेने का बिल पेश किया है। सम्पदा के पाठकों को शायद यह मालूम हो कि एक बार पहले भी मजदूर सरकार ने इस उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर लिया था किन्तु अनुदार सरकार ने आकर फिर इस उद्योग को निजी उद्योग बना दिया। अब इस सम्बन्ध में मजदूर सरकार ने श्वेत पत्र प्रकाशित किया है जिसे लोकसभा ने केवल चार के बहुमत से पास किया है । यदि यह विधेयक किसी तरह लोकसभा में रह जाता है तो लोकसभा को भंग करके पुनः चुनाव के द्वारा यह प्रश्न मतदाताओं के समक्ष रखा जायगा।

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर हैरोल्ड विल्सन के कथनानुसार निजी उद्योग की सबसे बड़ी विशेषता आपसी प्रतिस्पर्धा है। वह वर्तमान लोह उद्योग में समाप्त



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुकी है। इसलिए अब लोह उद्योग को निजी उद्योग के रूप में रखने का कोई लाभ नहीं है। इंग्लैंड के प्रतिरक्षा मन्त्री श्री डेनिस हीले के कथनानुसार ब्रिटिश सरकार का ४० करोड़ पौंड इस उद्योग में पिछले १०-१५ वर्षों में लगा है। यह रुपया लोह उद्योग के विस्तार के लिए सरकार ने दिया है। इस तरह वस्तुतः यह उद्योग आज भी सरकारी कोष पर निर्भर करता है। इसलिए इस उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर लेना चाहिए। श्री जोर्ज ब्राउन के कथनानुसार तो हमें इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्योग को कुछ थोड़े से व्यक्तियों के हित के लिए नहीं चलाना, किन्तु समस्त राष्ट्र के हित के लिए चलाना है।

श्वेत पत्र में कहा गया है कि राष्ट्रीयकरण से लोह उद्योग का विकास समस्त राष्ट्र को देख कर योजनाबद्ध रूप में किया जायगा, जिससे एक व्यक्ति ही नहीं, समस्त राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूरा किया जायगा। उद्योग के उन्हीं पहलुओं पर बल दिया जायगा, जो समस्त देश के लिए आवश्यक हैं। राष्ट्रीयकरण से उन लोगों की सेवाओं को भी उन्नत किया जा सकेगा, जो कच्चे माल के अनुसंधान में लगी हुई हैं।

अभी इंग्लैंड में सब (कुल २६०) कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण नहीं किया जायगा, केवल १४ बड़ी कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण किया जायगा, जो प्रायः सारे उद्योग पर छायी हुई है और जिनके हाथ में कुल लोह उत्पादन का ६० प्रतिशत होता है।

## चीन की अर्थ-व्यवस्था डांवाडोल

पिछले दिसम्बर में चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ-एन-लाई ने राष्ट्रीय जनवादी कांग्रेस (संसद) के समक्ष जो रिपोर्ट प्रस्तुत की, उसमें कहा गया है कि 'आलोच्य वर्ष में कृषि उत्पादन सर्वाधिक हुआ' अनाज, कपास, तम्बाकू, गन्ना, सुअर, भेड़ और अन्य खाद्य पदार्थों का उत्पादन १९५७ से कई अधिक हुआ। इसी तरह इस्पात, पेट्रोलियन, रासायनिक उर्वरकों, सीमेंट, मोटर गाड़ियों, सूती धागे, चीनी, सिगरेटों और अन्य प्रमुख औद्योगिक वस्तुओं का उत्पादन १९६४ में १९६३ से २० प्रतिशत बढ़ा। पर तथ्यों से दूसरी ही बात प्रकट होती है।

यह बात सच है कि इस वर्ष १९५७ से ५० लाख टन अधिक पैदावार हुई, पर इससे स्थिति में सुधार नहीं होता, क्योंकि चीन की आबादी १ करोड़ ४० लाख से लेकर २ करोड़ के हिसाब से प्रति वर्ष बढ़ रही है। विदेशों से बड़ी मात्रा में अनाज मंगाया जा रहा है। चीन के ८० प्रतिशत लोग खेती करते हैं, फिर भी चीन हर वर्ष अर्जेन्तीना, कनाडा, आस्ट्रेलिया और फ्रांस से चावल और जौ मंगाने पर ५० करोड़ डालर खर्च करता है। इस वर्ष भी चीन ने अर्जेन्तीना से १० लाख टन गेहूँ खरीदने का करार किया है।

चीन की लम्बी छलांग कार्यक्रम के ३ करोड़ ५० लाख टन इस्पात बनाने के लक्ष्य से बहुत कम अर्थात १ करोड़ टन (स्वयं घोषित) इस्पात पैदा हुआ है। योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री आई० पी० ने कहा है कि अच्छी किस्म का इस्पात तैयार नहीं हुआ और विभिन्न किस्म के इस्पात की भी कमी रही। इसका कारण रूसी इंजीनियरी के अचानक वापस चले जाने को बताया।

१९५८ से परिवहन की स्थिति निरन्तर बिगड़ती जा रही है। चीन के बारे में आज यह कहना विचित्र लगेगा कि जल मार्ग से जितना माल ढोया जाता है, उसका लगभग ६६ प्रतिशत और सड़क से ढोये जाने वाले माल का लगभग ७५ प्रतिशत पुराने किस्म की नावों, बेड़ों और पशुओं या मनुष्यों द्वारा खींचे जाने वाली गाड़ियों से ढोया।

आज चीन के शासक यह सोचने लगे हैं कि क्या चीन में टेका पद्धति और औद्योगिक क्षेत्र में सीमित स्वतंत्र बाजार को बने रहने की इजाजत दी जाए? और देश के जीवन में कम्युनिस्ट पार्टी का क्या स्थान हो? कितना नियन्त्रण होना चाहिए और नियंत्रण का अधिकार कम्युनिस्ट पार्टी को सौंपा जाना चाहिए या विशेषज्ञों को?

अब उनकी समझ में यह बात आ गयी है कि पिछड़ी हुई खेतिहर अर्थ-व्यवस्था को जादू की छड़ी घुमाकर आधुनिक औद्योगीकरण में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# श्रम की स्थिति व समस्याएं

श्री नैलकोटे

मैंने कभी ऐसा सुना और देखा नहीं कि संसार के किसी भाग में मध्यम वर्ग के लोग हड़ताल आदि की बात सोचें जैसा कि अभी हाल में जिवन बिमा निगम के गजटिड अधिकारियों, सरकारी स्कूलों के अध्यापक और डाक्टर लोगों तक ने हड़ताल की थी। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि सरकार उनकी ओर ठीक से ध्यान नहीं दे रही और उन्हें बाध्य होकर प्रदर्शन और हड़ताल के तरीके अपनाने पड़े हैं।

जब मध्यमवर्ग की स्थिति ऐसी है तब यह विचारणीय प्रश्न है कि मजदूर वर्ग की स्थिति क्या होगी जो कि देश के लिए वास्तविक सम्पत्ति का उत्पादन करते हैं। १९४७-४८ में वार्षिक राष्ट्रीय आय ३००० या ९००० करोड़ रुपये थी जो कि अब १५,००० करोड़ रुपये तक बढ़ गई है। यह सब मजदूरों और किसानों के ही परिश्रम का फल है। लेकिन इस बढ़ी हुई राष्ट्रीय आमदनी का वितरण उन्हीं मजदूरों और किसानों को नहीं किया जा सका है। अगर मजदूरों को राष्ट्रीय आय का अच्छा भाग दिया जाता तो मजदूरवर्ग का यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह राष्ट्रीय आय को अधिकाधिक बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हो। इस दशा में सुधार के लिए कितने भी प्रयत्न क्यों न हुए हों किन्तु यह सत्य है कि मजदूर और निम्नवर्ग इससे प्रभावित नहीं हो सका है।

उद्योगों में लगे हुए मजदूरों के लिए अब कुछ सुधार हो रहे हैं और कृषिगत मजदूरों से उनकी दशा अपेक्षाकृत कुछ अच्छी है। भारत की जनसंख्या के करीब २० प्रतिशत लोग भूमि हीन हैं और कृषिगत मजदूरी का कार्य करते हैं। इन मजदूरों को अभी तक किसी प्रकार का कोई लाभ नहीं हो सका है। इस वर्ग के लिए वेतन आदि की दरों का न तो निर्धारण किया गया है और न इन्हें अभी तक किसी प्रकार का लाभ ही हुआ है। अगर भूमिहीन मजदूरों को उचित मजदूरी नहीं दी जाती, तब वह अपने दुःख और दर्दों को लेकर कस्बे की ओर जाता है। प्रश्न उद्योग या कृषि का नहीं है, प्रश्न मजदूर की स्थिति का है चाहे वह कहीं काम करता हो। केन्द्रीय सरकार की यह नीति होनी चाहिए कि वह मजदूरों के कल्याण की ओर ध्यान दे जो कि कुल जनसंख्या का १।५भाग के करीब है। अगर कृषि मजदूर अपने मालिक के संबंध में कुछ शिकायत करना चाहता है तो उसे ८-९ मील दूर कस्बे में जाना पड़ता है। इस प्रकार एक ओर उसका समय और पैसा तो खर्च होता ही है, उस दिन की मजदूरी से भी उसका हाथ खाली रह जाता है।

## राष्ट्रीय आय के अनुपात में

राष्ट्रीय आय में वृद्धि हो रही है और यह भी अनुभव किया जा रहा है कि शक्ति कुछ ही हाथों में केन्द्रित होती जा रही है। समाजवादी अर्थव्यवस्था के साथ इसकी कोई संगति नहीं है। हमारे संविधान में बताया गया है कि शक्ति का कुछ हाथों में केन्द्रीयकरण नहीं किया जा सकता और धन का वितरण सभी में समान रूप से होना चाहिए, लेकिन आज सब इसके विपरीत हो रहा है।

सरकार की मूल्य नीति को लीजिए। मूल्य सूचक अंक अब नीचे आ रहे हैं और १५२ अंकित हो गये हैं लेकिन पिछले वर्ष अप्रैल में यह १४४ थे और इस वर्ष अप्रैल में करीब १६४ थे। यह जीवनगत व्यय में करीब १४ प्रतिशत की वृद्धि है। मंहगाई भत्ता और मजदूरी स्थायी रही है। कुछ उद्योगों एवं सरकारी क्षेत्र में कुछ प्रयत्न किये गये हैं, किन्तु वह पूर्ण नहीं कहे जा सकते। लेकिन उन उद्योगों के सम्बन्ध में क्या होगा, जहां किसी भी प्रकार की सुविधा ऐसे मंहगाई के युग में भी नहीं दी गई। अधिकांशतः ऐसे ही मजदूरों और उद्योगों की संख्या अधिक है। सरकार ने इस ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया है। जब मंहगाई बढ़ रही है, जीवनगत व्यय का स्तर बढ़ रहा है, इस वर्ग के लोगों का वेतन, मंहगाई आदि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ना भी आवश्यक हो गया है। सरकार ने इस दिशा में अभी तक न तो अपनी नीति की घोषणा की है और न कुछ किया ही है।

एक प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण बेकारी का आता है, जिससे कि मजदूर वर्ग अत्यन्त चिन्तित है। जनसंख्या बढ़ रही है। साथ ही अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। मजदूरों के लिए बनाये गये अस्पतालों में भीड़ बढ़ रही है। मजदूर स्त्रियां जन्म निरोध के उपायों को बर्तने के लिए तैयार दीखती हैं, किन्तु पुरुष इसमें बाधक हो रहे हैं। इसलिए सरकार को मजदूर वर्ग में भी इसके विशेष प्रचार पर भी ध्यान देना चाहिए।

## मजदूर संगठनों का मापदण्ड

मैं इस बात की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि मजदूर संगठनों का मापदण्ड संख्या में न होकर गुण और कार्य में होना चाहिए। इसलिए जो लोग सरकार से किसी भी रूप में सम्बद्ध हैं उन्हें विशेष रूप से इस ओर ध्यान देना चाहिए। उन मजदूर संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का साथ देते हैं और लोक तन्त्र में विश्वास करते हैं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार सभी के साथ एक समान व्यवहार की नीति दिखाना चाहती है। यह गलत है। सरकार को संगठनों के संख्या बल से नहीं उनके राष्ट्रीय हित की दृष्टि से किए गए कार्य की कसौटी पर कसना चाहिए। आज चीन और रूस परस्पर विरोधी हैं परन्तु कल वे एक हो सकते हैं और एक होकर फिर देश और सरकार के लिए समस्या पैदा कर सकते हैं।

## बोनस का विवाद

आज के विवादग्रस्त विषयों में से एक विषय बोनस कमीशन' की सिफारिशों के आधार पर प्रस्तावित बोनस विधेयक है। इस प्रश्न की पेचीदगी के कारण ही यह प्रश्न अब खटाई में पड़ा हुआ है और श्रम मंत्रालय इसे संसद में पेश करने से पूर्व इसके सभी पहलुओं पर विचार कर लेना चाहता है। भाग्य की बात यह है कि पहले जो सरकार औद्योगिक प्रश्न पर निस्संकोच होकर उद्योगपतियों के विरुद्ध मजदूरों का समर्थन किया करती थी, आज वह स्वयं पसोपेश में पड़ गई है क्योंकि पिछले वर्षों में सरकारी उद्योगों की संख्या लगातार बढ़ती गई है और विवादग्रस्त प्रश्नों पर सरकारी उद्योगों के प्रबन्धक भी मजदूरों का साथ न देकर उद्योगों का साथ देने लगे हैं। निजी उद्योग तो बलात किसी दबाव को सहन भी कर लें, किन्तु सरकारी उद्योगों की हानि तो स्वयं सरकार की हानि है।

प्रस्तावित सिफारिशों में लाभ और हानि का विवेक किये बिना वेतन का ४ प्रतिशत अनिवार्य रूपेण श्रमिक

(शेष पृष्ठ १०२ पर)

# भारत में हड़तालों से अधिक नुकसान

विश्व के चुने हुए देशों में औद्योगिक अशान्ति के कारण होने वाले मानव दिनों के नुकसान का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि भारत में हड़तालों तथा तालाबन्दियों के फलस्वरूप, अमेरिका को छोड़कर संसार में सर्वाधिक मानव दिनों का नुकसान हुआ है। हालांकि इटली तथा ब्रिटेन में औद्योगिक विवादों की संख्या भारत से कहीं अधिक थी, फिर भी वहां इतने मानव-दिनों का नुकसान नहीं हुआ जितना भारत में।

| | हड़तालों तथा तालाबन्दियों की संख्या | | | | | खोये गये मानव-दिनों की संख्या (लाखों में) | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| देश | १९५६ | १९५७ | १९५८ | १९५९ | १९६० | १९५६ | १९५७ | १९५८ | १९५९ | १९६० |
| अमेरिका | ३८२५ | ३६७३ | ३६९४ | ३७०८ | ३३३३ | ३३१ | १६५ | २३९ | ६९ | १९.१ |
| ब्रिटेन | २६४८ | २८५९ | १६२९ | २०९३ | २८३२ | २०.८ | ८४.१ | ३६.६ | ५२.३ | ३०.२ |
| कनाडा | २२९ | २४९ | २६२ | २१८ | २७४ | १२ | १६ | २८ | २२.८ | ७.३ |
| जर्मनी | — | — | — | — | — | १५ | १० | ७.८ | .६ | .३७ |
| फ्रांस | २४४० | २६२३ | ९५४ | १५१२ | १४९४ | १४ | ४१ | ११ | १९ | १०.६ |
| भारत | १२०३ | १६३० | १५२४ | १५३१ | १५५६ | ६९ | ६४ | ७७ | ५६ | ६५.१ |
| जापान | ६४६ | ८३० | ९०३ | ८८७ | १०६३ | ४५.६ | ५६.५ | ६०.५ | ६०.२ | ४९.१ |
| इटली | १९०४ | १७३१ | १९३७ | १९२५ | २४७१ | ४१ | ४६ | ४१.७ | ६१ | ५७.८ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# दूध की कमी : कारण और उपाय

आज हमारे सामने अनाज, कपास और गन्ना आदि बोने के क्षेत्र को बढ़ाने की समस्या इतनी नहीं है, जितनी प्रति एकड़ उपज बढ़ाने की। इसी तरह हमारे सामने दूध देने वाले पशुओं की संख्या बढ़ाने का प्रश्न भी नहीं है। भारत में पहले ही मवेशियों की संख्या बहुत अधिक है। १९६१ की जनगणना के अनुसार भारत में मवेशियों की संख्या २२.६८ करोड़ है, जिनमें से ५.११ करोड़ भैंसे हैं। किन्तु इनमें से केवल २.०७ करोड़ गौएं और १.२५ करोड़ भैंसें दूध दे रही हैं। भारत गोप्रधान देश है और गौ की माता के समान पूजा करता है, तथापि यहां दूध अमरीका और रूस से कम होता है यद्यपि भारत में जनसंख्या रूस और अमरीका दोनों से दुगुनी है। यदि मवेशियों की संख्या बढ़ाई जाय तो उनके चारे की समस्या भी हल करनी होगी, जो आज बहुत कठिन दीखता है। हमारे यहां एक गौ औसतन ४०० पौण्ड और एक भैंस १०७७ पौण्ड प्रति वर्ष देती है, जबकि अन्य देशों में प्रति पशु दूध की मात्रा बहुत अधिक होती है। नीदरलैंड में प्रति पशु औसतन उत्पादन ८५७६ पौण्ड, डेनमार्क में ७८४८ पौंड, इंग्लैंड और अमरीका में क्रमशः ६३९३ और ४४१२ पौंड दूध मिलता है।

भारत में प्रति पशु दूध की कमी के दो कारण कहे जाते हैं—एक तो घटिया नस्ल और दूसरे पौष्टिक भोजन का अभाव। करनाल की नेशनल डेरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट और इज्जतनगर की 'इन्डियन वैटरिनरी रिसर्च इन्स्टीट्यूट' की प्रकाशित रिपोर्टों से मालूम होता है कि हम तीन तरीकों से दूध का उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

१—शुद्ध बढ़िया नस्ल की संख्या को बढ़ाया जाय।

२—गांवों के पशुओं की नस्ल को अच्छे सांडों से उन्नत किया जाय।

३—भारतीय गौओं का विदेशी सांडों से मेल कराया जाय।

करनाल की इन्स्टीट्यूट में साहीवाल गौएं ५०० पौंड तक दूध देने लगी हैं। कई राज्यों में साहीवाल, थारपरकर, लाल सिंधी नस्ल के सांडों की मांग बढ़ रही है। भारत सरकार चौथी योजना में कृत्रिम गर्भाधान के बहुत अधिक केन्द्र खोल रही है, जहां बढ़िया नस्ल के सांड उपलब्ध हो सकेंगे।

हरे और अच्छे चारे की दुर्लभता भी दूध कम होने का बहुत बड़ा कारण है। सरकारी रिपोर्ट के अनुमान के अनुसार इस समय ६० करोड़ टन भूसा, २.६ करोड़ टन कड़वी और २.७ करोड़ टन खली आदि की कमी है। पिछले वर्षों में अनेक नये प्रकार के चारे तलाश किए गए हैं। परन्तु स्थिति अब तक भी संतोषजनक नहीं है। सरकारी परीक्षण अनुसंधान केन्द्रों से बाहर निकल कर गांवों में पहुँच नहीं सके हैं। फिर एक समस्या और भी है। अच्छे नस्ल की गौएं और भैंसें कलकत्ता और बम्बई में भेज दी जाती हैं और एक बार दूध सूखने पर कसाई घरों में भेज दी जाती हैं। इन दिनों में चारे का व्यय बहुत अधिक होता है और इस तरह प्रयत्नपूर्वक जो बढ़िया नस्ल हम तैयार भी करते हैं, वह नष्ट हो जाती है और उनके साथ अच्छी नस्ल के बछड़े भी।

बढ़िया चारा बनाने के नाम पर आज देश में केवल आनन्द में एक प्लान्ट है जो अन्तर्राष्ट्रीय भोजन और कृषि संगठन से मिला है। निकम्मी किस्म की नस्ल का उत्पादन रोकने की भी आवश्यकता है। इसके लिए गांवों में बहुत अधिक प्रचार किया जा सकता है। कमजोर मवेशी जितने अधिक होंगे, उतनी ही चारे की समस्या विकट होती जायगी। ● ●

## ईख में सब्जी

किसान ईख में सेम, मटर जैसी जल्दी तैयार होने वाली सब्जी बोकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें न तो ज्यादा खाद देने की जरूरत पड़ती है और न ही कोई विशेष निराई-गोड़ाई करने की। बल्कि ईख को हरी खाद मिल जाती है।

## अधिक उपयोगी खाद

फसलों को नाइट्रोजन देने के लिए कौनसा उर्वरक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा है इसके लिए मध्य प्रदेश के कृषि विभाग ने अमोनियम सल्फेट और यूरिया को विभिन्न फसलों में डालकर कुछ प्रयोग किये। इन प्रयोगों से पता चला है कि गेहूँ और धान के लिए ये दोनों उर्वरक एक जैसे अच्छे हैं। लेकिन ज्वार और कपास के लिए अमोनियम सल्फेट से यूरिया अच्छा उर्वरक है।

आम तौर पर फसलों में अमोनियम सल्फेट दिया जाता है, लेकिन यूरिया देना उससे अधिक फायदेमंद और सस्ता साबित हुआ है। यूरिया को पत्तियों पर छिड़का भी जा सकता है, जबकि अमोनियम सल्फेट को नहीं छिड़का जा सकता।

## फी हैक्टर ३,८५० रुपये की आमदनी

जिस जमीन में जौ और बाजरा की खेती करने पर लागत भी वसूल नहीं हो पाती थी, उसी जमीन में पहली बार संकर मक्का और गेहूँ को हेर-फेर कर बोने पर फी हैक्टर ७० क्विंटल पैदावार मिली, जिससे ३,८५० रु० की आमदनी हुई।

सतवारी गांव के ६३ वर्षीय किसान रंजीत सिंह ने महरौली विकास खंड के कार्यकर्ताओं की सलाह पर इसका प्रयोग किया। इन्होंने अपने खेत में फी हैक्टर साढ़े पांच क्विंटल अमोनियम सल्फेट, ५ क्विंटल सुपरफास्फेट और ७५ किलोग्राम म्यूरियेट आफ पोटास डाला। इन उर्वरकों के अलावा उन्होंने १२ ठेले (एक ठेले में ३ टन) ओखला खाद भी डाली। उन्होंने दो गोड़ाई की पहली अगस्त के दूसरे सप्ताह में और दूसरी सितम्बर के मध्य में। इसके अलावा फसल को छेदक कीड़े से बचाने के लिये उन्होंने एंड्रिन का छिड़काव किया।

अपने खेत में जोताई, उर्वरक, ओखला खाद, गोड़ाई तथा बीज आदि पर फी हैक्टर ७५० रुपये खर्चा किया था, जबकि उन्हें मक्का की फसल से फी हैक्टर २,६२५ रुपये आमदनी हुई।


यदि आप जानना चाहते हैं कि

सम्पदा

से आप क्या लाभ उठा सकते हैं ?
में कैसी उपयोगी सामग्री होती है ?
से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है ?

तो

दस नये पैसे के टिकट भेजकर
१९६४ की विषय सूची बुक
पोस्ट से मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

भारत की उद्योग नीति

*

लेखक :
प्रो. रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै.
"सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर,
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

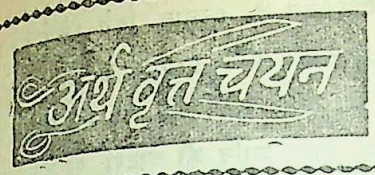


## सागरों की तलहटी में तेल की खोज

अभी तक भी शक्ति प्राप्ति के लिए मिट्टी का तेल और प्राकृतिक गैस बहुत बड़े स्रोत हैं। इसी कारण तेल विश्व की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भाग अदा करता आया है। आश्चर्य की बात यह है कि तेल सर्वत्र सुलभ नहीं है। रूस, मध्यपूर्वी मुस्लिम देश अथवा अमेरिका में ही अधिकांश तेल का उत्पादन होता है। अब भारत आदि अन्य देश भी इस विषय में कुछ प्रयत्न करने लगे हैं किन्तु ब्रिटेन और जर्मनी आदि देश तेल के अभाव के कारण बहुत चिन्तित रहे हैं। उन्हें तेल के लिए सदा विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है।

मनुष्य प्रकृति से पराजित नहीं होना चाहता। यदि इन देशों के भूमि-गर्भ में तेल नहीं मिला, तो भी वह निराश नहीं हो रहा। अब योरोप के अनेक देशों में यह अनुसंधान किया जाने लगा है कि यदि भू-गर्भ में तेल नहीं है तो समुद्र के गहरे तल में ही ड्रिलिंग (छेद) करके तेल निकालने का प्रयत्न क्यों न किया जावे। ब्रिटेन, डेनमार्क, हालैंड आदि देशों ने अलग-अलग या मिलकर उत्तरी समुद्र में स्थान २ पर ड्रिलिंग करना शुरू किया किया है। तेल और प्राकृतिक गैस की प्राप्ति के लिए अब करोड़ों रुपया खर्च किया जा रहा है। अनेक स्थानों पर छुट-पुट गैसें मिली भी हैं, लेकिन वे गैसें बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हुईं। फिर भी अनुसंधानकर्ता निराश नहीं हुए। जर्मन वैज्ञानिकों का विचार यह है कि समुद्र तल में १४ हजार फुट तक गहरा ड्रिलिंग करने पर अच्छी गैस मिल जाएगी। वस्तुतः विश्व की प्राचीन और आधुनिक भौगोलिक रचना में बहुत अन्तर आ गया है। बड़े २ भूखण्ड अब समुद्र बन चुके हैं और समुद्र भूखण्डों में परिणत हो गये हैं। बहुत सम्भव है कि नये बने हुए समुद्रों के नीचे बहुत मात्रा में तेल आज भी मिल जाए। वैज्ञानिकों की कल्पना में भूगर्भ में सुलभ तेल भी हजारों लाखों वर्ष पूर्व दब गये जलचरों के कारण उपलब्ध होता है।

जहां जितना गहरा ड्रिलिंग किया जाएगा, वहां उतना ही अधिक खर्च होगा। भूमि पर ड्रिल करने में २० पौंड प्रति फुट खर्च आता है। समुद्र में यह खर्च बहुत अधिक बढ़ जाता है क्योंकि बहुत ऊंचे स्टैंड बनाने पड़ते हैं और जहाजों का एक बड़ा प्लेटफार्म बनाना पड़ता है। इस पर ५० पौंड से १०० पौंड तक प्रति फुट खर्च आने की सम्भावना है। पाठकों को यह मालूम होगा कि भूमि पर जब १०० स्थानों पर ड्रिल किया जाता है, तब कहीं जाकर एक दो स्थानों पर काम का तेल अथवा गैस मिलती है। समुद्र गर्भ में ऐसी दुर्लभता और भी अधिक सम्भव है। फिर भी भविष्य की आशा में करोड़ों अरबों रुपया तेल के अनुसन्धान में खर्च हो रहा है। यह भारी परीक्षण कहां और कब तक सफल होंगे, यह आज नहीं कहा जा सकता, फिर भी प्रयत्न तो जारी ही हैं।

भविष्य की आशा से ही अब समुद्र तटवर्ती देश यह घोषणा करने लगे हैं कि उनके समीपवर्ती समुद्र में कोई दूसरा देश तेल निकालने का प्रयत्न नहीं कर सकेगा। कच्छ का तटवर्ती प्रदेश भी बहुत सम्भवतः इसी कारण पाकिस्तान का आकर्षण बन रहा है।

## कुवेत : पृथ्वी का स्वर्ग

पृथ्वी पर कई स्वर्ग हैं। झीलों का देश काश्मीर और हिम से ढका स्विटजरलैंड अब तक इनमें मुख्य थे। मगर अब सबसे पिछड़े और सूखी रेती से भरे कुवैत का नाम भी उनमें जुड़ गया है, जहां के ३५ लाख व्यक्तियों में से औसतन प्रति व्यक्ति की वार्षिक आय एक लाख रुपया है। वहां शिक्षा, चिकित्सा और टेलिफोन ये चीजें सबके लिए मुफ्त हैं। यही देश है, जहां एक वृक्ष को हरा-भरा रखने के लिए ६५० रु० सालाना खर्च किये जाते हैं। इससे आधा धन भी हम भारतवासी एक इन्सान को जिन्दा रखने के लिए खर्च नहीं कर पाते।

—नवनीत से

## देश के तेल शोधक कारखाने

१९६५ के मध्य तक बरौनी तेल शोधक कारखाने का



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० लाख मी० टन शोधन क्षमता का दूसरा संयंत्र और मिट्टी का तेल तैयार करने का खाता चालू हो जाएगा। चिकनाई तेल संयंत्र सितम्बर १९६५ के अन्त तक चालू हो जाएगा।

## कोयली

अनुमान है कि गुजरात के इस तेल शोधक कारखाने का पहला भाग अगस्त, १९६५ तक पूरा हो जायगा और इसमें १० लाख मी० टन तेल साफ करने की क्षमता का संयंत्र लग जाएगा। कारखाने का दूसरा चरण १९६५ के अन्त तक पूरा हो जाएगा और १० लाख मी० टन शोधन क्षमता का दूसरा संयंत्र लग जाएगा।

## गुवाहाटी

इस कारखाने की शोधन क्षमता ७ लाख ५० हजार मी० टन से बढ़ाकर १० लाख मी० टन प्रति वर्ष करने के सुझाव पर विचार किया जा रहा है। यह कारखाना १ जनवरी, १९६२ को चालू हुआ था और इस समय यह पूरी क्षमत ासे काम कर रहा है। जनवरी से दिसम्बर १९६४ में इसमें ६८२,०३० मी० टन तैयार माल बना।

## कोचीन

अनुमान है कि यह कारखाना १९६५ के अंत तक पूरा हो जाएगा।

## मद्रास

अनुमान है कि यह कारखाना १९६७ के मध्य तक पूरा हो जाएगा और १९६८ तक इसमें पूरा उत्पादन होने लगेगा। यह कारखाना नेशनल ईरानियन तेल कम्पनी और अमेरिकन इन्टरनेशनल आयल कम्पनी की सहायता से बनाया जाएगा। इस कारखाने की शोधन क्षमता २५ लाख मी० टन होगी।

हलदिया (बंगाल) में भी १९६८ के मध्य तक एक तेल शोधक कारखाना लगाने का विचार है।

१९६४ में देश के निजी क्षेत्र के तेल शोधक कारखानों में लगभग ८० लाख मी० टन तेल साफ हुआ।

## संसद् का बजट अधिवेशन

संसद् का बजट अधिवेशन समाप्त हो गया। १८ फरवरी को रेलवे बजट और २७ फरवरी को केन्द्रीय बजट पेश किया गया। रेलवे बजट में भाड़ों और किरायों में कुछ वृद्धि का प्रस्ताव था तो केन्द्रीय बजट में कुछ करों में कमी और परिवर्तन के प्रस्ताव किये गये थे। ५ मार्च को वित्त मंत्री ने लोहे और इस्पात के कुछ पदार्थों पर उत्पादन कर में कुछ परिवर्तनों की भी घोषणा की। १ मई को टीन, ताम्बे आदि की चादरों पर कुछ रियायत की घोषणा की गई और पैट्रोल के कुछ तेलों पर उत्पादन कर में वृद्धि की गई और कुछ को अतिरिक्त कर से छूट दी गई। ३ मई को कुछ उद्योगों को २५ प्रतिशत विकास की छूट दी गई और टैक्स क्रेडिट सर्टीफिकेट जारी करने तथा हिन्दू परिवारों को सम्पत्ति कर से उनके नये उद्योगों पर विनियोजन में छूट की घोषणा की गई। बोनस शेयरों पर होने वाले पूंजी गत लाभ पर कर में कमी की भी घोषणा की गई। कारपोरेट टैक्स को भी सरल बनाने तथा भविष्य में साधारण व्यक्तियों के लिए पैन्शन योजना पर विचार करने आदि के भी वचन दिए गये।

कृषि मंत्री ने इस अधिवेशन में एग्रीकल्चरल क्रेडिट बैंक की स्थापना का आश्वासन देते हुए यह कहा कि ज्योंही अनाज का भंडार पर्याप्त हो जायेंगे, क्षेत्रीय विभाजन समाप्त कर दिया जाएगा। यातायात और परिवहन मंत्री ने यह वचन दिया कि मोटर उद्योग पर असर डालने वाले विभिन्न करों पर भी विचार किया जाएगा। श्रम मंत्री ने इस अधिवेशन में आशा के विपरीत बोनस विधेयक पेश नहीं किया। सरकारी कर्मचारियों की वेतन वृद्धि (महंगाई) की घोषणा भी इस अधिवेशन में की गई। उद्योग मंत्री ने बताया कि सरकार आगामी ५ वर्षों में ५० सूती मिलें खोलने का इरादा रखती है, जिनमें से ३० सहकारी क्षेत्र में होंगी।

संसद के इस अधिवेशन में आय कर कानून को काफी बदल दिया गया है। इसके द्वारा आय कर अधिकारियों को अधिक अधिकार दिये गये हैं। कुछ समय पहले यह अधिकार एक अध्यादेश द्वारा दिये गये थे।

इस अधिवेशन में जो महत्त्वपूर्ण रिपोर्टें पेश की गईं, उनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. कलकत्ता और हल्दिया के बन्दरगाह।
२. इण्डियन कौंसिल आफ एग्रीकल्चरल रिसर्च।
३. सैन्ट्रल ऐरिडजोन रिसर्च।
४. लेखा आकलन समिति ने भी रक्षा सेवाओं, जीवन बीमा निगम, इन्डस्ट्रियल फाइनैन्स कारपोरेशन के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्टें पेश की।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# चरखे से कताई की दर दुगनी

शोषण बड़े संगठित उद्योगों में ही नहीं छोटे कुटीर उद्योगों में भी होता है। खादी तक के उद्योग में भी लोग शोषण को देखने लगे हैं। खादी में अब तक भी कातने वालों को बहुत कम मजदूरी मिलती है। आचार्य विनोबा ने अत्यन्त खेदपूर्वक यह कहा था कि खादी द्वारा भी शोषण हो, यह हमारे लिए बहुत शर्म की बात है। गांधीजी ने 'जो काते सो पहने और जो पहने सो काते' का सूत्र देकर शोषण मुक्ति और शासन मुक्ति का मार्ग बताया था। किन्तु यह सूत्र व्यावहारिक नहीं था। न लोगों को चर्खे पर इतनी श्रद्धा है और न सुविधा कि वे चर्खे पर घंटा भर सूत कातें। वे खद्दर अवश्य पहनते हैं और खादी उद्योग का यह कर्तव्य है कि वह उनकी मांग को पूरा करे।

किन्तु खद्दर सबकी पहुँच में हो, इसके लिए यह भी आवश्यक है कि खद्दर का मूल्य बहुत न बढ़ने पावे और मूल्यवृद्धि को रोकने के लिए पारिश्रमिक पर भी नियंत्रण आवश्यक है। किन्तु दूसरी ओर आज के महँगाई में बहुत कम मजदूरी देना भी अन्याय होगा। इसलिए मूल्य वृद्धि की चिन्ता न करते हुए भी खादी समिति और सर्वसेवा संघ ने यह निश्चय किया है कि पुराना चर्खा कातने वालों को आठ घंटे की महनत के लिए कम से कम एक रुपया मिल जाय, ऐसी दर रखनी चाहिए। आचार्य विनोबा के कथनानुसार एक परिवार के पांच सदस्यों को कम-से-कम १५० रु० प्रति मास अवश्य मिलना चाहिए। आठ घंटे काम करने पर एक व्यक्ति को तीन रुपया तो मिलना ही चाहिए। फिर भी एक रुपये की दर पर देने से कुछ-न-कुछ तो लाभ होगा ही। फिलहाल यही सही।

इससे खद्दर के मूल्य बढ़ जाएँगे, इसकी आचार्य विनोबा को कोई चिन्ता नहीं है। वे कहते हैं कि विकास-शील अर्थ योजना में वस्तुओं के भाव बढ़ते ही हैं। हम तो चाहते हैं कि हर चीज के भाव बढ़े, हर चीज का मूल्य ऊँचा हो और सबसे बढ़कर मानव का मूल्य ऊँचा हो। मानव का मूल्य न हो और दूसरी चीजों के भाव बढ़ें तो उसमें खतरा है।

देखना यह है कि खादी के मूल्यों में इस वृद्धि का व्यवहारतः क्या परिणाम होगा। खादी के मूल्य कितने प्रतिशत बढ़ेंगे और उसका कितना बोझ सरकार स्वयं उठाएगी और कितना बोझ ग्राहक की जेब पर पड़ेगा।

## सर्वसेवा संघ के प्रस्ताव

सर्वसेवा संघ का अधिवेशन वर्धा में हो गया। इसमें आचार्य विनोबा भी स्वयं सम्मिलित हुए थे। इस अधिवेशन में शान्ति सेना, ग्रामदान, भारत पाकिस्तान सम्बन्ध, भाषाई समस्या आदि पर गम्भीर विचार हुआ। वहां अभिनव ग्रामदान और ग्रामाभिमुख खादी और शान्ति सेना के गठन पर भी अधिक विचार किया गया। चर्खे की कताई में वृद्धि करने का प्रशंसनीय कदम भी उठाया गया, जिसकी चर्चा हम ऊपर कर आये हैं।

एक प्रस्ताव में उपर्युक्त त्रिविध कार्यक्रम की प्रगति की चर्चा करते हुए कहा गया है कि 'लेकिन अभी लम्बी मंजिल तय करनी बाकी है। देश के लाखों गाँवों में ग्राम स्वातन्त्र्य के बीज डालने हैं, यह कोशिश करनी है कि भारत की सुप्त जनता में त्रिविध कार्यक्रमों द्वारा क्रान्ति की नई चेतना आये और वे स्वयं अपनी प्रेरणा तथा पुरुषार्थ से नये जीवन का निर्माण करें। ● ●

## मशीन के विरुद्ध सत्याग्रह

राजस्थान में झुंझनू के अन्तर्गत देवरोड में पत्थर तोड़ने की क्रेशर मशीन लगाई गई थी। इस पर पत्थर तोड़ने वाले मजदूरों ने एक सत्याग्रह किया। जिलाधीश के हस्तक्षेप के फलस्वरूप यह सत्याग्रह उठा लिया गया है, क्योंकि मशीन मालिक ने मशीन उठा लेने का वचन दिया है। नई मशीनरी के विरुद्ध गांवों में सत्याग्रह का यह एक उदाहरण है। यदि इस आन्दोलन ने कुछ भी बल पकड़ा तो कस्बों में तेल पेलने, चावल कूटने तथा आटा पीसने की मशीनों के वरखिलाफ भी स्थानीय जनता कोई कदम उठा सकती है। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारतीय उद्योगों में विदेशी पूँजी

(पृष्ठ २६६ का शेष)

हमारे व्यापार पर एक भारी चोट होगी।"

"ग्रेट ब्रिटेन ने अपने साम्राज्य के विस्तार और अनेक देशों को अपने अधीन रखने के लिए जो अमित व्यय किये हैं, उनका मुख्य उद्देश्य—और सचमुच केवल एक मात्र उद्देश्य व्यापार का एकाधिकार प्राप्त करना रहा है।" (वैल्थ आफ नेशन्स पृष्ठ ५८०)

सुदूर पूर्व में ब्रिटेन की नीति राज्य विस्तार की नहीं, अपने व्यापार को सुरक्षित रखने की रही है। (आर्थर डब्ल्यू, जोस द्वारा लिखित दी ग्रोथ आफ दी ऐम्पायर पृष्ठ ४०७)

गलती तो सभी से होती है, लेकिन मूर्ख लोग ही उन्हें बार-बार करते हैं। जिस तरीके से भारत सरकार पर्दे के पीछे-पीछे भारतीय उद्योगों में विदेशियों को बहु संख्यक शेयर देने पर सहमत हो गयी है, उससे यह संदेह होता है कि भारतीय नेताओं ने विदेशियों के व्यापारिक मनोभावों को समझा भी है या नहीं। सुदूरवर्ती गंभीर परिणाम पैदा करने वाले मामलों में हम लोग बहुत हलकेपन से निर्णय करते हैं। वे उन लोगों पर बार-बार विश्वास करते हैं, जो मित्र का बाना पहन कर आते हैं और हमें बार-बार धोखा देते हैं। भारतीय नेता अपने भोलेपन से या जानबूझ कर यह विश्वास करना चाहते हैं कि व्यापार व उद्योग में विदेशियों के बहुसंख्यक शेअर भारत को और भारतीय भूमि पर उनका पैर जमाने—राजनीतिक दृष्टि से पराधीन करने में सहायक नहीं होंगे। दुख की बात यह है कि भारतीय नेता न केवल जनता को अपनी बात मनवाना चाहते हैं बल्कि यदि कोई इसके विरुद्ध आवाज उठाता है तो उसे दबाना भी चाहते हैं। वे विदेशों के व्यापारिक हितों को भारतीय जनता के लिए हितकारी बताने के लिए अतीत काल से अपनी आंखें मूंदना चाहते हैं। ऐसे लोगों का वहम दूर करने के लिए हम एक दूसरे अंग्रेज लेखक की सम्मति देना चाहते हैं और यह आशा करते हैं कि इससे उनकी यह गलत फहमी दूर हो जायेगी। बारबारा वार्ड अपने 'इन्टरनेशनल शेअर आडिट' में लिखते हैं कि "प्रारम्भिक विनियोजन और प्रारम्भिक बस्ती दोनों में एक समानता है कि इनका परिणाम किसी क्षेत्र पर राजनैतिक प्रभुत्व के नियंत्रण की स्थापना होता है।" श्री आर्थर जोस अपनी पूर्वोक्त पुस्तक में लिखते हैं कि ब्रिटेन ने अपने प्रभाव, अपनी प्रकृति, अपने स्वभाव और स्थितियों के कुशलतापूर्ण अध्ययन के द्वारा सदा अपने मूल उद्देश्य का ध्यान रखा है। इस उद्देश्य से उन्होंने नयी बस्तियां बसाई हैं, नये राज्य बसाए हैं और नये राष्ट्रों का निर्माण किया है। उसने राजनीति की विविध नीतियों और सिद्धांतों का सिर्फ अपने लिए उपयोग किया है। सरकारी सहायता उसकी दृष्टि में उसकी एक विशेष योजना के लिए सरकारी कोष से रुपये का विनियोजन है। सरकारी नियंत्रण उसकी दृष्टि में अपने से कमजोर प्रतिस्पर्धी का दमन है। हम साम्राज्य निर्माताओं की जाति हैं और उसकी रक्षा करना हमारा कार्य है।"

कुछ समय पहले 'इन्टरनेशनल चेम्बर आफ कामर्स' की ओर से एक मंच पर भारतीय उद्योगों में विदेशियों को बहुसंख्यक शेयर देने के विचार का समर्थन किया गया था। इसके प्रारम्भिक अधिवेशन में अमेरिकन प्रतिनिधियों के नेता आर्थर के० वाटसन ने कहा था कि भारत में पूंजी निवेश की सबसे बड़ी बाधा यह है कि भारत सरकार संयुक्त उद्योगों में भारतीयों के बहुसंख्यक शेयर के सिद्धांत पर आग्रह करती है। पूंजी ऐसी लचकीली वस्तु है, जिधर अधिक आकर्षण होता है वह उधर ही चल जाती है। श्री वाटसन ने इसके बाद विदेशी विनियोजकों को भारत सरकार द्वारा 'लैटर्स आफ इंटेंट' जारी करने पर संतोष प्रगट किया था।

१२ फरवरी १९६५ को शासन प्रबन्ध में जीवनी शक्ति' के सम्बन्ध में एक गोष्ठी नयी दिल्ली में हुई थी। इसमें अमेरिकन विशेषज्ञ श्री एमरी० ई० आल्सन ने शासन प्रबन्ध को अधिक संगठित करने में परामर्श देने के लिए विदेशी विशेषज्ञों को बुलाने की सलाह दी थी। क्या इससे स्पष्ट नहीं होता कि विदेशी अपनी निश्चित नीति के अनुसार चलना चाहते हैं।

भारत में औद्योगिक विकास अभी शैशव में है। उसके विकास को रोकने के लिए सबसे आसान तरीका यह है कि इस पर विदेशी अपना नियंत्रण कर लें और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उनके अपने देश के हित में हो वे अपने कारोबार को भारत में सिमेंट लें और इस तरह भारतीय उद्योगों को बिलकुल पंगु बना दें।

भारत सरकार की विदेशी उद्योगपतियों को बहुसंख्यक शेअर लेने की अनुमति देने से यह संदेह होता है कि सरकार विदेशियों की शक्ति को हमारे देश में बढ़ाना चाहती है। यदि ऐसा है तो भारत की उद्बुद्ध जनता इस प्रकार के समझौतों को कभी भी स्वीकार नहीं करेगी।

[भारतीय उद्योगों में विदेशी पूंजी के सम्बन्ध में यह एक दृष्टिकोण है। इसके विरुद्ध दूसरा पक्ष यदि कोई लेखक रखना चाहेंगे तो उसे सहर्ष सम्पदा में स्थान दिया जायगा। सं०]

## तालिका—१

नई और चालू स्कीमों में विदेशी सम्पत्ति

उद्योग क्रम से (मिलियन रुपयों में)

| औद्योगिक ग्रुप | कुल प्रोजैक्ट कीमत | विदेशी सम्पत्ति जो लगी है | प्रत्येक उद्योग में कुल संपत्ति का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| लोहा और स्पात | १३७.० | ३८.७ | १२.४ |
| मशीनों के पुर्जे | २२.० | ११.१ | ३.६ |
| बिजली की मशीने, सामान | | | |
| यन्त्र और बिजली का सामान | १०१.४ | ३८.४ | १२.३ |
| मेकेनिकल मशीनरी तथा सामान | १५६.५ | ४६.२ | १४.८ |
| रसायन तथा रंगरोगन | ४३.२ | २२.२ | ७.२ |
| दवा और औषधें | ४५.५ | ६.२ | २.६ |
| रबड़, प्लास्टिक तथा कागज़ उद्योग | २७.६ | १२.६ | ४.१ |
| फैरमिक्स तथा कांच | ४२.६ | २६.७ | ८.६ |
| पैट्रोलियम उत्पादन तथा पैट्रोकैमीकल यन्त्र | २२८.५ | ७०.६ | २२.६ |
| परामर्श इन्जीनियरिंग तथा अन्य सेवाएं | ३.६ | १.० | ०.०३ |
| अन्य उद्योग | १०.२ | ४.१ | १.३ |
| | १२५.० | ३१.७ | १०.२ |
| कुल | ६१५.४ | ३१२.५ | १००.०० |

## तालिका—२

विदेशी सहयोग (देश के क्रम से)

| देश | लगा हुआ धन (मिलियन रुपयों में) | कुल का प्रतिशत |
|---|---|---|
| ब्रिटेन | १३०.५ | ४१.७ |
| अमरीका | ६५.१ | २०.२ |
| पश्चिमी जर्मनी | ५३.६ | १७.२ |
| स्विटजरलैंड | १५.८ | ६.० |
| फ्रांस | ८.१ | २.८ |
| जापान | ४.५ | १.४ |
| स्वीडन | ३.६ | १.१ |
| अन्य | ३०.२ | ६.६ |
| कुल | ३१२.५ | १००.० |

इन तालिकाओंमें विदेशियों को बहुसंख्यक शेयर प्राप्त नहीं है।


# रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योगवाशिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० ।. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

★

श्री रामतीर्थ योगआश्रम, बम्बई-१४




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**बिना पैसे दुनिया का पैदल सफर**—लेखक—श्री सतीश कुमार । प्रकाशक—सर्व सेवा संघ राजघाट, वाराणसी । पृष्ठ संख्या—३२५ मूल्य ३.५० रु० ।

आज के वैर व द्वेष और हिंसा के युग में भी जिन यात्रियों को यह अनुभव हुआ है कि इंसान हर जगह इंसान है, उसके दिल में हर इंसान के लिए प्रेम है, सहानुभूति है और हर्द है ऐसे दो यात्रियों की बहुत लम्बी यात्रा का सुन्दर और रोचक वर्णन इस पुस्तक में मिलेगा । इस यात्रा की दो बहुत बड़ी विशेषताएं थीं, जिन्होंने इस यात्रा को और भी साहसपूर्ण और रोचक बना दिया । एक तो यह यात्रा पैसा लिये बिना शुरू की गई और दूसरी विशेषता यह थी कि इस यात्रा में किसी सवारी का प्रयोग नहीं किया गया । हजारों मील की इस पैदल यात्रा में सवा दो वर्ष व्यतीत हुए हैं । बापू की समाधि से शुरू होकर अमरीकन राष्ट्रपति कनेडी की समाधि पर यह यात्रा समाप्त हुई । इस यात्रा में उन्होंने बहादुर पठानों, लम्बे चौड़े कजाकों और परस्पर संदेह और अविश्वास करने वाले रूसियों, जर्मनों, फ्रांसीसियों अंग्रेजों, और अमरीकनों सब के देशों में जाकर लोगों से स्वयं बातचीत की, वहां की समस्याओं का स्वयं अध्ययन किया, और उन्हें विश्व शांति और अहिंसा का संदेश दिया । इस आठ हजार मील की लम्बी यात्रा में केवल पैसे का ही प्रश्न नहीं था, उनके भोजन का भी प्रश्न था। दोनों यात्री शाकाहारी थे, इसलिए भोजन की भी कठिन समस्या थी । जहां कहीं यह दोनों शान्ति यात्री गये, इनके परिचित-अपरिचित व्यक्तियों ने इनकी सोने, ठहरने, उठने और भोजन की व्यवस्था की । इस यात्रा से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न देशों की जनता युद्ध नहीं चाहती । यह केवल राजनीतिक नेता हैं, जो केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभिन्न देशों में युद्ध की बातें करते हैं ।

यह यात्रा किसी भी साहसपूर्ण यात्रा से कम मनोरंजक और प्रेरणादायक नहीं है । स्थान-स्थान पर उन्हें दुर्गम पहाड़ियों, झीलों, घने जंगलों में से गुजरना पड़ा। भिन्न-भिन्न देशों की समस्याओं, रीतियों, इच्छाओं का परिचय इस मनोरंजक पुस्तक के पढ़ने से मिलता है। सचमुच यह साहसपूर्ण यात्रा की अद्भुत कहानी है।

पुस्तक की भाषा सजीव और परिष्कृत है। अनेक चित्रों से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

**सर्वोदय सामयिकी भाषा का प्रश्न**—प्रकाशक वही।

प्रस्तुत छोटी सी पुस्तिका में भाषा के विवाद ग्रस्त प्रश्न पर आचार्य विनोबा के कुछ लेखों का संग्रह है। इसमें संदेह नहीं कि आचार्य विनोबा के विचार काफी सुलझे हुए हैं । यदि उन्हें हठ छोड़ कर पढ़ा जाए तो विभिन्न राज्यों में फैली हुई भाषा सम्बन्धी भ्रांत धारणाएं दूर हो जाएंगी । आचार्य विनोबा पर कोई व्यक्ति साम्प्रदायिकता या प्रान्तीयता का इल्जाम नहीं लगा सकता। उनका इन लेखों में एक ही संदेश है कि हिन्दी से किसी भारतीय का भय नहीं होना चाहिए और अंग्रेजी भी किसी पर लादनी नहीं चाहिए । —कृष्ण

**दिल्ली खादी पत्रिका**—सम्पादक—श्री लज्जाराम चौधरी । प्राप्ति स्थान खादी ग्रामोद्योग समिति, नरेला वार्षिक मूल्य तीन रुपया, एक प्रति २५ पैसे,—पृष्ठसंख्या ३४ ।

आलोच्य पत्रिका आकार में यद्यपि छोटी है किन्तु विचार एवं उद्देश्य की दृष्टि से व्यापक है। गांधीवादी विचारों का दिग्दर्शन कराने के लिए पत्रिका में उसी के अनुरूप लेख एवं कविताएं प्रकाशित की गई हैं। खादी का जीवन में क्या महत्व है तथा विकास की अन्य योजनाओं के लिए हमें अपने कुटीर उद्योग धन्धों का किस प्रकार विकास करना चाहिए गांवों को आत्म निर्भर बनाने के लिए खाद, पशुओं की देखभाल, प्रौढ़ शिक्षा गांवों में विकास की अन्य छोटी-छोटी योलनाओं की सफलता के लिए भी यह उपयोगी सिद्ध होगी ।

निरंजन लाल शर्मा
सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंक और बीमा

# बेरोजगारी-बीमा

अनेक देशों में बेरोजगारी बीमे की योजनाएं चल रही हैं। बेरोजगारी बीमा की मुख्यतः तीन श्रेणियां हैं। पहली में अनिवार्य बीमा योजना आती है। इसके अन्तर्गत, कानून द्वारा यह व्यवस्था की जाती है कि कुछ निर्दिष्ट श्रेणियों के लोग उक्त योजना में शामिल किये जाएं और इसके लिए उनसे, मालिकों से और सरकार से अंशदान लिया जाता है। यह योजना आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, कनाडा, पश्चिमी जर्मनी, ग्रीस, इटली, जापान, ब्रिटेन व अमरीका आदि में लागू है।

दूसरी श्रेणी में स्वेच्छा बीमा योजना आती है। इसमें शामिल होना कर्मचारियों की इच्छा पर निर्भर है। इसमें गैर-सरकारी संस्थाएं अंशदान इकट्ठा करती हैं और बेकारी की स्थिति में इससे कर्मचारियों को मदद देती हैं। इस प्रकार की योजनाएं डेनमार्क, फिनलैंड और स्वीडन में चालू हैं।

तीसरी श्रेणी की योजना में कर्मचारी अंशदान नहीं देते, केवल सरकार ही देती है। कर्मचारी के बेरोजगार होने पर ही उसकी हालत के अनुसार इससे सहायता दी जाती है। इस प्रकार की योजनाएं फ्रांस, न्यूजीलैंड और लक्जम्बर्ग में चल रही है।

भारत में जून १९६४ में राष्ट्रपति के आदेश के अनुसार बेरोजगारी बीमा की जिम्मेदारी, नव स्थापित सामाजिक सुरक्षा विभाग को सौंपी गयी। यद्यपि बेरोजगारी बीमे की व्यवस्था करने में अनेक कठिनाइयां हैं, फिर भी यह आवश्यक है। सामाजिक सुरक्षा विभाग ने फिलहाल कारखाने के मजदूरों तथा अन्य कर्मचारियों के लिए सीमित अनिवार्य बीमा योजना बनायी है। इस देश में बेरोजगारी अधिक होने के कारण शुरू में बीमा व्यवस्था छोटे पैमाने पर ही चालू की जा सकती है। अतः शुरू में अनिवार्य बेरोजगारी बीमा योजना में कोयला खान भविष्य-निधि और कर्मचारी भविष्य-निधि के ऐसे सदस्यों को ही शामिल किया जाएगा, जिनका वेतन ५०० रु० मासिक से अधिक नहीं है तथा जो औद्योगिक-विवाद अधिनियम के अन्तर्गत बैठकी और छटनी सम्बन्धी क्षतिपूर्ति के अधिकारी नहीं हैं। इस योजना के अन्तर्गत कर्मचारियों को सेवा निवृत्ति के दो साल पहले तक अपने वेतन का १/४ प्रतिशत और इतना ही मालिकों को बेरोजगारी की हालत में साल में ६ महीने तक अथवा काम मिलने तक (जो भी अवधि पहले आए) मासिक वेतन का आधा सहायता में दिया जाएगा। ऐसे सदस्यों को रोजगार दफ्तरों में नाम दर्ज कराना होगा और वहां से अथवा अन्य निर्दिष्ट अधिकारियों से इस बात का प्रमाणपत्र लाकर देना होगा कि उन्हें कोई अन्य काम दिया गया या नहीं। अगर अन्य काम मिलने पर वे उसे स्वीकार नहीं करेंगे, तो उन्हें किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाएगी। जो स्वेच्छा से या रिटायर होने की उम्र होने पर काम छोड़ेंगे, या जो छटनी के बाद अन्य काम के इच्छुक नहीं होंगे, उन्हें भी बेरोजगारी बीमा का लाभ नहीं मिलेगा। जब तक कर्मचारियों को बेरोजगारी सहायता मिलेगी, तब तक उनकी भविष्यनिधि की संचित राशि नहीं दी जाएगी। दुबारा काम मिलने पर उनकी भविष्य-निधि की सदस्यता फिर से चालू हो जाएगी।

इस योजना के मुख्य लाभ ये हैं :—

(१) इससे सरकारी तथा निजी क्षेत्र के अनेक कारखानों के बहुसंख्यक मजदूर और क्लर्क आदि लाभ उठा सकेंगे।

(२) कर्मचारी भविष्य-निधि और कोयला खान भविष्य-निधि संगठनों को योजना कोष के संचालन का अधिकार मिलने के कारण, इसके लिए अलग संगठन की जरूरत न होगी और इसमें शामिल होने वाले कर्मचारियों की पहचान बाद में कठिनाई न होगी।

(३) बेरोजगारी की अवस्था में कर्मचारियों को भविष्य-निधि से धन नहीं निकालना पड़ेगा और वह वृद्धावस्था में काम आएगा।

(४) कर्मचारियों और मालिकों का अंशदान बहुत थोड़ा रखा गया है। अनुमान है कि कर्मचारी भविष्यनिधि तथा कोयला खान भविष्यनिधि के ४५ लाख से अधिक कर्मचारियों में से लगभग १५ लाख को बेरोजगारी बीमा योजना में शामिल किया जाएगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका तथा उनके मालिकों का अंशदान, प्रतिमास लगभग १५ लाख रु० होगा। अनुमान है कि लगभग १००० कर्मचारियों को १०० रु० मासिक के हिसाब से प्रति मास लगभग १० लाख रु० बेरोजगारी सहायता दी जाएगी।

## डिपाजिट बीमा

बैंकों ने डिपाजिटों को सुरक्षित करने और बैंकों में जनता का विश्वास स्थापित करने के लिए ४ वर्ष पूर्व डिपोजिट इन्श्योरेन्स कारपोरेशन की स्थापना की गई थी। इन ४ वर्षों में (दिसम्बर १९६१ से सितम्बर १९६४ तक) डिपोजिट बीमा योजना के अन्तर्गत डिपोजिटों की संख्या ७० लाख ५८ हजार ४४८ से बढ़कर ९८ लाख ३७ हजार १७६ तक पहुँच गई है। १२०० रुपये से कम डिपोजिटों की संख्या भी इस अवधि में बहुत बढ़ गई है।

## ब्रिटेन में बैंक दर घटी

ब्रिटिश सरकार ने बैंक की दर ७ से कम करके ६ प्रतिशत कर दी है। गत वर्ष नवम्बर में इसे बढ़ाकर ७ प्रतिशत किया गया था।

ब्रिटिश सरकार के इस निश्चय का एक स्वाभाविक परिणाम यह हो सकता है कि भारत में रुपया अधिक लगने लगे। इसी तरह ब्रिटिश सरकार ने उन कम्पनियों को भी कर की छूट दी है जो ब्रिटेन से बाहर अपनी सहायक कम्पनियां चला रही हैं। इन दोनों का परिणाम ब्रिटिश उद्योगपतियों को विदेशों में पूंजी लगाने की प्रेरणा देगा।

---

(पृष्ठ २६७ का शेष)

तक अच्छी तरह नहीं चल सकतीं, जब तक गांव के लोग पढ़े लिखे न हों, मुझे ऐसी अनेक सहकारियों का पता है, जिनमें हिसाब किताब नहीं रखा जाता। कारण उनका कोई सदस्य पढ़ा लिखा नहीं। जब सरकारी निरक्षक जाता है, वही हिसाब भी लिखता है।

अस्तु, जब ७०-७५ प्रतिशत लोग निरक्षर हैं, तब यह आशा कैसे की जा सकती है कि वे सहकारी संगठन बनाएंगे और सुधरे बीज, खाद, अच्छे औजार आदि का इस्तेमाल करेंगे? इसलिए गांवों में प्रौढ़ शिक्षा का प्रबन्ध जरूरी है। गांव के लोगों को इतना पढ़ा-लिखा अवश्य होना चाहिए, जिससे वे खेती आदि के बारे में सरल किताबों को पढ़ और समझ सकें। उनके लिए साहित्य भी उनकी ही भाषा में होना चाहिए और आसानी से उनकी समझ में आने योग्य भी होना चाहिए।


# सम्पदा का बैंक परिशिष्ट

बैंक किसी देश के आर्थिक विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भारतीय बैंकों का भी देश के औद्योगिक विकास और पंचवर्षीय योजनाओं की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

पिछले वर्षों में जहां भारत के बैंकों ने असाधारण प्रगति की है, वहां उनके सामने अनेक नई समस्यायें भी उपस्थित हो गई हैं। इनके परिचय के लिए हम शीघ्र ही सम्पदा का बैंक परिशिष्ट निकाल रहे हैं। इस अंक में बैंक सम्बधी महत्त्वपूर्ण जानकारी पाठकों को दी जायेगी। इस अंक का मूल्य १ रु. होगा।

—मैनेजर सम्पदा

२८।११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## सरकार की आयात नीति

प्रति वर्ष सरकार अपनी नीति की घोषणा करती है। पहले यह घोषणा सिर्फ ६ महीने के लिए की जाती थी। फिर उसे एक वर्ष के लिए करने का निश्चय किया गया। इस विशेष परिस्थितियों के कारण उसकी घोषणा जुलाई को होगी जो कि ९ महीने की अवधि के लिए होगी। विदेशी मुद्रा की कठिन परिस्थिति को देखते हुए इस अधिक कठोर नीति होने की सम्भावना है। यह प्रयत्न किया जा रहा है कि विदेशी वस्तुओं की स्थानापन्न वस्तुएं देश में ही तलाश की जांय, जिससे कच्चे माल के अभाव में उद्योगों की गति न रुके और विदेशी मुद्रा से अत्यन्त आवश्यक वस्तुएं ही मंगाई जाएं। व्यापार मंत्रालय ऐसी वस्तुओं की सूची बना रहा है, जिसके आयात में कटौती नहीं की जा सकती।

## राजस्थान में बिजली की कमी

भारतीय अर्थशास्त्री कहा करते है कि भारत की खेती मानसून पर निर्भर करती है। इसलिए उसके भविष्य के सम्बन्ध में कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। यही कारण है कि पंचवर्षीय योजनाओं के अनुमान कृषि के सम्बन्ध में असत्य सिद्ध होते हैं।

परन्तु आज तो यही बात उद्योगों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। खेती ही नहीं आज तो उद्योग भी इन्द्रदेव की कृपा पर निर्भर रहते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है राजस्थान के चम्बल क्षेत्रों में उद्योगों के प्राण बिजली में कटौती। वर्षा कम हुई, गांधीसागर में पानी कम आया और चम्बल क्षेत्र में बिजली उत्पादक कारखाने अपनी उत्पादन क्षमता खो बैठे। गत अक्टूबर में इसी कारण उद्योगों के लिए बिजली में २० प्रतिशत की कटौती की गई थी। स्थिति विषमतर हो जाने के कारण अब राजस्थान बिजली बोर्ड ने चम्बल ग्रिड से फिर बिजली के उपयोग की १५ प्रतिशत कटौती करने का फिर निश्चय किया है। १०० या इससे अधिक हार्स पावर की मोटरें प्रयोग करने वाले सभी कारखानों पर यह कटौती लागू होगी। बिजली में इस कटौती का प्रभाव झालावाड़, कोटा, उदयपुर तथा भीलवाड़ा के उद्योगों पर पड़ेगा। उद्योग मंत्री ने बताया है कि यदि वर्षा नहीं हुई तो सारे चम्बलग्रिड को बन्द करने की नौबत आ सकती है।

## खेतड़ी की खानें

राजस्थान के अन्तर्गत, खेतड़ी में ताम्बे की खाने हैं। भारत सरकार ने उनके विकास के लिए अमेरिका से सहायता मांगी थी किन्तु अब यह निश्चय किया गया है कि फ्रांस के सहयोग से इस योजना को चलाया जाय। इसलिये अमेरिका से सहायता की प्रार्थना वापिस ले ली गई है।

खेतड़ी में एक अनुमान के अनुसार ७०० लाख टन कच्चा ताम्बा है। यहां २५ वर्ष तक २०,००० टन तांम्बा निकालने का भी ध्येय है। इस योजना पर ३०-३५ करोड़ रुपया खर्च आएगा और १० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा का व्यय भी होगा। खेतड़ी की योजना के पूर्ण होने पर ताम्बे के आयात पर की जाने वाली आठ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत प्रति वर्ष होगी।

## गुप्त धन की घोषणा

केन्द्रीय सरकार ने स्वेच्छा से छिपा हुआ धन बताने के लिए ३ महीने की छूट दी थी। ३१ मई को इस छूट की अवधि समाप्त होती थी। कुल १९७९ व्यक्तियों ने छिपे धन की सूचना दी और कुल ५१.८७ करोड़ रुपये के छिपे हुए धन की घोषणा की गई है। इस पर लगने वाला आय कर भी जमा कर दिया गया है जो २०.३२ करोड़ रुपया है।

अब यह रुपया बाकायदा बिना किसी संकोच के कारोबार और आर्थिक विकास में आ सकेगा। यह इसका बड़ा भारी लाभ होगा।

—ब्रिटेन के नैशनल कोल बोर्ड ने बोकारो के पूर्वी क्षेत्र में तीन कोथला खानों के विकास के लिए प्रशिल्पिक सहायता का बचन दिया है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## इकाफे देशों का आर्थिक विकास

हालांकि संयुक्त राष्ट्रसंघ विकास दशक में विकासशील देशों से यह अपेक्षा की जाती थी कि उनकी राष्ट्रीय आय में औसतन प्रतिवर्ष ५ प्रतिशत वृद्धि होगी, लेकिन १९५२ से १९६२ तक अधिकतर देश इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके। इसका कारण मुख्यतः कृषि की धीमी प्रगति है, जिसका प्रभाव बहुत हद तक औद्योगिक प्रगति पर भी पड़ता है। यह देखा गया है कि कुल मिला कर इकाफे देशों में खाद्यान्न उत्पादन की वार्षिक दर औसतन १ प्रतिशत से भी कम रही है। इकाफे देश, जैसे जापान को छोड़, शेष देशों में राष्ट्रीय उपज की दर २.० प्रतिशत से कम रही है। कुल राष्ट्रीय उपज में १९५२-५४ और १९६१-६२ के बीच जो वृद्धि हुई है, इससे रहन-सहन की अधिक ऊंचा उठने की आशा नहीं की जा सकती। निम्न तालिका में इनमें से कुछ देशों की राष्ट्रीय आय में कुल व प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दरें स्पष्ट रूप से दिखाई गई हैं :—

कुल आय वृद्धि या, प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उपज व औसत प्रति व्यक्ति कुल राष्ट्रीय उपज

| देश | राष्ट्रीय आय में १९५२-५४ से १९६१-६२ तक औसत वार्षिक वृद्धि | औसत प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय उपज में १९५२-५४ से १९६१-६२ तक औसत वार्षिक वृद्धि | औसत प्रति व्यक्ति कुल राष्ट्रीय उपज (डालरों में) १९५२-५४ | १९६१-६२ |
|---|---|---|---|---|
| चीन (तैवान) | ७.१ | ३.३ | ११४ | १५० |
| इण्डोनेशिया | २.८ | ०.६ | ५० | ५२ |
| जापान | ९.७ | ८.६ | २४५ | ४९५ |
| बर्मा | ४.४ | २.१ | ४६ | ५५ |
| भारत | ३.५ | १.३ | ६७ | ७५ |
| पाकिस्तान | २.९ | ०.८ | ६८ | ७३ |
| आस्ट्रेलिया | ३.९ | १.४ | १३४५ | १५०३ |

—जापान ने एक समझौते के अनुसार भारत की की सूती मिलों को आधुनिक बनाने के लिए एक करोड़ डालर का ऋण देने का निश्चय किया है। यह राशि उस छः करोड़ डालर की निश्चित राशि से भिन्न है, जो उसने सहायक संघ के देशों के साथ देने का निश्चय किया है।

—इण्डियन आयल कारपोरेशन ने जून के महीने में रूस से ९१ हजार टन कैरोसीन आयल और ६२ हजार टन हाई स्पीड डीजल आयल मंगाने का निश्चय किया है। इस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए औसतन प्रति तीसरे दिन १ टैंकर भारत को रवाना किया जायगा। यह टैंकर बम्बई, कांदला, मद्रास, विशाखापत्तनम, कोचीन और कलकत्ता के बन्दरगाहों पर पहुँचेंगे, ताकि समस्त देश में समान वितरण हो सके।

—भारत सरकार कुवैत से एक बड़ा ऋण लेने पर विचार कर रही है। यह भारत के उप-राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन की कुवैत यात्रा का परिणाम दीखता है।

## ब्रिटेन में भी दशमिक प्रणाली

ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की है कि वह भी तोल और माप में दशमिक (मीट्रिक) प्रणाली का प्रयोग करेगी। इसका अर्थ यह है कि वहां भी कुछ समय बाद इंच, फुट और गजों में तथा ग्राम, औंस और पौन्डों में नाप तोल नहीं हुआ करेंगे। पिछले १०० वर्षों में २५ देशों ने दशमिक प्रणाली अपनायी है। इनमें मुख्यतः देश भारत, रूस, जापान और चीन हैं।

—भारत सरकार अन्न निगम को चावल खरीदने का एकाधिकार देने के प्रश्न पर विचार कर रही है।

—भारत सरकार ने श्री धर्मवीर कैबिनट सैक्रेटरी की रिपोर्ट पर विचार करके यह निर्णय किया है कि उद्योग की परामर्शदात्री दस्तूर एण्ड कम्पनी को अपने हाथ में न लेकर निजी क्षेत्र में ही रहने दिया जाय, किन्तु बोकारो के कारखाने के लिए उसकी सेवाओं का अवश्य उपयोग किया जाये।

सम्पदा
में
विज्ञापन देकर लाभ उठावें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कृषि विकास की बहुमुखी प्रगति

(पृष्ठ २६८ का शेष)

१. सिंचाई, भूरक्षण और भूमि-सुधार आदि के कार्यक्रमों को अपनाना।

२. खाद, उन्नत बीज, कृमिनाशक रसायन, सीमेंट, खेती के औजार आदि की उपलब्धि।

३. अनुसंधान के कार्य के विस्तार की योजनाएँ।

४. किसानों को प्रोत्साहन के लिए उचित मूल्य और खरीद बिक्री की सुन्दर व्यवस्था।

५. कृषकों और साधारण जनता में कृषि में अधिक विनियोजन के लिए आवश्यक सुधार।

यह सब कार्यक्रम बहुत अधिक व्यापक और विस्तृत है। उदाहरण के लिए छोटी बड़ी सिंचाई योजनाओं का विस्तार ही करोड़ों रु. की अपेक्षा रखता है। भूसंरक्षण, नमी को कायम रखना, भूमि की तरह २ को परीक्षा और अलग २ भूमियों के लिए अलग २ खाद की उपयोगिता का अनुसंधान बहुत श्रम, समय और धन की अपेक्षा रखता है। हमें केवल अपने परीक्षणों से अपना ज्ञानवर्द्धन ही नहीं करना, उन परीक्षणों को किसानों तक भी सुलभ करना है। नाइट्रोजन खाद की खपत ३ गुनी, फासफोटिक खाद की ४ गुनी और पोटाश की खपत १९७०-७१ तक दुगनी कर देनी है। कृषि के लिए आवश्यक ट्रैक्टर, पम्प और हल आदि मशीनरी का उत्पादन भी अधिक करना है और वृक्षों के आरोपण की ओर भी विशेष ध्यान देना है। फिर किसानों के लिए ऋण, अनुदान, बिक्री आदि की व्यवस्था भी बड़े पैमाने पर करनी है और बैंकों और सहकारी समितियों का जाल सारे देश में बिछा देना है। इस तरह यह मालूम होगा कि कृषि विकास की स्पेशल योजना कितनी बहुमुखी और कितनी व्यय, श्रम और समय साध्य है।

## सम्पदा के ग्राहकों से

१. 'सम्पदा' कार्यालय को अपना पूरा पता शीघ्र लिख भेजें (नाम, ग्राम, डाकखाना, जिला व राज्य) ताकि समय पर 'सम्पदा' की प्रति मिलती रहे।

२. भविष्य में वार्षिक चन्दा रु० ८.५० भेजने का कष्ट करें। —व्यवस्थापक, सम्पदा


## स्वस्थ जीवन

सम्पादक : श्री राधाकृष्ण नेवटिया
प्रबन्ध सम्पादक : श्री धर्मचन्द सरावगी

एक प्रति ५० पै० वार्षिक ५) रुपया मात्र

साहित्य के साथ अपने सुन्दर स्वास्थ्य केलिए कविता, कहानी, संस्मरण तथा डायरी और परिषद की गतिविधि पढ़ें। आज ही पांच रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइए। विज्ञापन देकर लाभ उठावें। सहयोगी बन्धु अपनी नवीन कृतियां हमें भेजें।

कार्यालय :—
जैन हाऊस, ८।१ एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-१

प्रेम, सेवा और जागृति का प्रमुख हिन्दी पाक्षिक

## समाज-हितैषी

जिसमें साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व आर्थिक लेख, कविताएं एवं कहानियों के अतिरिक्त निम्नलिखित स्तम्भ भी रहते हैं:—

★ सम्पादकीय
★ महिला जगत्
★ शिशु जगत्
★ जनमत
★ राजस्थान का रंगमंच
★ हास्य व्यंग
★ प्रश्नोत्तर
★ भविष्य फल

साधारण एक प्रति २५ पैसे
४ विशेषांकों सहित वार्षिक ६ रुपये

पता—
समाज-हितैषी कार्यालय
बिसाऊ (राजस्थान)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कम्पनी परिचय

## हिन्दुस्तान अल्यूमीनियम

उत्पादन की दृष्टि से हिन्दुस्तान अल्यूमीनियम की प्रगति सन्तोषजनक है। इस वर्ष कम्पनी ने १३३२० मी. टन इलैक्ट्रिक और ९५६० कमर्शियल ग्रेड अल्यूमीनियम अर्थात् कुल २२८८० मी० टन उत्पादन किया, जबकि पिछले वर्ष यह उत्पादन २२१३८ मी० टन था। बिक्री की दृष्टि से भी कम्पनी की प्रगति सन्तोषजनक रही है। कम्पनी का लाभ पिछले वर्ष २ करोड़ रु० था, किन्तु इस वर्ष यह लाभ ४.४० करोड़ रुपया हो गया है। कम्पनी की विस्तार योजनाएं सफलता के शिखर की ओर अग्रसर हो रही हैं। कम्पनी के लिए विभिन्न विकास योजनाओं द्वारा कम्पनी की उत्पादन क्षमता २४ हजार मी० टन से बढ़ाकर ५० हजार मी० टन करने के लिए ऋण आदि की व्यवस्था भी कम्पनी कर रही है।

## डालमिया सीमेन्ट की प्रगति

१९६३ में कम्पनी का उत्पादन ४.६१ लाख मी० टन के स्थान पर ५.२४ लाख मी० टन हुआ। क्विंकरका उत्पादन भी ४.५५ लाख मी० टन से बढ़कर ४.७२ लाख मी० न हो गया। सीमेन्ट के लदान में भी आलोच्य वर्ष में उल्लेखनीय प्रगति हुई। अन्य क्षेत्रों में भी कम्पनी की प्रगति सन्तोषजनक रही।

उत्पादन और बिक्री में सफलता प्राप्त करने के कारण ही कम्पनी का कुल लाभ भी इस वर्ष में १३४.०५ लाख रुपये से बढ़कर १७२.४१ लाख हो गया है। कम्पनी को विभिन्न देनदारी आदि देने के बाद इस वर्ष शुद्ध लाभ ५९.३३ लाख रुपया हुआ, जब कि पिछले वर्ष ५५.७५ लाख रुपया था। पिछले कई वर्षों में कम्पनी का लाभांश १२ प्रतिशत था जो इस वर्ष १५ प्रतिशत तक पहुँच गया है।

## मोदीनगर में नायलोन उद्योग

मोदी उद्योग का विस्तार उत्तर प्रदेश के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हो रहा है। अनेक विभिन्न उद्योगों के अतिरिक्त अब मोदीनगर में ६ करोड़ रुपये की लागत से नायलोन का नया कारखाना एक अमरीकी कम्पनी के सहयोग से बनाया जा रहा है। जिस के लिए कम्पनी को २.७० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की आवश्यकता होगी १९६६ के अन्त या १९६७ के आरम्भ से ५ टन नायलोन सूत के उत्पादन की आशा है।

## सैंचुरी मिल्स

सैंचुरी स्पिनिंग मिल के संचालकों ने भी नाइलोन बनाने का निश्चय किया है। इस कार्य के लिए एक नई कम्पनी बनाई जायगी। नए उद्योग की क्षमता ६.५ टन यार्न प्रतिदिन होगी। इसकी पूंजी ५ करोड़ रुपया होगी। हौलैन्ड और पश्चिमी जर्मनी के सहयोग से यह कम्पनी अपना कारोबार करेगी।

## श्री बजाज का भाषण

पंजाब नेशनल बैंक के अध्यक्ष श्री कमलनयन बजाज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में देश की आर्थिक स्थिति पर भी एक दृष्टि डाली है। औद्योगिक उत्पादन वृद्धि का निर्देशक अंक गत वर्ष (९.३) की अपेक्षा १९६४ में गिर गया (६.८)। कृषि का उत्पादन तो बहुत शोचनीय है जो देश की समस्त आर्थिक समस्याओं का मूल कारण है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में ४.२ प्रतिशत की दर से उत्पादन बढ़ा था। दूसरी योजना में यह वृद्धि ३.९ प्रतिशत रह गई। तीसरी पंचवर्षीय योजना के ३ वर्षों में भी यही दर स्थिर रही है और इस कारण मूल्य भी १७.२ प्रतिशत बढ़ गये हैं। अनाज की कीमतों में वृद्धि बहुत चिंतनीय रही है। विदेशों से भारी मात्रा में अनाज मँगवाने के कारण हमारा व्यापारिक संतुलन बिगड़ गया है। १९६३-६४ में भारत की विदेशी मुद्रा में १० करोड़ रुपये की वृद्धि हुई थी और १९६४-६५ में २५ करोड़ रुपये की कमी हुई है। पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न परिस्थिति तथा ऋणों के जल्दी भुगताने के कारण हमारी विदेशी मुद्रा पर ज्यादा दबाव पड़ सकता है। निर्यात को बढ़ाने के लिए रिजर्व बैंक को अपनी नीति में परिवर्तन करना पड़ेगा। आज की चिंतनीय आर्थिक स्थिति का परिणाम ही यह है कि पूँजी-निर्माण को प्रोत्साहन नहीं मिल रहा। यद्यपि १९६४ में ९०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ देश की, कुछ विदेश की

—कच्छ पर पाकिस्तान के आक्रमण की स्थिति यथापूर्व है। ब्रिटेन का शान्ति प्रस्ताव अब तक भी किसी अंतिम परिणाम पर नहीं पहुँच पाया। पाकिस्तान कंजर कोट से निकलना नहीं चाहता। फलतः गतिरोध जारी है श्री शास्त्री जी कंजर कोट खाली करने पर अड़े हुए हैं। काश्मीर की सीमा पर भी पाकिस्तान के छोटे मोटे आक्रमण होते रहते हैं।

—रूस के साहसी यात्रियों के अंतरिक्ष में भ्रमण और अपने अन्तरिक्षयान से बाहर निकलकर घूमने के बाद अमेरिका के दो साहसिकों ने भी अंतरिक्ष की उड़ान की है और पृथ्वी की ६२ बार परिक्रमा करके पृथ्वी पर उतर आये हैं। यह यात्री ४ दिन तक अंतरिक्ष में रहे। एक यात्री अपने यान से बाहर रहकर २० मिनट तक अंतरिक्ष में तैरता रहा। उन्होंने अंतरिक्ष में प्रतिदिन कई बार भोजन भी किया।

—श्री लाल बहादुर शास्त्री विदेश यात्रा पर रवाना होंगे। वे काहिरा, कनाडा, अल्जीयर्स और लन्दन में जायेंगे जहां राष्ट्र मंडलीय देशों का प्रधान मंत्री सम्मेलन होगा।

—वियतनाम में अमरीकी सैनिक वीतकांग के कम्युनिस्टों का विरोध कर रहे हैं। अब तक भी उन्हें कम्युनिस्टों को परास्त करने में सफलता प्राप्त नहीं हुई। सम्भवतः अमेरिकन राष्ट्रपति श्री शास्त्री से कनाडा में मिलेंगे।

—भारत सरकार ने भारत रक्षा नियमों में परिवर्तन करके विभिन्न राज्यों में अन्न के यातायात का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया है। अब कोई राज्य बिना केन्द्र की सहमति के अन्न के यातायात पर नियंत्रण नहीं लगा सकेगा।

—चीन के अधिनायक माओ त्से तुंग बहुत बीमार हो गये बताये जाते हैं। चीन के सीक्यांग प्रान्त में एक सामूहिक खेत पर स्थानीय किसानों ने बाहर से आने वाले किसानों पर हमला कर दिया।

—भारत के उत्तर में स्थित हिमालय प्रहरी अजेय रहा है। इसके सर्वोच्च शिखर (२९००० फुट) की विजय करने के कई प्रयत्न हुए हैं। तेनसिंह और हिलेरी के बाद अब भारतीयों के एक पर्वतारोही दल के सदस्यों ने बारी-बारी करके चार बार हिमालय के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने में सफलता प्राप्त की है। भारत वर्ष की यह सफलता हमारे लिए अत्यन्त गौरव योग्य है। १९ यात्रियों में से ९ अब तक इस शिखर पर चढ़ चुके हैं।

---

करोड़ रुपये की पूँजी बाजार में आई, तथापि इसका अधिकांश अन्डर राइटरों द्वारा चुकाया गया। इस सम्बन्ध में सरकारी प्रयत्न अब तक बहुत सफल नहीं हुए। भारी कर, ऊँचे मूल्य, रुपये की तंगी आदि ने परिस्थिति को कठिन बना रखा है। चौथी पंचवर्षीय योजना में हमें लचकीला रुख अपनाना चाहिए। रिजर्व बैंक की बैंक नीति भी आज बाजार को तंग कर रही है। इसी तरह उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण आर्थिक प्रश्नों की चर्चा करते हुए कहा कि पंजाब नेशनल बैंक संतोषजनक प्रगति कर रहा है। इस भाषण में प्रकट किए गए विचार विचारणीय हैं।


महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

**शृङ्गार**

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल
सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय :
१३।३७, शक्तिनगर,
दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नेहरू का समाज दर्शन

( पृष्ठ २७६ का शेष )

तंत्री समूहवाद में सावधानी से योजनाएं बनाने तथा लोगों की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुसार उन्हें ढालने का निरन्तर प्रयास होना चाहिए।"

राज्य के समाजवाद और राज्य के पूंजीवाद में स्वामित्व के विकास में समानता के कारण कुछ समाज-शास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों ने राज्य के समाजवाद और पूंजीवाद को समान कहा है। पंडित नेहरू ने इन दोनों का अन्तर बताते हुए इस भ्रान्तिपूर्ण स्थापना का खंडन किया। उन्होंने कहा कि "समृद्ध वर्ग के लाभ के लिए किसी राज्य का गठन अर्ध-समाजवादी आधार पर किया जा सकता है। राज्य का समाजवाद और पूंजीवाद प्रायः एक ही बात है। पर असली सवाल यह है कि राज्य का संचालन किस के हाथ में है और इससे किसे लाभ होता है—पूरे समाज को या एक अधिकार सम्पन्न वर्ग को।

पूंजीवाद के अन्तर्गत जिस लोकहितकारी राज्य की कल्पना की गई है, वह नेहरू की कल्पना के लोकहितकारी राज्य से बिल्कुल भिन्न

इस सम्बन्ध में नेहरू जी ने कहा, "कम से कम कुछ देशों में पूंजीवाद ने बहुत हद तक लोगों के हित के काम किए हैं, पर इससे उसकी समस्यायें नहीं सुलझी हैं और इसमें किसी जीवन्त बात की बुनियादी कमी दिखाई पड़ती है। इसमें सन्देह नहीं कि पूंजीवाद में लोकतंत्री व्यवस्था के समावेश से पूंजीवाद की बहुत सी बुराइयां कम हो गईं, परन्तु समाजवाद जानबूझकर सामान्य क्रियाकलाप में हस्तक्षेप करता है और इस कार्य से केवल उत्पादन की शक्ति ही नहीं बढ़ती बल्कि असमानता भी घटती है।"

## श्रम समस्याएं

(पृष्ठ २८६ का शेष)

को बोनस दिया जायगा। सरकारी उद्योगों में घाटा बहुत अधिक हो रहा है या लाभ कम हो रहा है, वे बोनस देने की स्थिति में नहीं हैं।

किन्तु स्थिति की विडम्बना यह है कि सरकारी उद्योग स्पष्ट रूप से मजदूरों की मांगों का विरोध भी नहीं कर सकते। इससे सरकार ही बदनाम होती है। इसीलिए निजी उद्योग के नाम पर सरकार इस प्रश्न को और अधिक समय के लिए टालती जा रही है। भारत के उद्योगपतियों द्वारा इस प्रश्न पर विचार करने के लिए जो समिति नियुक्त की थी, उसने अपनी सम्मति में विधेयक में कुछ संशोधन प्रस्तुत किये हैं। उनके अनुसार बोनस केवल असली तनख्वा पर दिये जाने चाहिए न कि महंगाई भत्ते पर। उद्योगों को पुनर्विकास के लिए अपने लाभ में एक निश्चित छूट मिलनी चाहिए। अनिवार्य बोनस ४ प्रतिशत से घटाकर २ प्रतिशत कर देना चाहिए, यद्यपि यह देना भी अभी सम्भव नहीं होगा। बोनस के लिए किसी प्रकार का आन्दोलन, हड़ताल या प्रदर्शन नहीं होने चाहियें।

## योजना और उसके लक्ष्य

(पृष्ठ २७८ का शेष)

पाता। बढ़े हुए मूल्यों का किसान को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ, क्योंकि अधिकांश गल्ला बिचौलियों के हाथ बेच दिया जाता है।

### हमारा सुझाव है कि :—

(१) भूमि सुधारों को तुरन्त लागू करके किसान को भूमि का मालिक बनाया जाय। तथा आगे कम से कम २० वर्षों तक भूमि सम्बन्धी अधिकारों में कोई परिवर्तन न करने की घोषणा की जाय। सहकारी खेती का विचार पूर्णतः त्याग दिया जाय। साल में एक बार किसान को खसरे की नकल मुफ्त दी जाय।

(२) किसान को कर्जा देने तथा क्रय-विक्रय की ठीक व्यवस्था की जाय। सहकारी समितियों को प्रोत्साहन देना चाहिए। किन्तु उसे किसी भी काम का एकाधिकार नहीं देना चाहिए। एकाधिकार मिलने पर वे शोषण का हथियार बन जाती है।

(३) सिंचाई की छोटी योजनाओं को पूर्ण करने में किसान को पूरी मदद दी जाय। पुराने तालाब, कुओं आदि की मरम्मत सरकार की ओर से की जाय। आबपाशी की व्यवस्था सुधारी जाय।

(४) किसान पर टैक्स न लगाये जायं। तथा अनार्थिक जोत वालों को लगान में छूट दी जाय।

(५) लेवी की प्रथा समाप्त कर दी जाय तथा किसान को फसल का पूरा मूल्य दिया जाय।

(६) गोवंश की हत्या बंद कर पशु सुधार के कार्य-क्रमों पर पूरा बल दिया जाय।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## सांझ ढलती है ...दिये जलते हैं

दिन भर की कठिन मेहनत के बाद, अब गाँववालों के लिए
विश्राम के क्षणोंका आनन्द उठानेका अवसर है।
पंचवर्षीय योजना के अनुसार गाँव गाँव में बिजली पहुँचाने का
काम आगे बढ़ता जा रहा है। लेकिन ग्रामवासियों के लिए तो
मिट्टी का तेल हमेशा ही एक महत्त्वपूर्ण वस्तु रहेगी। अपने
विक्रेताओं के द्वारा इण्डियनऑयल यह ज़रूरी वस्तु उनतक
लगातार पहुँचा रहा है। इण्डियनऑयल को
अपने देशवासियों की सेवा करने पर गर्व है। उद्योग,
कृषि और परिवहन आदि कितने ही क्षेत्रों के लिए
ज़रूरी पेट्रोलियम का शोधन और विक्रय
इण्डियनऑयल करता है।

INDIANOIL

"राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि का प्रतीक"
इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




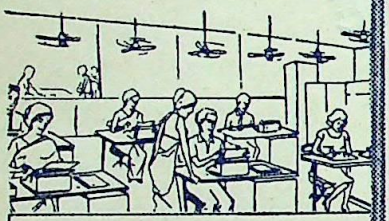

# जेठ की दुपहरी का सुखद स्वप्न...

केसल्स से सज्जित एक महल!
कितना सुखमय, कितना शीतल!

बिक्रय-कर्ता :

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड
४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१

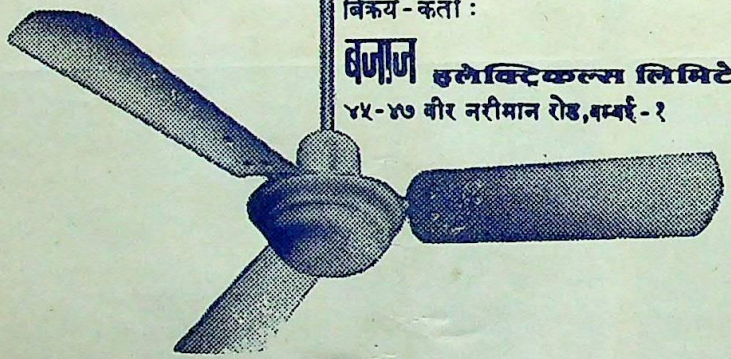

आपके सपने सजानेवाले... केसल्स पंखे!

heros' BE-160 E HIN


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ अंक : ७ जुलाई १९६२

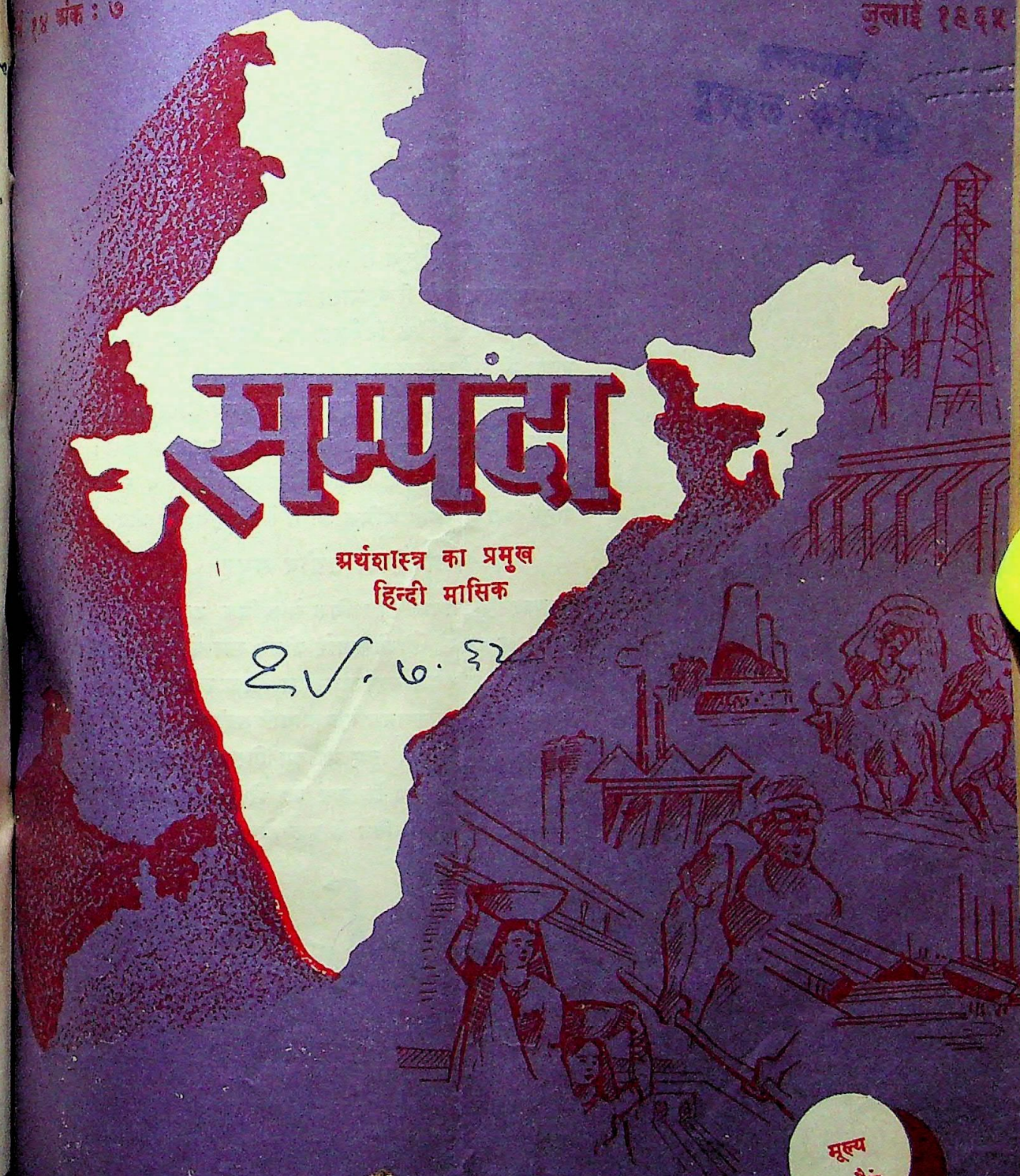

# सम्पदा

अर्थशास्त्र का प्रमुख
हिन्दी मासिक

२७.७.६२

मूल्य
८० पैसे

गणेश प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# न ये क्षितिज

स्वतन्त्रता पूर्व युग में भी जनता के सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए भारत की योजनाएं और कार्यक्रम थे। पर उनमें मौलिक निर्बलता थी कि उनका सम्बन्ध जनता की अपेक्षा सरकार के साथ अधिक था।

स्वतन्त्रता आई और इसके साथ नव-जागरण और जनता की योजनाएं—जनता के लिए और जनता के द्वारा। इसके परिणाम स्पष्ट थे, अधिक से अधिक बेहतर व सस्ती वस्तुएं तथा अधिक से अधिक लोगों के लिए बेहतर जीवन।

## डालमिया उद्योग समूह

निरन्तर ऐसे सामान का अधिक से अधिक उत्पादन करने का प्रयत्न कर रहे हैं जो हमारे जीवन स्तर को ऊंचा करने में सहायक हो। हम यह कामना न केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से, किन्तु लगभग एक चौथाई सदी से कर रहे हैं। यह काम कठिन होते हुए भी हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं, इस आशा के साथ कि कल का दिन अधिक उज्ज्वल, नव-प्रभात एवं नये क्षितिज से युक्त होगा।

DALMIA ENTERPRISES

डालमिया सीमेंट (भारत) लि., डालमियापुरम् (मद्रास रा.)
डालमिया मेगनेसाइट कार्पोरेशन, सेलम (मद्रास राज्य)
उड़िशा सिमेंट लि. राजगंगपुर (उड़िशा राज्य)
रजा बुलन्द शूगर कं० लि०, रामपुर (उ० प्र०)
दि रामपुर डिस्टिलरी एंड केमिकल कं० लि., रामपुर (उ. प्र.)

राष्ट्र की सेवा में सन्निहित

## डालमिया उद्योग-समूह

मुख्य कार्यालय—४, सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त ६५ में प्रकाशित हो रहा है

## सम्पदा का चिरप्रतीक्षित विशेषांक

# राजस्थान विकास अंक

संयुक्त सम्पादक--श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

देश की स्वातन्त्र्य प्राप्ति और संयुक्त राजस्थान के निर्माण के बाद राजस्थान की विविध आर्थिक, औद्योगिक, कृषि, यातायात, सिंचाई, खनिज आदि महत्त्वपूर्ण समस्याओं की ओर अर्थ-शास्त्रियों, अधिकारियों, व्यापारियों और उद्योगपतियों का सहसा ध्यान गया है। इन वर्षों में राजस्थान में जिस आर्थिक विकास की नींव रक्खी जा रही है, उसे भली भांति समझने और आर्थिक समस्याओं के विविध पहलुओं पर गम्भीर विचार करने की दृष्टि से हम यह बृहद् अंक प्रकाशित कर रहे हैं।

**इस अंक की विशेषताएं**

१. राजस्थान की समस्याओं और आधुनिकतम प्रवृत्तियों पर परिचयात्मक तथा विवेचनात्मक लेख
२. राजस्थान के प्रमुख अर्थशास्त्रियों, प्रामाणिक अधिकारियों और विद्वानों के विद्वत्तापूर्ण निष्पक्ष लेख
३. सुन्दर नयनाभिराम टाइटल और छपाई
४. राजस्थान सम्बन्धी अनेक नक्शे, चित्र, चार्ट और ज्ञातव्य तालिकाएं

यह अंक बहुत बड़ी संख्या में प्रकाशित किया जा रहा है, इसलिए इसमें दिया गया आपका विज्ञापन राजस्थान की बहुत बड़ी जनता तक अच्छी तरह पहुँच सकेगा।

**अपनी कापी अभी से १.७५ रु० भेजकर सुरक्षित करा लें। कभी पीछे पछताना न पड़े**

**आपको आर्डर पोस्टल सर्टिफिकेट कापी भेज दी जायेगी।**

**—मैनेजर सम्पदा**

**२८।११ शक्तिनगर, दिल्ली-७**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| सं० | विषय | लेखक | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| १. | आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर ? | सम्पादकीय | २०१ |
| २. | शास्त्रीजी का प्रथम वर्ष | ,, | २११ |
| ३. | सम्पादकीय टिप्पणियां | ,, | २१२ |
| ४. | योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था और संतुलित विकास | श्री हीरालाल | २१४ |
| ५. | वस्त्र उद्योग की विषम समस्याएं | श्री रामनाथ पोद्दार | २१६ |
| ६. | अर्थ-व्यवस्था में मूल्यों पर सरकारी नियंत्रण | श्री आदर्शकिशोर सक्सेना | २२१ |
| ७. | स्पात का बढ़ता हुआ उत्पादन व्यय | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार | २२३ |
| ८. | स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारा विदेशी व्यापार | श्री राजेश्वर दयाल | २२५ |
| ९. | मुद्रा की क्रय शक्ति कम हो रही है ! ! ! | | २२७ |
| १०. | चतुर्थ पंचवर्षीय योजना : एक झलक | श्री गुलशन प्रभाकर | २२९ |
| ११. | विषमता से सम्पन्नता की ओर | | २२९ |
| १२. | स्वचालित उद्योगों का विकास | श्री रिची कैल्डर | २३१ |
| १३. | आदिवासियों का हस्त कुटीर उद्योग | श्री सुनीलकुमार घोष | २३१ |
| १४. | राज्य व्यापार निगम | श्री निरंजनलाल शर्मा | २३४ |
| १५. | अर्थवृत्त चयन | | २३६ |
| १६. | पंजाब की प्रगति | | २४० |
| १७. | विदेशी अर्थ-चर्चा | | २४१ |
| १८. | इस मास की प्रमुख घटनाएं | | २४२ |
| १९. | कुछ देश की : कुछ विदेश की | | २४४ |
| २०. | जीवन बीमा निगम : इकाफ़े बैंक | | २४५ |


## ग्राहकों से

राजस्थान विकास अंक की तैयारी व प्रैस की असुविधा के कारण इस अंक में आठ पृष्ठ कम दिये जा सके हैं। आगामी अंक में इसकी कमी पूरी कर दी जायगी।

—मैनेजर

## भूल सुधार

पृष्ठ ३२७ पर तालिका के नीचे ९ पंक्तियां ३२६ पृष्ठ के साथ पढ़नी चाहिए। वस्तुतः यह लेख १०वीं पंक्ति 'उपर्युक्त तालिका न्यूयार्क' से प्रारम्भ होता है। पाठक सुधार कर पढ़ें।

—सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ७
जुलाई : १९६५

# सप्तपदी

## आदर्शवाद से यथार्थवाद की ओर ?

स्वाधीन होने के बाद देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन में क्रांति करने की भावना देश के नेताओं में बहुत प्रबल थी। यह स्वाभाविक भी था। देश की अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था दोनों दीर्घकालीन विदेशी शासन के कारण जड़ और गतिहीन हो रही थीं। इसमें गति लाने के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन आवश्यक था। इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद अर्थव्यवस्था में क्रन्तिकारी परिवर्तन हों।

इस दिशा में सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण कदम उठाया गया भूमि सुधारों के सम्बन्ध में। जमींदारी, व जागीरदारी प्रथाओं का उन्मूलन किया गया। भूमि काश्तकारों में बांटी जाने लगी और भूमि की चकबन्दी के साथ-साथ अधिकतम भूमि जोत की सीमा भी बाँधी जाने लगी। ये सब कार्य आसान नहीं थे। सदियों की पुरानी संस्थाओं को समाप्त करने में जहाँ अनेक कानूनी अड़चनें आईं, वहाँ व्यावहारिक कठिनाइयों ने भी सब राज्यों के प्रशासकों को बहुत परेशान किया है। सरकार को इन कठिनाइयों पर विजय पाने के लिए संविधान तक में परिवर्तन करने के लिए विवश होना पड़ा है। लेकिन आज तक भी भूमि सुधारों की प्रगति बहुत शिथिल रही है। प्रायः कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन के प्रस्तावों और योजना-आयोग के आवेदनों में भूमि सुधारों को शीघ्र से शीघ्र क्रियान्वित करने पर बल दिया जाता है। भूमि सुधार के कार्य में बाधक तत्वों की जीभर कर आलोचना की जाती है, किन्तु वे सुधार ऐसे हैं कि सरकार के प्रयत्नों के बावजूद वे पूरी तरह अमल में ही नहीं आ पाते। समाजवाद के नाम पर की गई अपीलें कोई निश्चित परिणाम उत्पन्न नहीं कर पाईं।

आखिर इसका कारण क्या है ? क्या इसका कारण यह है कि प्रशासन अधिकारी कांग्रेस की मूलभूत भावना समाजवाद को समझने नहीं या उसे अमल में नहीं लाना चाहते। अथवा इस भावना के नाम पर उठाये गये कदमों में ही कोई ऐसी कमी है कि उनको व्यवहार में लाना कठिन हो रहा है। जल्दी-जल्दी भूमि सम्बन्धी सुधारों में परिवर्तन भी शायद एक कारण है कि हमारा कृषि-उत्पादन आशा के अनुरूप बढ़ नहीं रहा। इसलिए योजना-आयोग के सामने यह विचार प्रस्तुत किया गया था कि भूमि सम्बन्धी नीति में आगामी दस वर्ष तक कोई परिवर्तन न किया जाय, ताकि कृषि उत्पादक निश्चित होकर उत्पादन बढ़ाने की ओर ध्यान दे सकें।

भूमि सुधारों के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव यह था कि अधिकतम भूमि जोत की सीमा निर्धारित करदी जाय, जिससे अधिक भूमि किसी एक व्यक्ति के पास न रहे। इस विचार का विरोध बहुत हुआ किन्तु समाजवाद की दिशा में बढ़ने के लिए कटिबद्ध कांग्रेसी सरकारों ने एक नहीं सुनी और इस आशय के कानून बना दिये। इन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनों में भी विभिन्न राज्यों में एक समानता नहीं है। योजना-आयोग ने उत्पादन कम न हो, इस दृष्टि से बड़े-बड़े संगठित फार्मों और चाय-बागानों को इस कानून की परिधि से बाहर रखने की राय दी थी। फिर भी अनेक राज्यों ने समाजवाद के आवेश में इसकी परवाह नहीं की।

सम्पदा के पाठकों को यह भली-भांति ज्ञात होगा कि महाराष्ट्र में कुछ चीनी मिलों के पास बड़े-बड़े खेत थे, जिनमें वह काफी पूँजी का विनियोजन करके गन्ने की वैज्ञानिक खेती करते थे। इसका परिणाम यह हुआ था कि महाराष्ट्र में गन्ने का उत्पादन ज्यादा होने लगा था और वहां का चीनी उद्योग उत्तरप्रदेश की अपेक्षा तीव्र गति से विकास कर रहा था। छोटे किसानों के पास वैज्ञानिक खेती के लिए पर्याप्त साधन नहीं होते। किसानों को साधन पहुँचाने की सब व्यवस्थाएँ अभी तक बहुत प्रभावशील नहीं हो सकीं। किसानों में शिक्षा और प्रबन्ध कुशलता का भी अभाव होता है। यही युक्ति क्रम देकर महाराष्ट्र की चीनी मिलों ने अपने बड़े-बड़े फार्मों पर अधिकतम भूमि जोत के नियम को लागू न करने का आग्रह किया था। किन्तु महाराष्ट्र की सरकार ने इन युक्तियों पर कोई ध्यान न देकर गन्ने के बड़े-बड़े फार्मों को भी भूमि जोत की सीमा अधिनियम के अन्तर्गत लाकर खेतों के टुकड़े कर दिये और वे किसानों में बांट दिये गये। यह सरकार की समाजवाद की नीति का एक व्यावहारिक परिणाम था, यद्यपि योजना-आयोग ने बड़े-बड़े सुव्यवस्थित फार्मों के विभाजन का कृषि उत्पादन की दृष्टि से बहुत समर्थन नहीं किया।

किन्तु अब ऐसा प्रतीत होता है कि कृषि क्षेत्र में सम्भावित परिणाम न निकलने और परिणामस्वरूप देश में अन्न संकट की स्थिति उत्पन्न होने और कुल राष्ट्रीय आय में आशा से बहुत कम सफलता प्राप्त होने की चिन्ता देश के उत्तरदायी व्यक्तियों में घर करने लगी है। इसके परिणामस्वरूप वे आदर्श बनाम यथार्थ पर पुनर्विचार करने लगे हैं। एक समाचार के अनुसार अब इस प्रस्ताव पर विचार किया जाने लगा है कि सरकार के पास पड़ी फालतू जमीन पट्टे पर जाइन्ट स्टाक फार्मिंग कम्पनियों को दे दी जाय। अब तक सरकार की नीति इस सम्बन्ध में भूमिहीन कृषकों और सहकारी समितियों को प्रोत्साहन देने की थी। सरकार इन भूमियों को खेती के लायक बनाती और थोड़ी बहुत सहायता—ऋण, बीज तथा औजार की सहायता देकर भूमिहीन कृषकों को सहकारिता के आधार पर वितरित कर देती। किन्तु पिछले अनुभवों से सरकार इस निष्कर्ष पर पहुँच गई है कि इन प्रयोगों का कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। खेती का उत्पादन नहीं बढ़ रहा। सहकारी समितियों और उनके सदस्यों में सरकार पर अधिकाधिक निर्भर होने तथा स्वयं कठोर परिश्रम न करने की भावना बढ़ रही है। इसलिए सरकार अपनी नीति पर पुनर्विचार करने के लिए विवश हुई दीखती है।

नये प्रस्ताव के अनुसार सरकार खेती लायक भूमि का निर्माण करके ऐसी कम्पनियों को वितरित करेगी, जो पूँजी विनियोजन करके खेती को व्यापारिक आधार पर चला सकें और भूमि से ज्यादा उपज प्राप्त कर सकें।

एक अनुमान के अनुसार भारत-सरकार के पास एक करोड़ एकड़ ऐसी जमीन है, जिसका पुनर्विकास करके खेती के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस जमीन को बड़े-बड़े भूमि खण्डों के रूप में ही कृषि कम्पनियों को पट्टे पर दे दिया जायगा। प्रत्येक कम्पनी को यह भी अधिकार होगा कि वह निजी किसानों की जमीनें भी पट्टे पर ले सके। ऐसे किसान कम्पनी के शेअर होल्डर बन सकेंगे और उन्हें काम देने पर प्राथमिकता दी जायगी। यह भी माना जाने लगा है कि बड़े भूखण्डों पर खेती करने से बेकारी को भी बढ़ने से रोका जा सकता है। इन कृषि-कम्पनियों की स्थापना का एक बड़ा परिणाम यह सम्भव है कि देहाती क्षेत्रों में कृषि से सम्बन्धित अनेक उद्योग खुल जावें और गाँवों में रोजगार के अधिक अवसर सुलभ हो जायँ।

सरकार अधिक उत्पादन के निश्चित लक्ष्य को रखते हुए इन कम्पनियों से यह भी आश्वासन प्राप्त कर सकती है कि वह अत्यन्त स्वल्प समय में कितना निम्नतम उत्पादन करने में समर्थ हो जाएंगे।

यदि यह प्रस्ताव क्रिया में परिणत हुआ तो निश्चित रूप से यह सरकार की समाजवादी नीति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन का सूचक होगा। इस नीति को बदलने के लिए



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अधिकतम भूमि जोत के उन कानूनों में परिवर्तन करना पड़ेगा, जिन पर कांग्रेस सरकारें इतने वर्षों से निरंतर बल देती आई हैं, परन्तु जो अब तक भी पूर्णतः अमल में नहीं आ सके हैं।

यह निश्चित है कि नयी रीति को अमल में लाना बहुत आसान नहीं है। इसके मार्ग में अनेक कठिनताएं पड़ सकती हैं। पहली बात तो यही है कि समाजवादी आदर्शों के समर्थक बहुत से कांग्रेसी ही इसका विरोध करेंगे और दूसरी कठिनता यह आ सकती है कि नयी फार्मिंग कम्पनियों के संचालक सरकार से यह आश्वासन चाहें कि वह उन कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण नहीं करेगी। अथवा राष्ट्रीयकरण की स्थिति में बाजार-दर से उन्हें पूरा मुआवजा दिया जायगा, क्योंकि कृषि उद्योग स्थापित करने के लिए उन्हें आज काफी विनियोजन करना पड़ेगा—सिंचाई के नये साधनों का प्रयोग करना होगा, ट्रैक्टर आदि खरीदने होंगे, बीज और खाद भारी मात्रा में लेने होंगे तथा अच्छे कार्य कुशल व्यक्ति नियत करने होंगे। यह सब भारी विनियोजन के बिना नहीं हो सकता। अब तक की सरकारी विनियोजन नीति से सन्तोष नहीं हुआ। महाराष्ट्र में गन्ने के खेतों का अधिग्रहण एक नमूना है। केन्द्र की घोषित नीति को ताक पर रख कर सुव्यवस्थित फार्मों को सरकार ने अपने हाथ में ले लिया। इसलिए अच्छे विनियोजक बिना निश्चित आश्वासनों के कृषि कम्पनियों को संगठित रखने का खतरा नहीं उठाएंगे। सरकार की भूमि सम्बन्धी नीति में समय-समय पर आदर्श और सिद्धांत के नाम पर सरकार अपने नियमों और उपनियमों में परिवर्तन करती रही है। इसलिए नये विनियोजक कोई खतरा नहीं उठाना चाहेंगे।

# शास्त्रीजी का प्रथम वर्ष

गई महीने के अंक में, जब देश में पं. नेहरू की प्रथम पुण्य तिथि उत्साह से मनाई गई, तब शास्त्रीजी के एक वर्ष-काल का भी पत्रों ने सिंहावलोकन किया। इसमें सन्देह नहीं कि प्रधान मंत्रित्व के प्रथम वर्ष (१९६४-६५) में श्री शास्त्रीजी को अनेक आंतरिक और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ा है। चीन का संघर्ष यथापूर्व है। पाकिस्तान ने कच्छ पर आक्रमण करके नया संकट पैदा कर दिया। नागालैंड की समस्या भी पहले की ही तरह उलझी हुई है। देश के भिन्न २ भागों में, पंचमांगी चाहे वे कम्युनिस्ट हों या पाकिस्तान-समर्थक मुस्लिम आंदोलनकारी, आज अधिक उग्र हो उठे हैं। काश्मीर के सम्बन्ध में कुछ प्रगति अवश्य हुई है, परन्तु शेख अब्दुल्ला की करतूतों ने इसे भी सुलझानेमें बाधा उत्पन्न की, परन्तु यह आलोचना करने के समय हमें स्मरण रखना चाहिए कि यह समस्याएं शास्त्रीजी के प्रथम वर्ष की देन नहीं हैं। इन समस्याओं का जन्म और विकास इससे भी पूर्व हो चुका था। इसलिए यह कहना ही उचित होगा कि शास्त्रीजी अपने प्रथम वर्ष में इन समस्याओं को सुलझा नहीं पाये।

आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष की मुख्य समस्याएं निम्नलिखित रही हैं :—

देश में घोर अन्न संकट और निरन्तर बढ़ती हुई मंहगाई, मुद्रा प्रसार, विदेशी मुद्रा का संकट, पूंजी बाजार में निष्क्रियता, उद्योग और व्यापार क्षेत्र में उत्साह का अभाव और पूंजी बाजार में निराशा। यह समस्याएं पहले नहीं थीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता, किन्तु शास्त्री जी के आने के बाद यह समस्याएं उग्र से उग्रतर हो गईं। शास्त्री प्रशासन ने इस देशव्यापी और बहुमुखी संकट को दूर करने का प्रयत्न अवश्य किया है। स्थिति में कुछ सुधार भी हुआ है, किन्तु रोग इतना पुराना है कि उसके निवारण के लिए भी बड़े श्रम और समय की आवश्यकता है। अपनी चरम सीमा से अनाज के दाम कुछ कम अवश्य हो गये हैं। पूंजी बाजार में भी जून के प्रथम सप्ताह में कुछ सक्रियता आने लगी है। अनाज के उत्पादन की नई योजनाओं की ओर योजना आयोग तथा अर्थशास्त्रियों का ध्यान अवश्य आकर्षित हुआ है, किन्तु अभी निकट भविष्य के सम्बन्ध में बहुत आशावाद प्रकट नहीं हुआ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशों से सहयोग प्राप्त करने की जिस नीति का सूत्रपात पं० नेहरू ने किया था, शास्त्रीजी भी उस नीति को बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं । उनकी रूस यात्रा बहुत सफल रही है। वहां जिस सहयोग की योजना बनी है, वह भारत के आर्थिक विकास में बहुत लाभकारी होगी। इसी प्रकार उनकी कनाडा यात्रा भी भारत की पंचवर्षीय योजनाओं को पूर्ण करने में कुछ न कुछ सहायक होगी। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, जापान आदि देशों का भी सहयोग यथापूर्व प्राप्त हो रहा है। इसका अर्थ यह है कि शास्त्रीजी की सरकार सब देशों में अपनी साख कायम करती जा रही है। वियतनाम के प्रश्न पर भी शास्त्रीजी ने जिस निर्भीकता के साथ अमेरिकन नीति का विरोध किया है, वह भी उनके प्रतिकूल नहीं जायगा, यह आशा की जा सकती है । श्री शास्त्री ने इस सम्बन्ध में कनाडा और ब्रिटेन की सरकारों से सहयोग प्राप्त करना चाहा है, वह बुद्धिमत्ता-पूर्ण है ।

परन्तु वस्तुतः सबसे कठिन समस्या जो शास्त्रीजी को हल करनी है, वह है शासन के प्रति जनता का विश्वास सम्पादन करना। अभी तक प्रशासन की अपनी अनेक कमियों के कारण सरकार को आर्थिक प्रवृत्तियों में जनता का सहयोग और विश्वास प्राप्त नहीं हो रहा । स्वयं जनता भी देश के आर्थिक विकास में सामूहिक रूप से रुचि नहीं ले रही है। न वह मितव्यय की ओर ध्यान देती है और न उत्पादन वृद्धि की ओर। इसी तरह अभी तक हम गांवों को भी आर्थिक योजनाओं की ओर आकर्षित नहीं कर पा रहे। इसका मुख्य कारण भी शासकों की ग्रामोद्योगों की ओर उदासीनता है। स्वयं कांग्रेस दल में परस्पर विरोध और अनैतिकता हमारी समस्त विकास योजनाओं को अनुत्साहित कर रहे हैं। हरेक व्यक्ति, हरेक दल, हरेक संस्था केवल अपने स्वार्थ को दृष्टि से प्रत्येक प्रश्न पर विचार करती है। जब तक भ्रष्टाचार, अनैतिकता को दूर नहीं किया जायगा, तब तक आर्थिक विकास के लिए देश में सामूहिक उत्साह उत्पन्न नहीं होगा । यह ठीक है कि पाकिस्तान ने आक्रमणात्मक रुख के कारण हमें अपनी रक्षा पर बहुत भारी व्यय करना पड़ रहा है और इसका परिणाम हमारी आर्थिक विकास में विनियोजन की मात्रा पर पड़ रहा है किन्तु हमें आशा करनी चाहिए कि शास्त्रीजी अपनी शांत और दृढ़ नीति के द्वारा इन समस्याओं को भी हल कर लेंगे।

## विकेन्द्रीकरण का दूसरा पहलू

हर एक प्रश्न के दो पहलू होते हैं। सत्य पर एकाधिकार किसी एक पक्ष की सम्पत्ति नहीं। आज हम जिसे एक सत्य समझते हैं, कल वह विभिन्न परिस्थितियों के कारण एक मात्र सत्य नहीं रहता। इसका एक उदाहरण उद्योगों का विकेन्द्रीकरण है। हमारे राष्ट्र की अर्थ नीति का आधार समाजवाद हो, यह मान कर उद्योगों के विकेन्द्रीकरक की नीति अपनाई गई। विकेन्द्रीकरण के दो मुख्य उद्देश्य हैं—एक तो यह है कि सम्पत्ति का केन्द्रीकरण कुछ थोड़े से हाथों में न हो और अधिक से अधिक हाथों में इसका वितरण हो, इसलिए यह सोचा गया कि नये उद्योगों के लायसेंस औद्योगिक क्षेत्र में नये सिरे से आने वाले उद्यमियों को दिए जायें। इससे यह लाभ होगा, कि सम्पत्ति और लाभ का वितरण अधिक हाथों में होने लगेगा ।

दूसरे उद्योगों के अधिक क्षेत्रों में वितरण का भी ध्यान रखा गया, जिससे देश का कोई एक क्षेत्र ही उद्योग प्रधान और सम्पन्न न बने, देश के सभी भागों में उद्योग फैल जायें ताकि अधिकतम जनता को उद्योगों की स्थापना से होने वाले लाभ प्राप्त हो सकें। इसमें सन्देह नहीं कि ये दोनों उद्देश्य बहुत अच्छे हैं। यदि इन पर पूर्णतः अमल किया जाय, तो समाजवाद के निकट देश को लाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं । अमीर-अमीर हो रहा है, और गरीब ज्यादा गरीब, इसका एक उपाय उद्योगों का अधिकाधिक वितरण है।

किन्तु वस्तुतः यह भी हमारी समस्या का एक पहलू है। औद्योगिक विकास की नीति का निर्धारण करते समय हमें पहले यह निश्चित करना होगा, कि देश की प्रथम आवश्यकता समाजवाद है या आर्थिक समृद्धि। बढ़ती हुई महंगाई को दूर करने का एक मात्र उपाय उत्पादन में वृद्धि है, भले ही यह वृद्धि उद्योगों के केन्द्रीकरण से संबंधित हो अथवा उद्योगों के अधिक क्षेत्रों में वितरण से। इसी के साथ ही यह प्रश्न भी बना हुआ है, कि उत्पादन की मात्रा में ही वृद्धि पर्याप्त नहीं है उत्पादन व्यय में भी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमी आवश्यक है। जितना उत्पादन व्यय कम होगा, वस्तु का मूल्य उतना ही कम होगा और विदेशी बाजारों की प्रतिस्पर्द्धा में वह उतना ज्यादा ही टिक हो सकेगी।

आज देश को विदेशी मुद्रा की आवश्यकता है। इस दृष्टि से यदि हम मूल प्रश्न पर विचार करें तो प्रश्न का स्वरूप इस तरह हो जायगा कि उद्योगों के अधिकाधिक वितरण से उद्योगों का उत्पादन अधिक बढ़ता है, उत्पादन व्यय कम होता है, अथवा बड़े कारखानों को अधिक विस्तार की अनुमति देकर हम कम व्यय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं। भारत सरकार की नीति अब तक अधिक विकेन्द्रीकरण की ओर रही है। किन्तु इससे उद्योगों का उत्पादन आशा के अनुरूप नहीं बढ़ पाया है और विदेशी मुद्रा को भी प्राप्त करने में ही हम अधिक समर्थ नहीं हो पाये हैं। यदि किसी वस्तु के उत्पादन के लिए सर्वथा नये क्षेत्र में नये कारखाने खोलने हों तो निश्चित रूप से पूंजीगत व्यय बहुत बढ़ जायगा। हम पहले से विद्यमान कारखानों को अपना कारोबार बढ़ाने की अनुमति देकर कम व्यय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं। इसी तरह नये क्षेत्रों में कारखाने खोलने की सुविधायें अपेक्षाकृत कम प्राप्त हैं। पानी, बिजली, परिवहन, दक्ष श्रमिकों की उपलब्धि की कमी आदि अनेक कारणों से नये क्षेत्रों में उत्पादन व्यय अधिक हो जायगा। और फलतः न केवल उत्पादन की मात्रा ही नहीं बढ़ेगी, किन्तु नये कारखानों का माल महंगा भी पड़ेगा। समाजवाद के आदर्श में हमने पहले से सम्पन्न को अधिक सम्पन्न न बनाने की दृष्टि से उद्योगों के लायसेंस न देने की नीति अपनाई। किन्तु उसका परिणाम बहुत सन्तोषजनक नहीं रहा। नये उद्योग खोलने की साधनगत और अनुभवगत क्षमता नये उद्यमी में स्वभावतः कम होती है। इसलिए सरकार को सम्पूर्ण प्रश्न पर नई दृष्टि से विचार करना पड़ रहा है। एकाधिकार का केन्द्रीकरण भी रुक जाय, उत्पादन व्यय भी कम हो और उत्पादन अधिक हो, इन बातों का समाधान सरकार को करना है। समस्या के दोनों रूप अपने-अपने में महत्त्वपूर्ण हैं। आजकल विदेशी मुद्रा का संकट जिस तरह बढ़ता जा रहा है, बहुत सम्भव है कि उससे समाजवादी आदर्श की कुछ समय के लिए टाल ही



हो जाय और सरकार को विकेन्द्रीकरण का नारा उसी तरह स्थापित करना पड़े, जिस तरह मद्य-निषेध का नारा आज निर्बल पड़ गया है।

## ६७ लाख रु० प्रतिदिन देने होंगे

१९४७ में जब देश स्वतन्त्र हुआ तो उस समय हमारे पास २००० करोड़ रुपये स्टर्लिंग बैलेन्स में थे। आज हमारे पास उनमें से ३५४ करोड़ रुपये बाकी हैं और हम पर २,४८९ करोड़ रुपये का विदेशी ऋण है। चौथी पंचवर्षीय योजना में हमें ६८७ करोड़ रुपये ऋण की किश्तों के तथा ४३६ करोड़ रुपये ब्याज के चुकाने पड़ेंगे। इस तरह से चौथी योजना में ६७ लाख रुपये प्रतिदिन के हिसाब से देने पड़ेंगे, बशर्ते कि हम और अधिक ऋण न ले लें। वित्तमंत्री शायद इसीलिए भारत सहायता संघ के देशों से किश्त चुकाने की मोहलत मांगने का प्रस्ताव करने जा रहे हैं।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में हम विदेशी सहायता ५.५ प्रतिशत पर निर्भर थे। परन्तु तीसरी पंचवर्षीय योजना में हम २८.५ प्रतिशत विदेशी सहायता पर निर्भर हो गये हैं, और चौथी योजना के साधनों के ५० प्रतिशत के लिए विदेशी सहायता पर हम निर्भर रहेंगे। जितने अधिक कर हम देते हैं, उतने ही ऋण अधिक हो जाते हैं। उपर्युक्त अंक हमें बहुत चौंका देने वाले हैं और आज विशेषकर जब हम अपने निर्यात पर्याप्त मात्रा में नहीं बढ़ा लेते, अपनी नीति और पंचवर्षीय योजना पर पुनर्विचार के लिए बाधित कर देंगे।

इन्हीं दिनों एक समाचार मिला है कि विश्व बैंक ने भारत को अपने एक पत्र में यह परामर्श दिया है कि बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ने और नयी-नयी योजनाओं को अपने हाथ में लेने के बजाय पहले हमें अपनी वर्तमान योजनाओं का पूरा लाभ उठाने का ही हमें प्रयत्न करना चाहिए। अभी विश्व बैंक की सम्मति में हमें अपनी पहली तीन पंचवर्षीय योजनाओं से लाभ प्राप्त करने में ही कुछ समय लग जायगा। हमारी अनेक छोटी बड़ी परियोजनाएं अपनी पूरी क्षमता तक विकास नहीं कर पायी हैं। विश्व बैंक ने यह सलाह भी दी है कि हमें अभी और अधिक घाटे की अर्थ व्यवस्था को नहीं अपनाना चाहिए। इस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परामर्श का यह अर्थ लिया जा रहा है कि चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में हमें बहुत कटौती करनी चाहिए।

हमारी अपनी नम्र सम्मति में ऊंची महत्त्वाकांक्षा प्रशंसनीय होते हुए भी अपनी यथार्थ सीमा से बाहर हो जाती है, तो वह पूरा लाभ न देकर हानि ही पहुंचाती है। उपर्युक्त अंकों से भी यह स्पष्ट है कि विदेशों से ऋण लेकर भी हम अपनी जो योजनाएं पूर्ण करते हैं, वे हम पर और भी अधिक बोझ डाल देती हैं। इसलिए हमें अपनी नयी योजना के निर्माण में बहुत समझ बूझकर चलना चाहिए। अब तक हम सिंचाई की बड़ी बड़ी योजनाओं से ही पूरा लाभ नहीं उठा सके। विश्व बैंक की सम्मति में ८५ प्रतिशत क्षमता का उपोग किया जा सकता है, कि जबकि अभी तक हम केवल ७३ प्रतिशत का उपयोग कर सके हैं।

## आयात नीति और हम

इस वर्ष पहली जुलाई को नई आयात नीति की घोषणा हो गई। स्वभावतः जैसी आशा थी, नई आयात नीति में बहुत कटौती की गई है। विदेशी मुद्रा को देखते हुए यह अनिवार्य ही दीखता था, पुराने आयात में ५०% कमी कर दी गई है। वास्तविक उपभोक्ताओं और निर्यात सम्बन्धित योजना में नया लायसन्स देने के सम्बन्ध में आयात नीति की घोषणा फिर की जाएगी। सरकार का कहना यह है कि नई आयात नीति से उद्योग को बहुत नुकसान नहीं पहुँचेगा।

११ जून से रिजर्व बैंक के विवरण के अनुसार विदेशी मुद्रा कोष घट कर ७२.६७ करोड़ रु० रह गया है, जबकि कानून के अनुसार कम से कम २०० करोड़ रु० का मुद्रा कोष बचना चाहिए। हमारी स्थिति इतनी शोचनीय है कि हमने समय पर काम में लाने के लिए विश्व मुद्रा कोष से २० करोड़ डालर की जो सहायता ली थी, उसमें से भी १२.५ करोड़ डालर खर्च कर चुके हैं।

हमें जहां अपने देश में उद्योगों के विकास के लिए बहुत सी मशीनरी और कच्चे माल की आवश्यकता विदेशों से पूरी करनी है, वहां विदेशी ऋणों की किस्त और ब्याज के रूप में ही कम से कम १४० करोड़ रु० चुकाना पड़ेगा। हमारी कठिनता इस कारण और भी बढ़ गई है कि अमेरिका ने यह फैसला कर लिया है कि पी० एल ४८० के अन्तर्गत अमेरिका जो अनाज भारत को भेजता था, अब उसका जहाज भाड़ा २० करोड़ रु० भी भारत को चुकाना होगा। देश में विकास की आवश्यकताएं बढ़ती जा रही हैं। और इन्हें पूरा करने के लिए हमें और भी अधिक विदेशी मशीनरी की आवश्यकता होगी। ऐसी स्थिति में आवश्यक यह है कि हम अपनी आयात नीति को कठोर करें। परन्तु उद्योग का उत्पादन कम न हो, उसके पहले हमें यह देखना है कि क्या हम भारतीय स्वयं अपने उपभोग को कम कर सकते हैं या नहीं। उदाहरण के लिए यदि हम महीन कपड़ा कम लें तो जहां मिश्र की रुई का आयात कम होगा, वहां विदेशी रुई से बना कपड़ा विदेशों को अधिक निर्यात हो सकेगा। इसी तरह अन्य भी ऐसी वस्तुओं का उपयोग कम लिया जा सकता है, जो विदेशी सामान से बनती हों अथवा जिनका विदेशों को निर्यात लिया जा सकता हो।

## कपास की खेती: स्तुत्य परीक्षण

वैज्ञानिक खेती और साधन सम्पन्नता कृषि उत्पादन को किस तरह बढ़ा सकती है, इसका एक ज्वलंत उदाहरण इन्डियन कौटन मिल्स फेडरेशन के द्वारा महाराष्ट्र में किये गये परीक्षण हैं। इस फेडरेशन की यह मांग रही है कि सरकार कपास के प्रति एकड़ उत्पादन को बढ़ाने के लिए नए वैज्ञानिक प्रयोग करे। सरकार को विभिन्न कारणों से इसमें सफलता नहीं मिली। फैडरेशन ने ही आगे बढ़कर यह महत्त्वपूर्ण कार्य अपने हाथ में लिया। इस कार्य के लिए उसने १५ लाख रुपये का बजट बनाया। मद्रास के कोयम्बटूर जिले में एक परीक्षण केन्द्र चुना गया। इस जिले में भी तीन क्षेत्र प्रयोग के लिए चुने गये, जो अलग-अलग गांवों में थे। फैडरेशन ने इन खेतों के किसानों को बीज, नये औजार और खाद की पूरी सुविधा दी और कृषि विशेषज्ञों का परामर्श भी दिये जाने की व्यवस्था की। वैलाकिनार गांव में प्रति एकड़ ४.२१ क्विंटल कपास पैदा होती थी। नये प्रयोग के बाद इस क्षेत्र में

[शेष पृष्ठ ३४३ पर]



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था और संतुलित विकास

श्री हीरालाल

दुनिया के धनी और गरीब देशों की आय में अन्तर निरन्तर बढ़ते जाने, नवोदित एवं अर्द्ध-विकसित देशों की आर्थिक विकास के लिए तीव्र उत्कंठा और वर्षों में टैक्नोलाजी के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ जाने से आर्थिक विकास की जटिल समस्या पर शीघ्रातिशीघ्र ध्यान देने की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है। वास्तव में द्रुतगति से आर्थिक-विकास की मांग अब जोरों से की जाने लगी है और दुनिया के लगभग सभी गरीब देश कम से कम समय में और समुचित परिमाण में आर्थिक उन्नति करने के लिए प्रयत्नशील हैं। लेकिन भारत जिस ढंग से आर्थिक विकास के लिए संघर्ष कर रहा है, शायद उतना कोई दूसरा अल्प विकसित देश नहीं कर रहा।

## सर्वोत्तम योजना

संसार के अलग-अलग देशों में राजनैतिक विचारधाराओं के अनुरूप आर्थिक विकास सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की नियोजन पद्धतियां विद्यमान हैं, जैसे सम्पूर्णतावादी आर्थिक नियोजन, पूंजीवादी नियोजन आदि। इन सभी प्रकार की अर्थ-व्यवस्थाओं का भली-भांति अध्ययन एवं विश्लेषण करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि इनमें से प्रजातंत्र पर आधारित योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था ही सबसे उत्तम है। उदाहरण के लिये सम्पूर्णतावादी अर्थात् साम्यवादी योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था के जैसी कि रूस और चीन में पाई जाती है, अन्तर्गत महत्त्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक संगठनों, ऐच्छिक संघों, मजदूर संगठनों, राजनीतिक दलों, सामुदायिक संघों, संक्षेप में सम्पूर्ण मानवजीवन-सम्बन्धी गतिविधियों पर राज्य का पूर्ण नियंत्रण होता है। इस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक एवं ऐच्छिक संगठन तथा समूह, जिनका मानव जीवन के चहुँमुखी विकास में अपना पृथक् अस्तित्व होता है और जो आर्थिक विकास के लिये नितान्त आवश्यक होते हैं, न तो स्वतंत्रतापूर्वक कार्य कर सकते हैं और न ही विपरीत हितों का प्रतिवाद कर पाते हैं। इसी प्रकार, पूंजी प्रधान अर्थ-व्यवस्था में शोषण, सामाजिक अन्याय, आर्थिक असमानता आदि उन तत्त्वोंको प्रमुख स्थान प्राप्त होता है, जो जन-कल्याण की नीति के सर्वथा प्रतिकूल हैं। अतः इन तथाकथित सभी प्रकार की अर्थ-व्यवस्थाओं के लाभों एवं अलाभों को दृष्टिगत रखते हुये भारत में ऐसी अर्थ-व्यवस्था को अपनाया गया है, जो देश और समाज की आवश्यकताओं और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के ढांचे के सर्वथा अनुकूल है अर्थात् प्रजातंत्र के मूल सिद्धान्तों पर आधारित योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था। जहां तक भारत में मानवीय एवं भौतिक साधनों का प्रश्न है, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् समस्त देश में हुई खोजों के अनुसार यह निर्विवाद है कि भारत में इन साधनों का अभाव नहीं है।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि इन सभी साधनों का कौन-सी अर्थ-व्यवस्था के अनुसार उपयोग किया जाये, जिससे राष्ट्रीय आर्थिक विकास तथा जन-कल्याण के कार्यक्रम को कम से कम समय में कार्यान्वित किया जा सके। विश्व के सभी अर्थशास्त्रियों की सहमति इस बात पर अवश्य दृष्टिगत होती है कि अल्प विकसित राष्ट्रों के आर्थिक विकास के लिये आयोजित अर्थ-व्यवस्था को अंगीकृत करना ही उचित व लाभप्रद सिद्ध होगा। यही कारण है कि आज अल्प विकसित व नवोदित राष्ट्रों में आयोजित अर्थ-व्यवस्था को अपनाया जा रहा है। भारत ने भी आयोजित अर्थ-व्यवस्था का भली भांति अध्ययन कर इसमें अपनी गहरी आस्था व्यक्त की है तथा इसे अमली जामा पहनाने के लिये पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है।

## पूर्व अध्ययन

योजनाबद्ध आर्थिक विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता यह है कि कोई भी विकास योजना आरम्भ करने तथा उससे सम्बन्धित लक्ष्य-निर्धारण से पूर्व उसके विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन किया जाये, जैसे योजना की सफलता के लिये आवश्यक वातावरण विद्यमान है या उत्पन्न करना पड़ेगा? लक्ष्यों एवं साधनों के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच कहां तक संतुलन बैठ सकता है ? उसकी सफलता किन-किन बातों पर निर्भर करती है ? क्या ये उपलब्ध हो सकती हैं ? योजना में निहित विभिन्न कार्यक्रमों में से किनको प्राथमिकता दी जानी चाहिए और उनके कार्यान्वयन में आर्थिक, भौतिक, सामाजिक (जन-सहयोग, जनमत, नैतिक आदि) साधन कहां तक उपलब्ध हो सकते हैं ? उसके पूर्ण होने पर कितना उत्पादन होगा, कितनी पूंजी लगेगी, कितने लोगों को रोजगार मिल सकेगा तथा उसका लाभ समूचे राष्ट्र को होगा अथवा किसी वर्ग-विशेष को ? यही तो वे आधारभूत तत्व हैं, जिनकी बुनियादों के आधार पर योजना की सफलता और लाभ आंका जा सकता है। इस प्रकार के विश्लेषण के अभाव में निश्चित परिणामों के सम्बन्ध में केवल अनुमान मात्र ही लगाया जा सकता है, जिसका बौद्धिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं होता। इस अध्ययन के पश्चात् ही योजनाओं के क्रियान्वयन और लक्ष्यों की पूर्ति सम्बन्धित समस्याएं होती हैं, जो कि आयोजित अर्थ-व्यवस्था की आत्मा कही जा सकती हैं।

## हमारा आयोजन

जहां तक हमारे देश में पंचवर्षीय योजनाओं का सम्बन्ध है, वे सभी उक्त तत्वों के विश्लेषण के आधार पर ही बनाई जाती हैं अर्थात् पूंजी विनियोग, उत्पादन क्षमता, रोजगार की उपलब्धियां, तकनीकी व्यवस्था एवं जीवन स्तर को ऊंचा उठाने आदि के महत्वपूर्ण तत्वों के विभिन्न पक्षों की ओर विशेष ध्यान रखा जाता है। मैनहीम ने अपनी पुस्तक 'फ्रीडम पावर एण्ड डेमोक्रेटिक प्लानिंग' में जिस आदर्शपूर्ण योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था का प्रतिपादन किया है, भारतीय आर्थिक नियोजन ठीक उसके अनुरूप उतरता है। भारतीय नियोजन एक ऐसा नियोजन है, जो सामाजिक अन्याय, एकदलीयता, अधिनायकवाद, जनस्वातंत्र्य का हनन और वर्ग-विशेष की उन्नति की सर्वथा विरोधी है। भारतीय बन्धनरहित नियोजन में लोकतांत्रिक नियंत्रण तथा राज्य नियंत्रण में भी अनुकरणीय सामंजस्य स्थापित किया गया है। हमारा नियोजन उद्योगपतियों अथवा मजदूरों, किसी को भी एकाधिकार न देकर पूर्ण रोजगार और साधन-स्रोतों का भरपूर उपयोग करने पर अत्यधिक बल देता है। इसमें धन और पुरस्कार के वितरण का आधार समानता है न कि सुविधा। इसी प्रकार हम ऐसे योजनाबद्ध नियोजन को स्वीकार किये हुए हैं, जो किसी वर्ग-विशेष के लिए न होकर उच्चतम सम्पन्नता और निम्नतम निर्धनता के बीच परम्परागत मूल्यवान तत्वों को नष्ट किये बिना, सर्वसम्मति एवं समाजवादी ढंग से सामंजस्य स्थापित करने के लिये दृढ़-प्रतिज्ञ है। संक्षेप में, भारतीय योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था ऐसी अर्थ-व्यवस्था है जिसके द्वारा अन्ततोगत्वा केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण के बीच अपने आप संतुलन स्थापित हो जायेगा। यह व्यक्तितत्व के विकास के लिए समाजवादी नियंत्रण के नये उपकरणों द्वारा समाज में समुचित परिवर्तन और परिवर्धन करता है तथा इसका मूल उद्देश्य आर्थिक शक्तियों को अपेक्षित दिशा में व्यापक जन-कल्याण के हितार्थ आगे बढ़ाना है।

कारबरा वार्ड ने अपनी पुस्तक 'दि प्लान अण्डर प्रेशर' में लिखा है कि 'भारतीय आयोजन कार्यान्वयन की अपेक्षा प्रस्तावन में अधिक मजबूत है' अर्थात् भारतीय योजनाबद्ध विकास चीजों के अमल लाने के स्थान पर उन पर सोच-विचार में कहीं अच्छा है। इसी आधार पर कुछ लोगों का मत है कि हमारी योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था में जो सबसे बड़ी कमी है, वह यह है कि योजनाओं सम्बन्धी लक्ष्य इतने ऊंचे निर्धारित कर दिये जाते हैं, जिनको कि देश में उपलब्ध साधनों को देखते हुये प्राप्त करना हमारी पहुँच के सर्वथा बाहर है तथा वर्तमान पंचवर्षीय योजनाओं में जिस नीति को अपनाया जा रहा है, उससे धनी वर्ग के हाथ और भी मजबूत होते जा रहे हैं।

## अमली जामे से पूर्व

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था में किसी भी योजना को अमली जामा पहनाने से पूर्व उसके विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श कर, लक्ष्यों का निर्धारण अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा इसके अभाव में न तो योजना उद्देश्य पूर्ण कही जा सकती है और न ही सफल। अर्थ-शास्त्र का यह पहला सिद्धान्त है कि अधिकतम वृद्धि के लिये भौतिक साधनों का इस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार प्रयोग करना जिससे कि अधिक निवेश (विनियोजन) के लिये अधिकतम सम्भव साधनों को उपलब्ध कराया जा सके। दूसरे शब्दों में, लागत और लाभप्रदता को ध्यान में रख कर ही विनियोजन किया जाना चाहिये। यह सिद्धान्त व्यवहार रूप में उतारा जा सकता है जबकि लक्ष्य हमारे सम्मुख हों। जहां तक योजनाओं द्वारा वर्ग-विशेष अथवा धनी-वर्ग के हाथ मजबूत करने का प्रश्न है, इसमें किसी प्रकार की आस्था रखना या विश्वास रखना पूर्णरूपेण तथ्यरहित होगा। योजना आयोग केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, निजी उद्योगपतियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों से विचार-विमर्श करने की राष्ट्र-व्यापी पंचवर्षीय योजनायें बनाता है और उनसे सम्बन्धित दीर्घकालीन लक्ष्य निर्धारित करता है, तभी इन ठोस लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये निर्दिष्ट परियोजनाओं का समावेश किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक परियोजना के लिये वित्तीय और विदेशी विनिमय के बजट तैयार किये जाते हैं; तत्पश्चात् योजना के विभिन्न अंगों को समन्वित करने के प्रयत्न किये जाते हैं। योजनाओं की रूपरेखा का कार्य यहीं समाप्त नहीं होता। योजना आयोग के माध्यम से जनता की प्रतिनिधि सरकार द्वारा इन योजनाओं का विश्लेषण किया जाता है। फिर इन पर संसद् में पूरी बहस की जाती है और साथ-साथ जनमत हेतु इन्हें प्रकाशित किया जाता है। यदि जनमत यह समझता कि इन योजनाओं द्वारा धनी-वर्ग अथवा पूंजीपतियों को प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई गई है, तो यह निश्चित है कि इन योजनाओं को जो भी सीमित अथवा असीमित सफलता प्राप्त हुई है, कदापि न मिलती।

## अपूर्णताएं

यह भी सत्य है कि योजनाबद्ध विकास के कार्यक्रमों में पूर्ण प्रयत्नशील होने पर भी हमें दूसरी और तीसरी योजनाओं में कुछ आधारभूत असफलताओं का सामना करना पड़ा है, जिसके लिये सरकार को आलोचना-समालोचनाओं का निरन्तर सामना करना पड़ा है। लेकिन ये आलोचक शायद इस बात को नहीं समझ पा रहे हैं कि अपूर्णतायें हमेशा मानव-जीवन के अंग हैं और ये तथाकथित अपूर्णतायें ही वास्तव में जीवन के महत्त्वपूर्ण तत्व होते हैं। नियोजन में भौतिक अन्दाजे बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं, परन्तु इन अन्दाजों को खाद्य, फौलाद, रेलवे लाइनों आदि के रूप में देश के समक्ष रखना कोई सरल कार्य नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि जिन कारणों से योजना-सम्बधी असफलतायें मिली हैं, उनका उत्तरदायित्व कुछ सीमा तक कार्यान्वयन करने वाली प्रशासनिक मशीनरी पर अवश्य है, परन्तु हमें यह न भुलना चाहिये कि इनमें से कुछ ऐसे भी कारण हैं जो मानवीय नियन्त्रण की परिधि से सर्वथा बाहर हैं, जैसे चीनी आक्रमण, बाढ़ों का प्रकोप, सूखा, अत्यधिक वर्षा, विदेशी विनिमय एवं तकनीकी सहायता का अभाव और कच्चे माल, कलपुर्जों, उपकरणों का अभाव। रूस का ही उदाहरण लीजिये। रूस १९१७ की क्रान्ति के बाद से आज तक कृषि उत्पादन सम्बन्धित वृद्धि को युद्धकालीन स्तर पर महत्त्व दे रहा है, परन्तु आज तक उसको इसमें पूर्ण सफलता हासिल नहीं हो सकी है। यदि हमें कुछ असफलताओं का सामना करना भी पड़े तो इससे हतोत्साहित होने की कोई वजह नहीं है। मुख्य बाधाओं के बावजूद भी गत वर्षों के आयोजन से राष्ट्रीय आय में ४२ प्रतिशत, कृषि उत्पादन में ४६ प्रतिशत, औद्योगिक उत्पादन में ९४ प्रतिशत की जो वृद्धि हुई है, वास्तव में प्रशंसनीय है। वास्तव में वैज्ञानिक ढंग से तैयार की गई योजनाओं तथा आयोजन में त्रुटियों की संभावना बहुत कम है। अगर त्रुटि है तो प्रशासन में है, कार्यान्वयन के ढांचे में है जैसे निरर्थक विलम्ब, लालफीताशाही, नौकरशाही, भ्रष्टाचार आदि। वैसे तो ये त्रुटियां ज्ञान और समृद्धि के, जो कि आयोजित विकास के सम्बद्ध हैं, साथ-साथ उत्तरोत्तर अपने आप कम होती जाएंगी, परन्तु अभी फिलहाल कुछ सीमा तक यदि अनिवार्य शक्ति का सहारा ले लिया जाये, तो इसमें कोई बुराई नहीं होगी।

## मूल आधार : समाज रचना

हमारी योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था का मूल-आधार समाज की रचना करना है। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप से समाजवादी समाज की रचना का हमारा अपना अलग ही अर्थ है, जिसका मतलब यह नहीं कि देश में अमेरिकन पद्धति का समाजवाद या रूसी पद्धति का साम्य-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाद स्थापित हो बल्कि हमारे समाजवाद की रूपरेखा हमारी अपनी आवश्यकताओं, और भावी सामाजिक व अर्थ-व्यवस्था को दृष्टिगत रख कर तय की गई है। इसका मूलभूत उद्देश्य है देश में गरीबी, अमीरी, आय व अवसर की असमानता का अन्त करना, बेकारी का उन्मूलन, प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना और जन साधारण्य की आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक उन्नति करना।

न्यूनतम जीवन स्तर पृथ्वी के किसी भी मानव की आज पहली शर्त है, जिसके लिये हम योजनाबद्ध विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्ण रूप से संलग्न हैं। राष्ट्रीयकरण इसका सजीव उदाहरण है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद पंचवर्षीय योजना द्वारा सरकार ने अर्थ-व्यवस्था के महत्वपूर्ण अथवा राष्ट्र-व्यापी हितों से सम्बन्धित हिस्सों का सम्पूर्ण या आंशिक राष्ट्रीयकरण कर लिया है जैसे कि बैंकों का कुछ भाग, जीवन बीमा, परिवहन, पोत-निर्माण और हवाई जहाज निर्माण आदि। यही नहीं, अधिकांश महत्वपूर्ण उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के लिये आरक्षित कर दिये गये हैं और यह क्षेत्र आर्थिक जीवन के उन क्षेत्रों में भी प्रवेश कर रहा है, जो इस प्रकार से आरक्षित नहीं थे। राष्ट्रीयकरण की और अधिक सुविधा के लिये संविधान में भी संशोधन कर दिया गया है ताकि इस दिशा में किसी किस्म की बाधा न हो। इसके साथ-साथ पंचवर्षीय योजनाओं में सार्वजनिक क्षेत्र में लगाई जाने वाली पूंजी भी लगातार और काफी परिमाण में बढ़ रही है। इन सब बातों से स्पष्ट है कि सरकार समाजवाद स्थापित करने की दिशा में किस प्रकार प्रयत्नशील है।

## आक्षेपों का उत्तर

कुछ लोग भारतीय समाजवाद की वास्तविकता में संदेह करते हुये यह दलील देते हैं कि यदि सरकार सही मानों में समाजवाद स्थापित करना चाहती है तो समूची अर्थ-व्यवस्था पर नियन्त्रण करने में क्यों हिचकती है? पूर्ण राष्ट्रीयकरण करने में सबसे पहले तो इतनी पूंजी की आवश्यकता होगी जिसकी कि हम देश में उपलब्ध साधनों के आधार पर कल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरे, हमारा सार्वजनिक क्षेत्र इतना कुशल नहीं हो पाया है जिससे कि निजी क्षेत्र में होने वाले लाभ से उसकी तुलना की जा सके। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि सार्वजनिक क्षेत्र ने पहली दो योजनाओं में अपने लिये निर्धारित लक्ष्यों को पूरा ही नहीं किया है, बल्कि और भी अधिक सफलता दिखाई है और ऐसा कोई कारण नहीं है कि जिसके आधार पर यह विश्वास किया जा सके कि तीसरी योजना में इसकी कार्यक्षमता घट गई है। इसके अतिरिक्त, हमारी योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था में निजी क्षेत्र को बहुत अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। उस पर कड़े और व्यापक सरकारी नियमन लागू हैं। यदि नियमनों के इन अधिकारों को पूर्ण रूप से उपयोग में लाया जाये तो सरकार निजी क्षेत्र से लगभग ठीक वही काम करवा सकती है, जिसकी उसे जरूरत है। इस प्रकार अत्यधिक व्यक्तिगत लाभ व शोषण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलने का प्रश्न कोई विशेष महत्व नहीं रखता। सारांश यह कि आंशिक राष्ट्रीयकरण के बावजूद भी अभी तक की विकास की चरम स्थितियों में हमारी योजनाएं उत्पादन प्रधान रही हैं।

## मिश्रित अर्थव्यवस्था

योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था का अन्य महत्वपूर्ण पहलू है 'मिश्रित अर्थ-व्यवस्था।' भारत जैसे अर्द्ध-विकसित देश में मिश्रित अर्थ-व्यवस्था—जिसमें सार्वजनिक एवं प्राइवेट दोनों ही क्षेत्रों के लिये स्थान होता है—का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत तीन क्षेत्र कार्यशील होते हैं (१) सार्वजनिक या सरकारी क्षेत्र (२) निजी या व्यक्तिगत उपक्रमियों का क्षेत्र और (३) सरकार व व्यक्तिगत उपक्रमियों का संयुक्त क्षेत्र। कौन-सा उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में रखा जाये और कौन-सा उद्योग किसी अन्य क्षेत्र में, इसका निर्णय योजना आयोग द्वारा आवश्यकतानुसार किया जाता है।

मिश्रित अर्थ-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्तिगत उपक्रमी एवं सरकार दोनों का उत्पादन और वितरण के क्षेत्र में संयुक्त दायित्व होता है। परन्तु इस अर्थ-व्यवस्था अर्थात योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था के अन्तर्गत व्यक्तिगत उपक्रमी को एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी पड़ती है और ऐसा करते समय उसे सर्वशक्तिमान सरकार का मार्ग दर्शन प्राप्त करना होता है, जो समाज के व्यापक हितों की रक्षक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वस्त्र-उद्योग की विषम समस्याएं

श्री रामनाथ पोद्दार

भारत के वस्त्र-उद्योग की वर्तमान विषम समस्याओं का सुन्दर विवेचन

प्रायः सभी क्षेत्रों में अपार साधनों और विशाल उत्पादन के होते हुए भी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के औद्योगिक विकास का महत्त्व उसके मोटर उद्योग में है। इसी तरह ब्रिटेन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय उद्योग घड़ियों का निर्माण है। स्पात और रसायन जर्मनी के राष्ट्रीय उद्योग हैं तो इलैक्ट्रोनिक जापान का। इसी तरह भारत के औद्योगिक विकास की आत्मा सूती वस्त्र और जूट उद्योग है। वस्त्र निर्यात में भारत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वस्त्र उद्योग में उत्पादन और निर्यात की दृष्टि से भारत का विश्वमें दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत ने ही विश्व को सबसे पहले कपास दी है। आज भी वस्त्र उद्योग भारत का राष्ट्रीय उद्योग है।

यदि भारतवर्ष ने आगामी ५ वर्षों में वस्त्र निर्यात में विश्व का नेतृत्व प्राप्त करना है तो भारत सरकार को अपनी नीति में मौलिक परिवर्तन करना होगा और वस्त्र उद्योग को राजनैतिक दलबन्दी का अखाड़ा अथवा केन्द्रीय-करण और विकेन्द्रीयकरण आदि विवादग्रस्त वादों की प्रतिस्पर्धा की पृष्ठभूमि बनने से रोकना होगा।

वस्त्र उद्योग आज कठिन परिस्थितियों में से गुजर रहा है, क्योंकि कपड़े और सूत के भारी गोदाम खाली नहीं हो पा रहे हैं तथा वस्त्र उद्योग पर भारी आर्थिक दबाव आ रहा है। नयी मशीनरी के लगाने पर मिलें पहले ही भारी वित्तीय बोझ अनुभव कर रही है। भारत सरकार आज वस्त्र उद्योग पर आंशिक मूल्य नियंत्रण कर रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि मिलें अपनी उत्पादन क्षमता, मशीनरी और संगठन के अनुसार सब माल उत्पन्न करने में समर्थ नहीं हो रही हैं।

## कपास की कम उपज

वस्त्र उद्योग के सामने एक बड़ी समस्या रुई की है। भारत में प्रति एकड़ कपास का उत्पादन कम होता है और इसके परिणामस्वरूप हमें प्रतिवर्ष विदेशों से करीब ६० करोड़ रुपये की रुई मंगानी पड़ती है। यदि भारत में कपास का उत्पादन बढ़ जाय तो न केवल हम वस्त्रों का अतिरिक्त निर्यात करके ६०-७० करोड़ रुपया अधिक कमा सकते हैं, किन्तु रुई भी विदेशों को बेचकर ६० करोड़ रुपया कमा सकते हैं। लेकिन इसके लिए आवश्यक यह होगा कि कपास की खेती में अधिक विनियोजन हो। योजना आयोग ने और फैडरेशन ने सरकार को सलाह दी थी कि कपास की खेती के विकास के लिए २० करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च किया जाय, किन्तु भारत सरकार ने इस सुझाव पर अमल नहीं किया।

निर्यात के सम्बन्ध में भारत को नेतृत्व मिले, भारत में पैदा होने वाली कपास ही उसके लिए सबसे सबल और सबसे निर्बल कारण है। भारत ने आज यदि वस्त्र निर्यात में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है, तो उसका कारण भारतीय कपास का सस्ता होना रहा है किन्तु आज भारतीय कपास की कीमत विदेशी कपास से भी २०-३० प्रतिशत ऊंची हो रही है। यदि विदेशों में प्रति एकड़ कपास २९८ पौंड पैदा होती है तो भारत में केवल (१२० पौंड) इस तरह भारतीय कपास की खेती को उन्नत करने और उसका मूल्य कम करने की बहुत अधिक सम्भावनाएं हैं।*

भारतीय किसान कपास का मूल्य बढ़ाने की तो सदा मांग करता है लेकिन सरकार पर यह दबाव

---

होती है जबकि सरकार मिश्रित व्यवस्था के अन्तर्गत प्राइवेट उपक्रम का इस प्रकार नियन्त्रण करने का प्रयास करती है कि जिससे अधिकतम सामाजिक हित हो। यहां यह बता दिया जाये कि मिश्रित अर्थ-व्यवस्था की नीति समाजानुकूल है। वर्तमान परिवर्तित परिस्थितियों के अन्तर्गत केवल निजी अथवा सरकारी क्षेत्र के ही आधार पर देश की तीव्र गति से औद्योगिक विकास नहीं किया जा सकता। राष्ट्र की औद्योगिक प्रगति के लिये सभी वर्गों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है।

* इस सम्बन्ध में सम्पादकीय टिप्पणी भी देखिये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं डालता कि प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाने में वह उसकी सहायता करे। यही उसकी सबसे बड़ी कठिनता है। खेद का विषय यह है कि सरकार भी उत्पादन बढ़ाने की बजाय मूल्य वृद्धि पर ही अधिक ध्यान देती है।

वस्त्र उद्योग का पिछले कुछ वर्षों का इतिहास यह बताता है कि भारत सरकार ने इस महत्त्वपूर्ण उद्योग को राजनैतिक दलबन्दी तथा विभिन्न परीक्षणों की प्रयोगशाला बना रखा है। १०-१२ वर्ष पहले सरकार ने हाथ करघा के बुनकरों को अधिक रोजगार देने के नाम पर मिल उद्योग की उत्पादन क्षमता पर ही कुठाराघात कर दिया है। फिर मिल उद्योग पर उत्पादन-कर का भेदभाव पूर्ण प्रहार किया, जिससे पावरलूम क्षेत्र को बहुत आगे बढ़ने का अवसर मिल गया। यद्यपि अनेक वर्षों बाद सरकार ने इस भेदभाव को कुछ सीमा तक अवश्य कम कर दिया है।

## पावरलूम

मिलों और पावरलूमों के कपड़ों पर उत्पादन कर में भारी अंतर भी मिल उद्योग को नुकसान पहुँचा रहा है। नियंत्रित वस्त्रों के उत्पादन पर प्रति लूम वर्ष में (तीन पारी मिलाकर) २६०० रुपये कर के रूप में देना पड़ता है, जब कि पावरलूमों के छोटे संगठनों को २५ रु० देना पड़ता है, इसी तरह निम्नलिखित वस्त्रों के उत्पादन पर मिल उद्योग को निम्नलिखित रूप से भारी कर देने पड़ते हैं—

| | |
|---|---|
| अनियंत्रित मूल्य के वस्त्र | ३३०० रु० |
| फाइन कपड़े | ७७०० रु० |
| सुपर फाइन कपड़े | ११००० रु० |

इसके मुकाबले में लूमों को २५ रु० से लगाकर १५० रु० तक कर देने पड़ते हैं। वस्तुतः पावरलूमों को तो मजदूर और उद्योग-सम्बन्धी कानूनों का भी पालन नहीं करना पड़ता, इसलिए इनका उत्पादन-व्यय बहुत कम होता है।

जब पावरलूम क्षेत्र ने आन्दोलन किया तो पावरलूम इन्क्वायरी कमेटी ने मिल क्षेत्र की कपड़े बुनने की क्षमता को ही नष्ट करने की सिफारिश करदी। हम यह समझ सकते हैं कि सरकार गरीब देहातियों और बुनकरों को सहायता देने के लिए हाथ करघा व्यवसाय को प्रोत्साहन दे, किन्तु पावरलूम क्षेत्र के विस्तार के लिए मिल क्षेत्र को बलि पर चढ़ाने की युक्तियुक्तता हमें समझ में नहीं आई, क्योंकि पावरलूमों से किसी तरह भी रोजगार अधिक लोगों को नहीं मिलता। दूसरी ओर पावरलूम उद्योग में श्रमिकों को अस्वास्थ्यकर स्थितियों में अधिक घन्टे काम करना पड़ता है और कम वेतन मिलता है। श्रमिकों को रोजगार देने की दृष्टि से भी पावरलूम उद्योग हानिकर है।

## दूसरी बाधाएं

उक्त कमेटी ने यह सिफारिश की है कि १५० करोड़ गज कपड़ा पावरलूमों के लिए ही सुरक्षित कर दिया जाय। इसका अर्थ यह है कि श्रमिकों को ६ करोड़ रुपये की तथा भारत सरकार को ३६ करोड़ रुपये की अतिरिक्त हानि होगी। इसी तरह भारत सरकार ने मजदूरों के हित के नाम पर मशीनरी के आधुनिकीकरण पर पाबन्दी लगा दी है। आज यह पाबन्दी अपने पहले के रूप में नहीं है, परन्तु इसका एक दुष्परिणाम यह हुआ है कि आज हमें वह मशीनरी १० वर्ष पहले की अपेक्षा अधिक महंगे दामों खरीदनी पड़ रही है अर्थात हमें अधिक विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ रही है।

वस्त्र उद्योग पर और दूसरी पाबन्दियां भी लगी हुई हैं। छींट के कपड़ों पर पाबन्दी हटने से हम अधिक निर्यात कर सकते थे। यदि मिलों के लिए छपाई पर पाबन्दी हटा दी तो अधिक कलापूर्ण और आकर्षक डिजाइन तैयार करने में कुशल कलाकारों की प्रतिभा का भी उपयोग हो सकता है।

वस्त्र उद्योग के विकास में एक दूसरी बाधा है वस्त्र-निर्माण की मशीनरी। यह आश्चर्य की बात है कि स्विटजरलैंड, पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी तथा पोलैंड जैसे देश तो वस्त्र उद्योग की मशीनरी का निर्यात कर रहे हैं और भारत जैसा देश जिसका विश्व के वस्त्र उद्योग में दूसरा स्थान है। वस्त्र निर्माण की मशीनरी बाहर से मंगवा रहा है। हम न केवल ५-१० साल पुराने माडल की मशीनरी मंगवा रहे हैं बल्कि उसकी नकल भी करा रहे हैं जिसे विदेशों ने रद्दी समझ कर छोड़ दिया है।

यह ठीक है कि अब वस्त्र उद्योग की मशीनरी का

(शेष पृष्ठ ३४६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ-व्यवस्था में मूल्यों पर सरकारी नियंत्रण

आदर्शकिशोर सक्सेना, एम० कॉम

प्राचीन अर्थशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार यदि प्रत्येक व्यक्ति को अपने निजी हित के अनुसार कार्य करने के लिये स्वतन्त्र रूप से छोड़ दिया जाय तो आर्थिक साधन अपने आप से ही ऐसे क्षेत्रों की ओर गतिशील हो रहते हैं, जिनमें कि उनकी उत्पादकता अधिकतम होती है। किस वस्तु का उत्पादन किया जाय, तथा कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाय, इसका निर्धारण करने में कीमतें अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्रो० गालब्रेथ के शब्दों में "स्वतंत्र रूप से गतिशील होने वाली कीमतें अर्थव्यवस्था में वितरण व व्यवस्था करने वाली मशीनरी हैं। ये कीमतें ही मांग को वस्तुओं की उतनी मात्रा के बराबर रखती हैं, जितनी वस्तुयें किसी समय में प्राप्त होती हैं। ये ही आर्थिक साधनों को कम महत्वपूर्ण उद्योगों से हटाकर अधिक महत्वपूर्ण उद्योगों में लगाने में पथ-प्रदर्शन करती है।" इस प्रकार आर्थिक क्रियाओं को गति तथा आर्थिक जीवन के आकार का निर्धारण करने में कीमतें महत्वपूर्ण योग प्रदान करती हैं। उपर्युक्त आधार पर यही स्वाभाविक निष्कर्ष निकलता है कि सरकार को कीमतों के मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि हस्तक्षेप किया गया तो मांग और पूर्ति के मध्य कृत्रिम असमानतायें उत्पन्न हो जायेंगी तथा आर्थिक जीवन भी अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

किन्तु आज के युग में अबन्ध नीति का केवल सैद्धान्तिक महत्व ही रह गया है तथा अनुभव यह बताता है कि विशेष परिस्थितियों में मूल्यों के सम्बन्ध में राजकीय हस्तक्षेप आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को अस्त-व्यस्त होने से बचाने के लिये आवश्यक हो जाता है।

## उद्देश्य

सरकार द्वारा मूल्यों के नियंत्रण तथा नियमन का उद्देश्य या तो एक निर्धारित स्तर तक मूल्यों में गिरावट लाना हो सकता है, अथवा यदि मूल्य आवश्यकता से अधिक गिर रहे हों तो उन्हें उठाना हो सकता है। मूल्यों में बहुत अधिक उच्चावचन की स्थिति में मूल्य-नियन्त्रण का उद्देश्य किसी निश्चित स्तर पर मूल्यों को स्थिर रखना भी हो सकता है। मूल्य-नियंत्रण के लिये वस्तु की पूर्ति, मांग अथवा दोनों पर वितरण को नियमित करते हुए नियंत्रण रखना आवश्यक होता है।

## विकासशील अर्थव्यवस्था

एक विकासशील अर्थ-व्यवस्था के अंतर्गत आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों को नियन्त्रित करना विशेष रूप से आवश्यक होता है। विकासशील अर्थ-व्यवस्था एक ऐसी अर्थ-व्यवस्था होती है जो कि अर्द्ध विकसित होती है तथा जिसे आर्थिक नियोजन के माध्यम से विकास की ओर ले जाने के लिये प्रयास किये जा रहे होते हैं। अर्द्ध विकसित अर्थ-व्यवस्था के अंतर्गत विकसित देशों की तुलना में प्रति व्यक्ति आय की मात्रा कम होती है, आर्थिक तथा तांत्रिक विकास का स्तर निम्न होता है, बचत, विनियोग, पूंजी तथा उत्पादन की मात्रा कम होती है। ऐसी अर्थ-व्यवस्था में अशिक्षा, बीमारी, बेकारी, अर्द्ध-बेरोजगारी तथा जनसंख्या की बहुलता आदि अन्य विशेषतायें भी पाई जाती हैं। संक्षेप में, हम यह कह सकते हैं कि अर्द्ध-विकसित अर्थ-व्यवस्था में गरीबी अधिक व्यापक होती है तथा अधिकांश व्यक्ति न्यूनतम रहन-सहन के स्तर पर रह रहे होते हैं। चूंकि उनका रहन-सहन का स्तर पहले से ही बहुत अधिक नीचा होता है, अतः उसे और अधिक नीचा नहीं किया जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि उपभोक्ता बढ़ते हुए मूल्यों को अपनी मांग कम करके नीचा करने में समर्थ नहीं होते हैं अर्थात उपभोक्ता-विरोध का सर्वथा अभाव होता है। इसके अतिरिक्त ऐसी अर्थ-व्यवस्था में जहां प्रायः उत्पादन की परम्परागत पद्धतियां अपनाई जाती हैं, विनियोग की मात्रा कम होती है। उत्पादन की मात्रा पहले से ही कम रहती है, वस्तुओं का भौतिक अभाव प्रायः हो जाया करता है तथा उत्पादक का अर्थ-व्यवस्था में बहुत अधिक महत्व रहता है। बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता का सर्वथा अभाव होता है और मूल्य निर्धारण में उत्पादक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्हीं वस्तुओं के उत्पादन के क्षेत्र में एकाधिकारी प्रवृत्तियां भी पाई जाती हैं।

अतः एक ओर तो उपभोक्ता के हितों की रक्षा बढ़ते हुए मूल्यों से करना आवश्यक होता है क्योंकि उसकी क्रयशक्ति पहले से ही बहुत कम होती है तथा मूल्यों में थोड़ी सी वृद्धि भी वह सहन करने में समर्थ नहीं होता है।

दूसरी ओर विकासशील अर्थ-व्यवस्था में उत्पादन में उत्पादन बढ़ाना सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है। उत्पादन बढ़ाने के लिए न केवल मूल्यों को गिरने से रोकना आवश्यक होता है बल्कि मूल्यों में थोड़ी-बहुत वृद्धि बनाये रखने का प्रयास करना पड़ता है ताकि उत्पादकों को उत्पादन बढ़ाने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन मिलता रहे।

## मूल्य-नीति

इस प्रकार से विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्य नीति इस प्रकार से निश्चित करनी पड़ती है कि न तो मूल्य इतने अधिक बढ़ने पावें कि उपभोक्ता का जीवन दुर्भर हो जावे और न उनमें इस प्रकार की गिरावट ही आने पावे कि उत्पादकों को उत्पादन में वृद्धि करने के लिए प्रोत्साहन ही न मिले।

विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्य-नीति सामान्य आर्थिक नीति का एक प्रमुख अंग होती है। मूल्यों का स्तर तथा उसका ढांचा आर्थिक निर्णयों के साथ सम्बन्धित कर दिया जाता है तथा आर्थिक योजना के अंतर्गत इन निर्णयों को समन्वित करने का प्रयास किया जाता है। मूल्य-नीति के सम्बन्ध में तृतीय पंचवर्षीय योजना में कहा गया है कि "किसी विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्य नीति को दो मुख्य बातों पर ध्यान केन्द्रित करना होता है : (क) इस बात का निश्चय कि सापेक्षिक मूल्यों की गतिविधि उन प्राथमिकताओं और लक्ष्यों के साथ मेल खाती है, जिन्हें योजना में स्थान दिया गया है, तथा (ख) उन आवश्यक सामानों के मूल्यों में ज्यादा वृद्धि न हो जो कम आमदनी वाले वर्गों के उपभोग क्षेत्र में आते हैं।" (पृष्ठ १३२)

विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्यों में किसी सीमा तक वृद्धि होते रहना स्वाभाविक ही है, क्योंकि विकास कार्यक्रमों में बड़ी मात्रा में धन का विनियोग करना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं की मौद्रिक आय में तेजी के साथ वृद्धि होती है जबकि उत्पादन में इतनी शीघ्रता के साथ वृद्धि नहीं हो पाती, क्योंकि धन के विनियोग तथा उत्पादन में सदैव ही समय-अन्तर रहता है। जितने अधिक दीर्घकाल में पूर्ण होने वाले कार्यक्रम होंगे उतना ही यह 'अंतर' अधिक होगा तथा मूल्यों के बढ़ने की सम्भावना उतनी ही अधिक होगी। यही नहीं विकासशील अर्थ-व्यवस्था में पहले एक सुदृढ़ औद्योगिक आधार स्थापित करना पड़ता है जिसके अंतर्गत अल्पकाल में उपभोक्ता-सामग्री के स्थान पर उत्पादक-सामग्री के उत्पादन को अधिक महत्व देना पड़ता है। अतः अल्पकाल में उपभोक्ता-सामग्री का प्रायः भौतिक अभाव-सा हो जाया करता है। अतः उपभोक्ताओं की रक्षा करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि कम से कम आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों पर राजकीय नियंत्रण रखा जाय। इस संदर्भ में यह बात और ध्यान रखने योग्य है कि आवश्यक वस्तुओं की मांग बहुत सीमा तक लोच-रहित होती है तथा इस कारण से आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेजी से वृद्धि होने की संभावना अधिक रहती है। विकास कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए जब हीनार्थ अर्थप्रबन्धन का आश्रय लिया जाता है तो मुद्रा स्फीति का खतरा और अधिक बढ़ जाता है।

## आर्थिक नियोजन एवं मूल्य स्तर

स्वयम् आर्थिक नियोजन की सफलता बड़ी मात्रा में मूल्य-स्तर को समान बनाये रखने पर निर्भर करती है क्योंकि योजना बनाने तथा योजना को क्रियान्वित करने के समय यदि मूल्य-स्तर में अधिक वृद्धि हो जाय तो विभिन्न परियोजनाओं के लिये जो धन-राशि रखी गई थी, वह अपर्याप्त हो जायेगी और विकास कार्यक्रमों की गति धन के अभाव में धीमी पड़ जायेगी। योजना की काट-छांट करने की आवश्यकता भी पड़ सकती है।

भारत जैसी विकासशील अर्थ-व्यवस्था में जहां आर्थिक योजनाओं के माध्यम से समाजवाद की स्थापना करने का स्वप्न संजोया जा रहा है, आवश्यक वस्तुओं के

( शेष पृष्ठ ३४६ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्पात का बढ़ता हुआ उत्पादन-व्यय

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

किसी भी देश के औद्योगिक-विकास में लोह और स्पात उद्योग का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि सभी उद्योगों का आधार लोह उद्योग होता है। बड़े-बड़े कारखाने, रेलवे, नदियों के पुल, ट्रैक्टर, बुलडोजर से लेकर छोटी सुई और पिन तक सब के लिए स्पात आधार होता है। इसलिए जहां प्रत्येक देश इसके उत्पादन को असाधारण महत्त्व देता है, वहां यह भी प्रयत्न करता है कि लोहे का उत्पादन व्यय कम से कम हो, ताकि लोहे से बनने वाली वस्तुएं सस्ती पड़ें और छोटे बड़े उद्योगों का विकास कम पूंजी से हो सके। जापान में न कोयला, होता है और न वहां लोहे की खानें हैं, तथापि वह लोहे के महत्व को समझ कर इनके आयात द्वारा अपने लोह उद्योग का विकास कर रहा है।

यह भारत वर्ष का सौभाग्य है कि यहां लोहे के लिए कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। लोहे और कोयले की खानें यहां पर समीप ही मिल जाती हैं। पंचवर्षीय योजनाओं के विकास के साथ यह भी आवश्यक था कि हम इस उद्योग को बहुत अधिक महत्त्व देते। दूसरी योजना में भिलाई, दुर्गापुर और रूरकेला के विशालकाय कारखानों की स्थापना का भी यही उद्देश्य था और अब तो बोकारो में भी चौथा कारखाना खोलने की योजना बन चुकी है। पांचवें कारखाने के लिए भी स्थान की तलाश है।

## भारी उत्पादन व्यय

किन्तु जहां लोहे के लिए आवश्यक माल की सुलभता हमारे लिए सौभाग्य की वस्तु है, वहां यह देख कर बहुत दुःख भी होता है कि लोहे का उत्पादन-व्यय भारत में निरन्तर बढ़ता जा रहा है और इसका दुष्परिणाम हमारे सब छोटे-बड़े उद्योगों को भुगतना पड़ रहा है। १० वर्ष पहले हम यह अभिमान करते थे कि सबसे सस्ता स्पात भारत वर्ष में तैयार होता है। आज हम यह गर्व नहीं कर सकते। टैरिफ कमीशन ने बताया है कि अनेक श्रेणियों के स्पात का उत्पादन-व्यय हमारे देश में यूरोप, जापान और आस्ट्रेलिया की अपेक्षा अधिक है। इसके परिणामस्वरूप हमें विदेशों में इंजीनियरिंग वस्तुओं का निर्यात करते हुए कठिनता भी होती है। वह सामान अन्य देशों की अपेक्षा मंहगा पड़ता है।

## अनुमान झूठे पड़े

हमने जब कारखाने खड़े करने का प्रारम्भिक अनुमान किया था, तब यह सोचा गया था कि एक टन लोह-पिण्ड तैयार करने का खर्च भिलाई और रूरकेला में ११३.३२ और १८४.४३ रु० क्रमशः पड़ेगा। किन्तु इनका खर्च क्रमशः २१४ और २४० रु० प्रति टन पड़ा। उसी वर्ष में दुर्गापुर में २१६ रु० और टाटा में २७२ रु० प्रति टन उत्पादन-व्यय हुआ। यद्यपि पहले ठीक-ठीक खर्च का अनुमान नहीं लगाया गया था, तथापि १९५० के आस-पास के वर्षों में टाटा में १५० रु. प्रति टन खर्च पड़ता था। आज १९४०-४१ की अपेक्षा स्पात के पिन्डों का निर्माण-व्यय करीब ५-६ गुना बढ़ गया है। कारखाने के अन्दर निर्माण-व्यय ही नहीं बढ़ा, बाहर के खर्च भी लगातार बढ़ गये हैं। ह्रास निधि लगातार बढ़ती जा रही है। इसी तरह उद्योग में लगी हुई पूंजी पर ब्याज भी बढ़ रहा है।

## कुछ कारण

यही सब कारण हैं कि भारत सरकार ने बढ़ते हुये लोह-उत्पादन व्यय पर विचार करने के लिए एक कमेटी की स्थापना की है। यह कमेटी उत्पादन व्यय की अधिकता के भिन्न-भिन्न कारणों पर विचार करेगी। फिर भी हमारी नम्र सम्मति में उत्पादन-व्यय के निम्न-लिखित कारण हैं—

१. लोह-उत्पादन में कोयला एक महत्त्वपूर्ण भाग अदा करता है। पिछले वर्षों में कोयले के सम्बन्ध में जो भिन्न-भिन्न नीतियां अपनाई गयीं, उनसे कोयला उद्योग की स्थिति अस्थिर सी हो गई है। एक तरफ विभिन्न श्रम नीतियों और बढ़ती हुई मंहगाई के कारण कोयले का उत्पादन-व्यय बहुत बढ़ गया था। दूसरी ओर विविध



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारणों से कोयले की मांग भी कम होती जा रही है। और इसी लिए कोयला-उद्योग संचालक अब इस उद्योग के सम्बन्ध में बहुत आशावादी नहीं रहे हैं और फलतः वे अपना विनियोजन बढ़ा नहीं पा रहे हैं। कोयले की धुलाई की पूर्ण व्यवस्था न होने के कारण घटिया किस्म का कोयला लोह-निर्माण के खर्च को बुरी तरह बढ़ा देता है। कोयले के बढ़ते हुए मूल्य भी लोह-उत्पादन पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

२. कच्चे माल की जहां कीमतें बढ़ रही हैं, वहां उसकी किस्म भी घटिया हो रही है।

३. लोहे के सरकारी कारखानों में श्रमिकों और कर्मचारियों की संख्या आवश्यकता से २० से ३० प्रतिशत ज्यादा है। अन्य देशों में १० लाख टन लोह-पिण्ड के उत्पादन के लिए १६-१७ हजार श्रमिक और कर्मचारी पर्याप्त माने जाते हैं, किन्तु सरकार के कारखानों में इनकी संख्या बहुत अधिक है। परिणामतः लोहे का उत्पादन-व्यय बढ़ जाता है। नयी सिफारिशों से तो लोह-उद्योग पर ६॥ करोड़ रु० का बोझ अधिक बढ़ गया है।

४. हमारे देश में स्पात निर्माण की पद्धति भी अन्य देशों की अपेक्षा अधिक पुरानी और खर्चीली है। यहां एक टन स्पात-पिंड तैयार करने के लिए ८५० से ९५० किलो ग्राम कोयला जलता है, जबकि जापान में इससे ४० प्रतिशत और अमेरिका तथा पश्चिमी जर्मनी में २० प्रतिशत कम कोक लगता है। इसी तरह ताप-सह ईंटों का खर्चा भी हमारे देश में अन्य देशों से अधिक होता है। अन्य देश वैज्ञानिक उपायों से कोयले का खर्चा कम करते जा रहे हैं और हम अभी दूसरे देशों के छुछ साल पुराने तरीके अपना रहे हैं। इसी तरह प्रति श्रमिक उत्पादकता अन्य स्पात निर्यातक देशों की अपेक्षा अभी बहुत कम है, यद्यपि १९४८ की अपेक्षा हमने बहुत प्रगति की है।

५. जब भिलाई, रूरकेला और दुर्गापुर के उद्योगों का निर्माण करने की योजनाएं बनाई गई थीं, तब से पूंजी-व्यय के अनुमान कई बार संशोधित और परिमार्जित हुए हैं और परिणामस्वरूप जब ये कारखाने बनकर तैयार हुए, तब प्रारम्भिक अनुमानों से ५० या १०० प्रतिशत अधिक खर्च करना पड़ा। जापान में प्रति टन कारखाने पर ६०० रु० खर्च होता, है जबकि हमारे देश में ८०० से २,००० रु० तक हुआ है। सरकारी कारखानों में तो यह व्यय १७०० से २,००० रु० तक हुआ है। जब पूंजी अधिक लगेगी तो स्वभावतः ब्याज का खर्च भी बढ़ जायगा और परिणामतः उत्पादन व्यय पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा।

## पूंजीगत व्यय

प्रश्न यह है कि पूंजीगत-व्यय इतना क्यों बढ़ गया है। इसके भी तीन कारण बताये जा सकते हैं। (१) निर्माण का खर्च निरन्तर बढ़ता गया। (२) हमें उन देशों से मशीनरी महंगी पड़ी, जिन देशों से हम भारी ऋण लेने के कारण बंधे हुए थे। (३) सरकार मशीनरी और दूसरे सामान पर आयात कर अन्धाधुन्ध बढ़ाती गई है। कारखानों को खड़ा करने में ज्यों-ज्यों अधिक समय लगता गया, त्यों-त्यों आयात कर और समुद्री भाड़े आदि के खर्चे भी बढ़ते गये। सुविज्ञ क्षेत्रों के अनुसार इन कारणों से हमारे पूंजीगत व्यय २५ ३० प्रतिशत बढ़ गये। (४) संसद की लेखा-आकल समिति के अनुसार पूंजीगत व्यय में वृद्धि का एक औ कारण यह है कि उद्योग को समाज-सेवाओं पर भारी व्यय करना पड़ रहा है। हर एक कारखाने के पास बड़े स्वच्छ और शानदार शहर बनवाने पड़े हैं और श्रमिकों की सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखना पड़ा है। यह बोझ कितना अधिक है, यह इससे स्पष्ट हो जाता है कि संसद की उक्त समिति के अनुसार प्रति टन 'फिनिश-स्पात' पर १२० रु० अधिक पूंजीगत व्यय बैठता है।

स्पात मंत्री श्री संजीव रैडी ने इन सब कारणों पर विचार करने के लिए ही जांच कमेटी बिठाने का प्रस्ताव किया है। कारखानों के प्रबन्ध की कमियां भी हमारे व्यय को बढ़ाने में कारण बन रही हैं। इस पर भी उक्त कमेटी विचार करेगी। देखना यह है, यह कमेटी किन महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुँचती है और सरकार उसके किन-किन सुझावों की व्यावहारिक मान्यता स्वीकार करती है। यह भी हमें देखना है कि इस कमेटी के निर्माण, कार्य पद्धति और उसके सुझावों के क्रियान्वय में इतना विलम्ब न लग जाय कि इस कमेटी के सुझाव हो कुछ समय बाद पुराने पड़ जायं।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारा विदेशी व्यापार

राजेश्वरदयाल एम० कॉम०

प्राचीन समय से ही भारत के विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध रहे हैं। यहां से रोम, मिस्र, अरब, चीन आदि देशों को सूती कपड़ा, धातु के बर्तन, सुगन्धित इत्र, गरम मसाला आदि वस्तुयें निर्यात की जाती थीं और बदले में भारत को स्वर्ण प्राप्त होता था। रोमन इतिहासकार प्लिनी के अनुसार भारत से कीमती वस्त्र आयात करने से रोम साम्राज्य सोने व चांदी से खाली हो रहा था। यह स्थिति कई शताब्दियों तक चलती रही। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना भारत से व्यापार करने के लिये ही की गई थी। अंग्रेजी राज्य के दिनों में हमारे उद्योगों की बहुत अवनति हुई। इंगलैंड की औद्योगिक क्रांति के पश्चात् हमारा देश धीरे-धीरे कच्चे माल का निर्यातक तथा पक्के माल का आयातक बन गया।

## हमारे उद्योगों का विकास

वैसे तो हमारे देश में पहला सूती वस्त्र का कारखाना १८१८ में, पहला जूट कारखाना १८५५ तथा लोह उद्योग १८७० में आरम्भ हो गये थे, तथा उन उद्योगों का एवं अन्य उद्योगों का भी विकास हुआ, परन्तु द्वितीय महायुद्ध तक हमारे देश का औद्योगिक विकास बहुत ही कम हो पाया था। हमारे देश से कच्चे माल का निर्यात किया जाता था और पक्के माल का आयात किया जाता था तथा व्यापार सन्तुलन हमारे देश के विपक्ष में रहता था।

द्वितीय महायुद्ध काल में हमारे निर्यात अधिक रहे और आयात कम रहे। इस समय हमारे देश में औद्योगिक विकास भी हुआ और निर्यात में पक्के माल की मात्रा अधिक थी। अस्तु। हमने अपना सारा स्टर्लिंग ऋण चुका दिया और १७०० करोड़ रु० की स्टर्लिंग राशि एकत्रित हो गई। परन्तु १९४५ में युद्ध समाप्त होने के बाद हमारे आयात बढ़ गये और निर्यात कम हो गये। परिणामस्वरूप व्यापार सन्तुलन हमारे देश के विपक्ष में रहने लगा।

## स्वतन्त्रता के पश्चात

१९४७ में देश की स्वतन्त्रता तथा पाकिस्तान के बनने से हमारे देश की अर्थ व्यवस्था में आधारभूत परिवर्तन हुए, जिनका प्रभाव हमारे देश के विदेशी व्यापार पर भी पड़ा। गेहूँ, चावल, कपास व जूट उत्पन्न करने वाले बड़े क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये, जबकि कपड़े व जूट के कारखाने हमारे देश में रहे। इसलिये हमें खाद्यान्न व कच्चे माल का भी आयात करना पड़ा। विभाजन ने हमारे देश के विदेशी व्यापार का रूप ही बदल दिया और व्यापार सन्तुलन हमारे देश के विपक्ष में रहने लगा। वैसे तो व्यापार सन्तुलन हमारे देश के विपक्ष में द्वितीय युद्ध के खतम होने से ही रहने लगा था (१९४४-४५ से १९४६-४७ के तीन वर्षों में हमारा व्यापार सन्तुलन क्रमशः २.९६, २५.७१ तथा ५१.२ करोड़ रु० से हमारे विपक्ष में था) परन्तु विभाजन ने उसे अधिक बढ़ा दिया। १९४८-४९ से १९५०-५१ के तीन वर्षों में हमारे देश के आयात निर्यात इस प्रकार रहे—

(करोड़ रु० में)

| वर्ष | आयात सी० आई० एफ० | निर्यात एफ० ओ० बी० | शेष |
|---|---|---|---|
| १९४८-४९ | ७६६.३ | ४८२.५ | —२८३.८ |
| ४९-५० | ६०३.९ | ५१४.० | —८९.९ |
| ५०-५१ | ६५०.३ | ६४६.८ | —३.५ |

## प्रथम पंचवर्षीय योजना में

सन् १९४९ में अवमूल्यन से और १९५१ में कोरिया युद्ध के कारण हमारे निर्यात बढ़े, जिससे व्यापार सन्तुलन कुछ ठीक हो गया। १ अप्रैल १९५१ से प्रथम पंचवर्षीय योजना के लागू होने पर विदेशी व्यापार पर योजनाओं का प्रभाव पड़ा। हमें आयात अधिक करने पड़े, परन्तु निर्यात नहीं बढ़े तथा व्यापार सन्तुलन विपक्ष में बढ़ गया। योजना के प्रथम वर्ष में खाद्यान्नों व यन्त्रों के अधिक आयात से हमारे आयात बढ़े तथा कोरिया युद्ध के कारण निर्यात भी बढ़े। परन्तु आगामी दो वर्षों में योजना का प्रभाव हमारे निर्यातों पर पड़ा तथा वे बहुत कम रह गये। इसी अवधि में आयात नियन्त्रण किया गया, जिससे आयात भी कम हुए और व्यापार का अन्तर कम हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। अन्तिम दो वर्षों में आयातों के लिये विशेष सुविधायें दी गईं। वनस्पति तेल, चाय व कपास के निर्यात भी बढ़े, परन्तु निर्यातों की तुलना में आयात अधिक बढ़े तथा व्यापार का घाटा पुनः बढ़ गया। प्रथम योजना काल में हमारे विदेशी व्यापार की स्थिति इस प्रकार रही:—

(करोड़ रु० में)

| अवधि | आयात | निर्यात | शेष |
|---|---|---|---|
| १९५१-५२ से १९५५-५६ | ३६३० | ३११० | ५२० |
| औसत | ७२६ | ६२२ | १०४ |

## दूसरी योजना में

द्वितीय योजना के प्रारम्भिक दो वर्षों में ही हमारे देश के समक्ष विदेशी विनिमय संकट उपस्थित हो गया। इन वर्षों में खाद्यान्न, कच्चे माल, व मशीनों आदि का आयात अधिक मात्रा में किया गया, जिससे व्यापार का घाटा अधिक बढ़ गया। प्रथम दो वर्षों में व्यापार का घाटा १,१०० करोड़ रु० से अधिक था, जो हमारे देश के विदेशी व्यापार के इतिहास में अभूतपूर्व था। अतः आयात नियन्त्रण व निर्यात प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। परन्तु योजना के अन्तिम वर्ष में आयात पुनः बढ़ जाने से व्यापार का घाटा भी पुनः बढ़ गया। द्वितीय योजना काल में हमारे विदेशी व्यापार की स्थिति इस प्रकार रही:—

(करोड़ रु० में)

| अवधि | आयात | निर्यात | शेष |
|---|---|---|---|
| १९५५-५६ से ६०-६१ तक | ५,३९० | ३,०६० | २३३० |
| औसत | १,०७८ | ६१२ | ४६६ |

## प्रथम और द्वितीय योजना में अन्तर

द्वितीय योजना काल में आयात का वार्षिक औसत प्रथम योजना की तुलना में ५० प्रतिशत अधिक रहा। इसका प्रमुख कारण पूंजीगत माल तथा यन्त्रों के आयात में अत्यधिक वृद्धि होना है। हमारे कुल आयात में पूंजीगत माल का प्रतिशत १९५२-५३ में २०.८ से बढ़कर १९६०-६१ में ३०.५ हो गया। यह हमारी विकासशील अर्थव्यवस्था का द्योतक है। इसके विपरीत द्वितीय योजना में हमारे निर्यात का वार्षिक औसत प्रथम योजना की तुलना में लगभग स्थिर ही रहा। इससे स्पष्ट होता है कि द्वितीय योजना में हमें निर्यात बढ़ाने के प्रयत्नों में विशेष सफलता नहीं मिली है। यहां यह बतला देना उचित ही जान पड़ता है कि द्वितीय योजना में निर्यात की मात्रा में लगभग ९ प्रतिशत की वृद्धि हुई, परन्तु कीमत कम मिलने से निर्यात से होने वाली कुल आय न बढ़ सकी।

१९५१-६१ की अवधि में हमारे परम्परागत निर्यातों में अधिक वृद्धि नहीं हुई, लेकिन कुछ नई वस्तुओं का निर्यात बढ़ा है, जैसे कपड़ा सीने की मशीनें, साइकलें, बिजली के पंखे व अन्य सामान, टायर-ट्यूब, रेशमी व ऊनी वस्त्र, डीजल, ब्लेड आदि। कच्चे लोहे का निर्यात भी इसी अवधि में चालू हुआ। चीनी, काजू आदि का भी निर्यात बढ़ा है।

## तीसरी योजना में

तीसरी योजना की अवधि में अर्थ व्यवस्था की गति बनाये रखने के लिये आयात का अनुमान ३,६५० करोड़ रु० का लगाया गया है। योजना प्रोजक्टों के लिये मशीनरी व अन्य सामान के आयात का अनुमान १९०० करोड़ रु० का लगाया गया है और २०० करोड़ रु० का आयात देश में मशीनों का उत्पादन बढ़ाने के लिये, सामान मंगाने के लिये किया जायेगा। इस प्रकार तृतीय योजना में ५,७५० करोड़ रु० के आयात का अनुमान है। इसके विपरीत निर्यात का लक्ष्य ३७०० करोड़ रु० रखा गया है। तृतीय योजना में आयात-निर्यात का ज्ञान निम्न तालिका से लगाया जा सकता है:—

(करोड़ रु० में)

| वर्ष | आयात | निर्यात | शेष |
|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | १,००६ | ६६८.३ | —३३७.७ |
| ६२-६३ | १,०९१.३ | ६८२.२ | —४०९.१ |
| ६३-६४ | १,२३०.७ | ८०१.७ | —४२९.० |
| ६४-६५ | १,२५० | ८४०.० | —४१०.० |

प्रारम्भिक दो वर्षों में हमारे निर्यात बहुत कम रहे थे तथा यह शंका व्यक्त की जाती थी कि हम अपना निर्यात लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेंगे। परन्तु आगामी दो वर्षों में हमारे निर्यात अधिक बढ़े हैं। सरकार ने निर्यात बढ़ाने के लिये अनेक कदम उठाये हैं। योजना के अन्तिम



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मुद्रा की क्रय शक्ति कम हो रही है ! ! !

## मूल्य में ह्रास की वार्षिक दर

| | १९५४ | १९६३ | १९६४ | ५४-६४ | ६३-६४ |
|---|---|---|---|---|---|
| वेनेजुला | १०० | ९७ | ९७ | ०.३% | ०.३% |
| लक्समबर्ग | १०० | ९० | ८७ | १.४ | २.९ |
| संयुक्त राष्ट्र | १०० | ८८ | ८७ | १.४ | १.३ |
| कनाडा | १०० | ८७ | ८६ | १.५ | १.८ |
| फिजयम | १०० | ८८ | ८४ | १.७ | ४.० |
| नेदरलैंड | १०० | ८५ | ८२ | २.० | २.९ |
| पाकिस्तान | १०० | ८५ | ८१ | २.१ | ३.९ |
| जर्मनी | १०० | ८३ | ८१ | २.१ | २.२ |
| पुर्तगाल | १०० | ८४ | ८१ | २.२ | ३.८ |
| फ्रांस | १०० | ८० | ८० | २.२ | ०.९ |
| आस्ट्रेलिया | १०० | ८१ | ७९ | २.३ | २.१ |
| न्यूजीलैंड | १०० | ७९ | ७७ | २.६ | ३.३ |
| आयरलैंड | १०० | ७५ | ७६ | २.७ | १.० |
| जापान | १०० | ७७ | ७५ | २.९ | ३.७ |
| नार्वे | १०० | ७८ | ७७ | २.९ | ५.३ |
| इंगलैंड | १०० | ७६ | ७४ | ३.० | ३.२ |
| इटली | १०० | ७८ | ७३ | ३.१ | ५.६ |
| आयरलैंड | १०० | ७८ | ७३ | ३.१ | ५.८ |
| स्वीडन | १०० | ७४ | ७२ | ३.३ | ३.२ |
| डेनमार्क | १०० | ७२ | ६९ | ३.७ | ३.६ |
| भारत | १०० | ७४ | ६५ | ४.२ | ११.७ |
| फ्रांस | १०० | ६६ | ६४ | ४.४ | ३.३ |
| ईरान | १०० | ६६ | ६४ | ४.४ | ३.८ |
| इजरायल | १०० | ६३ | ६० | ४.९ | ४.३ |
| चीन (ताइवान) | १०० | ४७ | ४७ | ७.१ | ०.५ |
| टर्की | १०० | ४२ | ४२ | ८.४ | १.३ |
| चिली | १०० | ८ | ६ | २४.८ | ३१.५ |
| बौलविया | १०० | ६ | ५ | २५.४ | ९.४ |
| ब्राजील | १०० | ७ | ४ | २७.६ | ४५.८ |

के निर्यात लक्ष्य ९०० करोड़ रु० रखा गया है तथा चौथी योजना अवधि में ५,१०० करोड़ रु० का निर्यात लक्ष्य रखा गया है।

टि०—१. प्रथम व द्वितीय योजना अवधि के आंकड़े रिजर्व बैंक द्वारा संग्रहीत आंकड़ों के आधार पर हैं।

२. १९६१-६२ से १९६३-६४ के आंकड़े वित्त मन्त्री के बजट भाषण के आधार पर हैं तथा १९६४-६५ के निर्यात के आंकड़े कामर्स अप्रैल १७, १९६५ तथा आयात के आंकड़े कामर्स अप्रैल ३, ६५ के आधार पर आधारित हैं।

उपर्युक्त तालिका न्यूयार्क के 'फर्स्ट नेशनल सिटी बैंक' के जून १९६५ के विवरण में प्रकाशित हुई है। इससे प्रतीत होता है कि भिन्न-भिन्न देशों में महँगाई किस तरह बढ़ रही है। महँगाई की दृष्टि से देखें तो भारत का स्थान महंगाई में यदि कुछ देशों से आगे है तो बहुत से देशों में भारत से भी अधिक महंगाई बढ़ी है। १९५४ का आधार मानकर यहां रुपये की कीमत १९६३ में ७४ पैसे रह गई और १९६४ में गिरकर ६५ पैसे रह गई। इसका अर्थ यह है कि पिछले १० वर्षों में ४.२ प्रतिशत वार्षिक दर से रुपये की क्रय शक्ति कम होती गयी। पिछले एक वर्ष में (१९६३-६४) ११.७ प्रतिशत क्रय-शक्ति कम हुई।

इसके विपरीत संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में पिछले ३१ वर्षों में केवल २८ प्रतिशत मूल्य बढ़े हैं। कुछ वर्षों में यह मूल्य वृद्धि बहुत ही कम दर से हुई है।

उपर्युक्त तालिका से यह भी मालूम होता है कि पाकिस्तान में भारत की अपेक्षा कम मूल्य वृद्धि हुई है। वहां दस वर्षों में केवल २.१ प्रतिशत और पिछले वर्ष में ३.१ प्रतिशत मूल्य बढ़े हैं।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि चीन (ताइवान), तथा टर्की में वृद्धि बहुत अधिक हुई है और चिली, बौलविया ब्राजील में तो मुद्रा प्रसार चरम सीमा पर पहुँच गया दीखता है। वहाँ मुद्रा की कीमत ९४ प्रतिशत गिरकर केवल ६ या ४ रह गई है। ब्रिटेन में भी मुद्रा के मूल्य को सुरक्षित रखने के बावजूद मूल्यों में वृद्धि हुई है। पिछले १० वर्षों में ३ प्रतिशत की दर से स्टर्लिंग की क्रय-शक्ति कम हुई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चतुर्थ पंचवर्षीय योजना—एक झलक

श्री गुलशन प्रभाकर

योजना आर्थिक चिन्तन का एक विषय है और यह केवल भारत में ही नहीं, विश्व भर के लिए महत्व का विषय है। सम्पन्नतम राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका भी योजना बद्ध आर्थिक विकास को कम महत्व नहीं देता। योजना वह प्रेरणा शक्ति है, जो राज्य को बल प्रदान करती है और देश के सभी भागों में कृषि व उद्योगों का विस्तार करती है। आर्थिक और औद्योगिक उन्नति, जो आज के समाज का लक्ष्य है; योजना से ही प्रेरणा बल प्राप्त करती है। नेहरू युग में इसमें आमूलचूल परिवर्तन हुआ और अब वह भारत की उन्नति के लिए एक मौलिक आवश्यकता के रूप में अपनाई गई है।

## सामाजिक लक्ष्य

भारत सरकार ने द्वितीय योजना में ६,७५० करोड़ रुपये व्यय किये। तृतीय योजना १०,४०० करोड़ रुपये की बनी और अब चतुर्थ योजना में २१,५०० करोड़ रुपये के लगभग व्यय करने का निर्णय किया है। योजना के निर्माण में जहां मुख्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है, वहां सामाजिक लक्ष्य—न्याय, समानता और जीवन स्तर की उन्नति को भी योजना में स्थान देने की हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

इसमें सन्देह नहीं कि राष्ट्र के पुनर्निर्माण में सरकारी योगदान ने निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों को पूर्णतया प्रोत्साहन दिया है। योजना में जहां तक समाजवाद का प्रश्न है, निजी क्षेत्र को उसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। योजना में सामाजिक लक्ष्य की प्राप्ति और न्याय पर अधिक ध्यान दिया गया है। कुछ व्यावसायिक क्षेत्रों में समाज के समाजवादी ढांचे का सही अर्थ नहीं लिया जाता, जबकि इसका वास्तविक अर्थ कुछ और है। इसका यह अभिप्राय सर्वथा नहीं है कि सभी उद्योग केवल राज्य की सहायता से चलें और प्रगति करें। निजी उद्योग को इसके लिए विवश भी नहीं किया गया है, परन्तु यह भी निश्चित है कि योजना का लक्ष्य आर्थिक विषमता को दूर करना है। हमारे देश में चल रहे निजी उद्योग के स्थान पर सार्वजनिक क्षेत्रों में बड़े-बड़े उद्योग स्थापित करके ही इस लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है।

पिछले दस वर्षों के समय में प्रथम दो योजनाओं से अनुभव से पता चला है कि वास्तव में समर्पण और उत्तरदायित्व का अभाव रहा, जिसके परिणामस्वरूप योजना के जो वास्तविक आधार थे, उनके बारे में कुछ अनिश्चितता सी उत्पन्न हो गई और आठ मुख्य सिद्धान्त, जो योजना आयोग ने रखे थे, राजकीय सत्ता द्वारा पूर्णतया व्यवहार में नहीं लाये गए। यही कारण है कि प्रथम दो योजनाओं को कुछ स्थलों पर असफलता का सामना करना पड़ा। अतः अब यह आवश्यक है कि बड़े बड़े अधिकारीगण उन्हीं पुरानी भूलों की पुनरावृत्ति इस योजना में न करें। उन्हें इस ढंग से उत्तरदायित्व स्वीकार करना चाहिए कि लोगों के प्रयत्न विफल न हों।

योजना आयोग के अनुसार उत्पादन पर सार्वजनिक अधिकार व नियंत्रण समाजवाद की एक आवश्यक अवस्था है, जो भूतकाल की मान्यताओं के स्पष्टतः विपरीत है। भारतीय संविधान की नीति के अनुसार बड़े बड़े उद्योग-धन्धों पर सरकार का नियंत्रण समाजवाद तक पहुँचने का साधन है। असमानता के अंत पर बल देते हुए योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता ने १५ जुलाई १९६४ को अपने एक वक्तव्य में कहा था कि प्रगति के जो भी साधन भारत ने योजना में अपनाये हैं, यदि उनकी जरा भी उपेक्षा की गई तो फलस्वरूप असमानता कम होने के स्थान पर बढ़ भी सकती है।

## सात दुर्बल स्तम्भ

श्री अशोक मेहता के कथनानुसार भारत की विकास योजनाएं निम्न सात स्तम्भों पर आश्रित हैं :

(१) मानवीय साधनों की मितव्ययता।
(२) कृषि का विस्तार।
(३) उद्योगों का भी विकास।
(४) सार्वजनिक क्षेत्र को प्रोत्साहन।
(५) समस्त आर्थिक कार्यों को शक्ति प्रदान करना।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) तकनीकी प्रतिभा का विस्तार और
(७) तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या की रोकथाम।

दुर्भाग्य से इन सात स्तम्भों को समान शक्ति और स्थिरता नहीं मिल सकी है। अतः इन्हें दुर्बल स्तम्भ कहा जा सकता है। इनकी प्राप्ति के लिए और आधुनिक समाज को नए सांचे में ढालने के लिए अभी बहुत सा कार्य शेष रह गया है।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के लिए एक बड़ी संख्या में व्यय का अनुमान लगाया गया है। आर्थिक व्यय का द्योतक निम्न दी हुई तालिका से स्पष्ट है।

## तालिका नं० १

| योजना-विषय | अनुमानित व्यय करोड़ों रुपयों में |
|---|---|
| १. कृषि | ३.२०० |
| २. विद्युत शक्ति | २,४८० |
| ३. आवास प्रबन्ध | २,३६० |
| ४. शिक्षा | १,९९० |
| ५. रेलवे | १,७३१ |
| ६. नगरों के साधनों पर | १,६६० |
| ७. सड़कों की मरम्मत पर | १,१५० |
| ८. सिंचाई | ४१६ |
| ९. राजस्थान नहर सुधार | २१३ |
| १०. सामाजिक हित | १५० |
| ११. तेल सुधार | २२५ |
| १२. पिछड़ी जातियों के हितों पर | २५५ |
| १३. आंध्र प्रदेश सुधार | ६५६ |
| १४. अहमदाबाद सुधार | ५० |
| १५. प्रसार | ७५१ |
| १६. खेलों के प्रोत्साहन पर | ०.२२ |

## शक्ति, आठवां स्तम्भ

आधुनिक शिल्पकला व विज्ञान सर्व शक्तिमान है, परन्तु काफी मात्रा में शक्ति के अभाव में यह भी निर्बल है। शक्ति प्रदान करने के विभिन्न साधन हैं, जैसे जल, अणु, तेल, वायु तथा उष्णता। इनसे शक्ति उत्पन्न की जा सकती है। चतुर्थ योजना बनाने वालों को चाहिए कि वह इन साधनों का उपयोग अधिक से अधिक, पर अपव्यय को रोकते हुए करें। यदि औद्योगिक उन्नति के चरमोत्कर्ष तक पहुंचना है, तो इनकी उपेक्षा कदापि नहीं की जा सकती।

अपने वक्तव्य में श्री अशोक मेहता ने आठवें स्तम्भ अर्थात शक्ति को सम्मिलित नहीं किया, जो सबसे महत्वपूर्ण है। शायद वह यह भूल गये कि अधिक उत्पत्ति और औद्योगिक सफलता के लिए यह एक उपयोगी तत्व है। शक्ति तो स्वयं एक शक्ति ही है, जो अनेक प्रकार की सेवाओं के साथ-साथ रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठाने में लाभदायक सिद्ध होगी।

## एक अच्छी योजना की आवश्यकता

श्री अशोक मेहता को छोड़, योजना आयोग के सभी सदस्य अकसर किन्हीं स्थलों पर असफलता का दोष जनता पर मढते हैं, परन्तु यह तो अपनी कमजोरी को दूसरे पर थोपने वाली बात हुई। पिछड़ी योजनाओं पर दृष्टिपात करने से सब कुछ प्रकाश में आ जाता है कि लोगों ने योजना से किस सीमा तक लाभ उठाया या लाभ के स्थान पर उन्हें हानि ही उठानी पड़ी। योजना पर इस ढंग से विचार करना चाहिए कि रहन सहन का स्तर ऊपर उठ सके, प्रशासन और औद्योगीकरण को दृढ़ता प्रदान हो—और सभ्यता एवं उच्च संस्कृति का विकास हो तथा साथ ही कार्य करती हुई जनता के मंहगाई भत्ते को बिना कम किए उपयोगी वस्तुओं के मूल्य में कमी आए। यह भी देखना चाहिए कि जो बात देश की स्थिति के अनुसार इतनी आवश्यक नहीं, उस पर समय और अर्थ कम ही व्यय करना चाहिए अन्यथा देश की आर्थिक स्थिति पर इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा।

उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चौथी योजना में व्यय का जो अनुमान लगाया गया है, वह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

## तालिका २

### चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में उत्पादन का लक्ष्य

| योजना बिषय | उत्पादन की मात्रा (प्रस्तावित) |
|---|---|
| १. अनाज | १२० मिलियन टन |
| २. दूध और उससे उत्पादक पदार्थ | ३२.६ मि० टन |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | |
|---|---|
| ३. चीनी | ५४ मि० ट० |
| ४. कृषि उपकरण यन्त्र | |
| (क) इंजन से चलने वाला हल (ट्रैक्टर) | १.५ लाख |
| (ख) शक्ति | ३ लाख कि० वा० |
| ५. शुद्ध तेल | ३० मि० ट० |
| ६. सिंचाई | २० मि० एकड़ |
| ७. तेल के बीज | १० मि० ट० |
| ८. कपास की गांठ | ८.५ मि० ठ० |
| ९. फौलाद के टुकड़े | १७.३ मि० ट० |
| १०. धातु के मिश्रण | १ मि० ट० |
| ११. ढला हुआ लोहा | ४ मि० ट० |
| १२. ग्रामीण भवनों पर | |
| (क) ग्रामीण निवास इकाइयों का विकास | २८ लाख |
| (ख) निवास इकाइयां | १२.५० लाख |
| १३. यातायात आवश्यकताएं रेलवे द्वारा आवागमन पर | ३६० मि० ट० |
| १४. नाइट्रोजन तत्व सम्बन्धी खाद | १.१५ मि० ट० |
| १५. कोयला | १४० मि० ट० |

## कार्य क्षमता

योजना आयोग के अध्यक्ष श्री लालबहादुर शास्त्री ने अधिक समय लेने वाले प्रस्तावों की अपेक्षा तुरत फल प्राप्ति वाले प्रस्तावों पर विशेष बल दिया है। पिछली योजना के समय में देश की आर्थिक स्थिति को दृढ़ बनाने के लिए मुख्य-मुख्य उद्योगों को प्राथमिकता दी गई। अब श्री शास्त्री इनको प्राथमिकता देने के पक्ष में नहीं है और उनके अनुसार तृतीय पंचवर्षीय योजना में जिन विषयों पर बहुत बल दिया गया, उन्हें अब कुछ स्थगित किया जाए।

स्वर्गीय श्री नेहरू ने जहां मुख्य बड़े बड़े उद्योगों की अनिवार्यता पर बल दिया था, श्री शास्त्री ऐसे उद्योगों पर अधिक व्यय करना वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए उचित नहीं समझते। उद्योगों की प्राथमिकता के सम्बन्ध में दोनों के विचारों में साम्यता नहीं है।

## बुरी भावना का अन्त

गणतन्त्र भारत के राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने स्वाधीनता दिवस की सत्रहवीं वर्षगांठ अर्थात १५ अगस्त १९६४ को राष्ट्र के नाम एक सन्देश प्रसारित किया था, जिसमें उन्होंने समाज में फैले समाज के इन शत्रुओं को आड़े हाथों लिया।

(१) अन्न में मिलावट करने वाले।

(२) संचय करने वाले।

(३) मुनाफाखोर।

(४) काला धन उत्पन्न करने वाले।

समाज में फैले इन चार शत्रुओं की बुराइयों को कुचलने के लिए किसी साकार और प्रभावशाली विधान को कार्यरूप में लाने की तुरन्त आवश्यकता है।

प्रस्तावित चतुर्थ योजना के निरीक्षण से यह पता चलता है कि मूल्यों के इस प्रकार ऊपर चढ़ने से कई स्थलों पर असफलता का मुख देखना पड़ेगा। यदि हमें चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का निर्माण गणतांत्रिक समाजवाद के अनुसार करना है तो मुख्य आर्थिक सिद्धांतों और योजना के अन्य मुख्य-मुख्य सिद्धांतों को समाज के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए प्रशासकीय ढंग से केवल कागजों पर ही नहीं अपनाना चाहिए बल्कि उन्हें व्यवहार में तुरन्त लाना चाहिए, जिससे पंचवर्षीय योजना अपने लक्ष्य प्राप्ति में पूर्णतया समर्थ हो। तब इसकी सफलता के मीठे-मीठे फल हमारी आने वाली सन्तानें अवश्य चखेंगी।

सम्पदा का

राजस्थान विकास अङ्क

क्या आपने अपनी कापी सुरक्षित कर ली है?

नहीं तो आज ही कर लें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका की चमत्कारपूर्ण क्रांति

# विपन्नता से सम्पन्नता की ओर

अमेरिका की प्रसिद्ध आर्थिक क्रांति ने न केवल देश को आर्थिक संकट से मुक्त कर सफलता के मार्ग पर चला दिया, वरन् सामाजिक सुरक्षा की एक आदर्श प्रणाली भी विकसित की। इस क्रांति का परिणाम था कट्टर पूंजीवाद और कट्टर साम्यवाद में समन्वय, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता अक्षुण्ण रखते हुए भी सरकार के अधिकार व उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गये। इसी का संक्षिप्त परिचय इस लेख में पढ़िये।

जब रूजवेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति पद पर आसीन हुए, वहां भीषण आर्थिक मन्दी का चक्र बुरी तरह चल रहा था। अमेरिका के एक चौथाई मजदूर बेकार थे। जिन कारखानों की चिमनियों के धुएं से कभी आकाश पर अंधेरा छा जाता था, वे ठंडे ज्वालामुखियों की भांति वीरान और शांत पड़े थे। कुछ परिवार कोलतार पुते गत्ते की झोपड़ियों में और टीन के खोखों में सोते थे और शहर में कूड़ों के ढेर से कुत्तों की तरह खाने की चीजें बीनते थे। न्यूयार्क और शिकागो की ठंडी सड़कों पर क्षुधापीड़ितों के हृदयविदारक जुलूस निकलते थे। देशों में यह अशांति हिंसात्मक रूप ग्रहण कर रही थी। किसानों ने आयोवा की सड़कों पर दूध के ट्रकों को रोका और उन पर लदा हुआ दूध खड्डों में उंडेल दिया। ऋण की भीड़ ने बन्धक सम्पत्ति के विक्रय को रोका और मांग की कि ऋणों की अवधि आगे बढ़ा दी जाय। फरवरी, १९३३ में वाल स्ट्रीट के व्यापार में भारी मन्दी आने के कारण ५,००० से भी अधिक बैंक दीवाला निकाल चुके थे, और जब रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति के पद पर आसीन होने के बाद प्रथम भाषण दिया, तो देश के सभी बैंक अपने द्वार बन्द कर चुके थे।

## राष्ट्रपति द्वारा उद्बोधन

राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने अमेरिकन जनता को सम्बोधित करते हुए नये सुनहले भविष्य की आशा दिलाई। अमरीका के आर्थिक कष्टों का निदान बताते हुए उन्होंने आगे कहा "समृद्धि हमारे द्वार पर है, किन्तु उसके दिखाई पड़ने पर भी उसका पूर्ण उपयोग करने के प्रति हम उदासीन हैं।" क्यों? क्योंकि देश के बड़े-बड़े व्यापारी अपने जिद्दीपन और अपनी अयोग्यता के कारण असफल रहे हैं। उन्होंने अपनी असफलता मान ली है, और वे अपना काम छोड़ बैठे हैं···। उनमें देखने समझने की शक्ति नहीं है, और जब देखने समझने की शक्ति नहीं होती तो देश का विनाश हो जाता है। हमारी सभ्यता के इस मन्दिर में वैसा बनाने वाले, 'महाजन' लोग अपनी गद्दियां छोड़कर भाग चुके हैं।" ऐसी अवस्था में स्थिति को सुधारने का तरीका यह है कि "राष्ट्र सक्रियता चाहता है और वह भी तत्काल। हमें जल्दी से जल्दी काम में जुट जाना चाहिए।"

रूजवेल्ट अपनी मान्यता से प्रयोगवादी, स्वभाव से समाजवादी और दार्शनिक दृष्टि से व्यावहारिक निरपेक्षवादी थे। अतः उन्होंने इस ओर या उस ओर वाले—जड़ पूंजीवाद या जड़ साम्यवाद—बेकार के कट्टरता सिद्धांत का विरोध किया। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि सिद्धान्त के सूक्ष्मीकरण से कार्यशीलता की सम्भावना में रुकावट पड़ती है। वे मानते थे कि उचित सीमाओं में रहते हुए लोग अपनी अर्थव्यवस्था को स्वयं चला सकते हैं। उन्होंने नये विचारों और नई नीतियों का प्रतिपादन किया। मानवीय कार्यशक्ति और मानवीय स्वतंत्रता में अटूट विश्वास होने के कारण उन्होंने अमरीकियों की एक पीढ़ी को पुरातन कट्टरपन्थी की जंजीरों से मुक्त किया, उन्हें अपने समाज की समस्याएं स्वयं सुलझाने की प्रेरणा दी और इस प्रकार उनके लिए एक उज्ज्वल और समृद्धिपूर्ण युग का सूत्रपात किया। उसके परिणामस्वरूप मिले जुले समाज की रचना करने वाले मध्य मार्ग की सफलता सिद्ध हुई और यह स्पष्ट हो गया कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता को नष्ट किये बिना भी ऐसी सरकार बन सकती है, जो आर्थिक स्थायित्व लाने के लिये समर्थ हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## क्रांतिकारी सुधार : न्यू डील

उद्योग के क्षेत्र में न्यू डील (नयी-व्यवस्था) ने व्यापार के अनुचित तौर-तरीकों पर रोक लगायी, एकाधिकार के विरुद्ध फिर से मोर्चा जमा दिया, बच्चों से मजदूरी कराना अवैध बना दिया और एक राष्ट्रव्यापी प्रणाली के अनुसार काम के अधिक से अधिक घंटे और न्यूनतम मजदूरियां निश्चित कर दीं। मजदूर संगठनों और मालिकों के बीच सामूहिक सौदेबाजी के मामले में सरकारी गारंटियों की व्यवस्था की गई। सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में वृद्धों और निराश्रितों के लिए अंशदायी बीमा की एक राष्ट्रव्यापी योजना बनायी गई और बेकारों की क्षतिपूर्ति के लिए संघ-राज्य कार्यक्रम चलाया गया। कृषि के क्षेत्र में, भूमि सुधार का एक व्यापक कार्यक्रम बनाया गया, जिसका उद्देश्य काश्तकारों से और नौकरों से खेती कराने की चिरकाल से चली आने वाली कुप्रथाओं को बदलना, किसानों को उनके खेतों के मालिक के रूप में स्थापित करना और गांवों में बिजली पहुंचाना था। 'नयी व्यवस्था' के अन्तर्गत राष्ट्रीय सरकार कृषि-अर्थ को पुष्ट बनाने और कृषि उत्पादन पर किसानों को उचित नियंत्रण का अधिकार देने को वचनबद्ध थी। जहां तक वित्तीय मामलों का संबंध है, इस व्यवस्था के सिक्योरिटियों के व्यापार का विनियम और सुधार किया और प्रणाली का पुनर्गठन किया। प्राकृतिक साधनों के विकास के प्रसार में राष्ट्र की भूमि, जल और वनों की रक्षा के कार्य को आगे बढ़ाया गया। टेनेसी घाटी अधिकार के अन्तर्गत इस व्यवस्था ने प्रादेशिक विकास के लिए बिजली, सिंचाई के साधनों और भूमि के उपयोग का एक आदर्श प्रस्तुत किया। न्यूनतम मजदूरियों, बेकारों की क्षतिपूर्ति कृषि उत्पादनों की कीमतें स्थिर करने में सहायता, सामाजिक सुरक्षा के भुगतानों के रूप में स्थायित्व लाने वाले उपायों ने अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने में इतनी सहायता की कि १९२९ के समान मन्दी का प्रकोप फिर से होने की की आशंका ही न रही।

## अथ, इति नहीं, नये अधिकार

किन्तु रूजवेल्ट ने सबसे पहले इस बात को समझा कि 'नई व्यवस्था' तो केवल 'अथ' है, 'इति' नहीं। युद्ध के अंतिम वर्ष में कांग्रेस के नाम संदेश में रूजवेल्ट ने एक आर्थिक अधिकार विधेयक प्रस्तुत किया, जिसमें निम्नलिखित अधिकारों का समावेश किया गया—

१. राष्ट्र के उद्योगों या दूकानों या फार्मों या खानों में उपयोगी और आमदनी वाली नौकरी का अधिकार।

२. इतना कमाने का अधिकार, जिससे खाने, पहनने मनोरंजन की पर्याप्त व्यवस्था हो सके।

३. हर किसान का यह अधिकार है कि वह फसल पैदा कर सके और उसे ऐसे दामों पर बेच सके, जिससे उसका और उसके परिवार का अच्छी तरह रहन-सहन चल सके।

४. हर छोटे-बड़े व्यापारी का यह अधिकार है कि वह अनुचित उपयोगिता और देश या विदेश के अधिकार के प्रभाव से मुक्त स्वतन्त्र वातावरण में व्यापार कर सके।

५. हर परिवार का यह अधिकार है कि उसके पास अच्छा घर हो।

६. आवश्यकतानुसार चिकित्सा प्राप्त करने का अधिकार और अच्छा स्वास्थ्य पाने और उसका आनन्द उठाने का अवसर।

७. वृद्धावस्था, बीमारी, दुर्घटना और बेकारी की अवस्थाओं में आर्थिक कष्टों से आवश्यकतानुसार संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार।

८. अच्छी शिक्षा पाने का अधिकार।

रूजवेल्ट ने कहा : अधिक मन्दी के विरुद्ध यह युद्ध जीतने के बाद हमें इन अधिकारों को वास्तविक रूप में देने और मानव की प्रसन्नता और कल्याण के लिए नये लक्ष्यों तक आगे बढ़ने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।

इन वर्षों के काम का यह परिणाम हुआ कि ये स्वतंत्र संस्थाएं आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय की सर्वोत्तम माध्यम बन गई हैं। एक पीढ़ी में ही अमरीका का रूप बदल गया। पहले वह आर्थिक दुर्दशा ग्रस्त और ह्रासोन्मुख देश था, जिसमें एक करोड़ तीस लाख मजदूर बेकार थे, आर्थिक व्यवस्था नष्टप्राय थी और भविष्य के प्रति उदासीनता और निराशा थी। आज वह एक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिशाली और समृद्ध देश है और यह रूप परिवर्तन इस व्यवस्था से हुआ है, जब अमरीका आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के सिद्धांतों का पक्षपाती था। उस अवस्था से बदलकर अब वह ऐसा देश बन गया है जिसकी सरकार ने जीवन, श्रम, कल्याण और आर्थिक गतिविधियों के मामलों में जनता के लिए आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध करने का दायित्व अपने ऊपर लिया है।

विरोधाभासयुक्त तथ्य यह है कि साम्यवाद ही ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जिसने गरीबों के शोषण का सबसे अधिक कुशल तरीका प्रस्तुत किया है।

## जनता का कल्याण और सामाजिक सुरक्षा

स्वतन्त्रता को कायम रखने का एक निश्चित तरीका यही है कि सरकार इतनी शक्तिशाली हो कि वह जनता के हितों की रक्षा कर सके और जनता इतनी सशक्त और समझदार हो कि वह अपनी सरकार पर पूर्ण नियंत्रण रख सके।

उदाहरण के तौर पर, आज लगभग ९० प्रतिशत कमानेवाला लोग सामाजिक सुरक्षा बीमा की छत्र-छाया में आते हैं, जिससे वृद्धावस्था के कारण आमदनी में कमी पड़ने, विकलांग होने व मृत्यु होने की अवस्था में सहायता मिलती है। १९६२ के अंत में १ करोड़ ८० लाख व्यक्ति संयुक्त अमेरिका में इस बीमा का लाभ उठा रहे थे, जबकि सामाजिक सुरक्षा अधिनियम पारित होने के पांच वर्ष बाद १९४० के अंत में यह संख्या केवल ३,२२,००० ही थी।

आज लगभग ८० प्रतिशत कर्मचारी संघीय, राज्य बेकारी बीमा कार्यक्रम द्वारा सुरक्षित हैं। यह कार्यक्रम मालिकों के धन से चलता है, जिसके द्वारा बेकारी की अवस्था से कर्मचारियों को उनके सामान्य वेतन के औसतन एक तिहाई के बराबर सहायता मिलती है।

१४ करोड़ से ज्यादा अमरीकी 'सोशल सिक्योरिटी ऐक्ट' द्वारा सुरक्षित हैं। इस कानून के अंतर्गत श्रमिक और उनके मालिक थोड़ा किन्तु बराबर धन-राशि जमा करते हैं। जमा होने वाली रकम अमरीका के सरकारी खजाने में एक अलग न्यासनिधि के खाते में जमा होती है। कर्मचारी जल्दी से जल्दी ६२ वर्ष की आयु पर पेंशन लेकर सेवानिवृत्त हो सकता है। सेवानिवृत्त कर्मचारी की पत्नी को भी पेन्शन मिलती है। विधवाओं के लिए मृत्यु भत्ता तथा अधीन बच्चों के लिए निधि विशेष की व्यवस्था भी इसके अंतर्गत की गई है। श्रमिक की मृत्यु हो जाने पर सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम की ओर से उनके परिवार को एक मुश्त रकम देने की व्यवस्था भी है।

## उत्पादकता बहुत बढ़ गई

सन् १९३० से १९३५ के वर्षों में कृषि कार्य करने वाला प्रत्येक व्यक्ति इतना उत्पादन करता था कि वह अपने अतिरिक्त औसतन ९ और व्यक्तियों के लिए खाद्य पदार्थ और कपास उपलब्ध करता था। अब वह अपने अतिरिक्त २६ अन्य लोगों के लिए उत्पादन करता है। अब, प्रति १३ व्यक्ति के पीछे एक से भी कम मजदूर खेती के काम में लगा है, जबकि १९३० और १९३५ तक के वर्षों में प्रति पांच के पीछे एक से भी अधिक व्यक्ति कृषि कार्य करता था। अब हमारी कुल जनसंख्या का केवल ८ प्रतिशत भाग कृषि पर निर्भर है। इसके मुकाबले में विभिन्न अन्य देशों में ३०,४० और ७० प्रतिशत तक लोग कृषि कार्य करते हैं। तब भी वे ८ प्रतिशत लोग इतना उत्पादन कर लेते हैं, जो हमारे देश भर के उपयोग और विदेशों को निर्यात करने के लिए आवश्यकता से अधिक होता है। कृषि सम्बन्धी आंकड़े रखने का कार्य १९०९ से आरम्भ हुआ था। इन आंकड़ों से ज्ञात होता है कि इतना अधिक उत्पादन होने पर भी आज जितनी कम जमीन में खेती होती है, उतनी कम पहले कभी नहीं थी। इसी प्रकार अब कृषि में जितने कम लोग काम करते हैं, उतने कम पिछले १०० वर्षों में भी नहीं थे। ■ ■

## सम्पदा के ग्राहकों से

१. 'सम्पदा' कार्यालय को अपना पूरा पता शीघ्र लिख भेजें (नाम, ग्राम, डाकखाना, जिला व राज्य) ताकि समय पर 'सम्पदा' की प्रति मिलती रहे।

२. भविष्य में वार्षिक चन्दा रु० ८.५० भेजने का कष्ट करें। —व्यवस्थापक, सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्वचालित उद्योगों का विकास

श्री रिची कैलडर एडिनबरा विश्वविद्यालय

किसी जमाने में मानवीय प्रयोग की मशीनी विधियों से हटाने की न तो कोई आर्थिक प्रेरणा थी, न कोई आवश्यकता ही थी। रहट, पनचक्की, पवनचक्की आदि के संचालन में भी मनुष्य अपने हाथों से काम लेता था। लेकिन अठारहवीं सदी से ब्रिटेन में बढ़ती आबादी के कारण गांवों से आकर लोग नगरों में बसने लगे। वे कपड़े की फैक्ट्रियों में काम करने लगे, जो मशीनों के आविष्कार से चलने लगी थीं। वे पानी की शक्ति से चलाई जाती थीं। इन्हीं में पहले पहले अपने कार्यों को मिलाने की विधि का आरम्भ हुआ था लेकिन भाप के इंजन के आविष्कार के बाद इस ओर बहुत अधिक प्रगति होने लगी।

नेपोलियन-युद्धों के बाद उद्योगीकरण द्रुत गति से हुआ। कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए औद्योगिक केन्द्र खोले जाने लगे। विज्ञान को सुलभ और सुगम बनाया गया। यह प्रौद्योगिकी के विकास का सूत्रपात था। नई नई मशीनें बनीं। उत्पादन बढ़ा, लेकिन बेकारी भी बढ़ी। इसके विरोध में लोगों ने कई स्थानों पर कारखाने जलाये तथा बर्बाद किए। परन्तु मशीनें लगातार बढ़ती गईं उनका विरोध कोई फल नहीं लाया।

सेम्यूएल बटलर नाम के एक व्यक्ति ने तभी लिखा था: "मशीन चुस्त और फुर्तीली होती है जबकि मनुष्य सुस्त है थका-थका रहता है। मशीन सही-सही काम करती है, लेकिन मनुष्य मूर्ख और मन्दबुद्धि होता है।"

डिट्रायट में हेनरी फोर्ड के कारखाने में पुर्जों को जोड़ने (एसेम्बली करने) की पद्धति अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई थी। अर्ध-कुशल कारीगर पुरजों को उपयुक्त स्थान पर फिट करते। इससे मोटर के भाग जल्दी तैयार हो जाते। फिर तो वैज्ञानिक व्यवस्था भी चल पड़ी। उत्पादन इंजीनियरी में भी तेजी से विकास हुआ। मनुष्य के बहुत से काम मशीनें करने लगीं।

लेकिन 'स्वयं चालित पद्धति' को केवल बटन दबाने का विज्ञान समझना एक भ्रम है। वास्तव में यह एक मानसिक व्यवस्था का प्रतीकमात्र है, जो अनेक समस्याओं के बारे में सोचने की हमारी दृष्टि को बदल देता है। विज्ञान इस पद्धति का निर्माता है, लेकिन फिर इस की सहायता पा कर और उन्नति करता है। कहते हैं कि एक मशीन बनते ही पुरानी हो जाती है, क्योंकि इसके बनने के क्षण से उसके तैयार होने के समय तक अनेक और सुधरी हुई मशीनों की कल्पना भी कर ली जाती है। अब तो आटोमेशन अपने विकास की स्थिति में पहुंच रहा है।

कुछ दिन हुए, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संस्था श्रम अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान में स्वयंचालित पद्धति के बारे में ब्रिटेन में तत्कालीन श्रममंत्री श्री जोसेफ बो. गाडबेर ने कहा था कि इसके तीन अर्थ होते हैं। पहले प्रकार की पद्धति में केवल छोटे पैमाने पर उत्पादन की किसी एक अवस्था पर प्रयोग में लाई जाती है। इससे क्षमता बढ़ती है और लागत कम हो जाती है।

दूसरी पद्धति में अनेक मशीनों को एक दूसरे से जोड़कर सम्पूर्ण उत्पादन प्रक्रिया को स्वयंचालित बना दिया जाता है। यह अमेरिका में बहुत प्रचलित हो रही है और ब्रिटेन में भी इसका प्रचलन शुरू हो गया है।

तीसरी पद्धति में संयंत्र की पूरी मशीनरी स्वयंचालित होती है और एक कम्प्यूटर ही यह निर्णय करता है कि कोई वस्तु कैसे, कब और कितनी बनाई जाए। इस्पात और रासायनिक उद्योगों तथा विद्युत संचार में यह स्वयंचालित प्लाण्टों की पद्धति ब्रिटेन में भी एक मामूली बात हो गई है।

इन परिवर्तनों का प्रभाव देशों पर अलग-अलग पड़ता है। बढ़ती हुई आबादी से देश में इससे समस्याएं अवश्य उठ खड़ी होती हैं। अमेरिका में जनसंख्या निरन्तर बढ़ रही है और इन मशीनों से बेकारी की समस्या पैदा हो सकती है लेकिन ब्रिटेन में जहां आबादी में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हो रही और विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए पर्याप्त जनसंख्या नहीं है, इस पद्धति को बहुत



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

इस पद्धति से उद्योग में अर्ध-शिक्षित कर्मचारियों के स्थान शिक्षित वैज्ञानिक ले लेते हैं। इससे श्रम संघों की रचना भी बदल जाती है। प्रश्न प्रबन्धकों और श्रमिकों के झगड़े का नहीं रहता, बल्कि विभिन्न श्रम संघों में ही झगड़े होने लगते हैं। गणक मशीनों पर काम करने वालों का क्लर्कों के यूनियनों से संघर्ष शुरू हो जाता है।

ब्रिटेन के तेल साफ करने के एक कारखाने में २४०० रु. साप्ताहिक वेतन पाने वाले व १००० रु. मासिक वेतन पाने वाले कर्मचारी हैं। इसमें ४६० सारे संयंत्र की देखरेख करने वाले कारीगर हैं। अलग-अलग विभागों में अलग योग्यता के कर्मचारी भी हैं। इस प्रकार कारखाने में सात श्रम संघ हैं और कार्य और मजदूरी को लेकर इन में बहुत से झगड़े होते हैं। एक बार कम्पनी में कार्य के घंटे कम करने तथा मजदूरी बढ़ाने का निर्णय लिया गया तो विभिन्न विभागों द्वारा उत्पादन में दिये जाने वाले वेतन अंश को लेकर ही मुश्किल हो गई। मशीनें और टैंक साफ करने वाले भी, नई स्वचालित विधियों के कारण अपने अंश को कुशल मिस्त्रियों में गिनने लगे।

स्वचालित प्रक्रियाओं का अर्थ होता है मंहगी मशीनें, जिन की लागत दिनरात सप्ताह में सातों दिन काम करके ही वसूल की जा सकती हैं। कर्मचारियों में दिन और रात को पारियां बांटना भी एक जोखिम भरा काम हो जाता है।

## बेकारी का खतरा

अमरीका की समृद्ध अर्थव्यवस्था में, जहां एक ओर कार्यशील आबादी की संख्या भी बढ़ रही है और स्वचालित पद्धति भी तेजी से अपनायी जा रही है, कभी बेकारी की समस्या गम्भीर बन सकती है। इस समय वहां २५ लाख बेकार व्यक्ति केवल स्वचालित पद्धति का परिणाम भोग रहे हैं। लेकिन ब्रिटेन में जहां मजदूर कठिनाई से मिलते हैं। मशीनें केवल एक रिक्त स्थान की पूर्ति करती हैं, यह देखा गया है कि ब्रिटेन में युवा स्त्रियां शादी करने की ओर अधिक प्रवृत्त हैं। इसलिए नौकरियों के लिये अधिक मात्रा में युवा स्त्रियां नहीं मिलतीं। हां, जब उनके घरेलू बन्धन कम हो जाएंगे, तभी वे काम करेंगी। तब तक जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए अधिकाधिक सामग्री थोड़े हाथों में ही बनाने की विवशता है।

पिछले दस वर्षों में ब्रिटेन में खेती, जंगल और मछली पकड़ने वाले उद्योगों में रोजगार २५% कम हुआ है। रासायनिक और सम्बद्ध उद्योगों में उत्पादन ८०% बढ़ा है लेकिन कर्मचारियों की संख्या १५% ही बढ़ी है। वास्तव में ब्रिटेन में उत्पादक वर्ग को सुविधायें देने वाले कार्यों में लगे लोगों की संख्या ही अधिक है। ब्रिटेन श्रम मंत्रालय ने एक स्थायी श्रम अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की है जो स्वचालित पद्धति के परिणाम तथा श्रमिकों की जरूरतों पर निरन्तर नजर रखेगा।

वैसे स्वचालित पद्धति का स्वभाव ही होता है कि समय-समय पर बेकारी की समस्या उठ खड़ी होती है लेकिन फिर नई-नई मशीनें अधिक व्यक्तियों को आश्रय भी देती है।

इस पद्धति के कारण सुशिक्षित उद्योग-शिल्पियों की बहुत आवश्यकता रहती है। इनके लिए प्रशिक्षित केन्द्र खोलने पड़ते हैं और अध्यापकों की जरूरत भी पड़ती है। इस प्रकार बेकारी अपने आप दूर हो जाती है।

विद्युत शक्ति उपलब्ध होने के कारण अब उद्योग कोयला क्षेत्रों में नहीं रहे। वे अन्य स्थानों में केन्द्रित हो गये हैं, जहां आबादी घनी है। लंदन के आसपास ऐसा हो रहा है। अब प्रयास किया जा रहा है कि 'उजड़े हुए' क्षेत्रों को फिर आबाद किया जाए, लेकिन कठिनाई श्रमिकों की उपलब्धि की है।

स्वचालित पद्धति का आरंभ एक नई मशीन से होता है, लेकिन उसका परिणाम अन्त में नया जीवन होता है। वास्तव में यह दूसरी औद्योगिक क्रांति है, जिस में सरकार, कारखानेदारों, श्रमिक संघों, विशेषज्ञों आदि के सहयोग से कार्य करना है। ■ ■

सम्पदा

में

विज्ञापन देकर लाभ उठावें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आदिवासियों का हस्त तथा कुटीर-उद्योग

सुनील कुमार घोष, एम० ए०,

आदिवासी लोग शहरों से दूर जंगल में तथा पहाड़ियों के पास निवास करते हैं। इससे उनको प्राकृतिक वस्तुएं सरलता से प्राप्त हो जाती हैं, जिससे वे अपने हस्त कौशल द्वारा नाना प्रकार की वस्तुएं तैयार करते हैं। यह उनके जीवन के अनुरूप कला तथा उद्योग है। वास्तव में उनके अपने कलामय जीवन में मधुरता एवं सादगी का संचार होता है, जो कृत्रिमता से दूर और वास्तविकता के अधिक निकट है।

मध्यप्रदेश के आदिवासियों का वैसे तो मुख्य धंधा कृषि है परन्तु साथ-साथ आवश्यकतानुसार सभी धंधे करने को वे उद्यत रहते हैं। कोई भी आदिवासी यह नहीं चाहता कि वह अपनी आवश्यकता की वस्तुएं खरीदकर या विनिमय करके पूरी करे। कारण यह है कि उसके पास न तो मुद्रा ही है और न इतनी कृषि उपज ही, जिससे विनिमय करके जरूरत की वस्तुएं प्राप्त कर सकें। ऐसी दशा में वह अपनी आवश्यकता की हर वस्तु प्राप्त करने के लिए अपने ही हाथों से काम करना पसंद करता है। जिस आदिवासी के यहां बरेलू धन्धों का कार्य चलता है, उसमें सकुटुम्ब कार्य की ओर रुचि लेता है।

मध्यप्रदेश के आदिवासियों में कृषि के अतिरिक्त निम्नलिखित हस्त और कुटीर उद्योग प्रचलित हैं:—

**हस्त उद्योग**—आदिवासी महिलायें अपने स्वयं के विस्तार के लिए चूल्हा, गल्ला रखने के लिए मिट्टी की कोठियां आदि सामान बनातीं हैं। पुरुषवर्ग अपने हाथों से सुन्दर- सुन्दर चटाई, सन की रस्सी आदि बनाते हैं। इन रस्सों से बड़े-बड़े काम लिए जाते हैं, जैसे—खाट बुनना, गाय, भैंस, घोड़े बांधना तथा अन्य दैनिक उपयोग।

घास और मिट्टी तो मानो उनके जीवन यापन का मुख्य साधन है। घास जानवरों को खिलाते हैं, घास की रस्सियां बनाते हैं, घास से घरों पर छप्पर डालते हैं। मिट्टी से बने खाने पीने के बर्तनों के अतिरिक्त पानी लाने के घड़े, दीपदान, शराब रखने की सुराइयां आदि बड़े उपयोगी एवं आकर्षक वस्तुएं तैयार करते हैं। तुम्बी, बेल फल, कहीरा आदि फलों में से अन्दर का पदार्थ निकलकर अनेक उपयोगी वस्तुएं बना लेते हैं। यह तुम्बी उन्हें बर्फ जैसा ठंडा पानी देती है।

## कुटीर उद्योग

१ बांस का कार्य—मांडला जिले के बैगा, बस्तर जिले के मुरिया तथा मारिया लोग तथा अन्य आदिवासी भाई बांस से अनेक चीजें तैयार करते हैं—टोकरी, मछली मारने के लिए कमनी, छोटे-छोटे जानवरों को फांसने के लिए अनेक प्रकार के फन्दे, चटाई, आदि बनाकर स्वयं के कार्य में लाते हैं तथा बाजार में ले जाते हैं। बरसात के दिनों में जब सभी मनुष्य छाता या बरसाती खरीदते हैं ऐसी दशा में हमारे आदिवासियों के पास पैसा ही कहां जो वे भी छाता आदि खरीदकर अपनी बचत कर सकें। वे तो बेचारे अपने ही हांथों से बांस की कमटियां निकाल कर "खुमरा" तैयार कर उसमें मुहलाइन के पत्ते लगाकर अपनी रक्षा कर पाते हैं।

२ लोहे का कार्य—अगरिया जाति के आदिवासी आंशिक रूप में खेती करते हैं और विशेष रूप से अन्य आदिवासियों के लिए लोहे के कृषि सम्बन्धी औजार तैयार करते है जैसे हल, बखर, कुल्हाड़ी, हंसिया आदि। कुछ अगरिया ऐसे भी हैं, जो पूर्णतः अपनी जीविका इसी से चलाते हैं।

३ लकड़ी का कार्य—कोरकू, मुरिया तथा मारिया जाति वाले अति सुन्दर कन्घी बनाने तथा बढ़ईगीरी के कार्य में दक्ष पाये गये हैं। प्रायः सभी आदिवासी अपने निस्तार के लिये हल तथा गाड़ी आदि बनाते हैं। बैगा भील जातियों में पुरुष स्त्रियों के समान अपने बालों में जूड़े बांधते हैं और उनमें कंघिया खोसते हैं। इन लोगों की कंघिया उनकी कलामय जीवन का परिचय देती

(शेष पृष्ठ ३३८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राज्य व्यापार निगम की उपलब्धियां

निरंजनलाल शर्मा

दूसरे महायुद्ध के पश्चात अनेक देशों में आर्थिक सन्तुलन अव्यवस्थित हो गया। आवश्यक वस्तुओं के अभाव से कई देशों को गम्भीर परिस्थिति का सामना करना पड़ा। राज्य व्यापार निगम का जन्म उसी परिस्थिति में हुआ। देश में जब व्यापार की स्थिति और आर्थिक सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब सरकार को स्वयं व्यापार के क्षेत्र में आना पड़ता है। आज तो समाजवादी देशों का अधिकांश व्यापार राज्य व्यापार निगम के माध्यम से होता है। कुछ देशों में तो समस्त व्यापार इसी निगम के आधीन होता है, किन्तु उन देशों में जहां पर कि मिश्रित अर्थ व्यवस्था है, व्यापार का कुछ भाग इस निगम के अन्तर्गत आता है। प्रारम्भ में इस निगम की स्थापना पौण्ड के लिए हुई थी, किन्तु आज तो कुछ देशों में इसका स्वरूप अत्यन्त संगठित और स्पष्ट हो गया है।

## भारत में स्थापना

पाश्चात्य देशों में व्यापार निगम के प्रभाव और कार्य को देखकर तथा भारत में इसकी आवश्यकता का अनुभव करते हुए, हमारे देश में भी व्यापार निगम की स्थापना हुई। दूसरे महायुद्ध के समय भी जबकि खाद्य पदार्थों और खाद का अत्यन्त अभाव था, सरकार को राज्य व्यापार निगम स्थापित करने की आवश्यकता हुई थी। आज व्यापार निगम का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया है १८ मई १९५६ में राज्य व्यापार निगम एक प्राइवेट संस्था के रूप में पंजीकृत हुआ था। उस समय इस संस्था का उद्देश्य आयात और निर्यात पर नियंत्रण करना था। १९६१ में तृतीय पंचवर्षीय योजना में योजना आयोग ने राज्य व्यापार निगम की स्थापना और कार्य विस्तार पर अधिक बल दिया तथा अपने निर्यात व्यापार को बढ़ाने तथा अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसे अत्यन्त आवश्यक बताया गया। वितरण व्यवस्था की देखभाल भी व्यापार निगम को करनी पड़ती थी। यही निगम आज ३० देशों से आयात कर उसकी वितरण व्यवस्था करता है तथा विदेशों में अपने निर्यात को बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। १९६०-६१ में व्यापार निगम का कुल व्यापार २४० मिलियन रु. था, १९६४-६५ में यह ३९० मिलियन तक पहुँच गया है। निगम की आवश्यकता और प्रगति उपर्युक्त अंकों से स्पष्ट-सी हो जाती है। निगम ने अनेक ऐसी वस्तुओं के बारे में खोज की है, जिसका विदेशों में निर्यात किया जा सके और विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सके। उदाहरण के लिए स्विटजरलैंड में जूट के बोरे, फ्रांस और पश्चिमी जर्मनी में कपड़े सीने की मशीनें, स्वीडन में गर्म कपड़े कालीन आदि का निर्यात व्यापार निगम करता है। पहले की अपेक्षा भारत का निर्यात बढ़ गया है। चाय, सूती कपड़ा, तम्बाखू आदि का निर्यात भी इसी संस्था के माध्यम से होता है। निर्यात की मात्रा को बढ़ते देख आर्थिक क्षेत्रों में राज्य व्यापार निगम की प्रशंसा की गई है। देश के अन्तर्गत कमी वाले राज्यों में अधिक अन्न वाले क्षेत्रों से वितरण की व्यवस्था भी निगम का कार्य है।

## मूल्य निर्धारण

देश में उत्पादन बढ़ाने और वितरण की उचित व्यवस्था बनाये रखने के लिए मूल्यों को ठीक रखना आवश्यक है। मूल्यों में जब भारी गिरावट आती है, तब निगम अनेक केन्द्रों पर वस्तुओं की खरीद करता है और मूल्यों को अधिक नीचा जाने से रोकता है। १९६२-६३ में जब जूट के मूल्य सरकार के द्वारा निर्धारित मूल्यों से अधिक नीचे गिरने लगे, तब उत्पादकों के लिए यह एक गम्भीर समस्या बन गई। इसी परिस्थिति में निगम ने केवल उत्पादकों के लिए ही फंड आदि की व्यवस्था नहीं की, बल्कि ३४० ऐसे केन्द्र खोले, जो जूट उत्पादन वाले राज्यों में खरीद कर सके और इस प्रकार खरीददारी से मूल्यों में सन्तुलन आ गया। जूट के अलावा निगम की यह नीति अनेक वस्तुओं पर भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। व्यापार निगम का व्यापार निम्न लिखित तालिका से स्पष्ट है:—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(मिलियन रुपयों में)

| | कुल निर्यात | आयात | आन्तरिक व्यापार | कुल व्यापार |
|---|---|---|---|---|
| १९५६-५७ | ५७.९ | ३४.० | — | ९१.९ |
| १९५७-५८ | ३०१.० | १७९.६ | — | ४८०.६ |
| १९५८-५९ | ३६७.२ | २७३.४ | १.४ | ४६२.० |
| १९५९-६० | ३२६.५ | ३६२.८ | ८.९ | ६९८.२ |
| १९६०-६१ | ४०८.६ | ६८४.२ | १४.१ | ११०६.९ |
| १९६१-६२ | ४००.२ | ८४२.६ | ११.१ | १२५३.९ |
| १९६२-६३ | ४३०.८ | ९६३.६ | १८.५ | १४१२.९ |
| १९६३-६४ | ३८६.२ | ५५९.३ | ३२.२ | ९७७.७ |
| १९६४-६५ | ३१८.७ | ६३०.२ | १९.७ | ९६८.६ |
| कुल | २९९७.१ | ४५२९.७ | १०५.९ | ७६३२.७ |

अपने बढ़ते हुए व्यापार के कारण ही आज निगम के अन्तर्गत कई छोटे-छोटे निगम स्थापित किए गये हैं और इस प्रकार निगम सफलता पूर्वक कार्य करते हुए धीरे-धीरे अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार कर रहा है। अपने निर्यात को बढ़ाने के लिए निगम वस्तु की किस्म सुधारने और उसकी मांग के अनुरूप उसे तैयार कराने के लिए स्तुत्य प्रयास कर रहा है।

सरकार ने निगम की प्रगति एवं प्रोत्साहन के लिए आन्तरिक देश के व्यापार में उसका महत्व स्वीकार कर उसे अधिकाधिक अधिकार दिये हैं। सरकार ने निगम के व्यापार को बढ़ाने और विदेशों में अपने माल की मांग बढ़ाने के लिए विदेशों में निगम के कार्यालय खोले गये हैं। जर्मनी, मास्को, टोकियो तथा अन्य देशों में भी निगम के कार्यालय हैं। निगम स्थापित होने से जहां मुनाफाखोर मध्यस्थ का स्थान समाप्त होता जा रहा है, वहां सरकार की दृष्टि में व्यापार सम्बन्धी सभी तथ्य भी रहते हैं। इससे सरकार को आवश्यकता के समय सहायता मिलती है।

## आलोचना

पूर्णतः किसी क्षेत्र में भी दक्षता और सफलता का दावा करना उचित नहीं, क्योंकि कुछ न कुछ कमियां रहती हैं और प्रत्येक प्रश्न का दूसरा पहलू भी रहता है। व्यापार निगम भी आलोचकों की दृष्टि से बचा नहीं रह सका है। आलोचकों का कहना है कि निगम की कार्य पद्धति में मूल्यों का स्तर अधिक ऊंचा हो गया है। राशनिंग आदि की व्यवस्था के कारण अनेक अनियमितताएं आ गई हैं। शासन और जनता में भी अनेक ऐसे छिद्र हो गये हैं कि समस्या गम्भीर हो गई है। विदेशी व्यापार में भी अनेक शिकायतें भी रही हैं। आयात और निर्यात के कोटे देने में भी अनियमितता रहती है और इससे आर्थिक व्यवस्था खराब होती है।

## आदिवासियों का तथा हस्त कुटीर-उद्योग

(पृष्ठ ३६ का शेष)

४ ताड़गुड़ बनाने का कार्य—बस्तानी तथा धार जिले के आदिवासियों में यह उद्योग पनप रहा है।

५ बेंत का कार्य—इससे वे मछली मारने की कमनी तथा शिकार के लिए तीर एवं धनुष बनाते हैं।

६ गहने बनाने का कार्य—आदिवासियों में कई प्रकार के सुन्दर एवं आकर्षक गहने बनाने की कलाएं प्रचलित हैं। वे बाजार से रंग विरंगी पोत या मूंगे कौड़िया आदि खरीद लाते हैं और उनसे अपनी रुचि अनुसार कलात्मक ढंग से मालायें तैयार करते हैं पहनकर अपनी सुन्दरता से चार चांद लगा देते वस्तर और सरगुजा के आदिवासी लोग इस कार्य निपुण पाये गये हैं। भील-भिलाला लोग घुंघरू, पुतली, मुंदरी, छल्ला, पैंजनियां आदि बनाते हैं। साधारणतः गहनों का प्रयोग ये लोग बाजार या मड़ई में जाने के समय तथा नृत्य तथा उत्सवों के समय करते हैं।

७ तेल निकालने का कार्य—यह कार्य प्रायः गोंड़ जाति के लोग करते हैं। वे जो कृषि करके रमतिला व राई पैदा करते हैं, उससे वे स्वयं अपनी आवश्यकता के अनुसार तेल निकालते हैं तथा बाकी राई व रमतिला को बाजारों में बेच देते हैं।

८ शराब बनाने का कार्य—महुए के मौसम में महुए बीनकर रख लेते हैं और अपने घरों में या बस्ती के बाहर जंगल में उस महुए से शराब तैयार करते हैं।

अन्य कार्य—आदिवासी लोग छींद की पत्तियों बच्चे व बूढ़े मिलकर सब बहारी, बीड़ी, चोंगी, लाइन के पत्ते से पत्तरी और दोना आदि बनाने का करते हैं। इसके अतिरिक्त मोहलाइज की छाल से रस्सी बनाते हैं, जिससे कोई भी सामान ले जाया जा सकता तथा खाट भी बुनी जा सकती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थवृत्त चयन

## ५ वर्षों में परिवर्तन

१९५८ से १९६३ तक विश्व में अन्न का उत्पादन १० प्रतिशत बढ़ गया है, जबकि जनसंख्या केवल ९ प्रतिशत बढ़ी है। यह सूचना संयुक्त राष्ट्र संघ के वार्षिक विवरण से मिली है। औद्योगिक उत्पादन इन ५ वर्षों में ४४ प्रतिशत बढ़ा है। लोगों में यात्रा की प्रवृत्ति बढ़ी है और इसलिए इतिहास में पहली बार लोगों ने सबसे अधिक यात्रा की है। व्यापारिक वायुयानों का कारोबार यात्री विमानों की दृष्टि से ७५ प्रतिशत बढ़ा है। रेलवे का यातायात २७ प्रतिशत ऊंचा हुआ है। और विश्व की सड़कों पर दौड़ने वाली मोटर गाड़ियों की संख्या ४४ प्रतिशत बढ़ गई है। परन्तु १९६२-६३ में अन्न का उत्पादन केवल १ प्रतिशत बढ़ा है।

जनसंख्या एक अनुपात से सब देशों में नहीं बढ़ी। विश्व की जनसंख्या वृद्धि का अनुपात १.८ प्रतिशत है परन्तु अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में यह अनुपात इन ५ वर्षों में क्रमशः २.३ और २.६ प्रतिशत है। जिन देशों की जनसंख्या ५ करोड़ से अधिक है, उनमें इण्डोनेशिया (१० करोड़), पाकिस्तान (९.९ करोड़), जापान (९.६ करोड़), ब्राजील (७.६ करोड़), पश्चिम जर्मनी (५.५ करोड़), ब्रिटेन (५.३ करोड़), और इटली (५ करोड़) हैं। चीन, भारत रूस और अमेरिका की जनसंख्याएं तो बहुत अधिक है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के वार्षिक विवरण से कुछ और तथ्यों का भी ज्ञान होता है। रूस में सबसे अधिक पुस्तकें प्रकाशित होती हैं—७९१४०। इसके बाद ब्रिटेन और अमेरिका का नम्बर आता है—२६०२३ और २५७८४। रूस में प्रकाशित ५० प्रतिशत पुस्तकें वैज्ञानिक विषयों की हैं।

यह आश्चर्य की बात है कि ब्रिटेन और अमेरिका, जापान की अपेक्षा स्वीडन में प्रति हजार समाचार पत्र पाठकों की संख्या १९६३ में अधिक थी। स्वीडन में प्रति हजार ४९९ व्यक्ति समाचार पत्रों के पाठक थे, जबकि ब्रिटेन, जापान और न्यूजीलैंड में यह संख्याएं क्रमशः ४९०, ४२० और ४०१ थीं।

अमेरिका में १८.४ करोड़ रेडियो सेट हैं, जबकि रूस में ६.६ करोड़।

## चवन्नी की कलम

कांग्रेस पार्लियामैन्ट्री बोर्ड की बैठक नेहरू जी के घर हो रही थी। नेहरू जी बहुत अस्वस्थ और कमजोर थे। उनके मित्र श्री महावीर त्यागी ने वातावरण को हास्यपूर्ण बनाने के लिए उनकी जेब से पेन निकालकर अपनी जेब में लगा लिया।

कुछ हास्य-चर्चा के बाद पं० नेहरू ने कहा —भाई लड़ते क्यों हो, कलम लेना है तो ले लो।

त्यागी जी ने कलम को हाथ में लेकर देखा और बोले—शर्म नहीं आती आपको। भारत के प्रधान मंत्री और चवन्नी वाला कलम।

नेहरू जी बोले कि कांग्रेस के सब सदस्य चवन्नी वाले कहलाते हैं।

प्रश्न यह है कि क्या हम भी अपने जीवन में सादगी और कम खर्ची का यह आदर्श अपनाने को तैयार हैं?

## नेपाल में भाषा

श्री श्रीमन्नारायण अपने एक लेख में लिखते हैं कि हमें यहां यह देखकर बहुत सन्तोष हुआ कि सभी शासकीय कार्य नेपाली भाषा में चलाया जाता है। यहां के सचिवालय के सभी विभागों में नेपाली भाषा सफलतापूर्वक प्रयुक्त हो रही है। सुप्रीम कोर्ट व फौजी व्यवस्था में भी नेपाली का प्रयोग बिना किसी कठिनाई के किया जा रहा है। काठमांडू शहर में घूमते हुए हम पुलिस स्टेशन के बजाय "नगर प्रहरी" का प्रयोग देखते हैं और पोस्ट बाक्स के बजाय "पत्र मंजूषा" का नेपाली। भाषा की लिपि नागरी ही है और उसकी शब्दावली संस्कृत-प्रचुर है। जहां आवश्यकता प्रतीत हुई वहां उर्दू व अंग्रेजी के शब्द भी ले लिये गये हैं। यहां अंग्रेजी कैलेंडर के बजाय विक्रम संवत् ही प्रचलित है और सारा शासकीय कार्य इन्हीं तिथियों के अनुसार संचालित होता है। ■■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब के गांवों का कायाकल्प

श्री दरबारासिंह, गृह तथा विकास मंत्री, पंजाब

पंजाब के गांवों में कच्ची झोंपड़ियां, टूटे फूटे मकान, तंग गंदी नालियां, अशुद्ध जलके जोहड़, छाया वाले वृक्षों के नीचे निकम्मे बेकार ग्रामीण, पुराने ढंग के छकड़े धीमे-धीमे रेतीले रास्तों पर चलते हुए अब दिखाई नहीं देते और इनके स्थान पर नहरोंका लहरें उठाता हुआ जल, पक्की सड़कें, जिनके दोनों ओर छाया वाले वृक्षों की पंक्तियां, खेतों में चलते हुए ट्रैक्टर, नलकूपों से निकलता हुआ स्वच्छ जल, स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, छोटे-छोटे कारखाने बिजली की तारों के खम्बे देखने में आते हैं, जिनसे पंजाब के गांवों में जीवन की एक नई लहर दौड़ गई है ।

इस क्रांतिकारी परिवर्तन का कारण क्या है ? इसका उत्तर देना कठिन नहीं। पंजाब के कृषक उत्साही एवं मेहनती हैं, श्रमिक सूझ-बूझ वाले हैं और दिन-रात मेहनत करने के अतिरिक्त नये-नये व्यवसाय ढूंढ निकालने के लिए प्रयत्नशील हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति से उन्नति करने की उनकी प्रसुप्त इच्छा पुनः जाग उठी है। उनकी लगातार मेहनत से ही पंजाब फिर हरा-भरा होकर समृद्धि के पथ पर अग्रसर हुआ है ।

हम इस परिवर्तन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालें। विभाजन के समय स्थिति बहुत ही शोचनीय थी । लाखों कृषक और अन्य लोग अपने घरों से उखड़ गए थे। बहुत-सी भूमि पाकिस्तान में रह गई। प्रत्येक ओर दुख तथा कष्ट मुंह बाए खड़े थे। परन्तु पंजाब के कृषकों ने चमत्कार कर दिखाया। उन्होंने अपने परिश्रम से पंजाब की कृषि अर्थ-व्यवस्था को समृद्ध बनाया। उन्होंने सुधरे हुए बीज, रासायनिक खादों और ट्रैक्टरों के लिए ऋण, प्राविधिक पथ प्रदर्शन, सस्ती बिजली, कृषि नाशक औषधियों, फसलों के मुकाबलों, पैकेज प्रोग्राम, भूमि सुरक्षण और सेम की रोकथाम तथा हाट व्यवस्था के सम्बन्ध में सरकार द्वारा प्रदत्त सहायता से इस राज्य को एक बार फिर शस्य श्यामल बना दिया है।

यह गर्व से कहा जा सकता है कि कृषि विभाग द्वारा उठाये गये व्यापक पगों के कारण पंजाब के कृषकों ने ३३ लाख टन गेहूँ उत्पन्न की है, जो पहले के रिकार्ड से अधिक है अर्थात् वर्ष १९६३-६४ में हुए २७.८१ लाख टन के रिकार्ड उत्पादन से ५.११ लाख टन अधिक है।

गत कुछ वर्षों में पंजाब के विभिन्न स्थानों पर जो बाग लगाए गए, डेयरी केन्द्र स्थापित किए गए, बीजों और कुक्कुट पालन के फार्म तैयार किए गए, उनसे गांवों के लोगों की समृद्धि की गति बहुत तीव्र हो गई है ।

ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगपुरियों की स्थापना तथा घरेलू दस्तकारियों के विस्तार से गांवों का नया आकर्षक रूप उभर आया है। उनकी जीवन-पद्धति में बड़ा परिवर्तन हुआ है और अब गांवों के बहुत से घरों में रेडियो, मेज़, कुर्सियों और आधुनिक वस्त्र सामान्यतः देखने में आते हैं। गांवों को मिलाने वाली असंख्य सड़कों, छोटी-छोटी नालियों, तथा छोटे-छोटे स्कूलों के निर्माण से यह भली प्रकार सिद्ध हो जाता है कि गांव के लोगों ने अपने सामूहिक लाभ के लिए स्वेच्छा से कितना श्रम किया है।

स्वर्गीय पं० जवाहरलाल नेहरू की यह उत्कट इच्छा थी कि प्रत्येक गांव में तीन वस्तुएं अवश्य हों : पंचायत, स्कूल तथा सहकारी समिति। उनकी यह धारणा थी कि इन तीनों के बिना भारत में लोकतंत्र की जड़ें गहरी तथा सुदृढ़ नहीं हो सकतीं। यह कहा जा सकता है कि जहां तक पंजाब का सम्बन्ध है पंडितजी का स्वप्न साकार हो गया है। पंजाब के सभी गांवों में १३४८५ पंचायतें कार्यरत हैं। पंचायती राज की स्थापना से लोकतंत्रीय ढांचे की जड़ें मज़बूत हो गई हैं।

महिलाएं एवं हरिजन प्रत्येक प्रकार के प्रतिबन्धों से मुक्त हो गये। अब वे किसी के अधीन नहीं हैं। समाज में उन्हें जो सम्मान एवं स्थान मिला है उन पर उन्हें गर्व है। जहां पंचायती राज की स्थापना से वास्तविक सत्ता लोगों के हाथ में आ गई वहां बौद्धिक एवं सांस्कृतिक विकास भी होने लगा। अज्ञानता और निरक्षरता को दूर करने के लिए सभी गांवों में स्कूल खोल दिये गए हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी अर्थ चर्चा

## दो जर्मनियों का आरोप प्रत्यारोप

भारत दो खंडों में विभक्त हो चुका है और इसके दुष्परिणाम हम आज भोग रहे हैं। दोनों खंड एक-दूसरे के विरोधी बने हुए हैं। इसी तरह गत विश्व युद्ध के परिणाम स्वरूप एक जर्मनी के भी दो खंड बन गये हैं। भारत का विभाजन धर्म के आधार पर किया गया, किन्तु जर्मनी के विभाजन में ऐसी कोई बात नहीं थी। वह विजेता देशों के पारस्परिक स्वार्थों के संघर्ष के आधार पर हुआ। किन्तु जब दो खंड बन गये, तब उनमें परस्पर विरोध की खाई बढ़ती ही जा रही है। पश्चिमी जर्मनी अपनी सफलता पर गर्व करते हुए कहता है कि रूस अधिकृत पूर्वी जर्मनी से २८,४४,४३० नागरिक भाग कर अपनी सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि के लिए पश्चिमी जर्मनी में आ गये हैं। पूर्वी जर्मनी में आत्म हत्या का प्रतिशत समस्त यूरोपीय देशों की अपेक्षा अधिक है। १९४५ से १९५० तक प्रति वर्ष १९४५ से १९५० तक ५ वर्षों में १८,००० व्यक्ति केन्द्रित शिविरों में भेजे गए थे, जिनमें से ८९,००० आदमी मर गये। ३१,००० आदमियों को पूर्वी जर्मनी से रूस में भेज दिया गया। १९४५-१९५५ तक ४५,००० आदमियों को पूर्वी जर्मनी में सजा दी गई।

दूसरी ओर पूर्वी जर्मनी में भी पश्चिमी जर्मनी के विरुद्ध तरह-तरह के अभियोग लगाये जा रहे हैं। पश्चिमी जर्मनी साम्राज्यवाद और जाति-भेद का समर्थक है। नाजीवादी प्रवृत्तियां वहां अब तक बढ़ रही हैं। एक प्रोफेसर के कथनानुसार पूर्वी जर्मनी को एक सौ अरब मार्क पश्चिमी जर्मनी से मिलने चाहिएं। युद्ध क्षति के दंड स्वरूप पूर्वी जर्मनी ने २५ अरब मार्क की सम्पत्ति रूस को दी है, जो कि समस्त जर्मनी से वसूल की जानी चाहिए थी। इसी तरह पूर्वी जर्मनी को युद्धों के कारण पश्चिमी जर्मनी की अपेक्षा अधिक क्षति हुई है। गत महायुद्ध की समाप्ति के बाद युद्ध में क्षति के भुगतान के लिए अधिक वेतन और अधिक सुविधाओं का प्रलोभन दिया गया था। वह भी न मिलने से पूर्वी जर्मनी को ८५ अरब मार्क का नुकसान हुआ है।

पूर्वी जर्मनी में आजकल एक मकान २५ हजार मार्क में बनता है, यदि उसे सौ अरब मार्क की क्षति न होती तो ४० लाख मकान और बन सकते थे।

## पूर्वी जर्मनी में विकास

पूर्वी जर्मनी ने आर्थिक विकास की दिशा में जितनी प्रगति की है, वह निम्नलिखित तालिका से प्रगट होती है:—

प्रति सौ परिवारों में मूल्यवान वस्तुओं का उपयोग

| | १९५८ | १९६४ |
|---|---|---|
| टेलीवीजन सैट | ५ | ४५ |
| रैफ्रीजरेटर | २ | २१ |
| धुलाई की मशीन | १ | २३ |

एक कारीगर को १९४९ में २९० मार्क मासिक मिलते थे। १९६३ में यह राशि बढ़ कर ५९२ मार्क हो गई।

१९५५ में प्रति व्यक्ति मक्खन की खपत २१ पौंड थी। १९६३ में २६ पौंड हो गयी। निम्नलिखित अंक जर्मनी के दोनों खंडों में खाद्य-पदार्थों की प्रति व्यक्ति किलो व पौंड खपत बताते हैं :—

| मद | पूर्वी जर्मनी १९६३ | पश्चिमी जर्मनी १९६३ |
|---|---|---|
| सामान्य उपज (किलो) | ९६.४ | ७४.९ |
| आलू | १५८.८ | १२६.० |
| सब्जियां | ६२.९ | ४५.४ |
| चीनी और चीनी से बनी हुई वस्तुएं | २९.९ | ३०.७ |
| चरबी | २९.३ | १८.५ |
| मक्खन | ११.५ | ७.४ |
| मछली और मछलियों से बनी हुई वस्तुएं | १३.७ | १२.१ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख आर्थिक घटनाएं

## चौथी योजना का आकार

ज्यों ज्यों दिन गुजरते जाते हैं योजना आयोग अपनी चौथी योजना को अन्तिम रूप देने में जुट गया है। आयोग के सामने सबसे बड़ी कठिनता यह है कि चौथी योजना के वर्तमान लक्ष्य को सामने रखते हुए ३ हजार करोड़ रुपये के साधनों की कमी अनुभव हो रही है। योजना आयोग ने यह निश्चय किया दीखता है है कि इसके लिये विदेशी ऋण न लेकर देश के आन्तरिक साधनों से ही रुपया इकट्ठा किया जाए। केन्द्र और राज्य सरकारें नये कर भी लगा सकती हैं और नये उद्योग और व्यापार भी अपना सकती हैं तथा जनता से ऋण भी लिये जा सकते हैं। योजना आयोग का ख्याल है कि इसके लिये केन्द्र और राज्यों को इसी आर्थिक वर्ष में बजट पेश करने होंगे। दूसरी ओर विभिन्न राज्यों के योजना मंत्रालय अपनी २ राज्य की योजनाओं में कमी न करने पर जोर दे रहे हैं। योजना आयोग आजकल सभी राज्यों के योजना मंत्रालयों से गम्भीर विचार विनिमय कर रहा है। इसके बाद ही अगस्त में राष्ट्रीय विकास परिषद योजना को अन्तिम रूप देने की स्थिति में होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि योजना के आकार को ही कब करने के प्रस्ताव पर कोई सहमत नहीं दीखता।

—बर्मा शैल ने अपने क्रूड आयल की कीमतों में कुछ कमी करने का निश्चय किया है। इसके परिणाम स्वरूप भारत को एक करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा में बचत होगी। कालटैक्स ने भी मूल्योंमें कुछ कमी करने का निश्चय किया है।

—विश्व बैंक की अन्तर्राष्ट्रीय विकास संस्था ने उद्योगों के लिए आवश्यक माल मंगवाने की सुविधा देने के उद्देश्य से भारत को करीब ४० करो. रुपये का ऋण देने का विचार किया है।

—युरोप के साझा बाजार में फ्रान्स के नये रुख के कारण एक गतिरोध उत्पन्न हो गया है और सारी व्यवस्था का ही भविष्य संदिग्ध हो गया है। फ्रान्स के एक समाचार पत्र ने तो १ जुलाई १९६५ को साझे बाजार के इतिहास में सबसे काला दिन बताया है। गतिरोध का मुख्य कारण कृषि पदार्थों पर कर-व्यवस्थामें सुधार है।

—भारत सरकार के तेल-ईंधन मंत्री श्री हुमायूं कबीर ने एक स्पष्ट घोषणा की है कि देशके तेल उद्योग का पूर्ण राष्ट्रीयकरण नहीं किया जायगा, क्योंकि राष्ट्रीयकरण का अर्थ एकाधिकार है और मैं एकाधिकार के सर्वथा विरुद्ध हूँ, चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र में हो या निजी क्षेत्र में। प्रतिस्पर्धासे निजी और सार्वजनिक क्षेत्र दोनों उन्नति करेंगे।

—उत्तर प्रदेश की सरकार ने आगामी ५ वर्षों में ७ हजार मील के सड़क परिवहन का राष्ट्रीयकरण करने का निश्चय कर लिया है। ऋषीकेश और बद्रीनाथ के बीच के मार्ग पर भी सरकारी गाड़ियां ही चला करेंगी।

## ब्रिटेन का सहयोग

ब्रिटिश सरकार ने भारत से ६.६ करोड़ रुपये का एक नया समझौता किया है। इसे मिलाकर तीसरी पंचवर्षीय योजना में ब्रिटेन का सहयोग २१३.३ करोड़ रुपया हो जायगा। अब तक ब्रिटेन ३२०.६ करोड़ रुपया भारत सरकार को ऋण दे चुका है।

१९६४ में ब्रिटेन ने भारत को १६८.९ करोड़ रुपये का माल भेजा है। यह सामान मशीनरी, लोहस्पात और परिवहन साधनों के रूप में आया। इसके मुकाबले में भारत ने ब्रिटेन को १८७.८ करोड़ रुपये का माल भेजा। इसमें से मुख्य माग चाय का है। ७७.४ करोड़ रुपये की चाय ब्रिटेन को गयी है और ३८.६ करोड़ का कपड़ा।

—भारत सरकार ने पहली जून से, कोयले के मूल्य में अतिरिक्त वृद्धि करने का निश्चय किया है। इससे पहले १२ मई को भी वृद्धि की गई थी। अतिरिक्त मूल्य वृद्धि कोयले की खानों में श्रमिकों को महंगाई भत्ता दिए जाने के कारण की गई है।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तेल क्षेत्र की नयी खोज

तेल की दृष्टि से भारत निरन्तर अधिकाधिक सौभाग्यशाली बनता जा रहा है। गुजरात में एक नये तेल क्षेत्र का पता लगा है, जो भारत के उपलब्ध तेल क्षेत्रों में सबसे बड़ा है और विश्व के बड़े से बड़े क्षेत्रों में जिसकी गणना की जा सकती है। अभी तेल मंत्री श्री हुमायूं कबीर ने इस क्षेत्र का ठीक-ठीक पता नहीं बताया है, लेकिन उपर्युक्त आशय की सूचना देते हुए उन्होंने कहा है कि शायद भारत के शक्ति गवेषण के इतिहास में यह बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो। एक पत्र संवाददाता के कथनानुसार यह नया क्षेत्र कलोल के तेल क्षेत्र से १५ मील दूर में है। यहां ४ ड्रिलिंग सफल हुए हैं और एक कुआं भारत के सर्वोत्तम तेलकूपों के समान बताया गया है। पहले कलोल के इस क्षेत्र को अलाभकर समझकर छोड़ा जा रहा था, किन्तु अंतिम परीक्षण करते हुए इस क्षेत्र की उज्ज्वल संभावनाएं प्रगट हुईं। यदि अन्य परीक्षणों से भी यह तेल क्षेत्र बहुत अधिक समृद्ध प्रतीत हुआ तो गुजरात का आर्थिक भविष्य और भी अधिक उज्ज्वल हो जायगा। एक अनुमान के अनुसार अंकलेश्वर के तेल क्षेत्र से २१० करोड़ टन तेल मिलेगा और कुल गुजरात में ४१० करोड़ टन तेल के भंडार हैं।

## सम्पादकीय

(पृष्ट ३१३ का शेष)

६.१६ क्विंटल ज्यादा पैदा हुई अर्थात ४०% अधिक। इस क्षेत्र में फैडरेशन ने ४० हजार रुपये अतिरिक्त रूप से लगाये। १२०० क्विंटल कपास के अतिरिक्त उत्पादन के कारण १ लाख ८० हजार रुपये का अधिक लाभ हुआ। इसका अर्थ यह है कि एक रुपया अतिरिक्त विनियोजन से किसान को ४.५० रु० लाभ हुआ। फेडरेशन ने कृमिनाशक औषधियों और खाद के प्रयोग पर बहुत बल दिया। इसके लिए फेडरेशन ने किसानों को बहुत सहायता दी। दवाई छिड़कने के दस यंत्र भी केन्द्र की ओर से किसानों को मिले। जिन खेतों पर दवाइयों का अधिक छिड़काव हुआ, वहां उत्पादन भी अधिक हुआ। प्रयोग के लिए नियत दो गांवों में कुएं सूख जाने के कारण बहुत सफलता नहीं मिली। इन्हीं गांवों में प्रयोग से इतर खेतों में तो उत्पादन बहुत ही कम रह गया।

फेडरेशन के उक्त परीक्षण हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। प्रति एकड़ कृषि-उत्पादन की कमी भारत की वास्तविक समस्या है। यहां प्रति एकड़ १२० पौंड कपास पैदा होती है, जबकि अमेरिका में ५१६, मिश्र में ५६६, रूस में ६२४ और पाकिस्तान तक में २५३ पौंड होती है। यही स्थिति दूसरे कृषि-उत्पादनों की है। आज भारत को इसी कारण ८-६ लाख गांठें कपास विदेशों से मंगानी पड़ती हैं। यह भारी आयात कम हो जाय, यदि हम अपना प्रति एकड़ कपास उत्पादन बढ़ा सकें। फेडरेशन के अध्यक्ष श्री रामनाथ पोद्दार के कथनानुसार यदि हम प्रति एकड़ उत्पादन २६८ पौंड कपास कर सकें तो हमें २०० करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा बच जाय। फेडरेशन ने भारत सरकार से कपास की खेती के लिए २० करोड़ रुपया लगाने का अनुरोध किया था। फेडरेशन के इस सफल प्रयोग के बाद क्या सरकार इधर विशेष ध्यान देगी?


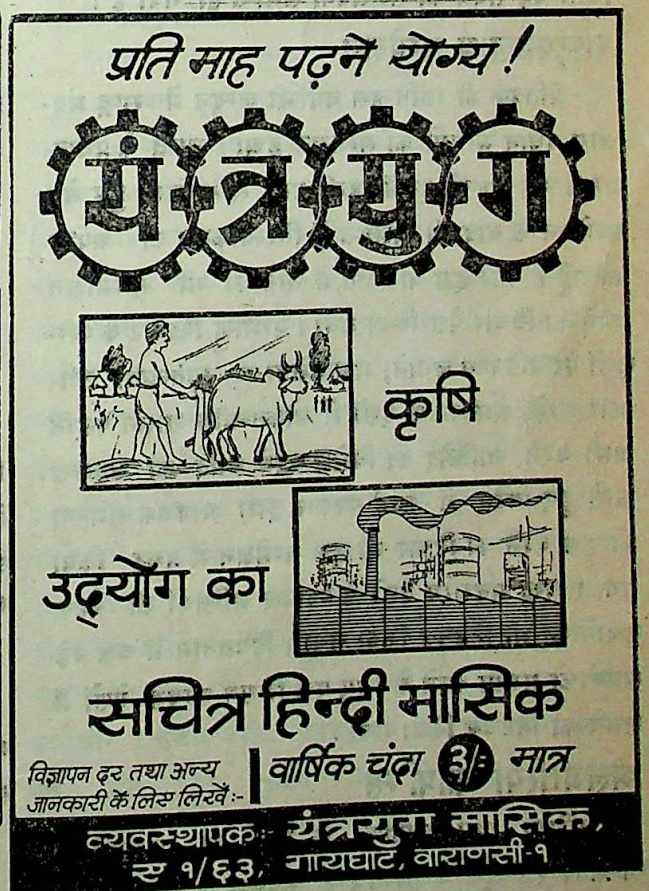





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ देश की : कुछ विदेश की

## कच्छ का समझौता

इस मास की महत्त्वपूर्ण घटना कच्छ के प्रदेश में युद्ध विराम तथा पाकिस्तान और भारत में एक समझौता है। इसके अनुसार पाकिस्तान ने १ जनवरी १९६५ की स्थिति स्वीकार करली है और अपनी चौकियां हटा ली हैं। किन्तु भारत ने कुछ अपने क्षेत्र में भी पाकिस्तान को गश्त लगाने का अधिकार दे दिया है और कुछ विवादग्रस्त प्रश्नों को पंच के सुपर्द करना मान लिया है। इस समझौते पर देश की प्रतिक्रिया मिश्रित रही है। कांग्रेसी इस समझौते को भारत की विजय बताते हैं, जबकि विरोधी इसमें भारत की पराजय देखते हैं। जो हो, इससे निकट भविष्य में किसी बड़े संघर्ष की सम्भावना समाप्त हो गयी है।

## राष्ट्रमंडलीय सम्मेलन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी लन्दन में राष्ट्र मंडलीय प्रधान मंत्रियों का सम्मेलन हुआ। भारत के प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री इसमें पहली बार सम्मिलित हुए थे। सम्मेलन के बाद की विज्ञप्ति में निरस्त्रीकरण की अपील की गई है और इस बातचीत में चीन को भी सम्मिलित करने का विचार पेश किया गया। परमाणु विस्फोट के परीक्षणों पर प्रतिबन्ध लगाने, मलयेशिया की स्वतन्त्रता स्वीकार करने, अफ्रीका के देशों में लोकतन्त्रीय शासन पद्धति जारी करने, जातिभेद का विरोध करने आदि का उल्लेख करते हुए ब्रिटेन में स्वयं सरकार द्वारा आवजक समस्या को हल करने का विचार भी इस सम्मेलन में प्रकट किया गया। राष्ट्र मंडलीय देशों के व्यापार मन्त्रियों की बैठक बुलाने का भी निश्चय किया गया। वियतनाम में चल रहे संघर्ष को समाप्त करने के लिए एक मिशन सम्बद्ध देशों में भेजने का निश्चय किया गया।

## अलजीरिया कांफ्रेन्स

एशिया तथा अफ्रीका के देशों की अल्जीरिया कान्फ्रेस २९ जून के बजाय ५ नवम्बर के लिए स्थगित कर दी गई। इसका मुख्य कारण यह था कि कान्फ्रेस के कुछ दिन पहले ही अल्जीरिया में सरकार एक क्रान्ति द्वारा पलट दी गई। यह क्रांति केवल व्यक्तिगत उद्देश्य को लेकर हुई थी अथवा विभिन्न राजनैतिक कारणों से, यह स्पष्ट नहीं हुआ। चीन, पाकिस्तान, इन्डोनेशिया और अल्जीरिया की नई सरकारें तारीखों को स्थगित करने के पक्ष में नहीं थीं, किन्तु अधिकांश देशों के आग्रह पर इसे स्थगित करना पड़ा। इस कांफ्रेस में अफ्रीकी और एशियाई देशों की अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विचार किया जाना था। चीन इसमें बहुत रुचि ले रहा था। रूस और मलयेशिया को इस कांफ्रेस में सम्मिलित किया जाय या नहीं, यह भी विवाद का एक प्रश्न था।

## रूस में बृहत्काय वायुयान

रूस ने एक ऐसा बृहत्काय वायुयान तैयार किया है, जो इसके निर्माता के कथनानुसार ७२० यात्रियों को ले जाने की क्षमता रखता है। यह ८० टन माल लाद सकता है और ५ हजार मील तक उसे ले जा सकता है। इस जहाज के बनाने का मुख्य उद्देश्य साइबेरिया और मध्य एशिया के सुदूरवर्ती स्थानों तक माल ले जाना है, क्योंकि इस क्षेत्र में सड़कें बहुत कम हैं।


# रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योगवासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० न. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

श्री रामतीर्थ योगआश्रम, बम्बई-१४




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जीवन बीमा निगम : क्षेत्रों में विभाजन

जब आज से कुछ वर्ष पूर्व बीमा उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया गया था, तभी अनेक विचारकों और अर्थ-शास्त्रियों ने यह विचार प्रकट किया था कि इससे बीमा कम्पनियों में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा कम हो जायगी और देश के आर्थिक विकास के साथ २ बीमा व्यवसाय जिस गति से बढ़ना चाहिए, उस गति से नहीं बढ़ सकेगा। किन्तु उस समय समाजवाद और राष्ट्रीयकरण के नारेबाजीमें किसी ने इस तथ्य की ओर ध्यान नहीं दिया। तब यह सुझाव भी दिया गया था कि एक केन्द्रीय बीमा निगम न बनाकर अनेक क्षेत्रीय बीमा निगम बनाये जांय। ये क्षेत्रीय निगम हों तो सरकार के हाथ में, किन्तु इनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी हो। इसका लाभ यह बताया गया था कि यह क्षेत्रीय निगम अपनी २ कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करेंगे और अधिक से अधिक कारोबार बढ़ायेगें। इन सब क्षेत्रीय निगमों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा होगी, जो किसी व्यापार और उद्योग की सबसे प्रबलतम प्रेरणा होती है। एक केन्द्रीय निगम बहुत भारी भरकम संगठन बन जाता है और उसकी गति कुछ शिथिल हो जाती है। किन्तु उस समय समाजवाद और राष्ट्रीयकरण के उत्साह का आवेश इतना तीव्र था और इम्पीरियल बैंक के बाद बीमा उद्योग के राष्ट्रीय करण की भावना इतनी उग्र थी कि इधर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

यह ठीक है कि प्रारम्भिक वर्षों की कठिनाइयों के बाद जीवन बीमा निगम ने अपने कार्यमें काफी प्रगति की है और आज उसका कारोबार पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गया है, किन्तु देश का आर्थिक विकास जिस गति से हो रहा है और देश के आर्थिक साधनों के अधिक संग्रह की आवश्यकता जितनी अधिक अनुभव की जा रही है, उसे देखते हुए अब यह अनुभव किया जाने लगा है कि जीवन बीमा निगमका योगदान कुछ कम है। फिर यह भी अनुभव किया गया कि पालिसी भंग और पुर्ननवीकरण व्यय का अनुपात कम होने के बदले कुछ बढ़ ही रहा है। जीवन बीमा निगम की सम्पूर्ण गतिविधि की जांच करते हुए संसद की सरकारी उद्योग जांच समिति ने संसद् के गत बजट अधिवेशन में यह सुझाव विचारार्थ प्रस्तुत किया है कि जीवन बीमा निगम को ४-५ क्षेत्रों में स्वतंत्र कार्यालय बनाकर विभक्त कर दिया जाय, ताकि इसकी कार्य क्षमता भी बढ़े और अधिक केन्द्रित होने के कारण जो कठिनाइयां आती हैं, वे भी कम हो जांय।

## कुछ नये सुझाव

जांच कमेटी ने निगम के कार्य को अधिक सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ अन्य सुझाव भी दिये हैं। इनमें में एक सुझाव यह है कि बीमे की दरों में कुछ कमी की जाए, क्योंकि अब मृत्यु संख्या का अनुपात पहले से कम हो गया है और निगम को पालिसी की अवधि से पहले कम देनदारी करनी होती है। दूसरा सुझाव यह था कि देहाती क्षेत्रों में कारोबार को अधिक बढ़ाया जाय। प्रबन्ध के ऊपरी खर्चों को कम करने की सलाह भी इस समिति ने दी थी।

सरकार इन सब सुझावों पर विचार कर रही है। बहुत सम्भवत: इन सुझावों पर सरकार सहमत भी हो जायेगी। सबसे मुख्य विवादग्रस्त प्रश्न बीमा निगम को विभिन्न क्षेत्रों में विभक्त करने का है। विभाजन के लिए सारी व्यवस्था को फिर से संगठित करना होगा और बीमा कानून को भी बदलना होगा, किन्तु इसके विभाजन का पक्ष भी बहुत प्रबल है। परस्पर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रों में विभाजन कार्य से अधिक स्वतंत्रता, पालिसी होल्डरों से सीधा सम्बन्ध और अपने कारोबार को बढ़ाने में कुशलता का प्रदर्शन आदि लाभ कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। आज से ५ वर्ष पूर्व जीवन बीमा निगम के एक भूतपूर्व अध्यक्ष ने पार्लियामेण्ट की कमेटी को बताया था कि यदि निगम का कारोबार १ हजार करोड़ रुपया हो जाता है, तो निगम को अनेक क्षेत्रों को विभक्त कर देना चाहिए। उन्होंने यह सम्भावना भी प्रकट की थी कि १९६३ तक कारोबार १ हजार करोड रुपया हो जायगा, किन्तु आज तक भी (३१ मार्च १९६४) यह कारोबार ६९३ करोड रुपये से अधिक नहीं हुआ। यद्यपि यह कारोबार राष्ट्रीयकरण से पहले की अपेक्षा ४-५ गुना हो गया है और निगम इस पर गर्व कर सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथापि कुछ विचारकों की दृष्टि में यह पर्याप्त नहीं है।

देखना यह है कि सरकार इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर क्या निर्णय करती है।

## एशिया विकास बैंक

इकाफे ने एशियाई देशों के विकास के लिए एक अलग बैंक की स्थापना का सुझाव दिया है। अमेरिका के राष्ट्रपति श्री जानसनने पूर्ण सहयोग का आश्वासन देकर इस बैंक की स्थापना को अधिक सम्भव और निकट ला दिया है। परन्तु हमें सोचना यह है कि पहले से विद्यमान अनेक सहायक संस्थाओं के होते हुए यह नया बैंक कहां तक लाभ पहुंचा सकेगा? यदि यह बैंक विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ विशेष सहायता दे सका, तब तो इस बैंक का लाभ होगा, लेकिन यदि यह बैंक वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का एजेन्ट ही बन गया, तो बहुत लाभ होने की सम्भावना नहीं है। हां, यदि इस बैंक ने उद्योग की अपेक्षा व्यापार के क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया तो इस बैंक से अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

## वस्त्र उद्योगों की विषम समस्यायें

(पृष्ठ ३२० का शेष)

निर्माण देश में बढ़ रहा है, किन्तु अब भी स्थिति यह है कि मशीनरी उद्योग मिलों की आवश्यकताएं पूर्ण करने में समर्थ नहीं है और उनके आर्डर दो-दो, तीन-तीन साल के लिए पहले बुक हो जाते हैं। तब विदेशी मशीनरी मंगाने पर पाबन्दी लगाने की जरूरत क्या है।

वस्त्र उद्योग के लिए अन्य उद्योगों की भांति सरकार की कर नीति भी एक बाधा बन रही है। डिवीडैण्ड टैक्स और बोनस शेयरों पर टैक्स यदि हटा दिए जांय तो उद्योग को बहुत लाभ होगा। वस्त्र उद्योग ने भारत सरकार से अनुरोध किया था कि जिन उद्योगों को २५% की दर से विकास छूट (रिबेट) मिलती है, उनमें वस्त्र उद्योग को भी सम्मिलित कर लिया जाय। किन्तु इस अनुरोध को सरकार ने ठुकरा दिया।

विकासशील देशों को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से एक व्यवस्था करने का निश्चय हुआ था, किन्तु गैट की दीर्घकालीन व्यवस्था व्यवहारतः असफल सिद्ध हुई है। उसने विकासशील देशों के और विशेषकर कपास पैदा करने वाले देशों पर अधिक पाबन्दी लगाई हुई है। हमें आशा करनी चाहिए कि आगामी अक्टूबर में गैट की कान्फ्रेंस में कुछ इस तरह की व्यवस्था की जायेगी, जिससे विकासशील देशों में गैट की घोषित नीतियों पर विश्वास उत्पन्न हो सके। कनेडी प्रस्तावों को भी निष्प्रभाव करने के लिए यह सुझाव दिया जा रहा है कि कपास को रियायती वस्त्रों की सूची से निकाल दिया जाय। हमें आशा करनी चाहिए कि विकसित देश विकासशील देशों की आवश्यकताओं का सुझाव करेंगे।

कुछ दिन पहले सरकार ने एक बोनस अध्यादेश जारी किया है। इसके अनुसार श्रमिकों को अनिवार्यतः एक नियत सीमा तक बोनस देना होगा। इस प्रकार की पाबन्दी अनिवार्यतः समस्त उद्योगों पर एक बोझ डालेगी। यह बोनस नहीं है, यह तो एक किस्म से वेतन वृद्धि है। फिर सरकार वस्त्र उद्योग के लिए एक दूसरा वेतन मंडल बना रही है। श्रमिकों के जीवन स्तर में उन्नति हो, यह तो ठीक है किन्तु दूसरी ओर उत्पादन व्यय में कमी तथा साधारण ग्राहक की सुविधा का भी तो ध्यान रखना चाहिए और इसका उपाय केवल मात्र यह है कि वेतन वृद्धि को उत्पादन वृद्धि के साथ किसी तरह संयुक्त किया जाय।

★ इण्डियन काटन फैडरेशन में दिये गये अध्यक्षीय भाषण के आधार पर।

## अर्थ व्यवस्था में मूल्यों पर

( पृष्ठ ३२२ का शेष )

मूल्यों पर सरकारी नियंत्रण अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए "राष्ट्रीय न्यूनतम" की व्यवस्था किये बिना 'समाजवाद' स्थापित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की न्यूनतम आवश्यक वस्तुयें अबाधित रूप से मिलती रहें। बढ़ते हुए मूल्यों के वर्तमान संकट तथा कृत्रिम रूप से उत्पन्न किये गये वस्तुओं के भौतिक अभाव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों को अपूर्ण-बाजार की शक्तियों पर नहीं छोड़ा जा सकता है। अनाज, कपड़ा आदि अनिवार्य वस्तुओं के मूल्यों पर भारत सरकार द्वारा हाल ही में किया गया प्रत्यक्ष एवं परोक्ष नियंत्रण, विकासशील अर्थ-व्यवस्था में मूल्य नियंत्रण की आवश्यकता का सबसे अच्छा उदाहरण है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


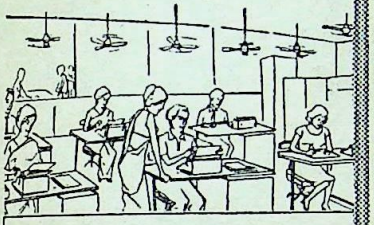

# जेठ की दुपहरी का सुखद स्वप्न...

केसल्स से सज्जित एक महल!

कितना सुखमय, कितना शीतल!

बिक्रय-कर्ता :

बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड

४५-४७ वीर नरीमान रोड, बम्बई-१

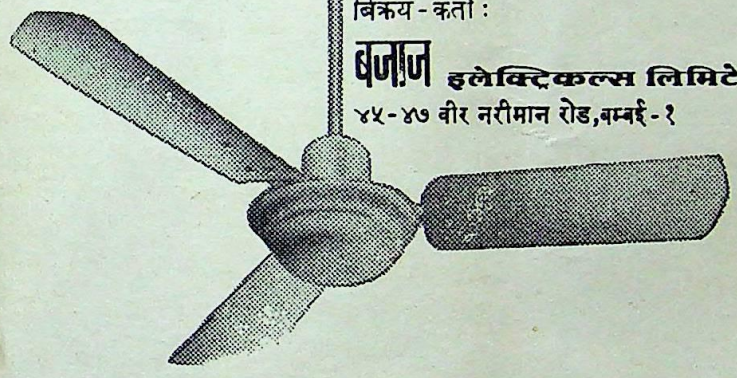

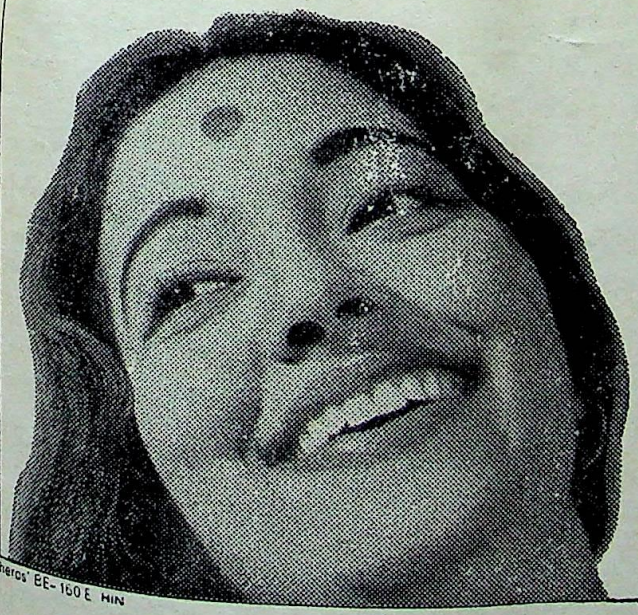

आपके सपने सजानेवाले... केसल्स पंखे!

heros' EE-150 E HIN


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रजि. नं० डी २१


# आपके लिए माहवारी पेंशन

मान लीजिए कि अगले १० वर्षों तक आप हर मास १०० रु० वाला एक १० वर्षीय राष्ट्रीय बचत पत्र (प्रथम निर्गम) खरीदते हैं। १० वर्ष के बाद आपका एक बचत पत्र हर महीने पकने लगेगा और हर महीने आपको १८० रु० मिलने लगेंगे। यह मासिक आय आपकी वृद्धावस्था में आपके लिए एक वरदान हो सकती है क्योंकि इससे आपके लिए नियमित पेंशन निश्चित हो जाएगी।

अगर आप चाहें, तो बचत पत्रों के पकने पर संचित ब्याज रख कर १०० रु० की आरम्भिक पूंजी को फिर से राष्ट्रीय बचत पत्रों में लगा सकते हैं। इससे आपको या आप पर आश्रितों को पुनर्विनियोजन की तिथि से दस वर्ष बाद अगले १० वर्षों के लिए आय सुनिश्चित हो जाएगी।

यह धन लगाने का एक अच्छा साधन भी है क्योंकि इस पर ६ प्रतिशत प्रति वर्ष साधारण या ६.०५ प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज मिलता है। इस पर कर तभी देना होगा, यदि आप आयकर भी देते हैं।

## राष्ट्रीय बचत संगठन


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, [illegible] शक्तिनगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

## अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

## राजस्थान विकास अंक

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


कहने
की
आवश्यकता
नहीं

कलकत्ता में जैसे
विक्टोरिया मैमोरियल
वैसे ही

# ग्वालियर सूटिंग

पहनने
वाले
व्यक्ति
भी अलग
ही
नजर
आते
हैं

वस्त्रों के प्रेमियों
के लिये सूटिंग के

निर्माता
ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यूफैक्चरिंग (विविंग) कं० लि०
बिरलानगर-ग्वालियर

GWALIOR FABRICS

NPSIGR-175


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आजादी को आर्थिक आधार प्रदान करने में

# सहकारिता का योगदान

## राजस्थान के जन-जीवन में

# सहकारिता

## का

# व्यापक प्रचार

★ राज्य की २१३७६ सहकारी समितियों के सदस्य सहकारिता के आधार पर अपना कारोबार चला रहे हैं।

★ राज्य के ७२ प्रतिशत ग्राम व ३० प्रतिशत ग्रामीण-परिवार सहकारिता के दायरे में आ चुके हैं। ५४४ उपभोक्ता भण्डारों के ६१०५१ सदस्य अपनी दैनिक जीवन की शुद्ध व अच्छी वस्तुएं वाजिब मूल्यों पर प्राप्त कर रहे हैं।

## आप भी इस लाभ के भागीदार बनिये

सहकारी समितियों की हिस्सा पूंजी ८२०.२६ लाख रुपये

सहकारी समितियों की कार्यशील पूंजी ३४५२.७९ लाख रुपये

## सहकारिता को अपनाकर शोषण का अंत कीजिए

राजस्थान सरकार द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संकट काल में आपका सहयोग

## किसान :

* अधिक उत्पादन करें
* ग्राम रक्षा दल के सदस्य बनें
* श्रम बैंक में योग-दान करें

## मजदूर :

* खूब उत्पादन बढ़ायें
* हड़ताल न करें
* विवादों को बातचीत से सुलझायें

## व्यापारी :

* मुनाफाखोरी न करें
* माल का अनुचित संग्रह न करें
* कीमतें न बढ़ायें

## महिलाएँ :

* फिजूलखर्च न करें
* स्वर्ण दान करें
* गृह उद्योगों में भाग लें
* बालकों को राष्ट्र प्रेम सिखाएं

## सामान्य नागरिक :

* होम गार्ड के सदस्य बनें
* सेना में भर्ती होवें

## देश सेवा का अवसर सभी के लिए

राजस्थान सरकार द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. समस्याओं का समाधान ? (सम्पादकीय) | | ७ |
| २. चित्रावली | | ९ |
| ३. भारत का दाहिना हाथ : राजस्थान | श्री सम्पूर्णानन्द | १० |
| ४. राजस्थान : गतिशील राज्य | श्री पदमपत सिंहानिया | १० |
| ५. राजस्थान की आर्थिक समस्याएं और उनका समाधान | श्री हरिश्चन्द्र माथुर | ११ |
| ६. सान्तवाद से समाजवाद की ओर | श्री मथुरादास माथुर | १५ |
| ७. राजस्थान का वित्तीय विकास | डा० मालीराम | १८ |
| ८. चित्रावली—१ | | १९ से २२ |
| ९. राजस्थान में प्रगतिशील भूमि-सुधार | | २६ |
| १०. राजस्थान में कृषि विकास | श्री सुभाष | २९ |
| ११. राजस्थान की प्रमुखतम समस्या—मरुभूमि | श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी | ३२ |
| १२. राजस्थान की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण | (लोकनाथन कमेटी) | ३५ |
| १३. औद्योगिक प्रगति के पथ पर राजस्थान | श्री बी० डी० पाठक | ३९ |
| १४. उद्योगों का निरन्तर विकास | श्री महाराजा हरिश्चन्द्र | ४१ |
| १५. हमारी पंचवर्षीय योजनाएं—विचार और व्यवहार | श्री प्रेमनारायण माथुर, वनस्थली | ४५ |
| १६. राजस्थानी नागरिक के आय के साधन | श्री मदनलाल वर्मा | ४७ |
| १७. राजस्थान के मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति | श्री संजय | ४९ |
| १८. राजस्थान की वरदायिनी चम्बल नहर | श्री ज्ञानेश्वर आरोले | ५० |
| १९. राजस्थान की जान्हवी—राजस्थान नहर | | ५१ |
| २०. विद्युतीकरण और उसका आर्थिक महत्त्व | श्री देवीशंकर तिवारी | ५५ |
| २१. भारत का आर्थिक अभ्युत्थान : राजस्थान का योगदान | | ६० |
| २२. हमारी चित्रावली—२ | | ६१ |
| २३. राजस्थान की आर्थिक गतिविधि और समस्याएं | | ६२ |
| २४. वित्त निगम और राज्य का औद्योगिक विकास | श्री गंगासहाय पुरोहित | ६३ |
| २५. राजस्थान के आर्थिक विकास में विदेशों का सहयोग | | ६८ |
| २६. राजस्थान अंकों में—: जनसंख्या—विद्युत—मोटर गाडियां—औद्योगिक विकास—आयात-निर्यात-वर्षा-फसलें—बैंकों द्वारा ऋण—सहकारी आन्दोलन—उद्योगों का उत्पादन—सिंचित क्षेत्र—श्रमिक संघ—बिजली की खपत—कृषि उत्पादन—सूती मिलें—सड़कें—आय-व्यय आदि | | ७१ से ७६ |
| २७. राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स | | ७७ |
| २८. राजस्थान की औद्योगिक संभावनाएं | श्री एल० के० वर्मा | ७९ |
| २९. राजस्थान में हस्तकला उद्योग | श्री एम० एल० गोयल | ८२ |
| ३०. सिंचाई की नई योजनाएं | श्री निरंजनलाल | ८५ |
| ३१. राजस्थान की चारों पंचवर्षीय योजनाएं | श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार | ८७ |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


| | | |
|---|---|---|
| ३२. हमारी चित्रावली—३ | | ८१ |
| ३३. राजस्थान में रेल और सड़कें | | ९३ |
| ३४. हमारा उज्ज्वल भविष्य | श्री मोहन लाल सुखाड़िया | ९५ |
| ३५. राजस्थान का पुनर्निर्माण | श्री रामनाथ पोद्दार | ९६ |
| ३६. औद्योगिक आवास | | ९७ |
| ३७. उर्वरकों की आवश्यकता | श्री लक्ष्मी नारायण | ९८ |
| ३८. सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योग | | १०० |
| ३९. राजस्थान की वित्तीय कठिनताएं | | १०४ |
| ४०. करों से निरन्तर आय बढ़ रही है !!! | | १०५ |
| ४१. सहकारिता आन्दोलन की प्रगति | | १०६ |
| ४२. ५० वर्ष पूर्व का राजस्थान | श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा | १०८ |
| ४३. जन जागरण के सक्षम साधन | श्री श्रीनाथ चतुर्वेदी | ११० |
| ४४. सम्पादकीय | (श्री हरिभाऊ व कृष्णचन्द्र विद्यालंकार) | ११३ |
| ४५. विद्युत का विकास | | ११४ |
| ४६. यह भी पढ़िये | | ११७ |
| ४७. इस मास की मुख्य घटनाएं | | ११९ |


# विज्ञापन विषय सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| ग्वालियर रेयन | २ | १४. दिल्ली प्रशासन | ५ |
| २. सहकारिता (राजस्थान) | ३ | १५. बैंक आफ राजस्थान | ७ |
| ३. संकटकाल के कर्तव्य (राजस्थान) | ५ | १६. सैण्ट्रल इण्डिया मै. | ११ |
| ४. इण्डियन टूल मैन्यु. फैक्चरिंग कम्पनी | १३ | १७. वसुधा लैंड एण्ड फाइनेंस कं० | ८१ |
| ५. भारत सरकार | २२ | १८. यूनाइटेड कमर्शियल बैंक | ८३ |
| ६. हिन्दुस्तान एलमूनियम कारपोरेशन | २५ | १९. नेशनल इन्जीयरिंग कपम्नी जयपुर | ८७ |
| ७. भारत पुल्वराइजिंग मिल्स | ३१ | २०. बिड़ला मिल दिल्ली | ९३ |
| ८. फोरेम आफ फ्री एन्टर प्राइज | ३२ | २१. जे० के० प्रतिष्ठान | ९९ |
| ९. दिल्ली आयरन सिण्डीकेट | ३६ | २२. स्वदेशी काटन मिल्स | ११६ |
| १०. क्वालिटी मिनरल्स सप्लाई | ४० | २३. इण्डियन आयल | ११९ |
| ११. अजुध्या टैक्सटाइल मिल्स | ४३ | २४. जयपुर उद्योग | १२० |
| १२. सैन्चुरी स्पिनिंग एंड मैन्यु मिल्स | ४५ | २५. राजस्थान सरकार | १०१ |
| १३. सस्ता साहित्य मण्डल | ६५ | २६. राजस्थान सरकार | १११ |


सम्पदा का वार्षिक मूल्य—९.५० रु.

आज ही मनीआर्डर भेजकर सम्पदा के वार्षिक ग्राहक बन जावें

यह अंक वार्षिक चन्दे में ही मिलेगा।

—मैनेजर सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विकास-अंक

टैलिफोन नं० २२५८७३

सम्पादक :
हरिभाऊ उपाध्याय
कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

# सप्तपदी

वर्ष : १४ अगस्त १९६५ अंक : ८

## आज की विषम समस्याओं का समाधान है ?

जिस पखवाड़े में देश अपनी स्वाधीनता का १८वां वार्षिक उत्सव उल्लास से मनाने की तैयारियां कर रहा था, उस पखवाड़े के कुछ महत्त्वपूर्ण समाचार पढ़िये—

अभी कच्छ समझौते की स्याही भी नहीं सूखने पाई कि काश्मीर में पाकिस्तानियों की बड़ी संख्या में घुसपैठ और योजनाबद्ध आक्रमण के समाचारों ने गंभीर स्थिति उत्पन्न कर दी है। इन पाकिस्तानियों में बाकायदा शिक्षित सैनिकों की संख्या भी कम नहीं है। दोनों ओर सैकड़ों हताहतों की खबरें मिली हैं। स्थिति अपि नियंत्रण में है, तथापि किसी भी समय गंभीर रूप धारण कर सकती है।

देश में महंगाई के जिस चक्र में कुछ शिथिलता आ रही थी, वह फिर तेज़ी पकड़ने लगी है। मूल्यों का निदेशक अंक प्रति सप्ताह शनैः शनैः बढ़ता जा रहा है। अनाज अनेक राज्यों में दुर्लभ होता जा रहा है और इस कारण असंतोष उग्र से उग्रतर होता जा रहा है। सरकार द्वारा अनाज की कुल खरीद व अन्न क्षेत्रों के निर्धारण अभी तक विवादास्पद विषय हैं।

भिन्न भिन्न राज्यों से अशान्ति व उपद्रव के समाचार आ रहे हैं। पुलिस को कई नगरों में गोली चलानी पड़ी। सदा शान्त रहने वाला उदयपुर भी अशान्ति व उपद्रवों का शिकार बन गया। पटना, इन्दौर हैदराबाद व कोल्हापुर और कलकत्ता से गोलीकाण्ड के समाचार मिल रहे हैं। छात्रों की अनुशासन-हीनता सीमा पार करती जा रही हैं। जगह-जगह उच्छृंखल व उद्दण्ड आन्दोलनकारी नेतृत्व करने लगे हैं।

देश का शासन करने वाली पार्टी कांग्रेस स्वयं अनुशासनहीनता, परस्पर द्वेष, पार्टीबन्दी व संघर्ष की क्रीड़ास्थली बन गई है। हैदराबाद के अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष को फिर न चुनने का नियम समाप्त करके श्री कामराज के पुनः अध्यक्ष चुने जाने का रास्ता साफ़ हो गया है, फिर भी कांग्रेस में गतिरोध बना हुआ है। प्रत्येक राज्य में हजारों व लाखों की संख्या में बोगस सदस्य बनाये गये हैं और आरोप प्रत्यारोपों की झड़ी लग जाने के कारण कांग्रेस के चुनाव ही कठिन बन गये हैं।

गोआ के प्रश्न को लेकर महाराष्ट्र व मैसूर में नया संघर्ष छिड़ गया है। १० वर्ष तक गोआ की स्थिति में परिवर्तन न करने की नेहरूजी की घोषणा ताक में रख दी गई है और जल्दी ही पुनर्विचार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके इस प्रश्न का निर्णय करने का विचार किया जा रहा है। महाराष्ट्र की धमकी का जवाब मैसूर दे रहा है।

इन सब घटनाओं का प्रभाव देश की आर्थिक समस्याओं पर पड़ रहा है। एक ओर अन्न की दुर्लभता से महंगाई सुरसा के वदन की तरह बढ़ रही है। दूसरी ओर आयात व निर्यात का सन्तुलन ज्यादा बिगड़ता जा रहा है और परिणामस्वरूप विदेशी मुद्रा का संकट बहुत गंभीर हो गया है। रिजर्व बैंक के पास विदेशी मुद्रा का कोश गिरकर ७७ करोड़ रु० रह गया है।

इन विषम स्थितियों के कारण एक ओर १० लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में राशन जारी करने का निश्चय किया गया है, जो बाद में ३ लाख व १ लाख की जनसंख्या के नगरों पर भी लागू किया जायगा और दूसरी ओर चौथी पंचवर्षीय योजना को एक वर्ष तक स्थगित रखने या सीमित साधनों के अनुसार उसका आकार छोटा करने के पक्ष में बहुत बल के साथ प्रचार किया जाने लगा है। यद्यपि योजना आयोग ने अपनी पूंछ का बाल नीचा न करते हुए अब भी चौथी योजना में व्यय की राशि २१५ अरब रु० निर्धारित की है, परन्तु स्थिति और साधनों को देखते हुए इसका भी निर्वाह कठिन प्रतीत होता है। योजना के बहुत उदार अनुमानों के अनुसार भी फिलहाल २०९.५ अरब रु० के साधन ही उपलब्ध हैं। इन साधनों के द्वारा भी यह राशि प्राप्त करना बहुत कठिन दीखता है। वित्त मंत्री तो १८ अरब रु० से बड़ी योजना का विरोध करते रहे। संकट को देखते हुए ही संसद के वर्तमान अधिवेशन में उन्होंने अचानक १६७ करोड़ रु० के नये कर लगाने का पूरक बजट पेश कर दिया है।

योजना आयोग सब राज्यों पर अपनी योजना में कमी करने व आय के साधन बढ़ाने के लिए बल दे रहा है, किन्तु वे अपनी असमर्थता प्रकट कर रहे हैं।

× × ×

ये कुछ समाचार हैं, जिनकी ओर हम 'सम्पदा' के पाठकों के द्वारा समस्त देशवासियों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने चौथी पंचवर्षीय योजना के प्रसंग में कहा है कि "हमारे शत्रु हमें अपने विकास के पथ से विचलित करना चाहते हैं, किन्तु हम जनता का जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए अपने आर्थिक विकास के कार्यक्रमों को जारी रखेंगे। हमें लोगों में देशभक्ति की भावना का उद्रेक करना है। देश के नये समाज की स्थापना के प्रति हमने जागरूकता लानी है तथा उन्हें विकास के काम में लगाना है। हमें अपने लक्ष्य की ओर मजबूती से बढ़ना है।"

देश में बढ़ती हुई महंगाई के क्रूर अभिशाप से प्रधानमंत्री भली भांति परिचित हैं। इसीलिए उन्होंने चौथी योजना में घाटे की अर्थ-व्यवस्था न रखकर बचत के आधार पर अतिरिक्त विनियोग करने की घोषणा की है। इसके लिए सम्पन्न लोगों से कर भार ग्रहण करने की अपील की गई है।

× × ×

किन्तु प्रश्न यह है कि अगस्त के पहले पखवाड़े में घटित उक्त समाचारों की पृष्ठ भूमि में क्या यह आशावाद कोई मूर्त रूप भी धारण कर सकता है या नहीं। हमें सन्देह है कि जब तक हम अपने वर्ग, भाषा, राज्य, दल, जाति या श्रेणी के भेदभावों को भूलकर अपनी मातृभूमि के सर्वांगीण और अखण्ड रूप को आस्था और निष्ठा के साथ अपने हृदय में धारण नहीं करते, तब तक हम राष्ट्र की न राजनीतिक समस्याओं को हल कर सकते हैं और न आर्थिक समस्याओं का समाधान करके प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत के योग्यतम व सफलतम शासक सरदार पटेल

संयुक्त राजस्थान का निर्माण सरदार पटेल का चिर-प्रतीक्षित स्वप्न था, जो उनकी अपूर्व कुशलता, दूरदर्शिता और राजनीतिज्ञता के कारण उनके जीवन में ही साकार हो गया। इस तरह राजस्थान की सर्वांगीण, आर्थिक व सामाजिक उन्नति के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया। वस्तुतः आज की उन्नति का सबसे अधिक श्रेय यशस्वी सरदार पटेल को ही दिया जाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का दाहिना हाथ : राजस्थान

श्री सम्पूर्णानन्द, राज्यपाल राजस्थान

नवीन होते हुए भी राजस्थान शेष भारत के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर आगे बढ़ रहा है। हमें अभी काफी मंजिल तय करनी है। फिर भी कृषि, उद्योग, जन-स्वास्थ्य एवं सिंचाई के क्षेत्रों में हुई प्रगति राष्ट्रीय माप-दण्डों के अनुसार काफी संतोषजनक रही है। शिक्षा के क्षेत्र में भी हम समस्त पिछली कमियों को ऐसी गति से दूर करने का यत्न कर रहे हैं कि भविष्य के लिए पर्याप्त आशा बंधती है। प्रति व्यक्ति आय चाहे काफी ऊंची न रही हो, किन्तु वह राष्ट्रीय औसत के साथ रही है। हमें भारी सैनिक व्यय करना पड़ रहा है और यह व्यय बराबर बढ़ रहा है। भारत का एक अंग होने के नाते राजस्थान को भी इसमें अपनी जिम्मेदारी निभानी है। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान से लगी सैकड़ों मील लम्बी हमारी सीमा है। सीमा की रक्षा का अर्थ है भारी व्यय। कच्छ व काश्मीर की हाल ही की घटनाओं ने हमारे साधनों पर भारी बोझ डाला है। फिर सुरक्षा की ओर ध्यान देने का अर्थ होता है अन्य कार्यों की ओर से ध्यान हटाना। इससे उन बाधाओं का थोड़ा भान होगा जो हमारे सामने आ रही हैं। एक दूसरे प्रकार की कठिनाई जिसका हमें बराबर सामना करना पड़ रहा है, अनाज, चारे और पानी की कमी है, जो बहुत अर्सा नहीं हुआ, राज्य के कुछ भागों में व्याप्त थी। इस सबके बावजूद पर्याप्त प्रगति हुई है।

कुल मिलाकर प्रकृति राजस्थान के प्रति बड़ी उदार रही है। देश की खनिज सम्पदा का काफी ऊंचा प्रतिशत इस राज्य में उपलब्ध है। हमारे वनों में हमारे पास उपयोगी वस्तुओं का एक प्रायः अविकसित भंडार है, जो देश में तो अनेक प्रकार से काम आती ही है, वैसे ही, अथवा तैयार करने के बाद विदेशी मुद्रा भी कमा सकती है। यहां की भूमि काफी उपजाऊ है जो खाद्यान्न एवं कपास की उपज के लिए उपयुक्त है और भारी संख्या में ऊन उत्पादक पशुओं का पालन पोषण करा सकती है। ऐसा लग सकता है कि पानी के मामले में प्रकृति हमारे प्रति उदार नहीं रही है, किन्तु हम जानते हैं कि यह कठिनाई दूर करने के लिए भी प्रयत्न किये जा सकते हैं और किये जा रहे हैं, जिससे हम निकट भविष्य में ही अपनी आवश्यकताओं के लिए काफी पानी और बिजली प्राप्त कर सकेंगे। प्राकृतिक साधनों के विकास से राजस्थान भारतीय संघ की अत्यधिक समृद्ध इकाइयों में से एक बन जाना चाहिए।

राजस्थान को भारत का दाहिना हाथ कहा जा सकता है। यहां के लोग सार्वजनिक हित के लिए कठोर परिश्रम, समाज सेवा और त्याग की परम्पराओं में पले हैं। राजस्थान की सेवा का अर्थ भारत की सेवा और वस्तुतः मानवता की सेवा है।

# राजस्थान : गतिशील राज्य

श्री पदमपत सिंहानिया, कानपुर

आज से कुछ वर्ष पूर्व राजस्थान की गणना देश के पिछड़े प्रान्तों में थी, लेकिन स्वतन्त्रता के बाद यहां के वासियों ने तथा सरकार ने जिस लगन और निष्ठा से सर्वांगीण उन्नति की है, उसने यहां का नकशा ही बदल दिया है। आज राजस्थान एक कर्मशील, क्रियात्मक एवं गति शील प्रान्त बन गया है।

इस राज्य का नेतृत्व एक जागरूक मुख्य मंत्री के हाथ में है। यह उनकी निष्ठा और प्रेम है कि प्रान्त में नये-नये उद्योग और कारखाने पनपते जा रहे हैं। औद्योगिक विकास को गति देने के लिए जिस नीति की घोषणा की गई है, उसमें उद्योग के लिए भूमि और बिजली में रियायतें दी गई हैं। ऐसे ही प्रोत्साहन और सहयोग के बल पर प्रान्त में एक औद्योगिक क्रांति की नींव डाली गई है और उसमें दिन प्रतिदिन सफलता मिलती जा रही है। है। वह समय दूर नहीं है जब राजस्थान अन्य प्रान्तों के मुकाबले में अधिक प्रगतिशील कहलायेगा। आज यहां के रहने वालों का जीवन-स्तर ऊंचा उठ रहा है, उनमें आत्म विश्वास जागृत हो गया है तथा प्रान्त में खुशहाली नजर आ रही है। सामान्य नागरिकों को अधिक सुविधाएं, साधन तथा आगे बढ़ने के अवसर मिले हैं। नये उत्साह-उल्लास और उमंग से भरा जीवन जन-जीवन में व्याप्त होकर राज्य के सर्वांगीण विकास में प्रवृत्त हो रहा है।

मैं प्रांत की उन्नति की कामना करता हूं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की आर्थिक समस्याएं और उनका समाधान

श्री हरिश्चन्द्र माथुर, संसद सदस्य

**राजस्थान की आर्थिक समस्याओं पर व्यापक और गम्भीर अध्ययन चिन्तन तथा उनके समाधान के लिए प्रयत्नशील अनुभवी विचारकों में श्री हरिश्चन्द्र माथुर का नाम प्रथम कोटि में गिना जा सकता है। उनका यह लेख राजस्थान की समस्याओं पर सुन्दर प्रकाश डालेगा।**

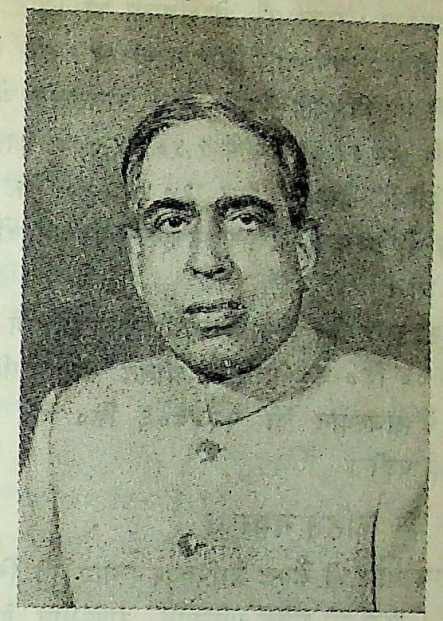

लेखक

## पिछड़ा हुआ राज्य

राजस्थान राज्य आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। इसके लिए अधिक प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। निम्नलिखित दो तीन अंक ही यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त होंगे :—

१-राजस्थान की जनसंख्या कुल भारत की ४.४ प्रतिशत है परन्तु राजस्थान के उद्योग देश के कुल उद्योग का १.६७ प्रतिशत हैं और यह रोजगार की दृष्टि से राजस्थान में कुल देश का १.२ प्रतिशत है।

२-राजस्थान में कारखानों में काम करने वाले प्रति व्यक्ति की औसत आय १४२६ रु० है, जबकि समस्त भारत में कारखानों के श्रमिक की औसत आय २५८६ रु० है।

१९६१-६२ में भारत के समस्त उद्योगों की, जो 'फैक्टरी एक्ट' के अन्तर्गत आते हैं, जांच पड़ताल की गई थी। इसके अनुसार कारखानों ने विभिन्न राज्यों ने जितना उपार्जन किया, उसमें राजस्थान का भाग केवल १.२ प्रतिशत है, जबकि अन्य कुछ राज्यों का प्रतिशत निम्नलिखित है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| बम्बई | २८.६ | पश्चिमी बंगाल | २२.५ |
| गुजरात | ८.६ | मद्रास | ८.२ |
| बिहार | ७.९ | उत्तरप्रदेश | ५.८ |
| मैसूर | ३.९ | आंध्रप्रदेश | २.५ |
| पंजाब | २.५ | केरल | २.४ |
| मध्यप्रदेश | १.९ | आसाम | १.८ |
| दिल्ली | १.५ | राजस्थान | १.२ |

एक दूसरी सूची के अनुसार कृषि उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान बहुत पिछड़ा हुआ है।

प्रति एकड़ कृषि उत्पादन का मूल्य (रुपयों में)

| | मूल्य (रुपयों में) | सूचकांक (समस्त राज्य=१००) |
|---|---|---|
| केरल | ४४५.४० | २७७.३ |
| पश्चिमी बंगाल | ३१३.२१ | १९५.० |
| उत्तरप्रदेश | १६७.०८ | १०४.० |
| दिल्ली | १६४.७३ | १०२.५ |
| पंजाब | १५५.५५ | ९६.८ |
| महाराष्ट्र | १३२.०८ | ८२.२ |
| मध्यप्रदेश | १०६.१० | ६६.० |
| राजस्थान | ७१.३४ | ४४.४ |

राजस्थान की वर्तमान आर्थिक समस्याओं का मुख्य कारण है कृषि और उद्योग दोनों दृष्टियों से राजस्थान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पिछड़ापन। राजस्थान के क्षेत्रफल को देखते हुए न सिंचाई की पूर्ण व्यवस्था है और न परिवहन और बिजली आदि की सन्तोषजनक स्थिति है। राजस्थान में बोया हुआ कृषि क्षेत्र १९६१-६२ में १,५०,४५,००० हैक्टर था, किन्तु सिंचित क्षेत्रफल कुल १७,५२,००० हेक्टर था, इसमें से भी केवल ४ लाख एकड़ हेक्टर बड़ी नहरों द्वारा सिंचित था।

इसी तरह विद्युत-उत्पादन भी राजस्थान में १९६३ में ९६००० कि० घ० मासिक औसत था। सीमावर्ती राज्यों से राजस्थान को २२४८०६ कि० घ० बिजली खरीदनी पड़ी।

## पानी की कठिन समस्या

राजस्थान की केवल आर्थिक समस्याएं ही चिन्तनीय नहीं हैं। अन्य भी अनेक समस्याएं राजस्थान के सामने प्रमुखरूप से उल्लेखनीय हैं। जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की दृष्टि से भी राजस्थान बहुत पिछड़ा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के १७ वर्ष के पश्चात् भी आज राजस्थान की जनता के एक बड़े भाग को—२६ जिलों में से १७ जिलों में पीने का पानी सुलभ नहीं है इसलिए राजस्थान की प्रमुख समस्या पानी की समस्या है। जब पीने को ही पानी न मिले, तब सिंचाई के लिए पानी की आशा करना शायद उपहासास्पद होगा, जैसलमेर जिले में औसतन ३ से ८ इंच तक और बीकानेर जिले में औसतन ८ से १२ इंच तक वर्षा होती है। भारत के उत्तर-पश्चिमी रेगिस्तानी इलाके में राजस्थान के अनेक जिले जोधपुर, जैसलमेर, सीकर, श्री गंगानगर और बीकानेर आदि जिले भी आते हैं। इसलिए राजस्थान की पहली और प्रमुख समस्या पीने और सिंचाई के पानी की है। यदि हम छोटी-छोटी सिंचाइयों की व्यवस्थाओं के द्वारा खेती की सिंचाई कर सकें, तो मेरी मान्यता यह है कि राजस्थान का ५ साल में ही काया कल्प हो सकता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि अब राजस्थान और केन्द्र दोनों ही सरकारों ने इस विषय में ध्यान देना शुरू किया है। कुछ वर्ष पूर्व राजस्थान की सरकार ने एक कमेटी मेरी अध्यक्षता में नियुक्त की थी। उसकी सिफारिशों के आधार पर केन्द्रीय सरकार ने भी जल उपलब्धि की जांच के लिए एक कमेटी बनायी थी। अब राजस्थान सरकार ने देहातों में जल उपलब्धि की व्यवस्था के लिए एक नया बोर्ड बनाया है, जिसकी अध्यक्षता का भार भी मुझे सौंपा गया है। इस बोर्ड को देहातों में पानी की व्यवस्था के लिए एक करोड़ रु. सौंपे जा रहे हैं। पानी यथास्थान उपलब्ध हो, इसके लिए जिन योजनाओं पर अमल हो रहा है, वे कुएं नहरें, बिजली के कुएं और सुदूर स्थानों से पाइप की व्यवस्था के रूप में गिनायी जा सकती हैं। पिछले दिनों राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। इसे दूर करने के लिए केन्द्र ने दो करोड़ रुपये का अनुदान राज्य को दिया है। १९६४ के मध्य तक ७५ ट्यूब-वैल लगाए जा चुके हैं और शेष ७५ आगामी वर्ष लगाने की व्यवस्था है।

## विद्युतीकरण

राजस्थान के आर्थिक विकास के लिए राज्य का विद्युतीकरण अनिवार्य है। बिजली के तीन लाभ मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं—

१-किसी देहात या कस्बे में बिजली लगने से वहां का सामाजिक और मानसिक वातावरण ही बदल जाता है। गांवों के मार्ग और घर ही प्रकाश से प्रदीप्त नहीं होने लगते, लोगों के दिमाग भी एक नई रोशनी से जगमगा उठते हैं और वे पुरानी रुढ़िवादिता को छोड़कर नयी विचार-दिशा से सोचने भी लगते हैं। इस तरह बिजली बाहरी और अन्दरूनी दोनों अन्धकार दूर करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायक सिद्ध होती है।

२-बिजली देहातों में बीसियों किस्म के नये उद्योगों की स्थापना में बहुत सहायक सिद्ध होती है। सरकार अब राजस्थान में अनेक उद्योग पुरियां स्थापित करने जा रही है। इनके विकास में बिजली बहुत सहायक सिद्ध होगी, यह निश्चित है।

३-बिजली राजस्थान की कठिनतम समस्या पानी के अभाव को भी हल करेगी। ट्यूब-वैलों का पानी बिजली के द्वारा ही नागरिकों और भूमि दोनों की प्यास बुझाएगा। मेरी राय यह है कि जिस गांव में १५-२० कुएं भी बिजली लेने को तैयार हों, वहां बिजली अवश्य पहुंचानी चाहिए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास में २०,००० गांवों में बिजली लगाई जा चुकी है और प्रति वर्ष १,००० गांवों में बिजली लगाने का कार्यक्रम चल रहा है, जबकि राजस्थान में तीसरी योजना के समाप्त होने तक भी ५०० से अधिक गांवों में बिजली नहीं पहुँच पाएगी । बिजली की दृष्टि से अन्य राज्यों की तुलना में राजस्थान कितना पिछड़ा हुआ है, यह नीचे की तालिका से मालूम होगा—

## गांवों और कस्बों में विद्युत

| राज्य | दूसरी पंच वर्षीय योजना के अंत तक | तीसरी योजना का लक्ष्य | तीसरी योजना के प्रथम दो वर्षों (३१ मार्च ६३ तक) |
|---|---|---|---|
| १-आन्ध्रप्रदेश | २१२५ | २००० | ७१२ |
| २-बिहार | १८५० | २००० | ६५० |
| ३-गुजरात | ७९७ | ८०० | ३०२ |
| ४-केरल | १५०८ | १००० | २३६ |
| ५-मध्यप्रदेश | ४३४ | १००० | १६७ |
| ६-मद्रास | ५९६१ | ५५०० | १७४८ |
| ७-राजस्थान | १४० | ३०० | ११७ |
| ८-उत्तरप्रदेश | ४५०० | २००० | ६४० |
| ९-केन्द्रीय क्षेत्र | ३०० | ४०० | ४५९ |
| योग | २२,९८५ | २०,००० | ७,८६६ |

जब मद्रास में २०,००० गांवों में बिजली पहुँच चुकी है, और प्रति वर्ष एक हजार नए गांवों में बिजली लग रही है, तब राजस्थान में तीसरी योजना खत्म होने तक ५०० गांवों में भी बिजली नहीं पहुँचेगी । यह बहुत असन्तोष-जनक अवस्था है ।

राजस्थान सरकार विभिन्न केन्द्रों में उद्योगपुरियां बना रही है । तीसरी योजना के अन्तर्गत कार्यक्रम के अनुसार प्रत्येक जिले में एक-एक उद्योगपुरी स्थापित हो जानी चाहिए । पाली और सुमेरपुर में सरकार की ओर से दो उद्योगपुरियों की स्थापना हो भी चुकी है । फालना और रानी में भी दो उद्योगपुरियां स्थापित हो चुकी हैं । फालना तीन हजार की छोटी सी आबादी का कस्बा है लेकिन इसकी उद्योग पुरी में १८३ छोटे-छोटे कारखाने चल रहे हैं । यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है, कि गांवों और कस्बों में बिजली आ जाने से किस तरह उद्योगों का विकास होता है ।

## आर्थिक विकास की ओर

वस्तुतः राजस्थान अत्यन्त तीव्रता के साथ सरकारी और गैर सरकारी दोनों क्षेत्रों में अपना आर्थिक विकास


इण्डियन टूल मैन्युफैक्चरिंग लिमिटेड

१०१ सायन रोड, सायन, बम्बई-२२

विभिन्न उत्पादनों के लिए आवश्यक

औजारों के निर्माता




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में तत्पर हैं। राजस्थान के प्रतिभाशाली अध्यवसायी उद्योगपति जहां अब अन्य राज्यों के साथ-साथ स्वयं अपने राज्य में अध्यवसाय खोलने को उत्सुक हैं, वहां सामान्य जनता भी अधिक से अधिक कर देकर राजस्थान की उन्नति में योग दान दे रही है। इसका ज्वलन्त प्रमाण यह है कि राजस्थान में प्रति व्यक्ति कराधान उतना ही है, जितना समस्त भारत में औसतन पड़ता है। इसके विपरीत कुछ राज्यों में कर बहुत कम लगाए जाते हैं, जैसा कि निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है :—

## प्रति व्यक्ति कर

| | |
|---|---|
| कुल भारत का औसत | १२.२ रु. |
| राजस्थान | १२.२ ,, |
| मध्यप्रदेश | ११.१ ,, |
| उत्तरप्रदेश | ८.६ ,, |
| उड़ीसा | ७.४ ,, |
| बिहार | ७.७ ,, |

राजस्थान कितनी उत्सुकता और गम्भीरता से आर्थिक विकास में दत्त चित्त है, यह एक दूसरी तालिका से भी स्पष्ट हो जायगा। दूसरी पंचवर्षीय योजना में राजस्थान के लिए ६ करोड़ रुपये के नये कर लगाने का लक्ष्य रखा गया था। परन्तु राज्य सरकार ने १४ करोड़ रुपये के नये कर लगाये। यदि हम अन्य राज्यों से तुलना करें तो राजस्थान सरकार की सफलता बहुत स्पष्ट हो जाती है—

| राज्य | लक्ष्य | प्राप्त सफलता करोड़ रुपयों में |
|---|---|---|
| बिहार | २७ | १५.४ |
| मध्यप्रदेश | २३ | १३.६ |
| उड़ीसा | ८ | ४.२ |
| उत्तप्रदेश | ४६ | ३२ |
| पंजाब | ३० | १६ |
| **राजस्थान** | **६** | **१४** |

तीसरी पंचवर्षीय योजना में भी राजस्थान इसी तरह अपने साधनों का संग्रह करने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्नशील है। इस योजना के प्रथम दो वर्षों में विभिन्न राज्यों ने कितनी प्रगति की, यह निम्नलिखित तालिका से हम जान सकते हैं :—

(करोड़ों रुपयों में)

| | लक्ष्य | प्राप्त सफलता |
|---|---|---|
| राजस्थान | ३२ | १५.२ |
| उत्तरप्रदेश | १०६ | ७३ |
| उड़ीसा | २३ | २४ |
| मध्यप्रदेश | ४८ | २१ |
| बिहार | ५० | ३.८ |

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि राजस्थान सरकार और राज्य की जनता दोनों राज्य की उन्नति के लिए बहुत प्रयत्नशील हैं। फिर भी अभी अन्य राज्यों के समकक्ष होने के लिए हमें बहुत अधिक उन्नति करनी है। तीसरी पंचवर्षीय योजना के अनुसार कुल राज्यों में केन्द्र और राज्यों की ओर से १३३० करोड़ रुपये के सार्वजनिक उद्योग खोलने हैं। राजस्थान में पहले तीन वर्षों में इन पर केवल ८० लाख रुपया व्यय होने की सम्भावना है जबकि बिहार मध्यप्रदेश और उड़ीसा में १०५.० करोड़ रुपया, १२३.८ करोड़ रुपये, ८५.५ करोड़ रुपये क्रमशः औद्योगिक विकास पर इन तीन वर्षों में व्यय होने की सम्भावना है। इसका अर्थ यह है कि राजस्थान अभी केंद्र की ओर से बहुत उपेक्षित राज्य है।

## क्या-क्या करना है ?

संक्षेप से राजस्थान को आज निम्नलिखित दिशाओं में अपना विकास करना है।

१-जीवन धारण के लिए पीने का पानी और सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था सबसे पहली आवश्यकता है। इसलिए तालाबों, कुओं, नहरों के निर्माण तथा जहां यह कठिन हो वहां दूर-दूर से नल लगाकर पानी पहुँचाने की व्यवस्था की ओर हमें सबसे अधिक ध्यान देना है।

२-दूसरी आवश्यकता खेती की सिंचाई की है। चम्बल नहर और राजस्थान नहर यद्यपि बहुत उपयोगी योजनाएं हैं, तथापि इनसे खेती की सिंचाई की समस्या हल नहीं होगी। हमें छोटी सिंचाई योजनाओं पर विशेष बल देना है।

३-राजस्थान यातायात की व्यवस्था की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। हजारों गांव किसी भी सड़क से सम्बद्ध नहीं हैं और बहुत सी सड़कें पक्की नहीं हैं। औद्योगिक और आर्थिक विकास के लिए सड़कों का विस्तार अत्यन्त आवश्यक है।

४-विद्युतीकरण भी राजस्थान की आर्थिक और औद्योगिक उन्नति के लिए अनिवार्य है। देहातों में पहुँची हुई बिजली किसानों को भी बहुत अधिक लाभकारी होगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
76396

# सामन्तवाद से समाजवाद की ओर

श्री मथुरादास माथुर, योजना मंत्री, राजस्थान

**राजस्थान सामन्तवाद का सुदृढ़ दुर्ग रहा है। वहां भी भारी क्रान्ति हो रही है, सामन्तवादी प्रथाएं टूट रही हैं; सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो रहा है; नई चेतना पाकर किसान व सामान्य नागरिक अधिक स्वस्थ और सुखी हो रहा है। इसका सरल और संक्षिप्त परिचय राजस्थान के योजना मंत्री श्री मथुरादास माथुर के शब्दों में पढ़िये।**

श्री मथुरादास माथुर

हमने एक मंजिल निश्चित की है वह है—समाजवाद, जिस तक पहुंचने के लिए हमने लोकतन्त्र का मार्ग स्वीकार किया है। शान्तिपूर्ण तरीकों से हमने आजादी प्राप्त की। शांतिपूर्ण तरीकों से ही हमने देशी रियासतों में सामान्ती शासन को खत्म किया और इसी रास्ते पर चलकर हम देश में समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं। यह हमारी राष्ट्रीय परम्पराओं के अनुकूल है।

संक्षेप में समाजवाद का अर्थ है समानता। हमने किसी जुली अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त को स्वीकार किया है जिसका अर्थ यह है कि सार्वजनिक एवं निजी दोनों क्षेत्रों में राष्ट्रीय आय बढ़ाने के प्रयत्न होने चाहिए। परन्तु हम यह मानते हैं कि समाजवाद की स्थापना के लिए प्रमुख और अधिकाधिक उत्पादन साधनों का राज्य के हाथ में या उसके द्वारा संचालन जरूरी है। यदि यह नहीं हुआ तो जिस पुरानी व्यवस्था को हम बदलना चाहते हैं वह ज्यों की त्यों बनी रहेगी और फूलती फलती रहेगी।

## राजस्थान की स्थिति

स्वाधीनता प्राप्ति से पूर्व जब देश की ही बुरी हालत थी, तब राजस्थान की, जो सदियों से सामन्ती शासन की गुलामी में जकड़ा हुआ था, स्थिति और भी बदतर थी। असल में देशी राज्य, विदेशी और सामन्ती दोहरी चक्की में पिसे जा रहे थे। राजस्थान देश के अन्य प्रान्तों के मुकाबले में अत्यन्त पिछड़ा हुआ माना जाता था। सारे राज्य में सामन्ती शासन के कारण गरीबी, अज्ञान और जड़ता का साम्राज्य था।

सामन्ती शासन व्यवस्था का स्मरण करते ही हमें उस मीनार का ध्यान आता है, जिसके सबसे ऊंचे शिखर पर राजा बैठा होता था, उसके नीचे जागीरदार, जमींदार, उसके नीचे फौज, पुलिस और व्यापारी और जिसकी जड़ में किसान और साधारण नागरिक होते थे। सबसे निचले हिस्से वाले किसान ही इसके आधार और स्तम्भ थे। सामन्ती शासन व्यवस्था में सामन्तों को सब अधिकार मिले हुए थे और किसानों के ऊपर सिर्फ कर्त्तव्यों का बोझ था। समाज एक तरफ शोषकों, उनकी मदद करने वाले व्यापारियों और फौज, पुलिस और दूसरी तरफ शोषित किसानों में बंटा हुआ था।

शोषक किसानों से मनमाना लगान वसूल करते थे, बैठ-बैगार और लाग-बागों के रूप में किसान जितना अपनी मेहनत से पैदा करता था, उसका अधिकांश भाग हड़प लेते थे। किसान चुप था, क्योंकि बेदखली की तलवार हमेशा उसके सिर पर लटकती रहती थी। किसान के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर महाजन का कर्जा इतना रहता था कि उससे वह अपने को कभी मुक्त नहीं कर पा सकता था। वह हमेशा कर्ज से दबा रहता था।

## भूमि सुधारों का सूत्रपात

जब राजस्थान का पहले पहल निर्माण हुआ, तब राज्य की अर्थ व्यवस्था एकदम डांवाडोल थी। वह कृषि पर अधिक निर्भर है, अतः सबसे पहिले भूमि सुधारों की दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम उठाए गये। परिणाम स्वरूप जागीरदारी प्रथा समाप्त की गई और जमीन जोतने वाले को सौंप दी गई। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम १९५५ की गणना भारत के श्रेष्ठतम और प्रगतिशील काश्तकारी अधिनियमों में की जा सकती है। राज्य में अब ४ प्रकार के काश्तकार हैं—खातेदार काश्तकार, मालिक, खुदकाश्त खातेदार और गैर खातेदार। अधिक लगान वसूल करने और बलात श्रम पर पाबन्दी लगाई जा चुकी है। जोतों की चकबन्दी करने और खेतों के छोटे-छोटे टुकड़े होने से रोकने के लिए अधिनियम बनाये गये हैं। आज यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि भूमि सुधारों के लागू किए जाने के फलस्वरूप गांवों में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। किसान को भूमि का मालिक बना देने से वह आज अपनी पूरी शक्ति से उत्पादन बढ़ाने में लगा है। इसका असर राज्य के निरन्तर बढ़ते कृषि उत्पादन और राज्य की आय से स्पष्ट है। १९६०-६१ में राज्य की आमदनी ६३६६१ लाख रुपये थी जो १९६१-६२ में ६८९२६ लाख रुपये हो गई। (ये आंकड़े वर्तमान मूल्यों १९६३-६४ पर आधारित है।)

कृषि उत्पादन के मार्ग में आनेवाली अड़चनों को व बिचौलियों को खत्म करके किसान को अधिकाधिक पैदावार बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। सामन्तवाद के दिनों में किसानों को कर्जदार बनाने की जिम्मेदारी सूदखोर महाजनों और पूंजीपतियों पर थी। आज सरकार किसानों को तकावी देती है, और रिजर्व बैंक कर्ज देता है। यह किसान को बिचौलियों से मुक्त कराकर उसके कार्य में मदद देने के लिए है। इससे उसकी माली हालत में सुधार हुआ है, और वह निरन्तर सुधरती जायगी। बीज के लिए, खाद के लिए, उत्पादन बढ़ाने के लिए तकावी दी जाती है। जागीरदारी खत्म होने के बाद किसानों की माली हालत सुधरी है।

## सहकारिता

यही नहीं। समाजवाद की तरफ बढ़ने के लिए सहकारिता का एक तरीका और हमने अपनाया है। बहुत सी सहकारी समितियां ऐसी हैं, जिनकी हैसियत ऐसी नहीं है कि वे पूंजी में हिस्सा बंटा सकें। अतः जिन सहकारी समितियों के पास पूंजी थोड़ी है और, इसकी वजह से ग्रामीण जनता उसका फायदा नहीं उठा सकती, ऐसी समितियों को रिजर्व बैंक से ५० प्रतिशत ऋण मिलने की व्यवस्था की गई है ताकि वे व्यापार कर सकें। १९५४-५५ में राज्य के जहां ६६२७ सहकारी समितियां थीं, उनकी सख्या अब २१,४९९ हो गई है। उनमें सदस्य संख्या २ लाख से बढ़कर साढ़े ग्यारह लाख तक पहुंच गई है। हिस्सा पूंजी भी ७२ लाख रुपये से बढ़कर ८ करोड़ रुपये हो गई है।

राज्य में अकाल की स्थिति है और भावों में बहुत तेजी का मुकाबला करने के लिए सरकार ने करोड़ों रुपये की लागत से निर्माण कार्य आरंभ किये हैं, जिससे लोगों को रोजगार मिले। राज्य में १५०० उपभोक्ता भण्डार खोले जा रहे हैं जिससे कि चीजों के भाव नीचे आ जायं। यह कदम केवल भावों को नीचे लाने का ही नहीं, बल्कि अन्ततः व्यापार को राज्य के हाथ में लेने की तरफ पहला कदम है। इन दूकानों को खोलने का अर्थ बिचौलियों को खत्म करना भी है, जो स्थिति का लाभ उठाकर मनमाना फायदा उठाते हैं। यह हमारी समाजवादी नीति है। सार्वजनिक निर्माण विभाग में मौजूदा ठेके की प्रणाली को खत्म किया जा रहा है। राज्य सरकार अपनी ओर से इमारतें, बांध, सड़कें आदि बनायेगी। माइनिंग की रायल्टी के लिए जो ठेके दिये जा रहे हैं, वह खत्म किये जायंगे। राज्य खुद रायल्टी वसूल करेगी। इन क्षेत्रों में बिचौलियों को खत्म करने का यह तरीका हमें समाजवाद की दिशा में ले जाने वाला है।

## सत्ता का विकेन्द्रीकरण

राज्य सरकार ने सत्ता का विकेन्द्रीकरण करके



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता को राज का कामकाज चलाने में भागीदार बनाया है। पंचायत, पंचायत समितियां और जिला परिषद् इस विकेन्द्रीकरण के प्रतीक हैं। सामन्ती शासन के दिनों में ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में जो जड़ता आ गई थी, उसके स्थान पर प्रगतिशील व्यवस्था स्थापित करने का यह ज्वलंत उदाहरण है।*

## सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार

किसी भी राज्य को समाजवाद की ओर ले जाने में सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। राजस्थान राज्य में पहली बार राज्य संचालित उद्योगों को चलाने के लिए एक अलग विभाग की स्थापना की गयी है। अभी राज्य द्वारा संचालित उद्योगों में मुख्य ये हैं: लिगनाइट, सोडियम सल्फेट, सोडियम क्लोराइड, पचपदरा, डीडवाना का नमक, गंगानगर की शक्कर का कारखाना, धौलपुर में हाड़े और माइनिंग के छोटे मोटे लाइम स्टोन, आदि। चाहे चार हजार तकुए वाले ऊन कारखाने की भी स्थापना की जा रही है।

इसके अलावा राज्य में रोडवेज कार्पोरेशन, होटल कार्पोरेशन, छोटे उद्योगों का कार्पोरेशन आदि की स्थापना से व्यक्तिगत मुनाफे को रोका जा सकेगा और राज्य की आमद में बढ़ोतरी होगी, जो अन्ततः जनता की सुविधा के लिए खर्च की जा सकेगी। इससे साफ जाहिर है कि हम सही दिशा की ओर बढ़ रहे हैं।

आर्थिक विकास के साथ समाजकल्याण की ओर भी हमें ध्यान देना है, ताकि अधिकाधिक जनता को लाभ मिल सके। सन् १९४९ में जब राजस्थान बना, तब सारे राज्य में शिक्षा पर ९२ लाख रुपये खर्च होते थे और अब इसी शिक्षा के मद में व्यय १२.८४ करोड़ रुपये तक पहुँच गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में कितना व्यापक विस्तार हुआ है इसका अन्दाजा एक इस बात से लगाया जा सकता है कि राजस्थान बनने से पहिले जितना बजट सारी सम्मिलित रियासतों को होता था, उतनी रकम आज केवल शिक्षा की मद में खर्च की जा रही है।

*इस सम्बन्ध में एक स्वतन्त्र लेख अन्यत्र पढिये।

राजस्थान स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में भी अखिल भारतीय स्तर से आगे १९५९ में बढ़ गया था। अस्पतालों और उनमें रोग शय्याओं की व्यवस्था के सम्बन्ध में जहाँ आबादी के हिसाब से भारत में २९ लाख के पीछे २९ अस्पताल थे, वहाँ राजस्थान में ३४ हो गये थे और इस आबादी के लिये रोगी शय्याओं की संख्या ३६० के मुकाबले ४०६ थी।

केवल चिकित्सा की मद में तीसरी योजना में ७ करोड़ ६७ लाख रुपया व्यय किया जायगा। जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में पीने के पानी की व्यवस्था के लिये शहरों के लिए ४.६ करोड़ रुपये और ग्रामीण जल प्रदाय योजनाओं पर २ करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे। लोगों के

> राजाओं के शासन की समाप्ति, सामंती का अन्त और समाजवादी निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ इतिहास के ये तीनों ही परिच्छेद एक ही पीढी लिखे, ऐसे अवसर कम ही आते हैं। राजस्थान में यह अवसर आया है। यह सौभाग्य भी है और गम्भीर चुनौती भी।

रहने के मकानों का निर्माण कार्य भी बड़े पैमाने पर हुआ है। संक्षेप में राज्य की तीसरी योजना में सामाजिक सेवाओं पर लगभग ४३ करोड़ रुपया व्यय किया जायगा, जो लगभग योजना के पूरे व्यय का १९ प्रतिशत होता है।

एक महत्वपूर्ण घोषणा की गई है, जिसके जरिये जिन आदमियों की उम्र ६५ वर्ष या इससे ज्यादा हो गई है, और जिनके न कोई रोजी का जरिया है और न कोई परवरिश करने वाला है, उन्हें २० रु० प्रतिमाह पेन्शन दी जायगी।

सामन्तवाद की खोखली अर्थ-व्यवस्था के स्थान पर एक गतिशील अर्थ व्यवस्था स्थापित करने की दृष्टि से राजस्थान वस्तुतः सक्रिय है। हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और अपने निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर उत्तरोत्तर बढ़ते जाएँगे। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान का वित्तीय विकास

डा० मालीराम

**राजस्थान वित्तीय दृष्टि से किस तरह विकास कर रहा है, उसकी आय के प्रमुख स्रोत क्या हैं, और भविष्य की उज्ज्वल सम्भावनाएं क्या हैं, इस सबका सुन्दर विवेचन इस लेख के विद्वान लेखक के, जो अर्थशास्त्र के योग्य अध्यापक हैं, शब्दों में पढ़िये।**

डा० मालीराम

राजस्थान भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल १,३२,१४७ वर्गमील और जनसंख्या २०१·५२ लाख है अर्थात १५२ व्यक्ति प्रति वर्गमील। राजस्थान खनिज सम्पदा की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर जस्ता, सीसा और पन्ने का तो एकाधिकार ही है किन्तु राज्य में देश के कुल जिप्सम उत्पादन का ८२%, घीया पत्थर का ६०%, एस्बस्तस का ७७%, कैलसाइट का ४२% और अभ्रक का २५%, उत्पादन होता है। किन्तु विकास की अपरिमित सम्भावनाओं के विपरीत राजस्थान देश के सबसे अल्पविकसित राज्यों में से है। प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्त में राज्य की शुद्ध आय ४५०·३० करोड़ रुपये और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्त में यह आय ५६२ करोड़ रुपये आंकी गई थी, जो राष्ट्रीय आय का केवल ४.३% थी। १९५५-५६ में प्रति-व्यक्ति आय २३७ रु० और १९५९-६० में २४६ रु० अनुमानित की गई थी, जो अखिल भारतीय औसत से क्रमशः १० और १२ प्रतिशत कम है। आय की इस दयनीय स्थिति का मुख्य कारण राजस्थान का अल्प-आर्थिक विकास एवं असंतुलित व अविकसित वित्त-व्यवस्था है।

राजस्थान की वित्त-व्यवस्था की समस्या राजस्थान के निर्माण के समय में ही पैदा हुई थी। जिन विभिन्न २३ रियासतों को मिलाकर राज्य का राजनैतिक पुर्नगठन किया गया था, वे अपने राजस्व और व्यय को संतुलित नहीं कर पाती थीं। सन् १९५० से ५६ तक की अवधि को राजस्थान के वित्तीय एकीकरण का काल कहा जा सकता है। इस काल की प्रमुख घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

**(१) संघीय वित्तीय एकीकरण :**—प्रादेशिक एकीकरण के साथ-साथ वित्तीय एकीकरण के सिद्धान्त निर्धारित करने के लिए सन् १९४८ में भारत सरकार द्वारा श्री टी. टी. कृष्णमाचारी की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। इसकी सिफारिशों के अनुसार राज्यों का वित्तीय एकीकरण १ अप्रैल १९५० से लागू किया गया। इस संघीय वित्तीय समझौते के अनुसार राजस्थान ने समस्त संघीय आय के साधन और उनकी व्यवस्था, जैसे रेल, तार, डाक, मुद्रा, टकसाल आदि तथा सुरक्षा विभाग भारत सरकार को हस्तांतरित कर दिये। यह भी निश्चय किया गया कि पांच वर्ष के अन्दर अन्तर्राज्य-जकात हटा दी जायगी और उसके स्थान पर बिक्री कर लागू कर दिया जायेगा। वित्तीय एकीकरण के कारण होने वाली राज्य की आय-हानि को भारत सरकार ने ५ वर्ष तक पूरा करने का आश्वासन दिया। आयकर का संग्रह भी संघ सरकार ही करेगी तथा उसका ५०% राज्यों को दे देगी। प्रारम्भ में राजस्थान की आयकर की दरें कम रखी गईं, जो पांच साल में बढ़ाकर केन्द्रीय दरों के बराबर कर दी गईं। राज्य के हिसाब के अंकेक्षण

(शेष पृष्ठ २३ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पं० नेहरू राजस्थान के प्रति अधिक प्रेम इसलिए रखते थे, कि उन्हें इसकी दोहरी पराधीनता की कल्पना थी और वे जानते थे कि स्वाधीनता प्राप्ति के समय हमें जो राजस्थान मिला, वह कितना पिछड़ा हुआ और अविकसित था। इसी प्रेम के कारण राजस्थान की विकास योजनाओं में विशेष रुचि लेते रहे और केन्द्र की ओर से अधिकाधिक सहायता दिलवाते रहे।

—सुखाड़िया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजस्थान के महामहिम राज्यपाल

**विद्वत्-शिरोमणि डा० सम्पूर्णानन्द**

विभिन्न कठिन समस्याओं पर आपका विचार-
पूर्ण सत्परामर्श पाते रहने के कारण
राजस्थान बहुत सौभाग्यशाली है।

राजस्थान के यशस्वी कुशल शासक

**मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया**

१०-११ वर्षों के स्थिर व कुशल शासन ने
राजस्थान की आर्थिक उन्नति को दृढ
आधारशिला प्रदान की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राजस्थान के दो गौरव :

राजस्थान में ग्रामोद्योगों के महान् प्रेरक

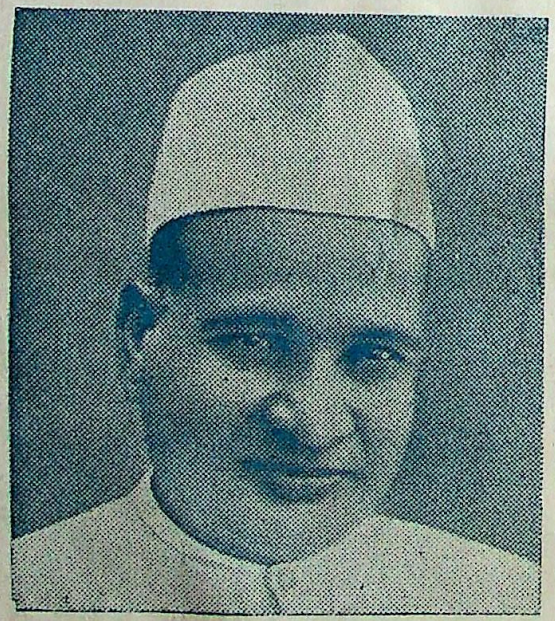

स्व० श्री जमनालाल बजाज

राजस्थान में आधुनिक उद्योगों के महान् पुरस्कर्ता

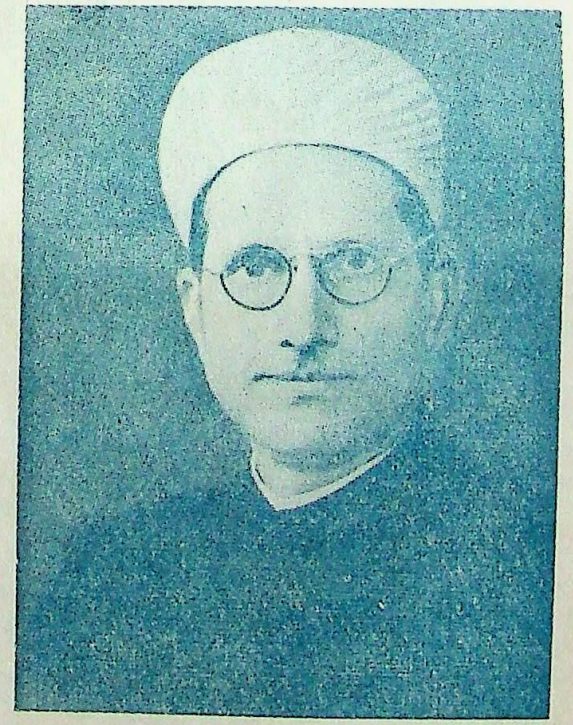

श्री घनश्यामदास बिड़ला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जीवन की सफलता ही आजादी है!

आजादी का मतलब सिर्फ एक राजनीतिक लक्ष्य को प्राप्त कर लेना ही नहीं है बल्कि उसका कहीं ज्यादा मतलब हमारे अपने जीवन से है। हम अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार कैसे बिताएं; कैसे हम अपने आप को गरीबी और निष्क्रियता के दलदल से ऊपर उठाएं।

देश को आगे बढ़ने के लिए नीति निदेशक-सिद्धान्तों को हमारे संविधान में एक पवित्र स्थान दिया गया है। और इन्हीं सिद्धान्तों का पालन करने के लिए ही हमने अपनी पंचवर्षीय योजनाओं में एक आदमी की दैनिक जीविका को अर्थ और विज्ञान का सम्बल प्रदान करने की कोशिश की है।

पिछली तीन योजनाओं में कृषि पैदावार खाद्यान्न और व्यावसायिक फसलों — दोनों का उत्पादन बढ़ा है। औद्योगिक उत्पादन तिगुना हुआ है, जबकि बिजली का उत्पादन पांच गुना हो गया है।

सभी स्तरों पर शिक्षा सुविधाओं का विस्तार हुआ है। प्राइमरी स्तर (६ से ११ वर्ष की आयु में) पर अब करीब ८० प्रतिशत बच्चे स्कूल जाते हैं जबकि १९५१ में यह संख्या केवल ४० प्रतिशत थी। अधिकाधिक स्वास्थ्य की देख-भाल और मलेरिया जैसी बीमारियों के विरुद्ध अभियानों के परिणामस्वरूप अब जीवन-आयु की सम्भावनाएं ३२ से बढ़ कर ५० वर्ष पहुंच गई हैं।

**योजना में ही समृद्धि है**

**इसी के लिए श्रम — इसी के लिए बचत कीजिए**

डीए ६५/२१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राजस्थान का वित्तीय विकास

( पृष्ठ १८ का शेष )

तथा जनगणना का सारा भार केन्द्र पर रखा गया। इस समझौते के अनुसार राज्य सरकार को भूतपूर्व राजाओं के निजी व्यय (Privy Purse) के लिए १२० लाख रु० पांच वर्षों में केन्द्र को देना निश्चय हुआ।

इस समझौते के बाद सन् १९५१ में समस्त राज्य में मोटर-गाड़ी टैक्स को एकसमता प्रदान की गई। सन् १९५२ में जागीर उन्मूलन के बाद जागीर क्षेत्रों में राजस्व बंदोबस्त की कार्यवाही चालू की गई और सन् १९५६ में 'राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम' पारित कर भूमि कृषि-मूल्यांकन के शुल्क की व्यवस्था की गई। संघीय वित्तीय एकीकरण समझौते के फलस्वरूप सन् १९५५-५६ में अन्तर्राज्य जकात, जो राजस्थान में मिलने वाली विभिन्न रियासतों में लागू थी और जिससे ४ करोड़ रु० प्रतिवर्ष आय होती थी, उठाई गई और उसके स्थान पर समानान्तर बिक्री कर लागू किया गया।

किन्तु वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के बावजूद भी अर्थ-व्यवस्था में कई गतिरोध पैदा हुए। योजनाकाल में गैर-विकास कार्यों पर व्यय अधिक बढ़ गया। तीसरी योजना-अवधि में जागीरदारों को मुआविजे और जागीर बौण्डों पर ब्याज के रूप में करीब १७.४० करोड़ रु० का भुगतान किये जाने का अनुमान था, किन्तु जागीरदारों की इस देय राशि में ४-५ करोड़ रु० की वृद्धि की सम्भावना की जा रही है। इसी प्रकार से १३.९ करोड़ रु० राज्य सरकार को दिये गये ऋणों की किश्तों के रूप में केन्द्र को लौटाने हैं। संक्षेप में राज्य के आय-व्यय की स्थिति की तुलनात्मक जानकारी निम्नलिखित तालिका से की जा सकती है—

(लाख रुपयों में)

| वर्ष | राजस्व | व्यय | (+) बचत घाटा (−) |
|---|---|---|---|
| १९५१-५२ | १६०६.१ | १७२३.७ | −११७.६ |
| १९५६-५७ | २३७५.३ | २७१८.५ | −३४३.२ |
| १९६१-६२ | ४६२०.८८ | ५२००.०९ | −५७९.२१ |
| १९६३-६४ संशोधित | ५८६०.०० | ५६८०.०० | +१८०.०० |
| ६४-६५ (अनुमानित) | ६९४०.०० | ६९८०.०० | − ४०.०० |
| | ७२२०.०० | ७२८०.०० | −६०.०० |

भारतीय संविधान के अनुसार राष्ट्रपति समय २ पर वित्त आयोग नियत करते हैं। अब तक तीन वित्त आयोग अपनी सिफारिशें दे चुके हैं और चौथा आयोग इस समय केन्द्र और राज्य के वित्तीय स्रोतों पर विचार कर रहा है। इनके अनुसार राजस्थान को केन्द्र से अधिकाधिक आय प्राप्त होती रही है। राजस्थान वित्त जांच समिति की स्थापना भी १९५७ में हुई थी। इसकी सिफारिशों के परिणामस्वरूप कराधान पद्धति में अनेक परिवर्तन किये गये। अनेक कर लगाये गये और अनेक करों में वृद्धि की गई। तीनों पंचवर्षीय योजनाओं में भी राज्य को अनुदान और ऋणों के रूप में सहायता मिली।

**केन्द्र से सहायक अनुदान :**—केन्द्र से प्राप्त अनुदानों में भी निरन्तर वृद्धि ही हुई है। सन् १९५१-५२ और ५९-६० के बीच इस अनुदान में ७ गुनी से भी अधिक वृद्धि हुई है। सन् १९५८-५९ में राजस्थान को ५.७ करोड़ रु० का केन्द्रीय अनुदान मिला तथा ६०-६१ में यह १०.६ करोड़ रु० हो गया। इस अनुदान की मात्रा ६१-६२ में ९.९ करोड़ रु०, ६२-६३ में ११.३ करोड़ रु० तथा ६३-६४ में १४.६ करोड़ रु० रही। ६४-६५ के बजट के अनुसार राजस्थान को केन्द्रीय अनुदान १३.७ करोड़ रु० मिल सकेगा।

इस अवधि में राज्य सरकार ने कर लगाकर भी अपने वित्तीय साधनों को बढ़ाने का प्रयत्न किया है।

## आय के मुख्य स्रोत

**वर्तमान में राजस्थान की आय के मुख्य स्रोत निम्न-लिखित हैं :—(१) राज्य द्वारा लगाये गये कर—(i) राजस्थान में भू-राजस्व व कृषि आयकर :**—राजस्थान में भू-राजस्व से होने वाली आमदनी गत वर्षों में काफी बढ़ी है। इसका मुख्य कारण मध्यस्थों का उन्मूलन अर्थात् जागीरदारी प्रथा का अन्त है। यहाँ पर राजस्व की आय १९५५-५६ में ५.०५ करोड़ रु० थी। १९६३-६४ के संशोधित अनुमानों तथा ६४-६५ के बजट अनुमानों के अनुसार इस राज्य में मालगुजारी की आय क्रमशः ८.३० करोड़ रु० तथा ८.८५ करोड़ रुपये है। यहाँ पर माल-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजारी का प्रति व्यक्ति भार ४.३८ रु० है जो असम को छोड़कर सब राज्यों से ऊँचा है। यहाँ पर कृषि आयकर १ अप्रैल १९५५ से लागू किया था और इससे कुछ आय भी होती थी, किन्तु जागीरदारी प्रथा की समाप्ति तथा भूमि पर सीमा निर्धारण के फलस्वरूप यह आय बहुत ही कम हो गई। फलस्वरूप राजस्थान ने कृषि आयकर को १ अप्रैल १९६० से हटा दिया।

(ii) **आबकारी कर** :—संविधान के अनुसार राज्यों को शराब, भांग, अफीम एवं अन्य नशीले पदार्थों पर आबकारी कर लगाने का अधिकार प्राप्त है। राजस्थान ने मद्य-निषेध लागू नहीं किया। आजकल इससे प्राप्त होने वाली आय ५.८० करोड़ रु० है। यहाँ पर आबकारी करों का प्रति व्यक्ति भार २.५८ रु० है, जो पंजाब व आन्ध्र-प्रदेश को छोड़कर सम्पूर्ण देश में सबसे ज्यादा है।

(iii) **बिक्री कर** :—राजस्थान ने १ जुलाई १९५५ से बिक्री कर शुरू किया। यह प्रारम्भिक समय में केवल २३९ लाख रु० था, किन्तु राज्य सरकार के विशेष प्रयत्नों के फलस्वरूप इसमें तृतीय योजनाकाल में अत्यधिक वृद्धि हुई है। १९६४-६५ के बजट में बिक्री कर से १०.२५ करोड़ रु० की आय का अनुमान लगाया गया है।

(iv) **मुद्रा व पंजीयन शुल्क** :—पिछले वर्षों में स्टाम्पों की बिक्री बढ़ने से इस मद की आय बढ़ी है। १९६४-६५ के बजट में सरकार ने इनमें १.६२ करोड़ रु० की आय का अनुमान किया है।

(v) **मोटर गाड़ियों पर कर तथा अन्य कर व शुल्क** :—मोटर गाड़ियां भी सरकारी आय का एक अच्छा साधन हैं। १९६४-६५ में इस कर से १.५० करोड़ रुपये की आय की सम्भावना है। मनोरंजन तथा अन्य दूसरे करों में ६४-६५ में करीब २.१० करोड़ रु० की आय का अनुमान लगाया गया।

**(२) प्रशासनिक सेवाओं से प्राप्त आय** : न्याय, पुलिस, जेलें, शिक्षा, विश्वविद्यालय, चिकित्सा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि, पशुपालन, सहकारिता, उद्योग और पूर्ति तथा अन्य आय जैसे लोकसेवा-परीक्षाओं की फीस, मजदूर-संघों की रजिस्ट्री की फीस, साझा कानून, बीमा कानून, कारखाना कानून के अधीन प्राप्त फीसें आदि से सरकार को समय-समय पर काफी आय प्राप्त होती रहती है। जनसंख्या की वृद्धि तथा लोगों के बढ़ते हुए उच्च-जीवन-स्तर के साथ-साथ इस मद की आय में भविष्य में अत्यधिक वृद्धि होने की सम्भावना है।

**(३) सरकारी उद्यम से आय** : (i) **वन एवं सिंचाई** लकड़ी तथा वनों की अन्य पैदावार की बिक्री आदि से राज्य को अच्छी आय प्राप्त होती है। वनों से ६२-६३ और ६३-६४ में ८-८ करोड़ रु० की आमदनी हुई थी तथा ६४-६५ में ९ करोड़ रु० की। इसी प्रकार सिंचाई, नगरों में जल-पूर्ति तथा पानी की बिक्री आदि से सरकार को आय प्राप्त होती है। इससे ६२-६३ तथा ६३-६४ में क्रमशः १.२ तथा २.३ करोड़ रु० की आय हुई थी तथा ६४-६५ के बजट में भी १.३ करोड़ रु० की आय का अनुमान था।

(ii) **सार्वजनिक निर्माण और बहुउद्देशीय योजनाएं** : सरकारी मकानों का किराया तथा उनकी बिक्री से प्राप्त आय तथा सड़कों आदि से प्राप्त आय में भी उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। ६४-६५ में इससे करीब ४२ लाख रु० प्राप्त होने की उम्मीद है। राजस्थान की बहु-उद्देशीय नदी योजनाओं, जिनमें भाखड़ा, चम्बल तथा राजस्थान नहर प्रमुख हैं, से राज्य को अत्यधिक आय प्राप्त होती है।

(iii) **स्टेट रोडवेज के राष्ट्रीयकरण** के कार्यक्रम से भी राज्य की आय में वृद्धि हुई है।

**चतुर्थ पंचवर्षीय योजना** : राजस्थान की चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के लिए २७६ करोड़ रु० का प्रारम्भिक अनुमान रखा गया है, जिसमें राजस्थान नहर, पी० एण्ड० जी० बांध तथा नहर क्षेत्र को बसाने पर व्यय होने वाले कुल १७५ करोड़ की राशि शामिल नहीं है। इसमें राज्य सरकार को लगभग $\frac{1}{3}$ भाग से अधिक अपने साधनों से जुटाना है। सरकार अपनी आय वृद्धि के लिए निम्नलिखित उपायों पर विचार कर सकती है :

**(१) भू-राजस्व की वृद्धि** : राजस्थान में आज कृषि में सिंचित क्षेत्र की अपेक्षा गैर-सिंचित क्षेत्रों पर कर भार अधिक है। विकास की आवश्यकताओं को देखते हुए अधिक धन एकत्रित करने के लिए सिंचाई वाले कृषि

(शेष पृष्ठ ६६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# HINDALCO ALUMINIUM

## FOR THE DEVELOPMENT OF INDUSTRIES

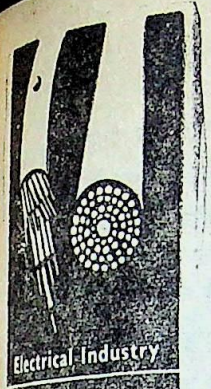


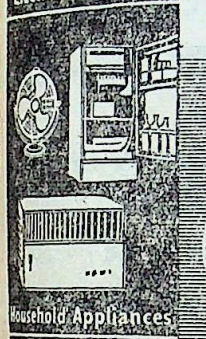

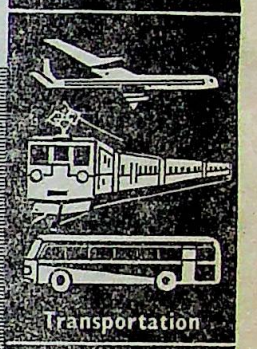


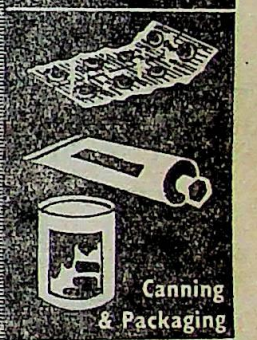

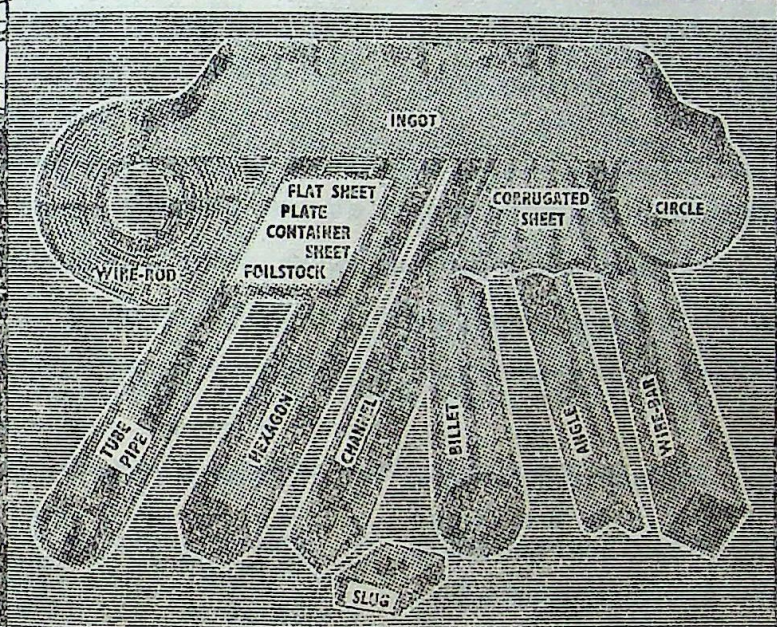


The Rs. 200 million Birla-Kaiser aluminium project at Renukoot, near Rihand, in U.P., has, since December 1962, attained and surpassed the initial target capacity of 20,000 tonnes per annum. While the Renukoot plant is already the biggest integrated aluminium manufacturing complex in India, Hindalco is forging ahead with its programme of rapid expansion, for raising the primary aluminium capacity to 60,000 tonnes per annum (and to provide fabrication facilities totalling 37,000 tonnes per annum), to help the country's fast growing industries in their march towards progress and prosperity.

## HINDUSTAN ALUMINIUM CORPORATION LTD.

***SALES & MARKETING OFFICES :***

**PRINCIPAL SALES & MARKETING OFFICE :** P. O. Renukoot, Dt. Mirzapur, U. P. (Phone : Pipri 79. Gram : HINDALCO)
**CALCUTTA & EASTERN ZONE :** 5, Clive Row, Calcutta-1. (Phones : 22-8616/8. Gram : HINDALCORP).
**BOMBAY & WESTERN ZONE :** (also, Regd. Office) Industry House, 159, Churchgate Reclamation, BOMBAY-1. (Phones : 24-5181/3. Gram : HINDULCOR).
**DELHI & NORTHERN ZONE :** D-57, 1st Floor, Defence Colony, New Delhi-3. (Gram : ALHINDCORP).
**MADRAS & SOUTHERN ZONE :** 10, Second Main Road, C. I. T. Colony, Madras-4. (Phone : 74470. Gram : HINDALCO)


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में प्रगतिशील भूमि-सुधार

राजस्थान का निर्माण २२ रियासतों के एकीकरण से हुआ था। इसकी सबसे पहली समस्या बिचौलियों, जागीरदारों, जमीदारों एवं अन्य भूमिधारियों के उन्मूलन द्वारा सामन्तवाद का अन्त तथा उनके चंगुल से कृषकों का उद्धार करना था। एक राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था दूसरे राज्य से भिन्न थी और इसी प्रकार भू-राजस्व व्यवस्था भी सब राज्यों में भिन्न-भिन्न थी। इसलिए यह आवश्यक था कि एक ऐसी व्यवस्था राज्य भर में कायम की जाये, जो कृषक वर्ग की स्थिति को सुधारने में सहायक हो।

एकीकृत होने वाली रियासतों के काश्तकारी अधिनियम भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा अनुदार थे। खालसा भूमि में काश्तकारों के अधिकार जागीर भूमि के काश्तकारों से भिन्न थे। भूमि के उत्तराधिकार तथा स्वामित्व के परिवर्तन सम्बन्धी अधिकार भी एक से नहीं थे। स्वामित्व के परिवर्तन सम्बन्धी अधिकार की प्राप्ति के लिए काश्तकारों को नजराना देना पड़ता था। जागीरी क्षेत्रों में तो काश्तकारों को स्वामित्व के अधिकार प्राप्त थे ही नहीं।

**अनेक प्रकार की प्रचलित काश्तकारियों के स्थान पर अब केवल ३ प्रकार के काश्तकार रह गये हैं। खातेदार, खुदकाश्त खातेदार और गैर खातेदार काश्तकार। अधिक लगान वसूल करने और बलात् श्रम पर पाबन्दी लग गई है, कृषि स्वामित्व की हदबन्दी कायम हो गई है और चकबन्दी की क्रिया प्रगति पर है।**

## कृषकों का शोषण

राज्य की ६० प्रतिशत भूमि जागीरदारी व्यवस्था के अन्तर्गत थी। कुल ३४,६४८ ग्रामों में से १६,७८० जागीर-ग्राम थे। जागीरदार हर तरह से जमीन का मालिक था तथा राज्य के शासक को उसका नजराना अदा करने की जिम्मेदारी उसी की थी। इस प्रकार के नजराने का जागीरदार द्वारा अपने काश्तकारों से वसूल किये गये भू-राजस्व से किसी प्रकार का तालमेल नहीं था। अधिकांश भागों में जागीरदार भू-राजस्व की वसूली उपज के आधे से लेकर ८वें हिस्से तक करते थे।

दूसरी प्रकार के बिचौलिये कुछ भागों में ज़मींदार तथा दूसरे भागों में बिस्वेदार कहलाते थे। यह व्यवस्था ४७८० ग्रामों में चालू थी। ये लोग सरकार को एक निर्धारित रकम ही देते थे, पर अपने किसानों से मनमाना राजस्व वसूल करने की उन्हें छूट थी। कृषक पूर्णतया असुरक्षित थे तथा उन्हें जमीदार अपनी इच्छानुसार बेदखल कर सकते थे। राज्य के शेष छोटे से भाग में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू थी, जहां राज्य प्रशासन का कृषकों से सीधा सम्बन्ध था।

## भूमि सुधारों की शृंखला

राजस्थान के निर्माण के साथ ही कृषकों की स्थिति सुधारने के लिए भूमि-सुधारों के एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ। १९४९ में राजस्थान (कृषक आरक्षण) अध्यादेश जारी किया गया। इसमें मनमानी बेदखलियों से काश्तकारों के आरक्षण की पूर्ण व्यवस्था थी। यह ऐतिहासिक अध्यादेश अक्टूबर १९५५ तक लागू रहा, जबकि राजस्थान काश्तकारी अधिनियम १९५५ लागू किया गया।

यह भूमि-सुधारों की एक शृंखला का शुभारम्भ था। राजस्थान कृषि उपज अधिदेय नियमन अधिनियम १९५१ के द्वारा अधिकतम अधिदेय की दर चौथे हिस्से से छठा हिस्सा तक निर्धारित कर दी गयी तथा भूमि-सम्बन्धी झगड़ों के निबटारे के लिए एक निर्धारित व्यवस्था लागू कर दी गयी। कृषकों से वाजिब से अधिक राजस्व की वसूली को रोकने के लिए १९५२ में राजस्थान कृषि अधिदेय नियंत्रण अधिनियम लागू किया गया। एक रकबे के लिए अधिकतम राजस्व राज्य सरकार द्वारा आंके गये राजस्व के दुगुने तक निर्धारित किया गया। इसी प्रकार राजस्थान भूमि बन्दोबस्त अधिनियम, १९५२



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

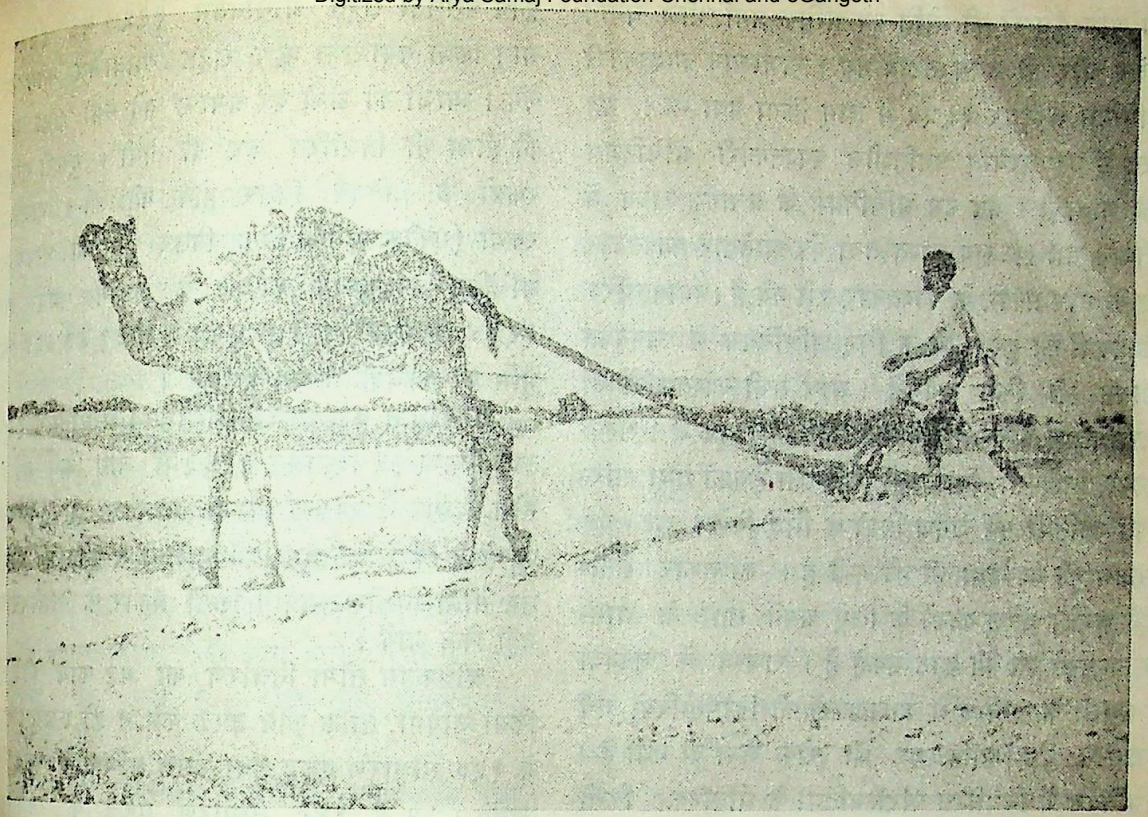

भूमि सुधारों के फलस्वरूप राजस्थान के किसानों में नया उत्साह

को लागू करके सरकार ने संक्षिप्त कार्यवाही द्वारा समाप्त करने के अधिकार प्राप्त कर लिये।

## जागीरों का पुनर्ग्रहण

जागीरों का पुनर्ग्रहण भारतीय संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों एवं योजना आयोग की भूमि-सुधार नीति के अनुरूप ही था। राजस्थान भूमि-सुधार तथा जागीर पुनर्ग्रहण अधिनियम राज्य में फरवरी १९५२ में लागू किया गया था। कुछ जागीरदार उच्च न्यायालय से स्थगन आदेश ले आये और लगभग दो वर्ष तक जागीरों का पुनर्ग्रहण नहीं किया जा सका। इसके पश्चात् मामला प्रधानमंत्री के सामने पेश किया गया और उन्होंने अपना एवार्ड नवम्बर १९५३ में दिया। दूसरा एवार्ड इसी सम्बन्ध में जनवरी १९५९ में दिया गया, जिसमें मुआवजा तथा पुनःसंस्थापन अनुदान आदि दिये जाने की व्यवस्था की गयी थी। अब तक २,२४,६८८ अन्य तथा ५५,५६९ धार्मिक जागीरों का पुनर्ग्रहण किया जा चुका है। १००० रुपये से कम वार्षिक आय वाली धार्मिक जागीरों का पुनर्ग्रहण १९५४ में १ जुलाई से चालू किया गया। जागीरदारों को मुआवजे एवं पुनःसंस्थान अनुदान के रूप में कुल ४४ करोड़ रुपये के लगभग राशि दी जायेगी। अन्तरिम मुआवजे के रूप में ८,८१,९५७ रुपये अब तक दिये जा चुके हैं।

राजस्थान ज़मीदारी एवं बिस्वेदारी उन्मूलन अधिनियम १ नवम्बर १९५९ से लागू किया गया और अब बन्दोबस्त की हुई अथवा बिना बन्दोवस्त की हुई समस्त ज़मींदारियां तथा बिस्वेदारियां समाप्त कर दी गयी हैं। नकद जागीरों को राजस्थान नकद जागीरदारी उन्मूलन अधिनियम १९५८ को लागू करके समाप्त कर दिया गया है।

## बिचौलियों का उन्मूलन

बिचौलियों के उन्मूलन के पश्चात् राज्य सरकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा भूमि-सुधारों की नीति को अधिक प्रगतिशील बनाने के लिए और भी कदम उठाये गये। राजस्थान काश्तकारी अधिनियम अक्टूबर १९५५ में लागू किया गया था। यह भारत में एक अत्यन्त प्रगतिशील काश्तकारी अधिनियम माना जाता है। अब इस अधिनियम के अन्तर्गत राज्य में खातेदार, मालिक, खुद काश्त तथा गैर-खातेदार काश्तकार नाम के चार प्रकार के काश्तकार रखे गये हैं। व्यावहारिक कठिनाइयों को दूर करने के लिए अधिनियम में उपयुक्त संशोधन भी किये गये हैं। आज सभी काश्तकारों को उत्तराधिकार सम्बन्धी अधिकार दिये जा चुके हैं। अल्पवयस्कों, विक्षिप्तों, विधवाओं, प्रतिरक्षा सेवकों तथा परिगणित जातियों एवं जनजातियों के लिए विशेष छूट एवं आरक्षण की व्यवस्था भी की गयी है। काश्तकार खेती-बाड़ी अथवा घरेलू कामों के लिए अपने खेतों के आस-पास के पेड़ों को भी काट सकते हैं। राजस्व के बकाया की वसूली के सम्बन्ध में काश्तकारों की गिरफ्तारियां एवं कारावास दंड आदि पर भी रोक लगा दी गयी है। अधिनियम में निर्धारित परिस्थितियों के अतिरिक्त किसी भी अवस्था में काश्तकारों को बेदखल नहीं किया जा सकता। आबू, अजमेर तथा सुनेल क्षेत्रों में समस्त काश्तकारी अधिनियमों को लागू किये जाने के साथ ही भारत के इस दूसरे सबसे बड़े राज्य में, जो भारत की कुल भूमि के ११.७२ प्रतिशत क्षेत्र में फैला हुआ है, एक ही प्रकार के राजस्व एवं काश्तकारी नियम लागू हो गये हैं।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण योजना के क्रियान्वयन के साथ ही भूमि सुधारों को लागू करने में पंचायतों का अधिकाधिक सहयोग लिया गया है। उन्हें आबादी क्षेत्रों में सरकारी भूमि को बेचने तथा रहन रखने के अधिकार दे दिये गये हैं। सीमांकित चरागाह भी पंचायतों को सौंप दिये गये हैं। वे ग्रामीण वनों का विकास कर सकती हैं तथा इस प्रकार की लेन-देन से होने वाली आमदनी से सार्वजनिक हित के कार्य भी कर सकती है।

## चकबंदी व जोत की अधिकतम सीमा

राजस्थान के कृषक भारी कर्जे से दबे रहते थे और इसी कारण उन्हें अपने रकबों में किसी प्रकार का सुधार या विकास करने की इच्छा नहीं होती थी। राजस्थान कृषि सहायता अधिनियम १९५७ मई १९५८ में लागू किया गया तथा ऋण राहत न्यायालय काम करने लगे। ब्याजों की ऊँची दरें समाप्त की गयीं तथा ऋणों की सीमा भी निर्धारित कर दी गयीं। दूसरी समस्या रकबों के तितर बितर होने की थी। राजस्थान रकबा (एकीकरण एवं तितर बितर होने की रोकथाम) अधिनियम दिसम्बर १९५४ के अन्तर्गत अप्रेल मास १९६४ के अन्त तक १७४६ ग्रामों में ३१,०३,४६३ एकड़ भूमि की चकबंदी की जा चुकी है।

राजस्थान काश्तकारी (संशोधन) अधिनियम १९६० तथा नियम १५ दिसम्बर १९६३ से लागू किये गये हैं। सोच विचार के पश्चात् राज्य सरकार इस निर्णय पर पहुँची है कि अधिनियम के प्रावधानों में जोत की अधिकतम सीमा निर्धारण संबंधी किसी प्रकार के संशोधन अब नहीं किये जायें।

अधिकतम सीमा निर्धारण का यह कार्य धीरे धीरे किया जायेगा, ताकि कृषि उपज कम न हो। प्रथम चरण में १५० साधारण एकड़ तथा उससे अधिक के रकबे लिये जायेंगे। ७५ से १४९ साधारण एकड़ के रकबे दूसरे चरण में लिये जायेंगे। ५० से ७४ एकड़ के रकबे तीसरे चरण में तथा ५० एकड़ से कम के रकबे चौथे चरण में सीमा निर्धारण के लिए जायेंगे।

अतिरिक्त भूमि के आंवंटन के मामले में उन व्यक्तियों को प्राथमिकता दी जायेगी जिन्होंने किसी ऐसे व्यक्ति से भूमि खरीदी है जिसके द्वारा इस प्रकार की बिक्री को वैध नहीं माना सकता था।

राजस्व कानून आयोग ने भूमि सुधारों के सम्बन्ध में और सिफारिशें भी की हैं। इनमें वर्तमान राजस्व बोर्ड के कामों का—न्याय व प्रशासन का पृथककरण, पटवारियों का हटाया जाना, भूमि निरीक्षकों की नियुक्ति, लगान की दरों का ठीक निर्धारण, न्यूनतम भू-सम्पत्ति और स्टैन्डर्ड क्षेत्र का निर्धारण, पंचायत समितियों, पंचायतों को भू-राजस्व अतिकर लगने का अधिकार आदि मुख्य है।

इस प्रकार जमीन को जोतने वालों की सभी कठिनाइयां दूर की जा चुकी हैं और अब वे इस स्थिति में हैं कि न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधारें, बल्कि राष्ट्रीय समृद्धि में भी अपना योगदान दे सकें। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में कृषि विकास

श्री सुभाष

आज से कुछ वर्ष राजस्थान मरुभूमि या रेगिस्तान के नाम से प्रसिद्ध था। अधिकांश भागों में वर्षा का औसत लगभग केवल सात इंच था। कुएँ बहुत गहरे होने के कारण तथा छोटे तालाबों और नहरों की कमी से सिंचाई बहुत कठिन थी। अब वह स्थिति बदल गई है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अन्न की दृष्टि से घाटे वाला राज्य अब बचत वाला राज्य बन गया है। सन् १९५१-५२ में राज्य में १०.५६ लाख टन खाद्यान्न उत्पन्न हुआ था। दस वर्ष बाद राजस्थान में खाद्यान्न का उत्पादन बढ़कर ४४.६२ लाख टन हो गया। भारत का सबसे बड़ा रेगिस्तानी इलाका आज कमी आने वाले राज्यों को अन्न का निर्यात कर रहा है। यह कम आश्चर्यकारी चमत्कार नहीं है।

कुछ वर्ष पूर्व राजस्थान के आर्थिक अध्ययन के लिए नियुक्त 'लोकनाथन कमेटी' ने लिखा था कि यहाँ कुएँ बहुत गहरे हैं और बैल आसानी से पानी नहीं खींच सकते। नहरें भी बहुत कम हैं। यदि किसी तरह हम सिंचाई की ओर अधिक ध्यान दे सकें तो कृषि उत्पादन राजस्थान में भी बढ़ सकता है। यहाँ भूमि-गर्भ जल की कमी नहीं है। आवश्यकता यह है कि इसकी बाकायदा खोज की जाय। बिजली की व्यवस्था करके जहाँ हम गहरे कुओं से सिंचाई कर सकते हैं, वहाँ छोटी बड़ी नहरों का जाल भी बिछाना पड़ेगा। कुछ सुझाव देते हुए लोकनाथन कमेटी ने यह आशा प्रकट की थी कि "यदि खेती में कुछ आवश्यक सुधार हुए तो खेती का उत्पादन ११.७ प्रतिशत प्रतिवर्ष बढ़ेगा और प्रति एकड़ उत्पादन की कीमत भी ७४ रु० से बढ़कर १२३ रु० हो जायगी।"

यद्यपि आज भी कृषि उत्पादन को बढ़ाने की बहुत गुंजाइश है, तथापि इसमें संदेह नहीं कि कृषि का उत्पादन राज्य में काफी बढ़ चुका है। भिन्न-भिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि और सिंचाई पर करोड़ों रुपया व्यय किया गया है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में जो लगभग ६४॥ करोड़ रुपये की थी, मुख्य जोर कृषि विकास, सिंचाई तथा सामुदायिक विकास पर दिया गया। इस कारण अतिरिक्त ६९ लाख एकड़ क्षेत्र में फसल होने लगी और अतिरिक्त ८ करोड़ एकड़ में सिंचाई होने लगी। दूसरी पंचवर्षीय योजना में ८ लाख १२ हजार टन अधिक उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है, परन्तु सफलता इससे भी अधिक हुई है। एक अनुमान के अनुसार ११ लाख टन अधिक उत्पादन हुआ। अन्न के अतिरिक्त तिलहन, रुई और गन्ने का उत्पादन भी इस योजना में बहुत रहा। तीसरी पंचवर्षीय योजना में भी राजस्थान ने कृषि के क्षेत्र में बहुत उन्नति की है। नये कुओं का निर्माण, पुराने कुओं का जीर्णोद्धार, छोटे तालाबों के निर्माण आदि के साथ-साथ भूमि के सुधार और संरक्षण की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। इस पंचवर्षीय योजना में, जो कुल २३६ करोड़ रुपये की थी, २३ करोड़ रुपया कृषि कार्यक्रमों के लिए और ८५.१० करोड़ रुपया, सिंचाई के लिए नियत किया गया था। भिन्न-भिन्न वर्षों में कितना उत्पादन बढ़ा और कितनी सिंचाई की व्यवस्था की गई, यह न लिखकर इतना लिखना पर्याप्त होगा कि अब राज्य में प्रति व्यक्ति खाद्य-उत्पादन ०.३० मीट्रिक टन हो गया है, जबकि अखिल भारतीय खाद्य-उत्पादन का औसत ०.२० मीट्रिक टन है। राज्य में दो फसलों वाला क्षेत्र ३२ लाख १२ हजार एकड़ हो गया है तथा अनाज, दाल और तिलहन की खेती वाला क्षेत्र भी ६०.८ प्रतिशत तक बढ़ गया है।

## दो वरदायिनी नहरें

राजस्थान की सबसे विकट समस्या सिंचाई की थी। इसके हल के लिए राजस्थान नहर तथा चम्बल नहर की विशालकाय योजनाएँ क्रांतिकारी परिणाम उत्पन्न कर रही हैं। इनका वर्णन पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे। इनके अतिरिक्त छोटी सिंचाई योजनाओं का महत्व भी कम नहीं है। चकबन्दी, हरी और रासायनिक खाद का वितरण, सुधरे बीज तथा नये औजार आदि विभिन्न कार्यक्रमों



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारा राजस्थान में कृषि-विकास के जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, उन सबके विस्तृत उल्लेख की आवश्यकता नहीं है। पंचायतें, सहकारी समितियाँ तथा अन्य वित्तीय संस्थाएँ कृषि-उत्पादन के कार्य में सहायता दे रही हैं। १९६४ तक संयुक्त-कृषि सहकारी समितियों और सामूहिक सहकारी-कृषि समितियों की संख्या क्रमशः २२६ और २०४ थी।

## सूरतगढ़ फार्म

इस प्रसंग में यदि सूरतगढ़ फार्म का उल्लेख न किया जाय तो यह विषय के साथ अन्याय होगा। यह विशालकाय फार्म रूस के सहयोग से १५ अगस्त १९५६ को चालू किया गया था। इसका क्षेत्रफल बहुत विशाल है—४८ वर्गमील। किसी समय सूरतगढ़ के चारों ओर रेतीली और बंजर जमीन नजर आती थी। आज यहाँ गेहूँ, जौ और सरसों के हरेभरे खेत लहरा रहे हैं। यहाँ लगभग ३० हजार एकड़ भूमि को खेती योग्य बनाया गया है। इस पर गेहूँ, मक्का, गन्ना और कपास की खेती की जाती है। वस्तुतः सूरतगढ़ फार्म मशीनी खेती का देश का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया है। खेती के अलावा यहाँ गाय, भैंस, भेड़ और मुर्गीपालन, बागवानी, भूरक्षण और वनारोपण भी किया जाता है। यहाँ की सफलता को देखकर यह लगता है कि अब रेगिस्तान में भी अनाज पैदा किया जा सकता है। इस फार्म की सफलता से यह भी सिद्ध होता है कि बड़े खेतों में उर्वरक, कीटनाशक, बढ़िया बीज और बड़ी मशीनों से खेती करने से खेती मुनाफे पर चल सकती है।

इस फार्म में ऐसी फसलें उगायी गयीं हैं, जो आमतौर पर पानी वाले क्षेत्रों में ही उगती है। यह सूरतगढ़ फार्म की सराहनीय उपलब्धि है।

सूरतगढ़ खेत को रेगिस्तानी हवाओं से बचाने के लिए पेड़ों की बाढ़ लगाई जा रही है। इससे हवा के द्वारा बालू का उड़ना और उपजाऊ जमीन में बालू भरना रुका है। इस फार्म की सफलता से प्रेरित होकर अब जेतसर में भी एक और फार्म बनाया जा रहा है।

## उज्ज्वल संभावनाएं

राजस्थान के सिंचाई योग्य क्षेत्रों में बहुत-सी भूमि आज भी सूखी पड़ी है। सूखी भूमिका अर्थ यह है कि उसमें बड़े-बड़े टीले हैं, जिन पर पानी पहुंचाकर सिंचाई नहीं की जा सकती।

राजस्थान के कृषिमंत्री श्री नाथूराम मिर्धा के कथनानुसार यदि जमीन को समतल किया जा सके तो अकेले भाखड़ा क्षेत्र में सिंचाई का क्षेत्र एक लाख एकड़ और बढ़ाया जा सकता है। भाखड़ा से कुल पांच लाख एकड़ भूमि की सिंचाई हो रही है। कोनों और किनारों में बहुत सारी जमीन छूटी हुई पड़ी है। राज्य सरकार के सामने इस समस्या का हल करने के लिए भी छोटे-छोटे बाग-बगीचे और दुग्धशालाओं के विकास करने के विचार पेश किये गये हैं। इस प्रकार की जमीन को यदि पूर्ण उपयोगी बनाया जाय तो दो सौ से ढाई सौ रु० प्रति एकड़ खर्च आने का अनुमान है।

राज्य में कुल तीन सौ लाख एकड़ भूमि में से केवल ३८ लाख एकड़ भूमि को सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं। राज्य सरकार भूमि विकास और उत्पादन वृद्धि करने के उद्देश्य से किसानों में वैज्ञानिक संस्कार उत्पन्न करने के लिए शीघ्र कुछ कार्यक्रम को अमल में लायेगी। कुछ आशावादी कृषि वैज्ञानिकों का तो विश्ववास है कि—

> राजस्थान हिन्दुस्तान का केलीफोर्निया बन सकता है। विकास से पूर्व केलीफोर्निया की भौगोलिक परिस्थितियां राजस्थान जैसी थीं—सीकर और झुंझनू जैसे इलाकों में भी यदि नलकूप लगाये जायें तो वहां प्रतिकूप ६० से ७० एकड़ तक भूमि की सिंचाई का सर्वोत्तम प्रबन्ध हो सकता है।

राज्य कुछ आदर्श किस्म के फार्म स्थापित करने पर विचार कर रहा है। यदि कल्पनानुसार यह फार्म स्थापित किये जा सके तो दस से पन्द्रह एकड़ तक का फार्म भी पन्द्रह हजार रु० की शुद्ध आमदनी दे सकता है। इन फार्मों के साथ पशु और मुर्गीपालन जैसे सहयोगी व्यवसाय भी जुड़े रहेंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# राजस्थान

प्राचीन भारत के लिए यह नाम ही प्रतीक का काम करता है, किन्तु आज देश की प्रगति का नारा आधुनिक वैज्ञानिक कृषि हैं। कृषि में उत्पादन वृद्धि के लिए कृषि रसायनों का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है, जिनसे कृषि विनाशक कृमि, पौधों को कुतरने वाले कीड़े, खरपतवार और ऐसे अनेक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं, जो भारत में कृषि उत्पादन में एक बड़ी बाधा है।

राजस्थान के किसानो ! कृषि रसायन खरीदते समय HEXAMAR का चिन्ह आपका पथप्रदर्शन करेगा।

निम्न लिखित वितरकों से हमारा माल प्राप्त किया जा सकता है :–

| | | |
|---|---|---|
| जोधपुर | ... | युनिवर्सल ट्रेडिंग कारपोरेशन |
| बांसबाडा | ... | सेठ विजयलाल हरिश्चन्द्र |
| उदयपुर | ... | हाजी अकबर अली कुर्बान हुसैन |

★★

विशेष विवरण के लिए लिखिए :

## भारत पुलवराइजिंग मिल्स प्रा० लि०

हैवस अमर हाउस, २८ सयानी रोड
बम्बई-२८


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की प्रमुखतम समस्या — मरुभूमि

श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, संसद् सदस्य

**इस लेख के लेखक राजस्थान की प्रमुखतम समस्या मरुभूमि, पर प्रामाणिक जानकारी रखते हैं। यह लेख इस समस्या के विविध पहलुओं तथा सम्भावित उपायों पर अच्छा प्रकाश डालेगा।**

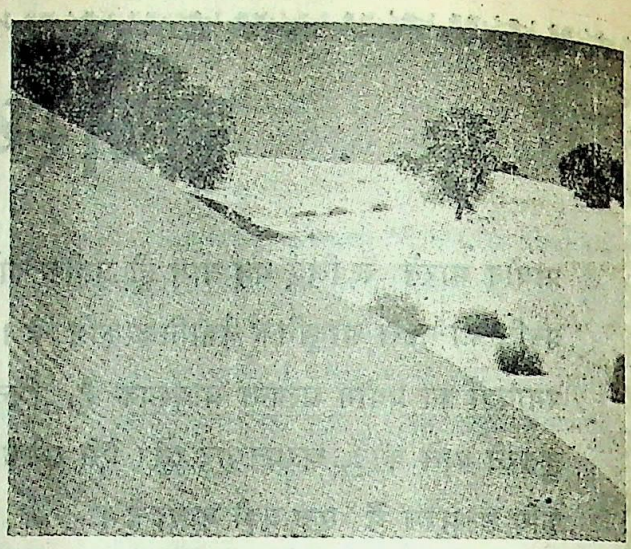

राजस्थान की मरुभूमि

राजस्थान राज्य भारत में मध्य प्रदेश के अतिरिक्त, क्षेत्रफल में सबसे अधिक विस्तृत राज्य है। पश्चिमी राजस्थान का रेगिस्तानी इलाका इस राज्य का एक-तिहाई से भी अधिक भाग है। न केवल पश्चिमी राजस्थान के पिछड़े हुए जन-समुदाय के आर्थिक उन्नयन के लिए, न केवल राजस्थान राज्य में आर्थिक प्रगति को गतिशील करने के लिए, बल्कि हमारे समूचे देश का आर्थिक ढाँचा आमूल परिवर्तित हो सके और एक नवीन गत्यात्मक रूपरेखा के आधार पर आर्थिक विकास के चरण गतिशील हो सकें, इस प्रयोजन के लिए पश्चिमी राजस्थान का मरुस्थलीय इलाका और इसके साथ-साथ दक्षिण-पूर्वी पंजाब, पश्चिमी गुजरात और दक्षिणी मरुस्थल हमारे विशेष मनोयोग के पात्र हैं। हमारे देश की उत्तरी सीमा का लद्दाख अंचल भी शुष्क इलाकों के वर्ग में उल्लेखनीय है, किन्तु लद्दाख और गिलगित के इलाकों की समस्याएँ मैदानी शुष्क अंचलों से भिन्न हैं।

## मरुभूमि का विस्तार

भारत का उत्तर-पश्चिमी रेगिस्तानी इलाका विस्तार में सर्वप्रथम आता है। इस इलाके में दक्षिण पूर्वी पंजाब के फीरोजपुर, संगरूर, रोहतक, हिसार, मोहिन्दरगढ़ एवं गुड़गांव के जिले हैं। पश्चिमी राजस्थान में जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, पाली, नागौर, जालौर, सीकर, झुंझनू, चूरू, श्रीगंगानगर और बीकानेर के जिले हैं। पश्चिमी गुजरात में कच्छ और जामनगर के जिले रेगिस्तानी इलाकों के वर्ग में आते हैं। दक्षिण भारत के रायलसीमा अंचल में भी शुष्क स्थलों की भरमार है। उत्तर सीमांत में (लद्दाख और गिलगित), उत्तर-पश्चिम शुष्क क्षेत्र में (पंजाब, राजस्थान और गुजरात) और दक्षिण में (रायलसीमा क्षेत्र) कुल मिलाकर ४ लाख ७७ हजार ६४५ वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र मरुस्थलीय है। यह क्षेत्र हमारे देश के आर्थिक विकास के लिए व्यापक संभावनाओं का क्षेत्र है।

कहा जाता है कि किसी समय हमारे देश के उत्तर-पश्चिमी शुष्क अंचलों में सरस्वती और दृषद्वती नाम की वैदिक नदियाँ बहती थीं। आज उनके पुरातात्विक अवशेष मात्र इस क्षेत्र में रह गये हैं। फिर भी इन अंचलों में प्राकृतिक कठिनाइयों के बावजूद जीवन का प्रवाह चलता रहा और संख्या-शास्त्र के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी राजस्थान की आबादी पिछले चार दशकों में पूर्वी राजस्थान की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। यहाँ उत्तर पश्चिमी रेगिस्तानी इलाके में हमारे देश की ६५ प्रतिशत से अधिक भेड़ें पाली जाती हैं और देश में गोधन के विकास का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ यह विशेषतः उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में जंगल हैं, चरागाहों की बड़ी भारी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमी है और यह कमी शनैः शनैः बढ़ती जा रही है। राजस्थान नहर के पूरी हो जाने पर लगभग १९८० में करीब २५ लाख एकड़ भूमि के लिए सिंचाई के साधन उपलब्ध हो जाएँगे, किन्तु शेष समूचे क्षेत्र के लिए स्वल्प वर्षा से जीवन-यापन दुष्कर ही रहेगा।

हमारे देश के उत्तर पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में आबादी का औसत ७ से २०० व्यक्ति प्रति वर्ग मील का है। इस पूरे शुष्क क्षेत्र के लिए आबादी के फैलाव का औसत १३१ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है, जो कि शुष्क क्षेत्रों के माप मान से अत्यधिक है। हुआ यह है कि पिछली कई सदियों में यहाँ के प्राकृतिक साधनों को वैज्ञानिक और योजनाबद्ध रूप से विकसित नहीं किया गया और इसलिए इस क्षेत्र में जल का भारी अभाव है, शुष्कता का साया सर्वत्र फैला हुआ है, मरुस्थल फैलता जा रहा है और कृषि के अन्तर्गत लाई गई जमीन भी तीव्र गति से कम उपजाऊ होती जा रही है। इन परिस्थितियों में इस क्षेत्र में एक हजार वर्ष पूर्व की अपेक्षा आज की जलवायु अत्यधिक मरुस्थलीय होती जा रही है।

## भारी चुनौती

मूलतः इस क्षेत्र में उपलब्ध साधनों का समुचित विकास हमारे युग की इस वैज्ञानिक संभावनाओं को एक चुनौती है। आने वाले १०-१५ वर्षों में या तो हमारे योजनाबद्ध प्रयत्नों से यह इलाका हमारे देश की आर्थिक समृद्धि का अग्रदूत बन जाएगा और या फिर वैज्ञानिक साधनों के अभाव में और सरकारी उपेक्षा के कारण यह सारा इलाका हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए एक बहुत बड़ी देनदारी सिद्ध होगी। आज हम इस इलाके के आर्थिक विकास के लिए एक ऐतिहासिक चौराहे पर खड़े हैं और विकास का रास्ता चुनने के लिए एक बहुत बड़े संकल्प और इतने ही बड़े प्रयत्न की अपेक्षा हमें होगी।

## चरागाहों की वैज्ञानिक चिकित्सा

पंजाब, राजस्थान और गुजरात के मरुस्थलीय


## क्या आप फोरम ऑफ फ्री एन्टरप्राइज के विद्यार्थी सदस्य बन चुके हैं?

फोरम ऑफ फ्री एन्टर प्राइज़ के विद्यार्थी सदस्य बनने का अधिकार कालिज के विद्यार्थियों, अनुसन्धान के छात्रों और उन लोगों को है, जो चार्टर्ड एकाउन्टैंट, कोस्ट एकाउन्टैंट और सोलीसीटर की परीक्षाओं में बैठ रहे हैं। इसका वार्षिक शुल्क २) रुपये है। विद्यार्थी सदस्य बनने से विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र पर हमारी उपयोगी पुस्तकों के प्राप्त करने और बम्बई में स्थित हमारे वाचनालय का उपयोग करने की सुविधा मिल जाती है, ताकि विद्यार्थियों में राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं पर स्वतंत्र चिन्तन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिल सके।

विशेष विवरण के लिए लिखें :

**फोरम ऑफ फ्री एन्टर प्राइज,**
**सोहराब हाउस २३५, डा० दादाभाई नौरोजी रोड,**
**पोस्ट बाक्स ४८ ए, बम्बई-१**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाके की जो प्रमुख समस्याएं हैं वे प्रमुखतः वैज्ञानिक, जलप्रदाय, कृषि और पशुपालन की समस्याएँ हैं या फिर वे समाजशास्त्रीय समस्याएँ हैं । समाज शास्त्रीय समस्याओं में प्रमुख समस्या है—घुमंतू जन की समस्या । इनकी संख्या इस इलाके में करीब २।। लाख है । ये घुमंतू जन एक राज्य से दूसरे राज्य में आते जाते रहते हैं और जब तक इन्हें अच्छी तरह से बसा नहीं दिया जाता, तब तक ये इस इलाके की आर्थिक व्यवस्था में विविध प्रकार की कठिनाइयों के कारण बनते रहेंगे । इस इलाके में करीब एक करोड़ एकड़ भूमि में रेतीले टीबे फैले हुए हैं । ये रेतीले टीबे मरुस्थल के बढ़ते हुए चरण बन जाते हैं । इन रेतीले टीबों की समस्या सिंचाई और वन्यकरण से ही हल की जा सकती है । सबसे बड़ी आवश्यकता इस क्षेत्र में जीवन निर्वाह की कृषि को व्यावसायिक कृषि में परिवर्तित करने की है । इस दिशा में इजरायल ने अभूतपूर्व प्रगति की है । पश्चिमी राजस्थान में चरागाहों के स्थान विशेषतः विकसित करने की अपेक्षा है । साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि पशुओं के चराने का तौर तरीका बदला जावे और उसका नियमन किया जावे । पश्चिमी राजस्थान में उपलब्ध चरागाहों की यदि वैज्ञानिक चिकित्सा की जाए, तो वे थोड़े से समय में कम से कम आज से तीन गुने पशुधन को आवश्यक भोज्य दे सकते हैं । पश्चिमी राजस्थान में फसल-प्रणाली को वैज्ञानिक प्रारूप देना आवश्यक है ।

## पानी व पशुधन

पश्चिमी राजस्थान विशेषतः पशुधन में अत्यन्त समृद्ध है । पूरे भारतवर्ष के ऊन उत्पादन का ५५ प्रतिशत ऊन पश्चिमी राजस्थान में होता है । यहाँ स्वस्थ गो-धन भी बहुतायत में पाया जाता है । बकरियों की आबादी पश्चिमी राजस्थान में बहुत बड़ी मात्रा में है । पशुधन के विकास और इससे सम्बन्धित औद्योगिक विकास की योजना इस मरुस्थल के आर्थिक विकास का प्रमुख भाग है और जब तक इस ओर विशेष मनोयोग नहीं दिया जाता, तब तक इस मरुस्थलीय क्षेत्र की समुचित आर्थिक प्रगति सम्भव नहीं हो सकती । सबसे बड़ी समस्या इस क्षेत्र में पानी की है । किन्तु पिछले १६ वर्षों में पश्चिमी राजस्थान में जल के साधनों का योजनाबद्ध विकास करने की ओर न कोई समुचित कार्यक्रम ही बना, न संतोषप्रद प्रयत्न ही हुए । आज पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत टैंकों और तालाबों की स्थिति दयनीय है । नलकूप अभी तक अनुसंधान की किसी अगम्य गुफा में छिपे प्रतीत होते हैं । लवणयुक्त जल जो उपलब्ध है, उसे अभी तक मानवीय उपयोग के उपयुक्त नहीं बनाया जा सका है । राजस्थान नहर इस क्षेत्र के एक हिस्से के लिए अवश्य ही सुनहरे भविष्य की आशाओं का पुंज और प्रतीक है, किन्तु जो क्षेत्र राजस्थान और गंगनहर से किसी लाभ के भागी न होंगे, उन विस्तृत क्षेत्रों के लिए पीने का पानी और सिंचाई के साधन उपलब्ध करने की समस्या इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या है । इन प्रयत्नों के अतिरिक्त इस क्षेत्र में खनिज साधनों एवं सहायक औजारों औद्योगीकरण, सामान्य आर्थिक विकास और यातायात के साधनों के संवर्धन की मूलभूत आवश्यकता और विस्तृत सम्भावना है ।

पश्चिमी राजस्थान और पंजाब तथा गुजरात के रेगिस्तानी इलाकों के सर्वोन्मुखी विकास के लिए मैंने एक बृहत् योजना की रूपरेखा भारत सरकार के समक्ष रखी है । १९६३-६४ में डा० के० एल० राव के सुयोग्य सहयोग और खाद्य मंत्रालय की सहमति से इस विषय में मेरे सुझाव को भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया और सम्बद्ध राज्य सरकारों को भी इस प्रयत्न में सहव्रत कर लिया गया है । अब निकट भविष्य में इन तीनों राज्यों में विशेषतः एक मरुभूमि मण्डल की स्थापना की जाएगी और इन राज्यस्तरीय मण्डलों के कार्यों में एकरूपता और समन्वय स्थापित करने के लिए कृषि मंत्रालय के अन्तर्गत एक उच्चस्तरीय अन्तर-प्रादेशिक मरुभूमि विकास आयोग का गठन किया जाएगा । मेरी मान्यता है कि यदि इस आयोग का कार्यक्रम साधन और संकल्प से सम्पन्न रहा, तो निश्चय ही हमारे देश के ये रेगिस्तानी इलाके आर्थिक समृद्धि से लहलहाते दृष्टिगोचर होंगे और हमारे देश की आर्थिक गति में भरपूर योगदान दे सकेंगे ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण

**कुछ वर्ष पहले डा० पी० एस० लोकनाथन की अध्यक्षता में एक कमेटी ने राजस्थान का आर्थिक सर्वेक्षण किया था। उसने कृषि, उद्योग, यातायात, खनिज, पशुपालन और वित्तीय स्रोत आदि के सम्बन्ध में अपनी एक रिपोर्ट दी थी और कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये थे। यह रिपोर्ट कुछ वर्ष पूर्व दी गई थी। इसके कुछ सुझाव अमल में भी आ रहे हैं और कुछ प्रगति हो चुकी है। यह रिपोर्ट बहुत महत्त्वपूर्ण है और वस्तुतः राजस्थान की आर्थिक समस्याओं और वस्तुस्थिति के अध्ययन की सुन्दर पृष्ठभूमि है। इसके आवश्यक अंश हम पृष्ठों में दे रहे हैं:—**

समस्त देश की तुलना में राजस्थान आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इसमें प्रति व्यक्ति आय अखिल देशीय, औसत आय से १० प्रतिशत कम है और इसका मुख्य कारण कृषि, उद्योग आदि क्षेत्रों में कम उत्पादकता है। यद्यपि आज राजस्थान अन्न की दृष्टि से बचत वाला राज्य है, पर कुछ ही वर्षों में यह सम्भव हुआ है। इसका कारण यह है कि राजस्थान में कृषि भूमि का क्षेत्रफल ज्यादा और जनसंख्या कम है। इसी प्रकार मवेशियों और विशेषकर भेड़ों की संख्या अधिक है और उनका उत्पादन कम है, क्योंकि चारे की बहुत कमी है।

यद्यपि राजस्थान में लोहा और कोयला नहीं है, तथापि अनेक खनिज पदार्थों की दृष्टि से यह बहुत समृद्ध है। कुछ खनिज पदार्थों पर तो राजस्थान का ही एकाधिकार दीखता है। अभी तक राजस्थान में गृह उद्योगों की प्रधानता है। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से कुछ बड़े उद्योग भी राजस्थान में तेजी से खुलने लगे हैं।

कृषि की उन्नति में सबसे बड़ी बाधा पानी का अभाव है यद्यपि राजस्थान नहर और चम्बल नहर की योजनाओं से यह आशा की जा रही है कि बहुत थोड़े समय में ही राजस्थान की मरुभूमि शस्य श्यामला में परिणत होने की दिशा में प्रगति कर लेगी। कुएँ बहुत कठिनता से खुदते हैं। यदि बिजली की व्यवस्था की जाय, तो बैलों की कठिनता दूर हो जाय और छोटी सिंचाई की सम्भावनाएँ बढ़ जायं। कृषि को उन्नत करने के लिए जो नई योजनाएं कार्यान्वित में आ रही हैं, वे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं और यह आशा की जानी चाहिए कि राजस्थान शीघ्र ही समस्त देश के अन्न संकट को दूर करने में सहायक सिद्ध होगा।

## पशु-धन

राजस्थान का एक मुख्य व्यवसाय पशुपालन है। कृषि के बाद सूखे प्रदेशों में पशु-पालन का ही महत्व है। १९५६ में राजस्थान का पशुधन कुल देश का १०.६ प्रतिशत था। राजस्थान के लिए यह सौभाग्य की बात है कि पशुओं की—ऊँट, बैल, बकरी, भेड़ की नसल वहाँ बहुत ऊँचे किस्म की मिलती है। किन्तु यह चिन्ता की बात है कि दुधारू पशुओं का पालन वहां कम होता है। फिर भी पशु संख्या अधिक होने के कारण राजस्थान में प्रति व्यक्ति दूध की खपत ८.१४ औंस है, जबकि कुल भारत की औसत ५.१४ औंस है। प्रतिवर्ष राजस्थान में ऊन २९ लाख पौंड, मांस २३ हजार टन, खालें ५.९ लाख और हड्डियाँ ३३.९ लाख टन पैदा होती हैं। यदि किसी तरह चारे की कमी को पूरा किया जाय तो दूध और ऊन का उत्पादन बढ़ सकता है। परन्तु यह तभी हो सकता है जबकि सिंचाई की व्यवस्था अच्छी हो। जिस तरह बकरियां सारे राज्य में घास और पत्ते चर जाती हैं उसका भी नियमन होना चाहिए। आधुनिक भौतिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार निरुपयोगी पशुओं का वध कर देने से चारे की समस्या एक सीमा तक हल हो जायगी। यदि खेती में यंत्रीकरण किया जाय तो बैलों की आवश्यकता भी कुछ कम होने लगेगी। जिन क्षेत्रों में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा कम होती है, वहां भेड़ों का पालन ज़्यादा अच्छा होगा।

## मत्स्य पालन

मत्स्य-पालन का उद्योग राजस्थान में बहुत कम विकसित हो पाया है। वहाँ कुल २२ टन मछली प्रतिवर्ष मिलती है। राज्य के २६ जिलों में से १८ जिले ऐसे हैं, जिनमें मत्स्य उद्योग का विकास किया जा सकता है। राजस्थान में अनेक बड़े-तालाब हैं, जहां इस उद्योग का विकास सम्भव है। राजस्थान में मछलियों का मांस कम बिकता है। ज्यादातर मछलियां अन्य राज्यों में भेज दी जाती हैं। फिर भी नई योजनाओं से यह अनुमान किया जाता है कि १९६६ तक २५०० टन मत्स्य-उत्पादन बढ़ सकता है, किन्तु इसके लिए कुछ बर्फ-घरों का निर्माण करना होगा।

## राजस्थान के वन

राजस्थान में अन्य राज्यों की अपेक्षा वन बहुत कम हैं अर्थात् कुल क्षेत्र का ४.२ प्रतिशत, जबकि समस्त देश में यह अनुपात १७.५ प्रतिशत है। जंगलों की बड़ी उपज इमारती और जलावन की लकड़ी है। कोयला भी काफी तादाद में तैयार किया जाता है। कत्था और पशुओं का चारा भी जंगलों से मिलता है, किन्तु ऐसे उद्योग राजस्थान में कम हैं जो लकड़ी का उपयोग करते हैं। यदि जंगलों का ठीक-ठीक विकास किया जाय और उनकी पूरी देखभाल की जाय तो जंगल राजस्थान के आर्थिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हो सकते हैं। तीसरी पंचवर्षीय योजना में जंगलों के विकास के लिए २४५ लाख रुपया निर्धारित किया गया है।

## राजस्थान के खनिज

खनिज-पदार्थों की दृष्टि से राजस्थान बहुत सौभाग्यशाली है। अनेक खनिज पदार्थों पर तो राजस्थान का एकाधिकार है। अभी जो खोज जारी है उससे अनेक भूगर्भ भंडारों का पता लग रहा है। १९५८ में जो पड़ताल की गई थी, उससे मालूम हुआ था कि उस वर्ष खनिज-उत्पादन ५.२ करोड़ रुपये का हुआ था। इसमें से इमारती पत्थर ३७ प्रतिशत, नमक १३ प्रतिशत, सीसा जस्ता १३ प्रतिशत, अभ्रक १२ प्रतिशत और जिप्सम १०



प्रतिशत था। लेकिन राजस्थान में उद्योग कम हैं, इसलिए अधिकांश खनिजों का सम्पूर्ण उत्पादन अन्य राज्यों को चला जाता है।

इन वर्षों में खनिज-विकास की ओर राज्य-सरकार का बहुत ध्यान गया है। दस वर्षों में २३ करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है, जिसमें से १०.५ करोड़ रुपया ताम्बे के खानों के विकास के लिए खर्च होगा और १३ करोड़ रुपया केन्द्रीय सरकार खर्च करेगी।× यह अनुमान किया गया है कि १९७१ तक खनिज पदार्थों से १६ करोड़ रुपये की आय होने लगेगी, जबकि १९६१ में केवल ६ करोड़ रुपये की आय हुई थी।

## बड़े उद्योग

राजस्थान में अपनी परिस्थितियों के कारण बड़े उद्योगों का विकास बहुत नहीं हो सका। राजस्थान की जनसंख्या कुल भारत की जनसंख्या ४.४ प्रतिशत है, किन्तु राजस्थान का उद्योग-उत्पादन और रोजगार कुल भारत की दृष्टि से १९५५-५६ में क्रमशः ०.६७ और १.२ प्रतिशत थे। ये दोनों संख्याएँ बताती हैं कि औद्योगिक दृष्टि से राजस्थान कितना पिछड़ा हुआ है। फिर भी इन दो-चार वर्षों में राजस्थान ने पहले की अपेक्षा काफी प्रगति की है। कुछ कपड़े की मिलें, रेलवे वर्कशौप यहां के बड़े उद्योगों मे थे। छोटे और मध्य उद्योगों की संख्या बहुत थी। कुछ नये बड़े उद्योग राजस्थान के औद्योगिक-मानचित्र को बदलने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। सीमैन्ट, बालबेअरिंग और रेयन आदि के उद्योग इसके सूचक हैं। चम्बल और भाखड़ा की बिजली तथा पानी औद्योगिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध होंगे, जिनका अब तक अत्यन्त अभाव था। नई योजना के अनुसार २२४ करोड़ रुपये का विनियोजन औद्योगिक विकास में किया जायगा, जिनमें से १०१ करोड़ रुपया तो रासायनिक तथा तत्सम्बन्धी उद्योगों मे लगेगा। औद्योगिक योजना के पूर्ण होने पर यह अनुमान किया जाता है कि इन दस वर्षों में ११९ करोड़ रुपये का उत्पादन बढ़ जायगा।

---

× अभी फ्रांस की सरकार से खेतड़ी की ताम्बे के विकास के लिए एक समझौता हुआ है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


मंगल कामनाओं के साथ

# दी दिल्ली आइरन सिन्डीकेट प्रा० लिमिटेड

अजमेरी गेट, दिल्ली-६

शाखा कार्यालय :

७७/१ महात्मा गांधी रोड
कलकत्ता

पीर मोहिनी
पटना

बड़ा गणेश
वाराणसी

राजगद्दी
कानपुर

स्मिथ गंज
मेरठ

तालकटोरा स्ट्रीट
मलेर कोटला

★

सभी प्रकार के आइरन व स्टील सामग्री, पाइप, जी० आई० और काले (आई० टी० सी० निर्मित) पदार्थों के व्यापारी

★

ऐसबेस्टस सीमेंट की चादरें और सीमेंट के पाइप के

## कन्ट्रक्टर और स्टाकिस्ट

फोन : २६२३०६, २६२२०७

तार : 'SINDICIRON' Delhi.


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## छोटे और ग्राम उद्योग

१९५५-५६ की योजना के अनुसार उद्योगों में ९३ प्रतिशत रोजगार परम्परागत ग्रामोद्योगों में लगा हुआ था, इनसे कुल औद्योगिक उत्पादन का ८८ प्रतिशत उत्पादन होता था। हथ-करघा राज्य का प्रधान उद्योग रहा है। आधुनिक छोटे कारखानों का विकास आजकल काफी हो रहा है। अनेक स्थानों पर उद्योग-पुरियों की स्थापना से और भाखरा तथा कोटा की योजनाओं से यह आशा की जाती है कि छोटे-छोटे कारखाने काफी संख्या में खुल जाएँगे। ऊन उद्योगों का विकास अच्छी तेजी से हो रहा है। अनेक खनिज पदार्थों के उद्योगों के विकास की भी सम्भावनाएँ कम नहीं हैं। १९५९ से ७१ तक के दशक में छोटे उद्योगों के विकास के लिए ४० करोड़ रुपये का विनियोजन चल रहा है। इससे यह आशा की जाती है कि ८० हजार लोगों को रोजगार मिलेगा और १९ करोड़ रुपये का अतिरिक्त उत्पादन होने लगेगा।

**बिजली**—पिछले दस वर्षों में राजस्थान में बिजली का विकास कुछ न कुछ हुआ है। यद्यपि यह विकास बहुत अपर्याप्त है, फिर भी जो विकास योजनाएँ इस समय बन चुकी है, उनसे यह आशा की जा सकती है कि राजस्थान में बिजली बहुत सुलभ हो जायगी और उसके द्वारा छोटे बड़े उद्योगों का विकास बहुत अधिक सम्भव हो जायगा।

## मानव शक्ति

किसी भी राज्य की वास्तविक सम्पत्ति मानव-शक्ति होती है। राजस्थान इस दृष्टि से भाग्यशाली है भी और नहीं भी है। राजस्थान की आबादी बहुत विरल है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यहाँ आबादी कम है, किन्तु राजस्थान का किसान और श्रमिक परिश्रमी बहुत है। १९५१ में राजस्थान की ८१.५ प्रतिशत जनता देहातों में रहती थी। यदि समस्त भारत में १ हजार पुरुषों के पीछे ९४० स्त्रियां हैं तो राजस्थान में केवल ९०८ स्त्रियां हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि पिछले कुछ दशकों में राजस्थान की आबादी अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ रही है। अधिकांश जनसंख्या देहातों में खेती का काम करती है। फिर भी जिस तरह राजस्थान में छोटे बड़े उद्योगों का विकास हो रहा है, उसे देखते हुए अब अनुपात में परिवर्तन आना प्रारम्भ हो गया है और लोग कृषि भिन्न कार्यों में रुचि लेने लगे हैं। यह भी असंभव नहीं है कि कुछ वर्षों में श्रमिकों की संख्या में कमी अनुभव होने लगे। एक निर्दिष्ट कार्यक्रम के अनुसार इस दशक में श्रमिकों की संख्या २० लाख तक बढ़ जायगी। शिक्षा प्रसार के परिणामस्वरूप श्रमिक अधिक दक्षता प्राप्त करेंगे और राजस्थान के औद्योगिक विकास में अधिक योगदान दे सकेंगे।

## यातायात और परिवहन

आर्थिक विकास के लिए यातायात और परिवहन की उन्नत व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। राजस्थान में ३८९९ मील रेलवे लाइन है, १५०९३ मील सड़कें हैं, ३९२३ सरकारी और गैरसरकारी बसें हैं और ७२५० लारियां हैं। '×' सम्पूर्ण राज्य में सड़कों की व्यवस्था एक समान नहीं है। दक्षिणी पश्चिमी राजस्थान में यातायात व्यवस्था कुछ अच्छी है और जनसंख्या की दृष्टि से यातायात सेवाएं समस्त देश की दृष्टि से ज्यादा अच्छी है, किन्तु क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थिति इसके प्रतिकूल है। राजस्थान में तीनों किस्मों की रेलें हैं—ब्रोड गेज (१९९ मील), मीटर गेज (३६१५ मील), नैरो गेज (७ मील)। बांसवाड़ा, डूंगरपुर और जेसलमेर जिलों में रेलवे हैं ही नहीं। छोटी बड़ी विभिन्न रेलों के कारण सामान को दूर तक ले जाने में काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है और अनेक स्थानों पर सामान उतार कर दूसरी गाड़ी में लादना पड़ता है।

नागपुर में निर्दिष्ट लक्ष्यों के अनुसार अभी तक राजस्थान में पक्की सड़कें ५८५२ मील और कच्ची सड़कें १२७६१ मील कम हैं। पिछले वर्षों में यातायात और परिवहन का बहुत विकास हुआ है। न केवल सड़कों तथा रेलों का विकास कार्यक्रम चल रहा है, किन्तु राजस्थान नहर द्वारा जलीय यातायात के कार्यक्रम निर्माण की अवस्था में हैं। अब तो राजस्थान नहर का काम केन्द्रीय सरकार ने अपने हाथों में ले लिया है।

'×' इस लेख की संख्यायें पुरानी पड़ गई हैं। संख्याओं के लिए देखिए सांख्यिकी पृष्ठ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक प्रगति के पथ पर

## राजस्थान

लेखक श्री बी. डी. पाठक

आज के युग में औद्योगिक विकास के बिना किसी भी देश की उन्नति की कल्पना नहीं की जा सकती। हमारा देश मुख्यतः कृषि प्रधान रहा है, किन्तु आधुनिक युग के अन्य कदम से कदम मिला कर चलने के लिये और देश-वासियों को सुख समृद्धि की ओर अग्रसर करने के लिये आवश्यक है कि देश में अधिकाधिक उद्योग धन्धे स्थापित किये जायें। हमारे देश में औद्योगिक विकास की प्रचुर संभावनाएं है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि भिन्न-भिन्न प्रदेशों में बिखरी उन संभावनाओं को शीघ्रातिशीघ्र मूर्त रूप प्रदान किया जाय।

**राजस्थान तीव्र गति से औद्योगिक विकास की दिशा में छलांग मार रहा है, यहां इन पृष्ठों से मालूम होगा।**

राजस्थान का धनी वीर प्रदेश राजस्थान भारतीय इतिहास में अपना बेजोड़ स्थान रखता है। इसने अपने वीर बलिदान और शौर्य के बल पर सदैव भारत का मस्तक ऊंचा रखा है। किन्तु औद्योगिक दृष्टि से यह प्रदेश देश के अन्य भागों की तुलना में कुछ पीछे रह गया है। देश के स्वतन्त्र होते ही दूसरे प्रदेशों ने तो तेजी से उद्योग धन्धों के विकास की ओर ध्यान दिया, किन्तु राजस्थान में इस ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इस भू-भाग को प्रकृति ने जितनी समृद्धि प्रदान की है, उसके अनुरूप यह आज समृद्ध नहीं हो पाया। इसका मुख्य कारण यही है कि यहां प्रकृति दत्त साधनों का पूरा विकास और उपयोग नहीं हो सका। इसके प्रभूत प्राकृतिक साधन हमारे लिये एक चुनौती हैं। राजस्थान की सरकार और निवासियों ने इस चुनौती को दृढ़तापूर्वक स्वीकार कर लिया है और अपनी प्राचीन परम्परा के अनुसार यह प्रदेश औद्योगिक विकास की ओर भी मजबूती और शान के साथ अग्रसर हो रहा है।

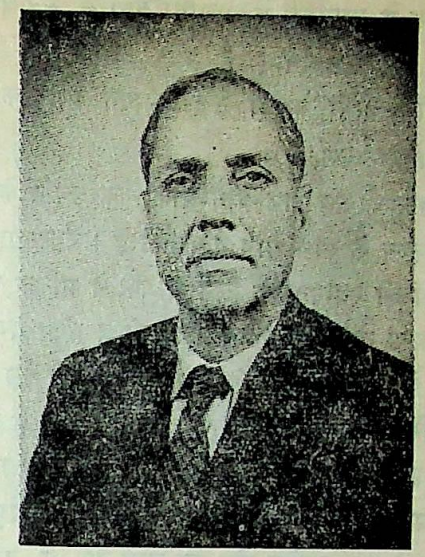

लेखक

औद्योगिक विकास के लिये कुछ आधारभूत सुविधायें आवश्यक होतीं हैं, जैसे शक्ति, जल, यातायात के सुलभ साधन, कच्चे माल और खनिज पदार्थों की सुलभता, पूंजी, राजकीय सहायता आदि। प्रथम पंचवर्षीय योजना के काल में राजस्थान में इनमें से कुछ साधन उपलब्ध नहीं थे और कुछ का विकास और उपयोग नहीं किया गया था। इस प्रदेश में पूंजी की तो कमी कभी भी नहीं रही है। इसके सपूत सेठों ने इस प्रदेश के बाहर अपनी पूंजी लगाकर देश की आर्थिक और औद्योगिक उन्नति में महान योग दिया है, किन्तु अन्य सुविधायें न होने के कारण वे इस प्रदेश के विकास की ओर ध्यान नहीं दे सके।

किन्तु राज्य सरकार ने द्वितीय और तृतीय योजना काल में इस प्रदेश में औद्योगिक उन्नति के लिये वातावरण तैयार किया और उद्योग धन्धों की स्थापना के हेतु सक्रिय कदम उठाये। गंगा नहर और चम्बल नदी का उपयोग मरुस्थल को उपजाऊ मैदान बनाने में किया गया। चम्बल और भाखरा की महत्त्वपूर्ण जल विद्युत योजनाओं ने इस प्रदेश को हरियाली तथा प्रकाश से भर दिया है। सिंचाई और कृषि के क्षेत्र में इन योजनाओं के क्रांतिकारी परिणाम सामने आये हैं। गन्ना, कपास और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलहन के उत्पादन में आगामी वर्षों में महत्वपूर्ण वृद्धि होने की संभावनाएं हैं और उन पर आधारित उद्योगों—चीनी, कपड़ा, तेल-उत्पादन आदि का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

वस्तुत: अब राजस्थान औद्योगिक प्रगति के पथ पर दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ चुका है। राजस्थान सरकार उद्योगों की स्थापना के लिये अधिक से अधिक ऋण, भूमि तथा अन्य सुविधाएं प्रदान कर रही है। सौभाग्य से राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री सुखाड़िया जी इस प्रदेश के औद्योगिक विकास में अत्यन्त रूचि लेते हैं और उनसे सदैव इस क्षेत्र में प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता रहा है।

आज राजस्थान के वे उद्योगपति भी, जो पूरे देश के व्यवसाय तथा उद्योग क्षेत्र पर छाये हुए हैं, इस बात के लिये कटिबद्ध हो गये हैं कि उनका 'देश' राजस्थान भी औद्योगिक रूप से विकसित हो। उनके सहयोग और राज्य सरकार के प्रोत्साहन से हम आशा कर सकते हैं कि निकट भविष्य में ही यह प्रदेश औद्योगिक दृष्टि से अग्रणी राज्यों की श्रेणी में आ जायगा।

भारत के इस मरुस्थल कहे जाने वाले भू-भाग में अपार खनिज सम्पत्ति है। खनिज-सम्पत्ति की दृष्टि से राजस्थान ही एक ऐसा राज्य है जो दूसरों से अधिक समृद्ध है। तांबा, सीसा, अल्युमिनियम, जस्ता, भूरा कोयला जैसे खनिज पदार्थों से सम्बन्धित कई उद्योग यहां चल रहे हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई ऐसे भूगर्भ स्थित खनिज पदार्थ हैं, जिनके बारे में सर्वेक्षण हो रहा है। जैसलमेर में तेल के स्रोत पाये जाने की पूर्ण आशा की जाती है तथा अन्य क्षेत्रों में भी खनिज पदार्थों पर आधारित उद्योगों की स्थापना की अत्यन्त उज्ज्वल सम्भावनाएं हैं।

हमें राजस्थान के औद्योगिक विकास पर विचार करते हुए इस बात भी बराबर ध्यान रखना होगा कि बड़े उद्योगों के साथ-साथ ही लघु और कुटीर उद्योगों का भी विकास किया जाय, क्योंकि इस प्रदेश में व्यापक रूप से फैली हुई बेकारी और गरीबी को दूर करने का यही एक मात्र उपाय है। लघु उद्योगों को स्थापित करने का भी राजस्थान में अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है। ऊन, अभ्रक प्लास्टिक और सैनिटरी आदि उद्योगों के लिये कच्चा माल यहां बहुतायत से मिलता है।


# क्वालिटी मिनरल सप्लाई सिंडीकेट

प्रोप्राइटर—सी० डीडवानिया

मिनरल व केमिकल के व्यापारी

## विशेषताएं

सुपर एक्टिवेटेड (Activated) फुलर्स अर्थ सोडियम तथा पोटेशियम बाईक्रोमेट सब प्रकार की Jack Hammers के स्पेअर पार्ट्स्

लिखें—४४ ओल्ड कस्टम हाउस स्ट्रीट,

फोर्ट बम्बई १

तार : Sympathy

फोन : २५१८३५




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योगों का निरन्तर विकास

राजस्थान के उद्योग मंत्री

श्री हरिश्चन्द्र

आज जहां पुरानी मान्यताएं एवं कसौटियां विघटित हो रही हैं, वहां हमें जीवन के विषय में, दूरदर्शितापूर्ण एवं व्यापक-दृष्टि, से जो विज्ञान के प्रकाश में दूर तक देखने की क्षमता रखती है, राष्ट्रीय-स्तर पर नये सिरे से सोचना और समझना पड़ रहा है।

## उद्योगों का विकास

प्रारम्भिक स्थिति में उद्योग विकास के लिए राजस्थान में हम संपूर्ण उपलब्ध साधनों का उपयोग नहीं कर पाये, और इसी कारण औद्योगिक विकास में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर सके। हमारे अधिकांश प्रयत्न अर्थाभाव के कारण अपेक्षित मात्रा में सुपरिणाम नहीं ला पाये। उद्योगों की स्थापना का जहां तक प्रश्न है, राज्य में, मोटे तौर पर, कुछ यूनिटों को छोड़कर योजना के प्रथम चरण में अन्य कुछ भी स्थापित नहीं हुआ। राजस्थान-राज्य की एकी-करण-स्थापना के समय यहां केवल १२००० किलोवाट बिजली उपलब्ध थी।

ऐसी स्थिति में हमारे लिये आवश्यक था और हमें करना पड़ा, जयपुर, भरतपुर, अलवर और जोधपुर में ४ स्थानों पर चार स्टीम स्टेशन स्थापित करने पड़े। इससे, हमारे बिजलीघरों की उत्पादन-क्षमता में जो वृद्धि हुई, उससे बिजली की आवश्यकता आंशिक रूप में ही पूरी हो सकी। गांधीसागर बांध, १९६१ में एक उल्लेखनीय एवं बड़ी मांग को पूरी कर सका है। गांधीसागर से राजस्थान को ८०,००० किलोवाट बिजली प्राप्त होती है। इसी प्रकार, राजस्थान के उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी-क्षेत्रों में भाखरा से बिजली पहुँचाई जा रही है और इस क्षेत्र में संपूर्ण उपलब्ध बिजली, कुल मिलाकर, लगभग १७००० किलोवाट है, जिसमें से १६००० किलोवाट का सदुपयोग हम कर रहे हैं।

बिजली की बढ़ती हुई मांग को सामने रखते हुए दो और बड़े बिजली उत्पादन केन्द्र, राणाप्रताप सागर और कोटा बांध, शीघ्र ही प्रारम्भ किये जाने वाले हैं। इन दोनों बांधों से मिलने वाली बिजली अनुमानतः ७५,००० किलोवाट है। सतपुड़ा थर्मल प्रोजेक्ट में भी राजस्थान भागीदार है। इससे १०० मेगावाट (एक लाख किलो वाट) बिजली चौथी योजना के प्रारम्भ में उपलब्ध हो सकेगी। औद्योगिक स्थापना के उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमने राणा प्रताप सागर पर २०० मेगावाट का (और अब ४०० मेगावाट) एटोमिक पावर प्लांट स्थापित करने का निश्चय किया है। इसका सम्पूर्ण उत्पादन राज्य के अपने विकास के लिए उपलब्ध किये जाने की योजना है। केन्द्रीय जल बिजली आयोग ने यह आश्वासन दिया है कि एटोमिक बिजली-प्लांट की उत्पादन क्षमता में दुगुनी वृद्धि पांचवीं-योजना के प्रारम्भ तक सम्भव हो सकेगी।

इन केन्द्रों के अतिरिक्त बीकानेर में पलाना कोयला खान पर, एक बिजली-बांध का निर्माण करने पर भी सरकार गंभीरतापूर्वक विचार कर रही है।

बिजली की बढ़ती हुई मांग के प्रति सरकार पूर्णतः सजग है और राज्य में उपलब्ध साधनों के समुचित उप-योग के आधार पर इस मांग को पूरा करने के लिये अपने सीमित साधनों के अन्तर्गत, सरकार बहुत प्रयत्न-शील है। आने वाले वर्षों में हमें आशा है कि राज्य में औद्योगिक विकास के लिये आवश्यक बिजली का अभाव नहीं रहेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान के अधिकांश उद्योग, राजस्थान से बाहर, आर्थिक स्थिरता की खोज में गये और उन परिस्थितियों में एवं तत्कालीन वातावरण में आवश्यक सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण राजस्थान औद्योगिक विकास से वंचित रहा। इस स्थिति को सामने रखते हुए, राजस्थान में औद्योगिक विकास एवं उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक हो गया है।

## विभिन्न उद्योगों का विकास

एकीकृत राजस्थान की स्थापना के समय राजस्थान में बड़े औद्योगिक केन्द्रों की संख्या में बहुत कम थी। यह गर्व का विषय है कि पिछले कुछ ही वर्षों में स्थापित औद्योगिक केन्द्र क्रमशः नेशनल इन्जीनियरिंग इन्डस्ट्रीज, (नेशनल बाल बीयरिंग) जयपुर मेटल्स एण्ड इलेक्ट्रीकल्स, मान इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन ने प्रारम्भ में, अपनी उत्पादन क्षमता में विकास किया और टैक्सटाइल मिलों का भी आधुनिकीकरण एवं विकास हुआ है। नाइलोन जैसे उत्पादनों के लिये बहुत से उद्योगों को मान्यता दी गई— इनमें कास्टिक सोडा, रेलवे वैगन और वूल टाप्स हैं। सन् १९५९ में राजस्थान में कुल १० टैक्सटाइल मिलें थीं— इनके अतिरिक्त ७२००० के लक्ष्य को पूरा करने के लिए राजस्थान में ९ कताई केन्द्र थे। ये कताई केन्द्र राज्य के विभिन्न भागों में निजी आर्थिक क्षेत्र के अन्तर्गत काम करते रहे। अन्य भारी उद्योगों के लिए कोटा क्षेत्र को चुना गया है, जहां डी. सी. एम. ने भी उत्पादन में वृद्धि की है और इसी प्रकार अन्य उद्योगों ने भी उल्लेखनीय प्रगति की है। केन्द्रीय सरकार ने ७१ उद्योगों को लाइसैंस दिये हैं। इनमें उदयपुर के जिंक स्मैलटर के विस्तार एवं एक पिग आइरन प्लांट की स्थापना का उल्लेख भी अप्रासांगिक नहीं होगा। सहकारिता के अन्तर्गत उदयपुर में जयसमंद के आसपास एक फर्टीलाइजर फैक्ट्री की स्थापना की संभावना पर फरटीलाइजर कारपोरेशन आफ इण्डिया विचार कर रहा है। कोटा में भी फर्टीलाइजर फैक्ट्री की स्थापना का काम शीघ्र पूरा किया जायगा। प्रेसीशन इन्स्ट्रूमेंट्स फैक्ट्री का निर्माण कार्य भी प्रगति पर है।

हम इस बात के लिए पूर्णतः प्रयत्नशील हैं कि राज्य में उत्पन्न होने वाली ऊन के कच्चे माल का पूरा उपयोग किया जाय। निजी क्षेत्र के अन्तर्गत, आवागमन के साधनों के सुलभ होने के कारण कोटा, अजमेर, जयपुर एवं जोधपुर में ही अधिकांश उद्योग विकसित हो रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के लिए कोश स्वीकार किये गये हैं। इन क्षेत्रों में बिजली, पानी, आवागमन आदि सुविधाओं का प्रबन्ध किया गया है। इन औद्योगिक क्षेत्रों में बसने वालों को मकान बनाने आदि के लिए सस्ती जमीनें रियायती दरों पर स्वीकृत की गई हैं। राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में भी लघु उद्योगों की स्थापना का सरकार विचार कर रही है। इसके अतिरिक्त ६६ स्थानों पर उद्योग पुरियों का निर्माण किया गया है। सहायक उद्योगों को भी अपने कारखाने बढ़ाने के लिये रानी और फालना आदि में सरकार ने आवश्यक सुविधायें दी हैं। राज्य के विभिन्न स्थानों पर ३५३ शैड वाली ११ औद्योगिक समुदायों की स्थापना भी की जा चुकी है। इनमें साइकिल, विभिन्न प्रकार की मशीनें कास्टिक का सामान बिजली के उपकरण आदि बनते हैं।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक विकास के लिए ५.३७ करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया था, जिसमें से ३.२५ करोड़ रुपया व्यय हुआ। उद्योगों को प्रोत्साहन और सुविधा देने के लिए बिजली, भूमि, बिक्रीकर एवं चुंगी सम्बन्धी अनेक रियायतें दी गईं। इसके साथ-साथ राजस्थान सरकार का ध्यान खनिज विकास की ओर भी रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में औद्योगिक विकास के लिए पहले की अपेक्षा बहुत अधिक ८९५ लाख रुपये की धन राशि स्वीकार की गई। विद्युत के विकास के लिए तथा संचार एवं परिवहन के लिए भी करीब २ करोड़ रुपये की योजना स्वीकृत हुई है। जो वस्तुतः औद्योगिक विकास को बहुत सहायता देगी। ये आशा की जाती है कि तीसरी योजना के अन्त तक विद्युत शक्ति में २५३ हजार किलोवाट की वृद्धि होगी और ३०३ अतिरिक्त कस्बों में विद्युतीकरण किया जा सकेगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## वित्तीय सुविधायें और ऋण

राजस्थान फाइनेंस कारपोरेशन एवं आई. एफ. सी. के सहयोग के बावजूद भी औद्योगिक विकास के लिये आवश्यक साधनों के अभाव के प्रति राज्य सरकार पूर्णत: सजग है।

अब तक १२० लाख से भी अधिक रुपया लघु-उद्योगों के संचालकों को लघु-उद्योगों की स्थापना एवं विकास के लिये दिया जा चुका है। स्टेट बैंक आफ इण्डिया ने एक पायलट इन्टैंसिव-स्कीम प्रारम्भ की है, जिसके अन्तर्गत जोधपुर एवं जयपुर में लघु उद्योगों को ऋण स्वीकृत किये जायेंगे।

राज्य सरकार ने एक स्माल इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन की स्थापना कच्चे माल के उपलब्ध कराने के लिये एवं उस पर नियन्त्रण रखने के लिए की है, क्योंकि औद्योगिक संचालनालय के पास बहुत काम था। राज्य में अधिक औद्योगिक-विकास हो ताकि 'एक्सपोर्ट प्रोमोशन वस्त्र-उत्पादन, एवं रेलवे की प्रतियोगिता में राजस्थान भी हिस्सा ले सके एवं इनकी मांग को पूरा किया जा सके। इस सम्बन्ध में, उद्योगों की स्थापना एवं विकास के लिए सरकार पूरी तरह सुविधायें एवं साधन उपलब्ध कराने के लिए प्रयत्नशील थी।

राजस्थान में लघु-उद्योगों की स्थापना एवं उसके विकास की आवश्यकता को समझते हुए इस महत्वपूर्ण तथ्य पर भी ध्यान देना जरूरी है कि उभरते हुए बड़े उद्योगों एवं लघु-उद्योगों के बीच परस्पर सहकार एवं सहयोग की भावना जरूरी है। बड़े उद्योग, लघु-उद्योगों के माल की खपत में जहां योग देते हैं, वहां वे उन्हें (लघु-उद्योगों में) कच्चा माल एवं आवश्यक सामान देकर भी उनके विकास में सहायक हो सकते हैं। कृषि-उत्पादन सीमित है क्योंकि पानी का अभाव है और इस अभाव से हम सभी भली भांति परिचित हैं। लोगों को निश्चित रूप से काम मिलने की संभावना का बराबर निर्माण करना है और सबके लिये रोजगार का इन्तजाम करना जरूरी होगा, क्योंकि औद्योगिक कारखानों में मिलने वाला रोजगार औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त लोगों तक ही सीमित रहेगा।

परम्परागत हाथ करघा उद्योग एवं हस्त कला उद्योग को विशेषत: प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि बेकारी रोकी जा सके, कारीगरों के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाया जा सके एवं कलाकारों के हितों की रक्षा की जा सके। हस्तकला के लिये आधुनिक उपकरणों के उपयोग का प्रशिक्षण देने एवं कलात्मक विकास, उत्पादन एवं क्रय-विक्रय को और अधिक उपयोगी बनाया जा सके, इसलिए अनेक संस्थाओं तथा मारकेटिंग एवं विस्तार केन्द्रों की स्थापना माल की किस्म एवं डिजाइनों की विविधता के लिये की गई है। ये संस्थाएं कलाकारों को ऐसा आवश्यक सहयोग देने का काम तत्परतापूर्वक करती हैं, जो कि कलाकार स्वयं नहीं कर पाते। लघु-उकोगों के विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से औद्योगिक संचालनालय ने एक 'न्यूकिलएस' तैयार कर लिया है, जो एक्सपोर्ट प्रामीशन, हस्तकला एवं अन्य कलात्मक-उपकरणों के उत्पादन को विशेषत: प्रोत्साहित करेगा। ● ●


**अजुध्या टैक्सटाइल मिल्स लिमिटेड**

**आज़ादपुर दिल्ली-९**

**का मतलब है ! !**

१. धोती ४. ग्रे मार्किन ७. दुसूती
२. साड़ी ५. ब्लोच शार्टिंग ८. माजरी
३. चादर ६. पापलीन ९. सेलुलर शर्टिंग
१०. लांग क्लाथ रंगीन

(क) बढ़िया सुन्दर रंगमें
(ख) आकर्षक डिजाइन

टेलीफोन : २२४५११ तार
२२२३४८ अजुध्या
दिल्ली-९




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारी पंचवर्षीय योजनाएं—विचार और व्यवहार

प्रो० प्रेमनारायण माथुर, वनस्थली

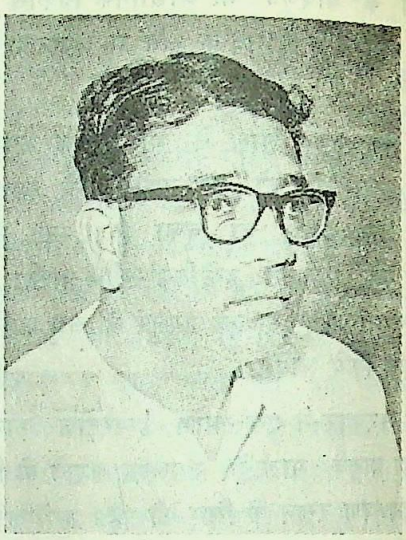

लेखक

आज देश में चौथी पंचवर्षीय योजना के निर्माण के सम्बन्ध में चर्चायें चल रही हैं। महत्त्वपूर्ण विषय जिन पर प्रायः चर्चा होती है वे ये हैं : योजना कितने रुपये के लागत की हो, बड़े पैमाने के भारी उद्योगों को अधिक महत्त्व दिया जाए या कृषि को, मूल्य-स्तर को नियंत्रण में रखने के लिए क्या नीति अपनायी जाये, सार्वजनिक क्षेत्र (पब्लिक सेक्टर) में कितना विस्तार किया जाये और निजी क्षेत्र का क्या स्थान हो आदि ? पर इन प्रश्नों के महत्त्व को अस्वीकार किये बिना, मेरी दृष्टि में एक और प्रश्न है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है लेकिन जिसकी चर्चा जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं होती। वह प्रश्न यह है कि हमारी योजनाओं के पीछे क्या विचार रहे हैं और योजनाकाल के इन बारह वर्षों में हम उन विचारों के अनुसार कहां तक व्यवहार कर सके हैं ? निम्न पंक्तियों में, मैं संक्षेप में इसी सम्बन्ध में कुछ विचार प्रस्तुत करूंगा।

## मूल विचार

हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के पीछे, चाहे वे केन्द्र की हों, राजस्थान की हों या अन्य राज्यों की, जो विचार काम करते रहे हैं, वे इस प्रकार हैं : देश का आर्थिक विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि नियोजन का मार्ग अपनाया जाय। इस नियोजित अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होगा समाजवादी समाज का निर्माण करना, ताकि देश में पूर्णतया न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था स्थापित हो सके; धन और संपत्ति के असमान वितरण में अधिक से अधिक कमी आए और जो पीड़ित और शोषित वर्ग है उसका आर्थिक स्तर ऊंचा हो। यह समाजवादी अर्थव्यवस्था भी जनतंत्रीय तरीके से स्थापित की जाए, जिसका एक परिणाम यह होगा कि अर्थव्यवस्था का स्वरूप मिश्रित स्वरूप होगा, जिसमें सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार के व्यवसायों का स्थान रहेगा, यद्यपि सार्वजनिक व्यवसाय का हिस्सा बढ़ता जाएगा। इस प्रकार की मिश्रित अर्थ व्यवस्था की सफलता के लिए यह मानकर चला जाता है कि देश का व्यवसायी वर्ग योजना के अनुसार आर्थिक विकास करने में अपना पूरा पूरा सहयोग देगा और अन्दर ही अंदर अपने स्वार्थों के लिए छिपी लड़ाई नहीं लड़ेगा। संक्षेप में ये कुछ विचार हैं, जिनकी पृष्ठ भूमि में हमारी पंचवर्षीय योजनाओं का निर्माण होता रहा है। अब जब हम अपनी चौथी योजना के निर्माण के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं तो अन्य प्रश्नों के साथ साथ हमें इस आधारभूत प्रश्न पर भी विचार करना चाहिये कि अब तक जिन मूल विचारों को लेकर हमने अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करना चाहा है, उनमें हमें कहां तक सफलता मिली है।

## जनता की उदासीनता

सबसे पहले हम इस प्रश्न को ही लें कि देश के आर्थिक विकास के लिए नियोजन का मार्ग अपनाना आवश्यक है। हमने इस मार्ग का अनुसरण तो किया है पर देश में हम अभी तक वह हवा पैदा नहीं कर सके हैं जिससे कि हमारे योजना सम्बन्धी कार्यक्रमों में जनता का सहज सहयोग मिले। योजना के अन्तर्गत चलने वाले

सम्पदा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


आधुनिक
फैशन की
गति के
अनुरूप

सेन्चुरी के

फ़ैशन फ़ेब्रिक्स

अति महीन कताई और उच्च कोटि की बुनाई के कपड़े
परमसुख धोतियां लेक्स ब्यूटी मलमल
सेन्चुराईज़्ड प्रीश्रंक शर्टिंग और पॉपलीन

दी सेन्चुरी स्पिनिंग एन्ड मैन्युफैक्चरिंग कं० लि० बम्बई-१

NBS/CM/114


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रमों को आम जनता सरकारी कार्यक्रमों के रूप में ही देखती है। इसका एक कारण तो जिस प्रकार हमारी योजनाओं का निर्माण किया जाता है, वह यह है कि उनके निर्माण में जनता का सहयोग बहुत कम लिया जाता है। हमारी सरकार भी कहने के लिए तो यह कहती है कि देश की पंचवर्षीय योजनायें समूचे राष्ट्र की योजनायें हैं, पर उसका व्यवहार इसके सर्वथा प्रतिकूल होता है। योजनाओं के निर्माण और कार्य-संचालन से अपने राजनैतिक स्वार्थों को पुष्ट करने की सरकार की चेष्टा बराबर रहती है। इस सबका सार यह है कि यद्यपि हमारी आर्थिक नीति का बाहरी आवरण राष्ट्रीय योजनाओं का है, पर वास्तव में और भावना में वह चीज नहीं है और इसी का यह परिणाम है कि **हमारी योजनाओं के प्रति जो राष्ट्रीय निष्ठा का भाव देश की जनता में उत्पन्न होना चाहिए था, वह नहीं हो सका है।**

इस स्थिति के निवारण का एक उपाय यह है कि राष्ट्रीय सरकार की देश में स्थापना हो। देश में राजनैतिक दल रहें। अपनी अपनी विचारधारा के आधार पर वे विधान परिषदों, विधान सभाओं और संसद के चुनाव लड़ें, पर चुनाव हो जाने के बाद सब दलों के प्रतिनिधि जिनकी जनतांत्रिक व्यवस्था और आर्थिक विकास की नियोजन पद्धति में आस्था है, मिलकर देश के आर्थिक विकास का कार्यक्रम स्वीकार करें और उस कार्यक्रम को चलाने के लिए एक से अधिक उन दलों की, जो उपर्युक्त मान्यतायें रखते हैं राष्ट्रीय सरकार और राज्यों में एक से अधिक दलों की मिली जुली सरकारें बनें।

## समाजवादी समाज ?

दूसरा विचार हमारी योजनाओं से सम्बन्धित समाजवादी समाज का है। देखना यह है कि क्या हमारी योजनाओं के फलस्वरूप ऐसे किसी समाज के निर्माण की ओर हम अग्रसर हुए हैं। यहां एक स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। समाजवादी समाज की एक मात्र पहचान यह है कि देश के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन में प्रभुत्व और वर्चस्व पूंजीपति वर्ग का है या आम जनता का। इस दृष्टि से यदि देखा जाए तो इसमें कोई शंका नहीं होनी चाहिए कि बावजूद सब नियंत्रणों के हमारे सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन में पूंजीपति वर्ग का प्रभुत्व स्वतन्त्रता के बाद कम नहीं हुआ है। शायद बढ़ा ही है। इसका अर्थ यह है कि समाजवादी समाज की ओर हम वास्तव में आगे नहीं बढ़े हैं। जब मैं यह कहता हूं तो इसका अपने आप से यह अर्थ नहीं निकलता कि देश में सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता के लिए कोई प्रयत्न ही नहीं हुए हैं। किसी हद तक वे प्रयत्न हुए हैं और थोड़ा बहुत उनका परिणाम भी आया माना जा सकता है, पर वह परिणाम इस मात्रा में नहीं आया है कि जिससे देश की अर्थ-रचना के मूल चित्र में कोई आधारभूत परिवर्तन आ गया हो।

## मिश्रित अर्थ-व्यवस्था

तीसरा बड़ा विचार हमारी योजनाओं के पीछे मिश्रित अर्थ-व्यवस्था है और हमारी सरकार एवं हमारे योजनाकार इस अर्थ व्यवस्था को आगे भी बनाए रखना चाहते हैं। पर इस मिश्रित अर्थ व्यवस्था के आधार स्वरूप हम देश के पूंजीपति वर्ग का हमारी योजनाओं को कार्यान्वित करने में हार्दिक सहयोग देखना चाहते थे। वह सहयोग हमें नहीं मिल रहा है। इस सहयोग के अभाव का सबसे ताजा उदाहरण मूल्यों को न बढ़ने देने में उनसे अपेक्षित सहायता का नहीं मिलना है। प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने जिस कड़ाई का रुख इस सम्बन्ध में हाल में अपनाना चाहा है और उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन में भी राज्य हिस्सा ले, इस विषय में जो उन्होंने अपना मन्तव्य प्रकट किया है, वह इस स्थिति को खुले शब्दों में स्वीकार करता है कि कुल मिलाकर देश का व्यापारी और व्यवसायी वर्ग जनहित का ध्यान नहीं रखता है और उसका सीधा परिणाम यह हो रहा है कि मिली-जुली अर्थ व्यवस्था का हमारा यह प्रयोग सफल नहीं हो रहा है।

उपर्युक्त पंक्तियों में मैंने यह बताने की चेष्टा की है कि हमारी पंचवर्षीय योजनाओं के पीछे जो मुख्य विचार काम कर रहे थे, उनके अनुसार वास्तव में व्यवहार नहीं हो सका है। जब हम चौथी पंचवर्षीय योजना के निर्माण के विषय में विषय कर रहे हैं तो हमें इस पृष्ठभूमि को भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिये। ■ ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थानी नागरिक की आय के साधन

श्री मदनलाल वर्मा, राजकीय कालेज, दौसा

अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त करने से पूर्व राजस्थान राजाओं, सामंतों, सरदारों और ठिकानेदारों की दुर्नीति का शिकार रह चुका है। आलस्य, प्रमाद और पारस्परिक वैमनस्य के कारण उन्हें अपने राज्यों या ठिकानों के आर्थिक विकास के लिए अवकाश ही नहीं मिला। समुचित अवसर एवं प्रोत्साहन के अभाव में राज्य की औद्योगिक व व्यावसायिक प्रतिभा अपने उद्यम से वीर भूमि राजस्थान को सुवासित नहीं कर सकी। उसे अन्य राज्यों को ही अपनी कर्मभूमि बनाना पड़ा। परिणामतः राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान बनी रही। सन् १९५१ की जनगणना इस कथन की पुष्टि करती है :

## राजस्थान में जीवन यापन के साधन

| नाम आजीविका | आश्रित जनसंख्या | कुल जनसंख्या का प्रतिशत | भारतीय प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| १. कृषि व कृषि से | | | |
| सम्बन्धित व्यवसाय | १११ ला. | ६९.६९ | ६९.८ |
| (i) काश्त | ६९ ,, | ४३.०४ | ४६.९ |
| (ii) बेतेदार | ३५ ,, | २२.०१ | ८.९ |
| (iii) कृषक श्रमिक | ५ ,, | ३.०३ | १२.५ |
| (iv) लगान पर आश्रित | २ ,, | १.६१ | १.५ |
| २. कृषि भिन्न कार्य | ४५ ला. | ३०.३१ | ३०.२० |
| कृषि के अतिरिक्त | | | |
| १. उत्पादन कार्य | १५ ,, | ९,३४ | १०.०६ |
| २. व्यापार | ११ ,, | ६.८५ | ६.०० |
| ३. यातायात | २ ,, | १.०६ | १.०६ |
| ४. अन्य कार्य | २१ ,, | १३.०६ | १२.०० |

*स्रोत : राष्ट्रीय व्यवहारिक अर्थशास्त्र अनुसंधान

इस प्रकार से राज्य की ७० प्रतिशत जनता जीवन निर्वाह के लिये कृषि व कृषि से सम्बन्धित व्यवसायों पर आश्रित थी। केवल ३०.३७ नागरिक कृषि-भिन्न कार्यों पर आश्रित थे। राज्य के एकीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप पूर्ववर्ती रियासतों की राजधानियों का सौभाग्य सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। उन श्री सम्पन्न नगरों के स्थानाभाव की पूर्ति नहीं की जा सकी। काम के अभाव में उन वीरान नगरों के नागरिकों ने गांवों की ओर कूँच कर दिया। इस अभूतपूर्व एवं आकस्मिक पलायन के कारण राज्य की ग्रामीण व कृषि पर आश्रित जनसंख्या में और भी वृद्धि हुई।

सन् ५१ में राज्य के १५९.७ लाख व्यक्तियों में से केवल ८५ लाख व्यक्ति (१५ से ६४ वर्ष की आयु वाले) काम करने योग्य थे, किन्तु उस वर्ष वस्तुतः ८९ लाख या ५७.३ प्रतिशत व्यक्ति कार्य कर रहे थे। भरपूर परिश्रम करने के उपरान्त भी राजस्थानी नागरिक को जीवन यापन के लिए समुचित आय प्राप्त नहीं होती। इसीलिए कुछ अक्षम व अशक्त नागरिकों को भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए श्रम सीकर बहाना पड़ता है। उस वर्ष राज्य के ये नागरिक निम्नलिखित साधनों से आजीविका उपार्जित कर रहे थे :

## राजस्थानी नागरिक के आय के साधन

| नाम साधन | आय उपार्जित करने वाले नागरिकों की संख्या | उपार्जित करने वाले नागरिकों का प्रतिशत | भारतीय प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| कृषि व कृषि से सम्बन्धित कार्य | ६९.७ लाख | ८२.१ | ७२.४ |
| खनन व उद्योग | ५.२ ,, | ५.९ | १०.६ |
| व्यापार, यातायात आदि | ४.५ ,, | ५.४ | ७.७ |
| अन्य सेवा कार्य | ५.६ ,, | ५.६ | ९.३ |
| | ८५.०० ,, | | |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि राज्य के नागरिकों की आय का प्रधान साधन कृषि व उससे सम्बन्धित व्यवसाय ही हैं। कृषि भिन्न उद्योगों व सेवाओं का अभी तक समुचित रूप से विकास नहीं हुआ है।

सन् ६१ में राज्य के २०१.५ लाख नागरिकों में से ११३ लाख नागरिक मात्र जीविकोपार्जन योग्य थे। इन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिकों में २५.५१ लाख कृषि भिन्न कार्यों द्वारा आजीविका प्राप्त कर रहे थे। सन् ७१ तक कृषि भिन्न कार्यों द्वारा आय प्राप्त करने वाले नागरिकों की संख्या १४२ लाख तक पहुँच जाने की संभावना है।

## आय के कृषि-भिन्न साधन व उनमें लगे हुए व्यक्ति

| नाम साधन | कार्य करने वाले व्यक्ति (हजारों में) संभावित | | वृद्धि |
|---|---|---|---|
| | १९६१ | १९७१ | |
| कारखाने | ५७ | २९७ | २४० |
| अन्य छोटे उद्योग | ७१४ | ९१४ | २०० |
| खनन कार्य | ९६ | १३० | ३४ |
| निर्माण कार्य | ८४ | १५९ | ७५ |
| अन्य सेवा कार्य | १६०० | ३३१० | ७१० |
| | २५५१ | ३८१० | १२५९ |

इस प्रकार से १९६१ में कृषि भिन्न कार्यों से आय प्राप्त करने वाले नागरिकों का प्रतिशत १७.९ से बढ़कर २२.५७ होगया। सन् ७१ में भी इस प्रतिशत में वृद्धि होने की सम्भावना है। कोटा राजस्थान का कानपुर बनने वाला है। कोटा के अलावा जयपुर, अजमेर, जोधपुर आदि नगरों में भी औद्योगिक विकास के पर्याप्त सम्भावनाएँ हैं। जैसलमेर क्षेत्र में खनिज तेल की प्राप्ति पर उस क्षेत्र के लोग कृषि भिन्न कार्यों द्वारा आजीविका का उपार्जन आरम्भ कर देंगे।

गाँवों में कार्य करने वाले नागरिकों (७० लाख) में से ७५.७१% नागरिक कृषि कार्य द्वारा, ८.५१% नागरिक कृषि श्रम द्वारा व शेष १५.८७% नागरिक अन्य कार्यों द्वारा अपनी आय प्राप्त करते हैं। राजस्थानी किसानों के खेत भारतीय खेतों से अधिक विस्तृत हैं। अतः उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों का भी सहयोग प्राप्त करना पड़ता है। वर्षा की अनिश्चितता और सिंचाई सुविधाओं के अभाव में किसान को वर्ष पर्यंत कार्य नहीं मिलता है। अतः अपनी आय में वृद्धि करने के लिए उसे अन्य सहायक धन्धों का आश्रय लेना पड़ता है। पशुपालन, रस्सी निर्माण दुग्ध व घी, ईंधन विक्रय आदि उसके मुख्य सहायक धन्धे हैं। राजस्थानी खेतों पर १५% व्यक्ति आवश्यकता से अधिक लगे हुए हैं। यदि इन व्यक्तियों को खेतों पर से हटा दिया जाय तो भी कृषि उपज पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा। इन व्यक्तियों को अन्यत्र रोजगार देने पर किसान की प्रति व्यक्ति आय में अवश्य वृद्धि होगी।

४० प्रतिशत श्रमिकों के पास अपने खेत हैं। इन खेतों से उन्हें करीब २७ प्रतिशत आय प्राप्त होती है व ११३ दिन कार्य मिलता है। ११५ दिनों तक इन्हें अन्य लोगों के खेतों पर कार्य मिल पाता है। शेष १०० दिन बेकार रहना पड़ता है अतः इन दिनों वे रोजगार की तलाश में निकटवर्ती राज्यों की ओर प्रयाण जाते हैं। व्यापारिक फसलों के प्रोत्साहन, सिंचाई सुविधाओं की वृद्धि एवं दोहरी फसलों के प्रचलन ने इनके बेरोजगारी के समय में काफी कमी कर दी है।

कृषि भिन्न कार्यों द्वारा आय उपार्जित करने वाले ग्रामीण नागरिक भेड़, ऊंट व बकरी की ऊन से क्रमशः कम्बल, भाखले (कम्बल की तरह ओढ़ने का वस्त्र) छांटी (अनाज भरने का विशेष प्रकार का बोरा) व गाढ़ा आदि बनाते हैं। विभिन्न ऋतुओं में वे लोग प्रकृति प्रदत्त फलों तथा कैर, सांगर, बेर, खींपोली आदि का विक्रय करते हैं। खादी के प्रचार के कारण कुछ लोग खादी उद्योग में भी लगे हुए हैं। करीब २ लाख व्यक्ति लगान, सूदखोरी व व्यापार द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं।

शहरों या कस्बों में २५ प्रतिशत से अधिक कार्यक्षम नागरिक कृषि कार्य नहीं करते हैं। शेष कार्यक्षम नागरिक व्यापार उद्योग-धन्धों व सेवा कार्य द्वारा अपनी आजीविका का उपार्जन करते हैं। आय के मुख्य साधन सिंचाई, धुलाई, छपाई, मिट्टी व धातु के बर्तनों का निर्माण, जूतों की बुनाई, भवन निर्माण, दुग्ध विक्रय आदि हैं। सन् ५१ में नगरों व कस्बों में करीब १० लाख नागरिक जीविकोपार्जन के लिए इन विभिन्न उद्योगों में लगे हुए थे। राज्य में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनकी आय का एक मात्र साधन यजमान वृत्ति है। कुछ लोगों को अन्य राज्यों में निवास करने वाले स्वजनों से नियमित रूप से द्रव्य प्राप्त होता रहता है, क्योंकि वे लोग अपने परिजनों को अपने साथ नहीं ले जाते हैं।

(शेष पृष्ठ ५८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान के मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति

श्री संजय

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन ने कुछ वर्ष पहले (१९५८-५९) विभिन्न राज्यों के मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति की जांच पड़ताल की थी।

इस जांच पड़ताल के आधार पर राजस्थान के तीन प्रमुख नगरों के मध्यम वर्ग की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी यहां दी जा रही है।

उक्त सर्वेक्षण में मध्यवर्ग की परिभाषा में उन्हें सम्मिलित किया गया है जो शहरी क्षेत्रों के कृषीतर धन्धों में मुख्यतया बौद्धिक काम करते हैं। उपर्युक्त परिवारों में से ९५ प्रतिशत परिवारों की मासिक आय ५०० रु. से कम है। भारत के बड़े नगरों में मध्य वर्ग के परिवारों का मासिक आय के अनुसार अनुमानित वर्गीकरण निम्नलिखित है।—:

| मासिक आय रु० | प्रतिशत |
|---|---|
| ०—७५ | ०.७९ |
| ७५—१०० | ३.०८ |
| १००—१५० | १३.१० |
| १५०—२०० | १७.३७ |
| २००—३०० | २४.९९ |
| ३००—५०० | २३.७७ |
| ५००—७५० | ८.७३ |
| ७५०—१००० | ३.६६ |
| १०००—१५०० | २.८३ |
| १५०० या ऊपर | ७.६४ |
| कुल | १००.०० |

हमें उपर्युक्त अंक पढ़ते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और दिल्ली आदि बड़ी आय वाले बहुत बड़े नगर भी इस तालिका में सम्मिलित हैं। स्वभावतः जयपुर, जोधपुर और अजमेर में आय के अनुसार परिवारों की संख्या उपर्युक्त तालिका से भिन्न होगी।

| | जयपुर | जोधपुर | अजमेर |
|---|---|---|---|
| मध्यम वर्ग के परिवारों की अनुमानित संख्या | १८,७०० | ६,६०० | ६,५०० |
| प्रति परिवार औसत कमाने वाले | १.१२ | १.१६ | १.१२ |
| प्रति परिवार मासिक व्यय रु. | ३११ | २८२ | ३६१ |
| प्रति व्यक्ति मासिक व्यय रु. | ४० | ५३ | ६८ |
| प्रति परिवार सदस्य | ४.४ | ५.३ | ५.३ |
| प्रति परिवार औसत आमदनी रु. | ३९८ | ३३० | ३३३ |

उपर्युक्त तालिका से विभिन्न नगरों के नागरिकों के व्यय, आय, जीवन-स्तर तथा विभिन्न मदों पर किए जाने वाले खर्च का ज्ञान होता है। यह अंक पढ़ते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि ये अंक अनुमान मात्र हैं। बहुत से व्यक्ति अपनी आय कम और व्यय ज्यादा बताते हैं। इसलिए सर्वेक्षण कर्त्ताओं को इस बात का ध्यान रखना पड़ता है। बहुत से व्यक्ति अपनी गुप्त आय को प्रगट नहीं करना चाहते। जिस नगर में आराम आदि की सुविधायें ज्यादा होती हैं, वहां उनके कारण कुछ खर्च भी बढ़ जाता है।

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

| विभिन्न मदों पर प्रति परिवार औसत मासिक व्यय | जयपुर | | जोधपुर | | अजमेर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत |
| भोजन, पेय और तम्बाखू | १२०.३० | ३८.७३ | ११९.५८ | ४२.४० | १४०.४० | ३८.८८ |
| रोशनी, ईंधन | १२.७७ | ४.११ | १२.५९ | ४.४६ | १३.३९ | ३.७१ |
| कपड़ा, बिस्तर, जूता | ४६.७१ | १५.०४ | ३८.८१ | १३.०५ | ५६.०६ | १५.५८ |
| घर, बर्तन और फर्नीचर आदि | ४५.६२ | १४.६९ | २७.६८ | ९.८२ | ३१.७४ | ८.७९ |
| विविध | ८५.२० | २७.४३ | ८५.३४ | ३०.२७ | ११९.३२ | ३३.०४ |
| कुल व्यय | ३१०.६० | १००.०० | २८२.०० | १००.०० | ३६१.११ | १००.०० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की वरदायिनी : चम्बल नहर

श्री पाडुंरंग ज्ञानेश्वर आरोले

## सूत्रपात पहले भी

यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से यह योजना स्वाधीनता के बाद में बनी है, फिर भी चम्बल नदी के पानी से बिजली के निर्माण की रचना की और योजनायें बहुत पुरानी हैं। द्वितीय महायुद्ध में जापान के बर्मा पर अधिकार करने के बाद मित्र राष्ट्रों को बर्मा से होने वाला जस्ते का संभरण जब बन्द हो गया, तो अंग्रेजों ने उदयपुर के समीप जावरा के क्षेत्र स्थित खानों से जस्ता प्राप्त करने का विचार किया, किन्तु इसके लिए अन्य बातों के अलावा बिजली की भी आवश्यकता थी। इसकी पूर्ति के लिए उन्होंने चम्बल नदी पर बांध बनाने की योजना बनाई, परन्तु इस दिशा में कुछ कदम उठाने से पूर्व ही बर्मा पर अंग्रेजों ने फिर से अधिकार प्राप्त कर लिया और यह योजना स्थगित करदी गई। युद्ध के बाद प्रसिद्ध इंजीनियर श्रीविश्वेश्वरय्या के परामर्श के परिणामस्वरूप पुरानी होल्कर रियासते ने अपने प्रदेश में चम्बल से बिजली पैदा करने की योजना बनाई। लगभग उसी समय उदयपुर और कोटा रियासतों ने भी चम्बल पर बांध बनाने की योजना तैयार की। आज जहां गांधी सागर बांध बना है, उसी के चार मील ऊपर की ओर होल्कर रियासत ने बांध बनाने की सोची थी। रियासत उदयपुर ने रावतभाटा में (जहां आज राणा प्रताप सागर बांध बन रहा है) और रियासत कोटा ने कोटा के पास ही बांध बनाने की योजना बनाई थी। इन तीनों योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य बिजली का उत्पादन करना था। सिंचाई एक गौण बात थी। इन राज्यों में आपस में कोई सहयोग नहीं था, न उनके प्रयत्नों में एकसूत्रता थी। स्वाधीनता के बाद भारत सरकार के सहयोग से राजस्थान और मध्य-प्रदेश की संयुक्त सरकारों ने इन प्रदेशों में विकास की आवश्यकता ध्यान में रखते हुए चम्बल घाटी के विकास की वृहत् काय योजना प्रथम पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित की।

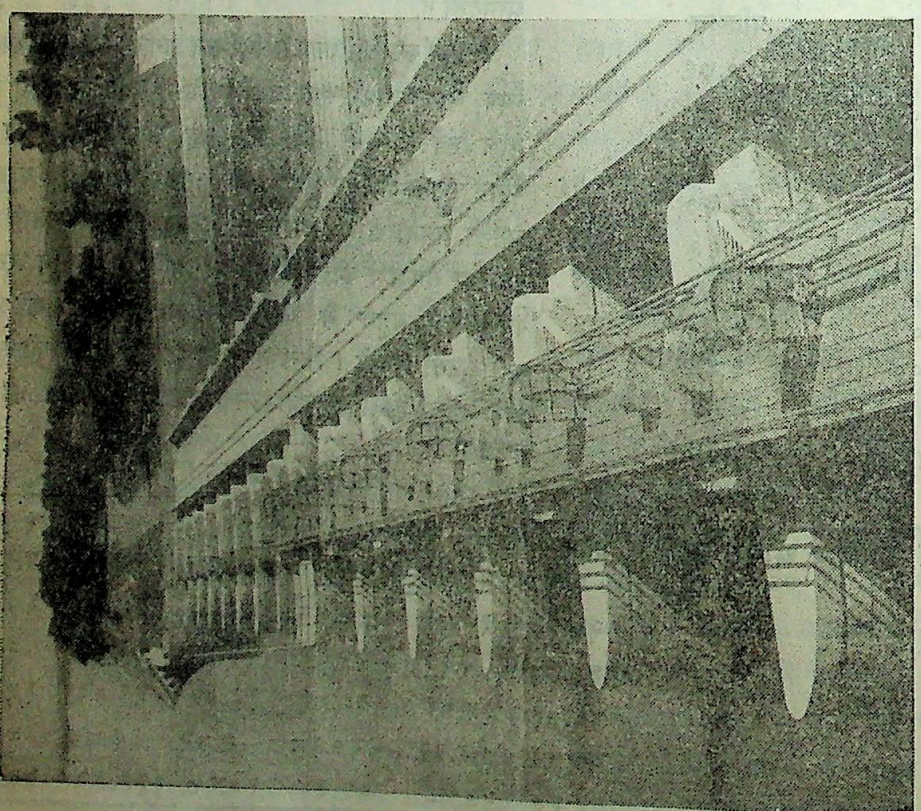

नहर के उद्गम स्थल सतलज पर हरि के बांध

इस योजना के तीन चरण हैं। प्रथम चरण का काम पूरा हो चुका है। और दूसरे और तीसरे चरण का काम शुरू हो गया है, और वह १९६७ में पूरा होगा। प्रथम चरण

(शेष पृष्ठ ५० पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की जाह्नवी : राजस्थान नहर

राजस्थान का यह भाग, जहां आज रेतीले टीलों और झाड़ झंखाड़ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, सदैव ऐसा नहीं था। पुरातात्विक अनुसंधान और प्राचीन भग्नावशेषों से यह पुष्टि होती है कि आज केवल मरु (मृत्य) स्थल के रूप में ज्ञात यह भूखण्ड जीवनदायिनी नदियों का क्रीड़ा स्थल था, जिनके किनारे पर एक समृद्ध सभ्यता पनप रही थी। फिर क्रूर प्रकृति ने उसे इन नदियों से वंचित कर दिया और कालान्तर में इन नदियों की घाटियों में बसे सम्पन्न नगर वीरान हो गये तथा सभ्यता लुप्त हो गई।

मनुष्य की उपेक्षा के फलस्वरूप उच्छृंखल हो गये प्रदेश को स्नेह से सींचकर सभ्यता के पाश में बांधा जा सकता है और उसकी समृद्धि और सम्पन्नता को लौटाया जा सकता है, इसका जीवित प्रमाण १९२८ में बीकानेर रियासत में गंग नहर के निर्माण से मिल चुका था। इस एक नहर ने ही ६६ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई करके राजस्थान के गंगानगर जिले को आज देश का सबसे सम्पन्न और वैभवशाली क्षेत्र बना दिया है, जहां खेत और बाग सोना उगलते हैं।

जब १९४८ में प्रथम बार पंजाब की नदियों के पानी का राजस्थान में उपयोग करने का प्रस्ताव रखा गया, तब उसका स्वागत किया गया और इस कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए यह तय किया गया कि नांगल योजना के साथ ही साथ पंजाब में सतलुज व्यास के संगम पर हरीके में बांध बनाया जाए और राजस्थान नहर का निर्माण आरम्भ कर दिया जाए। हरीके बांध १९५१-५३ में बनकर तैयार हो गया और १९५१ में केन्द्रीय जल एवं विद्युत आयोग ने राजस्थान नहर योजना तैयार करने का काम अपने हाथ में ले लिया। राजस्थान सरकार ने १९५७ में उसपर अपनी सहमति की मुहर लगा दी और ३१ मार्च, १९५८ को स्व० गोविन्द बल्लभ पन्त ने

राजस्थान नहर का एक दृश्य

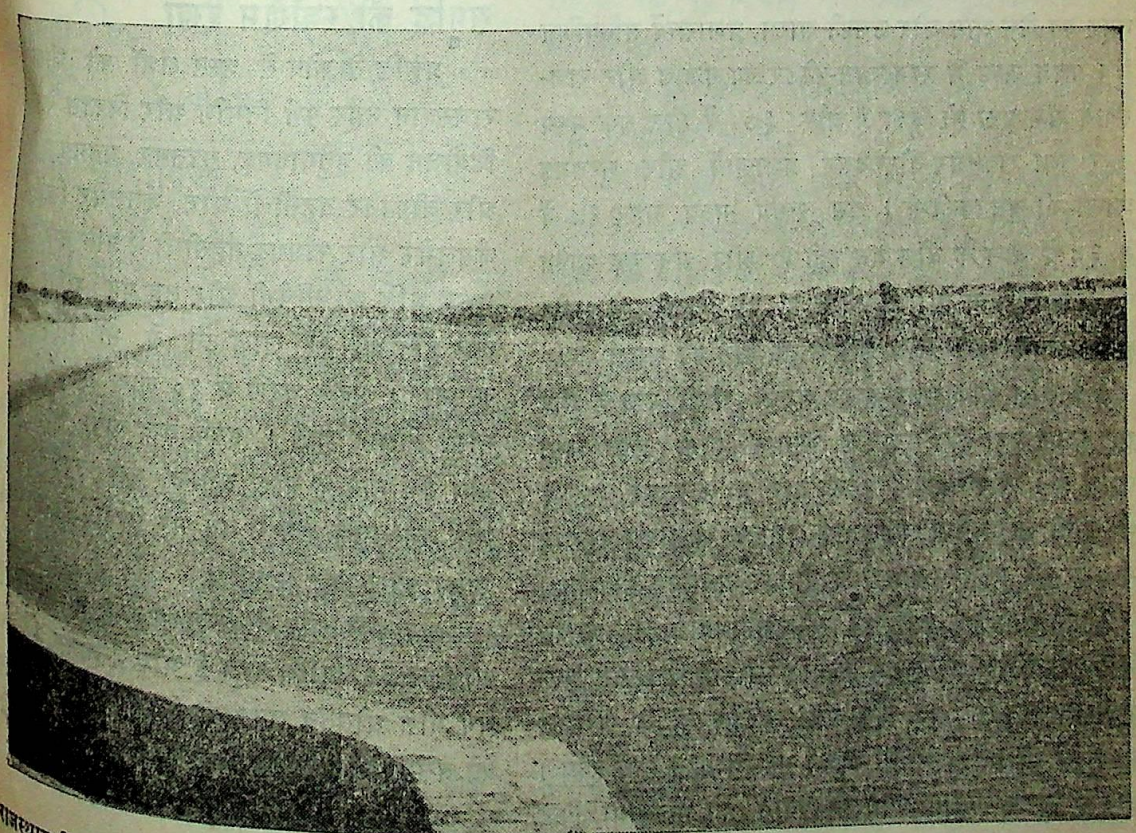



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१३८.७ करोड़ रु० की इस योजना का उद्घाटन किया। उस दिन राजस्थान के इतिहास में स्वर्णिम युग का सूत्र-पात हो गया।

योजना का विराट स्वरूप स्तब्ध कर देने वाला है। राजस्थान नहर और राजस्थान फीडर (नहर का पंजाब और राजस्थान में वह भाग, जिससे सिंचाई के लिए पानी नहीं लिया जाएगा) की कुल लम्बाई ४२६ मील होगी। संसार की संभवतः सबसे लम्बी यह नहर आदि से अंत तक पक्की होगी, जिसके किनारे ईंट, पलस्तर और फिर ईंट की परत से चिने हुए होंगे। नहर की शाखा, प्रशाखाओं की लम्बाई लगभग ४००० मील होगी। खेतों की नालियों की लम्बाई ४० हजार मील लम्बी होगी, जो सम्पूर्ण पृथ्वी को बांधने के लिए पर्याप्त है।

## संतोषजनक प्रगति

नहर दो खण्डों में पूरी होगी। पहले खण्ड में राजस्थान फीडर १११ मील पंजाब में और २३ मील राजस्थान में—तथा १२२ वें मील तक राजस्थान नहर और उसकी शाखा, प्रशाखायें शामिल हैं। दूसरे खण्ड में मुख्य नहर का शेष भाग और उसकी शाखा, प्रशाखायें सम्मिलित हैं। प्रथम खण्ड में राजस्थान-फीडर का पंजाब और राजस्थान अंश पूरा हो चुका हैं और १७ वें मील तक मुख्य नहर तथा रावतसर-नौरंगदेसर प्रशाखायें और सूरतगढ़ शाखा भी बन चुकी है। इस समय मुख्य नहर १७ वें से ३८ वें मील के बीच बन रही है और अनूपगढ़ शाखा पर काम हो रहा है। प्रथम खण्ड १९६९-७० में और पूरी योजना १९७७-७८ में पूरी हो जाने की आशा है।

निर्माण कार्य अलग-अलग चरणों में हो रहा है और एक चरण पूरा होने पर उस भाग में पानी छोड़ दिया जाता है। मुख्य नहर में पहली बार ११ अक्टूबर, १९६१ को पानी छोड़ा गया। जुलाई १९६४ के प्रथम सप्ताह में नहर की सूरतगढ़ शाखा में भी जल प्रवाहित हो गया।

उस दिन जब रावतसर और नौरंगदेसर प्रशाखाओं में प्रवाहित जल प्रखर सूर्य की किरणों में चमकता, लहराता आगे बढ़ा, तब मरुस्थल के अभाव के अभ्यस्त ग्रामीणों को सहसा अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। हाथ में छूकर उन्होंने अपने अविश्वास को झुठलाया, फिर

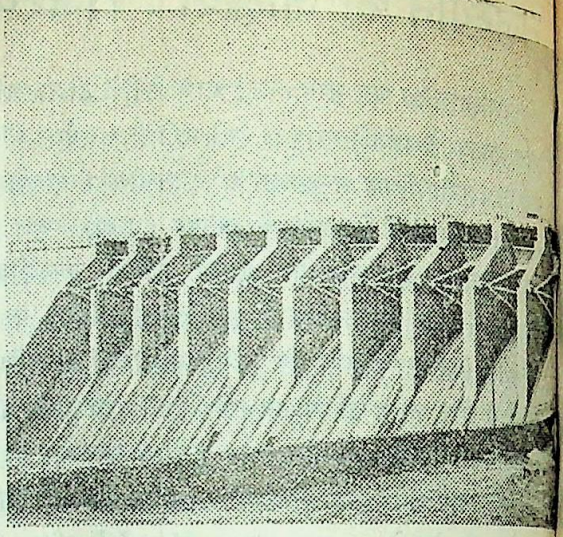

चम्बल बांध का एक दृश्य

आस्था और श्रद्धा से भर कर उन्हें मरुस्थल की जाह्नवी की पूजा की और बहुत रात बीते तक स्त्रियों-पुरुषों, बच्चों और बूढ़ों की भीड़ उमड़ पड़ी भीड़ नहर के किनारे नाचती गाती रही।

## समृद्धि की स्वर्णिम रेखा

प्रकृति से कोप से त्रस्त क्षेत्रों को जीवन देने वाली राजस्थान नहर पूर्ण निर्माण और विकास के बाद बीकानेर डिवीजन की हनुमानगढ़, सूरतगढ़, अनूपगढ़, रायसिंहनगर और बीकानेर तहसीलों और जैसलमेर जिले की नाचना, जैसलमेर और रामगढ़ तहसीलों में प्रति वर्ष २८.७५ लाख एकड़ भूमि को सींचेगी और तब यह दूषित परन्तु उर्वर क्षेत्र प्रति वर्ष २१ लाख टन से भी अधिक अन्न उपजाएगा। पहले चरण में १० लाख एकड़ क्षेत्र में बारहमासी सिंचाई होगी। इसके बाद रावी और व्यास पर बांध बंध जाने के बाद अधिक जल उपलब्ध हो सकेगा और तब समूचे क्षेत्र में वर्ष भर सिंचाई हो सकेगी।

## नहर क्षेत्र का विकास

गंगानगर और बीकानेर जिलों में प्रति वर्ग मील औसतन ३९ व्यक्ति रहते हैं और जैसलमेर जिले में प्रति वर्ग मील औसतन जनसंख्या केवल ६ है, अतः इस क्षेत्र को बसाने और इसका विकास करने का काम भी

(शेष पृष्ठ ६० पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

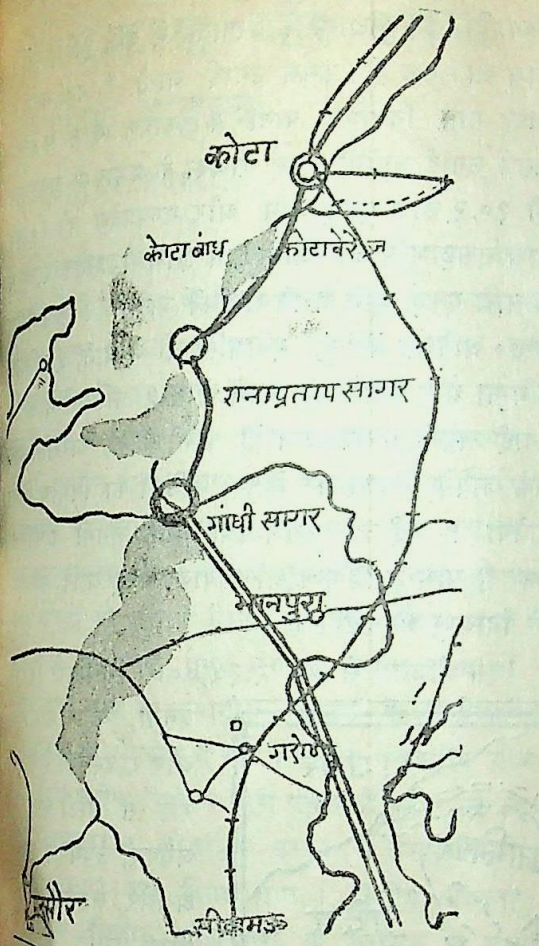


## राजस्थान की वरदायिनी.....

( पृष्ठ ५० का शेष )

में (१) गांधी सागर बांध, (२) एक बिजली घर (३) कोटा बराज, ४) दो नहरें, जो राजस्थान में १६२ मील लम्बी और मध्यप्रदेश में ३९८ मील लंबी होगी, बनाई जानी थीं। यह बिजली राजस्थान और मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों पर पहुंचाई जाएगी। गांधी सागर बांध मध्यप्रदेश व राजस्थान की सीमा पर १४ करोड़ की लागत से बनाया गया है। इस बांध के पीछे एक विशाल जलाशय है, जिसकी कुल क्षमता ६८.५० लाख एकड़ फुट है। यह भारत में सबसे बड़ी और कृत्रिम झीलों में से है।

### कोटा बांध

प्रस्तावित कोटा बांध कुछ नीचे की ओर ३.८३ करोड़ रुपये की लागत से बनाया गया है। इसकी लंबाई १८१० फुट है और अधिकतम ऊंचाई १२२ फुट है। इसका अधिप्लवन मार्ग (अधिक पानी बाहर निकालने का रास्ता) १०१० फुट लम्बा है। इसमें ४०'×४०' फुट के १९ दरवाजे हैं। यह बांध भी पूर्ण रूप से तैयार हो चुका है।

इस बांध से दो मुख्य नहरें निकलती हैं। एक बायीं ओर निकलने वाली मुख्य नहर राजस्थान में बहती है, जिससे कोटा और बूंदी जिलों में २.६० लाख एकड़ जमीन सींची जायेगी। शाखाओं और उपशाखाओं के मिलाकर इसकी लंबाई ५६० मील होगी। दाहिनी ओर निकलने वाली मुख्य नहर पहले ८१ मील राजस्थान के प्रदेशों में बहती है और फिर आगे चलकर मध्यप्रदेश की सीमाओं में १४५ मील बहती हैं। इसकी शाखा, उपशाखाओं की लंबाई राजस्थान में ८०० मील और मध्यप्रदेश में ९२० मील है।

## चम्बल घाटी विकास योजना की विशेषतायें

(१) इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक बड़े पैमाने पर बनायी गई अन्तःराज्यीय योजना है।

(२) भारतीय इंजीनियरों ने ही यह योजना बनाई और कार्यान्वित की है।

(३) गांधी सागर बांध जो कि इस परियोजना में मुख्य है, पत्थर की चिनाई का बना है। सीमेंट के बदले पत्थर की चिनाई का प्रयोग करने से ७० लाख रुपयों की बचत हो गई है।

(४) यह विशेष रूप से मानवीय श्रम से बनाया गया है। करीब १५००० मजदूर यहां काम करते थे। केवल वे ही काम मशीनों से किये गये, जो मजदूरों से नहीं हो सकते थे।

(५) तीनों बांध, और बिजली घरों के बनाने का खर्च मध्यप्रदेश और राजस्थान सरकार ५०:५० के अनुपात में बांट लेगी। अपने-अपने प्रदेशों में नहरें और पारेषण लाइनें बनाने का खर्च राज्य सरकारें करेंगी।

(६) कोटा बांध भारत का प्रथम मिट्टी का बांध है, जिसकी ऊंचाई १३० फुट है और जिसे पारगम्य नींव पर दृढ़ता से बनाया गया है। चिकनी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी की पतली भराई (Clay Groating) का तंत्र पहली बार यहां उपयोग में लाया गया है।

(७) इस योजना में बने दो नहरों के मार्ग में कई सौंफन बने हैं। ये सौंफन बनावट, किस्म और निर्माण कला की दृष्टि से स्मरणीय हैं।

जब बांध की बड़ी योजनायें बनती हैं तो उनमें कई गांव मिट जाते हैं। उनका नामोनिशान तक नहीं रहता। राजस्थान और मध्यप्रदेश की सरकारों ने विस्थापित लोगों को बसाने के लिए ३६ नई बस्तियों और गांवों की रचना की है और जरूरतमंद लोगों को जमीन दिलाई है। पुनर्वास पर लगभग ३.५ करोड़ रुपया खर्च हुआ है।

## योजना से लाभ

चम्बल घाटी विकास योजना से राजस्थान और मध्यप्रदेश के खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि हो जायेगी। आज जहां एक ही फसल उगाई जाती है, वहां नहर में बारह मास नियमित पानी के कारण साल में दो-दो फसलें उगाई जायेंगी। इस योजना के प्रभाव में राजस्थान की १०.२ लाख एकड़ भूमि और मध्यप्रदेश की १०.२३ लाख एकड़ भूमि आ जाती है। इनमें से प्रत्येक राज्य में ७ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की जायेगी। कुल फसल में ७० प्रतिशत में गेहूं, २० प्रतिशत में धान, ५ प्रतिशत में गन्ना और बगीचे की फसलें और ५ प्रतिशत में कपास उगाई जायेगी। राजस्थान में चीनी के दो कारखाने शुरू किये जायेंगे। राजस्थान में ७३ मंडियों का निर्माण किया जावेगा। कई नई फसलें पैदा होने लगेंगी। पपीता, अमरूद, आम आदि फल और प्याज़, आलू आदि सब्जियों की पैदावार भी बढ़ेगी।

इस योजना से जो २,१५,००० किलोवाट बिजली बनेगी, वह मध्यप्रदेश और राजस्थान में समान रूप से बांटी जाएगी। जयपुर, उदयपुर, कोटा, अजमेर, लाखेरी, भीलवाड़ा आदि राजस्थान के कई शहरों में यह बिजली पहुंच चुकी है। इससे लाखेरी और सवाई माधोपुर के सीमेंट कारखानों, जयपुर के जिंक फेल्टर औद्योगिक क्षेत्र को और कोटा के कारखानों को लाभ पहुंचा है।

बिजली उपलब्ध होने से कोटा और उसके अड़ोस-पड़ोस में कई छोटे बड़े उद्योग शुरू हो रहे हैं। कोटा में नायलोन, रेयान, कास्टिक सोडा,

(शेष पृष्ठ ५८ पर)

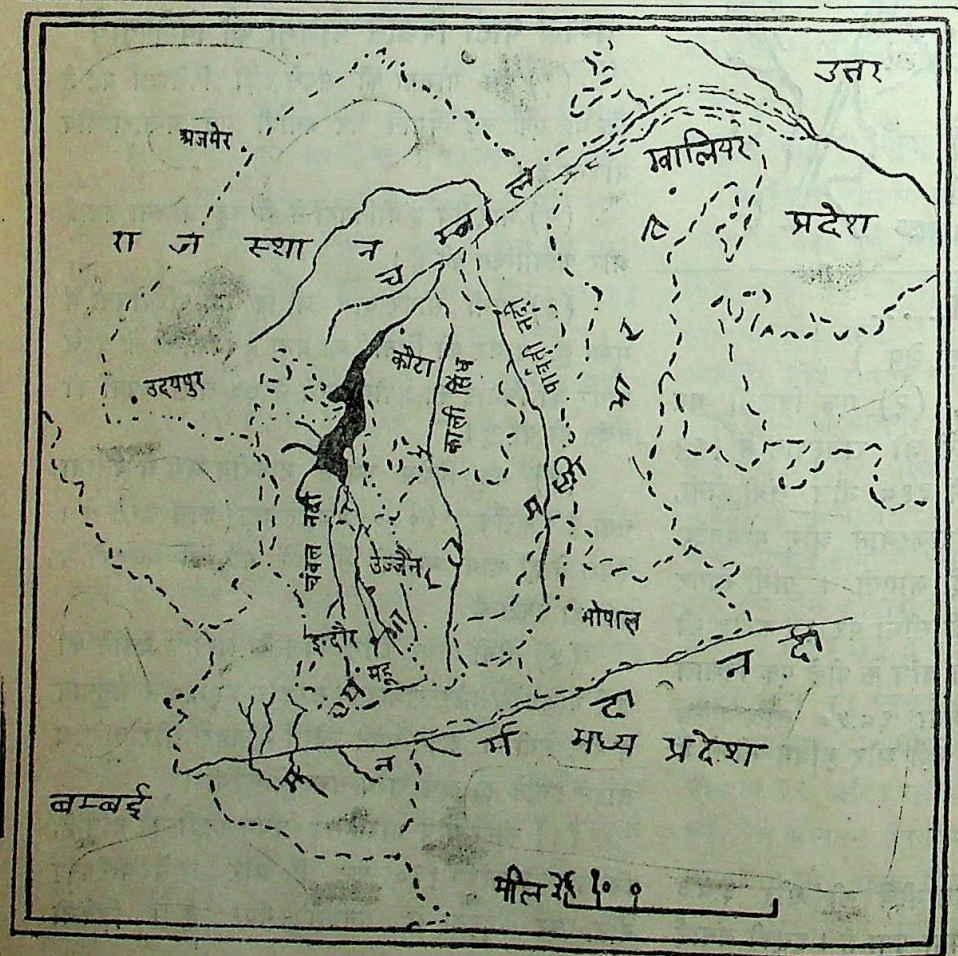






CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकेन्द्रीकरण और उसका आर्थिक महत्त्व

श्री देवीशंकर तिवारी

जिस तरह भारत की राजनैतिक स्वतंन्त्रता देश के नागरिकों के सहयोग के बिना सफल नहीं हो सकती, उसी प्रकार भारत की आर्थिक क्रान्ति देश की ग्रामीण जनता के सहयोग और प्रयत्न के बिना सफल नहीं हो सकती। इसके लिए एक ऐसा क्रम आरम्भ करना आवश्यक है, जिसमें ग्रामीण अपनी विपन्नता, अज्ञान और शिथिलता दूर करने का प्रयास स्वयं कर सकें और उसे उत्पादन के नये साधन और जीवन के नये दृष्टिकोण सुलभ हो सकें। इन्हीं लक्ष्यों की पूर्ति के लिये यह अनुभव किया गया कि ग्राम-स्तर पर एक ऐसा संगठन अथवा संस्थाओं का गठन किया जाय जो स्थानीय विकास के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से योगदान दे सके। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में इसलिये प्रत्येक जिले में **ग्राम पंचायतों** का गठन करके उन्हें उच्चस्तरीय लोकप्रिय संस्था से सम्बद्ध करने की आवश्यकता पर बल दिया गया। द्वितीय योजना में **सामुदायिक विकास योजनाओं** के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विकासोन्मुखी बनाने तथा ग्राम-पंचायतों के संगठन एवं स्थानीय नेतृत्व को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य में भी विचार किया गया।

१९५७ में "कमेटी आन प्लान प्रोजेक्ट" द्वारा नियुक्त अध्ययन दल ने सामुदायिक विकास योजनाओं की सफलता के लिये लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण को सबसे आवश्यक बताया। प्रशासन का यह क्रम जिसे लोकतंत्रीकरण कहें या विकेन्द्रीकरण, उस प्रक्रिया से संबन्धित है, जिसकी शुरूआत सामुदायिक विकास कार्यक्रमों से हुई और जिससे बलवन्तराय मेहता की रिपोर्ट को गति मिली। उनका सुझाव था कि गांव का विकास कार्य जनता की चुनी हुई स्थानीय समितियों द्वारा होना चाहिए और इन समितियों का चुनाव ग्राम-पंचायतें करें। साथ ही जिला परिषद्, पंचायत-समिति और ग्राम-पंचायत आदि परस्पर सम्बद्ध संस्थाओं की स्थापना एक साथ होनी चाहिये, जिससे योजना बनाने में जनता का सहयोग मिल सके एवं प्रशासन का संचालन कुछ इने-गिने व्यक्तियों और देश के कुछ स्थानों पर केन्द्रित न होकर अधिक से अधिक व्यक्तियों और स्थानों में वितरित हो सके। गांधीजी के पूर्ण स्वराज्य की धारणा इन्हीं ग्राम राज्यों पर आधारित थी, जिन्होंने कहा था "Indian independance must begin at the bottom." सर्वोदय अर्थात् "सबका विकास" में एक ओर ग्राम व नगर के सामूहिक-विकास का संकल्प निहित है, वहां दूसरी ओर देश के सभी वर्गों के उत्थान का कार्यक्रम भी सम्मिलित है। इस प्रकार सर्वोदय और विकेन्द्रीकरण पर्यायवाची शब्द ही हैं, जिनके माध्यम से ही हम भारत के ५॥ लाख से अधिक गांवों में चेतना का संचार कर उन्हें विकास के पथ पर अग्रसर कर सकते हैं।

**राजस्थान के ९६ लाख मतदाताओं ने राज्य के पंचायत चुनावों में जिस शान्तिपूर्ण ढंग से मतदान करके अपने पंचों, सरपंचों तथा पंचायत समितियों और जिला परिषद् के सदस्यों को चुना है, उसको देखते हुए कहा जा सकता है कि राजस्थान में पंचायत राज सफल होता जा रहा है और राज्य में प्रजातंत्र की जड़ें गहरी होती जारही हैं। राज्य में ७३२७ पंचायतों, २३२ पंचायत समितियों तथा २६ जिला परिषदों के चुनाव राज्य सरकार ने निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण ढंग से ५८ दिन की अल्पावधि में कराये हैं। इन चुनावों में ८० प्रतिशत मतदाताओं ने भाग लिया।**

**—मथुरादास माथुर**

## सर्वप्रथम राजस्थान में

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् निर्मित, हमारे संविधान के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह भी है कि राज्य ग्रामपंचायतों का संगठन करेगा और उन्हें ऐसी शक्तियां व अधिकार प्रदान करेगा, जिससे वे स्वायत्त शासन की इकाइयों के रूप में कार्य कर सकें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी निर्देश को बलवन्तराय मेहता कमेटी ने व्यावहारिक रूप दिया और इसी के आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान में पंचायती राज्य की स्थापना की गई। २ अक्टूबर, १९५९ राजस्थान के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, जिस दिन विकेन्द्रीकरण की योजना को सारे राजस्थान में लागू किया गया। २ अक्टूबर, १९५९ को इस योजना का उद्घाटन करते हुए स्वर्गीय नेहरू ने कहा था "लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण" के सम्बन्ध में राजस्थान देश का नेतृत्व कर रहा है।

## केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में राजस्थान का प्रतिनिधित्व

**श्री राजबहादुर, मंत्री परिवहन**

**भरतपुर के सुयोग्य नेता श्री राजबहादुर स्वाधीन भारत के प्रत्येक केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं।**

इस दिन राज्य में २३२ पंचायत समितियां और २६ जिला परिषदों की स्थापना हुई। जहां तक राजस्थान में विकेन्द्रीकरण के प्रशासन की रूप-रेखा का सम्बन्ध है, जिला परिषद् कानून सन् १९५९ के अन्तर्गत स्थानीय स्वशासन का ति-मंजिला ढांचा तैयार किया गया। ग्राम के स्तर पर पंचायतों का संगठन किया गया, विकास-खण्डों में पंचायत समितियों की स्थापना की गई और जिला स्तर पर जिला परिषद् की स्थापना हुई। राजस्थान में तहसील को विकास-खण्ड के बराबर माना गया। इसके द्वारा सारे राज्य को ३,५०२ ग्राम पंचायतों, २३२ पंचायत समितियों और २६ जिला परिषदों में पुनर्गठित किया गया। प्रति १५०० से २००० व्यक्तियों के पीछे एक पंचायत समिति की व्यवस्था की गई। पंचायतों को प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा सरपंच चुनने का अधिकार दिया गया। पंचायत समिति में अपने क्षेत्र के ग्राम पंचायतों के सरपंच रहते हैं। हर एक पंचायत समिति एक प्रधान का चुनाव करती है और जिला परिषद् में जिले भर की पंचायत समितियों के प्रधान सम्मिलित होते हैं। पंचायत समितियां जिला-परिषदों में उपयुक्त प्रतिनिधित्व देने के लिए हरिजन, आदिवासी, स्त्री, सहकारी आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यक्ति का चयन करती हैं। राज्य विधान-सभा के सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्र पंचायत समितियों के पहले सदस्य होते हैं, लेकिन उनको मत देने का अधिकार नहीं होता। जिला परिषद को कोई विशेष अधिशासी कार्य नहीं सौंपा गया है। यह पंचायत समितियों के विकास कार्यों का समन्वय व मार्ग-दर्शन करती है। सरकार को विशेष परिस्थितियों में जिला परिषदों एवं पंचायत समितियों के विलयन का अधिकार है।

## विकेन्द्रीकरण का आर्थिक महत्व

लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण जहां एक ओर भारत के करोड़ों ग्रामवासियों को स्वायत्त शासन की प्रारम्भिक तथा व्यावहारिक शिक्षा देता है, वहां आर्थिक क्षेत्र में भी एक नवीन व्यवस्था का उद्घोष करता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इस दृष्टि से कृषि उपज में पर्याप्त वृद्धि के द्वारा ही देश का संतुलित विकास संभव होगा। कृषि का विकास निम्नलिखित बातों पर निर्भर करता है :—

(अ) भूमि सुधार,

(आ) अच्छे बीज, खाद एवं यन्त्रों का उपयोग,

(इ) सिंचाई की समुचित व्यवस्था, एवं

(ई) पशुओं की नस्ल में सुधार।

विकेन्द्रीकरण के अन्तर्गत इन सबकी व्यवस्था ग्राम पंचायतों के माध्यम से की जायेगी। किस क्षेत्र में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस प्रकार की खाद अथवा यन्त्रों का उपयोग उचित होगा तथा भूमि सुधार की प्रगति किस प्रकार हो सकती है यह केवल वे ही व्यक्ति बता सकते हैं। बीज व खाद के वितरण एवं लघु सिंचाई की व्यवस्था भी स्थानीय व्यक्ति एवं संस्थाओं द्वारा ही ठीक प्रकार से की जा सकती है। इस प्रकार स्थानीय संस्थाओं (ग्राम पचायतों या पंचायत समितियों) के माध्यम से सही तरीकों द्वारा कृषि उपज बढ़ाने में योग दिया जा सकता है।

विकेन्द्रीकरण का दूसरा लाभ यह है कि इससे गांवों में प्राथमिक चिकित्सा, शिक्षा एवं अन्य स्थानीय आवश्यकताओं की सामयिक पूर्ति का समस्त दायित्व ग्रामीण जनता के प्रतिनिधियों पर ही छोड़ दिया गया है। कारण यह है कि प्रान्त या देश की राजधानी में बैठकर संसद अथवा विधान सभा का एक सदस्य या जिला स्तर पर नियुक्त कर्मचारी बहुधा स्थानीय समस्याओं से अनभिज्ञ रहता है।

तृतीय, किसी गांव में किस कुटीर, लघु अथवा अन्य प्रकार के उद्योग के विकास की कितनी संभावना है, इसका सही अध्ययन वहां की प्रतिनिधि संस्थाओं द्वारा ही किया जा सकता हैं। गांव में प्रचलित बेकारी एवं अर्ध बेकारी को स्थानीय साधनों के माध्यम से हल ढूँढना केवल उन्हीं के ही वश की बात है।

अतः, विकेन्द्रीकरण के द्वारा ग्रामीण जनता को कम से कम इस दिशा में तो आश्वासन दिलाया जा सकता है कि उनके साधनों का उपयोग उन्हीं के द्वारा निर्मित संस्था उन्हीं के हित में कर रही है। योजनाओं के प्रति आज ग्रामीण जनता में उदासीनता की जो भावना दिखाई देती है, इसका सबसे मुख्य कारण है कि वे समझते हैं कि योजनायें उन पर थोपी जा रही हैं। इसके विपरीत विकेन्द्रीकरण हो जाने पर पांचवां लाभ यह भी होगा कि प्रत्येक ग्राम पंचायत अपने साधनों (जिनकी सीमा से वह परिचित भी है) को दृष्टिगत रख कर गांव के आर्थिक विकास का एक निश्चित कार्यक्रम बना सकती है।

विकेन्द्रीकरण के द्वारा आर्थिक विकास में योगदान तभी दिया जा सकता है, जबकि स्थानीय नेतृत्व स्वस्थ एवं निःस्वार्थी हो तथा ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों तथा प्रांतीय सरकार के बीच मधुर सम्बन्ध हो। पंचायतों को प्रशासन जहां ईमानदार एवं सत्यनिष्ठ व्यक्तियों को सौंपा जाय वहां उनकी कार्य क्षमता एवं योग्यता भी उच्च स्तरीय होनी चाहिए।

आर्थिक विकास की उपयुक्त प्रणाली होने पर भी इस विकेन्द्रीकरण योजना के संबन्ध में आलोचकों का मत है कि पंचायती राज ने जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भ्रष्टाचार, पक्षपात और अ-सत्य को प्रोत्साहन दिया है। चुनाव प्रणाली ने गांवों में परस्पर विरोधी भावना व कटुता का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। नतीजा यह हुआ है कि गांवों की एकता टूटी है व जाति भेद को प्रोत्साहन मिला है। कई स्थानों पर निजी स्वार्थों के लिये सत्ता का दुरुपयोग भी किया गया है।

**"पंचायती राज का मुख्य उद्देश्य विकास कार्यों में जन-सहयोग प्राप्त कर उसकी गति को और भी तेज करना है। जबसे पंचायतों व पंचायत समितियों के हाथ में विकास कार्यों को क्रियान्वित करने की शक्ति आई है, गांवों का बहुत कुछ कायापलट हो गया है। गांवों में सामाजिक सेवाओं की व्यवस्था पहले से कहीं अधिक अच्छी है। जनता के सहयोग के साथ-साथ उनकी आकांक्षाएं भी बढ़ रही हैं, जो एक विकासशील देश के लिए शुभ लक्षण हैं। पंचायती राज के माध्यम से जहां ग्रामीण जनता में राजनीतिक जागृति आयी है, वहां उनमें आत्मविश्वास की भावना भी पैदा हुई है।**

**—भीखाभाई,** सामुदायिक विकासमंत्री

परन्तु यह सब होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि गांधी, विनोबा और जयप्रकाश की सर्वोदयी योजना आर्थिक विकास की विकेन्द्रित प्रणाली में ही निहित है, और भारत राष्ट्र की ८० प्रतिशत ग्रामीण जनता के विकास का यह एक सही कदम है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि लोकतन्त्रात्मक विकेन्द्रीकरण में लोकतन्त्र के दोषों का पाया जाना स्वाभाविक है, परन्तु यदि इस कार्यक्रम में जन प्रतिनिधि तथा प्रशासनिक कर्मचारी अपनी जिम्मेवारी समझ कर देश की उन्नति के इस कार्यक्रम में भाग लें तो यह अवश्य सफल होगी। आवश्यकता है केवल सुयोग्य कर्मचारियों एवं कार्यकर्ताओं में आपसी मेल जोल की।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राजस्थान की वरदायिनी चम्बल

(पृष्ठ ५४ का शेष)

कागज की मिलें आदि उद्योग बड़े पैमाने पर शुरू किये हैं और किये जा रहे हैं।

कुछ ही वर्षों में कोटा राजस्थान का प्रमुख औद्योगिक केन्द्र बन जायगा। बिजली उपलब्ध होने से राजस्थान के खनिज पदार्थों की खोज करने में सुविधा होगी।

इस योजना को कार्यान्वित करने पर कुछ नई समस्याएं भी पैदा हो रही हैं, जिन्हें हल करना भी बहुत जरूरी है। एक समस्या है जल आक्रमण और दूसरी समस्या है सिवार उगने की। जल आक्रमण से जहां आस-पास की जमीन जहां दलदल वाली हो जाती है, वहां सिवार के कारण नहर का बहुत सा पानी जहां बर्बाद जाता है, वहां उसके प्रवाह में भी बाधा आती है। पानी के समीपवर्ती भूमि में प्रवेश को रोकने के लिए जहां नहरों को पक्का बनाने का विचार है, वहां किनारे किनारे सीमेंट की पक्की नालियां बनाकर के बहाने का भी विचार है। किन्तु यह बहुत व्ययसाध्य योजना है। दूसरी समस्या का हल भी ढूंढ़ा जा रहा है।

सबसे बड़ी समस्या है पानी के पूर्ण उपयोग की। १९६३-६४ में करीब ४ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई का निश्चय किया गया था, परन्तु ५० प्रतिशत क्षेत्र में सिंचाई हो सकी। जब तक सिंचाई की क्षमता का पूरा उपयोग नहीं होगा तब तक इस योजना से पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा सकता। इसके लिए जहां छोटे-छोटे खेतों तक पानी पहुंचाने की व्यवस्था करनी होगी, वहां किसानों को खाद, औजार, अच्छे बीज और अच्छे बैल आदि की सुविधाएं भी यथासंभव उपलब्ध होनी चाहिए। ● ●

## अध्ययनशील लेखक

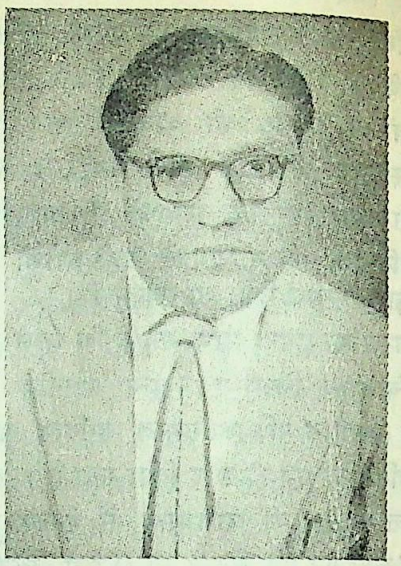

श्री पाण्डुरंग ज्ञानेश्वर आरोले

## राजस्थानी नागरिक आय के

(पृष्ठ ४८ का शेष)

राज्य के कार्यक्षम नागरिकों में से केवल ३७.१% नागरिक पूर्ण स्वावलम्बी हैं। १३.% नागरिक अर्धस्वावलम्बी हैं अर्थात् उद्यम करते रहने पर भी उन्हें जीवन निर्वाह के लिए आंशिक रूप से पूर्ण स्वावलम्बी नागरिक पर आश्रित रहना पड़ता है। शेष ४९.६% नागरिक पूर्णरूप से अन्याश्रित हैं। यही कारण है कि राज्य की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय केवल २४८ रुपया है, जबकि रभारतीय नागरिक की प्रति व्यक्ति आय ३३९.४ रुपये है। राज्य के आर्थिक विकास के साथ-साथ नागरिकों की आय के साधनों विविधता आएगी और उसमें वृद्धि भी होगी, ऐसी सम्भावना है। ● ●

## राजस्थान के मध्यमवर्ग की आर्थिक स्थिति

( पृष्ठ ४९ का शेष )

**कुछ खास मदों पर व्यय**

| | जयपुर | | जोधपुर | | अजमेर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत | रुपये | प्रतिशत |
| जूते | ४.८६ | १.५६ | ४.७२ | १.६७ | ६.५२ | १.८१ |
| किराया मकान | २८.७९ | ९.७२ | २०.४९ | ७.२५ | २०.८० | ५.७६ |
| फर्नीचर | १.५२ | ०.४९ | ०.५५ | ०.२० | १.५३ | ०४.२ |
| चिकित्सा | १०.२९ | ३.३१ | ४.६८ | १.६६ | ११.१२ | ३.०८ |
| शिक्षा व अखबार आदि | ११.४८ | ३.७० | १०.०४ | ३.५६ | १६.४९ | ४.७० |
| यातायात और सवारी | १८.४० | ५.९२ | ८.७० | ३.०९ | १९.१३ | ५.३० |
| पानी, बिजली आदि आवश्यक सेवायें | ६.२५ | २.०१ | ४.२४ | १५० | ४.७२ | १.३२ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दिल्ली प्रगति की ओर

## क्षेत्रफल

५७३ वर्गमील – जन संख्या २६.५८ लाख (१९६१ जन गणना) बारह वर्ष के सुनियोजित विकास कार्यक्रम के आधीन दिल्ली ने कई क्षेत्रों में प्रगति की है।

दिल्ली की प्रथम योजना सात करोड़ रुपये की राशि से प्रारम्भ की गई थी।

दूसरी योजना में ४० करोड़ रुपये निर्धारित किये गये परन्तु तीसरी योजना में दिल्ली के नागरिकों के भविष्य को अधिक उन्नत और उज्जवल बनाने के उद्देश्य से सौ करोड़ रुपये की राशि स्वीकार की गई है।

## तीसरी योजना की प्रमुख विशेषताएं

(१) अधिक चिकित्सा व स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ाना।
(२) हर बच्चे के लिए स्कूल की पढ़ाई मुहैया करना।
(३) लड़के व लड़कियों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण का विस्तार करना।
(४) औद्योगिक बस्तियों की स्थापना व औद्योगिक क्षेत्रों का विकास करना।
(५) आवास योजनाओं को गति प्रदान करना।
(६) गन्दे क्षेत्रों की सफाई और नागरिक सुविधाओं को समुन्नत करना।

प्रेषक : निदेशक जन-सम्पर्क, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का आर्थिक अभ्युत्थान : राजस्थान का योगदान

राजस्थान केवल वीरों की ही भूमि नहीं रहा, वह उद्योग और व्यवसाय के महारथियों की भी भूमि है। आज भी राजस्थान के प्रतिष्ठित और प्रतिभाशाली अध्यवसायी राष्ट्र के आर्थिक विकास में असाधारण सहयोग दे रहे हैं। देश के समस्त भागों में राजस्थान की व्यापार और उद्योग की अध्यवसायशीलता और व्यापारिक कुशलता देश को समृद्ध कर रही है। देश के आर्थिक अभ्युत्थान में राजस्थान की प्रतिभा का कितना महत्वपूर्ण भाग है, यह नीचे के दो उदाहरणों से स्पष्ट है—

## १—फेडरेशन के अध्यक्ष

फेडरेशन आफ इन्डियन चेम्बर्स ऑफ इन्डस्ट्री एण्ड कामर्स के अध्यक्ष पद पर वही चुने जाते हैं, जिनका इस विशाल देश के औद्योगिक क्षेत्र में पूर्ण सम्मान होता है। इस दृष्टि से राजस्थान की दस प्रतिभाएं इस पद को सुशोभित करते हुए राजस्थान का गौरव बढ़ा चुकी हैं। इनक नाम निम्नलिखित हैं—

१९२९—१. श्री घनश्यामदास बिडला,
१९३५—२. सर पदमपत सिंहानियां,
१९३६—३. श्री देवीप्रसाद खेतान,
१९४५—४. सर बद्रीदास गोयनका,
१९४९—५. श्री केशवदेव जालान,
१९५२—६. श्री शांति प्रसाद जैन,
१९५४—७. श्री ब्रजमोहन बिड़ला,
१९५६—८. श्री लक्ष्मीपत सिंघानिया,
१९६२—९. श्री श्रेयांस प्रसाद जैन एवं
१९६४–१०. श्री केशवप्रसाद गोयनका।

## २—प्रमुख उद्योग संस्थान

कुछ समय पूर्व बम्बई के 'इकोनोमिक टाइम्स' ने देश की ५१ प्रमुखतम औद्योगिक कम्पनियों के लाभ का विवरण प्रकाशित किया था। इनमें भी राजस्थान की औद्योगिक प्रतिभा का महत्त्वपूर्ण उल्लेख राजस्थान के गौरव को ही बढ़ाता है। इन कम्पनियों के नाम निम्नलिखित हैं—

१. स्वदेशी काटन
२. ओरियन्ट पेपर
३. जियाजीराव काटन
४. बिड़ला जूट
५. केशोराम इन्डस्ट्रीज
६. हिन्दुस्तान मोटर्स
७. ग्वालियर रेयन
८. सैन्चुरी स्पिनिंग
९. टैक्समाको

यों भारतवर्ष के किसी कोने में चले जायं, राजस्थान का छोटा या बड़ा साहसी, धैर्यशाली और अध्यवसायी व्यापारी और उद्यमी कोई न कोई छोटा-बड़ा कारोबार कर रहा होगा। कलकत्ता और बम्बई में ही नहीं, अन्य नगरों में भी हजारों छोटी बड़ी कम्पनियां और मिलों की हजारों चिमनियां राजस्थान की औद्योगिक प्रतिभा का प्रमाण-पत्र पेश कर रही हैं।

## बिहार राजस्थान का ऋणी

राजस्थानी व्यवसायियों की कार्यकुशलता बहुत ऊंची पड़ती है, इसे मानना ही पड़ेगा। बिहार तो राजस्थानी व्यवसायियों की कृतज्ञता का ऋणी है, जिनसे वास्तव में उन्होंने व्यवसाय करना सीखा है। मेरी दृष्टि से बिहार ही नहीं, पश्चिम बंगाल व महाराष्ट्र आदि राज्यों के लिए भी यह उतना ही सही है। सभी राज्यों में राजस्थानी व्यवसायियों ने अपना सुयश फैलाया है तथा विश्व में प्रसिद्ध प्राप्त की है। इस दृष्टि से राजस्थान, सच कहा जाय, तो पूजा करने योग्य स्थान है।

श्री के. एन. सहाय
अध्यक्ष बिहार चैम्बर आफ कामर्स

## राजस्थान की जाह्नवी.....

( पृष्ठ ५२ का शेष )

के निर्माण के कार्य के साथ साथ आरम्भ कर दिया गया है। नहर क्षेत्र के विकास के लिए २१३ करोड़ रु० की अलग योजना बनाई गई है। नहर क्षेत्र में वनारोपण का कार्य भी आरम्भ कर दिया गया है और निश्चित स्थानों पर चरागाहें छोड़ने की भी व्यवस्था है। वन खण्ड मरुस्थल के विस्तार को रोकने में भी सहायक होंगे, आंधियों से फसलों की रक्षा होगी और वर्षा का औसत भी बढ़ेगा।

और तब, यह मरुप्रदेश जहां औसत ५ सदस्यों के परिवार का एक सदस्य जीवन भर मीलों से पीने का पानी लाने में ही लगा रहता है, भारत का अन्न भण्डार बन जाएगा।





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान के कुछ प्रमुख उद्योगपति

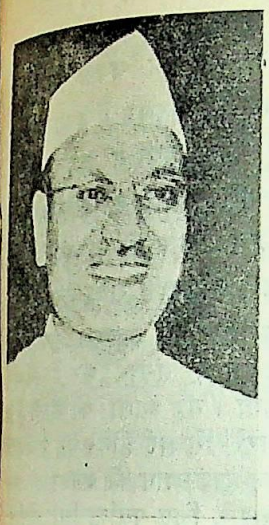

श्री रामनाथ पोद्दार

श्री पद्मपत सिंहानिया

श्री एम० एल० राठी

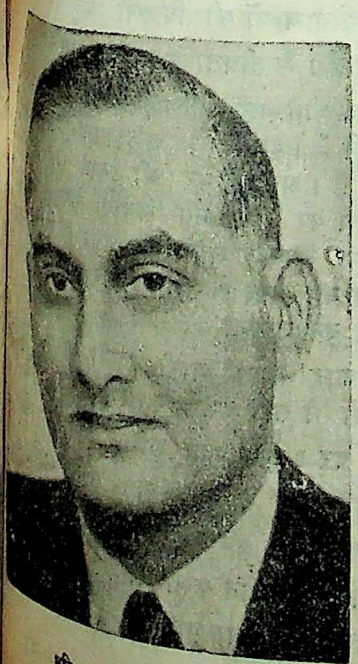

श्री बृजमोहन बिड़ला

श्री सीताराम जयपुरिया

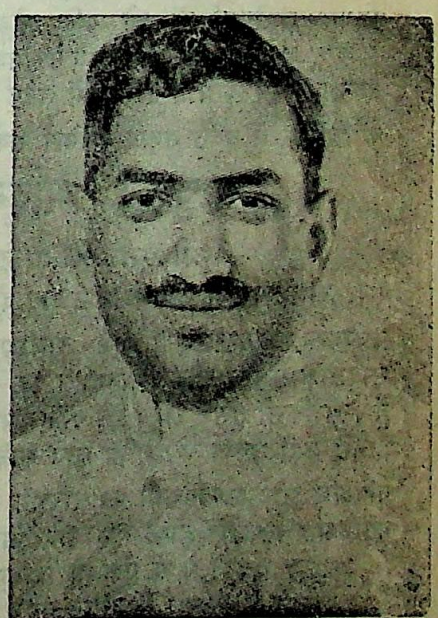

श्री साहू शांतिप्रसाद जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की आर्थिक गति-विधि व समस्याएं

## औद्योगिक खनिज-विकास निगम

श्री जी० डी० सोमानी

राजस्थान के औद्योगिक विकास के लिए जहां अन्य अनेक औद्योगिक संस्थाओं का संगठन आवश्यक है, वहां एक करोड़ रुपये की प्रारम्भिक पूंजी से औद्योगिक खनिज विकास निगम को भी संगठित करने की आवश्यकता है, यह निष्कर्ष उस समिति का है, जो मेरी अध्यक्षता में इस निगम की स्थापना के सम्बन्ध में विचार करने के लिए नियत की गयी थी। इस समिति के अनुसार चौथी पंच-वर्षीय योजना में राजस्थान के औद्योगिक विकास के लिए ३०० करोड़ रुपये की राशि लगनी चाहिए। इस राशि का संग्रह बहुत कठिन नहीं होगा, यदि केन्द्रीय सरकार इसके लिए १५० करोड़ रुपया दे और राज्य तथा सहकारी क्षेत्र ५० करोड़ रुपया लगाएँ। शेष १०० करोड़ रुपया राजस्थान के उद्योगपति लगा सकते हैं।

समिति की सिफारिश के अनुसार प्रस्तावित निगम अपनी एक करोड़ रु० चुकती पूंजी के आधार पर केन्द्रीय वित्त संस्थानों से १० से २० करोड़ रुपये तक प्राप्त कर सकेगा। यह प्रस्तावित निगम 'इक्विटी, प्रिफरेन्स तथा डिबेंचरों के बाजार में भाग लेकर रुपये एकत्र कर सकता है। यदि यह इनकी सुरक्षात्मक गारन्टी भी ले, तो यह रुपया एकत्र होने में कोई कठिनता नहीं होगी। निगम मध्य दीर्घ कालीन ऋण भी एकत्र कर सकता है। यह निगम उद्योगपतियों को यदि औद्योगिक एवं खनिज विकास सम्बन्धी खोज के लिए परामर्श एवं आर्थिक और तकनीकी सहायता दे तो इसमें संदेह नहीं कि राजस्थान के विकास में बहुत सहायता मिल सकती है।

## उज्ज्वल संभावनाएं

श्री एस० के पाटिल

राजस्थान में कृषि और उद्योग दोनों की अमित और उज्ज्वल सम्भावनाएं हैं। मैं राजस्थान की जनता की साहसिक प्रकृति और ईमानदारी पर पूर्ण विश्वास करता हूं। मैं किसी दूसरे राज्य को नहीं देखता, जिसके नागरिक इतनी बड़ी संख्या में देश के कोने कोने में जाकर कठोर परिश्रम और अध्यवसाय का परिचय देते हैं। मुझे इसमें कोई आश्चर्य नहीं होगा कि राजस्थान देश के अत्यंत समृद्ध राज्यों में से एक हो जायगा और शायद सब राज्यों से अधिक विकसित हो जायगा। वह इसलिए सम्भव है कि राजस्थान की जनता अध्यवसाय, व्यापारिक कुशलता और परिश्रम में बहुत आगे है।

राजस्थान का चित्र बहुत तेजी से बदल रहा है। १५ साल पहले के राजस्थान से आज का राजस्थान बहुत भिन्न है। मुझे निश्चय है कि आगामी २५ वर्षों में राजस्थान का चित्र बहुत बदल जायगा। राजस्थान नहर की योजना पूर्ण होते ही समृद्धि की उज्ज्वल सम्भावनाएं प्रत्यक्ष होने लगेंगी। यह नहर संसार भर में चीन के बाद सबसे बड़ी नहर होगी। यह आशा की जाती है कि राजस्थान नहर द्वारा सिंचाई होने पर राजस्थान की पैदावार न केवज राजस्थान की जनता को, वरन् समस्त देश की जनता के लिए पर्याप्त सिद्ध होगी।

## राजस्थान में भारी कर

श्री रामनाथ पोद्दार

राजस्थान के वित्तमंत्री राजस्थान की जनता पर बहुत बोझ डालते रहे हैं। बिक्री कर, स्टाम्प ड्यूटी, मोटरों और गाड़ियों पर करों की दरों में ही वृद्धि हुई हैं, छोटे खनिज-पदार्थों पर रायल्टी की दर भी बढ़ा दी गई है। बिजली-कर के सम्बन्ध में जो रियायत पहले दी गई थी, वह वापस ले ली गई है, जब कि राजस्थान में पहले से ही उद्योग धन्धों को बिजली बहुत ही महंगे दामों पर मिलती है। मैं तीव्रता से यह अनुभव करता हूं कि उद्योगों में खर्च होने वाली बिजली पर कर लगाने में कोई औचित्य नहीं है। अभी तो राजस्थान में उद्योगों का विकास होना है। अनाजों पर भी टैक्स लगा दिया गया है। विज्ञापनों पर कर नये लगाए गए हैं। इसी तरह भू-राजस्व पर उप-कर लगा दिया गया है। इन सब करों का परिणाम यह होगा कि जीवन और अधिक व्ययसाध्य तथा कठिन बन जायगा।

केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी किया गया स्वर्ण-नियंत्रण आदेश यों तो सारे देश पर प्रभाव डालता है, लेकिन राजस्थान पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि अनेक शताब्दियों से राजस्थान सोने आदि की पच्चीकारी तथा आभूषणों की सूक्ष्म कला के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान की यह प्राचीन कला जीवित रहनी चाहिए और इसका विनाश नहीं होना चाहिए। (मार्च १९६४)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# वित्त-निगम और राज्य का औद्योगिक विकास

श्री गंगासहाय पुरोहित, प्रबन्ध संचालक, राजस्थान वित्त-निगम, जयपुर

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं की अवधि में देश में लघु, मध्यम एवं भारी उद्योगों का विकास एवं नये-नये उद्योगों की स्थापना हुई है। इन उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं से केवल हमारे देश की आवश्यकता की ही पूर्ति नहीं होगी, अपितु अन्य देशों को निर्यात भी किया जायगा तथा बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की हमें प्राप्ति होगी। देश का औद्योगीकरण अभी शुरू ही हुआ है। आने वाले समय में हमें इस दिशा में बहुत कुछ करना है।

उद्योगों को प्रारम्भ करने के लिए वैसे तो अनेक महत्वपूर्ण बातों की जरूरत होती है, लेकिन प्रमुख जरूरत पूंजी की होती है। केन्द्रीय सरकार ने १९५१ में "राज्य वित्त-निगम विधेयक, १९५१" पास किया, जिसके द्वारा सभी राज्यों में वित्त-निगमों की स्थापना हुई। इन निगमों के द्वारा अपने-अपने राज्य के उद्योगों को दीर्घकालीन ऋण की सुविधायें दी जाती हैं।

राजस्थान वित्त-निगम की भी स्थापना राज्य सरकार द्वारा उपर्युक्त विधेयक के अन्तर्गत सन् १९५५ में की गई थी। निगम की अधिकृत पूंजी २ करोड़ रुपया है, जिसमें १ करोड़ के शेयर जारी किये गये हैं। राज्य सरकार ने शेयर होल्डरों को उनकी पूंजी के लौटाने की तथा कम से कम ३॥ प्रतिशत लाभांश प्रतिवर्ष देने की गारंटी दी है।

राजस्थान वित्त-निगम उद्योगों की स्थापना, विकास, पुनर्नवीनीकरण तथा आधुनिकीकरण के लिये १५ हजार रुपये से १० लाख रुपये तक की लम्बी अवधि के ऋण सभी प्रकार के उद्योगों को देता है। पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों एवं रजिस्टर्ड सहकारी समितियों को निगम २० लाख रुपये तक भी ऋण दे सकता है। कोई भी औद्योगिक संस्थान, जो निम्नलिखित कार्यों में से कोई कार्य करता हो अथवा करना चाहता हो, निगम से ऋण प्राप्त कर सकता है:—

(१) वस्तुओं का उत्पादन,
(२) वस्तुओं की तैयारी,
(३) संरक्षण,
(४) खनिज उद्योग अथवा

लेखक

(५) बिजली या अन्य किसी प्रकार की शक्ति का उत्पादन अथवा वितरण।

उपर्युक्त प्रकार के कार्यों के अतिरिक्त निगम द्वारा अब होटल एवं ट्रांसपोर्ट उद्योगों के लिए भी ऋण दिये जाने लगे हैं। वित्त-निगम से औद्योगिक बस्तियों के निर्माण के लिए भी सहायता प्राप्त की जा सकती है।

निगम द्वारा दिये जाने वाले ऋणों की वर्तमान ब्याज दर ८ प्रतिशत (और अब एक वर्ष से ८½ प्रतिशत) प्रति वर्ष है, जिसमें मूल तथा ब्याज की किश्तों की समय पर अदायगी पर ½% की छूट दी जाती है।

निगम द्वारा ऋण लम्बी अवधि के लिये दिये जाते हैं, जो साधारणतया १० से १२ वर्ष के अन्दर वार्षिक किश्तों द्वारा लौटाये जा सकते हैं। किश्तों की अदायगी ऋण देने की तारीख से १ या २ वर्ष के बाद प्रारम्भ की जा सकती है। विशेष परिस्थितियों में चालू पूंजी (Working Capital) के लिये भी ऋण दिया जा सकता है।

निगम द्वारा ऋण औद्योगिक संस्थानों की वर्तमान तथा प्रस्तावित स्थायी सम्पत्ति (Fixed Assets) के रजिस्टर्ड रहन के जरिये दिया जा सकता है। निगम द्वारा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य सरकार अथवा अनुसूचित बैंक अथवा किसी राज्य सहकारी बैंक की गारंटी पर भी ऋण दिया जा सकता है। ऋण साधारणतया औद्योगिक संस्थान की स्थायी सम्पत्ति पर ५० से ६० प्रतिशत तक दिया जा सकता है। विदेशों से आयात की गई मशीनों पर ७५% तक भी ऋण दिया जा सकता है।

गत १० वर्षों की अवधि में निगम ने अनेक औद्योगिक संस्थानों को सहायता प्रदान की है। निगम द्वारा जिन कारखानों एवं उद्योगों को ऋण दिये गये हैं, उनमें प्रमुख हैं—सूती वस्त्र उद्योग, शक्कर उद्योग, इंजिनियरिंग, लोहे एवं धातु उद्योग, स्ट्राबोर्ड फैक्टरी, नायलोन फैक्टरी, केमिकल, कांच, क्राकरी, सेनेटरी का विभिन्न सामान बनाने वाले उद्योग, बिजली के तार, पानी के मीटर, गैस आदि बनाने वाले उद्योग। निगम द्वारा अब तक दो होटलों को भी कर्जा दिया जा चुका है तथा और होटलों को भी शीघ्र ही ऋण दिया जावेगा।

निगम का यह प्रयास है कि वह राज्य में स्थापित ज्यादा से ज्यादा उद्योगों का सहायक बन सके एवं राज्य के औद्योगिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। एक सूचना-गृह (Information Cell) खोलने पर भी विचार हो रहा है। इस सूचना-गृह द्वारा राज्य के उद्योग-पतियों को विभिन्न प्रकार की जानकारी मुहैय्या की जावेगी। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए निगम ने दो सलाहकार कमेटियों का भी गठन किया है। यह सलाहकार समितियां निगम के संचालक बोर्ड को होटल एवं ट्रांसपोर्ट उद्योगों से प्राप्त प्रार्थना पत्रों का अध्ययन करने के पश्चात् ऋण देने के लिए अपनी सिफारिशें करती हैं। राज्य सरकार के एजेन्ट के रूप में भी राजस्थान वित्त-निगम कुटीर उद्योगों के लिए ऋण स्वीकृत करता है। इन नियमों के अन्तर्गत निगम ने मार्च १९६३ तक ४८ संस्थानों को ७,४८,४०० रुपये के कर्जे स्वीकार किये थे।

## कार्य की प्रगति

यह स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में छोटे और मंझले उद्योगों की ओर से राजस्थान वित्तीय निगम के पास सहायता के लिए अधिक प्रार्थना पत्र आयेंगे और इसके लिए निगम को और अधिक वित्तीय व्यवस्था करनी पड़ेगी। निगम इसकी व्यवस्था कर रहा है। इसके लिए जनता से डिपाजिट लेने की योजना बनाई गई है। मई ६५ के अन्तिम सप्ताह में निगम ने ७५ लाख रुपये डिपाजिट बॉड की जो मांग की थी, वह पूरी हो चुकी है। १९६४-६५ में वित्तीय निगम ने जो कारोबार किया है वह पिछले सब वर्षों की कीर्ति-मान तोड़ चुका है। १३३.७३ लाख रुपये की मांग के ५५ प्रार्थना पत्र मिले और उनमें से ४४ प्रार्थना पत्रों पर कार्यवाही हो चुकी है। निगम के कारोबार बढ़ने का परिणाम यह हुआ है कि लाभ भी ज्यादा होने लगा है। १९६३-६४ में ५,९३,९११ रुपये का लाभ हुआ था, अब ६,७३८५६ रुपये का लाभ हुआ है। रिजर्व कोष भी २०००० रु० (१९६० से) बढ़कर अब ३१ मार्च १९६५ को ५८३,३०० रुपये हो गये। पिछले १० वर्षों में इस निगम ने १९१ कम्पनियों को ४.१४ करोड़ रुपये दिये हैं। ■ ■


यदि आप जानना चाहते हैं कि

**सम्पदा**

से आप क्या लाभ उठा सकते हैं?
में कैसी उपयोगी सामग्री होती है?
से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है?

**तो**

दस नये पैसे के टिकट भेजकर
१९६४ की विषय सूची बुक
पोस्ट से मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६






CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


'मंडल' का नवीनतम प्रकाशन

# महात्मा गांधी

(एक जीवनी)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 'आत्म-कथा' के उपरांत श्री बी० आर० नन्दा द्वारा लिखित विवेचनात्मक पूर्ण जीवनी। १९६५ की सर्वोत्तम भेंट

पृ० सं० ४०० — सजिल्द— मूल्य : पांच रुपये

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रार्थना-प्रवचन—भाग १ | ४.०० | मंगल-प्रभात | ०.४० |
| प्रार्थना-प्रवचन—भाग २ | ३.५० | सर्वोदय | ०.५० |
| गीता-माता | ५.०० | हमारी मांग | १.२५ |
| पंद्रह अगस्त के बाद | २.५० | हिन्द-स्वराज्य | १.२५ |
| धर्म नीति | २.५० | हृदय मंथन के पांच दिन | ०.४० |
| मेरे समकालीन | ६.०० | देश सेवकों के संस्मरण | १.५० |
| दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह | ४.५० | अगर मैं डिक्टेटर होता | ०.३० |
| आत्मकथा (संपूर्ण), सजिल्द | ५.०० | शराब बन्दी करें | ०.३० |
| आत्मकथा (संपूर्ण), अजिल्द | २.५० | स्वराज में अछूत कोई नहीं | ०.३० |
| आत्म संयम | ४.०० | खादी पहनो | ०.३० |
| गांधी-विचार रत्न | ३.५० | शिक्षा ऐसी हो | ०.३० |
| आत्म कथा (संक्षिप्त) | १.०० | कंगाली ऐसे दूर होगी | ०.३० |
| अनासक्ति योग | १.०० | एक सत्यवीर की कथा | ०.३० |
| अनीति की राह पर | १.५० | गांधी शिक्षा (तीन भाग) | ०.९२ |
| आज का विचार (दो भाग) | ०.८० | गीता बोध | ०.७५ |
| आश्रम वासियों से | ०.४० | ग्राम सेवा | ०.५० |
| नीति-धर्म | ०.४० | कताई यज्ञ है | ०.३० |
| ब्रह्मचर्य—भाग १ | १.५० | ग्राम सेवायें करें | ०.३० |
| ब्रह्मचर्य—भाग २ | १.०० | स्त्रियां यह करें | ०.३० |
| बापू की सीख | ०.७५ | गांधी की कहानी | १.५० |

## सस्ता साहित्य मंडल

प्रधान कार्यालय :
कनाट सर्कस, नई दिल्ली

शाखा कार्यालय :
जौरो रोड, इलाहाबाद


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राजस्थान का वित्तीय विकास

(पृष्ठ २४ का शेष)

क्षेत्रों पर कर भार बढ़ाना होगा। इसके लिए मालगुजारी की दर में वृद्धि करके या मालगुजारी पर सरजार्च लगाकर सरकार अपनी आय में वृद्धि कर सकती है।

**(२) उन्नति कर, सिंचाई एवं पानी की दरों में वृद्धि :** 'राजस्थान नहर' तथा चम्बल परियोजनाओं आदि के अन्तर्गत सिंचित क्षेत्रों पर सरकार को उन्नति कर लगाने चाहिए। इसी प्रकार सड़कों आदि की सुविधा मिलने वाले क्षेत्रों पर भी अतिरिक्त कर द्वारा आय बढ़ाई जा सकती है।

**(३) बिक्री कर की व्यापकता :** राजस्थान में बिक्री कर को अधिक व्यापक व गहरा करने की आवश्यकता है। नई वस्तुओं पर उत्पादन कर लगाया जा सकता है और पुरानी दरों में भी वृद्धि की जा सकती है। विलासिता की वस्तुओं पर इस कर का अधिक प्रयोग होना चाहिए।

**(४) राजकीय उपक्रमों में वृद्धि :** पंचवर्षीय योजनाओं की शुरूआत के बाद आज जनता पर करों का भार चरम सीमा पर जा पहुँचा है। आज किसी भी दिशा में कर बढ़ाने पर जनता त्राहि-त्राहि कर उठती है। स्पष्ट है हमारी पिछड़ी अर्थ-व्यवस्था अब ज्यादा करों का भार सहने में असमर्थ है। इसलिए राज्य सरकार को अधिकाधिक औद्योगिक उपक्रमों को अपने हाथ में लेना चाहिए, जिससे बिना किसी विरोध के उसकी आय में वृद्धि हो सके। इसके लिए स्टेट रोडवेज के राष्ट्रीयकरण के कार्यक्रम को विस्तृत करना अधिक उपयुक्त होगा तथा भारी एवं अधिक लाभ देने वाले उद्योगों को सरकार को अपने हाथ में लेना होगा एवं नये विनियोग के लिए सरकार को नये क्षेत्र खोजने होंगे।

**(५) राजस्थान नहर :** राज्य की अर्थ-व्यवस्था में वित्तीय कमी देखते हुए 'राजस्थान नहर' के निर्माण का भारी व्यय केन्द्र को संभालने के लिए अनुरोध किया गया है, राजस्थान की तेजी से तरक्की तथा द्रुत आर्थिक विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि मरुस्थल के विकास की सारी ज़िम्मेदारी केन्द्र की हो।

जनता पर कर भार अधिक करने, सरकार को औद्योगिक उपक्रमों को अपने हाथ में लेने अथवा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर देने मात्र से हमारी वित्त-व्यवस्था सुदृढ़ नहीं बन सकती। आर्थिक-व्यवस्था की सुदृढ़ता के लिए प्रशासन तन्त्र का सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। राज्य के वित्तीय विकास के लिए यह आवश्यक है कि प्रशासन की मशीनरी को सुदृढ़, कार्यकुशल एवं निष्ठावान् बनाया जाय। यह उचित है कि वित्त वृद्धि के लिए करों की दरों में भी वृद्धि जाय तथा नये करों एवं आय स्रोतों के लिए नये क्षेत्रों की खोज पर गम्भीरता से विचार किया जाय।

● ●

## राजस्थान का आर्थिक सर्वेक्षण

(पृष्ठ ३८ का शेष)

१९५०-१९५६ के बीच के वर्ष राजस्थान की वित्तीय एकता और संगठन के वर्ष रहे हैं। इन वर्षों में विभिन्न रियासतों के आय साधनों और तत्सम्बन्धी कानूनों को एक रूप देने का प्रयत्न किया गया। पिछले दशक में (१९५१-५२ से १९५८-६० तक) राज्य की कुल आय १३२ प्रतिशत बढ़ गई। राज्य के करों में भी ५४ प्रतिशत की वृद्धि हुई। व्यापारिक विभागों से और जंगलों से १९६०-६१ में २०१ करोड़ रुपये की आमदनी हुई। परन्तु राजस्थान जैसे विशाल राज्य में यह राशि बहुत असन्तोषजनक है।

१९५१-५२ से जो नये महत्त्वपूर्ण कर लगाये गये हैं वे हैं—बिक्री कर, मोटर स्पिरिट पर बिक्री कर, कृषि आय कर और यात्रियों और माल के परिवहन पर कर। इन सब करों के कारण राज्य की कर व्यवस्था का आधार अब व्यापक और सुसंगठित हो गया है। अब कर व्यवस्था के सुचारु रूप से संचालन की व्यवस्था है। अब उसे अपने व्यापारिक विभागों से भी आमदनी बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। अब नये कर लगाने की बहुत अधिक गुंजाइश नहीं है। वर्तमान करों में ही थोड़ी-बहुत वृद्धि की जा सकती है। भूमि राजस्व के सम्बन्ध में जो क्रमिक कर प्रणाली प्रचलित की गयी है, वह स्वागत योग्य है।

नई विकास योजनाओं के अन्तर्गत यह अनुमान किया गया है कि राज्य को ६६६ करोड़ रुपया निवेश करना



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा किन्तु सरकार २८८ करोड़ रुपये से अधिक, अतिरिक्त करों से प्राप्त नहीं कर सकेगी। किन्तु इसमें से भी १०८ करोड़ रुपया चलतू कामों में खर्च हो जायगा और उसके पास १०८ करोड़ रुपये से अधिक निवेश के लिए नहीं बचेगा।

## विकास की पद्धति और उज्ज्वल संभावनाएं

१९६१ से १९७१ तक के दशक में विकास की योजनाओं के लिए १५०४ करोड़ रुपया के कुल विनियोजन की आवश्यकता है. जो राज्य की आवश्यकताओं को देखते हुए अधिक नहीं है। कुल विनियोजन का विभाजन निम्नलिखित रूप से होना चाहिए:—

| | |
|---|---|
| कृषि तथा तत्सम्बधी कार्य | ३५ प्रतिशत |
| समाज सेवाएं | १६.६ ,, |
| यातायात | १२.० ,, |
| उद्योग | १८ ,, |
| बिजली | ९ ,, |
| खनिज विकास | २ ,, |

इसमें से भी ५२ प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र में (४४ प्रतिशत राज्य और ८ प्रतिशत केन्द्र) और ४८ प्रतिशत निजी क्षेत्र में निवेश किया जाना चाहिए। इस दशक में राज्य की कुल आय १२.९ और प्रति व्यक्ति आय ७.८ प्रतिशत बढ़ेगी, जो अखिल भारतीय दर से (७.४ और ४ प्रतिशत क्रमशः) अधिक ही है। राज्य की प्रति व्यक्ति आय इस दशक में २१९ रुपये से ४९७ रुपये तक हो जायेगी। काम करने में समर्थ प्रति व्यक्ति की उत्पादन क्षमता ९१ प्रतिशत बढ़ जायेगी। पूंजी और उत्पादन का अनुपात २.१:१ हो जायगा।

कृषि विकास में भी हमें अधिक ध्यान सिंचाई की ओर देना होगा। अच्छे बीज, भूमि संरक्षण, चरागाहों का सुधार आदि की ओर भी हमें विशेष ध्यान देना चाहिए। इसी तरह किसानों को ऋण सुविधा भी देने की व्यवस्था करनी चाहिए। राजस्थान में भूमि गर्भ जल की कमी नहीं है। आवश्यकता यह है कि इसकी वाकायदा शोध की जाय। यदि खेती में आवश्यक सुधार हुआ तो खेती का उत्पादन ११.७ प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ेगा और प्रति एकड़ उत्पादन की कीमत ७४ रुपये से १२३ रु० तक हो जायगा।

मिल उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन १४९ करोड़ रुपये और भिन्न-भिन्न प्रयत्नों में ८२ करोड़ रुपये तक उत्पादन बढ़ जायगा। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि राजस्थान औद्योगिक दृष्टि से उन्नत राज्य बन जायगा। औद्योगिक विकास से कारखानों में २ लाख ४० हजार लोगों को और फैक्टरी की परिभाषा में न आने वाले उद्योगों में २ लाख व्यक्तियों को काम मिलेगा, किन्तु इसके लिए यह जरूरी है कि बिजली, पानी, निवास व्यवस्था और प्रशिल्पिक ज्ञान में आवश्यक सुधार किया जाय।

खनिज क्षेत्र में २३ करोड़ रुपया लगने की आवश्यकता है जिसमें से तांबा, जस्ता, सीसा और लिगनाइट पर हमें अधिक ध्यान देना होगा। यह भी पूर्ण आशा है कि भूगर्भ के अनुसन्धान से अनेक नये खनिज मिलने लगेंगे।

बिजली के विकास के लिए हमें १३५ करोड़ रुपया तक खर्च करना चाहिए। भाखड़ा, चम्बल, माही और सतलज, व्यास की परियोजनाओं से बिजली प्राप्त हो सकती है। फिर भी उद्योगों के निरन्तर विकास को देखते हुए यह भय बना रहेगा कि १९७१ के बाद बिजली मांग के अनुरूप न मिल सके। इसलिए अणुशक्ति से बिजली की सम्भावनाओं पर विचार किया जाना चाहिए।

यातायात के विकास के लिए इस दशक में १७७ करोड़ रुपया व्यय करना होगा। इसमें से २७ प्रतिशत रेलवे, ४० प्रतिशत सड़कें और ३२ प्रतिशत सड़क यातायात तथा १ प्रतिशत राजस्थान नहर में जलीय यातायात पर खर्च करना होगा।

विकास के लिए इन सब कार्यक्रमों का लाभ यह होगा कि गांवों में जहां अर्ध-बेकारी कम हो जायेगी, वहां २० लाख नये श्रमिकों को काम मिल सकेगा। रोजगार के लिए राज्य से बाहर जाने की प्रवृत्ति पर भी रोक लगानी होगी। शिक्षा, चिकित्सा आदि समाज सेवा के कार्यों पर २५० रुपया खर्च करना होगा, परन्तु यह सब कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए एक अलग संगठन की आवश्यकता होगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान के आर्थिक विकास में विदेशों का सहयोग

**राजस्थान के आर्थिक विकास के लिए अन्य अनेक विदेशी राष्ट्रों ने भी सहयोग दिया है। नीचे की पंक्तियों में हम सहयोग की इन प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।**

## सोवियत रूस

### सूरतगढ़ फार्म

भारत-सोवियत-सहयोग के इतिहास में १९५६ का साल महत्वपूर्ण वर्षों में गिना जायगा। इसी साल सूरतगढ़ (राजस्थान) में यंत्रीकृत फार्म खोला गया। यह भारत का पहला बड़े आकार का फार्म था तथा दक्षिण-पूर्व एशिया का सबसे बड़ा। भिलाई से औद्योगिक क्षेत्र में भारत-सोवियत सहयोग का शुभारम्भ हुआ। सूरतगढ़ ने कृषि के क्षेत्र में सहयोग का सूत्रपात किया।

पहला बड़ा यंत्रीकृत राज्य फार्म ऐसे रेगिस्तान में खोला गया, जो ऊसर था। यह फार्म ३०००० एकड़ में खोला गया। फार्म खोलते समय कुछ हलकों में थोड़ा सन्देह था। परन्तु कुछ ही वर्षों में फार्म ने पूरी तरह क्षमता सिद्ध कर दी। सोवियत संघ ने १९५५ में खेती से सम्बन्धित मशीनें और साज-सामान बड़े आकार का यंत्रीकृत फार्म खोलने के लिए उपहार के रूप में दिया। समय-समय पर अन्य भी राशियां और मशीनें दी जाती रहीं।

भारत सरकार ने बड़े आकार के फार्म की माली हालत का ब्योरेवार अध्ययन करने के लिए दामले समिति बनायी। समिति का यह तखमीना सही उतरा है कि सूरतगढ़ फार्म के लिए यह बिलकुल सम्भव होगा कि वह प्रारम्भिक पूंजी-विनियोग पर ६ प्रतिशत का शुद्ध लाभ कमाये। उपहार में मिली मशीनों सहित प्रारम्भिक पूंजी २२७.६४ लाख रु० थी।

स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू अप्रैल १९५९ में सूरतगढ़ गये थे। उन्होंने उस अवसर पर कहा था कि यदि भारत में ऐसे सौ फार्म हो जायं, तो उसकी खाद्य समस्या हल हो जायगी। वह चाहते थे कि भारत में जगह-जगह सूरतगढ़ जैसे फार्म बनें।

उस फार्म की सफलता से प्रोत्साहित होकर भारत सरकार ने सूरतगढ़ के पास जैतसर में समान आकार का एक और फार्म खोलने का निश्चय किया है। इस फार्म के लिए सोवियत संघ से मंगायी मशीनों और साज-सामान का कुल व्यय स्वाभाविक व्यापारिक ढंग से २६ लाख रु० है। इस फार्म को आधुनिकतम ढंग की मशीनें दी गयी हैं।

इन दोनों फार्मों की सफलता, राजस्थान के लिए जहां २० लाख एकड़ ऊसर जमीन है, मार्गदर्शक का काम करेगी। यदि इस ऊसर जमीन को ठीक से विकसित किया जा सका, तो एक ही राज्य से भारत को इतना अनाज मिलने लगेगा, जितना भारत ने स्वाधीन होने के बाद बाहर से मंगाया है।

### कोटा का कारखाना

एक अन्य महत्त्वपूर्ण भारत-सोवियत परियोजना कोटा का बारीक औजार कारखाना है। प्राविधिक प्रक्रियाओं के नियंत्रण के लिए और उन्हें ठीक-ठीक करने के लिए तथा उत्पादन को स्वचालित बनाने के लिए बारीक औजारों की जरूरत है। कोटा का कारखाना तरह-तरह की नाप-तोल की १३८००० इकाइयां तैयार करेगा, जिनमें द्रवों के तापमान, चाप और स्तर का नियंत्रण करने वाले स्वचालित इलेक्ट्रानिक यंत्र भी होंगे। भारत और सोवियत संघ में जो करार हुआ है, उसमें सोवियत संघ से १३३.७ लाख रु० के ६१६ टन मशीनी साज-सामान और औजार देने की व्यवस्था है।

### भूरा कोयला

अभी हाल में राजस्थान के कुछ भागों में लिग्नाइट

## सोवियत रूस : अमेरिका : कनाडा : फ्रांस



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भण्डार मिले हैं। कोयले की जगह लिग्नाइट के उपयोग की सम्भावना राजस्थान की प्रगति के नये द्वार खोलती है। लिग्नाइट का एक सर्वोत्तम उपयोग बिजली तैयार करने के क्षेत्र में हो सकता है। राजस्थान की सरकार ने राज्य के लिग्नाइट भण्डारों के विकास के बारे में सोवियत विशेषज्ञों से राय मांगी है। सोवियत संघ को इस क्षेत्र का अच्छा खासा अनुभव है। वहां के अनेक ताप बिजली-घर सस्ते, भूरे रंग के कोयले से चलते हैं जो लिग्नाइट से मिलता-जुलता है। हमें सन्देह नहीं कि यदि राजस्थान में यह प्रयोग किया गया, तो नेवेली का अनुभव, बड़ी हद तक सहायक होगा।

## सं. रा. अमेरिका

उदयपुर के २२४ एकड़ क्षेत्र में फैले हुए राजस्थान कृषि कालेज के २३ भवनों पर दृष्टिपात करने से यह विश्वास नहीं हो पाता कि यह अभी अपने जीवन के ७ वें वर्ष में है। किन्तु इस अल्प काल में ही इस कालेज ने उदयपुर और उसके आसपास के गांवों के लोगों को वैज्ञानिक खेती की विधियों के प्रति उत्सुक और जागरूक बनाया है। कालेज के पाठ्यक्रम में कृषि-विज्ञान और गृह-विज्ञान से लेकर अनुसन्धान और विस्तार सेवा तक सभी स्तर के विषय सम्मिलित हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से राजस्थान कालेज अमेरिका के भूमि-अनुदान (लैण्ड ग्रांट) कालेजों जैसा ही है।

राजस्थान कृषि कालेज को अन्तर-संस्थागत व्यवस्थाओं के लिए अमेरिकी सहायता प्राप्त होती है, जिसे भारत सरकार और अमेरिकी टेक्निकल सहयोग मिशन ने मिलकर तैयार किया था जो पूर्ववर्ती संस्था थी। इन व्यवस्थाओं के अन्तर्गत, इस कालेज को ७,००,००० रुपये से अधिक मूल्य के उपकरण और पुस्तकें प्राप्त हुई हैं। इस समय ओहायो राज्य विश्वविद्यालय के अध्यापक मण्डल के दो सदस्य प्रोफेसर फैल्टनबाइा और डाक्टर डोनाल्ड हौफ इस कालेज में कार्य कर रहे हैं।

हाल में, कालेज के पशुपालन और दुग्ध विभाग में आधुनिक दुग्ध-शोधन संयंत्र को भी जोड़ दिया गया है, जो राजस्थान में अपनी किस्म का पहला संयंत्र है। इसका उद्घाटन गत फरवरी में हुआ।

राजस्थान कालेज के उदयपुर में स्थापित दुग्धालय का मुख्य उद्देश्य छात्रों को डेरी फार्मिंग की आधुनिक विधियों का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। इसके साथ ही, दुग्धालय किसानों द्वारा उत्पन्न दूध के लिए एक ताजा बाज़ार भी प्रस्तुत करता है। यह दुग्धालय उदयपुर नगर के लिए, जिसकी जनसंख्या १,५०,००० है, अच्छे दूध के सामान की पूर्ति का स्रोत है।

### दुग्धालय-संयंत्र की क्षमता

संयंत्र की दुग्ध-शोधक क्षमता प्रति घन्टे १,००० लिटर दूध की है। संयंत्र के लिए दूध की नियमित और अनिश्चित पूर्ति करने के उद्देश्य से कालेज के अधिकारियों ने ऐसी योजनाएं तैयार की हैं, जिनके अन्तर्गत उदयपुर के निकटवर्ती गांवों में अनेक दुग्ध-संग्रह केन्द्र स्थापित किये गये हैं। ये गांव भिण्डेर, राजसमन्द, मदेसर तथा अन्य सामुदायिक विकासखंडों के सीमा क्षेत्रों में स्थित हैं। अनुमान लगाया गया है कि अंत में चल कर इस दुग्ध-संग्रह योजना के अन्तर्गत प्रतिदिन लगभग १३,००० लिटर (लगभग ३५० मन) दूध संग्रहीत होगा। यह मात्रा नगर की दूध सम्बन्धी ६० से ७० प्रतिशत आवश्यकता पूरी करने के लिए पर्याप्त होगी।

यह दुग्धालय मक्खन, पनीर तथा आइसक्रीम जैसे पदार्थ भी तैयार कर सकता है। इसमें ३०० लिटर मंथन-क्षमता वाली एक मथानी, पनीर बनाने वाला एक वर्तन तथा आइसक्रीम बनाने वाला एक उपकरण लगे हैं। बोतल भरने वाला संयंत्र भी लगाया गया है, जो प्रति घण्टे १,२०० से १,६०० बोतलों को साफ करके, दूध से भरता व उनके मुंह को बन्द कर सकता है।

कालेज के दुग्धालय के विषय में प्रिंसिपल राठौर का कहना है, "उदयपुर में हम एक ऐसा दृष्टांत प्रस्तुत करना चाहते हैं, जिसका राजस्थान के अन्य स्थानों पर अनुसरण हो सके। दुग्ध-व्यवस्था की आधुनिक विधि से राजस्थानी किसान को अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। इससे इस क्षेत्र के लोगों के स्वास्थ्य का स्तर भी ऊंचा होगा।"



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कनाडा

रूस ने यदि सूरतगढ़ का फार्म और कृषि सम्बन्धी अनुसंधान के लिए और अमेरिका ने दुग्ध शोधन संयंत्र के लिए सहायता दी है तो कनाडा की सहायता भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। राजस्थान में परमाणु शक्ति प्रयोजना के लिए कनाडा ने ३७० लाख कनाडियन डालर का वचन दिया है। इस ऋण की अदायगी १५ वर्षों में की जायगी। पहले इससे २०० मिलियन मैगावाट शक्ति प्राप्त करने का विचार था, किन्तु अब उसका विकास करके ४०० मिलियन मैगावाट शक्ति प्राप्त करने का विचार है। इसी तरह राणा प्रताप सागर पन बिजली प्रयोजना के लिए भी कनाडा ने साढ़े तीन करोड़ रुपये का ऋण देने का निश्चय किया है।

### तांबे की खान व फ्रांस

इसी तरह फ्रांस भी खेतड़ी की ताम्बे की खानों के विकास के लिए सहायता दे रहा है। ये ताम्बे की खानें बहुत प्राचीन काल से तांबा निकाल रही थीं किन्तु बीच में तांबा निकालना बन्द हो गया। अब फिर इन खानों के विकास के लिए फ्रांस सरकार अच्छी रकम सहायता के लिए दे रही है।

## जानने योग्य

१९६३-६४ में सहकारी समितियों की संख्या राजस्थान में २१,४९७ थी। इनके सदस्यों की संख्या १२,६९०३६ थी।

* * *

राज्य में २२६ संयुक्त कृषि सहकारी समितियां कार्य कर रही हैं जिनकी सदस्य संख्या ३९८४ तथा हिस्सा पूंजी १६,१०,२४३ रु० है। सामूहिक सहकारी कृषि समितियों की संख्या २०४ है जिनमें ३२६७ सदस्य हैं।

* * *

योजनामंत्री श्री माथुर के कथनानुसार राजस्थान की चौथी योजना पर लगभग ८४२ करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान है, जिसमें से ४३८ करोड़ रुपया राज्य द्वारा और शेष निजी क्षेत्र में व्यय होने की आशा है। पूंजी नियोजन से राज्य की आय ६.२८ प्रतिशत प्रति वर्ष बढ़ने की संभावना है। पर तीसरी योजना के अन्त तक राज्य की प्रति व्यक्ति आय ३५५) हो जाएगी। इस आय को चौथी योजना के अन्त तक प्रति व्यक्ति ४१८) रु० करने का इरादा है।


# सम्पदा का बैंक परिशिष्ट

देश के आर्थिक विकास में बैंकों का योगदान अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। उनकी प्रगति बहुत उत्साहवर्धक है, पर साथ ही उनकी समस्याएं भी निरन्तर विचारणीय होती जा रही हैं। इन सब पर प्रकाश डालने के लिए सम्पदा का बैंक परिशिष्ट शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

**इस अंक का मूल्य १) रु०**

**पाठक अपनी कापी अभी से ही सुरक्षित करा लें**

—सम्पादक




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान अंकों में

इन पृष्ठों में राजस्थान सम्बन्धी आर्थिक जानकारी के लिए कुछ महत्वपूर्ण अंक दिये गये हैं। इनमें से अधिकांश अंक राजस्थान के आर्थिक संस्कृति संचालनालय के विवरण खण्ड ६ सं० ४ से लिये गये हैं।

## जनसंख्या १९६१ के अनुसार राजस्थान

| | | |
|---|---|---|
| **क्षेत्रफल** | | |
| महा भूमापक भारत के अनुसार | (लाख वर्ग किलोमीटर) | ३.४२ |
| भूलेख के अनुसार | (लाख वर्ग किलोमीटर) | ३.३८ |
| नागरीय क्षेत्र | (लाख वर्ग किलोमीटर) | ०.०१ |
| ग्रामीण क्षेत्र | (लाख वर्ग किलोमीटर) | ३.४१ |
| जनसंख्या | (संख्या) | २,०१,५५,६०२ |
| जनसंख्या में परिवर्तन | (प्रतिशत) (५१-६१) | २६.२ |
| पुरुष जनसंख्या | (प्रतिशत) | ५२.४ |
| स्त्री जनसंख्या | (प्रतिशत) | ४७.६ |
| नगरीय जनसंख्या | (प्रतिशत) | १६.३ |
| ग्राम्य जनसंख्या | (प्रतिशत) | ८३.३ |
| **कृषि** | | |
| निव्वल बोया क्षेत्र | (हजार हेक्टेयर) | १३८२१ |
| सिंचित क्षेत्र | (हजार हेक्टेयर) | १८५९ |
| दो फसली क्षेत्र | (हजार हेक्टेयर) | ८५२ |
| खाद्य फसलें | (आधार १९५२-५३ से १९५५-५६=१००) | १३९.३१ |
| अखाद्य फसलें | ( ,, ,, ) | १६८.१२ |
| सामान्य | ( ,, ,, ) | १३७.९० |

## राजस्थान में विद्युत उत्पादन

(हजार किलोवाट घन्टे)

| वर्ष | कुल उत्पत्ति एवं क्रय की हुई विद्युत | विक्रीत विद्युत |
|---|---|---|
| १९५९ | ८,३९० | ६,५५५ |
| १९६० | १०,४६३ | ७,११४ |
| १९६१ | १२,३८९ | ८,९१३ |
| १९६२ | १७,४२४ | १०,१२८ |
| १९६३ | २६,८०० | ११,३७८ |

## राजस्थान में विद्युत का उपभोग

(हजारों किलोवाट घन्टे)

| | सार्वजनिक रोशनी | सिंचाई | सार्वजनिक जलकल एवं मल वाहक नालियों के लिए | योग |
|---|---|---|---|---|
| १९५९ | ३१४ | १८० | १,६६९ | ६५,५५५ |
| १९६० | ३०७ | १५१ | १,४२४ | ७,११४ |
| १९६१ | ३८२ | ३०३ | १,६७९ | ८,९१३ |
| १९६२ | ६४८ | ५३७ | १,८३८ | १०,१२८ |
| १९६३ | ३७९ | ४६५ | १,०६५ | ११३७८ |

## राजस्थान की सड़कों पर मोटर गाड़ियां

| | १९६२ | १९६३ |
|---|---|---|
| निजी कार एवं जीप | १२,८३७ | १३,२७५ |
| गैर सरकारी बसें | ३४९ | २९४ |
| मोटर साइकिल एवं स्वचालित रिक्शा | ४.०२८ | ४,९९७ |
| टैक्सी एवं संविदा गाड़ियां | ३०४ | २४६ |
| सरकारी गाड़ियां | ४७९९ | ५१६६ |
| सार्वजनिक वाहक | ८६८२ | ९,४२९ |
| निजी वाहक | १२९६ | १,३०२ |
| ट्रैक्टर | ५१२३ | ५,५५४ |
| अन्य | ३०३ | ३६९ |
| योग | ३७७१७ | ४०.६०२ |

## राजस्थान में औद्योगिक विवाद के कारण कामबन्दी

| वर्ष | झगड़ों की संख्या काम बंदी में परिणत | मजदूरों की संख्या | कुल जनदिवस हानि |
|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | १५ | १०९८३ | १३१८३४ |
| १९६२-६३ | ११ | ८,७५२ | ८३,९०२ |
| १९६३-६४ | ३० | ८५४० | ८१४५१ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## राजस्थान में आयात और राजस्थान से निर्यात (रेल और जल मार्ग से)

| | आयात १९६२-६३ | निर्यात १९६२-६३ |
|---|---|---|
| बाजरा (क्विंटलों में) | ११००१८ | २०२७०५ |
| गेहूँ ,, | १४९०७७० | १०६०७१९ |
| चावल | २६८६३२ | १६६०७ |
| कुल अनाज , | १९२९१७९ | ३०१३७१९ |
| चीनी ,, | ५४४७४० | ४८१९२ |
| गुड़ एवं चीनी ,, | ८५३४८३ | २७२२८ |
| नमक ,, | १३६७९० | १७२४६८८ |
| तम्बाखू ,, | २१०६० | २४९२ |
| तिलहन ,, | ७५९२९३ | ११०२९०८ |
| वनस्पति तेल ,, | ११५२११ | ८३६४३ |
| ऊन ,, | १०७०३ | ३८५७५ |
| वस्त्र ,, | ११९४८९ | ३१६७५ |
| सीमेंट ,, | ४६७८२४ | ७५४२९४४ |

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होगा कि राजस्थान में किन वस्तुओं की अधिकता है और किन वस्तुओं की कमी।

## राजस्थान में मूल्यों की स्थिति दिसम्बर १९६४ (आधार वर्ष १९५२-५३)

| | |
|---|---|
| सामान्य मूल्य निर्देशक | १६५.३ |
| खाद्य | १७३.३ |

## राजस्थान में वर्षा १९६४ (सैन्टीमीटरों में)

| | | | |
|---|---|---|---|
| अजमेर | ५३.० | उदयपुर | ६२.३ |
| जयपुर | ६१.० | बीकानेर | २९.१ |
| झालावाड़ | ९२.६ | जोधपुर | ३६.१ |
| कोटा | ७२.० | बाड़मेर | ३०.० |

## राजस्थान में फसलों के अन्तर्गत क्षेत्र १९६४-६५

| खाद्य फसलें | (००० हेक्टेयर में) |
|---|---|
| अनाज | ४,१०७ |
| बाजरा | १,०४२ |
| ज्वार | १,१२२ |
| गेहूँ | ६९८ |
| मक्का | ४१८ |
| जौ | ७२ |
| शमई, सांवा, कुटकी आदि | |
| चावल | ८९ |
| **दालें** | |
| चना | १,५०४ |
| तूर | २३ |
| अन्य रबी की दालें | १५ |
| अन्य खरीफ की दालें | १,६२४ |
| **अन्य खाद्य फसलें** | |
| गन्ना | ३० |
| मिर्च (सूखी) | ३१ |
| आलू | २ |
| अदरक | ०.०७ |

## बैंकों द्वारा ऋण

नीचे की तालिका बताती है कि राजस्थान के विभिन्न अनुसूचित बैंकों ने व्यापार और उद्योग के लिए कितना रुपया ऋण के रूप में दिया।

| | (लाख रुपयों में) | कुल ऋण |
|---|---|---|
| १९६० | १८८२ | १९४३ |
| १९६१ | ७५० ,, | १९२१ |
| १९६२ | ४०४ ,, | १३८० |
| १९६३ | २८७ ,, | १३९८ |

यह स्पष्ट है कि बैंकों द्वारा दिये जाने वाले ऋणों की मात्रा कम होती गयी है।

## सहकारी आन्दोलन १९६३-६४

| | |
|---|---|
| सहकारी समितियां (संख्या) | २१,४९७ |
| सदस्यता (संख्या) | १२,५९,०३६ |
| दिया गया ऋण (लाख रुपयों में) | ४९६.८४ |
| वसूली (लाख रुपयों में) | ५१२.२१ |
| क्रय (लाख रुपयों में) | १८.६१ |
| विक्रय (लाख रुपयों में) | १८.२७ |





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दी बैंक ऑफ राजस्थान लिमिटेड

(स्थापित : १९४३ में)

रजिस्टर्ड आफिस : क्लाक टावर—उदयपुर  सैन्ट्रल आफिस : जौहरी बाजार—जयपुर

सुरक्षा  स्थिरता  और  सेवा के लिए

कृपया हमारे निम्नलिखित किसी आफिस से सम्पर्क स्थापित करें ।

**राजस्थान**

१. अजमेर
२. अलवर
३. बांसवाड़ा
४. बारां
५. ब्यावर
६. भरतपुर
७. भवानी मंडी
८. भीलवाड़ा
९. विजयनगर
१०. बीकानेर
११. बूंदी
१२. छोटी सादड़ी
१३. चितौड़ गढ़
१४. डूंगरपुर
१५. फतेहनगर
१६. गंगापुर शहर
१७. गुलाबपुर
१८. जयपुर (जौहरी बाजार)
* १९. जयपुर (एम. आई. रोड)
२०. जयपुर (चलता फिरता)
* २१. जयपुर (बापू नगर)
२२. जयपुर (आदर्श नगर)
२३. झालवाड़
२४. झालरापाटन
२५. जोधपुर (सोजती गेट)
२६. जोधपुर (तम्बाखू बाजार)
२७. केकड़ी
२८. किशनगढ़
* २९. कोटा (रामपुरा बाजार)
* ३०. कोटा जंक्शन
३१. कोटा (सब्जी मंडी)
३२. कोटा (इन्ड. ऐस्टेट)
३३. लाखेड़ी
३४. नसीराबाद
३५. नाथद्वारा
३६. निवाई-१
३७. पाली
३८. प्रतापगढ़
३९. रामगंज मंडी
४०. रानी
४१. श्री गंगानगर
४२. सुमेरगंज मंडी
४३. सुमेरपुर
४४. टोंक
४५. उदयपुर (घण्टा घर)
४६. उदयपुर (बापू बाजार)

**मध्यप्रदेश**

४७. खाचरोद
४८. मानसा
४९. नीमच
५०. शामगढ़

**महाराष्ट्र**

५१. बम्बई (जेवरी बाजार)

**केन्द्रीय क्षेत्र**

२. दिल्ली (फतेहपुरी)
५३. कोटा (श्री रामपुर)

## शीघ्र ही खुलने वाली शाखाएँ

१. जोबनेर (राजस्थान)  २. इन्दौर (मध्यप्रदेश)

**चिन्हांकित शाखाओं में सेफ डिपोजिट वाल्ट हैं । एजेन्सियां सम्पूर्ण भारत में हैं ।**

राम यश गर्ग
जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में प्रमुख उद्योगों का उत्पादन

## (मासिक औसत)

| | सूती वस्त्र | | सूत | सीमेंट | कांच | चीनी | नमक | विद्युत मान | बालबियरिंग | अवरक की दुर्वह ईंटें | पालिश किया और | हुआ पालिश किया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कि.ग्रा. | मीटर | ००० | मैट्रिक | मैट्रिक | मैट्रिक | मैट्रिक | संख्या | (अंक ००० में) | (विक्स अंक ००० में) | | पत्थर (००० वर्ग मी.) |
| | (हजारों में) | | कि.ग्रा. | टन | टन | टन | टन | | | | | |
| १९५९ | ५४२ | ३,९७९ | १,१२८ | ७८,११७ | ७० | ३,०७२ | २५,०८१ | ८,३७५ | १३८ | ४२ | | १४ |
| १९६० | ५२७ | ४,०१७ | १,१६६ | ७८,६२२ | ४९ | ४,५६२ | २३,७४३ | ११,२५० | २२७ | ३ | | १३ |
| १९६१ | ६६७ | ४,६१२ | १,३२३ | ९०,५४८ | ६८ | ३,८८९ | १९,४१७ | १४,९९३ | २६५ | ५० | | २१ |
| १९६२ | ६४० | ४,३९५ | १,४९१ | ८९,५८८ | ४४ | ३,४२७ | ३१,३०२ | २०,६७२ | ३२३ | ४९ | | २३ |
| १९६३ | ६७४ | ४,६६६ | १,७१६ | ९९,१६७ | ४६ | —— | ३५,५४२ | २२,४८१ | ३४७ | ६५ | | २३ |
| १९६४ | अनु० | अनु० | अनु० | ९८२२६ | ३८ | अनु. | ३३२४१ | २३२६७ | ३५३ | ८९ | | २३ |

# राजस्थान में मुख्य नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र (हैक्टेयर)

| वर्ष | गंगा नहर द्वारा | भाखड़ा नहर द्वारा | घग्गर नहर द्वारा | समस्त सिंचित क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|
| १९५८-५९ | २,९२,०४१ | १०८,०५१ | ८,०४२ | ४,०८,१३४ |
| १९५९-६० | २,९४,३६८ | १,३९,२१२ | ६,८५७ | ४,४०,४३७ |
| १९६०-६१ | २,७५,२५२ | ८७,९३४ | ४,७४१ | ३,६७,९२७ |
| १९६१-६२ | २,७८,६३५ | १,२०,९२२ | ५,९४८ | ४,०५,५०५ |
| १९६२-६३ | २,८३,९१० | १,६१,८७४ | ६,१०७ | ४,५१,८९१ |
| १९६३-६४ | २,५९,५९३ | १,८१,७०४ | ५,७४२ | ४,४७,०३९ |

# राजस्थान में श्रमिक संघ

## पंजीकृत संघों की संख्या एवं सदस्यता

| वर्ष | अवधि के आरम्भ में | | अवधि के अंतर्गत पंजीकृत | | अवधि के अंतर्गत विलोपित | | अवधि के अन्त में विद्यमान | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | सदस्यता | संख्या | सदस्यता | संख्या | सदस्यता | संख्या | सदस्यता |
| १९६१-६२ | ३०१ | ६५,०७७ | ८५ | १६,२२४ | १२८ | २७,३२३ | २५८ | ५३,९७८ |
| १९६२-६३ | २५८ | ५३,९७८ | ७२ | ४,७२४ | — | — | ३३० | ५८,७०२ |
| १९६३-६४ | ३३० | ५८,७०२ | ११६ | १६६२७ | ६१ | ९९६० | ३८५ | ६५,३६८ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# तुलना में राजस्थान

निम्नलिखित तालिका से ज्ञात होता है कि राजस्थान कृषि दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। यहां प्रति एकड़ कुल और विशुद्ध उत्पादन अन्य राज्यों से बहुत कम है।

| | प्रति एकड़ उत्पादन का कुल मूल्य रुपया | इन्डैक्स (सम्पूर्ण राज्य १००) |
|---|---|---|
| केरल | ५२१.५६ | २७८.६ |
| आसाम | ३७०.८७ | १९८.१ |
| पश्चिमी बंगाल | ३४८.८४ | १८६.३ |
| मद्रास | ३३८.९२ | १८१.० |
| जम्मू और कश्मीर | २६१.८२ | १३९.९ |
| उड़ीसा | २०८.२१ | १११.२ |
| उत्तर प्रदेश | १९९.८८ | १०६.८ |
| आंध्रप्रदेश | १८८.२३ | १००.५ |
| दिल्ली | १८७.०५ | ९९.९ |
| बिहार | १८६.८३ | ९९.८ |
| [illegible] | १७५.८३ | ९३.९ |
| [illegible] | १६७.४१ | ८९.४ |
| [illegible]चल प्रदेश | १६४.१३ | ८७.७ |
| [illegible]रात | १५३.१० | ८१.८ |
| महाराष्ट्र | १५२.२४ | ८१.३ |
| मध्य प्रदेश | १२५.२९ | ६६.९ |
| राजस्थान | ८४.४१ | ४५.१ |
| सम्पूर्ण राज्य | १८७.२१ | १००.० |

## राजस्थान में जौइन्ट स्टाक कम्पनियों का पंजीयन (सार्वजनिक और निजी)

| | (सार्वजनिक) | | (कुल) |
|---|---|---|---|
| १९५९-६० | १८ | (२) | ६१९० |
| १९६०-६१ | २६ | (३) | २,९०,१४ |
| १९६१-६२ | २९ | (५) | ३,९७,२० |
| १९६२-६३ | १४ | (४) | ८,९३,९० |
| १९६३-६४ | १० | (३) | ८,१८,५० |

## १९६२-६३ में प्रति व्यक्ति बिजली खपत (किलोवाट में)

राजस्थान में प्रति व्यक्ति बिजली की खपत बहुत कम है और केवल आसाम से अधिक है, जहां केवल चार किलोवाट खर्च है।

| | १९६२-६३ |
|---|---|
| आन्ध्र प्रदेश | २५ |
| आसाम | ४ |
| बिहार | ४९ |
| पश्चिमी बंगाल | ९९ |
| गुजरात | ६२ |
| महाराष्ट्र | ८७ |
| केरल | ३५ |
| मध्य प्रदेश | २६ |
| मद्रास | ६३ |
| मैसूर | ४४ |
| उड़ीसा | ५७ |
| पंजाब | ८४ |
| **राजस्थान** | **१५** |
| उत्तर प्रदेश | १९ |
| जम्मू और कश्मीर | २२ |
| दिल्ली | १९२ |
| गोआ, डामन, ड्यू | — |

## राजस्थान में सूती मिल उद्योग

| | |
|---|---|
| तकुए स्थापित | २३१४९६ |
| चालू | १९८९८८ |
| करघे स्थापित | २५३४ |
| चालू | २३९६ |
| कामगरों की संख्या | १२७८७ |
| रुई की खपत (गांठ) | ७९६१३ |
| वास्तविक बिक्री (रुपये) | १४,१०,७१,९८१ |
| कुल पूंजी ,, | १२,४६,४१,४८९ |

## राजस्थान में सड़कें १९६२-६३

| | (किलोमीटर) |
|---|---|
| सीमेंट कंक्रीट | ४८ |
| पेण्टिड | ९१७२ |
| मैटल्ड | ६१५४ |
| ग्रेवल्ड | ५४५४ |
| फेयर वैयर ड्रैस्ड अप टैक्स | ७७१२ |
| | २८५३४ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान सरकार का आय-व्यय १९६४-६५ के बजट सहित

## राजस्व खाते की आय (लाख रुपयों में)

| आय के साधन | १९६२-६३ हिसाब | १९६३-६४ संशोधित अनुमान | १९६४-६५ बजट अनुमान |
|---|---|---|---|
| (i) केन्द्रीय करों का हिस्सा | १०८६.६८ | १२६१.७३ | १२४०.१८ |
| **राज्यकीय कर** | | | |
| (ii) माल गुजारी | ९४१.०८ | ८३०.०० | ८८५.३० |
| (iii) राज्यीय उत्पादन कर | ५१०.५६ | ५४०.०० | ५८०.०० |
| (iv) बिक्री कर | ६४४.६० | ९६०.०० | १०२५.०० |
| (v) स्टाम्प व रजिस्ट्रेशन | १२७.९७ | १५९.०० | १६२.०० |
| (vi) गाड़ियों पर कर | ११२.१३ | १४४.०० | १५०.०० |
| (vii) अन्य कर कृषि आय कर सहित | १८५.०१ | २२२.५० | २३१.३० |
| **सरकारी उद्योगों से आय** | | | |
| (viii) वन | ८०.४४ | ८०.२८ | ८६.२३ |
| (ix) सिंचाई | ९९.४६ | ९.००० | ८७.५० |
| (x) बहुउद्देशीय योजनाएं | २०.५९ | ३१.३८ | ४२.५० |
| (xi) नागरिक निर्माण कार्य | ४५.६८ | | |
| **अन्य** | | | |
| (xii) नागरिक प्रशासन | ३५८.४४ | २९४.८८ | ४५९.९५ |
| (xiii) सामुदायिक विकास व स्थानीय विकास कार्य | ४८.०३ | १.०० | १.०० |
| (xiv) विविध | ५४३.९५ | ८११.०० | ९४३.२० |
| (xv) सहायक अनुदान | १०४२.५८७ | १३७८.५१ | १२८२.५४ |
| कुल आय | ५८५६.२० | ६९३५.६५ | ७२१८.५० |

## व्यय के मद (लाख रुपयों में)

| | १९६२-६३ हिसाब | १९६३-६४ संशोधित अनुमान | १९६४-६५ बजट अनुमान |
|---|---|---|---|
| (अ) विकास व्यय (क+ख) | ३१६९.२४ (५५.८) | ३९४२.७२ (५६.५) | ४२०१.०२ (५७.७) |
| **(क) आर्थिक विकास** | | | |
| (i) कृषि, पशुपालन ग्राम विकास | २५५.८२ | ३२८.८९ | ४२३.७० |
| (ii) सहकार | ५९.९९ | ७२.५६ | ७७.३६ |
| (iii) सिंचाई व बड़ी योजनायें | १६१.०९ | ४०१.३० | ४१६.९१ |
| (iv) नागरिक निर्माण कार्य | २५४.५३ | ३२४.६६ | ३१०.५३ |
| (v) सामुदायिक व स्थानीय विकास कार्य | २३८.१५ | २६७.५८ | ३१८.०[illegible] |
| (vi) वन | ८१.४३ | ९०.६० | ९७.[illegible] |
| (ix) अन्य | ८७.३१ | ९५.४० | १०४.[illegible] |
| **(ख) सामाजिक सेवाएं** | | | |
| (viii) शिक्षा | १२८३.७८ | १३७८.४३ | १४८३.८४ |
| (ix) चिकित्सा | ३७४.१४ | ४०५.१० | ४५३.६६ |
| (x) सार्वजनिक स्वास्थ्य | २१३.०२ | २९८.०९ | २९६.७५ |
| (xi) विविध विभाग | १५९.९८ | १८०.२० | २१८.१३ |
| (अ) विकासेतर खर्च (क+ख) | २५१०.२१ (४४.२) | ३०३३.३८ (४३.५) | ३०७९.८७ (४२.३) |
| (vii) सामान्य प्रशासन | २७२.७२ | २५९.५० | २७७.९४ |
| (xii) न्याय | ५९.९२ | ६२.८४ | ६६.८६ |
| (xiv) जेल | ३७.०० | ३६.१९ | २३७.८३ |
| (xv) पुलिस | ५२१.६२ | ५५९.७८ | ६१२.२१ |
| **अन्य व्यय** | | | |
| (xvii) कर-वसूली व्यय | २९८.९८ | ३२१.६७ | ३१६.९८ |
| (xvii) ऋण सेवाएं | ७८५.५४ | १०८०.०५ | १०३२.९२ |
| (xviii) अकाल | २०.०० | ४०.०० | ४०.०० |
| (xvi) अन्य | ५१४.४२ | ६७३.३५ | ६९५.०० |
| कुल | ५६७९.४५ | ६९७६.१० | ७२८०.८९ |
| राजस्व खाते में बचत (+) घाटा (−) | +१७६.७५ | −४०.४५ | −६२.३९ |



CC-0. In Public.Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान चैम्बर्स आफ कामर्स

प्रत्येक राज्य में जहां एक ओर प्रशासन की ओर से उद्योग एवं व्यापार के विकास और उसकी समस्याओं पर विचार करने तथा विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने क लिए विभिन्न विभाग और कार्यालय स्थापित किए जाते हैं, वहां उस राज्य के व्यापारियों व उद्योगपतियों की ओर से भी राज्य की आर्थिक समस्याओं पर विचार करने और प्रशासन के सामने अपनी कठिनताओं के निवारण के लिए संस्थाएं संगठित की जाती हैं। सब राज्यों की संगठित व्यापार उद्योग संस्थाओं का केन्द्रीय संगठन कार्यालय दिल्ली में है।

राजस्थान के व्यापारियों और उद्योगपतियों की संस्था की स्थापना मार्च १९४९ में जयपुर में हुई थी। इससे पहले वस्तुतः राजस्थान में किसी एक संगठन की स्थापना संभव ही नहीं थी, क्योंकि राजस्थान बीसियों रियासतों में बंटा हुआ था। राजस्थान के एकीकरण ने समस्त राजस्थान के व्यापारियों और उद्योगपतियों को एक सूत्र में संगठित कर दिया। अब उनकी समस्याएं एक समान हो गयी थीं।

चैम्बर के अध्यक्ष श्री रामनाथ पोद्दार


अधिक उत्पादन क्षमता व कम व्यय के लिए
नवीन
**सिमको सकामोटो**
आटोमेटिक लूम खरीदये,
क्योंकि
ये भारतीय परिस्थिति के अनुकूल बनाये गये हैं
इसके अतिरिक्त
सादे ओवरपिक व अन्डरपिक, डापबॉक्स लूम
एवं
सिमको मूलर वारपिंग तथा बाईडिंग मशीनें भी योग्य तथा अनुभवी
टेकनिशियनों के निरीक्षण में तैयार की जाती हैं।
—: निर्माता :—
**सेंट्रल इण्डिया मशीनरी**
मैन्युफैक्चरिंग कं० लि०, बिड़लानगर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान की एक सूत्रता और भारत की स्वाधीनता का यह स्वाभाविक परिणाम था कि देश के उद्योगपतियों और व्यवसाइयों में नई-नई प्रगतियों के लिए उत्साह उत्पन्न हो। वस्तुतः इसी का परिणाम राजस्थान चैम्बर आफ़ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री की स्थापना है।

राजस्थान की व्यापारिक और व्यावसायिक प्रतिभा तथा अध्यवसाय शीलता का लाभ समस्त देश के विभिन्न राज्यों ने उठाया है। अब सब सुविधाएं पाकर स्वयं राजस्थान के आर्थिक विकास के लिए भी उनका उपयोग सम्भव हो गया है। इस चेम्बर में प्रायः समस्त राजस्थान की औद्योगिक तथा व्यावसायिक संस्थाएं संगठित हैं। यह संस्था समस्त राजस्थान की समस्त आर्थिक प्रवृत्तियों से न केवल सम्पर्क स्थापित करती रहती है परन्तु उनकी विविध समस्याओं को हल करने में भी सहायता देती है। ये समस्याएं कच्चे माल के सम्बन्ध में हो सकती हैं, आयात-निर्यात, चुंगी की विविध दरों तथा उद्योगों के लिए भूमि की प्राप्ति के सम्बन्ध में हो सकती हैं। व्यापारियों और उद्योगपतियों के लिए यातायात और परिवहन की समस्या बहुत महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर राजस्थान जैसे पिछड़े हुए राज्य में। यह चेम्बर राज्य और केन्द्र की सरकार से सम्पर्क स्थापित करके उनकी कठिनाइयों और समस्याओं को हल करने का प्रयत्न करता है। दूसरी तरफ यह चैम्बर व्यापारियों से भी सम्पर्क स्थापित करके उनको सरकार द्वारा प्रचारित नई आज्ञाओं, कानूनों तथा देश की नवीन प्रवृतियों से परिचित रखता है।

चेम्बर के लिए यह सौभाग्य की बात है कि उसे अपने कार्य संचालन और निर्देशन के लिए देश के लब्ध प्रतिष्ठ उद्योगपतियों का सदा सहयोग मिलता रहा है। इस चैम्बर के भूतपूर्व अध्यक्षों के नाम ही यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि यह चैम्बर कितना प्रभावशाली और उपयोगी हो सकता है। श्री रामनाथ पोद्दार, श्री गजाधर सोमानी, श्री लक्ष्मी निवास बिरला, श्री कमल नयन बजाज, श्री शांति प्रसाद जैन विभिन्न वर्षों में इसके अध्यक्ष रहे हैं। ये सभी अध्यक्ष अपने अपने उद्योगों में बहुत अनुभवी व प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। उदयपुर, बीकानेर और जोधपुर आदि के प्रमुख व्यापारी भी इस चेम्बर के कार्य में सक्रिय भाग लेते हैं।

समय समय पर इस चैम्बर की ओर से विविध आर्थिक समस्याओं पर विचार करने और व्यापारियों का नेतृत्व करने के लिए परिसंवाद और गोष्ठियां होती रहती हैं। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार से समय समय पर चैम्बर की ओर से प्रतिनिधि मंडल मिलते रहते हैं। राज्य के बजट में लगाये जाने वाले नये करों का उद्योग पर क्या प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, इसके सम्बन्ध में सरकार का ध्यान आकृष्ट करने तथा अधिकारियों से मिलकर रेलवे सम्बन्धी असुविधाओं को दूर कराने के लिए यह चैम्बर विशेषतः प्रयत्नशील रहता है। राजस्थान में छोटी और बड़ी दोनों लाइनें हैं। इन दोनों में कहीं कहीं संगति नहीं है। विभिन्न स्टेशनों पर माल उतारने की सुविधाएं नहीं हैं। इसी तरह खनिज और ऊन उद्योग की आने वाली समस्याएं भी चैम्बर की विचारणीय समस्याएं रही हैं।

## जानने योग्य

जीवन बीमा निगम भी राजस्थान के साथ न नहीं करता। ३१ मार्च १९६३ तक जीवन बीमा नि ने राज्यों में १२४.७३ करोड़ रुपये का व्यय किया, जि से राजस्थान को केवल ५९ लाख अर्थात् .५ प्रतिशत मिला।

चैम्बर ने अपने कार्य को अधिक सुचारू रूप से चलाने के लिए अपना नया विशाल भवन बनाने का निश्चय किया है। इसका शिलान्यास देश के प्रमुख उद्योगपति श्री घनश्यामदास बिड़ला ने किया है। इस भवन का निर्माण व्यय प्रसिद्ध उद्योगपति श्री पद्मपत सिंहानिया देंगे। इस भवन में अनुसंधान विभाग, पुस्तकालय, जनसम्पर्क विभाग और विशाल सभा भवन होंगे। इस चैम्बर के वर्तमान अध्यक्ष श्री रामनाथ पोद्दार के अनुसार चेम्बर की सेवाओं का सारे राजस्थान में प्रसार करने का विचार है, ताकि छोटे छोटे कस्बों और शहरों के व्यापारी भी इसकी सेवाओं से लाभ उठा सकें।

हमें आशा करनी चाहिए कि चैम्बर का विशाल भवन बनने के बाद चैम्बर की गतिविधियां और प्रवृत्तियां बहुत व्यापक और उपयोगी बन जायंगी।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की औद्योगिक संभावनाएं

श्री एल० के० वर्मा (आर्थिक एवं साँख्यिकी विभाग)

१९४९ में एकीकृत राजस्थान के निर्माण के बाद योजनाबद्ध आर्थिक विकास के युग का सूत्रपात होने के साथ ही राज्य में औद्योगिक विकास को गतिशील बनाने के लिये एकाग्र होकर विचार किया गया। भाग्यशाली राजस्थान में पर्याप्त मात्रा में खनिज व दूसरे साधन मौजूद थे, किन्तु वे ज्यादातर यों ही पड़े हुए थे अथवा उनका पूरी तरह उपयोग नहीं किया जा सका था।

वर्तमान में राज्य के बड़े पैमाने के उद्योगों में सूती कपड़ा, चीनी सीमेंट, ऊन की गांठें बनाना और प्रेसिंग, कांच, पत्थर की पट्टियां तथा रेलवे वर्कशाप की गिनती की जाती है। इनके अतिरिक्त लोह तथा अलोह धातुओं की रोलिंग मिलें हैं। मान इंडस्ट्रियल कारपोरेशन जयपुर एक लौह धातुओं की रोलिंग मिल है, जो देश में खिड़कियां, दरवाजे आदि बनाने की एक मात्र मिल है। दूसरा महत्वपूर्ण कारखाना जयपुर मैटल्स एण्ड इलैक्ट्रिकल्स लिमिटेड है। इसमें अलोह धातुओं के पदार्थ, मिश्रित धातुओं की वस्तुएं तथा बिजली के मीटर बनाये जाते हैं। नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी तो देश में अपनी तरह का एक ही कारखाना है, जो जयपुर में वाल बियरिंग तैयार करता है। भरतपुर में हाल ही में प्रति वर्ष दो हजार रेल के डिब्बे तैयार करने का कारखाना स्थापित किया गया है।

राजस्थान, देश का दूसरा बड़ा राज्य होते हुए भी (जिसका क्षेत्रफल ३३८४१३ वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या २.०१ करोड़ है) औद्योगिक क्षेत्र में रचनात्मक अभाव का दृश्य उपस्थित करता है। राज्य की कुल आय में कारखाना उद्योगों से प्राप्त होने वाला भाग केवल २ प्रतिशत ही बैठता है, जबकि अखिल भारतीय अनुमानों में यही अंश ८ से १० प्रतिशत तक रहता है। १९६१ की जनगणना के मुताबिक राज्य की कुल जनसंख्या में केवल ३.८३ प्रतिशत लोगों को ही उद्योग धन्धों से जीविका के साधन प्राप्त होते हैं, जब कि अखिल भारतीय प्रतिशत ४८ है।

किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि यहां औद्योगिक विकास की संभावनाएं ही नहीं हैं। वे तो अमित हैं। साधनों की कमी राजस्थान में नहीं है। मरुभूमि दीखने वाले राज्य पर भी प्रकृति अनुदार नहीं रही।

## चीनी

कृषि पर आधारित उद्योगों में शक्कर के कारखाने के विस्तार की अधिकाधिक गुंजाइश नजर आती है। वर्तमान में राजस्थान में होने वाला शक्कर का उत्पादन तथा उपभोग बहुत ही कम है। उत्तर प्रदेशों के लिये, (जिसमें उत्तर प्रदेश और बिहार भी सम्मिलित किये जा सकते हैं), राजस्थान में चीनी का कारखाना खोलना आर्थिक दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त होगा। यह अनुमान लगाया है कि उत्पादन और उपभोग के वर्तमान स्तरों को देखते हुए चीनी के आठ अतिरिक्त कारखाने खोले जा सकते हैं। दो कारखाने तो अभी राज्य में चल रहे हैं। ये नये खुलने वाले उद्योग अधिकतर कोटा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और गंगानगर में स्थापित किये जा सकते हैं। चीनी के कारखानों के साथ-साथ पांच शराब बनाने के कारखानों की स्थापना की संभावनायें भी पैदा हो जाती हैं, जिनमें चीनी के साथ ही पैदा होने वाले गुड़ आदि का उपयोग किया जा सकेगा।

## कपड़ा

राज्य में सूती कपड़ा बनाने का उद्योग पहले से ही एक व्यवस्थित उद्योग बन चुका है, किन्तु इसमें भी विकास की काफी गुंजाइश नजर आती है। चम्बल और भाखड़ा नहर प्रणालियों द्वारा बढ़ी हुई सिंचाई सुविधाओं को देखते हुए राजस्थान देश के कपास उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में अग्रणी बन जायेगा। इस स्थिति ने भी कपड़ा बनाने के लिये ४० करोड़ रुपयों की लागत से २० नये कारखाने खोलने की गुंजाइश पैदा कर दी है। ऐसा होने पर वर्तमान करघों में ५ लाख तकुओं या १० हजार करघों की वृद्धि और हो सकेगी। उद्योगों की इन इकाइयों की स्थापना करने के लिए आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त स्थान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटा, सवाई माधोपुर, गंगानगर, भीलवाड़ा, उदयपुर, पाली, बूंदी और अजमेर जिलों में मिल सकते हैं।

कृषि पर आधारित दूसरा उद्योग कपास के बीजों से तेल बनाने, घोल निकालने के संयन्त्र, तेल मिलें और आटा मिलें हैं, जिनके विकास की उज्ज्वल संभावनायें है।

## ऊन

राजस्थान में जहां देश के कुल ऊन उत्पादन का ४५ प्रतिशत भाग पैदा होता है तथा ८० प्रतिशत से अधिक माल का निर्यात कर दिया जाता है, वहां तैयार माल के रूप में केवल ऊनी कम्बलों और निजी उपयोग की छोटी-मोटी चीजों का ही उत्पादन किया जाता है। राज्य में कच्चे माल को संवारने और सुधारने के लिए छोटी-छोटी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए तो काफी गुंजाइश है ही, लेकिन कते हुए ऊनी धागे की सप्लाई के लिये स्पिनिंग और ट्विस्टिंग के संयन्त्रों की स्थापना के लिये भी लाभदायक संभावनाएं हैं। ऊन के एक हजार करघों की क्षमता वाले ४ या ५ कारखाने खोले जा सकते हैं, जिनमें अनेक डिजाइन वाले (सभी वर्स्टेड या शेडी यार्न) कपड़े बनाये जा सकते हैं।

पशु धन पर आधारित दूसरा महत्वपूर्ण चमड़ा उद्योग है, जिनके लिए पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल उपलब्ध है। राज्य में दो बड़े चमड़े के कारखाने खोलने की गुंजाइश है, जहां चमड़े को कमाने, उसे तैयार करने तथा चमड़े की वस्तुएं बनाने का कार्य हाथ में लिया जा सकता है।

## वन सम्पदा

राजस्थान वन सम्पदा की दृष्टि से इतना अधिक घनी नहीं है, लेकिन बांसवाड़ा जिले में एक विशेष प्रकार की इमारती लकड़ी प्राप्त होती है, जिसका उपयोग टिम्बर उद्योग की स्थापना करके किया जा सकता है। कोटा और जयपुर के कुछ इलाकों में कागज बनाने के लिए उपयुक्त घास मिलती है। चम्बल योजना से बिजली आ जाने के बाद दस टन कागज का प्रतिदिन उत्पादन करने वाले ५ कागज के कारखाने खोले जा सकते हैं। इनके साथ ही जयपुर और कोटा या अन्य उपयुक्त स्थानों पर १५ टन की क्षमता के दो स्ट्रा बोर्ड बनाने के कारखाने लगाये जा सकते हैं।

उद्योगों के इस वर्गीकरण के अंतर्गत सीमेंट, रासायनिक खाद, शीशा व जस्ता, तांबा, कांच तथा मिट्टी के बर्तन आदि महत्त्वपूर्ण उद्योगों की स्थापना के लिए अच्छी गुंजाइश है।

## सीमेंट

सीमेंट उत्पादन के लिए प्रमुख कच्चे माल अच्छी किस्म का चूने का पत्थर पर्याप्त मात्रा में राजस्थान में प्राप्त होता है। फिर भी अभी राज्य में दो सीमेंट के कारखाने चल रहे हैं, कच्चे माल की उपलब्धि तथा राज्य के भीतर और बाहर बढ़ती हुई मांग को देखते हुए १५ लाख टन सीमेंट प्रति वर्ष और पैदा करने की क्षमता बढ़ाने का प्रबन्ध किया जा सकता है।

## जानने योग्य

जून १९६३ से एक वर्ष तक की गयी जांच के अनुसार राजस्थान के गांवों में बेरोजगारी की समस्या इतनी विकट नहीं है, जितनी अर्ध बेरोजगारी की। इस वर्ष में राजस्थान के श्रमिकों की संख्या कुल जनसंख्या का ४५.७७ प्रतिशत है। श्रमिकों की संख्या में से ७९.८ प्रतिशत को पूरा रोजगार मिला हुआ है, और १७.७ प्रतिशत को पूरा रोजगार नहीं मिला है। २.३६ प्रतिशत श्रमिक बेकार हैं।

## रासायनिक खाद

राज्य में कृषि विकास कार्यक्रम और फसलों के अंतर्गत आये अतिरिक्त क्षेत्र के कारण रासायनिक खाद (नत्रजन) की मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है। राज्य में जिन्क स्मेल्टर से सुपरफोस्फेट बनाने की संभावनायें हैं, जिसमें सल्फटिक एसिड का प्रयोग किया जाता है। यह सल्फटिक एसिड भी जिन्क स्मेल्टर से उपलब्ध हो सकेगा।

## अन्य उद्योग

देश में अब तक शीशे और जस्ते का जितना उत्पादन हुआ है, उसका अधिकांश भाग राजस्थान की खानों से ही निकाला गया है। इन दोनों पदार्थों का स्मेल्टिंग के लिये निर्यात कर दिया जाता है। उदयपुर के निकट एक स्मेल्टर स्थापित करने की योजना है, जिसकी वार्षिक क्षमता १८ हजार टन की होगी। यह क्षमता ६० हजार टन प्रति



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है जिसके लिए आवश्यक कच्चा माल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

खेतड़ी के निकट तांबे के विशाल भण्डार प्राप्त हुए हैं, जिनमें जिस मिकदार में तांबा मौजूद है उसको देखते हुए दस हजार टन की क्षमता वाला एक कोपर स्मेल्टर संयन्त्र लगाने की अच्छी सम्भावनायें पैदा हो गई हैं। फ्रांस के सहयोग से यह संयन्त्र सार्वजनिक क्षेत्र में लगाया जा रहा है।

राजस्थान में कांच बनाने के लिए काम आने वाले सभी प्रकार के कच्चे पदार्थ जैसे सीलिका, चूना और फ्लसपार उपलब्ध है। इनके आधार पर दो आधुनिक ढंग के कांच के कारखाने स्थापित किए जा सकते हैं, जिनमें कांच के टुकड़े, बोतलें, बर्तन तथा अन्य सामान बनाया जा सकता है।

कच्चे माल की सम्भावनाओं के कारण कुछ ऐसे रासायनिक एवं खनिज आधारित उद्योग और हैं जैसे सोड एश, कास्टिक सोडा, रेयन सोडियम सल्फेट, फ्लोराइन कम्पाउन्ड और मिट्टी के बर्तन आदि, जिनके लिए काफी गुंजाइश इस राज्य में मौजूद है।

मिश्रित धातुओं तथा विशेष प्रकार के इस्पात के भी जिनकी क्षमता ५ हजार टन प्रति वर्ष की होगी, स्थापित करने की भी अच्छी सम्भावनायें हैं। इनके अतिरिक्त रिरोलिंग मिल्स, कास्ट आयरिन स्पन पाइप्स, औद्योगिक मशीनरी, इस्पात के कास्टिंग तथा जोविंग फाउन्डरी का उत्पादन भी कारखाने खोल कर किया जा सकता है।

राजस्थान ऐसे उद्योगों की स्थापना के लिए सबसे अधिक उपयुक्त स्थान है जो देश में वांछनीय औद्योगिक स्वरूप के विकास में सहायक हो सके तथा जिनके माध्यम से अन्य सहायक औद्योगिक विकास सम्भव हो सके।

इस राज्य के लोग उच्च व्यावसायिक चातुर्य के धनी हैं और ये ही लोग देश के औद्योगिक विकास के अग्रदूत रहे हैं। साथ ही राज्य में पर्याप्त कच्चा माल उपलब्ध उद्योगों का एक प्रारम्भिक स्वरूप बन रहा है। अतएव यह आशा की जा सकती है कि वह दिन दूर नहीं है कि जब राजस्थान देश के औद्योगिक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकेगा।

● ●

फोन : नं०:—

स्थान : २१२७३२ दफ्तर : २६३१३५

कारखानों के लिए हो,

व्यापारिक दुकानों के लिए हो

अथवा

रहने के घर के लिए

हम सरकार द्वारा स्वीकृत कौलोनियों में आपकी सब आवश्यकताओं के अनुसार प्लाट दे सकते हैं। आजीवन प्रसन्नता और आनन्द की प्राप्ति के लिए आप अपने अंतिम निश्चय से पहले हमसे अवश्य परामर्श कीजिये।

वसुधा लैंड एंड फाइनेन्स कम्पनी

१४/१५ शंकर टैरेस फव्वारा

दिल्ली-६

फोन : २६३१३५



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में हस्तकला उद्योग

श्री एम० एल० गोयल

भारतीय हस्तकला उद्योग में राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान है। हस्तकलाओं की विविधता और कलात्मकता की दृष्टि से राजस्थान को अचरज भरा प्रदेश कहा जाता है। इन कलाओं को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है: (१) छैनी की सहायता से खुदाई (२) नक्काशी (३) कटाई व जड़ाई (४) सांचों की मदद से डाई व बन्धेज।

**हाथी दांत व चन्दन का काम**—हाथी दांत व चन्दन से कलात्मक वस्तुएं बनाने का काम राजस्थान में प्राचीन काल से चला आ रहा है। जयपुर में यह काम महाराजा रामसिंह के शासन काल में स्थापित 'स्कूल आफ आर्ट्स' में संगठित तरीके से प्रारम्भ किया गया था। भिन्न-भिन्न प्रकार के पशु-पक्षी, चन्दन व हाथी दांत से बनाये गये। धार्मिक भावनाओं व सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण महिलाएं हाथी दांत का चूड़ा पहनती हैं, जिसे बनाने के लिये खराद का काम जयपुर के अलावा पाली, मेड़ता पीपाड़, आदि स्थानों में विकसित हुआ। हाथी दांत व चन्दन से बनी आधुनिक सजावट की वस्तुएं विदेशों में लोकप्रिय होती जा रही हैं। हाथी दांत के टेबिल लैम्प, आभूषणों के बाक्स, शतरन्ज के मोहरे व टैबल, शृंगार दर्पण, बटन, कंठहार, सिगरेट केस, फोटो फ्रेम व फूलदान आदि वस्तुओं की मांग बढ़ती जा रही है।

**पीतल का काम**—पीतल की कारीगरी के बर्तनों के लिए जयपुर हिन्दुस्थान भर में प्रसिद्ध रहा है। इन बर्तनों पर रंगों की खुदाई, उभरे डिजाइन तथा नुकतेदार डिजाइन बनाये जाते हैं। इन कलात्मक बर्तनों के नमूने राजा रईसों के घरों में बिखरे पड़े हैं तथा विविध रंगों का सामंजस्य कर, निःसीम धैर्य के साथ सूक्ष्मतर बेलों, बूंटों व आकारों के अंकन में कुशल कारीगरों का स्मरण कराते हैं। आधुनिक घरों में थालियों, आभूषण के बक्सों, सिगरेट केस, कास्मेटिक्स, एश-ट्रे, फूलदान, मद्यपान की सुराही व गिलासों आदि की लोकप्रियता और मांग बढ़ती जा रही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**संगमरमर तथा पत्थर पर खुदाई**—यह राजस्थान की प्राचीन कला है। इनका परिचय जैसलमेर, बीकानेर और जयपुर की हवेलियों व भवनों में मिलता है। बारीक जालीदार झरोखे व गोखडे देख कर अचम्भा हो उठता है। १६वीं शताब्दी से भी पूर्व से इस कला में राजस्थान के हजारों परिवार लगे हुए हैं। संगमरमर की मूर्तियां तो अद्वितीय कला के नमूने हैं। इनके लिए कच्चा माल मकराना की खानों से प्राप्त होता है। डूंगरपुर का काला परेरा पत्थर, चित्तौड़गढ़, भिरी व मलसाना के रंगीन पत्थर जैसलमेर व जोधपुर के लाल पत्थर इस उद्योग में काम में लिये जाते हैं।

**नीले व सफेद मिट्टी के बर्तन**—जयपुर शहर नीले व सफेद मिट्टी के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां की "ब्लू पोटरी" की मांग पश्चिमी देशों में एक लम्बे समय से रही है। कांच, गौंद, मिट्टी, साजी आदि पथार्थों को मिलाकर तरह-तरह के फूलदान व टाइलें बनाई जाती हैं। चिड़ियों व जानवरों के आकार बनाकर उनको चमक से पोत दिया जाता है। नमक व मसाले-दानियां, अचार की बरियां, पानी के घड़े व टम्बलर, साबुनदान तथा फूलदान भी बनते हैं।

**कुट्टी या पेपर मेशी**—कश्मीर के बाद कुट्टी व पेपर मेशी के कामों में राजस्थान अपनी कारीगरी के लिए प्रसिद्ध रहा है। तरह-तरह की चिड़ियां, पशु-पक्षी तथा फल-फूल व सब्जियां अनेक प्राकृतिक रंगों में बनाये जाते हैं। लकड़ी के चमकदार रंगीन खिलौने राज्य में उदयपुर में सबसे अधिक बनाये जाते हैं। इनमें लोककला का प्रतिनिधित्व होता है।

**लाख की चूड़ियां**—लाख की चूड़ियां अब लोकप्रियता की प्रादेशिक सीमा पार कर चुकी है। कांच की चूड़ियों के आविष्कार से पूर्व इन्हें सुहाग का अनिवार्य चिन्ह समझा जाता रहा था और यही कारण है कि हर गांव में लाख की चूड़ियां बनाने वाला एक परिवार रहा करता था। मुगल काल में हरम की बेगमें तथा रानियां लाख की चूड़ियों में सच्चे हीरे पन्ने जड़ाया करती थीं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसका अधिक विकास किया गया और आज लाख की चूड़ियां विदेशी महिला-सैलानियों के आकर्षण की एक प्रमुख वस्तु बनती जा रही हैं।

**जवाहिरात**—राज्य की राजधानी जयपुर में जवाहिरातों की कटाई, पोलिश व आभूषणों का काम विश्व भर में ख्याति प्राप्त कर चुका है तथा यहां के गहने धनी विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं।

**वस्त्रों पर छपाई, रंगाई व बंधेज**—राजस्थान में सूती कपड़े की हाथ से बुनाई पर भारी संख्या में बुनकर परिवारों का भरण पोषण होता है। कोटा, उदयपुर, झुंझनूं, नीमका थाना आदि के बुनकरों द्वारा बनाई गई साड़ियां तथा पेचे (सिरोपाव) बड़े-बड़े व्यवसायी शहरों में भेजे जाते हैं। राजस्थान में बने इन वस्त्रों पर अनेक चमकीले रंगों की डिजाइनें बनाई जाती हैं। लाल, अंगूरी, हरा, नीला व काला अलग-अलग तथा मिले हुए रंगों की अनुपम छटा इन डिजाइनों में देखते ही बनती है। राजस्थान की "छीपा" जाति कल्पना की धनी रही है, जो अनन्त काल से वस्त्रों पर छपाई का काम करती आ रही है। सांगानेर व बाड़मेर के प्रिन्ट तो विदेशों में निरन्तर लोकप्रिय होते जा रहे हैं। इन वस्त्रों को घर की सजावट,


हमारी ओर से इस राष्ट्रीय पर्व पर
आपका
अभिनन्दन
★ प्रिसीजन बाल, रोलर, बेयरिंग,
★ स्टील बाल स्पिराडल इन्सर्ट और
★ रेलवे वैगन इंजनों के लिए
ऐक्सल बाक्स के
निर्माता
नेशनल इंजिनियरिंग
कम्पनी जयपुर




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्दों, सोफासेटों के कवर तथा साड़ियां, ब्लाउज, बच्चों के बुशर्ट व फ्राकों में काम में लिया जाता है।

जयपुरी बंधेज की साड़ियां पिछले दस सालों से काफी लोकप्रिय हो रही हैं। सूती, रेशमी (असली व नकली), जोरजट, वायल आदि वस्त्रों से साड़ियां व सोफे बनाये जाते हैं। जयपुर, सीकर, झुंझनूं व जोधपुर में विशेष रूप से बंधेज का काम होता है।

**दरियां व गलीचे**—राजस्थान में १७वीं शताब्दी से पूर्व से ही ऊनी दरियां बनाई जाती हैं। इस हस्तकला का घर की सजावट में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दरियां व गलीचों पर विभिन्न प्रकार के फूलों के अतिरिक्त पशु-पक्षी व जानवरों के चित्र भी बनाये जाते हैं। उद्योग के रूप में १८४० में कराची के एक व्यापारी ने जयपुर में फैक्ट्री खोलकर काम शुरू किया था। १९वीं शताब्दी तक ४ कारखाने काम करने लगे थे। ये लोग ब्रिटेन व यूरोप के अनेक देशों में गलीचों का निर्यात करने लगे थे। इस उद्योग का काफी विस्तार हुआ है। राजस्थान में देश के सम्पूर्ण ऊनी गलीचों का ४० प्रतिशत उत्पादन होता है।

**जूतियां व थैले**—कशीदाकारी के जूते का उद्योग कई शताब्दियों से जयपुर व जोधपुर में चलता आया है। इन जूतियों को पतले चमड़े के तलों पर बनाया जाता है तथा इन पर मखमल चढ़ाकर कशीदाकारी की जाती है। तरह तरह के बेल बूंटे बनाये जाते है। जयपुर में कशीदाकारी का काम मखमल पर किया जाता है जबकि जोधपुर में चमड़े पर ही यह काम खूबी से होता है। विदेशी पर्यटकों में इन जूतियों की भारी मांग रहती है।

**बादले**—बादले या पानी की झारियां रेल, हवाई मार्ग या सड़क से यात्रा करने वालों का लोकप्रिय साथी बनी हुई हैं। ये जिन्क (जस्ते) धातु से बनाई जाती हैं, जिसमें कई दिनों तक पानी स्वच्छ रह सकता है। इन पर ऊनी व सूती कपड़ों के आकर्षक खोल चढ़ाये जाते हैं। ये लगातार यात्रा करने वालों के लिए यह वरदान सिद्ध हुई है। धीरे-धीरे इनमें बर्फ रखने की व्यवस्था भी करदी गई है और ये बादले अब 'थरमस' का स्थान लेने लगे हैं।

राजस्थान के ये हस्तकला उद्योग एक ओर जहां हजारों परिवारों को रोजगार प्रदान करते हैं वहाँ दूसरी ओर वे हमारी कला और सौन्दर्यप्रियता का देश-विदेश में प्रसार कर हमारी प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं साथ ही विदेशी मुद्रा अर्जन करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

भारतीय हस्तकला बोर्ड के विशेषज्ञों की देखरेख में हस्तकला उद्योग के विकास के लिए लघु उद्योग निगम प्रयास कर रहा है। अप्रैल से न्यूयार्क में हो रही प्रदर्शनी (न्यूयार्क फेयर) के अवसर पर राजस्थान की हस्तकलाओं का एक स्टाल भेजा गया है। विदेशी बाजार में सरकारी स्तर पर सीधे हस्तकलाओं का ऐसा प्रदर्शन संभवतः अपने ढंग का पहिला प्रयास होगा। इससे हस्तकलाओं की बिक्री की भारी संभावनायें पैदा होने की आशा की जाती है।

राजस्थान के हस्तकला उद्योग के विकास की भारी संभावनाएं हैं तथा वह दिन दूर नहीं, जब हमारे राज्य की कारीगरी की वस्तुएं विश्व में पूर्ण प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगी। इस उद्योग को वैज्ञानिक आधार पर संगठित करने के लिए सरकार प्रयत्नशील है तथा तीसरी योजना की अवधि में १६ डिजाइन विस्तार केन्द्र कायम किये जा रहे हैं। "विकास किरण" से

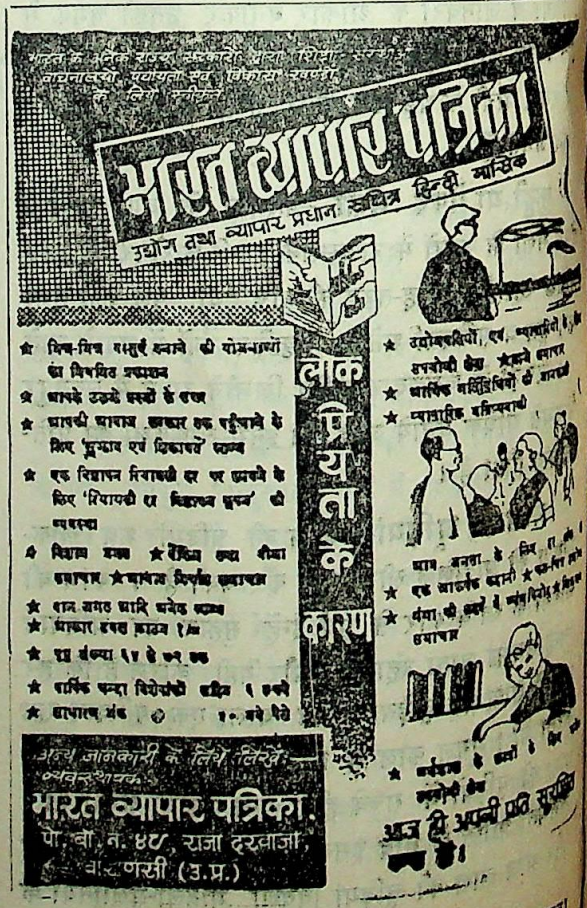




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में सिंचाई की नई योजनाएं

निरंजन लाल शर्मा

**राजस्थान फिर हरा-भरा हो उठेगा, प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री रिची कालडर को ऐसी आशा है। उनके कथनानुसार राजस्थान, गोबी और सहारा के नीचे जल की ऐसी धारायें बह रही हैं, जिनको ऊपर लाकर रेगिस्तान को हरा-भरा किया जा सकता है। जहां ऐसी धारायें नहीं हैं, उन रेगिस्तानों में समुद्री जल को क्षार-रहित कर उनकी पेय पानी की आवश्यकता पूरी की जा सकेगी। अणु-शक्ति द्वारा समुद्री जल को पीने योग्य बनाने पर कम खर्च आयेगा। अमरीका और इजरायल में इस सम्बन्ध में बड़ी प्रगति हो चुकी है। एक दावे के अनुसार इजरायली लोग पांच सेंट अर्थात् लगभग चार आने में समुद्र से १००० गैलन शुद्ध जल प्राप्त कर सकते हैं।**

राजस्थान प्रायः सारे भारतवर्ष में मरु-भूमि के नाम से प्रसिद्ध है, परन्तु वस्तुतः यह एकान्तिक सत्य नहीं है। उत्तरी और पश्चिमी राजस्थान को मरुभूमि कहा जा सकता है। जहाँ वर्षा बहुत ही कम होती है और खेती नहीं हो पाती [x] इसीलिए राजस्थान की प्रमुखतम समस्या सिंचाई और पेय पानी की व्यवस्था की है। प्राचीन राजस्थान में भिन्न-भिन्न रियासतों के राजाओं ने पानी की समस्या के समाधान के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य किया था और भिन्न-भिन्न नगरों के आस-पास बड़े-बड़े तालाब बनवाये थे। छोटी-छोटी पहाड़ियों के ढाल उठाने से वर्षा के जल को एकत्र करके बड़े २ तालाब बनवाये गये, किन्तु यह तालाब वस्तुतः वहीं सहायक हो सकते थे, जहां वर्षा बहुत होती है। मरुभूमि में इन तालाबों की स्थापना सम्भव नहीं थी। संयुक्त राजस्थान बनने के बाद सिंचाई की व्यवस्था की ओर बहुत ध्यान दिया जाने लगा।

पहली, दूसरी और तीसरी योजनाओं में सिंचाई की बहुत सी छोटी-छोटी योजनाएं प्रारम्भ की गईं। पहली योजना में ही सिंचाई की मद में ५.६४ करोड़ रुपया व्यय किये गये। इस योजना के अन्तर्गत ७०५० नये कुए खोदे गये और भाखड़ा की नहरों से भी पानी प्राप्त किया जाने लगा।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में भी सिंचाई की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इस योजना की अवधि में जहां राजस्थान नहर के निर्माण का श्रीगणेश हुआ, वहां नये कुओं का निर्माण (४१,७४६) पुराने कुओं का जीर्णोद्धार

[x] श्री लक्ष्मीमल सिंधवी का लेख; (पृष्ठ ३२ पर प्रकाशित) भी देखिए।

लेखक

तथा उनको गहरे किया जाना (७२६६७१) नये नलकूपों का निर्माण व लगाये गये रहट (१७३२), छोटे तालाब (५५८) का कार्य भी सम्पन्न हुआ। इन सब के परिणामस्वरूप योजना अवधि की समाप्ति तक लगभग ६६ हजार एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हुई।

भाखड़ा नांगल परियोजना के अन्तर्गत राजस्थान क्षेत्र में आने वाली ८०० मील लम्बी नहरों का निर्माण इसी योजना की अवधि में पूरा कर लिया गया था। इस परियोजना से सिंचाई १९५४ में प्रारम्भ की गई। १९६३-६४ में ४.९५ लाख एकड़ भूमि सींची गई। पूरी होने पर यह परियोजना गंगानगर जिले के शुष्क भाग में ५.७ लाख एकड़ भूमि सींचेगी।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में सिंचाई के लिए अनेक छोटी और बड़ी योजनायें बनाई गईं। इस सबके लिए



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८५.१० करोड़ रुपया का प्रावधान किया गया है, जो कुल योजना का ३६.०६ प्रतिशत है। भाखड़ा और चम्बल से सिंचाई के जल की प्राप्ति होने लगी है। १९६२-६३ में ही १८१ हजार एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र की सिंचाई होने लगी है। राजस्थान नहर और चम्बल की नहर के सम्बन्ध में पाठक अन्यत्र लेख पढ़ेंगे। यह दोनों नहरें, इतनी महत्व पूर्ण है कि इन्हें केन्द्रीय सरकार ने भी प्राथमिकता देने का निश्चय किया। राजस्थान नहर के कार्य का व्यय तो अब केन्द्रीय सरकार स्वयं वहन करने लगी है। वस्तुतः इन

**लाला भरतराम**

**राजस्थान में न रहते हुए भी वहां के औद्योगिक विकास में विशेष रूचि ले रहे हैं, कोटा का रेयन कारखाना इसका प्रमाण है।**

बड़ी योजनाओं के अतिरिक्त भी राजस्थान में सिंचाई की भिन्न-भिन्न योजनाओं पर अमल हो रहा है। जवाई बांध अनेक वर्षों से स्थानीय निवासियों को लाभ पहुंचा रहा है। राजस्थान नहर को व्यास और रावी नदियों से स्थायी रूप से पानी देने की व्यवस्था करने के लिए व्यास परियोजना हाथ में ली गई है। इसमें व्यास नदी पर पोंग बांध तथा व्यास सतलज लिंक का निर्माण भी सम्मिलित है। इन दोनों योजनाओं से पानी और बिजली दोनों मिलेंगे। १९७१-७२ में इस योजना के पूर्ण होने की आशा है।

लोकनाथन कमेटी ने छोटी सिंचाई योजनाओं को अधिक प्राथमिकता देने का परामर्श दिया था। इन छोटी योजनाओं की पूर्ति में विदेशी मुद्रा का व्यय कम होता है, समय कम लगता है तथा विनियोजन का फल जल्दी मिलने लगता है। एक सरकारी वक्तव्य के अनुसार अब तक लगभग ३० बडे तथा मध्यम सिंचाई कार्य किये जा चुके हैं तथा १९६३-६४ में १२० हजार एकड़ भूमि से भी अधिक क्षेत्र सींचा गया है। यों १५० हजार एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सका है।

प्रथम योजना के पहले राज्य में केवल ९ लाख एकड़ भूमि को सींचने की सुविधाएं थीं, किन्तु इन योजनाओं के परिणामस्वरूप अब २५ लाख एकड़ भूमि सींची जा सकेगी। चौथी योजना की अवधि में ११ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि को सींचने की सुविधाओं को उपलब्ध करने का प्रसतव है। जिससे राज्य के खाद्य उत्पादन में ४ लाख टन की वृद्धि होगी।

भिन्न-भिन्न नदियों द्वारा कितने क्षेत्र में सिंचाई होती है इसके लिए राजस्थान अंकों में तालिका देखिए।

उपर्युक्त योजनाओं से भी पश्चिमी क्षेत्र को बहुत लाभ नहीं होता। इस क्षेत्र में सिंचाई के लिए बाहर की नदियों से और विशेषकर नर्वदा नदी के पानी से लाभ उठाया जा सकता है। अब यह मान लिया गया है कि राजस्थान के लगभग ७ लाख एकड़ की सिंचाई के लिए नर्वदा का पानी दिया जाय। राजस्थान से नर्वदा के पानी की निकटतम दूरी लगभग ३५० मील है। जहां से पानी मिलेगा वह ३०० फुट की ऊंचाई पर है। राजस्थान पहुंचने पर भी यह पानी २०० फुट ऊंचा रहेगा।

## जानने योग्य

राजस्थान में सरकारी कम्पनियों की संख्या भी बहुत कम है। ३० सितम्बर १९६० तक उनकी कुल संख्या चार थी, जिनमें १.०१ करोड़ रुपया लगा हुआ था। यह कुल राज्यों की सरकारी कम्पनियों में प्रदत्त पूंजी का .२४ प्रतिशत है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की पंचवर्षीय विकास योजनाएं

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

**राजस्थान की चारों पंचवर्षीय योजनाओं का सिंहावलोकन**

## चतुर्थ पंचवर्षीय योजनाएं

इन पंक्तियों के लिखने तक राजस्थान की चौथी पंचवर्षीय योजना का अंतिम रूप निर्धारित नहीं हो सका है। योजना आयोग और राजस्थान के योजना मंत्रालय में अभी तक विचार-विनिमय जारी है। देश की सम्पूर्ण योजना के आकार और साधनों की सम्भावना के सम्बन्ध में कुछ बहुत गम्भीर विवादग्रस्त प्रश्न खड़े हो गए हैं, जिनका निर्णय बहुत सरल नहीं है। फिर भी इन पंक्तियों के लिखने तक योजना आयोग ने २१ खरब रु० की योजना निर्धारित की है। इसके अनुसार सब राज्यों को अपने लक्ष्य पर पुनर्विचार करना है। सम्भव है कि राष्ट्रीय विकास परिषद् कुछ और भी परिवर्तनों का सुझाव दे। फिर भी सम्भावना यही है कि योजना के प्रारूप में राजस्थान सरकार ने जो लक्ष्य और कार्यक्रम नियत किये हैं उन्हीं को थोड़ी-बहुत कटौती और परिवर्तनों के साथ स्वीकार कर लिया जायगा। इसलिए हम इन पंक्तियों में इसी आधार पर चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का परिचय देना चाहते हैं। सम्भव है कि यह अंक पाठकों तक पहुँचते-पहुँचते कुछ परिवर्तनों का अधिक स्पष्ट रूप पाठकों को मिल जाय।

राजस्थान की प्रस्तावित योजना ४३८.४० करोड़ रुपये की कही जाती है। लेकिन वस्तुतः इस योजना की अवधि में राजस्थान के विकास में इस राशि से करीब डेढ़ गुना अधिक खर्च होगा। एक अनुमान के अनुसार निजी क्षेत्रों से भी ४०४ करोड़ रुपये का विनियोजन सम्भव है। वस्तुतः इसी अवधि में राजस्थान नहर पर की ७१ करोड़ रुपया व्यय होगा, जिसका भार केन्द्रीय सरकार स्वयं उठाएगी और जिसे राज्य सरकार के अनुरोध पर केन्द्रीय सरकार ने केन्द्रीय योजनाओं के अंतर्गत रखना स्वीकार कर लिया है। इस तरह राजस्थान की चतुर्थ पंचवर्षीय योजना का आकार तुलनात्मक दृष्टि से बहुत बड़ा न भी हो, परन्तु वस्तुतः राजस्थान के आर्थिक विकास में धन का विनियोजन काफी अधिक होगा। यह सब देखते हुए राजस्थान के योजना मंत्री श्री मथुरा दास माथुर को आशा है कि तीसरी पंचवर्षीय योजना में राजस्थान की आय यदि २४ प्रतिशत बढ़ी थी तो चौथी पंचवर्षीय योजना में ३० प्रतिशत तक बढ़जायगी, और राज्य का आर्थिक विकास ६.५ प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से हो सकेगा, जो सम्पूर्ण देश के लिए दर आँकी गयी है।

मौटे तौर पर इस प्रस्तावित योजना में व्यय का विभाजन निम्नलिखित रूप से होगा—

| | |
|---|---|
| कृषि | ६०.२५ करोड़ |
| सहकारिता और सामुदायिक विकास | ४०.०० ,, |
| सिंचाई और विद्युत | १०८.९२ ,, |
| उद्योग और खनिज | १९.०९ ,, |
| परिवहन और संचार | ३०.०० ,, |
| सामाजिक सेवाएँ | ९३.७० ,, |
| बाढ़ नियंत्रण | ६.०० ,, |

स्वभावतः चौथी पंचवर्षीय योजना में देशव्यापी अन्न संकट को देखते हुए कृषि, सिंचाई, पशु पालन पर अधिक ध्यान दिया जायगा, ताकि न केवल छोटे उद्योग पनप सकें, बल्कि स्थान-स्थान पर नलकूपों द्वारा भी सिंचाई की व्यवस्था की जा सके।

चौथी पंचवर्षीय योजना में विनियोजन की जितनी अधिक आवश्यकता है, उतने साधन राज्यों में उपलब्ध नहीं हैं। नये-नये कर लगाने की भी एक सीमा होती है। इसलिए आय के दूसरे साधन बढ़ाने होंगे। यही कारण है कि चौथी पंचवर्षीय योजना में निजी उद्योगों को सहायता देने के साथ-साथ सार्वजनिक उद्योगों के विकास पर अधिक बल दिया जायगा। सोडियम सल्फेट, बीकानेर ऊनी टैक्सटाइल मिल्स, गंगा नगर और चित्तौड़गढ़ में दो नयी सूती मिलें और चम्बल क्षेत्र में एक चीनी मिल स्थापित करने के प्रस्तावों पर विचार हो रहा है।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता राणा प्रताप सागर के अणु-शक्ति उत्पादन की क्षमता २०० मैगावाट से बढ़ाकर ४०० मैगावाट करने का विचार है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रथम पंचवर्षीय योजना

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की चर्चा करते हुए हमें पहली योजनाओं पर एक दृष्टि डालकर देखना चाहिए कि उनमें राज्य को कितनी सफलता मिली और कितनी असफलता।

राजस्थान के एकीकरण से उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने के पश्चात् ही सरकार पंचवर्षीय योजनाओं के अनुसार राज्य के सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान दे सकी। प्रथम पंचवर्षीय योजना लगभग साढ़े चौंसठ करोड़ रु० की थी। इस योजना में मुख्य स्थान कृषि, सिंचाई तथा सामुदायिक विकास कार्यों को दिया गया। इस योजना के अन्त तक ६९ लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि में फसल बोई जाने लगी। २४.८८ लाख एकड़ की बजाय ३३.३५ लाख एकड़ में सिंचाई होने लगी। ५० विकास खण्ड खोले गये, सहकारी समितियों की संख्या ४९०८ से बढ़कर ८००७ हो गई, सड़कों का विस्तार ११३७१ मील से बढ़कर १३९८८ मील हो गया और बिजली का उत्पादन १५ हजार किलोवाट से बढ़कर ४१ हजार किलोवाट हो गया। कुटीरउद्योगों के विकास, औद्योगिक प्रशिक्षण आदि की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इस योजना के अन्त तक निर्धारित व्यय के अनुसार काम नहीं हो सका। ६४॥ करोड़ रु० में से ५४.१४ करोड़ रु० के काम पूरे किये जा सके। यह कमी केवल राजस्थान की कमी नहीं थी, प्रायः सभी राज्यों की सफलता करीब इसी अनुपात में हुई थी; फिर राजस्थान को अपनी शक्ति का एक बड़ा भाग एकीकरण से उत्पन्न समस्याओं को हल करने में भी लगाना पड़ा था।

## द्वितीय पंचवर्षीय योजना

राजस्थान की द्वितीय योजना के क्रियान्वयन में पूर्ववर्ती अनुभवों और प्रशासकीय मशीनरी के अधिक अच्छे संगठन ने सहायता दी। इस योजना में १०५.२७ करोड़ रु० का प्रावधान किया गया था। एक अनुमान के अनुसार इसमें करीब १०४.९७ करोड़ रु० व्यय हुआ।

यदि प्रथम योजना में लक्ष्यों के अनुकूल उपलब्धि प्राप्त नहीं की जा सकी थीं, दूसरी योजना में राज्य ने बहुत संतोषजनक सफलता प्राप्त की। सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अन्न-उत्पादन की वृद्धि है। ८ लाख १२ हजार टन अधिक उत्पादन लक्ष्य था, परन्तु ११ लाख टन अधिक उत्पादन ने मरुभूमि के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान को बचत का प्रदेश बना दिया। तिलहन, रुई, चने का उत्पादन भी लक्ष्यों के अनुसार हो गया। इस कृषि उत्पादन के लिए बढ़िया बीज, उर्वरकों का प्रयोग, सिंचाई, कृषि-प्रशिक्षण आदि सभी का प्रयोग किया गया। द्वितीय योजना के अन्तर्गत निर्धारित कुछ लक्ष्य व उपलब्धियां निम्न प्रकार हैं :

| | लक्ष्य | उपलब्धि |
|---|---|---|
| नये कुओं का निर्माण | ३०६१० | ४१७४६ |
| पुराने कुओं का जीर्णोद्धार | २२६०० | २९९७१ |
| जैनेरेटरों व डीजल इंजनों की सप्लाई | ६०० | ८७१ |
| लगाये गए रहट | १५०० | १७३२ |
| सिंचाई अतिरिक्त एकड़ | — | ६.६००० |
| भूमि सुधार एकड़ | १७०००० | ११२००० |
| बिजली व्यय (रुपये) | १९९९.५१ लाख | १५७५ लाख |
| बिजली अतिरिक्त | | ४४९६ कि० वा० |

सूरतगढ़ फार्म की स्थापना इसी योजना में हुई। पशुपालन, गर्भाधान केन्द्र, पशु औषधालय आदि की ओर ध्यान दिया गया। २ अक्टूबर १९५९ से सारे राज्य में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण या पंचायती राज्य की स्थापना इस योजना की एक महत्वपूर्ण योजना है। इस दिशा में सचमुच राजस्थान ने देश का ही नेतृत्व किया है। इस योजना के अन्त तक १६० विकास खण्ड खोले जा सके थे।

इस योजना की एक विशेषता सिंचाई की बड़ी योजनाओं का प्रारम्भ थी। भाखडा की नहरों, चम्बल की योजनाओं तथा जवाई, पेजा, पार्वती आदि की योजनाएं इसी अवधि की योजनाएं हैं। राजस्थान नहर की खुदाई इसी योजना का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। (इसके सम्बन्ध में राजस्थान नहर वाला पृष्ठ ५१ पर पढ़िये)

औद्योगिक विकास के लिए समस्त राज्य में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए बिजली, भूमि, बिक्री कर आदि की बहुत सुविधाएं इन वर्षों में दी गई, जो तीसरी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान सरकार के कुछ मंत्री

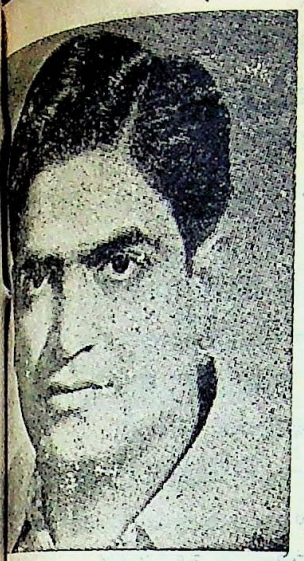

मंत्री : श्री मोहनलाल सुखाड़िया

योजना मंत्री : श्री मथुरादास माथुर

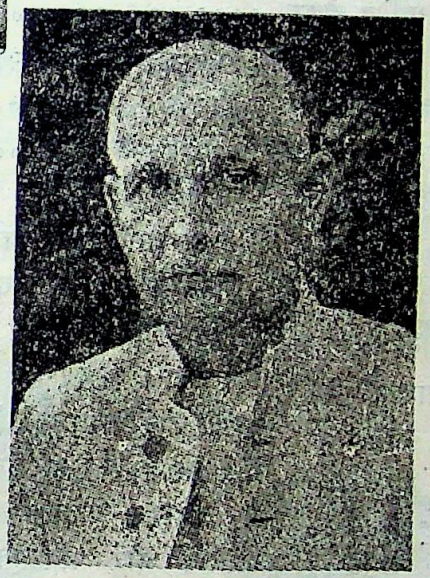

वित्त मंत्री : श्री बालकृष्ण कौल

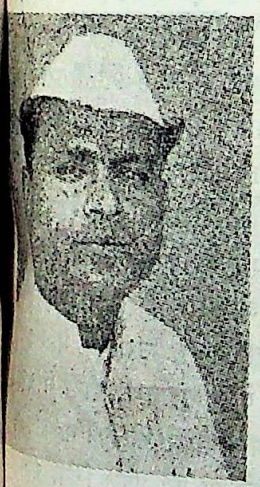

कारिता मंत्री : श्री भीखाराम

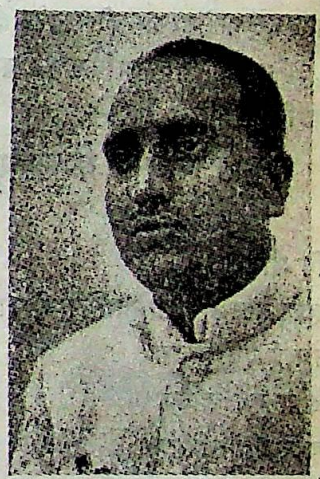

कृषि मंत्री : श्री नाथूराम मिरधा

मंत्री : महाराजा हरिश्चन्द्र

राजस्व मंत्री : श्री कुम्भाराम

उद्योग उप-मंत्री : श्री चांदन मल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजनायें भी चालू हैं इनका अनुकूल परिणाम निकला और राजस्थान के अनुभवी अध्यवसायी उद्योगपतियों का ध्यान अपने राज्य को उद्योग समृद्ध बनाने की ओर गया। आज राजस्थान में औद्योगिक विकास हो रहा है, वस्तुतः इसकी आधारशिला इसी अवधि में रख दी गई थी। शिक्षा, चिकित्सा, जल प्रदाय योजना, सहकारिता, पिछड़ी जातियों की उन्नति आदि समाज कल्याण की अनेक प्रवृत्तियों ने संतोषजनक प्रगति की।

## तीसरी पंचवर्षीय योजना

प्रथम दो व तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं से उत्साहित होकर जब सारे देश ने तीसरी वृहदाकार योजना बनाई, तो राजस्थान कैसे पीछे रह सकता था। यदि पहली दो योजनाओं को मिलाकर कुल व्यय १७० करोड़ रु० था, तो तीसरी योजना २३६ करोड़ रु० की अर्थात् दोनों के कुल योग से भी ६६ करोड़ रु० अधिक की बनाई गई है। इसका विवरण निम्नलिखित है :—

### तीसरी योजना में स्वीकृत राशि

(लाख रु० में)

| | |
|---|---|
| १. कृषि कार्यक्रम | २३००.०० |
| २. सहकारिता एवं सामुदायिक विकास | २१८०.०० |
| ३. सिंचाई एवं विद्युत | १२१००.०० |
| ४. उद्योग एवं खनिज | ८९५.०० |
| ५. संचार एवं परिवहन | १३२०.०० |
| ६. समाज सेवाएं | ४५९५.०० |
| ७. विविध | २१०.०० |
| | २३६००.०० |

यह योजना अभी तक पूर्ण नहीं हुई। अभी तक के चार वर्षों में जितनी सफलता प्राप्त हुई है, उसकाभी ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सका। अनेक योजनाएं अभी तक पूर्ण नहीं हुईं और जो कुछ किया जा सका है, उसके भी अंक उपलब्ध नहीं हुए। इतना ही कहा जा सकता है कि कृषि, पशुपालन, सिंचाई, बिजली, वन सहकारिता और समाज कल्याण आदि दिशाओं में प्रगति हो रही है। उद्योगों की पृष्ठभूमि दूसरी योजना में बन चुकी थी इन वर्षों में अनेक उद्योग स्थापित हो गये हैं। इनमें से बहुत से उद्योगों ने उत्पादन भी प्रारम्भ कर दिया। अनेक प्रमुख उद्योग इस योजना की अवधि समाप्त होने तक उत्पादन प्रारम्भ भी कर देंगे। (देखिये—औद्योगिक विकास सम्बन्धी अन्यत्र प्रकाशित लेख)।

## शिथिल प्रगति

नीचे की तालिका से तीसरी योजना की कुछ जानकारी मिल सकती है :—

| तृतीय योजना का कुल निर्धारित व्यय लक्ष्य लाख रु० में | व्यय लाख रु० में | लक्ष्य का प्रतिशत |
|---|---|---|
| १९६१-६६ २३६०,०० | | |
| १९६२-६३ ३५९२.२१ | ३६१५.६४ | १००.६१ |
| १९६३-६४ ३८३५.०० | ३७७९.६४ | ९८.५४ |
| १९६४-६५ ४९२५.०० | १८४२.७२ | ३९.८६ |
| | ९२३८.०० | |

इस तालिका से एक बात स्पष्ट है कि तीसरी योजना के पहले वर्ष में निर्धारित लक्ष्य से भी अधिक व्यय हुआ जबकि १९६४-६५ में व्यय के लक्ष्य का प्रतिशत ही गिर गया। १९६५-६६ में भी स्थिति इससे बेहतर होने की कोई आशा नहीं है। कृषि कार्यक्रमों में १९६४-६५ में केवल ३४.६९ प्रतिशत व्यय हुए हैं, सिंचाई एवं शक्ति में ३६.२९ प्रतिशत, खनिज व उद्योग में ३१.५० प्रतिशत और परिवहन एवं संरक्षण दोनों में ५२.६३ प्रतिशत। यही स्थिति अन्य मदों में भी है। यह सब देखते हुए एक निराशावादी दृष्टिकोण यह प्रकट किया गया था कि २३६ करोड़ रु० की बजाय हम केवल १९६ करोड़ रु० ही व्यय कर सकेंगे।

## कारण

आखिर यह निराशाजनक स्थिति पैदा कैसे हुई? अन्य राज्य और केन्द्र भी लक्ष्य से बहुत पीछे हैं, यह कहकर हम प्रश्न का समाधान नहीं कर सकते। इस प्रश्न का उत्तर योजनामंत्री और मुख्यमंत्री क्या देते हैं, यह जान लेना ठीक होगा। उनके कथनानुसार—

प्रारम्भ में ही केन्द्र ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह १५६ करोड़ रु० के स्थान पर १५२.५ करोड़ रु० देगी। योजना का अन्तिम रूप निर्धारित करते समय मुद्रा-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना—आवश्यक (कोर) तथा कम आवश्यक दो भागों में विभक्त कर दी गई थी। आवश्यक योजनाओं पर २३६ करोड़ रु० की जगह २०८.९८ करोड़ रु० व्यय करने का प्रावधान रखा गया।

सीमा पर संकटकालीन स्थिति ने देश के सभी भागों की तरह राजस्थान पर बोझ डाला। अकाल आदि की स्थिति भी कुछ अधिक विकट रूप धारण कर गई। राहत, पानी, खाद आदि पर काफी खर्च करना पड़ा। अल्प बचत में १० करोड़ रु० की जगह केवल ५ करोड़ रु० एकत्र हो सका। बैटरमैण्ट लेवी का १४.८७ करोड़ रुपया एकत्र नहीं किया जा सका, क्योंकि यह लेवी भूमि के पूर्णतः विकसित हो जाने पर ही ली जा सकती है। सरकार भूमि बेचकर पूंजी एकत्र कर सकती थी, पर भविष्य में मूल्य बढ़ जाने से अधिक लाभ की सम्भावना देखकर इस उपाय का आश्रय नहीं लिया गया। भारत सरकार को भी २३.६ करोड़ रु० कर्ज की अदायगी करनी पड़ी। निरन्तर बढ़ती हुई महंगाई ने योजना व योजनेतर व्ययों को बहुत बढ़ाकर एक कठिन परिस्थिति पैदा कर दी है।

## पूर्ण परिचय नहीं

सहकारिता, पंचायतें, चिकित्सा प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर स्कूलों व कालेजों की स्थापना, सड़क, रोड़वेज, वन-विकास, नहरें, कुओं आदि का विकास-योजनाओं में एक विशेष स्थान होता ही है। उनका उल्लेख हम लेख में कलेवर वृद्धि के भय से नहीं कर रहे।

राजस्थान की पंचवर्षीय योजनाओं के उपर्युक्त विवरण से आर्थिक विकास का पूर्ण परिचय नहीं मिलता। केन्द्रीय सरकार ने राजस्थान नहर की व्ययसाध्य योजना अपने हाथ में ले ली है। यह योजना राजस्थान में काया-कल्प करने वाली है। निजी उद्योगपतियों के लिए जो नई सम्भवनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं वे भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं उन्हें देखते हुए यह आशा की जा सकती है कि कि चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि तक राजस्थान का पुनर्निर्माण बहुत प्रत्यक्ष होने लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नागरिकों को लाभ

इन सब योजनाओं से राजस्थान के नागरिकों को क्या लाभ पहुँचा? योजना मंत्री के कथनानुसार १९५४-५५ के वर्ष में, जो हमारा आधार वर्ष है, राज्य की आय ४०० करोड़ रुपये थी, जो १९६२-६३ में स्थायी कीमतों के आधार पर ५१७ करोड़ रुपये और चालू कीमतों के आधार पर ६९६ करोड़ रुपये हो गयी। इसी प्रकार १९५४-५५ में प्रति व्यक्ति आय २३३ रुपये थी, जो १९६२-६३ में स्थायी कीमतों के आधार पर २५१ रुपये और चालू कीमतों के आधार पर ३३६ रुपये हो गयी, हालांकि यह अकाल की स्थिति, उत्पादन में कमी आदि कारणों से १९६१-६२ में ३४२ रुपये से कम हो गयी, जो इस राज्य के परिवर्तनशील मौसम में स्वाभाविक भी है। परन्तु योजना के अन्त तक प्रति व्यक्ति आय ३५५ रुपये तक पहुँच जाने की आशा है।

राजस्थान में प्रति एकड़ भूराजस्व का औसत ८४ पैसा है, जो भारत के सभी राज्यों से कम है। प्रति व्यक्ति कर आय के मामले में राजस्थान का स्थान भारत के विभिन्न राज्यों में आठवां है तथा प्रति व्यक्ति विक्री कर के मामले में दसवां।

तीसरी योजना में इस राज्य का प्रति व्यक्ति प्रावधान ११७ रुपये का होगा, जो सारे देश में जम्मू और कश्मीर राज्य को छोड़कर सर्वाधिक है। तीसरी योजना में अब तक के व्यय का प्रति व्यक्ति औसत २३ रुपये आता है, जिसमें केन्द्र द्वारा संचालित योजनाओं के आंकड़े सम्मिलित नहीं हैं।

योजना मंत्री श्री मथुरा दास माथुर के इन शब्दों के साथ हम यह लेख समाप्त करते हैं—

राज्य की अब तक की तीन पंचवर्षीय योजनाओं की कुल धनराशि ४०५.७७ करोड़ रुपये होती है और प्रस्तावित चतुर्थ योजना इससे भी अधिक लगभग ४३८ करोड़ रुपये की है, परन्तु उसके साथ हमें अपनी साधन क्षमता का तो ध्यान रखना ही पड़ेगा। केवल योजना को बड़ा बना देने से ही राज्य की आर्थिक समृद्धि नहीं बढ़ती। यह समृद्धि मुख्यतः पूंजी नियोजन और बचत की क्षमता बढ़ने पर निर्भर होती है। फिर भी राज्य के साधनों को देखते हुए योजना यथासंभव बड़ी बनाई गई है।

सब राज्यों की परिस्थितियां भिन्न-भिन्न हैं और उसको आंकने के तरीके भी अलग-अलग हैं, इसलिए एक दूसरे का इस आधार पर मुकाबला करने से ही प्रति व्यक्ति आय के सम्बन्ध में सही स्थिति प्रगट नहीं होती। राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत २.६ है, जबकि अखिल भारतीय प्रतिशत २.५ ही है। बच्चे उत्पन्न होने का अखिल भारतीय औसत प्रति महिला ६ बच्चों का है, जबकि राजस्थान का औसत ६.५ बच्चों का है, जो पंजाब को छोड़कर देश में सर्वाधिक है।

## भविष्य में

परन्तु आशामय भविष्य की कल्पना करते समय हमें यह अंग्रेजी कहावत न भूल जानी चाहिए कि प्याले के हाथ से मुंह तक पहुँचते पहुँचते भी अनेक अकल्पित बाधाएं आ सकती हैं। पाकिस्तान किसी भी समय विषम संकट पैदा कर सकता है और हमें अपनी शक्ति व साधन विकासेतर कार्यों में लगाने पड़ सकते हैं। बढ़ती हुई महंगाई और विदेशी मुद्रा का संकट केन्द्रीय योजनाओं पर ही नहीं, राजस्थान की योजनाओं पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता हैं। राजस्थान की पाकिस्तानी सीमा सदा ही सतर्कता का विषय रहती है, परन्तु सबसे बड़ी बाधा अन्य राज्यों की तरह राजस्थानी जनता में भी योजनाओं के प्रति आत्मीयता व लगन का अभाव है। सन्तोष की बात इतनी है कि राजस्थान के अमित साधनों के प्रति देश के प्रतिभाशाली अध्यवसायी तथा साधन सम्पन्न उद्योगपतियों का ध्यान आकृष्ट हो चुका है और उनमें अपने राथ्य को समुन्नत करने की हार्दिक उत्कण्ठा जागृत हो चुकी है।

## तीसरी व चौथी योजना में अतिरिक्त उत्पादन लक्ष्य

| फसल | तीसरी योजना | चौथी योजना |
|---|---|---|
| खाद्यान्न (लाख टन) | १५.०८ | २०.०० |
| तिलहन ,, | १.५० | १.६२ |
| कपास (लाख गाँठ) | १.५२ | १.९७ |
| गन्ना (गुड़) (लाख टन) | १०.०० | ११.५० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की व्यावसायिक प्रतिभा

## देश के प्रमुखतम पांच बैंकों में तीन की अध्यक्षता का गौरव राजस्थानियों को है

बैंक आफ़ बड़ौदा के अध्यक्ष

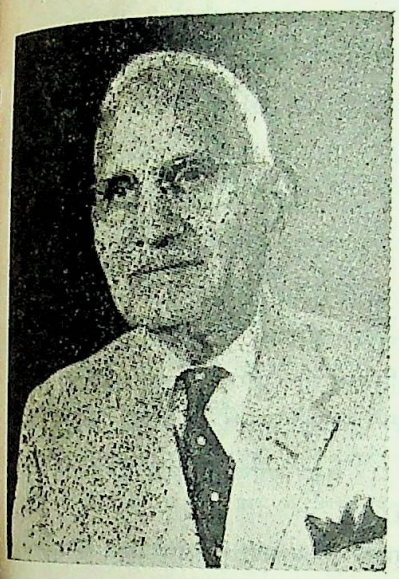

श्री रामेश्वरदास बिड़ला

यूनाइटिड कमर्शल बैंक के अध्यक्ष

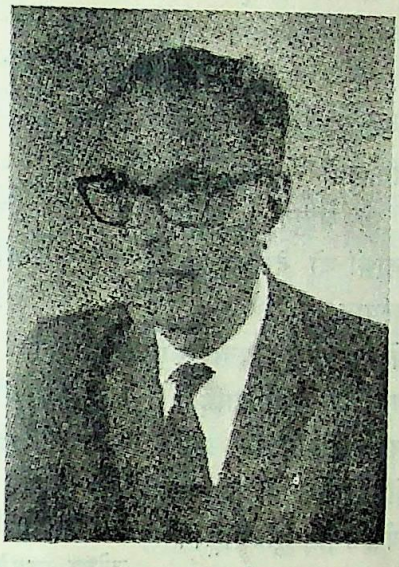

श्री ईश्वरीप्रसाद गोयनका

पंजाब नेशनल बैंक के अध्यक्ष

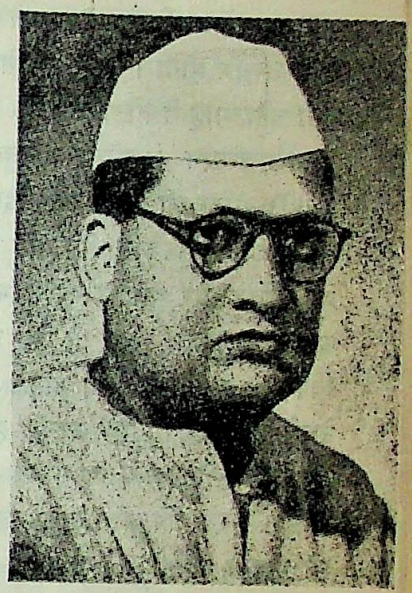

श्री कमलनयन बजाज

# राजस्थान में रेल और सड़कें

(श्री संजय)

राजस्थान के व्यापार और उद्योग के विकास में एक बड़ी बाधा रेलवे की अपर्याप्त व्यवस्था है। राजस्थान के एक बड़े भाग में छोटी रेलवे लाइन है और एक भाग में बड़ी रेलवे लाइन। इस कारण बम्बई और दक्षिणी भारत से व्यापार में बहुत बड़ी असुविधा होती है। छोटी लाइनों से बड़ी लाइन तक माल पहुंचाने में माल उतारने या लादने का भारी खर्च व्यापारियों को उठाना पड़ता है। इसी तरह पंजाब और उत्तर प्रदेश की बड़ी लाइनों वाले क्षेत्रों से भी व्यापार में कठिनाई होती है।

हिम्मतनगर से उदयपुर तक की रेलवे लाइन अभी बनाई गई है। इससे कुछ समस्या तो हल हो गई है, परन्तु मुख्य समस्या अभी कायम है। राजस्थान के अनेक क्षेत्रों में खनिज पदार्थ बड़ी सुविधा और बहुतायत से मिलते हैं, किन्तु इन खनिजों को देश के दूसरे भागों तक पहुंचाना बहुत व्यय साध्य है, क्योंकि छोटी और बड़ी रेलवे लाइनों में उतार-चढ़ाव बहुत खर्चीला हो जाता है। इसका एकमात्र इलाज छोटी बड़ी रेलवे लाइनों में अधिक सुविधाएं उपलब्ध करना है।

अब कांदला बन्दरगाह के पूरी तरह बन जाने के बाद कांदला से राजस्थान का रेलवे मार्ग और अधिक उन्नत तथा समृद्ध करना होगा, क्योंकि कांदला के बन्दरगाह से समस्त देश का विशेषकर पूर्वी और उत्तरी भारत का सम्बन्ध जुड़ जाएगा और व्यापार अधिक होने लगेगा।

कांदला बन्दरगाह जयपुर और जोधपुर से क्रमशः ८०७ और ५७३ किलोमीटर है, जबकि बम्बई से यह दोनों नगर क्रमशः १११२ और ६११ किलोमीटर दूर हैं। पाली, बीकानेर, ब्यावर, भीलवाड़ा और उदयपुर आदि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कांदला से अपेक्षाकृत अधिक निकट हैं। इसलिए राजस्थान में कांदला से रेल सम्पर्क को अधिक समर्थ बनाने की आवश्यकता है। यदि ब्राडगेज रेल लाइन बनाई जाय तो न केवल यह बन्दरगाह आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद बनेगा, किन्तु राजस्थान को भी आर्थिक दृष्टि से अधिक लाभ होगा। राजस्थान से खनिजों का निर्यात भी इसी बन्दरगाह से होता है।

राजस्थान में आजकल बहुत नये उद्योग खुल रहे हैं और आशा की जाती है कि इन दस वर्षों में राजस्थान का औद्योगिक विकास तीव्र गति से हो जाएगा। बढ़ते हुए उद्योग और व्यापार की सम्भावनाओं को देखकर यह आवश्यक प्रतीत होता है कि राजस्थान में रेलवे का विकास द्रुत गति से किया जाय। न केवल अनेक स्थानों पर रेलवे लाइनों को दुहरा करना होगा, किन्तु माल गाड़ियों की संख्या भी बढ़ानी पड़ेगी। रेलवे जंक्शनों पर यार्ड विस्तृत करने होंगे और माल उतारने लादने की क्षमता भी बढ़ानी पड़ेगी। यह सब कार्य तभी सुविधापूर्वक सम्पन्न हो सकेगा, जब रेलवे मंत्रालय एक नये राजस्थान ज़ोन की स्थापना करे। राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री सुखाडिया ने एक प्रस्ताव द्वारा पृथक् रेलवे ज़ोन की मांग भी की है, जिसका मुख्य कार्यालय जयपुर में हो। उनके कथनानुसार पृथक् रेलवे जोन के अभाव में रेलवे कर्मचारियों को राज्य में त्वरित आवागमन में काफी कठिनाइयां होती हैं। इस समय राजस्थान दो रेलवे डिवीजनों में विभक्त है—जोधपुर और बीकानेर उत्तरी रेलवे तथा जयपुर अजमेर कोटा पश्चिमी रेलवे। इसका विकास भी तभी हो सकता है जब एक पृथक् रेलवे जोन बने।

## सड़कें और सड़क यातायात

जहाँ रेलवे के विकास की आवश्यकता है वहां सड़कों और सड़कों पर चलने वाली बस और ट्रक गाड़ियों की भी सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि सड़कों का पूर्ण विकास हो। १९६० में यदि निजी और सरकारी बसें, गाड़ियां, मोटरें और अन्य मोटर गाड़ियां ३२०७४ चल रही थीं तो १९६३ में इनकी संख्या बढ़कर ४०६०२ हो गई थी।

१९४९ में राजस्थान में कुल ८४१८ मील लम्बी सड़कें थीं। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में राज्य में २१८९ मील लम्बी सड़कों का नया निर्माण तथा १९७५ मील लम्बी पुरानी सड़कों का सुधार किया गया। नई योजना के अनुसार १९६५-६६ तक सड़कों की लम्बाई १८६५४ मील तक हो जाने की सम्भावना है।

१९४३ में सड़कों के विकास की एक अखिल भारतीय योजना बनाई गई थी, जो नागपुर प्लान के नाम से प्रसिद्ध है। इस योजना के अन्तर्गत २० वर्ष की अवधि में प्रति १०८ वर्ग मील में २६ मील लम्बी सड़कों के निर्माण का लक्ष्य रखा गया था, किन्तु राजस्थान आर्थिक और राजनीतिक दोनों दृष्टियों से उस समय पिछड़ा हुआ था। इसलिए द्वितीय योजना के अन्त तक निर्धारित लक्ष्यों का ५० प्रतिशत ही प्राप्त किया जा सका। इस द्वितीय योजना की अवधि में २४४८ मील लम्बी सड़कों का निर्माण हुआ। अब सड़क निर्माण की प्रगति काफी तेजी से बढ़ रही है।

दूसरी योजना में सड़क निर्माण के निम्नलिखित उद्देश्य सामने रखे गये थे :—

५ हजार या अधिक आबादी वाले समस्त गांवों और सब डिवीजनल केन्द्रों को सड़कों से जोड़ना (२) प्रमुख खनिज क्षेत्रों और खानों तक सड़कों का विस्तार (३) नये विकसित भाखड़ा नहर क्षेत्र में पर्याप्त सड़कों का निर्माण। यद्यपि राजस्थान भारत में सबसे बड़ा दूसरा राज्य है, तथापि यहां राष्ट्रीय मार्गों की कुल लम्बाई ८२४ मील है। राजस्थान में प्रति हजार वर्ग मील पर राष्ट्रीय मार्गों का अनुपात ५.९२ है, जबकि सम्पूर्ण भारत में ११.८१ है।

राजस्थान में सड़क निर्माण की आवश्यकता पर बल देने के दो मुख्य कारण और हैं। एक तो यह कि राजस्थान में वर्षा कम होने के कारण अकाल की स्थिति बार-बार उत्पन्न हो जाती है। इसलिए राहत के रूप में सड़कों का निर्माण एवं सुधार कार्य करना पड़ता है।

सड़क निर्माण को प्राथमिकता देने का दूसरा कारण यह है कि राजस्थान भारत की उत्तरी सीमा पर पाकिस्तान से मिलता है। सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकता के कारण सड़कों की व्यवस्था बहुत आवश्यक हो जाती है। ये सड़कें केवल लम्बाई की दृष्टि से नहीं, परन्तु कार्य

( शेष पृष्ठ ९४ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान का उज्ज्वल भविष्य

श्री मोहनलाल सुखाड़िया, मुख्य मंत्री राजस्थान

राजस्थान का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है और वह समय दूर नहीं है, जब राजस्थान देश के अन्य उद्योगप्रधान राज्यों की श्रेणी में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त कर लेगा। अनेक विकास योजनाएं राज्य में चल रही हैं और अनेक योजनाएं निकट भविष्य के गर्भ में हैं।

राजस्थान नहर की खुदाई न केवल राज्य के लिए बल्कि समस्त देश के लिए अभूतपूर्व है। इस नहर की पूर्णता के बाद राजस्थान में पैदावार बहुत होने लगेगी और यह समस्त देश का अन्न भंडार बन जायगा। सीमा पर रहने वाले लोगों का मनोबल बहुत ऊंचा है। उनमें उत्साह और साहस की कमी नहीं है। जिस दिन यहां राजस्थान नहर का पानी पहुंच जायगा, यह राज्य के सबसे समृद्धिशाली क्षेत्रों में से एक होगा। भारत सरकार ने राजस्थान नहर के निर्माण कार्य को अपने हाथ में लेने के हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है। इस दिशा से इस विशाल योजना पर जो व्यय हमें करना था, वह धन राशि हमारे अन्य विकास कार्यों के लिए उपलब्ध हो सकेगी। राजस्थान नहर के निर्माण से हमारे राज्य के आर्थिक ढांचे में वस्तुतः एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ जायगा है।

देश के सामने इस समय सबसे प्रमुख समस्या खाद्यान्नों के बारे में आत्म-निर्भर होना है और यह तब ही हल हो सकती है, जब प्रत्येक व्यक्ति इस समस्या को एक राष्ट्रीय समस्या समझ कर इसके हल में पूरी ताकत से जुट जाये। सैकड़ों वर्षों से जो कृषक समाज शिक्षा और विज्ञान से दूर रह गया, उसमें नवीन चेतना पैदा हो और वे उत्पादन बढ़ाने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनायें। कृषि योग्य भूमि के एक-एक इन्च और सिंचाई के पानी के एक-एक बूंद का सदुपयोग हमारे कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए होना चाहिए। हमारी पंचायत समितियों तथा तकनीकी अधिकारियों का इस समय यह सर्वोपरि कर्त्तव्य है कि वे खेत-खेत में पहुंचकर किसानों को मार्ग दर्शन दें और उन्हें कृषि की उन्नत विधियों का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए प्रेरित करें। किसी भी किसान को अपनी आवश्यकता से अधिक अनाज अपने पास नहीं रखना चाहिए।

राज्य का औद्योगिक विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। सार्वजनिक क्षेत्र में खेतडी का तांबे का उद्योग तथा कोटा में सूक्ष्म-यंत्रों का निर्माण उल्लेखनीय है। बाड़मेर और जेसलमेर के जिलों में मिट्टी का तेल और गैस मिलने लगा है। भारत में कुल जितना ऊन पैदा होता है, उसका करीब ४०-५० प्रतिशत राजस्थान से ही उपलब्ध होता है। इस ऊन उद्योग का बहुत अधिक विकास करने की आवश्यकता है। तांबा, जस्ता की खानों के सम्बन्ध में भी राजस्थान एकाधिकार का दावा कर सकता है।

इस समय हमारी चौथी पंचवर्षीय योजना विचाराधीन है। हम विकास की तीन मंजिलें पार कर चौथी में प्रवेश कर रहे हैं। देश का आर्थिक विकास कर समाजवादी समाज की स्थापना की दिशा में हम एक के बाद एक मंजिल पारकर आगे बढ़ रहे हैं। हमारी इस पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व है कि वह अपने परिश्रम एवं त्याग द्वारा आने वाली पीढ़ी के लिए एक स्वर्णिम भविष्य की भूमिका तैयार करे। चौथी पंचवर्षीय योजना शत प्रतिशत सफलता पर हमारे समाजवादी समाज की प्राप्ति का लक्ष्य बहुत कुछ निर्भर करता है।

## जानने योग्य

**राजस्थान में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के विभिन्न संस्थानों में सितम्बर, ६४ में ४७६७०६८ व्यक्ति काम पर लगे हुए थे। इस तिमाही में काम पर लगी हुई महिलाओं का प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र में ६०७ था।**

* * *

**अक्टूबर १९६४ से ६५ वर्ष अथवा अधिक आयु के असहाय वृद्ध लोगों को पेंशन देने की योजना राजस्थान में लागू करदी गई है।**

* * *

**१५ लाख एकड़ भूमि हीन किसानों को दी जा चुकी है।**

* * *

**राजस्थान के निर्माण के समय शिक्षा पर १॥ करोड़ रु० व्यय किया जा रहा था अब शिक्षामंत्री के कथनानुसार १८ करोड़ रुपया व्यय किया जा रहा है।**



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान का पुनर्निर्माण

श्री रामनाथ पौद्दार, अध्यक्ष चैम्बर आफ कामर्स, राजस्थान

प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में राज्य सरकार को सेवाओं, कानूनों और प्रबन्ध व्यवस्थाओं के एकीकरण में अपनी शक्ति लगानी पड़ी । इसलिए आर्थिक विकास की दृष्टि से कोई विशेष प्रगति नहीं हो सकी। दूसरी और तीसरी योजनाओं में औद्योगिक विकास की दृष्टि से कुछ प्रयत्न अवश्य हुए हैं और राज्य में एक नया वातावरण बन गया है। राज्य सरकार ने भी निजी उद्योग को बिजली की दरों, स्थान की सुविधाओं तथा चुंगी, बिक्री कर आदि में रियायतें देकर औद्योगिक विकास की दिशा में पर्याप्त सहयोग दिया है । ज्यादा सड़कें बनने लगी हैं, बिजली ज्यादा पैदा होने लगी है, नहरी सिंचाई और छोटी सिंचाई की सुविधाएं बढ़ रही हैं। इन सबका परिणाम यह हो रहा है कि राजस्थान में एक नया औद्योगिक वातावरण उत्पन्न हो गया है और नये से नये उद्योगों की आधार-शिला रखी जा रही है । किशनगढ़ और भवानी मंडी के जिलों में कपड़े का उत्पादन प्रारम्भ हो गया है। कोटा में पी० वी० सी और कैलसियम कारबाइट फैक्टरी तथा वूल टोप्स फैक्टरी काम शुरू कर चुकी है। जोधपुर में एक ऊनी मिल खुल गई है। उदयपुर में जिंक स्मैल्टर प्लांट लग गया है । दूसरे अनेक उद्योग भी निर्माण की अवस्था में हैं। इनमें से कोटा की पेपर इन्सलेटिड फैक्ट्री, आबू की कागज मिल, जयपुर की वाटर मीटर फैक्टरी और चित्तौड़गढ़ की सीमेंट फैक्टरी उल्लेखनीय है। कोटा में नायलोन फैक्टरी की क्षमता बढ़ाई जा रही है और अलोह धातुओं के संयंत्र की योजना भी प्रगति कर रही है । सूती मिलों का पुनर्नवीकरण हो रहा है और उनकी कार्य क्षमता बढ़ाई जा रही है । ट्रान्समीशन टावर बनाने की फैक्ट्री भी राजस्थान में स्थापित हो रही है। डीडवाना में सोडियम सल्फैट प्लांट का कारखाना सरकारी क्षेत्र में बन चुका है। इसी प्रकार ४५०० तकुओं की एक ऊनी मिल खोलने का सरकारी निश्चय भी बहुत प्रशंसनीय है।

## समस्या का एक कोना

यह प्रगति सन्तोषजनक होते हुए भी अभी हम समस्या के एक कोने को ही छू पाये हैं। अभी हमें बहुत कुछ करना शेष है, क्योंकि राजस्थान में औद्योगिक विकास की सम्भावनायें पर्याप्त हैं। यहां प्राकृतिक साधनों की कमी नहीं है।

आवश्यकता तो इस बात की है कि हमारे जो उद्योग आज चल रहे हैं और जिन उद्योगों की निकट भविष्य में स्थापना हो रही है, उनकी पूर्ण क्षमता का उपयोग किया जाय, उत्पादन व्यय भी यथासम्भव कम किया जाय और राज्य में औद्योगिक क्षमता और शांति को कायम रखा जाय।

## बाधाएं

राज्य के औद्योगिक विकास में अब भी अनेक बाधाएं हैं, जो उद्योगपतियों के सामने आ रही हैं। सरकारी लाल फीताशाही उन्हें परेशान करती है। इसे प्रशासन की मशीनरी को अधिक द्रुतगामी करने की आवश्यकता है । सरकारी अधिकारियों का दृष्टिकोण भी बदलना चाहिए । आवश्यकताओं को देखते हुए अब भी बिजली बहुत कम पैदा हो रही है। उद्योगों को भूमि मिलने में बहुत बिलम्ब हो जाता है। वित्तीय नियमों को भी अपना कार्यक्षेत्र अधिक व्यापक करना चाहिए। यदि राज्य नये उद्योगों की स्थापना के लिए पूंजी निर्माण में सहयोग दे सके तो यह बहुत बड़ी सहायता होगी। उद्योगों के लिए कच्चे माल के वितरण की व्यवस्था भी अभी ठीक नहीं है। एक तरफ हम नये उद्योग खोलने का प्रोत्साहन देते हैं, दूसरी ओर उन्हें कच्चे माल के अभाव से भूखा रखते हैं। इस कमी को दूर करना चाहिए।

मुझे राजस्थान के उज्ज्वल भविष्य का पूर्ण विश्वास है। जब राजस्थान नहर तथा सिंचाई की अन्य योजनाएं पूर्ण हो जायेंगी और राजस्थान के गांवों को उसका पूरा लाभ मिलने लगेगा, तब केवल न राजस्थान ही आर्थिक दृष्टि से समृद्ध होगा, किन्तु देश के आर्थिक संकट को दूर करने में राजस्थान का योगदान बहुत सन्तोषजनक होगा।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# औद्योगिक आवास योजना

श्रमिकों के लिए सबसे पहली आवश्यकता आवास की है। अधिकांशतः श्रमिकों की बस्तियां गन्दी है और इसी कारण स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। रियासतों के विलीनीकरण से पूर्व सामन्तवादी सरकारों और मालिकों ने कभी आवास की आवश्यकता की ओर ध्यान नहीं दिया। विशेषकर राजस्थान में श्रमिकों को उपेक्षित ही रखा गया है। राजस्थान में ब्यावर, पाली, लाखेर और भीलवाड़ा में पुराने आवासों के आज भी खण्डर दीख पड़ेंगे। छोटे गन्दे, प्रकाशहीन आवास तो थे ही, साथ ही बिजली, पानी और स्वच्छता का भी अभाव दृष्टिगोचर होता है।

१९५१ के सर्वेक्षण के अनुसार सरकार ने यह महसूस किया कि औद्योगिक केन्द्रों में श्रमिकों के लिए पर्याप्त आवास नहीं है और अभी ३००० आवास गृहों की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता के पूर्ति के लिए १९५२ में सरकार ने औद्योगिक आवास योजना का सूत्रपात किया। आवास समस्या के समाधान के लिए इस योजना में तीन शर्त रखे गये। (१) सरकार द्वारा गृह-निर्माण (२) उद्योगपतियों को तथा मजदूरों की निर्माण सहकारी समितियों को आर्थिक सहायता और ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करना (३) राज्य सरकारों को मकान निर्माण की लागत पर ५० प्रतिशत सहायता केन्द्र से प्राप्त हो सकती थी। निजी उद्योग संचालकों और सहकारी समितियों को लागत का २५ प्रतिशत केन्द्र से प्राप्त हो सकता था। २५ वर्ष की अवधि में चुकाने के लिए ऋण की व्यवस्था की गई, यह लागत के २५ प्रतिशत तक दिया जा सकता था (यदि सहकारी समिति आवेदन करे)। उद्योगपतियों को लागत के ३७॥ प्रतिशत तक ऋण मिल सकता था, जिसे १५ वर्षों में चुकाना अनिवार्य था।

प्रथम पंचवर्षीय योजना में ५५.२३ लाख रुपयों का प्रावधान जयपुर, भीलवाड़ा, किशनगढ़ तथा पाली के औद्योगिक क्षेत्रों में २२०० मकानों के निर्माण के लिए किया गया था, जिनकी लागत ५२,२३,७०० रुपया लगाई जा रही थी। सरकार की अनेक उलझनों के कारण प्रथम योजना के अन्तिम वर्ष में यह कार्य प्रारम्भ हुआ और इस गृह-निर्माण योजना को दूसरी योजना में सम्मिलित कर लिया गया।

दूसरी योजना में श्रमिकों की आवास व्यवस्था पर गम्भीरता से विचार किया गया और इस योजना में श्रमिकों के गृह-निर्माण के लिए ९३.५० लाख रुपये का प्रावधान किया गया। इस योजना में कुछ श्रमिक केन्द्रों को और सम्मिलित कर लिया गया। इस योजना पर भी सन्तोष नहीं किया जा सकता, क्योंकि ९३.५० लाख के बजाय कुल ४९.५६ लाख रुपया इस योजना पर खर्च हो सका। २५०० गृह-निर्माण के लक्ष्य में केवल ११२२ आवास गृह बनाये जा सकेंगे। अभी १३७८ मकानों का निर्माण कार्य जारी था। सवाई माधोपुर आदि में १००० अच्छे मकान प्रबन्ध संचालकों द्वारा बनवाये गये। इस योजना से जयपुर, पाली और भीलवाडा को अधिक लाभ हुआ। कोटा की स्थिति अधिक सुदृढ़ नहीं हो सकी।

दूसरी योजना की समाप्ति पर यह समस्या और भी गम्भीर रूप धारण कर गई। उद्योगों में श्रमिकों की संख्या ४.४ लाख से बढ़कर ६.८ लाख तक पहुँच गई। सरकारी की औद्योगिक विकास नीति के फलस्वरूप राज्य में अनेक नये उद्योग पनपे। सरकार ने भी आवास की आवश्यकता को महसूस किया। किन्तु केवल ७० लाख रुपये की ही व्यवस्था कर सकी। तीसरी योजना की समाप्ति पर २७६४ औद्योगिक आवास गृह उपलब्ध हो सकेंगे। इनमें से कुछ पूर्ण हो चुके है और कुछ पर निर्माण कार्य जारी है।

राजस्थान में उद्योगों की संख्या बढ़ने के कारण गृह-निर्माण समस्या और भी बलवती होती जा रही है। इसके लिए मालिकों मजदूरों और सरकार के प्रतिनिधियों का निर्दलीय सम्मेलन किया जाय, जो इस समस्या पर विचार करे और समाधान खोजें।

एक अन्य प्रश्न किराये का है। जो भी आवास गृह बताये गये हैं, उनके किराये श्रमिकों की वेतन दर को देखते हुए अधिक हैं। यद्यपि इन मकानों में सुविधाएं कम नहीं है किन्तु बात तो किराये की है। यही कारण है कि अनेक आवास गृह खाली रह जाते हैं। श्रमिक तो अपने वेतन के अनुरूप ही किराया दे सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उर्वरकों द्वारा कृषि उत्पादनशीलता

श्री लक्ष्मीनारायण गुप्त,

पौधा सजीव है और मानव की भांति ही इसे भी अपने विकास तथा वृद्धि के लिये भोजन की आवश्यकता होती है। इसके भोजन में कुछ रासायनिक तत्त्व होते हैं, जिन्हें भोजन-तत्व का नाम दिया जाता है। इस भोजन की पूर्ति हेतु खाद दी जाती है, लेकिन जो खाद दी जाती है, वह संतुलित भोजन नहीं होती।

राजस्थान राज्य का महत्त्वपूर्ण व्यवसाय कृषि है। करीब ६० प्रतिशत व्यक्ति इस व्यवसाय में लगे हुए हैं। इन कृषकों के जीवन स्तर व आय बढ़ाने के लिये यह जरूरी है कि कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी हो। हमें देखना है हमारे यहां की कृषि में इनका कितना योग रहा है।

राज्य की प्रथम योजना के अन्तर्गत अमोनियम सल्फेट कृषि विभाग द्वारा कृषकों को वितरित किया गया। १९५१-५२ से १९५४-५५ चार वर्षों में यह वितरण ३॥ गुना हुआ (७०० टन से २५०० टन)। इसी प्रकार द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इसका वितरण करीब २॥ गुना बढ़ा और जो अगले ३ वर्षों (१९६०-६१ से ६२-६३) में १९६०-६१ की तुलना में ३ गुना हो गया (५७,०६२ से १,५१,८८२ क्विंटल)। द्वितीय योजना में २५.०७ लाख रुपये व्यय हुए, जबकि प्रावधान १०.९५ लाख रुपये का था। १६००० टन अमोनियम सल्फेट तथा २६८०० टन सुपर फास्फेट वितरण करने का ध्येय था, लेकिन जितना व्यय हुआ, उसके मुकाबले कार्य बहुत ही कम हो सका—१०,३०० टन नाइट्रोजन उर्वरक तथा २,५०० टन सुपर फास्फेट वितरित हुए। अनुमान है कि एक द्वितीय पंचवर्षीय योजना में ३.३४ लाख एकड़ उर्वरकों के अन्तर्गत लिया जा सका तथा तृतीय पंचवर्षीय योजना में यह लक्ष्य २५.८४ लाख एकड़ रखा है। द्वितीय योजना में उर्वरक तथा खाद का योग अतिरिक्त खाद्यान्न उत्पादन में ०.७८ लाख टन रहा, जो कि पूर्व अनुमानित लक्ष्य (०.९० लाख टन) से ०.१२ लाख टन कम ही रहा।

राजस्थान में गन्ने की खेती के लिये ४३,००० टन उर्वरक १९६२-६३ में वितरित किये गये। 'पैकेज कार्यक्रम' पाली के अन्तर्गत १४५१ टन नाइट्रोजन तथा फास्फेटिक उर्वरक का वितरण किया गया। एक अनुमान के आधार पर उर्वरकों के प्रयोग से १७ प्रतिशत उत्पादन में वृद्धि हो सकी है। एक हैक्टर भूमि पर ७१६.० किलो-ग्राम अनाज उत्पन्न होता था। इसे नियंत्रित कर जब उर्वरक का उपयोग किया गया तो यह बढ़कर ८३८.४ किलो-ग्राम हो गया।

उर्वरकों से अच्छा परिणाम प्राप्त करने के हेतु कुछ बातें ये हैं—उर्वरक का कितना उपयोग किया जावे? कौन से उर्वरक उपयोग में लिये जावें? किस प्रकार से उर्वरक का उपयोग हो? तथा किस समय उर्वरक का उपयोग हो? अन्य शब्दों में इनसे हमारा तात्पर्य उचित मात्रा, उचित प्रकार के उर्वरक, उचित स्थान व उचित समय से है। प्रथम दो बातें आर्थिक पहलू को लेकर हैं जबकि अन्तिम दो टैक्नीकल विषय से सम्बन्धित हैं। नीचे लिखे घटकों के द्वारा उर्वरक का कुशल उपयोग संभव हो सकता है।

(१) भूमि उपयोगीकरण का उचित नियोजन, (२) फसल का क्रम, (३) जोतने का उचित ढंग—क्यारी आदि बनाना। (४) भूमि क्षरण से बचाव व अवांछनीय पौधों की रोकथाम, (५) अच्छी सिंचाई, (६) पशु खाद का उचित उपयोग, (७) क्षारीय मिट्टी पर चूने आदि का प्रयोग, (८) अन्य कृषि संबंधित अभ्यास।

वास्तव में किस प्रकार के उर्वरक का उपयोग किया जावेगा, यह तो मिट्टी के गुण, तथा उसकी संरचना पर आधारित है। सभी को एक ही प्रकार के उर्वरक लाभकारी न हो सकेंगे। कारण किसी में ह्यूमस, किसी में पोटाश, या चूना आदि की कमी होती है। साथ ही हम किस प्रकार की फसल पैदा कर रहे हैं—जैसे जौ, गन्ना, गेहूं के लिए अमोनियम सल्फेट, नाइट्रोजन, फास्फोटिक उर्वरकों का उपयोग क्रमशः जरूरी हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती

भूमि की उर्वरा शक्ति तथा मिट्टी संरचना आवश्यक तत्व है। कच्छारी मिट्टी जो राजस्थान के पूर्वी भाग अलवर व भरतपुर के अनेक स्थानों में पाई जाती है जिसमें चूना पोटास, फासफ़ोरस, लोहा आदि अनेक पदार्थों की बहुलता होती है, जो उपजाऊ है जबकि बीकानेर (दक्षिणी भाग) व जोधपुर के अधिकांश भाग और संपूर्ण जैसलमेर में रेतीली मिट्टी पाई जाती है जो अनुपजाऊ है, नमी रोकने की शक्ति नहीं व जिसका कण मोटा है। इन दोनों प्रकार की मिट्टियों में उर्वरक के प्रकार भिन्न-भिन्न होंगे, समान नहीं हो सकते।

आवश्यकता इस बात की है कि कृषकों को भिन्न-भिन्न उर्वरकों के गुण व उनकी कृषि उत्पादनशीलता से जानकार कराया जावे। इस संबंध में हमारे राज्य के प्रदर्शन क्षेत्र सहायक हो सके हैं। १९५२-५३ में इनकी संख्या ११९३ थी, जो बढ़कर १९६०-६१ में २५०१९ हो गई। हमारी ऐसा सुझाव है—'पाइलट फार्म' अधिक मात्रा में स्थापित किये जावें, जिनकी स्थापना ग्राम्य क्षेत्र में ही हो, जहां से कृषकों को फार्म प्रबंध तथा टेक्नीकल सलाह विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जा सके। परिणाम-स्वरूप कृषक उनके अनुभवों से लाभ उठाकर कृषि उत्पादनशीलता को बढ़ा सकेंगे।

हमारे राज्य में अभी भी उर्वरक का प्रयोग उचित रूप से नहीं हो रहा है। कारण राज्य में उनकी पूर्ति का अभाव है तथा साथ ही मंहगे भी है। चूंकि यह पूंजी सघन उद्योग है, अतः इसके शुरू करने में पूंजी संबंधी कठिनाई होती है। साथ ही जब तक उचित व उपयुक्त आवश्यक बातों का पता न हो—उर्वरक से अच्छे परिणाम नहीं निकल सकते। इसके अलावा हमारे कृषक भी इनके प्रयोग में हिचकिचाते हैं। उनको यह डर है कि चूंकि उर्वरक कृत्रिम होते हैं अतः संभव है कि भूमि की उर्वरा शक्ति में क्षय हो। ●●


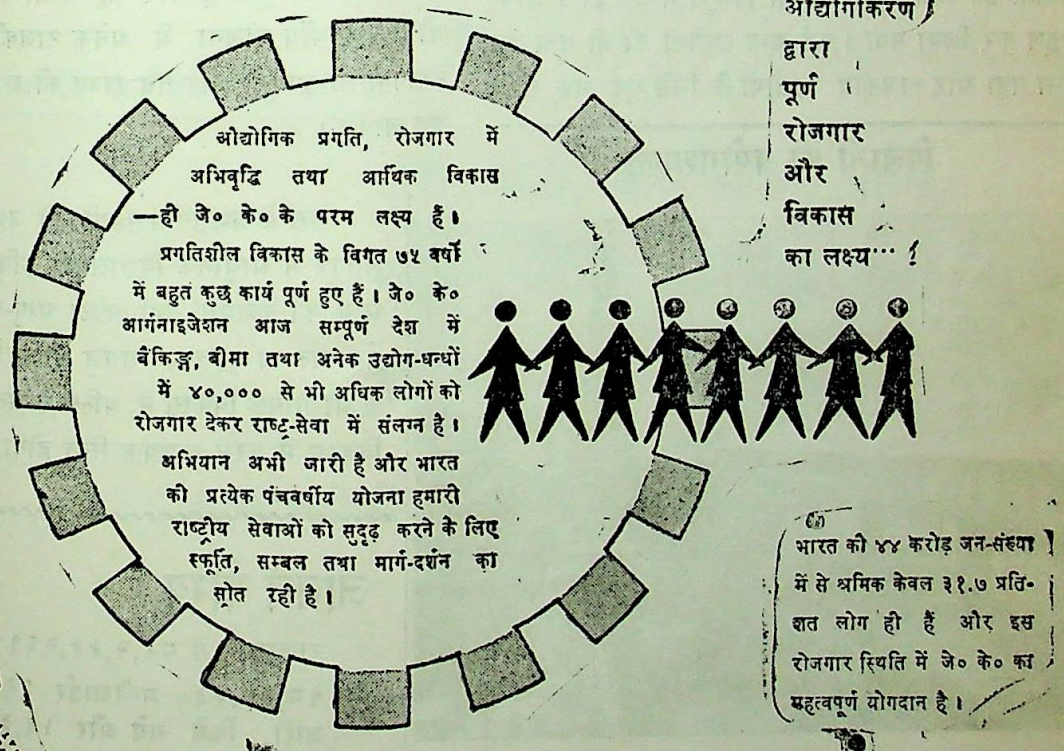





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सार्वजनिक उद्योग की उज्ज्वल सम्भावनाएं

राजस्थान में एकीकरण से पूर्व के दिनों में राजकीय उद्योग नाममात्र के लिये भी नहीं थे। तत्कालीन रियासतों ने कुछ उद्योगों, जैसे कपड़े की मिलों, जिनिंग एवं प्रेसिंग फैक्टरियों, तेल मिलों, सिनेमाघरों तथा इसी प्रकार के अन्य क्षेत्रों में कुछ पूंजी नियोजन किया था, परन्तु यह नियोजन योजनाबद्ध औद्योगिक अथवा आर्थिक विकास के दृष्टिकोण से नहीं किया गया था।

रियासती समय के कुछ राजकीय उद्योगों, को जिनमें कतिपय जिनिंग एवं प्रेसिंग फैक्टरियां थीं, उदयपुर डिवीजन में द्वितीय पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में राज्य सरकार चलाती थी, परन्तु रियासतों के इन औद्योगिक अवशेषों को शीघ्र ही बन्द कर देना पड़ा। रियासतों के कुछ बिजली घरों को निजी हाथों में सौंप दिया गया, ताकि रियासतों के केन्द्रीय नगरों को बिजली दी जा सके, परन्तु अन्ततः इन बिजलीघरों को भी विद्युत मण्डल द्वारा अधिग्रहण कर लिया गया। कई अन्य उद्योगों को भी बन्द कर देना पड़ा और राजकीय उद्योगों के लिये एक नई नीति अपनाई जाने लगी।

## सार्वजनिक क्षेत्र का महत्व

देश के संतुलित आर्थिक ढांचे में निजी एवं राजकीय दोनों क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्देश्यों की पूर्ति में आवश्यक तथा एक दूसरे के पूरक हैं। पिछले कुछ वर्षों में राजकीय उद्योग क्षेत्र की विचारधारा में व्यापक परिवर्तन हुये हैं।

राजस्थान सरकार ने गंगानगर स्थित चीनी मिल को, जो निजी क्षेत्र के अन्तर्गत बहुत ही असंतोषजनक रूप से कार्य कर रही थी, पहले ही अपने हाथों में ले लिया है और परिणाम स्वरूप यह मिल, जो पहले आर्थिक दृष्टि से घाटा देने वाली इकाई थी, अब दिनों दिन लाभदायक उद्योग बनता जा रहा है।

राजकीय क्षेत्रों में उद्योगों के विकास की आधारशिला रखी जा चुकी है और यह आशा की जाती है कि चौथी पंचवर्षीय योजना में अनेक राजकीय उद्योगों की स्थापना हो जायेगी और तब राज्य की आय के साधन भी बढ़ जायेंगे।

## पिलानी की प्रयोगशाला

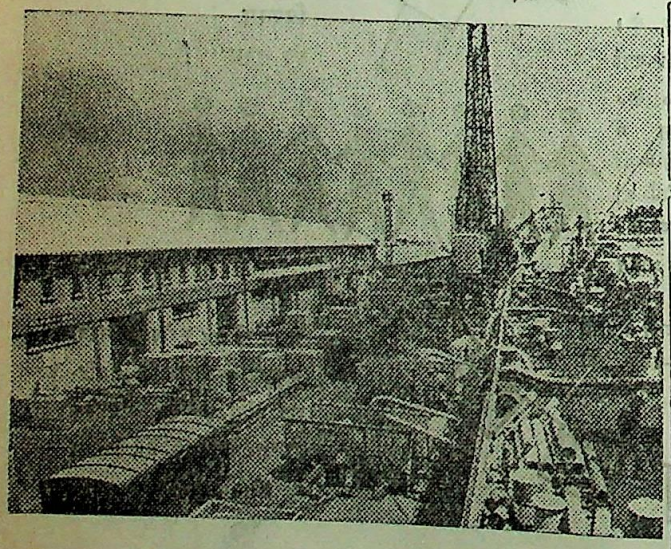

पिलानी इंजिनीयरिंग कालेज की प्रयोगशाला न केवल प्रशिक्षण क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध हो रही है, प्रकारांतर से राजस्थान के आर्थिक विकास में प्रशंसनीय योगदान देने वाली सिद्ध होगी।

रूस के प्रशंसनीय सहयोग से जहां सूरतगढ़ और जैतपुर में आधुनिक विशालकाय कृषि फार्म राज्य की आय को बढ़ायेंगे, वहाँ कोटा अणु-शक्ति का ४०० मैगावाट का वृहत्काय संयंत्र भी न केवल राजस्थान के औद्योगिक विकास में, बल्कि समस्त देश के आर्थिक विकास में परम सहायक सिद्ध होगा।

## जानने योग्य

राजस्थान में ८९,२,५५,२६१ रुपये के १८,९८,५३० मनीआर्डर १९६४-६४ में जारी किये गये और १६,३६,६१,६७ रु० के मूल्य के २०,५२, २८८ मनीआर्डर अदा किये गये।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


देश की प्रतिरक्षा के लिए वस्त्रों का अधिक उत्पादन

# बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

के

अधिकारी, कर्मचारी व कारीगर देश के
जन-जन के लिए हर किस्म का कपड़ा
मिल में तैयार करते हैं !

●

पंजाब की सर्वश्रेष्ठ रुई से

साड़ी, धोती, छींट, लट्ठा, शर्टिंग,
मलमल, कोटिंग, वायलिन, खादी,
दुसूती, चादर आदि

कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं ! !

●

बिड़ला काटन स्पिनिंग एंड वीविंग जनरल मिल्स
लिमिटेड, दिल्ली


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## रेलें व सड़कें.....

(पृष्ठ ९४ का शेष)

क्षमता की दृष्टि से भी मजबूत होनी चाहिए, क्योंकि सेना की आवश्यकताओं को देखते हुए भारी वाहनों का यातायात बहुत बढ़ गया है। १९५१ में यहां केवल ३ हजार भारी वाहन थे और उनकी भार क्षमता केवल १२ हजार टन थी, जबकि १९६४ में भारी वाहन १०, २७३ और उनकी भार-क्षमता लगभग ४२,८०० टन हो गई। इसलिए नई सड़कों का निर्माण करते समय उनकी मजबूती का भी ख्याल रखना होगा।

यों भी सारे देश में ही सड़क परिवहन का विकास हो रहा है। इसलिए और विशेषकर राजस्थान में बढ़ते हुए उद्योग व्यापार की गति को देखते हुए सड़क विकास की ओर ध्यान और भी अधिक देने की आवश्यकता है।

### राष्ट्रीयकरण

राजस्थान में सड़क यातायात की चर्चा करते हुए इसके राष्ट्रीयकरण का उल्लेख करना भी आवश्यक है। राजस्थान स्टेट रोडवेज़ ने १९६२-६३ की समाप्ति तक १३०० मील से अधिक विभिन्न मार्गों पर कार्य किया है। १९६३-६४ के अन्त तक स्टेट रोडवेज़ की करीब २८० गाड़ियां राज्य में और राज्य के विभिन्न मार्गों पर चल रही थीं। मार्गों के यातायात का राष्ट्रीयकरण राज्य के लिए बहुत लाभकारी व्यवसाय है, इसलिए स्वभावतः राजस्थान सरकार इस विषय पर अधिक ध्यान दे रही है। राजस्थान में रेलवे की सुविधा ही कम उपलब्ध है। इसकी कमी भी सड़क यातायात को पूरी करनी है।

१९६३ में सरकारी रोडवेज के पास ३०४ बसें थीं, जिन्हें राजस्थान के महत्वपूर्ण भागों पर चलाया जा रहा था। इन मार्गों की लम्बाई १३०० मील है। राजस्थान के अतिरिक्त ये बसें ग्वालियर-दिल्ली, भरतपुर-दिल्ली, जयपुर-दिल्ली और कोटा-भोपाल के मार्गों पर भी चलती थीं। अब यह विभाग एक अलग कारपोरेशन के रूप में चलाया जा रहा है।

### राजस्थान में यात्राव्यवसाय

राजस्थानी रियासतों के भूतपूर्व नरेशों ने राजस्थान के आर्थिक विकास के लिए भले ही कुछ कम उपक्रम किए हों, किन्तु अनजाने में वह एक ऐसा कार्य कर गये हैं, जो आज भी राजस्थान की आय का एक साधन बना हुआ है। यह कार्य है विभिन्न रियासतों में दर्शनीय किलों, भवनों और तालाबों आदि का निर्माण। राजस्थान की प्राकृतिक सम्पदाओं ने इन्हें और भी अधिक दर्शनीय बना दिया है। इन ऐतिहासिक दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए न केवल भारत के, किन्तु विदेशों के यात्री भी राजस्थान में भ्रमण करने के लिए आते हैं और राजस्थान के नागरिकों को अच्छी रकम दे जाते हैं।

राजस्थान सरकार ने यात्रियों के इस भ्रमण को भी अधिक व्यवस्थित रूप देने के लिए एक पृथक् विभाग की स्थापना की है। इसके महत्त्व को देखते हुए दूसरी और तीसरी योजनाओं में क्रमशः १६.१९ लाख और २४.३५ लाख रुपये इस कार्य के लिए रखे गये हैं। विभिन्न स्थानों पर यात्रियों के लिए बंगलों, सड़कों, यातायात साधनों, कैंटीनों और होटलों की स्थापना की जा रही है। इन सब सुविधाओं में वृद्धि का परिणाम यह हुआ कि यात्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। नीचे की तालिका से मालूम होगा कि राजस्थान में यात्रियों की संख्या किस प्रकार बढ़ रही है :

| | विदेशी | भारतीय |
|---|---|---|
| १९५७ | ६००० | ७ लाख |
| १९५८ | ९,५०० | ८ लाख |
| १९५९ | ११,००० | ९.५ लाख |
| १९६० | १५,००० | १०.५ लाख |
| १९६१ | २०,००० | २०. लाख |
| १९६२ | २१,००० | २१.२ लाख |
| १९६३ | २३.००० | २४ लाख |

इन यात्रियों से राजस्थान की आय का भी एक अनुमान किया गया है। एक अनुमान के अनुसार १९६३ में विदेशी यात्रियों से ४६ लाख और भारतीय यात्रियों से २ करोड़ रु० की आमदनी राज्य को हुई। यदि इस भ्रमण उद्योग को विकसित किया जाये तो यह अदृश्य आय भी राजस्थान के आर्थिक विकास में सहायता दे सकती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# खेती की उपज बढ़ाने में प्रगतिशील किसान सहयोग दे रहे हैं

## प्रगतिशील किसान

- गोबर कचरे को जलाता नहीं, सुपर-फास्फेट मिलाकर उसकी खाद तैयार करता है।
- सुझाव के अनुसार चुना हुआ और प्रमाणित बीज काम में लेता है।
- निराई–गुडाई कर खरपतवार को नष्ट करता है।
- कीड़ों व बीमारियों से फसल की रक्षा के लिये समय पर उपाय करता है।
- उन्नत कृषि यंत्रों को काम में लेकर भूमि का सुधार करता है और खेत की उचित तैयारी करके ही बीज बोता है।
- भू-संरक्षण कार्यों द्वारा पानी को नष्ट नहीं होने देता और सिंचाई के साधनों का पूरा व सही उपयोग करता है।
- जैविक खाद के साथ-साथ उर्वरक का भी पूरा उपयोग करता है।
- उपज को नियंत्रित मण्डियों में बेचकर मेहनत का पूरा मूल्य प्राप्त करता है।

**आप भी प्रगतिशील किसान बनकर देश की आर्थिक खुशहाली में सहयोग दीजिये।**

---

राजस्थान सरकार द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान की वित्तीय कठिनताएं

यों तो प्रत्येक राज्य की सरकार और विशेषकर वित्त मंत्री प्रतिवर्ष अपना बजट बनाते समय यह कठिनता अनुभव करते हैं कि आयके साधन कम हैं और व्यय के मद बहुत अधिक, किन्तु राजस्थान की समस्याएं बहुत विकट हैं, इसलिए उसकी कठिनाइयों पर विशेष विचार करने की आवश्यकता है।

किसी भी राज्य की आय मुख्यतः तीन साधनों से होती है। एक साधन है जनता के छोटे बड़े वर्गों पर सरकार द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कर। आय का दूसरा मुख्य साधन है सरकार के द्वारा जनता की विविध सेवाएं। वह छोटे मोटे अपने उद्योग चलाती है, यातायात की सेवाएं जारी करती है तथा मकान बनाकर उनसे किराया वसूल करती है। तीसरा साधन केन्द्रीय सरकार द्वारा एकत्र किये गये करों में राज्यों का भाग होता है। केन्द्र सरकार अंशदान भी करती है, ऋण भी देती है और सहायता के रूप में अनुदान भी करती है। १९५०-५१ में केन्द्रीय करों में राजस्थान का हिस्सा ८ लाख रुपये था, जो अब बढ़ते-बढ़ते १९६४-६५ में १२४०.१८ लाख रुपया हो गया है। इसी प्रकार राज्य कर ११०९.४४ लाख रुपये से बढ़कर ३१४६.६० लाख रुपये तक बढ़ गया है। कर रहित राजस्व भी ३४० लाख रु० से बढ़कर १६६२.१८ लाख तक बढ़ गया है। वित्तीय आयोग जो सिफारिशें अब पेश कर रहा है, उससे यह आशा होती है कि केन्द्र से मिलने वाली राशि और भी बढ़ जायगी।

यह रक़में कुछ बड़ी दीखती हैं, किन्तु वस्तुतः राजस्थान सरकार के नये उत्तरदायित्वों को देखते हुए कम ही हैं। अनेक कारणों से राजस्थान सरकार को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इनमें से कुछ मुख्य कारण निम्नलिखित है :—

१. प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं में सिंचाई एवं बिजली पर विनियोजित धन-राशि से वास्तविक लाभ मिलना अभी प्रारम्भ नहीं हुआ है। ये योजनाएं कई वर्ष बाद फल देना प्रारम्भ करती हैं। इस अर्से में इन राशियों के ऋण का बोझ तो बढ़ता रहता है, किन्तु उनका फल कई वर्षों तक नहीं मिल पाता।

२. राजस्थान में जागीरदारों और रियासती राजाओं की कमी नहीं रही। इन भूतपूर्व राजाओं और जागीरदारों को दी जाने वाली राशि राजस्थान पर एक भार है। जागीरदारों को नगद ब्याज और बौंडों के रूप में दी जाने वाली रकम का सरकार पर बोझ करीब ६७ करोड़ रुपये होगा। इनमें से तीसरी योजना में ही ३२ करोड़ रुपये चुकाने पड़ेंगे। चौथी योजना में भी १९ करोड़ रुपये का प्रावधान करना पड़ेगा। धीरे २ यह राशि कम होकर १९७३ तक चुकाई जायगी।

३. राज्य सरकार को पंचवर्षीय योजनाओं में धन लगाने के लिए जनता एवं केन्द्रीय सरकार से बहुत बड़ी धन-राशि उधार लेनी पड़ती है। इन बड़े कर्जों की अदायगी वस्तुतः बड़ी परियोजनाओं से वास्तविक लाभ मिलने के बाद ही प्रारम्भ हो सकेगी।

४. गत १४ वर्षों में प्रशासनिक सेवाओं पर भी व्यय दुगना हो गया है। यों तो यह व्यय सभी राज्यों में बढ़ रहा है, किन्तु राजस्थान, पाकिस्तान का सीमावर्ती प्रदेश हैं, यहां सुरक्षा और पुलिस की व्यवस्था बहुत अधिक करनी पड़ती है। पुलिस विभाग में होने वाले व्यय में २.१८ करोड़ रुपये से ६.१२ करोड़ रुपये तक की वृद्धि हो गई है। उत्तरी सीमा पर १० आर० ए० सी० बटालियन की व्यवस्था करनी पड़ती है।

५. विभिन्न समाज सेवाओं पर होने वाला व्यय १९५०-५१ में ३.७३ करोड़ रुपया था। अब राज्य पर नई जिम्मेवारियां आने के कारण यह व्यय निरन्तर बढ़ता जा रहा है, और १९६४-६५ में २४.५२ करोड़ रुपया हो गया।

६. राजस्थान मरूभूमि का प्रदेश है और जब अनावृष्टि और दुर्भिक्ष पड़ जाता है, तब खेती से होने वाली राजस्व आय बहुत कम हो जाती है। उन्हें प्रायः प्रति वर्ष एक बड़े क्षेत्र में जहां १॥-२ करोड़ रुपये राजस्व की वसूली स्थगित करनी पड़ती है, वहां सहायता कार्यों पर भी करोड़ों रुपया खर्च करना पड़ता है।

७. राजस्थान सरकार को मंहगाई के आज के युग में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशासनिक व्यय निरन्तर वृद्धि करनी पड़ रही है। राज्य कर्मचारियों की मंहगाई के मद में ही करीब ६ करोड़ रुपया व्यय बढ़ गया है।

८. पंचवर्षीय योजनाओं की क्रियान्विति बहुत कठिन कार्य है। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में राजस्थान सरकार को केन्द्रीय सरकार से करोड़ों रुपया लेना पड़ा। यह रुपया सैक्योरिटियां बेचकर या ओवर ड्राफ्ट के द्वारा लिया गया। केन्द्रीय सरकार से अनेक ऋण भी लिये गये। इन सब का दुष्परिणाम अब योजना पर पड़ रहा है।

किन्तु यह स्थिति भविष्य में रहने वाली नहीं है। इसके २-३ कारण हैं। राजस्थान में जिस तीव्र गति से औद्योगिक विकास हो रहा है, उसे देखते हुए यह आशा की जा सकती है कि आगामी कुछ वर्षों में प्रशासन को करों से अधिक से अधिकतर आमदनी होती जायगी। बिजली और सिंचाई की योजनाओं का ज्यों प्रसार होता जायगा, त्यों-त्यों इनसे राज्य की आमदनी बढ़ती जायगी। सरकार द्वारा खोले गये नये-नये उद्योग भी राजस्थान की आय को बढ़ाने वाले सिद्ध होंगे। आज जिस तरह अनावृष्टि और अकाल की पुनरावृत्ति बार-बार होती है, उसमें काफी कमी आ जाने की आशा है। राजाओं और जमींदारों को दी जाने वाली मुआवजे की रकम भी कम हो रही है। ज्यों-ज्यों कर्ज भुगतते जायेंगे त्यों-त्यों उनका ब्याज भी कम बोझ डालने वाला सिद्ध होगा।

# राजस्थान में करों से आय निरन्तर बढ़ रही है !!!

किसी भी राज्य की सरकार अपने भारी उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए दो साधनों से आय प्राप्त करती है (अ) जनता के विभिन्न वर्गों पर कर लगाकर और (आ) कर भिन्न साधनों से—जैसे उद्योग, लाइसैन्स फीस, स्टाम्प ड्यूटी आदि। राजस्थान सरकार भी इसका अपवाद नहीं है। निम्न तालिका से यह प्रकट होता है कि वह करों के द्वारा कुल कितना रुपया एकत्र करती है और कर भिन्न साधनों से कितना ? आज के मँहगाई के युग में और उद्योगों के विकास के युग में करों का भाग इतना अधिक नहीं होना चाहिए, जिससे नागरिकों के जीवन में कठिनाइयाँ बढ़ें और उद्योगों को अपने विकास में बचत या पूँजी की कमी हो।

इस तालिका से यह भी मालूम होता है कि राजस्थान सरकार की करों से आय बहुत बढ़ती जा रही है। १९५१-५२ में यदि कुल करों की आय ११६३.६९ रु० तो ८ साल बाद १९५९-६० में २९१४.७० लाख हो गई। अर्थात् पौने तीन गुना। इसके ६ साल बाद ही १९६३-६४ में ४११७.२३ लाख रुपया सरकार को विभिन्न करों से प्राप्त हुआ। अर्थात् १२ वर्ष में करों से आय पौने ४ गुना बढ़ गई।

हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि केन्द्रीय सरकार भी बहुत से कर लगाती है, जिनसे राजस्थान सरकार को एक अच्छा भाग मिलता है। यदि उनको भी शामिल किया जाय तो राजस्थान को करों से आय बहुत अधिक प्राप्त होती है।

| | कर आय (लाख रु०) | अ-कर आय (लाख रु०) | कुल आय (लाख रु०) | कर आय कुल आय का प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| १९५१-५२ | ११६३.६९ | ४४२.३७ | १६०६.०६ | ७२.४१ |
| १९५२-५३ | १४१०.८४ | ५२३.८६ | १६३४.७० | ८६.२९ |
| १९५३-५४ | १४२०.२७ | २३२.२७ | १७४३.६८ | ८१.४६ |
| १९५४-५५ | १५१३.९४ | ३०८.७९ | १८१८.७३ | ८३.२२ |
| १९५५-५६ | १३७३.४० | ८३१.५० | २२१०.९० | ६२.३९ |
| १९५६-५७ | १५८९.६९ | ७६४.७१ | २३५४.४० | ६७.५० |
| १९५७-५८ | १९७५.६९ | १०९३.२५ | ३०६८.९४ | ६४.३९ |
| १९५८-५९ | २२६०.४९ | ११३६.७० | ३३९७.१९ | ६६.५३ |
| १९५९-६० | २४८०.५४ | १४६५.५८ | ३९४६.१२ | ६२.८५ |
| १९६०-६१ | २५५९.६१ | १८३६.७० | ४३९६.२१ | ५८.२१ |
| १९६१-६२ | २९१४.७७ | १७०६.११ | ४६२०.८८ | ६३.०७ |
| १९६२-६३ | ३६१७.०४ | २२३९.१६ | ५८५६.२८ | ६१.७७ |
| १९६३-६४ | ४११७.२३ | २८१८.४२ | ६९३५.६५ | ५९.३६ |

ऐसी स्थिति में यजि राजस्थान सरकार नये कर लगाती है तो यह नागरिकों और उद्योग दोनों के लिए चिन्तनीय प्रश्न है। १९६५-६६ के बजट में भी राजस्थान के वित्त मंत्री ने १ करोड़ ५५ लाख के नये कर लगाये हैं। लगान दर सम्बन्धी और जमीन के नये एलाटमैन्ट के अनुसार १८ लाख रुपया और भी प्राप्त हो जायगा। ■



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सहकारिता आन्दोलन की प्रगति

राजस्थान के सभी भागों में सहकारिता विकास के प्रयास भी सन १९४९ में राजस्थान राज्य के निर्माण के पश्चात ही प्रारम्भ हुए। कुछ रियासतों में तो सहकारिता का प्रारम्भ भी नहीं हुआ था, जब कि कुछ में उसका अस्तित्व केवल नाममात्र का ही था और और वह भी न सन्तोषजनक था और न गतिशील ।

राजस्थान निर्माण के पश्चात राज्यस्तरीय शीर्ष सहकारी संगठनों के निर्माण एवं आन्दोलन को सुनियोजित आधार पर सुदृढ़ करने के लिए एक एकीकृत सहकारी कानून की आवश्यकता अनुभव की गई। राजस्थान सहकारी समितियां एक्ट (नं०४) १९५३, ६ फरवरी, १९५३ को पास हुआ और अप्रैल, १९५३ से लागू हुआ। इस कानून के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए राजस्थान स्टेट कोआपरेटिव सोसाइटीज नियम १९५७ में बनाये गये और राज्य सरकार द्वारा लागू किये गये और फिर सचिव सहकारी विभाग के संयोजकत्व में राजस्थान में सहकारी कानून को पुनःनिर्मित करने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया। इसकी सिफारिशें मान ली गईं।

## सहकारी ऋण

जहां तक अल्प-अवधि एवं मध्य अवधि के ऋणों का सम्बन्ध है, सहकारी ऋण का ढांचा राज्य में अन्य स्थानों की भांति संघीय है। कृषि ऋणदात्री समिति सबसे नीचे कार्य करती है, केन्द्रीय सहकारी बैंक मध्य या जिला-स्तर पर और राजस्थान राज्य सहकारी बैंक शीर्ष स्तर पर कार्य करते हैं। दीर्घकालीन ऋण-वितरण के लिए क्षेत्र की आवश्यकतानुसार जिला या सब डिवीज़न अथवा पंचायत समिति स्तर पर प्राथमिक भूमि बंधक-बैंक कार्य कर रहे हैं। केन्द्रीय सहकारी भूमि-बंधक-बैंक शीर्ष स्तर पर है।

इस समय राज्य में २५ केन्द्रीय सहकारी बैंक कार्य कर रहे हैं। प्राथमिक भूमि बंधक बैंकों की संख्या ३० है। १-७-१९६४ तक प्राथमिक कृषि ऋणदात्री सहकारी समितियों की संख्या १२५२३ थी। राजस्थान राज्य सहकारी बैंक हिस्सा पूंजी जमानत और ऋण के रूप में धन एकत्रित करता है। केन्द्रीय सहकारी बैंकों एवं अन्य सहकारी संस्थाओं तथा आम जनता से धरोहरें प्राप्त की जाती हैं, जबकि ऋण केवल रिजर्व बैंक से प्राप्त होता है।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के प्रथम दो वर्षों में (१९६१-६२ व १९६२-६३) अल्पकालीन व मध्यकालीन ऋण क्रमशः ५३९ लाख रु० व ५०९ लाख रु० बांटे गये। इसी अवधि में क्रमशः १८.७७ लाख रु० दीर्घ-कालीन ऋण के बकाया रहे। हमारे प्रान्त की कृषि सम्बन्धी आवश्यकताओं को देखते हुए ऋण की यह मात्रा अल्प है, परन्तु उसे बढ़ाने के लिए तेजी के साथ प्रयास किये जा रहे हैं। फसल के समय वसूली-अभियान प्रत्येक जिलों में चलाये जाते हैं।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत सहकारी समितियों की संख्या ३५९० से बढ़ाकर ६००० करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, परन्तु ६९१५ समितियां, जिनकी सदस्यता २.३ लाख थी, गठित की जा सकीं और इस प्रकार से ५ प्रतिशत गांव और ८ प्रतिशत ग्रामीण परिवार सहकारिता के अन्तर्गत लाये गये। अन्य उपलब्धियों में १० केन्द्रीय सहकारी बैंकों की स्थापना, राज्य स्तर पर राजस्थान राज्य सहकारी बैंक की स्थापना और विभागीय अवेक्षकों (आडीटरों) एवं सहायक निरीक्षकों के लिए एक प्रशिक्षणालय स्थापित करना मुख्य रहा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तिम दो वर्षों में ३८९३ नई सेवा सहकारी समितियों का राज्य में गठन हुआ। १९९१-६२ में १०६४ नई सेवा सहकारी समितियां गठित हुईं और १९६२-३९ में ६४७। वर्ष १९६३-६४ और १९६४-६५ के लिए क्रमशः ५३४ और ७०० नई सेवा सहकारी समितियों के गठन का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इस प्रकार शेष १०५५ समितियों का गठन १९६५-६६ में किया जायेगा।

वर्तमान सहकारी समितियों में से ७० प्रतिशत सहकारी समितियों के पुनर्गठन का कार्य हाथ में लिया गया। द्वितीय पंच वर्षीय योजना के अन्तर्गत २२४४ प्राथमिक ग्रामीण समितियों को इस कार्यक्रम के अन्तर्गत



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाया गया और तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत १००० समितियों का पुनर्गठन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

## केन्द्रीय सहकारी बैंक

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सहकारी बैंकों की शाखाओं की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव किया गया था और ५० नई शाखायें स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। इसमें से २० शाखायें योजना के प्रथम वर्षों में स्थापित की जा चुकीं और १० शाखाएं वर्ष १९६३-३४ में स्थापित की गईं। शेष बची २० शाखाएं योजना के अन्तिम दो वर्षों में १० प्रति वर्ष के हिसाब से स्थापित हो जावेंगी।

## प्राथमिक भूमि बंधक बैंक

दीर्घकालीन ऋण वितरण के लिए द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत एक केन्द्रीय सहकारी भूमि बंधक बैंक राज्य स्तर पर और प्राथमिक भूमि बंधक बैंक जिला या सब डिवीजन स्तर पर खोले गये। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत २५ प्राथमिक भूमि बंधक बैंक और खोले का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। योजना आयोग ने १९६२-६३ और १९६३-६४ के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किए गये और वर्ष १९६४-६५ के लिए सरकार के ५ बैंक खोलने की स्वीकृति प्रदान की गई है। इन्हीं वर्षों में सहकारी समितियों के मार्फत सभी किसानों की तकाबी ऋण वितरण वितरण किए जाने को है।

## सहकारी क्रय विक्रय समितियां

कृषकों को बीज, रासायनिक खाद, कृषि औजार, कीट नाशक औषधि आदि के वितरण एवं बचे हुए उत्पादन की बिक्री के लिए एक शीर्ष क्रय विक्रय समिति और १०५ प्राथमिक क्रय विक्रय समितियों का गठन द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक किया गया। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रारम्भ में २५० ग्रामीण गोदामों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, परन्तु बाद में इसे घटाकर १२५ कर दिया गया।

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रारम्भ में २ काटन जिनिंग के कारखानों, २ तेल मिल, २ दाल मिल और २ ग्राउन्डनट डैकारीटकेटर स्थापित करने का प्रावधान रखा गया था परन्तु आर्थिक कटौती के कारण यह लक्ष्य घटा कर के १ काटन जिनिंग कारखाना, एक दाल मिल और १ ग्राउन्डनट डैकारटिकेटर स्थापित करना, कर दिया गया।

## उपभोक्ता भंडार

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत प्राथमिक एवं होलसेल भंडारों के गठन एवं विद्यमान भंडारों के पुनर्गठन की योजना को सर्वप्रथम योजना के रूप में ले लिया गया। मूल प्रस्तावों को योजना के कोर में घटा कर २५ नये प्राथमिक भंडारों को पुनर्गठित करने का कर दिया गया। वर्ष १९६१-६२ में १० नये प्राथमिक भंडार गठित किये गए और १० विद्यमान भंडारों का पुनर्गठन किया गया। १९६२ में इस योजना को केन्द्र संचालित घोषित होने के कारण ५५ प्राथमिक भंडार एवं जयपुर, जोधपुर, अजमेर व बीकानेर में ४ होलसेल भंडार गठित हुए। वर्ष १९६३-६४ में अलवर, गंगानगर, कोटा और उदयपुर में ४ होलसेल भंडार और ७६ प्राथमिक भंडार गठित किये जा सके।


**भारत की उद्योग नीति**

*

लेखक :

मनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै.

"सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

**अशोक प्रकाशन मन्दिर,**

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पचास वर्ष पूर्व का राजस्थान

श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

राजपूताने के प्रथम और प्रसिद्ध इतिहास लेखक कर्नल टाड ने सबसे सबसे पहले इस प्रदेश का नाम राजस्थान दिया। उस समय में भी यह नाम प्रसिद्ध रहा हो, ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता। प्रसिद्ध नाम राजपूताना भी अंग्रेजों का रखा हुआ है। जिस समय उनका सम्बन्ध इस देश के साथ हुआ, उस समय बहुधा यह सारा देश भरतपुर राज्य को छोड़कर राजपूत राजाओं के अधीन होने से उन्होंने गोंडवाना, तिलंगाना आदि के ढंग पर इसका नाम राजपूताना अथवा राजपूतों का देश रखा। परन्तु यह नाम भी अंग्रेजों के आने से पहले सारे राजपूताने के लिए प्रयुक्त नहीं हुआ था। उसके कितने एक अंशों के तो प्राधीन काल में समय-समय पर भिन्न-भिन्न नाम थे और कुछ विभाग अन्य बाहरी प्रदेशों के अन्तर्गत थे।

## भूमि

रेगिस्तान वाले प्रदेश में रेता अधिक होने से विशेष कर एक ही फसल खरीफ (सियालू) की होती है और रबी (आलू) की बहुत कम। कोटा, बूंदी, झालावाड़, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ के पूर्वी विभाग आदि में माड़ की जमीन अधिक होने से बिना पिलाए ही रबी की फसल हो जाती है, परन्तु कुए या तालाब से पीने वाली जमीन की अपेक्षा उसमें उपज कम होती है। बाकी के हिस्सों में जहां न तो विशेष रेतीली और न माड़ की भूमि है, कुओं आदि से पानी पिलाने पर दोनों फसलें अच्छी होती हैं। पहाड़ों के ढाल में भी खरीफ में खेती होती है, जिसको यहां वालरा (प्राकृत वल्लर) कहते हैं। पहाड़ों के बीच की भूमि में जहां पानी भर जाता है, चावल की खेती भी होती है। राजपूताने की मुख्य पैदावारी चीजें गेहूं, जौ, मक्की, ज्वार, बाजरा, मोठ, मूंग, उड़द, चना, चावल, तिल, सरसों, अलसी, सुआ, जीरा, रुई, तम्बाकू और अफीम है। अफीम की खेती पहले बहुत होती थी, परन्तु सरकार अंग्रेजी ने रियासतों में इसका बोना बहुधा बन्द करा दिया। उक्त पैदावार की चीजों में से रुई, अफीम, सरसों, अलसी और सुआ बाहर जाते हैं और शक्कर, गुड़, कपड़ा, तम्बाकू, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल आदि बहुत-सी जरूरी चीजें बाहर से आती हैं।

## खनिज

राजपूताने में लोहा, तांबा, जस्ता, चांदी, सीसा, स्फटिक, तामड़ा, भोड़ल और कोयले की खानें हैं। लोहे की खानें उदयपुर, अलवर और जयपुर राज्यों में, चांदी और जस्ते की खान उदयपुर राज्य के जावर स्थान में, सीसे की खान अजमेर के पास और तांबे की जयपुर राज्य में खेतड़ी के पास है। ये सब खानें पहले जारी थीं, परन्तु बाहर से आने वाली इन वस्तुओं के सस्तेपन के कारण अब ये सब बन्द हैं। केवल उदयपुर राज्य के वीगोद राज्य में कुछ लोहा अब तक निकाला जाता है, जिसका कारण यही है कि लोग उस लोहे को विदेशी लोहे से अच्छा समझते हैं। बीकानेर में कोयले की खान (पलाना में) वि० सं० १९५५ (ई० स० १८९८) से चलने लगी है। भोड़ल और तामड़े की खानें जिला अजमेर तथा किशनगढ़ राज्य आदि में जारी हैं, क्योंकि ये दोनों बिक्री के वास्ते बाहर जाती हैं। संगमरमर कई जगह निकलता है, परन्तु सबसे उत्तम मकराने का है। इमारती काम का पत्थर, पट्टियां आदि अनेक जगह निकलती हैं। नमक की पैदावार का मुख्य स्थान सांभर है। उसके अतिरिक्त जोधपुर राज्य के डीडवाना, पचभद्रा आदि स्थानों में, बीकानेर राज्य के छापर और लूंणकरनसर में तथा जैसलमेर राज्य के काणोद में भी नमक बनता है।

राजपूताना के लोगों में से अधिकतर खेती करते और कई गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि जानवरों को पालकर उन्हीं से अपना निर्वाह करते हैं। कई सैनिक या अन्य नौकरी, दस्तकारी व मजदूरी कर के पेट भरते और कई व्यापार करते हैं। व्यापार करने वालों में मुख्य महाजन हैं, जो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि दूर दूर के अनेक शहरों में जाकर व्यवसाय चलाते हैं। ब्राह्मण विशेषकर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ-पूजन, पुरोहिताई, व्यापार, भिक्षावृत्ति और नौकरी पर निर्वाह करते हैं।

### सिक्के

राजपूताने में भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के समान प्राचीन काल में सोने-चांदी और तांबे के सिक्के चलते थे। सोने में प्राचीन नाम सुवर्ण, निष्क, शतमान, पल, दीनार आदि चांदी के सिक्कों के पुराण, धरण, पाद, पदिक (फदैया या फदिया), द्रम्म, रूपक, टंक आदि नाम हैं। राजपूताने से मिलने वाले सबसे पुराने सिक्के चांदी और तांबे के हैं, जो दूसरे प्रदेशों के सिक्कों के समान प्रारम्भ में चौकोर और पीछे से गोल भी बनने लगे थे। इन पर कोई लेख नहीं होता, किन्तु मनुष्य, पशु, पक्षी, सूर्य, चन्द्र, धनुष, बाण, स्तूप, बोधिद्रुम, स्वस्तिक, वज्र, पर्वत (मेरु) नदी (गंगा) आदि धार्मिक संकेत एवं अनेक अन्य चिन्ह अंकित होते थे, जिनमें से कई एक का वास्तविक आशय ज्ञात नहीं होता।

### निर्माण कला

महाराणा कुम्भकरण द्वारा बनाये हुए किले, कीर्ति-स्तम्भ, मन्दिर आदि के देखने से अनुमान होता है कि उनके निर्माण में करोड़ों रुपये व्यय हुए होंगे। कुंभा की इस धनसम्पत्ति का अनुमान उन स्थलों को प्रत्यक्ष देखने से ही हो सकता है। कीर्तिस्तम्भ तो भारत भर में हिन्दू नृपति की कीर्ति का एक अलौकिक स्तम्भ है, जिसके बहुत और व्यय का अनुमान उसके देखने से ही हो सकता है।

### सम्पत्ति

महाराणा प्रताप के पास अतुल सम्पत्ति विद्यमान थी और धन की कमी के कारण उसके स्वदेश को छोड़कर अन्यत्र जा बसने का विचार भी सर्वथा निर्मूल है…। महाराणा अमरसिंह ने मुगल बादशाह से सन्धि करते हुए जो लाल शाहजादा खुर्रम को दिया गया, उसके विषय में जहांगीर अपनी दिन-चर्या में लिखता है—"उसका मूल्य ६०,००० रुपये और तौल आठ टांक था। वि० सं० १६७३ (ई० सं० १६१६) में शाहजादा खुर्रम दक्षिण को जाता हुआ मार्ग में उदयपुर ठहरा। बादशाह जहांगीर के अनुसार—"राणा ने शाहजादे को ५ हाथी, २७ घोड़े और हीरों तथा रत्नजटित जेवरों से भरा एक थाल नजर किया, परन्तु शाहजादे ने केवल तीन घोड़े लेकर बाकी सब चीजें वापस कर दीं।" जहांगीर के इन कथनों से महाराणा अमरसिंह की मेवाड़ की सम्पत्ति का कुछ अनुमान पाठक कर सकेंगे। यदि महाराणा प्रताप-सिंह के पास कुछ भी सम्पत्ति न होती, तो उसका पुत्र महाराणा अमरसिंह संधि के समय ही इतने रत्नादि कहां से प्राप्त कर सकता।*

*राजपूताने का इतिहास (१९३६ ई० में लिखित) से


**पढ़िये! ग्राहक बनिये!! विज्ञापन देकर मदद कीजिये!!!**

प्रेम व करुणा प्रेरित लोकजीवन का प्रेरक

संचालक : गोकुलभाई भट्ट

संपादक : यज्ञदत्त उपाध्याय, जवाहिरलाल जैन

* यह आज के युग के सर्वोच्च विचार—सर्वोदय का वाहक है।
* यह सर्वोदयनिष्ठ क्रांति का सही दर्शन प्रस्तुत करता है।
* यह आज के 'वादों' तथा 'दलों' से मुक्त लोकनीति का पोषक है।
* यह देश तथा विदेश की समस्याओं पर प्रेरक विचार देता है।

**विनोबा का आशीर्वाद**

'ग्रामराज' बहुत ही शानदार और बहुत ही सुन्दर पत्र निकल रहा है। सब तरह की जानकारी इसमें रहती है। राजस्थान के हर शिक्षित भाई-बहन के हाथ में यह पत्रिका होनी चाहिए।

विनोबा भावे

**वार्षिक चंदा पांच रुपया**

(प्रत्येक माह की ७, १४, २१ व २८ तारिख को प्रकाशित)

नमूने के लिए लिखें :—

व्यवस्थापक

**ग्रामराज साप्ताहिक**

**किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर, (राज०)**

तार : 'भूदान' टेलीफोन : ७२९७३




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जनजागरण के सक्षम साधन

श्रीनाथ चतुर्वेदी स. संचालक जनसंपर्क राजस्थान

## पुराने प्रचार के तरीके

पुराने जमाने से जो पारम्परिक समुदाय चले आ रहे हैं, उनके अपने बड़े प्रबल संलाप या प्रचार साधन हैं। इन समुदायों में सूचना और प्रचार का कार्य करने वाले नाई, बलाई, गांव-गुरु, मुखिया, मुल्ला-मौलवी, जाति गुरु, तीर्थ के पण्डे, साधु-फकीर, जागे, भाट चारण, बारेठ, भांड-बहुरुपिये और अनेक लोकरंजन के कार्य करने वाले लोग हैं। गांव में कथा-कहानियों, तमाशों-खयालों का बड़ा भारी साहित्य है और लोग बाग इसको बड़े चाव से सुनते हैं, देखते हैं। गांव वाले शादी के समारोह और मृत्यु भोजों के अवसरों पर बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठे होते हैं और वे मन्दिरों, मस्जिदों, अन्य छोटे-मोटे उत्सवों, समारोहों, गांव के हाटों में भी बहुत बड़ी संख्या में आकर लगातार परस्पर मिलते रहते हैं, जहां पर उन्हें व्यापारी संगठन और अन्य पेशेवर विविध प्रकार की सूचना देते हैं। इसके अतिरिक्त यात्रा के स्थलों पर कुम्भ और दूसरे मेलों बहुत बड़ी बड़ी संख्या में पुरानी परम्परा मानने वाले एकत्रित होते हैं।

## नई प्रचार संस्थाएं

आजकल हमारे पास केन्द्र में और राज्य सरकारों के पास लगभग निम्नलिखित सूचना और प्रसारण व्यवस्था है :

केन्द्र में एक सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय है और राज्यों में सूचना और प्रचार के निर्देशालय हैं। प्रत्येक जिले में एक सूचना अधिकारी है, जिसके पास एक प्रचार की गाड़ी है, जिसके द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में सिनेमा दिखाने के साथ-साथ अन्य प्रचार कार्य भी किया जाता है। गांवों में प्रचार कार्य भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार के घटकों द्वारा, जिलों में प्रचार गाड़ियों द्वारा, पंचायत समिति, पंचायतों और गांवों के प्रसार अधिकारियों द्वारा होता है। केन्द्रीय सरकार अखिल भारतीय आकाशवाणी द्वारा विभिन्न प्रसारण कार्यक्रम सुलभ करती है, वृत्त चलचित्र बनवाती है, विभिन्न प्रकार के प्रकाशन तैयार किये जाते है और पोस्टर स्लाइड तथा प्रदर्शन सामग्री भी बनती है, जिसके द्वारा विभिन्न प्रयागों की झांकी मिलती है। नाटक संविभाग द्वारा समय समय पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं।

इसके अतिरिक्त जिला जन सम्पर्क अधिकारी, भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, पंचायत समिति, पंचायतें और गांवों के प्रसार अधिकारी आमने सामने बातचीत द्वारा भी सूचना और समाचार देते हैं। कभी-कभी क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी और जिला जन सम्पर्क अधिकारी सभाओं का भी आयोजन करते हैं, जिसमें विशेषज्ञों और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के भाषण होते हैं। इसके अतिरिक्त सामूहिक प्रचार निजी क्षेत्र में, बड़े बड़े अखबार, मासिक और साप्ताहिक पत्रों और पुस्तकों द्वारा हो रहा है। विज्ञापन भी खूब होता हैं। साइन बोर्ड जगह-जगह मिलते हैं। सार्वजनिक सभाएं भी होती रहती हैं।

## पुराने या नये समूह ? निष्ठा कितनी और किधर ?

असल में शब्द या कर्म का विकल्प, जैसा कि सामुदायिक योजनाओं के प्रारम्भ में रखा गया था, की जगह पुरानी या नयी समुदाय संस्थाओं का विकल्प हमारे सामने रखा जाना चाहिए था। पुराने समुदाय हैं—संयुक्त परिवार, गोत, जाति, सम्प्रदाय या धर्म। नये समुदाय जो लगभग इनके विकल्प या महत्वपूर्ण पूरक हैं—वे हैं सहकारी समिति, गांव-पंचायत, सामुदायिक पाठशाला, पंचायत समिति, राजनैतिक दल, मजदूर संघ या क्लब, विधान सभा, संसद और राष्ट्र। हम नये समुदायों के द्वारा ऐसी सूचना और सम्भावना का संचार करना चाहते हैं, जिससे ज्यादा से ज्यादा हमारा पिछड़ा समाज आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को अपना सके; नई-नई मशीनों का चलाना, बनाना और नये नये आविष्कार करना सीख सके और सहकारी समाज



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# किसानों और राष्ट्र की सेवा में उन्नत यंत्र

## निर्माता—कृषि वर्कशाप, जयपुर

### हल और हैरड हो

| | |
|---|---|
| १. मोल्ड बोर्ड हल ७ इंच | ३४ रु० |
| २. मोल्ड बोर्ड हल ६ इंच | २४ रु० |
| ३. रिजर हल (छोटी रिजों के लिए) | २७ रु० |
| ४. बहुउद्देशी हो तीन फलियों वाला | ७ रु० |
| ५. दांतेदार हैंड हो | ३ रु० |

### हैरो

| | |
|---|---|
| १. ब्लेड हैरो १८ इंच सम्पूर्ण इस्पातका | १४ रु० |
| २. ,, ६ इंच ,, | २८ रु० |
| ३. मैग टूथ हैरो ४ फुट ,, | ४५ रु० |
| ४. सायल सजन ४ फुट ,, | ५१ रु० |
| ५. सिंह पटेला ५॥ फुट ,, | ५५ रु० |

### सीड ड्रिल

| | |
|---|---|
| १. एक पंक्ति में कपास की बुवाई का सीड ड्रिल | २४ रु० |
| २. दो पंक्तियों में कपास की बुवाई का सीड ड्रिल | ३५ रु० |
| ३. टूल बार तीन पंक्तियों में बुवाई करने के यंत्र सहित | ३५ रु० |

### सिंचाई यंत्र

| | |
|---|---|
| १. बंध फार्मर | ३८ रु० |
| २. बक स्क्रपर | ४० रु० |
| ३. मोट व्हील (ब्रेक सहित | ६७ रु० |

### प्रोसेसिंग यंत्र

| | |
|---|---|
| १. आलैपड प्रैशर | २७५ रु० |
| २. विनोअर (हस्त चलित) | ५०० रू० |
| ३. बीजोपचार ड्रम | ४२ रु० |
| ४. मक्का के दाने अलग करने वाला यंत्र १ हार्स पावर के मोटर द्वारा चालित | १७५ रु० |
| ५. घास काटने वाला यंत्र (हस्त-चलित) | १२५ रु० |

### विविध

| | |
|---|---|
| १. गोबर गैस प्लाण्ट | ३०० रु० |
| २. व्हील बैरो ८.५ घनफुट | १०८ रु० |

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया लिखें—

## कृषि इंजिनीयर, राजस्थान, जयपुर

तार—एग्री इंजिनीयर, जयपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या समाजवादी समाज का ढंग स्थापित करे। परन्तु ये आधुनिक समुदाय अभी तक हमारे समाज में पुराने समुदायों की जगह जम नहीं पाये हैं, क्योंकि इन नये समुदायों के लिए हमने सूचना और समझावना के साधन जुटाने की ओर जरूरी ध्यान ही नहीं दिया है। सरकारी प्रचार का जनोद्देश्य क्या है, इस ओर भी अभी ध्यान ही नहीं गया हैं।

## ज्ञान (बात) और क्रिया का समन्वय

तथ्य यह है कि मनुष्य के कार्य में "शब्द" और "कर्म" साथ साथ चलते हैं। हमारे राष्ट्र का रोग बहुत शब्द या बातचीत नहीं है। अगर शब्द और बातों का बढ़ने का अर्थ कर्म का शिथिल करना होता, तब आप इस तथ्य को क्या कहेंगे कि संसार में इस समय लगभग दो हजार पृष्ठ प्रति मिनिट छप रहे हैं, जिनकी संख्या १९७०-७५ तक लगभग चार हजार प्रति मिनिट हो जायगी और शब्दों का यह प्रवाह सबसे ज्यादा अमरीका रूस, इंग्लैण्ड और चीन आदि उन देशों में हो रहा है, जिन्हें हमारे कर्म के शंखनाद या डिंडिम घोष की जरूरत नहीं है। इसलिए समस्या है सार्थक बात करने की, ऐसी बात करने की कि जो उच्च समूह भाव पैदा करे और लोकमानस को नई आवश्यकताओं के प्रति जागरूक बना दे। यानि ऐसी मनोवृत्ति और मूल्यों के प्रति सामान्य रूप से आदर पैदा हो, जिनसे कि हम अपने आधुनिक जीवन को संचालित करना चाहते हैं। हमारा देश अगर पिछड़ा रह गया तो इसका यह कारण नहीं है कि हमने बातें बहुत कीं और काम कम किया। हमने फालतू बातों को ही किया है। असल बात बिल्कुल दूसरी है। जिन लोगों ने अपनी प्रामाणिक बातों के अभिलेख हमारे लिए छोड़े हैं, वे तो जंगलों में, हिमालय की चोटियों पर चले गये थे और कर्म से उनका कोई संबंध नहीं रहा था और जिन लोगों के कर्मों के मूर्त्त रूप और कर्म के अभ्यास अभी तक हमारे साथ हैं यानि पुराने जुलाहे, खाती, कुम्हार, किसान आदि, वे बातों और शब्दों के अभाव में आदिम युगीन ही चले आये हैं। इस प्रकार बातें एक तरफ रह गईं और कर्म एक तरफ। विकास बातों और कर्म के समन्वय से होता है, ज्ञान और क्रिया के समन्वय से होता है, सिद्धान्त और व्यवहार के मिलन से होता है, शास्त्र और शिल्प के समन्वय से होता है। जब बातें और कर्म अलहदा अलहदा हो जाते हैं, तो कर्म पिछड़ जाता है और बातें थोथी हो जाती हैं।

## कोरे कर्म को सिखाने से मनुष्य नहीं बदलता

यदि इन किसानों और मजदूरों को सुधरे ढंग से खेती करना, दूर दूर बीजों को बोना, निराई करना, मेड़बन्दी करना, खाद और उर्वरकों को प्रयोग करना, सुधरे बीज और औजारों का प्रयोग करना, पंचायत भवन और स्कूल बनाना, मशीनों को चलाना सिखा भी दिया गया, तो कोई इससे बहुत फर्क थोड़े ही पड़ने वाला है। इससे विदेशी वस्तुओं को खरीदने की मांग तो बहुत बढ़ जाएगी। वस्तुतः जब तक मनुष्य नहीं बदलते, उनका मानसिक विकास नहीं होता, तब तक वे स्वयं अपनी बुद्धि तथा बल के कौशल से वह काम नहीं कर सकते, जिससे उनका पिछड़ापन दूर हो। वे उत्पादन भी हाँक से बढ़ाते हैं।

इस तरह से हमारी सबसे बड़ी समस्या सूचना और समाचार के उन साधनों को पैदा करने की है, जिनके द्वारा सारे मनुष्यों का सामान्य रूप से बौद्धिक विकास हो, लोग बाग अपनी बुद्धि का पूरा पूरा प्रयोग कर सकें और नये समुदायों को बल दे सकें।

यहां पर एक बात और समझ लेने की है। शिक्षा या समाज शिक्षा कभी भी सूचना और प्रचार के विकल्प नहीं हो सकते। शिक्षा और समाज शिक्षा के कार्यक्रम आदि आवश्यक रूप से बड़े धीरे-धीरे चलते हैं और उनके परिणाम भी बहुत देर से निकलते हैं और इनका उद्देश्य भी विशेष प्रकार के हुनर सिखाना होना है न कि रुचि या मनोवृत्ति आदि में परिवर्त्तन। परन्तु सूचना और समाचार का उद्देश्य तो एक प्रकार से जन जागरण करना होता है जिससे हर आदमी अपने मन को उल्लसित और बुद्धि को सक्रिय करने का अवसर और प्रमुख साधन पाता है। लोक प्रबोधन ही प्रचार का लक्ष्य हो सकता है।

## पुराने और नये प्रचार साधनों का एकीकरण

इस प्रकार सूचना और प्रचार के क्षेत्र में हमारी प्रमुख समस्या यह है कि सामूहिक प्रचार के जो आधुनिक साधन हमने इस समय तक तैयार किये हैं, इसका समन्वय

(शेष पृष्ठ ११४ पर)

समपदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पादकीय : हम राजस्थानियों का कर्तव्य

यद्यपि संयुक्त राजस्थान का निर्माण हुए कुछ ही वर्ष हुए हैं, तथापि इन वर्षों में राजस्थान अन्य समृद्ध राज्यों के समकक्ष बनने का निरन्तर परिश्रम कर रहा है। आज राजस्थान की भिन्न-भिन्न पूर्ववर्ती रियासतों में जो चतुर्मुखी विकास हो रहा है, उसका वास्तविक श्रेय भारत के महान राजनीतिज्ञ सरदार पटेल की अलौकिक सूझ-बूझ और अद्भुत कार्य कुशलता को है। उनके ही प्रयत्न से राजस्थान की बिखरी हुई रियासतें एक सूत्र में ग्रथित हो सकीं और उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो सका।

छोटी-बड़ी उन्नत और अवनत, प्रगतिशील या पिछड़ी हुई, सब राजस्थान की रियासतों के एकीकरण ने उनकी अनेक समस्याओं का समाधान कर लिया। यही कारण है कि आज सभी क्षेत्र विकास के मार्ग पर चल रहे हैं। राजस्थान के उत्तरी, दक्षिणी पूर्वी या पश्चिमी क्षेत्रों में शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, उद्योग, यातायात, सिंचाई, बिजली और सामाजिक क्रांति सभी दिशाओं में उन्नत्ति हो रही है। भाखड़ा और राजस्थान नहरों से प्राप्त होने वाली बिजली और सिंचाई की सुविधाएं राजस्थान का कायाकल्प ही कर देंगी, यह सुनहला स्वप्न आज अपनी शक्ति और सामर्थ्य के अन्दर ही दीखने लगा है।

फिर भी अभी हमारा लक्ष्य बहुत दूर है। राजस्थान सदियों तक दोहरी दासता में जकड़ा रहा है। इसलिए प्राकृतिक साधनों की सम्पदा होते हुए भी उनका दोहन व उपयोग नहीं किया जा सका। इसी लिए हमारा आज यह कर्तव्य हो जाता है, कि राजस्थान को जो गौरवपूर्ण स्थान वीरता के इतिहास में उपलब्ध है, वैसा ही गौरव आर्थिक विकास के क्षेत्र में भी प्राप्त कर लें। इस उद्देश्य के लिए हम पूर्ण परिश्रम करें! यह प्रसन्नता की बात है कि राजस्थान के प्रमुख उद्योगपतियों ने अपनी वृत्ति अन्तर्मुखी कर ली है अर्थात वे भिन्न-भिन्न दूसरे राज्यों के साथ-साथ अपने राजस्थान के भी आर्थिक विकास में रुचि लेने लगे हैं।

'सम्पदा' के योग्य और अनुभवी सम्पादक श्री कृष्ण-चन्द्र विद्यालंकार मेरे स्नेही मित्र हैं। इस पत्रिका के द्वारा वे जिस तरह देश की आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाल रहे हैं, वह उनकी योग्यता व कार्यक्षमता के अनुरुप है। उनका विचार विभिन्न राज्यों की आर्थिक समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डालने के लिए अलग-अलग विशेषांक प्रकाशित करने का है। दिल्ली विकास अंक वे प्रकाशित कर चुके हैं और अब उन्होंने राजस्थान विकास अंक प्रकाशित किया है।

सम्पदा के इस अंक में हमने राजस्थान की विभिन्न क्षेत्रों में हुई आर्थिक प्रगति का जहां संक्षिप्त परिचय देने का प्रयत्न किया है, वहां उसकी आर्थिक समस्याओं की ओर भी पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। सिंचाई, बिजली, यातायात के साधन, कृषि, विकास, पीने का पानी, उद्योगों की स्थापना के लिए प्रोत्साहन आदि अनेक समस्यायें हल होनी चाहिएं। जहां राजस्थान के प्रशासक और अधिकारी अपना गम्भीर उत्तरदायित्व समझेंगे, वहां राजस्थान की जनता के छोटे-बड़े सभी वर्गों को भी आर्थिक विकास के लिए कठोर परिश्रम करना होगा। लोकतन्त्र की सफलता जनता के सहयोग पर निर्भर करती है। यदि राजस्थान के नागरिक अपना कर्तव्य समझ लें और अपनी-अपनी दिशा में कठोर परिश्रम करें तो राजस्थान की मरु भूमि न केवल शस्य श्यामला बन जाएगी, अपितु राजस्थान के प्रत्येक गांव में छोटे-छोटे उद्योगों की चहल-पहल समस्त राजस्थान को समृद्ध करने में भी परम सहायक सिद्ध होगी।

इसी आशा के साथ सम्पदा का यह राजस्थान अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

## यह राजस्थान अंक

एक कहावत है कि प्रत्येक कार्य अपने समय पर होता है। मनुष्य के सोचे से कुछ नहीं होता। 'सम्पदा' के राजस्थान अंक पर यह कहावत सत्य उतरती है। यह अंक प्रकाशित करने का विचार पहले-पहल ४ वर्ष पूर्व



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया गया था, किन्तु इस विचार को मूर्त रूप देने का प्रयत्न गत वर्ष अक्टूबर में किया गया था। एक के बाद एक आकस्मिक बाधाओं के कारण यह विचार स्थगित होता गया। अब स्वाधीनता दिवस के शुभ अवसर पर यह चिर-प्रतीक्षित राजस्थान अंक आपके सामने प्रस्तुत हैं।

इस अंक के प्रकाशन और सामग्री-चयन के सम्बन्ध में भी अनेक ऐसी कठिनाइयां आईं, जिनकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अनेक मित्रों और सहयोगियों ने, जिनकी सहायता के विश्वास पर यह गुरुतर कार्य मैंने अपने कन्धों पर लिया था, सर्वथा असहयोग कर दिया। बार-बार पत्र लिखने और सम्पर्क स्थापित करने पर भी उनका सहयोग वाणी तक ही सीमित रहा। सबसे बड़ी कठिनता तो मेरे स्वास्थ्य-सम्बन्धी थी। मैं प्रयत्न करने पर भी जयपुर नहीं जा सका। पक्षाघात के आक्रमण से अब तक मैं पूर्णतः मुक्त नहीं हो सका हूँ। मेरे आदरणीय मित्र श्री हरिभाऊ उपाध्याय भी अस्वस्थ रहने के कारण आवश्यक सहयोग देने में असमर्थ रहे।

तथापि, यह अंक जैसा बन पड़ा है, उसका श्रेय उन कृपालु लेखकों को है जिन्होंने अपना अमूल्य समय निकाल कर लेख लिखने की कृपा की है। मुझे विश्वास है कि यह अंक राजस्थान की आर्थिक प्रगति और समस्याओं का बहुत कुछ परिचय देने में समर्थ होगा। इस अंक में हमने राजस्थान की आर्थिक गतिविधि और समस्याओं का जो परिचय दिया है, हमारी सम्मति में न केवल वह अर्थशास्त्र के राजस्थानी छात्रों के लिए विशेष उपयोगी होगा, किन्तु राजस्थान के पत्रकार, विधायक, उद्योगपति, व्यवसायी तथा राजस्थान की आर्थिक समस्याओं में रुचि रखने वाले भी उससे बहुत लाभ उठा सकेंगे।

राजस्थान अंक के लिए सामग्री का चयन ज्यों-ज्यों करते गये, त्यों-त्यों हमें इस विषय की गम्भीरता और व्यापकता का अधिकाधिक परिचय होता गया और हमें अनुभव हुआ कि राजस्थान की आर्थिक समस्याओं का विवेचन करने के लिए तो इससे भी अधिक वृहत्काय विशेषांक की आवश्यकता है। हमारी अभिलाषा थी कि उत्तरी, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी-अपनी आर्थिक समस्याओं पर भी प्रकाश डालने वाले लेख देते, किन्तु वैसा करने का अर्थ न केवल पाठकों की प्रतीक्षा तथा धैर्य, शक्ति के साथ अन्याय होता, अपितु विशेषांक का मूल्य भी बढ़ाना पड़ता, जो पाठकों के लिए एक बोझ ही सिद्ध होता।

अब तक किसी पत्र ने इस प्रकार का हिन्दी जगत में प्रयोग नहीं किया। दो वर्ष पूर्व इस दिशा में हमने **"दिल्ली विकास अंक"** प्रकाशित किया था। हमारा विचार है कि उत्तर भारत के अन्य राज्यों की आर्थिक समस्याओं पर भी इसी तरह के विवेचनात्मक और परिचयात्मक अंक प्रकाशित किये जाँय, किन्तु यह सब "सम्पदा" के प्रेमियों पर निर्भर है।

अन्त में हम अपने उन कृपालु लेखकों और विज्ञापनदाताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना चाहते हैं जिनके सहयोग से हम इस अंक को प्रकाशित कर पाये हैं।

**—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार**

---

(पृष्ठ ११२ का शेष)

किस प्रकार किया जाए? पारम्परिक प्रचार के साधनों का उपयोग आधुनिक समुदायों को बल देने के लिए किया जाय? एक ओर जहां यह समस्या और अधिक वित्त और साधनों को सुलभ करने की है, वहां दूसरी ओर बहुत बड़े धैर्य की भी है। अभी तक इस क्षेत्र में बहुत कम आदमी काम कर रहे हैं। सामुदायिक विकास का आधार मानसिक विकास है, और यह समाचार, सूचना और ज्ञान के प्रचार-प्रसार पर ही निर्भर है, क्योंकि कर्मेन्द्रिय तो पशु को भी प्रशिक्षित हो सकती है।

इस प्रसंग में राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दन राय नागर की तत्परता सराहनीय है। उन्होंने इस विचार को पकड़ कर खटाक दो सौ तीन सौ कार्यकर्त्ता इस कार्य के लिए देना स्वीकार किया कि पारस्परिक प्रचार के साधनों और माध्यमों तथा उन समूहों और व्यक्तियों का सर्वेक्षण राजस्थान की दो पंचायत समितियों—मावली और झाड़ोल में किया जाय। यह कार्य जब पूर्ण हो जायगा तो उस समय हमें इस विचार-विमर्श के लिए आधार मिलेगा कि कैसे पारस्परिक प्रचार के साधनों का आधुनिक प्रचार के साधनों से समन्वय हो सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजस्थान में विद्युत शक्ति का विकास

राजस्थान में पनबिजली के साधन अथवा कोयले की कोई विशेष खानें नहीं हैं, फिर भी यह प्रशंसनीय है कि राज्य ने १३.५ मेगावाट बिजली की मात्रा को बढ़ाकर इस समय १०९ मेगावाट तक कर लिया है, जो तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक अथवा चतुर्थ योजना के प्रथम वर्ष तक और भी बढ़कर २०५ मेगावाट तक पहुँच जाएगी। अतिरिक्त बिजली के लिए, राज्य को ऐसी योजनाओं पर आश्रित होना पड़ा जो पड़ौसी राज्यों के साथ सम्बद्ध हैं, इसलिए कार्य यथासंभव शीघ्रता व क्षमता से सम्पन्न नहीं हो सकता।

राजस्थान निर्माण के समय विद्युत शक्ति की सुविधा ३ बस्तियों को उपलब्ध थी, किन्तु अब इन बस्तियों की संख्या ३५० से भी अधिक हो गयी है और तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक यह संख्या लगभग १००० हो जाएगी।

## मुख्य साधन

गांधीसागर (जो इस समय चालू है), राणाप्रताप सागर तथा कोटा बांध सहित चम्बल परियोजना से, जो विद्युत शक्ति का मुख्य साधन हैं, तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक अथवा चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष के दौरान राजस्थान को ११५ मेगावाट विद्युत शक्ति उपलब्ध होगी। इस समय राज्य को भाखडा नांगल परियोजना से अपने हिस्से की १७ मेगावाट बिजली प्राप्त हो रही है और दायें किनारे के संयंत्र के चालू होने के बाद ७४ मेगावाट बिजली अतिरिक्त प्राप्त होने लगेगी। १० मेगावाट अतिरिक्त बिजली प्राप्त करने के लिए सुदुर स्थानों पर डीजल सेट लगाये जाएंगे।

## राजस्थान के दो प्रमुख उद्योगपति

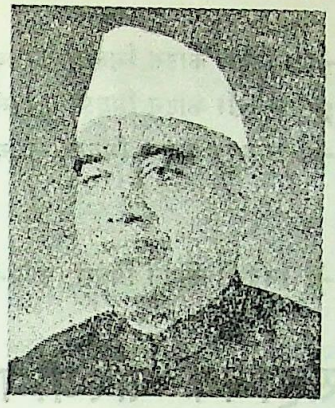

श्री गजाधर सोमानी

श्रीखेलशंकर दुर्लभजी

राजस्थान शीघ्रता से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है और बिजली की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है। यह एक राज्य की आर्थिक समृद्धि के लिए स्वस्थ संकेत है। राज्य विद्युत मण्डल के लिए १९६४-६५ तथा १९६५-६६ कठिन परीक्षा के वर्ष हैं, किन्तु ऐसी आशा है कि विद्युत-मंडल १९६६-६७ तक बिजली सम्बन्धी आवश्यकता पूर्ण करने में समर्थ हो जाएगा। १९७०-७१ के दौरान २०५ मेगावाट बिजली की कमी होने की सम्भावना है, किन्तु राज्य तथा विद्युत-मण्डल विद्युत-शक्ति उपलब्ध करने के नये साधन खोज निकालने में भरसक प्रयत्न शील है।

## नये साधन

राजस्थान में स्थापित अणुशक्ति स्टेशन चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्त तक कार्यारम्भ कर देगा। इसके प्रथम चरण में २०० मेगावाट बिजली उपलब्ध होगी। राजस्थान को नहरी घाटी परियोजना से भी काफी मात्रा में बिजली उपलब्ध होने की आशा है। पोंग बांध तथा व्यास-सतलुज (लिंक) से भी राज्य को अपने हिस्से की बिजली उपलब्ध होगी। माही परियोजना पर भी कार्यारम्भ होगा। राजस्थान के उत्तर-क्षेत्रीय ग्रिड में सम्मिलित होने के परिणामस्वरूप समस्त मांग की पूर्ति हो सकेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी, लिमिटेड

**सूती कपड़ा मिलें**

★ स्वदेशी काटन मिल्स, कम्पनी लि० कानपुर (उ० प्र०)
★ स्वदेशी काटन मिल्स, कम्पनी लि० पाँडिचेरी (द० भारत)
★ उदयपुर काटन मिल्स, उदयपुर, (राजस्थान)

**स्टेपल फाइबर और काटन यार्न मिल्स**

★ स्वदेशी काटन मिल्स, कम्पनी लि० नैनी (इलाहाबाद) यू० पी०

## सहायक संस्थान

**चीनी मिलें**

★ गणेश शुगर मिल्स लि० आनन्दनगर (गोरखपुर)
★ श्री आनन्द शुगर मिल्स खलीलाबाद (बस्ती)

**कोयले की खानें**

★ शामला कोयलरीज, पाण्डवेश्वर
★ जयपुरिया काजोरा कोयलरीज लि० उन्डल (पश्चिमी बंगाल)


## अतिरिक्त हाई ट्रांसमिशन लाइनें

तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक उपलब्ध होने वाली अतिरिक्त विद्युत शक्ति के प्रभावशाली उपयोग के लिए समस्त राज्य में हाई ट्रांसमिशन लाइनों का जाल बिछाया जाएगा। ये लाइनें सभी महत्वपूर्ण स्टेशनों को हाइडल ग्रिड से मिलाएंगी। इन लाइनों से अलवर, भरतपुर, उदयपुर, जोधपुर, पाली, सिरोही, अजमेर, भीलवाड़ा, फालना तथा झालावाड़ को मिलाने का प्रस्ताव है। सुपर ग्रिड लाइनें, चम्बल तथा भाखडा ग्रिड प्रणालियों को मिलाएंगी। हिसार से २२० के० वी० लाइन, जयपुर होती हुई खेतड़ी तक तथा जयपुर से राणाप्रताप सागर तक डाली जाएगी। इसी प्रकार एक और लाइन राणा-प्रताप सागर से उदयपुर तक डाली जाएगी, जो उस क्षेत्र के विभिन्न खनिज स्रोतों के उपयोग में लाई जाएगी।

जिन लोगों ने कोटा, जयपुर तथा उदयपुर के अथवा अलवर, भरतपुर, किशनगढ़ तथा जोधपुर जैसे और नगरों के औद्योगिक क्षेत्र देखा है, उन्हें इन नगरों में औद्योगिक विकास का नया जोश ही दिखाई देगा।

राजस्थान निर्माण के समय केवल ४१ स्थानों पर ही विद्युत सुविधाएं उपलब्ध थी और ये स्थान या तो भूतपूर्व राज्यों की राजधानियां थी अथवा राजाओं महाराजाओं के प्रमोद-स्थल। किन्तु आज लगभग ३२५ स्थानों पर बिजली लग चुकी है, जिनमें अधिकांश स्थान ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। विद्युत बोर्ड बिजली का प्रकाश अधिक से अधिक ग्रामों तक फैलाने में भरसक प्रयत्न-शील हैं।

इन सब प्रयासों एवं कुछ सफलताओं के बावजूद, जिन पर हमें कुछ हद तक नाज़ है, हम इस तथ्य से बेखबर नहीं हैं कि हमें अभी काफी मंजिल तय करनी है। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक भी हमारी कुल विद्युत-शक्ति अखिल भारतीय औसत के आधे से कुछ ही अधिक होगी। देश भर में प्रति व्यक्ति हमारी खपत कम से कम है। हमारे बारे में तुलना-त्मक स्वस्थ तथ्य केवल यही है कि अन्य राज्यों की भांति राजस्थान में भी विद्युत शक्ति की मांग निरंतर बढ़ रही है। इस मांग की पूर्ति में हमारी सबसे बड़ी बाधा अपर्याप्त धनराशि है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह भी पढ़िये

# पंचायतों की शिथिल गति

राजस्थान की पंचायत राज संस्थाओं और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के कामकाज के बारे में तैयार की गई रिपोर्ट में बताया गया है कि केवल ३० प्रतिशत ग्रामीण जनता पंचायत समितियों और ग्राम-विकास के कार्यों में सक्रिय रूप से रुचि ले रही है।

राजस्थान के एक तिहाई व्यक्ति ऐसे हैं, जो नई प्रवृत्तियों और घटनाओं के बारे में जानकारी रखते हैं, लेकिन सक्रिय रूप से इन कार्यों में भाग नहीं ले रहे हैं और शेष ऐसे हैं जिन्हें इन योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में काफी जानकारी तक नहीं है और न वे स्पष्टतया यही जानते हैं कि इन योजनाओं का उद्देश्य या अभिप्राय क्या है। बताया गया है कि जो ग्रामीण जनता इस प्रकार के विकास कार्यों में भाग नहीं ले रही, उसके ऐसा न करने के तीन कारण हैं—गरीबी, विनियोजन के लिए पर्याप्त पूंजी का अभाव और उस अतिरिक्त प्रयास में संलग्न होने की प्रवृत्ति का अभाव, जो विकास और प्रगति के लिए अनिवार्य है।

इस राज्य में विकास-कार्यक्रम जब चलाया गया था, तब शुरूआत के दिनों में जनता ने इसके लिए काफी रुचि दिखलाई थी, लेकिन शीघ्र ही वह उत्साह खत्म हो गया। रिपोर्ट में कहा गया है कि विकास कार्यक्रमों को चलाने का भार सरकार पर बढ़ता जा रहा है। जनता स्वयं इस उत्तरदायित्व को यथाशक्ति वहन करने को तैयार नहीं हो रही। अभी तक जो ग्रामीण विकास योजनाएं कार्यान्वित की गई हैं, उनसे अधिकांश लाभ उन्हीं व्यक्तियों को मिला है, जो पहले ही अच्छी स्थिति में थे और उन जिनके पास से लाभ उठाने के साधन विद्यमान थे।

जब से गांवों में पंचायतों आदि का गठन किया गया, तब से गांवों में गुटबन्दी का जोर बढ़ गया। जिन स्वार्थों से प्रेरित होकर लोग अपने नेता का चुनाव करते हैं, वे बड़े महत्वपूर्ण हैं और जब तक विशुद्ध लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों से ये प्रेरित न होंगे, तब तक लोकतन्त्र केवल नाममात्र के लिए रहेगा।

## चिन्ताजनक

योजना आयोग की अनुसंधान कार्यक्रम समिति द्वारा राज्य के १३ जिलों के ११६ गांवों के सर्वेक्षण से यह बात प्रकट हुई है। १९६०-६१ में कृषकों द्वारा लिये गये ऋण का ८० प्रतिशत धन महाजनों से प्राप्त हुआ, जिन्होंने प्रति वर्ष २१ प्रतिशत की दर से सूद वसूल किया। सहकारी संस्थाओं ने कुल ऋण का २.७ प्रतिशत ही ऋण दिया।

दूसरी एक चिन्ताजनक बात यह है कि ऋण का लगभग ६४ प्रतिशत उपयोग अनुत्पादक कार्यों जैसे विवाह तथा अन्य सामाजिक समारोहों के लिए किया गया।

# जैसलमेर में आज भी

जैसलमेर जिले के राजपूत भाई घाड़ा (डाकां) डालने के लिए कुख्यात हैं, पर उनके स्त्री-बच्चे ही नहीं, पास-पड़ोस के लोग भी उसे असामाजिक कृत्य नहीं मानते है, एक पेशा मानते हैं। आप गैर-हाजिर जागीरदार का अता-पता उसकी स्त्री बच्चों या पड़ोसी से पूछिए तो वे धड़ाक से उत्तर देंगे कि वह डाका डालने गया हुआ है। वस्तुतः यहां न रोजगार है न धन्धा। स्वतन्त्रता के १८ वर्ष बाद भी यहां की वही आवक है, वही पेशा चल रहा है। यहां के पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग धन्धे खोलने पर आज तक ध्यान नहीं दिया गया। बहादुर व अपने परम्परागत साहस की पूंजी को लिए जागीरदार बच्चे अगर विश्वास में लिए जावें तो वे भारतीय सेना की शोभा बढ़ा सकते हैं। पर सरकार का उस ओर एकदम ख्याल ही नहीं है। शांति सेना की बात उनके खून से असंबंधित है। अतः वे जाहिल लोग अपनी बच्चियों को जन्मते ही खत्म कर देते हैं ताकि उनके बालिग होने पर शादी-ब्याह के खर्च की चिन्ता न सताये। ये लोग गुजरात से या अन्य प्रदेशों से लड़कियों का अपहरण कर यहां बिक्री भी करते हैं। गुलामी-प्रथा बराबर चालू है।

—भगवानदास माहेश्वरी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# इस मास की प्रमुख घटनाएं

## केन्द्र में नये कर प्रस्ताव

वित्तमंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने १६ अगस्त को लोकसभा में अचानक ही विशाल पूरक बजट उपस्थित किया, जिसके कारण बढ़िया किस्म के मिट्टी के तेल, तेज रफ्तार वाले डीजल तेल, मोटर स्पिरिट, इस्पात और ढले लोहे तथा उनसे बनी वस्तुओं, तांबे के डलों व तांबे से बनी वस्तुओं, अनपिटे सीसे और जाले के दाम बढ़ जाएंगे। घटिया किस्म के मिट्टी के तेल के भाव में कोई वृद्धि नहीं होगी और हल्के डीजल तेल का भाव कम होगा। वित्तमंत्री ने कुछ वस्तुओं पर नया उत्पादन शुल्क लगा दिया है तथा कुछ वस्तुओं के शुल्क में वृद्धि कर दी है।

इन करों से पूरे वर्ष में सरकार ने १६७ करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय का अनुमान लगाया है, जबकि वित्त मंत्रालय के सचिव श्री भूतलिंगम के अनुसार चौथी पंचवर्षीय योजनाकाल में इन बढ़े हुए करों से एक हजार करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होने का अनुमान है। चौथी योजना के लिए तीन हजार करोड़ रुपये की कमी की पूर्ति के लिए यह प्रथम कदम उठाया गया है।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल संघ के अध्यक्ष श्री एस. एल. किर्लोस्कर ने पूरक बजट प्रस्तावों से मुद्रा स्फीति बढ़ने का भय प्रकट किया है। उनके अनुसार ऐसा लगता है कि हम चौथी योजना के शुरू में कीमतें और कर बढ़ाने के चक्र में फंस गये हैं। यह बड़े खेद का विषय है कि वित्तमंत्री पूंजी बाजार को कोई विशेष राहत नहीं दे सके। यद्यपि प्रमुख उद्योगों को २५ से ३५ प्रतिशत तक विकास छूट मिली है और नये उद्योगों को पंचवर्षीय कर-रियायत भी दी गई है, परन्तु पूरक बजट से बाजार में और निराशा आयेगी।

"पूरक बजट की आवश्यकता के लिए अधिकारी स्वयं जिम्मेदार हैं, क्योंकि चालू वर्ष में सरकारी कर्मचारियों को २५ करोड़ रु. के अतिरिक्त महंगाई भत्ते, राज्यों को ४० करोड़ रु० की अतिरिक्त सहायता, केन्द्र द्वारा २० करोड़ रु० के ऋण लेने में कटौती, १० करोड़ रु. की अल्प बचत में कमी और आय कर तथा कारपोरेशन कर की आमद में कमी से ही इसकी जरूरत पड़ी। करों के प्रभाव से सभी औद्योगिक उत्पादनों की लागत बढ़ेगी। निर्यात पर भी इसका बुरा असर पड़ेगा।"

× × ×

भारत की दृष्टि से पिछले दिनों की सबसे महत्वपूर्ण घटना पाकिस्तान द्वारा काश्मीर सीमा पर अघोषित आक्रमण है। करीब ४-५ हजार पाकिस्तानी सैनिक अपने वेश छिपाये हुए विभिन्न मार्गों से काश्मीर में घुस आये। इनके पास मोटर, मशीनगनें और मीडियम गनें आदि हल्के हथियार थे। उन्होंने अनेक स्थानों पर गोलाबारी की और अनेक गांवों को जला दिया। भारतीय सेना ने उनके ये आक्रमण विफल कर दिये हैं। करीब ८० पाकिस्तानी मारे गये हैं और बहुत सारे उनके हथियार छीन लिये गये हैं। अब इस क्षेत्र में स्थिति पूरी तरह काबू में हैं, लेकिन किसी भी समय स्थिति गम्भीर हो सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघ, अमेरिका और ब्रिटेन अब तक निष्क्रिय बैठे दीखते हैं।

× × ×

यद्यपि संसद ने कच्छ सम्बन्धी समझौते को स्वीकार कर लिया है, किन्तु इसके अनुसार भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों में होने वाली बात फिलहाल स्थगित कर दी गई है। भारतीय जनसंघ ने इस समझौते के विरुद्ध एक विराट प्रभावकारी, परन्तु शांत और सुसंगठित और अनुशासित प्रदर्शन किया।

बातचीत के स्थगित होने का मुख्य कारण काश्मीर पर पाकिस्तान का आक्रमण दीखता है।

× × ×

केन्द्रीय सरकार अब तक शायद यह अन्तिम निश्चय नहीं कर पाई है कि संसद के वर्तमान अधिवेशन में राज भाषा सम्बन्धी विधेयक प्रस्तुत करे अथवा नहीं! दोनों ओर से उस पर दबाव पड़ रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


## जब कभी आप मिट्टी का तेल खरीदना
## तो इस चिन्ह को देख लीजीए

'ज्योति' मार्का मिट्टी का तेल इण्डियनऑयल देश के कोने-कोने में पहुँचा रहा है। मिट्टी का तेल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और इस बात का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है कि आपकी आवश्यकता की पूर्ति बिना किसी कठिनाई के होती रहे।

'ज्योति' मिट्टी का तेल हमेशा गति शील रहता है। टैन्क वैगनों, टैन्क ट्रकों और बैलगाडियों द्वारा-यहाँ तक की उँटों और खच्चरों द्वारा-यह आप तक पहुँचाया जा रहा है।

INDIANOIL

राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि का प्रतीक
इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड


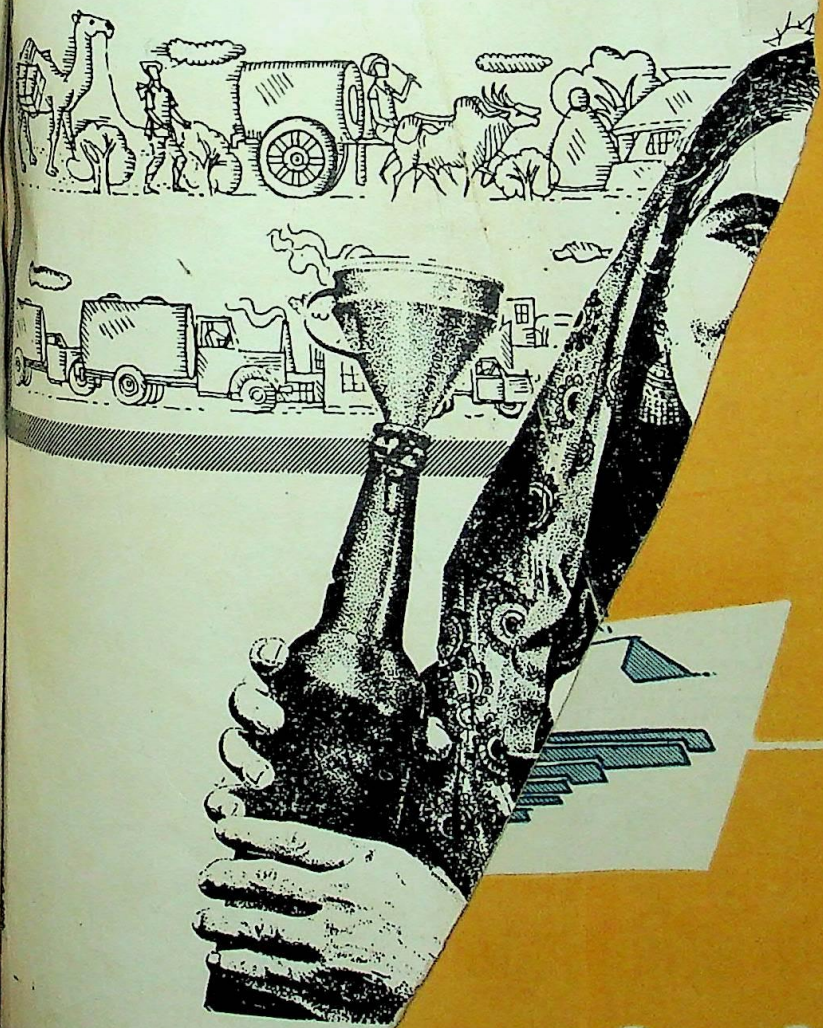

# पदा

## मासिक पत्रिका


[illegible]
गुरुकुल काँगड़ी


क प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



रजि. नं० डी

# इस मास क

## केन्द्र में नये कर प्रस्ताव

वित्तमंत्री श्री टी० टी० कृष्णमाचारी ने
को लोकसभा में अचानक ही विशाल पूरक
किया, जिसके कारण बढ़िया किस्म के मि
रफ्तार वाले डीजल तेल, मोटर स्पिरिट
लोहे तथा उनसे बनी वस्तुओं, तांबे के
बनी वस्तुओं, अनपिटे सीसे और जाले
जाएंगे। घटिया किस्म के मिट्टी के तेल के
वृद्धि नहीं होगी और हल्के डीजल तेल
होगा। वित्तमंत्री ने कुछ वस्तुओं पर नय
लगा दिया है तथा कुछ वस्तुओं के
दी है।

इन करों से पूरे वर्ष में सरकार ने
की अतिरिक्त आय का अनुमान लगाया
मंत्रालय के सचिव श्री भूतलिंगम के अनुसा
र्षीय योजनाकाल में इन बढ़े हुए करों से एक
रुपये की अतिरिक्त आय होने का अनुमान
योजना के लिए तीन हजार करोड़ रुपये की
पूर्ति के लिए यह प्रथम कदम उठाया गया है।

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल संघ के
श्री एस. एल. किर्लोस्कर ने पूरक बजट प्रस्तावों से
स्फीति बढ़ने का भय प्रकट किया है। उनके अनुसार ऐ
लगता है कि हम चौथी योजना के शुरू में कीमतें औ
कर बढ़ाने के चक्र में फंस गये हैं। यह बड़े खेद का विषय
है कि वित्तमंत्री पूंजी बाजार को कोई विशेष राहत नहीं
दे सके। यद्यपि प्रमुख उद्योगों को २५ से ३५ प्रतिशत
तक विकास छूट मिली है और नये उद्योगों को पंचवर्षीय
कर-रियायत भी दी गई है, परन्तु पूरक बजट से बाजार
में और निराशा आयेगी।

"पूरक बजट की आवश्यकता के लिए अधिकारी स्वयं
जिम्मेदार हैं, क्योंकि चालू वर्ष में सरकारी कर्मचारियों
को २५ करोड़ रु. के अतिरिक्त महंगाई भत्ते, राज्यों को

जयपुर उद्योग लिमिटेड
JAIPUR
वट के
ेन्ट
पर
केन्
नहीं कर
भाषा सम्बन्ध
ओर से उस पर



नेज ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से
से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

## अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

गुरुकुल काँगड़ी

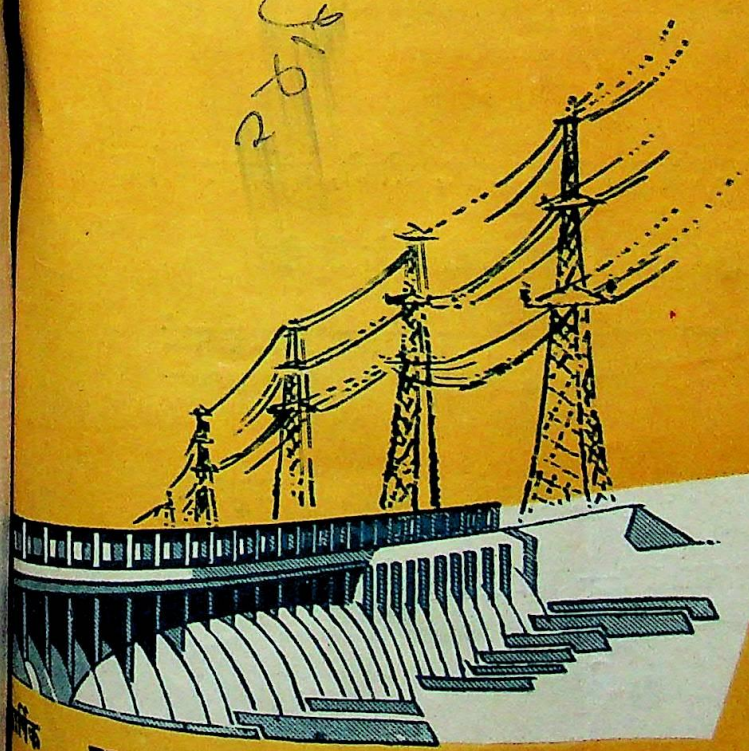

वार्षिक मूल्य : ६.००
प्रति अंक का मूल्य : ८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली - ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# टैक्सटाइल मशीनरी कारपोरेशन लिमिटेड

## (टैक्समैको)

डाकघर—बेलघरिया, २४ परगना (पश्चिम बंगाल)

अपने देश के सुरक्षा-संघटन को अपनी निष्ठापूर्ण सेवा अर्पित करता है ।

निम्नांकित पदार्थों के प्रसिद्ध निर्माणकर्ता :

* भारी और हल्की स्ट्रक्चरल्स, ब्रिज स्ट्रक्चरल्स, हाइड्रालिक गेट और प्रोजैक्ट्स
* सभी प्रकार के और विशिष्ट निर्देशन के, मालवाही वैगन
* मशीनों के औजार (टूल्स)
* सभी तरह के ब्वायलर, वाटर ट्यूब, लंकाशायर, लोको, वर्टिकल वगैरह
* चीनी मिल की मशीनरी, पूरा प्लाण्ट और मशीनों के हिस्से
* रिंग फ्रेम्स, कार्डिंग इंजिन, ड्रा फ्रेम्स, सिंपलैक्स मशीन, स्पेयर पार्ट वगैरह-वगैरह
* भारी और हल्की स्टील कास्टिंग—खरीदार के निर्देशन के अनुसार
* ग्रे आयरन कास्टिंग्स, स्टील फार्जिंग—खरीदार के निर्देशन के अनुसार

●

माल की उत्तमता और ठीक समय पर वितरण की गारंटी


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


अनेक पत्रों में से तीन पत्र

# सम्पदा

## का

# राजस्थान विकास अंक मूल्य : १.७५ रु०

## नई चेतना : राजस्थान की सामयिक सेवा

## समस्याओं और प्रगतियों का प्रामाणिक विवरण

"राजस्थान विकास अंक मिला। इस अंक में जो सामग्री प्रस्तुत की गई है, उससे हमें एक नई चेतना मिलती है। हम इससे चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में लाभ ले सकते हैं।"

—हरिश्चन्द्र माथुर, संसद सदस्य

"राजस्थान अंक प्राप्त हुआ। राजस्थान पर ऐसी सुंदर सामग्री देने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।"

—मदनलाल वर्मा, दौसा (राजस्थान)

राजस्थान अंक निकालकर आपने 'सम्पदा' के सुन्दर और उपयोगी विशेषांक निकालने की स्वस्थ परम्परा को अब भी कायम रखा है। मेरी दृष्टि में इस अंक से बढ़कर राजस्थान की आर्थिक समस्याओं और प्रगतियों का प्रामाणिक विवरण इससे पहले नहीं मिला। आपने अनेक प्रामाणिक विद्वानों के लेखों का उपयोगी चयन किया है। मुझे विश्वास है कि शिक्षित जनता आपके इस प्रयत्न का आदर करेगी।

—अमरनाथ विद्यालंकार, संसद सदस्य

राजस्थान विकास अंक मिला। मुझे यह कहने में कोई भी संकोच नहीं है कि राजस्थान राज्य के सम्बन्ध में इतनी प्रकाशित सामग्री एक जगह उपलब्ध करने का आपका प्रयत्न सराहनीय तथा उपयोगी है।

—डा० यज्ञदत्त शर्मा, आगरा

सामग्री की दृष्टि से यह अंक अत्यन्त उपयोगी है। जिज्ञासु पाठक व अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थी इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। इसके लिए मेरी शुभ कामनाएं।

—हरिश्चन्द्र जोशी, गाजियाबाद

दो रुपये मनीआर्डर से भेजकर यह अंक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट मंगा लें।

— मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| १. राष्ट्र पर नया आक्रमण | ४७३ |
| २. चतुर्थ योजना बन गई !!! | ४७५ |
| ३. सम्पादकीय टिप्पणियां | ४७७ |
| ४. हमारी योजनाओं की अपूर्णताएं श्री उ. न. ढेबर | ४७९ |
| ५. हमारी उद्देश्यहीन योजना श्री सम्पूर्णानन्द | ४८१ |
| ६. पूंजी बाजार का पुनर्जीवन श्री के. तनेजा | ४८३ |
| ७. विदेशी मुद्रा की विषम समस्या श्री कृष्णमाचार्य | ४८८ |
| ८. चकबन्दी का महत्त्व व प्रगति | ४९१ |
| ९. बैंक बीमा पृष्ठ—एशियायी विकास बैंक, बीमा व्यवसाय की प्रगति—बैंकों में जमा राशि | ४९३ |
| १०. अर्थ-वृत्त चयन—राष्ट्रीय आय, पश्चिमी जर्मनी की समृद्धि—अन्न का उत्पादन आदि | ४९५ |
| ११. योजनाबद्ध आर्थिक व्यवस्था—श्री हीरालाल | ४९८ |
| १२. नया सामयिक साहित्य | ५०० |
| १३. देहातों की आर्थिक प्रगति | ५०१ |
| १४. पंजाब में योजनाओं से आर्थिक क्रान्ति | ५०२ |
| १५. योजना-इतर सहायता श्री रमेशचन्द्र | ५०४ |
| १६. उद्योगों में मानवीय मूल्यांकन श्री सत्यप्रकाश मिलिन्द | ५०७ |
| १७. कृषि में न्यूनतम मजदूरी | ५०९ |
| १८. सिंचाई के छोटे साधन | ५१० |
| १९. दशसूत्री कार्यक्रम | ५११ |
| २०. कुछ देश की : कुछ विदेश की | ५१२ |


# सम्पदा के स्थायी ग्राहकों से

- सम्पदा कार्यालय में वार्षिक चन्दा ९.० रु० भेजें, इससे कम नहीं।
- चन्दा भेजते समय मनीआर्डर कूपन पर अपना पूरा पता व ग्राहक संख्या लिखना न भूलें।
- यदि सम्पदा की कापी किसी महीने की २५ तारीख तक न मिले तो अपने पोस्ट आफिस से आवश्यक पूछ ताछ करके हमें तुरन्त कापी न मिलने की सूचना भेजें। किसी मास की आखिरी तारीख के बाद शिकायत आने पर 'सम्पदा' कार्यालय पत्रिका नहीं भेज सकेगा।
- सम्पदा कार्यालय से पत्र व्यवहार करते समय ग्राहक संख्या व पूरा पता अवश्य लिखें।
- वार्षिक चन्दा समाप्ति पर स्वयं आगामी वर्ष का चन्दा भेजने की कृपा करें।
- सम्पदा द्वारा भेजा गया वी. पी. छुड़ाने वाला पत्र मिलने पर अस्वीकृति की सूचना देना या वी. पी. अवश्य छुड़ाना आप का सामाजिक धर्म है।

—मैनेजर सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ९
सितम्बर : १९६५

# सम्पदा

वर्ष : १४ सितम्बर १९६५ अंक : ९

## राष्ट्र पर नया आक्रमण : दो प्रश्न

पिछले १७-१८ वर्षों से पाकिस्तान जिस तरह भारत के विरुद्ध षडयंत्र और आक्रमण के मनसूबे बांधता आ रहा है, उसकी चरम परिणति इस महीने की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। १९४७ में काश्मीर पर आक्रमण में असफल होकर वह शांत नहीं हो गया, किन्तु भारत पर आक्रमण करने की निरन्तर तैयारियां करता रहा। इसीलिए वह ब्रिटेन, अमेरिका आदि देशों के साथ अपवित्र सन्धि में सम्मिलित हुआ और करोड़ों, अरबों रुपयों की युद्ध सामग्री प्राप्त करता रहा। अब उसकी तैयारियों के सब उद्देश्य स्पष्ट हो गये हैं। काश्मीर में आजाद काश्मीर के नाम से विपुल मात्रा में शस्त्रास्त्र आदि सामग्री के साथ हजारों घुस पैठियों का प्रवेश पाकिस्तान के आक्रमण को ही सिद्ध करता है।

सम्भवतः पाकिस्तान को यह विश्वास था कि उसकी तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं, काश्मीर के मुसलमान उसका साथ देंगे और भारतवर्ष अपनी शांति नीति में बंधा होने के कारण किसी प्रकार का संघर्ष नहीं करेगा। किन्तु धैर्य की भी एक सीमा होती है। परिणामतः पाकिस्तान की आशाओं के विपरीत भारत ने वीरता पूर्वक संघर्ष का मुकाबला किया है। भारत के नेताओं ने यह अनुभव कर लिया कि आक्रमण ही रक्षा का सर्व श्रेष्ठ उपाय है, इसलिए वे न केवल युद्ध विराम रेखा तक ही सीमित नहीं रहे, अपितु उन्होंने उन मोर्चों और अड्डों पर भी आक्रमण किया, जहां से पाकिस्तान आक्रमण के लिए पूरी तैयारी कर रहा था। परिणामस्वरूप हमारे वीर सैनिकों ने लाहौर और उसके समीपवर्ती स्थानों पर बमवर्षा की और उनके फौजी अड्डों को तबाह कर दिया।

इस कल्पनातीत प्रत्याक्रमण से पाकिस्तान हक्का-बक्का हो गया है और उसने बाकायदा युद्ध की घोषणा कर दी है। किसी भी बड़े युद्ध में उतार-चढ़ाव हुआ ही करते हैं और एक के बाद एक होने वाली आकस्मिक घटनाएं युद्ध के रूप को अधिक जटिल और क्षेत्र को अधिक व्यापक कर देती हैं। इसलिए आज यह नहीं कहा जा सकता कि यह युद्ध किन-किन रूपों और परिस्थितियों में से गुजरेगा और कब व किस तरह उसका अन्त होगा।

आज यह कहने में भी किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए कि ब्रिटेन और अमेरिका ने प्रारम्भ से ही पाकिस्तान को अपना धर्मपुत्र माना है और सदा पाकिस्तान को शरण दी है। काश्मीर के सम्बन्ध में तो दोनों की नीति प्रारम्भ से ही बड़ी पक्षपातपूर्ण रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ में पाकिस्तान को आक्रमणकारी कहने का भी साहस नहीं रहा है। स्पष्ट प्रमाणों के होते हुए भी राष्ट्र-संघ भारत और पाकिस्तान को एक समान अपराधी मानता हुआ दोनों को अपनी अपनी विराम रेखा तक लौटने पर बल दे रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत के प्रधान मंत्री श्री शास्त्री ने राष्ट्र संघ को बहुत ही सुन्दर उत्तर दिया है कि हम एक के बाद एक विराम रेखा बनाने और उसपर पाकिस्तान के आक्रमण की प्रतीक्षा करते नहीं रह सकते। राष्ट्र संघ को स्पष्ट रूप से पाकिस्तान को आक्रमणकारी कहना चाहिए; काश्मीर में घुसे हुए हजारों पाकिस्तानी सैनिकों को वापिस बुलाना चाहिए और भारत को इस बात की गारन्टी मिलनी चाहिए कि भविष्य में भारत पर, जिसका काश्मीर भी एक भाग है, किसी प्रकार का आक्रमण नहीं होगा।

वस्तुतः यह संकट चीन के विश्वासघात पूर्ण आक्रमण से कम खतरनाक नहीं है। पाकिस्तान और भारत की सीमायें सैंकड़ों मील लम्बी परस्पर मिलती हैं। जब पाकिस्तान कच्छ जैसे निर्विवाद प्रदेश पर आक्रमण कर सकता है, तो राजस्थान, पंजाब, काश्मीर और पूर्व में आसाम, बंगाल और त्रिपुरा आदि पर भी आक्रमण आश्चर्यजनक नहीं था। अब तो यह युद्ध वाग्वीय आक्रमणों व प्रत्याक्रमणों की स्थिति में पहुँच गया है।

× × ×

चीन के आक्रमण के समय हमारे देश के सामने दो महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित हुए थे। एक तो यह कि क्या भारत तटस्थ नीति को छोड़ दे और किसी एक गुट के साथ मिलकर चीन पर आक्रमण करे और दूसरा यह कि क्या भारत अपनी पंचवर्षीय योजनाओं को युद्ध काल तक के लिए स्थगित कर दे। यह दोनों प्रश्न आज भी उठाये जा सकते हैं और हमारी नम्र सम्मति में इन दोनों प्रश्नों का आज भी वही उत्तर है, जो हमने उस समय दिया था अर्थात् न हमें अपनी तटस्थता नीति का त्याग करना चाहिए और न पंचवर्षीय विकास योजनाओं को सर्वथा छोड़ देना चाहिए।

तटस्थता नीति के परित्याग का अर्थ है कि भारत और पाकिस्तान का वर्तमान संघर्ष विश्व युद्ध में परिणत हो जाएगा। यह न आदर्श की दृष्टि से और न व्यवहार की दृष्टि से ठीक है। आज वस्तुतः पहले की तरह विश्व दो गुटों में बंटा हुआ नहीं है। हरेक राष्ट्र के अपने स्वार्थ हैं और इसलिए विश्व में कई गुट हैं। इसीलिए किसी एक गुट में शामिल होकर हम अपना संघर्ष सफलतापूर्वक नहीं कर सकेंगे। हमें स्वयं अपने दृढ़ संकल्प और पूर्ण बल के साथ शत्रु को पराजित करना चाहिए। वीर भोग्या वसुन्धरा। हमारी शक्ति ही अन्य राष्ट्रों को हमारा साथी बनायेगी।

दूसरा प्रश्न पंचवर्षीय योजनाओं के स्थगन का है। इस सम्बन्ध में भी हमारी नम्र सम्मति यह है कि विकास योजनाओं को स्थगित करने से हानि ही होगी। विकास योजनाओं की पूर्वापरता में अंतर किया जा सकता है। सुरक्षा को सबसे अधिक महत्व दिया जायगा, किन्तु कृषि, सिंचाई और आवश्यक उद्योगों के उत्पादन को स्थगित नहीं किया जा सकता। शिक्षा, चिकित्सा, रेडियो, कला संस्कृति और गृह निर्माण आदि के कार्यक्रमों में आवश्यक परिवर्तन किये जा सकते हैं, किन्तु योजना के मुख्य कार्यक्रमों को और विशेषकर उन कार्यक्रमों को जिन पर करोड़ों रुपया व्यय हो चुका है, स्थगित नहीं किया जा सकता। ऐसी नई योजनाओं को कुछ समय तक स्थगित करने में कोई संकोच न होना चाहिए, जिनके लिए हमें अधिकांशतः विदेशों पर निर्भर रहना पड़े, जैसे इस्पात का नया कारखाना या रिफाइनरी।

हमारी नई पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य देश को स्वावलम्बी बनाना रहा है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता देश को अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी बनाने की है, क्योंकि उसके बिना हमारा जीवन ही असम्भव है और आज की परिस्थिति में उस अमेरिका के पी० एल० ४८० पर निर्भर नहीं किया जा सकता, जो काश्मीर के प्रश्न पर सदा पाकिस्तान का साथ देता आया है और दे भी रहा है।

किन्तु सरकार पंचवर्षीय योजनाओं को पूरा तब तक नहीं कर सकती, जब तक सम्पूर्ण जनता का हार्दिक सहयोग न मिले। वस्तुतः आज का युद्ध केवल मोर्चों पर नहीं लड़ा जाता। वह देश के प्रत्येक भाग में लड़ा जाता है। इसलिए भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह इस युद्ध में पूर्ण सहयोग दे। विदेशी मुद्रा का संकट पहले ही हमें संकटापन्न किए हुए है और अब, जब हमें करोड़ों रुपयों की रक्षा सामग्री विदेशों से लेनी होगी, तब स्थिति और भी विकट हो जाएगी। इसलिए प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य हो जाता है कि निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का कम से कम उपयोग करें और उनका



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्यात करने में सहायक हों। भारत के प्रधान मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने ठीक ही कहा है कि हमें खाने के तेलों, चाय और जूट आदि वस्तुओं का प्रयोग बन्द करना पड़ सकता है, जिससे कि विदेशी मुद्रा कमाई जा सके। यदि हम यह निश्चय कर लें कि कुछ समय तक हम अन्न का अधिक से अधिक उत्पादन करेंगे; अन्न का एक भी दाना बर्बाद नहीं होने देंगे, विदेशों से आई हुई रुई या अन्य कच्चे माल से बने कपड़ा आदि वस्तुओं का उपयोग कम करेंगे, तम्बाखू कम से कम कम इस्तेमाल करेंगे और साइकिल, रेडियो, सीने की मशीन आदि की खरीद भी एक साल के लिए स्थगित कर देंगे, तो निश्चय ही देश की सुरक्षा में हमारा भी एक भाग होगा। हम आधी रोटी या एक औंस चावल प्रतिदिन छोड़ सकते हैं। हम यह भी निश्चय कर सकते हैं कि किसी तरह की कामबन्दी और हड़ताल नहीं करेंगे और अपने कार्य के स्थान पर ईमानदारी से अधिक से अधिक उत्पादन करेंगे। इस तरह का सहयोग देकर हम पंचवर्षीय योजनाओं की पूर्ति में ही सहायक न होंगे, किन्तु राष्ट्र की सुरक्षा के पुनीत यज्ञ में भी थोड़ी बहुत आहुति दे सकेंगे।

# चौथी पंचवर्षीय योजना बन गई !!!

आखिर देश में बहुत ऊहापोह, चिन्तन, तर्क-वितर्क, विचार विनिमय और संकल्प-विकल्प के बाद राष्ट्रीय विकास परिषद् ने योजना आयोग के चौथी योजना के प्रारूप पर अपनी अन्तिम मुहर लगा दी। कहने को तो यह योजना पूर्व अनुमान के अनुसार ही बृहदाकार है—२५ अरब रु. या २१५०० करोड़ रु. की, किन्तु प्रधानमन्त्री को यह अधिकार दे दिया गया है कि आपत्कालीन स्थिति और अपने राष्ट्र की सुरक्षा को देखते हुए वे इसमें उचित संशोधन, परिवर्तन तथा हेरफेर कर सकते हैं। साथ ही उन्हें यह ध्यान में रखने के लिए कहा गया है कि सुरक्षा की व्यवस्था के साथ-साथ विकास की आवश्यकताओं को भी वे महत्व देंगे। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि चौथी पंचवर्षीय योजना का आकार अब भी विचार और संदेह का विषय बना हुआ है।

अनेक अर्थ शास्त्रियों का यह निश्चित विचार था कि इतनी बड़ी योजना अव्यावहारिक है। इसके लिए साधन नहीं जुटाये जा सकते, इसलिए योजना अधिक व्यावहारिक बनानी चाहिए। स्वयं वित्त मंत्री और प्रधानमंत्री तक योजना के आकार को कुछ कम करने के पक्ष में रहे हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ संस्थाओं ने यहां तक सम्मति दी थी कि अभी हम तीसरी योजना के भौतिक लक्ष्य ही पूर्ण नहीं कर पा रहे हैं, इसलिए कोई बृहदाकार नई योजना बनाने से पहले हमें तीसरी योजना के लक्ष्यों को पूर्ण रूप दे देने का प्रयत्न करना चाहिए—उन लक्ष्यों में रही-सही कमी को पूर्ण करने में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। कुछ विचारकों ने यह राय दी थी कि नई योजना—२१५०० करोड़ रु० की योजना को पांच वर्षों के बजाय सात वर्षों में हम पूरा कर सकेंगे, इसलिए योजना के आकार व स्वरूप में परिवर्तन कर लेना चाहिए। इन सब परामर्शों के मूल में व्यावहारिकता ही मूल दृष्टि थी। और अब तो पाकिस्तान के आक्रमण से उत्पन्न विकट परिस्थिति के कारण चौथी योजना के लक्ष्यों और स्वरूप में परिवर्तन अनिवार्य हो गया दीखता है। राष्ट्र को अपने अमित साधन सुरक्षा के लिए, जो किसी भी राष्ट्र के लिए सर्व प्रथम आवश्यकता होती है, लगाने पड़ेंगे—प्रभूत मात्रा में विदेशों से रक्षा सामग्री और अन्न आदि लेना पड़ेगा। विदेशी मुद्रा का प्रयोग विकास योजनाओं के लिए यथेच्छ मात्रा में न कर सकेंगे।

किन्तु योजना आयोग अपनी बात पर ही अड़ा रहा और राष्ट्रीय विकास परिषद ने भी उसकी योजना पर अपनी मुहर लगा दी है। प्रधान मन्त्री को परिवर्तन का अधिकार दे देने के साथ, अब संसद इस पर विचार करेगी और उसका निश्चय अन्तिम व प्रामाणिक होगा।

विकास परिषद के निश्चय के अनुसार चौथी योजना में १८००० करोड़ रु० का विनियोग होगा तथा १९६४-६५ की कीमतों के आधार पर २५०० करोड़ रु० का व्यय चालू कार्यक्रमों पर होगा। इस बृहदाकार योजना में निजी क्षेत्र से यह आशा की गई है कि वह भी कृषि व



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग के व्यापक क्षेत्र में ७००० करोड़ रु० का विनियोजन करेगा और शेष १४५ अरब रु० का विनियोजन सरकारी क्षेत्र में होगा। प्रस्तावित योजना के लक्ष्यों का वर्गीकरण इस तरह किया गया है—

## व्यय लक्ष्य करोड़ रु० में

| | | | |
|---|---|---|---|
| कृषि | २३७२ | शिक्षा | १२६७ |
| सिंचाई | ६२४ | वैज्ञानिक अनुसंधान | १४८ |
| लघु उद्योग | ३६५ | स्वास्थ्य | ५७८ |
| | | पानी की समस्या | ३७१ |
| संगठित उद्योग | २८६६ | आवास | २६७ |
| परिवहन व संचार | २७६८ | पिछड़े वग | १८८ |
| बिजली | १८२८ | समाज कल्याण | ५४ |
| | | पुनर्वास | ६६ |
| शिल्पियों का प्रतिक्षण तथा प्रबन्ध | १४३ | पहाड़ी जिले आदि | १४८ |

इस वृहदाकार योजना में लक्ष्यों की पूर्ति के लिए साधनों के जुटाने की समस्या का समाधान इस तरह प्रस्तुत किया गया है—

## साधनों का वर्गीकरण (करोड़ रु० में)

| | |
|---|---|
| वर्त्तमान करों से | २७५५ |
| सरकारी उद्योगों से | १३७५ |
| रेलवे | ४०५ |
| केन्द्रीय उद्योग | ७२० |
| राज्यों के उद्योग | २५० |
| बाजार से | १५०० |
| लघु बचतों से | १००० |
| वार्षिकी जमा | २०० |
| प्राविडैण्ट फण्ड | ५४० |
| अन्य साधन | ८६० |
| रिजर्व बैंक | ५०० |
| विदेशी सहायता | २७५० |
| अतिरिक्त कर | ३००० |
| निजी क्षेत्रों से | ७००० |

योजना आयोग ने इतनी वृहदाकार योजना की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है कि पहली तीन योजनाओं में विपुल राशि खर्च करने के बावजूद लोगों का जीवन-स्तर बहुत ऊंचा नहीं उठ सका है। इसके तीन मूल कारण हैं—जनसंख्या में वृद्धि और कृषि उत्पादन में कमी-रक्षा का भार भी बहुत बढ़ गया है और मूल्यों में वृद्धि के कारण जनता को भारी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। इसमें संदेह नहीं कि उक्त तीनों कारण ठीक हैं, किन्तु हम यह अपनी दृष्टि से ओझल कर देते हैं कि हमारी दृष्टि भी दोषपूर्ण है। जीवन-स्तर को अनिवार्य आवश्यकताओं तक सीमित न रखकर हम ऊपरी तड़क-भड़क या कम आवश्यक चीजों के उत्पादन पर अधिक बल देने लगे हैं, कृषि उत्पादन में हम व्यापारिक फसलों को अधिक महत्व देने लगे हैं। उद्योगों के विकेन्द्रीकरण अर्थात् लघु कुटीरोद्योगों का नारा लगाने के बावजूद हम बड़े संगठित उद्योगों के आकर्षण व प्रलोभन से अपने को बचा नहीं पाते। सचाई तो यह है कि निर्यात वृद्धि के प्रलोभन ने हमें जीवन के लिए अनिवार्य वस्तुओं के उत्पादन से कुछ विमुख कर दिया है। एक ओर हम अनाज के लिए अमेरिका के पी० एल० ४८० पर निर्भर कर रहे हैं, दूसरी ओर तम्बाखू, गन्ना, तिलहन आदि के उत्पादनों अनाज के उत्पादन पर तरजीह दे रहे हैं।

योजना आयोग ने जनसंख्या वृद्धि को रोकने, निर्यात बढ़ाने, बकाया करों की वसूली, सरकारी उद्योगों की क्षमता बढ़ाने और प्रशासन व्यय में कमी तथा बचत आन्दोलन को तेज करने के सुझाव भी दिये हैं। ये सब बहुत आवश्यक है, किन्तु हमें सन्देह है कि इन दिशाओं में हम कितने सफल हो सकेंगे। यह एक सचाई है कि विशाल काय योजनाओं के बावजूद हम जनता में यह भावना पैदा नहीं कर सके कि यह योजना जनता की अपनी योजना है। समस्त योजना आयोग के शानदार भवनों से निकलती है और राज्यों में, जिलों में, तहसीलों में और अन्त में गांवों तक पहुँचते-पहुँचते वह निष्प्राण हो जाती है। गांव का किसान और खेतिहर मजदूर योजनाओं के क्रियान्वयन में उत्साह और उमंग नहीं पाता। यह निश्चित है कि जब तक योजना किसान, मजदूर और सामान्य नागरिक में उल्लास पैदा नहीं करती, योजना की सफलता कठिन से कठिनतर होती जायगी।

सप्रेम



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## नियंत्रण-समाप्ति की ओर ?

वर्तमान युद्धकालीन संकट के कारण कोई परिवर्तन भले ही करना पड़े, लोह व स्पात और सीमेन्ट पर से नियंत्रणों में शिथिलता इस बात की सूचक है कि सरकार अपनी आर्थिक विकास को अधिक स्वतंत्र और अधिक उदार बनाना चाहती है । कुछ दिन पूर्व प्रधान मंत्री ने संसद में यह घोषणा की थी कि वह केवल बहुत आवश्यक नियंत्रण ही कायम रखना चाहती है और शेष कन्ट्रोलों को कम कर देना चाहती है । कुछ समय पहले वर्ल्ड बैंक के विशेषज्ञों ने भी यह परामर्श दिया था कि देश की अर्थव्यवस्था और अधिक गतिशील हो जाएगी, यदि हम आर्थिक गतिविधि को कुछ अधिक स्वतन्त्र कर दें। आखिर, कन्ट्रोल एक आपत्तिकालीन व्यवस्था है, एक अपवाद मात्र है। उसे स्थिर और नित्य नहीं किया जा सकता । वित्तमंत्री ने दिसम्बर १९६३ में भी अपनी आर्थिक नीति की विवेचना करते हुए कहा था कि हम कुछ क्षेत्रों में विनियंत्रण की ओर—कम उपयोगी नियंत्रण समाप्त करने की ओर चलना चाहते है । उसी समय १६ पदार्थों पर से मूल्य नियंत्रण समाप्त करने की भी घोषणा कर दी गई थी । देखना यह है कि वह अपनी इस दृष्टि को व्यवहार में कहां तक अपनाती है ।

## सफलता का मापदण्ड

यदि हम यह जानना चाहें कि जनता को पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा क्या लाभ पहुँचा, तो उसका एक माप-दण्ड यह है कि विभिन्न वर्षों में प्रति व्यक्ति को प्रतिदिन कितना अनाज मिला ।

१९६२ से १९६५ तक औसत १६ औंस बैठती है, जबकि इससे पहले के ४ वर्षों में अर्थात १९५८ से १९६१ तक यह औसत १५.७ औंस थी । इसका अर्थ यह है कि ३-४ वर्षों में प्रति व्यक्ति औसत ०.१ औंस बढ़ गई । यदि १७.५ औंस का औसत का लक्ष्य, जो बहुत अधिक नहीं है । प्राप्त करना हो तो १९६६ में हमें १०.३ करोड़ टन अनाज चाहिए । हम यदि यह भी मान लें कि ६० लाख टन विदेशों से आयगा तो भी हमें ९.७ करोड़ टन अनाज १९६५-६६ में पैदा करना चाहिए जबकि १९६४-६५ में ८.८४ करोड़ टन पैदा हुआ है । किन्तु आशावादी सरकारी क्षेत्र भी ९.२० करोड़ टन से अधिक उत्पादन की संभावना नहीं देखते । इसका अर्थ यह है कि १७.५ औंस प्रति व्यक्ति का लक्ष्य तीसरी योजना के अन्त तक भी पूरा होता नहीं दीखता । भारत के खाद्य मन्त्री अब चौथी योजना के अन्त तक खाद्य स्वावलम्बन की चर्चा करने लगे हैं ।

## चीनी मंहगी क्यों ?

श्री स० का० पाटिल ने अपने खाद्य मंत्रित्व के काल में चीनी मिलों की उत्पादन क्षमता पर विचार करने के लिए एक कमेटी नियत की थी । इस कमेटी के अध्यक्ष डा० गुण्डराव थे । इस कमेटी ने यह अनुभव किया कि उत्तरप्रदेश व बिहार की अधिकांश मिलों में मशीनरी बहुत पुरानी है—१९३२-३३ के मौडल की । उनकी उत्पादन क्षमता बहुत कम है और उत्पादन व्यय अन्य देशों की अपेक्षा बहुत अधिक । इसलिए उसने मिलों को नई मशीनरी लगाने का परामर्श दिया है, परन्तु मिलों के पुनर्नवीकरण पर ९० करोड़ रु० खर्च आता है । इसके अतिरिक्त नहरी सिंचाई और यातायात के विकास के लिए करीब १६० करोड़ रुपये और खर्च करना पड़ेगा । कमेटी ने मिलों पर पड़ने वाले भारी बोझ के हल के लिए भी कुछ सुझाव दिये हैं—गन्ने पर उपकर, मिलों को विकास छूट ऋण की सुविधा, चीनी की बिक्री पर उपकर आदि ।

इसमें सन्देह नहीं कि इन सुझावों से मिलों को नवीकरण के लिए पर्याप्त राशि मिल सकती है, परन्तु व्यय में वृद्धि के लिए अन्य भी अनेक कारण विद्यमान हैं, जिनसे भारतीय चीनी अन्य देशों की अपेक्षा बहुत मंहगी पड़ती है । ये कारण निम्नलिखित हैं—

१—चीनी बनाने में ७५ प्रतिशत उत्पादन व्यय गन्ने का है । यह गन्ना बहुत मंहगा ही नहीं, इसमें मिठास भी अन्य देशों की अपेक्षा कम होती है । २—हमारे मिलों की मशीनरी जहां बहुत पुरानी घिसी पिटी है, वहां कारखानों का आकार भी छोटा होने के कारण अ-लाभ कर है । २००० टन वाली मिलें ही आदर्श हैं, पर भारत में बहुत मिलें केवल १००० टन की क्षमता की हैं । ३—चीनी पर कर बहुत अधिक है । ४—मजदूरी व अन्य वेतन भारी बोझ डालते हैं । ५—बिजली की दर भी बहुत अधिक है । ६—स्टोर व कल पुरजे भी मंहगे पड़ते हैं । इन कारणों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती ।

( शेष पृष्ठ ५१४ पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्थिर, निश्चित, सुसंगत आर्थिक नीति

श्री मुरारजी देसाई

इस बात से कोई इन्कार नहीं करेगा कि हम एक संकट काल में से गुजर रहे हैं । यदि हम आज के संकट काल का प्रतीकार करने में असफल हैं, तो हमें भविष्य में इस से भी अधिक कठिन राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा ।

निकट भविष्य में हमें अत्यन्त कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करना है । पाकिस्तान हमारे देश की अखण्डता के लिए खतरा बन रहा है । चीन भी पूर्वी और उत्तरी पूर्वी सीमाओं पर अब तक मण्डरा रहा है । इन बाह्य धमकियों और खतरों के अलावा देश के अन्दर भी अनेक तत्त्व हमारे लिए चिन्ता के कारण बने हुए हैं । साम्प्रदायिकता, उग्र राजनीतिक आन्दोलन और खाद्य-संकट आदि अनेक दैत्य अपना सिर उठा रहे हैं और देश की शान्ति के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं ।

मैं इन में से किसी धमकी से डरना नहीं चाहता, क्योंकि मैं यह विश्वास करता हूँ कि हम अपने दृढ़ संकल्प और अचल विश्वास के बल पर इन सब का मुकाबला कर सकते हैं । सबसे मुख्य बात यह है कि आर्थिक दृष्टि से हमने आर्थिक विकास के अनेक योजनाबद्ध कार्य क्रम बनाये हैं । दो पंचवर्षीय योजनाओं को हम पूरा कर चुके हैं और बड़ी आशाओं और आकांक्षाओं के साथ तीसरी पंचवर्षीय योजना को भी शुरू किया है । पहली दो योजनाओं के अन्त तक हमने प्रति व्यक्ति आय ही नहीं बढ़ाई, उद्योग और कृषि का उत्पादन भी बहुत बढ़ा लिया है । दूसरी योजना के अन्त तक अधिक सड़कें, यातायात के अधिक साधन, अधिक बिजली, कृषि और उद्योग में अधिक उत्पादन तथा शिक्षण की अधिक सुविधाएं प्राप्त हो चुकी हैं । तीसरी योजना के अन्त में भी हम सन्तोष कर सकेंगे या नहीं, यह आज कहना कठिन है । तीसरी योजना के प्राथमिक वर्षों में ही चीन के आक्रमण तथा अन्य अनेक विकट परिस्थितियों ने हम पर बहुत अधिक दबाव डाला है ।

आज पूंजी बाजार की स्थिति बहुत असन्तोषजनक है । अच्छी-अच्छी कम्पनियों के शेयरों की कीमतें भी गिरती जा रही हैं । लोग कम्पनियों के शेयर लेने में संकोच कर रहे हैं । निरन्तर बढ़ता हुआ मुद्रा प्रसार चिन्ता पैदा कर रहा है । और हमें यह डर है, कि सरकार के द्वारा लगाये गये अनेक नये कर मुद्रा प्रसार को और भी अधिक बढ़ायेंगे । कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं और एक सामान्य नागरिक के लिए जीवन निर्वाह करना कठिन हो गया है । यदि कीमतें और भी कुछ बढ़ीं तो मैं नहीं जानता कि भविष्य में क्या होने वाला है ।

विदेशी मुद्रा का संकट तो खतरे का सीमा पार कर चुका है । आज हमारे लिए विदेशों से प्राप्त सहायता की किस्त और सूद तक चुकाना कठिन हो रहा है । लोगों को आज इस बात पर भी संदेह हो गया है कि केन्द्र और राज्यों की सरकारें अपनी चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए साधन भी जुटा सकेंगे या नहीं । हमारी वित्तीय नीति भी अव्यवस्थित हो गई है । १७३ करोड़ रुपये का बजट इसका स्पष्ट प्रमाण है ।

सरकार समय-समय पर अपनी वित्त और उद्योग की नीतियों में परिवर्तन करती रहती है । रोज नये नियम बनाये जाते हैं । लगातार परिवर्तनों के कारण लोगों को सरकारी नीतियों में कोई विश्वास नहीं रहा । वे अब नया कदम उठाते हुए डरते हैं । यह बहुत खतरनाक बात है । यदि जनता में किसी उपक्रम की भावना ही नहीं रही और सरकारी नीतियों पर से विश्वास उठ गया, तो भविष्य में कोई उन्नति असम्भव है ।

आर्थिक नीति की सुसंगता और और स्थिरता दो मुख्य स्तम्भ हैं, जिन पर जनता का विश्वास दृढ़ता से जम पाता है । यदि जनता को इन दोनों पर विश्वास हो, तो वे निश्चिन्त होकर अपनी-योजनाएं बना सकते हैं अन्यथा लोगों में अविश्वास बढ़ जाता है और आर्थिक प्रवृत्तियों में शिथिलता आ जाती है । इसीलिए मैं आर्थिक नीति की स्थिरता और सुसंगतता पर विशेष बल देना चाहता हूँ । यह ठीक है कि हम असाधारण संकट काल में गुजर रहे हैं, फिर भी मुझे विश्वास है कि हमें यह संकट

(शेष पृष्ठ ४८३ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# हमारे आयोजनों की मूलभूत न्यूनताएं

श्री उच्छंगराय नवलशंकर ढेबर

इन पृष्ठों में दिये गये लेख विचार व चिन्तन की नई प्रेरणा देते हैं, जो चतुर्थ योजना के निर्माण के समय बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

## दरिद्रता व बेकारी

तीनों योजनाओं से यह सिद्ध हो गया है कि वर्तमान दृष्टिकोण अच्छा होते हुए भी विषमताओं और बेकारी की समस्याओं को हल करने के लिये काफी नहीं है। बेरोजगारी की समस्या पर एक पृथक् समस्या के रूप में, जिसके निराकरण के उपाय भी भिन्न हैं, विचार नहीं किया गया है। बृहत् स्तर पर गरीबी और विषमताओं के तथ्य को स्वीकार करने में भी काफी विरोध रहा है।

सर्वविदित है कि भारत विश्व के सबसे ज्यादा पिछड़े अथवा अल्प-विकसित देशों में एक है। लेकिन यह तथ्य बहुत कम लोगों को मालूम है कि भारत अल्प-विकसित देशों की पंक्ति में भी पीछे है। बर्मा को छोड़कर अल्प-विकसित राष्ट्रों में भारत सबसे ज्यादा गरीब देश है, यहां तक कि भारत के पड़ोसी देश श्रीलंका में प्रति व्यक्ति आय भारत की प्रति व्यक्ति आय से १.७ गुना है। भारत की राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर विश्व में सबसे कम है। प्रोफेसर बी० आर० शेनोय ने १९५१-५९ की अवधि में २६ देशों की एक सूची राष्ट्रीय आय में वृद्धि दर के क्रम के अनुसार तैयार की है। इस सूची में प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की दर के अनुसार भारत का तेइसवां स्थान है। भारत की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि इस अवधि में १.३ प्रतिशत वार्षिक रही है।

## विषमता की चौड़ी खाई

देश की जनता के विभिन्न वर्गों की आय में अत्यधिक अंतर भी गहरी चिन्ता का विषय होना चाहिये। महलनबीस समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि १९५५-५६ के वर्ष में ७२ प्रतिशत जनसंख्या की आय प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के औसत अर्थात् २५५ रु० से भी कम थी। इस समिति ने कहा है, "इस प्रकार देश के २८ प्रतिशत लोग, जिनकी आय औसत प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय से अधिक थी, १९५५-५६ की कुल निजी आय के ५० प्र. श. से अधिक पर काबिज थे। आय-वितरण में असमानता का विस्तार विभिन्न श्रेणियों के लोगों की आय का विश्लेषण करने से स्पष्ट हो जायगा। प्रति व्यक्ति आय का अनुमान महीने के आधार पर लगाने से स्पष्ट होगा कि चोटी के १० प्रतिशत लोगों के हाथ में कर से पूर्व कुल निजी आय का ३४ प्रतिशत भाग आता है, ५ प्रतिशत लोगों के हाथ में २३ प्रतिशत और ११ प्रतिशत निजी आय चोटी के १ प्रतिशत लोगों की १९५५-५६ में थी, जबकि २५ प्र. श. जनसंख्या के हाथ में शेष ६० प्रतिशत आय प्राप्त हुई। आय पर कर लगाने के बाद भी स्थिति में विशेष अन्तर नहीं आता।

## द्विविध विषमता

देश में व्याप्त विषमताओं को दो और दृष्टियों से देखा जा सकता है—'ग्रामीण शहरी' विषमतायें और 'अंतर-राज्य' विषमतायें। ग्रामीण क्षेत्र में टैक्स से पूर्व प्रति परिवार औसत आय शहरी क्षेत्र की (टैक्स लगने से पूर्व) प्रति परिवार औसत आय की ७२ प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी कर लगने से पूर्व २३ प्रतिशत परिवारों की औसत आय २७५ रु० वार्षिक से भी कम है, जबकि इस क्षेत्र में ही ५.६ प्रतिशत परिवारों की औसत आय ४,८०० रु० वार्षिक से भी अधिक है। रिजर्व बैंक आफ इंडिया के जून १९६५ के बुलेटिन में सम्पत्ति का वितरण दिखाया है। देहातों में कुल परिसम्पत्ति के ६० प्रतिशत पर १३ प्रतिशत लोगों का कब्जा है, जबकि इन इलाकों के ८० प्रतिशत लोगों के पास कुल परिसम्पत्ति का १ प्रतिशत भी नहीं है।

अंतर-राज्य विषमताएं और भी गम्भीर रूप लिये हैं। दिल्ली में प्रति व्यक्ति आय ८०० रु० से अधिक है, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और पंजाब में यह ४५० रु० से अधिक है। गुजरात में यह ३५० रु० से ४०० रु० तक है, जबकि मद्रास, असम, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश, केरल और मैसूर में प्रति व्यक्ति आय ३०० रु० और ३५० रु० के बीच है। फिर उत्तरप्रदेश, जम्मू और काश्मीर, आन्ध्र-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ीसा और राजस्थान में प्रति व्यक्ति आय २५० रु० और ३०० रु० के बीच है, जबकि बिहार में प्रति व्यक्ति आय सबसे कम है अर्थात् २२०.६६ रु०।

## बेकारी में वृद्धि

विषमताओं के अतिरिक्त भारतीय आयोजन की जो सबसे बड़ी आलोचना की जाती है, वह यह है कि मानवीय साधनों का यहां समुचित उपयोग नहीं हो रहा है। प्रत्येक योजना की समाप्ति पर बेरोजगारी के आंकड़ों में वृद्धि हर दफा होती जाती है, यह सभी जानते हैं। पहली योजना की समाप्ति पर पिछले बेकारों की संख्या ५३ लाख थी। दूसरी योजना के अन्त में पिछले बेकारों की संख्या १ करोड़ थी और तीसरी योजना के अन्त में पिछले बेकारों की संख्या १ करोड़ ३५ लाख रह जाने का अनुमान है। अपूर्ण रोजगार का अनुमान लगाना असम्भव है।

इन सब बातों पर समाजवादी योजना में ध्यान दिया जाना चाहिए। योजनाओं के जरिए ये समस्याएं काफी हद तक हल नहीं हुई हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि हमारे आयोजन में कमी रही है। इस कमी को नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता। आधुनिक ढंग से सोचने वाले लोग भी यह स्वीकार करने लगे हैं कि आज की पहली जरूरत घोर गरीबी को स्वीकार करना और उसके क्षेत्रों का पता लगाना है जिससे कि उसका मुकाबला आधुनिक और शक्तिशाली उपायों से किया जा सके। यह सभी जानते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के २० प्रतिशत लोग भूमिहीन किसान हैं और इतने ही लोगों के पास एक-एक एकड़ से भी कम की अराजियां हैं। गांवों में उनकी स्थिति करीब-करीब निर्धन व्यक्ति की है और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में, फसल बोने और काटने के कुछ दिनों को छोड़कर, उनका कोई उपयोग नहीं होता।

## विकेन्द्रीकरण

योजना आयोग ने स्वीकार किया है कि इस समस्या का हल विकेन्द्रीकृत क्षेत्र के विस्तार करने में है। लेकिन योजना आयोग ने विकेन्द्रीकृत क्षेत्र के लिए ४५० करोड़ रुपए के प्रावधान का सुझाव दिया है, जबकि तीसरी पंच-वर्षीय योजना में इस क्षेत्र के लिए २५० करोड़ रुपए की व्यवस्था रखी गई थी। यह इस बात का प्रमाण है कि समस्या की गम्भीरता को योजना आयोग ने नहीं समझा है। प्रति व्यक्ति पूंजी-विनियोग की दर ३००० रुपए के हिसाब से इस क्षेत्र के लिए रखने से इस धनराशि से केवल १५ लाख रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकेंगे। यदि हम निजी क्षेत्र के इस सम्भावी पूंजी-विनियोग को शुमार कर लें तो दोनों से कुल मिलाकर २० या २५ लाख रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। इस निर्धारित विनियोग से बेकारी की समस्या पर किस हद तक असर पड़ेगा, इसके अनुमान पिछले बेकारों की संख्या और संभव पूंजी-विनियोग के परिणामों से लगाया जा सकता है। यह ठीक है कि २१,५०० करोड़ रुपए के परिव्यय में यह धनराशि ४ प्रतिशत या इससे कुछ ज्यादा है।

योजना के ज्ञापन में कहा गया है: "विकेन्द्रीकृत टेक्सटाइल उद्योग, उपभोग-वस्तुओं और साधारण उत्पादक वस्तुओं के उद्योगों के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगों—विशेषतया कृषि, वन-सम्पदा, पशुपालन से प्राप्त पदार्थों और निर्यात-व्यापार की वस्तुएं तैयार रखने वाले उद्योगों के विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने होंगे।"

## किन्तु

इस घोषणा के संदर्भ में भारत सरकार अथवा योजना आयोग द्वारा ५० स्पिनिंग मिल, चार दियासलाई के कारखाने, छः जूते के कारखाने, १० लाख टन अधिक ईख पेरने की क्षमता और चावल मिलें स्थापित करने की इच्छा को देखना होगा। मूक व्यक्ति के जबान नहीं होती। उनकी कोई आवाज नहीं होती और न उनका कोई संगठन ही होता है। यह नहीं भूलना चाहिए कि वे भी पूंजी-विनियोग में योगदान देते हैं। धान से चावल हाथ से बनाने का केन्द्र बन्द होने पर ६२ आदमी बेकार होते हैं। इस प्रकार विस्थापित हर व्यक्ति यह अनुभव करता है कि औजारों में लगाई गई पूंजी फंस गई है। एक घानी बन्द करने का मतलब दो आदमियों को बेकार बना देना है।

गुड़ और खांड बनाने की एक इकाई को बन्द कर देने से अनेक व्यक्ति बेकार हो जाते हैं और उनके हिस्से की पूंजी फंस जाती है। इनमें से कुछ लोग जो अपनी पूंजी, काम और विनियोग की ही हानि नहीं उठाते, बल्कि उन लोगों में, जो नई टेक्नोलोजी अपनाने का प्रोत्साहन देते हैं, विश्वास खो बैठते हैं। वे नई टेक्नोलोजी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लाभ में भी विश्वास खो बैठते है। हमारे देश में लगभग ३०,००० औद्योगिक सहकारी समितियां, जो साधारण लोगों के लाभ के लिए बनाई गई हैं, काम कर रही हैं। इन सहकारी समितियों की सदस्य-संख्या ४ से ६ लाख है। इनमें उनकी १ करोड़ रुपए के लगभग पूंजी लगी हुई है। इन समितियों के सदस्यों को अपने काम और अपनी छोटी निजी पूंजी की ही चिन्ता नहीं रहती बल्कि उन्हें इस बात की भी चिन्ता रहती है कि कहीं लोग उन्नत टेक्नोलोजी से काम करने वाले व्यक्तियों में ही विश्वास न खो बैठे।

## दो प्रश्न

दर असल हमारे सामने दो प्रश्न है : क्या हम यह स्वीकार करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में २० या ३० प्रतिशत लोग निस्सहाय हैं, जिन्हें पुन: काम पर लगाने के लिए, विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता है और दूसरे, क्या हम यह मानते हैं कि कृषि पूर्णतया उन्नत हो जाने की दशा में भी ग्रामीण जनसंख्या के ५० प्रतिशत से अधिक का बोझ उठाने के योग्य नहीं होगी। योजना आयोग को इन दोनों प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ना होगा। दुनिया के किसी भी देश को इतनी बड़ी जनसंख्या को काम पर लगाने की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा है। अमरीका में भी अर्थव्यवस्था काफी उन्नत हो जाने के बावजूद भविष्य में रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध करने के लिए विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

द्रुतगति औद्योगीकरण और सघन खेती की आवश्यकता स्वीकार करते हुए भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था के ढांचे में भूमिहीन कृषकों को काम पर लगाने की समस्या बनी रहेगी। किसी भी समय कृषि ५० प्रतिशत से अधिक जनसंख्या का भार वहन नहीं कर सकती। प्रमुख प्रश्न यह है कि हम कब तक ऐसे प्रश्न का उत्तर टालते रहेंगे, जिस पर लाखों लोगों का भाग्य निर्भर करता है?

हमारी अर्थव्यवस्था का ठोस और सुदृढ़ आधार बनाने के लिए इतनी बड़ी संख्या में लोगों को काम पर लगाना होगा—यह जितनी जल्दी किया जाए, उतना ही अच्छा है। इस समस्या का एकमात्र निराकरण यह है कि कि परम्परागत प्राचीन क्षेत्र को शीघ्र विकेन्द्रीकृत क्षेत्र में बदल दिया जाए।

● ●

# हमारी उद्देश्यहीन योजना

श्री सम्पूर्णानन्द (राज्यपाल, राजस्थान)

प्रधान मन्त्री, श्री अशोक मेहता और उन नेताओं के भाषणों से जिनका इस योजना के निर्माण में हाथ रहा है, कहीं भी योजना के उद्देश्य-सम्बन्धी कोई ऐसा स्पष्ट प्रतिपादन प्राप्त नहीं हो सका है कि आयोजकों का लक्ष्य क्या है? किसी भी अन्य विशिष्ट वक्तव्य के अभाव में हम यही अनुमान लगा सकते हैं कि भौतिक आवश्यकताओं का विकास ही सम्भवत: इस योजना का उद्देश्य रहा होगा, जिसमें धन्धे, पाठशालायें, इस्पात कारखाने और मकान आदि आवश्यक वस्तुयें समाविष्ट होती हैं। मैं मानता हूँ कि ये सभी आवश्यक कार्य हैं, किन्तु सम्भवत: एक अत्यावश्यक बात ध्यान से छूट गई प्रतीत होती है, और वही मेरे ध्यान में परमावश्यक है।

यह है स्वयं नागरिक, जो प्राय: सामान्य व्यक्ति के नाम से पुकारा जाता है। यही वह व्यक्ति है जिसके लिए सड़कें, अस्पताल और मकानों का प्रबन्ध किया जाना है, उसी के बच्चे विद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करके देश के भावी नागरिक होंगे।

किन्तु हमारे वर्तमान और भावी नागरिक कैसे हैं, यही वह मूल प्रश्न है जिस पर किसी भी अधिकारी व्यक्ति ने विचार करने का कष्ट नहीं किया। यदि यह प्रश्न उठा भी होगा तो सम्भवत: इस कारण त्याग दिया गया होगा क्योंकि यह मानसिक संतुलन बिगाड़ने वाला अत्यन्त असुविधाजनक प्रश्न पाया गया होगा। किन्तु यह भूल बहुत सख्त है और महत्वपूर्ण भी। हमारे सामने पिछली तीन योजनाओं की कार्यशीलता का अनुभव है और इस अनुभव ने हमें पर्याप्त सिखाया भी है। कम से कम हमें एक सबक तो अवश्य सीख लेना चाहिए, जिसे भारतीय संस्कृति का सम्पूर्ण इतिहास बार-बार दुहरा रहा है। हम



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधी जी के बिम्ब को धुंधला करने के लिए हर सम्भव यत्न कर रहे हैं, किन्तु फिर भी योजनाओं में अनुभवों से महात्मा जी द्वारा दृढ़ रूप से प्रतिपादित एक सिद्धान्त की महत्ता हमें समझ ही आ गई होगी। वह सिद्धान्त है कि "मनुष्य केवल रोटी पर ही जीवित नहीं रह सकता।"

पर आज दूसरी ओर हमने अपनी निष्ठा को केवल रोटी और उन अन्य भौतिक वस्तुओं से आबद्ध कर रखा है जिनकी कि रोटी ही प्रतीक है। हम सम्भवतः रोटी की रससिद्धि में विश्वास रखते हैं और आशा करते हैं कि हमारी भौतिक समृद्धि हमारे मानव पदार्थ की प्रकृति को रूपान्तरित करने में सफल हो सकेगी। अंग्रेजों के युग में विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय थे। इनकी संख्या में विशिष्ट वृद्धि हुई है और अद्वितीय वृद्धि संभावित भी है। इन की पाठ्य-पद्धति में और पाठ्यक्रम में आमूल परिवर्तन होंगे, शिक्षा प्रणाली में सुधार होंगे, शोध सम्बन्धी सुविधाएं दी जायेंगी, जो पहले पर्याप्त कम थीं, अथवा कहीं कहीं ही थीं। इस सबके उपरान्त नवीन और प्राचीन प्रणाली की समरूपता गतिमान है और रहेगी। परिमाण-वृद्धि होने से गुणों में अथवा विशेषता में तो परिवर्तन होने से रहा।

## शिक्षा प्रणाली

कारण स्पष्ट है, अंग्रेजों को इस जानकारी में कोई रुचि नहीं थी कि कौन और क्या शिक्षमान है ? अंग्रेजों ने वह शिक्षा प्रणाली अपनाई, जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और आज हम उस प्रणाली को लादने का प्रयत्न कर रहे हैं, जो हमारे अपनाये हुए सामाजिक, आर्थिक जीवन के ढांचे में फिट हो सके। क्या आज की नवीन शिक्षा प्रणाली हमारे विद्यार्थियों की प्रकृति के अनुरूप है ? क्या यह वस्तुतः ऐसा है, यह जानने की किसी को चिन्ता नहीं। विद्यार्थी की भावनात्मक प्रकृति का विकास, उसके आध्यात्मिक व्यक्तित्व का उद्घाटन हमारे भूतपूर्व शासकों के हित में नहीं था। वे हमारी नस्ल के सदस्यों में पराजयवादी भावना संचारित करने और हीन भाव प्रस्थापित करने में सफलता प्राप्त कर सके।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात ये भावनायें स्वयं ही अदृश्य हो गईं, किन्तु किन्हीं स्वस्थ भावनाओं ने इनका स्थान ग्रहण नहीं किया। हमारी नेताशाही इन भावनाओं की खुराक प्रदान करने में पूर्णरूपेण असफल रही। सावधान करने के लिए कुछ लोगों ने इस सम्बन्ध में कहा, किन्तु उनकी बात अनसुनी कर दी गई और हम, लोगों से विशेषकर युवाओं से सड़कों, पुलों, मिलों, नहरों, मकानों और धन्धों की बातें करते रहे। इन परिस्थितियों में हम लोगों, विशेषतः युवकों को इस विश्वास के लिए दोष नहीं दे सकते कि उनकी महत्वपूर्ण आवश्यकता केवल भौतिक ही है और यही उनके जीवन के लिए विशिष्ट महत्व रखती है।

## आंतरिक संसार खोखला

एक नये प्रकार के नागरिक का उद्भव हो रहा है, जो अत्यन्त अप्रिय ढंग का है, जिसके पास न अपने लिए कोई सन्देश है न मानवता के लिए। हमारी सभ्यता की सर्वोपरि उत्पत्ति रूक्षता है। यही वह उपयुक्त शब्द है, जिससे मैं उसे परिभाषित कर सकता हूँ। उसका आन्तरिक संसार खोखला है जिसमें केवल भौतिक महत्वाकांक्षायें ही भरी हैं। वह वर्तमान के लिये ही जीता है, क्योंकि उसके आगे उसका भविष्य उज्ज्वल नहीं है, जिसकी कि उसे शिक्षा मिली है। किसी भी वस्तु के प्रति उसमें श्रद्धा नहीं है और किसी भी वस्तु में उसका विश्वास नहीं है। जब तब वह राधाकृष्णन् की आध्यात्मिक और धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण भावाभिव्यक्ति सुनकर पुलकित हो जाता है, ये उसे मात्र परिवर्तन ही कर पाती है और अंततः ऐसी भाषा उसे पर्याप्त ऊंचा ले जाकर शुष्क ही रख देती है। वे भारतीय संस्कृति की बात करते हैं, क्योंकि ऐसा कहना रिवाज बन गया है किन्तु इसके मूल सिद्धान्त किसी प्रकार की प्रतिध्वनि उनके हृदय में प्रस्फुटित नहीं कर पाते। आध्यात्मिक रूप से यह उसके संम्पूर्ण लालन पालन के लिए विदेशी तत्व हैं और वह व्यक्ति के जीवन में उसकी वास्तविक अभिव्यक्ति में प्राचीन मिश्र या पेरू की संस्कृतियों के प्रदर्शनों से अधिक निकटता अनुभव नहीं करता। धार्मिक व्रत और भोज आदि महज आमोद की वस्तुएं हैं। सामान्य व्यक्ति को जिस प्रकार नृत्य-गान आदि में आत्मीय सुख की अनुभूति होती है, वही अनुभूति ऐसे अवसरों पर भी होती है।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे ज्ञात नहीं है कि इस अभिनव व्यक्ति से हमारे योजना-निर्माता परिचित हैं अथवा नहीं ? मुझे तो यह भी भय है कि सम्भवतः वे उसके अस्तित्व तक से अपरिचित हैं। अपनी साहसिक योजनाओं में उन्होंने इस बात की चिन्ता ही नहीं की कि उनकी योजना मानव की मूलभूत भौतिक आवश्यकताओं को कहां तक पूरा करने में सफल होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि यह किसी को भी प्रतीत नहीं हुआ कि यदि उनकी योजना को कोई भी सफलता मिली तो वह व्यक्ति के एक विशेष प्रकार के मानसिक झुकावों को ही विकसित करेगी और वह व्यक्ति ऐसे ही विचारों में विकसित होगा। किसी ने भी नैतिक और आध्यात्मिक परिणामों का अनुमान लगाने का प्रयत्न नहीं किया जो कि इस वातावरण से पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होंगे। विश्वविद्यालय भी इस दिशा में अपने कर्तव्य का निर्वाह कर पाने में अप्रत्याशित रूप से असफल रहे हैं।

## झूठी धर्मनिरपेक्षता

संख्या नित्य बढ़ रही है। संख्या के जादू के प्रभाव ने हमें इतना मुग्ध कर दिया कि हम यह भूल ही गये हैं कि इस प्रक्रिया में अपनी आत्मा को खो बैठे हैं। दूसरों के किए गये प्रयोगों का भी हमने लाभ नहीं उठाया। उदाहरणतः रूस ऐसा देश है, जो हमारा ध्यान सर्वप्रथम इस ओर में आकर्षित करता है। वे योजनाओं में आबद्ध रहे, उन्होंने ऐसी विस्तृत योजनायें बनाईं कि किसी को भी हैरानी करनी पड़े और उनके प्रयत्नों को सफलता भी मिली और यहां तक कि उनके शत्रुओं तक प्रशंसा करनी पड़ी।

किन्तु भौतिकवादी दर्शन-सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के उपरान्त भी उन्होंने मानवीय जीवन में भावनाओं को समुचित स्थान दिया। केवल नियमित शैक्षणिक संस्थायें ही नहीं, अपितु प्रचार के सभी साधनों जैसे रेडियो को भी उन्होंने एक विशिष्ट साधन स्वीकारा। सम्भव है कि कोई व्यक्ति सोवियत विचारधारा अथवा विरोधी विचारों का सफाया कर देने की उनकी पद्धति का पोषक न हो किन्तु जहां श्रेय देना आवश्यक है, दिया ही जाना चाहिये। भारत में ऐसा लगता है कि हम नितान्त भिन्न रूप से कार्य करने पर तुले हुए हैं। एक समय था जब दर्शन के प्रति भारत का अति आग्रह माना जाता था। मानों अपने इस जन्मपाप के पश्चात्ताप के लिए हमने अपनी पीठ पूर्णरूपेण दर्शन से मोड़ ली है। हम अपनी योजनाओं को दार्शनिक आधार नहीं देना चाहते और आदर्शवादिता से हम इस प्रकार पलायन कर रहे हैं, मानों जलते हुए अंगारे हों। धर्मनिरपेक्षता की झूठी व्याख्या के कारण हमने अपने युवा समाज को अतीत से पृथक कर दिया है और भविष्य के सम्बन्ध में भी कोई दृष्टि प्रदान नहीं की है। हमने उसका ध्यान जन्म से लेकर मृत्यु तक के छोटे काल पर केन्द्रित कर दिया है। उसके समक्ष नव संसार का कोई स्वप्न नहीं संजोया, जिसके कि निर्माण में वह हाथ बंटा सके। ऐसे व्यक्ति के लिए भारत के पास कोई सन्देश नहीं है और उसकी दृष्टि में सम्भवतः गांधी भी जन्मा नहीं। यह योजना का निर्माण नहीं है। यह तो योजना की हास्यानुकृति है, जिसमें कि भौतिक साधनों की उपलब्धि की कुशलता है किन्तु जिन लोगों को इन साधनों का उपयोग करना है उन्हें इनका उपयोग ज्ञात नहीं है। अतएव यह उद्देश्यहीन योजना है।

---

(पृष्ठ ४७८ का शेष)

विनाश की ओर नहीं ले जाएगा। हमें बहुत भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, केवल हमें अपनी आर्थिक नीतियों पर उचित नियन्त्रण रखना है। और अपनी शासन की मशीनरी को इस प्रकार चलाना है कि वह अधिक कार्यक्रम, अधिक उद्देश्य निष्ठ तथा भ्रष्टाचार आदि से रहित हो सके। मुझे यह विश्वास है कि जनता अपने ऊपर आने वाले भारी बोझ को भी सहन कर सकती है, यदि उसे यह विश्वास हो जाए कि सरकार की नीतियां स्थिर और सुसंगत हैं। उसे भी जनता का मत ध्यान में रखते हुए अपनी नीति एकबार निश्चित और सुसंगत बना लेनी चाहिये, और फिर उस पर निस्संकोच अमल करता जाना चाहिये।

एक योजना बद्ध अर्थव्यवस्था में कुछ नियन्त्रण आवश्यक होते हैं। किन्तु वे नियन्त्रण संख्या में कम से कम हो और बहुत सोच विचार करके लगाये जायें। फिर उनका इस तरह से पालन किया जाये कि उन में विलम्ब न हो।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूंजी बाजार का पुनर्जीवन कैसे ?

के. एन. तनेजा

पूंजी लगाने वालों का वातावरण भारतीय सीमा पर १९६२ में चीनी आक्रमण के बाद से लगातार खराब होता रहा है और इस दिशा में सुधार करने के बजाय सरकार की राजकोषीय, मुद्रा सम्बन्धी और आर्थिक नीतियों ने पूंजी बाजार को और भी अधिक खराब कर दिया है।

अतः पूंजी बाजार को तभी पुनर्जीवित किया जा सकता है जबकि इस प्रकार की परिस्थिति के कारणों को दूर किया जाय। चूंकि पूंजी रचना बचतों और निवेशों का परिणाम होता है, इसलिए बचत करने और पूंजी लगाने के लिए रचनात्मक प्रोत्साहन होना चाहिए। आज ऐच्छिक बचतों को कुंठित करने वाले दो मुख्य कारण हैं : भारी कराधान और मुद्रास्फीति। भारी कराधानों से, चाहे वे व्यक्तिगत आयों पर हो अथवा नियमित आमदनियों पर, बचत करने की क्षमता घट जाती है। भारी कराधानों की वजह से लागतों को कम करने की दिशा में भी प्रोत्साहन नहीं मिलता है। किसी भी प्रतिमान से भारत में कराधान बहुत ऊंचा है। भारत में कराधान पर एक विख्यात विद्वान श्री एन० ए० पालकीवाला का विचार है कि भारत संसार का एक ऐसा देश है जहां सबसे अधिक कराधान मौजूद है। भारत में मनोवैज्ञानिक रूप से अनेक खराब कर विद्यमान हैं। उदाहरण के तौर पर शेयर होल्डरों को मिलने वाले डिवीडेण्डों तथा बोनस शेयरों पर लगाये जाने वाले कर बुरे कराधान हैं।

हमारी कराधान नीति में कुछ ऐसे रचनात्मक कदम भी मौजूद हैं जो पूंजी बाजार को मदद कर सकते हैं, जैसे नये उद्योगों के लाभों को कर मुक्ति, स्थापना की गई मशीनरी पर विकास रिबेट, अन्तर-निगमित डिवीडेण्डों पर कम कराधान, कुछ निर्दिष्ट उद्योगों से उपलब्ध होने वाली आमदनी पर कम कर लेना, कर ऋण प्रमाणपत्र योजनाएं आदि। इन कदमों के साथ-साथ सम्पूर्ण कराधान ढांचे में भी कमी होनी चाहिए और डिवीडेण्डोंकर तथा बोनस कर को खत्म कर देना चाहिए। सार्वजनिक निगमों द्वारा अदा किये जाने वाले करों की मात्रा को ७० प्रतिशत तक ही सीमित रखने का उपबन्ध किया गया है। व्यक्तिगत करों को भी थोड़ा सा कम कर दिया गया है, लेकिन विगत वर्ष से लागू की गई एंयुटी डिपाजिट से व्यक्तियों की शुद्ध आमदनियों में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। १९६५-६६ वर्ष के केन्द्रीय बजट में सम्पूर्ण कराधान में कमी करने के लिए उठाये गये कदमों को और आगे बढ़ाना चाहिए, ताकि बचत करने की दिशा में रचनात्मक प्रोत्साहन मिल सकें। सरकार को चाहिए कि वह इस दृष्टि से अमेरिका और पश्चिम जर्मनी के उदाहरणों का अनुकरण करें जहां पर कर राहतों की जोरदार नीति अपनाई गई है और अर्थव्यवस्थाओं को मजबूत बनाया गया है। मुद्रास्फीति से बचत करने में बड़ा हतोत्साह पैदा होता है। चूंकि बचत का अर्थ होता है भविष्य के उपयोग के लिए वर्तमान खपत से इंकार करना अतः यह जरूरी है आज की गई बचतों से कम कम भविष्य में भी उन्हीं मूल्यों को खरीदा जा सके लेकिन यदि अर्थ-व्यवस्था मुद्रास्फीति युक्त है, तो लोग बचत करने में हिचकिचाएंगे। हमारे देश में मुद्रास्फीति सम्बन्धी लगातार दबावों के अन्तर्गत मुद्रा के मूल्य में ह्रास हुआ है। शेयरों में लगाई गई रकम की प्रायः मुद्रास्फीति के विरुद्ध सुरक्षा की जाती है, क्योंकि स्वयं शेयरों में काफी ह्रास हो गया है।

## मुद्रास्फीति के कारण

हमारे देश में मुद्रास्फीति के अनेक कारण हैं और उन कारणों का उन्मूलन करना ही समस्या का समाधान है। काफी हद तक इस तथ्य की जिम्मेदारी सरकार की घाटे की वित्त व्यवस्था सम्बन्धी और भारी कराधान सम्बन्धी नीति पर है, जिसकी वजह से उत्पादन तथा लागतें कम करने की ओर कोई प्रोत्साहन नहीं मिला है। हमने बड़ी-बड़ी परियोजनाओं को अपनाया, जिनसे काफी देर तक बाट देखने के बाद प्रतिफल प्राप्त होता है। समाज कल्याण योजनाओं पर होने वाला बहुत सा खर्च अनुत्पादक और मुद्रास्फीतिजनक होता है। विदेशी आक्रमण



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सामना करने के उद्देश्य से सुरक्षा सामर्थ्य बढ़ाने के लिए से स्थिति और भी गम्भीर हो गई है। लेकिन मुद्रास्फीति का मूल कारण है, कृषि क्षेत्रों का अन्यत्र असन्तोषजनक कार्य। स्वाधीनता के १८ वर्षों, तक में जिसमें नियोजन के १४ वर्ष शामिल हैं, खाद्य क्षेत्र में स्वाधीनता नहीं आ सकी है। खाद्य पदार्थों का आयात करने के लिए हमको विदेशी मुद्रा की जरूरत पड़ती है और पी० एल० ४८० के आयातों पर हमारी निर्भरता इस बात का प्रतीक है। प्रथम योजना में कृषि उत्पादन की वृद्धि दर ४.२ प्रतिशत थी। दूसरी योजना में यह घटकर २ प्रतिशत रह गई और तीसरी योजना के प्रथम ४ वर्षों में यह दर लगभग अचल बनी हुई है। और यह स्थिति नदी घाटी योजनाओं पर भारी व्यय, स्वयं अपने बड़े कारखाने बनाने तथा उर्वरकों का आयात करने, सहायता लेती और उत्पादन बढ़ाने के नारों और प्रस्तावों आदि के बावजूद हुई है। इसलिए हमको चाहिए कि हम अपनी कृषि सम्बन्धी समस्याओं को सैद्धान्तिक आधार पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आधार पर सुलझायें। खाद्यान्नों के आयात से विदेशी मुद्रा भुगतान की स्थिति बिगड़ती है और औद्योगिक वृद्धि के लिए आवश्यक कच्चे माल और पूंजीगत सामानों को आयात करने की हमारी क्षमता कम होती है। मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण पाने का सबसे असरदार तरीका है कि उत्पादन को बढ़ाया जाय, जिसके लिए कुछ रचनात्मक कदम उठाने होंगे।

## पूंजी लगाने के लिए प्रोत्साहन

अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए केवल बचतें ही काफी नहीं होती हैं; उत्पादन प्रक्रिया में उनको पूंजीगत लगाना भी जरूरी होता है। जनता में विनियोजन के प्रति विश्वास से विश्वास कायम करने तथा पूंजी बाजार को फिर से चालू करने के लिए में निम्नलिखित कदमों पर विचार किया जा सकता है—

(क) **अभिप्रेरणा :** किसी भी प्रकार के निवेश निर्णय में लाभ के पहलू की सबसे तीव्र प्रेरणा होती है। लाभ अर्जन को सामाजिक न्याय के सम्वर्द्धन का शत्रु नहीं समझना चाहिए। मूल्य ढांचे पर अनेक आवश्यक प्रतिबन्ध और नियमन लागू करने का तथा प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मूल्य निर्धारण में सरकारी हस्तक्षेप होने की वजह से उद्योगों की प्रगति में बाधा पड़ती है। किसी भी उद्योग में उसकी पूंजी (शुद्ध कीमत) पर कम से कम २० प्रतिशत का करोपरान्त लाभ पैदा होना चाहिए, ताकि उससे आधे अर्थात १० प्रतिशत भाग को उसके शेयर-होल्डरों में डिवीडेण्ड के रूप में बांटा जा सके और शेष आधे भाग को व्यवसाय में लगाया जा सके। शेयर पूंजी पर १० प्रतिशत के डिवीडेण्डों को अधिक नहीं समझना चाहिए क्योंकि प्रिफरेन्स केपीटल, डिबेन्चर आदि जैसी गैर-जोखिमदार पूंजी तक पर भी लगभग वही रकम मिलती है।

(ख) **प्रतिबन्धात्मक कानूनों की समीक्षा**—औद्योगिक विकास और नियमन कानून, पूंजी नियन्त्रण आदेश तथा कम्पनी कानून के कुछ प्रतिबन्धात्मक कानूनों को खत्म कर दिया जाय। यह बात बाजार से ही निश्चित रहनी चाहिए कि किस वस्तु का उत्पादन होना चाहिए और किस मात्रा में।

उद्योग में सीधा हिस्सा लेने की सरकारी नीति अत्यन्त आपत्तिजनक नहीं भी हो सकती है, हालांकि इसका अर्थ होता है अत्यन्त अनिवार्य उद्देश्यों से परे अपनी शक्तियों को बर्बाद करना, बशर्ते कि उसका स्वरूप एकाधिकारी नहीं होता है। लेकिन न्यूनाधिक रूप से सार्वजनिक क्षेत्र एकाधिकारी ही होता है। एकाधिकार, चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र में हों या निजी क्षेत्र में खराब होते हैं, क्योंकि इनसे प्रतियोगिता खत्म हो जाती है जो लगातार वृद्धि और सुधार के लिये नितान्त आवश्यक होती है। एकाधिकार की दशाएं होते हुये भी सरकारी वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों में १९६३-६४ तक १,५७३.५९ करोड़ रुपये की रकमें लगी हुई थीं, लेकिन उन पर शुद्ध परिणाम हुआ ५५.१५ लाख रुपये की हानि का। रेलवे, डाक और तार आदि जैसे विभागीय वाणिज्यिक संस्थानों में १९६३-६४ तक २,३९० करोड़ रुपये की सरकारी पूंजी लगी हुई थीं, लेकिन उस पर उस वर्ष का शुद्ध लाभ था केवल ६५ करोड़ रुपये का। अर्थात् पूंजी पर ३ प्रतिशत से भी कम। सरकार की नीति, निजी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र के उद्देश्य की तरह, लाभ अर्जित करना भी है। उदाहरण के तौर पर हिन्दुस्तान मशीन टूल्स अपनी पूंजी पर २० प्रतिशत, हिन्दुस्तान एन्टीबायोटिक्स लगभग २६ प्रतिशत और स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन लगभग ५२ प्रतिशत लाभ पैदा करता है। इस दृष्टि से सम्पूर्ण निराशाजनक परिणाम को, सरकार की लाभ पैदा नहीं करने वाली नीति कह कर नहीं टाला जा सकता है।

यदि हम पूंजी बाजारों को पुनर्जीवित करना चाहते हैं, तो उत्पादन पर किसी भी रूप में लगाये गये नियंत्रणों पर छूट देना जरूरी है। एक लोकतांत्रिक मुद्रा बाजार में पूंजी नियंत्रक आदेश की कोई जरूरत नहीं होती है। स्वयं जनता को ही इस बात का निश्चय क्यों नहीं कर लेने दिया जाता कि पूंजी कब जारी की जाय, कितनी जारी की जाय और कितनी इकट्ठी की जाय ? विख्यात वित्तीय संस्थाओं द्वारा ज़ामिन होने से पूंजी लगाने वाली जनता में विश्वास पैदा होता है और यह बात इन्हीं संस्थाओं द्वारा निर्णय करने की होती है कि उद्योगों की वित्तीय साख या ऋण शेयरों का अनुपात आदि कैसा है न कि कन्ट्रोलर आफ केपीटल इशूस का, जिसका काम व्यापार में अपने बिना किसी प्रकार के जोखिम के केवल निर्णय देने का होता है।

**(ग) मुद्रा को सस्ती बनाओ :** ऋण नियंत्रण की सरकारी नीति औद्योगिक वृद्धि के लिये काफी हानिकारक रही है। ऋण पर सरकारी नियंत्रण करने का मुख्य उद्देश्य मुद्रास्फीति सम्बन्धी दबावों पर काबू पाना बताया जाता है। लेकिन ऋण पर नियंत्रणों के बावजूद मुद्रास्फीति सम्बन्धी दबाव जारी रहे हैं, जिनसे पता चलता है कि ऋण पर लगाये गये नियंत्रणों से उद्देश्य की प्राप्ति नहीं हुई है। बल्कि इसके विपरीत, ऋण पर लगाये गये नियंत्रण से उत्पादक प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ा है, जिसके अन्तर्गत लागतों में वृद्धि और उत्पादन में कमी हुई है। इससे वस्तुतः मुद्रास्फीति की दशाएं ही पैदा हुई हैं।

सरकार की यूनिट ट्रस्ट, विकास बैंक, विभिन्न केन्द्रीय और राजकीय वित्त निगमों की स्थापना करने सम्बन्धी तथा भारतीय औद्योगिक ऋण तथा निवेश निगम जैसी संस्थाओं को समर्थन देने सम्बन्धी अच्छी नीतियां हैं और उनको प्रोत्साहित करना चाहिए। लेकिन इस सम्बन्ध में हमको श्री जी० एल० मेहता के शब्दों को ध्यान में रखना चाहिये कि इस तरह की संस्थाएं केवल हामीदारी संस्थाएं ही होती हैं, भार लेने वाली नहीं। उद्योगों की जरूरत के अनुसार वित्त प्रबन्ध करने की इनकी क्षमता सीमित ही होती है और अन्ततोगत्वा जनता ही पूंजी बाजार को निश्चित करती है। अतः जब तक आम जनता के विश्वास को पुनर्जीवित नहीं किया जाता है, हामीदार संस्थाएं वस्तुतः कार्यवाहक संस्थाएं ही बन पायंगी, और वे औद्योगिक वृद्धि की जरूरतों को पूरा नहीं कर पायंगी।

**(घ) कृषि क्षेत्र से रकमें ली जाय :** पिछले कुछ वर्षों से कृषि क्षेत्र की आय में वृद्धि हुई है। अतः हमको कृषि क्षेत्र से या तो अधिक कराधान के जरिये या ऐच्छिक और परोक्ष बचतों के जरिये रकमें इकट्ठी करनी चाहिए।

हमारी जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में राज्य को अत्यन्त महत्वपूर्ण योग प्रदान करना है। इसलिये हम करावान और आर्थिक मामलों में राजकीय हस्तक्षेप बिना छुटकारा नहीं है। लेकिन साथ-साथ राज्य को पूंजी बाजार के पुनरुद्धार के लिये समुचित दशाएं पैदा करने के लिये जिम्मेवारी स्वीकार करनी चाहिये। हर्ष की बात है कि उच्च अधिकारियों में अब पुनर्विचार की प्रक्रिया आरंभ हो गई है। वित्त मंत्री महोदय ने कर ढांचे को सरल बनाने का आश्वासन दिया गया है। निर्यात बढ़ाने का तीव्र अभियान शुरू किया जा रहा है। लोकतांत्रिक विचारों के जिनमें सार्वजनिक आलोचनाओं की अनुमति होती है, फलस्वरूप सरकार अब सार्वजनिक क्षेत्र के कामकाजों की समीक्षा करने लगी है। हमें आशा है कि पुनर्मूल्यन की यह प्रक्रिया जारी रहेगी और सरकार, उद्योग तथा जनता सभी मिलकर तीव्र आर्थिक वृद्धि के लिये पूंजी बाजार को पुनर्जीवित करेंगे।

सम्पदा हिन्दी में अर्थशास्त्र
का
पर्यायवाची नाम है
सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# ग्यारह आवश्यकताएं

१. धन प्राप्ति
२. धन रक्षा
३. समय की बचत
४. यश प्राप्ति
५. समालोचना रहित
६. असंग्रह
७. नियमितता
८. आनन्द वृद्धि
९. स्वस्थ जीवन
१०. कीर्ति रक्षा
११. दुःखनिवारण

जब आप हमें सेवा का अवसर देंगे तो उक्त आवश्यकताओं की पूर्ति का समाधान आपको अवश्य मिलेगा ।

उपभोक्ता विक्रय स्थल :

१. नया बाजार, लश्कर
२. बिरलानगर

## जियाजीराव काटन मिल्स, लिमिटेड

बिरलानगर, (ग्वालियर-४) मध्यप्रदेश

मैनेजिंग एजेन्ट
बिरला ग्वालियर प्राइवेट लि०

टेलीफोन नं० ६२४१६
टेलीग्राम बिरला, बिरलानगर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विदेशी मुद्रा की विषम समस्या

श्री कृष्णमाचार्य, वित्तमंत्री, भारत सरकार

उतार-चढ़ाव का विस्तृत विवरण—निर्यात व आयात नीति का निर्धारण—मुद्रा का अवमूल्यन क्यों नहीं ?

वित्तमंत्री भारत सरकार

कई वर्षों से विदेशी मुद्रा की कठिनाई लगातार चली आ रही है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि पाठक यह जानना चाहें कि समय-समय पर विदेशी मुद्रा का संकट क्यों पैदा हो जाता है। इसका सीधा जवाब यह है कि हमारी अनिवार्य आवश्यकताएं, जिसमें हमारे विकास कार्यों के अलावा रक्षा की तैयारियां भी हैं. हमारे उपलब्ध साधनों से अधिक हैं। अपने निजी जीवन में हमारा यही अनुभव है कि जब हम अपनी कमाई से अधिक खर्च करते हैं, तो वह खर्च हमें अपने संचित धन या पूंजी में से करना पड़ता है। इसी प्रकार राष्ट्र को भी, जब जितना वह कमाता है या जितनी बाहर से सहायता मिलती है, उससे अधिक खर्च करना पड़ता है, तो उसे उसको संचित रोकड़ में से निकालना पड़ता है। यह संचित रोकड़ हमारी विदेशी मुद्रा की संरक्षित राशि है।

द्वितीय विश्वयुद्धसे पूर्व भारत की पौण्डनिधि ६४ करोड़ रु० थी, पर दस वर्षों में हमारे देशवासियों का पेट काटकर जून १९४८ में जो १५३७ करोड़ रु० का विदेशी पावना या विदेशी मुद्रा का विपुल कोष संचित हुआ था, वह युद्ध के बाद पुनर्निर्माण और विकास के कार्यों में खर्च हो गया। जून १९४९ तक यह विपुल राशि गिरकर ८२० करोड़ रु० तक रह गई। २९६ करोड़ रु० तो ब्रिटेन को भारत में छोड़े गये हथियारों व बारूद आदि के मूल्य में चुकाना पड़ा और १८७ करोड़ रु० देश विभाजन के समय पाकिस्तान के भाग के रूप में स्टेट बैंक आफ पाकिस्तान को देना पड़ा।

दूसरे विश्वयुद्ध और कोरिया युद्ध के समय निर्यात बहुत बढ़ गये और मूल्य भी ६४७ करोड़ रु० तक ऊंचे हो गये थे। इधर १९४८-४९ तक ७६६ करोड़ रु. तक आयात बढ़ गये, पर फिर कमी बेशी होती रही।

## पौण्ड के साथ अवमूल्यन

सितम्बर १९४९ में ब्रिटेन ने पौण्ड का अवमूल्यन कर दिया और भारत को भी अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करना पड़ा। उस समय हमें विदेशी सहायता अधिक नहीं मिल रही थी। तीसरी योजना के आरम्भ के समय हमारा विदेशी मुद्रा का रक्षित कोष इतना ही था कि किसी तरह हमारे विदेशी व्यापार के सामान्य घट-बढ़ को पूरा किया जा सके। इसलिए तीसरी योजना की पांच वर्ष की अवधि में इस रक्षित कोष में से विदेशी मुद्रा निकालने की व्यवस्था नहीं की गयी थी। तीसरी योजना के प्रथम तीन वर्षों के अन्त में हमारा विदेशी मुद्रा कोष प्रायः इतना ही था, जितना कि योजना के आरम्भ के समय। परन्तु यह इसलिए सम्भव हो सका कि इस अवधि में हमने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से अधिक कर्ज ले लिया।

१९६४-६५ का वर्ष हमारे भुगतान संतुलन के लिए कठिन रहा। देश में खाद्य संकट के कारण हमें बाहर से अधिक अनाज और उर्वरक मंगाना पड़ा और रक्षा की तैयारी में भी हमें और अधिक विदेशी मुद्रा खर्च करनी पड़ी। इसके अलावा विदेशों में भी चीजों के दाम बढ़े, जिसके कारण अपने औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने के हेतु विदेशों से कच्चा माल और यंत्र आदि मंगाने के लिए हमें पिछले वर्ष पहले के वर्षों के मुकाबले अधिक धन की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्था करनी पड़ी। हमें आशा थी कि सन् १९६४-६५ में हमारा निर्यात बढ़ता रहेगा, जिससे अधिक आयात करने में जो रकम खर्च होगी, वह पूरी हो जाएगी।

## आमदनी क्यों नहीं ?

परन्तु वास्तव में निर्यात से सन् १९६४-६५ में हमें मुक्त विदेशी मुद्रा की आमदनी अधिक नहीं हुई। हमारे निर्यात की कुछ चीजों के, जैसे शक्कर के, विदेशी बाजार मूल्य में काफी गिरावट हुई और देश में कुछ चीजों के अभाव के कारण हमें इनके निर्यात में भी कमी करनी पड़ी। इन सबका नतीजा यह हुआ कि मार्च १९६४ के अन्त में हमारा विदेशी मुद्रा कोष १८८ करोड़ था, जो कि मार्च १९६५ के अन्त तक घटकर ११६ करोड़ हो गया, अर्थात १९६४-६५ में इसमें ७२ करोड़ की कमी हुई। पाठकों को याद होगा कि इस कारण हमने पिछले मार्च में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से २० करोड़ डालर लेने का प्रबन्ध किया था। दूसरी ओर हमें मार्च १९६५ और मार्च १९६६ की अवधि में इस कोष में १७ करोड़ ५० लाख डालर वापस करना है। इसलिए चालू वर्ष में हमें उतना ही खर्च करना है, जितना हमें निर्यात से और किसी सहायता से प्राप्त हो सके।

प्रधान मंत्री के आदेश से मई और जून के दौरान आयात के लाइसेंस देना रोक दिया गया, ताकि हम इसका सावधानी से अन्दाज लगा सकें कि पूरे वर्ष में हमें विदेशी मुद्रा की कितनी आमदनी हो सकेगी और कितना खर्च करना होगा और इसी हिसाब से चालू वर्ष की आयात नीति घोषित की जाए। यह ठीक है कि सरकारी और निजी दोनों क्षेत्रों तथा पुराने आयातकों और वास्तविक उपयोगकर्त्ताओं के लिए जो आयात नीति बनाई गई है, वह बहुत ही कठोर है। परन्तु इसका प्रभाव कम करने के लिए हमारा विचार है कि औद्योगिक उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल और यंत्र आदि मंगाने के लिए जितना अधिक रुपए का विदेशी विनिमय और सहायता उपलब्ध हो, उतना दिया जाए।

जिन चीजों की बाहर अच्छी मांग है, उनका निर्यात बढ़ाने की भी सरकार कोशिश कर रही है। निर्यात से अधिक आमदनी करने के लिए और निर्यात की आमदनी को छुपाने की गुंजाइश मिटाने के लिए यह निश्चय हुआ है कि निर्यात के बदले जो आयात के लाइसेंस दिए जाते हैं, वे तभी दिये जायंगे जब निर्यात से प्राप्त विदेशी मुद्रा जमा कर दी जाएगी। हमने आज यह भी घोषित किया है कि निर्यात की बहुत सी चीजों के लिए किस दर से टैक्स क्रेडिट सर्टिफिकेट (कर-जमा पत्र) दिए जाएंगे। इन प्रयत्नों से जितनी सफलता मिलेगी, उसी हिसाब से औद्योगिक उत्पादन जारी रखने के लिए और साधन दिए जा सकेंगे। मुक्त विदेशी मुद्रा से सरकारी खाते में जो आयात किया जा रहा है, उस पर भी कड़ा नियंत्रण रखा जायगा। खाद्य पदार्थ और उर्वरकों को छोड़कर बाकी चीजों में मुक्त विदेशी मुद्रा से सरकारी आयात इस वर्ष पिछले साल से बहुत कम होगा।

जिन उपायों का सरकार ग्रहण करने जा रही है, उनसे चालू वर्ष में हमारे विदेशी भुगतान सन्तुलन में सुधार होने की आशा है। इस बीच पिछले कुछ हफ्तों में हमारे विदेशी मुद्रा रक्षित कोष में जो कमी हुई है, उसकी अखबारों में तथा अन्यत्र काफी चर्चा हुई है। विदेशी मुद्रा की इस खींच का क्या कारण है, यह जान लेना चाहिए। अप्रैल-सितम्बर की अवधि में विदेशी मुद्रा कोष में कमी होना स्वाभाविक है, क्योंकि इन महीनों में हमारा निर्यात हमेशा कम रहता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अप्रैल, मई और जून के महीनों में हमारी निर्यात की आमदनी बहुत बुरी नहीं रही है। दूसरी ओर पिछले कुछ हफ्तों में हमें अपने ऋण चुकाने के लिए काफी रकम देनी पड़ी है। आयात के जो लाइसेंस दिए जा चुके थे, इनके लिए भी काफी मुद्रा खर्च हुई है। हो सकता है कि नई आयात नीति में कड़ाई होने की आशंका से लोगों ने पुराने आयात लाइसेंसों के ऊपर जल्दी-जल्दी माल मंगा लिया हो। यद्यपि इससे आगे चलकर स्थिति में सुधार होगा, फिर भी हमें इसका उपाय करना है कि आयात लाइसेंसों पर एकदम से माल न मंगाया जाए। इसी उद्देश्य से हमने आयात के लिए अग्रिम जमा कराने की योजना चालू की है।

एक सुझाव यह दिया गया है कि रुपए का अवमूल्यन करने से हमारे विदेशी भुगतान की कठिनाइयां हल हो



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएंगी। सरकार ने इस प्रश्न पर बहुत सावधानी से विचार किया है और उसका यह दृढ़ मत है कि अवमूल्यन से हमारी समस्या हल नहीं हो सकती। संक्षेप में इसके कारण निम्नलिखित हैं—

(क) सबसे पहली बात यह है कि अवमूल्यन से हमारी तात्कालिक और मूल समस्या अर्थात् अपनी कमाई से अधिक खर्च न करने की समस्या हल नहीं हो सकेगी, बल्कि इससे उल्टा यह नुकसान होगा कि हम यह समझ बैठेंगे कि हमने काफी कड़ी कार्रवाई कर दी है और इससे अधिक और कुछ करने की जरूरत नहीं है।

(ख) इसके अलावा निर्यात बढ़ाने और आयात होने वाली चीजों को देश में बनाने के प्रयत्न को बढ़ावा देने का भी सबसे अच्छा या दूरगामी तरीका अवमूल्यन नहीं है। हमारी मुख्य समस्या देश में अधिक से अधिक चीजों के उत्पादन की है और इस काम को बड़ा धक्का लगेगा, यदि उन चीजों के दामों में एकाएक और अंधाधुंध वृद्धि हो जाए, जिन्हें हम बाहर से मंगाते हैं और जिनको निकट भविष्य में हम देश में नहीं बना सकते। इसी उद्देश्य से हमने हाल में कुछ चीजों पर आयात और उत्पादन-शुल्क बढ़ाया है, पर अवमूल्यन से तो आयात होने वाली सब चीजों के दाम एकाएक बहुत बढ़ जाएंगे।

निम्न तालिकाएं हमारे व्यापारिक सन्तुलन और विदेशी मुद्रा व कोष में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों पर अच्छा प्रकाश डालती हैं :—

| वर्ष के अंत में | राशि | रिजर्व कोष में परिवर्तन करोड़ रुपयों में |
|---|---|---|
| १९४७-४८ | १,६१२.० | |
| १९४८-४९ | १,०१३.५ | —५९८.५ |
| १९४९-५० | १,०००,६ | — १२.९ |
| १९५०-५१ | १,०२९.२ | — २८.६ |
| | | — ५९३.० (विशुद्ध) |

| वर्ष | निर्यात | आयात | करोड़ रुपयों में व्यापार सन्तुलन | वर्ष के अन्त में राशि | रिजर्व कोष में (करोड़ रु० में) |
|---|---|---|---|---|---|
| १९५१-५२ | ७३०.१ | ९६२.९ | —२३२.८ | ८६४.४ | —१६४.८ |
| १९५२-५३ | ६०१.९ | ६३३.० | — ३१.१ | ८८१.१ | + १६.७ |
| १९५३-५४ | ५३९.७ | ५९१.८ | — ५३.१ | ९१०.० | + २८.९ |
| १९५४-५५ | ५९६.६ | ६८९.७ | — ९३.१ | ८९१.९ | — १८.१ |
| १९५५-५६ | ६४०.३ | ७७३.१ | —१३२.८ | ९०२.४ | + १०.५ |
| | | | | | —१२७.० (विशुद्ध) क० रु० में |

| वर्ष | निर्यात | आयात | व्यापार सन्तुलन | राशि | रिजर्व कोष में (करोड़ रु० में) |
|---|---|---|---|---|---|
| १९५६-५७ | ६३५.२ | ११०२.१ | —४४६.९ | ६८१.१ | —२२१.३ |
| १९५७-५८ | ५९४.२ | १२३३.२ | —६३९.० | ४२१.०२ | —२५९.९ |
| १९५८-५९ | ५७६.३ | १०२९.३ | —४५३.० | ३७८.९ | — ४२.३ |
| १९५९-६० | ६२७.४ | ९३२.३ | —३०४.९ | ३६२.९ | — १६.० |
| १९६०-६१ | ६३०.५ | ११०२.४ | —४७१.९ | ३०३.६ | — ५९.३ |
| | | | | | —५९९.० |

| वर्ष | निर्यात | आयात | करोड़ रुपयों में | राशि | रिजर्व कोष में परिवर्तन (क. रु. में) |
|---|---|---|---|---|---|
| १९६१-६२ | ६६७.५० | ९७८.०० | —३१०.५० | २९७.३१ | —६.३० |
| १९६२.६३ | ६८८.१० | ११२१.०० | —४३३.०० | २९५.१७ | —२.२१ |
| १९६३-६४ | ७९३.२४ | १२२१.१९ | —४२७.९५ | ३०५.८१ | +१०.७१ |
| १९६४.६५ | ८३८.३९ | १२६३.३१ | —४२४.९२ | २४९.६८ | —५६.१३ |
| | | | | | —५३.९३ (विशुद्ध) |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चकबन्दी का महत्व व प्रगति

ज्यों-ज्यों कृषि विकास की ओर जनता का ध्यान जाता है, त्यों-त्यों चकबन्दी का महत्व अधिकाधिक स्पष्ट हो जाता है। आज से बहुत वर्ष पूर्व रायल एग्रीकल्चरल कमीशन ने उपविभाजन और अपखण्डन की बुराइयों को दूर करने का एक मात्र इलाज जोतों की चकबन्दी को बताया था। चकबन्दी का अर्थ है कि एक ही मालिक के बिखरे हुए छोटे-छोटे खेतों की जगह एक स्थान पर इनके मूल्य के बराबर इकट्ठी जमीन ले लेना। श्री एस० पी० सक्सेना ने चकबन्दी के अनेक लाभ गिनाये हैं:—

१—वैज्ञानिक ढंग से खेती की सुविधा।

२—विभिन्न खेतों तक आने जाने में समय, परिश्रम और धन की बचत।

३—अपनी उन्नति के लिए धन खर्च करने का साहस।

४—खेतों के बीच मेंड़ बनाने में भूमि के अपव्यय की रोक।

५—सिंचाई की सुविधा।

६—वैज्ञानिक खेती से कृषि व्यय में कमी।

७—खेतों के परस्पर सीमा संबंधी झगड़ों की समाप्ति से ग्राम में परस्पर सद्भावना और सहयोग के वातावरण की वृद्धि आदि।

इन लाभों के होते हुए भी किसानों में अपनी-अपनी भूमि के प्रबल मोह के कारण चकबन्दी के प्रसार में बहुत सफलता नहीं मिल रही है। इसका मुख्य कारण अपनी भूमि के प्रति मोह ही नहीं, जहां कुछ वर्षों तक किसान ने अपना खून-पसीना एक किया है, विविध भूमि खण्डों की अलग-अलग उपयोगिता और स्थिति भी है। किसी भूमि में पानी अच्छा लगता है और किसी भूमि में कम। किसी भूमि में उपजाऊ शक्ति अधिक होती है और किसी में कम। कृषकों की अशिक्षा भी इसमें बाधा का एक कारण है।

विभिन्न कारणों से चकबन्दी में जब सफलता होती नहीं देखी गई, तब कानून का आश्रय लिया गया। इस कानून के अनुसार एक गांव के बहुसंख्यक सदस्य के चकबन्दी के सिद्धान्त को स्वीकृत कर लेने पर सरकारी अधिकारी बलात् चकबन्दी कर देते हैं। अर्थात एक किसान के बिखरे हुए टुकड़ों की जगह एक साथ एक टुकड़ा दे देते हैं। ऐसा करने में अधिकारियों को किसानों के असन्तोष का भी सामना करना पड़ता है। किन्तु कुछ समय के बाद वे किसान चकबन्दी के लाभ देखकर स्वयं संतुष्ट हो जाते हैं। आज विभिन्न राज्यों में लाखों एकड़ भूमि की चकबन्दी कर ली गई है। मार्च १९६१ तक जो चकबन्दी की गई थी, वह निम्नलिखित तालिका से मालूम होती है—

## जोतों की चकबन्दी

(लाख एकड़ों में)

| राज्य या केन्द्र प्रशासित क्षेत्र | ३१ मार्च सन् १९६१ तक पूर्ण हुआ कार्य | ३१ मार्च सन् १९६१ को चालू कार्य |
|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | ३.१२ | ३.५५ |
| बिहार | ०.६० | २.४३ |
| गुजरात | ६.५२ | ९.२१ |
| महाराष्ट्र | १३.२३ | २०.०२ |
| मध्य प्रदेश | ४०.८८ | ४.१५ |
| मैसूर | ९.८२ | ४.१७ |
| पंजाब | १४७.२८ | १४.२८ |
| राजस्थान | १४.३० | ६.१२ |
| उत्तरप्रदेश | ५३.९५ | ४२.९८ |
| दिल्ली | २.०४ | —— |
| हिमाचल प्रदेश | १.२६ | ०.५१ |
| कुल | २९३.०० | १०७.१२ |

किन्तु इन तीन वर्षों में इस दिशा में बहुत अधिक प्रगति हुई है, जैसा कि राजस्थान के दो वर्ष पूर्व के अंकों से स्पष्ट है। अप्रैल १९६३ तक राजस्थान के १७४६ गांवों में ३१ लाख एकड़ भूमि से अधिक भूमि की चकबंदी की जा चुकी है। तीसरी योजना में करीब ३ करोड़ एकड़ जमीन की चकबन्दी करने की योजना थी। इस योजना के चार वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इन वर्षों में करीब २ करोड़ एकड़ भूमि की और भी चकबन्दी की जा चुकी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| राज्य | व्यय तीसरी योजना व्यय लक्ष्य का योग (लाख रु० में) | भौतिक लक्ष्य ३१-३-६४ तक प्राप्त लक्ष्य (लाख एकड़ों में) | तीसरी योजना कुल लक्ष्य (लाख एकड़ों में) | तीसरी योजना में संभावित वित्तीय व्यवस्था | तीसरी योजना के कार्यक्रम का लक्ष्य एकड़ों में |
|---|---|---|---|---|---|
| १- आन्ध्र प्रदेश | १७.६६ | ४.१५ | ५.१५ | ३७.०० (१७.६६) | १०.०० (४.५०) |
| २- आसाम | अप्राप्य | — | — | २.०० | ०.२० |
| ३- बिहार | २०.३६ | ०.६८ | १.१५ | २०.०० | ५.०० |
| ४- गुजरात | ४२.६४ | ३.६४ | ८.१४ | ६३.२० (५३.२०) | २६.७० (११.७३) |
| ५- जम्मू एवं कश्मीर | १६.८६ | ०.०२ | ०.५६ | २५.०० | १.८० |
| ६- मध्य प्रदेश | ५६.३० | १०.४४ | २०.०४ | ६४.०० | २५.०० |
| ७- मद्रास | — | — | — | १.०० | अप्राप्य |
| ८- महाराष्ट्र | ७५.१७ | २३.३५ | ३८.६१ | ६५.०० | ३२.६१ |
| ९- मैसूर | १६.०२ | ४.२७ | ९.०० | १८.७० | ११.६१ |
| १०- पंजाब | ४६१.८५ | ६२.४३ | ७८.२२ | ४७३.०० | ७८.२१ |
| ११- राजस्थान | ४१.०४ | २३.१८ | २८.१८ | ८०.०० कुल ४०.०० विशुद्ध २५.०० विशुद्ध | २५.०० (१५.००) |
| १२- उत्तर प्रदेश | १११२.२३ | ७०.१६ | १०८.१४ | १०५०.०० | ६०.०० |
| १३- पश्चिमी बंगाल | — | — | — | १०.०० | अप्राप्य |
| १४- दिल्ली | अप्राप्य | ०.०१ | ०.०१ | २.०० | ०.२६ |
| १५- हिमांचल प्रदेश | २५.६८ | १.२७ | २.०२ | ३३.०० | ३.७६ |
| योग | १६१८.६४ | २०३.६३ | २६६.७२ | १६७३.६० | ३१०.२६ |

(कोष्ठक की संख्या संशोधित संख्याएं हैं)


# सम्पदा का राजस्थान विकास अंक

राजस्थान के अर्थशास्त्र के प्रेमियों और विद्यार्थियों के लिए अपूर्व और अद्भुत ज्ञानकोष। मूल्य १.७५ रु०। २ मनीआर्डर भेजकर अण्डल पोस्टल सर्टिफिकेट मंगाइये।

—मैनेजर सम्पदा




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# एशियन विकास बैंक

आज तक अनेक अन्तर्राष्ट्रीय वित्त संस्थाओं की स्थापना हो चुकी है, जो विभिन्न देशों के आर्थिक विकास के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करती है। विशिष्ट अविकसित क्षेत्रों में आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए क्षेत्रीय विकास बैंकों की भी स्थापना की जा रही है। ऐसे बैंकों में इन्टर अमेरिकन डवलपमेंट बैंक, अफ्रीकन डवलपमेंट बैंक, यूरोपियन इनवेस्टमेंट फंड तथा कामनवेल्थ डवलपमेंट कार्पोरेशन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

'एशियायी विकास बैंक' की स्थापना की योजना आज से कई वर्षों पूर्व बनी थी। भारत एवं अन्य देशों ने इसकी स्थापना के लिये सतत प्रयत्न किये, किन्तु राजनैतिक व अन्य कारणों से इसको मूर्त रूप नहीं मिल सका। गत मार्च में न्यूजीलैण्ड में होने वाली सुदूर पूर्व एशियायी आर्थिक सम्मेलन की मीटिंग में भी अमेरिका तथा अन्य उन्नत देशों ने इस बैंक की स्थापना के प्रति कोई विशेष उत्साहन नहीं दिखाया।

किन्तु अप्रैल में जब राष्ट्रपति जोन्सन ने वियतनाम संघर्ष तथा एशिया के आर्थिक विकास के लिए एक अरब डालर की घोषणा की, इस बैंक की स्थापना का प्रश्न पुनः प्रकाश में आया। अब आशा होने लगी है कि विश्व बैंक के मुख्य अध्यक्ष श्री ब्लेक के सतत प्रयत्नों द्वारा अगले वर्ष तक इस बैंक की स्थापना सम्भव हो सकेगी।

इस बैंक की स्थापना हेतु नौ सदस्यों की एक परामर्श समिति की स्थापना की गई है। इसकी पहली बैठक जून में बैंगकाक में हुई। कार्य को शीघ्र निपटाने के लिए चार कार्यकारी दलों को बनाया गया है। ये एशियाई तथा अन्य देशों की सरकारों से सहयोग एवं सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न करेंगे। कई बैठकों के बाद अन्त में अगले वर्ष दिल्ली में होने वाले एशियायी आर्थिक सम्मेलन में स्वीकृति के पश्चात इसकी स्थापना होगी।

इस बैंक की प्रारम्भिक पूंजी एक अरब डालर होगी। यह पूंजी एशियन एवं अन्य देशों (नोन एशियन) को ६०:४० के अनुपात में एकत्रित करनी पड़ेगी। प्रत्येक देश को अपने हिस्से की राशि का आधा भाग उसी समय जमा करवाना पड़ेगा, तथा शेष राशि तीन या पांच वर्षों में देनी होगी। अमेरिका ने २०० मिलियन डालर की स्वीकृति प्रदान करदी है। एशियन देशों में सबसे अधिक हिस्सा जापान द्वारा प्रदान किया जायगा। यह भी २०० मिलियन डालर होगा। भारत ६५ मिलियन डालर तथा आस्ट्रेलिया ८५ मिलियन डालर देगा।

इस बैंक की सदस्यता एशिया आर्थिक सम्मेलन के सदस्यों तक ही सीमित रखी गई है। उत्तरी वियतनाम, इन्डोनेशिया तथा चीन को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया है।

—अमरलाल वर्मा

सितम्बर '६५

## एशिया-विकास बैंक—बीमा व्यवसाय की प्रगति बैंक में जमा राशि

# बीमा व्यवसाय की प्रगति

१९६३ में भारतीय बीमा कम्पनियों को साधारण बीमे की किश्तों से ३० करोड़ १ लाख रु० की शुद्ध आय हुई, जबकि १९६२ में २६ करोड़ ५४ लाख रु० की हुई थी। इसमें अग्नि बीमा से ९ करोड़ २६ लाख रु०, समुद्री बीमा से ५ करोड़ ३८ लाख रु० और अन्य बीमा से १५ करोड़ ३७ लाख रु० की आय हुई।

१९६३ में भारत में विदेशी बीमा कम्पनियों को साधारण बीमे की किश्तों से १० करोड़ ११ लाख रु० की आय हुई, जबकि १९६२ में ९ करोड़ ६ लाख रु० की हुई थी। इसमें अग्नि बीमा से ४ करोड़ १० लाख रु० की, समुद्री बीमा से २ करोड़ ४३ लाख रु० की और अन्य बीमा से ३ करोड़ ५८ लाख रु० की आय हुई।

इसी साल विदेशों में भारतीय कम्पनियों को १६ करोड़ ८० लाख रु० किश्तों से मिला, जबकि १९६२ में १७ करोड़ ४७ लाख रु० मिला था। इसमें अग्नि बीमा से ७ करोड़ ६६ लाख रु०, समुद्री बीमा से २ करोड़ ७८ लाख रु० और अन्य बीमा से ६ करोड़ ३६ लाख रु० की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आय हुई ।

उपर्युक्त जानकारी भारत सरकार के बीमा नियंत्रक द्वारा प्रकाशित इंडियन इंशोरेंस ईयर बुक १९६४ में दी गई है ।

## बीमा कम्पनियों की संख्या

३१ दिसम्बर, १९६४ को बीमा कानून, १९३८ के अन्तर्गत, साधारण बीमे के लिए १३७ बीमा कम्पनियां रजिस्टर्ड थीं । इसमें से ७२ भारतीय और ६५ विदेशी कम्पनियां थीं । ४३ भारतीय और ४० विदेशी कम्पनियां तीनों श्रेणियों के बीमे के लिए, ७ भारतीय और १० विदेशी कम्पनियां २ श्रेणियों और २२ भारतीय तथा १५ विदेशी कम्पनियां केवल एक श्रेणी का बीमा करने के लिए दर्ज थीं । भारतीय जीवन बीमा निगम भी अग्नि, समुद्री और अन्य साधारण बीमा व्यवसाय के लिए दर्ज है ।

## बीमा व्यापार की प्रगति

१९६३ में भारतीय बीमा कम्पनियों ने ३८ करोड़ २५ लाख रु० की किश्तों का कारबार किया । इसमें १२ करोड़ ४६ लाख रु० अग्नि बीमा से, ८ करोड़ ३ लाख रु० समुद्री बीमा और १७ करोड़ ७६ लाख रु० अन्य बीमे की किश्तों का था । इसी प्रकार विदेशी बीमा कम्पनियों को १.४ करोड़ ३२ लाख रु० की कुल किश्तों से आय हुई, जिनमें ६ करोड़ ३६ लाख रु० अग्नि बीमा, २ करोड़ ५३ लाख रु० समुद्री बीमा और ४ करोड़ ४३ लाख रु० अन्य बीमा से मिले । विदेशों में भारतीय कम्पनियों ने कुल १० करोड़ ७ लाख रु० की किश्तें दर्ज कीं, जिसमें २ करोड़ ८ लाख रु० अग्नि बीमा से, १ करोड़ ८९ लाख रु० समुद्री बीमा और ६ करोड़ १० लाख रु० अन्य बीमा की मद से आया । परन्तु भारत से बाहर बीमा कम्पनियों को अग्नि और समुद्री बीमा से १९६२ के मुकाबले १९६३ में कम आय हुई ।

## बैंकों में जमा राशि

रिजर्व बैंक के अध्ययन के अनुसार १९६१-६२ से १९६३-६४ के समय में कम्पनियों में जनता की जमा राशि की वृद्धि में उल्लेखनीय प्रगति हुई है । इस प्रकार की जमा हुई राशि की मात्रा मार्च १९६५ में १७८ कम्पनियों से पास १८६ करोड़ रुपया थी, जबकि पिछले वर्ष १६७७ कम्पनियों के पास १५४ करोड़ रुपया तथा १९६२ में १५४२ कम्पनियों के पास १३६ करोड़ रुपया थी ।

इन कम्पनियों से १९६४ में जनता की जमा राशि ११४ करोड़ रुपया थी, मैनेजिंग एजेन्टों की ४० करोड़ रुपया, सैक्रैटरी और खजान्चियों की १८ करोड़ और अनुदान आदि भी राशि १५ करोड़ रुपया जमा थी ।

बैंक—भिन्न कम्पनियों में जमा राशि की वृद्धि का एक प्रमुख कारण उनके द्वारा दिये गये ब्याज की ऊंची दर है । किसी २ कम्पनी ने ब्याज की दर १२ प्रतिशत प्रति वर्ष तक ही है । अधिकांश जमा राशि पर फिक्सड डिपाजिट की कोई सीमा निर्धारित नहीं है ।

मार्च, १९६४ तक जमा हुई कुल राशि १८६ करोड़ में १३९५ नन फाइनैन्सियल जवाइन्ट स्टाक कम्पनियों द्वारा स्वीकृति राशि १३६ करोड़ रुपया अथवा (७३ प्रतिशत) थी, अन्य वित्तीय संस्थानों की संख्या २५४ तथा जमा राशि ३५.५ करोड़ (१९ प्रतिशत) थी और १४० हायर परचेज कम्पनियों में १४.८ करोड़ रु० की राशि थी (अर्थात् ८ प्रतिशत) ।

८३३ पब्लिक लिमिटेड कम्पनियों के पास जमाशुदा राशि १२४.८ करोड़ रुपया थी । ९४७ प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियों के पास राशि ६०.८ करोड़ रुपया थी । विदेशी कम्पनियों की ९ शाखाओं ने ३० लाख रुपया राशि जमा की । ● ●


# पाकिस्तान के आक्रमण से उत्पन्न संकट काल में हम

१. एक-एक पैसे की बचत करें
२. अनाज का एक दाना भी बरबाद न करें
३. अपने कार्य में एक क्षण भी न खोयें ।

—मैनेजर सम्पदा




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## राष्ट्रीय आय बढ़ गई !

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन ने अभी हाल में १९६४-६५ की राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में अपने प्रारम्भिक अनुमान का ब्यौरा दिया है। इसके अनुसार राष्ट्रीय आय की वृद्धि का वास्तविक प्रतिशत इस वर्ष में ७.५ प्रतिशत बताया गया है, जबकि पिछले वर्ष १९६३-६४ में यह प्रतिशत ४.५ प्रतिशत था।

१९६४-६५ में हुई यह वृद्धि तृतीय पंचवर्षीय योजना के पहले ४ सालों में सबसे अधिक है और करीब-करीब १९६०-६१ के बराबर है, जो कि १९४८-४९ के बाद अधिकतम थी। इसी सर्वे के अनुसार राष्ट्रीय आय में वृद्धि का औसत पहले ४ वर्षों में ४.१ प्रतिशत था। इसी अवधि में वार्षिक वृद्धि कृषि में २.३ प्रतिशत, खनिज व योग में ७.४ प्रतिशत और परिवहन एवं संचार में ४.५ प्रतिशत तथा शेष क्षेत्रों में ६ प्रतिशत थी।

प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि का अनुमान इसी रिपोर्ट के आधार पर ४.९ प्रतिशत है। तीसरी योजना के पहले ४ वर्षों में वार्षिक वृद्धि १.८ प्रतिशत बताई गई है। निम्नांकित तालिका द्वारा यह स्पष्ट होगा कि व्यक्तिगत क्षेत्र में योगदान से १९६४-६५ में कितनी वृद्धि हुई—

| क्षेत्र | कुल राष्ट्रीय आय का प्रतिशत १९६३-६४ |
|---|---|
| कृषि | ३५.९ |
| माइनिंग फैक्टरी | १०.५ |
| संचार | ००.६ |
| रेलवे | २.७ |
| बैंक और जीवन बीमा | १.२ |
| यातायात और व्यापार | १५.४ |
| अन्य | ३३.७ |
| कुल | १०० |

नीचे दी गई तालिका में १९५०-५१ से १९६४-६५ तक राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय की कमी बेशी को स्पष्ट किया गया है—

| वर्ष | राष्ट्रीय आय १९४८-४९ के मूल्यों के आधार पर (अरब रु० में) | प्रति व्यक्ति (रु. में) १९४८-४९ के मूल्य १९४१-१९५१ १९६१ की जनसंख्या के आधार पर |
|---|---|---|
| १९५१.५१ | ८८.५ | २४७.५ |
| ५५-५६ | १०४.८ | २६७.८ |
| ६०-६१ | १२७.३ | २९३.२ |
| ६१-६२ | १३०.६ | २९४.३ |
| ६२-६३ | १३३.१ | २९३.४ |
| ६३-६४ | १३९.१ | २९९.८ |
| ६४-६५ | १४९.३ | ३१४.४ |

—

## पश्चिमी जर्मनी की आर्थिक समृद्धि

सम्पदा के जुलाई अंक में दुर्भाग्य से विभक्त पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी के आर्थिक विकास के कुछ तुलनात्मक अंक दिये गये थे। ये अंक पूर्वी जर्मनी द्वारा प्रकाशित किए गये थे। इन अंकों से प्रकट होता था कि पूर्वी जर्मनी अधिक तीव्र गति से उन्नति कर रहा है।

पश्चिमी जर्मनी ने भी कुछ अंक अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए प्रकाशित किये हैं, जिससे हम विपरीत तथ्य पर पहुँचते हैं। पाठकों की जानकारी के लिए वे अंक भी प्रकाशित किये जा रहे हैं :—

| | |
|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी की जनसंख्या | ५८० लाख |
| पूर्वी जर्मनी की जनसंख्या | १८० लाख |
| **विदेशी व्यापर** | |
| पश्चिमी जर्मनी | ५ अरब डालर |
| पूर्वी जर्मनी | ६७ करोड़ ,, |
| **अन्य देशों को विकास के लिए सहायता (१९६४ तक)** | |
| पश्चिमी जर्मनी | ६ अरब ४० करोड़ डालर |
| पूर्वी जर्मनी | ६ करोड़ ३० लाख ,, |

### जीवन-स्तर

| | |
|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी | १०० प्रतिशत |
| पूर्वी जर्मनी | ७० ,, |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## छुट्टियां

| | |
|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी | २० |
| पूर्वी जर्मनी | १२ |

## क्रय-शक्ति

| | |
|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी | १०० प्रतिशत |
| पूर्वी जर्मनी | ६० ,, |

## औद्योगिक-उत्पादन

| | |
|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी | १०० प्रतिशत |
| पूर्वी जर्मनी | ७५ ,, |

## प्रति व्यक्ति विनियोजन

| | | |
|---|---|---|
| पश्चिमी जर्मनी | १४६० | मार्क १०० प्रतिशत |
| पूर्वी जर्मनी | ६१० | मार्क ६२ ,, |

जर्मनी में एक मोटर गाड़ी की कीमत ५ हजार मार्क (१२५० डालर) है । पूर्वी जर्मनी में यह कीमत करीब तीन गुना है और समय पर मिलती भी नहीं है ।

## अन्न का उत्पादन व जनसंख्या

१९५१-५२ से १९६०-६१ तक के दशक में कृषि उत्पादन से ४० प्रतिशत अधिक उत्पादन हुआ होगा, किन्तु तीसरी योजना की अवधि में ६ प्रतिशत वार्षिक अतिरिक्त उत्पादन की बजाय केवल २.८ प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन हुआ, यद्यपि गत वर्ष भी योजना आयोग ५.६ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि का अनुमान लगा रहा था ।

१९६२-६३ और १९६३-६४ में मूल्य वृद्धि और कम उत्पादन ने स्थिति और भी संकटमय कर दी है। अब भय प्रकट किया जा रहा है कि आगामी वर्षों में ५.६ प्रतिशत अतिरिक्त उत्पादन की सम्भावना पूर्ण नहीं होगी ।

सरकारी सूत्रों के अनुसार जनसंख्या प्रति वर्ष २.४ से २.५ प्रतिशत बढ़ रही है । इसका अर्थ यह है कि प्रति वर्ष १ करोड़ मुख और खाने वाले बढ़ जाएंगे ।

चौथी योजना के आवेदन में यह अनुमान लगाया गया है कि कृषि उत्पादनों में निम्नलिखित वृद्धि होगी—

| | |
|---|---|
| अनाज | १२०० लाख टन |
| तिलहन | १००० ,, ,, |
| गन्ना | १३५० ,, ,, |
| कपास | ८५ लाख गांठ |
| जूट | ९० ,, ,, |

ये अनुमान इस आधार पर लगाये गये थे कि अनाज में ६.१ प्रतिशत तथा दूसरी फसल में ४.८ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि होगी ।

१९६४-६५ में अनाज ८.८ करोड़ टन पैदा हुआ, जब कि १९६१-६२ में ८.१ करोड़ टन ही पैदा हुआ था। चावल का उत्पादन भी पिछले वर्षों के ३६८ लाख टन से बढ़कर ३८७ लाख टन हो गया है । गेहूँ का उत्पादन इस वर्ष १२० लाख टन हुआ है जबकि गत वर्ष ८७ लाख टन था । गन्ने का उत्पादन भी गुड़ के रूप में १२० लाख टन हुआ है । चीनी का उत्पादन १९६४-६५ में ३२ लाख टन पैदा होने का अनुमान है, जबकि १९६३-६४ में २५.६९ लाख टन हुआ ।

उत्पादन के आशाजनक समाचारों के बावजूद मंहगाई कम नहीं हो रही ।

## प्रतिकूल सन्तुलन

साधारण समझ की बात है कि खर्च आमदनी से कम होना चाहिए या बाहर से जितनी चीज मंगाई जाय, उससे ज्यादा बाहर भेजी जाए, लेकिन हमारे देश में इसके विपरीत चल रहा है ।

आयात १,२६३ करोड़ रुपये
निर्यात ८३८ करोड़ रुपये

यह आंकड़े हैं १९६४-६५ के। पिछले साल भी इसी तरह का ढंग था—आयात थे १,२२३ करोड़ रुपये के और निर्यात थे ७९३ करोड़ रुपये के । बताया गया है कि आयात में सबसे ज्यादा पैसा मशीनरी पर खर्च हुआ (४०५ करोड़ रुपये) और दूसरा नम्बर अनाज का (२०७ करोड़ रुपये) रहा ।

गल्ले का आयात देश के लिए सबसे बड़ा कलंक और अभिशाप है । मगर उसके कम होने की संभावना नहीं दीखती । अभी खेती-वस्तुओं की कीमतों के सम्बन्ध में एक कमीशन की रिपोर्ट निकली है । उसने सिफारिश की है कि पांच लाख टन चावल विदेश से मंगाया जाय। साथ ही यह भी कहा है कि एक प्रदेश से दूसरे में गल्ला आने-जाने के लिए जो जोन बने हैं, और पाबन्दियां लगी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे वे जारी रहनी चाहिए।

लेकिन इस कमीशन के एक और प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री डा० राजकृष्ण ने अपना विरोध मत प्रकट करते हुए मांग की है कि यह ज़ोन हट जाने चाहिए, क्योंकि अगर यह बने रहते हैं तो सरकार पर देहातों से गल्ला जमा करने का भार इतना बढ़ जायगा कि उसे सम्हालना मुश्किल होगा। मगर सरकार की नीति इसके खिलाफ है।

मंहगाई लगातार वृद्धि पर है और साथ ही नियोजन का खर्च भी। यह बहुत खतरनाक स्थिति है जो देश के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। क्या कोई सूरत ऐसी नहीं है कि सरकार और व्यापार के बीच विश्वास पैदा हो सके और दोनों सद्भावना के साथ अपनी जिम्मेदारी को निभायें ताकि देश बच जाय और स्वाधीनता दिवस सचमुच सारे देशवासियों के लिए स्वाधीनता दिवस बन सके और गांव-गांव में, घर-घर में उसकी खुशी मनाई जाय?

## अमरीका में गरीबी

एक अनुमान के अनुसार अमेरिका में ३५० लाख परिवार गरीबी की हालत में रह रहे हैं। इनमें से १४० लाख स्त्रियां हैं, जिनकी आयु १६ वर्ष या अधिक है। १५ लाख स्त्रियां ऐसे परिवारों में रहती हैं जिनकी वार्षिक आय ३ हजार डालर से कम है। इनमें से ६७ लाख स्त्रियां अपने पतियों के साथ रहती हैं। २३ लाख अपने परिवारों की मुखिया हैं और ५ लाख लड़कियां (१६-१७ साल की) अपने घरों में रहती हैं। १२ लाख स्त्रियां अपने रिश्तेदारों के घर में रहती हैं। ३५ लाख स्त्रियों को सरकारी सहायता निर्वाह के लिए मिलती है।

## अणुशक्ति से खारी जल पेय जल बनेगा

एक अमेरिकी इन्जीनियरिंग कम्पनी ने नये अनुसंधानों के आधार पर यह रिपोर्ट प्रस्तुत की है कि आणविक बिजली समुद्र के खारी पानी को मीठे पेय जल में इतनी कम लागत पर परिणत कर सकेगी, जो निःक्षारीकरण की वर्तमान लागत के लगभग १/५ के बराबर ही होगी। आणविक बिजली के द्वारा खारी पानी के निःक्षारीकरण की लागत अनुमानतः प्रति हजार गैलन २२ सेण्ट पड़ेगी। यह लागत उतनी ही है, जितनी अमेरिका के शुष्क क्षेत्रों के लोग अन्य साधनों से प्राप्त प्राकृतिक पेय जल के लिए इस समय अदा करते हैं, या कुछ वर्षों में अदा करेंगे।

यह अनुमान बेचटेल कारपोरेशन ने अमेरिकी सरकार को दी गई अपनी रिपोर्ट में प्रस्तुत किया है। यह कारपोरेशन अमेरिका की सबसे बड़ी इन्जिनियरिंग फर्मों में से एक है।

बेचटेल की रिपोर्ट से पता चलता है कि लोस एंजेल्स के दक्षिण में ३० करोड़ डालर की लागत से एक संयत्र का निर्माण करके कम लागत के निःक्षारीकरण को सम्भव बनाया जा सकता है। यह संयत्र जो, १९७० के दशाब्द के प्रारम्भिक चरण में चालू हो जाएगा, प्रतिदिन १५ करोड़ गैलन पेय जल तैयार करेगा। इसके अतिरिक्त वह २० लाख व्यक्तियों वाले नगर के लिए पर्याप्त मात्रा में बिजली भी सुलभ कर सकेगा।

## निजी क्षेत्रों से पूंजी

यद्यपि भारत के प्रमुख उद्योगपति श्री जे० आर० डी० टाटा तथा अन्य अनेक उद्योगपतियों ने चतुर्थ योजना में निजी क्षेत्रों द्वारा बहुत अधिक राशि एकत्र करने में संदेह प्रकट किया है तथापि योजना आयोग का यह विश्वास है कि भारतीय उद्योग ४२५० करोड़ रुपये तक के साधन एकत्र कर सकेंगे। देश के आन्तरिक साधनों से १९५० करोड़ रुपया एकत्र हो सकता है। योजना आयोग की सम्मति में १४५ करोड़ रुपया वे उद्योगों को दे सकते हैं। विभिन्न वित्तीय संस्थान और एजेन्सियां भी २५० करोड़ रुपया तक जुटा सकती है और दूसरे स्रोतों से भी २२० करोड़ रुपया एकत्र हो सकता है। नई पूंजी चाहे वह देश में एकत्र की जाय अथवा विदेश में, ९०० करोड़ रुपये तक की प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार कुल ४१६५ करोड़ रुपया निजी क्षेत्रों से एकत्र हो सकता है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# योजना बद्ध आर्थिक व्यवस्था*

श्री हीरालाल

## स्वचालित अर्थ-व्यवस्था

भारतीय आयोजन में अर्थ-व्यवस्था को स्वयं-स्फूर्त बनाने की नीति अपनाई गई है और आशा है कि चौथी योजना के अन्त तक यह कार्य पूरा हो जायेगा। इस नीति को पूरा करने में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होते हैं यथा हमारी अर्थ-व्यवस्था में विकास को बढ़ावा देने की कौन-कौन-सी शक्तियां हैं; एक अल्प-विकसित देश में आर्थिक विकास को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया जा सकता है; आर्थिक विकास की प्रक्रिया में विदेशी सहायता क्या भूमिका अदा कर सकती है अथवा अर्थ-व्यवस्था को केवल अपने ही साधनों से विकास के पथ पर कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है ? इन सब प्रश्नों की मूल जड़ भुगतान संतुलन अर्थात् संतुलित आर्थिक विकास में निहित है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था का चित्र एक अवरुद्ध विकास का चित्र है क्योंकि भारतीय अर्थ-व्यवस्था पर गति-अवरोध और ढांचे सम्बन्धी असंतुलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हमारा व्यावसायिक ढांचा भी एक-सा न होने के कारण कृषि क्षेत्र में बेकारी बहुत बड़े पैमाने पर फैली हुई है। यह निर्विवाद है कि बेकारी को दूर करने का उपाय आर्थिक-विकास को बढ़ावा देना मात्र है, परन्तु रोजगार के अवसर बढ़ाने की स्कीमें मात्र शुरू करने से, जिनमें उत्पादकता का ध्यान न रखा गया हो, समस्या हल नहीं होगी। आवश्यकता आर्थिक विकास की है न कि उत्पादन का ध्यान रखे बिना रोजगार के अवसर पैदा करने की। आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये स्वचालित अर्थ-व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें प्रतिव्यक्ति उत्पादन की दर निरन्तर बढ़ती रहे।

इसका मतलब यह हुआ कि इस प्रक्रिया को अनिश्चित काल तक जारी रखने में विकास प्रक्रिया को स्वचालित शक्तियों पर निर्भर रहना चाहिये। जैसाकि श्री रिडवे ने अपनी पुस्तक 'डेवेलपमेंट आफ इण्डियन इकानमी' में कहा है "आर्थिक विकास के लिये दीर्घकालीन व्यूह रचना अथवा नीति का प्रमुख उद्देश्य प्रतिव्यक्ति उपयोग और उत्पादन के स्तरों में वृद्धि लाने के उपाय काम में लाना है ताकि यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहे।" संतुलित विकास का अर्थ यह नहीं कि आयातित तथा निर्यातित वस्तुओं में संतुलन हो बल्कि इसका अर्थ यह है कि आयातित वस्तुओं का कुल मूल्य, निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के कुल मूल्य के बराबर हो। द्वितीय महा-युद्ध से पूर्व अर्थात् १९३८ में भारत द्वारा इंग्लैण्ड को जितनी तैयार चीजों का भारत को निर्यात किया, वे बहुत कम थीं परन्तु फिर भी भारत ही इंग्लैण्ड का ऋणी था।

## निर्यात व्यापार की सीमित क्षमता

यह तो सत्य है कि विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था में शोधन-संतुलन के अन्तर को बढ़ाने की प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है क्योंकि एक अल्प-विकसित देश में इस प्रकार की प्रवृत्ति पाई जाने का मूल कारण यह है कि निर्यात वस्तुओं के उत्पादन लोच के मुकाबले में आयात की सीमान्त क्षमता अधिक रखने की प्रवृत्ति बनी रहती है। भारत में आयात की वृद्धि के लिये काफी ताकतें काम कर रही हैं, जबकि चाय, पटसन, कपड़ा अन्य परम्परागत पदार्थों के निर्यात-व्यापार द्वारा विदेशी मुद्रा कमाने की अपनी सीमायें हैं। इस प्रकार भारत में निर्यात-व्यापार बढ़ाने की क्षमता सीमित है। इन परिस्थितियों में यदि विकास की प्रक्रिया को अपने ही साधनों से जारी नहीं रखा गया, तो हमें विदेशी मुद्राकोष को खर्च करने के अतिरिक्त बहुत कुछ दूसरे देशों से विदेशी मुद्रा उधार लेने की क्षमता पर निर्भर रहना पड़ेगा, जबकि विकास-नीति का मूल अंग अर्थ-व्यवस्था को आयात पर अत्यधिक निर्भर रखने से बचाना होना चाहिये। इसलिये आवश्यक है कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था को आत्म-निर्भर बनाने के लिये ऐसी नीति अपनाई जाये, जिससे कि इसका संतुलित विकास हो सके यानि अर्थ-व्यवस्था का इस प्रकार नियोजन किया जाये जिससे उद्योग, कृषि तथा अन्य क्षेत्रों की सभी आवश्यकतायें कम-से-कम समय में देश के भीतर ही पूरी हो सकें और यह केवल योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था के अन्तर्गत ही सम्भव हो सकता है।

*जुलाई ६१ के अंक में इस लेख का पूर्वार्ध प्रकाशित हो चुका है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जनजागरण की भावना

आयोजित अर्थ-व्यवस्था को फलीभूत करने के लिये आज सर्वप्रथम आवश्यकता सामाजिक क्रान्ति की है, ऐसी क्रान्ति जो उन विचारों, परम्पराओं व अन्य विश्वासों का उन्मूलन कर दे, जो योजनाबद्ध अर्थ-व्यवस्था के मार्ग में बाधक हो रहे हैं। यह ध्यान रखने योग्य बात है कि लोकतंत्र तथा समाजवाद के प्रतिकूल हिंसात्मक क्रान्तिकारी साधन इस दिशा में कभी भी उचित परिणाम नहीं दे सकेंगे और न ही उनका प्रभाव चिरस्थायी हो सकता है। सामाजिक क्रान्ति तो केवल शान्तिपूर्ण तरीकों से जनभावना को आन्दोलित करके ही लाई जा सकती है। इस क्रान्ति की आवश्यकता केवल गांव में रहने वाले अशिक्षित, साधारण कृषक अथवा नागरिक को ही नहीं है, बल्कि शहर में रहने वाले शिक्षित वर्ग, जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि, सरकारी कर्मचारी व सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, सभी के लिए है। आज हमें हर व्यक्ति के मुंह से योजनाओं के बारे में अच्छे व बुरे विचार सुनने को मिलते हैं, किन्तु अधिकांशतः वे विचार विपक्ष में ही होते हैं। सोचने की बात है कि क्या कारण है कि जनसाधारण विकास योजनाओं के प्रति इतना उदासीन है? इस विश्लेषण से केवल यही निष्कर्ष निकलता है कि इन लोगों में अधिकांशतः वही शक्ति है जो वास्तविक स्थिति व समस्याओं से अनभिज्ञ है। स्वस्थ आलोचना एक स्वस्थ परम्परा का द्योतक है। कोई भी नागरिक देश व योजनाओं में घुसी हुई बुराइयों व जनता के धन के दुरुपयोग को सहन नहीं कर सकता। किन्तु यह भी उसका कर्त्तव्य हो जाता है कि जनप्रतिनिधियों तथा योजना को क्रियान्वित किये जाने के लिए जुटे रहे सरकारी व गैर-सरकारी कर्मचारियों को उनमें व योजना में प्रचलित बुराइयों को दूर करने के लिए सम्भावित उपाय पेश करे न कि आलोचकों द्वारा प्रस्तुत की गई त्रुटियों में और भी उलझ जावे और वास्तविकता से परे हटता चला जाये। इस प्रकार देश का हित होने की बजाय अहित होने की अधिक सम्भावना है।

हमें इस समय अधिक सतर्क व कर्तव्य-परायण होने की आवश्यकता है, जबकि संसार के सब राष्ट्रों की नजरें हमारे योजनाबद्ध-अर्थव्यवस्था की सफलता-असफलता पर लगी हुई है। वास्तव में अब योजनायें हमारे लिए प्रयोग न रहकर, दैनिक जीवन का एक अंग समझी जानी चाहिएं। इस सन्दर्भ में भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने कर्तव्य को पहचाने और यह अनुभव करे कि ये योजनायें न सरकार की हैं न स्थानीय संस्थाओं की। इनको कार्यरूप में परिणत करने वाले न जन-प्रतिनिधि हैं, न सरकारी कर्मचारी हैं, बल्कि इनकी पूर्णता में एक इकाई के रूप में उसका स्वयं का सबसे बड़ा कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व है। गांव का रहने वाला आज भी अशिक्षित व निर्धन है, किन्तु साहस व धैर्य में उसकी समता कहीं की जा सकती। इन योजनाओं को सफल बनाने के लिए सर्वप्रथम उसे शिक्षित करना होगा, ऐसी शिक्षा जिसका सम्बन्ध केवल अक्षरज्ञान से नहीं अपितु कृषि, पशुपालन, सहकारिता आदि सभी से है और इनमें मुख्य है उसका कर्तव्य के प्रति जागरूक करना। यही वे बातें हैं जिनको सामाजिक क्रान्ति द्वारा जन-भावना को आंदोलित कर बताने की परम आवश्यकता है।

● ●


**भारत की उद्योग नीति**

लेखक :
रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै. "सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

**अशोक प्रकाशन मन्दिर,**
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

ढाई आखर प्रेम का—लेखक-श्री वसन्त कानेटकर। प्रकाशक—पाप्युलर प्रकाशन, ३५ सी तारदेव रोड, बम्बई, ३४। मूल्य ३.०० रुपये।

यद्यपि इस नाटक का वर्ण्यनीय विशेष प्रेम है, जो प्रायः सब कथाओं व नाटकों आदि का होता है, किन्तु इसकी अपनी शैली है, जो वर्तमान समाज और उसकी नई उथली मान्यताओं पर गम्भीर चोट करती है। आज किस तरह युवक और युवतियां प्रेम के उन्माद में विवेक को छोड़ देते हैं। यह इस प्रहसनात्मक नाटक के प्रत्येक पृष्ठ से ज्ञात होता है, किन्तु इसका उद्देश्य केवल उपहास नहीं है। इस नाटक का हास्य विनोद-गर्भित उपहास सहानुभूति या संवेदना को जागृत करते हुए भी पाठक या दर्शक के हृदय पर आज के उथलेपन के प्रति एक विरक्ति और वितृष्णा पैदा करता है। कथा वस्तु में घटनाओं का आकस्मिक मोड़ कुतूहल पैदा करता है। नाटक के कथोपकथन बहुत चुटीले और जानदार हैं। प्रोफेसर वर्मा के एक-एक वाक्य में ऐसा व्यंग है, जो हमारे आज के समाज को अपनी नई मान्यताओं के प्रति कचोटता है।

मंच पर अभिनय से यह नाटक दर्शकों का मनोरंजन करेगा और पढ़ने से पाठकों का। श्री वसन्तदेव का अनुवाद भी बहुत परिष्कृत हुआ है और ऐसा नहीं मालूम होता कि हम अनुवाद पढ़ रहे हैं।

२. धूप के साये में—लेखक, अनुवादक और प्रकाशक वही। मूल्य तीन रुपये।

प्रस्तुत नाटक भी आज के एक सामाजिक परिवार की कहानी है। उसमें पुरानी और नई मान्यताओं का अच्छा संघर्ष दिखाया है। वृद्ध और युवक की मनोवृत्ति किस तरह परस्पर विपरीत होती है, अपराध की भावना पैदा होकर पहले टोंचती है, फिर कुरेदती है, और अवसर पाकर किले की दिवारों में सेंध लगाती है, यह इस नाटक के मुख्य पात्र दादाजी के चित्रण से स्पष्ट है। दादाजी भीतर से मुलायम और बाहर से बहुत कठोर हैं। उनके परिवार के अन्य व्यक्ति भी उनके आतंक से डरे हुए दीखते हैं और हमेशा विद्रोह के लिए भी तैयार रहते हैं। उन सब की अपनी-अपनी अभिलाषाएं और प्रवृत्तियां हैं, जो नाटक के संघर्षमय कथानक को बहुत उज्ज्वल करती हैं।

जाग उठा है रायगढ़—लेखक और प्रकाशक वही। मूल्य ४) रु०।

यह भी लेखक का मराठी से अनूदित एक उत्कृष्ट नाटक है। इसी पुस्तक पर संगीत नाटक एकादमी ने १९६४ का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार दिया था। छत्रपति शिवाजी ने अपने पुत्र शम्भूराजा के साथ जो व्यवहार किया, उसके कारण और घटना क्रम दोनों का उल्लेख इस नाटक में किया गया है। इसमें शिवाजी के हृदय की कठोर और करुण अनुभूतियों का परिचय मिलता है। शिवाजी जैसा बुद्धिमान व्यक्ति भी भ्रान्तियों का शिकार हो सकता है और कर्त्तव्य बुद्धि के साथ-साथ पितृ वात्सल्य की भावना का संघर्ष किस प्रकार होता है, यही बताना इस नाटक का उद्देश्य दीखता है।

समाजवाद—प्रकाशक वही। मूल्य १)।

प्रस्तुत छोटी की पुस्तिका में विभिन्न प्रामाणिक अर्थशास्त्रियों के ५ लेख संग्रहीत किये गये हैं। इन सबका विषय भारत में समाजवाद की स्थापना और उसकी सम्भावनाएं हैं। आज देश में जिस उत्साह के साथ समाजवाद का नारा लगाया जा रहा है। उसके विरुद्ध विभिन्न विद्वानों ने अपनी शान्त तथा निश्चित भाषा में नम्र आवाज उठाई है। इस पुस्तिका में ५ लेख हैं—'लोकतांत्रिक समाजवाद से भारत को लाभ होगा?' 'राष्ट्रीयकरण किधर' 'स्वाधीनता और आर्थिक वृद्धि,' 'क्या इनका हल समाजवाद में मिलेगा' और 'समाजवादी समाज लोकतांत्रिक नहीं हो सकता।' इन लेखों से मतभेद रखते हुए कोई भी यह आलोचना कर सकता है कि यह लेख प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण के परिणाम हैं, किन्तु हम पाठकों से यह अनुरोध करना चाहते हैं कि सत्य पर किसी एक वाद का एकाधिकार नहीं होता। इसलिए हमें निष्पक्ष होकर दूसरे का दृष्टिकोण भी समझने का प्रयत्न करना चाहिए। इस दृष्टि से यह छोटी-सी पुस्तिका लाभकारी सिद्ध होगी।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

**पक्षी जीवन**--लेखक—श्री राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, प्रकाशक वही। मूल्य ४) रु०।

यह मानव का स्वभाव है कि वह अपने को केवल मानव तक सीमित नहीं रखता। वह अपने समीपवर्ती पशु-पक्षियों में भी रूचि लेता है और उनके स्वभाव तथा जीवन की विभिन्न प्रवृत्तियों में रस लेता है। मानव की यह प्रवृत्ति अनादि काल से चली आई है। कविवर बाल्मीकि एक क्रौंच पक्षी के निधन पर करुणार्द्र हो गये थे और एक महाकाव्य की रचना कर डाली थी। बाल्मीकि को प्रेरणा देकर एक पक्षी मानव साहित्य पर अनुपम उपकार कर गया है। मैना, तोता, बुलबुल आदि पक्षी भी मनुष्य के बहुत निकट रहे हैं। कौवा तक हमारे कवियों की दृष्टि से उपेक्षित नहीं रहा। नीर-क्षीर विवेकी हंस भी एक लोकोक्ति बन गया है। विद्वान लेखक ने विभिन्न पक्षियों के जीवन और स्वभाव के सम्बन्ध में प्रयत्नपूर्वक यह अन्वेषणात्मक ग्रन्थ लिखा है। इससे हमें अपनी आत्मा को अधिक व्यापक क्षेत्र में विस्तृत और उदार करने का अवसर मिलेगा। पुस्तक की लेखन शैली बड़ी मनोरंजक है। इसके अध्ययन से मालूम पड़ेगा कि बुद्धि और कला केवल मानव का ही एकाधिकार नहीं है। भगवान ने सहज बुद्धि द्वारा पक्षियों तक को भी कलात्मक रुचि और व्यावहारिक बुद्धि दी है। पुस्तक के चित्र भी बहुत सुन्दर और रोचक हैं। अन्तरंग के साथ-साथ पुस्तक का बहिरंग भी सुन्दर है।

## हीरों की खान से

मध्यप्रदेश के पन्ना क्षेत्र में रामखेड़िया और मझगवां की हीरा खानों का चौथी योजना में आधुनिक तरीकों से विकास किया जाएगा। इन खानों का पूरी तरह से विकास हो जाने के बाद प्रति वर्ष यहां से ३२ हजार ५०० कैरट हीरे निकाले जाएंगे।

इन खानों से अब तक जो हीरे निकाले गये हैं, उनकी बिक्री से ८ लाख ४ हजार रु० प्राप्त हुए हैं। अब तक २११२.६४ कैरट वजन के ४७८३ हीरे निकाले गये हैं। बिक्री का २० प्रतिशत मध्यप्रदेश सरकार को रायल्टी के रूप में दिया गया और बाकी राष्ट्रीय खनन विकास निगम को मिला। इन खानों में हीरे निकालने का काम १९६३ में शुरू हो गया था। विशेषज्ञों की राय पर इसका और अधिक विकास किया जाएगा।

● ●


यदि आप जानना चाहते हैं

कि

से आप क्या लाभ उठा सकते हैं ?

में कैसी उपयोगी सामग्री होती है ?

से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है ?

**तो**

दस नये पैसे के टिकट भेजकर

१९६४ की विषय सूची बुक

पोस्ट से मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६

# रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध ● यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण ● प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण ● योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योग-वासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव ● कहानियां ● अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या ● डाक व्यय के साथ केवल ५), ● एक प्रतिका ०-५० न. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

**श्री रामतीर्थ योगआश्रम, बम्बई-१४**




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# देहातों की आर्थिक दुर्गति

**पांच करोड़ ३२ पैसे रोज आमदनी**
**दस करोड़ ४२ ,, ,,**
**एक करोड़ २६ पैसे रोज**

नेशनल कौन्सिल आफ एपलाइड इकोनामिक रिसर्च ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस कौन्सिल की तरफ से १९६२ में ग्रामीण भारत का एक सर्वे किया गया था। सर्वे में कौन्सिल के सौ कार्यकर्त्ता देश के विभिन्न ३२० गांवों में ८,५२७ घरों में गये और जानकारी हासिल की। इस आधार पर हमारे देश के देहातों का जो चित्र सर्वे ने पेश किया है, उसका कुछ आशय निम्नलिखित है:—

× × × ×

देहात में रहने वाले लगभग ३५ करोड़ लोगों में से २२ करोड़ भूमिवान हैं और १३ करोड़ के (३५ प्रतिशत) करीब भूमिहीन हैं। इन भूमिहीनों में अधिकांश तीन एकड़ से कम वाले ही हैं। इस ग्रामीण भारत की कुल आमदनी ८,७२७ करोड़ रुपये है। यानी प्रति व्यक्ति वार्षिक आय २४७) हुई। दूसरे शब्दों में प्रति व्यक्ति प्रति दिन की आमदनी ६८ पैसे है, लगभग तेरह आने। आज कल की बढ़ती हुई महंगाई और उसमें यह तेरह आने !!

× × × ×

लेकिन तेरह आने तो औसत आमदनी है। देहातों में रहने वाले दस करोड़ लोग ऐसे हैं जिनकी आमदनी ४२ पैसे ही है। इन दस में भी पांच करोड़ को सिर्फ ३२ पैसे ही मिलते हैं और—और एक करोड़ तो ऐसे हैं जिनको मुश्किल से २७ पैसे ही मयस्सर हो पाते हैं। यह है हमारी भारत माता का मार्मिक स्वरूप ??

× × × ×

यह सर्वे डा० पी० एस० लोकनाथन् की अध्यक्षता में हुआ है और वे कौन्सिल के डाइरेक्टर जनरल (संचालक) भी हैं। उन्होंने कहा है कि देहात में आर्थिक असमानता बहुत ही विषम दर्जे की है। आमदनी का लगभग एक तिहाई हिस्सा दो तिहाई आबादी के पल्ले पड़ता है और ऊपर के पांच प्रतिशत लोग एक-चौथाई के करीब हथिया लेते हैं :

| आबादी का प्रतिशत | आमदनी का प्रतिशत |
|---|---|
| ५ | १ |
| ५५ | ३० |
| ३५ | ४७ |
| ४ | १३ |
| १ | ९ |

यह हालत है आमदनी की ? सम्पत्ति की दृष्टि से तो और भी दर्दनाक सूरत है :

| आमदनी का प्रतिशत | सम्पत्ति का प्रतिशत |
|---|---|
| ५ | ० |
| ५० | ७ |
| ४० | ५० |
| ४ | २५ |
| १ | १८ |

इस तालिका से पता चलता है कि हमारे देहात की दौलत का रुपये में तीन आना हिस्सा केवल एक फीसदी लोगों के पास है, चार आना है चार फीसदी के पास—यानी रुपये में ७ सात आने पर पांच प्रतिशत आबादी का कब्जा है। बचे नौ आने—इनमें आठ आने पर चालीस फीसदी लोग मालिक हैं। रह गया एक आना—यह है पचपन फीसदी की दौलत !

## हमारी दरिद्र सभ्यता

मातृत्व या पितृत्व दोनों बड़े कठिन कार्य हैं। समाज की वह सभ्यता बहुत दरिद्र है, जिसमें आर्थिक आवश्यकताओं के कारण माता और पिता दोनों को घर से बाहर रहना पड़ता है। माताओं को अवश्य घर में ही उपस्थित रहना चाहिए, यदि उन्हें परिवार के खर्च चलाने के लिए कुछ योगदान देना ही पड़े, समाज को ऐसे घरेलू उद्योग चलाने चाहिए, जिससे माताएं घर बैठे २ कुछ धन अर्जित कर सकें।

जी० डी० सोंधी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब में योजनाओं से आर्थिक क्रान्ति

अजमेरसिंह, योजना मंत्री, पंजाब

## परिवर्तन

जहां पंजाब की प्रथम योजना का वार्षिक खर्च २८.१८ करोड़ रुपए था, वहां यह द्वितीय योजना के अन्तिम वर्ष १९६०-६१ में बढ़कर ३४.८४ करोड़ रुपये हो गया और अब १९६४-६५ में ५८.६५ करोड़ रुपये (अस्थायी) हो गया है। इस प्रकार वर्ष १९६४-६५ का खर्च पहली योजना के वार्षिक औसतन खर्च से १०८ प्रतिशत अधिक था। जहां वर्ष १९५२-५३ के दौरान राज्य की आमदनी ११८.४ करोड़ रुपये थी वहां यह १९६२-६३ में बढ़कर २५४.० करोड़ रुपए हो गई थी। जहां १९५२-५३ में प्रति व्यक्ति की आय ३२१ रुपए थी। वहां यह वर्ष १९६२-६३ में बढ़कर ३५७.१ रुपये हो गई है।

जहां खाद्यान्नों का उत्पादन वर्ष १९५०-५१ में ३२.७९ लाख टन एवं वर्ष १९६०-६१ में ६१.४८ लाख टन (८२ प्रतिशत अधिक) था, वहां यह वर्ष १९६१-६२ में बढ़कर ६२.०३ टन हो गया। वर्ष १९६२-६३ में कृषि उत्पादन केवल ५६.९९ लाख टन तथा ६३-६४ में ५७.४४ लाख टन हुआ। पर वर्ष १९६४-६५ में ६९.८७ लाख टन खाद्यान्नों का उत्पादन हुआ। इसका अभिप्राय यह हुआ कि पंजाब में १४ वर्षों में योजनाओं से कृषि उत्पादन में १०७ प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा एक वर्ष में २१.६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि होने के कारण कृषिगत क्षेत्र का बढ़ जाना तथा गेहूँ, चावल एवं चनों जैसी प्रमुख फसलों से प्रति एकड़ अधिक उपज प्राप्त होना था।

जहां गन्ने (गुड़ के रूपमें) का उत्पादन वर्ष १९५०-५१ में ४.४२ लाख टन एवं वर्ष १९६०-६१ में ९.९८ लाख टन हुआ, वहां वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ११.४७ लाख टन (चौदह वर्षों में १६० प्रतिशत की वृद्धि) उत्पादन हुआ, कपास का वर्ष १९५०-५१ में ३.१५ लाख गांठ का उत्पादन वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ११.३८ लाख गांठें (२६१ प्रतिशत की वृद्धि) हो गया। जहां वर्ष १९५०-५१ में तिलहनों का उत्पादन १.१ लाख टन था, वहां यह वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ३.० लाख टन हो गया (१७३ प्रतिशत की वृद्धि)।

कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए ठोस पग उठाये गये। चुने हुए क्षेत्रों में सघन कृषि के नगदी प्रोग्राम, छोटी सिंचाई की योजनाओं, विशेषकर नलकूपों को बिजली देना तथा भूमि संरक्षण आदि स्कीमों पर विशेष बल किया गया। ऐसे पग उठाये गये हैं, जिनसे कृषि क्षेत्र में खर्च की कमी न आने पाए।

बाढ़ नियन्त्रण स्कीमों की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया। विभिन्न नदियों पर ३३० मील लम्बे बांध बनाये गये। गांवों की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए २१८.५० लाख एकड़ में चकबन्दी का कार्य किया गया। राज्य में चकबन्दी का कार्य मार्च १९६६ तक समाप्त होने की आशा है। समस्त राज्य सामुदायिक विकास कार्य क्रम के आधीन आ चुका है। वर्ष १९६४-६५ में सहकारी समितियों की संख्या ३५२७७ तक पहुँच गई थी। और इस अवधि के दौरान इन समितियों ने २०.०५ करोड़ रुपये के ऋण दिये।

## विद्युत शक्ति

विद्युत शक्ति के क्षेत्र में भी काफी विस्तार हुआ है। जहां वर्ष १९५०-५१ में ४८ हजार किलोवाट एवं १९६०-६१ में ३.३७ लाख किलोवाट बिजली पैदा होती थी, वहां अब वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ६.७७ लाख किलोवाट हो गई है। वर्ष ५०-५१ के मुकाबले में १४ गुणा अधिक यूनिटों की संख्या १६ करोड़ से बढ़कर ३२० करोड़ हो गई है। जहां वर्ष १९५१-५२ में बिजली के उपभोक्ताओं की संख्या १०३३४२ थी, वहां वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ७९०४१३ हो गई। जहां वर्ष १९५०-५१ में ८८ नलकूपोंमें बिजली लगी थी, वहां अब उनकी संख्या बढ़कर वर्ष १९६४-६५ में ५२२० हो गई है। हाल ही के वर्षों में नलकूपों को बिजली देने की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## औद्योगिक क्षेत्र में प्रगति

औद्योगिक क्षेत्र विशेषकर लघुस्तरीय उद्योगों में इन योजनाओं के परिणामस्वरूप बहुत प्रगति हुई है। जहां साइकलों का उत्पादन वर्ष १९५०-५१ में २५ हजार, वर्ष ६०-६१ में ४.०७ लाख थी, वहां वर्ष १९६४-६५ में बढ़कर ५ करोड़ हो गया है। इसी प्रकार सिलाई की मशीनों में भी क्रमशः १६०००, ६१,२०० एवं ६०,००० का उत्पादन हुआ। हौजरी का सामान भी ४५० लाख रुपए से बढ़कर वर्ष १९६३-६४ में ४७५ लाख रुपये हो गया। सीमेंट, कागज, खांड उत्पादन जैसे बड़े उद्योगों में भी सन्तोषजनक प्रगति हुई है।

यह बड़े खेद की बात है कि केन्द्रीय सरकारी क्षेत्र में बहुत कम प्रगति हुई है। नंगल फर्टीलाइजर एवं पिन्जौर स्थित हिन्दुस्तान मशीन टूलज दो केन्द्रीय परियोजनाएं ही पंजाब में विद्यमान हैं। तीन पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान इन दो परियोजनाओं पर ३० करोड़ रुपए का १.४ प्र. श. व्यय हुआ है। इस कमी को पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने सीमसैल ट्यूब्ज मिल, राज्य कास्टिंग्ज फौंडरी जैसे मध्यम दर्जे के उद्योगों को स्टील की योजना में शामिल कर लिया है।

जहां पक्की सड़कें वर्ष १९५०-५१ में ३२३९ मील एवं वर्ष १९६०-६१ में ६३१३ मील लम्बी थीं, अब इन की लम्बाई बढ़कर वर्ष १९६३.६४ में ७२६० मील हो गई है।

## शिक्षा

सामाजिक सेवाओं एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी राज्य ने बहुत प्रगति की है। जहां सभी आयु के स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या वर्ष १९५०-५१ में ८.६८ लाख एवं वर्ष १९६०-६१ में २०.४९ लाख थी, अब वह बढ़कर वर्ष १९६३.६४ में ३०.२ लाख हो गई है। शिक्षा प्रणाली में सुधार किया गया है। तकनीकी शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। प्रतिभाशाली छात्रों को आकर्षित करने के लिए डिप्लोमा कोर्स तक निःशुल्क पढ़ाई कर दी गई है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के दौरान ४.६२ लाख लोगों को रोजगार मिला और तृतीय योजना में ५.३० लाख लोगों को रोजगार मिल जाएगा। मगर फिर भी ६.४९ लाख लोगों को रोजगार जुटाना सम्भव न होगा।

## आगामी योजना

चौथी योजना ५०० करोड़ रुपये की है, जिसे योजना आयोग के विमर्श के बाद अन्तिम रूप दे दिया जाएगा। राज्य की पंचवर्षीय योजना के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार है : क. कृषि उत्पादन को बढ़ाना, ख. राज्य की अर्थ व्यवस्था को औद्योगिक क्षेत्र के विकास में लगाना, ग. तकनीकी शिक्षा एवं दस्तकारी प्रशिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रमों का विस्तार करके अधिक रोजगार सुविधाएं जुटाना, घ. पिछड़ी श्रेणियों एवं पिछड़े क्षेत्रों की सामाजिक एवं आर्थिक दशा को सुधारना। ङ. कृषि उत्पादन एवं उद्योग विकास सम्बन्धी स्कीमों के लिए शीघ्र बिजली देना।

कृषि ऋण एवं परिवार नियोजन और तकनीकी शिक्षा के विस्तार की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

वर्ष १९५१.५२ से १९६१ तक २५.८ प्रतिशत जनसंख्या की वृद्धि हुई, जो राष्ट्रीय औसत वृद्धि से २०.० प्रतिशत अधिक है। यह जनसंख्या उपर्युक्त अवधि के दौरान १,३१,६४,८९० से बढ़कर २,०३,०६,८१२ (४१,६१,९२२ अधिक) हो गई, पर इनसे पिछले पचास वर्षों में यह वृद्धि केवल २८,६९०३० की हुई थी। यदि कोई विशेष प्रगति करनी है, तो हमें बढ़ रही जनसंख्या पर नियंत्रण पाने के लिए ठोस पग उठाने पड़ेंगे।


# आर्थिक समीक्षा

सम्पादक : श्री हरतीर्थ सिंह

- हिन्दी में अनूठा प्रयास
- आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक
- विषयों पर विचारपूर्ण लेख

आर्थिक सूचनाओं से ओतप्रोत

भारत के विकास में रुचि रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक, पुस्तकालयों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक।

अ. भा. कांग्रेस कमेटी कार्यालय

७ जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली।

सम्पादक




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# आर्थिक विकास में योजना-इतर सहायता

श्री रमेश चन्द्र

भारत विदेशों से किसी विशिष्ट योजना से असंबद्ध सहायता के लिए क्यों आग्रह करता है, इसका उत्तर इस लेख में देखिये।

सामान्यतया, विदेशी सहायता दो रूपों में उपलब्ध होती है—(१) इस्पात के कारखाने और उर्वरक संयंत्र जैसी विशिष्ट योजनाओं के लिए, और (२) ऐसे उपकरणों, पुर्जों और कच्ची सामग्रियों के आयात जैसे सामान्य उद्देश्यों के लिए, जो किसी योजना-विशेष से सम्बद्ध नहीं।

दूसरे प्रकार की सहायता, जिसे योजना-इतर सहायता कहते हैं, विविध उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त हो सकती है और इस लोचशीलता के कारण उसका उपयोग शीघ्रता से होता है। फिर, कृषि और छोटे उद्योग आदि कई ऐसे भी क्षेत्र हैं जिनको सहायता की विशिष्ट योजनाओं से सम्बद्ध करना व्यवहार्य नहीं होता।

अभी हाल तक अनेक दाता देश योजना-इतर सहायता प्रदान करने में हिचकते रहे हैं। इसके बजाय, उन्हें अपनी सहायता को विशिष्ट योजनाओं से सम्बद्ध रखना अधिक पसन्द रहा है। शायद, ऐसा करने का कारण दाता देशों का यह विश्वास रहा है कि इससे उनकी सहायता अधिक प्रभावकारी सिद्ध होती है और बदले में, प्राप्तकर्त्ता देश में उनके प्रति अधिक आकर्षक धारणा के निर्माण में योग देती है।

## भारत को सबसे अधिक

अपने विशाल आकार, अपने समक्ष उपस्थित बड़ी-बड़ी समस्याओं, अपने यहां उपस्थित योग्य आयोजन-व्यवस्था और विदेशों से प्राप्त सहायता के उचित उपयोग के कारण भारत १९५१ से ही, जब उसने आयोजित विकास की दिशा में कदम बढ़ाया, विकासोन्मुख देशों में अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय सहायता से सबसे अधिक लाभान्वित देश रहा है। ३१ मार्च, १९६५ तक उसे कुल ५१७२.२ करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता मिल चुकी थी। इसमें से योजना-इतर सहायता ९७१.५ करोड़ रुपये या लगभग २० प्रतिशत रही है।

योजना-इतर सहायता के लाभ प्रायः समस्त भारतीय अर्थ-व्यवस्था में संचारित रहे हैं। इस सहायता के फलस्वरूप खनिज, औद्योगिक और कृषिजन्य उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसी प्रकार, बिजली और परिवहन के क्षेत्रों में भी तीव्र गति से विकास सम्भव हुआ है।

औद्योगिक और खनिज उत्पादन को दो प्रकार से सहायता मिली है। इस्पात, अलौह धातुओं, रसायन, गन्धक, लुब्रिकैंट, रबर, टायर कार्ड और कार्बन जैसी कच्ची सामग्रियों तथा उद्योगों और खानों में प्रयुक्त मशीनों के विभिन्न पुर्जों और हिस्सों के वृहत्तर आयात से, जो योजना-इतर सहायता द्वारा सम्भव हुआ है, अनेक खदानों और उद्योगों की वर्तमान क्षमता के अधिक उपयोग में सुविधा हुई है। इस प्रकार की सहायता द्वारा की गई वित्तीय व्यवस्था के फलस्वरूप खरीदे गये पूंजीगत उपकरणों की पूर्ति बढ़ जाने से, विशेष रूप से ऐसे क्षेत्रों में जहां नयी योजनाएं पूर्णतया अव्यवहार्य या अलाभकारी हैं, वस्तु-निर्माण के अनेक क्षेत्रों की स्थापित क्षमता में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

कृषि के क्षेत्र में, उर्वरकों की देशज पूर्ति में पर्याप्त वृद्धि करके योजना-इतर सहायता ने महान सेवा प्रस्तुत की है। मिट्टी को हटाने वाले भारी उपकरणों ने, जिनका आयात इस प्रकार की सहायता द्वारा हुआ है, व्यर्थ पड़ी हुई बंजर भूमियों को कृषि-योग्य बनाने में सहायता पहुँचाई है। इस सहायता से सामुदायिक विकास



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम और रोगनाशक दवाओं तथा नलकूप के उपकरणों के आयात में हुई वृद्धि ने भी भारतीय कृषि को अधिक उत्पादक बनाने में एक उपयोगी भूमिका अदा की है।

भारतीय अर्थ-व्यवस्था के परिवहन और विद्युत क्षेत्र के विकास में योजना-इतर सहायता के अंतर्गत न केवल मशीनों और उपकरणों के, बल्कि कल-पुर्जों के भी, बड़े पैमाने के आयात ने समुचित योगदान प्रदान किया है। देश की समूची अर्थ-व्यवस्था पर इसका प्रभाव, निश्चय ही, बहुत सुखद पड़ा है।

## लागतों में कमी

योजना-इतर सहायता ने भारत के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक अन्य प्रकार से भी मदद पहुँचायी है। औद्योगिक क्षमता के पूर्ण उपयोग और विस्तार के फलस्वरूप उत्पादन की लागतों में हुई कमी ने निर्यातों को बढ़ावा देने में योग दिया है।

भारत को मिली योजना-स्तर सहायता के विषय में एक उल्लेखनीय बात यह है कि यह मुख्यतया भारत-सहायता मण्डल के देशों से और विश्व-बैंक से सम्बद्ध अंतर्राष्ट्रीय विकास असोसियेशन से प्राप्त हुई है। भारत को इस प्रकार की सहायता प्रदान करने की वांछनीयता को अधिकाधिक रूप में महसूस करने के फलस्वरूप, उसकी तृतीय पंचवर्षीय योजना के दौरान योजना-इतर सहायता अधिकाधिक मात्रा में इस देश में आने लगी। भारत को मिली ६७२.५ करोड़ रुपये की कुल योजना-इतर सहायता का अधिकांश १९६०-६१ के बाद प्राप्त हुआ।

## अमेरिका का योगदान

भारत को सबसे अधिक योजना-इतर सहायता प्रदान करने वाला देश अमेरिका रहा है, जिसने इस देश को मिली कुल आर्थिक सहायता में ५० प्रतिशत से अधिक का अंशदान किया है। अमेरिका द्वारा भारत को दी गई कुल सहायता इस समय २,१२६ करोड़ रुपये तक पहुँच गयी है। इसमें से ६८६ करोड़ रुपये योजना-स्तर है।

इस सहायता का अधिकांश, विशेष रूप से चालू योजना के दौरान प्राप्त अंश बहुत आसान शर्तों पर प्राप्त हुआ है। इसे ४० वर्षों में वापिस करना है। प्रथम १० वर्षों के दौरान मूल धन की कोई किश्त वापिस नहीं करनी है। हाल में प्राप्त योजना-इतर ऋण पर प्रथम १० वर्षों में १ प्रतिशत और उसके बाद २॥ प्रतिशत सालाना सूद लगेगा।

यहां पर पी० एल-४८० के अंतर्गत अमेरिका द्वारा भारत को दी गयी १,५०० करोड़ रुपये की सहायता का भी उल्लेख कर देना उचित होगा। यद्यपि इसे पृथक् श्रेणी में रखा गया है, किन्तु इसका स्वरूप भी योजना-इतर सहायता जैसा ही है। इसने न केवल उस तनाव को अत्यधिक कम किया है, जो खाद्यान्नों तथा अन्य कृषि-जन्य वस्तुओं के भारी और निरन्तर आयात के कारण भारत के भुगतान संतुलन पर अन्यथा पड़ा होता, बल्कि मानव-साधनों के पूर्णतर उपयोग के कारण उत्पन्न मुद्रा-स्फीतिक सम्भाव्यता की रोकथाम करने में भी योग दिया। पी० एल-४८० के अंतर्गत अमेरिका से प्राप्त रुई, तम्बाकू और सोयाबीन तेल, भारत के वस्त्र, तम्बाकू और वनस्पति तेल उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण कच्ची सामग्रियां हैं। ●


महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

शृङ्गार

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल

सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय : मूल्य : वार्षिक : ५.६०

१३।३७, शक्तिनगर, मासिक : ५० पै०

दिल्ली—६ फोन : २२७१




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम समस्या

# उद्योगों में मानवीय मूल्याङ्कन

श्री सत्यप्रकाश मिलिंद

केन्द्रीय श्रम मंत्री श्री संजीवैया ने कुछ समय पूर्व नई दिल्ली में आयोजित एक विचार गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए एक बहुत बड़े सत्य की ही अभिव्यक्ति की थी कि किसी भी देश की आर्थिक नीति के स्वस्थ संचालन के लिए उसके औद्योगिक सम्बन्धों को स्वस्थ रखना और उद्योगों में शान्ति बनाये रखना परमावश्यक है।

वस्तुतः अधिक विचारणीय तथ्य यह है कि जहां आज वैज्ञानीकरण के दूषित प्रभाव के कारण मानव सभ्यता इतनी शृंखलाबद्ध, अनावृत और विकृत सी हो उठी है वहां आज का मनुष्य एक बार फिर से अपने अस्तित्व के वस्तु-मूल्याङ्कन के लिए भी आग्रह करने लगा है। आज जब तकनीकीकरण का बोलबाला है और उद्योगों में एक क्रान्ति सी मची हुई है, वहां आज एक जिज्ञासा भी जागृत हो उठी है और वह जिज्ञासा निरंतर बलवती होती जा रही है। बाहर के दिखावे और भीतर के कलुष से ऊपर उठकर आज का कामगर आत्म मंथन करना चाहता है और नियोजक परिवार को भी इसके लिए प्रस्तुत करा देना चाहता है कि आजके युग में कर्म पटुता के साथ-साथ मानवीय व्यवहार भी प्रतिबद्ध है और इसी से आजके प्रबन्धकों और व्यवस्थापकों को उद्योगों में लगी मशीनोंके संचालन मात्र में ही कुशलता प्राप्त नहीं करनी है, अपितु मानव पक्ष को भी पूर्णतया समझते हुए उन लोगों के प्रति मानसिक रूप से भी प्रतिबद्ध होना है जो अपने खून-पसीने से उद्योगों में लगी और जड़ मशीनों को चलाते हैं।

श्रमशास्त्रियों और अनुसन्धायकों का सुनिश्चित मत है कि आज उद्योगों में लगे करोड़ों श्रमिकों की गणना मशीनों की संख्या के अनुसार ही करना मानवीय विश्लेषणात्मक युग में गतिहीनता का सूचक ही समझा जावेगा। फैक्टरी जीवन में मानव पक्ष के उत्कट तीव्र अनुभव जो मैंने पिछले इक्कीस बाइस वर्षों में अर्जित किए हैं, उनके आधार पर मैं अधिकार पूर्वक कह सकता हूँ कि

लेखक

आज उद्योगों में मानव प्रतिष्ठा के पुनः संस्थापन के लिए सतत यत्न किया जा रहा है।

राष्ट्रनायक नेहरु ने एक बार विदग्ध होकर कहा था, "कारखानों के मजदूरों की अंधेरी कोठरियां मैंने देखी हैं। मुझे याद है कि मैं वहां सांस लेने के लिए छटपटाने लगा था और जब बाहर आया तो नाराजी और नफरत से भरा हुआ था।" उस स्वाभाविक नाराजी और नफरत को दूर करने की दिशा में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद राष्ट्र ने बहुत कुछ किया है और आगे भी करने के लिए कटिबद्ध है। आज प्राचीन परम्परा नई मान्यताओं के रूप में परिणत होती जाती है। प्राचीन मालिक-मजदूर की यथार्थता आज के सहयोगी भागीदारोंके रूप में सरकार हो उठी है। मानवीय मूल्यांकन की यह चेतना दो कारणों से अभिव्यक्त हुई है। एक तो हमारे उद्योगों पर बाह्य प्रभाव के कारण—दो महायुद्धों ने हमारे उद्योगों में काम करने वाले कर्मचारियों के ज्ञान को व्यापक और विस्तृत कर दिया है। बाहरी प्रभावों ने हमारे उद्योगपतियों को भी अधिक चेतन बनाया और दूसरे, भीतर ही भीतर श्रमिकों ने



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठन की अपनी शक्ति का भी पर्याप्त अर्जन किया। श्रमसंघों को इन दोनों ही कारणों से शक्ति मिली। वर्ग-संघर्ष विघटनात्मक न होकर सहयोगात्मक रूप लेकर आगे बढ़ा और उद्योगों की अशान्ति को—चेतनापूर्ण स्पार्क' मानकर स्थायी सुमधुर सम्बन्धों की स्थापना के द्वारा समस्याओं के हल किए जाने का साधन माना जाने लगा। यह 'स्पार्क'—यह चेतना—यह प्रेरणा भारत के श्रम-आन्दोलन को मिली १९१८ में सबसे पहली बार साबरमती के संत विश्ववंद्य बापू से। उस प्रेरणा के, उस दर्शन के, उस मानवीय मूल्यांकन की चेतना के मूल मंत्र थे—सत्य, अहिंसा और प्रेम।

मानवीय मूल्यांकन की मांग है कि उद्योगों का उत्पादन बढ़े, अशान्ति न्यूनतम हो तथा मिल मालिकों और मजदूरों के सम्बन्ध सुमधुर हों। आज यह बहुत आवश्यक है कि श्रमसंघ अपनी शक्ति के अहं से गर्वित न हो उठें, और न ही उद्योगों में शंका, कुंठा और ऊहापोह से व्यवस्थापक ही आशंकित हों। आज श्रमिक को परमुखापेक्षी, स्वार्थी, अशिक्षित या लड़ाई पसन्द समझकर उसको मात्र उपेक्षित मानकर नहीं छोड़ा जा सकता। आज उसकी हर गति को समझना होगा, शोध-खोज की शल्य चिकित्सा के माध्यम से श्रम-मन की अनचीन्हीं परतों को खोलकर आज उद्योगों में लगे व्यक्तियों को पढ़ना होगा।

आज मानव व्यवहार को समझने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हमें परिवार की भावना को पुनःसंस्थापित करना होगा; उसके लिए केवल मशीनरी की मरम्मत करना ही पर्याप्त नहीं है। आज हम उद्योगों में एक 'टायर' सिस्टम से ऊपर उठकर 'श्री टायर' सिस्टम को अपनाते चले जा रहे है। आज केवल व्यवस्थापक का ही निर्णय सब कुछ नहीं है। आज हम तीनो दलों—व्यवस्थापकों, श्रमिकों और सरकार में आपस में समझौतों पर अधिक बल देने लगे हैं। उद्योगों में काम करने वाले हर व्यक्ति को उसका सामाजिक आदर प्रदान करके उसकी उत्पादन क्षमता का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए आज यत्न किया जा रहा है। इसका परिणाम यह होता है कि कर्मचारी में अपनापन और आत्मीयता की भावना पैदा होती है। "सेवायुक्त-व्यवस्थापन" (परसनल मैनेजमैन्ट) आज एक वैज्ञानिक विषय बन गया है, जिसका मूल लक्ष्य है "ह्यु मैन इंजीनीयरिंग" का अध्ययन। मशीन की मरम्मत की जा सकती है, पेच पुर्जो का दोबारा जुटा कर जल्दी ही लोहे की मशीनों को चालू किया जा सकता है, पर मनुष्य के मस्तिष्क की मशीन यदि बिगड़ बैठे तो उसे संभालना बहुत ही मुश्किल होता है। यही तो वह 'मानवीय-मूल्यांकन' है, जिसकी चर्चा आज उद्योगों में तेजी के साथ की जा रही है।

एक व्यक्ति क्षमता के बावजूद पूरा काम नहीं करता। हो सकता है उसके कुछ बाह्य कमिटमैन्ट्स हों, उसकी कोई घरेलू मजबूरियां उसके मन को परेशान किये हों अथवा जिन परिस्थितियों में तत्कालीन विवशता के कारण उसे काम करना पड़ रहा है, वे उसको अस्वीकार्य ही हों पर वह उस अस्वीकृति को व्यक्त नहीं कर पाता हो—इन सभी कारणों, विवशताओं, विषमताओं और परिस्थितियों का अध्ययन किसी भी औद्योगिक मनोवैज्ञानिक का महत्त्वपूर्ण विषय हो सकता है। इस प्रकार की कमी या अभाव को दूर करने का सफल माध्यम है प्रेरणा प्रदान करने का (मोटीवेशन का)। आज तो यह अनिवार्य हो गया है कि हम प्रतिकूल परिस्थिति को जन्म देने वाले कारणों पर गंभीरता से विचार करें और उन दुर्गुणों को दूर करें, जिनमें कोई भी व्यक्ति आलस्य करने के लिए विवश हो जाता है।

समाप्त

## बोनस—अध्यादेश अदालत में

संसद में बोनस बिल पर बहस हो रही है। एक अध्यादेश द्वारा इस बिल की धाराओं को पहले से ही क्रियान्वित किया जा रहा है। बाम्बे गैस कम्पनी ने हाईकोर्ट में इस अध्यादेश के विरुद्ध एक वैधानिक आपत्ति दायर कर दी है। गैस कम्पनी के कथनानुसार १९६२ से १९६४ तक कम्पनी को घाटा रहा है। इसलिए वह वेतन का ४ प्र. श, बोनस के रूप में नहीं दे सकती। फिर घाटे के बावजूद बोनस देने का अर्थ अपनी पूंजी और मालिकों की सम्पत्ति की जब्ती है। नागरिकों के मौलिक अधिकारों का भी इससे हनन होता है। हाईकोर्ट बम्बई ने यह मामला सुनना स्वीकार कर लिया है। दूसरी तरफ बाम्बे गैस कम्पनी के कर्मचारी हड़ताल करने का विचार कर रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमिक व कर्मचारी पूर्ण परिश्रम के साथ अपने कार्य में रत रहें और उत्पादन अधिक से अधिक करें; इसके लिए आवश्यक है कि उनको अच्छे वेतन मिलें; और उनके आपसी सम्बन्ध अच्छे, सुमधुर, और स्वस्थ हों; उनके कार्य को सराहा जाये, उन्हें आर्थिक चिन्ता से मुक्ति हो; उन्हें आत्म प्रकाशन का स्वातंत्र्य हो; और उनके आत्म-सम्मान की संरक्षा हो और वे भी उद्योगों को अपना समझकर ही उनकी उत्पादन वृद्धि में हर प्रकार का सहकार प्रदान करें। मानवीय मूल्याङ्कन की आधार भूत शिक्षा है—कार्यरत औद्योगिक प्राणियों को मानवोचित स्थान व न्याय दिलाने की भावना, जिसके प्रतिपालन और जिसकी संरक्षा के लिए प्रबन्धक और सेवायुक्त दोनों ही एक दूसरे के प्रति सम्पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारी चौथी पंचवर्षीय योजना आने वाली है। भारत सरकार उसके अन्तर्गत जो श्रमनीति निर्धारित करने जा रही है उसको भी वह श्रमिकों और मालिकों के सहयोग और सहकार से ही बना रही है। श्रम कल्याण का मुख्य लक्ष्य ऐसे वातावरण का बनाना है, जिसमें श्रमिक की शारीरिक, मानसिक, और बौद्धिक शक्तियों का विकास हो के और श्रमिक को नई परिस्थिति के अनुरूप अपने को ढालने में सहायता मिल सके।"

• •

# कृषि में न्यूनतम मजदूरी

अगस्त के प्रारम्भ में नई दिल्ली में अखिल भारतीय खेतिहर मजदूर गोष्ठी हुई थी। इसमें विचारणीय मुख्य विषय खेत मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी का था।

न्यूनतम मजदूरी कानून, १९४८ में बनाया गया था। इसका उद्देश्य मजदूरों का शोषण रोकना और बागान खेतों आदि में नियमित रूप से मजदूरी करने वाले मजदूरों को न्यूनतम मजदूरी दिलाना है। इस कानून से सरकार को मजदूरों का न्यूनतम वेतन तय करने के अलावा उनके काम के घण्टे, काम की स्थिति, ओवरटाइम, साप्ताहिक छुट्टी आदि निश्चित करने का अधिकार भी प्राप्त है। खेतिहर मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी के बारे में योजना आयोग कई बार विचार कर चुका है। आयोग की राय थी कि पहले उन क्षेत्रों में न्यूनतम वेतन कानून की धारा-३ में संशोधन किया जाय ताकि पूरे राज्य या राज्य के कुछ हिस्सों में और किसी एक या कई उद्योगों के मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी तय की जा सके। फिर योजना आयोग की सिफारिश के अनुसार केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों ने खेत मजदूरों, विशेषतया बड़े फार्मों में काम करने वाले मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी तय की। सितम्बर, १९६४ के अन्त तक प्राप्त जानकारी के अनुसार आंध्र प्रदेश, बिहार, केरल, मध्य प्रदेश, मद्रास, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और त्रिपुरा सरकारों ने पूरे राज्य में खेतिहर मजदूरों की न्यूनतम मजदूरी तय कर दी है। आसाम, गुजरात और महाराष्ट्र ने अपने राज्य के कुछ हिस्सों में यह व्यवस्था की है।

आंध्र प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, मद्रास, महाराष्ट्र, उड़ीसा और राजस्थान में कुछ श्रेणी के अकुशल मजदूरों की दैनिक मजदूरी एक रुपये से भी कम है। अब यह विचार प्रकट किया गया है कि न्यूनतम दैनिक मजदूरी एक रुपया तय करने का लक्ष्य यथाशक्ति पूर्ण किया जाय।

खेती के क्षेत्र में यह कानून लागू करने में कुछ प्रशासनिक कठिनाइयां आई हैं। एक तो खेती का क्षेत्र विशाल है, खेत छोटे हैं, मजदूरों में निरक्षरता है, खेती मौसम पर निर्भर है, मजदूरी रुपये की बजाय जिंस में दी जाती है और मजदूरों में संगठन की कमी है।

• •

सम्पदा

में

विज्ञापन देकर लाभ उठावें



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सिंचाई के छोटे साधन

देश में लगभग ३२ करोड़ ८० लाख एकड़ भूमि में खेती होती है, लेकिन केवल ६ करोड़ ८ लाख ४० हजार एकड़ में ही सिंचाई होती है। इसमें से ६३ प्रतिशत यानी ३ करोड़ ८३ लाख ६० हजार एकड़ में कुओं, तालाबों और नलकूपों आदि से सिंचाई होती है। खेती की पैदावार बढ़ाने में सिंचाई के इन छोटे साधनों का महत्व इससे स्पष्ट हो जाता है।

खेती की पैदावार बढ़ाने में अच्छे बीज, अच्छे औजार, उर्वरक, पौधों का रोगों से बचाव और खेती के सुधरे तरीकों का बड़ा महत्व है। लेकिन खेतों को समय से पानी मिलना सबसे जरूरी है, क्योंकि देश के अधिकांश भागों में वर्षा साल में कुछ ही महीने होती है और वह भी कहीं अधिक और कहीं बहुत ही कम तथा किसी वर्ष कम और किसी वर्ष अधिक होती है। खेती के तरीकों में सुधार और उर्वरकों के दिन पर दिन बढ़ते इस्तेमाल से भी सिंचाई का महत्व बढ़ गया है।

## सिंचाई का विस्तार

पहली योजना से पहले खेती की लगभग २० प्रतिशत भूमि अर्थात लगभग ५ करोड़ ६० लाख एकड़ में नहरों, कुओं, तालाबों और नलकूपों से सिंचाई होती थी। बाकी ८० प्रतिशत काश्त वर्षा पर निर्भर थी। इसलिए देश के विभिन्न भागों से सूखा पड़ने की खबरें अक्सर मिलती रहती थीं। इसलिए देश की पंचवर्षीय योजनाओं में बड़ी नदियों पर बांध बांधने का कार्यक्रम रखा गया, ताकि जलाशयों के पानी को सिंचाई के लिए इस्तेमाल किया जा सके। इसके अलावा काफी बड़ी संख्या में सिंचाई के छोटे छोटे साधनों को बढ़ावा दिया गया। उदाहरण के लिए पुराने कुओं और तालाबों की मरम्मत की जा रही है और नये कुएं खोदे जा रहे हैं। नलकूप तैयार किये जा रहे हैं और नदियों तथा झीलों से पानी निकालने के लिए पम्प लगाये जा रहे हैं। छोटी बंधिया बनाई जा रही हैं और रजवाहे खोदे जा रहे हैं।

अब तक की योजनाओं में सिंचाई के छोटे बड़े साधनों से १९६५-६६ तक यानी तीसरी योजना के अन्तिम वर्ष तक ३ करोड़ १० लाख एकड़ और अधिक भूमि में सिंचाई की जा सकेगी। इस प्रकार कुल मिलाकर ८ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होने लगेगी।

कुएं—१९५०-५१ तक देश में लगभग ५० लाख कुएं थे। पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान लगभग ३ लाख १० हजार नए कुएं खोदे गए। अनुमान है कि तीसरी योजना के दौरान ४ लाख ५० हजार कुएं और तैयार हो जाएंगे। चालू योजना के पहले तीन वर्षों में २ लाख ४० हजार कुएं बन भी चुके हैं।

बिजली के पम्प—सिंचाई के लिए देश में पानी उठाने और उलीचने के लिए विभिन्न तरीके इस्तेमाल किए जाते रहे हैं। लेकिन जब से बिजली के पम्पों का चलन हुआ है, यह काम बड़ा आसान हो गया है। १९५१ तक देश में लगभग ९०,८०० बिजली के पम्प सिंचाई के काम में लगे थे। १९६१ तक इनकी संख्या बढ़कर ३ लाख ९० हजार एक सौ आठ हो गई। इनमें से २ लाख २९ हजार ९ सौ चवालिस डीजल के और शेष १ लाख ६० हजार एक सौ चौंसठ बिजली के थे। तीसरी योजना में १ लाख ६० हजार बिजली के पम्प सिंचाई के लिए लगाने का कार्यक्रम है। योजन के पहले तीन वर्षों में ८० हजार पम्प सिंचाई के लिए दिए गए हैं।

बिजली के पम्प लगाने के अलावा नलकूप बनाने का एक बड़ा कार्यक्रम भी चालू किया गया है। पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं में देश में ६,७०० नलकूप लगाये गए, जिससे लगभग १५ लाख ८० हजार एकड़ भूमि को सिंचाई के लिए पानी मिलने लगा। पंचवर्षीय योजना शुरू होने से पहले देश में सिर्फ ९ लाख ८० हजार एकड़ भूमि की नलकूपों से सिंचाई होती थी। चालू योजना में २,७१२ नलकूप लगाने का कार्यक्रम है। इनमें से लगभग १३०० तलकूप योजना के पहले तीन वर्षों में लगाये जा चुके हैं।

## भूमिगत जल की खोज

आसाम, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, मद्रास, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार में भूमि के जल की खोज की गई। सर्वे क्षेत्रों से पता चला



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि १५ हजार वर्ग मील क्षेत्र में भूमिगत पानी मौजूद है। इन इलाकों में लगभग ८ हजार गहरे नलकूप लगाने का विचार है। चालू योजना के पहले तीन वर्षों में भूमिगत जल की खोज के अन्तर्गत २२६ नलकूप लगाये गये और शेष दो वर्षों में ४५० नलकूप लगाने का कार्यक्रम है। चौथी योजना में १५०० नलकूप लगाने का कार्यक्रम है। तीसरी योजना में छोटी सिंचाई योजनाओं से १ करोड़ २८ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई का लक्ष्य था, किन्तु अब तक हुए काम को देखते हुए आशा है कि ५ लाख एकड़ और भूमि में सिंचाई होने लगेगी।

सिंचाई की छोटी योजनाओं द्वारा अब तक ६७ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की व्यवस्था हो चुकी है। अनुमान है कि योजना के अन्त तक ४ लाख ५० हजार नए कुएं तैयार होंगे, ६० हजार पुराने कुओं की मरम्मत और १ लाख ३० हजार कुओं की खुदाई होगी, १ लाख कुएं गहरे किए जाएंगे। २ लाख ४० हजार बिजली और ८० हजार डीजल के पम्प, ६५ हजार रहट और ४१५ पाताल तोड़ कुएं (आर्टिजन ट्यूब वैल) तैयार होंगे। १२ हजार निजी नलकूप, २७६२ सरकारी नलकूप और २,५०० फिल्टर पाइंट नलकूप लगाए जाएंगे। जलाशय और रजवाहे बनाने के अलावा ३० हजार तालाबों की खुदाई या मरम्मत होगी।

## चौथी योजना में

चौथी योजना में १ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई बढ़ाने का लक्ष्य है और इस पर ७७ करोड़ रु० खर्च आएगा। चौथी योजना में ८ लाख नये कुएं बनाए जाएंगे, १ लाख ५० हजार पुराने कुओं की मरम्मत और ३ लाख नए कुओं की खुदाई होगी। २ लाख कुओं को गहरा किया जाएगा। ५ लाख बिजली और १ लाख ७५ हजार डीजल के पम्प तथा ७५ हजार रहट लगाए जाएंगे। इसके अलावा ४०० पाताल तोड़ कुएं, ५० हजार निजी नलकूप, ५ हजार सरकारी नलकूप और ३०० फिल्टर पाइंट नलकूप लगाए जाएंगे। जलाशय, नहर और रजवाहों की खुदाई के अलावा ५० हजार तालाबों की खुदाई या मरम्मत की जाएगी।


उत्पादन के लिए उद्यत और परीक्षित

राजस्थान रेयन्स

कोटा

ऊंची कोटि के टायर रेयन कार्ड के निर्माण के लिए दिल्ली क्लाथ मिल का नया साहस

संचालक—

दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं०, लिमिटेड दिल्ली




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दश-सूत्री कार्य-क्रम

भारत सरकार के वित्त मन्त्री ने देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए अतिरिक्त पूरक बजट पेश किया था। इसके कई प्रस्तावों का स्वागत और कई प्रस्तावों का विरोध करते हुए अखिल भारतीय उद्योग वाणिज्य मंडल संघ ने एक दश-सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। ये उपाय निम्न-लिखित हैं :

१. कुछ पदार्थों पर आयात कर बढ़ाने चाहिएं, किन्तु उनके स्थानापन्न उद्योगों को अधिक विकास छूट देनी चाहिए। किन्तु इससे पहले देश में पूंजी बाजार को स्थिर करने के लिये मनोवैज्ञानिक बाधाओं को दूर करना चाहिए।

२. अनेक वस्तुओं के मूल्यों, उत्पादन और कम्पनियों द्वारा परस्पर विनियोजन पर नियंत्रण शिथिल करने चाहिएं। सीमेंट पर नियंत्रण शिथिल करके प्रशंसनीय कदम उठाया गया है।

३. सरकार को अपनी क्रैडिट पालिसी में कुछ परि-वर्तन करना चाहिए। वित्तीय संकट के कारण उत्पादन में कमी नहीं आनी चाहिए।

४. सरकार की नीति में ऐसा परिवर्तन करना चाहिये जिससे उद्योग कुछ अधिक अर्जन कर सकें और देहात के लोगों को भी उसमें रुपया लगाने की प्रेरणा मिले।

५. आयात करों में वृद्धि हो जाने के कारण मूल्य भी बढ़ेंगे। इस मूल्य वृद्धि को रोकने का एक इलाज यह है कि सरकार अपने कर कुछ इस तरह कम करे कि मूल्य बढ़ने न पावें।

६. सरकार ने फर्नेस आयल पर उत्पादन कर बढ़ा दिया है। किन्तु सरकार को यह मालूम होना चाहिये कि उद्योगों के लिये तेल की बजाय फिर कोयले का प्रयोग करना बहुत व्यय साध्य होगा। इसके लिये भारी पूंजी का विनियोजन करना होगा।

७. जहां हम आयात को निरुत्साहित करना चाहते हैं, वहां हमें निर्यात को प्रोत्साहित भी करना होगा और इसके लिये यह आवश्यक है कि वित्त मंत्रालय और व्यापार मंत्रालय में परस्पर सहयोग होना चाहिये, ताकि निर्यात प्रवर्धन के उपायों पर कदम उठाया जा सके।

८. सरकार के खर्च लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कर्म-चारियों का मंहगाई भत्ता ज्यादा बढ़ गया है। देश की सुरक्षा पर ज्यादा खर्च हो रहा है, और राज्य भी अधिक वित्तीय सहायता मांगने लगे हैं। सरकार इन सब खर्चों को नये-नये करों द्वारा पूरा करना चाहती है। किन्तु सरकार को मालूम होना चाहिये कि नये कर मूल्य वृद्धि में ही सहायक होंगे। परिणाम स्वरूप बचत और पूंजी निर्माण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

९. सरकार को अपने खर्च आज भी यथा सम्भव कम करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि शासन प्रबन्ध के लिये भी अतिरिक्त व्यय किये जायंगे तो इससे देश अधिक समृद्ध नहीं हो जायेगा।

१०. जब सरकार अपने व्यय के अनुमान बार-बार बदलती है और अतिरिक्त कर लगाती है तो उससे जनता में ही असन्तोष नहीं होता, किन्तु नये उद्योगों के लिये बनाये गये पूंजी निर्माण के लक्ष्य और अनुमान भी पूरे पड़ जाते हैं और नई कठिनाइयां पैदा हो जाती हैं।

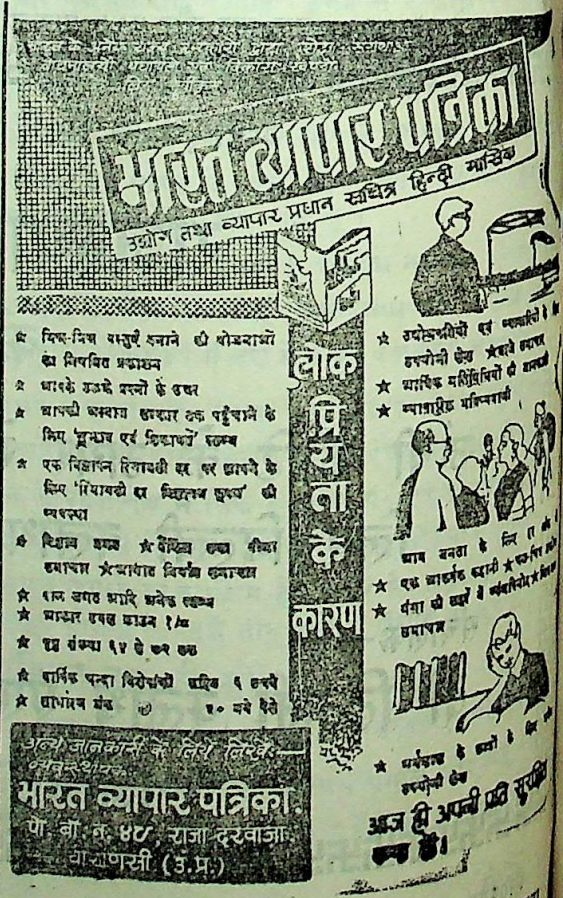




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास के महत्त्वपूर्ण समाचार—

# कुछ देश की : कुछ विदेश की

इस मास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना पाकिस्तान का भारत पर आक्रमण है। इसके समाचार सभी भारतीय नागरिक उत्सुकता से सुनते हैं या पढ़ते हैं। इस आक्रमण के अतिरिक्त कुछ मुख्य समाचार निम्नलिखित हैं—

अमरीका के दो उड़ाकों ने अन्तरिक्ष यान जैमिनी-५ में ८ दिन तक रहकर समस्त पृथ्वी के १२० चक्कर लगाये हैं। यह यान १०० से २०० मील तक की ऊंचाई पर चक्कर काटता रहा। इस यात्रा में उन्होंने अन्तरिक्ष की बहुत सी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। यह कहा जाता है कि इस यात्रा ने चन्द्रलोक की यात्रा के द्वार खोल दिये हैं।

—वियतनाम में यद्यपि युद्ध कुछ शिथिल होगया है, तथापि स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अमरीका की सेनाएं उत्तरी वियतनाम के कम्युनिस्टों का उसी तरह मुकाबला कर रही हैं। समझौते के प्रयत्नों में अभी तक कोई सफलता नहीं मिली।

—अमृतसर के सन्त फतेहसिंह ने जो अब तक भी पंजाबी सूबा बनाने के लिए अनशन और अग्नि दाह की धमकी दे रहे थे, लाचार होकर अन्त में भारत सरकार की अपील को स्वीकार कर लिया है।

—संसद में विरोधी दलों ने भारत की केन्द्रीय सरकार पर अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया था, किन्तु वह बहुमत से गिर गया। अविश्वास प्रस्ताव के मुख्य आधार देश में बढ़ती हुई महंगाई, कच्छ समझौता और वित्तीय नीति थी।

—भारत सरकार के वित्त मंत्री ने ७ सितम्बर को संसद में यह घोषणा की है कि यदि आवश्यकता हुई तो वे संसद में कर लगाने का एक अतिरिक्त बजट पेश करेंगे। १६ अगस्त को भी वे १७३ करोड़ रुपये के नये करों का पूरक बजट पेश कर चुके हैं।

—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की कांग्रेस द्वारा अन्तिम निर्णय तक अमरीका भारत को १० लाख टन अनाज देगा।

—निर्यात व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए रेलवे ने भाड़े में कुछ और रियायतें देने का निश्चय किया है।

—भारत और पाकिस्तान में परस्पर समझौता कराने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य सचिव श्री ऊ थान्त रावलपिण्डी पहुँच गये। वे भारत और पाकिस्तान दोनों के प्रशासकों से मिल कर समझौते का प्रयत्न करने वाले हैं।

—सोवियत संघ ने कनाडा, अर्जनटाइना, आस्ट्रेलिया और फ्रांस से करीब ७० लाख टन गेहूँ खरीदने का निश्चय किया है। इसके लिए रूस को करीब ४५ करोड़ रुपये का सोना पश्चिमी देशों को देना होगा। यों इस वर्ष रूस में पिछले वर्ष से फसल अच्छी हुई है, किन्तु रूसी सरकार ने दुग्धजन्य पदार्थों और मांस का उत्पादन बढ़ाने के लिए फसल का एक बड़ा हिस्सा पशुओं के लिए अलग रखने का निश्चय किया है। पूर्वी जर्मनी और चैकास्लोवेकिया की भी जरूरतें पूरी करनी हैं।

—यद्यपि वित्तीय उद्योग की रिपोर्ट अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है, तथापि यह समझा जाता है कि उसने आय कर में राज्यों का भाग ७५ प्रतिशत बढ़ाने की सिफारिश की है। इसी प्रकार जिन पदार्थों पर उत्पादन कर में राज्यों को उनका भाग मिलता है, उनकी संख्या बढ़ाने की भी सिफारिश उक्त आयोग ने की है।

—भारत सरकार ने सीमेंट, कागज, अखबारी कागज, सोडा ऐश और कास्टिक सोडा उद्योगों का उत्पादन बढ़ाने पर करों में रियायत की घोषणा की है।

—कुछ दिन पहले १४ राज्यों की ओर से १०१ करोड़ रुपये का कर्ज मांगा गया था किन्तु वह १०६.७४ करोड़ रुपये हो गया है। अब राज्य अधिक राशि वापस न करने का विचार कर रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—भारत सरकार के ईंधन मंत्री श्री हुमायूं कबीर के कथनानुसार अब तेल की कोई नई कम्पनी निजी क्षेत्र में नहीं खुलेगी । नई कम्पनी केवल सरकारी क्षेत्र में होगी ।

श्री लाला भरतराम के नेतृत्व में भारतीय उद्योग-पतियों का एक प्रतिनिधि मंडल अफ्रीका के इथोपिया, कांगों, कैमरून तथा अन्य अनेक देशों में सद्भावना बढ़ाने के लिए जा रहा है ।

गुजरात सरकार ने २२ अगस्त से मूंगफली के तेल आदि के गुजरात राज्य के बाहर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया है ।

—राज्य में इन वस्तुओं के मूल्य बहुत बढ़ रहे थे ।

—अमरीका की एक बड़ी कम्पनी ने टीन के बिना ही अनाज और पेय पदार्थों के डिब्बे बनाने की घोषणा की है । अगर यह योजना सफल हो गई तो अमरीका को विदेशों से टीन मंगाने के लिए बहुत निर्भर नहीं होना पड़ेगा ।

—अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ ने जो कि विश्व बैंक की एक सहयोगी संस्था है, भारत के लिए १० करोड़ डालर के ऋण की स्वीकृति दी है । इस का भुगतान ५० साल में करना होगा । मूलधन की वापसी १ जनवरी १९७६ से प्रारंभ हो जाएगी । इस तिथि के बाद १० वर्ष तक मूल धन के १ प्रतिशत का प्रति वर्ष भुगतान किया जाएगा और अन्तिम ३० वर्षों में प्रति वर्ष मूल धन के ३ प्रतिशत का भुगतान किया जाएगा । यह ऋण ब्याज रहित है । परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ के तत्सम्बन्धी प्रशासनिक व्यय के लिए आवश्यक धन देना होगा, जो कि प्रतिवर्ष लिये गये ऋण तथा बकाया के १ प्रतिशत का तीन-चौथाई होगा । यह ऋण मुख्यतः पूंजीगत सामग्री के आयात के काम में आएगा । मोटर व्यवसाय सम्बन्धी उद्योग, बिजली औद्योगिक मशीनों तथा निर्माण सम्बन्धी उपकरणों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय विकास संघ द्वारा भारत को मिलने वाला यह दूसरा ऋण है ।

—लोक सभा ने बोनस बिल बहुमत से पास कर दिया ।

—सं० रा० अमेरिका और ब्रिटेन ने भारत व पाकिस्तान को सैनिक सामग्री न देने का निश्चय किया है । आर्थिक क्षेत्र में सहायता मिलती रहेगी ।

—पाकिस्तान ने विदेशों के अपने सब भुगतान रोक दिये हैं ।

—भारत के खाद्य मन्त्री श्री सुब्रह्मण्यम ने लोक सभा में घोषणा की है कि एक लाख तक की आबादी वाले सब नगरों में राशनिंग जारी किया जायगा ।

## राज्य से आशा

चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्तिम स्वरूप का निर्धारण करने के लिए राष्ट्रीय विकास परिषद की बैठक सितम्बर के प्रथम सप्ताह में हो चुकी है । इसमें विचार करने के लिए योजना आयोग ने अपनी रिपोर्ट पेश की, और यह बताया कि योजना व्ययों को पूर्ण करने के लिये हरेक राज्य को कितनी-कितनी राशि नये करों के द्वारा एकत्र करनी होगी । केन्द्र ने विभिन्न राज्यों से भी यह आशा की है कि वे स्वयं केन्द्रीय सरकार की तरह अतिरिक्त पूरक बजट पेश करें, क्योंकि अनेक राज्यों ने इस वर्ष के बजट में कोई नये कर ही नहीं लगाये । योजना आयोग ने अतिरिक्त कृषि कर, सिंचाई दरों में परिवर्तन, भूमि सुधार उपकर, व्यापारिक फसलों पर अतिरिक्त कर, बिजली की दरों में परिवर्तन आदि के द्वारा यह आशा प्रकट की है कि पांच वर्षों में १२५० करोड़ रुपया एकत्र हो सकता है । विभिन्न राज्यों से जो राशियां एकत्र करने की सम्भावना प्रकट की गई है वह निम्न लिखित है ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| आन्ध्र | १३५ करोड़ | मद्रास | १०० करोड़ |
| आसाम | ५० ,, | महाराष्ट्र | १०० ,, |
| बिहार | १०० ,, | मैसूर | ७० ,, |
| गुजरात | ७५ ,, | उड़ीसा | ६० ,, |
| जम्मू कश्मीर | १२ ,, | पंजाब | ८० ,, |
| केरल | ५० ,, | उत्तरप्रदेश | १६० ,, |
| मध्यप्रदेश | १०० ,, | प० बंगाल | ७५ ,, |

पर क्या आज राज्य इतनी बिपुल राशि एकत्र भी कर सकेंगे ?



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

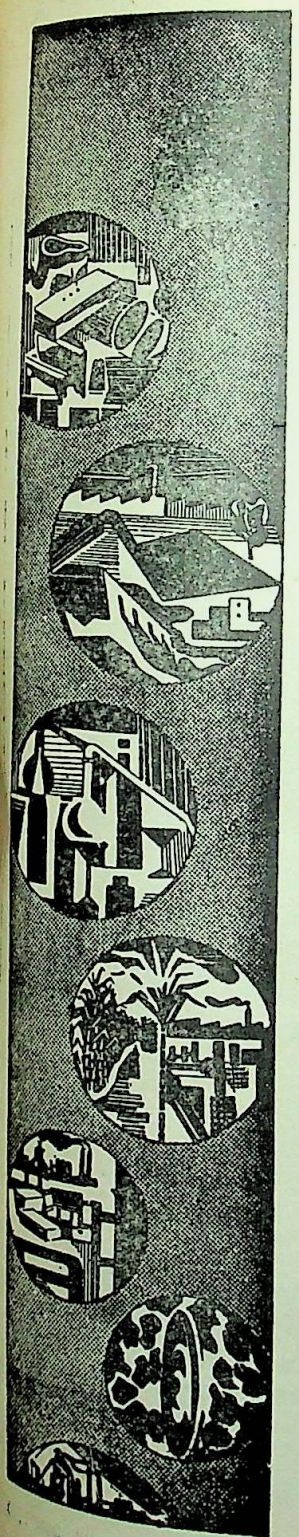

# न ये क्षि ति ज

स्वतन्त्रता पूर्व युग में भी जनता के सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए भारत की योजनाएं और कार्यक्रम थे। पर उनमें मौलिक निर्बलता थी कि उनका सम्बन्ध जनता की अपेक्षा सरकार के साथ अधिक था।

स्वतन्त्रता आई और इसके साथ नव-जागरण और जनता की योजनाएं—जनता के लिए और जनता के द्वारा। इसके परिणाम स्पष्ट थे, अधिक से अधिक बेहतर व सस्ती वस्तुएं तथा अधिक से अधिक लोगों के लिए बेहतर जीवन।

## डालमिया उद्योग समूह

निरन्तर ऐसे सामान का अधिक से अधिक उत्पादन करने का प्रयत्न कर रहे हैं जो हमारे जीवन स्तर को ऊंचा करने में सहायक हो। हम यह कामना न केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से, किन्तु लगभग एक चौथाई सदी से कर रहे हैं। यह काम कठिन होते हुए भी हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं, इस आशा के साथ कि कल का दिन अधिक उज्ज्वल, नव-प्रभात एवं नये क्षितिज से युक्त होगा।

DALMIA ENTERPRISES

डालमिया सीमेंट (भारत) लि., डालमियापुरम् (मद्रास रा.)
डालमिया मेगनेसाइट कार्पोरेशन, सेलम (मद्रास राज्य)
उड़िशा सिमेंट लि. राजगंगपुर (उड़िशा राज्य)
रजा बुलन्द शूगर कं० लि०, रामपुर (उ० प्र०)
दि रामपुर डिस्टिलरी एंड केमिकल कं० लि., रामपुर (उ. प्र.)

राष्ट्र की सेवा में सन्निहित

## डालमिया उद्योग-समूह

मुख्य कार्यालय—४, सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

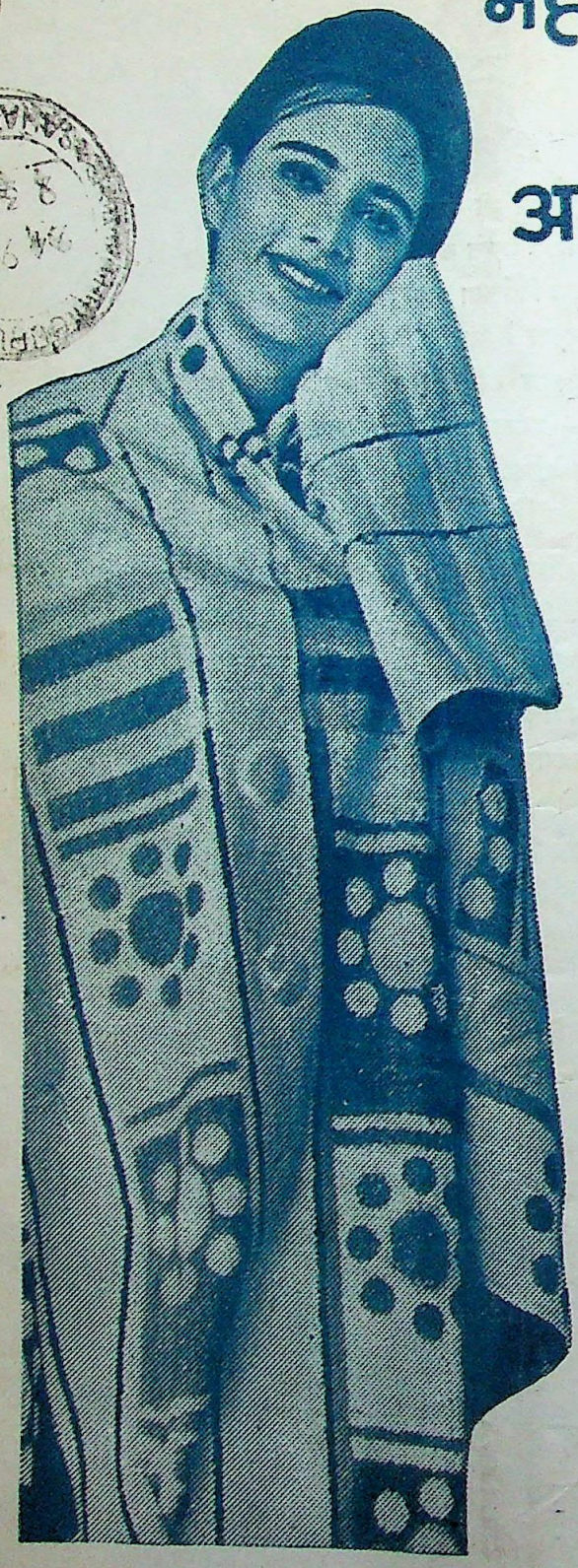

# नहाने के पश्चात् सुखमय अनुभव के लिये डी सी एम के तौलिए

## डी सी एम

कपड़ों की सुन्दरता व मज़बूती का प्रतीक

दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली।

JWT DCM 3630 (10)

सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा

## अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

मूल्य : ६.००

अंक का मूल्य : ८० पैसे

प्रशांत प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली - ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


* क्या आप राजस्थान की नवीनतम आर्थिक प्रगतियों और समस्याओं में कोई रुचि रखते हैं ?

* क्या आप राजस्थान में आर्थिक प्रश्नों का प्रामाणिक अध्ययन करना चाहते हैं ?

यदि हां

तो सम्पदा का अगस्त ६५ में प्रकाशित

# राजस्थान विकास अंक मू० १.७५ रु०

तुरन्त मंगाकर लाभ उठाइये।

राजस्थान के अर्थशास्त्र के अध्यापकों, विद्यार्थियों, राजनीतिज्ञों, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और व्यापार, उद्योग व कृषि में रुचि लेने वाले सबके लिए विशेष उपयोगी है।

यदि विश्वास न हो तो सामने के पृष्ठ पर दी गई सम्मतियों को एक बार पढ़ लीजिये।

---

सम्पदा का राजस्थान विकास अंक

## पढ़ने योग्य लेख : बहुत उपयोगी

नवभारत टाइम्स अपने ३ अक्टूबर के अंक में लिखता है :—

समय-समय पर 'सम्पदा' विभिन्न आर्थिक समस्याओं पर विशेषांक प्रकाशित करती रही है। प्रस्तुत अंक राजस्थान की आर्थिक प्रवृत्तियों और समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डालने के लिए निकाला गया है। इसमें राजस्थान के उद्योग, कृषि, यातायात, व्यापार, सिंचाई, भूमि सुधार आदि के सम्बन्ध में प्रामाणिक विद्वानों के लेख हैं। राजस्थान की आर्थिक समस्याएं क्या हैं और उनका समाधान कैसे हो सकता है, इस सम्बन्ध में श्री हरिश्चन्द्र माथुर और लक्ष्मीमल्ल सिंघवी आदि के लेख पढ़ने योग्य हैं। वित्तीय और आर्थिक समस्याओं पर भी दो-तीन लेख अच्छा प्रकाश डालते हैं। कुछ समय पहले लोकनाथन कमेटी ने राजस्थान का जो आर्थिक सर्वेक्षण किया था, वह राजस्थान के आर्थिक निर्माण के लिए बहुत उपयोगी संकेत देता है। यह सर्वेक्षण भी इसमें दिया गया है। संक्षेप में यह अंक राजस्थान की आर्थिक समस्याओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। सुन्दर आवरण पृष्ठ तथा अनेक चित्रों के कारण अंक सुन्दर बन गया है।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राजस्थान अंक पर कुछ मत

# सम्पदा

का

# राजस्थान विकास-अंक

नई चेतना : राजस्थान की सामयिक सेवा, राजस्थान की प्रगति का दीप स्तम्भ : उपयोगी और विचार प्रेरक : समस्याओं और प्रगतियों का प्रामाणिक विवरण

"राजस्थान विकास अंक मिला। इस अंक में जो सामग्री प्रस्तुत की गई है, उसमें हमें एक नई चेतना मिलती है। यह अंक निकाल कर आपने राजस्थान की सामयिक सेवा की है। हम इससे चतुर्थ पंचवर्षीय योजना लाभ उठा सकते हैं।"

—हरिश्चन्द्र माथुर, संसद सदस्य

"राजस्थान अंक प्राप्त हुआ। राजस्थान पर ऐसी सुन्दर सामग्री देने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।"

—मदनलाल वर्मा, दौसा (राजस्थान)

राजस्थान अंक निकालकर आपने 'सम्पदा' के सुन्दर और उपयोगी विशेषांक निकालने की स्वस्थ परम्परा को अब भी कायम रखा है। मेरी दृष्टि में इस अंक से बढ़कर राजस्थान की आर्थिक समस्याओं और प्रगतियों का सामाजिक विवरण इससे पहले नहीं मिला। आपने अनेक सामाजिक विद्वानों के लेखों का उपयोगी चयन किया है। मुझे विश्वास है कि शिक्षित जनता आपके इस प्रयत्न का आदर करेगी।

—अमरनाथ विद्यालंकार

'सम्पदा' का राजस्थान विकास अंक, राजस्थान की प्रगति का दीप स्तम्भ है। राजस्थान सरकार के सभी प्रकाशनों को मार्ग दर्शन देने वाला है। मेरा यह विश्वास रहा है कि यदि सरकारें अपने प्रकाशन न कर जनता के प्रकाशनों को दिया करें, तो उससे सरकार और समाज दोनों का अधिक हित होगा। राजस्थान अंक में सभी समस्याओं पर गंभीर प्रकाश डाला गया है। राजस्थान सरकार को अपने राज्य में इस पत्र के प्रचार के लिए अपने राज्य में योगदान देना चाहिए।

—जी० एस० पथिक

'सम्पदा' का अंक मिला। बहुत सुन्दर सामग्री से सुसज्जित प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

—विश्वनाथ वामन काले सम्पादक, कांग्रेस पत्रिका

मैंने 'सम्पदा' के कुछ लेखों को ध्यान से पढ़ा। राजस्थान में किस तरह से आर्थिक, राजनैतिक और औद्योगिक विकास हुआ है उसके बारे में परिचय मिलता है। लेख सभी उपयोगी और विचार प्रेरक है। मैं आपको इस अंक के निकालने के लिए बधाई देता हूँ।

आशा है आपकी देख-रेख में इस तरह के अंक और प्रदेशों में भी निकाले जावेंगे।

—देवीशंकर तिवाड़ी, जयपुर

राजस्थान विकास अंक मिला। मुझे यह कहने में कोई भी संकोच नहीं है कि राजस्थान राज्य के सम्बन्ध में इतनी प्रकाशित सामग्री एक जगह उपलब्ध करने का आपका प्रयत्न सराहनीय तथा उपयोगी है।

—डा० यज्ञदत्त शर्मा, आगरा

सामग्री की दृष्टि से यह अंक अत्यन्त उपयोगी है। जिज्ञासु पाठक व अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थी इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। इसके लिए मेरी शुभ कामनाएं।

—हरिश्चन्द्र जोशी, गाजियाबाद।

मूल्य १.७५। दो रुपये मनीआर्डर से भेजकर यह अंक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट मंगा लें।

—मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विषय-सूची


| विषय | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. भारत पर बर्बर आक्रमण और | | ४२१ |
| २. सम्पादकीय टिप्पणियां | | ४२३ |
| ३. भारत और पाकिस्तान की तुलनात्मक शक्ति | कृष्णचन्द्र विद्यालंकार | ४२५ |
| ४. कृषि विकास की गति मन्द क्यों ? | श्री महेश्वर दयाल | ४२६ |
| ५. चतुर्थ वित्त आयोग | निरंजनलाल शर्मा | ४३१ |
| ६. उद्योगों की उन्नति में प्रबन्ध का योगदान | श्री ए० के० पाल | ४३३ |
| ७. विकेन्द्रित उद्योग और करनीति | श्री उ० न० ढेबर | ४३५ |
| ८. पूर्वी पाकिस्तान का शोषण | | ४३८ |
| ९. देश की प्रतिरक्षा व नियोजन | आचार्य बिनोबा भावे | ४४० |
| १०. चतुर्थ योजना की निर्माणावस्था | श्री उत्तमचन्द कांस्टिया | ४४२ |
| ११. विकास और विनाश के बीच नई योजना | श्री पूरनचन्द रावत | ४४३ |
| १२. अमरीकी मजदूर के ८० वर्ष | | ४४५ |
| १३. विकसित देशों में छोटे उद्योगों का स्थान | | ४४७ |
| १४. चतुर्थ योजना के लक्ष्य आदि सांख्यिकी | | ४४८ |
| १५. अर्थ-वृत्त चयन | | ४५१ |
| १६. सामयिक साहित्य | | ४५३ |
| १७. कुछ देश की : कुछ विदेश की | | ४५८ |


## सूचना

अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में अनेक छुट्टियां आ जाने के कारण इस अङ्क में कुछ पृष्ठ कम दिये जा रहे हैं। यह कमी आगामी अङ्क में पूरी कर दी जायगी।

—मैनेजर

## विवशता में मूल्य वृद्धि

आज के समय में जबकि हरेक चीज लगातार मंहगी होती जा रही हैं। हमें विवश होकर 'सम्पदा' का मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है किन्तु पाठकों पर कम से कम बोझ पड़े, इस दृष्टि से इसका मूल्य केवल ०.५० पैसा अर्थात् केवल ४ पैसे प्रतिमास बढ़या गया है। आशा है कि ग्राहक इस मूल्य वृद्धि को सहर्ष स्वीकार करेंगे।

यदि ग्राहक सूचना मिलने पर ६ रु० का मनीआर्डर कर दें तो उन्हें वी० पी० से होने वाला ०.८० पैसे का खर्च बच जायेगा। जो न उनके काम आता है और न हमारे।

—व्यवस्थापक
सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : १०
अक्टूबर : १९६५

# सम्पदा

वर्ष : १४ अक्टूबर १९६५ अंक : १०

## भारत पर बर्बर आक्रमण से हम क्या सीखें ?

पाकिस्तान के पूर्व नियोजित आक्रमण और दोनों देशों में युद्ध के परिणाम स्वरूप जो नई परिस्थिति पैदा हो गई है, उसमें चौथी पंचवर्षीय योजना के समस्त रूप पर तुरन्त विचार करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने इस बात का भी संकेत किया है कि हमें नई परिस्थितियों और नई आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी पंचवर्षीय योजना में आवश्यक परिवर्तन करने चाहिएं।

ऐसा प्रतीत होता है कि योजना आयोग ने प्रधान मंत्री के इस प्रस्ताव को मान लिया है और समस्त योजना को नये सिरे से बनाने के प्रयत्न प्रारम्भ हो गये हैं। राष्ट्र की दो प्रधान आवश्यकताएं आज अन्न उत्पादन में वृद्धि तथा राष्ट्र रक्षा के लिए आवश्यक सामग्री का पर्याप्त संख्या में निर्माण हैं। हमें यह भी आज स्मरण रखना है कि कोई भी राष्ट्र हमें विदेशी मुद्रा की सहायता करना बन्द कर सकता है या अपनी सहायता बहुत न्यून कर देगा। इसलिए हमें अपनी विदेशी मुद्रा को बहुत सम्भाल कर खर्च करना होगा। पाकिस्तान के विरुद्ध भारतीय सेनाओं को जो सफलता मिली है, उसका एक प्रधान कारण यह है कि हमारी रक्षा सामग्री का अधिकांश उत्पादन हमारे अपने देश में हुआ है। इस ओर अब भी हम उदासीन नहीं रह सकते। इसके विपरीत हमें और भी अधिक शक्ति तथा साधन रक्षा सामग्री के निर्माण में लगाने पड़ेंगे। परिणामतः हमें ऐसे उद्योगों की तरफ अधिक ध्यान देना होगा जो युद्ध के लिए विशेष उपयोगी हों। नांगरिकों की उन आवश्यकताओं की कुछ समय तक प्रतीक्षा भी की जा सकती है, जो जीवन के लिए अनिवार्य न हों। प्रधानमंत्री श्री शास्त्री ने अपने भाषण में यह उचित परामर्श दिया है कि जीवन की आधारभूत आवश्यकता अन्न है। इसलिए किसानों को भी कुछ स्वार्थ त्याग करना होगा और व्यापारिक व नकदी फसलों का उत्पादन कम करके गेहूँ, चना, जौ, बाजरा, मक्की आदि की खेती अधिक करनी होगी।

हम इन पंक्तियों में इस बात पर बल देते रहे हैं कि निर्यात हमारी अर्थनीति का मुख्य आधार नहीं बनना चाहिए। आज जिस तरह ब्रिटेन और भारत में सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे हैं, उसे देखते हुए, यह नहीं कहा जा सकता कि इन दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध कब और क्या रूप ले लेगा, इसलिए भी यह आवश्यक है कि हम आयात पर बहुत अधिक निर्भर न रहें। हमें वस्तुतः आज स्वावलम्बन की आवश्यकता है। हम अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं स्वयं पूर्ण कर सकें, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। यह हमारा दुर्भाग्य रहा है कि हम अनेक वर्षों से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के पी० एल० ४८०



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर निर्भर करते रहे हैं। इस समझौते की अवधि बढ़ाने में ही हमारे खाद्यमंत्री अपनी सफलता मानते रहे हैं, जबकि हमें अपने देश में खाद्य उत्पादन की अधिकाधिक मात्रा को अपनी सफलता मानना चाहिए था।

आज भी—तीन पंचवर्षीय योजनाओं की समाप्ति के बाद भी हम अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी नहीं हैं। हमें आज भी ६०-७० लाख टन अनाज विदेशों से मंगाना पड़ता है और तब जाकर हम अपने देश के नागरिकों के पेट भर सकते हैं। बिना पेट भरे कोई सैनिक न मोर्चों पर लड़ सकता है और न मजदूर कारखानों में काम कर सकता है। हमारी जनसंख्या निरन्तर बढ़ रही है। हमें केवल १० प्रतिशत अनाज का उत्पादन बढ़ाना है, पर हम उसमें भी सफल नहीं हो रहे। इसी वर्ष हमने २६५ करोड़ रु० से अधिक का अन्न आयात करना है।

कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए खाद चाहिए। हम आज भी ३.५ लाख टन खाद विदेशों से आयात करते हैं। वर्तमान योजनाओं के अनुसार हमें १९७०-७१ तक इस आयात को दुगना कर देना होगा। जितना खाद हम अपने कारखानों में पैदा कर सकते हैं, उसके अतिरिक्त इस विपुल मात्रा में रासायनिक खाद चाहिए। जब तक हम यह खाद पैदा न करलें, हमें कम्पोस्ट व हरी खाद से काम चलाना होगा।

यद्यपि आज देश में भिलाई, रूरकेला, दुर्गापुर और टाटा आदि ६-७ कारखाने लोह व स्पात तैयार कर रहे हैं, तथापि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमें ६० करोड़ रु० के १० लाख टन स्पात पिण्ड विदेशों से मंगाने पड़ते हैं। इसी तरह क्रूड आयल व पैट्रोलियम भी हमें प्रति वर्ष विदेशों से आयात करना होता है, जिसका मूल्य लगभग १०४-१०५ करोड़ रु० होता है। १९६३-६४ में हमने कुल जितना आयात किया है; उसका यह दसवां भाग है। लोहा और तेल दोनों न केवल उद्योगों के विकास के लिए, बल्कि युद्ध-संचालन के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। हमें प्रयत्न करना होगा कि इनके लिए विदेशों पर निर्भरता कम-से-कम हो।

हमें आज ऐसे उद्योगों का ही विस्तार करना चाहिए, जो एक ओर रक्षा सामग्री के निर्माण में सहायक हों और दूसरी ओर किसानों को फायदा पहुँचा सकें। बहुत संभवतः योजना आयोग भी इसी दिशा में विचार कर रहा है, योजना की रूप रेखा में परिवर्तन कर रहा है। एक समाचार के अनुसार आयोग ने पहला कदम यह उठाया है कि चौथी पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष (१९६६-६७) के व्यय १० प्रतिशत कर दिये जायें। इसके लिए केन्द्र और राज्यों की सरकारों को यह परामर्श दे दिया गया है। उन्हें तीन विभिन्न सूचियों पर पुनर्विचार करने की सलाह दी गई है—(क) जो प्रयोजनायें जारी हैं। (ख) चतुर्थ योजना में प्रस्तुत नई प्रयोजना (ग) वर्तमान संकट को देखते हुए आवश्यक नई प्रयोजनाएं। सब सरकारों को यह सूचित कर दिया है कि पुनर्विचार करते समय उपर्युक्त विचारों को अपने सामने रखें।

योजना आयोग के सदस्य और विशेषकर उसके उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता अपनी योजना के आकार को छोटा करने का निरन्तर विरोध करते रहे हैं। नई परिस्थितियों के आगे भी बहुत झुकने की इच्छा उनमें नहीं है। इसलिये ऐसा प्रतीत होता है कि वे पूरी योजना के आकार को छोटा करने के बजाय फिलहाल एक ही वर्ष के लिए अपनी योजनाओं का व्यय कम कर देने पर तैयार हो गये हैं। यदि परिस्थितियों ने उन्हें आगे भी विवश किया तो वे शनैः २ पुनर्विचार करते जायेंगे। चतुर्थ योजना के ज्ञापन में आयोग ने यह धारणा स्वीकृत की थी कि रक्षाप्रयत्न पर अतिरिक्त व्यय नहीं करना पड़ेगा। किन्तु वर्तमान संकट ने उनकी धारणा को मिथ्या सिद्ध कर दिया है। अब उन्हें नये उद्योगों और नई योजनाओं को प्रारम्भ करने पर पुनः विचार करना होगा। एक तरफ युद्ध उद्योगों को प्राथमिकता देना अधिक आवश्यक हो गया है, दूसरी तरफ हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय संकट कभी भी ऐसा रूप धारण कर सकता है कि विदेशों से मिलने वाली सहायता राशि बहुत कम हो जाय और विदेशी मुद्रा पर आधारित उद्योगों का विकास हम अपने निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार न कर सकें।

१९६५-६६ के लिए भारत सहायक मित्र देशों से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४८६ करोड़ रु० की सहायता देने का निश्चय किया था। यह अमेरिका द्वारा पी० एल० ४८० के अन्तर्गत दिये जाने वाले अनाज के अतिरिक्त है। यदि ये देश सहायता बन्द कर दें, तो भारत को ६०० करोड़ की विदेशी मुद्रा कम मिलेगी। हमने चौथी योजना के लिए ३००० करोड़ रु. विदेशी सहायता का अनुमान किया है। यह सहायता योजना के लिए आवश्यक है, किन्तु आज हमें इसके बिना भी कार्य संचालन के लिए उद्यत रहना होगा।

यह ठीक है कि यदि विदेशी सहायता रोक दी गई तो भारत की अपेक्षा पाकिस्तान को ही अधिक नुकसान होगा। भारत का औद्योगिक विकास काफी व्यापक और बहुमुखी है। इसलिए हमें स्वावलम्बी होने में पाकिस्तान की अपेक्षा बहुत कम समय लगेगा। हमारी अनिवार्य आवश्यकताएं किसी न किसी तरह पूरी होती रहेंगी, किन्तु हमारी नई आवश्यकताएं भी कम नहीं हैं। खाद्य दृष्टि से स्वावलम्बन सबसे पहले अनिवार्य आवश्यकता है। भारत के प्रधान मंत्री ने ठीक ही कहा है कि हमें आज व्यापारिक फसलों के उत्पादन के बढ़ाने के उत्साह में अन्न उत्पादन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। गन्ना, तिलहन, तम्बाखू और अन्य कम आवश्यक उत्पादनों में कुछ समय के लिए कमी की जा सकती है, किन्तु खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाना ही पड़ेगा। पिछले १२ वर्षों में खाद्य फसलों के क्षेत्र का सूचकांक १०० से ११५.५ तक पहुंचा है, जबकि खाद्येतर फसलों के क्षेत्र का सूचकांक १४३.१ तक पहुँच गया है। यह क्रम उद्योगों की दृष्टि से भले ही आवश्यक हो, आज अन्न संकट की स्थिति में इस क्रम को जारी नहीं रहने देना चाहिए। आज की प्रथम आवश्यकता खाद्य उत्पादन को इतना अधिक बढ़ाने की है कि हम विदेशों पर अधिक निर्भर न करें। इस दृष्टि से हमारी चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में परिवर्तन होना चाहिए।

समस्त योजना में बहुत अधिक परिवर्तन करने की आवश्यता नहीं रह जायगी, यदि जनता का पूर्ण सहयोग राष्ट्र को मिलने लगे। कोठियों के लानों और सहनों में तथा मकानों में छोटी-छोटी क्यारियों में घास, फूल और शोभा वर्द्धक पौधों की बजाय हम अनाज पैदा कर सकते हैं। हमारे घरों में सब्जियां उगाई जा सकती है। यदि देश में इसके लिए व्यापक आन्दोलन किया जाय तो कोई कारण नहीं कि हम अपने उत्पादन को ५-७ प्रतिशत तक न बढ़ा सकें। छोटी बचत के वर्तमान लक्ष्य पूर्ण नहीं हो रहे। इसका कारण भी जनता की उपेक्षा ही है। यदि हम किसी प्रकार इस उपेक्षा को दूर कर सकें तो यह पंचवर्षीय योजना की सबसे बड़ी सफलता होगी। लोगों में राष्ट्र-रक्षा के लिए आज जो उत्साह है, उसे स्थिर रखने की आवश्यकता है और इसलिए जनता में त्याग और सादगी की भावना को जगाये रहने की आवश्यकता है। नये मकानों को अधिक सादा बनाया जा सकता है और इस तरह हम अधिक आवश्यक कार्यों के लिए योजना में उपलब्ध राशि व्यय कर सकते हैं। अधिक उत्पादन या विनाश हमारा आज का नारा बन जाना चाहिए। हमारी सुजला, सुफला, शस्यश्यामला पुण्य भूमि पर प्रकृति सदा उदार रही है। किसी चीज की हमें कमी न रहे, हम स्वावलम्बी बन जायें, यह प्रयत्न और लक्ष्य हमारे सामने सदा रहना चाहिए।

हम यह वैसे मान लें कि जो भारत अमेरिका के साधनों और पाकिस्तान की बरसों तैयारियों का मुकाबला सरलता से कर सकता है, वह अपनी आर्थिक समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। भारत में प्रतिभा है, कार्य कुशलता है, सूझ है और है सामर्थ्य। केवल आज आवश्यकता है धुन, राष्ट्रीयता की भावना और दृढ़ संकल्प की। हमारी सभी आकांक्षाएं पूर्ण हो कर रहेंगी।

## नई योजना में एक वर्ष विलम्ब ?

जब चौथी पंचवर्षीय योजना पर प्रायः अन्तिम रूप से विचार हो चुका है, नयी परिस्थितियों से विवश होकर भारत के वित्त मंत्री श्री कृष्णमाचार्य और योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता ने यह सम्भावना प्रकट की है कि चौथी पंचवर्षीय योजना आगामी वर्ष में शुरू नहीं होगी। १९६६-६७ का वर्ष संकटकालीन योजना का वर्ष होगा, जिसमें प्रतिरक्षा और अन्न उत्पादन पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाएगा। इस वर्ष की योजना भी तृतीय योजना का ही एक अंग समझी जाएगी। हमारी नम्र सम्मति में यह विचार बहुत युक्ति युक्त हैं। हमें नये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये कार्य प्रारम्भ करने से पहले तीसरी योजना के ही लक्ष्यों को पूर्ण करने पर अपनी शक्ति लगानी चाहिए। अन्न उत्पादन व प्रतिरक्षा दो ऐसी आवश्यकताएं हैं जिन्हें सर्वोपरि प्राथमिकता देना अनिवार्य हो गया है। जब तक सम्पदा का यह अंक पाठकों के पास पहुँचेगा, तब तक बहुत सम्भवतः इस योजना के सम्बन्ध में अंतिम निश्चय हो चुका होगा।

## सिन्धु घाटी के लिए ऋण

सम्पदा के पाठकों को ज्ञात होगा कि अमेरिका, ब्रिटेन और विश्व बैंक के दबाव तथा पाकिस्तान से सद्भावना पूर्ण सम्बन्ध बढ़ाने की आतुरता के कारण पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पाकिस्तान सरकार को सिन्धु घाटी में नदी विकास की विशालकाय योजना के लिए करीब ८५ करोड़ रुपया (१७.४ करोड़ डालर) देने का निर्णय किया था। इसमें से अब तक भारत सरकार पाकिस्तान को ६.९६ करोड़ डालर दे चुकी है। शेष राशि आगामी छः वर्षों में चुकानी है। अब स्थिति बदल गई है। इसलिए सुविज्ञ क्षेत्रों के अनुसार भारत सरकार अब पाकिस्तान को सम्भवतः यह प्रतिज्ञात राशि नहीं चुकाएगी। भारत सरकार के पास यह रकम न चुकाने के लिए पर्याप्त आधार भी मौजूद है। समझौते के अनुसार पाकिस्तान को ब्रिटेन और अमेरिका, भारत तथा वर्ल्ड बैंक से प्राप्त राशिका उपयोग केवल नदी विकास में ही करना था, किन्तु पाकिस्तान ने इस राशि का उपयोग रक्षा कार्यों के लिए भी किया है, जैसा कि इच्छोगिल नहर के किनारे पर बनाये गये रक्षात्मक निर्माण कार्यों से स्पष्ट है। इसलिए भारत सरकार यदि शेष राशि न चुकाए तो उसे दोष नहीं दिया जा सकता। नदी विकास योजना के अनुसार रावी, व्यास और सतलज से मिलने वाले पानी की कमी को पूरा करने के लिए सिन्ध, झेलम और चनाब की पश्चिमी नदियों से नई नहरें बना लेनी चाहिए थीं। यह विशालकाय योजना ६४ करोड़ डालर के व्यय से पूरी होने वाली थी। इस योजना में ७० करोड़ घन फुट भूमि खोदनी थी। २० लाख टन सीमेंट, २ लाख टन स्पात और एक अरब ईंटों और टाइलों का उपयोग भी इसी योजना में किया जाना था, किन्तु पाकिस्तान सरकार को अपनी देश के आर्थिक विकास की चिन्ता कभी नहीं रही। भारत के विरुद्ध युद्ध करने की तैयारियों की उसमें अधिक चिन्ता थी। इसी कारण नदी विकास की निधि का भी रक्षात्मक कार्यों के लिए उपयोग किया गया। अब भारत को यह अधिकार है कि पाकिस्तान के आर्थिक विकास के लिए उदारतापूर्ण सहायता के आश्वासन के पालन से वह इन्कार कर दे। एक तरफ पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करे। दूसरी तरफ वह भारत से उदार सहायता की आशा करे, यह न उचित है और न तर्कसंगत।

## विश्व की जन संख्या

पिछले महीने में यूगोस्लेविया में संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से एक जन संख्या सम्मेलन किया गया था। इसमें ८८ देशों के ८०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। डाक्टर, अंक शास्त्री, नगर व्यवस्थापक तथा जन संख्या विशेषज्ञ आदि सभी अधिकारी विद्वान उपस्थित हुए थे। यह सम्मेलन दो सप्ताह तक चलता रहा। इसमें सन्तति निरोध, उत्पादकता, मरणशीलता, भविष्य में सम्भावित जन संख्या, बेकारी तथा उपलब्ध श्रम आदि विभिन्न विषयों पर ५०० के करीब निबन्ध पढ़े गये। इस सम्मेलन में यह बताया गया कि यदि दुर्भिक्ष, विश्वयुद्ध, जन-संख्या पर नियंत्रण के सफल उपाय नहीं हुये, तो आगामी ३५ वर्षों में विश्व की जन संख्या आज से करीब दुगुनी अर्थात् ६ अरब तक पहुँच जायगी। खाद्य कृषि संगठन के डायरेक्टर जनरल डा० बी० आर० सेन ने आगामी पांचदस वर्षों में भयंकर दुर्भिक्ष की संभावना भी प्रकट की। मानव जाति को अपने भविष्य के लिए गम्भीर उत्तरदायित्व को समझना होगा। अन्यथा वह गम्भीर बढ़ती हुई आपत्ति की ओ रअग्रसर होती जाएगी। इस सम्मेलन में यह स्पष्ट किय गया कि जहां विकसित देशों में जन संख्या की वृद्धि ३० प्रति हजार बढ़ रही है, वहां विकासशील देशों में ४० से ५० शिक्षित और समृद्ध घरों में जन संख्या कम तेजी से बढ़ी है। इसलिए विश्व की समस्या का समाधान करना हो तो यह भी आवश्यक है कि अविकासित या अर्द्ध विकसित देशों को समृद्ध और विकसित करने के लिए संगठित और व्यापक प्रयत्न करने होंगे।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत और पाकिस्तान की तुलनात्मक समृद्धि

श्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

## तुलनात्मक आर्थिक क्षमता

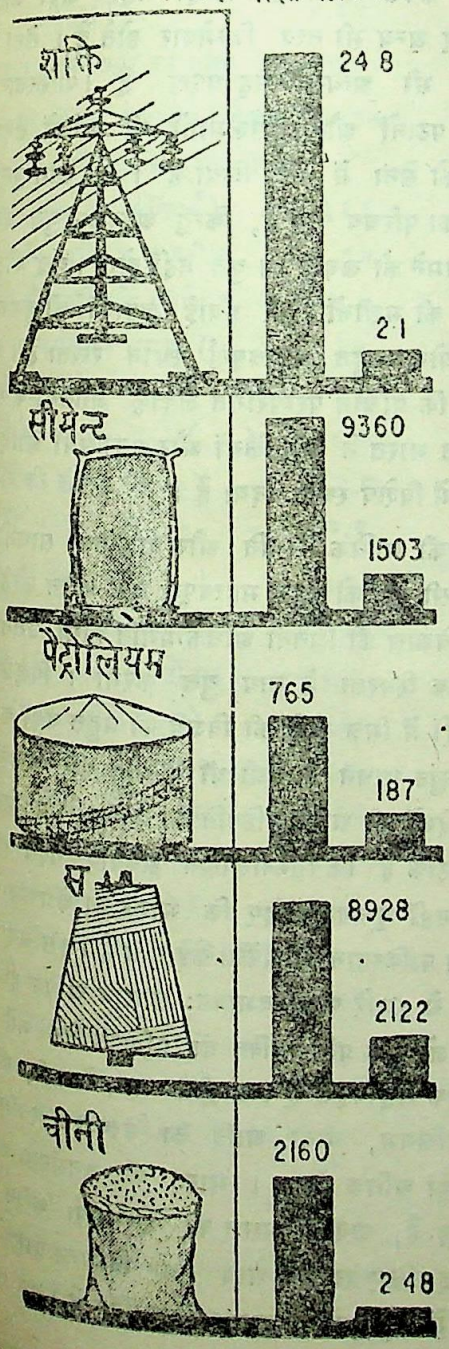


आज भी भारत और पाकिस्तान में परस्पर युद्ध संकट की स्थिति समाप्त नहीं हुई। इसलिए यह स्वाभाविक है कि हम अपने और शत्रु के बलाबल पर विचार करें। अनेक विचारकों ने इस पर विचार करते हुए स्वर्गीय प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की नीति की भी चर्चा की है। कुछ विचारकों की सम्मति में पं० नेहरू की शांति नीति भी आज की स्थिति के लिए एक अंश तक उत्तरदायी है। पंडितजी ने शस्त्र बल बढ़ाने की अपेक्षा देश की पंचवर्षीय योजनाओं के विकास पर ही अधिक बल दिया। जब पाकिस्तान को सैनिक दृष्टि से उत्तर देने की आवश्यकता थी, तब वह शांत रहे। जब अमेरिका से पाकिस्तान टैंक, लड़ाकू हवाई जहाज और विपुल मात्रा में सामरिक सामग्री ले रहा था, तब पंडितजी बड़े बड़े कारखानों और बड़े बड़े बांधों के लिए अरबों रुपयों की मशीनरी विदेशों से खरीद रहे थे। देश की समस्त शक्ति अपना सैनिक बल बढ़ाने में नहीं, भविष्य के सुनहले स्वप्न दिखाकर आर्थिक योजनाओं की पूर्ति में लगती रही।

लेकिन आज जबकि दोनों दिशाओं में घमासान युद्ध एक मास तक जारी रहने के बाद विराम की स्थिति में है, तब दोनों देशों के बलाबल पर एक तुलनात्मक दृष्टि डाल लेना आवश्यक हो जाता है। किसी भी देश के बलाबल को जानने के लिए निम्न तत्त्वों का ज्ञान आवश्यक है—

१. सैनिक दृष्टि से उपयोगी शस्त्रास्त्र।

२. सेना का जन बल।

३. देश की आर्थिक स्थिति और उसकी स्थिरता के साधन।

४. जनता का मनोबल और उसका सरकार को युद्ध में सक्रिय सहयोग।

प्रारम्भ में ऐसा मालूम हुआ कि पाकिस्तान अमेरिका से विपुल सैनिक सामग्री पाकर बहुत बलवान हो गया है। उसके पास भारी-भारी ६०० पैटन टैंक, २००

(स्पष्टीकरण के लिए तालिका ५२७ पर देखिये)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## यातायात और संचार

(प्रयोग में संख्यायें)

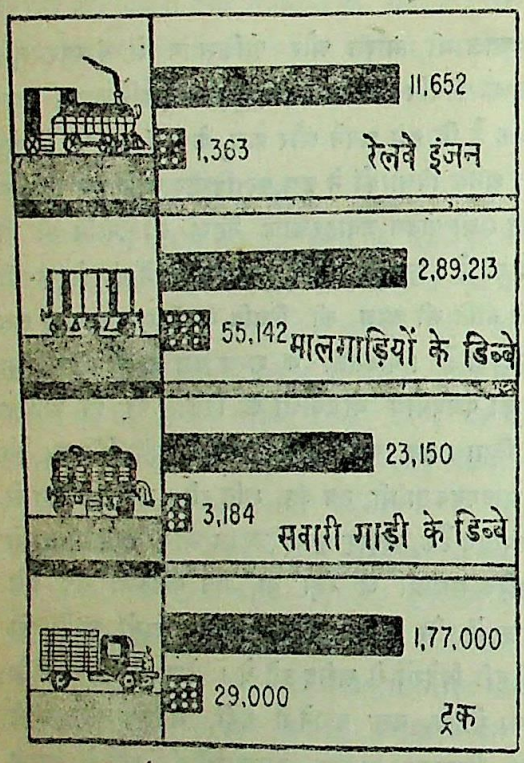


काला निशान भारत तथा सफेद बिन्दु वाला चिन्ह पाकिस्तान का है

---

हवाई जहाज, सैकड़ों भारी तोपें तथा गोला बारूद था। इन्स्टीट्यूट आफ स्ट्रेटिजकल, लन्दन तथा इंडियन इंस-टीट्यूट आफ स्ट्रेटेलेजिकल स्टडीज़ लन्दन के विवरण के अनुसार, जो इसी वर्ष प्रकाशित हुए हैं, पाकिस्तान के पास ६०० भारी टैंक और १२४ लड़ाकू हवाई जहाज थे। इस सम्बन्ध में कुछ और भी अनुमान लगाये गये हैं। एक अनुमान के अनुसार पाकिस्तान के पास ४०० भारी टैंक थे। युद्ध सामग्री की संख्या अत्यन्त गुप्त रखी जाती है इसलिए विभिन्न सूत्रों से लगाये गये अनुमान ही आधार होते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि पाकिस्तान ने इतने भारी युद्ध का दुस्साहस अपने इसी सैन्य बल पर किया था। भारत के लिए ही नहीं, विश्व भर के लिए यह भी विस्मय और आश्चर्य की बात है कि पाकिस्तान की यह सैनिक शक्ति जिस पर उसे बड़ा गर्व था, थोड़े ही समय में गत्ते के डिब्बों की तरह नष्ट हो गई। १४ मई के एक विवरण के अनुसार भारत ने पाकिस्तान के २६० भारी टैंक और ३६ हवाई जहाज नष्ट कर दिये हैं या अपने हाथ में कर लिए हैं। जब तक 'सम्पदा' का यह अंक पाठकों तक पहुँचेगा, तब तक इन संख्याओं में भारी परिवर्तन हो चुका होगा।

युद्ध केवल शस्त्रबल पर ही नहीं लड़ा जाता, उसके लिए अन्य भी तत्त्व जिम्मेवार होते हैं। सेना का जन बल भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पाकिस्तान ने बलोचों, पठानों और मुसलमानों की अनेकों लड़ाका जातियों को सेना में भर्ती किया है। ये लोग युद्ध में बहादुरी का परिचय देते हैं, किन्तु आजकल युद्ध केवल आमने सामने की लड़ाई का युद्ध नहीं होता। युद्ध कौशल और युद्ध की मशीनों टैंक, हवाई जहाजों की कुशलता पूर्वक उपयोग बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यही कारण है कि प्राचीन परम्परागत लड़ाकू जातियों के साथ साथ आज भारत ने बंगालियों और मद्रासियों आदि को भी सेना में विशेष स्थान दिया है।

देश की आर्थिक स्थिति और प्राकृतिक साधनों का दोहन किसी देश को बहुत महत्त्वपूर्ण बल प्रदान करते हैं। आर्थिक विकास की जितनी अधिक प्रगति होगी, उतना ही देश अधिक स्थिरता के साथ युद्ध करेगा। पिछले दो विश्व युद्धों में मित्र राष्ट्रों की विजय का बहुत बड़ा कारण उनकी अखुट साधन सामग्री थी। आगे की तालिकाओं से दोनों देशों की आर्थिक स्थिति का कुछ परिचय मिलता है। यह ठीक है कि निम्नलिखित संख्याएं पढ़ते समय हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत का क्षेत्रफल और जनसंख्या पाकिस्तान की अपेक्षा कई गुनी है। इसलिए संख्या की दृष्टि से हमारे पास स्वभावतः सामान अधिक होगा। इसलिए जो अंक प्रति व्यक्ति या प्रतिशत दिये गये हैं, वह अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय आय, बिजली, सीमेंट और पैट्रोलियम, चीनी आदि का उत्पादन स्वभावतः हमारे यहां अधिक होगा। भारत की जनसंख्या करीब ४७ करोड़ है, जबकि भारत की जनसंख्या करीब १० करोड़। इसलिए राष्ट्रीय आय तथा विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में ४½ गुना का अन्तर स्वाभाविक है। इसे ध्यान



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



में रखते हुए यदि हम निम्नलिखित तालिकाएं पढ़ेंगे तो हम दोनों देशों की तुलना निष्पक्ष रूप से कर सकेंगे—

| | भारत | पाकिस्तान |
|---|---|---|
| क्षेत्रफल (वर्ग मील) | १२,६१,५६७ | ३,६४७३७ |
| जनसंख्या (करोड़ों में) | ४४.०० | ६.८५ |
| प्रति व्यक्ति सुलभ कृषि भूमि (हैक्टर) | ०.३४ | ०.२६ |
| साक्षरता (जनसंख्या का प्रतिशत) | २४.० | १५.० |
| प्रतिव्यक्ति भोजन सुलभता (कैलरी) | २०४० | १६८० |
| खपत प्रति व्यक्ति शक्ति (कोयले के समक्ष) (कि. ग्रा. प्रतिवर्ष) | १६१ | ७५ |
| खपत प्रति व्यक्ति क्रूड स्टील | १४ | ७ |
| सिनेमा में उपस्थिति (प्रति १०००) | ३.२ | ०.८ |
| मोटर गाड़ियों की संख्या ( ,, ) | १२ | ६ |
| टेलीफोनों की ,, ( ,, ) | १३ | ६ |
| रेडियों की ,, ( ,, ) | ६८ | ४१ |
| डाक्टरों की संख्या (०००) | ७७.८ | १५.० |
| नर्सों की ,, ( ,, ) | ३२.२ | ३.२ |
| अस्पतालों में बिस्तर ( ,, ) | २०२.० | ३३.० |
| राष्ट्रीय आय (मिलियन डालर) | ४०,००० | ८०० |
| बिजली (मिलियन किलोवाट) | २४.८ | २.१ |
| सीमेंट (हजार मीट्रिक टन) | ६३६० | १५०३ |
| फैरोलियम पदार्थ (करोड़ लीटर) | ७६५ | १८३ |
| सल्फ्यूरिक एसिड (हजार मीटरिक टन) | ५६८ | १६ |
| सूत कपास (लाख किलोग्राम) | ८६२८ | २१२२ |
| चीनी (हजार मीट्रिक टन) | २१६० | २४८ |
| औद्योगिक उत्पादन निर्देशक अंक (१९५८=१००) | १३८ | १४४ |
| कृषि उत्पादक निर्देशक अंक (१९५२-५३, १९५६-५७) | १२१ | ११५ |
| उपभोक्ता सामग्री (१९५८ से ६२) प्रतिशत वृद्धि | ११.० | ८.५ |
| हक (चालू) (१००) | १७७ | २६ |

उपर्युक्त संख्याएं इकानामिक टाइम्स १० सितंबर से ली गई हैं।

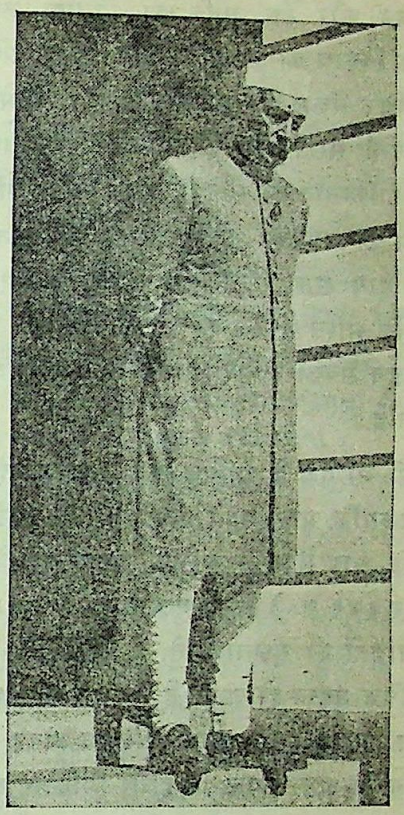

दिवंगत नेता पं० नेहरू

इन दोनों तालिकाओं से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं कि भारत में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि अधिक सुलभ है, यद्यपि पाकिस्तान में अनेक कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भारत में प्रति एकड़ उत्पादन अधिक किया जाय। भारत में साक्षरता पाकिस्तान की अपेक्षा बहुत अधिक है और साक्षर जनता किसी राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में अधिक सहायक हो सकती है। यद्यपि पाकिस्तान में गेहूँ, चावल आदि बहुत उत्पन्न होते हैं, तथापि वहां प्रति व्यक्ति भोजन की कैलरी में सुलभता हमारी अपेक्षा कम है। कोयला, क्रूड स्टील की भी प्रति व्यक्ति भारत में खपत अधिक है—करीब दुगनी है। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत का औद्योगिक विकास अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है।

भारत शस्त्रास्त्र के निर्माण में भी अधिक सक्षम है। वर्तमान युद्ध में विदेशों द्वारा प्राप्त पाकिस्तान की विपुल युद्ध सामग्री भी हमारे सैनिकों ने बहुत आसानी से नष्ट



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दी। हमारे अपने देश में हवाई जहाज, मोटर गाडी, रेलवे इंजन, और टैंक आदि का निर्माण जहां हमारे औद्योगिक विकास का प्रमाण है, वहां सैनिक दृष्टि से भी हमारे अधिक सक्षम होने का सूचक है। सीमेन्ट, पैट्रोलियम पदार्थ, सलफ्यूरिक एसिड आदि का उत्पादन भी भारत में पाकिस्तान की अपेक्षा बहुत गुना अधिक है। पेट्रोलियम का उत्पादन तो पाकिस्तान में बहुत ही कम होता है। प्रायः सारा पेट्रोलियम विदेशों से मंगाया जाता है, जब कि भारत में तेल का उत्पादन निरन्तर बढ़ता जा रहा है। इन सबका उत्पादन भारत के साधनों की क्षमता ही बताता है।

किसी भी देश के आर्थिक विकास का मापदंड राष्ट्रीय और प्रति व्यक्ति आय मानी जाती है। यह ठीक है कि प्रति व्यक्ति आय में बहुत अधिक अन्तर नहीं है (३७१ रुपये और ३४६ रु०) किन्तु युद्ध के समय जब हम अपने समस्त साधनों की तुलना करते हैं, तो राष्ट्रीय आय का बहुत अधिक महत्त्व हो जाता है। भारत की राष्ट्रीय आय अमेरिकन डालरों में ४० हजार मिलियन डालर है, जबकि पाकिस्तान की आय केवल ८ हजार मिलियन डालर है। इसलिए यदि युद्ध कुछ समय अधिक चलता है, तो भारत की स्थिति बहुत सुदृढ़ है।

किसी भी देश में साक्षरता और विशेषकर तकनीकी ज्ञान का बहुत अधिक महत्त्व होता है। पाकिस्तान में केवल ७ इंजीनियरिंग कालिज हैं। इनमें १२३० विद्यार्थी पढ़ सकते हैं। इसके विपरीत भारत में प्रति वर्ष २१ हजार छात्र इन कालिजों से निकलते हैं।

भारत की तटस्थतापूर्ण विदेश नीति और शांति, प्रेम और आदर्श वादिता के कारण बहुत से आलोचक अपने दिवंगत प्रधान मंत्री को उत्तरदायी ठहराते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यदि वे अधिक व्यावहारिक होते और काश्मीर में जनमत गणना का नारा बार २ नहीं लगाते अथवा युद्ध विराम रेखा के सम्बन्ध में कुछ अधिक दृढ़ता से काम लेते, तो हमारी अनेक कठिनताएं दूर हो जातीं। किन्तु युद्ध के सफल संचालन में पं० नेहरू का योगदान किसी भी तरह कम प्रशंसनीय नहीं रहा है। उनकी औद्योगिक और आर्थिक नीतियों ने भारत को पिछले १५ वर्षों में स्वावलम्बी और समृद्ध बनाने में जो सफलता प्राप्त की है, वही भारत का सच्चा बल है। हम स्वयं टैंक, इंजन, वैगन, वायुयान तथा भारी तोपें बनाने में समर्थ हो गये हैं। इस दृष्टि से पंडित नेहरू का युद्ध के सफलता पूर्वक संचालन में बहुत अधिक योगदान रहा है और हमें अपनी आर्थिक एवं उद्योग नीतियों पर गर्व करना चाहिए।

## नैट बनाम सेबर जैट

बंगलौर के सरकारी कारखाने में बने छोटे व हलके नैट जहाजों ने पाकिस्तान द्वारा अमेरिका से लिये गये विशालकाय सेबर जैट विमानों को बुरी तरह नष्ट कर दिया। नैट वायुयान का वज़न सिर्फ ३००० से ४००० किलोग्राम होता है, जबकि सेबरजैट का ७६०० किलोग्राम। इसका आकार भी बहुत छोटा होता है—लम्बाई ६ मीटर और विस्तार ६.७५ मीटर, जबकि सेबर जैट की लम्बाई ११ और विस्तार ११ मीटर होता है। प्रतिदिन एक वायुयान हमारे कारखाने में पिछली औद्योगिक नीति के परिणाम स्वरूप ही बन रहा है। यह है उस स्वावलम्बन का एक उदाहरण, जिस ओर हम अनेक वर्षों से बढ़ रहे थे।

## योजना निर्माता दुविधा में

योजना बनाने वाला पक्ष हतबुद्ध होता जा रहा है। उसे क्या करना चाहिए, यही समझ में नहीं आता। कुछ तो करके भी देखा जाय, यही चल रहा है। कोई कहता है कि बड़े-बड़े ७-८ शहरों में राशनिंग करके देखा जाय, तो कोई कहता है, दस लाख के ऊपर के सभी शहर ले लें। कोई कहता है कि नियंत्रित अर्थ-रचना (कण्ट्रोल्ड एकानामी) चाहिए, तो कोई उसे अनियंत्रित चाहता है। अर्थ-शास्त्र ने ऐसे सारे घोटाले कर रखे हैं। वास्तव में अर्थ-शास्त्र घोटाले का ही शास्त्र है और जब एक पार्टी सारी सभा अपने हाथ में रखकर ४५ करोड़ लोगों की भाग्य-विधाता भी बनती है, तो उसमें कुछ ढीलढाल आती है। ऐसी हालत में अधीरता आना स्वाभाविक ही है। इस तरह की घबराहट की स्थिति आज दिखाई पड़ रही है। इस प्रकार एक ओर यदि कम्युनिस्ट भी डगमगा उठे हैं तो दूसरी ओर ये 'प्लानिंग' वाले भी डगमगा रहे हैं।

—विनोबा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर विवेचन

# कृषि विकास की गति मन्द क्यों ?

श्री महेश्वर दयाल गंगवार, एम० ए०,

हमारी अर्थ-व्यवस्था में कृषि का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में कृषि की जो उपेक्षा हुई, वह दुर्भाग्य की बात है। यदि आर्थिक प्रगति के मूल कृषि-विकास पर समुचित ध्यान दिया जाता तो आज हमारी अर्थ-व्यवस्था की नींव इतनी कमजोर प्रमाणित नहीं होती और न ही युद्ध की इन घड़ियों में हमें यह आशंका परेशान करती है कि कहीं अमेरिका आदि से आर्थिक सहायता मिलना बन्द न हो जाये। प्रवर्तमान खाद्य-संकट न केवल एक सामयिक चुनौती है, अपितु, यदि उसके निराकरण का उपाय शीघ्र ही नहीं खोजा गया तो हमारी आर्थिक प्रगति के लिए उसके दूरगामी दुष्परिणाम हो सकते हैं। समय की मांग को देखते हुए प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री जी ने कृषि के लिए पृथक आयोजन पर बल दिया है, जिससे हमारे आर्थिक विकास के विद्यमान क्रम में कृषि की महत्ता स्पष्ट हो जाती है।

## कृषि एवं पंचवर्षीय योजनाएं :—

प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि को प्रमुखता दी गई और योजना काल में किये गये कुल व्यय में कृषि तथा उससे सम्बन्धित पशु पालन, भू-संरक्षण, विपणन और सहकारिता आदि पर २७.५ प्रतिशत व्यय हुआ। इसमें सिंचाई के कृषि पर १८१ करोड़ रु० व्यय हुआ। पहली योजना का आकार बहुत छोटा था। इसीलिये योजना में व्यय की गई राशि को देखते हुए यह व्यय अवश्य सन्तोषजनक था, किन्तु कृषि की विस्तीर्णता को देखते हुए इसे नगण्य ही कहा जायेगा। द्वितीय और तृतीय पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि पर किये गये व्यय का प्रतिशत क्रमशः बहुत गिर गया। तृतीय योजना के अन्त तक सम्पूर्ण नियोजन काल में कृषि पर लगभग ५,६३० करोड़ रु० का कुल व्यय होने का अनुमान है, जिसमें ६०१.५६ करोड़ रु० तृतीय योजना में व्यय होंगे। खाद्यान्नों तथा अन्य कृषि-उत्पादों की आवश्यकता को देखते हुए यह राशि कथमपि पर्याप्त नहीं। होना तो यह चाहिये था कि पहले कृषि विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता और तब उपलब्ध साधनों के आधार पर औद्योगीकरण की दिशा में पग बढ़ाया जाता। इससे न केवल हमारी कृषि समस्या का निराकरण होता, बल्कि व्यावसायिक फसलों का उत्पादन बढ़ने से हमारे उद्योगों को समुचित कच्चा माल भी उपलब्ध होता और साथ ही साथ हमारे निर्यात व्यापार में भी वृद्धि होती। आज खाद्यान्नों का आयात करने से जो हमारा भुगतान संतुलन बिगड़ गया है, वह भी बहुत कुछ हमारे अनुकूल बना रहता।

भारत जैसे विकासशील देशों के लिये कृषि-उत्पादों में वृद्धि का महत्त्व औद्योगीकरण से कहीं अधिक होता है। परन्तु पिछली पंचवर्षीय योजनाओं में हमने इस ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। योजना निर्माताओं ने यह सोचकर कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने पर खाद्यान्नों पर होने वाला व्यय कम हो जाता है, देश का औद्योगीकरण करके राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने का प्रयत्न किया। हमारी राष्ट्रीय आय में वृद्धि हुई भी, भले ही वह आशातीत न हुई हो, किन्तु उससे प्रति व्यक्ति आय में कोई उल्लेखनीय वृद्धि न हो सकी। अधिकांश अतिरिक्त आय मुट्ठी भर पूंजीपतियों की तिजोरी में चली गई।

## कृषि तथा सामुदायिक विकास :—

विगत कुछ वर्षों में कृषि, सामुदायिक विकास, सिंचाई और सहकारिता सम्बन्धी कार्यों को एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध करने का प्रयास किया गया। ऐसा करना संगत ही है, किन्तु हमें इस दिशा में वांछित सफलता न मिल सकी। इस असफलता का कारण कुछ तो हमारी गलत नीतियां रहीं, परन्तु एक बड़ी हद तक अकुशल प्रशासन ही उसके लिए उत्तरदायी है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम यदि ठीक प्रकार से क्रियान्वित किया जाता तो हमारे गांव निस्सन्देह स्वर्ग बन जाते, धरती शस्य श्यामला हो जाती। लेकिन सामुदायिक विकास कार्यक्रमों से आम किसान को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। गांव के कुछ धनाढ्य लोग ही उससे लाभान्वित हुए। अधिकारियों ने अपना दायित्व नहीं निभाया। मुख्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्गों के किनारे जापानी ढंग से धान की रुपाई करने या लाइनों में बुआई करने से जो परिणाम निकलना था, वह आज हमारे सामने है ।

## कृषि तथा सहकारिता :—

उन्नत बीज, यन्त्र, ऋण आदि की समुचित व्यवस्था कृषि-उत्पादन में अपेक्षित वृद्धि के लिए अनिवार्य हैं। सहकारी बीज भण्डार तथा सहकारी ऋण समितियों ने इस कार्य को सम्पादित करने का बीड़ा उठाया। आंकड़े देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस दिशा में पर्याप्त काम हुआ है। परन्तु वस्तु-स्थिति कुछ और ही है। अधिकांश बीज भण्डारों से उन्नत बीजों के नाम पर घटिया और कभी-कभी तो सड़े हुए बीज बांटे जाते हैं। जो लोग ग्रामों के निकट सम्पर्क में रहते हैं, वे यह भलीभांति जानते हैं। किसान सहकारी भण्डार से प्राप्त उन्नत बीज न बोकर अपने घर का बीज बोना ही अधिक पसन्द करता है। इसी प्रकार सहकारी समितियों से मिलने वाले ऋण भी किसान की आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते। समय पर ऋण न मिल पाने के कारण किसान को एक ओर तो महाजन के आगे हाथ फैलाना पड़ता है और दूसरी ओर सहकारी समिति का भी ऋणी बनना पड़ता है। सहकारी समितियों से मिलने वाला ऋण प्रायः उसे पूरा मिलता भी नहीं। फलतः सहकारी आन्दोलन के प्रति लोगों में आस्था का अभाव है और यह जन कल्याणकारी आन्दोलन मात्र सरकारी आन्दोलन बनकर रह गया।

## कृषि तथा उर्वरक

खाद कृषि की और एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। आर्थिक नियोजन के विगत वर्षों में नाइट्रोजन, फास्फेट, पोटास आदि उर्वरकों का बड़ी मात्रा में उत्पादन किया गया। इसके साथ ही कम्पोस्ट खाद और हरी खाद की उपयोगिता पर भी अत्यधिक बल दिया गया और उनके उत्पादन को बढ़ाया गया। किन्तु यह उत्पादन हमारी मांग को पूरा नहीं कर सका, ऐसा विचार प्रायः व्यक्त किया जाता है। मेरी धारणा इस विचार से अंशतः सहमत होते हुए भी, उससे भिन्न है। उर्वरकों का कितना उत्पादन हुआ, उनकी कितनी खपत हुई, ये प्रश्न ही विचारणीय नहीं हैं, बल्कि मूल प्रश्न यह है कि उर्वरकों के प्रयोग से कितना उत्पादन बढ़ा? ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि उर्वरकों का किसानों में वितरण तो हुआ किन्तु उनको फसल में नहीं डाला गया। आवश्यकता न होने पर भी प्रायः किसान को सहकारी ऋणों के साथ उर्वरक लेने पड़ते हैं, क्योंकि उसे ऋण लेना है, तकावी लेनी है, विकास अधिकारियों को खुश रखना है। विकास अधिकारी आंकड़े भेज देते हैं कि हमारे क्षेत्र में इस वर्ष गत वर्ष से ड्योढ़ा-दुगुना उर्वरक बांटा गया, किन्तु उस उर्वरक का क्या उपयोग हुआ, इसका पता लगाने के लिए उनके पास समय नहीं होता।

किसान फसल में उर्वरकों का प्रयोग क्यों नहीं करता? वह उसके गुणों से सर्वथा अनभिज्ञ है, ऐसी बात नहीं है। किन्तु वह यह भी जानता है कि धरती की प्यास बुझाने भर को पानी न मिलने पर उर्वरक फसल को जलाकर खाक कर देगा, और यही भय उसे फसल में उर्वरक डालने से रोकता है। भले ही उर्वरक की बोरी उसके घर में पड़ी-पड़ी सड़ जाये।

## कृषि तथा सिंचाई

अच्छी फसल के लिए उर्वरकों से पहले सिंचाई की समुचित व्यवस्था करना अनिवार्य है। १९५०-५१ में कुल २९३.४ करोड़ एकड़ भूमि में खेती होती थी। अब यह क्षेत्र बढ़कर ३२८ करोड़ एकड़ हो गया है, जिसमें केवल ३६ प्रतिशत भूमि की सिंचाई के लिए ही व्यवस्था हो सकी है। शेष ६४ प्रतिशत खेती आज भी प्रकृति के भरोसे पर है।

## चकबन्दी

जिस उद्देश्य को लेकर चकबन्दी कार्यक्रम आरम्भ किया गया, वह पूरा हो सकेगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। जिन क्षेत्रों में चकबन्दी हो चुकी है, उनके परिणाम हमारे सामने है। चक काटने का ढंग दोषपूर्ण होने के कारण खेतों का बिखरापन पूर्णतः दूर नहीं हुआ। हां, अच्छे स्थान पर चक लेने की होड़ में आम किसान तबाह जरूर हुआ और चकबन्दी अधिकारियों की चांदी भी खूब रही। कहीं-कहीं तो किसानों को अपनी जमीन के मूल्य से भी अधिक के 'पत्र-पुष्प' अधिकारियों के चरणों में समर्पित करने पड़े।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चतुर्थ वित्त आयोग

श्री निरंजनलाल शर्मा

भारतीय संविधान के अनुसार राष्ट्रपति हर पांचवें वर्ष वित्त आयोग की नियुक्ति करता है। स्वतंत्रता के पश्चात अब तक ४ वित्त आयोग नियुक्त किए जा चुके हैं। पहला वित्त आयोग सन् १९५२ में श्री के० सी० नियोगी, द्वितीय आयोग सन् १९५६ में श्री के० सन्थानम व तृतीय आयोग सन् १९६० में श्री ए० के० चन्दा तथा चतुर्थ आयोग, जिसने अभी २ अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की है, डा० पी० वी० राजमनार की अध्यक्षता में नियुक्त किया गया था। चतुर्थ आयोग की रिपोर्ट १३ अगस्त, १५ को प्रस्तुत कर दी गई थी और १० सितम्बर १९६५ को संसद के सम्मुख वित्तमंत्री द्वारा प्रस्तुत की गई तथा संसद ने इसे स्वीकार कर लिया।

राजस्व आय और योजनेतर राजस्व व्यय का जायजा आयोग ने लिया है, जो आगामी ५ वर्षों के लिए है। इसमें वह अनुदान भी शामिल होगा जो रेलवे किराये पर करों के बदले में राज्यों को दिया जाता है। यह कर ३.५० करोड़ रु० है। ६०९.४५ करोड़ रुपया राज्यों को सहायता दी जायगी।

## आयकर

इस कमीशन ने आय कर में राज्यों का हिस्सा ६६.६६ प्रतिशत से बढ़ाकर ७५ प्रतिशत कर देने की सिफारिश की है। राज्यों के हिस्से का निर्धारण ८० प्रतिशत जनसंख्या तथा २० प्रतिशत कर की वसूली के आधार पर किया जायगा। इसके अनुसार राज्यों को प्राप्त आयकर का भाग निम्नलिखित रूप से मिलेगा :

### आयकर का प्रतिशत

| | | | |
|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | ७.३७ | असम | २.४४ |
| बिहार | ९.०४ | गुजरात | ५.२९ |
| जम्मू काश्मीर | ०.७३ | केरल | ३.५९ |
| मध्य प्रदेश | ६.४७ | मद्रास | ८.३४ |
| महाराष्ट्र | १४.२८ | मैसूर | ५.१४ |
| नागालैण्ड | ०.०७ | उड़ीसा | ३.४० |
| पंजाब | ४.३६ | राजस्थान | ३.९७ |
| उत्तरप्रदेश | १४.६० | पश्चिमी बंगाल | १०.९१ |

## उत्पादन-कर

उत्पादन कर के राज्यों में वितरण के लिए कोई विशेष परिवर्तन नहीं किये गये हैं। यह कर अभी तक वास्तविक एकत्र धन का २० प्रतिशत था। राज्यों को अब तक तृतीय वित्त कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार कुल ३५ वस्तुओं पर उत्पादन कर मिलता है। इस कुल आमदनी का १ प्रतिशत-नागालैंड को दिया जाता है। किन्तु नई सिफारिशों के अनुसार सब वस्तुओं पर उत्पादन कर में राज्यों को भी भाग मिलेगा। उत्पादन करों की आय के इस वितरण में हर राज्य के हिस्से का हिसाब मुख्यतः उसकी जनसंख्या के हिसाब से लगाया जाता है, किन्तु वित्तीय दृष्टि से उसके पिछड़ेपन को भी ध्यान में रखा जाता है।

## अतिरिक्त उत्पादन कर

चौथे वित्त कमीशन ने उन सभी वस्तुओं के उत्पादन कर की आय के २० प्रतिशत भाग के बंटवारे की सिफारिश की है, जिन पर उत्पादन कर लगता है। राज्यों के भाग के वितरण की विधि भी आयोग ने बदल दी है। अब उनके ८० प्रतिशत का हिसाब आबादी के हिसाब से और २० प्रतिशत का हिसाब उनके अपेक्षित पिछड़ेपन के हिसाब से लगाया जायगा।

राज्यों में बिक्री कर हटाकर उनके स्थान पर उत्पादन शुल्क में जो वृद्धि की गई है, उससे प्राप्त अतिरिक्त आय का भी वितरण राज्यों में किया जायगा। राज्यों को यह भी आश्वासन दिया गया है कि १९५६-५७ में कपड़ा, तम्बाखू और चीनी पर बिक्री कर से जो आमदनी उन्हें होती थी, वह उन्हें प्राप्त होती रहेगी। और इसी राशि में से १ प्रतिशत केन्द्र प्रशासित प्रदेशों और १.५ प्रतिशत जम्मू-काश्मीर के लिए और ०.०५ प्रतिशत नागालैण्ड के लिए निश्चित किया गया है। इस प्रकार की कुल राशि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५६-५७ के आधार पर ३२.५४ करोड़ रुपया है। शेष रकम को राज्यों में वितरित किया जायगा।

केन्द्रीय उत्पादन कर तथा अतिरिक्त उत्पादन कर का वितरण इस प्रकार किया गया है :—

| राज्य | केन्द्रीय उत्पादन कर (प्रतिशत) | अतिरिक्त आश्वस्त आय (लाख रुपये) | उत्पादन कर शेष रकम का वितरण (प्रतिशत) |
|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | ७.७७ | २३५.२४ | ७.४२ |
| असम | ३.३२ | ८५.०८ | १.९८ |
| बिहार | १०.०३ | १३०.१६ | ६.१७ |
| गुजरात | ४.८० | ३२३.४५ | ७.४३ |
| जम्मू-काश्मीर | २.२६ | — | — |
| केरल | ४.१६ | ९५.०८ | ५.६५ |
| मध्य प्रदेश | ७.४० | १५५.१७ | ४.६२ |
| मद्रास | ७.१८ | २८५.३४ | ११.१३ |
| महाराष्ट्र | ८.२३ | ६३७.७७ | १९.८७ |
| मैसूर | ५.४१ | १००.१० | ५.३१ |
| नागालैण्ड | २.२१ | — | — |
| उड़ीसा | ४.८२ | ८५.१० | २.५८ |
| पंजाब | ४.८६ | १७५.१९ | ५.०१ |
| राजस्थान | ५.०६ | ९०.१० | ३.१७ |
| उत्तरप्रदेश | १४.९८ | ५७५.८१ | ७.८३ |
| पश्चिमी बंगाल | ७.५१ | २८०.४१ | ११.९३ |

**सहायता अनुदान**—आयोग ने ऐसी राशि को बढ़ा कर अत्यन्त उदारता दिखाई है। यह राशि राज्यों में बढ़ते हुए प्रशासनिक व्यय को दृष्टिगत करते हुए की गई है। राज्यों को दी जाने वाली इस राशि को ६४ करोड़ से बढ़ा कर १४० करोड़ रुपये कर दिया गया है।

## सम्पत्ति कर

कृषि भूमि को छोड़कर शेष सम्पत्ति पर सम्पदा शुल्क के रूप में होने वाली कुल आय का (केन्द्र प्रशासित क्षेत्रों में होने वाली आय को छोड़कर) हिस्सा राज्यों में वितरित करने के लिए १ प्रतिशत से बढ़ाकर २ प्रतिशत कर दिया गया है। इस भाग के बंटवारे में किसी प्रकार के परिवर्तन की सिफारिश इस आयोग ने नहीं की है। यह हिस्सा इस प्रकार होगा :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आंध्रप्रदेश | ८.३४ प्र.श. | महाराष्ट्र | ९.१६ प्र.श. |
| असम | २.७५ ,, | मैसूर | ५.४६ ,, |
| बिहार | १०.७५ ,, | नागालैंड | ०.०१ ,, |
| गुजरात | ४.७८ ,, | उड़ीसा | ४.०७ ,, |
| जम्मू-काश्मीर | ०.८३ ,, | पंजाब | ४.७० ,, |
| केरल | ३.९२ ,, | राजस्थान | ४.६७ ,, |
| मध्यप्रदेश | ७.५० ,, | उत्तरप्रदेश | १७.०८ ,, |
| मद्रास | ७.८० ,, | पं० बंगाल | ८.०९ ,, |

## रेल किराये के स्थान पर अनुदान

राज्यों को रेल किराये के कर में से उनके हिस्से के बदले में दिया जाने वाला अनुदान अब भी क्षतिपूर्ति के सिद्धान्त पर उसी तरह आधारित रहेगा, जैसे इस करके हटाये जाने से पूर्व था।

इन सिफ़ारिशों के परिणामस्वरूप अब राज्यों को चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की अवधि में पहले से ७८० करोड़ रुपया अधिक—कुल २८०० करोड़ रुपया मिलेगा। इस सहायता से सब राज्यों के योजनेतर बजट पूरे हो जाने चाहिए किन्तु ६ राज्यों को—महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, बिहार, उत्तरप्रदेश और पश्चिमी बंगाल को अपने खर्चों से अतिरिक्त राशि (कुल ३७४ करोड़) भी मिलेगी। वस्तुतः राजमन्नार कमीशन की सिफारिशें अधिक न्याय पर आधारित दीखती हैं। प्रश्न यह है कि इस प्रकार राज्यों को अधिकाधिक धन देने के परिणामस्वरूप क्या राज्यों के बजट अधिक सन्तुलित हो जायेंगे और राज्यों के वित्तमंत्री जनता पर अधिक कर लगाने की होड़ नहीं करेंगे? दूसरा प्रश्न यह है कि यदि केन्द्र राज्यों को अधिकाधिक राशि देता जायेगा, तो क्या केन्द्र की वित्तीय स्थिति पर उसका प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा? पहले यह दलील दी जाती थी कि राज्यों के व्यय समाज कल्याण में वृद्धि के कारण निरन्तर परिवर्तनशील हैं, जबकि केन्द्र के व्ययों में बहुत अधिक लोच नहीं होती। परन्तु अब तो अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के कारण केन्द्र का सैनिक व्यय भी निरन्तर बढ़ता जा रहा है। उधर राज्य भी अब वर्तमान संकट की आड़ में नये से नये कर लगाने में जुट गये हैं। उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा भूमि कर में २५ प्रतिशत की वृद्धि इसका एक उदाहरण है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योगों की उन्नति में प्रबन्ध का योगदान

श्री डा० ए० के० पाल, प्रशिक्षण एवं चयन प्रबन्धक हिन्दुस्तान लीवर,

स्वाधीनता के बाद भारत में भूतकाल की अपेक्षा तीव्र औद्योगिक विकास हुआ है। स्वाधीनता के बाद के १७ वर्षों में इस दिशा में जो वृद्धि हुई है वह पहले के १७० वर्षों की अपेक्षा कहीं अधिक है, १९३१-३२ से लेकर १९५०-५१ वर्षों के बीच खनन और निर्माण के उत्पादन में ५.५ प्रतिशत वृद्धि हुई; लेकिन १९५१ से १९६४ के बीच वृद्धि का प्रतिशत २३० रहा। इसी तरह १९४७ के बाद भारत की बिजली पैदा करने की क्षमता में करीब ५०० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

स्पष्टतया, इस वृद्धि के साथ-साथ एक बड़ी आवश्यकता रही है प्रशिक्षित कार्यकारियों—तांत्रिक, वाणिज्यिक, बिक्री तथा आम प्रबन्धकों की पर्याप्त संख्या में पूर्ति करना। अन्दाजा लगाया गया है कि चौथी योजनावधि के दौरान में करीब दो करोड़ नये स्थान पैदा किये जायंगे। इंग्लैंड और अमेरिका में उद्योगों में कार्यकारियों तथा अन्य कर्मचारियों के बीच का अनुपात क्रमशः १:१२ और १:७ का है। भारत के उद्योग और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान यंत्रीकरण और आधुनिकीकरण की दिशा में पाश्चात्य देशों की तुलना में काफी पीछे हैं। अधिकांश उद्योगों, सिंचाई योजनाओं तथा अन्य विकास परियोजनाओं में कामगारों की बहुलता है। इसलिये, इनमें श्रम शक्ति के प्रशासकों या प्रबंधकों का अनुपात अनिवार्यतः काफी कम है, यदि हम भारत में उद्योग, वाणिज्य और प्रशासन में १:१०० का एक अत्यन्त अनुदार अन्दाजा भी रखें, तो भी हमको केवल चौथी योजनावधि में प्रस्तावित आर्थिक वृद्धि के प्रबन्धकों को प्रशिक्षित और विकसित करने के लिये कम से कम ८ से १० वर्षों की और आम (जनरल) मैनेजरों के लिये १० से १५ वर्षों की जरूरत पड़ेगी। हमको ये प्रबन्धक कहां से मिल सकते हैं?

विद्यमान उद्योग ही वास्तव में प्रबन्धकों के मुख्य प्रशिक्षण केन्द्र होते हैं। भारत में उपरोक्त वृहद प्रमाण में प्रबन्धकों को प्रशिक्षित तथा विकसित करने के उद्देश्य से यहां का औद्योगिक आधार अत्यन्त कम और अपर्याप्त है। हम अपने नये प्रबन्धकों को आवश्यक प्रशिक्षण और अनुभव सुसंस्थापित उद्योगों में ही दिला सकते हैं। लेकिन सवाल यह है कि जहां औद्योगिक वृद्धि की दर, प्रबन्ध विकास की मन्द प्रक्रिया से काफी तीव्र है, उस स्थिति का सामना कैसे किया जाय, नई टेकनोलोजी और उद्योग की शुरूआत से भी नई-नई समस्याएं पैदा होती जाती हैं।

सक्षम्य प्रबन्धकों का दूसरा स्रोत है शैक्षणिक संस्थाएं। इस बारे में सौभाग्य से भारत में सुविख्यात शैक्षणिक प्रशिक्षण सुविधाओं में अत्यन्त तीव्र वृद्धि हुई है। उन्नीस सौ सैंतालीस में केवल १८ विश्वविद्यालय थे, लेकिन आज उनकी संख्या बढ़कर ५५ हो गई है। इसी तरह १९४७ में तांत्रिक छात्रों की संख्या ६,६०० थी, जो १९६३ में बढ़कर ६०,००० हो गई है। हम लोगों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि शैक्षणिक गुण सम्पन्नता के बारे में भी ह्रासमान प्रतिफल नियम (ला आफ डिमनिशिंग रिटर्न) लागू होता है। अतः भारत जैसे विकासशील देश की समस्या एक सम्पूर्ण युद्ध स्थिति से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है। भारत ने, अपनी विकास सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करने के लिये शैक्षणिक योजनाओं को तदनुसार अनुकूल बनाने में देर नहीं की। लेकिन देश की जरूरतों के अनुसार शैक्षणिक और प्रशिक्षणात्मक सुविधाएं उपलब्ध करने की प्रक्रिया अब भी काफी पीछे है।

प्रबन्ध विकास केवल तांत्रिक और कार्यकारी ज्ञान तथा प्रबन्ध सम्बन्धी कुशलता की शिक्षा देने तक ही सीमित नहीं है। वास्तव में एक विकासशील देश के सामने सबसे कठिन समस्या है सही किस्म के रुख तथा औद्योगिक प्रबन्ध के अनुकूल एक मूल्य पद्धति का निर्माण—परम्परागत रुख और मूल्य पद्धतियां, भले ही वे कितनी भी प्रशंसनीय हों, औद्योगिक विकास को मन्द कर सकती हैं। हम उनमें से कुछ पर यहां प्रकाश डालेंगे।

बुनियादी रूप से हमारी कृषि अर्थव्यवस्था प्रकृति की



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्नता पर निर्भर करती है। इसलिए इस बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिये कि भारतवासियों का अपने जीवन के प्रति भाग्यवादी रुख है। ऐसा मान लिया गया है कि समृद्धि और सफलता पर हमारा अधिकार नहीं है और न वे चीजें हमारे प्रयत्नों और क्षमताओं पर ही निर्भर करती हैं। यह भाग्यवादी रुख सफल औद्योगिक प्रबन्ध से मेल नहीं खाता है। वास्तव में किसी भी औद्योगिक वाणिज्यिक संस्थान की सफलता या असफलता, अन्य वातावरणीय पहलुओं के बावजूद, आवश्यक रूप से प्रबन्धकों की ही जिम्मेदारी होती है।

## लक्ष्यों की सिद्धि

हमको यह बात तो प्रायः सुनने को मिलती है कि विभिन्न योजनाओं पर इतनी भारी रकमें खर्च की गईं। लेकिन हमको यह बात प्रायः कम ही सुनने को मिली है कि परियोजनाओं को निर्धारित समय में पूरा कर लिया गया है और उसमें उत्पादकता अथवा लाभप्रदता के किसी अद्वितीय स्तर पर सिद्धि प्राप्त हुई है। इसलिये, निजी तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों के सभी प्रबन्धकों के लिये यह बात जरूरी है कि वे लक्ष्य को सार्थक बनाने तथा सिद्धियों की विचारधारा से प्रेरित हों।

इसी तरह लाभ के प्रति हमारा विद्यमान बुनियादी रुख एक दूसरी अड़चन है, जिससे पूंजी रचना और औद्योगीकरण में बाधा पड़ती है। भारत में लोगों का विचार है कि लाभ अर्जन करना एक तरह का पाप और अनैतिक व्यवहार है। लाभ अर्जित करने के साथ एक सुदृढ़ अपराध की भावना का समावेश सा रहता है। लाभ अर्जित करने के अनैतिक साधन की आलोचना की जानी चाहिए न कि स्वयं लाभ पैदा करने के उद्देश्य की। भूतकाल में कुछ भी हुआ हो और कुछ व्यापारियों ने कुछ भी भूल-चूक क्यों न की हो, लेकिन वर्तमान समय का तकाज़ा है कि यदि हम तीव्र गति से आर्थिक वृद्धि चाहते हैं तो हमको लाभ के प्रति अपने बुनियादी रुख को पुनः संस्थापित करना होगा। किसी भी उद्योग का आधार चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र का हो या निजी, लाभ अर्जन होना चाहिये। शायद लाभ का प्रमाण इस बात का एक अत्यन्त सरल और सही द्योतक है कि उद्योग की कामयाबी किस प्रमाण में हो रही है। अब तो सोवियत रूस तक में व्यापारिक सफलता के दर्शकांक के रूप में लाभ को स्वीकार करने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं।

## नये मूल्य

मैंने यहां इस बात को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि हमारे प्रबन्धकों के लिये केवल कार्यकारी ज्ञान और प्रबन्ध सम्बन्धी जानकारी प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं है, बल्कि उनके लिये यह भी जरूरी है कि वे औद्योगीकरण के अनुकूल नये रुखों और मूल्यों को आत्मसात् करें। प्रबन्धकों को व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेना सीखना चाहिए, उनका ध्यान सिद्धियों की प्राप्ति में केन्द्रित होना चाहिये और उनको व्यापारिक प्रगति के एक माप दण्ड के रूप में लाभ को एक भावनात्मक सतह पर स्वीकार करना चाहिये।

जनता के रुखों और मूल्य पद्धति में परिवर्तन करना निसन्देह एक मन्द प्रक्रिया होती है, क्योंकि उनकी जड़ें राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक आधारों में सुदृढ़ रूप से जमी होती हैं। हो सकता है कि इन नये मूल्यों को आत्मसात करने में राष्ट्र को दशाब्दियों या एक शताब्दि तक लग जाय। लेकिन हम तब तक बाट नहीं देख सकते हैं। हमारे प्रबन्धकों को चाहिये कि वे अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न मूल्य पद्धतियों को आत्मसात करना सीखें। दूसरे शब्दों में, मेल न खाने वाली चीजों के साथ रहना सीखें। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह संभव है और इसका उदाहरण एक पूर्वी राष्ट्र, जापान मौजूद है। प्रबन्धकों से न केवल यह अपेक्षा की जाती है कि वे स्वयं अपने रुखों और मूल्य पद्धति में परिवर्तन करें, बल्कि इस प्रकार के परिवर्तन लाने का नेतृत्व भी करें और इस परिवर्तन के एक एजेन्ट के रूप में कार्य करें। उनको चाहिये कि वे एक और मनोवैज्ञानिक वातावरण पैदा करने का प्रयास करें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकेन्द्रित उद्योग और सरकार की करनीति

श्री-उ० न० ढेबर

हमारी अर्थ नीति और अर्थ दृष्टि में आधार भूत दोषों की चर्चा करते हुए विद्वान् लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि केन्द्र और राज्यों की सरकारें एक के बाद एक ऐसे कर लगाती जा रही हैं, उनका विकेन्द्रित उद्योगों पर प्रभाव बहुत प्रतिकूल पड़ता है।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में ग्रामों के औद्योगीकरण और विकेन्द्रित क्षेत्र की चर्चा करते हुए उसके ज्ञापन में कहा गया है कि हमारी कराधान और वित्तीय नीति ऐसी होनी चाहिए, जिससे कि विकेन्द्रित उद्योगों के विकास में बाधा न पड़े। इस नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित ३ तत्वों का हमें ध्यान रखना होगा—

१. विकेन्द्रित क्षेत्रका विकास भी अन्य क्षेत्रों की भांति उचित वित्तीय साधनों पर निर्भर करता है।

२. हमें उन अनेक नीतियों का विरोध करना होगा जो विकेन्द्रित उद्योगों के विकास में बाधक हैं।

३. हमें कर नीति निर्धारण में भी यह ध्यान रखना होगा कि विकेन्द्रित उद्योगों को हानि न पहुँचे।

हमें यह ध्रुव सत्य सदा अपने सामने रखना चाहिए कि राष्ट्र की सामान्य अर्थव्यवस्था से असंगत कोई नीति अधिक समय तक टिक नहीं सकेगी। केवल ऑक्सीजन देकर ही हम किसी बीमार को जीवित नहीं रख सकते। उसके लिए जीवनी शक्ति भी होना अनिवार्य है। इसी तरह आर्थिक प्रवृत्ति केवल दान या सहायता के आधार पर नहीं चलाई जा सकती। उसका देश की अर्थव्यवस्था में स्वयं अपना एक स्थान बना लेना अनिवार्य है। इसी तरह विकेन्द्रित उद्योग का भी देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान स्वीकार करना होगा। यह दुर्भाग्य की बात है कि कुछ अर्थशास्त्री इस सत्य को स्वीकार नहीं करते।

कुछ लोग विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था को गांधीजी का झक्कीपन समझते हैं। किन्तु वह उनका भ्रम है। इसका अपना एक महत्व है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में, "भारतीय ग्राम स्त्रियों की तरह से हैं। वही राष्ट्र के पालने को झुलाते है। शहरों की अपेक्षा वह प्रकृति के अधिक निकट हैं और जीवन स्रोत से अधिक निकट सम्पर्क में हैं। एक माता की तरह गांवों का ही यह कार्य है कि वे जनता की आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति करें, किन्तु जब माताओं पर बहुत अधिक बोझ डाल दिया जाता है और उनकी कार्यक्षमता या साधनों का शोषण कर लिया जाता है, उनकी रचनात्मक शक्ति नष्ट हो जाती है और वह निष्क्रिय हो जाती हैं। तब वह एक विवाहित पत्नी की बजाय एक वेतन भोगी नौकरानी बन जाती हैं। हमारे शहर अपने अहंकार में डूबकर यह भूल जाते हैं कि उन्होंने जीवन, स्वास्थ्य और प्रसन्नता के उसी स्रोत को बहुत हानि पहुंचाई है।"

आज हमारे सामने वास्तविक समस्या यह है कि किस तरह हम भारतीय जीवन के आधारभूत इन ग्रामों में जीवन का पुनः संचार कैसे करें, उनमें किस तरह आह्लाद और उमंग पैदा करें और उनकी साधन सम्पन्नता व रचनात्मक क्षमता को कायम रखें? इसका अर्थ यह है कि अपनी वित्तीय नीतियों के यह दो उद्देश्य अपने सामने रखने चाहिए।

(१) गांवों की उदासीनता और रचनात्मक कार्यों में कम रुचि के कारणों पर विचार करें। (२) उनमें उत्साह और उमंग को फिर से पैदा करने के लिए आवश्यक सहायता दें। कर नीति और वित्तीय उपाय उसके लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

## भूमि पर भार

सबसे पहले हमें यह देखना होगा कि भूमि पर हमारी अर्थ व्यवस्था और जीवन का कितना भार है। भूमि पर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता के जीवन निर्वाह जितना अधिक का भार होगा, उतना ही देश की अर्थ व्यवस्था की क्षमता और उत्पादन व्यय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। भूमि पर जनता के जीवन निर्वाह का भार कम से कम करने के लिए अतिरिक्त जनता को जीवन निर्वाह के नये साधन देने चाहिए। अभी तक हम कृषि भूमि से बची हुई जनता के लिए बड़े उद्योगों के विस्तार पर निर्भर करते हैं। किन्तु हमारी तीन योजनाओं की विफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि भूमि पर अधिक भार की समस्या अभी तक हल नहीं हुई। इसके परिणामस्वरूप हमारी कृषि अनार्थिक हो गई है और कृषि पदार्थों के भारी उत्पादन-व्यय की समस्या अभी तक सुलझी नहीं है। इसलिए पशु पालन तथा अन्य विकेंद्रित उद्योगों को हमको अपने हाथ में लेना ही होगा। यह प्रसन्नता की बात है जो लोग गांधीजी के झकीपन को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे, अब इस दिशा में गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे हैं। आज की आवश्यकता यह है कि हम जहां पशुपालन और विकेन्द्रित उद्योगों की चर्चा करें, वहां हमें इनके विकास के लिए आर्थिक साधनों की उपलब्धि का भी प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए समस्त प्रयत्नों पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है।

## किसानों के लिए उपयोगी उद्योग

आज गम्भीर अन्न संकट है और इसीलिए किसानों का देश की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति उनकी क्रयशक्ति के अनुरूप की जाये, तभी हम कृषि उत्पादन-व्यय पर नियन्त्रण रख सकते हैं। इसके लिए हमें उन उद्योगों को प्राथमिकता देनी होगी, जो किसानों के लिए अधिक उपयोगी हैं। केवल उत्पादन ही नहीं, कृषक-उपयोगी पदार्थों का वितरण भी व्यवस्थित होना चाहिए।

इसी के साथ ही यह भी हमें मानना पड़ेगा कि कृषि पदार्थों के मूल्य ऐसे हों, जिसे किसान हतोत्साह न हो जायें। वस्तुतः ज़मींदारी प्रथा समाप्त होने के बाद ऐसे मूल्य निर्धारण को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए थी, पर हमारी सरकार का दृष्टिकोण पुरानी परम्पराओं से मुक्त नहीं हो पाया। वह कन्ट्रोल आदि के ही कृत्रिम उपायों को अब तक अपनाती रही है। इससे न मूल्य कम हुए हैं और न किसानों को ही कोई प्रोत्साहन मिला है।

## पशु पालन

कृषि के बाद पशु-पालन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुल राष्ट्रीय आय का १० प्रतिशत इससे मिलता है। परन्तु उसकी घोर उपेक्षा की गई है। ब्रिटिश काल में भी यही स्थिति थी। आज भी उसमें कोई सुधार नहीं हुआ। आखिर बैलों की शक्ति का स्थान मशीनें नहीं ले सकतीं। कम से कम आने वाले ५० वर्षों तक ट्रैक्टर बैलों की जगह नहीं ले सकते। इसी तरह भेंड़ों की ऊन का उद्योग भी अब तक उपेक्षित पड़ा है। भारत के कुल क्षेत्र का ७वां भाग पहाड़ी इलाकों में है, जहां भेंड़ें आर्थिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

महत्त्व की दृष्टि से खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगों की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। किसानों के लिए यह उद्योग बहुत महत्व के हैं। सरकार आय व्यय के अंकों में इस उद्योग के महत्त्व को मापना चाहती है। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यही उद्योग हैं, जो भूमि पर जनता के भार को हल्का करते हैं।

## कराधान की नीति व छोटे उद्योग

यदि हम १९६१-६२ से आज तक के केन्द्रीय या राज्यीय बजटों पर एक दृष्टि डालें तो हमें मालूम होगा कि बिक्री कर, उत्पादन कर, खरीद कर आदि में लगातार वृद्धि होती रही है और अधिकाधिक वस्तुओं पर यह कर लगते रहे हैं। इस कारण रुई, सूत, ऊन, तिलहन, चमड़ा, गन्ना, नारियल, कास्टिक सोडा आदि पदार्थों पर भी कर बढ़ सकते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि छोटे उद्योगों पर भी अपने लिए आवश्यक माल लेने का अधिक बोझ पड़ता है। छोटे उद्योगों की लाभ की मात्रा पहले ही बड़ी कम होती है। और विभिन्न करों द्वारा मंहगा होने वाला कच्चा माल या अन्य आवश्यक सामान उनकी कमर तोड डालता है। हाथ से काम करने वाले कारीगर भी इस बोझ से मुक्त नहीं है। साबुन, कागज, जूते और दियासलाई बनाने वाले घरेलू उद्योग भी इन करों के भार से दब जाते हैं। विभिन्न राज्य भी इन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कर व नियंत्रण लगाकर, नगदी फसलों के उत्पादन और व्यापार पर भी सरकारें प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। कुछ राज्यों की सरकारें नई सड़कों और पुलों पर टौल टैक्स लगाकर किसानों और देहातियों से रुपया वसूल करती हैं। एक राज्यीय सरकार हाथ के बुने रेशम पर विलास सामग्री के नाम से ६० प्रतिशत कर लगाती है।

आज आवश्यकता यह है कि यह जांच की जाय कि विभिन्न करों का ग्रामोद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ता है और करों के रूप में उन्हें कितनी राशि देनी पड़ती है। केन्द्रीय सरकार विभिन्न बड़े उद्योगों को तरह २ की छूट देकर ग्रामोद्योगों के लिए प्रतिस्पर्धा की कठिन समस्या पैदा कर रही है। बनस्पति घी पर उत्पादन कर हटाने से तेल घानी के उद्योग पर प्रभाव पड़ा है। इसी तरह सिंचित प्रदेशों के गन्ने पर लगाया गया उपकर गुड़ उद्योग पर भी प्रभाव डालता है। यदि इस तरह की व्यापक जांच की जाय तो बहुत से नये तथ्य सामने आ जायेंगे।

खादी ग्रामोद्योग कमीशन ने कुछ जांच की है। गुजरात सरकार ने नगदी फसलों पर एक कर लगा दिया है। बिहार सरकार ने २ से ५ रुपये तक प्रति टन गन्ने पर कर लगाया है। महाराष्ट्र सरकार ने गुड़ पर बिक्री कर लगा दिया है और रुई तथा मंगलोर टाइल पर करों के दर बढ़ा दिये हैं। उड़ीसा सरकार ने चावलों पर अन्तःराज्यीय कर लगाया है। पंजाब सरकार ने भाड़े कर बढ़ा दिये हैं। राजस्थान सरकार ने रुई पर बिक्री कर १ से ३ प्रतिशत कर दिया है। केन्द्रीय सरकार ने भी ५० डोलियों के एक ग्रौस पर ४० पैसे उत्पादन कर बढ़ा दिया है।

इसी तरह १९६३ ६४ में गुजरात सरकार ने रुई पर बिक्री कर लगा दिया है व गुड़ पर दी गई छूट वापिस ले ली है। महाराष्ट्र ने सड़क के यातायात पर कर लगा दिया है। उड़ीसा ने नई सड़कों और पुलों पर टौल टैक्स लगा दिया है। राजस्थान ने भी बिक्री कर बढ़ा दिया है। पंजाब सरकार ने जहां बिक्री कर बढ़ाया है, वहां गन्ने और रुई के क्षेत्रों पर एक कर लगा दिया है। आसाम में भी बिक्री कर में वृद्धि की गई है। मद्रास ने रुई और सूत पर कर बढ़ा दिया है। केन्द्रीय सरकार ने ऊन पर उत्पादन कर तथा खोपरा और कास्टिक सोडा पर तटकर बढ़ा दिये हैं।

इन सब करों का औचित्य कुछ तो समझ में आता है किन्तु यह अध्ययन करने की आवश्यकता है कि इन विभिन्न करों का छोटे विकेन्द्रित ग्रामोद्योगों पर क्या प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। इन सब करों को किस तरह व्यवस्थित और नियंत्रित किया जाय कि विकेन्द्रित उद्योगों पर पड़ने वाले प्रभावों को रोका जा सके। यह अध्ययन करना योजना आयोग का काम है।


महिलोपयोगी उत्कृष्ट मासिक

# शृङ्गार

प्रबन्ध सम्पादक : देवेन्द्र अग्रवाल

सम्पादिका : लावण्य प्रभा

* महिलाओं के इंटरव्यू
* विचारपूर्ण लेख
* स्त्रियोपयोगी रुचिकर सामग्री
* उत्कृष्ट रोचक कहानियां
* कविता तथा सुन्दर गीत
* पुस्तक-समीक्षा तथा अनेक स्थायी स्तम्भ

कार्यालय :
१३।३७, शक्तिनगर,
दिल्ली—६

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
मासिक : ५० पै०
फोन : २२७३०




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पूर्वी पाकिस्तान का शोषण

संसार के किसी दूसरे भाग में एक राष्ट्र दो परस्पर दूरवर्ती क्षेत्रों में विभक्त नहीं हैं। केवल पाकिस्तान इसका एक अपवाद है। पाकिस्तान परस्पर दूरवर्ती पूर्वी और पश्चिमी भागों में विभक्त है। राष्ट्र निर्माण, आर्थिक विकास और सामाजिक सेवा आदि सभी क्षेत्रों में पाकिस्तान की सरकार पूर्वी पाकिस्तान से बहुत भेदभावमूलक व्यवहार करती है। इन पंक्तियों में हम इसी भेदभाव का कुछ परिचय देना चाहते हैं।

पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान जनसंख्या और क्षेत्र की दृष्टि से बिल्कुल विपरीत हैं। पूर्वी पाकिस्तान में जनसंख्या अधिक और क्षेत्रफल कम है। पश्चिमी पाकिस्तान में इसके विपरीत क्षेत्रफल बहुत अधिक और जनसंख्या बहुत कम है, यह इस तालिका से स्पष्ट हो जायेगा।

कुल पाकिस्तान का क्षेत्रफल ३.६५ लाख वर्ग मील
कुल पाकिस्तान की जनसंख्या ९३७ लाख, किन्तु

| | क्षेत्रफल | जनसंख्या |
|---|---|---|
| पूर्वी पाकिस्तान | १५ प्रतिशत | ५४ प्रतिशत |
| पश्चिमी पाकिस्तान | ८५ प्रतिशत | ४६ प्रतिशत |

पूर्वी पाकिस्तान साक्षरता, सभ्यता आदि की दृष्टि से अधिक उन्नत तथा प्रगतिशील है तो पश्चिमी पाकिस्तान कृषि और उद्योग की दृष्टि से अधिक निरन्तर समृद्ध हो रहा है। पूर्वी पाकिस्तान में जनसंख्या की प्रतिमील घनता बहुत अधिक है अर्थात् ६२२ प्रति वर्ग मील। इसके मुकाबले में पश्चिमी पाकिस्तान में जनसंख्या की घनता केवल १३८ प्रति वर्ग मील है। साक्षरता दोनों भागों में क्रमशः १७ और ९ प्रतिशत है, किन्तु साक्षरता और शिक्षा के अधिक होने के बावजूद कुल के दो तिहाई बेकार पूर्वी पाकिस्तान में हैं, क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान के प्रति सरकार घोर उपेक्षा बरत रही है। इसी कारण पश्चिमी पाकिस्तान में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय जहां ३६३ रुपये है, वहां पूर्वी पाकिस्तान में २७३ रुपये हैं। नीचे की तालिका दोनों में होने वाले विकास के व्यापक अन्तर को स्पष्ट करेगी।

## पाकिस्तान के पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों में भेदभाव (१९६३)

| मद | इकाई | पू. पाकिस्तान | प.पाकि स्तान | योग |
|---|---|---|---|---|
| चाय | लाख पौंड | ५९२ | — | ५९२ |
| चीनी | ००० टन | ६४ | १७९ | २४३ |
| वनस्पति | ००० टन | ५ | ७३ | ७८ |
| सिगरेट | करोड़ों में | ४४४ | ११७३ | १६१७ |
| सूती धागा | लाख पौंड | ५८५ | ४१३१ | ४७१६ |
| सूती | लाख गज | ४९८ | ६८११ | ७३०९ |
| पटसन का सामान | ००० टन | ३१५ | — | ३१५ |
| रबड़ टायर ट्यूब | हजारों में | १६ | ४६३५ | ४६५१ |
| दियासलाइयां (४०-६० तीलियां) | ००० ग्रुस | १०७२१ | ८६९ | ११५९० |
| सीमेंट | ००० टन | ७७ | १३९७ | १४७१ |
| रोगन व वार्निश | ००० गेलन | ११४ | ६७६ | ७९० |
| सुपर फास्फेट | ००० टन | — | ७ | ७ |
| अमोनियम सल्फेट | ००० टन | — | ५० | ५० |
| सोडा ऐश | ००० टन | — | ३१ | ३१ |
| अमोनियम नाइट्रेट | ००० टन | — | ६७ | ६७ |
| छपाई का कागज | ००० टन | १५ | — | १५ |
| लिखाई का कागज | ००० टन | ८ | — | ८ |
| न्यूज प्रिंट | ००० टन | ३१ | — | ३१ |
| रंगा हुआ चमड़ा | लाख व. फु. | २५० | १७९ | ४२९ |
| कच्चा (सोल) | लाख पौंड | ३६ | १८६ | २२५ |
| बिजली | | | | |
| जैनरेटिड | करोड़ किलोवाट | ४४ | २४० | २८४ |
| मोटर स्पिरिट | लाख गेलन | ११ | ७२८ | ७३९ |
| डीजल आयल हाई स्पीड | लाख गेलन | — | ९४३ | ९४३ |
| मिट्टी का तेल | लाख गैलन | — | ५४५ | ५४५ |
| जलाने का तेल | लाख गैलन | — | १८४२ | १८४२ |

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान की तृतीय योजना में भेद भावना

| वस्तु | इकाई | कुल पाकि-स्तान | पू. पाकि-स्तान | प. पाकि-स्तान |
|---|---|---|---|---|
| खाद्य पदार्थ | | | | |
| सफेद चीनी | (००० टन) | ६४० | २३० | ४१० |
| वनस्पति | (००० टन) | १४० | २५ | ११५ |
| चाय | लाख पौंड | ७४ | ७४ | — |
| सिगरेट | लाखों में | ३०,००० | ११,५०० | १८,५०० |
| सूत | लाख पौंड | ७२० | २३.४ | ४८६ |
| हेसिन सार्किंग | (००० टन) | ८०० | ७६८ | ३२ |
| लंबे रेशे का उत्पादन | (लाख टन) | १२० | ९६ | २४ |
| छिपाई व छपाई का कागज | (००० टन) | १०० | ६५ | ३५ |
| गत्ते | (००० टन) | १०० | ३० | ७० |
| न्यूज प्रिंट | (००० टन) | १०० | ६५ | ३५ |
| अमोनियम सल्फेट | (००० टन) | २५०० | १३०० | १२०० |
| सुपर फास्फेट | (००० टन) | ५५० | ३५० | २०० |
| सोडा ऐश | (००० टन) | १७२ | ३६ | १३६ |
| कास्टिक सोडा | (००० टन) | ९० | ३५ | ५५ |
| गंधक का तेजाब | (००० टन) | ६०० | २८० | ३२० |
| पैट्रो कैमिकल्ज | (००० टन) | ३२९ | १५१ | १७८ |
| स्लात पिण्ड | (००० टन) | १२०० | ३०० | ९०० |
| तार, केबिल्ज | (००० टन) | १० | ४ | ६ |
| भारी बिजली का सामान | लाख रु. में | १२० | ३० | ९० |
| मशीन के औजार और भारी मशीनरी (कम्पैक्स) | लाख रु. में | २६२ | १०२ | १६० |

पाकिस्तान की सरकार सुविचारित एक बड़ी योजना के अनुसार पूर्वी पाकिस्तान पर निर्भरता को अनावश्यक बनाने का प्रयत्न कर रही है। नई तीसरी योजना में पश्चिमी पाकिस्तान में एक बड़ी जूट मिल की स्थापना इसका प्रमाण है। वहां जूट की खेती के परीक्षण बड़ी मात्रा में किए जा रहे हैं, यद्यपि जूट उत्पादन वहां अधिक व्यय-साध्य है।

पूर्वी पाकिस्तान के एक असेम्बली सदस्य के अनुसार सरकार का भेदभावमूलक व्यवहार चरम सीमा तक पहुँच गया है। राष्ट्र रक्षा के कार्यों में तो पूर्वी पाकिस्तान की घोर उपेक्षा की जा रही है। जल, वायु, स्थल तीनों सेनाओं के मुख्य कार्यालय और मुख्य अधिकारी पश्चिमी पाकिस्तान में हैं। पूर्वी बंगाल के प्रत्येक गांव के लिए अफसर पश्चिमी पाकिस्तान से बुलाये गये हैं। इस तरह पूर्वी पाकिस्तान का जोरों से शोषण किया जा रहा है। सभी बड़ी व्यापारिक कम्पनियों, बैंकों और बीमाकम्पनियों के मुख्य कार्यालय भी पश्चिमी पाकिस्तान में हैं। इन सब बातों के परिणामस्वरूप ही पश्चिमी पाकिस्तान में प्रति व्यक्ति आय यदि ३६३ रु० है, तो पूर्वी पाकिस्तान में यह आय केवल २७३ रु० है। बिजली का उत्पादन किसी भी क्षेत्र के औद्योगिक विकास में बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है। कुल पाकिस्तान में जितनी बिजली पैदा होती है, उसका ८५ फीसदी पश्चिमी पाकिस्तान में होती है। तीसरी योजना में कुल व्यय भी पूर्वी पाकिस्तान में कम रखा गया है। जूट, चाय, कागज और खाद के अतिरिक्त बाकी सब उद्योगों के उत्पादन लक्ष्य पश्चिमी पाकिस्तान में ही अपेक्षा कृत अधिक रखे गये हैं। पाकिस्तान के औद्योगिक वित्त निगम ने ऋण देने की जो योजना बनाई है, उससे भी ७२ प्रतिशत पश्चिमी पाकिस्तान का भाग है। वस्तुतः पाकिस्तान सरकार पूर्वी पाकिस्तान का शोषण करने में लगी हुई है और इस कारण वहां पाकिस्तान सरकार से स्वतंत्र होने की भावना बल पकड़े, यह स्वाभाविक ही है।

(देखिये पृष्ठ ५५१ भी)

सम्पदा

का

एक नया ग्राहक बनाना आपका परम कर्तव्य है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# देश की प्रतिरक्षा और नियोजन

(आचार्य विनोबा भावे)

जो बात मैं गत १४-१५ वर्षों से कह रहा हूँ, वह बात आज मैंने अखबार में पढ़ी। चौदह साल पहले पंडित नेहरू ने योजना-आयोग से बात करने के लिए मुझे दिल्ली बुलाया था। सन् ५१ की बात है। ११ दिन मैं वहां ठहरा और योजना-आयोग के लोगों के साथ चर्चा की। उस समय मैंने बताया था कि हमारे देश को अनाज के बारे में स्वावलम्बी बनना ही चाहिए और बहुत से काम तो हमको करने ही हैं, लेकिन अनाज के बारे में जल्द से जल्द स्वावलम्बी होना ही चाहिए, अन्यथा भारत को खतरा है।

आठ साल पहले भी ऐलवाल (मैसूर) में नेताओं की एक परिषद् हुई थी। एक स्वीकृत प्रस्ताव में कहा गया था कि ग्रामदान देश के लिए अत्यंत आवश्यक है और उसमें सबको सहयोग देना चाहिए। मैंने अपने व्याख्यान में ग्रामदान की महिमा बताते हुए कहा था कि ग्रामदान प्रतिरक्षा की योजना (डिफेन्स मेज़र) है।

योजना-आयोग की योजनाएं बनती थीं, तो वह यह मानकर चलता था कि देश में और देश के इर्द-गिर्द शांति रहेगी और लड़ाई की सूरत आयेगी ही नहीं। ऐसा मानकर वे योजनाएं बनाते थे। लेकिन लड़ाई की हालत में आयात-निर्यात में गड़बड़ होगी, इसके बारे में उन्होंने सोचा नहीं था। उस समय बाहर से कौन-सी चीज आयेगी—हम निश्चित नहीं कह सकते और यहां से कौनसी चीजें बाहर जायेंगी, यह भी निश्चित नहीं कह सकते। आयात-निर्यात के बारे में हम कुछ नियंत्रण नहीं कर सकते। ऐसी हालत में गांव-गांव को अपने पांव पर खड़ा करना और ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करने से ही भारत बचेगा। इसलिए आठ साल पहले २२ सितम्बर को हमने जाहिर किया था कि "ग्रामदान डिफेन्स मेज़र" है।

आज मैं अखबारों में पढ़ रहा हूँ। योजना-आयोग के उपाध्यक्ष कह रहे हैं कि अमेरिका से जो अनाज आता है वह आयेगा ही, यह भरोसा नहीं रख सकते। इसलिए गांव-गांव को योजना बनानी चाहिए और इस मामले में देश के सब लोगों को फौरन सावधान हो जाना चाहिए।

हमने १९५१ में यह चेतावनी दी थी। यही बात हमने १९५८ में कही थी। आज सारी दुनिया में जो ताकतें काम कर रही हैं, उनको ध्यान में लेकर सोचने की बात है। अगर देश में खेती नहीं चली तो लड़ाई टिक नहीं सकेगी। लड़ाई में जिन बन्दूकों से काम होता है, उन बन्दूक उठाने वालों के पेट में अनाज नहीं जाएगा तो वे बन्दूक उठा नहीं सकते।

इसलिए उपनिषद् में कहा है "अन्नं ब्रह्मेति विजानात् अन्न बहु कुर्वीत।" कौन बोल रहा है? प्लानिंग कमीशन नहीं बोल रहा है। प्लानिंग कमीशन से पहले ही लेकिन उपनिषद् बोल रहा है। "यया कया च विधया" जिस किसी प्रकार से अन्न बढ़ाओ। चाहे नहर से बढ़ाओ, चाहे छोटी योजना से बढ़ाओ, चाहे जिस प्रकार से अन्न बढ़ाओ। उपनिषद् या ब्रह्म-विद्या है, बोल रही है। क्यों कि वह जानती है कि अन्न की कमी रहेगी तो खून होंगे, झगड़े चलेंगे। इसलिए आपके और हमारे सामने सवाल है कि गांव-गांव में ग्रामसभा बने जो सबकी विश्वास-पात्र हो।

विश्वास-पात्र होने के लिए हमने कुछ उपाय सुझाये हैं। जमीन का बीसवां हिस्सा भूमिहीनों को दे दें। जमीन की मिल्कियत ग्रामसभा को अर्पित करें। हर साल अपनी आमदनी का चालीसवां हिस्सा गांव के विकास के लिए गांव सभा को दे दो। गांव में ग्रामोद्योग बढ़ाओ। गांव में झगड़ा नहीं होगा, शांति रहेगी, ऐसी कोशिश करें। गांव के आयात-निर्यात का नियंत्रण करें। यह सब काम ग्रामसभा गांव का जिम्मा उठाये। गांव में कोई दुःखी नहीं रहेगा, यह देखें, सुख-दुख आपस में बांट लें। इस तरह गांव मजबूत करेंगे तो हम देश को बचा सकेंगे।

एक मनुष्य डूब रहा है १९६५ में और योजना-आयोग कहता है कि अरे डूबने वाले हमारी योजना में बहुत से काम बाकी है। वे खतम होने के बाद १९८५ में



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम तुम्हारा बचाव करेंगे । १९८५ में हम हिन्दुस्तान के सबसे नीचे के लोगों को बचा सकेंगे । समझने की बात है कि १९६५ में मनुष्य डूब रहा है और आप उसको बीस साल राह देखने के लिए कहते हैं । अगर १९६५ में मनुष्य डूब रहा है तो उद्धार की योजना १९६५ में ही होनी चाहिए, १९६६ में नहीं । अगर १९६५ में सितम्बर महीने में मनुष्य डूब रहा है तो उसके उद्धार की योजना १९६५ के सितम्बर में ही होनी चाहिए, अक्टूबर में नहीं । अगर सितम्बर की १६ तारीख को वह डूब रहा है तो उसके उद्धार की योजना सितम्बर के १६ तारीख को ही होनी चाहिए, १७ को नहीं । अगर १६ तारीख की शाम को ५ बजे मनुष्य डूब रहा है तो १६ तारीख की शाम को ५ बजे ही योजना होनी चाहिए, ६ बजे नहीं । कहने का मतलब यह कि उसी साल में, उसी महीने में, उसी दिन में, उसी घंटे में, उसी मिनिट में योजना होनी चाहिए । ७ बजकर १६ मिनिट पर मनुष्य डूबता है तो ७ बजकर १७वें सेंकेण्ड में उसके बचाव के लिए कूदना चाहिए । भारत के गांव-गांव में जाओ और संदेश पहुँचाओ । सब मिलकर तैरने की योजना नहीं करोगे तो बचोगे नहीं । अगर गांव-गांव के लोग एक हो जायं, तैयार हो जायं तो आप जरूर तैर जायंगे ।

## गांव में बुद्धि है

गांव का जीवन बिलकुल अनाधार चल रहा है, जिसको शहर से कोई आधार नहीं मिलता । उन गांवों के लोगों को उनकी अपनी योजना करने को अकल नहीं होगी ? भारत का किसान दस हजार साल का पुराना अनुभवी किसान है । यह अलग बात है कि उसको माडर्न टेकनिक नहीं सिखाया है । तो वह उसका दोष नहीं, आपका दोष है । लेकिन पूर्वजों से उसको ज्ञान मिला है, बातें सुनकर काम नहीं करता, देखकर काम करता है । इसलिए गांव को मजबूत करने में सब लग जायें ।

(सर्वोदय प्रेस सर्विस के सौजन्य से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चतुर्थ योजना की निर्माणावस्था

प्रो० उत्तमचन्द्र कांस्टिया एम० ए०, एम० कॉम

भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात आर्थिक विकास के लिये योजनाबद्ध कार्यक्रम को अपनाना स्वीकार किया। ३१ मार्च १९५१ को भारत ने विकास योजना का श्रीगणेश किया। इन १५ वर्षों में विकास का जो कार्य हुआ है, उसने देश को आर्थिक व सामाजिक क्रांति के द्वार पर ला खड़ा किया है। इसका श्रेय तीन पंचवर्षीय योजनाओं को है। चतुर्थ योजना को बनाने का काम मई १९६२ में प्रारम्भ हुआ। इसकी रूपरेखा को तैयार करते समय दो बातों का विशेष तौर पर ध्यान रखा गया है प्रथम तो यह है कि योजना आगे की जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाई जाए। द्वितीय, इसकी रूपरेखा तैयार करते समय देश के सभी वर्गों व विशेषज्ञों से राय ली जाए, ताकि योजना को कार्यान्वित करते समय जनता का सम्पूर्ण सहयोग मिल सके। इस योजना के लिये सन् १९६६ से १९८१ तक के १५ वर्षों को ध्यान में रखा गया है। चतुर्थ योजना में इस्पात, कोयला, बिजली, भारी मशीनों, मूल रसायन, उर्वरक, यातायात व शिल्पिक शिक्षा आदि बुनियादी आवश्यकताओं का अध्ययन करने के लिये अलग-अलग टोलियां बनाई गई। सन् १९६४ में मंत्रिमंडल के सामने चौथी योजना की सोलह पृष्ठों की मोटी रूपरेखा प्रस्तुत की गई। इसी स्वीकृत रूपरेखा के आधार पर चौथी योजना का ९७ पृष्ठों का ज्ञापन राष्ट्रीय विकास परिषद के सामने प्रस्तुत किया गया, जो अक्टूबर में मोटे तौर से स्वीकृत हुआ। इसमें चतुर्थ योजना के कार्यक्रम, उद्देश्य, लागत और कार्यक्रम प्रणाली का वर्णन था।

पहली तीन योजनाओं की तुलना में चतुर्थ योजना को अधिक दृढ़ एवं व्यावहारिक बनाने के लिये रचना प्रक्रिया में कुछ परिवर्तन किये गये हैं। योजना आयोग अधिक से अधिक विशेषज्ञों, अर्थशास्त्रियों, राजनीतिज्ञों व उद्योग-पतियों से विचार विमर्श कर रहा है। राष्ट्रीय विकास परिषद ने पहली बार योजना के अध्ययन के लिये पांच उपसमितियां बनाईं। समितियों में राज्यों के मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री और सम्बन्धित विषयों के राज्य मंत्री हैं। ये उपसमितियां कृषि और सिंचाई, उद्योग, बिजली और परिवहन, सामाजिक सेवाओं के प्रस्तावित कार्यक्रमों पर विचार करेंगी और विकास परिषद को रिपोर्ट देंगी। इसके अतिरिक्त एक राष्ट्रीय योजना परिषद बनाई गई, जिसमें देश के १७ गैर सरकारी प्रसिद्ध वैज्ञानिक, इंजीनियर, अर्थशास्त्री, कृषि विशेषज्ञ और उद्योगपति हैं।

## प्राथमिकताएं व लक्ष्य

चतुर्थ योजना में कृषि की उपज बढ़ाने, जनता को उचित मूल्यों पर नियमित रूप से वस्तुएं दिलाने और भारी उद्योगों के विकास के कार्यक्रमों को प्राथमिकताएं दी जाएंगी। सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े कारखानों के साथ उपभोक्ता सामान बनाने के कारखाने भी खोले जाएंगे। कृषि, उद्योग और अन्य क्षेत्रों में सहकारिता को महत्वपूर्ण स्थान दिया जायेगा। पिछड़े क्षेत्रों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। चतुर्थ योजना के लक्ष्य संक्षेप में इस प्रकार रखे गये हैं—

(१) कृषि पैदावार में प्रतिवर्ष ५% की वृद्धि।

(२) संगठित उद्योगों के उत्पादनमें प्रति वर्ष ११% की वृद्धि।

(३) लघु उद्योगों के उत्पादन में प्रति वर्ष ८% की वृद्धि।

(४) वाणिज्य, परिवहन अन्य सेवाओं में प्रति वर्ष ६.५% की वृद्धि।

(५) सम्पूर्ण आर्थिक विकास में करीब ६.५% प्रति वर्ष वृद्धि।

(६) पूंजी नियोजन की दर बढ़ाकर राष्ट्रीय आय की १७% के बराबर की जायेगी।

## वित्तीय प्रारूप

११ अगस्त १९६५ को प्रधान मंत्री शास्त्रीजी की अध्यक्षता में हुई योजना आयोग की बैठक ने यह निर्णय किया कि चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में २१५०० करोड़ रु० की लागत लगाई जाए। यह राशि पहली तीनों योजनाओं

(शेष पृष्ठ ५५८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकास और विनाश के बीच चौथी योजना

श्री प्रो० पूरनचन्द्र रावत

"विकास अथवा मृत्यु-आलिंगन" यह नारा योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता का है। निःसन्देह हम आज विषम परिस्थिति में से गुजर रहे हैं। अनेक समस्याएं सुरसा की भांति मुख विस्तीर्ण करती जा रही हैं। १८ वर्ष हो चुके हैं, लोगों को राहत नहीं मिल रही है। इस प्राहि २ वातावरण में अनेक योजनाएं हमारे सामने आई हैं। तीन योजनाएं भी समाप्त हो चुकी हैं। अब चौथी की बारी है। यह ठीक है कि विदेशों में आर्थिक विकास की गति तेज होने में ३०-४० वर्ष लग गये हैं और १५ वर्ष की अवधि उस तुलना में कुछ भी नहीं है। फिर भी अब शीघ्र फल देने वाली योजनाएं जनता को मिलें, तो कुछ राहत मिले। विनियोग और प्रतिफल में काफी अन्तर नहीं होना चाहिए।

प्रस्तावित चतुर्थ पंचवर्षीय योजना की बड़ी चर्चा हो पड़ी है। इसमें २१५०० करोड़ रुपया विनियोग होगा एवं २५०० करोड़ रु. चालू खर्च होंगे। १६००० करोड़ रु. १२००० करोड़ रुपये सरकारी क्षेत्र में एवं ७००० करोड़ निजी क्षेत्र का अनुमान है। दूसरे शब्दों में यह तृतीय योजना से दुगनी या तीनों पंचवर्षीय योजनाओं के योग के बराबर है या प्रथम योजना से ६ गुनी बड़ी है।

जहां तक उद्योगों का प्रश्न है, आर्थिक विकास और अवसर की समानता एवं न्याय सभी योजनाओं में रखा गया है। बेकारी दूर कर स्वचालित अर्थव्यवस्था बनाये रखना चौथी योजना का भी लक्ष्य है। यह आशा है कि कृषि में ५ प्रतिशत, उद्योगों में ११ प्रतिशत एवं छोटे उद्योगों एवं संवादवाहनों में ८ प्रतिशत वृद्धि होगी। सम्पूर्ण रूप से विकास की दर ६। प्रतिशत आंकी गई है।

योजना के आकार पर मतभेद है। कुछ लोग कष्टउठाकर भी ऊंची विनियोग दर रखना चाहते हैं जबकि कुछ विचारक वर्तमान मुद्रा प्रसार के भय से विनियोग की दर कम रखना चाहते हैं। पर जनसाधारण को इस शैक्षणिक वैचारिक विवाद में रुचि नहीं है। उसे तो विकास की दर तेज चाहिए, पर कम त्याग व परिश्रम से निर्मित जल्दी फल देने वाली योजनाओं पर आकर्षित होना सामान्य मनोविज्ञान की बात है।

सार्वजनिक क्षेत्र में साधनों द्वारा अर्थपूर्ति होने के के बाद भी २५०० करोड़ रुपये का अंतर होता है। इसे देशके आन्तरिक कलेवर से वसूल किया जाएगा। यद्यपि यह एक प्रसंशनीय कदम है, पर आंतरिक कलेवर मजबूत बनाना भी तो हमारा धर्म है। यह नयी कर वृद्धि, बचत वृद्धि, कर का वैज्ञानीकरण, कर की चोरी रोकना, एवं सार्वजनिक उद्योगों के लाभ आदि के (जोकि १२ प्रतिशत होगा), द्वारा पूरा किया जायेगा। विदेशी विनिमय में करीब ३२०० करोड़ रुपया की कमी को विदेशी सहायता द्वारा पाटा जायेगा। पर विदेशी सहायता पर कब तक जिएं ? अंततः अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा।

योजना आयोग ने चतुर्थ योजना में १५०० करोड़ रुपया का निर्यात लक्ष्य रखा है, और तीसरी योजना के अंत में ११०० करोड़ रुपये का लक्ष्य है। यह एक कठिन समस्या तो नहीं है, पर इसका उचित क्रियान्वय व जन-सहयोग आवश्यक अंग हैं। निर्यात के साथ ही हमें आयातों पर भी विचार करना पड़ा है, क्योंकि उनमें बहुत वृद्धि हुई है, पिछले १० वर्षों में हमारे निर्यात में १५ प्र. श. प्रतिवर्ष वृद्धि हुई जबकि आयात में ५० प्रतिशत वृद्धि हुई। अतः दोनों मोर्चों पर लड़ाई लड़नी है। यही हाल बेरोजगारी का है। तृतीय योजना में १७० लाख लोगों को काम मिलना था, पर १३० लाख को ही मिल पाया है। चतुर्थ योजना २३० लाख लोगों को काम देने की बात करती है। पुरानी असफलता मिलाकर यह पर्याप्त हो जाती है। जनसंख्या तेज गति से बढ़ती जा रही है और प्रतिवर्ष एक नया डेनमार्क बन जाता है।

ऐसी विषम स्थिति में कैसे प्रगति का रास्ता साफ हो, यह एक राष्ट्रीय प्रश्न है ? मैं श्री अशोक मेहता के एक सुन्दर उद्धरण से सहमत हूँ कि—

We are not a priviledged people to have a wonderful holiday. We can not afford to give up planning. We have before us two alterna-



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

tives—development or kiss of death.

आर्थिक प्रश्न बड़े जटिल हैं, जिनके सुलझाने के लिए साधनों की खोज जरूरी है। स्रोतों का शोषण व उपलब्धि बहुत कुछ उत्पादन की मात्रा एवं किस्म पर निर्भर रहती है। उस उत्पादन का कितना भाग बचाकर विनियोग में लगाया जाता है, यह एक बुनियादी सवाल है। उपभोग एवं विनियोग में संतुलन रखना आवश्यक हो जाता है। बचत का कुछ भाग तो आवश्यक रूप से ब्याज व ऋणों में चला जाता है। उदाहरणार्थ तीसरी योजना में कुल विदेशी सहायता २६५० करोड़ रुपया हुई। इस पर ६०० करोड़ ऋण व ब्याज का भुगतान करने में लग गये। चौथी योजना में १४०० करोड़ रुपया भुगतान करना पड़ेगा। अतः यह आवश्यक हो गया है कि साधनों में मितव्यय लाकर योजना के क्रियान्वय में सावधानी बरती जाय। विकास और प्रतिरक्षा तभी साथ साथ चल सकेंगे।

कृषि उत्पादन की समस्या सबसे प्रधान है। हर कृषिप्रधान देश में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था व औद्योगिक कलेवर कृषि की सफलता से सम्बद्ध होता है। हमारी योजनाएं इस ओर विशेष सफल न हो सकीं। श्री अशोक मेहता ने अपना एक तर्क रखा है। उनके अनुसार औद्योगिक उत्पादन असफल होने के कारण कृषि नहीं, वरन् कृषि उत्पादन असफल होने के कारण औद्योगीकरण की गति का धीमापन है। कृषि उत्पादन के लिए औद्योगिक उत्पादन की आवश्यकता होती है। अतः दोनों के संतुलित विकास की आवश्यकता है। पर मेरे विचार से कृषि उत्पादन को प्राथमिकता मिलने से अनेकानेक लाभ हैं। जबतक लोगों को उनकी आवश्यकता की वस्तुएं नहीं मिलेंगी योजना की चर्चा ही व्यर्थ है। योजना का स्वरूप देखते हुए कई अर्थशास्त्रियों ने इसे सप्तवर्षीय योजना बनाने का सुझाव दिया है। पर यह तो विकास को टालने जैसी बात है। योजनाओं का प्रशासन अव्यवस्थित व असंगठित रहने से करोड़ों रुपया विलासिता में जाता है। कम समय में अधिकतम उपयोग मिले, तो कुछ विशेषता है अन्यथा विकास तो प्रकृति का नियम है, जो होता रहता है।

उत्पादन वृद्धि सफल बनाने के लिए श्री बी. आर. भगत का निम्न परामर्श बहुत उपयोगी है :—

"हमें एक युद्ध की स्थिति के समान एक साथ परस्पर मिलकर काम करना चाहिए ताकि अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अपने पूर्ण साधन जुटा सकें और उमंग तथा प्रेरणा पैदा हो सके।

श्री कृष्णामाचारी ने अभी बजट पेश करते हुए कहा था कि मूल्यों की वृद्धि करने हेतु सरकार मुद्राप्रसार बढ़ाने वाले कारणों, साख, काला धन निकालना, बोनस, हुण्डी आदि पर नजर रखेगी। इसी तरह वितरण व्यवसाय पर भी सरकारी हस्तक्षेप हो सकता है। उनके मतानुसार राशनिंग पद्धति समस्या का मूल हल न होकर एक साधन हो सकता है। गांधीजी तो कन्ट्रोल के सख्त विरोधी थे। वे कहते थे कि यह कपट का नया ढंग है, जिससे लोग कायर हो जाते हैं और सच्चाई का गला घोट दिया जाता है।

चतुर्थ योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह रहेगी कि इसमें घाटे की अर्थव्यवस्था को स्थान न मिलेगा और आन्तरिक साधनों पर ही बल दिया जायगा। यह प्रशंसनीय कदम है क्योंकि मुद्राप्रसार एक डाकू की तरह सब कुछ हरण कर लेता है। फिर एक बार चक्र चल जाने पर मुश्किल से टूटता है। अतः उपलब्ध साधनों का अधिकतम उपयोग दूरदर्शिता है। राष्ट्रीय चरित्र का विकास तो योजनाओं का प्राण है। वास्तविक धरातल पर उतर कर मूल प्रश्नों को समाधान करना होगा तभी विकास की गति तेज होगी।

अरबों रुपयों की योजनाएं कोई अर्थ नहीं रखतीं यदि उनका सम्बन्ध उत्पादन वृद्धि से न हो। अतः उत्पादन क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठाकर यह नारा बुलन्द करना हितकर है कि निर्यात या नाश "Export or perrish" चौथी योजना के सफल क्रियान्वय हेतु चीन की इस कहावत की पुष्टि अनिवार्य है—

यदि आप एक वर्ष के लिए योजना बनाना चाहते हैं तो अनाज पैदा करिए। यदि आप १० वर्ष के लिए योजना बनाना चाहते हैं तो वृक्षारोपण कीजिए और यदि आप १०० वर्षों के लिए योजना बनाना चाहते हैं तो मानव का निर्माण कीजिए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

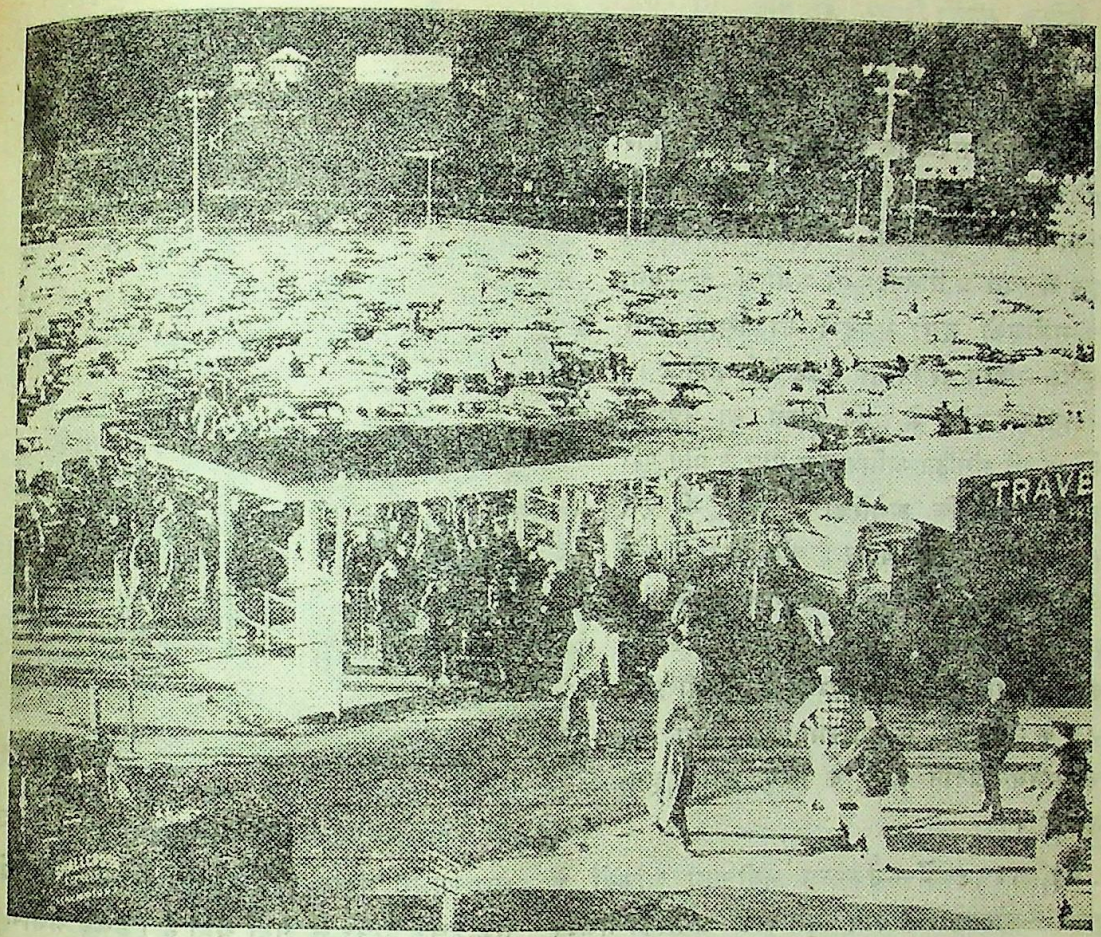

अमेरिकन मजदूर इतने सम्पन्न हैं कि अपनी अपनी कार रखने लगे हैं। न्यूजर्सी के कारखाने से अपनी-अपनी कारों की ओर जाते हुए मजदूर

# अमेरिकी मजदूर के ८० वर्ष

अमेरिका में मजदूर-दिवस पहले-पहल १८८२ में मनाया गया था। उस दिन न्यूयार्क नगर के बाजारों से होता हुआ श्रमिकों का एक जलूस निकला था। उनके नारों में दिन में अधिक समय तक काम लेने और कम मजदूरी दिये जाने के विरोध में तख्तियां थीं। लेकिन ६ सितम्बर, १९६५ को मनाये जाने वाले मजदूर दिवस पर सारे अमेरिका में टैलिविजन पर अपने समाज-सेवा कार्यक्रम के विविध क्रियाकलाप पर विस्तार से प्रकाश डाला गया।

इस अन्तर से पिछले ८० वर्षों में अमेरिका के मजदूरों की प्रगति पर प्रकाश पड़ता है। ८० वर्ष पूर्व ही यह तय हुआ था कि सितम्बर के प्रथम सोमवार को मजदूर दिवस मनाया जाये।

आजकल मजदूर-दिवस समारोह में विरोधी प्रदर्शनों का स्थान पिकनिकों ने ले लिया है। तख्तियों और बड़े-बड़े चित्र लेकर चलने वाले मजदूरों के जलूस अब अतीत की वस्तु बन गये हैं। संगठित मजदूरों ने अपना विरोध प्रकट करने और अपनी शिकायतों को दूर कराने के लिए अन्य तथा अधिक प्रभावशाली तरीके खोज निकाले हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन मजदूर-दिवस समारोह की एक आधारभूत परम्परागत विशेषता बराबर कायम है। वह विशिष्टता है मजदूरों की प्रगति का वार्षिक सिंहावलोकन। सार्वजनिक सभाओं में, रेडियो और टैलिविजन पर, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में श्रम-आन्दोलन के नेताओं, सरकारी अधिकारियों —इन में स्वयं प्रेसिडेण्ट भी शामिल है—तथा अनेक समीक्षकों द्वारा मजदूरों की स्थिति और मजदूरोंके भविष्य पर विचार प्रकट किये जाते हैं।

राष्ट्रीय समृद्धि में अपने हिस्से का उपभोग करते हुए भी संगठित श्रमिक इस बात के प्रति पूरी तरह जागरूक हैं कि अमेरिका में अब भी ऐसे बहुत से श्रमिक हैं जो बेकार हैं और जिन को कम मजदूरी मिलती है। अपनी यूनियन के माध्यम से गरीबी के उन्मूलन आन्दोलन को, जो संघीय सरकार की आर्थिक अवसर सम्बन्धी एजेन्सी द्वारा १९६४ के उत्तरार्द्ध में प्रारम्भ किया गया था, अपना समर्थन प्रदान करने के लिए श्रमिक कृत-संकल्प हैं।

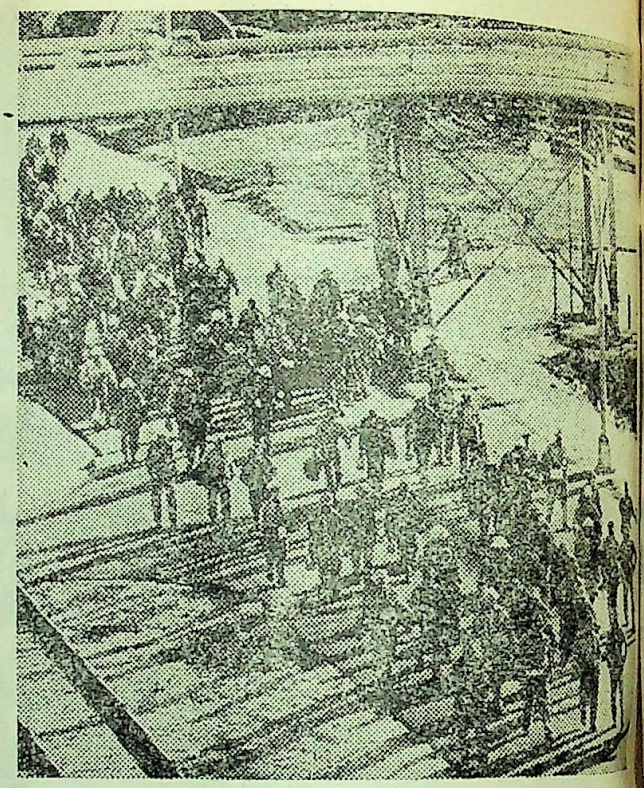

अमेरिका में एक करोड़ ७० लाख मजदूर यूनियनों के सदस्य हैं।

मई, १९६५ में—उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार—कारखानों में कार्य करने वाले अमेरिकी मजदूर की साप्ताहिक मजदूरी १०८ डालर हो गई थी। पिछले साल की तुलना में यह ५ डालर अधिक थी। और सप्ताह में काम के घंटे घटकर ४० या उससे कम हो गये। गैर-सरकारी या सरकारी दोनों क्षेत्रों में अधिकांश कर्मचारियों को बेरोजगारी बीमे, चिकित्सा बीमे तथा पेन्शन का लाभ मिलने लगा है। प्रति तीन में से दो अमेरिकी परिवारों के अपने मकान हैं।

नागरिक अधिकार कानून-१९६४ का पास होना इस वर्ष श्रमिकों को प्राप्त हुई दूसरी उल्लेखनीय सफलता है। इस कानून में १०० से अधिक श्रमिकों को काम पर रखने वाले मालिकों के लिए एक आचार-संहिता की व्यवस्था की गई है, जिसका पालन वे लोगों को काम पर लगाने के समय करेंगे।

प्रैसिडेण्ट ने प्रति घंटा मजदूरी की न्यूनतम दर में वृद्धि करने तथा बहुत से ऐसे श्रमिकों को इस कानून की छत्र-च्छाया प्रदान करने का प्रस्ताव किया है, जो अभी तक इसके दायरे में नहीं आते हैं। इसके अलावा उन्होंने बेरोजगारी मुआवजा सम्बन्धी कानून का विस्तार करने व उसमें सुधार करने की सिफारिशें भी की हैं।

मजदूरों की सम्भवत: सबसे अधिक शानदार सफलता गत चुनावों में जौनसन-ह्यूमफ्री की विजय थी। परम्परा के अनुसार, 'ए एफ एल सी आई ओ' केवल प्रैसिडेण्ट और वाइस-प्रैसिडेण्टों के उम्मीदवारों को राष्ट्रव्यापी स्तर पर समर्थन प्रदान करता है, शेष उम्मीदवारों के से चुनाव करने की बात यूनियनों की इच्छा पर छोड़ दी जाती है। जब चुनाव का दिन निकट आता गया, अधिक-धिक श्रम-यूनियनें जीतने वाली टोली को अपना समर्थन प्रदान करती गईं। यही नहीं पहले से कहीं अधिक यूनियनों ने कांग्रेस, गवर्नर पद, राज्यीय विधान सभाओं तथा अन्य सरकारी पदों के लिए खड़े होने वाले उम्मीदवारों को अपना समर्थन दिया। १९६४ में राजनीतिक शिक्षा के प्रसार में संगठन ने अद्वितीय दिलचस्पी और सक्रियता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# विकसित देशों में छोटे उद्योगों का स्थान

श्री नारायणसिंह चौधरी,

देश के बड़े-बड़े कल कारखानों की योजनाओं में छोटे उद्योग धन्धों का कोई स्थान नहीं है, यह धारणा सर्वथा भ्रमात्मक है। चैकोस्लोवाकिया जैसे विकसित और सम्पन्न देश में छोटे छोटे उद्योगों का सहकारिता के आधार पर विकास हमारे लिये अनुकरणीय उदाहरण है।

चैकोस्लोवाकिया में औद्योगिक उत्पादन मुख्यतः राष्ट्रीयकृत कारखानों में बड़ी मशीनों से होता है, किन्तु छोटी वस्तुयें, विलास सामग्री, व्यक्तिगत रुचि की कलात्मक चीजें तैयार करने, सेवाओं और मरम्मत के काम में उत्पादक सहकारों के लिये पर्याप्त क्षेत्र है। समाजवाद के निर्माण के प्रारम्भ में यह प्रश्न उठा था कि बड़े उद्योगों के साथ लघु उद्योगों की संगति कैसे बैठेगी। पिछले दस बारह वर्ष के अनुभव से यह स्पष्ट हुआ कि बड़े उद्योगों के विकास के साथ लघु उत्पादनों और सेवाओं का भी विस्तार होता है और इस समय उत्पादक सहकार २५ हजार प्रकार की विभिन्न वस्तुयें तैयार करते हैं। उत्पादक सहकारों का संगठन और कार्य प्रणाली किस प्रकार की है यह दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जायेगा।

## चोडोविया शिल्प सहकार

डोमाज्लिसे का, जहां चोडोविया शिल्प सहकार है, सात सौ वर्ष पुराना इतिहास है। यहां के लोग स्वतंत्रताप्रिय और अध्यवसायी हैं। यहां की शिल्प परम्परा पुरानी है। यों यहां एक शिल्प सहकार सन् १९४२ में भी था किन्तु उसमें केवल दो तीन सदस्य थे जो केवल उपहार और त्यौहार की वस्तुयें बनाते थे। सन् १९५० में उसका पुनस्संगठन हुआ और अब उसके तीन विभाग हैं। एक उपहार की वस्तुयें बनाता है। दूसरा पुरानी वेशभूषा के वस्त्र, जो विशेष अवसरों पर पहिने जाते हैं। तीसरा विभाग चीनी के कलापूर्ण बर्तन बनाता है। इनकी वस्तुओं की खपत न केवल देश के अन्दर होती है वरन् नार्वे, डेनमार्क और इंग्लैण्ड तक से मांग आती है। फ्लोरेन्स, लेनिनग्राड, मास्को की प्रदर्शनियों में उनका मान हुआ। चैकोस्लोवाकिया के सरकारी भण्डारों ने ५० हजार क्राउन की उनकी वस्तुयें गत वर्ष खरीदीं और ४ लाख क्राउन का नया आर्डर दिया।

सहकार की सदस्यता बिल्कुल स्वैच्छिक है और उससे प्राप्त हो जाने वाली सुविधायें बहुत हैं। शिल्पकारों को नये उपकरणों, माल, बिक्री या बीमा की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। इसके अतिरिक्त उन्हें छुट्टी, पारिवारिक भत्ता, बीमारी असमर्थता और पैंन्शन के हितलाभ प्राप्त होते हैं। सुधार और विकास की चिन्ता व्यक्तिगत रूप से नहीं करनी पड़ती।

निजी शिल्पकार उत्पादन की मात्रा या सुन्दरता में प्रतियोगिता नहीं कर सकते। सहकार की ६ लाख ८० हजार क्राउन रकम बैंक में है। वह अच्छे से अच्छे कलाकार को पैसा दे कर डिजाइन, नक्शे और नमूने तैयार कराने की सामर्थ्य रखता है,

उत्पादक सहकारों को गृह व्यापार सन्त्रालय द्वारा विशेषज्ञों के परामर्श से निर्धारित मूल्य पर माल सहकारी गोदामों या राज्य से प्राप्त होता है। बिक्री का दाम लागत का ध्यान रखकर सहकार स्वयं निर्णय करते हैं और इसी आधार पर सौदे किये जाते हैं।

सहकारों की साख अच्छी है और उन्हें ३.६ प्रतिशत ब्याज दर पर प्रान्तीय या प्रादेशिक सहकारी संघों, संचित संयुक्त, विनियोग कोष अथवा बैंकों से सहज प्राप्त हो सकता है। नया सहकार बनाने वालों को भी कोष से ऋण मिल जाता है।

विकलांगों का सहकार—चैकोस्लोवाकिया के प्लेजन कस्बे में, जो कि विार और स्कोडा इन्जीनियरिंग वर्क्स के

( शेष (पृष्ठ ५५५ पर )

---

का परिचय दिया और १९६५ के स्थानीय चुनावों के दौरान भी उनकी यह दिलचस्पी और सक्रियता बनी रही। इस वर्ष यूनियन के सदस्य मेयर से लेकर जिला बोर्डों के सदस्यों के पदों तक के लिए खड़े होने वाले उम्मीदवारों की योग्यता पर खास तौर पर ध्यान दे रहे हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# चतुर्थ योजना में विभिन्न उद्योगों के लक्ष्य*

| उद्योग | इकाई | तीसरी योजना के अन्त तक १९६५-६६ प्राप्त लक्ष्य क्षमता | उत्पादन | चौथी योजना के अन्त तक १९७०-७१ क्षमता | उत्पादन |
|---|---|---|---|---|---|
| **धातु** | | | | | |
| **लोहा और इस्पात** | | | | | |
| (अ) स्टील पिण्ड | ००० टनों में | ८,९०० | ७,१०० | १४,६०० | १३,००० |
| (ब) फिनिशड स्टील | ,, ,, ,, | ६,६०० | ५,३०० | ११,००० | १०,००० |
| (स) पिग आइरन बिक्री के लिए | ,, ,, ,, | १,२०० | १,२०० | ३,२०० | ३,२०० |
| औजार और स्टेनलैस स्टील | ,, ,, ,, | ५० | ३५ | ५०० | ४०० |
| एलमूनियम | ,, ,, ,, | ७३ | ८० | २६३ | २६० |
| **खानें** | | | | | |
| लोहा | मिलियन टन | — | २२ | — | ५६ |
| कोयला | ,, ,, | — | ६७ | — | ११३ |
| व्यापारिक गाड़िया | ००० संख्या | ४४ | ४० | १०० | १०० |
| जेनरेटर-थरमल | ००० किलोवाट | ६०० | — | ३,००० | १,५०० |
| ,, हाइड्रो | ,, ,, | ५०० | — | १,७०० | १,२०० |
| टरबाइन स्टीम | ,, ,, | ६०० | — | ३,००० | १,५०० |
| ,, हाइड्रो | ,, ,, | ५०० | — | १,७०० | १,२०० |
| मशीनी औजार | (मिलियन रुपयों में) | ३७६ | ३०० | १,१०० | १,००० |
| स्टील कास्टिंग | ००० टनों में | १७० | ६० | ३०० | २५० |
| सब उद्योग | (मिलियन रुपयों में) | ६५१ | ५०६.५ | १,७१० | १,४५५ |
| **कृषिगत भशीनरी** | | | | | |
| (अ) ट्रैक्टर | ००० संख्या | १५ | ६ | ४० | ४० |
| (ब) शक्ति-चलित पम्प | ,, ,, | १८० | १८० | ३५० | ३५० |
| (स) डीजल इंजन | ,, ,, | १५० | ८० | २०० | २०० |
| **खाद** | | | | | |
| (अ) नाइट्रोजन (N की टर्म में) | ००० टनों में | ५,८६५ | ३०० | २,३०० | २,००० |
| (ब) फासफोटिक ($P^2os$) | ,, ,, ,, | २७० | २०० | १,००० | १,००० |
| **भारी रसायन और औषध** | मिलयन रुपयों में | १,५०० | १,५०० | २,५०० | २,५०० |
| (अ) कास्टिक सोडा | ००० टनों में | ३३० | २५० | ६५० | ५५० |

*वर्तमान युद्ध और अन्तर्राष्ट्रीय संकट के कारण नई परिस्थितियों में योजना आयोग अपने लक्ष्यों में परिवर्तन कर सकता है, यह हमें स्मरण रखना चाहिए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (ब) सोडा ऐश | ,, ,, ,, | ४०० | ३२० | ७०० | ६०० |
| (स) एलफ्यूरिक एसिड | ,, ,, ,, | १,४०० | ६०० | ३,५०० | ३,५०० |
| मोटर टायर | मिलियन संख्या | ३.३ | २.६ | ७.५ | ७.० |
| कागज | ००० टनों में | ६८० | ५३० | १२.५० | १,१०० |
| अखबारी कागज | ,, ,, ,, | ३० | ३० | १६५ | १५० |
| सीमेंट | मिलियन टनों में | १३.० | ११.५ | २५.० | २३.० |
| (अ) सूत | मिलियन किलोग्राम | १६.५* | १,००० | १,६३५* | १,२३० |
| (ब) कपड़ा (मिलों में बना) | मिलियन मीटर | २१८** | ३,७७० | २.३०** | ५,४५० |
| जूट उद्योग | ००० टनों में | १,२१६ | १,३२१ | १,७०० | १,७०० |
| चीनी | मिलियन टन | ३.२५ | ३.२० | ४.५ | ४.५ |
| साइकिल | मिलियन संख्याएं | २.० | १.७ | ३.५ | ३.५ |
| एवं | ,, ,, | | | | |
| सिलाई की मशीनें | ००० संख्याएं | ५०० | ४५० | १,००० | ६०० |
| मोटर साइकिल और स्कूटर | ,, ,, | ७५ | ५० | १२० | १२० |
| बिजली के पंखे | मिलियन संख्याएं | २.० | १.५ | ३.५ | ३.५ |
| पैट्रोल रिफाइनरी | मिलियन टनों में | १२.२५ | १०.२५ | २२.७५ | २२.७५ |

# चौथी योजना में निर्यात के लक्ष्य

(करोड़ रुपयों में)

| वस्तु का नाम | १९६४-६५ (वास्तविक) | १९६५-६६ (अनुमानित) | १९७०-७१ (लक्ष्य) | १९६५-६६ से १९७०-७१ तक की वृद्धि |
|---|---|---|---|---|
| कृषि और सम्बद्ध उत्पादन | १८५.२ | १८१.१ | २३०.४ | + ५८.३ |
| वनस्पति तेल (अनावश्यक) | ७.० | ५.६ | १९.५ | + १३.९ |
| खली | ३९.७ | ४१.० | ४५.० | + ४.० |
| तम्बाखू | २४.१ | २४.१ | २५.० | + ०.९ |
| मसाले | १६.७ | १७.५ | २३.० | + ५.५ |
| (ऊ) काली मिर्च | ६.८ | ७.० | ७.५ | + ०.५ |
| (ब) अन्य | ९.९ | १०.५ | १५.५ | + ५.० |
| चीनी | १७.९ | १०.५ | २०.० | + ९.५ |
| फल और सब्जियाँ | ३६.८ | ३८.० | ४५.० | + ७.० |
| (ऊ) काजू व गिरी | २९.० | ३०.० | २७.० | − ३.० |
| (ब) अन्य | ७.८ | ८.० | १८.० | + १०.० |
| मछली | ६.८ | ८.० | २०.० | + १२.० |
| बागान | १३०.० | १३७.४ | १७५.० | + ३७.६ |
| चाय | १२४.७ | १२६.५ | १६०.० | + ३३.५ |
| कोफी | १३.३ | १०.९ | १५.० | + ४.१ |
| धातु और खनिज | ७०.९ | ७२.७ | ११२.० | + ३९.३ |
| इसमें से | | | | |
| आइरन ओर | ३७.४ | ४२.० | ८५.० | + ४३.० |
| कपड़ा उद्योग | ५८.० | ६२.० | ६७.० | + ५.० |

अक्टूबर '६५



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| (अ) मिल का बना हुआ | ४८.४ | ५०.० | ५५.० | + ५.० |
| (ब) हैंड लूम | ६.६ | १२.० | १२.० | |
| नकली सिल्क | ६.६ | ६.६ | १५.० | + ८.४ |
| सिले हुए कपड़े | ४.२ | ५.० | १२.० | + ७.० |
| जूट और नारियल से निर्मित | १८०.० | १८४.५ | १९९.० | + १४.५ |
| नारियल की रस्सी और अन्य वस्तु | ११.३ | ११.५ | १४.० | + २.५ |
| जूट से बनी चीजें | १६८.७ | १७३.० | १८५.० | + १२.० |
| चमड़ा और चमड़े से बनी चीजें | ३९.९ | ४१.० | ५०.० | + ९.० |
| इसमें से | | | | |
| जूते | ४.२ | ५.० | ९.० | + ४.० |
| चमड़े और चमड़े से बनी अन्य चीजें (जूतों के अतिरिक्त) | २७.४ | २८.० | ३२.० | + ४.० |
| इन्जीनियरिंग का सामान | १३.९ | १९.० | ४५.० | + २६.० |
| हस्त शिल्प-उद्योग | २४.९ | २७.० | ४१.० | + १४.० |
| अन्य | ४१.४ | ५४.५ | ७२.३ | + १७.८ |
| विविध वस्तुएं (पुनः निर्यात को सम्मिलित कर) | ३०.८ | २६.६ | ५०.० | + १३.४ |
| कुल | ८१५.४ | ८५०.० | १११० | +२६०.७ |

# चौथी योजना में सरकारी और निजी क्षेत्र

(करोड़ रुपयों में)

| | सरकारी क्षेत्र | निजी क्षेत्र |
|---|---|---|
| कृषि | २,३७२ | ७०० |
| सिंचाई | ९२४ | — |
| शक्ति | १८२८ | ५० |
| लघु उद्योग | ३९५ | ४०० |
| स्थाई उद्योग | २८६६ | २,४०० |
| यातायात एवं संचार | २७६८ | ६५० |
| शिक्षा | १२६० | १०० |
| वैज्ञानिक अनुसंधान | १४८ | — |
| स्वास्थ्य | ५७८ | — |
| जल पूर्ति | ३७१ | — |
| गृह | २९७ | १,४७० |
| पिछड़े वर्ग का कल्याण | १८८ | — |
| समाज कल्याण | ५४ | १० |
| तकनीकी प्रशिक्षण और श्रम कल्याण | १४३ | — |
| जन सहकार | १२ | — |
| ग्रामीण कार्य, पहाड़ी क्षेत्र और विशेष क्षेत्र | १४८ | — |
| पुर्नव्यय व स्थापना | ६९ | — |
| विविध | ७९ | — |
| खोज | २९६ | १,२०० |

## देश में छोटी बचत

निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होता है कि पिछले ५ वर्षों में विभिन्न नैशनल सैविंग सर्टीफिकेट, पोस्ट आफिस, टाइम डिपोजिट वार्षिकी जमा आदि से कितना रुपया जमा हुआ और वर्ष के अन्त में कितना सरकार के पास बचा।

| वर्ष | प्राप्ति | लाख रुपयों में वर्ष के अन्त में |
|---|---|---|
| १९६०-६१ | ३३८,०६ | ७८६.०० |
| १९६१-६२ | ३५०.९४ | ७३.२१ |
| १९६२-६३ | ३६४.२१ | ९४८.३२ |
| १९६३-६४ | ४०३.४४ | १,०७४.९८ |
| १९६४-६५ | ४२२.९३ | १,१९१,६८ |
| मई, ६५ | — | १,१९६.५७ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अर्थ वृत्त चयन

## बैल बनाम ऊंट

कानपुर में 'अधिक अन्न उपजाओ' योजना के अंतर्गत बैलों के स्थान पर ऊंट द्वारा हल चलाने का प्रयोग आरम्भ कर दिया गया है। बताया जाता है कि बैलों की भीषण महंगी तथा चारे की कमी के कारण ही यह प्रयोग किया गया है। बैलों की कोई भी जोड़ी १ हजार रुपये से कम में नहीं मिलती। बैलों की सानी और चारे पर भी काफी खर्च आता है, जबकि ऊंट ५ से ८ सौ रुपये तक में मिल जाता है। ऊंट के खाने पर भी अधिक व्यय नहीं आता। ऊंट का प्रयोग तहसील औरैया के एक ग्राम में किया गया और वह प्रयोग सफल रहा। अब अन्य गांवों में भी ऊंट द्वारा खेती के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है।

## पूर्वी पाकिस्तान का आर्थिक शोषण

यद्यपि पूर्वी पाकिस्तान औद्योगिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा हुआ है, पर पाकिस्तान सरकार वहां पश्चिम पाकिस्तान की अपेक्षा बहुत कम पूंजी लगाती है। पाकिस्तान के सरकारी औद्योगिक ऋण और नियोजन निगम ने जो कुल १ अरब २५ करोड़ रु० की पूंजी लगाई है, उसमें से केवल १५ करोड़ रु० ही पूर्वी पाकिस्तान में लगाया है और शेष १ अरब १० करोड़ रु० पश्चिमी पाकिस्तान में लगाया गया है।

ढाका से प्रकाशित बंगला दैनिक "आजाद" में प्रकाशित एक पत्र में श्री अब्दुल कासिम ने बताया है कि पाकिस्तान के बहुत से बैंक और बीमा-कम्पनियां, जिनमें से अधिकांश के मुख्यालय पश्चिमी पाकिस्तान में हैं, केवल पश्चिम पाकिस्तान के उद्योगों के लिए ही ऋण देती हैं, यद्यपि पूर्वी पाकिस्तान से इन बैंकों और कम्पनियों को बहुत आय होती है। पाकिस्तान के स्टेट बैंक और नेशनल बैंक से भी पूर्वी पाकिस्तान के उद्योगपतियों को वे सुविधाएं नहीं मिलतीं, जो कराची के उद्योगपतियों को दी जाती हैं।

पूर्वी पाकिस्तान का ९५ प्रतिशत वाणिज्य उद्योग पश्चिमी पाकिस्तान के हाथ में है। "हम पश्चिमी पाकिस्तान के इन उद्योगपतियों को अपना भाई नहीं मान सकते, क्योंकि वे पूर्वी पाकिस्तान के लोगों को अपना भाई या दोस्त मानने को तैयार नहीं हैं।

## समुद्र की लहरों से बिजली

अमरीका की हैमिल्टन वाच कम्पनी ने समुद्र की लहरों से बिजली बनाने की मशीन बनायी है। यह उसी सिद्धान्त पर बनी है, जिस पर बिना चाबी भरने की कलाई घड़ियां बनायी जाती हैं। इन घड़ियों में कलाई के हिलने-डुलने और गुरुत्वाकर्षण से खुद चाबी भरती रहती है।

यह मशीन बहुत ही छोटी है और इसका वजन १ पौंड से भी कम है। इसका उपयोग छोटे-मोटे अनेक कामों में लिया जा सकता है।

## कूड़े-करकट से खाद

आस्ट्रेलिया के आकलैण्ड शहर में कूड़े-करकट से खाद बनाने का एक बड़ा सरल तरीका इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके लिए विशेष मशीन बनायी गयी है, जिसमें दुहरी दीवार वाले इस्पात के बड़े-बड़े ढोल लगे हैं। ये ढोल मशीन में आड़े रहते हैं और बराबर घूमते रहते हैं। कूड़ा ढोने वाली गाड़ियां मशीन में कूड़ा लाकर डाल देती हैं। कूड़े से लोहे की कतरन और टुकड़े अलग करने के लिए मशीन में चुम्बक लगे रहते हैं। जब लोहे की कतरन आदि अलग हो जाती हैं, तभी कूड़ा ढोलों में पहुंचाया जाता है। फिर इसमें पानी मिलाया जाता है। ढोलों में हवा और पानी निश्चित मात्रा में पहुँचाये जाते हैं।

ढोलों के निरन्तर घूमते रहने और हवा के वायु जीवी (सरोबिक) बैक्टीरिया या जीवाणु के कारण कूड़ा बड़ी तेजी से सड़ने गलने लगता है।

ढोलों में बारीक जालियां भी लगी रहती हैं। जो कूड़ा गल नहीं पाता और जालियों से छनकर नहीं निकल पाता, उसे एक अलग कूड़े से कंकड़-पत्थर और कांच के टुकड़े अलग करने का भी इन्तजाम रहता है। ढोल के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सिरे से दूसरे सिरे तक कूड़ा पांच दिन में पहुँचता है। पिसा कूड़ा एक अलग कुठीले में इकट्ठा होता रहता है। यही पिसा कूड़ा खाद है।

## भारत में सूती वस्त्र

इस समय सूती वस्त्र उद्योग में ५३७ मिलें हैं, जिनमें से २४१ मिली-जुली तथा २४६ केवल कताई मिलें हैं। इनकी कुल स्थापित क्षमता १५३.६ लाख तकुए और २.०४ लाख करघे हैं। कताई मिलों में ३८.६ लाख तकुए हैं, जबकि बाकी क्षमता अर्थात् ११५.० लाख तकुए और २.०४ लाख करघों की बुनाई क्षमता मिली-जुली मिलों में है।

पिछले पांच वर्षों में लगभग २० लाख तकुओं की वृद्धि हुई है। १९६० में इनकी संख्या १३५.० लाख थी, जो कि १९६४ में १५४.० लाख तक पहुँच गई और इस प्रकार इनकी संख्या .२५ लाख प्रति मास की दर से बढ़ रही है।

मिल तथा विकेन्द्रित क्षेत्रों में ८५.०४ लाख मीटर (९३,००० लाख गज) वस्त्र और १०,२१० लाख किलो ग्राम (२२,५०० लाख पौंड), सूत के उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लगभग ७० लाख तकुए और ९५०० करघों के लिये लायसेंस दिये जा चुके हैं।

१९६४ में अनुमानतः ४६,५६० लाख मीटर (५०, ९१० लाख गज) वस्त्र तथा ९६०० लाख किलो ग्राम (२१,१६० लाख पौंड) सूत का उत्पादन हुआ, जबकि १९६३ में ४४,२३० लाख मीटर (४८, ३७० लाख गज) वस्त्र और ८९३० लाख कि० ग्राम (१९,६८० लाख पौंड) सूत का उत्पादन हुआ था।

१९६४ में निर्यात किए गये मिल में बने तथा हथ-करघा वस्त्रों का परिमाण ५५३० लाख मीटर था, जिसका मूल्य ५८३४ लाख रु० था। इसमें २१८ लाख रु० मूल्य के निर्यात किये गये सिले-सिलाये वस्त्र शामिल नहीं हैं।

## सरकारी दृष्टिकोण में भ्रान्तियां

श्री मसानी के अनुसार, आयोजन के प्रति सरकारी दृष्टिकोण में चार भ्रान्तियां हैं—(१) कि देश के पास जितनी धनराशि है उससे ज्यादा खर्च कर सकता है। (२) कि भारत के बुनियादी उद्योग इस्पात और मशीन निर्माण है, खेती नहीं। (३) कि हर अगली योजना में यह अपेक्षित था कि राज्य ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करे और जनता कम से कम और (४) यह कि योजना आयोग तथा सरकार को यह आदेश देने का अधिकार कि किस चीज का उत्पादन होना चाहिए और किस चीज का नहीं तथा उत्पादित माल कितने मूल्य पर बेचा जाना चाहिए।

## मिट्टी के तेल से कार

जापान में एक ऐसा आविष्कार किया गया है, जिससे मोटर कार भी कैरोसिन आयल से चल सकेगी। इसमें एक ऐसी मशीन लगाई जायेगी, जो १६० डिग्री सैन्टीग्रेड के ताप पर मिट्टी के तेल, वाष्प के रूप में बदल सकेगी। अब तक ६० गाड़ियों में यह मशीन लगाई गई है। ये गाड़ियां सन्तोषजनक काम कर रही हैं। इस मशीन की कीमत भी बहुत अधिक नहीं है, केवल ६५५० रु० है।

---

(पृष्ठ ५४७ का शेष)

लिये विख्यात है, स्वेयोमोक उत्पादक सहकार है। इसमें कुल ३५७ सदस्य शिल्पकार और प्रबन्धकर्त्ता हैं। सब सदस्य सम्मिलित रूप में सहकार की सम्पत्ति के स्वामी हैं और उसकी आय तथा उत्तरदायित्व के भागीदार हैं।

इस सहकार के पास जून १९६३ में २ लाख ६८ हजार क्राउन से कुछ अधिक का क्रेडिट बैलेन्स था। जिसमें से ४५ प्रतिशत पूंजी विनियोजन, ३५ प्रतिशत सुधार एवं विकास, २० प्रतिशत सदस्यों के अवकाश, चिकित्सा, बोनस आदि हितलाभ, ४ प्रतिशत केन्द्रीय सहकारी संघ और १८ प्रतिशत सक्रिय सदस्यों में वितरण के लिये था।

सहकार के तीन विभाग हैं। एक कपड़े बनाने वाला, दूसरा सजावट और उपहार की चीजें बनाने वाला। इसमें २२ काम करने वाले और उनके मैनेजर श्री जार्डा जाजल अन्धे हैं। वे एक बक्स से मोटर के विभिन्न पुर्जों को हाथ से टटोल कर छांट कर एक कार के इंजिन के लिये आवश्यक सैट पूरा करके उसे एक दूसरे बक्स में रखते हैं।

उपयोगी अंग—यह चैकोस्लोवाकिया के सहकारों के मानवीय पक्ष का दिग्दर्शन है। यहां प्रश्न कोई पैसे का नहीं था क्योंकि सब सदस्यों को उनकी विकलांगता की मात्रा के अनुसार असमर्थता पेंशन मिलती है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**हमारी आर्थिक समस्याएं**—ले० श्री जी० सी० झांगीर। प्रकाशक—नेशनल पब्लिकेशन्स २०/१४ शक्ति-नगर, दिल्ली-७ । आकार—२०×२६/८, पृष्ठ संख्या ३३०। मूल्य १२) सजिल्द ।

गत वर्ष सम्पदा ने आर्थिक समस्या-अंक प्रकाशित किया था, जिसमें देश की कुछ आर्थिक समस्याओं का संक्षेप से परिचय दिया गया था । प्रस्तुत ग्रन्थ प्रायः सभी आर्थिक समस्याओं का विशद विवेचन प्रस्तुत करता है। देश की आर्थिक समस्याओं को हम जब तक भली-भांति न समझ लें, आर्थिक विकास की दिशा में प्रगति नहीं कर सकते । प्रस्तुत पुस्तक ३९-४० अध्यायों में विभक्त है। इन अध्यायों में जनसंख्या, कृषि, उद्योग, व्यापार, वित्त, रोजगार और विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं आदि की समस्याओं का विद्वान लेखक ने विवेचन करने का प्रयत्न किया है। इन शीर्षकों के अन्तर्गत बीसियों अन्य समस्याओं का भी समावेश हो जाता है, जैसे सिंचाई, भूमिसुधार, खाद्यसमस्या, निजी बनाम सरकारी क्षेत्र, उद्योगों का केन्द्रीयकरण या विकेन्द्रीकरण, खेती का आकार, मूल्य नीति आदि। इन सबकी भी लेखक ने चर्चा की है।

किन्तु इस पुस्तक को समस्याओं की गणना मात्र समझना भूल होगी। वस्तुत. यह आर्थिक प्रवृत्तियों और गतिविधियों का विस्तृत विवरण भी है। इस कारण यह पुस्तक भारतीय अर्थशास्त्र के लिए बहुत सूचनात्मक और ज्ञानवर्धक बन गई है। विभिन्न उद्योगों, कृषि के विकास, पंचवर्षीय योजना, वित्तीय संस्थानों आदि का संक्षिप्त इतिहास इस ग्रन्थ को बहुत उपयोगी बना देता है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में उपसंहार की शैली विषय को हृदयंगम करने में अधिक सहायक होगी । लेखक की विशेषता यह है कि उसने किसी विवादग्रस्त विषय पर अपने विचार पाठकों पर चेष्टा नहीं की, बल्कि एक प्रश्न के पक्ष और विपक्ष में दिये जाने वाले तथ्यों और युक्तियों का भी उल्लेख किया है, जिससे पाठक प्रश्न के विविध पहलुओं पर विचार करके स्वतंत्र चिन्तन कर सकें। यद्यपि कहीं-कहीं ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक सरकार की प्रायः सभी नीतियों का समर्थक है।

लेखक की भाषा सरल और प्रतिपादन शैली सुन्दर है। लेखक अर्थशास्त्र के अनुभवी अध्यापक हैं। इसलिए अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों की योग्यता और आवश्यकता को भलीभांति समझते हैं। स्वभावतः उनकी लेखन शैली सरल और सुबोध हो गई है।

किन्तु हम लेखक से दो एक अनुरोध भी करना चाहते हैं। साधारणतः हमारे अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रमों में सर्वोदय अर्थशास्त्र की नितान्त उपेक्षा की जाती है। प्रस्तुत पुस्तक भी इसका अपवाद नहीं है। आचार्य विनोबा के भूदान आंदोलन के सम्बन्ध में लेखक का मौन इसका उदाहरण है। कुटीर एवं लघु उद्योग के प्रकरण में भी लेखक की तटस्थता और उदासीनता स्पष्ट होती है। भूमि के आकार के सम्बन्ध में आज जिस नई प्रवृत्ति का संकेत मिलने लगा है, उसका भी उल्लेख यदि लेखक कर देते तो अधिक अच्छा होता । आज यह अनुभव किया जाने लगा है कि हम सामाजिक न्याय को इतना महत्त्व देने लगे हैं कि उत्पादन वृद्धि का मुख्य उद्देश्य उपेक्षित हो गया है। इसलिए जहां कृषि भूमि को ज्वाइंट कम्पनी में वितरित करने का विचार किया जाने लगा है, वहां नियंत्रणों की समाप्ति और अनेक उद्योगों में निजी क्षेत्र को फिर स्थान देने की प्रक्रिया के संकेत भी सामने आने लगे हैं। श्रमिक संगठनों की आन्तरिक समस्याओं पर भी आज विचार करना आवश्यक है, जिससे श्रमिक देश के निर्माण में एक मत होकर पूर्ण योगदान दे सकें। आशा है, लेखक पुस्तक के आगामी संस्करण में इन सुझावों पर भी विचार करेंगे।

विदेशी व्यापार और विशेषकर निर्यात को प्रोत्साहन देने की ओर हम आवश्यकता से अधिक रुचि लेने लगे हैं। लेखक ने ठीक ही बताया है कि हम विश्व के देशों पर बहुत अधिक निर्भर नहीं हैं। वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात देश के कुल उत्पाद का ७ प्रतिशत से अधिक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है। वस्तुतः निर्यात पर बहुत अधिक बल देने से अन्य अनेक आवश्यकताएं उपेक्षित सी रह जाती हैं। सहकारी खेती के सम्बन्ध में लेखक का सन्तुलित दृष्टिकोण प्रशंसनीय है। हमारी भूमि सुधार नीति की प्रगति क्यों नहीं हो रही, इस सम्बन्ध में लेखक ने कार्यान्वयन की त्रुटि की ओर ध्यान खींचा है। इसी तरह अन्य अनेक स्थानों पर भी लेखक समस्याओं के मूल तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। —कृष्ण

**सरदार भगतसिंह**—(महाकाव्य) ले०—श्री कृष्ण सरल। प्रकाशक : जनकल्याण प्रकाशन, गोपाल भवन, माधवनगर उज्जैन। मूल्य : लोकप्रिय संस्करण ६)। ग्रन्थालय संस्करण १५.०० रु०, पृष्ठ सं० ६२०।

वीर पूजा किसी भी जाति के जीवन का चिन्ह होती है। वीर भगतसिंह का भी नाम मूर्धन्य वीरों में गिना जाता है। कवि श्री सरल ने यह महाकाव्य उस महान वीर की स्मृति में लिखा है। इस काव्य की प्रमुख विशेषता यह है कि लेखक ने घर बैठे-बैठे अपनी कल्पना का ही प्रयोग नहीं किया, बल्कि वीर भगतसिंह के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने अनवरत कठोर परिश्रम किया है। भगतसिंह परिवार के सदस्यों, सहपाठियों, सम्बन्धियों और सहकारियों से भगतसिंह के बचपन, विद्यार्थी जीवन और क्रांतिकारी जीवन तथा जीवन की अन्य घटनायें प्राप्त की हैं। चरित्र नायक के जीवन के दृष्टिकोण को समझने के लिए उस सभी साहित्य को पढ़ने की कोशिश की गई है, जिसने भगतसिंह के जीवन पर प्रभाव डाला था। उस हुतात्मा के कार्य क्षेत्रों का भी घूम-घूम कर निरीक्षण किया है। सम्भवतः इतने कठोर परिश्रम, गहरी आत्मीयता, श्रद्धा और भक्ति के साथ लिखा गया यह महाकाव्य उत्कृष्ट महाकाव्य बन पाया है।

लेखक ने इस काव्य को कल्पना-प्रसूत काव्य बनाने की अपेक्षा ऐतिहासिक काव्य ही रखा है। इस बन्धन में रहकर भी कवि ने काव्य की विशेषताओं को सुरक्षित करने का प्रयत्न किया है। अनेक स्थल बड़े ही सुन्दर और हृदय ग्राही बन पड़े हैं। भगतसिंह की मां उसकी समाधि पर बैठकर कहती है :—

"धूम धरती पर मचा, विद्रोह का वरदान,
यहां मेरे दूध का सोया अजस्र उफान।
सो गया उल्लास मेरा, सो गया आमोद,
एक मां की गोद तज कर, दूसरी की गोद।"

स्थान-स्थान पर वीर काव्योचित वीर रस प्रवाही पद्य पाठक को हर्षित और रोमांचित करती है। चन्द्रशेखर आजाद तथा अन्य अनेक क्रांतिकारी वीरों का भी परिचय देने से यह महाकाव्य अधिक पूर्ण हो गया है। स्थल-स्थल पर संवाद या नाटकीय दृश्य इस महाकाव्य को अधिक रोचक बना देते हैं। सती रामरखी का बलिदान आजाद के बलिदान की कथाएं स्वयं बहुत मर्मस्पर्शी हैं। त्रिवेणी संगम के पवित्र स्थान पर प्रयाग में आजाद के शरीर से प्रवाहित होने वाली रक्त धारा में कवि ने विलुप्त सरस्वती के दर्शन किए हैं—

वे प्रखर रक्त धारायें जो छूटीं उसकी,
सचमुच ही उस दिन सरस्वती के दर्शन थे।
दर्शन देकर वह सरस्वती फिर थी विलीन,
उस शुभ दर्शन से सब ही के पावन मन में।

क्रांतिकारिणी दुर्गा के प्रसंग में निम्नलिखित पंक्तियां देखिये :—

है मान दण्ड अब तक न बना कोई जग में
जो नाप सके नारी के मन की ऊंचाई
सब छान लिये दुनिया के सागर मानव ने
पर रही अधूरी नारी उर की गहराई।

क्रांति का घोष कहता है :—

इतिहास बदल जाते मेरी हुँकृति से,
जुल्मों के सब अरमान निकल जाते हैं।
मेरी प्रचण्डता की परछांई तक से,
अन्यायों के हौंसले पिघल जाते हैं।

भगतसिंह का विचार मन्थन देखिये :—

है एक ओर केवल मेरी अपनी मां
दूसरी ओर हम सबकी भारत माता।
किसको अपना लूं और किसे मैं छोड़ूं
मेरे मन को है यह विचार तड़पाता॥

अनेक क्रांतिकारी वीरों के चित्र और परिचय देने से काव्य की उपयोगिता और रोचकता और भी बढ़ गई है। —ईश्वर देवी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें अपने सारे भेद-भाव भूल कर, एक होकर, संकट का मुकाबला करना है"

— लाल बहादुर शास्त्री

- सब भाई-भाई की तरह रहें;
- अपने पड़ोसी के जान-माल और धर्म की रक्षा करें;
- न अफ़वाह सुनें, न फैलायें.

**विजय अवश्य हमारी होगी**

डी ए ६५/३०७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ देश की : कुछ विदेश की

भारत और पाकिस्तान में यद्यपि युद्ध विराम हो गया है, तथापि पूर्णतः शांति स्थापित नहीं हुई। पाकिस्तान निरन्तर युद्ध विराम रेखा का उल्लंघन कर रहा है। सीमावर्ती क्षेत्रों में फौजियों की घुसपैठ जारी है। गोलाबारी, आग, लूटमार और हत्या के मामले रोज सुनाई देते हैं। राष्ट्रसंघ के प्रेक्षकों को इस की शिकायतें प्रतिदिन की जा रही हैं, किन्तु अब तक राष्ट्रसंघ के अधिकारी कुछ कर नहीं पा रहे हैं। भारत के प्रशासक, जनता और सैनिक अधिकारी सभी यह अनुभव कर रहे हैं कि युद्ध समाप्त नहीं हुआ, किसी समय भी पाकिस्तान आक्रमण कर सकता है और फिर युद्ध क्षेत्र में भयंकर अग्नि भड़क सकती है।

अब वस्तुतः कूटनीतिक क्षेत्र में बहुत सरगर्मी आ गई है। पाकिस्तान राष्ट्रसंघ में काश्मीर के प्रश्न पर अपना पक्ष जोरों से उपस्थित कर रहा है। उसे अमेरिका और ब्रिटेन की सहानुभूति का विश्वास है, किन्तु भारत भी सजग है। उसने काश्मीर के प्रश्न पर चार राष्ट्रों की उपसमिति का प्रस्ताव ठुकरा दिया है। भारत सरकार का यह मत है कि काश्मीर का प्रश्न विवादग्रस्त नहीं है, वह भारत का अभिन्न अंग है और भारत अपने सार्वभौम अधिकार में किसी का हस्तक्षेप सहन करने को तय्यार नहीं है।

अमेरिका और विशेषकर ब्रिटेन के पाकिस्तान समर्थक रुख पर जहां तीव्र असन्तोष प्रकट किया जा रहा है, वहां भारत के राष्ट्रपति पूर्वी योरुप के दौरे पर जाकर युगोस्लेविया, चैकोस्लेवेकिया और रुमानिया की सरकारों से सहयोग प्राप्त कर रहे हैं। इन तीनों देशों ने काश्मीर पर भारत के दृष्टिकोण का ही समर्थन नहीं किया, अपितु भारत को शस्त्र तथा विभिन्न उद्योगों के निर्माण में सहायता देने का भी आश्वासन दिया है। रूस पहले से ही भारतीय दृष्टिकोण का प्रबल समर्थक है। श्रीमती विजयलक्ष्मी इसी सम्बन्ध में फ्रांस हो आई हैं। वहां वे फ्रांस के राष्ट्रपति डिगाल से मिली हैं। श्रीमती पंडित ने अपनी यात्रा को सफल बताया है। इधर श्री कृष्ण मैनन श्री नासिर से मिलने मिश्र में गये थे। वस्तुतः कूटनितिक चर्चाओं का युद्ध इस समय तीव्र गति पर है। श्री शास्त्री के अमेरीका जाने की भी सम्भावना की जा रही है।

युद्ध विराम के बाद सैनिक अधिकारी यह अनुमान लगाने में लगे हैं कि हमने इस युद्ध में कितना प्राप्त किया है और कितना खोया है। एक अनुमान के अनुसार हमने पाकिस्तान की ४७० वर्ग मील भूमि पर अधिकार कर लिया है। इसके अतिरिक्त काश्मीर की उस २७० वर्ग मील भूमि को पाकिस्तान के अधिकार से मुक्त किया है, जो आजाद काश्मीर के नाम से पाकिस्तान ने १८ वर्ष पूर्व अपने अधिकार में कर ली थी। इसके विपरीत पाकिस्तान ने भी भारत की २१० वर्गमील पर अधिकार किया है। यह भूमि छम्ब और खेमकरण के क्षेत्र में है। भारत इस बात पर बल दे रहा है कि पाकिस्तान अपने सैनिकों के साथ उन घुसपैठियों को भी निकालने की जिम्मेदारी ले जो बिना वर्दी के हमारी भूमि में घुस आए थे, तभी हम भी अपनी सेनाओं को पाकिस्तान से वापस बुलाएंगे। पाकिस्तान अधिकृत काश्मीर को भारत अपना ही भाग मानता है। वहां से हटने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

पिछले पखवाड़े की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना इंडोनेशिया में गृहयुद्ध है। जब इंडोनेशिया के कृतघ्न प्रशासक भारत के उपकारों को भूल कर पाकिस्तान का साथ देने की घोषणा कर रहे थे, तभी वहां कम्यूनिस्टों ने बहुत सम्भवतः चीन के संकेत पर अपनी सरकार से विद्रोह कर दिया। राष्ट्रपति सुकर्ण उन दिनों बीमार थे और चीनी डाक्टरों की देखरेख में थे। ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनकी बिगड़ती हुई हालत को देखकर इंडोनेशिया में कम्यूनिस्ट सरकार स्थापित करने का अनुकूल अवसर समझा। अनेक सैनिक अधिकारी, कुछ कम्यूनिस्ट समर्थक मंत्री और कम्यूनिस्ट पार्टी ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया। काफी युद्ध के बाद वहां सरकारी सेनाओं ने स्थिति पर काबू लिया। अब वहां कम्यूनिस्ट नेता गिरफ्तार किए जा रहे हैं, कम्यूनिस्ट पत्र बन्द किए जा रहे हैं। देश में लगभग शांति स्थापित हो चुकी है यद्यपि कहीं-कहीं अब भी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी मोटी लड़ाइयां जारी हैं । इस तरह चीन का बड़ा भारी षडयन्त्र विफल हो गया है ।

चीन ने भारत को भी पाकिस्तान युद्ध में उलझा देख कर उसकी सहायता के लिए भारत को धमकी दी थी, किन्तु स्वयं ही उसने यह धमकी वापस ले ली । इसका तथा इंडोनेशिया में चीन की विफलता का प्रभाव चीन पर बहुत बुरा पड़ा है । अफ्रेशियाई देशों में इसकी धाक कम हो गई है और उसकी साख जाती रही है, किन्तु अब भी वह सिक्कम और तिब्बत की सीमाओं पर अपनी सेनाओं की कारवाइयां तेज कर रहा है । चीन के विदेश मंत्री ने अभी घोषणा की है कि चीन अणुबम का तीसरा परीक्षण शीघ्र ही करेगा । वस्तुतः चीन के आक्रमण की किसी दिन भी सम्भावना की जा सकती है ।

## इस्को से समझौता

इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कं० ने सरकार के साथ एक समझौता कर लिया है । इसके अनुसार कम्पनी सरकार को मार्च १९७२ तक लिया गया ऋण व ब्याज चुका देगी । १ अक्तूबर ६५ तक वह ५.१८ करोड़ रु० तक सरकार को दे देने वाली थी । शेष ५ करोड़ रु० का मूल धन आसानी ६-७ वर्षों में दे देगी । सरकार ने भी ३ वर्ष का (लड़ाई ५८ से मार्च १९६१) सूद न लेने का आश्वासन दिया है । शेष ब्याज की रकम १.७ करोड़ रु० बैठती है । वह भी शनैः शनैः ७ वर्षों में चुका दी जायगी । आज से १०-१२ वर्ष पूर्व सरकार ने इस कम्पनी को १०.१८ करोड़ रु० का विशेष ऋण दिया था । कम्पनी बार बार तकाजे के बावजूद इसे चुका नहीं पा रही थी । इसलिए सरकार ने कानून के द्वारा ऋण की मात्रा के शेयर ले लेने की धमकी दी थी । अब सरकार यह कदम नहीं उठायेगी ।

—भारत सरकार ने कोयले की खानों के बे परामर्श स्वीकार कर लिए हैं, जिनसे १ करोड़ टन कोकिंग कोल बनाया जा सकता है । तीसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त-तक एक करोड़ ६५ लाख कोकिंग कोल की मांग थी किन्तु अब १९६५-६६ में १ करोड़ ७५ टन के उत्पादन की उम्मीद है । इसमें से ३२.५ लाख टन सरकारी, शेष निजी क्षेत्र में कोयला निकाला गया है । चौथी पंचवर्षीय योजना में सरकारी क्षेत्र को ४६.२ लाख टन सरकारी क्षेत्र में और ७२.८ निजी क्षेत्र में कोकिंग कोल के उत्पादन की आशा की गई है ।

तीसरी योजना के अंतर्गत निजी क्षेत्र से ४.३१ करोड़ टन कोकिंग कोल और सरकारी क्षेत्र से २.४६ करोड़ टन के उत्पादन की आशा है ।

## ब्रिटेन द्वारा भारत को १८.६ करोड़ रु० ऋण

ब्रिटिश हाई कमिश्नर, श्री जान फ्रीमैन को ब्रिटिश सरकार का निर्देश प्राप्त हुआ है कि वे कुल १,४०,००,००० पौण्ड (१८.६ करोड़ रुपयों) के ऋण देने के बारे में भारत सरकार से वार्तायें सम्पूर्ण कर लें । ब्रिटेन द्वारा किसी भी देश को ब्याजमुक्त ऋण देने का यह प्रथम अवसर होगा । इनमें से पहला १,००,००,००० पौण्डों (१३.३ करोड़ रुपयों) का "भुगतान संतुलन" ऋण होगा, जो भारत की लचीली आयात नीति कायम रखने में सहायक सिद्ध होगा । दूसरा है ४०,००,००० पौण्डों (५.३ करोड़ रुपयों) का "किपिंग" ऋण, जिसका मुख्य लक्ष्य यह है कि निजी क्षेत्र में भारतीय उद्योग के लिये अत्यावश्यक सम्भरण के प्रवाह को बनावे रखा जा सके ।

वर्तमान ऋणों को मिलाकर ब्रिटिश सरकार ने भारत को १९५८ से अब तक लगभग २५,००,००,००० पौण्डों (३३० करोड़ रुपयों) की सहायता प्रदान की है ।

ऋण की सहायता प्रशंसनीय है, किन्तु क्या इससे उस हानि की भरपाई हो जायगी, जो पाकिस्तान के निरंतर समर्थन व भारत के विरोध के कारण हुई है ।

—हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन तथा रूस के उद्योग विभाग में एक समझौता हो गया है । इसके अनुसार रूस ५००० टन फोर्ज स्टील, कास्ट आयरन, मशीन-रोल भारत में भेजेगा ।

—ब्रिटिश मजदूर दल ने बहुमत से उग्र पक्ष का यह प्रस्ताव न मानने का निश्चय किया है कि मजदूर सरकार ब्रिटेन में लोह उद्योग का राष्ट्रीयकरण शीघ्र कर ले ।

—इण्डस्ट्रियल फाइनैंस कारपोरेशन फिलहाल रक्षा-सम्बन्धी उद्योगों को प्राथमिकता देने की योजना बना रहा है । मशीन टूल, पैट्रो कैमिकल, रासायनिक खाद, सिमैण्ट, अलोह धात्वीय उद्योग रक्षा के लिए आवश्यक उद्योग माने गये हैं ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—सरकार ने संकटग्रस्त सूती मिलों को, जिनके गोदाम ज्यादा भर गये हैं, बैंक से ऋण लेने की सुविधा देने का निश्चय किया है।

—भारत सरकार ने जापान की एक कम्पनी को करीब १॥ करोड़ रुपये के २२०० ट्रक बनाने का आर्डर दिया है। इनमें से १७०० ट्रक फौजी गाड़ियां होंगी, जिनमें हथियार ले जाये जा सकेंगे और ५०० पैट्रोल गाड़ी के रूप में जीप गाड़ियां होंगी।

—वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय और आर्थिक संकट को देखते हुए भारत सरकार रक्षा ऋण के नाम से एक नया ऋण लेने की सम्भावना पर विचार कर रही है।

—स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन रेयन यार्न के कुल उत्पादन का ३० प्रतिशत निर्यात करने के लिए खरीदने की योजना बना रहा है। किन्तु शायद भारत सरकार इसे मानने से इन्कार कर दे।

---

( पृष्ठ ५४२ का शेष )

में व्यय की गई राशि अर्थात् १६००० करोड़ रु० से कहीं अधिक है। योजना के आकार के बारे में अंतिम निर्णय राष्ट्रीय विकास परिषद करेगी। योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री अशोक मेहता ने बताया कि योजना में कृषि को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जाए जिससे भारत को अनाज के लिए विदेशों पर निर्भर न रहना पड़े।

योजना के आकार को २१५०० करोड़ रु० तक रखने के लिए ३६५० करोड़ रु० प्राप्त करने के लिए नये साधन ढूंढने होंगे। ३००० करोड़ रु० नये करों से प्राप्त किये जाएंगे और ६५० करोड़ रु० प्रशासन व्यय में कमी कर तथा वर्तमान करों की दरों में हेरफेर कर एकत्र किया जायेगा। ४००० करोड़ रु० के बराबर की विदेशी मुद्रा प्राप्त करनी होगी। इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि इस विशालकाय योजना में घाटे की वित्त व्यवस्था को कोई स्थान नहीं होगा।

अक्टूबर १९६५ में राज्य सरकारों से उनके कार्यक्रमों पर बातचीत की जायेगी। नवम्बर १९६५ में राष्ट्रीय विकास परिषद के सामने राज्यों के कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जायेगा। संसद में भी योजना के मसौदे पर विचार होगा, उचित सुझावों को सम्मिलित करके अंतिम रूपरेखा मार्च १९६६ में राष्ट्रीय विकास परिषद के आगे रखी जायेगी। चतुर्थ योजना का प्रारम्भ शायद मार्च १९६६ में होगा। इस प्रकार स्वावलंबी और आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था की स्थिति तो अब दिखाई देने लगी है, किन्तु उस तक पहुँचने के लिए अगले ५ वर्षों में हमें बड़ा कंटकाकीर्ण मार्ग तय करना होगा।

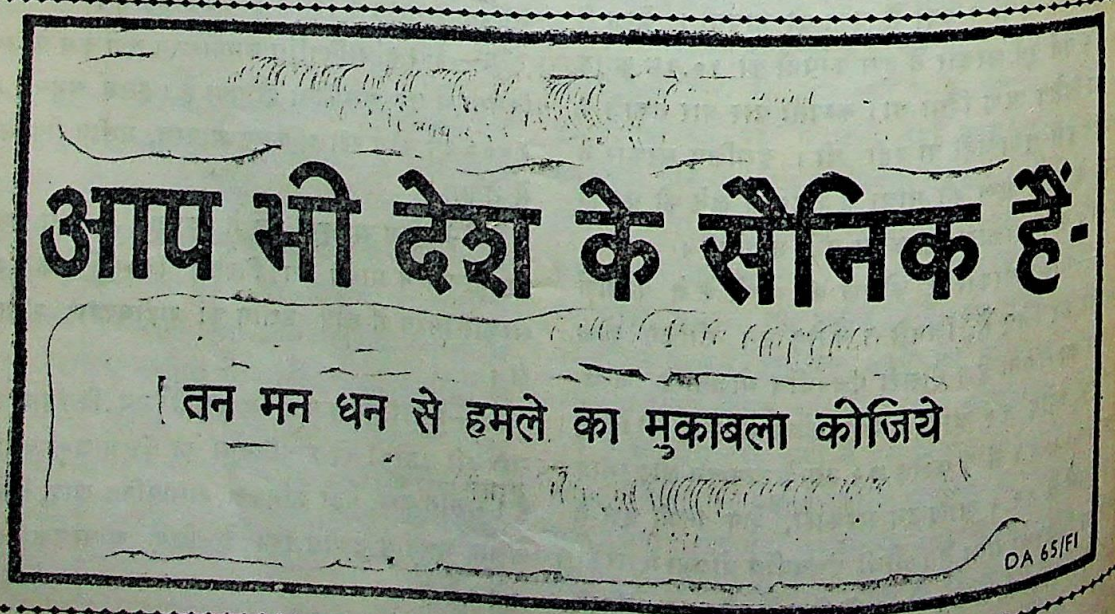




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

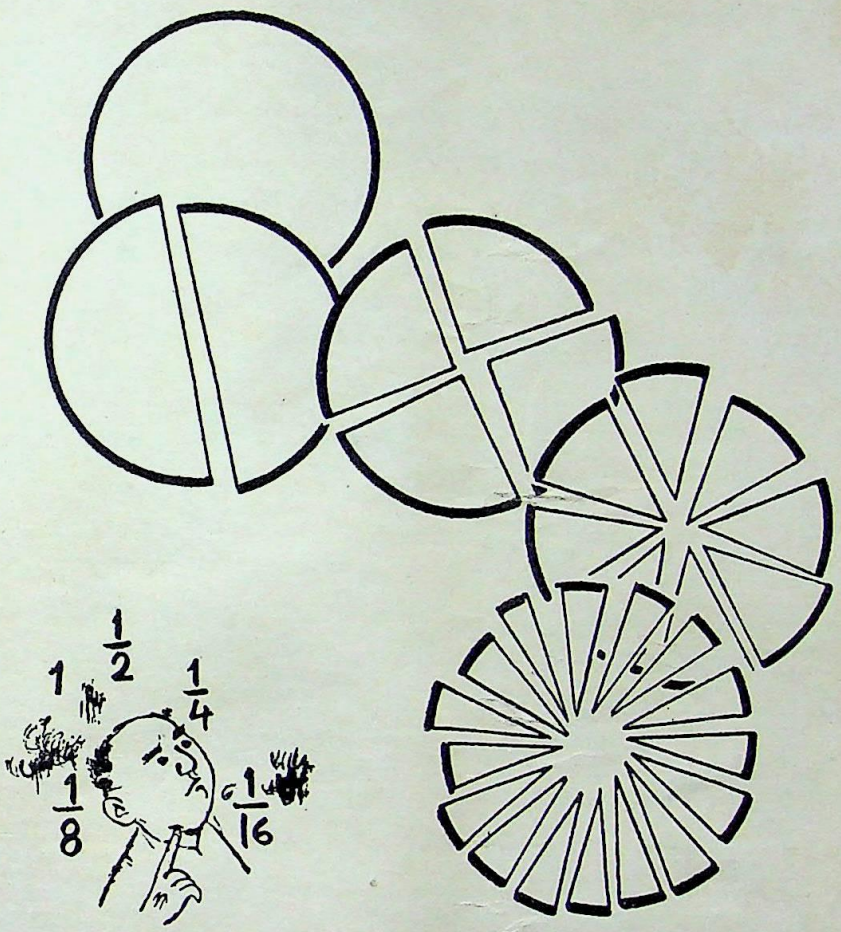


इस प्रकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी जमीन और परिवार के अन्य साधन बंटते चले गये ।

लेकिन, अब धीरे धीरे मिल-जुल कर काम करने का लाभ समझने लगे हैं । आज खेतों और कारखानों में सभी कंधे से कंधा मिला कर उत्पादन बढ़ाने में रत हैं ।

आपसी सहयोग से देश मजबूत होता है ।

डी ए ई ५५/१५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
22 NOV 1965




# आपके लिए वास्तविक लाभ

## डी सी एम के ३८५ रिटेल स्टोरों में से किसी में भी पधारिए

सुन्दर सूती साड़ियां व लुभावने प्रिन्ट

कमीज़ों का कपड़ा सूटों का कपड़ा व ड्रिल - जो पुरुषों के लिये व्यवहारिक रूप में प्रयोग में आते हैं

फैशन पसन्द घरों के लिये आनदार सजावट के कपड़े

रंग - बिरंगे तौलिये - जो शीघ्र ही पानी सोख लेते हैं

लुभावने रंगों में बिछौने की चादरें - आरामदायक व टिकाऊ

गृहणियों के मन-पसन्द टेबल लिनेन

* सारे परिवार के लिए
* सभी की पसन्द के
* सभी घरेलू आवश्यकताओं के लिए
* विशिष्टता एवं टिकाऊपन के लिए

# डी सी एम

कपड़ों की सुन्दरता व मज़बूती का प्रतीक

दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली।

डी सी एम का एक रिटेल स्टोर आपके इलाके में भी है



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२.११.६५

# सम्पदा

## अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

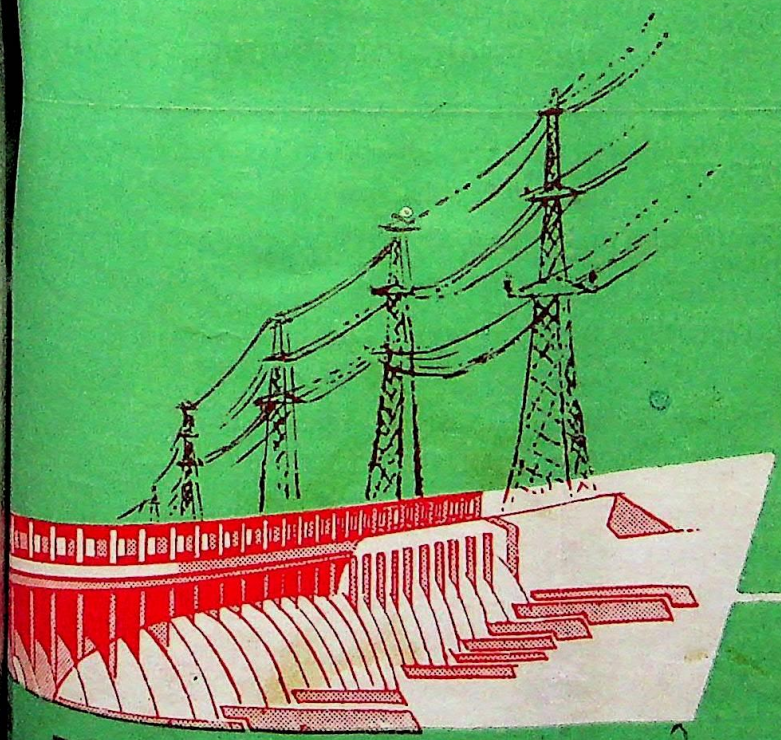

मूल्य : ६.००

का मूल्य : ८० पैसे

अशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


★ क्या आप राजस्थान की नवीनतम आर्थिक प्रगतियों और समस्याओं में कोई रुचि रखते हैं ?

★ क्या आप राजस्थान में आर्थिक प्रश्नों का प्रामाणिक अध्ययन करना चाहते हैं ?

## यदि हां

## तो सम्पदा का अगस्त ६५ में प्रकाशित

# राजस्थान विकास अंक मू० १.७५ रु०

**तुरन्त मंगाकर लाभ उठाइये ।**

राजस्थान के अर्थशास्त्र के अध्यापकों, विद्यार्थियों, राजनीतिज्ञों, सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और व्यापार, उद्योग व कृषि में रुचि लेने वाले सबके लिए विशेष उपयोगी है ।

यदि विश्वास न हो तो सामने के पृष्ठ पर दी गई सम्मतियों को एक बार पढ़ लीजिये ।

---

सम्पदा का राजस्थान विकास अंक

## पढ़ने योग्य लेख : बहुत उपयोगी

**नवभारत टाइम्स अपने ३ अक्टूबर के अंक में लिखता है :—**

समय-समय पर 'सम्पदा' विभिन्न आर्थिक समस्याओं पर विशेषांक प्रकाशित करती रही है। प्रस्तुत अंक राजस्थान की आर्थिक प्रवृत्तियों और समस्याओं पर दिस्तार से प्रकाश डालने के लिए नकाला गया है। इसमें राजस्थान के उद्योग, कृषि, यातायात, व्यापार, सिंचाई, भूमि सुधार आदि के सम्बन्ध में प्रामाणिक विद्वानों के लेख हैं। राजस्थान की आर्थिक समस्याएं क्या हैं और उनका समाधान कैसे हो सकता है, इस सम्बन्ध में श्री हरिश्चन्द्र माथुर और लक्ष्मीमल्ल सिंघवी आदि के लेख पढ़ने योग्य हैं। वित्तीय और आर्थिक समस्याओं पर भी दो-तीन लेख अच्छा प्रकाश डालते हैं। कुछ समय पहले लोकनाथन कमेटी ने राजस्थान का जो आर्थिक सर्वेक्षण किया था, वह राजस्थान के आर्थिक निर्माण के लिए बहुत उपयोगी संकेत देता है। यह सर्वेक्षण भी इसमें दिया गया है। संक्षेप में यह अंक राजस्थान की आर्थिक समस्याओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। सुन्दर आवरण पृष्ठ तथा अनेक चित्रों के कारण अंक सुन्दर बन गया है।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


राजस्थान अंक पर कुछ मत

# सम्पदा

का

# राजस्थान विकास-अंक

नई चेतना : राजस्थान की सामयिक सेवा, राजस्थान की प्रगति का दीप स्तम्भ : उपयोगी और विचार प्रेरक : समस्याओं और प्रगतियों का प्रामाणिक विवरण

"राजस्थान विकास अंक मिला। इस अंक में जो सामग्री प्रस्तुत की गई है, उसमें हमें एक नई चेतना मिलती है। यह अंक निकाल कर आपने राजस्थान की सामयिक सेवा की है। हम इससे चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में लाभ उठा सकते हैं।"

—हरिश्चन्द्र माथुर, संसद सदस्य

"राजस्थान अंक प्राप्त हुआ। राजस्थान पर ऐसी सुन्दर सामग्री देने के लिए आप बधाई के पात्र हैं।"

—सदनलाल वर्मा, दौसा (राजस्थान)

राजस्थान अंक निकालकर आपने 'सम्पदा' के सुन्दर और उपयोगी विशेषांक निकालने की स्वस्थ परम्परा को अब भी कायम रखा है। मेरी दृष्टि में इस अंक से बढ़कर राजस्थान की आर्थिक समस्याओं और प्रगतियों का प्रामाणिक विवरण इससे पहले नहीं मिला। आपने अनेक प्रामाणिक विद्वानों के लेखों का उपयोगी चयन किया है। मुझे विश्वास है कि शिक्षित जनता आपके इस प्रयत्न का आदर करेगी।

—अमरनाथ विद्यालंकार

'सम्पदा' का राजस्थान विकास अंक, राजस्थान की प्रगति का दीप स्तम्भ है। राजस्थान सरकार के सभी प्रयत्नों का मार्ग दर्शन देने वाला है। मेरा यह विश्वास रहा है कि यदि सरकारें अपने प्रकाशन न कर जनता के प्रकाशनों को सहयोग दिया करें, तो उससे सरकार और समाज दोनों का अधिक हित होगा। राजस्थान अंक में सभी समस्याओं पर गंभीर प्रकाश डाला गया है। राजस्थान सरकार को अपने राज्य में इस पत्र के प्रचार के लिए योगदान देना चाहिए।

—जी० एस० पथिक

'सम्पदा' का अंक मिला। बहुत सुन्दर सामग्री से सुसज्जित प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

—विश्वनाथ वामन काले, सम्पादक, कांग्रेस पत्रिका

मैंने 'सम्पदा' के कुछ लेखों को ध्यान से पढ़ा। राजस्थान में किस तरह से आर्थिक, राजनैतिक और औद्योगिक विकास हुआ है, उसके बारे में परिचय मिलता है। लेख सभी उपयोगी और विचार प्रेरक हैं। मैं आपको इस अंक के निकालने के लिए बधाई देता हूँ।

आशा है, आपकी देख-रेख में इस तरह के अंक और प्रदेशों में भी निकाले जावेंगे।

—देवीशंकर तिवाड़ी, जयपुर

राजस्थान विकास अंक मिला। मुझे यह कहने में कोई भी संकोच नहीं है कि राजस्थान राज्य के सम्बन्ध में इतनी प्रकाशित सामग्री एक जगह उपलब्ध करने का आपका प्रयत्न सराहनीय तथा उपयोगी है।

—डा० यज्ञदत्त शर्मा, आगरा

सामग्री की दृष्टि से यह अंक अत्यन्त उपयोगी है। जिज्ञासु पाठक व अर्थ-शास्त्र के विद्यार्थी इससे अवश्य लाभान्वित होंगे। इसके लिए मेरी शुभ कामनाएं।

—हरिश्चन्द्र जोशी, गाजियाबाद।

मूल्य १.७५। दो रुपये मनीआर्डर से भेजकर यह अंक अण्डर पोस्टल सर्टिफिकेट मंगा लें।

**मैनेजर सम्पदा**

**२८/११ शक्तिनगर दिल्ली**


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# सम्पदा का ऊँचा स्तर

आप के द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित इस पत्रिका का स्तर काफी ऊँचा है। विश्वास है, कि इस से हिन्दी भाषी जनता अधिक से अधिक लाभ उठायेगी।

भक्त दर्शन
उपशिक्षा मंत्री भारत सरकार

## विषय-सूची


१. उदारता व परोपकार नहीं, भौतिक स्वार्थ ५६५
२. सम्पादकीय टिप्पणियां ५६७
३. रक्षा, कृषि और विकास-लालबहादुर शास्त्री ५७१
४. पी० एल० ४८० श्री महेश्वर दयाल ५७३
५. राष्ट्रमंडल और भारत श्री सुभास ५७७
६. भारत का महान अर्थशास्त्री कृष्णचन्द्र विद्यालंकार ५७५
७. जनसंख्या व अन्न समस्या—आर. एस. तिवारी ५७६
८. सर्वोदय पृष्ठ ५८३
९. १९६६-६७ में योजना कार्य ५८५
१०. उद्योगों में आत्मनिर्भरता ५८७
११. औद्योगिक विकास की ओर ५८९
१२. ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि ५९०
१३. सांख्यिकी ५९१
१४. संयुक्तराष्ट्र संघ और भारत ५९२
१५. स्फुट आर्थिक विचार ५९३
१६. पाकिस्तान के आक्रमण से क्षति—काश्मीर व पंजाब ५९५-७
१७. राष्ट्र की जीवन रेखा—रेल श्री रामसुभग ५९९
१८. यूगोस्लेविया व भारत निरंजनलाल ६०१
१९. अर्थवृत्त चयन ६०२
२०. नया सामयिक साहित्य ६०४
२१. श्रम-समस्या ६०६
२२. मरुभूमि में पाताल गंगा ६०७
२३. श्रम-समस्या ६०८
२४. कुछ देश की : कुछ विदेश की ६०९-१०


## विवशता में मूल्य वृद्धि

आज के समय में जबकि हरेक चीज लगातार मंहगी होती जा रही हैं, हमें विवश होकर 'सम्पदा' का मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है, किन्तु पाठकों पर कम से कम बोझ पड़े, इस दृष्टि से इसका मूल्य केवल ०.५० पैसा अर्थात् केवल ४ पैसे प्रति मास बढ़ाया गया है। आशा है कि ग्राहक इस मूल्य वृद्धि को सहर्ष स्वीकार करेंगे।

यदि ग्राहक सूचना मिलने पर ६ रु० का मनीआर्डर कर दें, तो उन्हें वी० पी० से होने वाला ०.८० पैसे का खर्च बच जायेगा, जो न उनके काम आता है और न हमारे।

—व्यवस्थापक
सम्पदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : ११
नवम्बर : १९६५

# सप्तपदी



## उदारता या परोपकार नहीं, भौतिक स्वार्थ

भारत-पाकिस्तान के संघर्ष के साथ ही ब्रिटेन और अमेरिका में भारत विरोधी रुख प्रकट होने लगा था। यह भी सम्भावना की जा रही थी कि इन दोनों देशों से भारत को मिलने वाली आर्थिक सहायता बन्द या कम हो जाएगी, किन्तु इस समय भारत ने जिस दृढ़ता का परिचय दिया और जिस तरह इन दोनों देशों की सहायता के बिना भी स्वावलम्बन तथा अन्य यूरोपीय देशों से व्यापार वृद्धि का संकल्प दिखाया, उसका बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा दीखता है। काश्मीर के प्रश्न पर भारत की दृढ़ता और अपने पक्ष को अधिक स्पष्टता और प्रभाव के साथ रखने की कुशलता के कारण भी इन दोनों देशों को अपना रुख बदलने के लिए प्रेरणा दी है। अब यह मालूम हुआ है कि ब्रिटिश सरकार ने अमेरिकन सरकार को यह स्पष्ट कर दिया है कि वह तो अपने उत्पादनों को, चाहे वह सैनिक सामग्री से सम्बन्ध रखते हों या व्यापारिक सामग्री से, भारत को भेजता रहेगा। इसी तरह भारत मित्र संघ में उसने जो सहायता देने का वचन दिया था, उस पर भी वह अमल करेगा।

बहुत सम्भवत: अमेरिका भी अपने भारत के प्रति रुख में नरमी ला रहा है और पी० एल० ४८० के निर्यात के सम्बन्ध में अब अनुकूलता की नीति पुनः बरतेगा। अपनी विचारधारा और नीति में यह परिवर्तन केवल परोपकार की भावना से हुआ हो, यह हम नहीं मान सकते। दोनों देशों की अपनी आन्तरिक आर्थिक समस्यायें भी उन्हें ऐसा करने के लिए विवश कर रही हैं। अमेरिकन सरकार को किसानों के हितों की रक्षा के लिए उनसे करोड़ों रुपयों का अनाज खरीदना पड़ता है। इस अनाज की देख-रेख और संभाल पर अमेरिकन सरकार को प्रतिवर्ष करोड़ों डालर खर्च करने पड़ते हैं। अमेरिका में कृषि उत्पादन प्रभूत मात्रा में होता है। इसलिए किसानों को सन्तुष्ट रखने के लिए अमेरिकन सरकार उनसे प्रतिवर्ष भारी मात्रा में अनाज खरीदने पर विवश होती है। इस अनाज को किसी न किसी तरह खपाना ही चाहिए अन्यथा जला देना पड़ेगा। पी० एल० ४८० के अन्तर्गत समझौते से सरकार का यह प्रयोजन पूर्ण होता है। वह भारत को अपने अतिरिक्त उत्पादन का ७५-८० प्रतिशत अन्न भेजकर अपने भंडार को हल्का करती है। ब्रिटिश सरकार भी भारत से किये जाने वाले निर्यात व्यापार के लाभ को बहुत समय तक छोड़ नहीं सकती। आर्थिक दृष्टि से पाकिस्तान की अपेक्षा भारत ही उसके लिए अधिक हितकारी है। आर्थिक दृष्टि से भी भारतकी साख ही ज्यादा ऊंची है। भारत में ही बड़ा बाजार है। ब्रिटेन और अमेरिका दोनों देशों ने यह अनुभव कर लिया दीखता है कि भारत पर दबाव की धमकियों से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अपने वश में नहीं किया जा सकता। यदि अधिक समय तक भारत पर दबाव डाला गया तो यह भी असम्भव नहीं कि ये दोनों देश भारत के बड़े बाजार से हाथ धो बैठें।

औद्योगिक दृष्टि से भी अमरीका और पश्चिमी यूरोप के देशों को यह ध्यान में रखना चाहिए कि कम्यूनिस्ट देशों का औद्योगिक उत्पादन जिस गति से बढ़ रहा है, उस गति से उनका औद्योगिक उत्पादन नहीं बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से कुल राष्ट्रीय उत्पादन के संबंध में प्रकाशित एक रिपोर्ट से ज्ञात होता है कि १९५० से १९६३ तक के १३ वर्षों में कम्यूनिस्ट देशों का कुल राष्ट्रीय उत्पादन का सूचनांक ४४ से बढ़कर १३८ तक पहुँच गया है, परतु इसी अवधि में असाम्यवादी देशों के सूचकांक ७८ से बढ़कर केवल १२२ तक पहुंचा है। अर्थात् दोनों के सूचकांक में क्रमशः ९४ और ४४ की वृद्धि हुई है। यदि ब्रिटेन और अमेरिका भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ेगें तो उन्हें और भी क्षति होगी, उनके औद्योगिक उत्पादनों की खपत भी कम होगी और वहां बेकारी बढ़ेगी। वस्तुतः व्यवहार में परोपकार और उदारता की भावना नहीं, अपने भौतिक स्वार्थ की स्थिति अधिक सहायक होती है।

इसी प्रसंग में, हम एक और प्रश्न की भी चर्चा करना चाहते हैं। कभी-कभी हम विभिन्न वादों और विचार-धाराओं का नाम लेकर यह स्वतः सिद्ध सत्य मान बैठते हैं कि एक ही विचारधारा के समाज या राष्ट्र एक दूसरे को अवश्य सहायता देंगे और विशेषकर समाजवादी राष्ट्र। किन्तु यह भी एक भ्रम है। भौतिक और आर्थिक स्वार्थ, सब वादों, धर्मों और विचारधाराओं से अधिक सबल होते हैं। लोकतंत्री और स्वतंत्र उद्योग के राष्ट्र तो सदा से अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये युद्ध करते आये हैं। इन युद्धों ने ही संसार के इतिहास का निर्माण किया है। ईसाइयत या इस्लाम को मानने वाले राष्ट्र भी परस्पर समय-समय पर युद्ध करते रहे हैं। साम्यवादी राष्ट्र अब तक इसके अपवाद रहे हैं। इसका मुख्य कारण भी सिद्धान्त या वाद की एकता नहीं है, किन्तु बलशाली रूस द्वारा उन पर सैनिक या राजनैतिक अमित दबाव रहा है। चीन ने तो अपना निर्माण ही रूस के पूर्ण सहयोग और प्रभाव के बल पर किया है। पूर्वी यूरोप के साम्यवादी राष्ट्र भी रूस की बन्दूकों की छाया में ही बने और पनपे। हंगरी और पोलैंड में यदि विद्रोह के कुछ अंकुर फूटे, तो रूस ने उन्हें कुचल दिया। इन सब साम्यवादी राष्ट्रों को पूंजीवादी देशों से, जो थोड़ा बहुत काल्पनिक या वास्तविक खतरा था, उससे बचाव रूस की शरण में आकर ही किया जा सकता था।

अनेक विचारक पाकिस्तान व भारत के युद्ध को भी सिद्धान्तों-जातिवाद का सिद्धान्त युद्ध मानते हैं। हमारी नम्र सम्मति में यह भी भ्रम ही है। काश्मीर के सम्पन्न क्षेत्र का प्रभोभन ही इसका मूल कारण है।

किन्तु समय और परिस्थिति बदलने के साथ-साथ अब साम्यवादी राष्ट्रों में भी परस्पर संघर्ष दृष्टिगोचर होने लगा है। इस संघर्ष का मुख्य कारण विचारधारा में उतना भेद नहीं है, जितना भौतिक और आर्थिक स्वार्थों में संघर्ष है। युगोस्लेविया ने तो अपने भौतिक और आर्थिक हितों के संघर्ष के कारण पहले ही रूस से पृथक्ता स्वीकार कर ली थी। अब पोलैंड, हंगरी, रूमानिया और चैकोस्लोवेकिया में भी रूस से मतभेद तीव्रता से प्रकट होने लगे हैं। इन सब देशों के संगठन 'कौमकौन' में अनेक विवादग्रस्त प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। उन देशों में परस्पर व्यापार की मुद्रा क्या हो; इन देशों की आर्थिक योजनाओं में किन पदार्थों का उत्पादन पर बल दिया जाय, जिससे यह देश केवल रूस पर ही निर्भर न बन जायें; पश्चिमी राष्ट्रों से किस तरह की व्यापारिक संधि की जाय, आदि प्रश्न निकट भविष्य में ही किसी भी क्षण उग्र बन सकते हैं। इन साम्यवादी देशों की वर्तमान गतिविधि ही इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वाद या विचारधारा की एकता बहुत समय तक विभिन्न राष्ट्रों में एकता कायम नहीं रख सकती। यदि आज पेकिंग और मास्को की विचारधारा में अन्तर दीखता भी है, तो उसका कारण सैद्धान्तिक मतभेद नहीं, जितना अपनी-अपनी परिस्थितियां और आवश्यकतायें हैं। चीन और रूस की सीमा पर अनेक विवादग्रस्त क्षेत्र



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

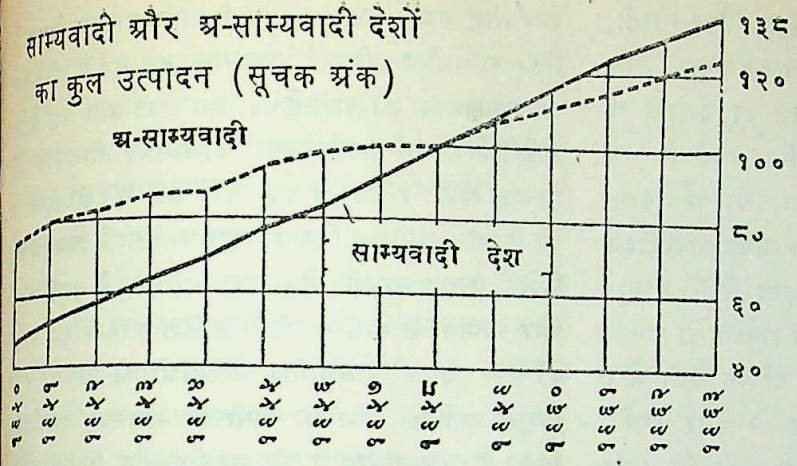


पश्चिमी यूरोप के देश और अमेरिका की पाकिस्तान-पक्षपाती राजनीति से भारत में असन्तोष उत्पन्न हो रहा है। इसलिए साम्यवादी देशों से व्यापार बढ़ाने की चर्चा भी हो रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित एक विवरण से ज्ञात होता है कि असाम्यवादी देशों की अपेक्षा साम्यवादी देशों का घरेलू उत्पादन तीव्र गति से बढ़ रहा है। पिछले १३ वर्षों में साम्यवादी देशों का उत्पादन सूचना अंक ४२४ से १३८ तक बढ़ा है, जबकि अ-साम्यवादी देशों का उत्पादन सूचक अंक ७८ से १३८ तक बढ़ सका है। इसलिए भारत अ-साम्यवादी देशों में भी व्यापार बढ़ाने में अधिक कठिनता अनुभव न करेगा।

हैं। फिर दोनों देश अपनी प्रभाव वृद्धि के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धी भी हैं।

कुछ वर्षों से संयुक्त राष्ट्र के बहुत ऊंचे आदर्शों की आड़ में अर्धविकसित राष्ट्र विकसित राष्ट्रों से सहयोग की प्रार्थना कर रहे हैं और अब तो बलपूर्वक आग्रह करने लगे हैं। भारत भी ऐसे ही प्रार्थियों में से एक है। संयुक्त राष्ट्र संघ भी इन ऊंचे आदर्शों की शब्दावली को अपने प्रस्तावों में कहने को स्वीकार करता रहता है। इस दिशा में कुछ न कुछ प्रगति अवश्य हुई है, पर वह नाममात्र की ही है, यह हमें नहीं भूलना चाहिये। हमें यह स्वप्न में भी नहीं सोचना चाहिये कि अल्पविकसित राष्ट्रों को स्वावलम्बी व समृद्ध बनाने की दृष्टि से विकसित राष्ट्र ईमानदारी से पर्याप्त सहायता दे देंगे। यह आशा दुराशामात्र है। इन देशों की सहायता उसी स्थिति में सम्भव है, जबकि सहायक देशों को यह प्रतीत हो कि इस सहायता से उनके अपने स्वार्थ की भी कुछ पूर्ति होगी। अल्पविकसित राष्ट्रों ने (ट्रेड नाट एड) का जो नारा लगाया है, उसमें इसी कारण बहुत सफलता नहीं हो रही। जो थोड़ी बहुत सफलता दृष्टिगोचर भी होती है, उसका कारण यह है कि कुछ विचारक सचमुच यह अनुभव करने लगे हैं कि शांति के समान आर्थिक समृद्धि भी अविभाज्य है। विभिन्न देशों में द्विदैशिक और बहुदैशिक व्यापारिक समझौतों के मूल में यही दृष्टि रहती है।

संक्षेप में हम यह कहना चाहते हैं कि संपन्न देशों से न उदारता के नाम पर सहायता की अपील की जा सकती है और न वाद, विचार, धर्म और विचारधारा की एकता के नाम पर। भारत के लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर ही कोई देश बड़ा त्याग करने को तैयार न होगा। कार्ल मार्क्स ने आज से बहुत समय पहले कहा था कि संसार का इतिहास चलाने वाली प्रेरणा भौतिक स्वार्थ ही होती है। विभिन्न देशों के साम्यवादी मजदूर भी परस्पर युद्ध होने पर राष्ट्रीयता का ही पक्ष लेते हैं, अन्तर्राष्ट्रीयता का नहीं। अन्तर्राष्ट्रीयता एक ऐसा आदर्श है, जिसके प्रभावकारी होने में अभी बहुत समय लगेगा। राष्ट्रीय हित ही आज एकमात्र सत्य है। यथार्थ और आदर्शवाद में यथार्थ ही आज हमारे सामने प्रबल सत्य का रूप रखता है।

## अणुव्रत और आर्थिक समस्याएं

सम्पदा विशुद्ध अर्थशास्त्र की पत्रिका है, लेकिन इसीलिए नैतिकता, संयम, सादगी आदि मानवीय गुणों से इसका कोई सम्बन्ध न हो, यह तर्क संगत नहीं है। पश्चिमी अर्थशास्त्र केवल भौतिकवाद की चर्चा करता रहता है। यही उसका सबसे बड़ा दोष है। महात्मा गांधी इसी दोष के कारण पश्चिम के अर्थशास्त्र को अनर्थशास्त्र कहते थे। यदि अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानव समाज की उन्नति है, तो मानव के व्यक्तिगत चरित्र और



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास से वह अछूता नहीं रह सकता। फिर त्यागी, अपरिग्रही, अचोर और अहिंसक मानवों का समूह केवल व्यक्तिगत उन्नति के लिए ही नहीं, समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। व्यक्ति की दृष्टि बदलेगी, तो समाज में शोषण, असमानता, ऊंच नीच, परस्पर विग्रह आदि की भी इति हो जायगी। महात्मा गांधी का सर्वोदय अर्थशास्त्र इसी को आधार मान कर चलता है। समय-समय पर सरकार द्वारा किया राशन भी मनुष्य को अपनी आवश्यकता से अधिक न लेने को प्रेरित करता है। वस्तुतः नैतिक जीवन को भौतिक जीवन से और व्यक्ति निर्माण को समाज के निर्माण से पृथक् नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से हम आचार्य श्री तुलसी के अणुव्रत को व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों के लिए आवश्यक व उपयोगी समझते हैं। अहिंसा, सत्य, अचौर्य और अपरिग्रह के व्रत देश की आर्थिक समस्याओं का भी समाधान करते हैं। अन्न या अन्य वस्तुओं को बर्बाद नहीं होने देते, नफ़ाखोरी, चोर बाजारी आदि को रोकते हैं, उद्योगपति और श्रमिक में परस्पर सहृदयता को बढ़ाते हैं; दूसरे के अधिकार या सम्पत्ति के अपहरण से व्यक्ति को रोकते हैं और आवश्यकता पूर्ति से अधिक न लेने के व्रत द्वारा मुद्रा-स्फीति के दुष्परिणामों को होने नहीं देते। इसीलिए हम सम्पदा के द्वारा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों और पाठकों का ध्यान अणुव्रत की ओर विशेष रूप से आकृष्ट करना चाहते हैं। आज के राष्ट्रीय संकट के दिनों में तो इन व्रतों का पालन और भी अधिक आवश्यक है। भारत के प्रधान-मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने देश को सलाह में एक दिन व्रत रखने और अधिक से अधिक बचत करने आदि के जो सन्देश दिये हैं, उनकी पृष्ठभूमि में भी ये अणुव्रत बहुत अधिक सहायक होंगे।

## चीनी पर विनियन्त्रण

यह संयोग की बात है कि पिछले १५ वर्षों में भा त के कृषिमन्त्री सबसे अधिक संख्या में बदले हैं और इन सब को कृषि नीति के साथ चीनी की समस्या पर विचार करना पड़ा है। डा० राजेन्द्रप्रसाद, श्री क० म० मुन्शी, श्री जयरामदास दौलतराम, श्री रफी अहमद किदवई, श्री अजितप्रसाद जैन, श्री स० का० पाटिल और सरदार स्वर्णसिंह समय-समय पर चीनी समस्या पर विचार के लिए आयोजित परिषदों के अध्यक्ष बन चुके हैं और अब श्री सुब्रह्मण्यम की बारी है। भाग्य की बात यह है कि कोई कृषिमन्त्री इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं निकाल सका। पिछले वर्ष डा० सेन की अध्यक्षता में चीनी जांच कमीशन बिठाया गया था। इसने अब अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी है। इस कमीशन ने काफी दृढ़ता और स्पष्टता के साथ अपनी सिफारिश सरकार को प्रस्तुत की है। केवल राजनीतिक भावनाओं को छोड़कर इसने विशुद्ध आर्थिक दृष्टि से चीनी की समस्या पर विचार किया है। देखना यह है कि सरकार इन सिफारिशों को किस रूप में स्वीकार करती है। यदि उसने अब भी अनेक दबावों के कारण अपनी नीति में युक्त-युक्त परिवर्तन नहीं किया तो हमें सन्देह है कि चीनी की समस्या का समाधान स्थायी रूप से होगा।

सेन के सामने मुख्यतः दो प्रश्न थे। अच्छी किस्म के गन्ने का ठीक मात्रा में उत्पादन और कारखानों में चीनी का पर्याप्त मात्रा में निर्माण। दूसरा प्रश्न इस कमीशन के सामने यह था कि चीनी उचित मूल्यों पर उपभोक्ताओं को निरन्तर मिलती रहे। इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अल्पकालीन सुझाव काम नहीं दे सकते। हमें दीर्घकालीन नीति अपनानी होगी। बीच में बार-बार परिवर्तन से तो अव्यवस्था ही उत्पन्न होती है।

सेन कमीशन ने १ नवम्बर १९६५ से शुरू होने वाले मौसम के लिए वर्तमान नियन्त्रण नीति को जारी रखते हुए उत्पादन की मात्रा पर क्रमशः उत्पादन कर में छूट देने की सिफारिश की है। गन्ने का न्यूनतम मूल्य भी १.८५ रुपया प्रति मन रखने की सलाह दी है। यदि गन्ने में मिठास में अधिक हो तो गन्ने का मूल्य बढ़ाने की सलाह दी है। ०.१ बिन्दु पर ४ पैसा प्रति क्विं. गन्ने का मूल्य ज्यादा मिलेगा।

आगामी वर्ष से गन्ने का मूल्य १.८० रु० प्रति मन रखने की सलाह दी है। चीनी का काफी गोदाम रखकर कमीशन ने मूल्य और वितरण पर नियन्त्रण हटाने की सिफारिश की है। साथ ही अधिकतम और न्यूनतम मूल्य निर्धारित करने की सरकार को सलाह दी है। यह मूल्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले ३ या ५ वर्षों के मूल्यों का औसत हो गई।* चीनी मिलों को भी कुछ स्टाक रखने की सलाह दी है। इसके बाद मिलें स्वतन्त्रतापूर्वक बिना कन्ट्रोल के चीनी बेच सकेंगी। विनियन्त्रण के बाद भी चीनी के अतिरिक्त उत्पादन पर उत्पादन कर में छूट जारी रहनी चाहिए।

## विश्व की जन संख्या

पिछले महीने में यूगोस्लेविया में संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से एक जनसंख्या-सम्मेलन किया गया था। इसमें ८८ देशों के ८०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। डाक्टर, अंक शास्त्री, नगर व्यवस्थापक तथा जन संख्या विशेषज्ञ आदि बहुत अधिकारी विद्वान उपस्थित हुए थे। यह सम्मेलन दो सप्ताह तक चलता रहा। इसमें सन्तति निरोध, उत्पादकता, मरणशीलता, भविष्य में संभावित जनसंख्या, बेकारी तथा उपलब्ध श्रम आदि विभिन्न विषयों पर ५०० के करीब निबन्ध पढ़े गये। इस सम्मेलन में यह बताया गया कि, यदि दुर्भिक्ष, विश्वयुद्ध, जन संख्या पर नियंत्रण के सफल उपाय नहीं हुए, तो आगामी ३५ वर्षों में विश्व की जन संख्या आज से करीब दुगनी अर्थात् ६ अरब तक पहुँच जायगी। खाद्य कृषि संगठन के डिरेक्टर जनरल डा. बी. आर. सेन ने आगामी पांच से वर्षों में भयंकर दुर्भिक्ष की संभावना भी प्रकट की। उन्होंने कहा कि आगामी २-३ दशाब्दियां बहुत कठिन होंगी। मानव जाति को अपने भविष्य के लिए गम्भीर जिम्मेदारीपन को समझना होगा अन्यथा वह गम्भीर आपत्ति की ओर अग्रसर होती जाएगी। बढ़ती हुई जन संख्या के वस्तुतः दो ही समाधान हैं, एक संतति निग्रह और दूसरा खाद्य उत्पादन में लगातार वृद्धि। इस सम्मेलन में यह स्पष्ट किया गया कि जहां विकसित देशों में जन संख्या की वृद्धि ३० प्रति हजार बढ़ रही है, वहां अविकसित देशों में ४० से ५० तक वृद्धि हो रही है। शिक्षित और समृद्ध देशों में जन संख्या कम तेजी से बढ़ रही है। इसलिए विश्व की समस्या का समाधान करना हो तो यह भी आवश्यक है कि, अविकसित या अर्द्ध-विकसित देशों को समृद्ध और विकसित करने के लिए संगठित और व्यापक प्रयत्न करने होंगे।

## अन्न की बचत का उपाय

रिजर्व बैंक के द्वारा प्रकाशित एक विवरण से ज्ञात होता है कि १९६४-६५ में हमारे देश में कुल १४०० करोड़ रुपये का आयात हुआ। इसमें से ३०० करोड़ रुपये का आयात केवल अनाज का था। यदि इसे किसी तरह सर्वथा समाप्त किया जा सके तो एक ही कदम से हमारे व्यापार सन्तुलन का घाटा ७४० करोड़ रुपये से कम होकर ४४० रु० हो जाय अर्थात ३०० करोड़ रुपये की बचत हो जाय।

अनाज की पैदावार इस फसल में अच्छी नहीं दीखती है हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि हमारी जनसंख्या भी बढ़ रही है। इसलिए अनाज के आयात को बचाने का हमें गम्भीर प्रयत्न करना चाहिए और इसका सबसे आसान तरीका एक अर्थशास्त्री नरोत्तम शाह की सम्मति में यह है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने अनाज की दैनिक मात्रा में से १.४ औंस प्रतिदिन कमी करले। आज हमारे देश में प्रति नागरिक औसत १६.७ औंस है। यदि हम केवल १५.३ औंस से गुजारा कर सकें तो हम विदेशी अन्न पर निर्भरता से मुक्त हो सकते हैं। हमें विश्वास करना चाहिए कि सवा औंस का अनाज का त्याग हम बड़ी खुशी से कर सकेंगे।

वस्तुतः हम अनाज आवश्यकता से अधिक खाते हैं और पौष्टिक भोजन कम करते हैं। एक सन्तुलित भोजन के लिए १० औंस अनाज काफी है और हमें १.४ औंस कम करने के बाद भी १४ औंस अनाज मिल सकेगा। अमेरिकी देशों में अनाज से कम कैलरियां मिलती हैं और दूध, सब्जी, मांस आदि में अधिक कैलरियां मिलती है, किन्तु भारत में सर्वथा इसके विपरीत है।

| | अमेरिका में | | भारत में | |
|---|---|---|---|---|
| | अनाज से कैलरी | अन्य पदार्थों से कैलरी | अनाज से कैलरी | अन्य पदार्थों से कैलरी |
| देहाती क्षेत्र | २००० | १६०० | १८०० | ४०० |
| शहरी क्षेत्र | १२०० | २००० | १३०० | ६०० |

* २ नवम्बर की एक घोषणा के अनुसार सरकार इस वर्ष भी, गत वर्ष की भांति गन्ने की कीमत दो रुपया प्रति मन रखेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब्जी, दूध और मांसाहारियों के लिए मांस पौष्टिक भोजन का काम देंगे। यदि हम रसोईघर का बगीचा अपने घर में ही लगाने का प्रयत्न करें अर्थात थोड़ी बहुत सब्जी हम बोया करें तो हमें सब्जी की थोड़ी बहुत आवश्यकतापूर्ण होने में दिक्कत नहीं होगी।

इस प्रयत्न के दो मुख्य परिणाम होंगे। एक तो यह कि हमारी ३०० करोड़ रुपयों की विदेशी मुद्रा बच जायगी और दूसरी यह कि हमें अनाज के लिए विदेशों के आश्रित रहना नहीं पड़ेगा और पेट भरने के लिए दूसरों के आगे गिड़गिड़ाना नहीं पड़ेगा।

## भारत में कम उत्पादन

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार अविकसित देशों में प्रति व्यक्ति कुल राष्ट्रीय उत्पादन निम्न लिखित रूप से हुआ है—

(डालरों में)

| | | | |
|---|---|---|---|
| टर्की | २६२ | नाइजीरिया | १०२ |
| सीलोन | १४१ | सूडान | ८० |
| फिलीपाइन | १२७ | पाकिस्तान | ७६ |
| कोरिया गणतंत्र | १२४ | वर्मा | ७५ |
| चीन (तैवान) | १२१ | भारत | ७४ |
| थाइलैंड | ११२ | वियतनाम गणतंत्र | ७३ |

इस तालिका से यह स्पष्ट है कि अविकसित देशों में भी भारत का स्थान बहुत नीचे है। इसीसे यह भी प्रकट होता है कि आर्थिक विकास के लिए भारत को कितनी अधिक कोशिश करनी चाहिए और जन सामान्य को कितना त्याग करना चाहिए।

## भारी सैनिक व्यय

ले० जनरल वडालिया ने बताया है कि बख्तरबन्द सेना की एक डिवीजन अगर अपने सभी टैंकों और तोपों से एक-एक राउण्ड गोलाबारी करे, तो उस पर ८०,००० रु० का खर्चा आता है। लड़ाई के दौरान बख्तरबन्द सेना की कई डिवीजनों ने बहुत-बहुत राउण्ड गोलाबारी की। ले० जनरल वडालिया के अनुसार, बख्तरबन्द सेना की एक डिवीजन को प्रारम्भ में साज-समान से पूरी तरह सुसज्जित करने पर ३० करोड़ रु० का खर्च आता है। इसके अलावा आवर्तक व्यय के रूप में ८ करोड़ रु० की जरूरत पड़ती है।

सैनिक व्यय का यह छोटा सा मद है। हम इसी से कल्पना कर सकते हैं कि युद्ध संचालन कितना अर्थसाध्य है। युद्ध लिप्स, देश न केवल राष्ट्र निर्माण का महान कार्य छोड़कर नर संहार के लिए अपनी असीम हानि व साधनों का अपव्यय करते हैं। बल्कि अन्य राष्ट्रों को भी ऐसा करने के लिए विवश कर देते हैं। हिटलर ने यही किया था। माओ भी यही कर रहा है और अयूबखां भी उसी पथ का अनुसरण कर रहा है।

## बुराइयों में से भलाई

बुराइयों में से भी अच्छाई पैदा हो सकती है, यह कहावत असत्य नहीं है। जब चीन ने भारत पर अपना विश्वासघातपूर्ण आक्रमण किया, तभी भारत को अपनी भारी भूल का ज्ञान हुआ और उसने सामरिक दृष्टि से कारखानों में उत्पादन पर अधिक ध्यान दिया। अब पाकिस्तान के आक्रमण के साथ ही ब्रिटेन और अमेरिका के विरोधी रुख ने हमें आत्म-निर्भरता का पाठ पढ़ाया है। योजना आयोग अब तक अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बन का महत्व नहीं समझा था। वह विदेशों की सहायता और पी० एल ४८० के आधार पर ही अपनी योजनाओं का निर्माण करता रहा। अब जाकर देश अन्न स्वावलम्बन का महत्व समझने लगा है। यदि इस क्षण से हम स्वावलम्बन की योजनाओं पर ईमानदारी से अमल शुरू कर देते हैं तो जहां हम में आत्म विश्वास उत्पन्न हो जावेगा, वहां आर्थिक दृष्टि से भी बहुत विकास कर सकेंगे।

## आप कितना खाते हैं ?

भारत में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति औसत खपत (किलोग्राम)

| | १९६२-६३ | १९६०-६१ | १९३८ |
|---|---|---|---|
| अनाज | १३४.२ | १६८.१ | ११८.७ |
| आलू तथा स्टार्च | | | ८.८ |
| काले पदार्थ | १०.५ | ११.० | ११.४ |
| चीन (सफेद) | १७.१ | १७.६ | २०.१ |
| दालें व गिरी | २१.३ | २२.५ | — |
| सब्जी | २.८ | २.८ | १.४ |
| मांस | १.४ | १.४ | ०.२ |
| अण्डे | ०.२ | ०.२ | ०.६ |
| मछली | १.० | १.० | २.५ |
| दूध चरबी | २.६ | २.६ | १.७ |
| दूध प्रोटीन | १.७ | १.७ | |

—संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट कृषि खाद्य-संस्था १९६५ से



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रक्षा, कृषि, और विकास में आत्मनिर्भरता

श्री लालबहादुर शास्त्री, प्रधानमंत्री

हम अब भी संकट के बीच में हैं और ऐसा लगता है कि यह हालत अभी काफी समय तक रहेगी। इसलिए हमें चीजों को काफी लंबे अरसे के ख्याल से देखना होगा और सभी पक्षों और पहलुओं पर विचार करना होगा।

एकता दिवस के मौके पर इस साल हम यह संकल्प लें कि हम अपने पांव पर आप खड़े होने की पूरी कोशिश दृढ़ता पूर्वक करेंगे। आत्म-निर्भरता का मतलब यह नहीं है कि हमारे पास हमारी जरूरत की हरेक चीज हो। दुनिया का कोई भी देश सब तरह से अपने ऊपर निर्भर नहीं हो सकता। आत्म-निर्भरता मन की एक रुझान है। एक गरीब आदमी भी आत्मनिर्भर हो सकता है और एक अमीर आदमी का काम औरों पर निर्भर हुए बिना शायद न चले। आत्मनिर्भरता का मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है, उसका हम अधिक से अधिक अच्छा इस्तेमाल करें और जो नहीं है, उसके बिना काम चलाने का हौसला करें।

## तीन क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता जरूरी

तीन ऐसे खास क्षेत्र हैं, जिनमें आत्मनिर्भरता की सबसे ज्यादा जरूरत है। सबसे पहले तो यह जरूरी है कि हमारी फौजें इस ढंग से तैयार हों कि वे हमारी सीमाओं की रक्षा कर सकें और हमारे सामने जो चुनौती है, उसका सामना कर सकें। इसलिए अपने रक्षा उद्योगों का हमें अधिक से अधिक तेजी से विकास करना है। दूसरा मसला यह है कि अनाज की अपनी जरूरत को हम खुद पूरा कर सकें। ऐसा लगता है कि किसानों को अपनी जिम्मेदारी का अनुभव है और उनके सहयोग से हौसला बढ़ता है और संतोष होता है। । हमें अपने आप से जो सवाल पूछना है, वह यह है कि हम अपनी कोशिश से खुद क्या कर सकते हैं, जिससे विकास और रक्षा की हमारी जरूरतों के लिए साधन जुटाये जा सकें।

ये साधन हमें खुद पैदा करने हैं। अपने उत्पादन का काफी बड़ा हिस्सा हमें लोगों की रोजमर्रा की जरूरत पूरा

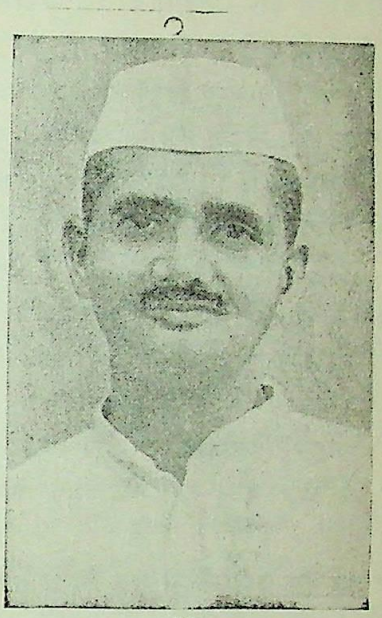

करने के लिए तो लगाना ही होगा, लेकिन अगर हम अपने ऊपर निर्भर होकर तेजी से बढ़ना चाहते हैं, तो हमें दो बातें करनी हैं—हमें ज्यादा पैदा करना होगा और खपत कम करनी होगी।"

मैं जानता हूँ कि हमारी आमदनी कम है और हमारे लिए चीजों की मौजूदा खपत को घटाने की बात सोचना आसान नहीं है। लेकिन फिर भी हमें याद रखना है कि अगर हम आज अधिक बचत करते हैं, तो कल हमें ज्यादा खर्च करने का मौका मिलेगा। यह बात जितनी सही हमारे निजी मामलों में है, उतनी ही राष्ट्र के मामलों के लिए भी है। अपने बच्चों के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिये हमें आज त्याग करना है। इसलिए यह हो सकता है कि हमें बहुत सी चीजों के बिना ही रहना पड़े। पिछले १५ वर्षों में तीन पंचवर्षीय योजनाओं के जरिए जहां आमदनी बढ़ी है, वहां अनाज, चीनी, कपड़ा, बाइसिकिल, रेडियो और इसी तरह की दूसरी चीजों की खपत भी साल-दर-साल बढ़ती जा रही है। लेकिन अगर हमें तेजी से आगे बढ़ना है, तो खपत की बढ़ती हुई रफ्तार को धीमा करना होगा। आमदनी बढ़ती रह सकती है, लेकिन खर्च को कम



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना होगा और बचत बढ़ानी होगी।

## राष्ट्रीय रक्षा ऋण

छोटी बचतों की—सेविंग्स की-कई स्कीमें आज चल रही है। सिर्फ दो रुपये में भी डाकखानों में बचत खाता खोला जा सकता है। नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट सिर्फ दस रुपए में खरीदा जा सकता है, जिसके बदले दस साल में १८ रु० मिल सकते हैं। इसके अलावा १२ साल के नेशनल डिफेंस सर्टिफिकेट की स्कीम भी है, जिसमें पैसा लगाने से बहुत अच्छी दर पर ब्याज मिलता है, जिस पर कोई टैक्स भी नहीं लगता। आज की हालत में डिफेंस सेविंग्स सर्टिफिकेटों में पैसा लगाने की कोशिशों में नयी तेजी पकड़नी है। देश भर में लोगों को इसकी अहमियत समझनी है और इसमें पैसा लगाना है। अगर पूरी कोशिश की जाए, तो कोई वजह नहीं कि बहुत अच्छे नतीजे न निकले।

अब हम एक नयी स्कीम शुरू करना चाहते हैं। सरकार ने फैसला किया है कि नेशनल डिफेंस लोन यानी राष्ट्रीय रक्षा ऋण का काम शुरू किया जाए। एक सात वर्ष का कर्ज होगा, जिस पर पौने पांच फी सदी ब्याज मिलेगा और दूसरा तीन साल का कर्ज होगा, जिस पर सवा चार फी सदी ब्याज दिया जाएगा। इस कर्ज की कोई सीमा नहीं होगी। इनमें धन रुपया में और विदेशी मुद्रा-फारन एक्सचेंज में भी लगाया जा सकता है। देश से बाहर रहने वाले विदेशी मुद्रा-फारन एक्सचेंज में धन लगा सकते हैं और उन्हें मूल और ब्याज बाहर ले जाने की सहूलियत दी जाएगी। इस पर टैक्स नहीं लगेगा।

## विदेशी मुद्रा व स्वर्ण बांड

लेकिन कहीं ज्यादा चिन्ता की बात है, विदेशी साधनों या फारेन एक्सचेंज की कमी। इसकी वजह यह है कि देश की तरक्की और फौज की जरूरतों के लिए हमें बहुत सी ऐसी चीजें बाहर से मंगानी पड़ती हैं, जिन्हें हम देश में तैयार नहीं कर रहे हैं। यह हमारी शायद सबसे भारी कमजोरी है और हमें अपनी इस मुश्किल का हल निकालना है। हमें विदेशों से कम चीजें मंगानी हैं और ज्यादा से ज्यादा चीजें बाहर भेजनी हैं। हमें लगातार कोशिश करनी है कि हम देश में ही ऐसी चीजें तैयार करें, जिन्हें हम बाहर से मंगाते हैं और साथ ही ऐसी चीजें बनाएं, जो बाहर से मंगाई जाने वाली चीजों की जगह ले सकें।

आयात कम करने और निर्यात बढ़ाने की कोशिश तो हमें करनी हैं, लेकिन उनके नतीजे कुछ दिन बाद ही सामने आएंगे। तब तक मौजूदा संकट के समय देश में विदेशी मुद्रा-फारेन एक्सचेंज कैसे मिलेगी, इसकी ओर हमें ध्यान देना है। मेरा मतलब देश में मौजूद सोने से है। पहले भी लोगों ने नेशनल डिफेंस फंड और गोल्ड-बांडों में सोना लगाया है। लेकिन लोग उस सोने को हमेशा के लिए नहीं देना चाहते, जो कई लोगों के लिए पीढ़ियों की बचत है। वे चाहते हैं कि अपना सोना वे उसी तरह अपने बच्चों को सौंप जाएं, जैसे कि उन्हें उनके माता पिता से मिला है। इस बात को ध्यान में रख कर ही एक नई स्कीम शुरू की जा रही है। गोल्ड-बांडों का एक नया सिलसिला जारी किया जा रहा है, जिसका नाम होगा नेशनल डिफेंस गोल्ड-बांड। इसमें जो सोना लगाया उसे सरकार पन्द्रह साल बाद शुद्ध सोने के रूप में ही वापस करेगी। इस बीच जो सोना सरकार के पास रहेगा, उस पर हरेक दस ग्राम पीछे दो रुपया सालाना ब्याज दिया जाएगा। ब्याज पर कोई इनकम टैक्स नहीं लगेगा और गोल्ड-बांडों पर वैल्थ टैक्स भी नहीं लगेगा। ये बांड किसी दूसरे को भी दिए जा सकते हैं और इन पर कैपिटल गेन्स टैक्स नहीं लगेगा। गिफ्ट टैक्स और स्टेट ड्यूटी पर भी कुछ रियायतें इनके बारे में दी जाएंगी। सोने का वजन उसी शुद्धता के स्टैण्डर्ड के मुताबिक आंका जाएगा और इसी हिसाब से उसे लिखा जाएगा और वापस किया जाएगा। सोना देने वालों के खिलाफ कोई कार्रवाई इसलिए नहीं की जाएगी कि उन्होंने गोल्ड कन्ट्रोल आर्डर या इनकम टैक्स कानून का पालन नहीं किया है। जो लोग सोना देंगे, उनके नाम नहीं बताये जाएंगे।

इस तरह देश में आज जिन लोगों के पास गहने या बुलियन की शक्ल में सोना है, उनके लिए यह मौका है कि वे इस बड़े काम में इसे लगाकर रक्षा और विकास के लिए जरूरी साज-सामान बाहर से मंगाने में सहायता करें। साथ ही सोने पर उनका अधिकार बना रहेगा और

(शेष पृष्ठ ५८७ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का महत्वपूर्ण प्रश्न

# पी. एल. ४८० : एक विश्लेषण

श्री महेश्वर दयालु गंगवार

पाकिस्तान से हुए संघर्ष ने यह बात स्पष्ट कर दी है कि यदि हम अपना स्वतन्त्र अस्तित्व चाहते हैं, तो प्रत्येक क्षेत्र में आत्म-निर्भर बनना होगा—विशेषकर रक्षा-उत्पादन और खाद्यान्नों के क्षेत्र में। खाद्यान्नों के क्षेत्र में आत्म-निर्भरता का नारा वस्तुतः 'शान्ति के लिए भोजन' अर्थात् पी० एल० ४८० समझौते की देन है (यदि अमरीकी सरकार इस समझौते के अन्तर्गत पूर्ववत् गेहूँ देती रहती तो सम्भवतः हम अभी खाद्यान्नों में आत्म-निर्भर होने की बात नहीं सोचते)। कुछ वर्ष पूर्व जब यह समझौता किया गया, इसका विरोध हुआ था क्योंकि उस समय भी इस समझौते के दुष्परिणाम अज्ञात नहीं थे। परन्तु अमेरिका से मधुर सम्बन्ध होने के कारण कोई अन्य विकल्प न होने की दलील का सहारा लेकर समझौते का समर्थन किया गया।

पी० एल० ४८० के नाम से प्रसिद्ध इस समझौते का पूरा नाम 'संयुक्त राज्य कृषि व्यापार विकास एवं सहायता अधिनियम १९५४ है। १९३०-३१ की मन्दी में किसान को बचाने के लिए अमेरिकी सरकार ने ऊंचे मूल्य पर अनाज खरीदने का काम अपने हाथ में लिया और खरीदे हुए अनाज को बेचने के लिए विदेशों में बाजार प्राप्त करने का प्रयत्न किया। अन्ततः १९५४ में अमेरिकी सरकार ने उपर्युक्त कानून बनाया और उसके अन्तर्गत मित्र देशों को अन्न भेजना आरम्भ किया। अमरीकी किसानों के हित के लिए बनाया गया यह कानून हमारे लिए अभिशाप बन गया। जैसा कि डा. एस. सी. दुबे ने अपनी पुस्तक 'फ्रीडम फ्राम फारेन फूड' में लिखा है—पी० एल० ४८० के अन्तर्गत खाद्यान्न के निर्यात पर निर्भरता ने हमारे किसानों के लिए खाद्यान्न के मूल्यों को गिरा दिया, फलतः वे खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि करने की ओर से उदासीन हो गये, क्योंकि वे सरकार द्वारा पोषित अमरीकी किसान से प्रतियोगिता नहीं कर सकते। अमरीकी सरकार अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों के लिए खाद्यान्न का उपयोग करती है। स्पष्ट है कि इस समझौते ने हमारे खाद्यान्नों के उत्पादन की वृद्धि में रोड़ा अटकाया। हमारा किसान खाद्यान्नों के स्थान पर दूसरी फसलों के उत्पादन की ओर आकृष्ट हो गया।

इस समझौते के अन्तर्गत अब तक १३ अरब ७२ करोड़ ९० लाख रु० का अनाज, दूध, तेल, कपास इत्यादि माल अमेरिका से प्राप्त हुआ। हम अब तक इसके अधीन लगभग ३ करोड़ १० लाख टन गेहूँ का आयात कर चुके हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इससे हमारी विदेशी मुद्रा की तात्कालिक बचत हुई। परन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं कि हमारी विदेशी मुद्रा हमेशा के लिए बच गई। समझौते के साथ जो शर्तें लगी हैं, उनके अधीन हमें बड़ी मात्रा में ब्याज आदि डालरों में चुकाना होगा। पी० एल० ४८० के अन्तर्गत जितनी कीमत का माल अब तक आयात हुआ है, उस राशि का १२.३ प्रतिशत धन भारत में अमरीकी सरकार के खाते में जमा है, जिसमें से अमरीकी संस्थानों के कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। यदि यह राशि न होती तो हमें इन कर्मचारियों के वेतन के रूप में प्रतिवर्ष करोड़ों डालर प्राप्त होते। यही नहीं, इस समझौते के अधीन हमें कम से कम ५० अमरीकी जहाजों से गेहूँ मंगाना पड़ता है। पहले तो हमें अन्य विदेशी जहाजों के किराये के बराबर उन जहाजों के किराये का भुगतान डालरों में करना पड़ता था, किन्तु अब कानून में संशोधन हो जाने के कारण सारा किराया डालरों में चुकाना पड़ता है और भी, शेष ८७.७ प्रतिशत राशि आर्थिक सहायता, ऋण और भारत-अमेरिका द्वारा संयुक्त रूप से चलाये जा रहे उद्योगों को सहायता के रूप में प्रदान की गई है। आगे चल कर इस ओर ऋण का भुगतान हमें विदेशी मुद्रा में करना होगा। कहना न होगा कि देश की भावी अर्थ-व्यवस्था पर एक बोझ लद गया है और लद रहा है।

इस प्रकार इस समझौते के अन्तर्गत हमें गेहूँ तो अवश्य मिल रहा है, परन्तु उसके दुष्परिणाम—आर्थिक तथा राजनीतिक—भी कम नहीं भोगने पड़ रहे हैं। इसके



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत 'शान्ति के लिए भोजन' बांटने वाला अमेरिका इससे भरपूर लाभ उठा रहा है। वहां के किसानों को अपने अतिरिक्त माल के लिए बाजार मिलता है, जिससे अमरीका की अर्थ-व्यवस्था मन्दी से बची हुई है। उस कानून के अन्तर्गत उन योजनाओं के लिए ही ऋण या अनुदान मिलता है, जिनके चलाने के लिए अमरीकी माल खरीदना अनिवार्य होता है। अमरीकी जहाजों को संरक्षण मिलता है। पी० एल० ४८० के अन्तर्गत भारत को जो रकम अनुदान के रूप में मिलती है, उससे कई गुनी अधिक रकम ब्याज के रूप में चुकानी पड़ती है। इतने सारे आर्थिक लाभों के साथ ही अमेरिका इस समझौते को राजनीतिक दबाव के रूप में भी प्रयुक्त कर रहा है। स्पष्ट है कि पी० एल० ४८० समझौते ने जहां एक ओर हमारे अर्थ-तंत्र को प्रभावित किया है, खाद्यान्नों के लिए हमें परमुखापेक्षी बना दिया है, वहां दूसरी ओर हमारे समक्ष राजनीतिक उलझनें भी पैदा कर दी हैं।

यह सत्य है कि देश में खाद्यान्नों की कमी है और उसी कमी को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष लगभग ६० लाख टन खाद्यान्न का आयात करना आवश्यक है। किन्तु यह स्थिति ऐसी नहीं है, जिस पर काबू न पाया जा सके अथवा जिसके कारण हम अमेरिका के दबाव से कोई असम्मानजनक समझौता करने को विवश हो जाएं। खाद्यान्नों का उत्पादन हमारी आवश्यकता से केवल ८ प्रतिशत कम है। क्या उत्पादन बढ़ाकर, वितरण व्यवस्था में सुधार करके और अन्न की बरबादी को रोक कर इस कमी को पूरा नहीं किया जा सकता? मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम कमर कस लें तो इस कलंक को सदा-सदा के लिए धो सकते हैं कि कृषि-प्रधान देश होते हुए भी भारत खाद्यान्नों क लिए परमुखापेक्षी है।

हम अपना लक्ष्य कैसे प्राप्त करें? जैसा कि बिजली तथा सिंचाई मन्त्री श्री के० एल० राव ने कहा है, सिंचाई के वर्तमान साधनों में थोड़ा-सा सुधार करके उपज को बढ़ाया जा सकता है। इसी प्रकार गोदामों में होने वाली अन्न की बरबादी को रोककर भी बहुत कुछ अन्न बचाया जा सकता है। इसी प्रकार जोत-क्षेत्र को बढ़ाकर, खेती का आधुनिकीकरण करके अल्प समय में ही उपज में वृद्धि की जा सकती है। कुछ समय के लिए प्रधानमंत्री के इस सुझाव पर भी अमल किया जा सकता है कि किसान पैसा कमाने वाली फसलें न बोकर अधिक अन्न पैदा करें। परन्तु दीर्घकाल तक यह मार्ग नहीं अपनाया जा सकता, क्योंकि खाद्य फसलों के साथ ही अन्य फसलों के महत्त्व की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उन फसलों से जहां एक ओर हमारे अनेक उद्योगों को कच्चा माल मिलता है, दूसरी ओर उनके निर्यात से महत्त्वपूर्ण विदेशी मुद्रा भी उपलब्ध होती है।

अनुमान है कि यदि उत्पादन बढ़ाने का हर सम्भव प्रयत्न किया जाय तो वर्तमान उत्पादन में ४३ प्रतिशत तक वृद्धि हो सकती है। फिर उत्पादन में ८ प्रतिशत की कमी तो कोई बड़ी चुनौती नहीं है। किन्तु इस चुनौती का सामना किसान अकेले नहीं कर सकता। इसके लिए ग्राम स्तर पर काम करने वाले अधिकारियों में अपने कार्य के प्रति निष्ठा, लगन और कर्त्तव्य परायणता की भावना का होना आवश्यक है। योजना आयोग ने १९६६-६७ के लिए जो योजना तैयार की है, उसमें रबी उत्पादन के बाद कृषि को प्रमुखता दी है। प्रत्येक राज्य से कृषि कार्यक्रम की मांग की गई है। उस कार्यक्रम को पूरा करने के लिए केन्द्र न केवल आर्थिक सहायता ही देगा, बल्कि समय-समय पर राज्यों को परामर्श और तकनीकी सहायता भी देगा।

अमेरिका से प्राप्त ताजी खबरों से ऐसा आभास मिल रहा है कि अमरीकी सरकार अपनी भूल का परिमार्जन करने के लिए समझौते पर पुनर्विचार कर रही है और ऐसी आशा की जाती है कि पी० एल० ४८० के अन्तर्गत हमें पहले की भांति अन्न मिलता रहेगा। परन्तु हमें अब फिर इस मृगमरीचिका में नहीं पड़ना चाहिए। यदि अमेरिका अन्न देता है तो हम अपनी आवश्यकतानुसार उसे प्राप्त करते रहेंगे। किन्तु उससे हमारे राष्ट्रीय संकल्प पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। हमें प्रत्येक क्षेत्र में आत्म-निर्भर बनना है। अब समय आ गया है कि हम इस सत्य को समझें कि 'शांति के लिए भोजन' मानवता के नाम पर दूसरों को क्रीतदास बनाने की एक चाल है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# भारत का महान् अर्थशास्त्री

भारत के एक महान अर्थशास्त्री श्री आर्दशेर डी० आफ के देहान्त से आर्थिक क्षेत्र का एक नक्षत्र अस्त हो गया है। अभी उनकी आयु केवल ६६ वर्ष की थी और देश उनसे अभी अधिक मार्ग दर्शन की आशा करता था।

श्री आफ का जन्म ४ जून, १८९९ को हुआ था, बम्बई से बी. ए. की परीक्षा और लंदन से बी. एस. सी. की परीक्षा देकर उन्होंने अपना जीवन स्टाक ब्रोकर के रूप में प्रारम्भ किया। वस्तुतः वे इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया में काम करना चाहते थे, किन्तु उन्होंने लंदन में एक ऐसे बैंक में प्रशिक्षण लिया था, जो अमेरिकन बैंक था। इम्पीरियल बैंक उन्हीं को नियुक्त करता था, जिन्होंने किसी ब्रिटिश बैंक में एक नियत समय तक प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। सफल स्टाक ब्रोकर का कार्य करने के बाद उन्होंने १९४१ में टाटा उद्योग में कार्य शुरू कर दिया। वे उस उद्योग के डायरेक्टर रहे और इस उद्योग को आगे बढ़ाने में विशेष भाग लिया। २० वर्ष तक टाटा उद्योग में काम करने के बाद १९६० में वे टाटा उद्योग से अलग हो गये। टाटा उद्योग से अलग होने का अर्थ इस क्षेत्र से अलग हो जाना नहीं था। वे इसके बाद भी टाटा की अनेक प्रवृत्तियों से सम्बद्ध और टाटा ट्रस्ट के ट्रस्टी रहे। उन्होंने टाटा से सम्बन्ध विच्छेद के अवसर पर कहा था कि अब भी मैं व्यापार उद्योग के क्षेत्र से अलग नहीं हुआ हूँ। मैंने केवल अपना कार्य भार कम करने के लिए ही टाटा का डायरेक्टर पद छोड़ा है।

आर्थिक क्षेत्र में श्री आफ की प्रतिष्ठा बहुत पहले ही बढ़ चुकी थी और उनके चिन्तन एवं अध्ययन की धाक जम चुकी थी। इसलिए जब १९४४ में ब्रैटन वुड्स में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा सम्मेलन हुआ, तब वे भारत की ओर से गैरसरकारी प्रतिनिधि बन कर गये। इसी सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और अन्तर्राष्ट्रीय विकास कोष की स्थापना हुई थी। रिजर्व बैंक बिल पर विचार करने के लिए नियत सिलक्ट कमेटी के आगे अपने विचार देने के लिए उन्हें बुलाया गया था। बम्बई में उनका दीर्घकालीन

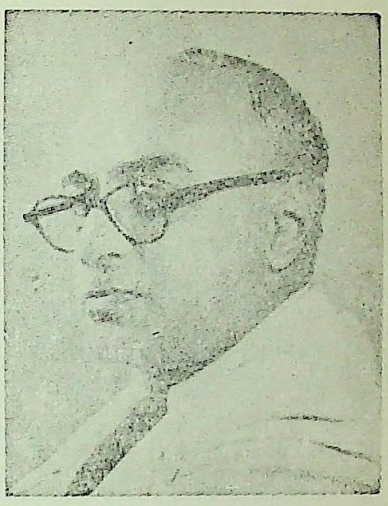

श्री ए० डी० आफ़

जीवन पचासों आर्थिक और वित्तीय संस्थाओं से सम्बद्ध रहा। बम्बई म्युनिसिपल फाइनेन्स कमेटी के दो वर्षों तक वे अध्यक्ष रहे।। बम्बई शेयर होल्डर एसोसियेशन, रेलवे स्टोर इन्क्वायरी कमेटी, वायदे के सौदों पर विशेषज्ञ समिति आदि कितनी ही कमेटियों में उन्होंने विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया। न्यू इण्डिया एश्योरैन्स कम्पनी, बैंक आफ इण्डिया, नेशनल रेयन कारपोरेशन, बैंक नील एंड बेरा लि०, इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन आफ इण्डिया, साउथ इंडिया शिपिंग कारपोरेशन, न्यू इंडिया इन्डस्ट्रीज लि०, नेशनल इको रेडियो, सैन जे० डेविड कम्पनी, कोठारी सुगर्स आदि अनेक कम्पनियों से उनका सम्बन्ध रहा। इंडिया बैंक ऐसोसियेशन के वे अध्यक्ष भी रहे हैं।

अपनी आजीविका और धन अर्जन की दृष्टि से उन्होंने जो कुछ किया, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण वस्तुतः आर्थिक प्रश्नों पर उनका स्वतन्त्र और निर्भीक चिन्तन है। वे देश की स्वाधीनता के बाद राष्ट्र की आर्थिक नीतियों पर एक निश्चित मत रखते थे और उसे प्रकट करने में किसी तरह भय या संकोच नहीं करते थे। जब भारत सरकार के अनेक उच्च अधिकारी और राजनैतिक नेता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रवाह में बहकर 'समाजवाद' की दिशा में देश को ले जाने का प्रयत्न करने लगे तो श्री आफ ने बहुत साहस के साथ उनकी नीति का विरोध प्रारम्भ किया। वे यह विश्वास करते थे कि विभिन्न उद्योगों का राष्ट्रीयकरण और उन पर कठोर नियंत्रण आर्थिक विकास के प्रयोजनीय उद्देश्य की ओर देश को सफलतापूर्वक नहीं ले जा सकेंगे। १९५६ में जब उन्होंने 'फोरम आफ फ्री इन्टरप्राइज' की स्थापना की, तब उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि व्यक्ति के स्वातंत्र्य पर अधिकाधिक नियन्त्रण देश की आर्थिक व्यवस्था को शिथिल कर देंगे। उनके विचार के अनुसार नियन्त्रण इस सीमा तक नहीं बढ़ने चाहिए, जिससे मानव के व्यक्तित्व और साहस की भावना ही शिथिल या नष्ट हो जावे। यह देश का दुर्भाग्य है कि देश के अधिकांश अर्थशास्त्री सरकारी नीति के पोषण में ही अपनी प्रतिभा और शक्ति का अपव्यय करते हैं। श्री आफ भी यदि चाहते तो वैसा करके भारत सरकार में बहुत ऊंचा और महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त कर सकते थे, किन्तु अपने जीवन के अन्त तक स्वतन्त्र विचारक और आलोचक के रूप में ही वे देश की अर्थनीतियों पर अपने विचार प्रकट करते रहे। वे सरकार की राष्ट्रीयकरण और नियन्त्रण की नीति को आर्थिक विकास के लिए बाधक समझते थे। सरकार के अन्धाधुन्ध खर्च तथा निजी उद्योगों को प्रोत्साहन न देने की नीति के वे कठोर आलोचक थे। उद्योग, व्यापार और आर्थिक संस्थाओं के संचालन में उन्होंने अपने दीर्घकालीन अनुभवों द्वारा आर्थिक समस्याओं का चिन्तन किया था। वे उन अर्थशास्त्रियों से मतभेद रखने का पूरा अधिकार रखते थे, जो केवल पुस्तकालयों में बैठकर अर्थशास्त्र पर बड़ी २ पुस्तकें लिखते हैं।

श्री ए० डी० आफ देश के आर्थिक विकास में किसी क्रमबद्ध सुविचारित योजना को पसन्द न करते हों, ऐसी बात नहीं थी। भारत के आर्थिक विकास के लिए एक निश्चित योजना के अनुसार कार्य करना वे आवश्यक समझते थे। पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण और देश के स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व ही जिस 'बम्बई प्लान' का निर्माण हुआ था, उसके निर्माताओं में श्री आफ भी एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी थे। उनके स्वतन्त्र साहस और उद्यम का अर्थ व्यक्तियों पर सब कुछ छोड़ देना नहीं था। वे १९वीं सदी के लैस्सा फेयर (Laissez Faire) को पसन्द नहीं करते थे। बम्बई प्लान इसका प्रमाण है।

श्री आफ यह अनुभव करते थे कि आज के लोकतंत्र विधान में यदि सत्ताधारी शासक दल की नीतियों की आलोचना करनी है तो जनता के शिक्षित और विचारशील वर्ग को जागरूक करना होगा। फोरम आफ फ्री इन्टरप्राइज इसी दिशा में किया गया एक बड़ा प्रयत्न है। इस संस्था के द्वारा उन्होंने विद्वान और अधिकारी अर्थशास्त्रियों का एक मंच स्थापित किया था, जिसका उद्देश्य आर्थिक समस्याओं पर स्वतन्त्रता से गम्भीर और अध्ययनपूर्ण चिन्तन करना था। इसमें सन्देह नहीं कि इस संस्था की ओर से जो प्रकाशन हुआ, उसका भारतीय अर्थशास्त्र में एक बड़ा स्थान है।

श्री आफ स्वतन्त्र उद्योग के प्रबल समर्थक थे। वे प्रतिस्पर्धा को व्यापार के विकास के लिए आवश्यक समझते थे। इसीलिए वे सरकार द्वारा चलाये जा रहे उन उद्योगों और नियन्त्रणों के विरोध में थे, जिनके द्वारा देश में एकाधिकार की स्थापना होती थी। न्यू इंडिया इन्श्योरेन्स के अध्यक्ष के नाते उन्होंने बीमा उद्योग में और बैंक आफ इंडिया के अध्यक्ष के नाते बैंक व्यवसाय में अनेक नई प्रथाएं स्थापित करके नेतृत्व किया। न्यू इंडिया में उन्होंने प्रीमियम में कमी की और बैंक आफ इंडिया में उन्होंने लोगों में बचत को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक नई सुविधाएं दी।

उद्योग, व्यापार, बैंकिंग, बीमा, और विनियोजन आदि प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने अपनी योग्यता और कार्य कुशलता की छाप छोड़ी है। वे प्रत्येक समस्या का गहरा अध्ययन करते थे और अपने विचारों का युक्ति और तर्क के द्वारा पुष्ट करते थे।

आयात की उदार नीति की वे आलोचना करते थे और निर्यात के प्रोत्साहन को वे बहुत महत्व देते थे। श्री बाबूभाई एम० चिनाय के शब्दों में श्री शाह बीमा, बैंकिंग और वित्तीय समस्याओं पर अत्यन्त अधिकारपूर्वक अपने विचार प्रकट करते थे। श्री प्राणलाल पटेल के शब्दों में उनमें एक अर्थशास्त्री और एक उद्योगपति का

(शेष पृष्ठ ५७८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्र मंडल और भारत

श्री सुभास

भारत पाकिस्तान के युद्धकाल में ब्रिटेन ने जो भारत विरोधी रुख अपनाया है, उस पर समस्त देश में बहुत क्षोभ और रोष है और यह बहुत स्वाभाविक भी है। स्वाधीन होने के बाद भारत पुराने भीषण अत्याचारों को भूलकर मधुर सम्बन्ध बनाये रखने को उत्सुक रहा है। राष्ट्रमंडल का सदस्य बनकर भारत ने ही स्वाधीन होने वाले राष्ट्रों का नेतृत्व किया है। इसीलिए राष्ट्रमंडलों के सदस्य देशों की संख्या बहुत अधिक हो गई है। ब्रिटिश महारानी का भी स्वागत देश ने पलकें बिछाकर किया है। इस सबके बावजूद ब्रिटेन का पाकिस्तान के प्रति अंध समर्थन और भारत के लिए विरोधी रुख किसी प्रकार न समझ में आने वाली बात है। सुरक्षा परिषद में ही नहीं, कूटनीतिक चर्चाओं में भी भारत का विरोध किया जा रहा है। इंग्लैण्ड के स्वतंत्र कहे जाने वाले पत्रों में भी भारत विरोधी समाचारों को ही प्रमुखता नहीं दी जा रही, बल्कि सरासर झूठे और भ्रामक समाचार दिए जा रहे हैं। यही कारण है कि भारत के अनेक क्षेत्रों में—उत्तरदायी क्षेत्रों में भी राष्ट्रमंडल से सम्बन्ध विच्छेद की आवाज सुनाई देने लगी है और इसके लिए ब्रिटेन भारत को दोष नहीं दे सकता। भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने भी अपनी विदेशी नीति में परिवर्तन की सम्भावना व्यक्त की है।

इस अवसर पर यदि हम ब्रिटेन और भारत के पारस्परिक आर्थिक सम्बन्धों पर सरसरी दृष्टि डाल लें तो यह अनुचित नहीं होगा। भारत से निर्यात करने वाले देशों में ब्रिटेन का स्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। चाय, जूट व कपड़ा का निर्यात सर्वाधिक ब्रिटेन को ही होता है। निम्नलिखित तालिका इसे अधिक स्पष्ट करने में सहायक होगी :—

## भारत से निर्यात का प्रतिशत

| | |
|---|---|
| ब्रिटेन | २३.७१ करीब समस्त निर्यात का एक चौथाई |
| सं० रा० अमेरिका | १६.९८ |
| रूस | ५.६ |
| जापान | ४.९ |
| शेष | ४७.८१ |

१९६४ में भारत ने ब्रिटेन को १७९ करोड़ रुपये का निर्यात किया था और आयात केवल १६५ करोड़ रुपये का। इस तरह भारत को इस व्यापार में १४ करोड़ रुपये का लाभ रहा, जबकि अन्य किसी देश के साथ व्यापार में इतना अधिक लाभ नहीं रहा। इसके अतिरिक्त भारत के औद्योगिक विकास में भी ब्रिटेन का सहयोग बहुत महत्वपूर्ण है। ब्रिटेन ने भारतीय उद्योगों के साथ १९५७ से अब तक (जून, १९६५) ६४२ उद्योगों के साथ सहयोग के समझौते किए हैं। जिन देशों ने भारतीय उद्योग कम्पनियों के साथ सहयोग किए हैं, वह और उनकी संख्याएं निम्नलिखित हैं :—

## सहयोगी देशों से समझौते

| | | | |
|---|---|---|---|
| ब्रिटेन | ६४२ | फ्रांस | ७६ |
| सं० रा० अमेरिका | ३८६ | इटली | ६२ |
| पश्चिमी जर्मनी | ३२७ | पूर्वी जर्मनी | ५३ |
| जापान | १७९ | हालैण्ड | ३४ |
| स्विटजरलैण्ड | १०३ | स्वीडन | ३१ |

यदि पूंजी की दृष्टि से देखें तो भी ब्रिटेन का स्थान सं० राष्ट्र अमेरिका तथा अन्य देशों से आगे है। यह इस तालिका से स्पष्ट है। यह तालिका ५३ कम्पनियों के ६८ समझौतों के सम्बन्ध में है।

(लाखों रुपयों में)

| देश | कुल समझौते | कुल पूंजी | विदेशी पूंजी |
|---|---|---|---|
| सं० राष्ट्र अमेरिका | १४ | ३३३६ | ५६२ |
| ब्रिटेन | १५ | २९२० | ८२७ |
| अन्य | १२ | १३८३ | ३७५ |

अमेरिका व पश्चिमी जर्मनी के बाद ब्रिटेन ने ही ऋण रूप में भारत को अधिकतम सहायता दी है। दुर्गापुर का इस्पात कारखाना ब्रिटिश सहायता का एक अंग है। मित्र देशों की सहायता में भी ब्रिटेन ने ५ वर्षों के लिए ५१.८ करोड़ डालर की सहायता दी है। राष्ट्रमंडल का एक सदस्य कनाडा भी सहायता दे रहा है।


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्चर्य यह है कि इतना अधिक आर्थिक सहयोग होते हुए भी ब्रिटेन आज भारत के विरुद्ध विरोधी रुख अपना रहा है। राजनीति समयानुसार अपना रंग और रूप बदलती है और उसका देश की आर्थिक नीतियों पर भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यकता यह है हम अपनी अर्थनीति में किसी एक देश पर बहुत अधिक निर्भर न हो जायं। आज से कुछ मास पूर्व हमने श्री ब्रह्मदत्त का एक लेख प्रकाशित किया था, जिसमें इस बात पर बल दिया गया था कि कोई विदेश हमारी अर्थ-नीति पर इतना प्रभावकारी न हो जाय कि किसी समय वह हमारा अहित कर सके। जब हमारे राजनैतिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे तो यह स्वाभाविक है कि उसका हमारे आर्थिक सम्बन्धों पर प्रभाव पड़े। इसलिए आज हमें इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए कि ब्रिटेन हमारे आर्थिक विकास में कितना बिगाड़ कर सकता है?

इस प्रश्न का एक दूसरा पहलू यह है कि आज राष्ट्र-मंडल में केवल ब्रिटेन और भारत ही नहीं हैं, आस्ट्रेलिया और कनाडा के अतिरिक्त अन्य भी अनेक एशियाई व अफ्रीकी देश उसके सदस्य हैं। राष्ट्रमंडल की सदस्यता इन सब देशों के साथ हमारे सम्बन्धों को बढ़ाती है। राष्ट्र-मंडल से सम्बन्ध विच्छेद इन देशों के साथ भारत के आर्थिक व व्यापारिक हितों पर क्या प्रभाव डालेगा, यह भी कम विचारणीय नहीं है। हमारे एक उत्साही वक्ता ने राष्ट्रमंडल से ब्रिटेन को ही निकालने की सलाह दी है, किन्तु यह कहां तक सम्भव है? वस्तुतः इस समस्त प्रश्न पर इसके सब पहलुओं को देखते हुए शान्ति से विचार किया जाना चाहिए। हमें यह सोचना चाहिए कि राष्ट्रमंडल छोड़ने से अन्ततोगत्वा हमें क्या लाभ और क्या हानि होगी। आज हम अपने व्यापार के लिए ब्रिटेन पर बहुत निर्भर हैं। आज की स्थिति का लाभ उठाकर हमें एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों से अपना व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ाना चाहिए। १९६४ में भारत ने कुल ८०० करोड़ रुपये का निर्यात किया है। किन्तु अफ्रीकी देशों को इसमें से केवल ४८ करोड़ रुपये का निर्यात हुआ है। हम जितना अधिक निर्यात अन्य देशों को करने लगेंगे, उतना ही ब्रिटेन पर कम निर्भर हो जायेंगे।

## भारत का महान् अर्थशास्त्री

(पृष्ठ ५७६ का शेष)

दुर्लभ समन्वय था। उन्होंने देश के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। श्री प्रवीणचन्द्र गांधी संचालक देना बैंक के शब्दों में उनके देहावसान से देश का एक महान शक्तिशाली बैंकर, वित्तीय समस्याओं का महान विद्वान और व्यापारिक समाज का एक योग्य नेता चला गया। रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री भट्टाचार्य के शब्दों में श्री आफ का देहावसान देश के आर्थिक जीवन और विशेषकर बैंक समाज की भारी क्षति है। इण्डियन मर्चेन्ट्स चैम्बर के अध्यक्ष श्री नारियलवाला के शब्दों में श्री आफ स्वतंत्र साहस और उद्यम के निर्भीक प्रवक्ता थे। उन्हें वित्तीय प्रश्नों का गम्भीर ज्ञान था। उनकी सम्मति उन क्षेत्रों में भी ध्यान से सुनी जाती थी, जो उनसे भिन्न मत रखते थे।

## रक्षा, कृषि और विकास

(पृष्ठ ५७२ का शेष)

जब भी चाहें वे उसे बेच सकेंगे या तोहफे के तौर पर दे सकेंगे। इसके साथ ही इस सोने से उन्हें आमदनी भी होने लगेगी।

आज के संकट के समय में विदेशी मुद्रा एक और जरिए से भी मिल सकती है। हमारे बहुत से देशवासी विदेशों में रहते हैं और वे मुल्क की काफी मदद कर सकते हैं। मैं जानता हूँ कि उनके दिलों में भी वैसी ही भावनाएं हैं, जैसी हमारे दिलों में है। बल्कि वे हम से कहीं ज्यादा गहराई से आज के हालात को महसूस कर रहे हैं, क्योंकि वे अपने देश से दूर हैं। चाहे ऐसे लोग बाहर जाकर बस गये हों, या कुछ समय के लिए देश से बाहर गए हों, वे अक्सर इस देश में अपने रिश्तेदारों और दूसरे लोगों को पैसा भेजते रहते हैं। लेकिन आज जबकि देश एक बड़े संकट से गुजर रहा है, मैं विदेशों में रहने वाले सभी भारतीयों से अपील करता हूँ कि वे विदेशी मुद्रा भेजें। ऐसा करने वालों को अनेक सुविधाएं भी दी जाएंगी।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जन-संख्या और अन्न समस्या

प्रो० आर० एस० तिवारी

**आज की गम्भीर समस्या पर स्वतंत्र विस्तृत अध्ययन**

वर्तमान भारत के सम्मुख दो विकट समस्यायें हैं। एक है जनसंख्या वृद्धि को रोकने की, दूसरी है खाद्यान्न वृद्धि की। वास्तव में दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, किन्तु दोनों पर समान महत्व देना आवश्यक है। कोई भी व्यक्ति भुखमरी पसन्द नहीं करता, फिर भी अप्रत्यक्ष रूप से अनेक लोग इस भयंकर महामारी को आव्हान देते रहे हैं। अगर हम अन्य दूसरे समृद्ध राष्ट्रों को देखें तो ज्ञात होता है कि उन्होंने इस समस्या का पूर्ण और सही निदान खोज लिया है। अमेरिका के गेलब्रेथ ने 'एफलुएंट सोसाइटी (The Affluent Society) में उल्लेख किया है "अमेरिका में अधिक व्यक्ति कम भोजन की अपेक्षा अधिक भोजन के कारण मरते हैं।" इसके विपरीत हम अकाल सदृश परिस्थिति का सामना कर रहे हैं। इसका प्रमुख कारण हमारी बढ़ती हुई जनसंख्या है। १८०० में विश्व की जनसंख्या १ अरब थी, जबकि आज यह २.८ अरब हो गई है। संयुक्त संघ की विशेषज्ञ समिति का अनुमान है कि इस शताब्दी के अंत तक विश्व की जनसंख्या दुगनी हो जावेगी। माल्थस ने इसी आधार पर अति जनसंख्या के भूत के भय से हमें अवगत कराया था, यद्यपि उसके सिद्धांत की तीव्र व कटु आलोचना हुई है। इसके विपरीत मार्क्स जनसंख्या वृद्धि से रंचमात्र भी भयभीत नहीं था। उसका कथन था—"जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि पूंजी में वृद्धि है और प्राविधिक प्रगति के इस युग में अति जनसंख्या की कोई समस्या नहीं हो सकती।" किन्तु आधुनिक समय में बर्ट्रेंड रसेल का यह कथन इसके ठीक विपरीत है—"विश्व व्यापी अति जन संख्या से उत्पन्न भुखमरी से अधिक और अन्य कोई कारण नहीं है जो, उदजन बम के युद्ध को जन्म दे।" इतने पर भी मनुष्य का आशावाद सदैव उसके साथ रहता है, जो कि ब्रिटिश अर्थशास्त्री कालिन क्लार्क के इन शब्दों में ध्वनित होता है: "वास्तविक खतरा विश्व स्रोतों के न्यून शोषण से है न कि अति जनसंख्या से।" उन्होंने अनुमान लगाकर बताया है कि विश्व स्रोत २८ अरब को, जो कि आज की जनसंख्या से १० गुनी संख्या है, भोजन देने में समर्थ हैं।

## भारत में

जनसंख्या की समस्या आर्थिक विकास से सम्बन्धित है और सापेक्षिक है। जिन देशों का विकास हो चुका है, वे इस संकट से मुक्त हैं और अविकसित तथा अर्धविकसित देश इस समस्या से ग्रस्त हैं। माल्थस के सिद्धांत पर अपने विचार प्रकट करते हुए वाकर ने कहा है—"माल्थस का सिद्धांत उसके समय में सही था। यह आज भी अर्धसभ्य और पिछड़ी जातियों में सही प्रतीत होता है।" भारत में अति जनसंख्या की समस्या का विवेचन इसी आधार पर किया जा सकता है।

भारत में विश्व की १५ प्र० श० जनसंख्या है और विश्व को केवल २.४ प्र. श. भूमि है, जो कि जनसंख्या का पोषण करेगी। पिछली दशाब्दि में जनसंख्या २१.४६ प्र० श० बढ़ी है और अनुमान है कि १९६५ में यह ४७.९३ करोड़ हो जावेगी तथा १९७१ में ५५.९२ करोड़। अर्थात् ६३ वर्षों में यह दुगनी हो जावेगी। नवीन आते हुए इन मनुष्यों को भोजन उपलब्ध कराना एक गंभीर समस्या है। इसके साथ ही हमें पाक, बर्मा, सीलोन तथा अन्य देशों से आते हुए विस्थापितों की संख्या को भी ध्यान में रखना चाहिए। हमारे सामने दो उपाय हैं; (१) जनसंख्या की इस वृद्धि को रोका जाय। (२) खाद्यान्न बढ़ाने का प्रयास किया जाय।

## जन्म निरोध

अभी तक हम मृत्यु की प्राकृतिक विधि को रोकने में बाधाएं डालते रहे हैं, अब समय आ गया है कि जब हमें जन्म की प्राकृतिक विधि में बाधा डालना अनिवार्य हो गया है, क्योंकि जनसंख्या रोकने के लिए साधारण उपाय जितने भी किए गए, कोई भी प्रभावपूर्ण नहीं हुए। सामान्य रूप से जनसंख्या नियंत्रण के लिए निम्नलिखित उपाय बताये जाते रहे हैं :—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) उच्च जीवन स्तर : जिससे लोग संतान की अपेक्षाकार के प्रति आकर्षित हों, किन्तु जीवन स्तर बढ़ाना शीघ्रता से सम्भव नहीं है और वास्तव में कम जनसंख्या होने पर ही यह बढ़ाया जा सकेगा। अतः पहले जनसंख्या कम करना आवश्यक है।

(२) सेक्स सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करना : इसके लिए शिक्षा का प्रसार अनिवार्य है, जो लोगों में जनसंख्या वृद्धि के विरुद्ध आवश्यक मनोवृत्ति उत्पन्न करे। यह भी एक दीर्घकालीन विधि है। गांव के निवासी इतने शीघ्र अपने सामाजिक ढांचे को तोड़ इस नवीन पद्धति को धर्म और नीति का आधार नहीं मान सकते।

(३) सामाजिक रीति रिवाजों में परिवर्तन : यह भी धीरे-धीरे ही संभव होगा।

(४) स्त्रियों की आर्थिक स्वतन्त्रता : यह भी पहले उपाय के सदृश गम्भीर समस्या है। आज बेकारी पुरुषों में ही इतनी अधिक मात्रा में है, जिसे दूर करना अपने आप में एक गंभीर समस्या है। यदि समस्त स्त्रियों को भी आर्थिक रूप से स्वतन्त्र कराने का प्रयास किया जाए, तो कितने अतिरिक्त रिक्त स्थान आवश्यक होंगे, यह विचारणीय है।

(५) जन्म निरोधक उपाय : इसके विरोध में भले ही कुछ कहा जावे, यह एक अनिवार्यता है, किन्तु इसके भी कई प्रकार हैं। हम माल्थस के विचारों के अनुसार इन्हें पाप तो नहीं मानते पर संयम अर्थात् देरी से विवाह और ब्रह्मचर्य का समर्थन नहीं कर सकते, क्योंकि वह अधिक अव्यावहारिक है, फिर भी इनके संबंध में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

परिवार नियोजन का प्रचार हम प्रथम योजना काल से कर रहे हैं, पर जनसंख्या वृद्धि की दर घटने के स्थान पर बढ़ती जा रही है। जितने इस सम्बन्ध में साधन हैं वे जबतक लोगों को सरलता से लगभग निर्मूल्य उपलब्ध नहीं हो जाते और लोग उनके प्रयोग के आदी नहीं हो जाते, तब तक यह भी लाभप्रद नहीं हो सकता। अशिक्षित व्यक्तियों की बात तो छोड़ ही दीजिए, शिक्षित और वे व्यक्ति जो इसका प्रचार करते हैं, स्वयं इनका प्रयोग नहीं करते, यद्यपि वे साधन उन्हें उपलब्ध हैं। इसका कारण इन साधनों के प्रयोग से ऐंद्रिय सुख में जो कमी आती है, वह उन्हें रुचिकर नहीं और न चाहते हुए भी संतानोत्पादन हो जाता है। अशिक्षित व्यक्ति तो इसे पाप और धर्म विरुद्ध मानते ही हैं और प्रयोग ठीक से न कर सकने के कारण अव्यावहारिक भी मान लेते हैं। स्वल्प सर्वे द्वारा यह ज्ञात हुआ कि अपेक्षाकृत स्त्रियां इनका प्रयोग करने के विरोध में होती हैं। स्पष्ट बात तो यह है कि अगर शीघ्रता से जनसंख्या पर नियंत्रण पाना है तो किसी न किसी प्रकार के बाध्य उपायों को काम में लाना ही पड़ेगा। लोगों की इच्छा पर छोड़ देने पर मनोवृत्ति को बदलने में जितना समय लगेगा, वह हमें कष्ट की किस स्थिति में ले जाएगा, कहा नहीं जा सकता।

दिसम्बर १९६३ में संयुक्त राष्ट्रसंघ संस्था द्वारा आयोजित एशियाई जनसंख्या सम्मेलन दिल्ली में हुआ था। इसमें इस समस्या पर विचार किया गया। उसमें एक प्रश्न उठा—"जापान किस प्रकार जनसंख्या की वृद्धि को १ प्रतिशत तक गिरा सका है, जबकि हमारे यहां २.१ प्रतिशत वृद्धि की दर है व अन्य एशियाई देशों में भी अधिक ही है ? इसके उत्तर में जो जानकारी मिली, वह जरा चौंका देने वाली अवश्य हो सकती है पर है, अचूक—वैधानिक गर्भपात। वहां पर १९४९ में १ लाख गर्भपात हुए जो बढ़ते-बढ़ते १९५३ में १० लाख हो गये और तबसे यह संख्या स्थिर बनी हुई है। इसके अतिरिक्त भी अनेक और होते होंगे, जिनका सरकारी हिसाब उपलब्ध नहीं हो पाता। इतने बड़े पैमाने पर इस कठोर विधि को अपनाने का कारण आर्थिक कष्टों से मुक्ति पाने की लालसा ही रहा है। भारतीय प्रतिनिधि श्री नन्दा ने इसे भारतीय वातावरण के अनुपयुक्त बताया। किन्तु इस सम्बन्ध में विस्तृत विवरण प्राप्त करने हेतु एक केन्द्रीय समिति महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री श्री शांतिलाल शाह की अध्यक्षता में स्थापित की गई है जिसमें भिन्न-भिन्न अंगों, वर्गों और अन्य विभागों के व्यक्ति हैं, जो इसके विभिन्न पहलुओं पर अपना विवरण प्रस्तुत करेंगे। यहां पर हम इसके कुछ प्रभावों का अनुमान तो लगा ही सकते हैं।

(१) स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मां के लिए बहुत हानिप्रद होता है और कभी २ उसकी मृत्यु तक के लिए



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरदायी होता है। जापानी परिवार नियोजन संघ ने व्यक्त किया है कि जापानी सरकार इस समय जापानी माताओं के स्वास्थ्य पर पड़ रहे बुरे प्रभाव से चिन्तित है।

(२) धार्मिक दृष्टि से भी इसे हम अनुपयुक्त पाते हैं। हिन्दुओं के लिए तो यह घोर पाप है।

(३) मनोवैज्ञानिक आधार पर भी इसका प्रभाव मां पर बड़ा विपरीत पड़ना स्वाभाविक है। यह मातृत्व के ऊपर एक बड़ी चोट है।

(४) सामाजिक दृष्टि से देखने पर सबसे बड़ा भय अनैतिकता के प्रोत्साहन को है। और तब प्रश्न उठता है क्या हम अविवाहित मातृत्व की समस्या उत्पन्न करना चाहते हैं। क्या इतनी आपत्तियों को महत्त्वहीन माना जा सकता है? अगर नहीं तो फिर किसी अन्य उपाय की खोज करनी पड़ेगी।

## अनिवार्य शल्यक्रिया

इस सम्बन्ध में एक सुझाव है अनिवार्य वंध्यीकरण का। तीन बच्चों के पश्चात वैधानिक रूप से व्यक्ति को अपनी अथवा पत्नी की शल्य क्रिया करवाना अनिवार्य कर दिया जाए, यद्यपि इसके विरोध में भी लोगों ने अनेक तर्क प्रस्तुत किए हैं। जैसे यदि तीनों बच्चों की मृत्यु हो जाए, तब नया विवाह करने पर भावी पत्नी को संतान सुख से कैसे वंचित रखा जाए? आदि। किन्तु इन अपवादों (भले ही अधिक संख्या में हों) पर ध्यान देना बेकार है और जनसंख्या नियमन हेतु यह आवश्यक प्रतीत होता है। किन्तु भारतीय वर्तमान प्रजातंत्रीय ढांचे में यह विधि कितनी सफलता से लागू की जा सकती है, निश्चय ही विचारणीय है। क्या शासन अपने विरुद्ध वातावरण बनने से भयभीत नहीं होगा?

अतः एक और सुझाव है, जन्म कर अर्थात तीसरे बच्चे के बाद कर लगा दिया जाय। किन्तु स्पष्ट है कि यह किसी प्रकार भी प्रभावपूर्ण लाभ नहीं दे सकेगा, बल्कि लोगों के जीवन-स्तर को गिराने में ही सहायता पहुंचाएगा, क्योंकि निर्धनों के संतान अधिक होती है अतः यह कर प्रति-गामी प्रकृति का होगा।

(आगामी अंक में समाप्य)

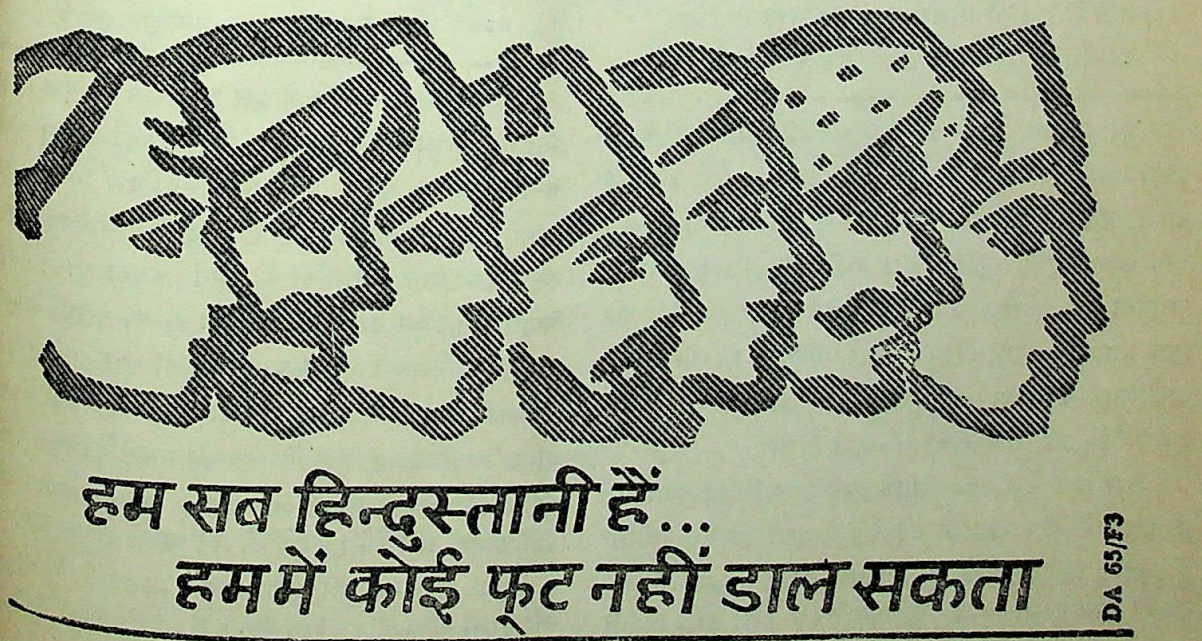




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# एक ही राम बाण—ग्रामदान

कोई मुझसे पूछता है कि शराब बन्दी के लिए क्या करना होगा ? मैं कहता हूँ कि शराब बन्दी के लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि खादी कैसे बढ़ेगी ? तो मैं कहता हूँ कि खादी बढ़ाने के लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि गांव में अच्छी तालीम कैसे मिलेगी ? तो मैं कहता हूँ कि अच्छी तालीम के लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि सीमा पर 'स्मगलिंग' (तस्कर व्यापार) होता है, चोरी होती है, उसे कैसे रोका जाय ? तो मैं कहता हूँ कि उसके लिए सीमा का हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि गांव का आरोग्य कैसे बढ़ेगा ? तो मैं कहता हूँ कि

---

कार्ल मार्क्स ने मजदूरों से कहा कि तुम्हें खोने का कुछ नहीं है, सिवा अपनी बेड़ियों के। उसी भाषा में मैं कहूँगा कि ग्रामदान में गरीबों को कुछ खोना नहीं है, सिवा अपनी गुलामी के। यह समझने की बात है। उसमें बड़ा मालिक छोटा मालिक, भूमिहीन सब एक स्तर पर आ जाते हैं। तीनों ग्रामसभा को मालकियत सिपुर्द कर देते हैं। इसलिए इसमें सब सुरक्षित हैं।

---

गांव का आरोग्य बढ़ाने के लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि देश का उत्पादन कैसे बढ़ेगा ? तो मैं कहता हूँ कि उत्पादन बढ़ाने के लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि हिन्दुस्तान में शांति स्थापना कैसे होगी ? तो मैं कहता हूँ कि उसके लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा। कोई पूछता है कि चीन और पाकिस्तान का मुकाबला कैसे करेंगे ? तो मैं कहता हूँ कि उसके लिए हर गांव ग्रामदान करना होगा।

इस तरह देश की तमाम समस्याओं का समाधान ग्रामदान में है। बाबा ने बड़े बड़े नेताओं को यह चुनौती दे रखी है कि वे बतायें अगर इससे आसान, कारगर और जल्दी होने वाली कोई तरकीब उनके पास हो। डाक्टर

(पृष्ठ ५८४, कालम २ पर)

# ग्रामदान आंदोलन तूफान कब बनेगा ?

आचार्य विनोबा और उनके सर्वोदयी साथी ग्रामदान आंदोलन को एक प्रबल तूफान के रूप में चलाना चाहते हैं। भाषणों व पत्रों में इस तूफान की बहुत जोरों के साथ चर्चा की जा रही है। बिहार में आचार्य विनोबा का दौरा तूफानी कहा जा रहा है। वे बिहार से ही ७००० गांव दान में मांग रहे हैं। यह आंदोलन सफल और सबल हो, यह सभी चाहते हैं, किन्तु इसका कार्य उस गति से नहीं हो रहा, जिस गति से सन्त विनोबा चाहते हैं। उनके भाषणों में स्पष्ट व्यथा के दर्शन होते हैं। "रांची जिले में यदि १०७ ही ग्राम मिलने हैं तो मैं रांची से हाथ धो लूंगा और दूसरे जिलों में जोर लगाऊंगा।" रोज दस ग्रामदान का औसत हो तो उससे क्या हो जायगा ?

## १९५८ ग्रामदान

१० अक्तूबर १९६५ तक कुल ९५५९ ग्रामों का दान हुआ है। उड़ीसा में २७०० तथा बिहार और महाराष्ट्र में क्रमशः १३४४ और १२५५ ग्रामदान हुए हुए हैं। आसाम का नम्बर चौथा है। वहां ९८२ ग्रामदान हुए हैं।

---

हमारी नम्र सम्मति में इस आंदोलन का फल मिलने में इतनी शीघ्रता की आशा करनी भी नहीं चाहिए। कोई नया आंदोलन अपने परिणामों से ही बल पकड़ता है। आज जितने ग्रामों का दान हो रहा है, समीपवर्ती गांव उनमें होने वाले परिवर्तनों को स्वयं अपनी आंखों देखना चाहते हैं। जिस तरह किसान खेती के नये तरीकों के परीक्षणों के परिणामों की एक दो फसलों तक प्रतीक्षा करते हैं, उसी तरह सभी ग्रामवासी ग्रामदान की स्थिति में भी परिवर्तन देखकर ही कुछ निश्चय कर सकते हैं। आज एका-एक वे ग्रामदान के महत्त्व को केवल जबानी जमाखर्च से अधिक नहीं समझेंगे। कहने को कह सकते हैं, पर ग्रामदान के महत्त्व हृदयंगम तभी होंगे, जब वे ग्रामदान के घोषित परिणामों को अपनी आंखों देख लेंगे। इसके लिए आवश्य-

(पृष्ठ ५८४, कालम १ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

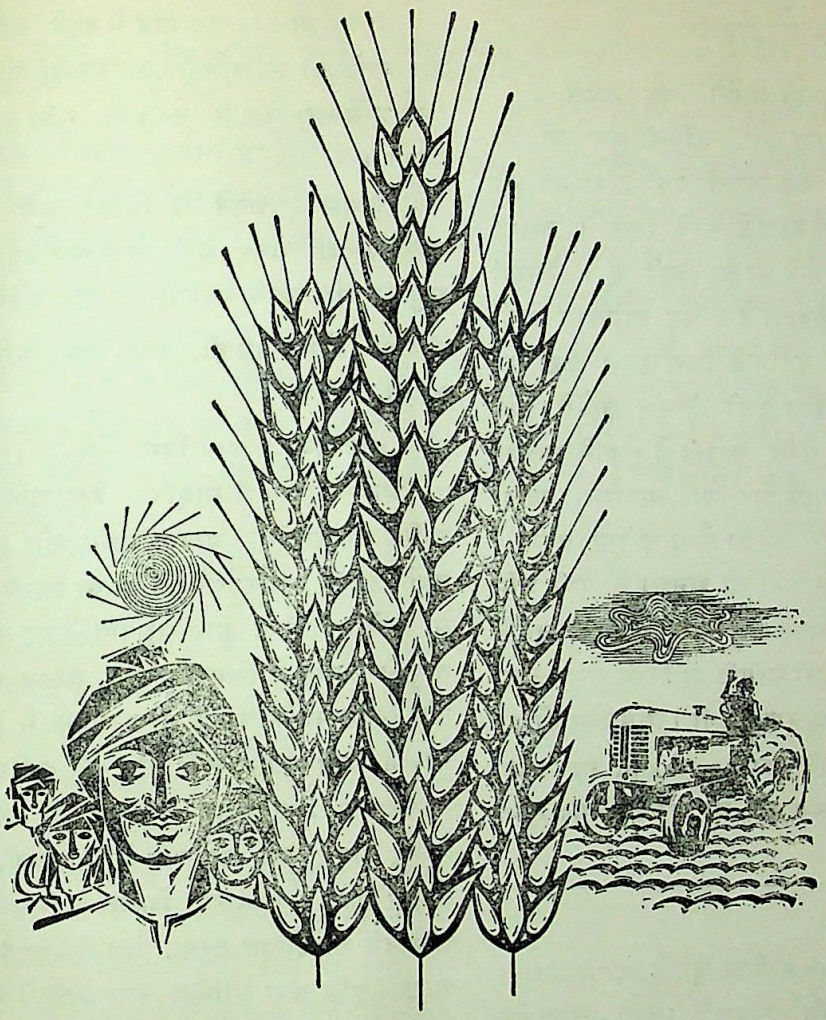

# समृद्धि का मूल उपकरण तेल

पैट्रोल द्वारा प्राप्त शक्ति से चलने वाले ट्रैक्टर, लोडर, यांत्रिक हल और तरह तरह के औज़ार व मशीनों के उपयोग ने मनुष्य की अन्न उत्पादन क्षमता को कई गुना बढ़ा दिया है। पैट्रोल के अन्य उत्पादनो से ज़मीन को उपजाऊ बनाया जाता है और फसलों को कीड़े-मकोड़े, फफूंदी तथा घासपात नाशक रोगों से संरक्षण मिलता है।

देश के सामने आज सबसे महत्त्वपूर्ण समस्या ज्यादा से ज्यादा अनाज उत्पादन की है। इण्डियनऑयल किसानो को अनाज की पैदावार बढ़ाने में सहायता करता है।

इण्डियनऑयल सभी तरह के पैट्रोल-उत्पादनों का शुद्धीकरण, नलो के बिछे जाल द्वारा वितरण तथा उनका विक्रय करता है। इस बात की पूरी कोशिश की जाती है कि खेती-बाड़ी, उद्योग-धन्दो, यातायात और दूसरे राष्ट्रीय निर्माण योजनाओ में तेल और पैट्रोल के उत्पादनो की बढ़ती हुई मांग की पूर्ति होती रहे।

INDIANOIL — राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि का प्रतीक

इण्डियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड

maa. IOC. 5227 B HIN.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ग्रामदान में क्या होगा ?

जमीन के टुकड़े २ हो जायेंगे, यह गलत है । भूदान पर यह आक्षेप लागू था, लेकिन ग्रामदान पर नहीं। ग्रामदान में जमीन की मालकियत ग्रामसभा की होती है और जमीन बेचने का हक नहीं रहता। उसका निषेध है, इसलिए टुकड़े होने का डर नहीं है। बीसवां हिस्सा भूमिहीनों को देना होता है। वह ग्रामसभा लोगों को इकट्ठा दे सकती है, भूदान के लिए हमने कहा था कि पहले दिल जोड़ने दो फिर टुकड़े भी जुड़ जायेंगे। अब ग्रामदान में तो प्रेम की शक्ति बनानी है। आगे चलकर लोगों का प्रेम और विश्वास पाने पर ग्रामसभा ज्यादा अधिकार भी ले सकती है। समाज जैसा चाहेगा, करेगा।

ग्रामदान-किसान ग्रामसभा की अनुज्ञा से ऐसी भूमि में का अपना हित या उसका कोई भाग ऋण को चुकाने के लिए सरकार या सहकारी समिति या किसी अन्य लोक-संस्था के नाम दृष्टि बन्धक रख सकेगी। ग्रामसभा को हर वर्ष ऐसी भूमि के उत्पादन का ४० वां भाग या उतना भाग जो ग्राम-सभा नियत करे, या उसका नगद मूल्य दिया जायगा।

ग्राम-सभा ग्रामदान गांव में रहने वाले किसी भूमि-हीन व्यक्ति को या भूमिहीन व्यक्तिसमूह को खेती करने के लिए भूमि-समुच्चय से यथोचित भूमि का वितरण कर सकेगी।

ग्रामसभा अपने में निहित भूमि और अपने प्रबन्ध में आई अन्य भूमि का प्रबन्ध करेगी तथा ग्राम-समुदाय और उनके सदस्यों के लिए कल्याण-कार्य हाथ में लेगी और साथ ही, अन्य सभी आनुषांगिक कार्य करेगी।

ग्राम-सभा के कार्य निम्न होंगे—

ग्राम-समुदाय में सामूहिक उत्तरदायित्व और पारस्परिक सहायता की भावना भरना और विकसित करना तथा सहकारी कार्यकर्तव्यों को बढ़ावा देना या हाथ में लेना या उनमें भाग लेना, ग्राम-समुदाय के बहुमुखी और सर्वतोमुखी विकास के लिए कार्रवाई, अनाथ बच्चों तथा बूढ़े और निर्बल व्यक्तियों के भरण-पोषण के लिए व्यवस्था, गांव में कृषि-सुधार और गांव की जमीन के सर्वोत्तम उपयोग के लिए स्कीम बनाना और उसे कार्यान्वित करना, सामुदायिक प्रयोजनों के लिए जमीन अलग रख छोड़ना, गांव के सामान्य विकास के लिए स्कीम बनाना और उसे कार्यान्वित करना, जिसमें गांव के लघु उद्योगों की अभिवृद्धि तथा स्थानीय साधन-स्रोतों और जन-शक्ति का समुचित उपयोग हो।

## तूफान कब ?

कता यह है कि जो ग्रामदान में मिल चुके हैं, उनमें मेधावी और कर्मठ सेवाभावी व्यक्ति बहुमुखी गहरा रचनात्मक कार्य प्रारम्भ कर दें। उनके प्रयत्न १५-२० दिन या महीने दो महीने में फल नहीं लावेंगे। उन्हें छः मास या एक वर्ष का समय चाहिए। उन गांवों में उत्साह व उमंग दृष्टिगोचर हो, शिक्षा का प्रचार हो, भाईचारा बढ़े, मुकदमेबाजी न हो, यथासंभव आर्थिक विकास के चिह्न शनैः शनैः दीखने लगें, तो समीप की बस्तियों, गांवों के निवासी ग्रामदान के लिए खुद उत्सुक हो जावेंगे, इसके विपरीत दान दिये गांवों में यदि कोई परिवर्तन न हुआ, तो ग्रामदान आन्दोलन अपने ऊंचे उद्देश्यों और आचार्य बिनोवा जैसे असाधारण व्यक्तित्व नेतृत्व के बावजूद नहीं बढ़ सकेगा। इसलिए खेती के पैकेज प्रोग्राम की तरह कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि आज दान में प्राप्त ग्रामों के पुनर्निर्माण में लगनी चाहिए।

—कृष्ण

## रामबाण

महालनवीस बहुत बड़े अर्थशास्त्री हैं। उनके सामने मैंने यह योजना रखी तो बोले—'आपकी यह योजना बिलकुल पसन्द है। मैंने भी इसी किस्म की बात रखी है।' धनंजयराव गाडगिल भी बहुत बड़े अर्थशास्त्री हैं। वे ग्रामदान का नाम सुनते हैं तो खुशी से नाचते हैं। कहते हैं कि 'इसमें बुनियाद है।' दूसरे नेता भी कहते हैं कि 'यह उत्तम योजना है।' जब ऐसा है तो इसे अमल में लाने की जिम्मेदारी बाबा की ही क्यों होनी चाहिए? जिस किसी को भी अपने कर्त्तव्य का भान हो, वह मेरा कार्यकर्ता है। वह फौरन पीला साफा बांधकर काम शुरू कर दे।

—बिनोवा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९६६-६७ में

# अन्न व रक्षा उद्योगों को प्राथमिकता

योजना आयोग ने राज्य सरकारों को लिखा है कि वे १९६६-६७ की वार्षिक योजना में उद्योग, सिंचाई, बिजली, शिक्षा आदि किसी भी क्षेत्र में कोई नयी योजना अथवा नया कार्यक्रम आरम्भ न करें। ग्राम तथा लघु उद्योगों में रक्षा सम्बन्धी वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता दी जाय। निर्यात तथा कृषि के लिए औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देना होगा। जिन कम आवश्यक उद्योगों पर काम अभी आरम्भ नहीं किया जा सका है, उन्हें फिलहाल स्थगित रखा जाय।

सड़कों के विस्तार के लिए सीमावर्ती इलाकों की जरूरतों की ओर विशेष ध्यान दिया जाय। परिवहन में यात्री सेवा का सरकारी क्षेत्र में विस्तार नहीं किया जायगा। शिक्षा में भी प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर अनिवार्य होने पर ही विस्तार की अनुमति दी जायगी। उच्च शिक्षा में वर्तमान व्यवस्था का विस्तार किया जायगा। नयी संस्थाएं नहीं खोली जायंगी।

खाद्यान्न, तेल और तेल की बनी वस्तुओं तथा अन्य आवश्यक जिन्स को उतारने के लिए बन्दरगाहों पर अतिरिक्त सुविधा का प्रबन्ध किया जायगा। रक्षा की दृष्टि से पीने के पानी की व्यवस्था तथा बड़े नगरों में पानी वितरण की योजना को प्राथमिकता दी जायगी। परिवार नियोजन कार्यक्रमों को पहली प्राथमिकता मिलेगी।

राज्य वित्तीय निगमों तथा राज्य औद्योगिक विकास निगमों को रक्षा से सम्बन्धित उद्योगों को कर्ज देने में प्राथमिकता देनी होगी। आवश्यक उपभोक्ता जिन्सों के उत्पादन को भी महत्व दिया जायगा, जिससे आम लोगों को कठिनाई का सामना न करना पड़े तथा कीमतें न बढ़ सकें। शीघ्र लाभ देने वाले कार्यक्रमों को, हर क्षेत्र में प्राथमिकता मिलेगी।

## सिंचाई-परियोजनाएं

सिंचाई के क्षेत्र में साधनों की कमी के कारण नयी योजनाओं को हाथ में न लेकर चालू परियोजनाओं को ही तेजी से पूरा किया जाय। जिन परियोजनाओं पर अभी कम धन खर्च किया गया हो, उन पर काम धीमा कर दिया जाय। खेतों को पानी पहुंचाने के लिए नालों के निर्माण का काम तेजी से पूरा किया जाय। जहां तक बिजली उत्पादन की बात है, उसमें भी चालू परियोजनाओं को ही पूरा करने पर जोर देना होगा। नये बिजली घरों के लिए अधिक धन देना सम्भव नहीं है। विभिन्न राज्यों के बिजली केन्द्रों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम तेजी से करना होगा, जिससे बिजली की कोई कठिनाई उत्पन्न न होने पाये। औद्योगिक उत्पादन के लिए बिजली की उपलब्धि हर तरह से बनाये रखनी होगी। गांवों में सिंचाई के लिए बिजली देनी होगी।

सड़कों को जोड़ने, नये पुलों के निर्माण का काम भी तेजी के साथ पूरा करने को कहा गया है। सड़क परिवहन को बढ़ाने की कोशिश की जायगी, किन्तु सरकारी क्षेत्र में इस काम का विस्तार धीमी गति से ही हो पायेगा।

कालेजों और विश्वविद्यालयों को मुख्यतः विज्ञान की शिक्षा के लिए ही धन मिलेगा। भवन निर्माण का काम धीमा किया जायगा। चिकित्सा के क्षेत्र में प्रशिक्षण का विस्तार किया जायगा, किन्तु प्रशिक्षण की अवधि कम करने की कोशिश की जायगी। समाज कल्याण के क्षेत्र में सशस्त्र सेनाओं तथा अन्य आवश्यक राष्ट्रीय कार्यों में लगे हुए लोगों के परिवारों की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा। सीमावर्ती और पहाड़ी इलाकों के विकास का काम जारी रहेगा।

## खेती के लिए ३६ करोड़ रु०

योजना आयोग ने १९६६-६७ में खेती की पैदावार बढ़ाने का ३६ करोड़ रुपए का एक विशेष कार्यक्रम स्वीकार किया है। यह धन-राशि राज्य सरकारों को बतौर कर्ज बांटी जाएगी। इस कार्यक्रम में कुछ राज्यों में कई-कई फसलें उगाकर सिंचाई की सुविधाओं का ज्यादा लाभ उठाना, छोटी योजनाओं से सिंचित इलाकों में सघन खेती कराना



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इस वित्त वर्ष के शेष समय में तेजी से बढ़ने वाली फसलें उगाना शामिल है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत बड़े, दरम्यानी और छोटे साधनों से सिंचित कुल ३० लाख एकड़ जमीन आएगी। इस क्षेत्र में आलू की खेती एक लाख एकड़ बढ़ाई जाएगी।

## कार्यक्रम की रूपरेखा

राज्यों के १९६५-६६ और १९६६-६७ वर्षों के कार्यक्रमों की रूपरेखा भी बना ली गई है। इसके अनुसार भवनों का निर्माण कम-से-कम होगा, सामुदायिक कार्यों के लिए मिलने वाली राशि का ज्यादा-से-ज्यादा हिस्सा खेती के विकास पर लगाया जाएगा और पैदावार बढ़ाने में ग्राम कार्यकर्ताओं का उपयोग किया जाएगा। खेती के विकास में लगी विभिन्न संस्थाओं में सामंजस्य बढ़ाया जाएगा।

रबी की फसल की पैदावार बढ़ाने का अभियान भी चलाया जाएगा। इसमें किसानों को ऋण, खाद, सुधरे हुए बीज, फसल की रक्षा में सहायता और सुधरे हुए कृषि-यंत्र उपलब्ध किए जाएंगे। इस फसल में आलू, शकरकंद, टेपिओका, शाक-सब्जी और जल्दी लगने वाले फल उगाने पर जोर रहेगा।

सेना की जरूरतों की पूर्ति के ख्याल से चुने हुए इलाकों में मुर्गी व मछली पालन और दुग्ध चूर्ण तैयार करने के विशेष कार्यक्रम चलाए जाएंगे।

## ७० लाख अतिरिक्त टन

सरकारी सूत्रों के अनुसार देश में चौथी योजना के अन्त तक गेहूँ का उत्पादन २ करोड़ टन हो जाएगा। यह १९६४-६५ के उत्पादन के, जो १ करोड़ ३० लाख टन का है, मुकाबले ५० प्रतिशत वृद्धि होगी।

७० लाख टन का अतिरिक्त उत्पादन उस कुल गेहूँ का स्थान लेने के लिए पर्याप्त होगा, जो कि इस समय देश में आयातित किया जाता है। गेहूँ के उत्पादन में यह वृद्धि मैक्सिको के दो नये किस्म के गेहूँ की फसल उगाए जाने के फलस्वरूप प्राप्त होगी। गेहूँ की ये नई किस्में चौथी योजना के अन्त तक १ करोड़ एकड़ के क्षेत्रफल में बोई जाएगी। विशेषज्ञों के अनुसार यदि किसानों को इन नये किस्म के बीजों के अनुकूल उर्वरक तथा सिंचाई की व्यवस्था हो गई, तो केवल १ करोड़ एकड़ भूमि में ही २ से ३ करोड़ टन तक का उत्पादन हो सकता है। ( ●

## लेखकों से

अनेक कृपालु लेखक 'सम्पदा' के लिये अपने अमूल्य लेख भेजने की कृपा करते रहते हैं। हम उनके कृतज्ञ हैं, किन्तु यदि वे निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंगे तो हमें सुविधा होगी—

१. 'सम्पदा' अर्थशास्त्र की पत्रिका है इसलिए इसमें भावुकता की अपेक्षा आर्थिक तथ्यों और अंकों को प्रमुखता मिलनी चाहिए।

२. किसी विवादग्रस्त प्रश्न का विवेचन भी केवल भावुकता के आधार पर नहीं, बल्कि तर्क के आधार पर होना चाहिए।

३. 'सम्पदा' वाद विशेष से बंधी हुई नहीं है। हम पाठकों के विचार और स्वतंत्र चिन्तन के लिए सभी विचारधाराओं के लेख देते हैं, केवल उनका मुख्य दृष्टिकोण राष्ट्रीय हित होना चाहिए। हमारी नम्र सम्मति में कोई भी एक वाद गौण है और राष्ट्रीय हित सर्वोपरि है।

४. कुछ लेखक केवल सरकारी रिपोर्ट का विवरण मात्र देना चाहते हैं। इस विवरण के साथ विवेचन भी अधिक आवश्यक है, जिससे पाठक को नई दृष्टि मिल सके।

५. लेख संक्षिप्त हो, भूमिका कम हो, प्रस्तुत विषय ही प्रमुख हो।

६. कागज के एक ओर चौड़ा हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में स्याही से लेख लिखा जाना चाहिए।

—सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योगों में आत्मनिर्भरता

स० गो० वर्वे, सदस्य योजना आयोग

नये संकटकाल के कारण अब यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि उद्योगों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए भरपूर शक्ति से यत्न किया जावे। द्वितीय योजना के आरम्भ से ही उद्योगों में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना हमारी आयोजन सम्बन्धी नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है। आर्थिक आत्मनिर्भरता के विकास की दिशा में पहले से ही कई कदम उठाए जा चुके हैं। उदाहरण के लिए, इस्पात तेल या मशीनें बनाने की क्षमता अथवा यातायात और संचार साधन सम्बन्धी साज-सामान अथवा बिजली पैदा करने के साज-सामान की बात ही ले लीजिए। इन सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पिछले आठ या दस सालों में हमने बड़ी प्रगति की है।

अभी हाल की लड़ाई के दौरान जब विदेशी सहायता को रोक देने की धमकी दी गई तो इस बात की सम्भावना से पाकिस्तानी प्रवक्ता एकदम घबरा गये। उन्होंने कहा कि भारत अपने देश में ८० प्रतिशत प्रतिरक्षा सम्बन्धी सामान बना सकता है, जबकि पाकिस्तान की यह क्षमता केवल २० प्रतिशत है। हमने केवल सम्पत्ति का उत्पादन बढ़ाने की ओर ही यत्न नहीं किया, बल्कि सम्पत्ति के उत्पादन के साधनों की और अधिक बड़ी क्षमता का निर्माण करने और उनका एक व्यापक आधार तैयार करने का यत्न किया है।

## इस्पात व तेल

आधुनिक औद्योगिक विकास का मुख्य आधार इस्पात है। पिछले आठ वर्षों में हम एक ऐसा कार्यक्रम क्रियान्वित करते रहे हैं, जिसका उद्देश्य इस्पात का इतना उत्पादन करना रहा है, जिससे देश में इस्पात की बढ़ती हुई मांग को पूरी तरह से पूरा किया जा सके। अब हम और अधिक बढ़िया किस्म के इस्पात और मिश्र इस्पात (अलाय स्टील) को भी तैयार करने लगे हैं। और अधिक उन्नत इंजीनियरिंग का सामान जैसे मोटर गाड़ियां, बिजली का सामान, रेफ्रीजरेशन का सामान, प्रेशर वेसल आदि विविध प्रकार की चीजों के विकास के लिए विशेष प्रकार के इस्पातों का बहुत अधिक महत्व है।

इस समय हम अपनी आवश्यकताओं का लगभग एक-तिहाई अशोधित तेल तैयार कर रहे हैं। तेल की खोज की दिशा में यह नया कार्य १९५७ में आरम्भ हुआ था। तेल की खोज और तेल सम्बन्धी साधनों के दोहन के सम्बन्ध में हमारी जितनी क्षमता है और हमारी जितनी भौतिक सम्भावनाएं हैं, उनका पूरी तरह से उपयोग करते हुए यदि हम भरपूर विकास कार्य करते रहें, जैसा कि अब तक करते रहे हैं, तो हम तेल के सम्बन्ध में बड़ी जल्दी अधिक से अधिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर लेंगे। यदि तेल का आयात बिल्कुल ही बन्द हो जाए, (जिसकी सम्भावना नहीं है) तब भी हम देश में अपना प्रतिरक्षा कार्य तथा अपनी जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति, आगे के कई महीनों तक, बल्कि अनिश्चित काल तक, कर सकते हैं।

## मशीन निर्माण

हाल के वर्ष में हमने मशीन बनाने की काफी बड़ी क्षमता का निर्माण किया है। मैं इस बारे में कुछ थोड़े से उदाहरण दूंगा। अब हम चीनी बनाने की अधिकांश मशीनरी, सीमेन्ट मशीनरी, सूती कपड़ा मशीनरी, सामान्य प्रकार के मशीन टूल, डीजल इंजन, मालगाड़ी और सवारी गाड़ी के डिब्बे, बाइसिकलें, पंखे, सिलाई की मशीनें, बिजली के पम्प और बहुत सारी दूसरी चीजें बनाने लगे हैं।

उपभोग की वस्तुओं के सम्बन्ध में भी अब हम सामान्य आवश्यकताओं की बहुत सारी चीजें जैसे चीनी, सीमेन्ट, कागज अनेक प्रकार का रबर का सामान, औषधियां, सेल्यलोस के रेशे आदि भी बनाने लग गए हैं।

आत्मनिर्भरता का अगला और अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण पहलू मशीन बनाने की क्षमता है। आत्मनिर्भरता के इस पहलू के बारे में भी काफी प्रगति की गई है और अगले पांच वर्षों में और भी अधिक प्रगति करने का



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार किया जा रहा है। इस प्रकार बिजली का सामान पैदा करने की क्षमता अर्थात टरबाइन, बायलर, ट्रांसफार्मर स्विचगियर आदि चीजें बनाने की क्षमता चौथी योजना में हासिल कर ली जाएगी, जिससे हम करीब-करीब आत्म-निर्भरता के स्तर पर पहुँच जाएंगे। इसके बाद प्रति वर्ष अतिरिक्त बिजली के लिए हमारी सारी आवश्यकताएं देश में ही पूरी हो जाएंगी।

यातायात को ही ले लीजिए। मालगाड़ी और सवारी गाड़ी के डिब्बे बनाने की दिशा में हम अब भी आत्म-निर्भर हैं और वास्तव में हम उनका निर्यात भी कर सकते हैं। हम आज भी डीजल और बिजली के इन्जन बनाते हैं, परन्तु इनमें बाहर से मंगाए हुए पुर्जों की मात्रा काफी अधिक है। इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में भी चौथी योजना के अन्त तक हम ७० से ८० प्रतिशत तक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर लेंगे।

## रासायनिक खाद

अगले तीन या चार वर्षों में रासायनिक खादों के बारे में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए रासायनिक खाद तैयार करने की बड़ी भारी क्षमता का हम निर्माण कर रहे हैं। किन्तु हमें और अधिक आगे देखना चाहिए और हर साल खुद ही एक या दो रासायनिक खाद के नये कारखाने खड़े करने की क्षमता का विकास करना चाहिए। चौथी योजना के अन्त तक हम इस प्रकार की क्षमता का विकास कर लेने की योजना बना रहे हैं। आज हम मशीन टूलों की अपनी आधी आवश्यकताएं स्वयं ही पूरी कर लेते हैं। चौथी योजना के अन्त तक हमें ७५ से ८० तक प्रतिशत प्रगति करने की उम्मीद है।

आजकल मोटर गाड़ियां भारत में ही बनाई जाती हैं और इन मोटर गाड़ियों में लगे ८० से ८५ प्रतिशत पुर्जे देशी हैं। हम डीजल इन्जन, बिजली के पम्प, कम्प्रेसर, मोटरें, लिफ्ट और निर्माण सम्बन्धी अधिकांश साज-सामान बनाते हैं। गीयर बनाने की क्षमता, अधिक भारी क्रेन, अधिक बड़े कम्प्रेसर और पम्प तथा प्रेशर वसल आदि बनाने में कुछ कमियां और अपूर्णताएं हैं। चौथी योजना के अन्त तक हम इन कमियों को पूरा करने की आशा करते हैं।

यह हो सकता है कि हम आज देश में इस्पात का एक संयन्त्र खड़ा करने का एक तिहाई काम कर लें। चौथी योजना के अन्त तक हमें इस संबंध में ५० प्रतिशत या उससे भी अधिक काम करने के योग्य होने की उम्मीद है। मैं आशा करता हूँ कि सरकार छठे इस्पात संयन्त्र का पूरे का पूरा डिजाइन तैयार करने और उसे खड़ा करने का काम हमारे अपने इंजीनियरों को सौंपने का निश्चय करेगी।

## चुनौती

अब हम विदेशी सहायता से पेट्रोल को साफ करने के कारखाने खड़े कर रहे हैं। यह एक नया क्षेत्र है और निस्सन्देह हमें इसमें सहायता की आवश्यकता है। किन्तु इसके साथ-साथ हमें डिजाइन बनाने तथा इन्जीनियरिंग सम्बन्धी क्षमता का निर्माण कर लेना चाहिए, ताकि भविष्य में इस प्रकार के कारखाने हम खुद ही खड़ा कर सकें। तेल और प्राकृतिक गैस आयोग इस आवश्यकता को अनुभव करता है और इस दिशा में कदम उठा रहा है।

निस्सन्देह मैं किसी घेरे में बन्द अथवा विदेशी सहायता के बिना बिलकुल अलग-अलग रह जाने वाली अर्थ-व्यवस्था का समर्थक नहीं हूँ। लेकिन विदेशी सहायता तो घूमने की एक छड़ी के समान होनी चाहिए न कि एक बैसाखी की तरह। जिस विदेशी सहायता का हमें आश्वासन मिल चुका है और जो हमें भेज दी गई है और हमारे पास पहुँचने वाली है, उसको अच्छी तरह से चुनी हुई दिशाओं में कुछ देर के लिए इस्तेमाल करके हम थोड़े ही समय में काफी आत्मनिर्भर हो सकते हैं। वास्तव में मैं तो इसे एक चुनौती और एक अवसर समझता हूँ।

हमारा एक विशाल देश है, जहां प्राकृतिक साधनों के रूप में बड़ी व्यापक और विविध प्रकार की प्रकृति की देन मौजूद है। कुछ अलोह धातुओं, गन्धक और फास्फोरस और कुछ अन्य थोड़ी सी चीजों को छोड़ कर, हमारे यहां प्रायः प्रत्येक चीज के लिए, जिसकी एक आधुनिक औद्योगिक समाज को आवश्यकता होती है, प्राकृतिक साधन विद्यमान हैं। इसलिए हमारी आर्थिक नीति के लिए आत्मनिर्भरता प्राप्त करना पूरी तरह से एक व्यावहारिक ध्येय है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु आत्मनिर्भरता का यह अर्थ नहीं है कि हमें किसी भी चीज की जरूरत हो, वह हम स्वयं ही तैयार कर सकें। सामान्य समय में दुनिया का कोई भी देश अपनी आवश्यकता की हर चीज तैयार नहीं करता। दरअसल ज्यों-ज्यों उद्योग का विकास होता है और समृद्धि बढ़ती है, त्यों-त्यों व्यापार का आकार भी बढ़ता जाता है। देश का आयात घटता नहीं, बल्कि दरअसल उद्योग के विकास के साथ वह बढ़ता है। किन्तु आत्मनिर्भरता के दो अर्थ हैं : एक किसी संकट काल में जितनी देर तक आवश्यक हो, उतनी देर तक हम खुद अपना काम चला सकें। दूसरे पर्याप्त मात्रा में निर्यात द्वारा हम आवश्यक विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकें, जिससे हम अपने लिए आवश्यक वस्तुओं का आयात कर सकें और यह कार्य हम सामान्य व्यापारिक प्रणालियों द्वारा करने के योग्य हों और इस कार्य के लिए हमें विदेशी ऋणों या सहायता पर निर्भर नहीं होना पड़े। राष्ट्रीय नीति के अनुकूल विदेशी विनियोग का हमेशा स्वागत है, क्योंकि इससे उपलब्ध विनियोग साधनों में वृद्धि होती है और इस विदेशी विनियोग के मिलने से विकास की गति तेज होने में सहायता मिलती है। किन्तु विदेशी सहायता के बन्द हो जाने का यह अर्थ नहीं होना चाहिए कि हमारे ऐसे आयात ही सूख जाएं, जिनके बिना हमारी अर्थव्यवस्था ही अवरुद्ध हो जाएगी।

# भारत औद्योगिक विकास की दिशा में

निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है कि १९५१ से १९६४ की अवधि में भारत में उद्योग का विकास किस द्रुत गति से हो रहा है। विभिन्न इन्जीनियरिंग उद्योगों की प्रगति और विकास विदेशों से आयात को कम करने में बहुत सहायक हो रहा है। प्रथम योजना के प्रारम्भ अर्थात १९५१ में औद्योगिक क्षेत्र अधिक विकसित नहीं था। इसकी अपेक्षा तीसरी योजना के समय तक उसमें आशाजनक प्रगति हुई है:—

| वस्तु का नाम | | १९५१ | १९६४ |
|---|---|---|---|
| लोहा | टनों में | २,८७,००० | १२,००,००० |
| स्पात | ,, | | |
| टिन प्लेट | ,, | ७०,००० | |
| स्टील कास्टिंग | ,, | २२,००० | ५३,००० |
| अलम्यूनियम | ,, | ३,९०० | ५४,५४० |
| सुरमा | ,, | ३२४ | ८४० |
| तांबा | ,, | ६,९०० | ९,४,५६ |
| सीसा | ,, | ८६० | ३६२४ |
| डीजल इन्जन | संख्याएं | ७,२४८ | ७७,४७२ |
| शक्ति चालित पम्प | ,, | ४८,००० | १,६८,००० |
| सिलाई की मशीन | ,, | ३७,५०० | २,५५,३२४ |
| मशीनी औजार | ०००, रु० में | ४,७५० | २,३७,०१२ |
| प्लेन केलीको | | | |
| लूम | संख्याएं | २,२८० | ४,२७२ |
| रिंग स्प्रिंग फ्रेम | ,, | २७६ | २,१३६ |
| ग्राइंडिंग व्हील | टनों में | ३११ | ३,२६८ |
| कार्डिंग इन्जन | संख्याएं | — | १,९४४ |
| बिजली की | | | |
| मोटरें | ०००, एच. पी. | १४३ | १,३१९ |
| ट्रांस फोरमर | ०००, के. वी. ए. | १९६ | ३,३०८ |
| बल्ब | मिलियन | १.६ | ७.० |
| बिजली के पंखे | संख्याएं | २,१२,००० | ११,४२,४०० |
| रेडियो रिसीवर | ,, | ८३,००० | ४,७४,८४८ |
| वाइंडिंग वायर | टनों में | ३०० | ८,९,४० |
| रबड़ इन्स्यू- | | | |
| लेटिड केबल | लाख मीटरों में | ३७७ | ३,३३६ |
| मोटर गाडियां | संख्याएं | १२,३८४ | २३,२३२ |
| ट्रक | ,, | ९,७८८ | २८,०४४ |
| साइकिल | ,, | १,१४,२७६ | १४,०७,६२४ |
| लालटेन | मिलियन संख्याएं | ३.९७ | ४.३ |
| आयल प्रैशर | | | |
| लालटेन | संख्याएं | ६२,००४ | १,२३,६०० |
| ब्लेड | मिलियन संख्याएं | २२.९ | ८९.२ |
| ऊष्मासह ईंटें | टनों में | २३,८०० | ६,६०,००० |

(शेष पृष्ठ ६०५ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ऊर्जा उत्पादन में वृद्धि

देश की ऊर्जा की जितनी आवश्यकतायें हैं, उनका सिर्फ चार प्रतिशत ही बिजली से पूरा हो रहा है। ऊर्जा उसे कहते हैं, जिससे गर्मी और रोशनी मिलती है तथा अनेकधा मशीनें चलती हैं। कोयला, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल तेल, बिजली, जलावन की लकड़ी, कच्चा कोयला और हां, गोबर भी—इन सबसे ऊर्जा प्राप्त होती है।

हमारे देश में ऊर्जा का एक बड़ा हिस्सा औद्योगिक उत्पादन में नहीं, बल्कि घरेलू उपयोग—रसोई में और सर्दी से बचाव के लिए—खर्च किया जाता है। ऊर्जा प्राप्त करने का एक सबसे बड़ा साधन है जलावन की लकड़ी। जंगलात से भारत को ४० प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त होती है, इसी तरह, गोबर और अन्य बेकार चीजों से १५ प्रतिशत, कोयले से २२ प्रतिशत तथा तेल से ६१ प्रतिशत ऊर्जा प्राप्त होती है।

एक दौड़ते हुए आदमी को जितनी ऊर्जा की आवश्यकता होती है, उतनी सोते हुए या बैठे हुए आदमी को नहीं होती। इसी तरह उन्नतिशील अर्थतंत्र में अपेक्षया अधिक ऊर्जा चाहिए। सोवियत संघ को आधुनिक रूप देने के लिए लेनिन ने बिजली की शक्ति का महत्व पहचाना था। इसलिए हर आधुनिक राष्ट्र बिजली के साधनों के बारे में सोचता-विचारता रहता है।

भारत सरकार ने ३ जनवरी, १९६३ को ऊर्जा सर्वेक्षण समिति नियुक्त की थी। समिति में देश-विदेश के कुछ बड़े लब्धप्रतिष्ठ विशेषज्ञ और प्रशासक थे। समिति ने यह मानते हुए कि भारतीय अर्थ-व्यवस्था में प्रति वर्ष ७ प्रतिशत और औद्योगिक उत्पादन में १० प्रतिशत वृद्धि होगी, अनुमान लगाया है कि हमारी ऊर्जा की आवश्यकताएं (१९६०-६१ को आधार वर्ष मानते हुए) १९७०-७१ तक १.८ गुणा, १९७५-७६ तक लगभग २.५ गुणा तथा १९८०-८१ तक ३.५ गुणा बढ़ जाएंगी। भारत में कोयले की कुल मांग १९६०-६१ में २४.२ करोड़ मीटरिक टन थी, जो आगामी पांच वर्षों में ४३.९ करोड़ तथा १९८१ तक ८५.७ मीटरिक टन हो जाएगी।

## सात परामर्श

समिति ने जो परामर्श दिये हैं, संक्षेप में इस प्रकार हैं—

१—जंगलों की बड़ी भयंकर गति से कटाई हो रही है। जंगलों से हर साल जितना ईंधन काटा जाए, उतना ही बोया भी जाना चाहिए।

२—घरेलू उपयोग के लिए पत्थर का कोयला और लिग्नाइट (भूरा कोयला) सुहैया किया जाए, ताकि ईंधन की बचत हो और गोबर खेतों में जाए। चूहों के बारे में अनुसंधान-कार्य करवाया जाना चाहिए।

३—भारत के पास अच्छे कोयले के साधन सीमित हैं। और तेल के न्यून पर यह देश पन-बिजली के साधनों में अपेक्षाकृत समृद्ध है। इसलिए पन-बिजली का पूर्णतम उपयोग किया जाए।

४—जितना ध्यान बिजली उत्पादन की तरफ दिया जाता है, उतना ही उसके प्रेषण (ट्रांसमीशन) पर भी दिया जाए, क्योंकि प्रेषण पर पूंजी-विनियोग आयात पर बहुत निर्भर नहीं करता और इससे उत्पादन पर होने वाली बहुत बड़ी धनराशि बच सकती है।

५—भारत में बिजली के ऐसे उपकरण बनाए जावें, जिनमें विदेशी पुर्जे कम लगते हैं।

६—तापीय बिजली-घर बड़े-बड़े बनाए जाएं और गांवों में बिजली लगाने के बारे में यह देखा जाए कि राष्ट्र इस प्रकार की समाज-सेवा का कितना खर्च वहन कर सकता है।

७—कोयला-मूल्य-नीति पर पुनर्विचार किया जाए, जिससे कि उद्योग अधिकाधिक घटिया कोयला इस्तेमाल करने लगें। गहरी शाफ्टों (कुओं) वाली खानें बनाई जाएं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## भारत को विभिन्न देशों की सहायता

(करोड़ रुपयों में)

| देश | मार्च, १९६५ तक अधिकृत | मार्च, १९६५ तक किया गया उपभोग |
|---|---|---|
| ऋण | | |
| अमेरिका | ११३७.३ | ८६०.० |
| रूस | ४८४.०२ | २४४.० |
| जर्मनी (पश्चिमी) | ४००.७ | २९४.० |
| यूनाइटिड किंगडम | ३२९.२ | २४९.१ |
| जापान | १४५.० | ८२.१ |
| इटली | ६४.१ | ९.० |
| फ्रांस | ४७.६ | १३.९ |
| पोलैण्ड | ४०.३ | ९.८ |
| कनाडा | ४६.७ | २२.४ |
| चेकोस्लोवाकिया | ६३.१ | ६.० |
| यूगोस्लाविया | १९.१ | ४.३ |
| स्विटजरलैण्ड | १५.३ | २.० |
| नीदरलैण्ड | १५.८ | २.८ |
| बैलजियम | ९.६ | १.२ |
| आस्ट्रेलिया | ६.१ | २.५ |
| डेनमार्क | २.४ | ०.४ |
| स्वीडन | २.२ | — |
| आई० बी० आर० डी० | ४०३.४ | ३५८.६ |
| आई० डी० ए० | २३०.९ | ११०.७ |

## विदेशी सहायता की विभिन्न मदें

(करोड़ रुपयों में)

| | मार्च, ६५ तक अधिकृत | मार्च, ६५ किया गया उपभोग | मार्च, ६५ तक अवितरित राशि |
|---|---|---|---|
| १. शक्ति | २८३.३ | १४४.१ | १३९.२ |
| २. यातायात एवं संचार | ४८६.२ | ३९८.७ | ८७.५ |
| (अ) रेलवे | ३४८.३ | ३०९.९ | ३८.४ |
| (ब) बन्दरगाह | ३९.१ | २१.७ | १७.४ |
| (स) हवाई मार्ग, सड़क यातायात और संचार | ९८.८ | ६७.१ | ३१.७ |
| ३. आइरन और योजना | १२.६ | ९.७ | २.९ |
| ४. स्टील और स्टील योजना | ४९८.० | ३३०.२ | १६७.८ |
| ५. औद्योगिक विकास | १,९७९.९ | १,१९६.३ | ७८३.६ |
| ६. कृषि विकास | ३०.३ | १९.१ | ११.२ |
| ७. गेहूँ का ऋण | १०६.० | १०६.० | —— |
| योग | ३,३९६.३ | २,२०४.१ | १,१९२.२ |

## जर्मन नागरिक क्या खाते हैं ?

(वार्षिक औसत)

| | पूर्वी जर्मनी किलोग्राम | पश्चिमी जर्मनी किलोग्राम |
|---|---|---|
| मांस | ५६ | ६४ |
| मछली | १४ | ७ |
| मक्खन | १२ | ९ |
| वनस्पति | ११ | ९ |
| पनीर | ४.३ | ४.६ |
| अण्डे (संख्या) | १८९ | २२१ |
| दूध (लिटर) | ९२ | १०९ |
| आटा | ९६ | ७२ |
| आलू | १५९ | १२६ |
| सब्जी | ६३ | ४५ |
| फल | ४९ | ९८ |
| चीनी | ३० | ३१ |
| काफी | १.६ | ३.४ |
| वाइन × लिटर | ५.२ | १३.३ |
| बीयर× | १०० | १४७ |
| सिगरेट× | १४२५ | १९१३ |

× १५ वर्ष से ऊपर के लोगों की वार्षिक औसत खपत



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संयुक्त राष्ट्र-संघ और भारत

संयुक्तराष्ट्र संघ को स्थापित हुए २० वर्ष हो गये हैं। इस अवधि में उसे सफलताएं भी हुई हैं और विफलताओं का मुख भी देखना पड़ा है। आजकल संयुक्त राष्ट्रसंघ की पाकिस्तान पक्षपाती और भारत विरोधी प्रवृत्तियों के कारण भारत में संयुक्त राष्ट्रसंघ के प्रति असंतोष और विरोध की भावनाएं उग्र हो रही हैं। किन्तु पिछले बीस वर्षों में संयुक्त राष्ट्रसंघ का भारत के साथ क्या सम्बन्ध रहा, इस पर एक दृष्टि डालना अनुचित न होगा।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के घोषणा पत्र की रूप रेखा बनाने में भारत ने १९४५ में भाग लिया था। संघ के प्रथम ५१ सदस्यों में भारत भी एक था। संघ की प्रायः सब महत्व-पूर्ण संस्थाओं और संगठनों का भारत एक सदस्य रहा है और आज भी है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित संघ की अध्यक्षा भी एक वर्ष रही हैं।

जब तब विश्व शांति और युद्ध निवारण के लिए भारत ने संघ को पूरा सहयोग दिया है। वियतनाम या कांगो, कोरिया हो या गाज़ा, भारत का सहयोग और भाग बहुत महत्वपूर्ण रहा है। गाज़ा और साइप्रस में तो संघ की सेनाओं के अध्यक्ष भी भारतीय सेनापति ही रहे हैं।

अन्य सदस्य राष्ट्रों की तरह भारत भी संयुक्त राष्ट्रसंघ के व्यय का भार उठाता है। १९६४ में भारत ने ८८ लाख रुपया संघ को दिया है, जो उसके कुल व्यय २.०३ प्रतिशत था। संयुक्त राष्ट्रसंघ के सहायता कार्यक्रमों में भी भारत सहयोग देता है। १९६५ में भारत ने निम्न संस्थाओं के लिए निम्न राशि प्रदान करने का उत्तरदायित्व लिया।

यू० एन० स्पेशल फण्ड १.०२ करोड़ रुपया।
तकनीकी सहायता ४२ लाख रुपया।
विश्व खाद्य कार्यक्रम २३.७५ लाख रुपया।
विश्व बैंक तथा सम्बद्ध संस्थाएं २१ करोड़ रुपये।

इसके विपरीत भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसे संघ परिवार से कार्यक्रमों की पूर्ति के लिए सबसे अधिक सहायता मिली है। १९५० और १९६४ के बीच में इसे सरकारी परियोजनाओं के लिए १५६७ विशेषज्ञों का सहयोग मिला है। १४६७ भारतीय विद्यार्थियों को विदेशों में अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति दी गई है। भारत ने भी अन्य देशों में ११९३ विशेषज्ञ सहायता के लिए भेजे और १०६६ विदेशी छात्रों के अध्ययन की व्यवस्था की। १९६३ तक संयुक्तराष्ट्र संघ की ओर से भारत को १०.९ करोड़ रुपये की सहायता मिली है।

संयुक्तराष्ट्र संघ की विभिन्न संस्थाओं के स्वास्थ्य, खाद्य, संस्कृति, आदि के लिए क्षेत्रीय कार्यालय भारत में है। इनमें सैंकड़ों भारतीय कार्य करते हैं। विभिन्न संगठनों की ओर से भारत में अनेक सम्मेलन भी होते रहे हैं, जिनका आतिथ्य भारत ने किया है।

राष्ट्रसंघ के सचिवालय में २१५ भारतीय कार्य करते हैं और २१६ भारतीय विशेषज्ञ विभिन्न संस्थाओं में कार्य करते हैं। अनेक महत्वपूर्ण पदों पर भारतीय कार्य करते रहे हैं। इनमें श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, सर रामास्वामी मुदालियर, डा० बी० आर० सेन, डा० होमी भाभा, प्रो० एम० एस० थैकर, मेजर जनरल रिखी, डा० पी० एस० लोकनाथन आदि के नाम लिए जा सकते हैं। वस्तुतः पं० जवाहरलाल नेहरू ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जो ख्याति और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, उसके कारण वे राष्ट्रसंघ के नीति-निर्धारण में महत्वपूर्ण भाग लेते रहे। और उसका प्रभाव भारत और राष्ट्रसंघ पारस्परिक सम्बन्धों पर बहुत अनुकूल पड़ा।


## रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योग-वासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० ।. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

श्री रामतीर्थ योगाश्रम, बम्बई-१४




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्फुट आर्थिक विचार

## दक्षिण भारत में कागज उद्योग

दक्षिण भारत में पिछले कुछ वर्षों से कागज उद्योग बहुत विकास कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे दक्षिण भारत चीनी उद्योग में उत्तरप्रदेश और बिहार का मुकाबला करने जा रहा है, वैसे ही कागज उद्योग में भी पश्चिम बंगाल और उड़ीसा को दक्षिण भारत पछाड़ देगा। दक्षिण भारत की ८ कागजी मिलें शीघ्र ही समस्त देश के कागजी उत्पादन का ४०% कागज तैयार करने लगेंगी। बढ़ता हुआ चीनी उद्योग कागजी उद्योग के विकास में सहायक हो रहा है। चीनी कारखानों में बर्बाद होने वाली छोई कागज उद्योग के लिये कच्चा माल जितना अधिक उपलब्ध होगी, उतना ही अधिक कागज दक्षिण भारत में बन सकेगा। दक्षिण भारत की ८ मिलें अपना कार्य बढ़ा रही हैं। आगामी दो वर्षों में ही यह मिलें १७५००० टन तक कागज तैयार करने लगेंगी। दक्षिणी आर्काट जिले में अखबारी कागज का एक कारखाना खोलने की योजना विचाराधीन है, क्योंकि वहां अनेक चीनी मिलें बन रही हैं। इस तरह एक उद्योग दूसरे उद्योग के विकास में सहायता दे रहा है।

## आपातकालीन अर्थनीति

अब हमें प्रतिरक्षा पर कम से कम १००० करोड़ रु० प्रति वर्ष खर्च करने पड़ेंगे। इसके अलावा, अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना होगा। नये परिप्रेक्ष्य में देश की अर्थ-नीति में बुनियादी परिवर्तन की जरूरत है। केन्द्रीय और राज्य सरकारों को इस समय प्रतिरक्षा, कानून और व्यवस्था, अच्छी सड़कों व संचार साधनों के विकास, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सुदृढ़ मुद्रा और अच्छे प्रशासन की ओर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। व्यापक रूप से जनता की आर्थिक गतिविधियों का नियमन जरूरी है। नियन्त्रण, भारी कराधान और सैद्धान्तिक आग्रहों को जो अधिक उत्पादन के मार्ग में बाधक हैं, तिलांजलि दे दी जानी चाहिए। मिश्रित इस्पात संयंत्रों की स्थापना सैद्धान्तिक पूर्वाग्रहों के कारण नहीं हो पायी थी। अब समय है कि हम इस विषय में निर्णय लें।

—एम० आर० पाई

## बढ़ता हुआ उत्पादन और महंगाई

यह विरोधाभास ही प्रतीत होगा कि ज्यों-ज्यों देश में औद्योगिक उत्पादन बढ़ा है, त्यों २ बाहर से मंगाई जाने वाली चीजों का खर्च भी निरन्तर बढ़ता गया है, और बावजूद इस बात के देश में ऐसे कई नये उद्योग स्थापित किए गये, जिनसे ऐसा सामान मिलने की आशा थी, जो अब तक बाहर से मंगाया जाता रहा था, विदेशों से मशीनों के कलपुर्जे मंगाने के लिए विदेशी मुद्रा की आवश्यकताएं उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई हैं। यह वृद्धि इस कारण नहीं हुई कि हमारे उद्योगों ने उन ध्येयों को पूरा नहीं किया, जिनके लिए उनकी स्थापना की गई थी। असलियत तो यह है कि पहले से अधिक उत्पादन के कारण-गुण और परिमाण दोनों दृष्टियों से—बहुत थोड़ी मात्रा में बाहर से आने वाले कल-पुर्जों और कच्चे माल पर होने वाले व्यय में बहुत बड़ी वृद्धि हुई है। हाल के बरसों में कई ऐसे उद्योग स्थापित किए गये, जो अब ऐसा सामान तैयार कर रहे हैं जो अब तक बाहर से मंगाया जाता रहा था। इस तरह, आयात की जाने वाली चीजों की जगह देश में बना सामान इस्तेमाल करने का जो हमारा कार्यक्रम था, उसमें अच्छी प्रगति हुई है। तो भी इस कार्यक्रम की सफलता के कारण विदेशी मुद्रा के व्यय में वृद्धि भी हुई है।

—त्री० ना० सिंह, उद्योग मंत्री

## बढ़ती हुई जनसंख्या

संयुक्त राष्ट्रसंघ के अन्तर्गत जनसंख्या समिति के रूसी विशेषज्ञों ने यह अनुमान किया है कि भारत की जन-संख्या विश्व की जन संख्या का १५ प्रतिशत है। इस


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताब्दी के अन्त तक भारत की जनसंख्या ६० करोड हो जायेगी और इस अवधि में विश्व की जनसंख्या १६५० की अपेक्षा ३ गुना हो जायेगी।

१६ वी शताब्दी में भारतवर्ष ब्रिटेन का पराधीन राज्य था। इसकी जनसंख्या बहुत शनैः २ बढ़ी। १८६१ में भारत की जनसंख्या २३.६ करोड़ थी। आगे के ३० वर्षों में १६२१ तक इसकी जनसंख्या में केवल १॥ करोड की वृद्धि हुई। किन्तु उक्त रूसी विज्ञप्ति के अनुसार १६४७ में स्वाधीनता प्राप्ति के बाद १५ वर्षों में १० करोड़ बढ़कर १६६२ में ४५३१४७००० हो गई। इन तीन वर्षों में यह जनसंख्या करीब ४७ करोड तक पहुँच गई है।

## विदेशी मुद्रा कैसे बचायें ?

विदेशी मुद्रा को अधिक से अधिक बचाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम यथासम्भव विदेशी वस्तुओं के स्थानापन्न उन वस्तुओं से काम चलायें जो हमारे देश में ही उत्पन्न होती हैं। ऐसी कुछ वस्तुओं और उनके स्थानापन्न पदार्थों की सूची निम्नलिखित हैं :—

| खनिज | इनके लिए भारत में उपलब्ध वैकल्पिक खनिज |
|---|---|
| सुरमा | रिटेनियम, ज़िरकोनिया, प्लास्टिक |
| संखिया | प्रारंगिक संयोग पानी आरगैनिक कम्पाउण्ड्स |
| अदह (अस्बेस्टोज़) | कांच के रेशे, संश्लिष्ट पदार्थ (प्रभावशाली एवं प्रयोगात्मक विकल्प) |
| कोबाल्ट | मैंगनीज, सीसा, लोहा |
| तांबा | अलूमीनियम, स्टेनलेस स्टील |
| हीरे | संश्लिष्ट पदार्थ, सिलिकान कार्बाइड |
| ग्रैफाइट | संश्लिष्ट पदार्थ |
| सीसा | प्लास्टिक, अलूमीनियम, टिटेनियम, जस्ता संश्लिष्ट बैरोजो-लीसा, मैग्नेशियम |
| गिलट (निकल) | क्रोमियम, अलूमीनियम, मैंगनीज़ |
| फास्फेट राक | इस्पात कल (बेसिक स्लैग) |
| प्लैटिनम | सोना, प्लैटिनम के समूह की अन्य धातुयें |
| कलई (टिन) | कांच, कागज, एनेमल, अलमुनियम, जस्ता, प्लास्टिक, सीसा |
| टंग्स्टन | टिटेनियम कार्बाइड (यह विकल्प हल्का एवं सीमित है) |
| जस्ता | मिट्टी, प्लास्टिक, अलूमीनियम, मैग्नेशियम सीसा, टिटेनियम। |

—एम. एस. थैकर

## भारतीय वस्तुओं के लिए अमेरिका एक प्रमुख मण्डी

१६६४-६५ में भारत ने अमेरिका को १२१.१० करोड़ रुपये मूल्य की वस्तुएं निर्यात की हैं। किसी भी अन्य देश ने इस वर्ष अमेरिका को इतने मूल्य का माल निर्यात नहीं किया है। इस निर्यात में परम्परागत वस्तुओं जैसे जूट-वस्तुएं, चाय, काजू, लाख, चमड़ा, मसाले, अभ्रक, फेरो-मैंगनीज और सूती कपड़ा—का अनुपात लगभग ८६ प्रतिशत था। अन्य कई प्रकार की उपभोग्य वस्तुएं और हलकी इंजिनियरिंग सामग्री पहली बार अमेरिका भेजी गई हैं।

उपभोक्ता-वस्तुओं में ऊनी कालीनें, रस्सी से बनने वाली वस्तुएं, स्टेनलेस स्टील के बर्तन, हाथ-करघे के कपड़े से बनी स्पोर्ट शर्टें, जूते तथा सिल्क से निर्मित वस्तुएं शामिल थीं। हलकी इंजिनियरिंग वस्तुओं में मुख्य कास्ट आइरन के सोयल-पाइप, सिलाई की मशीनें, हाथ से इस्तेमाल किए जाने वाले औजार, मशीनी उपकरण, रबड़ टायर और ट्यूबें तथा फिटिंग इत्यादि कार्यों में प्रयुक्त होने वाली अन्य हलकी चीजें शामिल थीं।

निर्यात की गई अन्य इंजिनियरिंग वस्तुओं में, पहिए, घिसाई करने वाले पत्थर, लोहे और इस्पात की वायर-राड, एफ० आइरन कास्टिंग, नट और बोल्ट, कटलरी का सामान, ताले, इंजन-पिस्टन, प्रिंटिंग और वाइंडिंग मशीनें, बाल-रोलर और ब्रियरिंग, यान्त्रिक उपकरण, विद्युत-उपकरण, विद्युदणु-ट्यूब तथा ट्रांजिस्टर शामिल हैं। यद्यपि इनका परिमाण और इनका मूल्य काफी कम था, इनमें से अधिकांश का निर्यात परीक्षात्मक आर्डरों पर किया गया। यदि ये वस्तुएं प्रतिस्पर्धात्मक सिद्ध हुईं तो भविष्य में इनके और अधिक आर्डर प्राप्त होने की सम्भावना है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पाकिस्तान के आक्रमण से भीषण क्षति—काश्मीर और पंजाब

निरंजनलाल शर्मा

पाकिस्तान के बर्बर आक्रमण के परिणामस्वरूप जिन राज्यों को भीषण क्षति उठानी पड़ी है, उन में से दो राज्यों—जम्मू कश्मीर और पंजाब की क्षति का संक्षिप्त परिणाम यहां दिया जा रहा है। राजस्थान व गुजरात की क्षति का मूल्यांकन आगामी अंक में देने का विचार है।

काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। हजारों यात्री प्रतिवर्ष यहां की प्राकृतिक छटा निहारने के लिए यात्रा करते हैं। इसी मनोरम घाटी पर १८ वर्षों से पाकिस्तान की कुदृष्टि है। अपनी ललचाई हुई दृष्टि से पाकिस्तान ने इस मनोरम घाटी पर आक्रमण किया, घुसपैठियों को भेजा, बम गिराये और किसी न किसी प्रकार जनता के शान्त जीवन को अस्तव्यस्त किया। जो पाकिस्तान आज इस्लाम की बात का ढिंढोरा पीटकर विश्व के इस्लाम देशों का मन जीतना चाहता है, उसी पाकिस्तान ने काश्मीर की मुस्लिम जनता पर बर्बरता पूर्ण आक्रमण किये हैं। यद्यपि इस युद्ध से पाकिस्तान को लाभ की अपेक्षा हानि ही उठानी पड़ी है, किन्तु इससे काश्मीर के शांतिमय जीवन और आर्थिक गतिविधि पर प्रबल रूप से प्रभाव पड़ा है। राज्य के अनेक आय साधन और उत्पादन क्षेत्र या तो नष्ट हो गये हैं या फिर उन पर इसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में भारी प्रभाव पड़ा है।

## यात्री आय पर प्रभाव

टूरिस्ट विभाग के अनुसार पाकिस्तानी आक्रमण के कारण काश्मीर राज्य को २ करोड़ रुपये का नुकसान सहना पड़ा है। पाकिस्तानी घुसपैठियों और आक्रमण से अब तक कुल ७ करोड़ रुपये की हानि का अनुमान लगाया गया है। प्रतिवर्ष काश्मीर के नाविक, होटल मालिक, यातायात सेवक, हस्तकुटीर तथा अन्य श्रमिक बड़ी आशा और उत्सुकता से यात्रियों की प्रतीक्षा करते हैं और उनसे अपनी साल की रोजी कमाते हैं, लेकिन आक्रमण के फल स्वरूप इन सभी में कोई गतिविधि नहीं हुई है, क्योंकि मनोरंजन और यात्रा शांति के समय की सूझ है। काश्मीर में इस बार बड़ी अल्प संख्या में पर्यटकों ने यात्रा की। नवम्बर में ८४,०००-८५००० हजार यात्रियों के काश्मीर आने की सम्भावना थी, किन्तु अवस्था ऐसी है कि यह सब आशाएं धूमिल हो गई हैं। इस सबसे काश्मीर के आर्थिक जीवन पर बड़ा आघात पहुँचा है। जो लोग इन यात्रियों के बल पर ही पूरे वर्ष का जीवनयापन करते थे, उनकी उदारपूर्ति के लिए उन्हें कोई काम देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

## बड़े उद्योगों पर प्रभाव

काश्मीर में आधुनिक उद्योगों का अभाव है, किन्तु फिर भी नये उद्योगों के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं और ऐसे उद्योगों पर १० करोड़ रुपया व्यय किया जा रहा है। नये उद्योग स्थापित करने और उनके विकास के लिए सरकार प्रयत्न कर रही है। पर उनमें भी गतिरोध पैदा हो रहा है। पाकिस्तान के छम्ब क्षेत्र पर आक्रमण के फल-स्वरूप उद्योगों की उत्पादन क्षमता कम हुई है। यह क्षेत्र काश्मीर का वह भाग है, जहां से कच्चा माल उपलब्ध किया जाता है। कुटीर उद्योगों का यही आधार क्षेत्र है। पाकिस्तान के आक्रमण से कच्चा माल ठीक रूप से उद्योगों में नहीं पहुँच सका, अतः इससे उत्पादन क्षमता कम हुई। सीमेंट, कागज, कपड़ा, कृषि का सामान, मोटर पार्ट, स्टील फर्नीचर, स्टेनलैस स्टील के उद्योग या तो युद्ध के कारण बन्द रहे या फिर उत्पादन शिथिल गति से हुआ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कुटीर उद्योगों पर प्रभाव

कुटीर उद्योगों के लिए काश्मीर बड़ा प्रसिद्ध राज्य है। ऊनी शाल, कालीन तथा अन्य दस्तकारी की वस्तुएं यहां बड़ी मात्रा में निर्मित होकर देश एवं विदेश में जाती हैं। शाल उद्योग को जिसमें करीब १ लाख श्रमिक संलग्न हैं, भारी आघात पहुँचा है। इसका कारण यह है कि एक तो यात्रियों के न पहुँचने के कारण उनकी मांग ही नहीं हुई, दूसरी ओर अमृतसर भी जो कि इनकी व्यापारिक मण्डी है, इस आक्रमण का शिकार हुई। इससे वितरण व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। अधिकांश माल व्यापारियों के भंडारों में ही पड़ा रह गया। इससे विदेशी मुद्रा भी अर्जित नहीं की जा सकी। कालीन उद्योग को शाल उद्योग की अपेक्षा कम नुकसान हुआ है, क्योंकि यहां अच्छे कालीन ही बनते हैं और विदेश जाते हैं। इसलिए केन्द्र ने इसकी अच्छी व्यवस्था कर ली थी। फिर भी अन्य प्रभावों से यह बिल्कुल अछूता नहीं रह सका है।

## कृषि पर प्रभाव

पाकिस्तान ने जिन २ प्रदेशों पर आक्रमण किया, हरी-हरी लहलहाती फसलों को रौंद डाला, खड़ी फसलों में आग लगादी, इससे सरकार एवं जनता दोनों को हृदय विदारक दुःख हुआ। इस नुकसान का अनुमान ४०-५० प्रतिशत तक है। आज जब कि भारत को अन्न की इतनी आवश्यकता है, यह नुकसान हमारे लिए बड़ा दुःखपूर्ण एवं चिन्ता का विषय है। यही कारण है कि मूल्यों में वृद्धि हो गई है।

## मूल्यों पर प्रभाव

इस आक्रमण से क्योंकि उत्पादन क्षमता कम हुई है, वितरण व्यवस्था बिगड़ी है, अनेक व्यवसाय केन्द्र नष्ट हुए हैं, लोगों को समय पर व्यापार आदि की सुविधायें नहीं मिल सकी हैं। मूल्य निरन्तर ऊपर चढ़ते गये हैं। फलों के व्यापारी जिन्हें अपना माल बाहर पहुंचाना था, नियत जगह नहीं पहुँचा सके और इससे इसके उत्पादकों को करीब १ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस वर्ष फल व्यापार का अनुमान १० करोड़ रुपये तक का लगाया गया था। अन्न की बढ़ती हुई मांग से अनाज के भाव बढ़ गये हैं और राशनिंग द्वारा इस पर नियन्त्रण किया जा रहा है।

## जन जीवन पर प्रभाव

घुसपैठियों और आक्रमण के फल स्वरूप हजारों लोग बेघर हुए हैं। उनके मकान नष्ट कर दिये गये हैं, उनके व्यावसायिक केन्द्र बमों के शिकार हुए हैं। इससे जन जीवन पर आघात पहुँचा है। करीब २-२॥ लाख लोग सुरक्षा और शान्ति की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। यह समस्या १९४७ की शरणार्थी समस्या से पांचगुनी है। एक ओर तो हमारे ही प्रदेशों के लोगों की व्यवस्था करनी आवश्यक है, दूसरी ओर पाकिस्तान से छीने गये प्रदेश की जनता की भी उचित व्यवस्था करनी है। एक अनुमान के अनुसार इन शरणार्थियों को उचित व्यवस्था करने के लिए करीब १२ से १५ करोड़ रुपया तक व्यय करना पड़ेगा। इन लोगों की रोटी और रोजी का सवाल, आज इतना प्रमुख है कि सरकार को इसकी व्यवस्था के लिए कितने ही करोड़ रुपया व्यय करना पड़ेगा। बहुत बड़ी संख्या में लोग अपने सम्बन्धियों के यहां काश्मीर व दूसरे राज्यों में चले गये हैं। उनकी उचित व्यवस्था करनी होगी। उन ६०-७० हजार लोगों का, जिनके वतन पर आज पाकिस्तान काबिज है और उन ४०-५० हजार लोगों का भविष्य जिन्हें नागरिक सुरक्षा और सैनिक रक्षा की दृष्टि से स्थानान्तरित किया गया है, हिन्द-पाक राजनैतिक समझौते पर अवलंबित है और उसकी अवधि के विषय में कोई भविष्यवाणी आज नहीं की जा सकती।

इन आर्थिक प्रभावों के अतिरिक्त जनता पर मनोवैज्ञानिक रूप से बुरा प्रभाव पड़ा है। उद्योग, कृषि में इन प्रदेशों के लोगों की रुचि कम होगी। कोई भी पैसा लगाकर जोखिम उठाना पसन्द न करेगा। शान्तिकाल में ही उद्योग, कृषि तथा अन्य व्यवसाय पनपते हैं, युद्धकाल में युद्धक्षेत्र को तो आर्थिक कष्टों को ही सहन करना पड़ता है। पाकिस्तान की आक्रामक नीतियों से जहां भारत को आर्थिक दृष्टि से नुकसान हुआ है, वहां पाकिस्तान को भी भारी हानि सहन करनी पड़ी है।

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पंजाब

पंजाब सदियों और सहस्त्रों वर्षों से भारत का पश्चिमी सीमा पर जागरूक प्रहरी रहा है। देश विभाजन के बाद से यह उत्तरदायित्व पूर्वी पंजाब पर आ पड़ा है। शत्रु के आक्रमण का उसे सामना करना और उसके प्रहारों को अपनी छाती पर सहना पड़ा है। स्वभावत: पाकिस्तान की घुसपैठ और बर्बर आक्रमण की चिनगारियों से पंजाब राज्य अछूता नहीं रह सका। पाकिस्तान के इस आक्रमण का पंजाब के ३४० मील लम्बे सीमान्त प्रदेश पर आर्थिक दृष्टि से गहन प्रभाव पड़ा है। उद्योगों तथा कृषि, व्यापार की इससे जो भीषण हानि हुई है, उसका ठीक-ठीक अनुमान भी नहीं लगाया जा सका।

## उद्योगों पर प्रभाव

पंजाब उद्योगों और विशेषकर लघु उद्योगों की दृष्टि से बड़ा ही समृद्ध राज्य है। पाकिस्तानी आक्रमण के फलस्वरूप २०,३४८ छोटे और ११५ बड़े कारखानों को नुकसान पहुँचा है। इन उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों की संख्या १,२८,५३४ है। इनकी उत्पादन क्षमता प्रतिमास १०.७७ करोड़ रुपया बताई जाती है। युद्ध के परिणामस्वरूप कुछ उद्योग तो पाकिस्तानी वायु आक्रमण के बुरी तरह शिकार हुए हैं और कुछ की उत्पादन क्षमता शिथिल हो गई है। दोनों ही दृष्टियों से उद्योगों को आघात लगा है। उद्योग सम्बन्धी व्यापार भी इसके कारण शिथिल रहे हैं। इस आक्रमण से पंजाब के उद्योगों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जो नुकसान हुआ है, उसका पूरा अनुमान अभी तक नहीं लगाया जा सका है। उद्योगों को अधिक प्रोत्साहन देने के लिए अब पंजाब सरकार ने कुछ उद्योगों को कर-मुक्त कर दिया है। सरकार ने २५,००० रुपय १३ प्रतिशत ब्याज पर, ५०,००० रुपया ६.५ प्रतिशत ब्याज पर और २५ लाख रुपया ५० से कम काम करने वाले कारखानों के लिए दिया है।

## कृषि पर प्रभाव

युद्धकाल में कृषि उत्पादन की आवश्यकता जहां अधिक महत्वपूर्ण होती है, वहां युद्धकाल में कृषि को ही अधिक हानि पहुँचती है। पाकिस्तान की घुसपैठ और आक्रमण से फसलों को बड़ी मात्रा में नुकसान पहुँचा है। अमृतसर के ५८७, फिरोजपुर के ६०७ और गुरदासपुर के ३३० गांवों में फसलों पर भारी बमबारी से नुकसान हुआ है। इस नुकसान का अनुमान १.६८ करोड़ रुपया लगाया गया है।

सरकार ने इस स्थिति का मुकाबला करने के लिए बड़ी ही उदारता दिखाई है। सरकार ने अनेक करों में छूट दी है, जैसे भूमिकर और पानी। उन गांवों को जहां बम वर्षा के कारण फसलों को नुकसान हुआ है, कर मुक्त कर दिया गया है। ट्यूबवैल तथा अन्य आवश्यक उत्पादन साधनों के लिए पर्याप्त सहायता देने का भी वचन दिया है। कृषि के प्रोत्साहन के लिए आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं। जहां एक ओर सरकार अनाज की आवश्यकता का अनुभव कर आवश्यक साधन उपलब्ध करने में जुटी हुई है, दूसरी ओर जनता में भी अन्न उपजाओ की भावना प्रबल होती जा रही है।

फिरोजपुर, गुरुदासपुर और अमृतसर जिलों में ही कपास के कुल उत्पादन का ३३.१६ प्रतिशत, चावल के कुल उत्पादन का ३४.४७ प्रतिशत इन्हीं जिलों से आता है। तात्पर्य यह है कि कुल पैदावार के $\frac{1}{3}$ भाग पर लड़ाई का अत्यन्त घातक प्रभाव पड़ा है। यहां २५ से लेकर १००% तक नुकसान हुआ है।

राज्य आपातकालीन कल्याण समिति को प्रभावित नागरिकों व सैनिक परिवारों की सहायता का कार्य सौंपा गया है। नागरिक सुरक्षा के लिए १ करोड़ रु० व्यय की स्वीकृति दी गई है। होमगार्ड की व्यवस्था दृढ़ कर दी गई है। घी के सिवाय दूध और दूध की वस्तुओं की बिक्री समस्त राज्य में बन्द कर दी गई है, ताकि सेना के लिए दूध की उपलब्धि में कोई कमी न रहे। युद्ध में मारे गये ड्राइवरों की सहायता के लिए ५००० रु० की सहायता दी जा रही है, जनता की अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं इस कल्याण कार्य में सहयोग दे रही हैं।

## शरणार्थी समस्या

पंजाब सरकार ने शरणार्थियों को बसाने और उनका कारोबार चलाने के लिए करीब १० करोड़ रुपये की

( शेष पृष्ठ ६१० पर )



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# स्वस्थ जीवन

सम्पादक : श्री राधाकृष्ण नेबटिया

प्रबन्ध सम्पादक : श्री धर्मचन्द सरावगी

एक प्रति ५० पै० वार्षिक ५) रुपया मात्र

साहित्य के साथ अपने सुन्दर स्वास्थ्य के लिए कविता, कहानी, संस्मरण तथा डायरी और परिषद की गतिविधि पढ़ें। आज ही पांच रुपया भेजकर ग्राहक बन जाइए। विज्ञापन देकर लाभ उठावें। सहयोगी बन्धु अपनी नवीन कृतियां हमें भेजें।

कार्यालय :—

जैन हाऊस, ८।१ एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-१



स म्प दा

यदि आप जानना चाहते हैं कि

से आप क्या लाभ उठा सकते हैं ?

में कैसी उपयोगी सामग्री होती है ?

से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है ?

तो

दस नये पैसे के टिकट भेजकर
१९६४ की विषय सूची बुक
पोस्ट से मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा
२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६


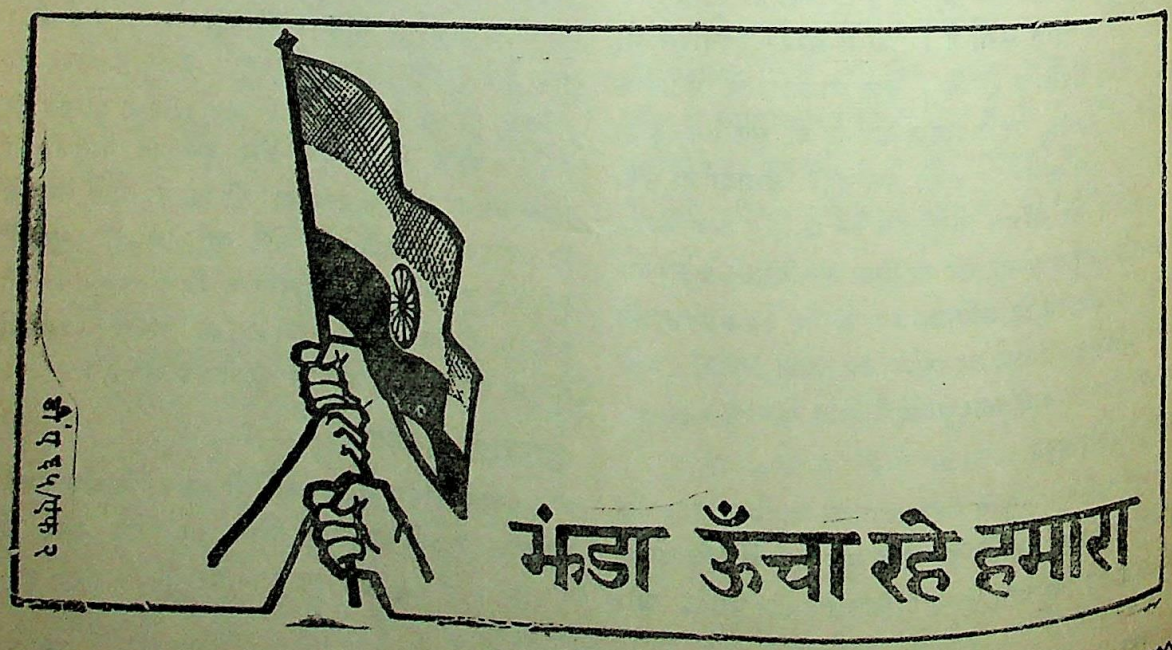


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राष्ट्र की जीवन रेखा—रेल

डा० राम सुभग सिंह

भारत में रेल युग का आरम्भ १६ अप्रैल, १८५३ को हुआ। उस दिन देश के पश्चिमी भाग में बम्बई और थाना के बीच ३३ किलोमीटर लम्बी लाइन पर पहली रेल गाड़ी चली। आज सारे देश में रेलवे लाइनों का जाल-सा बिछ गया है और एक केन्द्रीय व्यवस्था के अधीन ५७,००० किलोमीटर में फैले भारतीय रेलों का विस्तार की दृष्टि से संसार में दूसरा स्थान है।

अपने देश में रेलवे, सरकारी क्षेत्र का सबसे बड़ा और सर्वाधिक सफल उपक्रम है। भारतीय रेलों के पास ३ हजार करोड़ रु० से भी अधिक की परिसम्पत्ति है। ये न केवल अपना खर्च पूरा कर लेती हैं, बल्कि सामान्य राजस्व को लाभांश के रूप में लगभग १०० करोड़ रु० अंशदान भी देती है। रेलों में १२ लाख से अधिक स्त्री और पुरुष काम करते हैं। रेलें अपने कर्मचारियों के लिए मकान, मुफ्त इलाज, मनोरंजन और अवकाशगृह जैसी सुविधाओं के साथ-साथ उनके बच्चों की शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर छात्रवृत्तियां देती है।

देश में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक रेलवे लाइनों का जाल बिछा हुआ है। इनसे न केवल राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक जीवन को, बल्कि भावनात्मक एकता को संबल मिलता है। रेलों ने अब तक जो काम किया है, उसकी अपेक्षा आगामी वर्षों में उन्हें कहीं अधिक कठिन काम करना होगा।

शुरू शुरू में हमारे देश में प्राइवेट कम्पनियों द्वारा रेलवे लाइनें बनाई गयीं और उन पर उन्हीं का स्वामित्व था। भारत में रेलों का निर्माण मुख्यतः यहां से कच्चा माल ले जाने और इंगलैण्ड से तैयार माल भारत के बाजारों तक पहुँचाने के उद्देश्य से किया गया, यद्यपि सामरिक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा गया था। ब्रिटिश शासनकाल में ही रेलों का राष्ट्रीयकरण शुरू हो गया था, फिर भी यह तस्वीर भारत के स्वाधीन होने पर ही पूरी तरह बदली। रेलें वस्तुतः राष्ट्र की जीवन-रेखा बन गयी हैं। रेलवे हमारे देश में परिवहन का प्रमुख साधन हैं। लगभग ८० प्रतिशत माल यातायात और ६० प्रतिशत यात्री-यातायात रेलवे से होता है। इस समय भारतीय रेलों में ३॥ लाख से अधिक माल डिब्बे, १२ हजार से अधिक रेल इंजन और ३० हजार से अधिक सवारी डिब्बे हैं। लगभग १० हजार गाड़ियां चलती हैं, जिनमें प्रतिदिन ५ लाख मीटरिक टन माल ढोया जाता है और ५० लाख यात्री सफर करते हैं।

१९३० के जमाने की आर्थिक मन्दी, द्वितीय विश्व-युद्ध और बाद में देश के बटवारे ने रेल प्रणाली को दुर्बल बना दिया था। केवल घिसी-पिटी और जर्जर परिसम्पत्तियां बच रही थीं। इस प्रकार, स्वतन्त्र भारत को एक अस्वस्थ रेल-प्रणाली विरासत में मिली, जिसे विकासमान अर्थ-व्यवस्था की परिवहन-सम्बन्धी जरूरतों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण काम करना था। अपनी स्थिति को शीघ्र सुधारने और परिसम्पत्तियों को सुधार करने के साथ ही रेलों को एक के बाद दूसरी पंचवर्षीय योजनाओं के प्रसंग में यातायात में एकाएक जो वृद्धि हुई, उसे संभालने के लिए भी जल्दी से जल्दी एक समन्वित कार्यक्रम पर अमल करना पड़ा।

## योजना काल में क्षमता दुगनी हुई

पहली पंचवर्षीय योजना से एक साल पहले १९५०-५१ में प्रारम्भिक माल यातायात ९३० लाख मीटरिक टन था, जो १९६३-६४ तक बढ़कर १९२८ लाख मीटरिक टन हो गया। ढोये गए माल के हिसाब से रेलवे की परिवहन-क्षमता में १०७ प्रतिशत वृद्धि हुई।

यात्री यातायात भी बराबर बढ़ता रहा। १९५०-५१ में रेल से सफर करने वाले यात्रियों की संख्या १२८ करोड़ थी। १९६३-६४ में यह संख्या बढ़कर १८६ करोड़ हो गयी। गाडियों में भीड़ कम करने के लिए कई गाड़ियों का चालन-क्षेत्र बढ़ाया गया है और नई गाड़ियां चलायी गयी हैं। यह वृद्धि पिछले दस वर्षों की वार्षिक औसत वृद्धि की तुलना में दुगने से भी अधिक है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे दर्जे के यात्रियों की सुविधा के लिए अब शयन-यान भी चलाये जाने लगे हैं। जो यात्री ८०० किलोमीटर से ऊपर सफर करते हैं, उन्हें इन डिब्बों में सोने की जगह दी जाती है और इसके लिए उनसे अतिरिक्त किराया नहीं लिया जाता। जो यात्री और अधिक आराम चाहते हैं, उनके लिए दो-टायर वाले डिब्बे में गद्देदार शायिका की व्यवस्था है, जिसके लिए उनसे कुछ अतिरिक्त प्रभार लिया जाता है। इस वर्ष के अन्त तक शयन-यानों की तादाद बढ़कर बड़ी लाइन पर ३४० और मीटर लाइन पर २५७ हो जाएगी। अगले वर्ष बड़ी लाइन पर तीसरे दर्जे के १२० और शयन-यान उपलब्ध हो जाएंगे।

## जनता गाड़ियां

तीसरे दर्जे की ही सुविधा के लिए तेज जनता गाड़ियां चलायी जा रही हैं। इन गाड़ियों में दो-टायर और तीन टायर वाले डिब्बे लगाए जाते हैं, जिनमें यात्रियों को सोने की जगह दी जाती है। तीसरे दर्जे के जो यात्री कुछ अतिरिक्त देने को तैयार हों, उनके लिए वातानुकूल यात्रा सुलभ हो गयी है। इस समय देश के प्रमुख नगरों के बीच तीसरे दर्जे की वातानुकूल गाड़ियां चलायी जा रही हैं, जिनमें बैठने के लिए कुर्सियों की व्यवस्था है।

## तेज रफ्तार

यात्रा में आराम के बाद, यात्री स्वभावतः यह चाहते हैं कि खासकर मुख्य लाइनों पर गाडियों की रफ्तार तेज हो। पहली अप्रैल से बहुत-सी गाड़ियां तेज की गयी हैं और इस दिशा में आगे भी प्रयास जारी रहेगा। इस महीने से दक्षिण-पूर्व रेलवे के एक खण्ड पर सवारी गाड़ियों को डीजल इंजन से चलाने का परीक्षण किया जा रहा है। जब ये गाड़ियां डीजल इंजन से चलने लगेंगी, तो न केवल उनकी रफ्तार बढ़ जाएगी, बल्कि उनमें अधिक डिब्बे भी लगाए जा सकेंगे और इस प्रकार गाड़ियों में कम भीड़ होगी।

## बिजली की रेल

रेल बिजली योजना का काम भी तेजी से किया जा रहा है। पूर्वी क्षेत्र के कई अधिक व्यस्त खण्डों पर बिजली रेल गाड़ियां चलायी जा रही हैं और आगामी वर्षों में देश के पश्चिमी, दक्षिणी तथा पूर्वी भागों के कई और खण्डों पर बिजली गाड़ियां चलने लगेंगी। १९६६ के अन्त तक ३२०० किलोमीटर लम्बे मार्ग में ८३०० किलोमीटर रेल पथ पर बिजली गाड़ियां चलने लगेंगी। इसके साथ ही डीजल इंजन से गाड़ी चलाने की योजना पर भी तेजी से अमल किया जा रहा है। चालू योजना में लगभग ८००० किलोमीटर बड़ी और मीटर लाइनों पर डीजल इंजन से गाड़ी चलाने का विचार है।

रेलें इस बात की पूरी कोशिश कर रही हैं कि जरूरत के सामान देश में ही तैयार कर लिये जाएं। रेलों को जितने भाप रेल इंजनों की जरूरत होती है, उनकी पूर्ति चितरंजन रेल इंजन कारखाना कर रहा है। कुछ समय से इस कारखाने में अब आधुनिकतम किस्म के ए० सी० बिजली रेल इंजन भी बनाए जा रहे हैं। चालू योजना के अन्त तक इस कारखाने में प्रति मास ६ बिजली रेल इंजन बनाने की चमता हो जाएगी और आगे चलकर वहां प्रति वर्ष १५० बिजली रेल इंजन तैयार किये जाएंगे। वाराणसी में डीजल रेल इंजन तैयार करने का जो नया कारखाना खोला गया है, उसमें १९६७-६८ तक प्रति वर्ष १५० डीजल इंजन तैयार करने की चमता हो जाएग। पेरम्बूर इन्टीग्रल कोच फैक्टरी में उन सभी किस्म के डिब्बे तैयार किए जा रहे हैं, जिनकी भारतीय रेलों को आवश्यकता होती है। इस फैक्टरी में अब बिजली गाड़ी के डिब्बे भी तैयार किए जा रहे हैं। अब हम भाप रेल इंजन और सवारी डिब्बे निर्यात करने की स्थिति में भी पहुँच गए हैं।

देश के भीतरी भागों से निर्यात के लिए १३० से भी अधिक ऐसी वस्तुएं रेल द्वारा बन्दरगाहों में भेजी जाती है, जिन पर रेल भाड़े में काफी रियायत दी जाती है।


**सम्पदा**

**का**

**एक ग्राहक बनाना आपका कर्तव्य है**

सम्पदा




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# यूगोस्लेविया व भारत : बढ़ते हुए सहयोग की कहानी

जहां ब्रिटेन और अमरीका से आर्थिक सम्बन्ध शिथिल हो रहे हैं, वहां पूर्वी यूरोप से सम्बन्ध अधिक घनिष्ट हो रहे हैं। राष्ट्रपति श्री राधाकृष्णन की पूर्वी यूरोप की यात्रा ने इन सम्बन्धों को दृढ़तर कर दिया है। एक समाचार के अनुसार रूस और यूगोस्लेविया के तकनीकी विशेषज्ञों का एक संयुक्त कमीशन मिलकर यह विचार कर रहा है कि अफ्रीका और एशिया के देशों में ६ संयुक्त उद्योग स्थापित किए जांय। वस्त्र-उद्योग, बिजली का हल्का सामान और उपभोक्ताओं के व्यवहार की सामग्री बनाने वाले उद्योग स्थापित करने के लिए विभिन्न देशों से वार्ता की जायेगी। इन उद्योगों के सम्बन्ध में प्राथमिक चर्चा १९६६ में समाप्त हो जायेगी और तब भारत और यूगोस्लेविया के संयुक्त उद्योगों के सम्बन्ध में नया कदम उठाया जायगा। इस आशय के संयुक्त वक्तव्य पर भारत के व्यापार मंत्री श्री मनुभाई शाह ने भी हस्ताक्षर किए हैं।

भारत और यूगोस्लेविया के व्यापारिक सम्बन्ध निरन्तर बढ़ते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए दोनों देशों का परस्पर व्यापार १९५५ से १९६४ तक करीब ५३ लाख से बढ़कर २० करोड़ रु० तक पहुँच गया है। पिछले वर्ष भारत ने यूगोस्लेविया से १०.५ करोड़ का माल मंगाया और ९.५ करोड़ का माल भेजा। १९६५ के पहले ७ महीनों में भारत में आयात ८.९ करोड़ रुपये और निर्यात ८ करोड़ रुपये की वस्तुओं का हुआ है। इससे यह स्पष्ट है कि पूरे वर्ष में यह व्यापार १५ करोड़ रुपये तक पहुँच जायेगा।

इसके अतिरिक्त अन्य अनेक वस्तुओं के लिए भी दोनों देशों में समझौता हो रहा है। भारत की कुछ योजनाओं में यूगोस्लेविया का सहयोग प्राप्त है।

भारत भी स्वयं यूगोस्लेविया में रेलवे वैगन निर्माण का कारखाना खोलेगा और दूसरी ओर यूगोस्लेविया भी भारत में खाद्य पदार्थ, चमड़ा तथा परिधान निर्माण के उद्योगों में सहयोग देगा। दोनों देशों के अधिकारी मिलकर भावी योजनायें बनायेंगे, जिससे दोनों देशों के विकास में परस्पर सहयोग प्राप्त किया जा सके।

यह अनुमान किया जाता है कि दोनों देशों में न केवल व्यापार ६ करोड़ डालर की अपेक्षा ८ करोड़ डालर हो जायगा, बल्कि व्यापार में विविधता भी आ जायेगी।

भारत ने यूगोस्लेविया से जिस आवश्यक सामग्री और उत्पादन की मांग की है उनमें समुद्री जहाज मुख्य हैं। श्री मनुभाई शाह ने ७ जहाजों का आर्डर दिया है। इनमें से ३ मालवाही जहाज होंगे और ४ यात्रियों के लिए। इन सात जहाजों के कारण हमारी जहाजी क्षमता ५ लाख टन बढ़ जायेगी। १ हजार किलोवाट का ट्रांसमीटर और १ हजार टैलीवीजन सेट भी यूगोस्लेविया से आ रहे हैं। दोनों देशों की संयुक्त समिति परस्पर मिलकर इस निर्णय पर विचार करेगी कि किस देश की क्या आवश्यकता है और उन्हें पूरा करने के लिए दोनों देश परस्पर क्या सहयोग कर सकते हैं। इस समिति के सदस्य और दोनों सरकारों के मंत्री समय २ पर मिलकर विचार करते रहेंगे।

यूगोस्लेविया लुब्रीकैटिंग आयल, पैट्रोलियम पदार्थ रसायनिक द्रव्य, सीसा, जस्ता, अलोह धातुएँ, ट्रैक्टर, रोलर बीयरिंग, भूमिगर्भ टैलीफोन और केबल, अखबारी कागज तथा अन्य यांत्रिक सामग्री भेजेगा। इसके बदले में में भारत आयरन और मैंगनीज ओर, अभरक, चाय, काफी काजू, औषधियां, बिजली का सामान, काटन वेस्ट, जूट, नारियल की जटा, कपड़े, ऊन, फाउन्टैन पैन, छोटे बल्ब, दन्त मंजन, पकाया हुआ चमड़ा, हस्तकला की वस्तुएँ, वस्त्र उद्योग की मशीनें, रेलवे का सामान, गुड़, मछली, फल और सब्जियां आदि भेजेगा।

यह आशा की जाती है कि दोनों देशों में परस्पर सम्बन्ध दृढ़ से दृढ़तर होते जायेंगे।

● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## तेल और विदेशी मुद्रा

अनेक वर्षों से भारत सरकार यह प्रयत्न कर रही है कि कच्चे तेल के मूल्य में विदेशी कम्पनियां काफी कमी करें। इसके परिणामस्वरूप समय २ पर कुछ न कुछ कमी कराने में हमें कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। कुल मिलाकर मूल्यों में की गई इन कटौतियों से लगभग दो करोड रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हुई है।

दूसरी तरफ भारत सरकार तेल शोधक कारखानों का उत्पादन बढ़ाने का भी निरन्तर प्रयास कर रही है। बम्बई में तेल शोधक कारखानों को मई, १९६५ से अंकलेश्वर में निकाले गये कच्चे तेल की सप्लाई २२५० मीटरिक टन से बढ़ाकर प्रतिदिन ३ हजार टन कर दी गई है। १९६६ के प्रारम्भ से इसे बढ़ाकर प्रतिदिन ५ हजार मीटरिक टन कर दिया जायगा। इसके कारण भी ८.५ करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो चुकी है। उड्डयन पैट्रोल की सप्लाई के बारे में भी एक समझौता किया गया है जिससे १.५ करोड रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। ज्यों २ तेल शोधन के सरकारी कारखाने अपना उत्पादन बढ़ाते जायेंगे, त्यों २ विदेशी मुद्रा में और भी बचत होती जायेगी।

—हुमायूं कबीर

## यूरोपियन उद्योगों पर अमरीका का आक्रमण

हमारे अनेक अर्थशास्त्री भारत में विदेशी पूंजी के विनियोजन का विरोध कर रहे हैं। विदेशी पूंजी केवल भारत में ही नहीं, यूरोप के समृद्ध और विकसित देशों में भी लग रही है। अमरीका के अरबों रुपये यूरोपियन देशों में उद्योगों में लग रहे हैं। अमेरिकन पूंजी के यूरोप के देशों में प्रवेश के सम्बन्ध निम्नलिखित तथ्य मनोरंजक और ज्ञातव्य है:—

दस वर्ष से कुछ ही अधिक समय में अमेरिकी कम्पनियों ने यूरोप में अपना पूंजीनिवेश १७० करोड़ डालर से ११५० करोड़ डालर तक बढ़ा लिया है और अब यह आशा है कि १९७५ तक यह रकम २४०० करोड़ डालर हो जायेगी। कोई ८०० बड़ी से बड़ी अमेरिकी कम्पनियां पश्चिम यूरोप में २००० उद्यमों की मालिक है। १९६४ में अमरीका ने विदेशों में अपने पूंजी-निवेश से ५३०० करोड़ डालर का मुनाफा बनाया।

किन्तु यूरोप में भी भारी मात्रा में अमेरिकन पूंजी के विनियोग पर आशंकायें प्रकट की जाने लगी है कि कहीं अमेरिका यूरोप के उद्योग पर छा तो नहीं जायेगा।

राष्ट्रपति देगाल ने यह शिकायत उचित ही की है कि यूरोप-निवासी इस तथ्य पर बहुत ही आपत्ति प्रकट की है कि हालांकि अमेरिका विदेशों में अपने जारी किये गये कागजी डालरों का बड़े पैमाने पर निवेश करता है, परन्तु वास्तव में वह उन सभी उद्यमों को हड़प लेता है जो उसके नहीं हैं, मगर जिन्हें वह अपने कब्जे में करना चाहता है।

## रुपये की कमी नहीं

एक तरफ हम कहते हैं कि लोगों के पास रुपया नहीं है, दूसरी ओर एक अनुमान के अनुसार केवल महाराष्ट्र राज्य में लोगों ने मोटर गाडी खरीदने के लिए ४,६३,९९,३१० रु० डिपाजिट के रूप में जमा करा दिया है। यदि अन्य राज्यों का भी अनुमान लगाया जाय तो यह रकम १०-१५ करोड रुपये से कम न होगी। सरकार ने डिपाजिट जमा करने का तरीका मोटर गाडियों की अंधाधुंध अव्यवस्थित बिक्री को रोकने के लिए निकाला था, किन्तु डिपाजिटों की संख्यायें बताती हैं कि सरकार को इसमें बहुत सफलता नहीं हो रही।

## भारत और ब्रिटेन में व्यापार

भारत और ब्रिटेन में परस्पर व्यापार की गतिविधि निम्नलिखित है :—

ब्रिटेन से भारत में कुल आयात १९६४ में १९८.९ करोड़ रुपये का हुआ। इसके विपरीत भारत से निर्यात १८७.८ करोड रुपये का हुआ। आयात में अधिकतर मशीनरी और इस्पात तथा यातायात के साधन थे तथा

सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कीड़े मकोड़े खाओ

कनाडा की एक खाद्य संस्था ने विश्व में अन्न संकट की समस्या का एक नया हल बताया है। इस संस्था के कृषि रसायन विशेषज्ञ श्री बैनवर्क ने बताया है कि यदि हम एक एकड़ कृमियों (Insect) का उत्पादन करें तो उनसे मिलने वाला प्रोटीन गोमांस से अधिक उपलब्ध हो सकता है। सौभाग्य से कृमियों की ६ लाख जातियां उपलब्ध हैं जिनसे खाद्य और उसका प्रोटीन मिलना सम्भव है। इन कृमियों से औषधि के रूप में भी प्रोटीन प्राप्त किया जा सकता है। उक्त विशेषज्ञ के अनुसार एशिया और अफ्रीका की अनेक जातियों में झिंगा, रेशमी कीड़े, झींगुर, दीमक और गुबरैला आदि कीड़े भी खाये जाते हैं।

## स्वर्ण नियंत्रण व्यर्थ रहा

नैशनल काउन्सिल आफ एपलाइड इकॉनामिक रिसर्च ने बचत को रखने के दो तरीकों के बारे में जाँच की है। इसके अनुसार १९४९ में यदि एक सौ रुपये का सोना लिया जाता तो १९६२ में उसकी कीमत ४१० रु० पूंजी थी। इसका अर्थ यह है कि बचत करने वाले को अपनी ६.०२ प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज प्राप्त होता। दूसरी ओर यदि वह डाकखाने में इतना रुपया जमा होता तो उसे ३०० से भी कम रुपया प्राप्त होता। इसका अर्थ यह है कि उसे केवल ४.४ प्रतिशत चक्रवृद्धि ब्याज मिलता। स्वर्ण नियंत्रण का उद्देश्य यह था कि स्वर्ण की खपत कम हो, मूल्य न बढ़ने पावें और उसकी चोर बाजारी न हो किन्तु यह परिणाम आशा के विपरीत रहा है। जुलाई १९६२ में सोने की कीमत ११२.५० रु० प्रति १० ग्राम थी। दो वर्ष बाद जुलाई १९६५ में इसके मूल्य १३५.५० रु० तक बढ़ गये हैं।

## कम्पनियों में वयोवृद्ध डायरैक्टर

३३१ कम्पनियों के ३२० डाइरैक्टरों के सम्बन्ध में एक जाँच पड़ताल की गई थी। इसके अनुसार ३० वर्ष से कम आयु के डायरैक्टरों की संख्या ८.५ प्रतिशत थी। ३१ से ४५ वर्ष के आयु के डाइरैक्टरों का अनुपात २५.२% ४६ से ५५ वर्ष के आयु के डायरैक्टरों का अनुपात ३५.३ प्रतिशत था। ५६ से ६५ वर्ष तक की आयु के डाइरैक्टरों का अनुपात २० प्रतिशत और ६५ वर्ष से ऊपर के डाइरैक्टर ११ प्रतिशत थे। कुल डाइरैक्टरों में ४५ साल से नीचे और ऊपर के डाइरैक्टर बराबर २ संख्या में थे। ७५ प्रतिशत कम्पनियों में वयोवृद्ध डाइरैक्टरों का बहुमत था।

कम्पनी कानून के अनुसार कोई भी वृद्ध व्यक्ति (६५ वर्ष से अधिक) शेयर होल्डरों के प्रस्ताव के बिना डाइरैक्टर नहीं चुना जा सकता किन्तु आज हरेक कम्पनी अपनी साधारण सभा में शेयरों के बहुमत के आधार पर अत्यन्त वृद्ध आयु के व्यक्तियों को भी डाइरैक्टर चुनवा लेती है। इसीलिए यह कानून व्यर्थ-सा सिद्ध हो रहा है। कम्पनी कानून में नया संशोधन इसी कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

## विदेशी मुद्रा से बचने के लिए प्रयत्न

राष्ट्र की रक्षा में उद्योगपतियों के योगदान की चर्चा करते हुए फैडरैशन आफ इन्डियन चैम्बर्स आफ कामर्स के जनरल सैक्रेटरी श्री जी० एल० बन्सल ने इस बात पर विशेष बल दिया है कि हमें यथा सम्भव विदेशी वस्तुओं का उपयोग अपने उद्योगों और व्यवहार में नहीं करना चाहिए। एक उद्योगपति का करीब २॥ करोड़ रुपये का माल पाकिस्तानी आक्रमण के समय पाकिस्तान ने जब्त कर लिया था। यह माल वह था जो विदेश से आ रहा था। उस उद्योगपति ने श्री बन्सल से पूछा कि क्या अब २॥ करोड रुपये का विदेशी विनिमय का लाइसैन्स उन्हें फिर मिल सकता है। श्री बंसल ने उनसे प्रश्न किया कि कितने विदेशी माल के बिना उनका काम किसी तरह नहीं चल सकता। उद्योगपति ने हिसाब लगाकर बताया कि ५० लाख रुपये का सामान तो उन्हें अवश्य चाहिए। श्री बन्सल ने उन्हें सलाह दी कि वह ५० लाख से अधिक के विदेशी माल के लिए आग्रह ही न करें। अपनी आवश्यकता स्वदेश में निर्मित माल से ही पूरा करें। यह उदाहरण देते हुए श्री बन्सल ने उपभोक्ताओं को भी यह परामर्श दिया कि वह यथासंभव उद्योगों में निर्मित वस्तुओं की जगह स्थानीय वस्तुओं से ही काम चलाने का प्रयत्न करें। जैसे टूथ पेस्ट और पाउडर के मंहगा होने पर दातुनों से ही काम चलाने की आदत हमें डालनी चाहिए।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**भारतीय अर्थशास्त्र**—लेखक-श्री सत्यदेव देराश्री तथा श्री लक्ष्मीनारायण नाथूरामका। प्रकाशक—लक्ष्मी-नारायण अग्रवाल, आगरा—३। पृष्ट संख्या ८८७, मूल्य १२.५० रु०।

प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय अर्थशास्त्र की ऊंची कक्षाओं के लिए लिखा गया है। भारत के आर्थिक विकास की नई से पिछले कुछ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं। आर्थिक प्रवृत्तियों, गतिविधियों और समस्याओं की दृष्टि से प्रत्येक वर्ष पहले से महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि अर्थशास्त्र की पुस्तकों में पूर्णतः नवीनतम प्रवृत्तियों और संख्याओं की जानकारी दी जाय। विद्वान लेखकों ने इस संस्करण में यही प्रयत्न किया है। १९६५ के पहले महीनों तक की संख्यायें और सूचनायें देकर इस बृहद् ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बना दिया गया है। अनेक प्रकरण नये सिरे से जोड़े गये हैं और बहुत से प्रकरणों में संशोधन किया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में भारतीय अर्थशास्त्र की प्रायः सभी आर्थिक—कृषि, उद्योग, वित्त, प्रकृति, जनसंख्या, राष्ट्रीय आय, खाद्य समस्या, सिंचाई, भूमि सुधार, सहकारिता, मुद्रा स्फीति और मूल्य, श्रम, बैंक, परिवहन तथा पंचवर्षीय योजना आदि बीसियों प्रकरणों के अंतर्गत भारतीय अर्थ-शास्त्र की मुख्य प्रवृतियों की विस्तृत चर्चा की गई है। विद्वान लेखकों ने गम्भीर अध्ययन और कठिन परिश्रम के बाद यह ग्रन्थ लिखा है। उन्होंने प्रत्येक प्रश्न पर अपने विचार ही देने की अपेक्षा देश के प्रमुख अर्थशास्त्रियों के विचार संकलित किए हैं। इसलिए इस एक पुस्तक के पढ़ने से ही पाठक को बीसियों विद्वान अर्थशास्त्रियों के विचारों का ज्ञान हो जाता है। सरकार द्वारा समय-समय पर नियत विशेषज्ञ समितियों की रिपोर्टों का भी सार दिया गया है। वस्तुतः यह एक पुस्तक न होकर बीसियों उत्कृष्ट ग्रन्थों का संग्रह बन गई है। इस कारण अर्थशास्त्र के विद्यार्थी इससे बहुत लाभ उठा सकते हैं। विवादास्पद प्रश्नों पर अनेक मत देकर पाठक को स्वतन्त्र चिन्तन की प्रेरणा दी गई है।

यह ग्रन्थ जिस शैली से लिखा गया है उसके कारण यह पुस्तक भारत की सब आर्थिक प्रवृत्तियों, विचारधाराओं और गतिविधियों का एक विस्तृत इतिहास बन गई है। सरकार की आर्थिक नीतियों से लेखक प्रभावित दीखते हैं, यद्यपि अनेक स्थानों पर लेखकों ने अपना मत भी देने का प्रयत्न किया है और इस प्रकार पाठकों को केवल सरकारी विचारधारा का अंध भक्त बनने का प्रोत्साहन नहीं दिया गया। हमारा कहना यह नहीं है कि लेखकों की विचार दिशा से मतभेद नहीं हो सकता। सहकारी खेती के विषय में दिये गये तर्कों को महत्वहीन समझ लेना एकांगी दृष्टि-कोण है। इस प्रकार सूरतगढ़ और जैतसर जैसे बड़े फार्मों के समर्थन से भी मतभेद प्रकट किया जा सकता है। विकास योजनाओं के आकार को कुछ कम करने का लेखकों ने निश्चित शब्दों में विरोध किया है। यह भी विचारणीय है।

विद्वान लेखकों ने विभिन्न प्रमुख अर्थशास्त्रियों के विचार अनेक स्थलों पर संकलित किए हैं। यह देश का दुर्भाग्य ही है कि प्रमुख अर्थशास्त्री हिन्दी में मौलिक पुस्तक नहीं लिखते, इसलिए अंग्रेजी ग्रन्थों से ही उद्धरण देने पड़ते हैं। हम वह दिन देखना चाहते हैं कि जब प्रमुख अर्थशास्त्री राष्ट्र-भाषा में ही अध्ययनपूर्ण और मौलिक ग्रन्थ लिखेंगे और इन हिन्दी पुस्तकों के उद्धरण अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में दिये जाया करेंगे। क्या हिन्दी भाषी राज्यों के अर्थशास्त्र के अध्यापक इस दिशा में कोई प्रयत्न करेंगे?

—कृष्ण

**गुरुकुल पत्रिका**—(वेद अंक) सम्पादक-श्री भगवद्दत्त वेदालंकार। प्रकाशक—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। मूल्य १.५० रु०।

यह पत्रिका गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से प्रकाशित होती है। पत्रिका का एक अंश संस्कृत में होता है और एक हिन्दी में। इस पत्रिका में भारतीय शास्त्रों और

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धांतों के सम्बन्ध में विचारपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। प्रस्तुत अंक वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ है। इसमें अनेक गंभीर विद्वत्तापूर्ण ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने को मिलेंगे। श्री जगदीशचन्द्रजी का वेदों में आध्यात्मिक विज्ञान, श्री जगन्नाथ का श्री अरविन्द का वेदभाष्य, श्री नरहरि भट्ट का भारतीय संस्कृति का आधारभूत वेद आदि संस्कृत लेख अध्ययन और परिश्रम पूर्वक लिखे गए हैं। श्री वीरसेन का याज्ञिक वृष्टि विज्ञान गम्भीर अध्ययन और अनुसंधान के लिए प्रेरणा देता है। श्रीसुधीरकुमार व श्री मनोहर विद्यालंकार के लेख भी अध्ययनपूर्वक लिखे गए हैं और वेद के रहस्यों को खोलने में सहायक हैं। ऋषि रहस्य तो विद्वान लेखक की विद्वत्ता, अध्ययन और परिश्रम का सूचक है। वस्तुतः यह लेख नहीं है, एक पुस्तक है, जो वैदिक साहित्य के विद्यार्थियों के लिए निस्संदेह संग्रहणीय है। इस तरह यह विशेषांक गुरुकुल कांगड़ी की प्रतिष्ठा के अनुरूप निकला है। विद्वान सम्पादक को इस अंक के सम्पादन के लिए बधाई।

**भारत १९६४**—प्रकाशक—भारत सरकार का प्रकाशन विभाग, ओल्ड सेक्रेटरीएट दिल्ली-६। मूल्य ३.५० रु०, संख्या ३६६।

प्रस्तुत ग्रन्थ में भारत के संबंध में पर्याप्त जानकारी दी गई है। भारत का भूगोल, सरकार का संगठन, शिक्षा संबन्धी, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, स्वास्थ्य संबन्धी प्रवृत्तियों के साथ-साथ आर्थिक क्षेत्रों के सम्बन्ध में काफी अधिक महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत ग्रन्थ में दी गई है। व्यापार, उद्योग, कृषि, विभिन्न वर्षों के बजट, भूमि सुधार, सिंचाई और बिजली आदि के संबंध में प्रामाणिक जानकारी भी इस ग्रन्थ में मिलेगी। संसद ने १९६३ में कौन से महत्वपूर्ण कानून बनाये और १९६३ की महत्वपूर्ण घटनायें क्या हैं, यह सब भी इस ग्रन्थ से हम जान सकेंगे। अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों, पत्रकारों तथा लेखकों के लिए यह संग्रह बहुत उपयोगी होगा। यदि सरकार का प्रकाशन विभाग यह व्यवस्था कर ले कि अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी संस्करण का प्रकाशन भी हो जाया करे तो अंग्रेजी पुस्तक की बहुत आवश्यकता ही न रहे।

**आर्थिक जगत्**—(दीपावली अंक)—सम्पादक—श्री प्रतापनारायण वाजपेयी। १० बेकरी रोड, हेस्टिंस कलकत्ता-२२ से प्रकाशित। पृष्ठ संख्या १२४। आकार २०×२०। इस अंक का मूल्य २) रु०।

सदा की भांति इस वर्ष भी दीपावलि के अवसर पर आर्थिक जगत् का यह विशेषांक प्रकाशित हुआ है। इसमें अनेक आर्थिक विषयों पर महत्वपूर्ण लेखों का समावेश किया गया है। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—सड़क परिवहन, चाय, चीनी, मोटर, अलमुनियम, वनस्पति, चमड़ा आदि उद्योग, कम्पनी कानून, विदेशी विनिमय, बोनस विधेयक, आर्थिक विकास, भौतिक नीति आदि। इन लेखों के लेखक अपने-अपने विषयों के प्रामाणिक अनुभवी विद्वान् है। भारत की वर्तमान आर्थिक प्रवृत्तियों को जानने में यह अंक सहायक सिद्ध होगा।

---

(पृष्ठ ५८९ का शेष)

उपर्युक्त उद्योगों के अतिरिक्त कपड़े के उद्योग नई प्रणाली के अनुरूप काफी संख्याओं में प्रारम्भ किये गये हैं। इसके साथ ही चीनी उद्योग, रासायनिक, सीमेन्ट और कागज की मशीनरी के उद्योग भी स्थापित हुए हैं। १९४७ में भारत को स्वतन्त्रता मिलने के बाद ही भारत औद्योगिक विकास में अत्यन्त रुचि ले रहा है और इसका प्रमाण बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना है। जूट मिल मशीनरी, कागज मशीनरी, चाय मशीनरी आदि अनेकों नये हल्के उद्योग प्रारम्भ हुए हैं, वहां दूसरी ओर भारी उद्योग भी इनसे पीछे नहीं हैं। इनमें अनेक वस्तुएं तो ऐसी हैं जो भारत में पहली बार ही निर्मित की गईं।

इन उद्योगों की स्थापना एवं विकास के फलस्वरूप इन्जीनियरिंग उद्योगों का उत्पादन १९६४ में करीब ७०० करोड़ रुपया है, जबकि १९५१ में यह २०० करोड़ रुपया था। उद्योगों की उक्त संख्याओं के अतिरिक्त भारत ने इस क्षेत्र में जो प्रगति की है, वह उद्योग के प्रशिक्षिपक प्रशिक्षण और अनुभव की है। इन वर्षों में इन्जीनियरों और तकनीकी विद्वानों और प्रशिक्षियों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। अनेक बड़े-बड़े उद्योगों में हजारों युवक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। नेट वायुयान तथा अन्य युद्ध सामग्री के उद्योग भी बहुत विकसित हो गये हैं। इस प्रकार विदेशों पर आयात की निर्भरता निरन्तर कम होती जा रही है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# श्रम-संगठनों की अपनी समस्या

श्रम संगठन श्रम समस्याओं का समाधान करने का प्रयत्न करते हैं, किन्तु श्रम संगठन स्वयं भी समस्या का रूप धारण करते जा रहे हैं। देश के विविध भागों और विविध उद्योगों में अनेक श्रमिक संगठन कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक संगठन अपने को ही प्रतिनिधि संस्था मानता है। एक-एक कारखाने में परस्पर प्रतिस्पर्धी अनेक संगठन विद्यमान हैं। कौन सा संगठन वास्तविक प्रतिनिधि है और कौन सा नकली, यह निश्चय करना कठिन हो गया है।

श्रम मंत्रालय की ओर से ट्रेड यूनियन एक्ट के मातहत रजिस्ट्रार सब संगठनों की जानकारी मंगाता है कि संगठन के कुल कितने सदस्य हैं, नये कितने बने, कितनों ने सदस्यता छोड़ी, आय व्यय का क्या हिसाब है आदि। किन्तु कठिनता यह है कि बहुत से यूनियन या तो पूरी जानकारी देते नहीं अथवा गलत जानकारी देते हैं। एक यूनियन ने वर्ष के प्रारम्भ में २५) रुपये शेष बताए थे। वर्ष में १४७६ रुपये की आय और १४७६ रुपये का ही खर्च बताकर के वर्ष के अन्त में भी २५) रुपये शेष बताये। एक दूसरी यूनियन ने वर्ष के प्रारम्भ और अन्त में दोनों में १०१ रुपया शेष बताया। १४७७ रुपये की आय और १४७७ रुपये का खर्च बताया गया। छोटे यूनियन अपने सदस्यों में से किन्हीं दो को आय-व्यय के निरीक्षण का अधिकार देते हैं। इन सब स्थितियों को देखकर श्रम सम्मेलन में इस प्रस्ताव पर विचार किया जाना था कि ट्रेड यूनियनों के रजिस्ट्रार को किसी संगठन को रजिस्टर्ड न करने का भी अधिकार दिया जाये।

एक दूसरा प्रश्न यह है कि यूनियनों के हिसाब-किताब की जांच पड़ताल कौन करे। अभी तक की व्यवस्था संतोषजनक नहीं रही। प्रतिनिधि यूनियन एक दूसरे के हिसाब को गलत बताते हैं। सरकारी आडिटर ही हिसाब-किताब देखें, इसको भी यूनियन नहीं मानना चाहेंगे, यद्यपि वे स्वयं निजी उद्योगों के आय व्यय निरीक्षण का काम सरकारी एजेंसी को देने का अनुरोध करते हैं।

## पूंजी में स्वामित्व

औद्योगिक सम्बन्धों को मधुर बनाने के लिए यह आवश्यक है कि श्रमिकों की उद्योग के साथ आत्मीयता हो। इसके लिए अनेक विचारकों ने यह सुझाव दिया है कि अन्य अनेक देशों की तरह भारत में भी श्रमिकों को उद्योगों की पूंजी में हिस्सा दिया जाय और इसके लिए प्रत्येक उद्योग अपनी पूंजी का नियत प्रतिशत श्रमिकों को शेयर लेने में सुविधा दे। श्रमिकों को मिलने वाले बोनस का एक भाग शेयरों के रूप में दिया जाय। इस सुझाव पर भारत सरकार का श्रम मंत्रालय विचार कर रहा है। अभी तक केवल ६ प्रतिशत कम्पनियों ने पूंजी के स्वामित्व में भाग लेने की सुविधा श्रमिकों को दी है।

श्रमिकों को पूंजी के शेयर केवल निजी उद्योगों में ही दिए जा सकते हैं, क्योंकि सरकारी उद्योगों में तो समस्त शेयर सरकार के ही हाथ में होते हैं। उन उद्योगों में औद्योगिक सम्बन्धों के सुधार के लिए क्या किया जाय, यह भी विचारणीय है। फिर यह भी विचारणीय है कि ५-१० प्रतिशत श्रमिकों के थोड़े शेयर ले लेने से औद्योगिक सम्बन्धों में कहां तक सुधार हो सकेगा?

## त्रिपक्षीय श्रम-सम्मेलन

त्रिपक्षीय श्रम सम्मेलन में यद्यपि मुख्य विषय वर्तमान संकट में श्रमिकों और उद्योगों का कर्तव्य था, तथापि परस्पर विचार विनिमय में श्रमिकों और उद्योग के प्रतिनिधियों ने एक दूसरे की कठोर आलोचना की। आचार संहिता को भंग करने के आरोप दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर लगाये। उद्योग के प्रतिनिधि श्री टाटा ने कहा कि जब तक वेतनों को उत्पादनों के साथ सम्बद्ध नहीं किया जायगा, तब तक उत्पादन नहीं बढ़ सकेगा और न उत्पादन व्यय ही कम होगा। उद्योग के प्रबन्ध में श्रमिकों के सहयोग के सम्बन्ध में पहले सरकारी उद्योगों को आदर्श उपस्थित करना चाहिए। फिर श्रमिक संघों में एकता नहीं है, इसलिए प्रबन्ध में उनका सहयोग सम्भव नहीं है।

(शेष पृष्ठ ६०८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# मरुस्थल के गर्भ में पाताल गंगा

पृथ्वीतल पर अभी तक कितनी ही जमीन ऐसी है है जो उपजाऊ बनाई जा सकती है। साइबेरिया के दलदल में भी खेती करने के प्रयत्न जारी हैं। सहारा की मरुभूमि में भी खाद्यपदार्थ पैदा करने की कोशिश की जा रही है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सहारा का मरुस्थल भारत से तिगुना बड़ा है और अमरीका से ड्योढ़ा है। भाग्यवश यदि इस मरुस्थल की भूमि सुजला सुफला हो जाय तो विश्व में खाद्यान्नों की कमी न प ने पायेगी।

इस मरु की खोज में निकले हुए साहसी यात्री जीवित नहीं लौटे। कोई भी वाहन इस भूमि को लांघ कर नहीं जा सकता। आकाशमार्ग से जाने वाले विमान भी इस मरु के किनारे-किनारे पर ही उड़ते हैं। २० हजार मील घेरे के इस भू-भाग के गर्भ में न जाने क्या-समाया हुआ है!

## १०,००० फुट नीचे समुद्र

इस मरु में प्रवेश करना कोई खिलवाड़ नहीं है। जहां पानी की एक बूंद भी नहीं मिल सकती, और तो और जहां आकाश पर छाये हुये बादल भाप बन कर उड़ जाते हैं, वहां पानी ढूंढ़ने के लिए भला कौन जाय? परन्तु वैज्ञानिकों ने सहारा के रेगिस्तान में भी पानी का पता लगा ही लिया। सहारा के गर्भ में, १०,००० फुट नीचे, पानी के विशाल समुद्र होने की बात ज्ञात हुई है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने के लिए १९५४ में सर्वप्रथम फ्रान्स के वैज्ञानिकों ने सहारा के वायव्य में स्थित "रीमरेल" नामक स्थान पर प्रयोग किये। लगातार चार माह प्रयत्न करने पर मरुस्थल के गर्भ से खौलते हुए खारे पानी का एक विशाल फौवारा-सा आकाश की ओर छूटा। १० हजार गैलन प्रति मिनट के हिसाब से इस फौवारे से पानी लगातार ऊपर आ रहा था। इस पानी को ठंडा कर मीठा बनाने के प्रयत्न भी उन वैज्ञानिकों द्वारा किये गये और वही पानी अब खेती तथा पीने के काम आ रहा है। इस फौवारे के चारों ओर एक लाख खजूर के वृक्ष लगा दिये गये हैं।

सन् १९६२-६३ में और भी २४ स्थानों में "बोअरिंग" कर १५ महीनों में पातालगंगा को पृथ्वीतल पर लाने के प्रयत्न सफल हुए हैं। अब इस भू-भाग में २,६५,००० गैलन पानी प्रति मिनट बह रहा है। मरुस्थल का एक भाग तो लगभग हरा-भरा हो चुका है। जहां पानी आंखों से दिखाई न देता था, वहां पानी के बड़े प्रवाह बहने लगे हैं। फल-फूल तथा उद्यानों से यह भाग आज खिल उठा है। अब सैकड़ों मील तक फैली हरियाली दिखाई देती है।

## सहारा में मुफ्त पानी

सहारा के रेगिस्तान में स्थित "तुगार" क्षेत्र में अब प्रति वर्ष हर ५० मील के फासले पर प्याऊ रखे गये हैं। सचमुच जहां पानी अनमोल था, वहां पानी बंट रहा है और वह भी सबों को मुफ्त। समुद्र में २०० मील दूर सहारा के मरुभूमि में अलजीरिया की सरकार ने आदिवासियों की टोली को ६०० एकड़ जमीन देकर, उनका एक उपनिवेश बना लिया है। प्रत्येक परिवार को ७० से ७५ खजूर के वृक्ष, १० अंगूर की बेलें, दो-दो अंजीर और शक्करपाले (जर्दालू) तथा जैतून के पौधे लगाने के लिए दे दिये गये हैं। इसके अतिरिक्त गाजर, आलू तथा साग-तरकारियों की काश्तकारी के योग्य बनाने के लिए उन्हें कृषि-शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया है। ७ वर्ष में उन्हें खजूर से आमदनी होने लगेगी तब तक अलजीरियन सरकार ने उन्हें २० डालर माहवार भरण-पोषण का खर्च देने का निश्चय किया है।

## प्रलयकारी तूफान

माइकेल नामक वैज्ञानिक ने चिलचिलाती हुए रेत के मैदान में एक तीन मील लम्बा और दो मील चौड़ा हरा-भरा बगीचा लगा दिया है। इस बगीचे के चारों ओर १२ फुट ऊंचे "युकेलिप्टस" (नीलगिरी) के वृक्ष खड़े हैं जो बगीचे की आंधी-तूफान से रक्षा करते हैं। इस मरुभूमि में तूफानों का कोई अन्त नहीं। प्रलयकारी तूफानों का ताण्डव शुरू होने पर समतल धरती की तरह रेत के



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंचे-ऊंचे टीले निर्माण हो जाते हैं और टीलों की जगह मैदान। तूफानों की गति भी प्रचण्ड होती है। माल से लदी हुई गाड़ियों को भी यह घास-फूस की तरह आसानी से उड़ा ले जा सकता है।

अब मरुभूमि के इन नवनिर्मित उद्यानों से लोग बाग छुट्टियों में "पिकनिक" के लिए जाते हैं। यहां के फलों का जी-भर आस्वाद लेते हैं। यहां के खेतों में साल में १० बार लेटयूस और चार बार गाजर की फसल ली जाती है। इसके अलावा खजूर और साग-सरकारी तो सालभर मिलती ही रहती है। माइकेल बुले ने इस जमीन में पान की बेलें और गुलाब की क्यारियां भी लगा दी हैं। वर्षों से तपती हुई जमीन को पानी मिलने पर वह अधिक उर्वरा और फलवती हो जाती है ऐसा विज्ञानवेत्ता मानते हैं। दिन भर कड़ी धूप में तपने वाली और रात को ठंडी हो जाने वाली जमीन वनस्पति के लिए अनुकूल होती है।

## लीबिया का तेल का प्रदेश

सहारा के मरुस्थल से सटे हुए लीबिया देश में, तेल की खानों के इर्द-गिर्द इकट्ठा होने वाला कचरा तथा तेलसंयुक्त मिट्टी, कुछ उर्वरकों के साथ मिलाकर, रेत की सतह पर फैला है। उस पर वृक्ष लगाने से मरुस्थल के तूफानों से जमीन की रेत जरा भी नहीं हिलने पाती और फसलें अच्छी मिलती हैं। यह प्रयोग वैज्ञानिकों ने कर देखा है। पहिले ही वर्ष में बोई गई वनस्पतियां पांच फुट ऊंची बढ़ीं। इस तरह आज लीबिया में एक हजार एकड़ का विस्तृत सुन्दर बगीचा निर्माण हुआ है।

"कोलम बेचर" नामक क्षेत्र में इसी तरह जमीन तैयार कर तम्बाखू कपास की फसलें लेनी शुरू हो गई हैं। १५ वर्ष पूर्व लगाये हुए वृक्षों की कटाई इन दिनों इमारती लकड़ी के लिए की जा रही है।

इतनी हजारों एकड़ जमीन भी इस भीषण मरुस्थल में खेती के काम आने पर भी यह पूरे मरुस्थल के दसवें भाग के बराबर भी नहीं हैं।

इस जगप्रसिद्ध मरुस्थल में सर्वप्रथम तेल की खानें मिलीं, तत्पश्चात् खेती का आरम्भ हुआ और अब तो वहां खनिज पदार्थ भी मिलने लगे हैं। वैज्ञानिकों को दृढ़ विश्वास है कि इस मरुस्थल में असंख्य खनिज पदार्थों का विशाल संग्रह है।

(पृष्ठ ६०६ का शेष)

## श्रम-समस्या

इसी प्रकार बोनस और मंहगाई भत्ते के सम्बन्ध में भी सरकारी उद्योगों को आदर्श उपस्थित करना चाहिए। बोनस की योजना अत्यन्त अव्यवहारिक है। सरकार स्वयं श्रमिकों का पक्ष लेती है, इसलिए श्रमिक तर्क संगत विचारों को भी स्वीकार नहीं करते। दूसरी ओर श्रमिक प्रतिनिधियों ने भी उद्योगपतियों पर अनेक आक्षेप किए। वे स्वयं अनेक उद्योग बन्द कर देते हैं, बोनस के सम्बन्ध में झगड़े पैदा करते हैं, इसलिए दोनों पक्षों में सन्धि की मर्यादा समाप्त हो रही है।

इस पारस्परिक विवाद और आरोप प्रत्यारोप के बाद श्रम मंत्री श्री संजीवैया की अपील पर वर्तमान संकट में उद्योग और श्रम दोनों ने राष्ट्र को पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। सम्मेलन ने एक प्रस्ताव द्वारा त्रिपक्षी समिति स्थापित करने की मांग की जो उद्योग और श्रम की वर्तमान कठिनाइयों को दूर करने की कोशिश करेगी। प्रस्तावित बेरोजगारी बीमा योजना का स्वागत करते हुए यह प्रश्न विस्तार से विचार करके लिए स्थायी समिति को सौंप दिया गया।


भारत की उद्योग नीति

*

लेखक :

रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै.

"सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ देश की : कुछ विदेश की

## युद्ध विराम के बाद

युद्ध के बाद विराम सन्धि को भी १½ महीने से भी ज्यादा बीत गया है, किन्तु अब तक भी पाकिस्तान उसका ठीक-ठीक पालन नहीं कर रहा है। विशेषकर राजस्थान में वह विराम सन्धि का उल्लंघन करता जा रहा है। काश्मीर के लम्ब क्षेत्र में संधि का उल्लंघन जारी है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रेक्षकों को सदा इसकी जानकारी दी है। अब सुरक्षा परिषद ने ५ नवम्बर को फिर एक प्रस्ताव द्वारा दोनों देशों से विराम-सन्धि का ठीक रूप से पालन करने को कहा है।

इससे पहले पाकिस्तान सदा यह प्रयत्न करता रहा कि सुरक्षा परिषद् विराम सन्धि के साथ-साथ काश्मीर के प्रश्न का भी समाधान कर ले। किन्तु भारत सरकार ने यह मत प्रकट किया कि जब तक बिराम-सन्धि का ठीक-ठीक पालन नहीं हो जाता, तब तक किसी राजनैतिक प्रश्न की चर्चा करना अनावश्यक है। भारत ने बड़ी दृढ़ता के साथ अपना यह स्पष्ट विचार प्रकट किया कि काश्मीर भारत का अभिन्न और अविभाज्य अंग है। यह भारत का आन्तरिक प्रश्न है, इसलिए सुरक्षा परिषद को इस प्रश्न पर विचार करने का अधिकार ही नहीं है। भारत के इस दृढ़ रुख का परिणाम यह हुआ कि सुरक्षा परिषद में जो प्रस्ताव पास किया गया, उसमें किसी राजनैतिक पहलू की चर्चा नहीं थी। केवल विराम-सन्धि के पालन के लिए आग्रह किया गया था। देखना यह है कि पाकिस्तान इस विराम-सन्धि का पालन कहां तक करता है। उसने न केवल युद्ध-विराम काल में कुछ और भूमि पर अधिकार कर लिया है, बल्कि नये युद्ध की बड़ी तैयारियां भी कर रहा है। श्री लालबहादुर शास्त्री ते यह स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध विराम के बाद पाकिस्तान ने जितने क्षेत्र पर अधिकार किया है, उस पर हम अवश्य अधिकार करेंगे। दूसरी शर्त यह है, कि पाकिस्तान को जम्मू काश्मीर की सीमा से अवश्य निकलना होगा। पाकिस्तान की आक्रमणात्मक कार्यवाहियों और भारत की दृढ़ता के कारण स्थिति अभी तक अनिश्चित है। किसी भी क्षण विराम समाप्त होकर युद्ध की अग्नि तीव्र हो सकती है।

## अन्न-स्वावलम्बन

अमेरिका के भारत विरोधी रुख से विवश होकर भारत में अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बन की एक नई लहर चल पड़ी है। घरों, खेतों, कोठियों और सरकारी इमारतों के सहन में सब्जी और अन्न उत्पादन की व्यापक लहर का प्रभाव कुछ महीने के बाद ही स्पष्ट होगा, किन्तु इससे देश में एक नई दृढ़ संकल्प की प्रवृत्ति का सूत्रपात हुआ है। इसके साथ ही सप्ताह में एक समय भोजन न करने का व्रत भी व्यापक रूप से समस्त देश में लिया जाने लगा है। इधर अमरीका ने और ५ लाख टन गेहूँ पी० एल ४८० के अन्तर्गत देने का निश्चय किया है।

भारत के प्रधानमन्त्री ने स्वर्ण बाण्ड की जो अपील प्रकाशित की है, इसके अन्तर्गत ४ नवम्बर तक ५१९ किलो ग्राम सोना एकत्र हो चुका था। यह आशा से बहुत कम है।

## इण्डोनेशिया व रोडेशिया

इण्डोनेशिया में अब तक भी विद्रोह पूर्णतः शान्त नहीं हुआ है। विद्रोही कम्युनिस्ट यद्यपि परास्त हो गये हैं तथापि किसी किसी क्षेत्र में अब तक भी सशस्त्र कार्यवाही जारी है। वहां की जनता में कम्युनिस्टों के प्रति विरोधी भावना बढ़ रही है है। चीनी दूतावास पर आक्रमण इसका एक प्रमाण है। हजारों कम्युनिस्ट गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

डा० सुकर्ण विवश हो गये दीखते हैं। सैनिक अधिकारी जो चाहते हैं, वही उनके नाम से करते हैं। चीन सरकार इण्डोनेशिया से बराबर विरोध प्रदर्शित करने लगी है।

दक्षिणी अफ्रीका में रोडेशिया में भी स्थिति सुलझ नहीं रही है। वहां की गोरी सरकार एक ऐसा संविधान बनाना चाहती है, जिसमें बहुसंख्यक अफ्रीकी जनता को कोई अधिकार नहीं मिलेगा। ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री उसे स्वतन्त्र करने से पहले अफ्रीकी जनता को अधिकार



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आश्वासन चाहते हैं । फिलहाल स्थिति पर विचार करने के लिए एक कमीशन की नियुक्ति कर दी गई है। अदन में भी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह हो रहा है।

## सिन्धुघाटी के लिए ८ करोड़

भारतीय संसद ने सरकार के पाकिस्तान को सिन्धु-घाटी के लिए ८ करोड़ रुपये की किस्त देने की काफी आलोचना की गई। यह भी कहा गया कि जब भारत की नदियों में पानी कम है, तो पाकिस्तान को इस वर्ष पानी कम दिया जाना चाहिए।

अमेरिकन सरकार के सहयोग से ट्राम्बे (बम्बई के निकट) में जो रासायनिक कारखाना कायम किया गया था, वह अक्टूबर के पिछले सप्ताह में चालू हो गया। उसमें अमोनिया खाद का निर्माण प्रारम्भ हो चुका है। इस कारखाने में प्रति वर्ष ९९ हजार टन यूरिया और ३ लाख ३० हजार टन नाइट्रो फासफेट खाद तैयार की जा सकती है।

## बड़े शहरों में राशन

भारत सरकार के कृषि मंत्री श्री सुब्रमण्यम ने घोषणा की है कि १० लाख से अधिक जनसंख्या के नगरों में १ जनवरी १९६६ तक राशनिंग जारी कर दिया जायगा। १ लाख व १० लाख के बीच की जनसंख्या वाले नगरों में १ मई १९६६ तक राशनिंग जारी किया जायगा। पहले यह तारीखें १ नवम्बर और १ मार्च घोषित की गई थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार अन्न की वसूली, राशनिंग की व्यवस्था अभी तक ठीक रूप से नहीं कर पाई है। यह भी सम्भव है कि मंत्रीमण्डल में स्वयं इस प्रश्न पर मत-भेद हो।

## जहाजी माल का संघर्ष

पाकिस्तान सरकार ने पिछले युद्ध के दिनों में भारत के अनेक जहाज या भारत को आने वाला माल जब्त कर लिया था। भारत सरकार ने घोषणा की है कि यदि पाकिस्तान ने यह माल नहीं लौटाया तो हम भी इसके प्रतिकार स्वरूप कोई कदम उठायेंगे। भारत ने पाकिस्तान के जहाजों को जो युद्ध के दिनों में भारतीय बन्दरगाहों पर थे, रोक लिया है। इन पर ३० हजार टन का पाकिस्तानी माल था। पाकिस्तान इससे बहुत कम १३ हजार टन के जहाज रोक सका है।

## पूर्वी यूरोप में वित्तमंत्री

भारत सरकार के वित्तमंत्री श्री कृष्णमाचारी भारत से पूर्वी देशों की यात्रा पर रवाना हो गये है। उनका पहला कार्यक्रम चैकोस्लेवाकिया में जाने का था। वहां भारत के उद्योगों के साथ सहयोग प्राप्त करने में बहुत सफलता मिली है। चैकोस्लेवाकिया में बड़े भारी उद्योग अच्छी तरह संगठित हैं। उसने भारत को पहले भी औद्योगिक योजना के लिए ६३ करोड़ से अधिक दिया है। वित्तमंत्री के साथ नई बातचीत के परिणाम स्वरूप अब अनेक नये उद्योगों में भी अब उस का प्रशंसनीय सहयोग मिलने का निश्चय हो चुका है।

## मास्को में

चैकोस्लेवाकिया के बाद वित्तमंत्री मास्को गये हैं। रूस ने उन्हें पहले भी अपने देश में निमंत्रित किया था कुछ महीनों से रूस ने अधिक सहयोग का आश्वासन दिया है। अब सब योजनाओं को निश्चित रूप दिया जा रहा है।

---

## पंजाब की क्षति

( पृष्ठ ५९७ का शेष )

आवश्यकता का अनुमान लगाया है। आज शरणार्थी बहुत से शिविरों में ठहरे हुए हैं। युद्ध-विराम पूर्णरूप से लागू नहीं हुआ है शान्ति स्थापित होने पर बहुत से व्यक्ति वापिस जाने को तैयार हो जायेंगे, किन्तु जिनके घर और ठिकाने नष्ट हो गये हैं, उनको वापिस भेजना बहुत आसान नहीं है। वह अधिक सुरक्षित स्थानों में जाना चाहेंगे। भोजन, वस्त्र, निवास और कारोबार की व्यवस्था पर कितना व्यय होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता।

पंजाब सरकार तथा जनता को ही यद्यपि युद्ध के सभी परिणाम भुगतने होंगे, फिर भी केन्द्र की सहायता के बिना यह कार्य सरलता से नहीं किया जा सकता। केन्द्र को भी इसके लिये आवश्यक व्यवस्था करनी होगी।

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

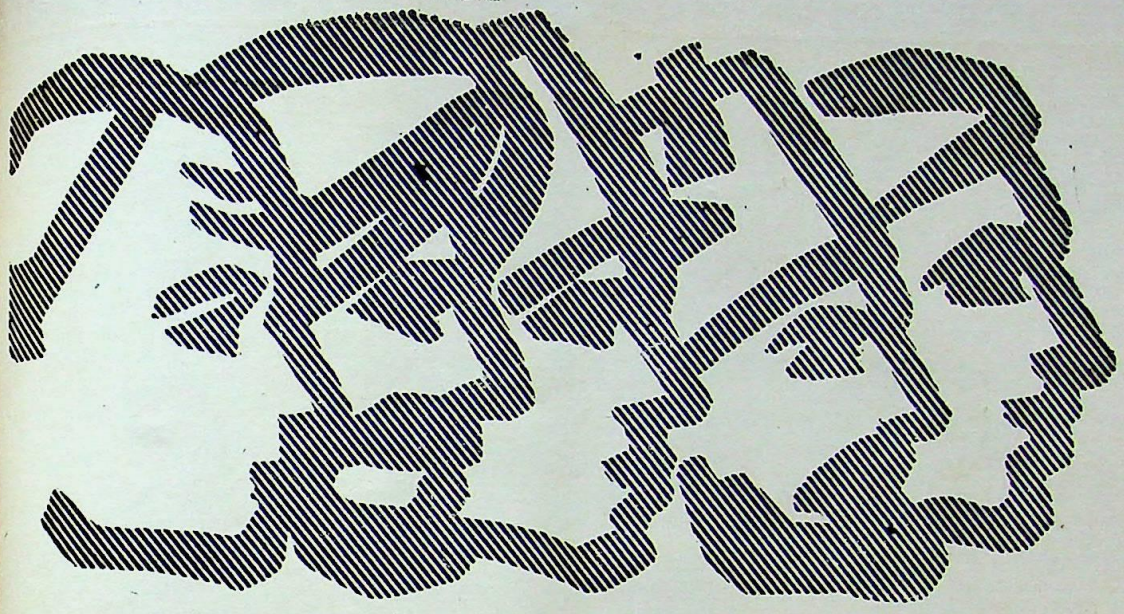

जहाँ करोड़ों लोग शांति के एक सूत्र में बंधे हैं।
जहाँ अनेक धर्म और सम्प्रदाय एक संस्कृति में गुंथे हैं।

ऐसा उदार और मिला-जुला है हमारा यह भारतीय समाज। इसे सुरक्षित रखने के लिए कौन अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में पीछे रह सकता है। याद रखिए, इस समाज में जो आपका स्थान है, वही है आपके पड़ौसी का।

**एक महान देश हमारा**
**एक महान राष्ट्र**

DA 65/P4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri




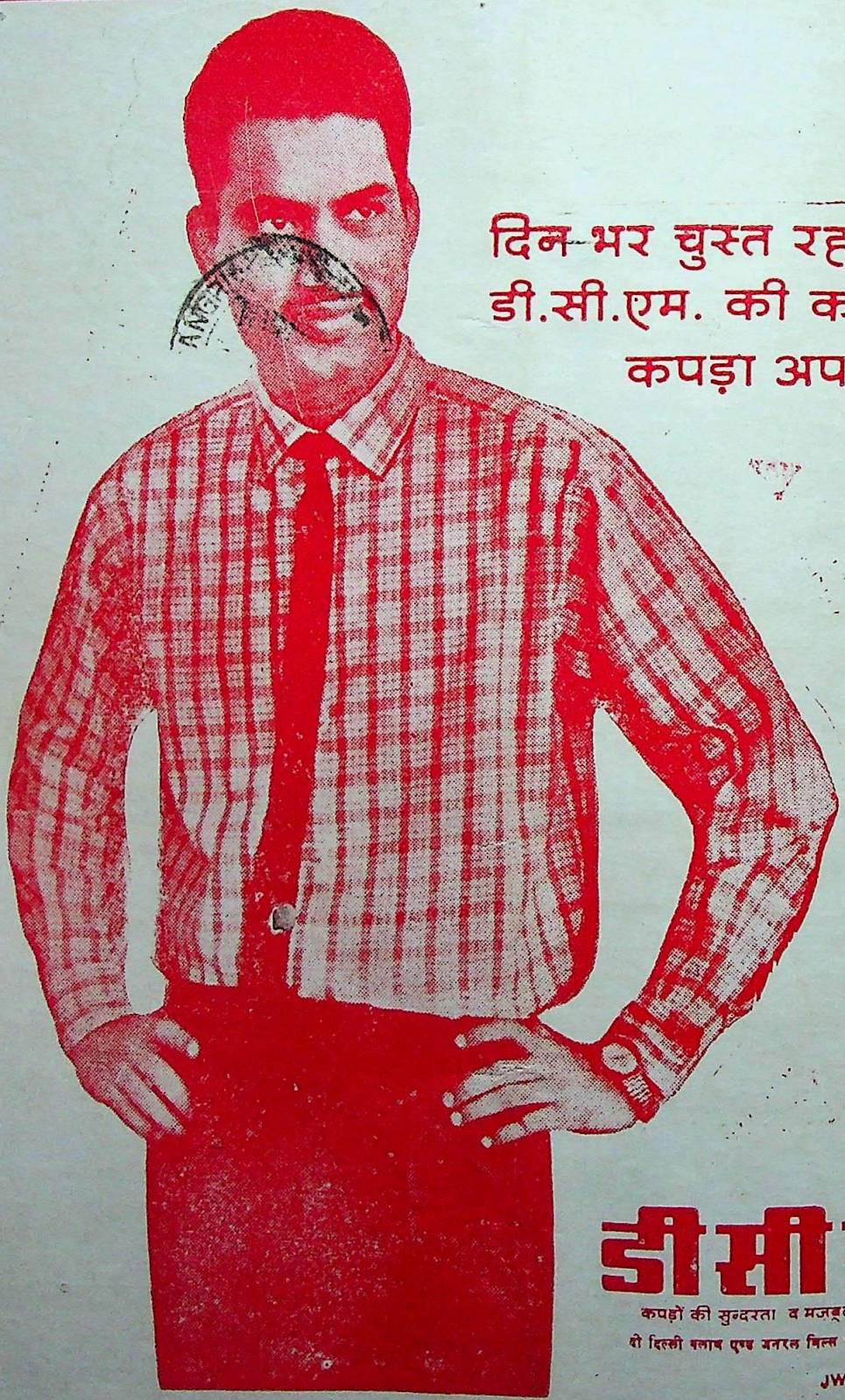

दिन-भर चुस्त रहने के लिए
डी.सी.एम. की कमीज़ों का
कपड़ा अपनाइए

डीसीएम

कपड़ों की सुन्दरता व मजबूती का प्रतीक

डी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली।

JWT DCM-3728 D H


सम्पादक—कृष्णचन्द्र विद्यालंकार द्वारा नवचेतन प्रेस (प्रा०) लि० (लीज़िज़ ऑफ अर्जुन प्रेस) दिल्ली-६ से मुद्रित
अशोक प्रकाशन मन्दिर, २५/११, [illegible], दिल्ली ७ से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14-12-65

# सम्पदा

## अर्थशास्त्र की प्रमुख मासिक पत्रिका

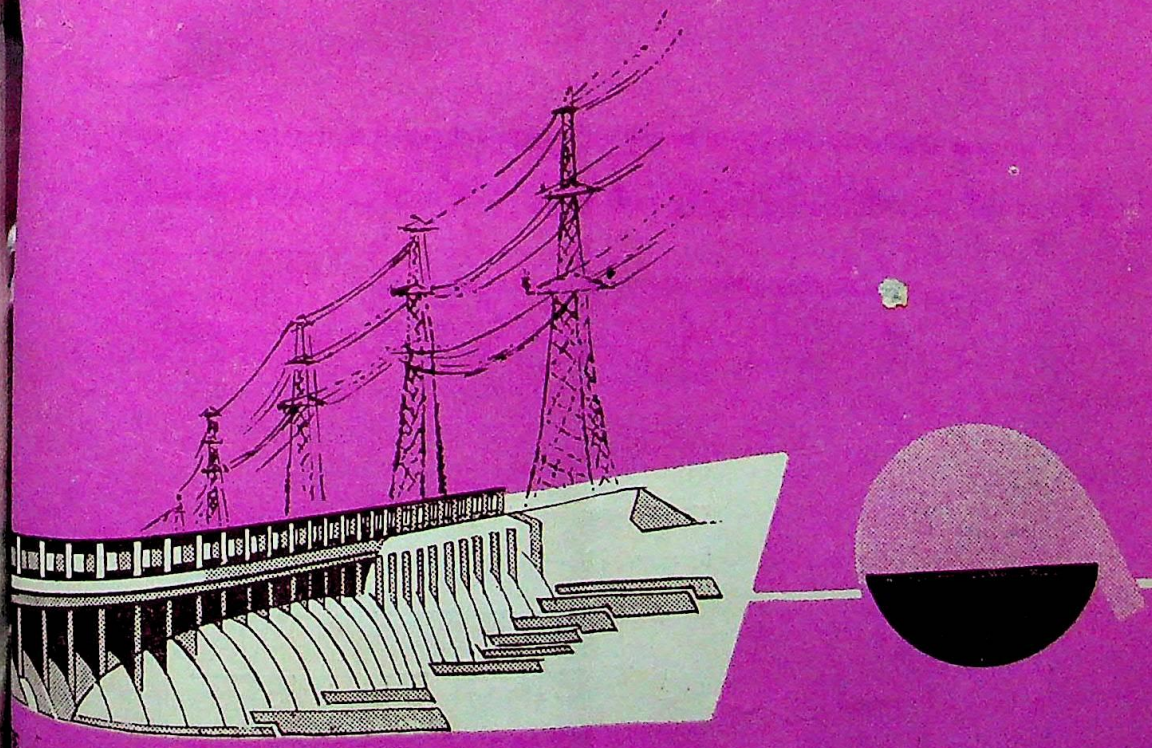

मूल्य : ६.००

प्रति अंक का मूल्य : ८० पैसे

प्रशोक प्रकाशन मन्दिर, शक्ति नगर, दिल्ली-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

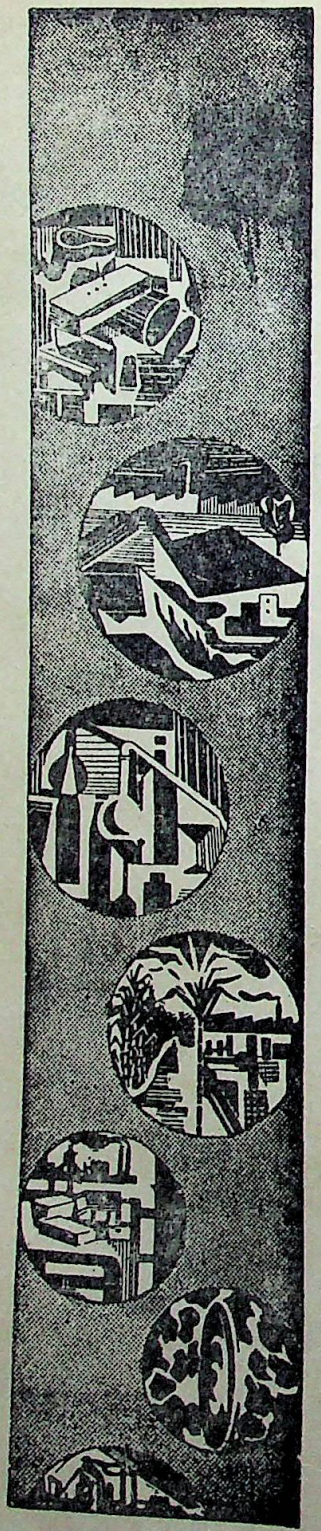

# न ये क्षि ति ज

स्वतन्त्रता पूर्व युग में भी जनता के सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लिए भारत की योजनाएं और कार्यक्रम थे। पर उनमें मौलिक निर्बलता थी कि उनका सम्बन्ध जनता की अपेक्षा सरकार के साथ अधिक था।

स्वतन्त्रता आई और इसके साथ नव-जागरण और जनता की योजनाएं—जनता के लिए और जनता के द्वारा। इसके परिणाम स्पष्ट थे, अधिक से अधिक बेहतर व सस्ती वस्तुएं तथा अधिक से अधिक लोगों के लिए बेहतर जीवन।

## डालमिया उद्योग समूह

निरन्तर ऐसे सामान का अधिक से अधिक उत्पादन करने का प्रयत्न कर रहे हैं जो हमारे जीवन स्तर को ऊंचा करने में सहायक हो। हम यह कामना न केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से, किन्तु लगभग एक चौथाई सदी से कर रहे हैं। यह काम कठिन होते हुए भी हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं, इस आशा के साथ कि कल का दिन अधिक उज्ज्वल, एवं नव-प्रभात नये क्षितिज से युक्त होगा।

DALMIA ENTERPRISES

डालमिया सीमेंट (भारत) लि., डालमियापुरम् (मद्रास रा.)
डालमिया मेगनेसाइट कार्पोरेशन, सेलम (मद्रास राज्य)
उड़िशा सिमेंट लि. राजगंगपुर (उड़िशा राज्य)
रजा बुलन्द शूगर कं० लि०, रामपुर (उ० प्र०)
दि रामपुर डिस्टिलरी एंड केमिकल कं० लि., रामपुर (उ. प्र.)

राष्ट्र की सेवा में सन्निहित

## डालमिया उद्योग-समूह

मुख्य कार्यालय—४, सिन्धिया हाउस, नयी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# निर्णायक चिन्ह

ऐसा कौन सा तथ्य है
जो आप को किसी
एक वस्तु विशेष की अपेक्षा
दूसरी खरीदने में प्रोत्साहित करता है।

## गुण ?

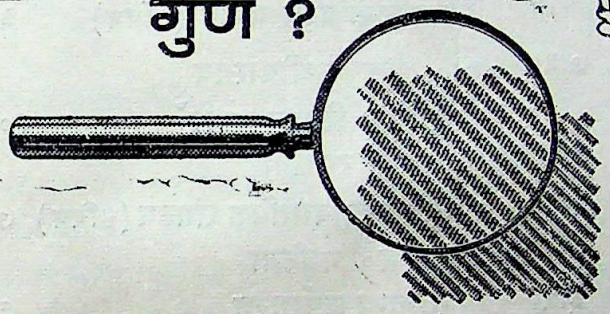

GWALIOR FABRICS

## मूल्य ?

## उपादेयता ?

हां। यह सभी आवश्यक हैं। पर इन से भी
ऊपर एक तथ्य और है
जिसे हम निर्णायक चिन्ह कह सकते हैं।
और वह है वस्तु का "नाम"

# ग्वालियर सूटिंग

भारत का सर्वोत्तम कपड़ा

दी ग्वालियर रेयन
सिल्क मैन्यू (वीविंग) कं० लि०
बिरलानगर, ग्वालियर

NPS GR/191

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri


# कुछ अनूदित तथा मौलिक श्रेष्ठ प्रकाशन

जॉन केनेथ गैलब्रेथ
(भारत में अमेरिका के भूतपूर्व राजदूत)
**समृद्ध समाज** ६.००
**उदारता की घड़ी** ४.००
**आर्थिक विकास का सापेक्ष चित्रण** २.००

जेरेल्ड एम० मीअर
**अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा आर्थिक विकास** (सचित्र) ५.५०

जेस्सी डब्ल्यू० मारखम
**अमरीकी अर्थ-व्यवस्था** (सचित्र) ७.५०

राबर्ट जे० एलेक्जैण्डर
**आर्थिक विकास एक प्रारम्भिक विवेचन** ५.५०

जोसेफ ए० शुम्पीटर
**दस महान अर्थशास्त्री** ६.५०

डी० जी० कसूलस
**आर्थिक प्रगति की कुंजी** १.००

गार्हर्ड कोम : थिमोडोर गाइगर
**अमरीकी जनता की अर्थ-व्यवस्था** (सचित्र) ६.००

ह्वीलर मैकमिलन
**अन्नपूर्णा धरती** (सचित्र) ३.५०

मार्गरेट ओ० हाइड
**आबादी की समस्या** (सचित्र) ३.५०

अनु० कृष्णचन्द्र
**प्रगति के बढ़ते चरण** (सचित्र) ३.७५

डा० श्रीकृष्ण श्रीवास्तव
**आर्थिक विचारधाराएँ** १०.००

जयप्रकाश रस्तोगी
**आधुनिक व्यावसायिक संगठन** (सचित्र) ७.९०

बी० एम० भाटिया
**सामान्य अर्थशास्त्र** ६.००

वेदप्रकाश सिंह
**भारत के प्रमुख उद्योग** (पुरस्कृत) ७.५०

## आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६


# विषय-सूची


| नं० | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. | एक सप्ताह के समाचार | ६१७ |
| २. | सम्पादकीय टिप्पणियां | ६१९ |
| ३. | कीमतें कैसे कम हों ? श्री दहाणुकर | ६२३ |
| ४. | स्टेट बैंक क्या है, क्या करता है ? | ६२६ |
| ५. | हमारे उद्योग—बिजली, अणुशक्ति, स्पात, सीमेंट | ६२९ |
| ६. | कुछ देश की : कुछ विदेश की | ६३० |
| ७. | जनसंख्या और अन्न समस्या श्री आर० एस० तिवारी | ६३१ |
| ८. | जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण श्री धीरेन्द्रकुमार | ६३३ |
| ९. | ट्राम्बे का रासायनिक उर्वरक उद्योग | ६३७ |
| १०. | प्रगति पथ पर जहाजी उद्योग | ६३९ |
| ११. | सर्वोदय पृष्ठ-खादी-प्रगति के दस वर्ष आदि | ६४१ |
| १२. | उद्योगों का विकास : आयात में कमी | ६४५ |
| १३. | संयुक्त सहकारी कृषि | ६४६ |
| १४. | स्फुट आर्थिक विचार | ६४७ |
| १५. | यूगोस्लाविया की आर्थिक प्रगति | ६४९ |
| १६. | दक्षिण भारत में प्रगतिशील चीनी उद्योग | ६५० |
| १७. | नया सामयिक साहित्य | ६५१ |
| १८. | राज्यों की आर्थिक गतिविधि : उत्तरप्रदेश-पंजाब | ६५३ |
| १९. | अर्थवृत्त-चयन | ६५९ |
| २०. | जीवन बीमा निगम | ६६२ |


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलिफोन नं० २२५८७३

वर्ष : १४
अंक : १२
दिसम्बर : १९६५

# सप्तपदी

वर्ष : १४ दिसम्बर १९६५ अंक : १२

## एक सप्ताह के कुछ समाचार

इस मास के प्रारम्भ के आठ दिनों में कुछ समाचार निम्नलिखित हैं :—

यद्यपि पूरे अंक प्राप्त नहीं हुए हैं, तथापि गैर-सरकारी अनुमानों के अनुसार कम से कम देश के एक चौथाई भाग पर अकाल की विभीषिका छा गई है। इसका असर ५ करोड़ से अधिक लोगों पर पड़ेगा।

एक अनुमान के अनुसार इस वर्ष लगभग ९० लाख टन की अनाज की कमी होगी। यदि अब भी वर्षा हो गई और वितरण की व्यवस्था ठीक रही तो भी ३०-४० लाख टन की कमी रहेगी।

आंध्र, मध्यप्रदेश और उड़ीसा सदा से बचत वाले राज्य रहे हैं, किन्तु इस वर्ष में ये राज्य भी कमी वाले राज्य बन रहे हैं। पहले मध्यप्रदेश प्रति वर्ष ५-६ लाख टन अनाज बाहर भेजता था, पर इस वर्ष उसे भी ४-५ लाख टन अनाज मंगाना पड़ेगा।

उड़ीसा और राजस्थान को क्रमशः तीन और पांच लाख टन अनाज दूसरे राज्यों से मंगाना पड़ेगा। उत्तर-प्रदेश की गति भी ६-७ लाख टन अनाज मंगाये बिना नहीं होगी। राजस्थान में २७ में से २० जिलों में दुर्भिक्ष की भयावह स्थिति उत्पन्न हो गई है। करीब १६००० वर्ग मील तक हरियाली का नाम नहीं रहा। एक अनुमान के अनुसार महाराष्ट्र को लगभग १५ लाख टन, गुजरात को ३० लाख टन, केरल को १२ लाख टन, बिहार, प० बंगाल और मैसूर को भी क्रमशः ५,५ और ७ लाख टन अनाज मंगाने की व्यवस्था करनी होगी।

दिल्ली में ८ दिसम्बर से राशन जारी हो रहा है। फ़िलहाल प्रत्येक को १२ औंस अनाज प्रतिदिन के हिसाब से मिला करेगा। ६॥ लाख परिवारों को राशन कार्ड बांटे जा चुके हैं। कोई व्यापारी अपने घरेलू उपयोग के लिए भी १० क्विंटल गेहूँ और १० क्विंटल चावल से अधिक न रख सकेगा।

राष्ट्रीय स्तर पर अन्न वसूली का प्रश्न अभी तक विचाराधीन भी नहीं है।

वर्षा के कम होने के कारण नदियों और तालाबों में पानी कम रह गया है। बड़े-बड़े बांधों में पानी की कमी के कारण बिजलीघर बन्द हो रहे हैं और इसलिए उद्योगों को न पानी मिल रहा है और न बिजली। बड़े-बड़े खेत भी नहरी पानी न मिलने से सूख रहे हैं।

भाकरा बांध में २० फुट पानी कम हो गया है। बिजली की कमी के कारण दिल्ली को २० मेगावाट, नांगल फैक्टरी को ३० मेगावाट, बिजली कम कर दी गई है। स्वयं पंजाब में भी २५ प्रतिशत कटौती कर दी गई है। इसके परिणामस्वरूप राज्य में औद्योगिक उत्पादन भी ५० प्रतिशत कम होने की सम्भावना है।

राजस्थान के गांधीसागर से पानी और फलतः बिजली की कमी के कारण २५ से ६० प्रतिशत बिजली खर्च में कटौती कर दी गई है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास में १ नवम्बर से थर्मल बिजली के क्षेत्र में २० प्रतिशत और पनबिजली के क्षेत्र में २५ प्रतिशत कटौती कर दी गई है। मध्यप्रदेश में १ नवम्बर से घरेलू व औद्योगिक प्रयोग के लिए बिजली के खर्च में ५० प्रतिशत कटौती कर दी गई है।

उद्योगों में २० प्रतिशत कटौती पहले ही कर दी गई थी। दुकानों व व्यापारिक संस्थानों को ७ बजे ही काम बन्द करने के लिए कह दिया गया है। गांधीसागर का बिजलीघर ६५००० किलोवाट बिजली प्रतिदिन उत्पन्न करता था, अब केवल २५००० किलोवाट पैदा कर रहा है।

हीराकुड बांध में पानी १० फुट तक नीचे उतर गया है।

अनेक राज्यों में तो पीने तक का पानी दुर्लभ हो रहा है।

पाकिस्तान के भारत पर आक्रमण और भारतीय सेनाओं की विजय के बाद अमेरिका, ब्रिटेन और पश्चिमी जर्मनी आदि मित्र संघ के देशों ने अपनी प्रतिज्ञात राशि भारत को देने पर पुनर्विचार करने और उसे स्थगित करने के निश्चय प्रकट किये हैं। इस कारण विदेशी मुद्रा की स्थिति बहुत गम्भीर हो गई है। सैनिक सामग्री ही नहीं, व्यापारिक समझौतों के अन्तर्गत आने वाला माल भी भारत में अब नहीं आ रहा। अनेक योजनाएं स्थगित करनी पड़ रही हैं।

१९४७ से अब तक २६.३४ अरब रु० की विदेशी मुद्रा ६३६ लाख टन अन्न मंगाकर खर्च कर चुके हैं।

भिन्न-भिन्न देशों और सं० रा० सं० की संस्थाओं से अब तक हम ३३.२६ अरब रु० के ऋण ले चुके हैं, फिर भी १६ नवम्बर तक हमारा विदेशी मुद्राकोष सिर्फ ६४.७० करोड़ रु० शेष रहा है।

रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार सब प्रयत्नों के बावजूद हमारा निर्यात ६०३ करोड़ रु० से ज्यादा नहीं बढ़ सका है।

ये सब समाचार एक पक्ष के हैं, एकांगी हैं, भारत की प्रगति के समाचार यहां नहीं दिये, यह कहकर हम वस्तु-स्थिति की उपेक्षा नहीं कर सकते। हमने जो प्रगति की है, उस पर हम प्रसन्न हो सकते हैं, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह प्रगति हमने निरन्तर १५ वर्ष तक कठिन परिश्रम, त्याग और अरबों रुपया खर्च करके की है, किन्तु फिर भी यह प्रगति सन्तोषजनक नहीं हैं। इसका प्रमाण उपर्युक्त समाचार हैं। ये समाचार हमारे प्रयत्नों की स्वयं कठोर टीका हैं।

इन सब समाचारों के बाद हमारे सामने एक दो प्रश्न वृहदाकार धारण करके उपस्थित होते हैं। क्या हमारे प्रयत्नों में कोई भारी कमी रह गई है? क्या हमारी योजनाओं की नीति में ही कोई मौलिक दोष है?

इन दोनों प्रश्नों पर देश के विचारकों, अर्थशास्त्रियों और प्रशासकों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने अपनी-अपनी दृष्टि और अपने-अपने विचार के अनुसार चिन्तन किया है और अपनी-अपनी समझ के अनुसार सुझाव भी दिये हैं। ये सुझाव परस्पर विरोधी है। एक की सम्मति में योजना का उद्देश्य समाजवाद—कृषि, उद्योग और व्यापार आदि का राष्ट्रीयकरण की स्थापना—होनी चाहिए, दूसरे की सम्मति में योजना का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की समृद्धि होना चाहिए और इसके लिए निजी उपक्रमों को प्रोत्साहन देना चाहिए। समाजवाद ध्येय नहीं, साधन है, इसलिए उसे उतना ही महत्व देना चाहिए। एक राशनिंग का समर्थन करता है तो दूसरा राशनिंग को अनेक आपत्तियों व कष्टों का मूल कारण बताता है। एक विचारक कृषि तथा ग्रामोद्योगों को प्रमुखता देना चाहता है, तो दूसरा केन्द्रीकृत बड़े पूंजीगत उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देता है। कृषि विकास के लिए भी बड़ी नदी योजनाएं, कृषि का यंत्रीकरण और बड़े-बड़े सामूहिक फार्म आदि का परामर्श देने वाले अर्थशास्त्री भी हैं और इनका मौलिक विरोध करने वाले भी। अर्थात् देश के सामने प्रस्तुत प्रश्नों पर देश के विचारक एकमत नहीं है। वे योजना की नीतियों और उद्देश्यों के सम्बन्ध में परस्पर विपरीत विचार रखते हैं।

हमारी नम्र सम्मति में योजनाओं का मूल उद्देश्य राष्ट्र की सर्वांगीण समृद्धि है। निजी उद्योग, सहकारिता या राष्ट्रीयकरण सब उसी के साधन हैं। जब हम साधन को साध्य समझ लेते हैं, तभी मूल उद्देश्य पीछे रह जाता है और हमारी दृष्टि स्पष्ट नहीं रहती। भारत सरकार ने मिश्रित अर्थ-नीति अपनाकर समन्वय करने की नीति अवश्य



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनायी है, किन्तु अब तक की गतिविधि पर एक दृष्टि डालने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि सब दृष्टिकोणों को प्रसन्न करने के प्रयत्न में वह सफल नहीं हुई। व्यावहारिक मार्ग छोड़कर उसने ढिलमिल नीति अपनायी है। योजनाओं की असफलताओं का यह एक बड़ा कारण है। भूमि-सुधारों का आदर्श बहुत अच्छा हो सकता है, परन्तु इनके कारण एक अनिश्चित और अस्थिर स्थिति पैदा हो गई है और कृषि-उत्पादन को बढ़ाने की चेष्टाएं असफल हो रही हैं। एक तरफ सरकार ग्रामोद्योगों के विकास का नारा लगाती है, दूसरी ओर वह चावल कूटने और सूत कातने की नई आधुनिक मिलें खोलना चाहती है। एक तरफ वह गांव २ में बिजली का जाल फैलाना चाहती है दूसरी ओर बिजली उत्पादन पूर्ण न होने के कारण उद्योगों को आवश्यक बिजली भी नहीं दे पाती। इसका अर्थ यह है कि सरकार के उद्देश्य और नीति में परस्पर समन्वय और एकरूपता नहीं है।

विकास योजनाओं की असफलता और देश में आर्थिक संकट का दूसरा मुख्य कारण है सरकारी कर्मचारियों की अयोग्यता और कठिन श्रम के प्रति अरुचि। स्वयं योजना आयोग ने तीसरी पंचवर्षीय योजना बनाते समय सरकारी कर्मचारियों की सुस्ती अदूरदर्शिता तथा अयोग्यता की ओर विशेष ध्यान खींचा है। सरकारी मशीनरी ही जड़ हो गई है। उसमें योजना के प्रति उत्साह का अभाव है और इसी कारण वह जनता का सहयोग लेने में सर्वथा असमर्थ है। देश के कृषि संकट का एक बड़ा कारण यही दूषित सरकारी मशीनरी है। सरकारी अफ़सर गांव २ में जाकर किसान के साथ आत्मसात् नहीं होना चाहते। किसान की समस्याओं को अपनी समस्या नहीं समझते। लम्बी २ फाइलों में उनका सारा दिन बीत जाता है। स्वयं कृषि मंत्री श्री सुब्रह्मण्यम के शब्दों में "थोड़े से अफसर ही म्युजिकल चैयर की भांति कभी इस कुर्सी कभी उस कुर्सी पर जा बैठते हैं। बड़ी २ वैज्ञानिक और टेक्नीकल योजनाओं को भी ऐसे २ अफसर चलाते हैं जो स्वयं ज्ञान-विज्ञान से बिलकुल कोरे होते हैं। ऐसे लोगों द्वारा पास की हुई योजनाएं ऐसी ही होती हैं, जैसी दफ्तर के क्लर्क द्वारा लिखा गया डाक्टरी नुस्खा।" श्री सुब्रह्मण्यम ने आगे यह भी कहा "ऐसे उदाहरण तो अनगिनत होते हैं, जहां घोड़ों की जगह गधे जोत दिये जाते हैं। केन्द्रीय खाद्य मंत्रालय में ही ७५ प्रतिशत अधिकारी ऐसे हैं, जिनकी न तो कृषि की पृष्ठभूमि है और न ग्रामीण दृष्टि। वे सभी शहरों में पले-बढ़े प्रशासक हैं।"

वस्तुतः स्वयं योजना भिन्न २ सम्मतियों के बावजूद बहुत बुरी नहीं है। उसका क्रियान्वयन ही गलत है और इसी कारण जन-साधारण का सरकारी योजनाओं पर विश्वास उत्पन्न नहीं होता और वे योजनाएं जनता का सहयोग प्राप्त नहीं कर पातीं। सामुदायिक विकास के अधिकांश कर्मचारी बाबूगिरी और क्लर्की करना चाहते हैं। पंजाब के एक बड़े अधिकारी डा० तुलसीराम ने भाषण देते हुए यह रहस्योद्घाटन किया है कि पंजाब सचिवालय का अमला उत्तरप्रदेश के सचिवालय के अमले से दुगना है जबकि उत्तरप्रदेश की आबादी पंजाब से चौगुनी है। प्रशासनिक ढांचे में एक बड़े भारी परिवर्तन की आवश्यकता है, तभी सामुदायिक विकास, सहकारिता और पंचायतों के कार्यक्रम ठीक तरह से काम कर सकते हैं और जनता का पूर्ण सहयोग विकास कार्य में मिल सकता है। यदि इस भारी त्रुटि को दूर किया जा सके तो निस्संदेह अन्न संकट दूर हो सकता है; विदेशी मुद्रा पर हम कम निर्भर कर सकते हैं; सिंचाई योजनाएं कुछ अधिक फल ला सकती हैं, दुर्भिक्ष अनावृष्टि आदि के परिणामों की भयंकरता कुछ कम की जा सकती है। तभी जन-साधारण भी अन्न के सदुपयोग और अधिक परिश्रम द्वारा योजनाओं को सफल बनाने में सहयोग दे सकता है।

## सूती मिलें और सरकार

महाराष्ट्र तथा दूसरे राज्यों के वस्त्र उद्योग में एक नया संकट खड़ा हो गया है। बहुत सी मिलें बन्द हो रही हैं या किसी समय भी उनके बन्द होने की आशंका की जा रही है। इसका प्रभाव श्रमिकों पर भी पड़ रहा है। बम्बई में विधानसभा में दिये गये एक वक्तव्य से मालूम होता है कि अब तक मिलें बन्द हो जाने से १४८२३ श्रमिक बेकार हो चुके हैं। इसलिए श्रमिक संगठनों की ओर से यह मांग की जा रही है कि सरकार स्वयं इन मिलों को



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्रबन्ध और नियंत्रण में ले ले तथा श्रमिकों में बेकारी बढ़ने से रोके। उसने कई मिलों को अपने नियंत्रण में ले भी लिया है और कुछ को लेने वाली है। किन्तु प्रश्न यह है कि मिलों में ऐसी स्थिति उत्पन्न क्यों हुई?

श्रमनेताओं के कथनानुसार स्थिति का कारण प्रबन्ध कर्त्ताओं की अयोग्यता, भाई भतीजावाद या नफाखोरी—जाली बिक्री, जाली खरीद, अनापशनाप व्यय आदि हैं। यदि यह कारण हों तो इसमें सन्देह नहीं कि योग्य प्रबन्धकर्त्ताओं के हाथों में मिलें सौंपने पर स्थिति में कुछ सुधार हो सकता है, किन्तु यदि इस संकट के कारण कोई दूसरे हों—उत्पादन व्यय की अधिकता, कपास आदि कच्चे माल की कमी, श्रमिकों के वेतनों की अधिकता अथवा बाजार में मांग की कमी तो हमें सन्देह है कि सरकार इन मिलों को अपने हाथ में लेकर स्थिति में एक रात में ही कोई चामत्कारिक परिवर्तन कर सकेगी। शोलापुर व नागपुर की मिलों पर आजकल सरकारी नियंत्रण है। स्वयं सरकार उनका प्रबन्ध करती है, किन्तु वह भी मिलों को अधिक घाटे में न चलने देने के लिए श्रमिकों को कम दर पर वेतन दे रही है। चार हिन्दु मिलों को सरकार ने हाल ही में अपने प्रबंध में ले लिया है। देखना यह है कि सरकार श्रमिकों की मांगों की रक्षा करते हुए इन मिलों की व्यवस्था में क्या सुधार करती है।

उद्योग के प्रतिनिधियों के कथनानुसार इस संकट का मुख्य कारण बाजार में मांग का अभाव है। मंहगाई लगातार बढ़ने के कारण लोगों की क्रयशक्ति कम हो रही है और स्वभावतः उनमें कपड़ा खरीदने की सामर्थ्य कम हो रही है। वे अनाज को ही प्राथमिकता दे रहे हैं। मिलें ऐसे दिनों में बैंकों से या बाजार से रुपया लेकर अपने गोदामों को रोक रखने में समर्थ होती थीं, किन्तु अब आयकर के अधिकारियों के द्वारा अधिक जांच पड़ताल और तलाशी के कारण रुपया लेने का यह स्रोत भी उद्योग के लिए करीब २ सूखता जा रहा है। रिजर्व बैंक भी बैंकों को अधिक रुपया ऋण न देने के आदेश जारी कर रहा है। दूसरी तरफ मंहगाई भत्ता लगातार बढ़कर उत्पादन-व्यय में वृद्धि कर रहा है। कपास भी मंहगी होती जा रही है। इसलिए निर्यात पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है। प्रश्न यह है कि इन परिस्थितियों में यदि श्रम प्रतिनिधियों की सलाह मानकर सरकार सूती मिलों का संचालन अपने हाथ में ले लेती है तो क्या वस्त्र उद्योग की स्थिति सुधर जायगी और श्रमिकों की बेकारी का भय दूर हो जायगा अथवा सरकार देश के करदाताओं पर और अधिक बोझ डालकर सूती मिलों को चलाना पसन्द करेगी? आज की स्थिति में सरकार भी अपने खर्च बढ़ाना हमारी नम्र सम्मति में पसन्द नहीं करेगी।

हाल ही में वित्तमंत्री श्री कृष्णमाचारी ने संसद में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया था कि सार्वजनिक क्षेत्र में १८ ऐसे उद्योग हैं, जो पूरी क्षमता से काम नहीं कर रहे अथवा घाटे में चल रहे हैं। इसके कारण बताते हुए वित्तमंत्री ने कहा है कि कोयला, गैस, जिप्सम, विदेशी मुद्रा की कमी और औद्योगिक अशान्ति आदि के कारण सरकारी उद्योग अपनी पूरी उत्पादन क्षमता का प्रयोग नहीं कर पा रहे और अनेक उद्योगों में हानि हो रही है। ऐसी स्थिति में यदि सरकार सूती मिलों को भी अपने प्रबन्ध में ले ले तो क्या यह दूरदर्शिता, व्यावहारिकता तथा श्रमिकों के लिए हित-चिन्ता की बात होगी?

## शोध पर व्यय

आजकल के औद्योगिक विकास में यह बहुत आवश्यक है कि हम वैज्ञानिक शोधकार्य पर अधिक से अधिक ध्यान दें। भारत सरकार के शोधकार्य में अधिकाधिक ध्यान देने के बावजूद अब भी हम अन्य देशों से बहुत पीछे हैं। नीचे की तालिका से मालूम होता है कि चीन भी इस दिशा में हमसे अधिक आगे है। वहां प्रति व्यक्ति शोधकार्य पर तीन रुपये खर्च होता है, जबकि भारत में कुल एक रुपया।

| देश | वर्ष | प्रति व्यक्ति शोध पर खर्च |
|---|---|---|
| अमेरिका | १९६१-६२ | ४१० रु० |
| ब्रिटेन | ,, | १६२ रु० |
| स्वीडन | ,, | १४६ रु० |
| भारत | ,, | १ रु० |
| चीन | १९६०-६१ | ३ रु० |
| आस्ट्रेलिया | १९५८-५९ | ४० रु० |
| रूस | ,, | ९९ रु० |

चीन जैसा देश जिसकी आबादी भारत से करीब पौने दो गुनी है, शोध पर हमसे प्रति व्यक्ति तीन गुना अर्थात कुल ५ गुना खर्च करता है। क्या इस गति से हम अभिलक्षित लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे?

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## जन. डि गाल और फ्रांस का आर्थिक विकास

फ्रांस के राष्ट्रपति जनरल डि गाल के सप्तवर्षीय शासन में जहां फ्रांस ने विश्व की राजनीति में एक प्रमुख स्थान बना लिया है, जिसकी उपेक्षा न अमेरिका कर सकता है और न ब्रिटेन, वहां फ्रांस की आर्थिक स्थिति में भी बहुत सुधार हुआ है। आज पांच में से एक फ्रांसीसी के पास अपनी कार है। स्वीडन के सिवा, जिसकी प्रति व्यक्ति आय समस्त यूरोपियन देशों की प्रतिव्यक्ति आय से अधिक ऊंची है, किसी भी अन्य देश में कारों के स्वामियों का अनुपात फ्रांस से कम है। इन दो वर्षों को छोड़कर फ्रांस के आर्थिक विकास का अनुपात पांच से सात प्रतिशत रहा है। जनरल डि गाल के शासनकाल में जीवन-निर्वाह व्यय कामन मार्केट के देशों की तुलना में सबसे कम बढ़ा है। इसी अवधि में फ्रांसीसी सिक्का फ्रांक ज्यादा मजबूत हो गया है। अवमूल्यन की नीति पर चलने के कारण आज वहां ६०० करोड़ डालर का सोना व डालर एकत्र हो गये हैं। विमान-उद्योग और तेल व गैस-उद्योग का विकास वहां द्रुत गति से हुआ है। अलजीरिया में इन उद्योगों का विकास इस शासनकाल में हुआ है। सहारा के मरुस्थल में अमेरिका व ब्रिटेन के विरोध के बावजूद अणुबमों के विस्फोट में सफलता पाकर फ्रांस भी बड़ी शक्तियों में गिना जाने लगा है। कामन मार्केट की स्थापना में फ्रांस के जोरदार नेतृत्व ने उसे बहुत बलशाली बना दिया है। ब्रिटेन के प्रवेश को उसी का आग्रह रोक पाया है और आज भी डि गाल की नीति पर कामन मार्केट का भविष्य निर्भर करता है। पिछले चुनाव में ऐसा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति भी ५० प्रतिशत मत प्राप्त नहीं कर सका और उसे निर्णायक चुनाव में फिर खड़ा होना पड़े, यह इस बात का प्रमाण है कि नेता की लोकप्रियता स्थिर नहीं रहती। किसी भी भूल से या गर्व से वह सम्मान खो बैठता है।

## आयल कारपोरेशन आफ इण्डिया

इण्डियन आयल कारपोरेशन को स्थापित हुए केवल छः वर्ष ही हुए हैं। किन्तु इस अवधि में ही उसने देश के तेल व्यवसाय में अपना विशेष स्थान बना लिया है। १९६२-६३ में देश में कुल तेल की बिक्री में इस कारपोरेशन का प्रतिशत ६.३ था, जो १९६४-६५ के अन्तिम तिमाही में बढ़कर १५.६ प्रतिशत हो गया है। इस समय इस कारपोरेशन के पास तीन रिफ़ाइनरियां हैं। गोहाटी की रिफाइनरी बहुत सन्तोषजनक काम कर रही है। इस एक वर्ष में इसकी उत्पादन क्षमता १ लाख टन बढ़ गई है। यह योजना है कि प्रति वर्ष इसकी क्षमता बढ़ाकर ११ लाख टन कर दी जाय। पैट्रोलियम गैस प्लांट लगाकर यह रिफाइनरी २ करोड़ रु० का लाभ कमाने लगेगी। बरौनी की रिफाइनरी भी अपनी क्षमता ३० लाख टन तक करने जा रही है, जबकि आज १० लाख टन की क्षमता पर काम कर रही है। कोयली रिफ़ाइनरी की उत्पादन क्षमता भी २ करोड़ टन से बढ़ाकर १९६६ तक ३ करोड़ टन की जा रही है। इन रिफ़ाइनरियों के लिए कच्चे तेल का उत्पादन भी बढ़ाना पड़ेगा। इस दिशा में आयल एण्ड नेचरल गैस कारपोरेशन द्वारा गुजरात के तेल-कूपों से प्रतिदिन ३३०० टन की बजाय ४८०० टन कच्चा तेल निकाला जाने लगा है। हलदिया रिफ़ाइनरी के सम्बन्ध में समझौते की बातचीत चल रही है। उसकी भी सफलता की आशा है।

## लज्जाजनक ! ! !

पी० एल० ४८० का प्रश्न आजकल देश में बहुत विवादग्रस्त हो चुका है। आत्म सम्मान और आत्म-निर्भरता का तकाजा है कि हम अमेरिका पर निर्भर न रहें, किन्तु दूसरी ओर देश में अनावृष्टि आदि के कारण जो भारी संकट पैदा हो गया है, उसे भी नजरअन्दाज़ नहीं कर सकते। विवश होकर हमें अमेरिका से अनाज मंगाना ही पड़ रहा है।× खाद्य मंत्रालय की यह युक्ति कुछ समझ में आजाती है, परन्तु पी० एल० ४८० के अन्तर्गत हम ऐसा भी सामान मंगा रहे हैं, जो बहुत कम आवश्यक है और वस्तुतः उसके बिना कोई कठिनता नहीं होती। भला इस पर कौन विश्वास करेगा कि हमने १९६३-६४ में २.६ करोड़ रु० के लिपस्टिक ही मंगाये हैं। एक सूची के अनुसार हमने अमेरिका से अनाज के अतिरिक्त निम्न-लिखित सामान करोड़ रु० में मंगाया है :—

पेय द्रव्य ११.१२, कपड़े व टैरिलिन ४. ५,

×छपते-छपते मालूम हुआ है कि अमेरिकन राष्ट्रपतिने १५ला. टन अनाज के जल्दी ही लदान के आदेश दे दिये हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनस्पति घी, तेल, चरबी ४८. ३, सिगार ६. ६,
शानदार मोटर गाड़ियां २.८०, और रासायनिक
साबुन व शृंगार सामग्री ८. ८

स्रोतः—पहले तीन पदार्थ इकानामिक सर्वे आफ़ फ़ार ईस्ट एशिया यू० ने० प्रकाशन १९६४ और आगे के तीन पदार्थ बुलेटिन कंट्रोलर आफ़ ट्रेड-आयात व निर्यात से उपर्युक्त विलास सामग्री धनियों के लिए ही मंगाई जा रही है। इस सामग्री को मंगाने का तो औचित्य किसी तरह सिद्ध नहीं किया जा सकता।

यह हमारे लिए कम लज्जा की बात नहीं कि हमारा देश प्रति व्यक्ति अमेरिकन अनाज सबसे अधिक मंगाता है। भारत में ५.७० डालर प्रति व्यक्ति अनाज आता है, जबकि जापान में १.९९, थाइलैण्ड में १.६३, बरमा में २.४३, अफगानिस्तान में ३.०३ और लंका में ३.९४ डालर का अनाज आता है।

## अनाज के छः शत्रु—विनोबा

मनुष्य के ६ रिपु हैं : काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर। ये तीन प्रकार के हैं : राजस, तामस और सात्विक। अन्न के शत्रुओं में भी राजस हैं—जूट और कपास। तामस हैं—चाय और तम्बाकू। सात्विक हैं, गन्ना और मूंगफली।

पहले पूर्व बंगाल में जूट होता था। पाकिस्तान हो गया, तब वह अलग हो गया। जूट की मिलें कलकत्ते में थीं, लेकिन जूट रहा नहीं। भारत सरकार ने कलकत्ते की मिलों के लिए बिहार और पश्चिम बंगाल में जूट उगाने के लिए प्रोत्साहन दिया। परिणाम यह हुआ कि दुगनी मिलें हुईं और दुगना जूट हुआ। माल दूना हो गया तो दाम गिर गया, किसान को पैसा भी नहीं मिला और इधर अनाज कम हुआ। बिहार में भी अनाज कम है और बंगाल में भी। लेकिन जूट दोनों जगह है। अनाज का दूसरा रजोगुणी शत्रु है, कपास। परदेश के लिए कपास बढ़ाओ तो उसमें जमीन जाएगी, खेती के लिए कम होगी।

तमोगुणी शत्रु हैं, चाय और तम्बाकू। मुजफ्फरनगर और दरभंगा ने सब जगह तम्बाकू लगा दी है। अच्छी से अच्छी जमीन तम्बाकू में जा रही है। वह बन्द करनी चाहिए। वैसे ही चाय है। चाय परदेश जा रही है, तो अच्छा है। उससे डालर मिलेगा। लेकिन उसके लिए हमारे लोगों को चाय छोड़नी होगी।

सात्विक शत्रु हैं, गन्ना और मूंगफली। गन्ना अच्छी चीज है, क्योंकि उससे शक्कर बनती है। वह खाने की चीज है। लेकिन शक्कर ज्यादा बनी तो वह गल्ले की दुश्मन बनेगी। गल्ला कम पड़ रहा है और भारत में गन्ना बढ़ रहा है। हमें डर है कि आगे चलकर कहीं गन्ने और गल्ले की लड़ाई न छिड़ जाय! गन्ना गल्ले की जगह ले और परदेश को शक्कर भेजना शुरू हो जाय और वहां से अनाज मंगवाना पड़े तो यह सौदा मंहगा। मूंगफली भी अच्छी चीज है, क्योंकि खाने की चीज है। लेकिन उसका रोगन बनता है, वारनिश बनता है और परदेश जाता है। वह भी ज्यादा बने तो अनाज का शत्रु होगा। जूट का कुछ उपयोग है। कपास का उससे ज्यादा उपयोग है। चाय का उससे कम उपयोग है। तम्बाकू का कतई उपयोग नहीं। चीनी और मूंगफली का थोड़े परिमाण में उपयोग है। तो, जितना जरूरी हो, उतना ही इन्हें बोया जाय। गांव के लिए जरूरी अनाज गांव पैदा करे। फिर बची हुई जमीन उसमें लगाये।

सम्पदा

## सम्पदा १५वें वर्ष में

इस अंक के साथ सम्पदा के १४ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। आगामी अंक से नई विशेषताओं और नये स्तम्भों के साथ सम्पदा प्रकाशित हुआ करेगी।

**पाठक उत्सुकता से प्रतीक्षा करें।**

—व्यवस्थापक सम्पदा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कीमतें किस तरह कम की जायं ?

विकास योजनाओं पर
एक विवेचनात्मक दृष्टि

श्री एस. एम. दहाणुकर

हमारे विद्यमान आर्थिक संकट के दो मुख्य पहलू हैं, निर्वाह खर्च में वृद्धि और विदेशी विनिमय की कठिनाइयां। मूल्य वृद्धि से समुदाय के, गरीब व अमीर, सभी वर्ग प्रभावित हुए हैं। इससे कदाचित मध्यम वर्ग को सबसे अधिक कष्ट भोगना पड़ रहा है। इन दोनों कष्टों के निवारण के लिए हम एक नियोजित आधार पर अर्थ व्यवस्था निर्माण करने का प्रयत्न कर रहे हैं, ताकि (क) कुल राष्ट्रीय उत्पादन तथा (ख) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सके और (ग) लोगों को रोजगार मिल सके।

प्रथम दो योजनाओं के परिणाम और तीसरी योजना की मध्यावधि समीक्षा हम सबको ज्ञात हो चुकी है। अब हम चौथी योजना की रचना पर विचार कर रहे हैं। हमारी राष्ट्रीय आय जो प्रथम योजना (१९५१) की शुरूआत में ८,८५० करोड़ रु० थी, गत १४ वर्षों में बढ़ कर करीब १५,००० करोड़ रुपये हो गई है। चौथी योजना के अंतिम प्रारूप में इसे १९७१ तक बढ़ाकर २५,००० करोड़ रुपये करने की आशा व्यक्त की गई थी। राष्ट्रीय आय की इस वृद्धि को आर्थिक स्थिरता के साथ प्राप्त करना है तथा देश को बाहरी सहायता पर कम से कम निर्भर रहना है। दूसरे शब्दों में, हमारी अर्थव्यवस्था की स्वचलित अवस्था प्राप्त करने के लिये हमको और एक कदम उठाना पड़ेगा। नियोजकों का विचार है कि हम पांचवीं योजना के अन्त अर्थात् १९७६ तक इस उद्देश्य की प्राप्ति कर लेंगे।

नियोजकों ने प्रति व्यक्ति आमदनी और औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन की वृद्धि दर बढ़ने की बात कही है। यदि केवल आंकड़ों पर ही विचार किया जाता है तब तो हमने बेशक इन दोनों क्षेत्रों में प्रगति की है। हमारे खाद्यान्नों का उत्पादन जो १९५१ में ५ करोड़ ५० लाख टन था, चालू वर्ष के दौरान में बढ़ कर ८ करोड़ ८० लाख टन हो गया है। इसी तरह औद्योगिक उत्पादन भी बढ़ा है, राष्ट्रीय आय लगभग दुगुनी हो गई है और प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि दर्ज की गई है।

## मांग भी बढ़ गई

हालांकि नियोजन के पिछले १४ वर्षों में हम अधिकांश लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाये हैं, फिर भी कुछ प्रगति करने में हमें जरूर कामयाबी मिली है। इसलिए आम व्यक्ति के लिये यह आशा करना ठीक होगा कि वह आज पहिले की अपेक्षा सुखी होगा। लेकिन दुर्भाग्य से बात ऐसी नहीं है। जब आप उससे बात करेंगे तो वह अपना खर्च पूरा करने तथा अपनी किसी तरह गुजर-बसर करने में होने वाली कठिनाइयों का रोना ही रोयगा। वह निर्वाह खर्च में हुई असामान्य वृद्धि को कोसेगा। यह वृद्धि खासतौर से पिछले वर्ष बड़ी तीव्रता से हुई। थोक भाव का दर्शकांक जो १९५५-५६ में ९५ था, १९६३ में बढ़कर १२८ हुआ और अब १६० से भी अधिक है। सभी खाद्य पदार्थों का दर्शकांक जो १९५५-५६ में ८७ था, १९६३-६४ में बढ़कर १३७ हुआ और अब १६१ से भी अधिक है। इसी तरह निर्मित चीजों का दर्शकांक १९५३ में ९९ था, वह १९६३-६४ में बढ़ कर १३१ हुआ और वह इस वर्ष १४४ है। निर्वाह खर्च में हुई इसी वृद्धि से सभी लोग परेशान हैं। मुद्रा के रूप में लोगों को उनकी आमदनी में जो भी वृद्धि हुई हो, लेकिन उससे उनको निर्वाह खर्च में हुई वृद्धि को पूरा करने में मदद नहीं मिली है।

हमने जो प्रगति की है, वह वस्तु हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिये काफी नहीं है। हमारी आबादी बड़ी तेजी से बढ़ रही है। इसलिये, यदि हम यह भी मान लें कि हमारी वैयक्तिक जरूरतें स्थिर हैं, फिर भी इन जरूरतों को पूरा करने के लिये चीजों की कुल जरूरत बढ़ जायगी। साथ-साथ, योजना व्यय के कारण अधिक मुद्रा प्रसार में आती जाती है और वह जनता को खर्च करने के लिये मिलती है। इस उपलब्ध अतिरिक्त मुद्रा के कारण लोगों की मांगें भी बढ़ गई हैं। उदाहरण के तौर पर, जो व्यक्ति पहिले गुड़ खाता था, अब वह चीनी खाना चाहेगा। इसी तरह मोटे अनाजों के स्थान पर अब गेहूँ और चावलों की मांग होने लगी है।

## क्रय शक्ति में कमी

इस प्रकार पैदा हुई मांग विभिन्न पदार्थों में हुये



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे उत्पादन से कहीं ज्यादा है। अतः निरे आंकड़े जिन्हें हम उत्पादन में हुई वृद्धि का प्रतीक मानते हैं, पैदा हुई मांग को पूरा करने में काफी पीछे पड़ते हैं। ऐसी अवस्थाओं में मांग और पूर्ति का नियम काम करने लग जाता है। जब मांग ज्यादा होती है और उसको पूरा करने के लिये सामान अपर्याप्त होता है, उस समय उन चीजों की कीमतें बढ़ने लगती हैं। इसी स्थिति को, कभी-कभी रु० के मूल्य में गिरावट होना भी बताया जाता है। यह गिरावट हमारे दोनों आन्तरिक व बाहरी लेनदेन में होती है। उदाहरण के तौर पर, यदि १९५५ में रुपये की कीमत को १०० मान लिया जाता है तो आज वह केवल ६० ही रह गई है। १९६४ में तो गिरावट की दर करीब १२ प्रतिशत तक की रही है, जबकि इसी अवधि में अमरीकी डालर की गिरावट की दर १.२%, इग्लैंड के पौंड की ३.२% और जर्मनी के मार्क की २.२% रही है। इस स्थिति से हमको इस बात का उत्तर मिल जाता है कि हमको नियोजित विकास के लाभ क्यों दिखाई नहीं देते हैं। इसी कारण जनता में असन्तोष और निराशा फैल गई है।

## बड़ी-बड़ी योजनाएं

हमने उत्साह में आकर नियोजन के जरिये उच्च लक्ष्य प्राप्त करना निर्धारित किया और इसके लिये हमने काफी बड़ी-बड़ी निधियों को पूंजीगत मदों पर खर्च किया, जो फलप्रद नहीं हुईं। उदाहरण के तौर पर हमने ८०० करोड़ रुपये से भी अधिक रकम को बड़े-बड़े फौलादी प्लान्टों पर खर्च कर दिया और करीब ४५० करोड़ रुपये बोकारो के एक बड़े फौलादी कारखाने पर खर्च करने का प्रस्ताव किया गया है। हमने ६० करोड़ रुपये से भी अधिक रकम को भोपाल की हेवी इलेक्ट्रिकल्स परियोजना पर खर्च कर दिया है लेकिन अभी तक उसका वार्षिक उत्पादन केवल ७ करोड़ रुपये का ही है। इसी तरह की अन्य योजनाएं भी हैं, जैसे कि रांची का हेवी इन्जिनियरिंग प्लान्ट, जहां पर काफी बड़ी पूंजी रुक गई है, लेकिन उसका प्रतिफल बहुत थोड़ा मिलता है। अब यह बात मालूम हो गई है कि सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश से बहुत कम प्रतिफल मिल रहा है। भारत के कन्ट्रोलर और आडीटर जनरल के कथनानुसार केन्द्र सरकार की ५२ परियोजनाओं में लगी हुई १,५७५,५९ करोड़ रुपये की पूंजी पर १९६३-६४ वर्ष में देश को ५५.१५ लाख रु० की शुद्ध हानि हुई है। इसके बदले हम इस राशि के कुछ भाग को छोटी-छोटी परियोजनाओं के लिये उपयोग में ला सकते थे, जिनसे जल्दी प्रतिफल मिल सकता था और उत्पादित सामानों की मांग के अनुसार बड़े प्लान्टों पर योजनाबद्ध पूंजी लगाई जा सकती थी। उदाहरण के तौर पर भोपाल की सारी परियोजना पर एक बिलकुल विभिन्न आकार से विचार किया जा सकता था और उसे कार्यान्वित किया जा सकता था। सबसे पहिले, यह जरूरी नहीं था कि सभी घटकों की, जिन्हें यहां संस्थापित किया जा चुका है, एक ही साथ स्थापना की जाय। आजकल के जमाने में, खास कर सुरक्षा की दृष्टि से, सभी बड़े-बड़े घटकों को एक साथ रखना लाभप्रद नहीं होता है। मूल्य वृद्धि की वर्तमान संकटपूर्ण स्थिति पैदा करने में इस तरह की बड़ी-बड़ी रकमें लगाना भी एक कारण रहा है।

## प्रयत्न विफल रहे

लगभग दो वर्ष पहले सरकार ने मुद्रास्फीति पर काबू पाने के लिये कुछ नये कदम उठाने की कोशिश की थी। उठाये गये उन कदमों में अतिरिक्त निधियों को रखवा लेना, व्यापार और उद्योग को दी जाने वाली ऋण सम्बन्धी सुविधाओं पर प्रतिबन्ध लगाना और खपत सामानों की उस समय विद्यमान कीमतों को स्थिर रखना शामिल था। लेकिन इन कदमों के बावजूद वांछनीय परिणाम उपलब्ध नहीं हुये। इसलिये, वित्तमंत्री ने स्थिति का विश्लेषण करते हुए अपने १९६५-६६ वर्ष के वार्षिक बजट में कराधान सम्बन्धी कुछ ऐसे कदम घोषित किये, जिनसे एक ओर तो उत्पादन बढ़ाने में प्रोत्साहन मिल सके और दूसरी ओर निजी बचतों को अनिवार्य रूप से सरकारी खजानों में जमा किया जा सके। लेकिन उनके ये प्रस्ताव वस्तुतः अपरिपक्व थे, इसलिये उन्होंने अभी तक मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाने की दिशा में कोई खास प्रगति नहीं दिखाई है। वस्तुतः जो कदम उठाये जा रहे

सम्पादक



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, वे रोग के चिन्हों पर दवा लगाने के समान होते हैं, जबकि रोग के मूल कारण का उपचार ही नहीं किया जाता है।

## प्रभावहीन कन्ट्रोल

अभावों की दशाओं के अन्तर्गत सरकार ने (क) उत्पादन नियमित करने, (ख) मूल्य निर्धारित करने, और (ग) माल सामानों के वितरण का प्रबन्ध करने के लिये कदम उठाये हैं। नियमन सम्बन्धी इन सभी कदमों की वजह से नई-नई समस्याएं पैदा होती हैं और स्थिति और भी बिगड़ जाती है। जनता के सभी वर्गों में भ्रष्टाचार फैल जाता है और कन्ट्रोलों को अमल में लाना अधिकाधिक रूप से कठिन हो जाता है। इन सब क्रियाओं से अधिक उत्पादन बढ़ाने की दिशा में उत्साह नष्ट पैदा होता है, जिससे स्थिति और भी खराब हो जाती है और संकट बढ़ता जाता है।

## विदेशी विनिमय

परेशानी का दूसरा कारण है विदेशी विनिमय का अभाव। इसके कारण हो सकते हैं हमारे निर्यात कार्य के बारे में गलत अन्दाजा या अत्यधिक खर्च या उस पर अत्यधिक निर्भरता। हम अपने कर्ज की किश्तों और उसके ब्याज को अदा नहीं कर पा रहे हैं। अतः स्थिति पर काबू पाने के लिये सरकार को कुछ तात्कालिक कदम उठाने पड़े हैं। उसने आयात को बड़ी सख्ती के साथ कम कर दिया है। निस्सन्देह इस तरह के कदम जरूरी होते हैं, लेकिन इनकी सार्थकता केवल एक अस्थायी कदम के रूप में ही होती है। यदि इनको काफी समय तक जारी रखा गया तो उससे अवांच्छनीय परिणाम पैदा होने लगते हैं। ऐसे अनेक उद्योगों को, जो आयात किये जाने वाले कच्चे माल पर निर्भर करते हैं, अपना उत्पादन कम करना पड़ेगा। इसके फलस्वरूप कामगरों की छंटनी होती है और कीमतें भी बढ़ जाती हैं।

## नया चक्र चलाओ

उत्पादन बढ़ाने के लिये हमको नये सिरे से ही सोच-विचार करना होगा। अतः अधिकतर उत्पादन के मार्ग में विद्यमान अवरोधों को खत्म कर देना चाहिये और उत्पादन को प्रोत्साहित करने वाली नई नीतियों को अपनाना चाहिये। हमको कन्ट्रोलों को धीरे-धीरे कम करने और अन्त में उन्हें खत्म करने की दिशा में सोच-विचार करना चाहिये। इसे एक सुनियोजित कार्यक्रम के जरिये २-३ सालों में पूरा किया जा सकता है। जब कन्ट्रोल हटा लिये जायंगे, तब कुछ समय के लिये अनियंत्रित चीजों की कीमतें बढ़ सकती हैं। कीमतों की इस वृद्धि के साथ उत्पादकों को अधिक लाभ मिलेगा। इससे ऐसी अवस्थाएं पैदा हो जायंगी, जिनसे लोगों में स्वतः अधिक उत्पादन करने की इच्छा पैदा होगी। इससे देश के सभी उद्यमशील व्यक्ति कार्यरत हो जाएंगे। जब ये सभी लोग व्यस्त होकर उत्पादन करने लगेंगे, तब सामान और सेवाएं काफी मात्रा में उपलब्ध होने लगेंगी और उनकी कीमतें गिरने लगेंगी। संसार के विभिन्न देशों में समय-समय पर ऐसी ही स्थिति पैदा होती रहती है। ऐसी स्थिति हमारे यहां भी पैदा होगी। हमको सिर्फ साहस कर इस नीति को अमल में ही लाना है। कठिनाइयों और अव्यवस्थित लगने वाली प्रारंभिक अवधि से गुजरने के लिये हमको जरा तैयार रहना पड़ेगा।

## कर बहुत ऊंचे

उत्पादन को हतोत्साहित करने वाला दूसरा कारण है निगमित और वैयक्तिक कराधान की उच्च सतह। इंग्लैंड और अमेरिका में भी कराधान की सतह ऊंची है, लेकिन भारत में समकक्ष आय वर्ग द्वारा अदा किये जाने वाले कराधान की तुलना में वह कुछ भी नहीं है। एक व्यक्ति जो ईमानदारी से प्रयत्न कर धनार्जन करता है, उसे अपनी कमाई के अधिकांश भाग को करों के रूप में राज्य को दे देना पड़ता है। लेकिन चूंकि मानव स्वभाव के अनुसार इस प्रकार की स्थिति के लिये कोई तैयार नहीं होना चाहेगा, इसलिये इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि जो व्यक्ति ईमानदारी के साथ प्रयत्न कर कुछ धन कमाता है, वह उस कमाई के कुछ भाग को अपने लिये बचा सके। जब उसे ऐसा करने का आश्वासन मिल जाता है तब हमें उससे यह कहने की आवश्यकता नहीं रह जाती है कि वह कोई निर्माण कार्य अथवा उत्पादन प्रवृत्ति शुरू करें। फिर तो वह ऐसा कार्य स्वयं ही करता है।

किसी भी व्यक्ति के लिये यह संभव है कि वह भारत सरकार द्वारा जारी किये गये अल्पबचत प्रमाणपत्रों के

(शेष पृष्ठ ६२६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# स्टेट बैंक क्या है, क्या करता है ?

दस वर्ष पूर्व उस समय के सबसे बड़े व्यापारिक बैंक इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया का राष्ट्रीयकरण हुआ और इस प्रकार स्टेट बैंक इंडिया अस्तित्व में आया। यह देश के ८४ भारतीय बैंकों के लिए पथनिर्देशक का काम करता है और बैंकों में जमा होने वाली कुल पूंजी की दृष्टि से इसका स्थान तीसरा है। सरकारी बैंक होते हुए भी इसके कुछ निजी शेयर होल्डर भी हैं। ६२ प्रतिशत शेयर भारत के रिजर्व बैंक के पास हैं और शेष १३०० निजी शेयर होल्डरों में बांटे हुए हैं।

स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद सरकार ने एक देहाती सर्वेक्षण समिति नियुक्त की थी। इस समिति ने अखिल भारतीय गोदाम निगम और राष्ट्रीय सहकारी बाजार संघ की स्थापना की सिफारिश की। किसानों और छोटे उद्योगकर्ताओं को सहकारी बाजार समितियों और सहकारी बैंकों के द्वारा कम ब्याज पर ऋण दिलाने की व्यवस्था करने के लिए समिति ने जोर दिया कि सरकार द्वारा अनुप्राणित और सरकार की हिस्सेदारी में चलाये गये बैंक की स्थापना की जाए।

व्यापारिक बैंक केवल ऐसे स्थानों में काम करते हैं, जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हों और जहां पर बैंक में पूंजी जमा कराने के साधन पहले से हों, ताकि वे अपना मुनाफा बढ़ा सकें। इसके विपरीत स्टेट बैंक कम विकसित क्षेत्रों में व्यापार की परिस्थितियों को अनुकूल बनाने, औद्योगिक विकास और कृषि सुधार में सहायता देता है और उस समय की प्रतीक्षा में रहता है जब उस क्षेत्र की सम्पन्नता से लाभ उठाया जा सके। व्यापारिक बैंक ऐसी जमानत पर रुपया उधार देते हैं, जिससे वसूली जल्दी हो, जैसे सोना, खाद्यान्न, मशीनें और औजार इत्यादि। अतः छोटे उद्योगों में लगे हुए लोगों को स्थानीय छोटे साहूकारों से अत्यधिक ब्याज पर रुपया लेना पड़ता रहा और इन छोटे उद्योगों का मुनाफा इन्हीं साहूकारों की जेब में ब्याज के रूप में था। स्टेट बैंक ने छोटे उद्योगों को व्यापक रूप से ऋण देना शुरू किया। ऋण देने की बैंक की एक ही शर्त है कि ये उद्योग तकनीकी दृष्टि से योग्य हों और मालिकों का इनमें कुछ-न-कुछ दांव पर लगा हो। चूंकि इसकी ब्याज-दर बहुत ही कम है, इसलिए इन छोटे उद्योगकर्ताओं का मुनाफा बढ़ता रहता है।

१९५४ में देश के कुल १३०० छोटे उद्योगों के खाते इस बैंक के पास थे। पांच सालों में यह संख्या बढ़ कर ६००० से अधिक हो गई और धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। भारी मशीनों, भवन निर्माण इत्यादि के लिए मध्यम-अवधि-ऋण-योजना है, जिस के अन्तर्गत ऋण की अदायगी दस साल तक में की जा सकती है। इस योजना में उधार की रकम की कोई सीमा निर्धारित नहीं है। छोटे उद्योगकर्ताओं के पथप्रदर्शन के लिए बैंक के पास इंजीनियर तथा अन्य अधिकारी भी हैं।

## नई योजना

ग्राम उद्योग परियोजना योजना आयोग की एक बड़ी स्कीम १९६२ में शुरू हुई। इस परियोजना के अन्तर्गत ग्राम उद्योगों की स्थापना इस प्रकार से होती है कि स्थानीय कच्चा माल इस्तेमाल में आ जाए और तैयार माल भी वहीं पर खप जाए। स्टेट बैंक ग्राम औद्योगिक नगरियों के उद्योगों को धन देने के लिए राजी हो गया है। इस प्रकार के ४६ ग्राम उद्योग मार्गदर्शक केन्द्र हैं। उत्तरीय क्षेत्र में, तीन मार्गदर्शक केन्द्र हैं—शिमला के निकट सोलन में, जम्मू में कथुआ के स्थान पर और उत्तर प्रदेश में देवबन्द के स्थान पर।

जब केन्द्रीय सहकारी बैंक को शिखर बैंकों को रुपये भेजने या उनसे मंगाने होते हैं तो यह बैंक यह काम मुफ्त करता है। इसी तरह सहकारी संस्थाओं के बिलों की वसूली का काम भी मामूलीदरों पर होता है, जबकि पहले बैंक यह काम निर्धारित दर पर करते थे।

कृषि-विपणन के विकास में बैंक का बहुत योगदान रहा है। पाठक जानते हैं कि गोदाम व्यवस्था विपणन अर्थात् बाजार व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। केन्द्रीय गोदाम निगम की शेयर पूंजी में बैंक ने धन लगाया है। बैंक गोदाम में जमा किए गए माल की

(शेष पृष्ठ ६५६ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# विद्युत् का ४५० प्रतिशत उत्पादन

विद्युत अणुशक्ति
स्पात सीमेण्ट

अन्य विकासोन्मुख देशों की तरह भारत में भी तेजी से प्रगति करने के लिए बिजली और पर्याप्त परिवहन-सुविधाओं का होना आवश्यक है । प्रधानमन्त्री श्री नेहरू ने कुछ वर्ष पूर्व कहा था : "आज आर्थिक उन्नति के सभी कामों की बुनियाद बिजली है । जिस प्रकार १८ वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति ने मशीन-युग ला दिया था था, उसी तरह २० वीं शताब्दी की बिजली क्रांति ने हमें शक्ति-चालन के युग में पहुँचा दिया है। विद्युत-शक्ति—जिसका उपयोग उद्योगों, रेलों और अन्य नानाविध कार्यों में होता है, हर चीज पर हावी है ।"

भारत के योजना-निर्माताओं ने देश की ताप और जलविद्युत-शक्ति के विकास को प्राथमिकता दी है। उसका परिणाम भी बहुत शानदार है। १९५१ में पहली ५-वर्षीय योजना के प्रारम्भ में भारत की विद्युत-उत्पादन क्षमता २३ लाख किलोवाट से अधिक नहीं थी। १९६१ में दूसरी योजना की समाप्ति पर यह क्षमता बढ़कर ५७ लाख किलोवाट हो गई थी। तीसरी योजना का लक्ष्य १ करोड़ २७ लाख किलोवाट क्षमता का है। जब यह क्षमता हो जायेगी, तब भारत अपनी पहली ५ वर्षीय योजना से पूर्व-काल की अपेक्षा १ करोड़ ४ लाख किलोवाट बिजली अधिक पैदा करने लगेगा यानी उसमें ४५० प्रतिशत की वृद्धि हो जायेगी।

## अमेरिका का सहयोग

पूर्वी भारत की जिन योजनाओं में अमेरिका ने सहायता दी है, उनके चालू हो जाने पर तीसरी योजना के लक्ष्य की पूर्ति की दिशा में बिजली का उत्पादन ७.८० लाख किलोवाट अर्थात ६ प्रतिशत बढ़ जायेगा। बिहार राज्य की दामोदर घाटी के कल-कारखानों की भीड़-भाड़ वाले इलाके में चन्द्रपुरा बिजलीघर का औपचारिक उद्घाटन १४ नवम्बर को हुआ। ४,२०,००० किलोवाट की क्षमता वाला यह भारत का सबसे बड़ा ताप-बिजलीघर होगा। बिजलीघर के १,४०,००० किलोवाट के दो टर्बो-

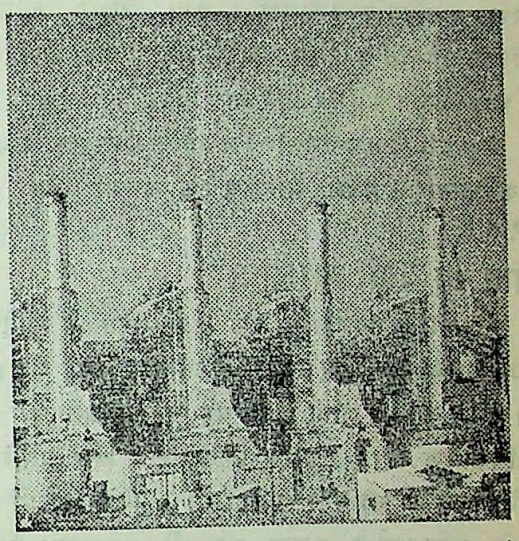

बैण्डल का बिजली घर

जेनरेटर अब भी चालू हैं, जो देश में अपनी किस्म के सबसे बड़े जेनरेटर हैं। तीसरा जेनरेटर भी अगले वर्ष के प्रारम्भ में चालू हो जायेगा।

चन्द्रपुरा के निकट ही बण्डेल में एक अन्य ताप-बिजलीघर बनकर तैयार होने वाला है। पश्चिमी बंगाल के उस बिजलीघर से ३,३५,६०० किलोवाट बिजली पैदा होगी और उसकी गिनती दक्षिणी एशिया के सबसे बड़े बिजलीघरों में की जाएगी।

आसाम राज्य का उमियम पनबिजलीघर भी इस वर्ष की समाप्ति से पूर्व ही चालू हो जाएगा। वहां से २७,००० किलोवाट बिजली पैदा होगी और उससे आसाम के विशाल प्राकृतिक साधन-स्रोतों के विकास में मदद मिलेगी।

मैसूर राज्य में २६ जनवरी ६५ को १४ लाख किलोवाट की विशाल शरावती पनबिजली योजना का उद्घाटन करके किया था । इन सब जेनरेटरों के चालू हो जाने पर शरावती दक्षिणी एशिया की एक सबसे बड़ी बिजली-योजना हो जाएगी। ● ●



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## अणुशक्ति का विकास

भारत के अणुशक्ति विशेषज्ञ और अणुशक्ति आयोग के प्रधान डा० एच० जे० भाभा ने बताया है कि १९६८ से भारत प्रति वर्ष २० करोड़ किलोवाट का अणुशक्ति रियेक्टर स्थापित करने लगेगा। कृषि, उद्योग औषधि आदि में उपयोग के लिए आधुनिकतम अणु उपकरणों की आवश्यकता अनुभव की जा रही है।

रक्षामंत्री के कथनानुसार इस वर्ष के अन्त तक आवडी के कारखानों से प्रथम भारतीय टैंक बनकर तैयार हो जाएगा।

## स्पात का ५वां कारखाना

जापानी विशेषज्ञों का एक दल भारत में लोहे के पांचवें कारखाने के लिए स्थान की जांच पड़ताल कर रहा है। आशा यह की जाती है कि यह दल विजगापट्टम की ही सिफारिश करेगा। इससे पहले ब्रिटेन और अमेरिका के विशेषज्ञों ने भी यही राय दी थी। किन्तु राज्यों की अपनी प्रतिस्पर्धा के कारण यह भी सम्भावना है कि निश्चित स्थान की घोषणा तब की जाएगी, जब छठे कारखाने के लिए होसपिट के स्थान का भी निश्चय हो जायेगा। एक प्रश्न यह है कि स्पात-उद्योग को कोयले के क्षेत्र में ही खोला जाय, या अन्यत्र दूसरे स्थानों पर उत्पादन व्यय अधिक बढ़ेगा।

मध्यप्रदेश प्रशासन बस्तर के पास नया कारखाना खोलने पर जोर दे रहा है।

## लोह उद्योग का राष्ट्रीकरण नहीं

भारत सरकार के इस्पात तथा खान मंत्री श्री संजीव रैडी ने संसद में यह स्पष्ट किया है कि निजी क्षेत्र के इस्पात कारखानों का राष्ट्रीयकरण करने का सरकार का अभी कोई इरादा नहीं है। उनके विस्तार के कार्यक्रम को सरकारी व निजी क्षेत्रों के संयुक्त उद्योग में बदलने का भी अभी कोई ख्याल नहीं है।

इसी संबन्ध में यह मालूम हुआ है कि सरकार ने टाटा तथा इंडियन आयरन को अपने कार्य का विस्तार करने की अनुमति दे दी है। इस सम्बन्ध में दोनों ने सरकार से पूंजी बढ़ाने, विदेशी मुद्रा के लिए व्यवस्था करने तथा बिजली आदि की सुविधाओं के लिए बातचीत शुरू कर दी है। ये दोनों कम्पनियां विदेशी मुद्रा के लिए अन्य देशों से स्वयं बातचीत करेंगी।

टाटा और इंडियन आयरन की योजना उत्पादन को दुगना (४० व २० लाख टन) करने की है। इस कार्य में करीब ३० करोड़ रुपया व्यय होगा, जिसमें १८ करोड़ रु० की विदेशी मुद्रा व्यय होगी।

## सीमेंट से कन्ट्रोल उठे

सीमेंट निर्माता संघ के अध्यक्ष, श्री गजाधर सोमानी के कथनानुसार सरकार से जो समझौता हुआ है, उसकी कुछ मुख्य शर्तें निम्नलिखित हैं—

१. १, जनवरी, ६६ से सीमेंट पर से सब कन्ट्रोल उठ जाएंगे।

२. सरकारी बड़े कामों के लिए सीमेंट का मूल्य १० रुपया और जनता के लिए १६ रुपया प्रति टन बढ़ेगा।

३. ५० किलोग्राम सीमेंट की बोरी ७.७१ रुपये की बजाय ८.५१ रुपये पर थोक बिक्रेताओं को बेची जाएगी। इसमें उत्पादन कर भी शामिल है। यदि सरकार ने रेलवे भाड़ा और उत्पादन कर बढ़ा दिया तो मूल्य कुछ और बढ़ जाएंगे।

४. मूल्य वृद्धि से जो लाभ होगा, वह शेयर होल्डरों में एक साल तक वितरित नहीं किया जायेगा और इसके बाद स्थिति पर पुनः विचार किया जायेगा।

५. सीमेंट के वितरण का काम उक्त सीमेंट ऐसोसियेशन अपने हाथ में ले लेगा, जबकि यह काम आजकल स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन करता है।

६. सीमेंट के व्यापारी अनुचित रूप से नफाखोरी न करें, इसकी जांच पड़ताल के लिए एसोसियेशन पूरी व्यवस्था करेगा।

'सम्पदा' के पाठकों को शायद यह मालूम हो कि सीमेंट ऐसोसियेशन ने पहले २९ रु० प्रति टन मूल्य वृद्धि करने की मांग की थी, किन्तु समझौते के परिणामस्वरूप १६ रु० की वृद्धि पर वह सहमत हो गये हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

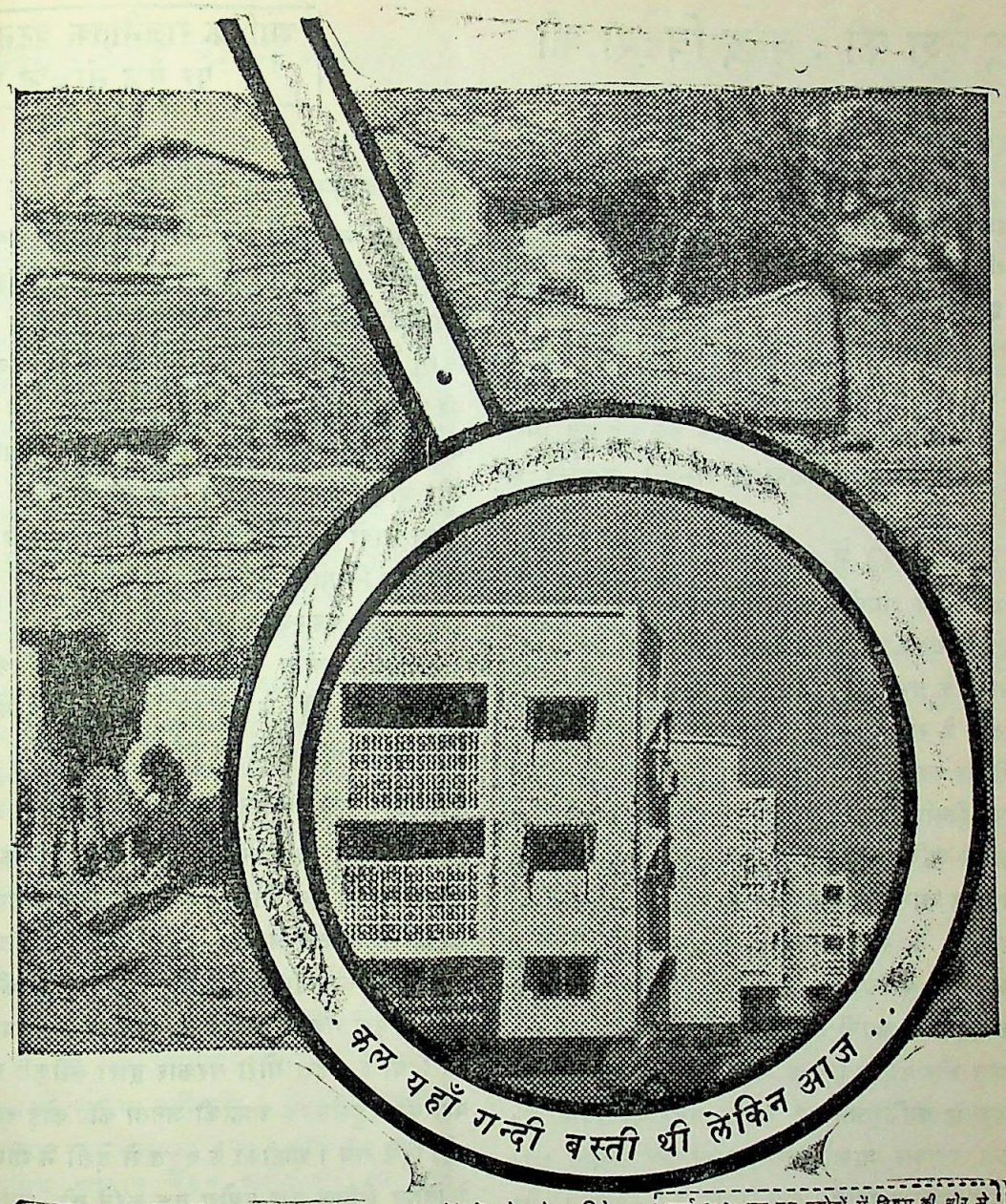


यहाँ सुंदर सुंदर मकान खड़े हैं। आज भारत के कोने कोने में नये नये उपनिवेश निर्माण हो रहे हैं। लोगों का जीवन स्तर ऊँचा होता जा रहा है। सेहत की नई नई सुविधाएँ उन्हें प्राप्त हो रही हैं। और हाँ, इस प्रगति में जीवन बीमा निगम का भी कुछ हिस्सा है।

राज्य सरकारों को ऋण देकर, वर्ष-प्रति-वर्ष, निगम आवास योजनाओं, स्कूलों तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं में सहायता पहुँचा रहा है। इतना ही क्यों, परिवहन, कृषि आदि विकास कार्यों में भी वह हाथ बँटा रहा है। निगम, प्रतिदिन, ३० लाख रुपयों से अधिक रकम विविध उद्योगों में लगाकर जीवन-स्तर ऊँचा उठा रहा है।

*मार्च १९६५ तक कुछ उद्योगों में निगम की ओर से लगायी गयी पूँजी का झलक :*

| | |
|---|---|
| आवास योजनाओं के लिए राज्य सरकार को ऋण | रु. ५९,०२,२२,००० |
| सहकारी आवास तथा वित्तीय संस्थाओं को ऋण | रु. १५,०९,३४,००० |
| सीमेंट | रु. ७,९९,७८,००० |
| बिजली | रु. ११,४९,१६,००० |
| लोहा और फौलाद | रु. १०,५९,०२,००० |

**आपका हित ही हमारा उत्तरदायित्व है**

**लाइफ़ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ़ इन्डिया**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# कुछ देश की : कुछ विदेश की

आर्थिक राजनैतिक घटनाओं पर एक संक्षिप्त दृष्टि

इस महीने में युद्ध-विराम कहने को तो कायम है, लेकिन पाकिस्तान युद्ध-विराम का उल्लंघन निरन्तर किये जा रहा है। राजस्थान के बाड़मेर इलाके में उसकी सैनिक गतिविधि बहुत ज्यादा रही है। खेमकरण, पुंछ तथा अन्य इलाकों में भी युद्ध-विरामका उल्लंघन होता रहा। भारतीय सेना भी पाकिस्तानी आक्रमणों का मुकाबला करती रही है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के निरीक्षक पाकिस्तान की सैनिक गतिविधियों को रोकने में अब तक असफल सिद्ध हुए हैं। भारत ने इसकी शिकायत बार-बार उ थान्त से की है।

## रूस व अमेरिका में

भारत-पाक संघर्ष के सम्बन्ध में इस महीने रूस के प्रधानमंत्री श्री कोसीजिन के निमंत्रण की चर्चा बहुत रही है। भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति मार्शल अयूब दोनों ने इस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है। प्रश्न यह है कि क्या वहां दोनों राष्ट्र नेता किसी समझौते पर पहुँच सकते हैं ? काश्मीर का प्रश्न सबसे अधिक विकट है। भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री ने सभी तरह की सम्भावित आशंकाओं को दूर करने के लिए यह स्पष्ट घोषणा कर दी है कि काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और भारत किसी भी शक्ति के दबाव से अपनी स्थिति में परिवर्तन नहीं करेगा। हां, भारत और पाकिस्तान के मध्य में सब विवादग्रस्त प्रश्नों पर वह पाकिस्तान से वार्ता करने को तैयार है। जैसे पानी, व्यापार, ऋण, अल्पसंख्यकों की स्थिति और पारस्परिक सम्बन्ध आदि। इस स्थिति में पाकिस्तान और भारत में समझौता किस प्रकार सम्भव है, यह विचार का विषय है, क्योंकि पाकिस्तान की सबसे बड़ी मांग ही काश्मीर है। रूस में चर्चा के बाद दोनों राष्ट्र नेताओं का विचार अलग-अलग अमेरिका जाने का भी है। वहां भी दोनों देशों के पारस्परिक सम्बन्ध किस तरह सुधरें, यही मुख्य चर्चा का विषय होगा। अमेरिका में भारत को सहायता देने न देने का जो सवाल उठ खड़ा हुआ है, उसे सुलझाने में भी शास्त्री जानसन भेंट सम्भवतः कुछ सहायक सिद्ध होगी।

## गंभीर अन्न संकट और महंगाई

आज भारत की दृष्टि से अन्न संकट सबसे अधिक चिन्तनीय विषय बना हुआ है। विदेशी और विशेषकर अमरीकी अन्न का भारी आयात अभी बन्द नहीं हुआ किन्तु देश में मंहगाई निरन्तर बढ़ रही है। स्वयं सरकार की परिस्थितियों से विवश होकर मंहगाई की ओर कदम बढ़ा रही है। भारत सरकार ने केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली और चौदह अन्य राज्यों में गेहूँ की चीजों के मिल और खुदरा भावों में कुछ वृद्धि करके १५ नवम्बर १९६५ से दाम फिर निर्धारित किये हैं। आयातित गेहूँ के दामों में वृद्धि होने के फलस्वरूप यह वृद्धि की गई है।

इसके अन्तर्गत १५ नवम्बर, १९६५ से आटा-मिलों में बनने वाले गेहूँ के सामान के मिल के दामों में प्रति-क्विं० २ रु० की वृद्धि की गई है।

## रोडेशिया की पहेली

रोडेशिया का प्रश्न अजीब उलझन पैदा कर रहा है। वह ब्रिटेन का एक आधीन राज्य है किन्तु उसकी गोरी सरकार ने ब्रिटिश सरकार से विद्रोह कर एकतरफा स्वाधीनता की घोषणा कर दी है और ब्रिटेन की महारानी द्वारा नियुक्त गवर्नर की जगह अपना ही गवर्नर नियुक्त कर दिया है। इस गोरी सरकार द्वारा स्वीकृत संविधान में वहां की बहुसंख्यक अफ्रीकी जनता को कोई अधिकार ही नहीं दिये गये। अफ्रीका के बहुत से देशों ने गोरी सरकार के विरुद्ध सैनिक बल प्रयोग तक करने की धमकी दी है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने भी संसार के सब देशों से रोडेशिया का आर्थिक बहिष्कार करने की अपील की है। ब्रिटिश सरकार भी रोडेशिया की गोरी सरकार का दमन करना चाहती है। उसकी वायु सेना की गतिविधियां भी आरम्भ हो गई हैं। राष्ट्रमंडल के अफ्रीकी देशों ने ब्रिटेन को यह धमकी तक दे डाली है कि यदि वह गोरी सरकार का दमन नहीं कर सका तो वे राष्ट्रमंडल से ही अलग हो जाएंगे।

(शेष पृष्ठ ६५७ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जन-संख्या और अन्न समस्या

प्रो० आर० एस० तिवारी

**आज की गम्भीर समस्या पर स्वतंत्र विस्तृत अध्ययन**

[ गतांक से आगे ]

## प्रयत्नों में असफलता

भारत में १९५१ में ७० प्रतिशत व्यक्ति और १९६१ में ६७ प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न थी, फिर भी आज हम भूखे हैं । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सर्व-प्रथम खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए "अधिक अन्न उपजाओ" आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। १९४७ से १९५१ तक की अवधि में यह ज्ञात हो गया कि खाद्य-उत्पादन की समस्या को निरपेक्ष रूप में नहीं सुलझाया जा सकता । आन्दोलन विफल रहा। लोगों ने इसका स्वागत नहीं किया। क्योंकि उन्हें लाभप्रद प्रतीत नहीं हुआ। तब १९५२ से सामुदायिक विकास योजनाओं को प्रारम्भ किया गया जो बहुमुखी कार्य प्रणाली को लेकर चला है तथापि इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि यह भी सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

तीसरी योजना भी लगभग पूर्ण होने पर आई है, जिसका महत्वपूर्ण उद्देश्य था "खाद्यान्न में स्वावलम्बन प्राप्त करना ।" किन्तु ३७०० करोड़ रु० की पहली, ७२०० करोड़ की दूसरी और ११,२५० करोड़ की तीन योजनाओं के उपरान्त भी हम स्वावलम्बन की स्थिति तक पहुँचना तो दूर रहा, नियमित आयात की सहायता से भी समस्या को सुलझा नहीं सके । द्वितीय योजना में खाद्यान्न आयात का अनुमान २४० करोड़ रु० का था किन्तु वास्तविक आयात ७९० करोड़ रु० का हुआ अर्थात् २४० प्रतिशत अधिक आयात करना पड़ा। इसी प्रकार तीसरी योजना के अंत तक लक्ष्य ९२ मि. टन उत्पादन का था, किन्तु वह भी पूर्ण नहीं हो पा रहा है। इससे ज्ञात होता है कि त्रुटि हमारी योजनाओं में ही है। हम वस्तुस्थिति का सही ज्ञान व अनुमान लगाने में असमर्थ रहे हैं।

तीनों योजनाओं में कुल मिलाकर २४५० करोड़ रु० कृषि पर व्यय हो चुके हैं, किन्तु हम उस स्थिति से भी नीचे गिर गये हैं, जहां योजना बनाते समय थे। कृषि पर किए गये प्रत्येक योजना में व्यय और उत्पादन के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि केवल धन राशि का व्यय उत्पादन नहीं बढ़ा सकता—

| | ५०-१९५१ | ५५-१९५६ | ६०-६१ से ६३-६४ |
|---|---|---|---|
| उत्पादन | ५१२ लाख टन | ६५८ लाख टन | ८०० लाख टन |
| | प्रथम योजना | द्वितीय | तृतीय |
| व्यय | ३५७ करोड़ | ८३५ करोड़ | १४६० करोड़ रु० |

इतने व्यय पर भी १९६४ के पहले ६ माह में हमें ३ मि० टन आयात करना पड़े और बाद के ६ माह में यह मात्रा बढ़ी ही है, फिर भी आज बाजार में अनाज उपलब्ध नहीं है। खाद्यान्न विभाग के वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार पिछले तीन वर्षों में हमने इस प्रकार आयात किया—

| | | |
|---|---|---|
| १९६२ | ३६.४ लाख टन | १४१.१ करोड़ रु० |
| १९६३ | ४५.६ लाख टन | १८३.६ करोड़ रु० |
| १९६४ | ६२.७ लाख टन | २६६.२५ करोड़ रु० |

देश में खाद्यान्न वृद्धि के लिए किया जाने वाला व्यय अतिरिक्त है। १९६४ से खाद्यान्न समस्या ने जो रूप धारण किया है, उसे सुलझाने के लिए सरकार अनेक उपाय करती रही है । १९६४ में लगभग १०४,००० उचित मूल्य वाली दुकाने खोली गईं और आज लगभग १०५,००० दुकानें कार्य कर रही हैं, किन्तु अनाज के अभाव में ये व्यर्थ हैं।

यह निश्चित किया गया है कि सरकार ४ मि० टन गेहूँ और २ मि० टन चावल का स्टाक आंतरिक और आयात स्रोतों द्वारा एकत्रित करेगी । भंडारों की क्षमता गतवर्ष में १७.७८ लाख टन से बढ़ाकर १८.५७ कर दी गई और ४.७ लाख टन हेतु गोदाम निर्मित किए जा रहे हैं तथा बाद में १०.९२ लाख टन और क्षमता बढ़ाई जाने हेतु प्रारम्भिक प्रयास किए जा रहे हैं।

रासायनिक खाद का लक्ष्य तृतीय योजना में ८ लाख टन था, किन्तु अभी कृष्णमाचारी जी ने सूचित किया कि



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ५ लाख टन उत्पादन हो सकेगा। उन्होंने यह भी बताया कि मांग अधिक है और पूर्तिकम। इससे स्पष्ट है कि आरोप गलत है कि हमारे किसान खाद का उपयोग नहीं करते हैं।

## चौथी योजना में

चौथी योजना का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया है, उसके पहले दो उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(१) ग्रामीण जनसंख्या की आय वृद्धि तथा खाद्यान्न व कच्चे माल की पूर्ति वृद्धि हेतु इस प्रकार प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे कि प्रतिवर्ष ५ प्रतिशत की दर से आर्थिक विकास हो सके। यदि संभव हो तो कृषि उत्पादन इससे भी अधिक किया जाए।

(२) इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, उर्वरक तथा रासायनिक खाद, कृषि संयंत्र, पम्प, डीजल इंजन, ट्रैक्टरों के उत्पादन को औद्योगिक विकास में उच्चतम प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

उल्लेखनीय बात यह है कि पिछली ३ योजनाओं ने हमें सिखा दिया कि खाद्यान्न में स्वावलम्बन इतनी शीघ्रता से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और इसलिए इसका उल्लेख लक्ष्य के रूप में करना व्यर्थ है।

उपर्युक्त लक्ष्य की पूर्ति हेतु चौथी योजना में कृषि व सिंचाई कार्यक्रम पर ४१०० करोड़ रु० व्यय करने का प्रावधान है। केवल सरकारी क्षेत्र में कृषि पर ३४०० करोड़ व्यय किया जाएगा, जो योजना की कुल राशि का २१.८ प्रतिशत है अर्थात् वर्तमान योजना की राशि से लगभग दुगना किया जाएगा। राष्ट्रीय विकास परिषद ने १९७०-७१ तक खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य १२० मि० टन रखा है, उर्वरकों में नाइट्रोजन के लक्ष्य से, जो तृतीय योजना में ६.५ लाख टन था, २० लाख टन अर्थात् लगभग तिगुना, फास्फोटिक्स का २.५ लाख टन से १० लाख टन जो कि लगभग चार गुना है और सिंचाई का लक्ष्य २० मि. एकड़ से बढ़ाकर ३३ मि. टन रखा गया है।

किन्तु पिछले अनुभव बताते हैं कि हमारे लक्ष्य कभी पूरे नहीं हुए। जनसंख्या की वृद्धि को देखते हुए यह और भी असम्भव दीखता है। सामान्य रूप से तृतीय योजना के प्रत्येक वर्ष में हमने उत्पादन का ५ प्रतिशत अन्न आयात किया। इसमें प्रतिवर्ष जनसंख्या की २.१ प्रतिशत वृद्धि और जोड़ दी जाए तो कमी ७.१ प्रतिशत हो जाती है ? जनसंख्या के नियंत्रण के अभाव में यह कमी क्या पूरी हो सकेगी क्योंकि आयात की एक सीमा होती है ? १९५१-५२ से लेकर १९६१-६२ तक भारतीय खाद्यान्न उत्पादन की दर लगभग २.६६ प्रतिशत रही है, किन्तु १९६०-६१ से ६३-६३ तक उत्पादन लगभग स्थिर रहा है। पिछली अवधि में जनसंख्या ६ प्रतिशत बढ़ी, उसी अवधि में खाद्यान्न स्थिर रहा। अतः कमी होना स्वाभाविक है।

## कम उत्पादन के कारण भी ?

हमारे देश में कृषि के कम उत्पादन के अनेक कारण बताए जाते रहे हैं—जैसे अशिक्षित किसान, साख का अभाव, बीज का अभाव, यंत्रीकरण न होना, उर्वरक का अभाव आदि। किन्तु एफ० ए० ओ० के प्रबन्ध विशेषज्ञ ए० डब्लू वाई० योंग ने बताया कि जापान किसी दूसरे एशियाई देश की अपेक्षा दुगनी उपज प्राप्त करता है, यद्यपि वहां पर अनेक कठिनाइयां हैं जैसे—

१. वहां पर उपज करने का मौसम छोटा होता है।
२. भूकम्प और तूफान अनेक बार बाधा पहुँचाया करते हैं।
३. उर्वरकता भी कम है
४. कृषि पर जनसंख्या का घनत्व भी अधिक है, आदि। किन्तु वहां पर अनेक विधियों को अपना कर उत्पादन बढ़ाया जाता है, जिनमें से निम्न उल्लेखनीय हैं—

१. युद्धोपरांत सरकार ने ८० प्रतिशत (१.८ मि० एकड़) भूमि, भूहीन कृषकों को बेच दी।
२. उत्तम बीज,
३. सिंचाई और निकासी में गहनता लाकर,
४. यंत्रीकरण,
५. उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग—वहां पर प्रति हेक्टर के पीछे २४६ किलोग्राम उपयोग किया जाता है, जबकि नीदरलैंड में २४०, इंग्लैंड में ५३ तथा अमेरिका में १३ किलो किया जाता है।

इससे हम बहुत कुछ शिक्षा ले सकते हैं।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कुछ उपाय

कृषि मन्त्री श्री सुब्रह्मण्यम ने चौथी योजना में कृषि वृद्धि के हेतु निम्न विधियां अपनाने का विचार व्यक्त किया—

१. पायलट क्रियायें—किसानों को नमूना बनाकर अधिक उत्पादन की प्रेरणा देना,
२. भू सर्वेक्षण—जिसमें यह भी ज्ञात किया जाएगा कि हमें किस प्रकार के प्रशिक्षित व्यक्तियों, यंत्रों व खादों की जरूरत है ।
३. बीज उत्पादन—इस हेतु एक निगम की स्थापना की जा सकती है, जिसमें विशेषज्ञों की सेवायें ली जा सकेंगी,
४. उपज का संरक्षण,
५. उन्नत साधनों का प्रयोग,
६. साख सुविधायें,
७. अनुसंधान शालायें जो कि अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान के सहयोग से ज्ञान प्राप्त कर सकें,
८. पशु और मछली उद्योग का विकास,

उपर्युक्त विधियां ठीक हैं किन्तु इस समस्या का समाधान खोजने के पूर्व उसके मूल दोषों को ढूंढ़ना और उन्हें दूर करना आवश्यक है । अनेक दोषों में से कुछ दोष तो हमारी अर्थव्यवस्था के ही हैं जिनका कृषि से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है जैसे—मुद्रास्फीति, घाटे की योजना, करों की बढ़ती गति, काला धन, बैंकों के द्वारा दिये जाने वाले ऋण में कमी, स्वर्ण नियंत्रण, ऊंचे नोटों की वापसी की अफवाह, खुला व्यापार न होना, भू-सीमा नियंत्रण आदि जो अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न कर उत्पादन की प्रेरणा को कम करते हैं ।

इसके अतिरिक्त उत्पादन में कमी लोगों में मनोवैज्ञानिक रूप से भय की भावना भर देती है जिससे संग्रह को प्रोत्साहन मिलता है । त्रुटिपूर्ण क्षेत्रीय विभाजन और लोगों की लाभ कमाने की वृत्ति भी काफी महत्वपूर्ण कारण हैं । प्रशासनिक विफलताएं तथा ग्राम्य ऋणता की कमी इसी श्रृंखला में लाये जा सकते हैं ।

## नीतियों का क्रियान्वयन

कृषि क्षेत्र में सबसे बड़ा दोष प्रयोगात्मक नीतियों को लागू करने का है । थोड़े ही समय में अनेक नीतियां लागू की जाती रही हैं । कुछ समय तक अन्न के स्वावलम्बन पर जोर दिया जाता रहा, फिर अन्न के राजकीय व्यापार का प्रयास किया गया । सहकारिता को प्रोत्साहन देने हेतु अन्न व्यापार का सहकारिता द्वारा किए जाने पर जोर दिया जाना, पी० एल० ४८० की नीति, राज्यवार संभाग बनाना, विभाजित पद्धति अपनाना, कण्ट्रोल की नीति न होते हुए भी आवश्यकतानुसार कुछ समय के लिए आंशिक कन्ट्रोल व राशनिंग की नीति सभी प्रयोगों की श्रृंखला है और इसी गड़बड़ में कोई भी पद्धति व नीति वांछनीय परिणाम नहीं दे सकी ।

## आंशिक कण्ट्रोल

वर्तमान समय में जो आंशिक कंट्रोल की नीति अपनाई गई है वह हानिप्रद सिद्ध हो रही है । गेहूँ की अपेक्षा चावल और ज्वार के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं तथा बाजार में उनकी आवक नहीं है । इसी कारण से अन्य वस्तुओं के मूल्य भी तेजी से बढ़ते जा रहे हैं जो अंततः अन्न का मूल्य और बढ़ाते हैं । वास्तव में आंशिक कंट्रोल सफलता से काम नहीं कर सकता—यह सरकार को भी महंगा पड़ता है और जनता को भी ।

खाद्यान्न का सूचक अंक ४४.४ प्रतिशत बढ़ गया है, जबकि सामान्य निर्देशांक केवल २४.५ प्रतिशत बढ़ा है । इस मूल्य वृद्धि के अनेक बुरे परिणाम होते हैं । बाजार में सबसे बड़ी बात है कि खाद्यान्न की आवक नहीं है । उपभोक्ता स्थिर मूल्य चाहता है और उत्पादक को उचित मूल्य मिलना चाहिए किन्तु वास्तव में सीमितता उत्पन्न की जाती है । परिणामस्वरूप मूल्य वृद्धि होती है । अनाज के द्वारा ही सामान्य जीवन व्यय निर्धारित होता है । अभी सर्वेक्षण से पता लगा कि औसत भारतीय आय का ६८ प्रतिशत खाद्यानों पर व्यय करता है, अतः अन्य वस्तुओं के मूल्य बढ़ने लगते हैं और मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है । अतः सरकार ने १०० करोड़ रु० की पूंजी से अन्न व्यापार निगम की स्थापना की है । इससे अपेक्षा की जाती है कि यह खाद्यान्न की नियमित पूर्ति उचित मूल्यों पर करेगा जिससे मूल्य सटोरियों और संग्रह कर्त्ताओं की इच्छानुसार प्रभावित न होते रहें । इस उद्देश्य के लिए एक बड़े प्रशासनिक यंत्र के साथ-साथ दो अन्य बातें आवश्यक हैं—



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. थोक व्यापारी और सटोरियों पर कड़ा नियंत्रण जिससे कि वे राज्य द्वारा क्रय को प्रभावित न कर सकें।

२. व्यावहारिक मूल्य नीति जो कि उत्पादकों को संग्रह के स्थान पर बेचने की प्रेरणा दे।

अभी तक शासन इन दो में से एक भी बात पूरी नहीं कर पाया है। न तो व्यापारियों पर कोई वास्तविक नियंत्रण ही हुआ है और न उचित मूल्य नीति ही अपनाई जा सकी है। मंडी में अनाज की आवक नहीं है। इसके पीछे आंशिक कंट्रोल की नीति तो कारण है ही साथ ही अन्य वस्तुओं जैसे सीमेंट, लोहा, खाद, कपड़ा, तेल, ईंधन आदि के मूल्य ऊंचे होने के कारण उत्पादक को अनाज के ऊंचे मूल्य भी लाभप्रद प्रतीत नहीं होते। वह काले बाजार में और अधिक मूल्य लेना चाहता है। इस कारण यह प्रयोग भी कितना लाभदायक होगा संदेह ही है।

## योग्यता का अभाव

कृषि प्रशासन में पुनर्गठन की आवश्यकता सदैव स्वीकार की जाती रही है किंतु कोई सुधार नहीं होता। कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु कई संस्थायें स्थापित की गई हैं जैसे विकास, कृषि, सिंचाई, सामुदायिक विकास, सहकारिता विभाग, किन्तु इनमें सामंजस्य और सहयोग का अभाव है। परिणामस्वरूप धन अधिक व्यय होता है और उपलब्धियां नहीं के तुल्य।

प्रशासनिक सामंजस्य केंद्र और राज्यों के मध्य भी वांछनीय है। यह एक राष्ट्रीय समस्या है, क्षेत्रीय और राज्य की सीमायें, इसके सुलझाने में बाधा ही उत्पन्न करती हैं। विस्तार अधिकारी और अन्य कार्यकर्त्ता भी किसानों को आधुनिक तरीकों से कृषि करने हेतु प्रेरणा तो नहीं दिला सकें बल्कि जैसा कि श्री सुब्रमण्यम का कथन है, गांव के किसान ग्राम स्तरीय कार्यकर्त्ताओं को निरादर की भावना से देखते हैं। कृषि स्नातक शहरी वातावरण के होते हैं और केवल सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर वे गांवों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते।

साख सुविधा देने में भी अनेक प्रकार का भेद कृषक महसूस करते हैं यथा वह समय पर उपलब्ध नहीं होती। यह सब प्रशासन की कमजोरियां हैं जिन्हें दूर करना आवश्यक है।

यह आरोप कि कृषि हेतु उचित धनराशि उपलब्ध नहीं थी या नहीं होती, सही नहीं है क्योंकि एक बड़ी राशि इस हेतु व्यय की जाती रही है। वास्तविक दोष है प्रशासनिक प्रबंध में योग्यता का अभाव। हमारे पास पानी बहुत है सिंचाई हेतु, किन्तु वह किसानों को समय पर मिल नहीं पाता है। साख उपलब्ध है, अधिक उत्पादन के तरीकों का हमें ज्ञान है, किन्तु कृषकों को उनका लाभ समय व सुविधा अनुसार उपलब्ध नहीं हो पाता है। हमें यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि कृषि में विनियोजन और उत्पादन का प्रत्यक्ष व सीधा सम्बन्ध नहीं है अर्थात् Input और Output का संबंध नहीं है। कृषि में उन्नति प्राप्त करने के लिए संगठित प्रगति ही एक वांछनीय विधि है।

## दो दृष्टिकोण

कृषि उत्पादन की समस्या को सुलझाने के लिए हमें दो दृष्टिकोणों से अध्ययन करना होगा—

१. दीर्घकालीन दृष्टि से—लोगों को पूर्ण आश्वासन दिया जाना चाहिए कि पूर्ति में नियमितता रहेगी और किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी, जिससे संग्रह कर्त्ता हतोत्साहित हों। इसके साथ-साथ परिवार नियोजन कार्यक्रम को भरसक तीव्रता से और प्रभावपूर्ण विधि से करते रहना चाहिए। एक ऐसे सामाजिक वातावरण को जनम दिए बिना, जिसमें अधिक संतानोत्पादन करना हेय व घृणा की दृष्टि से देखा जावे, प्रजातांत्रिक विधि में परिवार नियंत्रण नहीं हो सकता—

२. अल्पकालीन दृष्टि से अनेक उपाय काम में लाये जा सकते हैं—

(क) किसी भी प्रकार खाद्यान्न का एक बड़ा स्टाक एकत्र करना चाहिए, जिसके लिए अन्न व्यापार निगम प्रयास कर रहा है।

(ख) सट्टेबाजी और एकाधिकारी प्रवृत्तियों का दमन।

(ग) संग्रह कर्त्ताओं को कठोर दंड।

(शेष पृष्ठ ६५० पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण : एक मूल्यांकन

श्री धीरेन्द्रकुमार सिन्हा

०

## राष्ट्रीयकरण के प्रमुख कारण

भारतवर्ष में जीवन बीमा का इतिहास दूसरे उद्योगों से कम पुराना नहीं है। सर्व प्रथम सन् १८१८ में ओरिएन्टल जीवन बीमा कम्पनी की स्थापना हुई थी। राष्ट्रीयकरण के समय तक इस क्षेत्र में २४३ कम्पनियां कार्य कर रही थीं। इनका कार्य कई कारणों से असन्तोषजनक था। प्रथम, इनका कार्य क्षेत्र केवल शहरों में ही अधिक था। दूसरे, इनके द्वारा बीमा कोष का विनियोजन उचित रूप में नहीं किया जाता था, जिससे एक ओर कम्पनियां असफल हो जाती थीं और दूसरी ओर बीमादारों को हानि होती थी। सन् १९४५ से १९५५ तक के दस वर्ष की अवधि में ५१ कम्पनियां असफल हो चुकी थीं। इसका प्रमुख कारण यह था कि बहुत सी कम्पनियों के अधिकारीगण बीमा निधि का स्वयं उपयोग कर लेते थे या अपने रिश्तेदारों, मित्रों आदि को कर्ज दे देते थे। राष्ट्रीयकरण के पूर्व करीब २५ कम्पनियों ने बीमा कोषों को उड़ा दिया था। इसके कारण कुछ को न्यायालय से कारावास एवं आर्थिक दंड भी दिया गया था। उदाहरण के लिए भारत बीमा कम्पनी में २.८५ करोड़ रुपये का गोलमाल था। एक दूसरे कम्पनी के मुख्य संचालक ने २.५ करोड़ रुपये का गबन कर लिया था। एम्पायर और इंडियन जीवन बीमा कम्पनी के ६ अधिकारियों को ६२ लाख रुपये के गोलमाल के कारण ३ वर्ष से ५ वर्ष तक का कारावास दिया गया था। तीसरा प्रमुख कारण यह था कि इन कम्पनियों का संचालन व्यय बहुत अधिक था १९५१ में समावेशक व्यय (अनुपात ओवर ऑल एक्सपेंस) प्रीमियम से प्राप्त कुल आय का २७.२% था, जो सन् १९५५ में बढ़कर ३३.४% हो गया था। इसी प्रकार नवीकरण व्यय अनुपात (रिन्यूअल एक्सपेंस रेशियों) भी अधिक था। १९५५ में यह नवीकरण व्यय कुल प्रीमियम आय का १७.३% था, जबकि १९३८ के बीमा अधिनियम के अनुसार अधिकृत अनुपात १५% निर्धारित हुआ था।

## राष्ट्रीयकरण के पश्चात की स्थिति

ऊपर दिये गये कारणों के आधार पर सन् १९५६ में जीवन बीमा व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण किया गया और इस कार्य के लिए जीवन बीमा निगम की स्थापना की गई, जिसे देश भर में इस व्यवसाय का एकाधिकार प्राप्त है। राष्ट्रीयकरण के पश्चात जहां तक बीमा निधियों की सुरक्षा की समस्या थी, वह पूर्ण रूप से हल हो गई, क्योंकि सभी जीवन बीमा पत्रों को सरकार की गारंटी प्राप्त है। परन्तु कोषों के विनियोजन में सुरक्षा के साथ-साथ लाभ को भी देखना चाहिए। बीमा निगम ने लगभग ६९% निधि का विनियोजन सरकारी प्रतिभूतियों में कर रखा है, जो सुरक्षित तो है, पर अधिक लाभप्रद नहीं। नियम के अनुसार केवल ५०% निधि का ही विनियोजन सरकारी प्रतिभूतियों में करना आवश्यक है।

## ग्रामों में

जहां तक व्यवसाय का ग्रामीण क्षेत्रों में विकास का सम्बन्ध है, निगम की प्रगति संतोषजनक कही जा सकती है। निगम द्वारा प्रति वर्ष कुल व्यवसाय का लगभग ३०% व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में किया जा रहा है, जबकि राष्ट्रीयकरण के पूर्व मुश्किल से ७% व्यवसाय किया जाता था। निगम के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र का अर्थ ऐसे स्थानों से है, जहां कि जनसंख्या ५,००० से कम है। इसी प्रकार कुल व्यवसाय में भी वृद्धि तीव्रता से हुई है। राष्ट्रीयकरण के पूर्व १९५५ में निजी कम्पनियों ने केवल २६५ करोड़ रुपये का बीमा किया था, जो राष्ट्रीयकरण के तुरन्त बाद १९५७ में २८३ करोड़ हो गया थी और १९६३-६४ में ७०३ करोड़ उद्देश्य पूर्ति रुपये हो गई।

परन्तु केवल कोषों की सुरक्षा और व्यवसाय की वृद्धि से क्या यह समझ लेना उचित होगा कि जीवन बीमा निगम ने इस व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण के उद्देश्यों की पूर्ति कर दी? या इसके लिए दूसरी बातों को उदाहरणार्थ लीन पालिसी अनुपात, समावेशक व्यय अनुपात तथा नवीकरण व्यय अनुपात आदि को देखना आवश्यक होगा, जो सही रूप में एक बीमा कम्पनी की क्षमता या सफलता का परिचायक होते हैं? अगर जीवन बीमा निगम के पिछले



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ वर्षों के कार्य काल का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया जाये तो इसी नतीजे पर पहुँचेंगे कि निगम ने दक्षता में अब तक कम प्रगति की है। कुछ क्षेत्रों में तो राष्ट्रीयकरण के पहले से भी स्थिति को और गम्भीर बताया जा रहा है।

## लीन पालिसी अनुपात (लैप्स रेशिओ)

लीन पालिसी अनुपात व्यवसाय की उत्तमता को दर्शाता है। इससे पता चलता है कि जो बीमे किये जाते हैं, वे स्थायी हैं या नहीं। बीमादारों ने इच्छा से बीमा कराया है या नहीं, क्योंकि जब बीमादार अपनी इच्छा और सामर्थ्य से बीमा करायेंगे तो अपनी पालिसियों को भी हम चालू रखेंगे और बीच में बन्द होने का अनुपात कम होगा। परन्तु जब केवल अभिकर्ताओं के दबाव या उनके द्वारा अपनाये गये गलत नीतियों के कारण बीमा कराते हैं, तब वे पालिसियों को चालू नहीं रख पाते और यह अनुपात बढ़ता जाता है। निगम द्वारा इस ओर कम ध्यान दिया गया है कि उत्तम पालिसियां ही स्वीकार की जाएं। निगम के प्रारम्भिक काल में यह अनुपात निजी कम्पनियों के योग से कम था, परन्तु अब तो इसमें निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। १९५५ में निजी कम्पनियों का सम्मिलित लीन अनुपात ७.५% था, जो राष्ट्रीयकरण के बाद १९५८ में ५.१% तक गिर गया था, परन्तु १९५९ में यह बढ़कर ६% हो गया और उस समय से निरन्तर बढ़ ही रहा है। १९६० में यह अनुपात ६.६% हो गया था जो १९६१ में ७.१%, १९६२-६३ में ८.१% और १९६३-६४ में बढ़कर ८.२% हो गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अभिकर्तागण वार्षिक व्यवसाय के न्यूनतम लक्ष्य को पूरा करने के प्रयत्न में पालिसियों के स्थायित्व पर ध्यान नहीं देते हैं। इस बात की पुष्टि इससे की जा सकती है कि वर्ष के कुल व्यवसाय का अधिक भाग केवल वर्ष के अंतिम दो माह में किया जाता है। सन् १९५८ से १९६१ तक के मासिक आंकड़ों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कुल व्यवसाय का ५०% से अधिक व्यवसाय केवल वर्ष के अंतिम दो माह में ही होता है। खेद की बात है कि सन् १९५९ में ही निगम ने मुख्य अभिकर्ताओं को यह आदेश दिया था कि वे सम्भावित व्यवसाय का मासिक लक्ष्य निर्धारित करें और अपने व्यवसाय का कम से कम आधे से अधिक भाग अगस्त माह तक कर लें। किन्तु इसका कोई विशेष परिणाम नहीं निकला। केवल पिछले दो वर्षों से वर्ष के अंतिम दो महीनों में होने वाले व्यवसाय का अनुपात पहले से कुछ कम होने लगा है।

## समावेशक व्यय (ओवरऔल एकसपेंस) अनुपात

समावेशक व्यय अनुपात किसी वर्ष में प्रीमियम के रूप में प्राप्त कुल राशि का संपूर्ण संचालन व्यय के साथ सम्बन्ध दर्शाता है। निगम ने इस क्षेत्र में भी विशेष प्रगति नहीं की है। वैसे तो यह राष्ट्रीयकरण के पूर्व की कम्पनियों के सम्मिलित अनुपात से कम है परन्तु प्रतिष्ठित कम्पनियों की तुलना में बहुत अधिक है। राष्ट्रीयकरण के पूर्व १९५४ में यह अनुपात २९.३% और १९५५ में ३३.४% था, जो राष्ट्रीयकरण के बाद १९५७ में २७.२% १९५८ में २९.२%, १९६० में २८.४%, १९६१ में २८% और १९६३-६४ में २७.५% हो गया है। राष्ट्रीयकरण के पूर्व सम्मिलित अनुपात अधिक होने का प्रधान कारण यह था कि लगभग ८८ कम्पनियां ऐसी थीं, जिनका व्यय अनुपात ५०% से लेकर २००% तक था। परन्तु उसी समय ४४ कम्पनियां ऐसी भी थीं, जिनका व्यय अनुपात २५% से कम था। इनमें से २० कम्पनियां तो ऐसी थीं, जिनका व्यय अनुपात तो १५% के ही लगभग था। वास्तव में निगम को इस स्तर की दक्षता प्राप्त करनी चाहिए।

## नवीकरण व्यय (रिन्यूअल ऐक्सपेंस) अनुपात

नवीकरण व्यय अनुपात नवीकरण प्रीमियम के रूप में प्राप्त कुल आय का वह प्रतिशत है, जो पालिसियों को चालू रखने में व्यय किया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वास्तव में यही अनुपात किसी जीवन बीमा कम्पनी की दक्षता को व्यक्त करता है, क्योंकि समावेशक व्यय अनुपात व्यवसाय में वृद्धि होने से बहुत तेजी से बढ़ता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि नये व्यवसाय में अभिकर्ताओं को अधिक कमीशन दिया जाता है तथा अन्य खर्चे जैसे डाक्टर की फीस इत्यादि भी चुकानी पड़ती है जिससे प्राप्त प्रीमियम की राशिका अधिकांश भाग व्यय हो जाता है। इसमें संदेह नहीं कि इस व्ययमें राष्ट्रीयकरणके बादसे निरन्तर कमी हो रही है, क्योंकि १९५५ में यह अनुपात

(शेष पृष्ठ ६३८ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# ट्राम्बे का रासायनिक उर्वरक उद्योग

हजारों वर्षों से मनुष्य पृथ्वी की मिट्टी की उर्वराशक्ति से लाभ उठाता रहा है । विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश नहीं जिसकी मिट्टी की उर्वराशक्ति का ह्रास हो गया है। लेकिन, वह एक ऐसा देश अवश्य है जो अन्य अनेक राष्ट्रों की तुलना में मिट्टी में बहुत कम उर्वरक डालता है। भारत में रासायनिक उर्वरक की खपत एक एकड़ के पीछे एक किलोग्राम है, जबकि फ्रांस में यह खपत २७.१७ किलो ग्राम प्रति एकड़, पश्चिमी जर्मनी में ६५ किलो ग्राम प्रति एकड़, नीदरलैंड में ८२.२४ किलोग्राम प्रति एकड़, जापान में ९४.६१ किलोग्राम प्रति एकड़ तथा अमेरिका में (जहां कृषि के लिए भूमि का इस्तेमाल होते अभी ४०० वर्ष भी नहीं हुए हैं) ६७४ किलोग्राम प्रति एकड़ है।

भारतीय किसान इतना कम उर्वरक क्यों इस्तेमाल करते हैं ? इसके तीन मुख्य कारण हैं । समग्र रूप में, भारत में अब भी कृषि के लिए परम्परागत तरीकों का उपयोग किया जा रहा है और किसान लोग रासायनिक उर्वरकों की उपयोगिता को नहीं समझते हैं और यदि वे समझते हों तो भी भारत में रासायनिक उर्वरकों की सप्लाई बहुत कम और महंगी तथा भारत में उत्पादित होने वाली रासायनियक खाद अपर्याप्त है, जिससे काफी अधिक मात्रा में यह उर्वरक विदेशों से आयात करने पड़ते हैं । रासायनिक उर्वरक संयन्त्र स्थापित करने के लिए आवश्यक मशीनें भी विदेशों से आयात करनी पड़ती हैं और ये काफी महंगी होती हैं। अतएव, रासायनिक उर्वरक का उत्पादन करना प्रारम्भ में अत्यन्त व्यय साध्य कार्य सिद्ध होता है। लेकिन, दूसरी ओर इसका उत्पादन करना तथा विदेशों से भोजन-सामग्री और उर्वरक आयात करना और भी अधिक खर्चीला होता है।

## कितना कम ?

इस समय भारत में ३८ करोड़ ४६ लाख एकड़ भूमि पर कृषि होती है जिसमें से ७ करोड़ १ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई की व्यवस्था है। इस विशाल भूमि में, जिसमें लगभग ४०,००,००० टन रासायनिक उर्वरक खपने चाहिए, हम केवल २.५ लाख टन उर्वरक का उपयोग कर रहे हैं। इसमें से भी अधिकांश भाग विदेशों से आयात किया जाता है।

रासायनिक उर्वरकों की इस भारी कमी को दूर करने के लिए अमेरिकन सहयोग से एक द्रुतगामी कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, जिसके अन्तर्गत १९६८ तक रासायनिक उर्वरकों का उत्पादन करने वाले चार बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण सम्पन्न हो जाएगा । इस समय भारत में ५ रासायनिक उर्वरक संयंत्रों में उत्पादन शुरू हो चुका है। इन ६ रासायनिक उर्वरक संयंत्रों में एक विशालतम संयंत्र ट्राम्बे स्थित रासायनिक उर्वरक संयंत्र है, जिसके निर्माण पर ३ करोड़ १४ लाख डालर की लागत आई है। यह कारखाना ६ नवम्बर को उत्पादन प्रारम्भ कर चुका है।

बम्बई नगर से १७ मील की दूरी पर संयंत्र एस्सो और बर्मा शैल के तेल शोधक कारखानों के निकट ही स्थित है। ये दोनों तेल शोधक कारखाने संयंत्र को रासायनिक खाद के निर्माण हेतु आधारभूत कच्चा माल-नेप्था और गैस सुलभ करेंगे । यह संयंत्र ३,३०,००० टन नाइट्रो-फास्फोरस के रूप में प्रति वर्ष ९० हजार टन नाइट्रोजन और ४५ हजार टन फास्फेट का उत्पादन करेगा। नाइट्रो-फास्फेट में नाइट्रोजन का अंश १२.९ प्रतिशत तथा फास्फेट का अंश भी १२.९ प्रतिशत रहता है। इसके अलावा उक्त संयंत्र यूरिया नाम उर्वरक का भी उपादन करेगा जिसमें नाइट्रोजन का अनुपात ४६प्रतिशत तक रहता है।

यह रासायनिक उर्वरक संयंत्र समस्त एशिया में अपने ढंग का अद्वितीय संयंत्र होगा । अमेरिका ने इस रासायनिक उर्वरक संयंत्र के निर्माण हेतु ३३ करोड़ ७८ लाख डालर की आर्थिक सहायता अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेन्सी के माध्यम से सुलभ की है। इसके अलावा पी.एल. ४८० कोष से भी १३.४ करोड़ रुपए का ऋण स्थानीय मुद्रा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रदान किया था। संयंत्र के निर्माण का ठेका अमेरिकी और भारतीय फर्मों को दिया गया, लेकिन योजना पर नियंत्रण योजना सार्वजनिक क्षेत्र की है—फरटलाइजर कारपोरेशन आफ



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इण्डिया के हाथों में है।

आज ५२७ एकड़ भूमि में नाना प्रकार के आकार-टावर, चमकते हुए गोल आकार तथा पाइप-दृष्टिगोचर होते हैं। जहां कुछ समय पूर्व समुद्र की वायु से स्पन्दित ताड़ के वृक्ष ही दृष्टिगोचर होते थे, आज वहां ऊंचे-ऊंचे क्रेन और भवन दिखाई पड़ते हैं।

यह अनुमान लगाया गया है कि एक टन रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से कृषि-उत्पादन में १० टन की वृद्धि हो सकती है। इस आधार पर, यदि ट्राम्बे में उत्पादित समस्त रासायनिक खाद महाराष्ट्र राज्य के कृषि-उत्पादन में १३५०,००० टन की वृद्धि हो सकती है। राष्ट्रव्यापी आधार पर यह आशा की जाती है कि १९६६ तक राष्ट्र के कुल कृषि-उत्पादन में २ करोड़ ८० लाख टन तक की वृद्धि हो जाएगी। इसमें से लगभग ४० प्रतिशत वृद्धि का श्रेय रासायनिक उर्वरकों को प्राप्त होगा।

ट्राम्बे जैसी रासायनिक फैक्टरी खड़ी करने के लिए ३० से लेकर ३५ करोड़ रुपये तक की पूंजी चाहिए। उन रासायनिक उर्वरकों का आयात करने के लिए, जिनका निर्माण भारत में नहीं होता, हर वर्ष २५ करोड़ रुपये से लेकर ३० करोड़ रुपये तक की धनराशि खर्च होती है। ऐसी भोजन सामग्री की खरीद करने के लिए, जो पर्याप्त उर्वरकों का उपयोग किए बिना नहीं उत्पन्न की जा सकती, हर वर्ष १५० करोड़ रुपये और खर्च करने पड़ते हैं। इस प्रकार गणित और तर्क दोनों का यह तकाजा है कि भारत में और अधिक रासायनिक उर्वरक संयंत्रों का निर्माण किया जाए।

यदि ये प्रयास सफल हो जाते हैं तो १९७१ तक भारत ३० लाख टन रासायनिक उर्वरक का उत्पादन करने लगेगा। १९६३-६४ की तुलना में यह आंकड़े लगभग २० गुने हैं। यद्यपि इससे भी समस्त आवश्यकता की पूर्ति नहीं हो सकती फिर भी सामान्य परिस्थितियों में अपनी जरूरत लायक अन्न उत्पन्न करने की दृष्टि से यह मात्रा पर्याप्त होगी।

● ●

## जीवन बीमा निगम...

(पृष्ठ ६३६ का शेष)

१७.३% था, राष्ट्रीयकरणके बाद १९५७ में कम होकर १५.८९%, १९५९ में १५.९२% १९६१ में १२.४२% और १९६३-६४ में १२.४६% हो गया है। परन्तु फिर भी इस क्षेत्रमें और दक्षताकी आवश्यकता है, क्योंकि अभी भी निगमकी दक्षता राष्ट्रीयकरणके पूर्वकी प्रतिष्ठित कम्पनियोंकी तुलनामें कम ही है। उदाहरणके लिए न्यू-इंडियाका नवीकरण व्यय अनुपात सन् १९५४ में केवल ९.१% ही था। अतः कम से कम निगम को इस स्तर की दक्षता प्राप्त करनी ही चाहिए। अब तो इस क्षेत्र में किसी तरह की प्रतियोगिता भी नहीं रह गई है।

### निष्कर्ष

इन सब तथ्यों के आधार पर यह कहना गलत न होगा कि जीवन बीमाका राष्ट्रीयकरण अभी तक अपने लक्ष्योंको प्राप्त करनेमें कम सफल हुआ है। इसके लिए यह आवश्यक है कि निगम सभी प्रकारके नियंत्रण रखे। अभिकर्त्ताओं द्वारा किए जाने न्यूनतम व्यवसाय के वार्षिक लक्ष्यके साथ-साथ त्रैमासिक लक्ष्यका भी निर्धारण करे। इसके साथ उनको दी जाने वाली वर्तमान पारिश्रमिक पद्धतिमें परिवर्तन करना भी आवश्यक है। किसी पालिसी के प्रथम वर्ष पर उन्हें जो पारिश्रमिक दिया जाता है, उसे तीन वर्षों में दिया जानी चाहिए। इससे वे लोग कम से कम तीन वर्ष तक पालिसी को लीन होने से बचाये रखने का प्रयत्न करेंगे तथा बीमादारों को अधिक सेवायें अर्पित कर सकेंगे। इससे अतिरिक्त निगम को अपने विभिन्न खर्चों में भी आवश्यक कटौती करनी चाहिए, जिससे व्यय अनुपात में कमी हो।

● ●

सम्पदा
का एक नया ग्राहक बनाना
आपका परम कर्त्तव्य है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# प्रगति पथ पर जहाजी उद्योग

जो उद्योग भारत में निरन्तर उन्नति कर रहे हैं, उनमें जहाजी उद्योग का विशेष स्थान है। समय-समय पर इसके उत्पादन लक्ष्य बढ़ाये गये हैं, फिर भी यह उद्योग अपने लक्ष्यों को पार करता जा रहा है। तीसरी पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य १३ लाख ग्रौस टन रखा गया था, परन्तु योजना की अवधि को समाप्त होने के पहले ही उसने १५ लाख टन से अधिक वृद्धि कर ली है! पिछले दिनों में लायड के जहाजी उद्योग अंक के प्रकाशन में जहाजी विकास का परिचय देते हुए एक तालिका दी गई है। इससे मालूम होता है कि व्यापारी जहाज के मालिक देशों में भारत का स्थान सतरहवां है। विश्व में कुल १६० मिलियन टन के व्यापारी जहाज हैं। इसमें सबसे पहला स्थान ब्रिटेन का है, दूसरा स्थान संयुक्त राष्ट्र अमरीका का है। लाईबिरिया का तीसरा स्थान है और भारत का सतरहवां। लाईबिरिया के जो जहाज हैं, उनमें अधिकांश की मालिक कम्पनियां विदेशी हैं। इसी लिये वहां जहाजों की संख्या अधिक है। जहाज उद्योग की यह तालिका निम्नलिखित है :

## विभिन्न देशों में जहाज

| देश के नाम | टनों में | कुल संसार में प्रतिशत |
|---|---|---|
| १. ब्रिटेन | २१५३० | १३.४२ |
| २. अमेरिका | २१५२७ | १३.४२ |
| ३. लाईबिरिया | २१५३९ | १०.९४ |
| ४. नार्वे | १५६४१ | ९.७५ |
| ५. जापान | ११९७१ | ७.४६ |
| ६. रूस | ८२३८ | ५.१४ |
| ७. ग्रीस | ७१३७ | ४.४५ |
| ८. इटली | ५७०१ | ३.५५ |
| ९. पश्चिमी जर्मनी | ५,२७९ | ३.२९ |
| १०. फ्रांस | ५१९८ | ३.२४ |
| ११. नीदरलैंड | ४,८९१ | ३.०५ |
| १२. पनामा | ४४६५ | २.७८ |
| १३. स्वीडन | ४२९० | २.६७ |
| १४. डेनमार्क | २,५६२ | १.६० |
| १५. स्पेन | २१३२ | १.३३ |
| १६. कनाडा | १८२९ | १.१४ |
| १७. भारत | १५२३ | ०.९५ |
| १८. अर्जेन्टाईना | १,२८९ | ०.८० |
| १९. ब्राजील | १२५३ | ०.७९ |
| २०. पोलैंड | १०४० | ०.६५ |

यदि लाईबिरिया और पनामा को उक्त गणना से निकाल दिया जाये तो भारत का स्थान जहाजों के स्वामी देशों में पन्द्रहवां होता है। इन दोनों देशों में विदेशी कंम्पनियों ने अपने जहाज रखे हैं, क्योंकि वे अपने देशों में भारी करों से बचना चाहते हैं।

भारत अपने जहाजी उद्योग के विकास पर गर्व कर सकता है, किन्तु वस्तुतः संसार के जहाजी उद्योग में उसकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। कुल संसार के जहाजों में परिमाण के अनुपात से भारत का स्थान केवल १% बैठता है। इस स्थिति का मुख्य कारण ब्रिटिश शासन में इस उद्योग पर कठोर नियंत्रण या बाधा रहा है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के आरम्भ काल में भारत के पास कुल ३,७२,३७८ टन के जहाज थे। इनमें से भी आधे से अधिक जहाज केवल तटीय व्यापार करते थे। इस योजना की समाप्ति पर भारत के पास ४७९,८८० टन के जहाज हो गये। दूसरी योजना के अन्त तक इनकी मात्रा ८,५७,८३३ टन हो गई।

| पहली पंचवर्षीय योजना का आरम्भ | तटीय | समुद्रपार | कुल |
|---|---|---|---|
| दिसम्बर ३१, १९५१ | २१७ | १७४ | ३९१ |
| दिसम्बर ३१, १९५५ | २२१ | २५६ | ४७८ |
| प्रथम योजनावधि में कुल लक्ष्य | ३१५ | २८५ | ६०७ |
| दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में | | | |
| १ दिसम्बर, १९६० | ३१५ | ५२९ | ८४४ |
| द्वितीय योजना में कुल लक्ष्य | ४३६ | ४६६ | ९०२ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | |
|---|---|---|---|
| तीसरी पंचवर्षीय का आरम्भ दिसम्बर ३१, १९६४ | ४६९ | ९०७ | १,३०५ |
| तीसरी योजना के अन्त तक लक्ष्य | ३२५ | ७६१ | १०८६ |
| तीसरी योजना के संशोधित लक्ष्य | — | — | १,३०० |

शेष संसार को देखते हुए भारत की प्रगति संतोषजनक है। पहली पंचवर्षिय योजना की अवधि में भारत की जहाजरानी का विकास ५.२% हुआ था, जबकि कुल संसार की प्रगति ३.८% थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में भारत ने १२.३% उन्नति की, जब विश्व की जहाज रानी में केवल ५.३% का विकास हुआ। यही गति तीसरी योजना की अवधि में जारी रही। इन चार वर्षों में भारतीय जहाजी उद्योग ने १९.३% उन्नति की है। कुल विश्व में उन्नति का अनुपात ४.९ प्रतिशत है।

तीसरी योजना के बनाते समय जहाज रानी का लक्ष्य १०८५८९०० टन रखा गया था, लेकिन इस लक्ष्य को भी बहुत कम समझ करके लक्ष्य १२ लाख कर दिया गया। सौभाग्य से यह लक्ष्य भी पहले चार वर्षों में ही पूर्ण हो गया। नीचे लिखी तालिका से मालूम होता है कि भारत ने विश्व के मुकाबले में किस अनुपात से अपने जहाजी उद्योग में उन्नति की हैं :—

| | भारत | | विश्व | |
|---|---|---|---|---|
| वर्ष | कुल ग्रास टन (हजारों में) | वृद्धि प्रतिशत | कुल ग्रास टन (हजारों में) | वृद्धि% |
| १९५१ | ३७२ | — | ८७,२४५ | — |
| १९५६ | ४८० | २१.० | १०५,२०० | २०.६ |
| १९६१ | ८५८ | ७८.८ | १३५,९१६ | २९.२ |
| १९६३ | १,२११ | ४१.१ | १४५,८६३ | ७.३ |
| १९६४ | १,४४८ | १९.६ | १५३,००० | ४.८ |
| १९६५ | १,५२३ | ५.२ | १६०,३९२ | ४.८ |

१९६५ में भारत की और विश्व के जहाजों की तुलनात्मक संख्याएं नीचे दी जा रही हैं :

| टनों के क्रम से | भारत की संख्या | १९६५ टनों में (ग्रास हजारों में) | संसार संख्या | १९६५ टन हजार में |
|---|---|---|---|---|
| १००—५०० | ८५ | २२ | १७३७० | ४५१८ |
| ५००—१००० | ३७ | २८ | ४३९२ | ३०८८ |
| १०००—२००० | ३८ | ५७ | ३३९८ | ५,००३ |
| २०००—४००० | २२ | ६१ | ३८९१ | ११६५१ |
| ४०००—६००० | ५४ | २७३ | २०२७ | १०,२०१ |
| ६०००—८००० | ७९ | ५४५ | ४४१९ | ३१३६९ |
| ८०००—१०,००० | २४ | २१३ | १९६१ | १७३९२ |
| १००००—१५००० | १ | १० | २४७७ | २९२५५ |
| १५०००—२०००० | १ | १५ | ६५९ | ११३१३ |
| २००००—२५००० | ११ | २३७ | ५५६ | १२२६५ |
| २५०००—३०००० | १ | २८ | २७७ | ७६३१ |
| ३००००—४०००० | १ | ३५ | ३१३ | १०,५३१ |
| ४०००० और अधिक | — | — | १२५ | ६,१७४ |
| कुल योग | ३५४ | १५२३ | ४१८६५ | १६०३९२ |





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोदय पृष्ठ

# खादी के प्रगति के दस वर्ष

१९५३ तक खादी पर न सरकार का कोई नियंत्रण था और न वह इसमें विशेष रुचि लेती थी, यद्यपि मंत्री मंडल खादी पहनने वाले कांग्रेसियों का था। खादी उद्योग सार्वजनिक निजी संस्थाओं के हाथ में था। १९५३ में सरकार ने खादी ग्रामोद्योग विकास के लिये खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की स्थापना की। चार वर्ष बाद इसका नाम खादी ग्राम उद्योग कमीशन रख दिया गया।

इस कमीशन की संस्थाएं प्रत्येक राज्य में हैं। केन्द्रीय कमीशन इन राज्य संस्थाओं को आर्थिक सहायता देता है। १८६० के कानून के अन्तर्गत उत्पादन और बिक्री का काम बहुत सी सहकारी समितियां करती हैं। केन्द्रीय सरकार इन उद्योगों के विकास के लिये प्रति वर्ष विपुल सहायता देती है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं की आबादी में केन्द्रीय सरकार ने कमीशन को कितना रुपया दिया, यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है।

| | राशि करोड़ रु० में | कुल योजना का प्रतिशत |
|---|---|---|
| पहली योजना | १४.८२ | ०.४४ |
| दूसरी योजना | ८४.०० | १.२४ |
| तीसरी योजना (अनुमानित) | ९२.०४ | ०.७८ |

इसका अर्थ यह है कि तीन योजनाओं का कुल व्यय २१९१० करोड़ रुपये है, तो खादी ग्रामोद्योग कमीशन को अपने कार्य विकास के लिए १९१.२२ करोड़ रुपया मिला। मार्च १९६३ तक इस राशि में से १४३.५७ करोड़ रुपया खर्च हो चुका था। इस रुपये का काफी उपयोग हुआ है और खद्दर कार्य बहुत आगे बढ़ गया है। १९५३-५४ में १.१६ करोड़ गज खद्दर बुना गया था तो दस साल बाद १९६२-६३ में खद्दर का उत्पादन बढ़कर ८.९६ करोड़ गज तक पहुँच गया। मूल्यों की दृष्टि से यह संख्याएं क्रमशः २.१९ करोड़ रुपये और २१.२२ करोड़ रुपये थीं। सभी राज्योंमें उत्पादन के कार्य को बढ़ाया गया और आज करीब एक लाख गांवों में खद्दर का कारोबार हो रहा है।

खद्दर ग्रामोद्योग का मुख्य उद्देश्य उद्योगों के विकेन्द्रीकरण के द्वारा अधिक से अधिक लोगों को रोजगार देना है। नीचे की तालिका बताती है कि पिछले दस वर्षों में रोजगार की संख्या ३.७९ लाख से बढ़ कर १७.८९ लाख पहुँच गई।

रोजगार (हजारों में)

| वर्ष | कातने वाले | बुनने वाले | अन्य | कुल |
|---|---|---|---|---|
| १९५३-५४ | ३४८.० | १९.२ | ११.४ | ३७८.६ |
| १९५४-५५ | ४७४.१ | २९.४ | १४.१ | ५१७.६ |
| १९५५-५६ | ५९६.२ | ४३.६ | १७.७ | ६५७.५ |
| १९५६-५७ | ७८९.४ | ६०.१ | ३१.२ | ८८०.७ |
| १९५७-५८ | १००३.२ | ७३.५ | ५९.२ | १,१३५.९ |
| १९५८-५९ | १२५२.४ | ८०.३ | ६७.० | १,३९९.१ |
| १९५९-६० | १४११.४ | ११९.८ | ७५.८ | १,६०७.१ |
| १९६०-६१ | १५०८.३ | १२४.७ | ८१.२ | १,७१४.२ |
| १९६१-६२ | १५३७.१ | १२४.७ | ८४.४ | १,७४६.२ |
| १९६२-६३ | १५६४.१ | १४९.६ | ८४.७ | १,७९८.४ |

जब कार्य का विस्तार हो तो यह स्वाभाविक है कि काम करने वाली संस्थाएं भी बढ़ें। १९५३-५४ में खादी का काम करने वाली संस्थाओं की संख्या १९६ थी। १० वर्ष बाद इनकी संख्या बढ़ कर १६१४ हो गई अर्थात् इनमें ७६८ % की वृद्धि हुई। इन १९१४ में ६७४ संस्थाएं तो सहकारिता के आधार पर संगठित हुई थीं। नीचे की तालिका से इनकी वृद्धि का क्रम स्पष्ट हो जायेगा।

| साल | रजिस्टर्ड संस्थाएं | सहकारी समितिया | कुल |
|---|---|---|---|
| १९५३-५४ | १८६ | — | १८६ |
| १९५४-५५ | १९० | ४२ | २३२ |
| १९५५-५६ | २४४ | ६० | ३०४ |
| १९५६-५७ | २७९ | १६६ | ४४५ |
| १९५७-५८ | ३१९ | २३६ | ५५५ |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

| | | | |
|---|---|---|---|
| १९५८-५९ | ३९२ | ३०४ | ६९६ |
| १९५९-६० | ४४९ | ३१९ | ७६८ |
| १९६०-६१ | ७३३ | ४१९ | ११५२ |
| १९६१-६२ | ८७६ | ५४१ | १४१७ |
| १९६२-६३ | ९४० | ६७४ | १६१४ |

किसी उद्योग के विस्तार का अर्थ केवल उत्पादन में वृद्धि नहीं है। उत्पादन के साथ-साथ बिक्री का भी बढ़ना अनिवार्य है। १९५३-५४ में खादी की बिक्री १.३ करोड़ रुपये की हुई थी, लेकिन कुछ पिछले वर्षों में बिक्री पन्द्रह गुना बढ़ कर २०.३७ करोड़ रुपये की हो गई। बिक्री की अच्छी व्यवस्था से खादी की बिक्री को प्रोत्साहन मिला है। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और बंगलौर में कमीशन के अपने इम्पोरियम हैं। इनमें नई से नई किस्म की खादी बिकती है। बेचने की व्यवस्था भी बहुत आधुनिक है। बम्बई के इम्पोरियम में ही २.२१ करोड़ रुपये की खादी बिक्री। दिल्ली के खादी ग्रामोद्योग भवन में भी एक करोड़ रु० की खादी बिकी। बंगलौर इम्पोरियम में ही बिक्री संख्या पिछले चार वर्षों में ८॥ लाख से बढ़ कर करीब ३२ लाख हो गई। कलकत्ता और मद्रास के इम्पोरियमों में बिक्री की संख्याएं क्रमशः करीब ३.५० लाख और ३.१८ लाख से बढ़ कर चार वर्षों में ३२ लाख और २३.५० लाख रुपये हो गईं।

इन इम्पोरियमों ने जनता में खादी के प्रतिरुचि उत्पन्न की है। खादी की व्यवस्था और कला पूर्णता ने खादी को अधिक लोकप्रिय बनाया है। इसका सबसे बड़ा लाभ गांवों के कातने वालों और बुनकरों को मिला है, जिनका आधुनिक उद्योगों में बहुत कम भाग होता है। खादी उद्योग कमीशन ने कातने और बुनने के तरीकों में भी कुछ सुधार किया है और उन्हें नये प्रशिक्षण देने की दिशा में भी कई कदम उठाये हैं।

○ ○

## बिहार ही क्यों ?

बिहार के लिए मैंने तूफान की बात कही, तब मैंने कुछ आधार से कही थी। एक तो यह कि यहां सामूहिक परिवार हैं। बिहार में अभी सामूहिक परिवार टूटे नहीं हैं, दूसरे प्रदेशों में टूट रहे हैं। तो ग्रामदान याने परिवार-भावना का जरा-सा विस्तार करना है।

२—बिहार में ज्यादा-से-ज्यादा भूदान हुआ है। काफी जमीन बांट दी गयी है। बिहार के ७५ हजार में से ३६ हजार गांवों में भूदान हुआ है। इसलिए बिहार ग्रामदान का संदेश उठा लेगा, ऐसा मैंने माना।

३—बिहार में खादी का काम बहुत अच्छा चला है, वे गांव ग्रामदान हो जाते हैं तो बिहार में १२-१३ हजार गांव एकदम ग्रामदान में आ जाते हैं।

४—एक और विचार था, कि यह गौतम बुद्ध का प्रदेश है। उनका जमाना अभी गया नहीं है। किसी भी धार्मिक कार्य का आरम्भ "बुद्धावतारे वैवस्वते मन्वन्तरे"—इससे होता है।

इन सब आधारों पर हमने सोचा कि बिहार में ग्रामदान का काम अच्छा होगा।

—विनोबा

## ग्राम-निर्माण जरूरी है

हमने सम्पदा के गतांक में यह विचार प्रगट किया था कि ग्रामदान के तूफान को सुचारू रूप से और तीव्र गति से चलाना है तो ग्राम निर्माण का कार्य साथ-साथ चलना चाहिए। सर्वोदय संघ के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी ने भी इसी का समर्थन करते हुए लिखा है।

"यदि भारत वर्तमान विश्व की चुनौती का डट कर सामना करना चाहता है तो हमें विषमता, शोषण और दकियानूसी विचारों पर खड़े अपने सामाजिक और आर्थिक ढांचे को बदलना पड़ेगा। ग्रामदान आन्दोलन ने यह दिखा दिया है कि सम्पन्न लोग (हैव्स) विपन्न लोगों (हैव-नाट्स) के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल सकते हैं और उनकी देखभाल शुरू कर सकते हैं। उसने एक रास्ता दिखा दिया है, जिसके जरिए गाँव के सभी साधनों को उसके विकास के लिए इकट्ठा किया जा सकता है और बाहर से जो साधन प्राप्त हों, उनका भी सारे गांव के लिए उपयोग किया जा सकता है।

"इसलिए यह भी बहुत जरूरी है कि आज के ग्रामदानी गांव जमीन के वितरण और उत्पादन-वृद्धि की गांव की योजना तैयार करने आदि में पूरी ताकत से लग जायं।

"ग्रामदान-तूफान का काम और ग्राम-निर्माण का काम साथ-साथ चलना चाहिए। यह काम आसानी से हो सकता



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, बशर्ते कि ग्रामदानी ग्रामों के निवासी इन दो कामों के लिए सक्रिय बनें। जब लाखों मस्तिष्क और लाखों हाथ सक्रिय बनते हैं तो असंभव भी संभव बन जाता है। इस उद्देश्य को अपने सामने रखकर पश्चिमी बंगाल और उड़ीसा के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण शिविर खोलने की व्यापक योजना बनायी है।

"एक-एक शिविर चार-पांच दिन या एक सप्ताह तक चलता है। इन शिविरों में ग्रामदान के बाद ग्राम-निर्माण की समस्याओं पर विचार-विनिमय होता है। तूफान आंदोलन की महत्ता पर भी जोर दिया जाता है और आस-पास के क्षेत्रों में तूफान खड़ा करने के लिए योजनाएं भी बनायी जाती हैं।"

## दो प्रमुख आवश्यकताएं

इसमें सन्देह नहीं कि तीव्र उद्योगीकरण करने और कृषि को घनीभूत बनाने की आवश्यकता है; लेकिन इसके साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि देश के असंख्य भूमिहीनों को काम देना भी उतना ही महत्वपूर्ण और तत्काल करने लायक काम है। भारत में आयोजन का काम ऐसा होना चाहिए कि उससे उन्नत तकनीकों के आधार पर विकेन्द्रित व असंगठित व परम्परागत उद्योगों का शनैः-शनैः क्रमिक रूप से नवीनीकरण करने में सुविधा हो। हमारा लक्ष्य विकास होना चाहिये, विस्थापन नहीं।

२. हमारी अर्थ-व्यवस्था में बड़ी गहरी दरारें रही हैं। आयोजन में सर्वप्रथम यह माना जाता है कि मूल्य स्थायी रहेंगे। यदि मूल्य काबू से बाहर हों, तो सभी प्रकार के आर्थिक आंकड़े अपनी सार्थकता खो देते हैं। योजना के आकार को लेकर सभी प्रकार का तर्क-वितर्क निरर्थक हो जाता है। मूल्यों को स्थायी रखना नियमित और सुनिश्चित पूर्ति—विशेष कर परमावश्यक वस्तुओं की पूर्ति पर निर्भर करता है। यदि पूर्ति अनिश्चित हो तो मूल्यों को शायद ही काबू में रखा जा सके। एक आयोजित अर्थ-व्यवस्था में निश्चित और सुनिश्चित पूर्ति सामाजिक तंत्र राजनीतिक और सामाजार्थिक तंत्र की योग्यता पर निर्भर करती है। जहां एक तो असंतुलित हो और दूसरा ऐसे व्यक्तियों के वश में हो, जिनमें समाजवादी मूल्यों के प्रति शायद ही कोई सहानुभूति हो तो वैसी अवस्था में एक आयोजित प्रयास में जिस प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता होती है, उसके लिए कोई विशेष गुंजाइश नहीं होती। इस प्रकार एक दुश्चक्र बन जाता है।

— उ. न. ढेबर

## चरखे का चमत्कार

हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये गांधी जी ने २१ दिन का उपवास रखा था। उपवास के अन्तिम दिनों में वह इतने दुर्बल हो गये थे कि डाक्टरों ने उन्हें सलाह दी थी कि वह चर्खा न कातें। श्री सी० एफ० एण्ड्रूज ने महात्मा जी को चरखा न कातने का अनुरोध किया। गांधी जी ने कहा, मेरे लिये चर्खा मेरी दैनिक प्रार्थना है। भारत के करोड़ों दरिद्र नारायणों के लिए मैं यज्ञ-रूप से चरखा कातता हूँ, यह मेरी खुराक है। उसे मैं कैसे छोड़ सकता हूँ। तुम लोग मुझे तकियों के सहारे बैठा दो, चरखा मेरे सामने रख दो और ठीक ३० मिनट बाद मेरा रक्त चाप देख लेना।

महात्मा जी के आग्रह पर तकियों के सहारे उन्हें बैठा दिया गया और गांधी जी ने कातना शुरू किया। डाक्टर अन्सारी घड़ी लेकर सामने बैठे रहे। ठीक ३० मिनट बाद गांधी जी रुक गये और डाक्टर अन्सारी से रक्तचाप देखने को कहा। डाक्टर अन्सारी ने रक्तचाप में बिगाड़ के स्थान पर सुधार पाया। इसे सिवा एक चमत्कार के और क्या जा सकता है?

— विचित्र नारायण शर्मा

## १) रु० न्यूनतम

खादी के कत्तिनों एवं बुनकरों की भलाई एवं कल्याण हेतु इस वर्ष २ अक्टूबर से एक महत्वपूर्ण निश्चय की घोषणा की गई है। खादी के कत्तिनों को अब २ अक्टूबर से एक रुपये प्रतिदिन की न्यूनतम मजदूरी मिलेगी। अभी तक यह आठ आने मात्र की थी।

## पंचायतें भी शोषक

समाजवाद में सारी सत्ता सरकार के हाथ में हो जाती है तो वह लोकतंत्रात्मक नहीं रह पाता। वोट दिया, इसलिए सरकार के हाथ में सत्ता आयी। इस तरह समाजवाद, 'राजसत्तावाद' (स्टैटिज्म) हो जाता है। समाजवाद


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राज सत्तावाद में बहुत थोड़ा फर्क है। वह ध्यान में नहीं आता और कुल सत्ता सरकार के हाथ में दे दी जाती है। परिणामतः लोक जीवन जकड़ कर समाजवाद दूर रह जाता है।

इसके विकेन्द्रीकरण के लिए ग्राम-पंचायत की कल्पना आई। कल्पना तो अच्छी थी, लेकिन उसमें भी राजनैतिक पक्ष बैठ गये क्योंकि वह सत्ता का टुकड़ा था, सेवा का नहीं। लोग प्रेम और सत्य द्वारा ग्राम-समाज बनाते तो वह सेवा का रूप लेती। लेकिन ऊपर से सत्ता नीचे आई, इसलिए यह सत्ता का केन्द्र बनी। म्युनिसिपैलिटी, कार-पोरेशन, जिला परिषद्, ग्राम पंचायत से लेकर असेम्बली पार्लियामेंट तक सत्ता की ही सीढ़ी बन गई। सत्ता हथियाने वालों ने सोचा कि ग्राम पंचायत तो पहली सीढ़ी है, तो सत्ता हथियाने में उन्होंने साधन के तौर पर उसका उपयोग किया।

आज जिस ढंग से ग्राम-पंचायत का काम सोचा जा रहा है, वह 'विकेन्द्रित शोषण-योजना' होगी। और 'विकेन्द्रित होने से ज्यादा कारगर होगी। सरकार ग्राम-पंचायत द्वारा शासन को विकेन्द्रित करना चाहती है। वह उद्देश्य, यह गुण ग्रामदान में भी आ जाता है। किन्तु ग्राम-पंचायत के दोष उसमें नहीं आते। —विनोबा

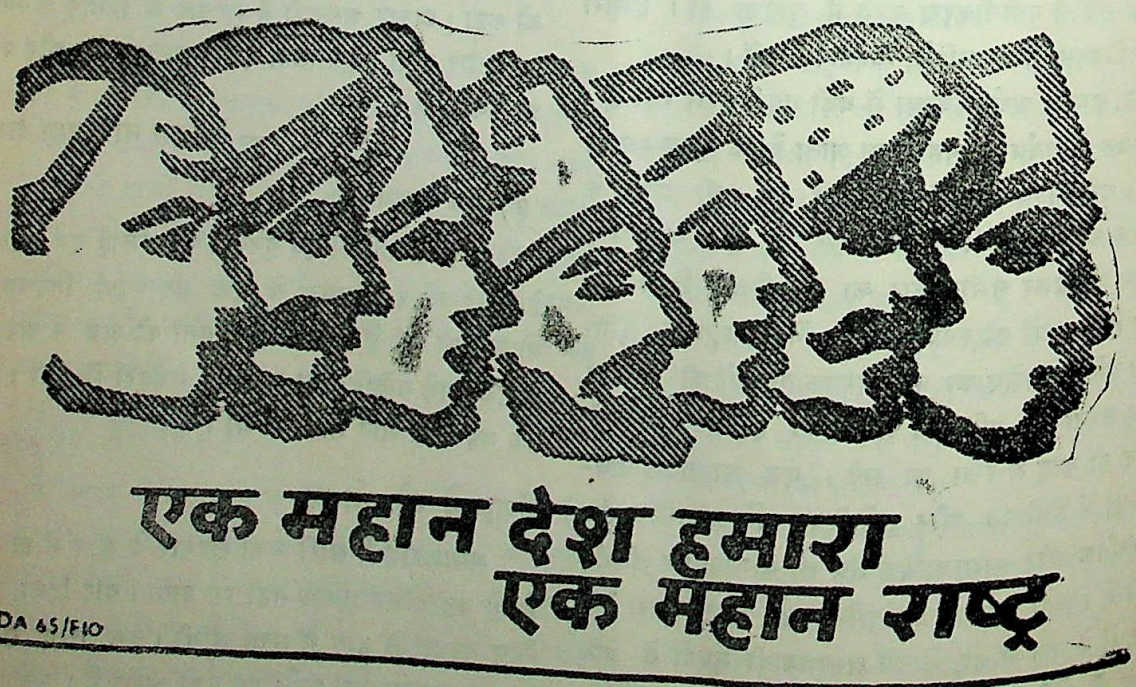





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# उद्योगों का विकास : आयात में कमी

आयात और निर्यात का सन्तुलन हरेक देश बनाये रखने के लिए आतुर रहता है। यदि यह सन्तुलन अनुकूल न हो तो प्रतिकूल तो नहीं होना चाहिए। यह प्रयत्न प्रत्येक देश करना चाहता है। निर्यात को बढ़ाना सिर्फ अपने बस की बात नहीं है। निर्यात की मात्रा अनेक ऐसे तत्वों पर भी निर्भर करती है, जो अपने वश में नहीं होते। उदाहरण के लिए सरकार द्वारा आयात पर प्रतिबन्ध, अधिक चुंगी, दुनिया के बाजार में अन्य देशों से प्रतिस्पर्धात्मक मूल्य, प्रत्येक देश में स्वावलम्बन की भावना और राजनैतिक कारण। इसलिए निर्यात को लगातार बढ़ाने की बजाय आयात पर नियंत्रण अधिक सरल और स्वाभाविक है।

भारत सरकार वस्तुतः पिछले १०-१५ वर्षों से जहां निर्यात बढ़ाने की कोशिश कर रही है, वहां आयात को भी यथासम्भव कम करने का प्रयत्न कर रही है। आयात कम करने का सबसे मुख्य साधन अपने देश में ही उन सामग्रियों का उत्पादन है, जो भारी मात्रा में विदेशों से आयात होती हैं। इस दृष्टि से भारत के उद्योगों ने जो प्रयत्न पिछले १५ वर्षों में किया है, वह बहुत प्रशंसनीय है। भारत की अपनी आवश्यकताएं, जनसंख्या बढ़ने और जीवन-स्तर ऊंचा होने के साथ-साथ बढ़ रही हैं। इसलिए यह बहुत सम्भव है कि कुछ वस्तुओं का आयात मात्रा में कम न हो, किन्तु कुल देश में खपत को देखते हुए उनका प्रतिशत बहुत कम हो गया है। भारतीय उद्योगों ने अपना उत्पादन बढ़ाकर कुल खपत में विदेशी वस्तुओं का अनुपात बहुत कम कर दिया है। १९५०-५१ में विदेशी साइकिलों का अनुपात कुल खपत का ६२.५ प्रतिशत था, जो १९६४ में गिरकर ०.१ प्रतिशत रह गया। इसी तरह सीने की विदेशी मशीनों का अनुपात ४१.१ से गिर कर ०.७ रह गया है। नीचे की तालिका से यह स्पष्ट हो जायेगा। इसमें कुल खपत, कुल आयात और विदेशी आयात का प्रतिशत दिया गया है :—

| | | १९५०-५१ | | | १९६३-६४ | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | कुल पूर्ति | अनुमानित आयात | आयात का प्रतिशत | कुल पूर्ति | अनुमानित आयात | आयात का प्रतिशत |
| साइकिल | (,०००) | २६४ | १६५ | ६२.५ | १२६० | — | ०.१ |
| चीनी मिलों की मशीनरी | (लाख रुपयों में) | १०० | १०० | १००.० | ६५० | ३० | ४.६ |
| कपड़ा मिल की मशीनरी | ,, | — | — | — | ३७५० | १८०० | ४८.० |
| पैट्रोलियम उत्पादन | (मिलियन लिटर) | २७२५ | २५३१ | ९२.९ | ८६२० | २४०१ | २७.९ |
| सोडा ऐश | ०००, टन | ७५ | ३० | ४०.० | २९७ | २३ | ७.७ |
| ब्लीचिंग पाउडर | ,, | ९.४ | ५.७ | ६१.७ | ९.४ | १.१ | १३.१ |
| लोहा और इस्पात | ,, | १३९१ | ३५० | २५.२ | ५२८० | ९८२ | १८.६ |
| कास्टिक सोडा | ,, | ३४ | २२ | ६४.७ | २२८ | ६५ | २८.५ |
| मशीनरी औजार | (लाख रुपयों में) | ३५६ | ३२६ | ९१.६ | ५०७५ | ३०६५ | ६०.४ |
| अखबारी कागज | (०००, टन) | ७६.३ | ७६.३ | १००.० | १२५.५ | ९५.५ | ७६.०१ |
| कच्ची रुई | (लाख गांठें १८० किलो ग्राम प्रति गांठ) | ३९.५ | १०.९ | २७.६ | ५८.२ | ७.५ | १२.९ |
| अनाज | (मिलियन टन) | ५६.२४ | ३.५ | ६.५ | ८३.६ | ३.९ | ४.७ |
| कच्चा जूट | (लाख गांठें १८० किलोग्राम प्रति गांठ) | ५७.३ | २०.२ | ३५.३ | ६२.१ | २.६ | ४.३ |
| कपड़े सीने की मशीन | ०००, संख्या में | ५६ | २३ | ४१.१ | २८४ | १.९ | ०.७ |
| कागज तथा अन्य सम्बन्धित चीजें | ०००, टनों में | १५१ | ३५ | २३.२ | ५०३ | २५ | ५.० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# संयुक्त सहकारी कृषि की शिथिल प्रगति

■ संजय

नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन का सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव कृषि पुनर्गठन के सम्बन्ध में था। पं० जवाहरलाल नेहरू ने बहुत बल के साथ इसका समर्थन किया था और चौधरी चरणसिंह आदि कृषि विशेषज्ञों के सुझावों को भी सुनने से इन्कार कर दिया था। इस प्रस्ताव में कहा गया था :—

"कृषि का भावी ढांचा संयुक्त सहकारी कृषि का होना चाहिए, जिसमें खेतों को संयुक्त खेती के लिए इकट्ठा कर लिया जाएगा, हालांकि खेत पर मिलकियत किसानों की रहेगी और अपने-अपने खेत के हिसाब से उन्हें मुनाफे में हिस्सा मिलेगा। इसके अलावा, जो खेतों पर खुद काम करने वाले हैं, उनकी अपनी जमीन हो या न हो, उन्हें उस संयुक्त खेत में अपने-अपने काम के मुताबिक हिस्सा मिलेगा। संयुक्त खेती की शुरुआत से पूर्व, पहले कदम के रूप में, सारे देश में सेवा सहकारी समितियों को संगठित कर देना चाहिए।"

नागपुर कांग्रेस के बाद संयुक्त सहकारी कृषि हमारा नारा बन गया था। मानो यही नारा देश के आर्थिक संकट को दूर कर देगा। उस समय जिन विचारकों ने इस प्रस्ताव को अव्यावहारिक बताया था उन्हें आवेश में आकर निहित स्वार्थ तथा प्रतिगामी तक कहा गया। यह ठीक है कि इस प्रस्ताव का विरोध करने वालों में स्वतन्त्र पार्टी के कुछ ऐसे सदस्य भी थे, जिन्हें प्रतिगामी कहा जा सकता है। किन्तु सभी आलोचक प्रतिगामी नहीं थे। उनकी सम्मति में संयुक्त सहकारी कृषि अभी व्यावहारिक नहीं थी। सहकारिता का विरोध वह भी नहीं करना चाहते थे, किन्तु संयुक्त कृषि के क्षेत्र में सहकारिता के प्रयोग को वह व्यावहारिक नहीं मानते थे।

अनेक वर्षों के अनुभव और परीक्षणों के बाद आज यह स्पष्ट हो रहा है कि सहकारी खेती के परीक्षण सफल नहीं हुए, न इनसे कृषि उपज बढ़ी है और न प्रति एकड़ उत्पादन। खेती के अन्तर्गत क्षमता की वृद्धि में भी सहकारी खेती सफल नहीं हुई है और न अर्द्ध-रोजगार की स्थिति में संतोषजनक सुधार हुआ है। सरकार ने समस्त स्थिति पर विचार करने के लिए गाडगिल समिति नियुक्त की थी। उसने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि सहकारी खेती कार्यक्रम अपनी बिल्कुल ही प्रारम्भिक स्थिति में है। इस क्षेत्र में बहुत कम प्रगति हुई है। सारे देश में सहकारी खेती का प्रस्ताव जानने में अभी १०-१५ वर्ष और लग जायेंगे।

गाडगिल समिति ने चौथी पंचवर्षीय योजना में कम से कम १० हजार नई कृषि सहकारी समितियों की स्थापना का सुझाव दिया है। हमारी नम्र सम्मति में यह सुझाव भी अव्यावहारिक है। जब तक मानव स्वभाव की उपेक्षा की जाती रहेगी, तब तक स्वेच्छा से किये गये प्रयत्न इस दिशा में सफल होंगे, इसमें सन्देह ही है। तीसरी पंचवर्षीय योजना में ही मार्ग-दर्शन परियोजना के रूप में ३२०० सहकारी समितियां अर्थात् प्रत्येक जिले में करीब १० लाख समितियां स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन १९६४ के अन्त तक हम २००० समितियां भी स्थापित नहीं कर सके और यह समितियां भी कितना वास्तविक कार्य कर रही हैं, यह नहीं कहा जा सकता। मानव का स्वभाव है कि वह अपनी चीज खुशी से किसी को नहीं देना चाहता। इसलिए वह खरीद, क्रय-विक्रय, गोदाम, यातायात की सुविधा में तो सहकारिता का लाभ उठाना चाहता है किन्तु अपनी जमीन पर न किसी को खेती करने दे सकता है और न किसी का नियंत्रण स्वीकार करना चाहता है। आदर्श न भी हो तो भी मानव की इस दुर्बलता को आप सहसा दूर नहीं कर सकते।


## सम्पदा

## संयुक्त सहकारी कृषि-अंक

कृषि सहकारिता पर विविध दृष्टियों से प्रामाणिक विवेचन। १.७५ रु० भेजकर अण्डर पोस्टल सर्टिफ़िकेट से मंगाइये।




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# स्फुट आर्थिक विचार

## विकास में विदेशी पूंजी

भारत में आज विदेशी पूंजी से आर्थिक विकास हो रहा है। कुछ विचारक इसमें विदेशों का अनुचित प्रभुत्व बढ़ जाने का खतरा देखते हैं, परन्तु किस देश में विदेशी पूंजी ने आर्थिक विकास में सहयोग नहीं दिया? भारत स्थित अमेरिकन राजदूत श्री चैस्टर बौल्स के शब्दों में—

"प्राय: प्रत्येक समृद्ध देश ने विदेशी पूंजी और विदेशी तकनीकियों का सहयोग अपने विकास के लिए प्राप्त किया है। एक बहुत बड़ी सीमा तक अमरीकी रेलवे का निर्माण ब्रिटिश पूंजी से हुआ है। अमेरिका के रासायनिक उद्योग का निर्माण फ्रांस की सहायता से हुआ है। अमेरिका के आधुनिक उद्योगों का आधार ही हजारों विदेशी यन्त्र, इंजिनीयर, वैज्ञानिक और तकनीकी रहे हैं। आज भी अमेरिका में १० अरब डालर विदेशी पूंजी लगी हुई है।

"पश्चिमी यूरोप ने युद्ध के बाद अमेरिकन पूंजी से ही अपना निर्माण किया है। यही हाल जापान का है। गत महायुद्ध की अवधि में रूस को भी अमेरिका ने १२ अरब डालर ऋण या अनुदान दिये हैं। युद्ध के बाद हमने अन्न और सहायता के रूप में रूस को २५ करोड़ डालर दिये हैं।

"अब तक इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिला है कि विदेशी पूंजी और इंजिनीयरों व तकनीकियों के इस प्रवाह ने अमेरिका, यूरोप या जापान की सर्वांगीण स्वतंत्रता में कोई हस्तक्षेप किया है। इसी तरह भारत को भी विदेशी पूंजी से किसी दबाव का खतरा नहीं है।"

## आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता का यह अर्थ नहीं है कि हर चीज हम अपने आप करें। मैंने एक बार लार्ड बीवरबुक से कहा था कि ब्रिटेन बर्किंघम में केले नहीं उगा सकता। आत्मनिर्भरता का यह अर्थ नहीं है कि अन्य देशों के साथ कोई सहयोग न किया जाए। सोवियत संघ, जापान आदि जिन देशों ने आत्मनिर्भता प्राप्त की है, उन सभी ने अन्य राष्ट्रों के साथ सहयोग किया है। उन्होंने अन्य देशों से नमूने, तकनीकी ज्ञान और साज-समान आदि खरीदा है, उधार लिया है और कभी-कभी तो उसकी केवल नकल हो सकती है।

मैं तो केवल ऐसे सहयोग सम्बन्धी समझौतों का विरोधी हूँ जिनसे हम पर प्रतिबन्ध लगाये जाते हैं अर्थात ऐसे समझौते, जिनमें यह कहा जाता है कि हम किसी डिजाइन में सुधार नहीं कर सकते या तैयार माल का निर्यात नहीं कर सकते या उसे किसी लड़ाई में इस्तेमाल नहीं कर सकते या किसी चीज का आविष्कार नहीं कर सकते। मेरे विचार से कोई सहयोग सम्बन्धी समझौता तो ऐसा होना चाहिए जिसके अनुसार हम किसी दूसरे की सेवाएं किराये पर ले सकें। हमें खुद ही मालिक रहना चाहिए और वह सहयोग ऐसा होना चाहिए कि इसकी आवश्यकता जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी समाप्त हो जाए। सहयोग का अर्थ कोई आर्थिक व तकनीकी अधीनता नहीं होनी चाहिए और न राजनीतिक पराधीनता, इससे जो लाभ हो, वह हमारा होना चाहिए।

श्री कृष्ण मैनन

## अमेरिका में गरीबी की परिभाषा

१९२९ में ५१ प्रतिशत अमेरिकनों की आय ३०० डालर से कम थी। १९४७ में यह प्रतिशत गिरकर ३२ रह गया। आज यह प्रतिशत गिरकर सिर्फ २० रह गया इस तरह ३५ वर्षों की अवधि में गरीबों का प्रतिशत ढाई गुना कम हो गया। इस अवधि में लोगों की आमदनी भी लगातार बढ़ती जा रही है। ४००० डालर (सरकारी दर से २०००० रु०) कमाने वालों की संख्या ४० से ७५ प्रतिशत बढ़ गई है।

अमेरिका में गरीबी की परिभाषा भी समय-समय पर बदलती रही है। इस शताब्दी के प्रारम्भ में १००० डालर की आमदनी जीवन व्यय के लिए पर्याप्त समझी जाती थी। १९३० में २००० डालर तक की आमदनी गरीबी समझी जाने लगी। जीवन स्तर ऊंचा हो रहा है और अधिक आय की जरूरत बढ़ती जा रही है राष्ट्रपति जानसन



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज ४-५ व्यक्तियों के परिवार के लिए ३००० डालर तक (१५०००) की आय को गरीबी गिनते हैं। कुछ लोगों की सम्पति ४००० डालर में गरीबी मानी जानी चाहिए। इस गति से १० वर्ष बाद ५००० और इस सदी के अन्त तक १०००० डालर की आमदनी वाला भी गरीब माना जाएगा।

## रूस में अन्न व मांस की कमी

हम अनाज के कम होने के लिए भारत सरकार की नीतियों को दोष देते हैं। किन्तु सरकार की व्यवस्था और परिस्थितियों की प्रतिकूलता को नहीं समझना चाहते। साम्यवादी विचारक सरकार पर यह आरोप लगाते हैं कि सरकार प्रगतिशील क्रांतिकारी कदम उत्साह से नहीं उठाती। वह सम्पन्न वर्ग के प्रभाव में आ जाती है। इस आलोचना का सबसे बड़ा उत्तर यह हो सकता है कि केवल साम्यवादी प्रगति ही नहीं, परिस्थितियां देश के आर्थिक स्थिति पर गम्भीर प्रभाव डालती हैं। रूस जैसे विशाल प्रदेश में जहां न भूमि की कमी है और न वैज्ञानिक साधनों की, मौसम की प्रतिकूलता के कारण अनाज कम हो रहा है और उसे करोड़ों रुपयों का अनाज विदेशों से मंगाना पड़ता है।

अब समाचार मिला है कि रूस पश्चिमी देशों से मांस तथा दुग्ध जन्य पदार्थ मंगाने लगा है। हंगरी और चैकोस्लेवेकिया आदि साम्यवादी देशों ने रूस को मांस देने में असमर्थता प्रकट की है। रूस और अन्य साम्यवादी देशों में मांस के अचानक अभाव का तात्कालिक कारण पशुओं में महामारी का फैलना बताया जाता है। पशुओं में पैर व मुख की बीमारी व्यापक रूपसे फैल रही है। इस बीमारी के कारण न उनका मांस बढ़ पाता है और न वह दूध ही दे पाते हैं। यह बीमारी तब तक रहती है, जब तक वह ब्याने लायक नहीं हो जाता। हंगरी और चैकोस्लेवाकिया भी इस व्यापक बीमारी से मुक्त नहीं हो सके। दूसरी तरफ पश्चिमी योरोप के देशों में दुग्धचूर्ण और मक्खन की कमी नहीं है। वे रूस को उक्त वस्तुएं पर्याप्त मात्रा में भेज रहे हैं। एक समाचार के अनुसार रूस के पत्रों में अब दबी आवाज में निजी उद्योग और निजी व्यापार का समर्थन भी किए जाने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। निजी भूभागों पर आज भी अपेक्षाकृत अधिक दूध, और मांस अन्य डेरी पदार्थों का उत्पादन हो रहा है।

## स्वचालित मशीनरी व रोजगार

पैनसिलवेनिया, वैस्ट वर्जीनिया और न्यू इंग्लैण्ड के इलाकों में स्वचालित मशीनरी के प्रयोग से १९६० और १९६१ के बीच प्रति श्रमिक उत्पादन १८ प्रतिशत बढ़ गया है, किन्तु दूसरी ओर १० लाख आदमियों को काम से मुक्त होना पड़ा है। अब उद्योगों के साथ फिर रोजगार कुछ-कुछ बढ़ने लगा है।

## १२०.९ लाख से १५० लाख

तीसरी पंचवर्षीय योजना के पहले चार वर्षों में सरकारी व निजी क्षेत्रों में (२५ से अधिक कर्मचारियो व श्रमिकों वाले संस्थानों में) भारत में रोजगार १२०.९ लाख से बढ़कर १५० लाख हो गया। इन वर्षों में निजी क्षेत्र की बजाय सरकारी क्षेत्र में रोजगार ज्यादा बढ़ा है। इन दोनों क्षेत्रों में प्रतिशत वृद्धि १९.८ और २७.१ हुई है। खानों के सिवाय सभी उद्योगों में श्रमिकों की संख्या बढ़ी है। व्यापार में ४८ प्रतिशत, नौकरी में २९.६ प्रतिशत, बिजली, गैस, पानी आदि में २६.९ प्रतिशत और निर्माण कार्य में २५ प्रतिशत रोजगार बढ़ा है।


**स म्प दा**

**यदि आप जानना चाहते हैं**

कि

से आप क्या लाभ उठा सकते हैं?

में कैसी उपयोगी सामग्री होती है?

से आपको परीक्षा में क्या मदद मिलती है?

**तो**

दस नये पैसे के टिकट भेजकर

१९६४ की विषय सूची बुक

पोस्ट से मंगा लीजिये।

—मैनेजर सम्पदा

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-६




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76818

# यूगोस्लाविया की आर्थिक प्रगति

२९ नवम्बर को १९४३ में द्वितीय युद्ध के दौरान नये यूगोस्लाव राज्य की घोषणा की गई थी। इस नये राज्य के स्थापित किये जाने की घोषणा ऐण्टी-फासिस्ट कौंसिल द्वारा स्वतन्त्र किये गये जाजसी नगर में की गयी थी। यह नये यूगोस्लाविया की प्रथम संसद् थी।

नूतन यूगोस्लाविया की प्रथम सरकार स्वातन्त्र्य सेना के प्रधान सेनापति, जोसिप ब्रोज टीटो के नेतृत्व में बनाई गयी थी। उस समय इस भावी राज्य को लोकतांत्रिक आधार पर यूगोस्लाविया के सेर्ब, क्रोट, स्लोविनी, मैसिडोनियन और मान्टेनीग्रि लोगों के एक संघ के रूप में बनाने का फैसला किया गया। इस नये राज्य में राष्ट्रीय और सामाजिक समानता को बुनियादी सिद्धान्त माना गया। संसद् और सरकार का काम करने वाले निकायों की स्थापना की गई। इन निकायों ने जनता और नियमित सेना की सहायता से देश की अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष जारी रखा।

यदि कोई विदेशी आजकल यूगोस्लाविया यात्रा पर जाये तो उसके लिए यह कल्पना करना कठिन होगा कि युद्ध के तुरन्त बाद २० वर्षों पूर्व यह देश किस तरह का था। यहां बने लगभग एक हजार कारखानों में से प्रत्येक का निर्माण युद्ध के बाद ही हुआ था। इस बीच अनेक औद्योगिक शाखाएं, दर्जनों जल और तापीय बिजली घर, नये नगर, आधुनिक सड़कें और रेलवे लाइनें जो युद्ध पूर्व के यूगोस्लाविया में नहीं थी, बनाई गई हैं। इस देश का समूचा स्वरूप बदल गया है, जिसका श्रेय समस्त जनता के प्रयत्नों और परिश्रम को प्राप्त है। गत वर्ष यूगोस्लाविया के उद्योगों ने १७ लाख टन इस्पात, २० लाख टन से अधिक कच्चे तेल, १० लाख टन कृत्रिम खाद, ४० हजार यात्री कारें, लारियों और बसों, १० हजार ट्रैक्टरों, २ लाख ५० हजार टेलिविजन सेटों, ५ लाख से अधिक रेडियो सेटों आदि का निर्माण किया।

## नई सामाजिक पद्धति

यूगोस्लाविया में एक नयी सामाजिक पद्धति का

मार्शल टीटो

विकास किया गया। इस पद्धति के अन्तर्गत एक ऐसे सिद्धान्त को जन्म मिला, जिसमें प्रत्येक बात का निर्णय स्वतन्त्रतापूर्वक और सामूहिक तौर पर श्रमजीवी लोगों द्वारा कारखानों में अपने स्वशासित निकायों में किया जाता है। यही सिद्धान्त अन्य उद्यमों, संस्थाओं, कम्यूनों और गणतन्त्र तथा संघ सरकार की सभाओं में लागू किया जाता है। इसका मतलब यह हुआ कि जहां कहीं समसामयिक यूगोस्लाव समाज से सम्बन्धित कोई बात आती है, तो उस पर सामूहिक रूप से, सार्वजनिक तौर पर संसदीय पद्धति द्वारा निर्णय किया जाता है।

यूगोस्लाविया में इस प्रकार का प्रगतिशील विकास उसी समय सम्भव हो सकता है जबकि वहां पूरी स्वाधीनता और शांति स्थापित हो। यूगोस्लाविया उन निर्गुटीय देशों में से है जिनने यह महसूस कर लिया है कि अन्तर्राष्ट्रीय शांति और समानता की प्राप्ति संयुक्त कार्यवाही और सबकी सहमति से किये गये कार्यों से ही की जा सकती है।

## भारत से घनिष्ठता

यूगोस्लाविया और भारत के सम्बन्धों में निरन्तर

(शेष पृष्ठ ६५२ पर)



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# दक्षिण भारत में प्रगतिशील चीनी उद्योग

दक्षिण भारत के राज्य चीनी उद्योग के क्षेत्र में बहुत पीछे आये हैं, किन्तु वे जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, उससे यह सन्देह होता है कि उत्तर भारत के लोग इस उद्योग में बहुत पिछड़ जायेंगे । महाराष्ट्र में ही पिछले १० वर्षों में (१९५५-५९ से १९६४-६५) गन्ने की खेती का क्षेत्र १८९०० एकड़ से बढ़कर ३५२००० एकड़ हो गया है और गन्ने का उत्पादन ५० लाख टन से बढ़कर १२० लाख हो गया है । प्रति एकड़ भी गन्ने का उत्पादन २६.५ टन बढ़कर ३४.२ टन हो गया है । इसके परिणाम-स्वरूप महाराष्ट्र में जब गन्ने का उत्पादन क्षेत्र कुल भारत का केवल ५.६ प्रतिशत है, गन्ने का उत्पादन १० प्रतिशत तक है । भारत में प्रति एकड़ औसत गन्ने का उत्पादन १९.४ टन है । गन्ने की किस्म भी महाराष्ट्र में अच्छी है— १२ प्रतिशत, जबकि उत्तरप्रदेश में ९.० से १०.२ प्रतिशत मिठास है । १९६४-६५ में महाराष्ट्र में कुल चीनी ६,२५,००० टन पैदा हुई है, जो कुल भारत के उत्पादन (१९६४-६५) का २० प्रतिशत है। यदि इस उद्योग को अधिक सुविधाजनक प्रोत्साहन दिया जाय, तो महाराष्ट्र का चीनी उद्योग बहुत अधिक उन्नति कर सकता है ।

महाराष्ट्र के चीनी उद्योग के अध्यक्ष ने सरकार से यह मांग की है कि जब उत्तर भारत की मिलों को औसत उत्पादन में अतिरिक्त चीनी पर छूट मिलती है, तो हमें भी मिलनी चाहिए । इसी तरह निर्यात की नई चीनी पर गन्ना कर भी वापस होना चाहिए । ऐसा कर ही एक वर्ष में १ करोड़ रुपया होता है । यह कर गन्ने के विकास कार्य पर लगाया जाता है, लेकिन सरकार को पिछले तीन वर्षों में इस कर से जहां ४.८३ करोड़ रुपये की आय हुई है, वहां उसने विकास पर केवल ५२ लाख रुपया खर्च किया है । यदि यह रुपया उद्योग को वापस मिल जाय तो वह उद्योग के विकास में लग सकता है ।

## भारत में चीनी का उत्पादन

१९६४-६५ में (३१ अक्टूबर ६५ को समाप्त) चीनी का उत्पादन ३२.६० लाख टन हुआ है । पिछले वर्ष से यह उत्पादन ६.९० लाख टन अधिक हुआ है ।

१९६३-६४ के अंक निम्नलिखित हैं:—

| | (टनों में) उत्पादन | प्रतिशत |
|---|---|---|
| उत्तरप्रदेश | ११०५ हजार | ४३ |
| महाराष्ट्र | ५४७ हजार | २१ |
| आंध्र | २३८ ,, | ९ |
| बिहार | २३८ ,, | ९ |
| मद्रास | १४५ ,, | ६ |
| मैसूर | १२० ,, | ५ |
| पंजाब | ६९ ,, | ३ |
| गुजरात | ४२ ,, | २ |
| अन्य राज्य | ७३ ,, | ३ |
| कुल भारत | २५७७ | १०० |

## जन-संख्या और अन्न समस्या

(पृष्ठ ६३४ का शेष)

(घ) गुप्त धन निकालने हेतु प्रभावपूर्ण और ठोस कार्यवाही ।

(च) गैर सरकारी क्षेत्र का भी विकेन्द्रीकरण ।

(छ) आय, लाभ, वेतन तथा मजबूरी का नियमन ।

(ज) मूल्य नीति में मौलिक सुधार ।

(झ) राष्ट्रीय आधार पर समस्या को सुलझाने का प्रयास करना, अतः क्षेत्रीय विभाजन आदि नीतियों में परिवर्तन ।

अंत में जहां जनसंख्या नियंत्रण के लिए कानूनी प्रयास किए जाना चाहिए, वहां खाद्यान्न उत्पादन व व्यापार के क्षेत्र को खुले व्यापार की नीति के रूप में चलाने के लिए उचित वातावरण निर्मित करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि कंट्रोल कभी भी दीर्घकालीन नीति का आधार नहीं बन सकते और सदैव भ्रष्टाचार को पनपाने में सहायता पहुँचाते हैं । यह कार्य सरकारी प्रयासों के साथ-साथ जन सहयोग के द्वारा ही संभव है अन्यथा एक तानाशाही शासन ही इसमें सुधार ला सकता है । अतः या तो वास्तविक प्रजातांत्रिक स्वरूप ही स्थापित होना चाहिए या एकदम उसका अभाव । इतना स्मरण रखना चाहिए कि मध्यम भाग सदैव ही स्वर्णपथ नहीं होता ।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# नया सामयिक साहित्य

**रचनात्मक राजनीति** (जमनालाल बजाज के लेखों व भाषणों का संग्रह)—सम्पादक—श्री रामकृष्ण बजाज। मुख्य विक्रेता—सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या २२०। मूल्य रु० ४.०० सजिल्द।

एक दीर्घकाल तक श्री जमनालाल बजाज भारत की उन राजनैतिक और सामाजिक सार्वजनिक प्रवृत्तियों में महत्वपूर्ण भाग लेते रहे हैं, जिनका संचालन म० गांधी करते थे। खादी, अछूतोद्धार, हिन्दू मुस्लिम एकता, हिन्दी का प्रचार, गोसेवा आदि कार्य तो अधिकतर श्री बजाज के अपने निरीक्षण में ही चलते रहे।

उनके कार्यों और जीवन के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालने के लिए जमनालाल बजाज ट्रस्ट अब तक दस पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है। रचनात्मक राजनीति दसवीं पुस्तक है। इसे चार खण्डों में बांटा गया है:—१. मृत्युपत्रों के संग्रह से उनकी इच्छाओं और धार्मिक भावनाओं का परिचय मिलता है। २. राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रसंग में प्रकट किये गये उनके विचारों का संग्रह दूसरे खण्ड में किया गया है। तीसरे खण्ड में हिन्दी प्रचार और चौथे खण्ड में जयपुर-सीकर सम्बन्धी लेखों, विचारों व भाषणों का संग्रह है। इन सब के पढ़ने से पता चलता है कि श्री बजाज किसी शिक्षा संस्था में उच्च शिक्षा न पाकर भी कितने विचारशील, जागरूक और धार्मिक थे तथा विभिन्न समस्याओं पर अपनी पैनी दृष्टि से विचार करते थे। गांधीजी की आध्यात्मिकता का भी उनपर पूर्ण प्रभाव था।

**ज्वालामुखी**—ले० श्री अनन्त गोपाल शेवड़े। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नई दिल्ली। पृष्ठ संख्या: १८६, मूल्य ३.५० रु०।

प्रस्तुत उपन्यास भारतीय इतिहास के उस महत्वपूर्ण अध्याय की पृष्ठ भूमि पर आधारित है, जिसे हम स्वाधीनता संग्राम का अन्तिम चरण कह सकते हैं। १९४२ का स्वाधीनता आंदोलन यद्यपि स्वयं स्वल्पकालीन था, किन्तु इससे उसका महत्व कम नहीं हो जाता। म० गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो' 'करो या मरो' के नारों ने देश में जो प्रचण्ड ज्वाला जलाई, उसी का यथार्थ वर्णन इस उपन्यास के नायक अभय कुमार के रूप में लेखक ने किया है। देश प्रेम की अग्नि राष्ट्र में जब प्रदीप्त हो जाय, तब वीर युवक कितनी कठिन तपस्या व त्याग करते हैं, इसका उत्साहवर्धक व प्रेरक वर्णन लेखक ने किया है। कल्पना के पंख पर उड़कर घटनाचक्र को जटिल और कुतूहल पूर्ण बनाने का प्रयत्न लेखक ने नहीं किया। सीधे सादे सत्य पर आधारित वीर युवक के त्याग और बलिदान की यह सरल कहानी है, किन्तु लेखक नायक के कथोपकथन या विचारपूर्ण आत्म चिन्तन और अपनी पत्नी को लिखे पत्र या मुकदमे में दिये गये वक्तव्य के द्वारा पाठक को राष्ट्रीयता का जो सन्देश देना चाहता है, वही इसकी प्रधान कथावस्तु भी है और वही इसका उद्देश्य भी है। अनेक स्थलों पर कुछ कुतूहल भी उत्पन्न होता है, अंग्रेज सरकार के तीव्र दमन के प्रति घृणा भी होती है, वीर अभय के त्याग और दृढ़ संकल्प को देखकर श्रद्धा भी उत्पन्न होती है। अभय की फांसी व विजया की मृत्यु करुण रस का संचार करती है, परन्तु जब अभय की मां १५ अगस्त १९४७ को भारत के स्वाधीन होने का समाचार सुनती है; तब पाठक के हृदय में बुढ़िया की तरह प्रसन्नता की एक लहर हिलोर मारने लगती है। यहीं इस उपन्यास का अन्त हो जाता है।

**बेसिक स्टैटिस्टिक्स राजस्थान**—यह छोटी सी, परन्तु ज्ञातव्य सामग्री से पूर्ण पुस्तक राजस्थान के आर्थिक और सांख्यिकी संचालनालय ने प्रकाशित की है। इसमें राजस्थान की अधिकांश प्रगतियों तथा गतिविधियों के अंक एक स्थान पर दे दिये गये हैं, जैसे जनगणना, भूगोल, प्रति व्यक्ति व राज्य की आय, कस्बे, कृषि, वन, पशु, सहकारिता, उद्योग, श्रम, बैंक, मूल्य, शिक्षा, विकास योजना आदि। पुस्तक के अंक बहुत परिश्रम व जांच-पड़ताल के बाद संगृहीत किये गये हैं। दुःख और आश्चर्य की बात यह है कि राजस्थान निवासियों के लिए, जहां



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षितों में एक प्रतिशत भी हिन्दी से अनभिज्ञ नहीं है, यह पुस्तक अंग्रेजी में प्रकाशित की गई है। शायद इसका लक्ष्य राजस्थानियों के बजाय दक्षिण भारत के हिन्दी जानने वाले अंग्रेजी पढ़े लिखे ही हैं। क्या यह राजस्थान के करदाता पर व्यर्थ बोझ नहीं है ?

**तृतीय पंचवर्षीय योजना प्रगति-प्रतिवेदन** १९६४-६५—यह पुस्तक भी उक्त विभाग द्वारा प्रकाशित की गई है। यह प्रसन्नता की बात है कि यह हिन्दी का प्रकाशन है। इस पुस्तक में योजना के अन्तर्गत होने वाली आर्थिक सामाजिक, शिक्षा, चिकित्सा आदि विविध क्षेत्रों में प्रगति की विशाल प्रामाणिक जानकारी दी गई है। आर्थिक प्रवृत्तियों पर परिचयात्मक भाग विशेष उपयोगी है। कुछ चार्टों ने इसकी उपयोगिता बढ़ा दी है। राजस्थान के आर्थिक विकास में रुचि लेने वाले राजस्थानी तथा योजना की प्रगति के जानने के उत्सुक सभी भारतीय इससे लाभ उठा सकते हैं।

**हारवैस्ट आफ ग्लोरी** (अंग्रेजी में)—प्रकाशक : पब्लिकेशन्स डिविजन, ओल्ड सैक्रेटरियट, दिल्ली। मूल्य ०.५० रु०।

**अनवाण्टेड चैम्पियन्स** (अंग्रेजी में)—प्रकाशक वही। मूल्य ०.२५ रु०।

प्रथम पुस्तक में पाकिस्तान-भारत युद्ध का वर्णन और भारतीय वीरता की गौरव गाथा का संक्षिप्त वर्णन दिया गया है। यह युद्ध कैसे काश्मीर में पाकिस्तानियों की घुस-पैठ से प्रारम्भ हुआ, पाकिस्तान ने भारतीय भूमि पर कैसे आक्रमण किया और भारत के वीर सैनिकों ने अपने रक्त से किस रण कुशलता, देशभक्ति और अपूर्व बलिदान की कहानी लिखी, इसका संक्षिप्त परिचय दिया है। वीरों, युद्ध के दृश्यों और शत्रु के विमानों व टैंकों के विध्वंस के बीसियों चित्रों से बहुत आकर्षक व संग्रह योग्य हो गई है। छपाई सफाई बहुत अच्छी है।

दूसरी पुस्तक में जम्मू व काश्मीर के मन्त्री सैयद मीर कासिम का वह महत्त्वपूर्ण भाषण है, जो उन्होंने काश्मीर की समस्या पर संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली में दिया था। पाकिस्तान के पक्ष की वक्का ने प्रमाणों, तथ्यों और उदाहरणों से अच्छी तरह धज्जियां उड़ाई हैं। काश्मीर के प्रश्न पर इसमें सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

## यूगोस्लाविया की प्रगति.....

(पृष्ठ ६४६ का शेष)

अनेक वर्षों से घनिष्ठता बढ़ रही है। दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं भारतीय प्रधान मंत्री शास्त्री और राष्ट्रपति राधाकृष्णन की यात्राओं ने इसे और भी बढ़ा दिया है। परस्पर द्विद्वैशिक सहयोग विगत दस वर्षों से इन देशों के मध्य जारी है। भू. पू. प्रधान मन्त्री नेहरू और यूगोस्लाव राष्ट्रपति टीटो के मध्य जो मैत्रीपूर्ण सम्पर्क स्थापित थे, उनके परिणाम स्वरूप अतीत में अनेक लाभदायक पहलों और सुझावों, सिद्धान्तों और आदर्शों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने न केवल भारतीय और यूगोस्लाव सम्बन्धों के विकास को ही प्रभावित किया, बल्कि इन दोनों देशों की विदेश नीतियों के संयोजन में भी इनसे सहायता मिली। इस वर्ष दोनों देशों में जो सम्पर्क स्थापित हुए हैं, उन्होंने यह साबित कर दिया है कि भारत और यूगोस्लाविया में स्थापित संबंध ऐसी बुनियाद पर कायम हैं, जो प्रारम्भ से ही इस बात को प्रत्याभूत करते हैं कि ये सम्बन्ध आगे चलकर और भी उन्नति करेंगे। ■ ■


भारत की उद्योग नीति

*

लेखक :

रामनरेश लाल

भारत सरकार ने १९४८ में जो उद्योग नीति निर्धारित की थी, १९५६ में संशोधन के बाद से वही आज भी हमारी उद्योग-नीति का आधार है। इसलिए उद्योग नीति को समझने के लिए उक्त पुस्तिका का अध्ययन बहुत लाभदायक होगा।

मूल्य : डाक-व्यय सहित ७५ पै.

"सम्पदा" के ग्राहकों को अपनी ग्राहक संख्या लिखने और ६० न. पै. का टिकट भेजने पर रियायती मूल्य में यह पुस्तक भेजी जाएगी। वी० पी० से नहीं भेजी जाएगी।

अशोक प्रकाशन मन्दिर,

२८/११ शक्तिनगर, दिल्ली-७




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



# उत्तर प्रदेश की औद्योगिक आवश्यकताएं

सम्पूर्ण भारत में उद्योगों का उत्पादन कुल का १६ प्रतिशत माना जाता है, किन्तु उत्तरप्रदेश में सम्पूर्ण उत्पादन का केवल ६ प्रतिशत उद्योगों से प्राप्त होता है। इसके साथ हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उत्तरप्रदेश की मानव शक्ति अन्य राज्यों से अधिक ही है।

इसलिए उत्तरप्रदेश की औद्योगिक स्थिति और भी अधिक चिन्तनीय है। पिछले कुछ वर्षों से उत्तरप्रदेश के उद्योगपतियों और राज्य प्रशासन का ध्यान औद्योगिक विकास की ओर आकृष्ट हुआ है। राज्य के उद्योग मंत्रालय ने इसी दृष्टि से एक बहुत महत्त्वाकांक्षापूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। इसका लक्ष्य ७ प्रतिशत विकास करना है, जबकि तीसरी योजना में केवल ३ प्रतिशत प्रगति हुई थी। १९७०-७१ तक यदि हम २०० करोड़ रुपयों की आय का अतिरिक्त लक्ष्य बनायें जो उत्तरप्रदेश जैसे बड़े राज्य के लिए अधिक नहीं है तो भी हमें औद्योगिक विकास के लिए ६०० करोड़ रुपया विनियोजन करना पड़ेगा। इस दृष्टि से राज्य के उद्योग मंत्रालय ने जो विस्तृत योजना प्रस्तुत की है, वह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट होती है :—

## उत्तरप्रदेश में उद्योग विकास की योजना

| | कुल व्यय (लाख रुपयों में) | विदेशी मुद्रा आवश्यक व्यय (लाख रुपयों में) | शक्ति की आवश्यकता (किलोवाट में) | रोजगार की सम्भावनाएं | अनुमानित कुल उत्पादन (लाख रुपयों में) |
|---|---|---|---|---|---|
| १. खनिज पदार्थ | ५०,०० | १५,०० | ५५,००० | ४०,००० | ३९,०० |
| २. लुगदी और कागज | ५०,०० | १६,०० | ४०,००० | ४,२०० | १९,०० |
| ३. चीनी और शराब | ४०,०० | २,०० | ८,७०० | २३,००० | ३६,०० |
| ४. रासायनिक पदार्थ | १५२,०० | ५०,०० | ३५०,००० | ५०,००० | ११०,०० |
| ५. इंजीनियरिंग पदार्थ | १८५,०० | ७०,०० | २४३,००० | ५१,००० | १६५,०० |
| ६. कपड़ा | ४५,०० | १८,०० | २३४,००० | ५७,००० | ५७,०० |
| ७. विविध | ३,०० | — | ३,३०० | २,८०० | ९,०० |
| ८. लघु उद्योग | ७५,०० | १,०० | ६६,००० | १५०,००० | १००,०० |
| कुल | ६००,०० | १७२,०० | १,०००,०० | ३७८,००० | १३५,०० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरप्रदेश क्षेत्रफल में समस्त देश का ९% है और जन संख्या की दृष्टि से १६%। इस दृष्टि से उत्तरप्रदेश की सरकार ने यह मांग की है कि चौथी पंचवर्षीय योजना में उद्योग पर जो कुल व्यय किया जाय, उसका ११% तो उत्तरप्रदेश में ही किया जाना चाहिए। योजना आयोग ने औद्योगिक विकास के लिए ५२.६६ अरब रुपये का व्यय लक्ष्य निर्धारित किया है। इसलिए उत्तरप्रदेश को औद्योगिक विकास के लिए ६०० करोड़ रुपया अवश्य मिलना चाहिए।

उत्तरप्रदेश की सरकार ने अपनी मांग को बल देने के लिए यह भी कहा है कि पूर्वी उत्तरप्रदेश और पहाड़ी प्रदेश आर्थिक दृष्टि से और भी पिछड़े हुए हैं। इसलिए इधर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। यह भी दुर्भाग्य की बात है कि उत्तरप्रदेश में लोहा, कोयला और तेल आदि उपलब्ध न होने के कारण आर्थिक भविष्य की सुविधाएं कम मिल रही हैं। इसलिए कृषि विकास पर अधिक बल देने की जरुरत और उसके लिए रासायनिक खाद के उद्योग पर अधिक विनियोजन करना होगा। चीनी उद्योग की प्रगति के लिए गन्ने का उत्पादन बढ़ाना होगा और इसके लिए रासायनिक खाद परम आवश्यक है। एक अनुमान के अनुसार उत्तरप्रदेश को ४ लाख टन नत्रजन और १॥ लाख टन फासफैटिक खाद की प्रति वर्ष आवश्यकता है। किन्तु राज्य में अब तक बहुत कम रासायनिक खाद तैयार होता है। इसी तरह इतने बड़े राज्य में सीमेंट बनाने का केवल एक कारखाना है, जो ४५ हजार टन सीमेंट प्रतिवर्ष तैयार करता है, जबकि राज्य में ३० लाख टन सीमेंट की खपत हो सकती है। सीमेंट के लिए कच्चा माल राज्य में उपलब्ध है। आवश्यकता यह है कि इस उद्योग में विनियोजन के लिए पर्याप्त राशि उपलब्ध की जाय। इसी तरह राज्य में कांच उद्योग के लिए भी काफी गुंजाइश है। अभी तक भारत के कुल उत्पादन का ३५% कांच इस राज्य में तैयार होता है, किन्तु इस उद्योग को राज्य में और भी विकसित करने की संभावनाएं हैं।

चीनी उत्तरप्रदेश का मुख्य उद्योग है, किन्तु इसमें भी दक्षिण भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। गन्ने की छोई और शीरा अनेक उद्योगों के काम में आ सकते हैं। बिजली का उत्पादन भी राज्य में बहुत बढ़ाया जा सकता है। निजी उद्योगों के भी विकसित होने के लिए पर्याप्त सम्भावनाएं विद्यमान हैं। यदि सरकार इधर ध्यान दे और योजना आयोग उत्तरप्रदेश के साथ न्याय करे तो इसमें सन्देह नहीं कि उत्तरप्रदेश के औद्योगिक विकास का भविष्य अति उज्ज्वल हो जाय। ● ●

## पंजाब

# उद्योगों को युद्ध स्तर पर सहायता

हाल की लड़ाई के कारण सीमा क्षेत्रों के जो लोग उजड़ गए थे, उन्हें सहायता पहुँचाने तथा फिर से बसाने के लिए युद्ध स्तर पर कदम उठाए जा रहे हैं। लड़ाई के कारण पंजाब के उद्योगों का काम-काज ठप्प पड़ गया था। पंजाब के अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना, फिरोजपुर और कपूरथला जिलों में लड़ाई से बहुत ज्यादा नुकसान हुआ है। जो कदम उठाए जा रहे हैं, उनका उद्देश्य सिर्फ औद्योगिक उत्पादन को ही सामान्य स्तर पर लाना नहीं है, बल्कि इनसे मजदूरों को भी काम मिल सकेगा।

सरकार इस बात पर भी ध्यान दे रही है कि पंजाब के इन ६ जिलों के कारखानों को आर्डर की कमी के कारण किसी तरह की कटिनाई न हो। इसके लिए इस बात पर विचार किया जा रहा है कि सरकारी विभाग कारखानों से माल सप्लाई करने की अपनी मांगें अग्रिम पेश करें।

पंजाब सरकार के उद्योग विभाग ने कहा है कि जिन मामलों में कारखानों ने टेंडर भरकर भेजे हैं और अभी आर्डर नहीं दिये गए हैं, उनमें पंजाब के कारखानों को यह सुविधा दी जाए कि वे टेंडरों में दी गई सबसे कम कीमत के अलावा १० प्रतिशत अतिरिक्त मूल्य पर माल सप्लाई करें। उनके इंकार करने के बाद ही दूसरे कारखानों को आर्डर दिए जाएं।

रेलवे मण्डल ने निश्चय किया है कि अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना, फिरोजपुर, कपूरथला और गुरदासपुर जिलों के स्टेशनों पर पड़े माल को समय पर न उठाने के लिए ६ सितम्बर से ३० सितम्बर तक की अवधि में जो विलम्ब शुल्क लगा हो, उसको पूरा-पूरा माफ कर दिया



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए। रेल अधिकारी इन जिलों के कारखानों में तैयार माल को नियत स्थानों पर शीघ्र से शीघ्र पहुँचाने की व्यवस्था करेंगे।

छोटे उद्योग ऋण संस्थाओं से जो ऋण लेते हैं उन पर रिजर्व बैंक आफ इंडिया जमानत देता है। इस योजना के अन्तर्गत १० हजार रु० तक के ऋण के ७० प्रतिशत तक की, १० हजार से २५ हजार रु० तक के ऋण के ६० प्रतिशत तक की और २५ हजार रु० से ऊपर के ऋण के ५५ प्रतिशत तक की (अधिकतम १ लाख रु०) रिजर्व बैंक गारंटी देता है। इन उद्योगों को ऋण सम्बन्धी रियायत भी दी जा जा रही है।

गंगानगर और भाखड़ा नहर में पर्याप्त पानी न आने के कारण राजस्थान में खड़ी फसलें सूख गई हैं, पर पाकिस्तान को पानी बराबर दिया जाता है।

## पंजाब में प्यासों के लिए पानी

हरियाना में यह लोकोक्ति है कि यदि कोई अजनबी आदर पूर्वक आप का अभिनन्दन करे तो वह अवश्य ही प्यासा होगा और वह अभिनन्दन के पश्चात् पानी मांगेगा। इस क्षेत्र में पीने के पानी की समस्या इतनी जटिल है कि यहां रहने वाले लोग उन गांवों में अपनी लड़कियों का विवाह करने से हिचकिचाते हैं, जहां पीने के पानी के कुएं न हों। सिरसा के कुछ भागों में गर्मियों के मौसम में पीने का मीठा पानी बहुत दूर से ऊंटों पर लाद कर लाया जाता है। यहां कुछ स्थानों पर पानी की गहराई १२० फुट है और हो सकता है कि हजारों रु० खर्च करने के पश्चात भी जो जल प्राप्त हो, वह मीठे के स्थान पर नमकीन ही हो।

लोगों के लिए पीने के जल की जरूरत बुनियादी महत्व रखती है, बल्कि इसका प्रबन्ध खुराक से भी ज्यादा जरूरी है। केन्द्र द्वारा वर्ष १९५४ में गांवों में पानी सप्लाई करने की जो योजना बनाई गई थी, पंजाब सरकार उस में पूरी दिलचस्पी ले रही है। पंजाब में हिसार, महेन्द्रगढ़, रोहतक तथा भटिंडा आदि के कई क्षेत्र ऐसे हैं, जहां पीने का पानी आबादी के समीप नहीं मिलता था कुओं का पानी बहुत ही खारा और नमकीन है। इसके अतिरिक्त तहसील भिवानी में कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं, जहां शुष्क ऋतु में पानी की इतनी कमी हो जाती है कि अधिकारियों को लोगों के पीने के पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष पग उठाने पड़ते हैं या लोग घर बार छोड़कर बहुत दूर के गांवों में चले जाते हैं, जहां पीने के पानी का उचित प्रबन्ध होता है।

इन क्षेत्रों के लिए पानी साफ करने की उचित योजनाएं तैयार की गई हैं, जिनके आधीन नहरों के गन्दे पानी को साफ करके भंडार किया जाता है और फिर इस केन्द्रीय जलाशय से नलों द्वारा साफ पानी गांवों के चुने हुए स्थानों पर पहुँचाया जाता है। जहां नहरों का पानी बहुत दूर है, वहां नल कुएं बहुत गहराई पर लगाये जाते हैं, ताकि पीने का अच्छा तथा मीठा पानी प्राप्त हो सके। जहां इस तरीके से भी काम न चले, वहां गहरे खुले कुओं से पानी नलों द्वारा पहुँचाया जाता है। ● ●

## राजस्थान में अकाल की छाया

राजस्थान में अकाल हर दूसरे-तीसरे वर्ष आ धमकता है। उसका पश्चिमी क्षेत्र विशेष रूप से इस दैवी प्रकोप का शिकार होता है।

इस वर्ष अकाल की छाया काफी गहरी है। गत १४ वर्षों में इतना भीषण अकाल नहीं पड़ा। राजस्थान के लगभग आधे गांव अकाल और अभावग्रस्त हुए हैं। अकाल की व्यापकता इसी से प्रकट है कि राजस्थान के कुल २६ जिलों में से २० जिलों के १३,८१५ गांव अभावग्रस्त हैं, अकाल पीड़ित हैं। चूरू, बीकानेर, जैसलमेर और झुंझुनू सर्वाधिक पीड़ित जिले हैं। अकाल और अभावग्रस्त लोगों की सहायता के लिए सरकार को अविलम्ब विस्तृत योजनायें बना लेनी चाहिए। ● ●

—भारत सरकार ने ईरान और अमेरिका की तेल कम्पनियों के साथ एक समझौता किया है। इसके अनुसार मद्रास में एक तेल संशोधनशाला खोली जायेगी। भारत सरकार को यह भी आशा है कि इन कम्पनियों के साथ खाद तथा पैट्रो कैमीकल्स का भी कारखाना खोलने के सम्बन्ध में कोई समझौता हो जायेगा। यदि २० फरवरी तक समझौता नहीं हुआ तो सरकार अन्य कम्पनियों से बातचीत करेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## स्टेट बैंक·····

(पृष्ठ ६२६ का शेष)

रसीदों पर भी उधार देता है ताकि किसानों को अपनी जरूरतों के कारण अपनी पैदावार सस्ते दामों पर न बेचनी पड़े और वे माल की कमी के समय बाजार के ऊंचे दामों से लाभ उठा सकें।

बैंक का इरादा विभिन्न ग्रामों में बैंक की ४६ शाखाएं खोलने का है। ये शाखाएं तजुर्बे के तौर पर मार्गदर्शी केन्द्रों के रूप में होंगी और हर शाखा को केवल एक व्यक्ति चलाएगा। वह उधर की विभिन्न आवश्यकताओं का अनुमान लगाएगा और इसके लिए धन जुटाने के बारे में अपनी सिफारिशें पेश करेगा। हां, उसके काम की देखरेख क्षेत्रीय मैनेजर करेगा। इस स्कीम का उद्देश्य सीधा ग्रामीणों को कृषि विकास के लिए धन मुहैया करना है। अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में बैंक काफी हद तक पहुँचे हुए हैं। ग्रामीणों से सीधे सम्पर्क में आने का यह बैंक का सर्वप्रथम प्रयास है।

## एशियाई विकास बैंक

एशियायी बैंक की स्थापना का अब निश्चय हो चुका है। इसका चार्टर बैंकांक में ३१ राष्ट्रों के सम्मेलन में स्वीकृत हो गया। इसका उद्देश्य एशिया के अविकसित और विकासोन्मुख देशों को आर्थिक विकास के लिए कम ब्याज पर रुपये की व्यवस्था करना है। इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र संघ के एक प्रस्ताव के अनुसार की गई है। इसकी पूंजी १०० करोड़ डालर होगी। इस बैंक का केन्द्रीय कार्यालय कहां हो, यह प्रश्न अभी विचाराधीन था। थाईलैण्ड इसके लिए १२ मंजिला भवन मुफ्त बनाने को तैयार था। उधर जापान २० करोड़ डालर पूंजी देने को तैयार था। अब एक समाचार से मालूम हुआ है कि मनीला (फ़िलिपाइन्स) में इसका केन्द्रीय कार्यालय बनेगा। इस बैंक की पूंजी में अमेरिका २० करोड़ डालर देगा। ब्रिटेन भी एक करोड डालर (एक संभावना के अनुसार १ करोड़ स्टर्लिंग) लगाना चाहता है। भारत ६३ लाख डालर पूंजी लगायेगा। नीदरलैण्ड, अफगानिस्तान, बर्मा, कम्बोडिया, श्री लंका, मलयेशिया, नेपाल, पाकिस्तान, राष्ट्रीय चीन (फारमोसा) आदि देश भी इस बैंक के लिए पूंजी दे रहे हैं। कम्यूनिस्ट चीन, इन्डोनेशिया और टर्की इसमें सम्मिलित नहीं हो रहे। रूस भी इसमें सहयोग देना चाहता है। कनाडा और आस्ट्रेलिया भी क्रमशः ७॥ और २॥ करोड डालर पूंजी लगा रहे हैं। विभिन्न देशों की सरकारें जब इसके लिए सन्धि पर हस्ताक्षर कर लेंगी, तब यह बैंक चालू हो जायेगा।

इस बैंक का संचालन एक बोर्ड करेगा। इसमें २० प्रतिशत मत सब सदस्यों में समान रूप से बांटे जायेंगे और ८० प्रतिशत मत विनियोजित पूंजी के अनुसार। इस बैंक पर इस प्रकार अमेरिका का ही अधिक प्रभाव रहेगा। इस कारण कुछ क्षेत्रों में आशंकायें भी की जा रही हैं। यदि अमेरिका ने ही इसकी नीति का संचालन करना है तो यह सन्देह भी किया जा सकता है कि यह बैंक राजनैतिक दबाव से मुक्त नहीं होगा। बैंक पर अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए ही एक समाचार के अनुसार ब्रिटेन अपनी पूंजी को १ करोड़ डालर की बजाय १ करोड़ स्टर्लिंग करना चाहता है।

## दो भारत विरोधी बैंक

एक समाचार के अनुसार ब्रिटेन के दो बैंकों—चार्टर्ड बैंक और मरकैण्टाइल बैंक ने पाकिस्तान के रक्षा कोश में एक-एक लाख रु० दान दिया है। ये दोनों बैंक पाकिस्तान की अपेक्षा भारत में दस गुना कारोबार करते हैं, किन्तु उन्होंने भारत को सहायता न देकर पाकिस्तान को सहायता दी है। क्या भारत सरकार इन बैंकों पर भारत में कारोबार करने पर कोई प्रतिबन्ध न लगावेगी?

## कीमतें कैसे·····

(पृष्ठ ६२५ का शेष)

जरिये करीब ७ प्रतिशत का बिना कर का प्रतिफल प्राप्त कर सके। औसत कर सतहों की दृष्टि से यह प्रतिफल करीब १० प्रतिशत का हो जाता है। इस प्रकार के प्रमाण-पत्रों में रकमें लगाने में कोई जोखिम भी नहीं है। लेकिन यदि उसी व्यक्ति को किसी निगमित क्षेत्र के किसी उत्पादक उद्योग में रकम लगाने के लिये राजी करा लिया जाता है, तो उसे अपनी पूंजी के मूल्य-ह्रास का जोखिम उठाना पड़ता है। उसे प्रायः वर्षों तक डिवीडेण्ड के रूप में प्रतिफल प्राप्त करने के लिये बाट देखनी पड़ती है। यदि हमको सर्वांगीण उत्पादन में वृद्धि करनी है तो कराधान की वर्तमान सतहों को काफी कम करना जरूरी है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## कुछ देश की कुछ विदेश की

(पृष्ठ ६३० का शेष)

दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका और पुर्तगाल रोडेशिया को सहायता देना चाहते हैं। बहुत सम्भव है कि आगामी वर्ष (१९६६) के आरम्भ से पूर्व ही रोडेशिया के रंगमंच पर भीषण संघर्ष शुरू हो जाए अथवा रोडेशिया की गोरी सरकार ही पदच्युत हो जाए।

### वियतनाम

अंतर्राष्ट्रीय संकट का दूसरा केन्द्र वियतनाम है। यहां दक्षिणी और उत्तरीय वियतनामों में अनेक वर्षों से विकट संघर्ष चल रहा है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका उत्तरी वियतनाम के कम्युनिस्टों से दक्षिणी वियतनाम की रक्षा के लिए पूरी कोशिश कर रहा है। अब तो उसने अपनी सब प्रकार की स्थल, जल और वायु सेनाएं भी रणक्षेत्र में पहुँचा दी हैं, किन्तु अमेरिका को कम्युनिस्ट दमन में सफलता बिल्कुल नहीं मिल रही। उत्तरी वियतनाम को चीनी कम्युनिस्ट सरकार पूरी सहायता दे रही है। वियतनाम अमेरिका की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। वह यहां कम्युनिस्टों को परास्त करके दक्षिण पूर्वी एशिया में कम्युनिज्म अथवा कम्युनिस्ट शक्तियों का प्रसार ही रोक देना चाहता है, किन्तु अपने देश से हजारों मील दूर अपरिचित प्रदेश में उसे अब तक सफलता नहीं मिली। भारत भी अमेरिका के हस्तक्षेप के विरोध में है।

### रूस और चीन

रूस और चीन की सरकारों में ख्रुश्चेव के पतन के बाद भी परस्पर सम्बन्ध नहीं सुधरे, अपितु वे बिगड़ते ही जा रहे हैं। उत्तरी वियतनाम को रूस जो सहायता पहुँचा रहा है, उसमें भी चीन इसलिए कुछ बाधा उपस्थित कर रहा है कि वहां रूस का प्रभाव न बढ़ जाए।

### भारत और अमेरिका

अमेरिकन कांग्रेस के प्रतिनिधि आजकल भारत की यात्रा कर रहे हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि क्या भारत को चीन के नये आक्रमण का खतरा है? यदि है तो उस स्थिति में भारत अमेरिका से किस सहायता की अपेक्षा करता है। यों अमेरिका ने भारत को दी जाने वाली सहायता स्थगित करके भारत के सामने एक विकट समस्या पैदा कर दी है। अमेरिकन रुख के कारण ही अन्य मित्र देश भी सहायता देने में संकोच कर रहे हैं। विश्व बैंक का प्रतिनिधि मण्डल भी भारत आते-आते रुक गया है।

## पी. एल. ४८०

इस महीने के शुरू में भारत और अमेरिका के बीच एक समझौते कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत को ५ लाख टन और गेहूँ बेचे जाने की व्यवस्था की गई है।

इस समझौते को मिलाकर भारत को अब तक कुल ३ अरब २ करोड़ ९२ लाख डालर (१४ अरब ४२ करोड़ ५० लाख रु०, मूल्य की अमेरिकी कृषि-वस्तुएं देने की व्यवस्था की गई है।

अमेरिका तथा अन्य मित्र देशों से अनाज के निरन्तर आयात का यह अर्थ नहीं कि पिछले वर्षों में भारत के अपने अन्नोत्पादन में पर्याप्त वृद्धि नहीं हुई है। १९५०-५१ में भारत में ५ करोड़ टन अनाज पैदा हुआ था, जो बढ़कर १९६४-१९६५ में ८ करोड़ ७५ लाख टन हो गया, इस प्रकार इस अवधि में भारत के अन्नोत्पादन में ३ करोड़ ७५ लाख टन यानी ७५ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

पहले के समझौतों पर हस्ताक्षर के समय प्रचलित भावों को देखते हुए यह अनुमान लगाया गया था कि पी-एल-४८० के अन्तर्गत किये गये विविध समझौतों तथा सम्बन्धित संशोधनों के आधीन भारत को कुल मिलाकर ३,२९,८७,००० टन गेहूँ; १७,४८,१०० टन चावल; १०,६७,३०० टन मक्का और मोटा अनाज; २३,६३,००० गांठ कपास; काफी बड़ी मात्रा में तम्बाकू, सोयबीन का तेल, डिब्बाबन्द फल और पनीर; तथा १०,०० टन बिना चिकनाई वाला सूखा दूध, गाढ़ा दूध तथा पूरी चिकनाई वाला सूखा दूध उपलब्ध किया जायेगा।

### पी० एल० ४८० का वितरण

| | राशि | प्रतिशत |
|---|---|---|
| | कुल ३०२.९ करोड़ डालर | |
| ऋण भारत सरकार | १६४.२ ,, ,, | ५४.०० |
| अनुदान ,, | ७८.८ ,, ,, | २६.०० |
| अमे. का अपना खर्च | ३८.२ ,, ,, | १३.०० |
| निजी उपक्रमों को ऋण | २१.७ ,, ,, | ७.०० |
| | | १००.०० |



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## आयकर में कमी

वित्त मंत्री श्री टी टी कृष्णमाचारी ने पिछले महीने में कहा है कि अगर कर की वसूली में सुधार हुआ तो आयकर की दर को और भी घटाना सम्भव हो सकेगा। इस साल सरकार ने जानबूझकर कर की दर घटाई है। आयकर कमिश्नरों को कर-वसूली में इस प्रकार का सुधार करना चाहिए कि राजस्व अनुमान के अनुकूल हो। कर-ढांचे में संशोधन करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यय-कर अधिक कारगर बने और अर्जित आय पर कर की दर घटे। असल में धन कमाने पर दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए, व्यय करने पर दण्ड दिया जाना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति अधिक धन कमाता है तो उसकी बचत से समाज को लाभ होगा। लेकिन खर्च पर अंकुश लगाना जरूरी है, क्योंकि अपव्यय से समाज में असमानताएं आती हैं।

जब सं० रा० अमेरिका करोड़ों अरबों रु० विदेशों को सहायता के रूप में दे रहा है, तब भी वह स्वयं जनता पर कर घटाते रहने की नीति स्वीकार कर रहा है। राष्ट्रपति जानसन ने जिस बजट पर हस्ताक्षर किए हैं, उसमें ४६० करोड़ डालर कर कम कर दिये गये हैं। मोटरों पर १ से १० प्रतिशत कर कम किये गये हैं, तो टैलिफोन-काल, जेवर, फर, खेल के सामान तमाखू आदि पर से कर बिलकुल समाप्त कर दिये गये हैं। यदि भारत सरकार भी इस दिशा में सोचे, तो यह स्वाभाविक है। करों में कमी से उद्योगों को प्रोत्साहन ही मिलेगा और शेयरों के गिरते मूल्यों पर भी रोक लगेगी।

## रेलों में ढुलाई

चालू वर्ष में भारतीय रेलों के सम्मुख १ करोड़ टन सामान की अतिरिक्त ढुलाई का लक्ष्य था, जबकि आशा है कि इस वर्ष ढुलाई में इससे भी अधिक वृद्धि होगी। यह संतोषजनक समाचार है। रेल मण्डल के अध्यक्ष श्री कृपालसिंह ने बताया है कि पाकिस्तानी आक्रमण के बाद सेना के लिए रेलों का बहुत यातायात हुआ, जिससे सामान्य यातायात में काफी बाधा आई, लेकिन फिर भी भारतीय रेलों ने सितम्बर के अन्त के ६ महीनों में ६० लाख टन से भी ज्यादा अतिरिक्त सामान ढोया, जबकि सारे साल के लिए १ करोड़ टन की अतिरिक्त ढुलाई का लक्ष्य था। कोयले की ढुलाई में सबसे ज्यादा ३२ लाख ७० हजार टन की वृद्धि हुई। इस्पात कारखानों के सामान यातायात में ६ लाख १० हजार टन की वृद्धि हुई और निर्यात के लिए ३ लाख १० हजार टन अतिरिक्त लोह अयस्क की ढुलाई हुई।

श्री कृपालसिंह ने यह प्रकट किया है कि संसद में रेलमन्त्री ने अपने बजट भाषण में रेलों के माल यातायात में एक करोड़ टन की वृद्धि का जो लक्ष्य रखा था, वह पूरा ही नहीं होगा, बल्कि उससे ज्यादा सामान की ढुलाई हो सकेगी। अगर वर्तमान क्रम जारी रहा तो वर्ष के अन्त तक माल यातायात में १ करोड़ २७ लाख ५० हजार टन की ढुलाई की वृद्धि हो सकेगी।

## लोहा उद्योगका राष्ट्रीयकरण नहीं

ब्रिटिश सरकार के वित्तमंत्री ने बताया है कि ब्रिटेन में फिलहाल लोहे उद्योग का राष्ट्रीयकरण नहीं किया जायेगा। नये चुनावों के बाद ही इस सम्बन्ध में कोई निर्णय किया जायेगा। 'सम्पदा' के पाठकों को शायद यह स्मरण हो कि बहुत वर्ष पहले मजदूर सरकार ने लोहे उद्योग का राष्ट्रीयकरण कर लिया था, परन्तु उसके बाद अनुदार दल ने इसे फिर निजी उद्योगों के हाथ में सौंप दिया। अब मजदूर सरकार फिर राष्ट्रीयकरण करने में संकोच कर रही है।

—दिसम्बर १९६५ में भारत और रूस के बीच एक नया पंचवर्षीय व्यापार समझौता हुआ है। बिजली के बल्ब, रेफ्रीजिरेटर, वातानुकूल यन्त्र, मशीनी औजार, गैजेट, बैटरियां, औद्योगिक यन्त्र, मोटर गाड़ियों के पुर्जे, साइकिल और मोटरगाड़ियों के ट्यूब और वल्व, टायर और हल्की इंजीनियरी का अन्य बहुत सा सामान नये व्यापार समझौते के अन्तर्गत भारत से रूस सामान खरीदेगा।

—भारत सरकार ने यह स्पष्ट किया है कि स्वर्णबांड की अवधि ३१ जनवरी १९६६ से आगे नहीं बढ़ायी जाएगी। १५ वर्ष बाद स्वर्णबांडों का सोना शुद्ध रूप से वापस दे देगी। यह आशंका निराधार है कि सरकार सोना वापस देने में टाल मटोल करेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## अर्थ वृत्त चयन

# भारतीय सेना का विश्व में स्थान

ब्रिटेन की सामरिक अध्ययन संस्थान की ७-वीं वार्षिक रिपोर्ट में विश्व की सेनाओं की संख्या-शक्ति पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि संख्याबल की दृष्टि से भारत की सेना दुनिया में चौथे नंबर पर है।

दुनिया में सबसे बड़ी सेना, जिसकी संख्या ३१,५०,००० है, रूस के पास है। अमरीकी सेना में २६,६०,००० सैनिक हैं। चीन की सेना तीसरे नम्बर पर है, उसमें २४,८६,००० सैनिक हैं। भारत की सेना में ८,६६,००० सैनिक हैं।

इसके अलावा अन्य देशों की सेनाएं इस प्रकार हैं—फ्रांस ५,५७,००० सैनिक, ब्रिटेन ४,४०,००० सैनिक, पश्चिमी जर्मनी ४,३२,००० सैनिक, पाकिस्तान १,८८००० सैनिकों तक। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत अपने कुल उत्पादन का ४.७ प्रतिशत प्रतिरक्षा पर व्यय कर रहा है।

इसके अलावा अमरीका राष्ट्र के कुल उत्पादन का ८.६ प्रतिशत और केन्द्रीय सरकार के कुल खर्च का ५३ प्रतिशत प्रतिरक्षा पर खर्च करता है।

अन्य देशों के आंकड़े इस प्रकार है—

| देश | कुल उत्पादन का प्रतिशत | सरकार के खर्च का प्रतिशत |
|---|---|---|
| ब्रिटेन | ६.७ | २६ |
| फ्रांस | ५.१ | २२ |
| प० जर्मनी | ५ | ३४ |
| जापान | १.१ | ८.४ |
| इन्डोनेशिया | ३.६ | ६ |
| इजराइल | १०.७ | ३१ |
| रूस | ५.७ | १६ |
| पाकिस्तान | ३.२ | १८ |

भारत की अणुबम बनाने की क्षमता के बारे में रिपोर्ट में कहा गया है कि १६७२ तक भारत इतना प्लूटोनियम बना सकता है कि उससे प्रति वर्ष २३० अणुबम बनाये जा सकते हैं। १६७२ तक जापान की प्रति वर्ष अणुबम बनाने की क्षमता ६२ हो जाएगी, जबकि स्वीडन की ३२, इटली की १२०, पश्चिमी जर्मनी की १७० तथा चैकोस्लोवाकिया की ३२ होगी।

संस्थान के एक विशेषज्ञ श्री बीटन ने कहा है कि एक साधारण किस्म के अणुबम के लिए ४ किलोग्राम प्लूटोनियम की आवश्यकता होती है। ४ मेगावाट (थरमल) से एक किलोग्राम प्लूटोनियम बनाया जा सकता है। ट्राम्बे का रि-एक्टर ४० मेगावाट (थरमल) का है।

श्री बीटन ने कहा है कि इसी आधार पर इस निर्णय पर पहुँचा गया है कि अगर भारत ने उस शक्ति का प्रयोग अणुशस्त्र बनाने में करने का निर्णय किया, तो वह एक वर्ष में दो अणुबम बना सकता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि भारत ४ नये अणु रि-एक्टर या तो स्थापित कर रहा है या स्थापित करने की तैयारी में है।

इन नए रि-एक्टरों की अणुबम बनाने की क्षमता इस प्रकार होगी—तारापुर रि-एक्टर ७६ बम, राजस्थान रि-एक्टर ४० बम, मद्रास अणु बिजलीघर ८० बम प्रति वर्ष।

## अन्न समस्या : दो सुझाव

अन्न समस्या को हल करने के बहुत-से तरीके हो सकते हैं और उन तरीकों में आपस में बहुत मतभेद भी हो सकता है। उदाहरणस्वरूप एक विचार यह है कि अन्न-उत्पादन बढ़ाने का सबसे अच्छा उपाय यह होगा कि बड़े बड़े फार्म धनाढ्य लोगों को दे दिये जायं, जो कि उनमें काफी पैसा लगा सकें। इसलिए इस तरह का एक प्रस्ताव किया गया है कि राजस्थान में 'पाइलट प्रोजेक्ट' के रूप में ४-५ हजार एकड़ के कई निजी मालकियत वाले फार्म खोले जाएं।

दूसरा एक सुझाव भारत सरकार की तरफ से ऐसा आया है कि राज्य सरकारें इस तरह के भूमि सम्बन्धी सुधार-कानून अमल में ला सकती हैं, जिनसे जमीन के मालिकों को इस बात का आश्वासन रहे कि उनका मालिकाना हक भविष्य में भी कायम रहेगा और जिससे वे विश्वास के साथ अन्न का उत्पादन बढ़ाने के काम में लग सकें।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## चन्द्रलोक पर पहुँचने का भारी प्रयत्न

मनुष्य को इस दशक में चन्द्रमा पर पहुँचाने के लक्ष्य की पूर्ति के लिए अमेरिका में सरकार और गैर-सरकारी उद्योगों द्वारा मिल-जुल कर राष्ट्र-व्यापी प्रयत्न किया जा रहा है। बड़ी-छोटी २०,००० से अधिक कम्पनियां अन्तरिक्ष-यान का डिजायन तैयार करने और उसे बनाने के लिए ठेकों और छोटे-छोटे करारों के पेचीदा कामों में लगी हुई हैं। चन्द्रमा की यात्रा-योजना के क्रियान्वित होने तक अमेरिका के सभी ५० राज्यों में ३००,००० से अधिक स्त्री-पुरुष इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में अपना योगदान कर चुके होंगे।

चन्द्रमा की युग-परिवर्तनकारी यात्रा के लिए १०८ मीटर ऊंचे त्रिखण्डी 'सैटर्न-५' राकेट की आवश्यकता होगी। इसे उसके प्रक्षेपण-मंच पर ही जोड़ा जायेगा और उसमें ईंधन भरा जायेगा। उसका वजन ३००० टन होगा, यह वजन आणविक पनडुब्बी 'नौटिलस' के बराबर होगा। रूस का लूना ८ अन्तरिक्षयान चन्द्रमा तक जा टकराया है।

## स्वीडन में

अन्य देशों में जहां रोजगार की समस्या सरकारों के सामने खड़ी होती है, वहां स्वीडन में इससे बिल्कुल भिन्न समस्या है। यहां भौगोलिक या अन्य कारणों से बच्चे कम पैदा होते हैं। इसलिए काम करने वालों की संख्या बहुत कम है। हाल ही में स्वीडन में एक संस्था 'मिस जाब' खोली गई है, जो लोगों को नौकरियां दिलाने में मदद देती है। यहां हर समय प्रायः १७,५००० नौकरियां खाली पड़ी रहती हैं। इसलिए सरकार विदेशी कर्मचारियों का बड़े आदर से स्वागत करती है। समाजवादी प्रणाली में पारिवारिक बन्धन भी ढीले पड़ गये थे, जिसका एक परिणाम यह भी हुआ कि विवाह से पहले काम सम्बन्ध स्थापित करने की प्रवृत्ति बढ़ गयी है, मगर स्वीडन ही एक ऐसा देश है, जहां इस प्रकार के लोगों का सामाजिक बहिष्कार नहीं होता है।

## सं० रा० अमेरिका की ८९वीं कांग्रेस

संयुक्त राज्य अमेरिका के ८९वें कांग्रेस ने जितना काम किया, उसे देखकर राष्ट्रपति जानसन ने कहा, "यह कांग्रेस इतिहास के पृष्ठों में सदा जिन्दा रहेगी।" ६०,००० मकान बनाने की योजना मंजूर करके देश के ७०% लोगों और विद्यार्थियों के लिए रहने का स्थान मिलेगा। गरीब लड़कों की शिक्षा के लिए विद्यालयों के लिए ३% गरीब विद्यार्थियों को दाखिला देना अनिवार्य कर दिया गया, दक्षिण के नीग्रो को मत देने का अधिकार मिला, एक अरब ९० करोड़ डालर की बड़ी रकम गरीबी से लोहा लेने के लिए मंजूर हुई और जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए चिकित्सा सेवाओं को अनिवार्य कर दिया गया।

## चीन द्वारा जाली नोटों का व्यापार

फिलिपीन के पुलिस अधिकारियों का कहना है कि कम्युनिस्ट चीन उसके देश में जाली नोट चला रहा है। कम्युनिस्ट यह काम व्यवसाय के रूप में कर रहे हैं। चीन सरकार अपने यहां इन जाली नोटों को छाप कर हांगकांग स्थित जासूसों द्वारा फिलिपीन के बन्दरगाहों पर पहुंचा देती हैं। वहां से उसके एजेंट इनको अलग-अलग नगरों में फैला देते हैं। यह कोरा व्यवसाय ही नहीं है, इसके पीछे साम्यवादी चीन की राजनैतिक चाल है। इस जालसाजी द्वारा चीन फिलिपीन की मुद्रा के प्रति जनता के विश्वास को चोट पहुँचाना चाहता है, जिससे वहां आर्थिक असंतोष उत्पन्न करके साम्यवाद को लोकप्रिय बनाया जा सके।

## भारतीय वस्त्रों के डिजाइन नये रूप में

तीन शताब्दी पूर्व भारत में मुगल काल के दौरान कलाकारों द्वारा निर्मित डिजाइनों को सर निकोलस सेकर्स की कपड़ों की फर्म ने अपने वस्त्रों के डिजाइनों में शामिल कर लिया है। उक्त फर्म के लन्दन मुख्यालय में आजकल इन डिजाइनों वाले वस्त्रों का प्रदर्शन किया जा रहा है। कैनाडा के श्री आर० बेनी के द्वारा तैयार की भारतीय वस्त्रों के चित्रों की एक किताब देखने के बाद स्वयं सर निकोलस ने इन उत्कृष्ट मुगलकालीन डिजाइनों का उपयोग करने की बात सोची थी।

—श्रीलंका के प्रधानमंत्री श्री सेनानायक ने व्यापारियों को यह चेतावनी दी है कि यदि उन्होंने राष्ट्रीय हितों का ध्यान न रखा तो सरकार समस्त व्यापार का ही राष्ट्रीय करण कर लेगी।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

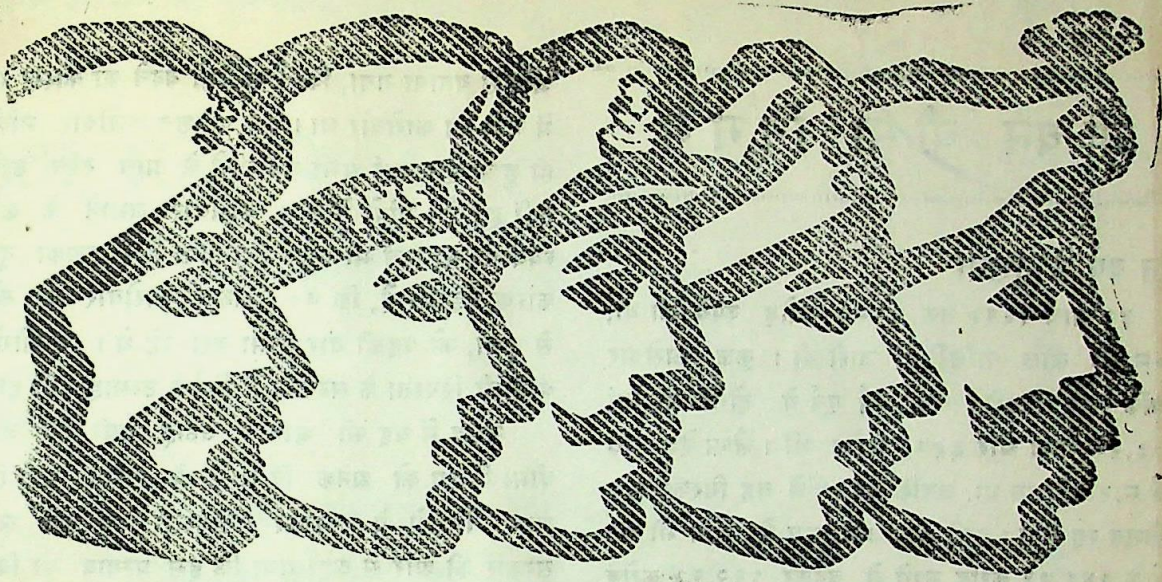

हिन्दुस्तान को अपने जवानों पर सचमुच गर्व है, नाज़ है। उन्होंने हमारी आज़ादी, इज़्ज़त, आदर्शों और जीवन की रक्षा की। उन्होंने दुश्मनों को मुंह तोड़ जवाब दिया। लड़ाई में बहुत से जवान शहीद हुए और बहुत से जख्मी। सच है, हमारे जवानों ने जी-जान से अपना फर्ज अदा किया है। हमें भी उनके हाथ मजबूत करने के लिए इतनी मेहनत करनी चाहिए, जितनी हमने आज तक कभी नहीं की।

**एक महान देश हमारा**
**एक महान राष्ट्र**

DA 65/F6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113088

## जीवन बीमा निगम

### गत वर्ष से तुलना

३१ मार्च १९६५ तक ३८८७ करोड़ रुपये का था, १०८.६८ लाख पालिसियां जारी थीं। कुल कारोबार जबकि इसके विपरीत एक वर्ष पूर्व ये दोनों संख्याएं १०३.२८ लाख और ३५७१ करोड़ थीं। लैप्स रेशो गत वर्ष ८.२ प्रतिशत था, जबकि १९६४ में यह गिरकर ७.५ प्रतिशत रह गया। इसी तरह प्रीमियम से आय भी गत वर्ष के १४६.७३ करोड़ रुपये से बढ़कर १६२.२५ करोड़ रुपये हो गई। कुल आय १७९.६० करोड़ रुपये से बढ़कर २०५.०९ करोड़ रुपये हो गई।

एक्सपैंस रेशो गत वर्षके २७.४६ प्रतिशतसे बढ़कर २७.५५ हो गया। इसी तरह नवीकरण खर्च का अनुपात भी १२.४६ प्रतिशत से बढ़कर १४.०९ प्रतिशत हो गया। इस वर्ष नया कारोबार ७०१ करोड़ रुपये का हुआ, जबकि पिछले वर्ष ७०३ करोड़ रुपये का हुआ था।

संसद् में जीवन बीमा निगम के कार्य पर जो बहस हुई है, उसमें आलोचना का उत्तर देते हुए सरकार की ओर से बताया गया, कि लैप्स रेशो बढ़ने का कारण गांवों में बीमे का कारोबार था। ३६ प्रतिशत कारोबार गांवों में ही हुआ है। वहां अभी तक बीमे के प्रति रुचि उत्पन्न नहीं हुई है। गांवों में नया कारोबार जमाने के कारण व्यवस्था का खर्च भी बहुत बढ़ गया है। इसका दूसरा कारण यह भी है, कि ७० प्रतिशत कारोबार उन लोगों से हुआ, जो पहली बार बीमा करा रहे थे। इन लोगों में बीमें की स्थिरता के सम्बन्ध में विशेष उत्साह नहीं होता।

संसद में यह भी आवाज उठाई गयी कि जीवन बीमा निगम को अनेक विभागों में विभक्त कर दिया जाय, जिससे वे परस्पर प्रतिस्पर्द्धा भी कर सकें। सरकार की ओर से कहा गया कि इस प्रस्ताव पर विचार हो रहा है। दूसरा सुझाव यह था, कि अब क्योंकि लोगों की औसत आयु बढ़ गई है, इसलिए प्रीमियम की कर दर कम कर दी जाय। इस प्रश्न का निश्चय भी जांच रिपोर्ट तक आने के लिए स्थगित कर दिया गया है।


## रामतीर्थ मासिक

सम्पादक—योगिराज श्री उमेशचन्द्र जी

हिन्दी जगत् में सुप्रसिद्ध • यौगिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा से रोगनिवारण • प्राणायाम तथा मानसिक इलाज से रोगनिवारण • योग वेदान्त (उपनिषद्, गीता, योग-वासिष्ठ) रामायण, प्रश्नोत्तर, आश्रम समाचार, स्वानुभव • कहानियां • अमौन तथा दीपावली विशेषाङ्क

हर महीने में २०० से अधिक पृष्ठ संख्या • डाक व्यय के साथ केवल ५), • एक प्रतिका ०-५० न. पैसे। सर्वत्र प्राप्य।

**श्री रामतीर्थ योगआश्रम, बम्बई-१४**



प्रति माह पढ़ने योग्य!

यंत्र-युग

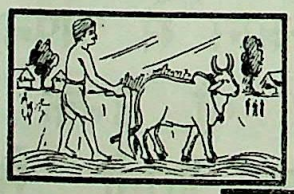

कृषि

उद्योग का

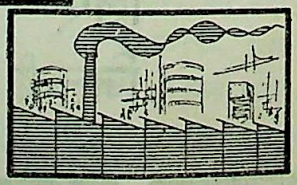

सचित्र हिन्दी मासिक

विज्ञापन दर तथा अन्य जानकारी के लिए लिखें:- | वार्षिक चंदा ३) मात्र

व्यवस्थापक: यंत्रयुग मासिक, ९ १/६३, गायघाट, वाराणसी-१




CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की प्रतिरक्षा के लिए वस्त्रों का अधिक उत्पादन

# बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

के

अधिकारी, कर्मचारी व कारीगर देश के
जन-जन के लिए हर किस्म का कपड़ा
मिल में तैयार करते हैं !

●

ाब की सर्वश्रेष्ठ रुई से

साड़ी, धोती, छींट, लट्ठा, शर्टिंग,
मलमल, कोटिंग, वायलिन, खादी,
दुसूती, चादर आदि

कुशल कारीगरों द्वारा बनाये जाते हैं !!

●

## बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग जनरल मिल्स लिमिटेड, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76899

प्राकृतिक शेड वाले प्लेन कपड़ों से मिलते-जुलते डी.सी.एम. के रंगीन परदों का प्रयोग कीजिए।

चमकीले पीले वासन्ती एवं नारंगी रंगों द्वारा उष्णता का वातावरण पैदा कीजिए।

शयन-कक्षों के लिए महिलाओं की मनपसन्द फूल-पतियों की छपाई वाले व विविध रंगों वाले डी सी एम के सजावट के कपड़ों का उपयोग कीजिए।

JWT-DCM 3673 CH

**डी सी एम**

कपड़ों की सुन्दरता व मज़बूती का प्रतीक

दी दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri